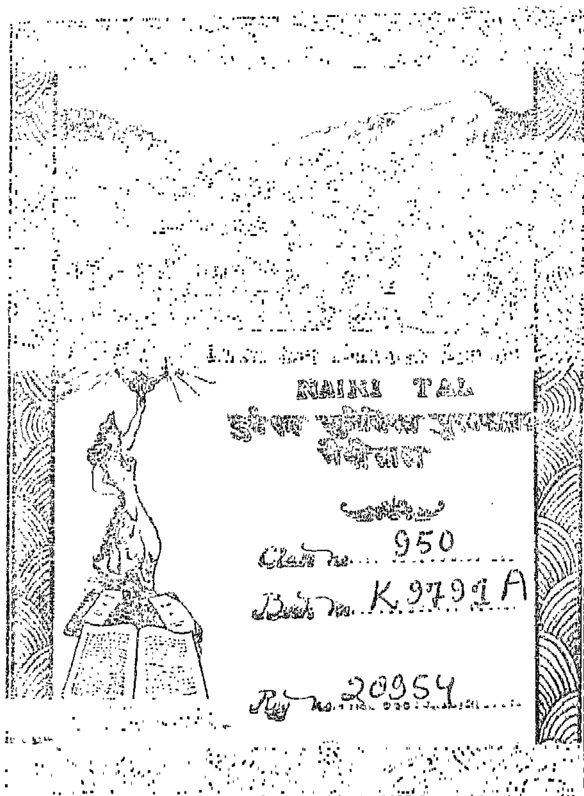

NAINI TAL
Class No. 950
Book No. K9791A
Reg No. 20954

[illegible] का भूगोल

लेखक—

कामता प्रसाद कुलश्रेष्ठ एम० ए०

प्रकाशक

किताब घर, परेड,

कानपुर।

प्रकाशक
किताबघर, परेड,
कानपुर ।

द्वितीय संशोधित संस्करण
नवम्बर १९५६

मुद्रक
शुभकामना प्रेस,
तिलकनगर, कानपुर ।

To
My brother
L. P. Kulshreshtha
Income Tax Officer

'प्रस्तावना'

प्रस्तुत पुस्तक लिखने की आवश्यकता अनेक वर्षों से प्रतीत हो रही थी, क्योंकि भारतीय पाठकों के हेतु अपनी राष्ट्र भाषा में इस प्रकार की कोई पुस्तक नहीं थी। एशिया महाद्वीप क्षेत्रफल एवं जनसंख्या के दृष्टिकोण से इतना विशाल है, और उसमें इतने देश हैं कि प्रत्येक देश के विषय में पूर्णरूप से ज्ञान प्राप्त करना बड़ा ही दुष्कर कार्य है।

इस महाद्वीप का भौगोलिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से विश्व में विशेष महत्व है। यहाँ न केवल भौतिक अतिशयता ही पाई जाती है, वरन् अपने प्राचीन इतिहास के कारण यह 'प्राचीन विश्व' के नाम से भी पुकारा जाता है। एक समय था जब कि यहाँ अनेक देशों की सभ्यता उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुंच चुकी थी। आज भी उसके चिन्ह चीन, भारत और मैसोपोटामिया जैसे देशों में खण्डहरों के रूप में पाये जाते हैं। राजनैतिक उथल-पुथल गत वर्षों से बहुत हुई है, उपनिवेश धीरे धीरे समाप्त होने लगे हैं और प्रत्येक देश स्वतन्त्रता पूर्वक करवट ले रहा है।

राजनैतिक एवं आर्थिक स्थिति सम्हालने के हेतु कई सम्मेलन भी हुये। इनमें दिल्ली, कोलम्बो व बाडुंग के सम्मेलन महत्वपूर्ण थे। जिन देशों ने स्वतन्त्रता प्राप्त की, और जहाँ की घरेलू राजनीति सन्तोषजनक रही, वहां आर्थिक उन्नति के साथ साथ सामाजिक एवं साँस्कृतिक उन्नति भी हुई है। पंडित नेहरू व चाऊ जैसे नेताओं के फलस्वरूप आज एशिया के देशों की आवाज विश्व में अपना महत्व रखती है। विश्व के प्रमुख धर्मों की जन्मभूमि होने का गौरव भी इसी महाद्वीप को प्राप्त है।

पुस्तक की रचना विद्यार्थियों की अनेक कठिनाइयों को सामने रखते हुये की गई है। प्रत्येक देश का विवरण, भौतिक, मानवीय, आर्थिक, राजनैतिक एवं साँस्कृतिक रूपों के आधार पर प्रचलित साधारण भाषा में दिया गया है। मानचित्रों एवं रेखाचित्रों का प्रयोग भी आवश्यकतानुसार विभिन्न स्थानों पर किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक के लिखने में लेखक ने उन सभी पुस्तकों से सहायता ली है, जो इस विषय पर अधिकृत रूप से प्राप्त हैं।

द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् समस्त एशिया में कुछ न कुछ राजनैतिक परिवर्तन हुये हैं। इन परिवर्तनों के अन्तर्गत देशों की आर्थिक दशा पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। लेखक को वर्तमान उत्पादन, क्षेत्रफल एवं अन्य आँकड़ों के लिये

'एशिअन रिलेशंस आरगॅनाइजेशन' (Asian Relations Organization) के अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र-संघ की विविध रिपोर्टों, सरकारी विज्ञप्तियों एवं अन्य अनेक विश्वसनीय पत्र-पत्रिकाओं से सहायता लेनी पड़ी है। लेखक विशेष तौर पर रूस, चीन, जापान, इन्डोनेशिया, मलाया, बर्मा, लंका, पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान, ईरान, इराक, साउदी अरेबिया, सीरिया, जोर्डन तथा टर्की आदि देशों के दूतावासों के प्रति अनुग्रहीत है।

अन्त में हम निम्नलिखित उन सज्जनों को हार्दिक धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिन्होंने समय समय पर अपने बहुमूल्य विचारों और आदेशों द्वारा पुस्तक को यह रूप देने में बड़ी सहायता दी है—डा० यू० एस शर्मा, डीन आफ फेकल्टी आफ एग्रीकलचर, आगरा विश्वविद्यालय, श्री एम० पी० श्रीवास्तव, रिसर्च स्कालर ओहाओ यूनीवर्सिटी, यू० एस० ए०, श्री पी० डी० गुप्ता, प्रिंसिपल एन० आर० ई० सी० कालिज खुर्जा एवं प्रोफेसर जी० के० गहराना अध्यक्ष राजनीति विभाग, धर्म समाज कालिज अलीगढ़।

लेखक श्री हरीशचन्द्र, रवीन्द्र प्रकाश, सुरेश चन्द्र, गिरीश चन्द्र, श्रीमती कुशल कुलश्रेष्ठ एवं श्रीमती विमला कुलश्रेष्ठ का भी आभारी है। इन्होंने हस्तलिपि के पढ़ने तथा मानचित्र एवं रेखाचित्र तैयार करने में पूर्णतया सहयोग दिया है।

के० पी० कुलश्रेष्ठ

द्वितीय संस्करण की
प्रस्तावना

इतने अल्पकाल में 'एशिया का भूगोल' का द्वितीय संस्करण इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि पुस्तक विद्यार्थियों द्वारा बहुत अधिक अपनाई गई, मुझे सन्तोष है कि इसके द्वारा मेरा प्रिय वर्ग लाभान्वित हुआ।

इस संस्करण में मुद्रण आदि की वे सभी त्रुटियाँ, जो शीघ्रता के कारण पिछले संस्करण में रह गई थीं, दूर कर दी गई हैं। इस विस्तृत महाद्वीप में इस एक वर्ष में जो भौतिक, मानुषिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन हुए हैं, उनका यथा स्थान समावेश कर दिया गया है। इतना ही नहीं बल्कि यथा सम्भव नवीनतम आंकड़े भी दिये गये हैं। पाठकों की सुविधा के विचार से हमने पुस्तक को बिल्कुल ही नया रूप देने का प्रयास किया है। आशा है अब यह पुस्तक अपने नये रूप में विद्यार्थी-जगत का और भी अधिक उपकार कर सकेगी।

के० पी० कुलश्रेष्ठ

एशिया का भूगोल

एशिया का भूगोल

(परिचय)

परिचय (Introduction)

पृथ्वी के प्रमुख खण्डों में एशिया महाद्वीप न केवल सब से बड़ा ही है, बल्कि एक बहुत ही अद्वितीय व मनोरंजक भाग भी है। क्षेत्रफल में यह कदाचित् नवीन दुनिया से दस लाख वर्गमील बड़ा है तथा लगभग इतना ही योरोप, अफ्रीका एवं आस्ट्रेलिया के योग से छोटा है। वास्तव में यदि भौगोलिक दृष्टिकोण से देखा जाय तो योरोप तथा अफ्रीका दोनों ही मुख्य एशिया महाद्वीप के पश्चिमी प्रायद्वीप हैं। भूगर्भ-शास्त्र ने पूर्ण रूप से यह सिद्ध कर दिया है कि अति प्राचीन काल में दक्षिण-पूर्वी द्वीपसमूह तथा आस्ट्रेलिया भी उसी के अङ्ग थे, क्योंकि यहां पर जो सागर चीन व भारतवर्ष को जावा, सुमात्रा, बोर्नियो व फिलिपाइन से पृथक करते हैं, वह बहुत कम स्थानों पर ६०० फीट से अधिक गहरे हैं। इस प्रकार का उथला सागर फिलिपाइन से दक्षिण-पूर्व की ओर न्यूगिनी तथा उससे भी दूर आस्ट्रेलिया के उत्तरी तट तक चला गया है।

भूमण्डल पर इस महाद्वीप की स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है। इसके उत्तर में आर्कटिक महासागर, पूर्व में प्रशान्त महासागर तथा दक्षिण में हिन्द महासागर स्थित है। पश्चिम की सीमान्त-रेखा तो बहुत ही अधिक टेढ़ी-मेढ़ी है। कहीं कहीं पर तो स्वेच्छाचारी होने के अतिरिक्त ६०° पूर्वी देशान्तर के समानान्तर तथा कहीं पर पश्चिम में ३०° पूर्वी देशान्तर के समानान्तर चली गई है। कुछ स्थानों पर तो किसी भी प्रकार का भू चिन्ह भी दृष्टिगोचर नहीं होता, परन्तु कुछ भी हो, हमें यह मानना पड़ेगा कि यहां पर ऐसी विस्तृत पर्वत श्रेणियां व आन्तरिक सागर मिलते हैं, जिनसे कि वह प्राकृतिक सीमा, जो कि एशिया को योरोप से अलग करती है, बन जाती है। उत्तर में ७०° उ० अक्षांश से लेकर ५०° उ० अक्षांश तक यूराल पर्वत तथा यूराल नदी, इसके पश्चात् कैस्पियन सागर, काकेशस पर्वत, काला सागर तथा लाल सागर मिल कर इसकी प्राकृतिक सीमा बनाते हैं। स्वेज के जलडमरूमध्य के स्थान पर एशिया अफरीकन प्रायद्वीप से

एक ऐसी तंग नहर द्वारा कटा हुआ है, जो कि भूमध्य सागर को लाल सागर से मिलाती है। इस केन्द्र से दूर पूर्व में 'ईस्ट केप' तक का विस्तार ६७०० मील का है, यहां पर बेरिंग जलडमरूमध्य की चौड़ाई केवल ३६ मील है जो कि इस महाद्वीप को नवीन दुनिया से पृथक करता है। एशिया की सब से अधिक चौड़ाई उत्तर से दक्षिण में, केप चेल्युस्किन (आर्कटिक सागर) से लेकर केप रोमानिया (मलक्का का दक्षिणी भाग) तक लगभग ५,३०० सौ मील है; इसको हम उस सीधी रेखा से प्रकट कर सकते हैं जो कि १०४° पूर्वी देशान्तर पर खींची जाय।

इन सीमाओं के अन्तर्गत एशिया एक चौकोर रूप प्रस्तुत करता है, जो कि दिशाओं पर आधारित है। परन्तु दक्षिण की सीमा कुछ मर्यादाहीन हो गई है, क्योंकि इसमें से तीन प्रायद्वीप दक्षिण की ओर ही निकले हुये हैं। ये इस प्रकार हैं, पश्चिम में अरब, मध्य में भारतवर्ष तथा पूर्व में इण्डोचीन। विश्व-मानचित्र को यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय, तो प्रतीत होगा, कि यह तीनों प्रायद्वीप योरोप के स्पेन, इटली व ग्रीस से मिलते जुलते हैं। अरब स्पेन की तरह ही समतल उच्च भूमि वाला प्रायद्वीप है, जिसकी तट-रेखा लगभग सीधी ही है। भारतवर्ष इटली की भांति उत्तर में ऊँची ऊँची पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ है, मध्य में पर्वत है तथा दक्षिण में द्वीप है। ठीक इसी प्रकार से हम पूर्वी द्वीपसमूह, जो कि इण्डोचीन प्रायद्वीप से आस्ट्रेलिया तक विस्तृत है, की तुलना उस इजियन सागर के द्वीप समूह से कर सकते हैं जो कि ग्रीस प्रायद्वीप से लेकर टर्की तक फैला हुआ है। वास्तव में यदि देखा जाय तो टर्की स्वयं ही एशिया महाद्वीप का एक पश्चिमी प्रायद्वीप है और योरोप के एक तुच्छ पश्चिमी प्रायद्वीप, ब्रिटैनी से मिलता जुलता है। कोरिया प्रायद्वीप की तुलना क्रीमिया से की जा सकती है, क्योंकि दोनों ही तंग आन्तरिक सागरों की ओर निकले हुये है। यहां तक कि जापान द्वीपसमूह ब्रिटिश द्वीप समूह से बहुत कुछ मिलता जुलता है। दोनों का लगभग एक सा ही विस्तार है, मध्य में पर्वत है तथा उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र गर्म जल धाराओं से प्रभावित होते हैं।

इस महाद्वीप के उत्तर में एक बहुत विस्तृत निचला भाग है जो कि सैकड़ों मील अन्दर की ओर फैला हुआ है। यह टुण्ड्रा कहलाता है; इसमें चारों ओर बर्फ ही बर्फ दृष्टिगोचर होती है। वर्ष में केवल तीन माह के लिये यह बर्फ हटती है उत्तर की ओर से बहुत ही तीव्र व ठण्डी हवायें चलती हैं। यहां मानव स्थापना केवल नाममात्र को है। इसके दक्षिण की ओर साइबेरिया की उच्च भूमि है जिसमें होकर ओबे, यैनेसी व लेना तथा अन्य छोटी नदियाँ बहती हैं। यह नदियाँ वर्ष में बहुत थोड़े समय तक अपना जल आर्कटिक सागर में डालती हैं,

क्योंकि इन पर प्रायः बर्फ की पर्त जमी रहती है। इस प्रकार ध्रुवीय सागर सम्पूर्ण एशिया के उत्तरी तट को हर समय छूता रहता है। इस ध्रुवीय सागर की खोज एक स्वीडन के नाविक, जिसका नाम नोर्डेन्सजोड (Nordenskjod) था, प्रथम बार १८७८-७९ में उत्तर पूर्व की यात्रा के समय की थी। इसी ने इस महाद्वीप के सब से उत्तरी भाग केप सेवीरो (Cape Severo) की खोज की। यह उजाड़ उत्तरी किनारे, नवीन साइबेरिया के द्वीप समूह तथा रैंगल के भाग, सब मिलकर मुख्य आर्कटिक भाग बनाते हैं। यहां बहुत ही कम मानव स्थापना है, केवल कहीं कहीं पर थोड़े से बंजारे पाये जाते हैं। इनमें मुख्य सैमोयेड (Samoyede) याकूत (Yakut) यूकाघिर (Yukaghir) तथा चुकची (Chukchi) जातियां हैं। इस प्रकार से, उत्तर के खुले हुये निचले समतल क्षेत्र, मध्य की ऊंची ऊंची पर्वत श्रेणियां तथा दक्षिण में इतना अधिक विस्तार इत्यादि कुछ ऐसे भौतिक तत्त्व हैं, जिनके कारण यहां की जलवायु महाद्वीपी है। बाद वाले शब्द का अर्थ यह है, कि ग्रीष्म ऋतु में बहुत अधिक तापक्रम तथा शीत-ऋतु में बहुत कम। यह एक ऐसा महाद्वीप है, जहां पर कम से कम तथा अधिक से अधिक तापक्रम अङ्कित किया जाता है। साइबेरिया के शीत के विषय में तो हर एक ही जानता है। ग्रीष्म ऋतु भी यहां की काफी गर्म होती है। शीत ऋतु में आर्कटिक प्रदेश की रातें इतनी ठण्डी होती हैं कि तापक्रम हिमांक से भी नीचे गिर जाता है। इसके विपरीत जून में यहां दिन के समय बहुत कम ऐसा होता है कि तापक्रम १००° का पहुँच जाय। सबसे खराब स्थिति के क्षेत्र वे हैं, जो कि तैमूर प्रायद्वीप से लेकर कोलिमा नदी तक विस्तृत हैं, यहां कई स्थानों पर स्थायी रूप से बर्फ जम जाया करता है। लेकिन इससे भी दूर पूर्व में, लगभग सम्पूर्ण उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र का रूप बर्फ के कारण अजीब दृष्टिगोचर होता है, विशेषतौर पर चुकची प्रदेश जो कि बेरिंग जलडमरूमध्य तक फैला हुआ है। यहीं पर कमच्टका प्रायद्वीप है, जो कि दक्षिण की ओर निकला हुआ है, और दूर क्यूराइल द्वीपसमूहों को पार करता हुआ, जापान के उत्तरी द्वीप होकैडो तक चला गया है। ज्वालामुखी उद्गार जो कि वर्षों पहले इस महाद्वीप पर समाप्त हो चुके थे अब भी कमच्टका प्रायद्वीप पर कभी कभी हो जाया करते हैं। इसका पूर्वीय तट अब भी धधकते हुये ज्वालामुखी पर्वतों से घिरा हुआ है। ज्वालामुखी पर्वत क्यूराइल द्वीप तक चले गये हैं, इस प्रायद्वीप से लगी हुई एक छोटी सी खाड़ी है, जो कि 'ओखोटस्क सागर' के नाम से प्रसिद्ध है। इसके तट पर लमूत (Lamut) तथा तुंगस (Tungus) जाति के लोग रहते हैं। कृषि के दृष्टिकोण से यह क्षेत्र अधिक महत्वपूर्ण है जिसमें होकर आमूर नदी

बहती हुई निकलती है, और साखालीन द्वीप के निकट तंग सागर में जा गिरती है। यह द्वीप, जो कि रूप में तंग व लम्बा है, एक स्थान पर महाद्वीप से मिला हुआ है। इस स्थान पर यह ज़ार (Tsar) राज्य की सीमा प्रकट करता है।

शाखालीन एक तंग जलडमरूमध्य ला पेराउज़ (La Perouse) द्वारा उन जापान द्वीप समूहों से पृथक है जो कि धनुपाकार रूप में दक्षिण की ओर कोरिया प्रायद्वीप तक फैले हुये हैं। इस प्रकार से तीनों ओर भूमि से घिरा हुआ जापान सागर बना है, जिसका सम्बन्ध तारतरी की खाड़ी द्वारा ओखोटस्क के सागर से है, इसके अतिरिक्त कोरिया जलडमरूमध्य में दक्षिण की ओर पीले तथा पूर्वी सागरों से भी है। इन सागरों के पूर्व 'कुरोशिवो' या "ब्लैक स्ट्रीम" गर्म जलधारा बहती है। यह लगभग उन्हीं अक्षांसों के मध्य में है, जिनमें कि अटलांटिक में 'गल्फ स्ट्रीम', लेकिन इसकी महत्ता प्रशान्त महासागर में गल्फ स्ट्रीम की अपेक्षा अधिक है। इसका कारण यह है, कि प्रशान्त महासागर बहुत विस्तृत है। द्वीप भी इसमें बहुत कम हैं। किरोशिवो जलधारा को अपने प्रवाह में कोई भी अड़चन नहीं होती, बल्कि उसका एक ऐसा निश्चित मार्ग है ,जिसके द्वारा वह उन तमाम भू भागों की जलवायु व वनस्पति पर प्रभाव डालती है, जो रास्ते में पड़ते हैं। इसका सबसे गहरा प्रभाव जापान में प्रतीत होता हैं। यदि हम इसमें प्रवेश करें तो कुछ स्थानों पर तो हमें सम उष्णकटिबन्धीय क्षेत्रों जैसा वातावरण मिलेगा। यहाँ की मनोरंजक जलवायु तथा सुन्दर प्राकृतिक दृश्य मिलकर एक ऐसा वातावरण प्रस्तुत करते हैं जिसमें कि अजीब तरह की सभ्यता का विकास होता है। यह सभ्यता पश्चिमी लोगों के हृदय में जापानियों के प्रति ऐसा भाव उत्पन्न करती है जो कि दयालु है। जापानियों की औद्योगिक उन्नति, यहाँ के घने बसे हुये नगर, (जो कि ज्वालामुखी पर्वतों के नीचे स्थित हैं,) उनकी वीरता की भावना तथा उच्च व प्रबल सामाजिक व राजनैतिक दृष्टिकोण इत्यादि कुछ ऐसी सच्चाइयां हैं, जो कि वास्तव में सराहनीय हैं, और जिन्होंने पश्चिमी देशों के लोगों की विचारधारा पर गहरा प्रभाव डाला है।

जापान द्वीपसमूह के दक्षिण में ल्यूक्यू द्वीप स्थित है, इन द्वीपों पर जापानियों व चीनियों, दोनों का अधिकार रहा है। वास्तव में यह द्वीप उस पर्वतीय चेन की आखिरी कड़ी हैं, जो कि एशिया के पूर्व में बेरिंग जलडमरू से लेकर चीन सागर तक समुद्र के नीचे चली आई है। अनुमान लगाया जाता है, कि इसी की दूसरी शाखा दक्षिण में फारमूसा तक चली आई है तथा यहीं और

दक्षिण में फिलीपाइन्स के निकट बश्यान द्वीप तक चली गई है। फारमूसा की स्थिति भौतिक दृष्टिकोण से बड़ी महत्वपूर्ण है, क्योंकि कर्क रेखा, लगभग इसके मध्य से होकर जाती है। यह उष्ण कटिबन्धीय तथा समशीतोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्रों के मध्य में आता है, तथा मैले (Malay) जाति का उत्तरी विस्तार प्रकट करता है। परन्तु इसमें चीनी लोग भी रहते हैं। इस प्रकार से चीनी संस्कृति का भी प्रभाव यहां दृष्टिगोचर होता है। फारमूसा के बाद दक्षिण की ओर फिलीपाइन द्वीप आता है, समस्त भाग आस्ट्रेलिया के नाम से प्रसिद्ध है। यहीं पर प्रसिद्ध मलेशिया द्वीप समूह है, जो कि बड़ी सरलता से दक्षिण-पूर्वी एशिया के भाग से मिलकर आस्ट्रेलिया से मिल गया है।

यद्यपि नी ऐलिआज़, मोन्टगोमेरी, फोसिथ, गिल, प्रजवल्सकी, कोस्टेंको रिक्टोफेन, वमकेरी, श्लेगिनवीत, केरी, दंगहस्वैड, रोकहिल, बोवर, ग्रोम, बेविस्की रोबोरोस्की, लिटिल डेल, कर्जन, स्वेन हेडिन, डीज़ी, वैल्वी, कोम्पबेल बोनिन, स्टीन, गर्जबेच्चर इत्यादि लोगों ने अनेकों खोज की हैं, परन्तु फिर भी इस महाद्वीप पर बहुत कुछ शेष है। भारतवर्ष, पश्चिमी साइबेरिया, पैलेस्टाइन तथा काकेशस ही ऐसे देश कहे जा सकते हैं, जिनकी भली भांति खोज हो चुकी है। भारतवर्ष तो कदाचित् संसार का सबसे अच्छा देश है। इन देशों के अतिरिक्त हमारा ज्ञान अरब, कोरिया, तिब्बत, मध्य एशिया, इन्डोचीन, यूनान, कान्सू, उत्तर-पूर्वी साइबेरिया इत्यादि देशों के विषय में बहुत सीमित है। यह वास्तव में एक बड़ी जटिल भौगोलिक समस्या है। गत वर्षों में कुछ देशों को तो पूर्ण रूप से जान लिया गया है। आशा की जाती है कि भविष्य में शेष अन्य देशों के बारे में भी पूरा ज्ञान हो जायेगा।

एशिया का धरातल

एशिया के मध्य का भाग भूमण्डल पर एक बहुत ही विस्तृत व उच्च क्षेत्र है। यहां पर उच्च पठार व पर्वत श्रेणियां दूर दूर तक फैली हुई दृष्टिगोचर होती हैं। भूमण्डल पर इनकी उंचाई १०,००० से लेकर १८००० फीट तक है। यहीं पर हमको हिमालय, कुनलुन, त्यानशान तथा अल्टाई जैसी उच्च पर्वत श्रेणियां



एशिया का धरातल

मिलती हैं। एशिया का पर्वतीय रूप पश्चिम की ओर तंग तथा पूर्व की ओर चौड़ा होता गया है। पश्चिम की ओर पर्वत श्रेणियों का केन्द्र पामीर पठार है जो दूसरे शब्दों में 'विश्व की छत' के नाम से प्रसिद्ध है। वास्तव में देखा जाय तो यही 'छत' इस महाद्वीप के भौतिक रूप का आधार है।

पश्चिम की ओर यदि दृष्टि डाली जाय, तो ईरान का वह भी पठार दृष्टिगोचर होता है, जो हिन्दुकुश तथा सुलेमान पर्वतों से लेकर अफ़गानिस्तान, बिलोचिस्तान, ईरान व फ़ारस की खाड़ी को पार करता हुआ मैसोपोटामियाँ तक पहुंचता है। उत्तर-पश्चिम की ओर इसका सम्पर्क कुर्दिस्तान की पहाड़ियों तथा आरमीनियां की उच्च भूमि से हो गया है। पश्चिम में यह पठार एशिया माइनर के अनाटोलिया पठार तथा लिबेनन की बर्फ़ीली चोटियों में ओझल हो जाता है। परन्तु उत्तर की ओर कुर की घाटी में यह एकदम से नीचा हो गया है। इस ऐतिहासिक घाटी को पार करने के पश्चात् यह पठार पुनः ऊंचा हो जाता है और अन्त में काकेशस पर्वत का रूप धारण कर लेता है। काकेशस पर्वत स्वयं तामन प्रायद्वीप होता हुआ क्रिमिया तक आता है, न केवल इतना ही बल्कि दक्षिण-पूर्व में केस्पियन सागर को पार करके एक ऐसे उच्च भाग में लुप्त हो जाता है, जो कि इसको तुर्किस्तान की निम्न भूमि से अलग करता है।

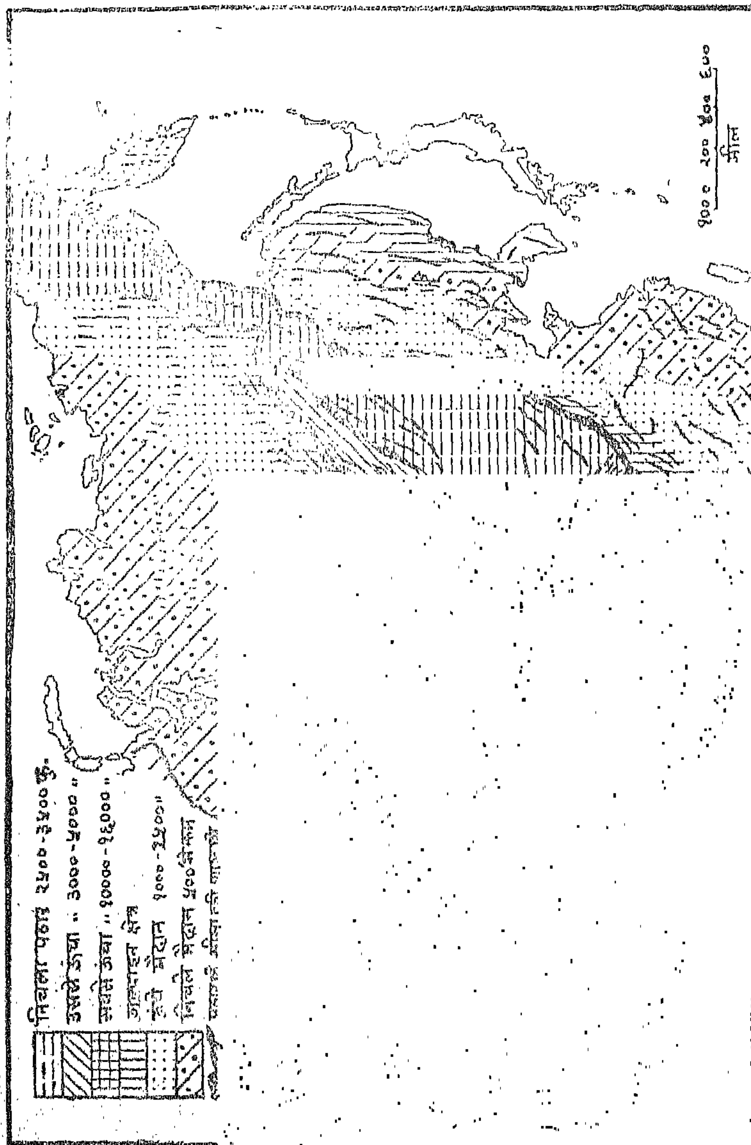
मध्य एशिया के पठारी क्षेत्र के दक्षिण में दो पठार हैं, पहला अरब तथा दूसरा दक्षिणी भारत का पठार। दोनों पठार दक्षिण-पश्चिम की ओर उठे हुए हैं, और उत्तर-पूर्व में मैदानी भाग में लुप्त हो जाते हैं। एक तीसरा महत्वपूर्ण पठार यूनान का पठार है जो दक्षिणी चीन में सम्मिलित है। इस पठार के दक्षिण में शान का पठार है, परन्तु यह अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। मध्य एशिया का पठारी भाग दक्षिण के पठारों से हिमालय पर्वत श्रेणियों द्वारा पृथक है*। यह पर्वत-श्रेणियां बहुत ही ऊंची व विस्तृत हैं, और अफ़गानिस्तान से आरम्भ होकर बर्मा तक चली गई हैं। बर्मा के दक्षिण में यही श्रेणियां कठिन रूप धारण करके भारतीय महासागर में लुप्त हो जाती हैं।

पूर्व में एशिया का निचला भाग आरम्भ हो जाता है। इस भाग में केवल शान्टंग तथा मंचूरियन उच्च भूमि को छोड़ कर और कोई विशेष पठारी क्षेत्र दृष्टिगोचर नहीं होता। पूर्वी एशिया के मैदानी भाग केवल नदियों की घाटियां ही हैं। इनमें से आमूर, मध्य मंचूरिया व उत्तरी चीन की नदियां, यांगटिसी क्यांग, सिक्यांग, मिकांग तथा मिनाम उल्लेखनीय हैं। इन नदियों की घाटियों को प्राचीन पर्वत श्रेणियां अलग करती हैं।

उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में मंगोलिया तथा साइबेरिया के उच्च व निम्न भाग सम्मिलित हैं। यहीं से लेकर यिनिसा, लेना तथा आल्डन नदियां बहती हैं। उत्तर-पूर्व की ओर यह भूभाग उठा हुआ है। याब्लोनाय पहाड़ियाँ आर्कटिक तथा प्रशान्त के मध्य हैं, कुछ ऊपर में स्टेनोवाय पर्वत श्रेणी स्थित है, ओखोटस्क

* Vide—"The Continent of Asia" by W. Lyde. Pages 59—60

नदी इन दोनों के मध्य से होकर बहती है। एक छोटी सी श्रेणी बरखोयानस्क है, यह पश्चिम से पूर्व तक फैली हुई है। याबलोनाय के दक्षिण में केन्टी तथा इसके पश्चिम में चीनी अल्टाई, सेलंघम तथा पश्चिमी स्थान के खण्ड हैं।



मध्य एशिया का धरातल

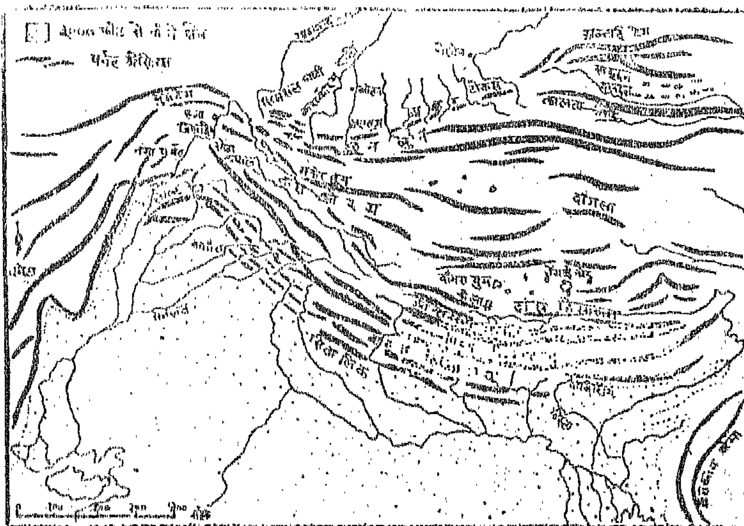
याबलोनाय श्रेणी के पश्चिम में पिंट पर्वत है। किन्घन पर्वत के पूर्व में ब्रूनी

पर्वत श्रेणी है, जो वास्तव में मंचूरियन उच्च भूमि का ही भाग है।

उत्तर-पश्चिमी भाग में एक बड़ा निम्न त्रिभुजाकार क्षेत्र है। यदि ध्यान-पूर्वक देखा जाय तो यह भाग एक बड़ा मैदान नहीं कहा जा सकता है। इसका विस्तृत हाल साइबेरियन रूस के अध्ययन में दिया गया है। वैसे हम इस भाग को तीन श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं (१) पश्चिमी साइबेरिया का भाग, जो कि वास्तव में निम्न समतल मैदान है। इसकी पश्चिमी सीमा यूराल पर्वत निश्चित करते हैं (२) द्वितीय मध्य साइबेरिया का भाग है, जो एक निम्न पठारी क्षेत्र है। यह जगह-जगह पर टूटा-फूटा है। तृतीय भाग एक पहाड़ी व मैदानी भाग है, इसमें कई स्थानों पर प्राचीन चट्टानों के टीले दृष्टिगोचर होते हैं।

मध्य एशिया के पर्वतीय व पठारी क्षेत्र :—

एशिया के मध्य का भाग क्षेत्रफल में तीस लाख वर्गमील से अधिक है। यह आन्तरिक भाग केवल एक ही पठार का रूप धारण नहीं करता—वरन् इसमें अनेक छोटे छोटे से पठारी व पहाड़ी भाग हैं, जिनकी ऊंचाई विभिन्न स्थानों पर भिन्न है। पठारों पर दूर-दूर तक लम्बी पर्वत श्रेणियां दृष्टिगोचर होती हैं। गड्ढों



अल्पाइन पर्वत श्रेणियां

की अधिक से अधिक गहराई इतनी है कि वह समुद्र सतह से फिर भी दो हजार फीट ऊंचे रहते हैं। उच्च पठारों में तिब्बत का पठार है, जो कि १४००० से लेकर १६००० फीट तक ऊंचा है, तथा कुनलुन व हिमालय पर्वत श्रेणियों के मध्य स्थित है। पश्चिम में पामीर और पूर्व में कोकोनोर बेसिन एक दम से १२००० व

९,००० फीट गहरे हो गये हैं। कुनलुन पर्वत श्रेणियों के पूर्व में गोबी रेगिस्तान का भाग चार हज़ार फीट से अधिक गहरा हो गया है। कुछ पश्चिम में जहाँ तारिम बेसिन तथा लोबनोर गड्ढे हैं, वहां गहराई केवल इतनी रह जाती है, कि वह समुद्री सतह से २०७० फीट रह जाती है। कुछ भी हो सम्पूर्ण एशिया महाद्वीप की औसत ऊंचाई १६०० फीट के लगभग है। यदि इस भाग में यात्रा की जाय तो हज़ारों मील तक केवल चौड़ी चौड़ी घाटियां व गड्ढों के अतिरिक्त अन्य कोई भी विशेष वस्तु दृष्टिगोचर नहीं होगी। यहां के प्राकृतिक दृश्य इतने सुन्दर व आकर्षित नहीं होते जितने की पर्वतीय क्षेत्रों के होते हैं।

मुख्य पर्वत श्रेणियां :—

एशिया के भौतिक मानचित्र पर दृष्टि डालने से प्रतीत होता है कि अनेक पर्वत श्रेणियों का केन्द्र पामीर पठार ही है। यहीं से पर्वत श्रेणियाँ चारों ओर को फैली हुई हैं। दक्षिण-पूर्व में हिमालय पर्वत, जिसके उत्तर में काराकोरम पर्वत श्रेणियां हैं। दक्षिण-पश्चिम में हिन्दूकुश, दक्षिण-पश्चिम में सुलेमान व किरथर, उत्तर-पश्चिम में ट्रांस अल्टाई, अल्टाई तथा हिसार, पूर्व में कुनलुन तथा उत्तर-पूर्व में त्यानशान पर्वत श्रेणियां हैं।

हिमालय पर्वत का विस्तार भारतवर्ष के उत्तर में पश्चिम से पूर्व तक धनुषाकार रूप में है। सिन्ध नदी की गहरी घाटी से लेकर ब्रह्मपुत्र की गहरी घाटी तक इसकी लम्बाई १५०० मील से भी अधिक है। पूर्व में यह दक्षिणी चीन तक चला गया है, और अन्त में नानशान पर्वतों में लुप्त हो जाता है। यह संसार का सबसे ऊंचा पर्वत है और हमेशा बर्फ से ढका रहता है। हिम रेखा १८५०० फीट से नीची नहीं है। हिमालय पर्वत श्रेणियां तीन भागों में विभाजित की जा सकती हैं। प्रथम आन्तरिक हिमालय (जसंकार श्रेणी), द्वितीय मध्य हिमालय (पंगी श्रेणी) तथा तृतीय बाह्य हिमालय (पीर पंजाल श्रेणी)। पूर्व में हिमालय पर्वत की ही एक श्रेणी अराकान, तिनासिरिम, अण्डमन तथा निकोबार होती हुई दक्षिण पूर्वी द्वीप समूह तक चली गई है। हिमालय पर्वत के उत्तर में काराकोरम पर्वत स्थित है। ऐसा प्रतीत होता है कि काराकोरम या 'ब्लैक रबिल' (Black Rubble) नाम इन पर्वतों का चंगेज़खाँ ने रखा था, क्योंकि उसकी प्राचीन मंगोल राजधानी काराकोरम कहलाती थी। यारकन्दी यात्री भी उन मार्गों को जो यहां तक आते थे काराकोरम मार्ग कहते थे। इस पर्वत श्रेणी पर तीन तारिम काँगरी चोटियाँ (२४२००–२४५००) दो गैशार ब्रुम चोटियाँ (२६३००–२६५००) तथा दो के टू (K2) चोटियाँ (२८४००) तथा ब्राड्ड चोटी (२५२००) स्थित हैं। अधिकतर श्रेणियां काराकोरम में ही सम्मिलित हैं। इसमें अनेक शिखायें २२००० फीट से अधिक हैं। कैलास पर्वत मानसरोवर के निकट एक महत्वपूर्ण

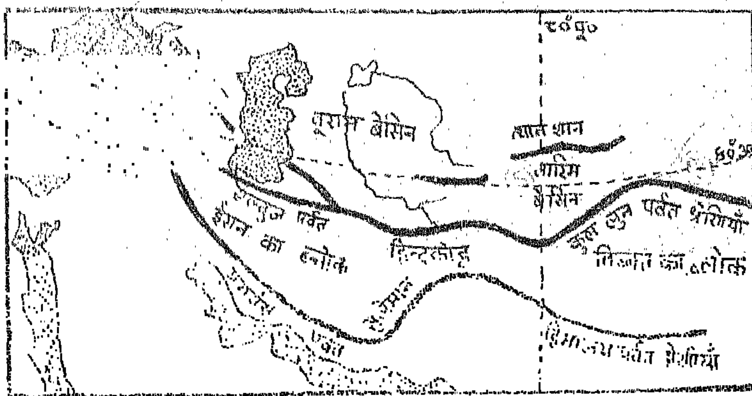
शिखा है ।

पामीर के दक्षिण-पश्चिम में हिन्दुकुश पर्वत श्रेणियां है, जो कि ईरान के उत्तर में दूर तक पश्चिम की ओर चली गई हैं। ईरान में यह एल्बुर्ज पर्वत कहलाते हैं। ईराक में कुर्दिस्तान की पहाड़ियाँ इसी श्रेणी की शाखायें हैं। यदि देखा जाय तो हिन्दूकुश की ही मुख्य शाखा काकेशस है। वैसे एल्बुर्ज पर्वत श्रेणी आरमीनियम गाँठ को पार करती हुई टर्की के पोन्टियन श्रेणी में मिल जाती है।

दक्षिण-पश्चिम की ओर सुलेमान व किरथर पर्वत श्रेणियां हैं। इनके दक्षिण में सीस्तन ईरान पठारों की चट्टानें उठी हुई दृष्टिगोचर होती हैं। दक्षिण-पश्चिम की ओर जैगरोस पर्वत है। इसमें ईरान का लगभग सम्पूर्ण पश्चिमी भाग सम्मिलित है। वास्तव में यही ईरान की प्रमुख श्रेणी है। पठार पर इसकी शिखायें ४००० से लेकर ६००० फीट ऊंची हैं। समुद्र सतह से यह ११००० फीट से भी अधिक ऊंची हो गई हैं। पश्चिम में यह पर्वत बहुत कटे फटे हैं, परन्तु पूर्वी भाग अधिक शुष्क है। जैगरस पर्वत भी आरमीनियां गांठ को पार करते हुये टर्की के टोरस पर्वत तक चले गये हैं।

पामीर के उत्तर-पश्चिम में ट्रांस अल्टाई, अल्टाई और हिसार पर्वत श्रेणियां हैं। यह पश्चिम की ओर रूसी तुर्किस्तान में समाप्त हो जाती हैं। इनके उत्तर में अनेक श्रेणियाँ उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम तक फैली हुई हैं वे भी रूसी तुर्किस्तान में समाप्त हो जातीं हैं।

एशिया के पूर्व में कुनलुन पर्वत श्रेणियाँ दूर तक विस्तृत हैं। इनकी कुल लम्बाई २५०० मील है। यह पृथ्वी की प्राचीन पर्वत श्रेणियों में से हैं, इसकी



मुख्य पर्वत श्रेणियां

चोटियाँ भिन्न भिन्न नष्ट ध्वस्त हो गई हैं। घिरी हुई शिखाओं की ऊंचाई २२०००

से लेकर २५००० फीट है। यह साईदम दलदल के दक्षिण में होती हुई चीन के सिंगलिंग श्रेणी में परिवर्तित हो जाती हैं। अल्टाई टेग जो कि इसके उत्तर में एक श्रेणी है, पूर्व में नानशान या चीन के दक्षिणी पर्वतों में लुप्त हो जाती है।

पामीर पठार के उत्तर-पूर्व में त्यानशान पर्वत श्रेणी है। यह एक दीवार की भांति एशिया महाद्वीप पर फैली हुई हैं। इसकी श्रेणियाँ दक्षिण में अधिक ऊंची हैं। इसका विस्तार एक धनुषाकार रूप में है; तारिम बेसिन को यह उत्तर-पश्चिम, उत्तर तथा उत्तर-पूर्व की ओर से ढके हुये हैं। पर्वत श्रेणियों के दोनों ढालों में काफी अन्तर है। पर्वतों की औसत ऊंचाई १५००० फीट से अधिक नहीं है। झीलों की सतह से यदि ऊंचाई देखी जाय तो यह उत्तर से दक्षिण की ओर ऊंची होती जाती है। उदाहरणार्थ इज़िक ५२००, सोन ६४०० चार्टर ११३०० फीट। इन पर्वतों पर बहुत अधिक बर्फ वर्षा होती है। पूर्व की ओर यह पर्वत पीशान या उत्तरी चीन के पर्वतों में लुप्त हो जाते हैं। पश्चिम की ओर यह पर्वत श्रेणियां रूसी तुर्किस्तान तक चली गई हैं।

मुख्य पठारी क्षेत्र :—

मध्य एशिया के पठार अधिकतर पर्वत श्रेणियों से घिरे हुये हैं। इन पठारों में तिब्बत, साईदन, तारिम, जुंगेरिया, गोबी तथा ओरडोस मुख्य हैं। उत्तर-पूर्व की ओर विटिम तथा आल्डन पटार भी उल्लेखनीय हैं। इन पठारों की ऊंचाई भिन्न है। सब से ऊंचे पठार वह हैं, जिनकी ऊंचाई १०००० फीट से लेकर १६००० फीट है, इनमें तिब्बत तथा पामीर के पठार विशेषतौर पर सम्मिलित हैं इनसे नीचे वह है, जो ३००० से ५००० फीट ऊंचे हैं तथा जिनमें विटिम व आल्डन के पठार शामिल हैं। प्रिंस क्रोपोतकिन के अनुसार सबसे नीचे पठारों की ऊंचाई २५०० से ३५०० फीट है और इसमें तारिम, जुंगेरिया, बेसिन तथा गोबी के भाग आते हैं। इनमें से कुछ तो रेगिस्तान का रूप धारण किये हुये हैं। कहीं-कहीं तो इन रेगिस्तानों पर दूर तक किसी भी प्रकार की वनस्पति दृष्टिगोचर नहीं होती।

तिब्बत का पठार एशिया का सबसे ऊंचा पठार है। इसकी औसत ऊंचाई १५००० फीट है, और ३५° उत्तरी अक्षांस पर इसकी लम्बाई ७०० मील है। इस पठार की स्थिति दक्षिण में हिमालय तथा उत्तर में कुनलुन के मध्य है। इस पठार पर चौड़ी चौड़ी व कम गहरी घाटियाँ हैं जो कि एक दूसरे के समानान्तर हैं। पठार पर निचली श्रेणियाँ भी पाई जाती हैं जो उत्तर में उत्तर की ओर तथा दक्षिण में दक्षिण की ओर मुड़ी हुई हैं। यहां पर अनेक झीलें भी हैं, कुछ तो समुद्र सतह से १६००० फीट ऊंची हैं।

तारिम बेसिन की स्थिति एशिया में बड़ी महत्वपूर्ण है; इसके उत्तर में त्यान-

शान तथा दक्षिण में कुनलुन व अल्टाई टेग पर्वत श्रेणियां पाई जाती हैं। यह बेसिन पूर्व की ओर खुला हुआ है। रेत बराबर पूर्व की ओर बढ़ रहा है। दूर दूर तक रेत के टीले दृष्टिगोचर होते हैं। तारिम बेसिन एक बहुत ही शुष्क रेगिस्तानी भाग है, यह पश्चिम से पूर्व तक ६०० मील लम्बा है। निकट से निकट जो समुद्र है वह भी यहां से १५०० मील दूर है। स्टीन ने जो यहां पर खोज की है, उसके अनुसार यहां की सस्कृति बहुत प्राचीन है।

तिब्बत के उत्तर में साइदन बेसिन (Tsaidan basin) स्थित है और उसके भी उत्तर में अल्टाई टेग तथा दक्षिण में कुनलुन पर्वत श्रेणियां हैं। पटार बहुत ऊंचा नीचा तथा बंजर है।

जुंगेरिया बेसिन के उत्तर में अल्टाई पर्वत श्रेणियां तथा दक्षिण में त्यानशान पर्वत श्रेणियां हैं। इन दोनों श्रेणियों के मध्य इस बेसिन की स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है।

चीन के उत्तर तथा उत्तर-पूर्व में गोबी का पठार तथा ओरडोस रेगिस्तान स्थित है। ओरडोस रेगिस्तान चारों ओर पीली मिट्टी से ढका हुआ है और उत्तर पूर्व में खिंगन तथा आल्डन के पठार दृष्टिगोचर होते हैं। यह पठार बहुत अधिक विस्तृत नहीं है।

एशिया के पश्चिम में अनेक पठारी क्षेत्र हैं। इनमें से सीस्तान, अफगानिस्तान, बिलोचिस्तान, ईरान, अरब तथा अनाटोलिया इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

दक्षिण की ओर दो पठार हैं, पहला अरब तथा दूसरा भारत का पठार। इन पठारों का उभार उत्तर-पश्चिम की ओर है। दोनों ही पठार उत्तर में समतल मैदानों के नीचे तक प्रवेश कर गये हैं। भारत के उत्तर में गंगा-यमुना तथा अरब के उत्तर में दजला, फरात नदियों के मैदान हैं। इन पठारों के अतिरिक्त बर्मा, स्याम तथा मलाया के पठार भी महत्वपूर्ण हैं।

नदियों के समतल मैदान :—

एशिया के मानचित्र पर दृष्टि डालने से प्रतीत होता है कि घनी जनसंख्या वाले क्षेत्र नदियों की घाटियों में ही पाये जाते हैं। वास्तव में कारण यह है कि यहां समतल धरातल, उपजाऊ मिट्टी तथा उपयुक्त सिंचाई के साधन पाये जाते हैं। एशिया में अनेक ऐसे भाग पाये जाते हैं, जहाँ इन सुविधाओं के कारण बहुत घनी जनसंख्या पाई जाती है। बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण नदियों के मैदानों में दजला, फरात, सिन्ध, गंगा, इन्डोचीन, चीन तथा उत्तरी एशिया के मैदान प्रसिद्ध हैं।

दजला-फरात का मैदान:—

ईराक में दजला-फरात नदियाँ एक महत्वपूर्ण समतल भाग बनाती हैं।

यह मैदान मेसोपोटामियां कहलाता है। इसकी स्थिति एक बहुत ही शुष्क रेगिस्तानी भाग में है। सर्व प्रथम सभ्यता का विकास यहीं से प्रारम्भ हुआ था। उस प्राचीन सभ्यता के केन्द्र बेबीलन, निनैवाह तथा बगदाद इत्यादि हैं। यहाँ पर प्राचीन नहरों के चिन्ह भी पाये जाते हैं। इन चिन्हों से प्रकट होता है, कि यहाँ पर किसी समय सिंचाई की अच्छी व्यवस्था थी और कृषि भी उन्नति की पराकाष्टा पर पहुंच चुकी थी। इन दोनों नदियों की डाली हुई मिट्टी से फारस की खाड़ी जो कि किसी समय काफी उत्तर तक फैली हुई थी, भर गई। मिट्टी यहाँ पर बराबर जमा हो रही है। डेल्टा बढ़ने का औसत ३० वर्ष में एक मील है।

सिन्ध-गंगा का मैदान:—

इसमें बहुत गहराई तक पर्तदार चट्टानों का चूरा पाया जाता है। यह समतल भाग उत्तरी पर्वतीय भाग को प्रायद्वीप से अलग करता है। इस निम्न भूमि का विस्तार बंगाल की खाड़ी से अरब सागर तक है। इसका क्षेत्रफल लगभग तीन लाख वर्गमील है अर्थात् ग्रेट ब्रिटेन व जर्मनी दोनों के क्षेत्रफल से अधिक बड़ा है। इस भाग में भारतवर्ष के बहुत प्रसिद्ध व बड़े नगर पाये जाते हैं। यहाँ कृषि में बहुत अधिक विकास हुआ है। जूट, चावल, गन्ना, तथा कपास यहां की महत्वपूर्ण उपजें हैं। इस मैदान में दो प्रकार की कांप पाई जाती है। प्रथम मोटे कणों वाली मिट्टी, जो कि पर्वत श्रेणियों के किनारे किनारे दूर तक जाती हैं। द्वितीय महीन कणों वाली उपजाऊ मिट्टी। यह मिट्टी नदियों की घाटियों के मध्य तथा निचले भागों में बहुत अधिक मात्रा में पाई जाती है।

इण्डोचीन प्रायद्वीप के मैदान:—

एशिया के दक्षिण-पूर्वी प्रायद्वीप में कई नदियों की घाटियां हैं। यह घाटियां जो आजकल समतल मैदानों के रूप में है, उन पर्वत श्रेणियों के मध्य पाई जाती है, जो कि उत्तर से दक्षिण की ओर फैली हुई हैं। यह पर्वत श्रेणियाँ वास्तव में मध्य एशिया के पर्वतों की ही शाखायें हैं। यहां की घनी जन-संख्या इन नदियों की घाटियों में ही पाई जाती है। प्रमुख नदियां, जो इस भाग में होकर बहती हैं, उनमें बर्मा की इरावदी, स्याम की मिनाम तथा पूर्वी इण्डोचीन की मिकांग अधिक महत्वपूर्ण हैं। इन प्रसिद्ध नदियों के डेल्टों पर बड़े बड़े बन्दरगाह स्थित हैं। उदाहरणार्थ—इरावदी पर रंगून, मिनाम पर बैंकॉक तथा मिकांग पर सैगोन। इन मैदानों का महत्व कृषि के हेतु बहुत अधिक है, आजकल यह विश्व के प्रसिद्ध चावल उत्पादक क्षेत्र हैं।

सिक्यांग बेसिन :—

सिक्यांग नदी का बेसिन चीन का एक बहुत ही प्रसिद्ध प्राकृतिक विभाग है। प्रमुख नदी की घाटी काफी समतल है, परन्तु अन्य सहायक नदियों की घाटियां

इतनी समतल व विस्तृत नहीं हैं। यदि क्रियात्मक दृष्टिकोण से देखा जाय तो सम्पूर्ण बेसिन एक ऐसे पठार के रूप में है, जो कि जगह जगह पर ऊंचा नीचा व टूटा फूटा है। पहाड़ियों के ढालों पर जहां कहीं भी उपजाऊ मिट्टी मिलती है, वहां पंक्तियोंदार खेत दृष्टिगोचर होते हैं। यहां की मिट्टी बड़ी उपजाऊ है, इसी कारण यहां पर उष्ण कटिबन्धीय तथा सम उष्णकटिबन्धीय उपजें भली भांति उत्पन्न हो जाती हैं। नदियों में अन्दर तक १०० मील तक जहाज आ जा सकते हैं। साधारण किश्तियाँ तो काफी अन्दर तक चली जाती हैं।

ह्वांगहो नदी का मैदान :—

उत्तरी चीन में, ह्वांगहो नदी की प्रसिद्ध घाटी है। यह घाटी एक विस्तृत मैदान के रूप में है और एशिया का एक महत्वपूर्ण पूर्वी अंग है। इस मैदान में पीली मिट्टी जो कि लोयेस कहलाती है पाई जाती है। लोयेस की उत्पत्ति के विषय में अनेक मत हैं। इस भाग में बहुत घनी जनसंख्या है, अधिकतर किसान लोगों की बस्तियां दृष्टिगोचर होती हैं। चीन के इतिहास की ओर यदि ध्यान दिया जाय तो पता चलेगा कि यह नदी यहां की जनसंख्या के लिये विनाशक भी सिद्ध हुई है तथा जीवन दाता भी। विनाशक इस दृष्टिकोण से, कि इसमें कभी कभी भीषण बाढ़ आ जाया करती है। जीवनदाता इसलिये कि यह प्रतिवर्ष बहुत ही उपजाऊ मिट्टी अपनी घाटी में एकत्रित कर देती है। इस नदी ने कई बार अपना मार्ग भी परिवर्तित किया है। कभी यह शान्टंग प्रायद्वीप के दक्षिण में तथा कभी उत्तर में लगभग २५० मील दूर गिरती रही है। अधिक वर्षा व बर्फ पिघलने के कारण नदी में बहुत अधिक जल आ जाता है। इसके अन्तर्गत मानव हानि पहुँचने के अतिरिक्त बहुत सी मुलायम लोयेस नदी के तल पर एकत्रित हो जाती है। इसके फलस्वरूप नदी का तल आसपास की भूमि से ऊँचा हो जाता है। बाढ़ के समय जल को रोकने के लिये नदी के दोनों तटों पर बांध बना दिये गये। ह्वांगहो का मैदान एक बहुत ही उपजाऊ क्षेत्र है इसमें भांति भांति की उपजें उत्पन्न होती हैं। लोयेस के समतल भाग में गहरी गहरी खाइयां हैं, जिनमें यहां के किसान लोग रहते हैं। चीन के बड़े मैदान में बड़े बड़े नगर स्थित हैं। यह नगर रेल व सड़कों द्वारा इस देश के अन्य नगरों से मिले हुये हैं।

यांगटिसी नदी का मैदान :—

यांगटिसी नदी की घाटी चीन की एक प्रसिद्ध घाटी है। यह नदी तथा अन्य सहायक नदियां मिलकर चीन के मध्य में एक उपजाऊ मैदान बनाती हैं। इस मैदान में १८०० लाख से अधिक लोग अपना जीवन निर्वाह करते हैं। लोगों का मुख्य धन्धा कृषि करना है। यहां पर अनेक बड़े बड़े नगर बस गये हैं। इन

नगरों में हांककांग, नानकिंग तथा शंघाई इत्यादि प्रसिद्ध हैं। इस समतल मैदान में कई निम्न बेसिन हैं, जो कि वास्तव में इस घाटी में ही सम्मिलित हैं। इन बेसिनों में सबसे अधिक उपजाऊ व महत्वपूर्ण रेड बेसिन है। समुद्र तट से यह १२०० मील दूर है। इस मैदान की मिट्टी बड़ी उपजाऊ है, जलवायु भी यहां बहुत अच्छी पाई जाती है। चैंगटू के मैदान में जनसंख्या घनत्व प्रति वर्ग मील बहुत अधिक है। चावल यहां की प्रमुख उपज है।

यांगटिसी नदी चीन के आन्तरिक भागों को विश्व के अन्य क्षेत्रों से मिलाती है। पोत चलाने के दृष्टिकोण से इस नदी को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(अ) निचला भाग शँघाई से हांगकांग तक। बड़े बड़े जहाज़ हांगकांग तक जो कि समुद्र से ६०० मील अन्दर की ओर स्थित है, आ जाते हैं।

(ब) मध्य की घाटी इशांग से हांग तक है।

(स) शेष ऊपरी घाटी है, जिसमें जगह जगह पर झरने तथा ढाल होने के कारण नावें चलाना असम्भव है। वास्तव में नदी का निचला तथा मध्य का भाग ही नावें व जहाज चलाने योग्य है।

उत्तरी एशिया की नदियों के मैदान :—

यद्यपि उत्तरी एशिया की नदियों के मैदानों का महत्व इतना अधिक नहीं है जितना कि पूर्वी तथा दक्षिणी एशिया के मैदानों का, परन्तु फिर भी इन घाटियों में अधिक जनसंख्या के अतिरिक्त यातायात की सुविधायें पाई जाती हैं। इस क्षेत्र की प्रमुख नदियों में ओबे, येनेसी, लेना तथा आमूर प्रसिद्ध हैं। इन नदियों द्वारा यातायात में सबसे बड़ी असुविधा यह है कि यहां की जलवायु बहुत ठण्डी है, और नदियां वर्ष के आठ माह से अधिक समय तक बर्फ से ढकी रहती हैं। ग्रीष्म ऋतु यहां बहुत छोटी होती है। बड़े बड़े जहाजों द्वारा यातायात असम्भव है। जिस समय थोड़े से भाग में भी बर्फ पिघल जाती है, उस समय यहां के लोग स्थानीय क्षेत्रों में नावों द्वारा यातायात करते हैं।

एशिया के जलाशय

एशिया के जलाशयों में नदियों व झीलों का महत्व बहुत अधिक है। इन्हीं दो प्रकार के जलाशयों के कारण इस महाद्वीप पर उपजाऊ मैदानों का निर्माण हुआ है। यहां की विस्तृत श्रेणियां नदियों के बहाव में कोई विशेष रुकावट नहीं डालतीं। यह विशेषता योरोप व अमरीका की नदियों में नहीं पाई जातीं। मध्य एशिया के पठार पर जो नदियां बहती हैं वह पर्वत श्रेणियों को छोड़ देती हैं। इन नदियों में

कोई भी ऐसी नहीं है, जो कि सम्पूर्ण क्षेत्र में उस प्रकार बहती हो जिस प्रकार कि अमरीका में बहती हैं। यहां पर तो कई ऐसी छोटी छोटी नदियां हैं जो केवल यहीं बह कर समाप्त हो जाती हैं समुद्र में नहीं गिरतीं। लगभग पचास लाख वर्ग मील का क्षेत्र ऐसा है जो कि समुद्र से बिल्कुल भी प्रभावित नहीं होता। वास्तव में वर्षा की कमी तथा शुष्क वातावरण होने के कारण नदियों में कदापि जल नहीं रहता। एशिया की नदियां चार श्रेणियों में विभाजित की जा सकती हैं।

(१) आर्कटिक महासागर में गिरने वाली नदियां।
(२) प्रशान्त महासागर में गिरने वाली नदियां।
(३) भारतीय महासागर में गिरने वाली नदियां।
(४) आन्तरिक जलाशयों में गिरने वाली नदियां।

(१) आर्कटिक महासागर में गिरने वाली नदियां :—

एशिया के उत्तर में बहने वाली नदियों में तीन प्रमुख हैं, ओबे, येनेसी और लेना। यह तीनों नदियां आर्कटिक महासागर में ही गिरती हैं, और विश्व की ग्यारह बड़ी नदियों में सम्मिलित हैं। मध्य एशिया के पठारी क्षेत्र में बहने के पश्चात् यह नदियां साईबेरिया के समतल क्षेत्र में प्रवेश करती हैं। इन नदियों के मुहाने तथा निचले भाग शीत ऋतु में सदा बर्फ से ढके रहते हैं। नदियों के ऊपरी भाग हमेशा जल से भरे रहते हैं, निचले भाग, जो कि शीत ऋतु में बर्फ से जम जाया करते हैं बसन्त ऋतु के समय पिघलने लगते हैं, और दूर दूर तक जल बाढ़ के रूप में दृष्टिगोचर होने लगता है। इन तीन नदियों में ओबे तथा येनेसी ऐसी नदियां हैं, जो कि कोबड़ो और मंगोलियन पठारों की सीमान्त पहाड़ियों को पार करती हुई बहती हैं। लेना नदी, जो कि किसी समय इरकुटस्क के निकट अंगारा (येनेसी बेसिन) से सम्बन्धित थी, अब पहाड़ियों के बाहरी ढालों से निकलती है। अन्य छोटी छोटी नदियों में दुवीना, पिचोरा, यना, इन्डीगिरका तथा अआोलिया इत्यादि हैं।

(२) प्रशान्त महासागर में गिरने वाली नदियां :—

प्रशान्त महासागर में गिरने वाली नदियों में आमूर, ह्वांगहो, यांगटिसीक्यांग तथा सिकांग अधिक महत्वपूर्ण हैं। यह नदियां भी विश्व की ग्यारह बड़ी नदियों में सम्मिलित हैं। इन नदियों के निकलने के स्थान मंगोलियन, कोकोनोर तथा तिब्बत के पठारी भागों में हैं। यह नदियां इन आन्तरिक भागों से निकलने के पश्चात् अनेक बेसिनों में होकर बहती हैं, और अन्त में डेल्टा बनाती हुई प्रशान्त महासागर में जा गिरती है। आर्थिक दृष्टिकोण से यह नदियां बहुत महत्वपूर्ण हैं। अन्य छोटी नदियों में ल्याओ, ह्वाई, सिक्यांग, लाल तथा अनाम इत्यादि प्रसिद्ध हैं।

(३) भारतीय महासागर में गिरने वाली नदियां :—

एशिया के दक्षिण की ओर जो नदियां बहती हैं, उनमें सिन्ध, गंगा तथा ब्रह्मपुत्र प्रसिद्ध हैं। इन नदियों में यद्यपि जल बहुत अधिक रहता है, परन्तु लम्बाई अधिक नहीं है। सिन्धे, ब्रह्मपुत्र तथा सालवीने नदियां हिमालय के उत्तर से निकलती हैं और गंगा तथा उसकी सहायक नदियां हिमालय पर्वत के दक्षिणी ढालों से निकलती हैं। इन सब नदियों के ऊपरी भाग शीत ऋतु में प्रायः बर्फ से ढके रहते हैं, परन्तु बसन्त ऋतु में जब कि बर्फ पिघल जाती है, इनमें बाढ़ आ जाती है। अन्य छोटी छोटी नदियों में इरावदी, सितांग, महानदी, ताप्ती, नर्मदा इत्यादि उल्लेखनीय हैं। पश्चिम की ओर दो प्रसिद्ध नदियां दजला और फ़ुरात हैं, यह दोनों फ़ारस की खाड़ी में गिरती हैं। अराक्जिस नदी केस्पियन सागर में बहती है। यह तीनों नदियां आरमीनिया व कुर्दिस्तान की पहाड़ियों से निकलती हैं। एशिया माइनर में अनाटोलिया के पठार से किज़िल-इमक नदी एन्टीतौरस को चीरती हुई यूक्ज़ाइन में आ मिलती है। लिबेनन तथा नुसारी तट की श्रेणियों को पार करती हुई ओरन्टीज़ नदी बेकाल से भूमध्य सागर में गिरती है।

(४) आन्तरिक जलाशयों में गिरने वाली नदियां :—

एशिया महाद्वीप के मध्य कई ऐसे प्राकृतिक गड्ढे हैं, जिसमें कि निकट-वर्तीय क्षेत्रों का जल आकर एकत्रित हो जाता है। इसी प्रकार का एक बड़ा गड्ढा पूर्वी तुर्किस्तान में है, जो कि समुद्र सतह से दो हज़ार फीट ऊंचा है। इसी क्षेत्र में तारिम अपनी सहायक नदियों सहित पूर्व की ओर लोब लोब में आ गिरती हैं। अन्य नदियों में हेलमन्द तथा उनकी सहायक नदियाँ हैं। ये तथा अन्य अफ़ग़ानिस्तान की नदियाँ मिलकर सीस्तन झील में लुप्त हो जाती हैं। पैलेस्टाइन में मृत्यु सागर जो कि संसार में सबसे गहरा सागर है, उत्तर की ओर से जोर्डन नदी को प्राप्त करता है। अरल सागर एक महत्वपूर्ण जलाशय है। इसके एक तरफ का क्षेत्र पश्चिमी तुर्किस्तान का निचला भाग है, जो कि किसी समय और भी अधिक विस्तृत था। आजकल इस भाग में होकर पामीर, अल्टाई तथा त्यानशान पर्वतों से निकलने वाली नदियां बहती हैं। इन नदियों में केवल दो ही अधिक महत्वपूर्ण हैं, प्रथम आमू तथा द्वितीय सर दरिया। इस निचले क्षेत्र का विस्तार किसी समय इतना था कि पूर्व में यह बालकश झील, पश्चिम में केस्पियन सागर, उत्तर में पहाड़ी श्रेणी (जो कि ओबे और अरल बेसिनों को पृथक करती है), तथा दक्षिण में ईरान के पठार से घिरा हुआ था। केस्पियन सागर में गिरने वाली नदियों में वाल्गा व यूराल अधिक महत्वपूर्ण हैं। बाल्कश झील में गिरने वाली नदियों में इली नदी उल्लेखनीय हैं।

झीलें :—

एशिया में मीठे जल वाली झीलें बहुत ही कम हैं। अधिकतर झीलें नमकीन व खारी पानी की ही हैं। मृत्यु सागर का जल एशिया में सबसे अधिक नमकीन है, इसके अतिरिक्त खारी जलवाली झीलों में कैस्पियन, अरल तथा बालकश बहुत प्रसिद्ध हैं। भूगर्भ शास्त्रियों का कथन है, कि अति प्राचीन काल में मध्य एशिया के पर्वतीय भाग के स्थान पर एक विस्तृत सागर था जो कि वास्तव में भूमध्य सागर का ही एक खण्ड था, धीरे धीरे यह सागर लुप्त हो गया। इसके बचे हुये खण्ड आजकल इन झीलों के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। शुद्ध मीठे जल वाली झील इन खारी झीलों के निकट केवल एक ही है, और वह है "बैकाल झील।" इस झील में जब अधिक जल हो जाता है, तब इसका जल अंगारा और यनैसी नदी द्वारा बाहर बह जाता है। पश्चिमी साईबेरिया के स्टैप्स की झीलें बहुत प्रसिद्ध हैं। पश्चिमी एशिया में कोई विशेष बड़ी झीलें नहीं दृष्टिगोचर होतीं। छोटी छोटी झीलों में गोचका, वान, डरमियां तथा हामुन (सिस्तन) नामक दलदल पाये जाते हैं। इन झीलों में से; कोई भी ऐसी धारा नहीं निकलती जो समुद्र से मिलती हो। सम्पूर्ण भारतवर्ष तथा इन्डोचीन में केवल एक ही झील ऐसी है, जो उल्लेखनीय है। इस झील का नाम तोनली सेप है, जो कम्बोडिया में सिकांग नदी के निकट स्थित है। चीन में केवल दो ही प्रसिद्ध झीलें हैं, टोंगकिंग तथा दूसरी पोयांग। तिब्बत के पठार पर कई ऐसी झीलें हैं, जो प्राकृतिक दृश्य में बड़ी रमणीय हैं। वैसे तो यहां पर अनेक छोटी छोटी झीलें हैं, परन्तु बड़ी बड़ी झीलों में तेंगरी नोर, पाल्टी, बुका, इके-नामुर, कोको नोर, होरपा, चरोल, आरू, धलारिंग, क्यारिंग, दॉंगरायुम, दारू, तथा सीरा चो इत्यादि प्रसिद्ध हैं। उत्तरी मंगोलिया में कास गोल, उबसा, तथा कुलोन, मन्चूरिया में केन्का, उच्च ईरानिया में जैज़ान व डलिंगर, त्यानशान पर इशिक कुल, पूर्वी तुर्किस्तान में लोब नोर, अल्टाई श्रेणी पर तेलेज़ कोई तथा पामीर पर काराकुल प्रमुख उल्लेखनीय झीलें हैं।

एशिया की बनावट Structure

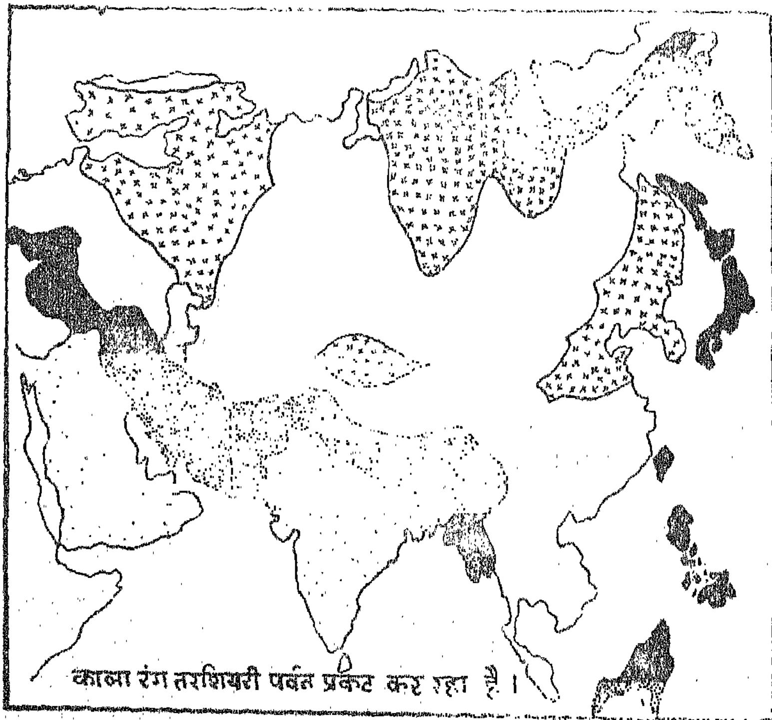
एशिया का ढांचा विभिन्न प्रकार की चट्टानों का बना हुआ है। ये चट्टानें पृथ्वी के नीचे बहुत गहराई तक पाई जाती हैं। इन चट्टानों के पर्त आन्तरिक पृथ्वी में इतने कठोर हैं कि फौलाद से भी अधिक। जैसे ही जैसे हम भूमि की गहराई की ओर जाते हैं, वैसे ही वैसे चट्टानों का घनत्व भी बढ़ता जाता है। यहां तक कि मध्य का घनत्व ११ है, जब कि ऊपरी पर्त का केवल २·७ ही है। वास्तव में धरातल एवं भूतल की बनावट पृथ्वी के ढांचे पर ही निर्भर रहती है।

धरातल में उन वस्तुओं का अध्ययन किया जाता है, जो कि प्रत्यक्ष रूप से हमको भूतल पर दृष्टिगोचर होती हैं। इसके विपरीत ढांचे में उन वस्तुओं का अध्ययन सम्मिलित है, जो कि धरातल के नीचे हैं, और साधारणतया दृष्टिगोचर नहीं होतीं।

एशिया के धरातल के विषय में सभी विद्वानों को थोड़ा बहुत ज्ञान है, परन्तु ढांचे के विषय में अभी मतभेद है। वैसे एशिया का ढांचा बहुत ही साधारण है, और कई भूगर्भ शास्त्रियों ने इसका घोर अध्ययन भी किया है, जिनके मत पारस्परिक बहुत कुछ मिलते जुलते भी हैं। परन्तु फिर भी थोड़ा बहुत अन्तर अवश्य पाया जाता है। नीचे हम केवल दो ही विद्वानों के मत इस सम्बन्ध में प्रकट कर रहे हैं।

आरगंड की विचार धारा :—

एशिया के ढांचे के विषय में श्री ई० आरगंड ने अपने विचार सर्वप्रथम १६२२ में अन्तर्राष्ट्रीय भूगर्भ कांग्रेस के सम्मुख ब्रूसेल में प्रकट किये। उनके



एशिया की बनावट

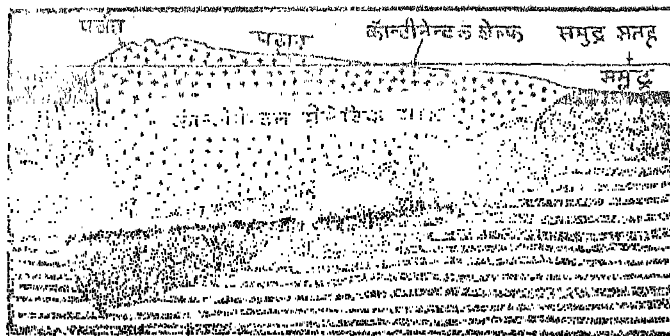
मत की सराहना हुई क्योंकि उन्होंने एक निराले ही ढंग से इस समस्या को सुलझाया है। यहां हम उनके समस्त अध्ययन का वर्णन नहीं कर सकते, बल्कि हाँ उसका संक्षिप्त विवरण अवश्य दे सकते हैं। आरगंड महाशय ने एशिया महाद्वीप को ढाँचे के दृष्टिकोण से चार निम्नलिखित भागों में विभाजित किया है:—

(१) उत्तर में चार अति प्राचीन पठारी भूखण्ड [(१) रूसी खण्ड अथवा बाल्टिक शील्ड (२) अंगारा लैंड (३) साइबेरियन मैसिफ या कठोर भूखण्ड (४) चीनी मैसिफ] इन भूखण्डों का ढाँचा कैम्ब्रिज युग के पहले की चट्टानों का बना हुआ है। ये चट्टानें अति कठोर हैं, और बहुत धीरे धीरे घिस रही हैं।

(२) दक्षिण में दो अति प्राचीन पठारी भूखण्ड (अरब तथा भारतवर्ष) ये दोनों ही कैम्ब्रिज युग के पूर्व की चट्टानों के बने हुये हैं।

(३) लहरीदार मोड़ वाले यंग पर्वतों की पेटी, जो कि इस महाद्वीप पर अल्पाइन या तरशियरी पर्वतों के नाम से प्रसिद्ध है। यह पर्वत उन पर्तदार चट्टानों के बने हुए हैं जो कि बहुत प्राचीन नहीं हैं।

(४) इसमें एशिया महाद्वीप के वे शेष भाग सम्मिलित हैं, जो कि पैल्योजोयेक चट्टानों के बने हुये हैं। इन चट्टानों के लहरदार पर्वत अल्पाइन या तरशियरी पर्वतों के पहले ही बन चुके थे।



[सिमाल्ट नामक पदार्थ पर तैरता हुआ ग्रेनेटिक खंड, कदाचित सिमाल्ट नामक पदार्थ के नीचे पेरीडोटिक पदार्थ उपस्थित है—
आर्थर होम्स के आधार पर]

इन भूखण्डों का पूर्ण विवरण देने के हेतु यह आवश्यक है, कि एशिया के मानचित्र को ध्यानपूर्वक भौतिक दृष्टिकोण से देखा जाय। भौतिक भूगोल में पृथ्वी के ढाँचे के विषय में पर्याप्त वर्णन मिलता है। एडवर्ड स्युस ने पृथ्वी को

ढाँचे के दृष्टिकोण से तीन भागों में बाँटा है:—

१ प्रथम, बाहरी पपड़ी जो कि सबसे हल्की पर्तदार चट्टानों की बनी हुई है। उसने इस पपड़ी को सियाल (Sial) का नाम दिया है। सियाल शब्द दो अंग्रेज़ी शब्दों से मिल कर बना है, पहला 'सि' (Si) और दूसरा 'आल' (al), 'सि' का अर्थ है सिलिका या रेत (Silica) तथा 'आल' का अर्थ है अल्मोनियम (Alluminium) ये दोनों बहुत ही हल्के खनिज हैं, उनका घनत्व बहुत ही कम है।

द्वितीय, मध्य का पर्त, जिसमें ग्रेनाइट पत्थर तथा बिसाल्टिक चट्टानें पाई जाती हैं। इस पर्त को उसने 'सीमा' (Sima) का नाम दिया है। यह शब्द भी दो अंग्रेज़ी शब्दों से मिल कर बना है। पहला 'सि' (Si), दूसरा 'मा' (Ma) 'सि' का अर्थ पहले ही बताया जा चुका है। 'मा' का अर्थ है मैगनेशियम (Magnesium) अथवा बिसाल्टिक (Besaltic) चट्टानें।

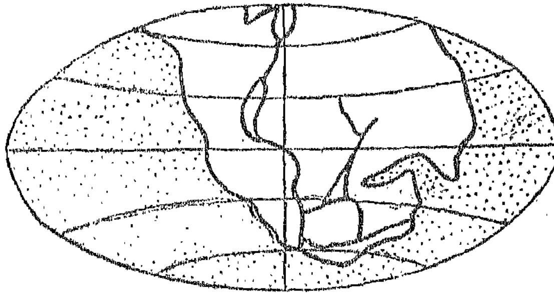
तृतीय, 'सीमा के नीचे पृथ्वी के मध्य का भाग जो कि अत्यन्त कठोर धातु रूपी चट्टानों का बना हुआ है। इसे सुयेश महाशय ने 'नाइफ' (nifc) कहा है। इस शब्द का निर्माण दो अंग्रेज़ी शब्दों द्वारा हुआ है,-प्रथम 'नाई' (ni) द्वितीय 'फ' (fe) 'नाई' का अर्थ है, निकिल (Nickle)जो कि एक अत्यन्त कठोर धातु है, और 'फ' का अर्थ है, फेरस (ferrus) अथवा लोहा।

पृथ्वी की बाहरी पपड़ी का घनत्व मध्य के पर्त की अपेक्षा कम है और यही कारण है कि यह पपड़ी मध्य के पर्त पर निर्भर रहती है। यह भी सम्भव हो सकता है, कि आन्तरिक मध्य का भाग द्रव्य दशा में हो, क्योंकि पृथ्वी के अन्दर बहुत गर्मी है, साथ ही ऊपर के पर्तों का दबाव भी बहुत अधिक पड़ रहा है। यह विचार कि अन्दर पृथ्वी द्रव्य के रूप में है, ज्वालामुखी पर्वतों के उद्गार तथा गर्म जलती हुई चट्टानों द्वारा प्रमाणित हो जाता है।

इस सचाई से हम इस विचारधारा पर आ सकते हैं कि ऊपरी पर्त नीचे के द्रव्य पर तैर रहा है। परन्तु पृथ्वी की उत्पत्ति के समय कुछ प्राकृतिक गड्ढे अवश्य रह गये थे, जिन्होंने कि बाद में सागरों और महासागर का रूप धारण कर लिया है। इसके उपरान्त बराबर महाद्वीपों का अनावर्तीकरण होता रहा, साथ ही उथले सागर भी घिसते रहे। घिसे हुये पदार्थ धीरे धीरे नीचे धरातल पर एकत्रित होते रहे और इसी कारण ऊपर के कम घनत्व वाले धरातल के विषय में विचार किया जाता है, कि वह अधिक घनत्व वाले पदार्थ बिसाल्टिक (Besaltic) पर्त पर तैर रहा है।

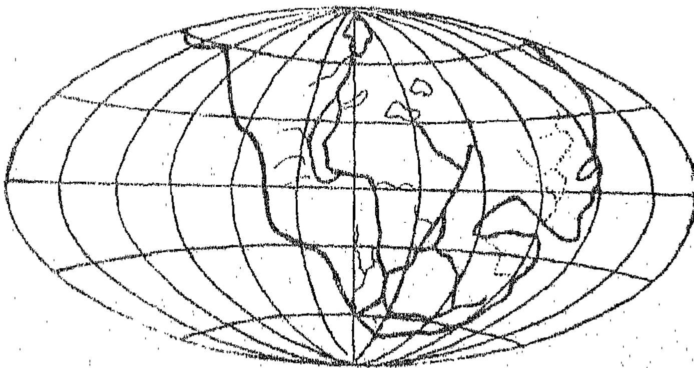
वैगनर का 'कान्टीनेन्टल ड्रिफ्ट' सिद्धान्तः—

इस सिद्धान्त के अन्तर्गत हम इस बात को मानते हैं, कि एकत्रित भूखंड के टुकड़े टुकड़े हो गये और कदाचित आकर्षण शक्ति की विभिन्नता के कारण इधर उधर बह गये। यही विचार धारा हमको वैगनर के प्रसिद्ध सिद्धान्त में मिलती है।* सर्व प्रथम यह सिद्धान्त वैगनर ने महाद्वीपों तथा सागरों की उत्पत्ति के विषय में प्रकट किया था। इस जलवायु विशेषज्ञ का कथन था, कि अति प्राचीन काल में पृथ्वी के अनेक भूखंड एक समूह में एकत्रित थे, इस समूह का नाम इस विशेषज्ञ ने पैंजिया (Pangea) रखा है। एक समय ऐसा आया कि इस 'पैंजिया' के



पैंजिया १— वैगनर के आधार पर

अनेक खंड हो गये और धीरे धीरे तैर कर एक दूसरे से बहुत दूर चले गये। पृथ्वी का वर्तमान रूप वास्तव में एक अति लम्बे समय में हुआ है।

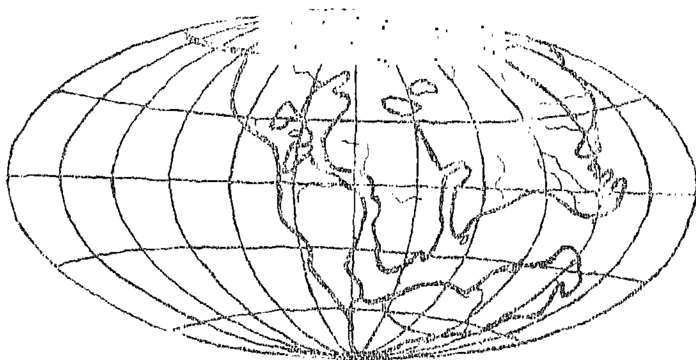


पैंजिया—२

* According to Wegner the South Pole was centred in South Africa in the late Carboniferous age.

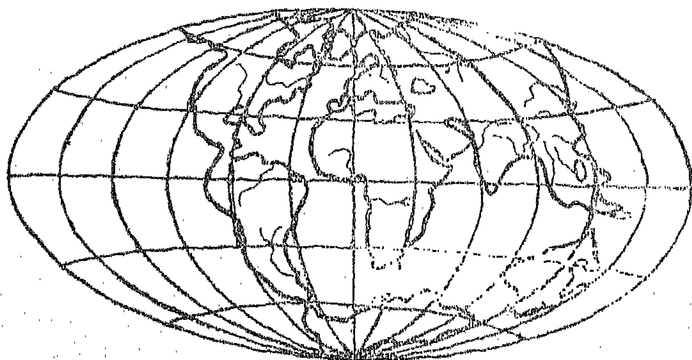
अब इस सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुये यदि हम एशिया महाद्वीप की ओर ध्यान दें, तो हम यह देखेंगे कि दक्षिण के अति प्राचीन पठारी भूखंड (अरब व भारतवर्ष) गौंडवानालैंड के ही भाग थे। गौंडवानालैंड वास्तव में 'पैंजिया' नामक महाद्वीपी समूह का दक्षिणी भाग था।

गौंडवानालैंड में न केवल भारतवर्ष व अरब के प्रायद्वीप थे, बल्कि दक्षिण-पूर्वी द्वीप समूह, आस्ट्रेलिया, मैडागास्कर, अफ्रीका तथा दक्षिणी अमेरिका भी सम्मिलित थे। इस भूखंड में अपर कार्बोनिफैरस युग से लेकर ज्युरेसिक युग तक



पैंजिया—३

की चट्टानें पाई जाती थीं। अब भी इस भू-खंड के अन्य टुकड़ों में इसी प्रकार की चट्टानें मिलती हैं। पूर्वी अफ्रीका की रिफ्ट घाटी तथा अरब सागर के धरातल बहुत कुछ मिलते-जुलते हैं। इस बड़े भू-खंड का धरातल घनी वनस्पति से ढका



पैंजिया—४

हुआ था। इसमें विभिन्न प्रकार के अद्भुत वृक्ष तथा जीव-जन्तु मिलते थे, दक्षिणी गोलार्द्ध के महाद्वीपों में अब भी एक सी चट्टानें, वनस्पति तथा जीव-जन्तु मिलते हैं।

यदि हम इस वेगनर के सिद्धान्त को उन चार प्राचीन भूखंडों के दृष्टिकोण से देखें तो यह कहा जा सकता है, कि ये चारों आपस में किसी समय एकत्रित थे, और बैजिनर के 'पैंजिया' का अंगारालैंड (Angaraland) कहलाते थे। बाद में यह टुकड़े टुकड़े होकर इधर उधर तैर गये।

एशिया की बनावट की संकीर्ण विचारधारा: —

यह विचारधारा आरगन्ड की विचारधारा से कुछ भिन्न है। इसके अन्तर्गत एशिया की बनावट को तीन खंडों में विभाजित किया गया है।

प्रथम विभाजन में उत्तरी तथा मध्य एशिया के भाग सम्मिलित हैं। इसके अन्तर्गत अंगारालैंड, मध्य एशिया के पठार तथा पश्चिमी साइबेरिया के भाग शामिल हैं। इसके दक्षिण में कई बेसिन हैं, जो कि पर्वतश्रेणियों द्वारा एक दूसरे से अलग हो गये हैं। इन पर्वतश्रेणियों की उत्पत्ति भी भिन्न है। यह भू भाग पहले कठोर चट्टानों वाले भागों तक चला गया था, परन्तु मुड़ाव, घुमाव तथा दबाव के कारण कुछ भाग जैसे के तैसे ही रह गये। इसके अन्तर्गत यहाँ कठोर चट्टानों के भागों का भी निर्माण हो गया, जैसे अंगारालैंड। पश्चिमी साइबेरिया कदाचित् एक डूबा हुआ कठोर खंड है। मध्य एशिया के अनेक बेसिन अथवा

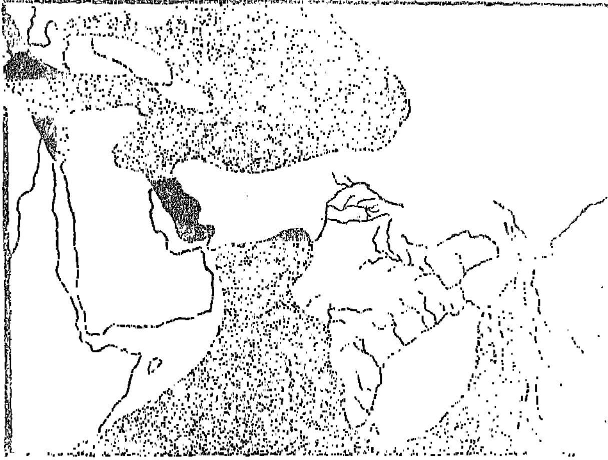


इओसीन युग में जल और थल की दशा

पठार भी इसी में शामिल किये जा सकते हैं। पर्वतश्रेणियां या तो लहरियों दार पेटियां हैं और या 'ब्लॉक' पर्वत हैं।

द्वितीय आल्पाइन पर्वत श्रेणियां, जिनके स्थान पर पहले एक विस्तृत सागर था। इस सागर का विस्तार योरोप में जिब्राल्टर से लेकर दक्षिणी-पूर्वी

एशिया तक था। इस सागर का नाम भूगर्भशास्त्रियों ने 'टिथीज' (Tethys) रखा है। डि० टेरा ने (De Terra) इसकी चौड़ाई ६३० मील बतलाई है। इस



माओसीन युग में जल और थल की दशा

सागर के चिन्ह हमको इन पर्वतों पर १६००० से लेकर २०००० फुट की ऊंचाई तक मिलते हैं। उन जीवजन्तुओं की आकृति जो कि इस बड़े सागर में पाये जाते



फोसीन युग में जल और थल की दशा

थे, चट्टानों में प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होती है। भूगर्भ शास्त्रियों का कथन है कि

सागर में 'परमियन' (Permian) युग (लगभग २००,०००,००० वर्ष) से लेकर इओसीन युग (Eocene) युग (लगभग ७०,०००,००० वर्ष) तक बराबर धरातल पर पदार्थ एकत्रित होते रहे। वे पदार्थ एक ३८००० फुट मोटी पर्त के रूप में एकत्रित हो गये थे। बाद में दबाव के कारण इन्होंने आधुनिक पर्वतों का रूप धारण कर लिया है। यूरेशिया की प्रसिद्ध झीलें जैसे—ब्लैक, कैस्पियन अरल सागर, बाल्कश तथा मानसरोवर झीलें, कहा जाता है कि 'टिथीज़' के ही चिन्ह हैं।

तृतीय-दक्षिण के दो कठोर चट्टानों वाले भू खण्ड। इस भूभाग में भारत तथा अरब के प्रायद्वीप सम्मिलित हैं। जैसा बतलाया जा चुका है, ये दोनों गौंडवानालैंड के ही भाग हैं। ये अति प्राचीन काल से उसी दशा में हैं जिसमें कि ये पहले थे। दोनों प्रायद्वीप बहुत कड़ी चट्टानों के बने हुये हैं। इन चट्टानों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। कहीं कहीं पर प्राकृतिक गड्ढे भी इन प्रायद्वीपों पर पाये जाते हैं। इन गड्ढों में अनेक पर्तदार चट्टानों के पदार्थ टूट टूट भर गये हैं। दक्षिण और पश्चिम की ओर ये पठार कुछ ऊंचे हो गये हैं। इन पठारों पर अनावर्तीकरण बहुत धीरे धीरे हो रहा है, क्योंकि चट्टानें बहुत ही कठोर हैं।

एशिया की सामान्य बनावट

अब यदि हम दोनों विचार धाराओं को दृष्टिकोण में रखते हुये एशिया की सामान्य बनावट की ओर ध्यान दें, तो निस्सन्देह हम इस सचाई पर पहुंचेंगे कि यह महाद्वीप बनावट के दृष्टिकोण से चार भागों में विभाजित किया जा सकता है :—

(१) उत्तर के अति प्राचीन भू-खण्ड :—

एशिया के उत्तर में चार बहुत ही प्रसिद्ध अति प्राचीन चट्टानों के भूखण्ड मिलते हैं। यह चारों कदाचित् वैजीनर के 'पैंजिया' के ही खण्ड हैं। इनमें विभिन्न प्रकार की कैम्ब्रियन युग से पहले की चट्टानें मिलती हैं। इन चट्टानों में से कुछ ने तो परिवर्तित चट्टानों का रूप धारण कर लिया है। साधारणतया इनमें ग्रेनाइट सिस्ट तथा स्लेट नामक चट्टानें अधिक मिलती हैं। इन भू-भागों में से पहला 'ब्लोक' (भू-भाग) वह है, जो कि रूसी भूभाग (Russian Platform) कहलाता है। वास्तव में यह एशिया में शामिल नहीं है क्योंकि इसमें योरोप के बाल्टिक सागर के निकटवर्तीय क्षेत्र भी आते हैं, इसीलिये इसको 'बाल्टिक शीट' (Baltic Sheet) भी कहते हैं। लेकिन, एशिया की बनावट के अध्ययन में हम इसे भी सम्मिलित कर लेते हैं। इसका कारण यह है कि इसमें योरोपियन रूस के अतिरिक्त कुछ साइबेरियन रूस का भाग भी शामिल करता है। ठीक इसी प्रकार

का एक दूसरा 'ब्लौक' साइबेरिया में भी मिलता है। यह 'ब्लौक' अंगारालैंड के नाम से प्रसिद्ध है। इसकी भी चट्टानें बहुत प्राचीन हैं। यह सम्पूर्ण मध्य एशिया तथा पूर्वी साइबेरिया को शामिल करता है। इन दो भूभागों के अतिरिक्त एक तीसरा इस प्रकार का भूभाग तारिम बेसिन है, जो कि सारडिनियन मैसफ (Sardinian Massif) के नाम से प्रसिद्ध है। इस बेसिन की चट्टानें भी कैम्ब्रियन युग के पहले की हैं। इन चट्टानों में परिवर्तित तथा प्राचीन आग्नेय चट्टानों की अधिकता है। चौथा वह 'ब्लौक' है, जो कि उत्तरी चीन, मंचूरिया तथा शान्टंग के धरातल से ढका हुआ है। इसमें भी वही चट्टानें मिलती हैं, जो कि अन्य तीन भूभागों में मिलती हैं। यह 'चीनी मैसिफ' (Chinese Massif) के नाम से प्रसिद्ध है।

(२) दक्षिण के अति प्राचीन भूखण्डः—

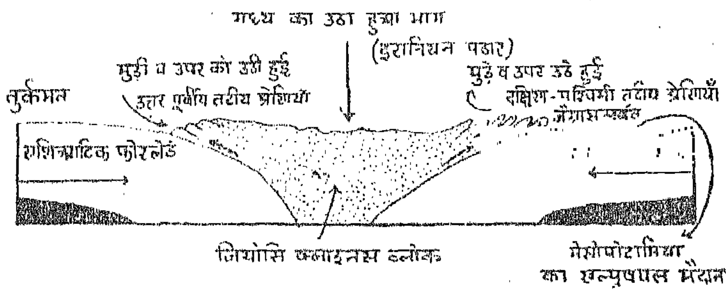
इस महाद्वीप के दक्षिण में दो 'ब्लैक' ठीक उसी प्रकार के हैं, जिस प्रकार के हमको उत्तर की ओर मिलते हैं। इन दोनों भू खण्डों के बारे में विचार किया जाता है, कि ये उस कठोर गोंडवानालैंड (Gondwanaland) के खण्ड हैं, जो कि वैगनर के 'पैंजिया' का दक्षिणी भाग था। इन दोनों अति प्राचीन भू-खण्डों की भी बनावट कैम्ब्रियन युग के पूर्व की चट्टानों की है। इस खण्ड में भी हमको प्राचीन आग्नेय तथा परिवर्तित चट्टानें मिलती हैं। इन चट्टानों के दोनों 'ब्लौक' उस समय से स्थायी हैं, जिस समय से कि इस पृथ्वी का जन्म हुआ है। ये कभी भी सागर में नहीं डूबे परन्तु हां कभी कभी पर्तदार चट्टानों के पदार्थों का आक्रमण अवश्य हुआ है। इनमें कभी भी दबाव का प्रभाव नहीं हुआ है और न ये धसे व मुड़े हैं। इन दोनों का रूप सदा ही एकसा रहा है। वास्तव में पर्तदार पदार्थ तो केवल प्राकृतिक गड्ढों में ही भर पाये हैं। इन दो गौंडवानालैंड के खण्डों में से पहला भारतवर्ष तथा दूसरा अरब का प्रायद्वीप है। इन दोनों प्रायद्वीपों की विशेषता यह है, कि ये उत्तर तथा पूर्व की ओर ढालू हैं, और ये ढाल भी नदियों की डाली हुई मिट्टी से ढके हुए हैं। भारतीय प्रायद्वीप के उत्तर में सिन्ध, गंगा व ब्रह्मपुत्र नदियों की घाटियाँ तथा अरब प्रायद्वीप के उत्तर में दजला व फरात नदियों की घाटियां पाई जाती हैं। यह दोनों ही क्षेत्र इन घाटियों वाले स्थानों पर बहुत ही उपजाऊ हैं।

(३) अल्पाइन पर्वत श्रेणियां:—

एशिया के मध्य के भाग में तरशियरी युग की बनी हुई अनेक पर्वत श्रेणियां सम्मिलित हैं। ये पर्वत श्रेणियां टर्की से लेकर बर्मा तक फैली हुई हैं। इसमें टर्की आरमीनियां, ईरान, बिलोचिस्तान, अफगानिस्तान, भारतवर्ष, बर्मा तथा दक्षिण-पूर्वी एशिया की पर्वत श्रेणियां शामिल हैं। इन श्रेणियों में सब से प्रसिद्ध

हिमालय, कराकोरम तथा अराकान योमा हैं।

इन पर्वत श्रेणियों की उत्पत्ति के विषय में कहा जाता है, कि ये पृथ्वी के एक गहरे गड्ढे (Geosyncline) से हुई है। जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है – भूगर्भ-शास्त्रियों का कथन है, कि अति प्राचीन काल में इस पर्वतीय क्षेत्र के स्थान पर एक बहुत बड़ा समुद्र था, जिसका नाम 'टिथीज' (Tethys) बतलाया गया है। कहा जाता है कि यह भूमध्यसागर से भी बड़ा था। धीरे धीरे अना-वर्तीकरण के प्रभाव से इस सागर के धरातल पर बहुत से पदार्थ एकत्रित होते रहे। फलस्वरूप, इन पदार्थों की एक मटी सी तहो इस सागर के धरातल पर जम गई। इसके पश्चात् तरशियरी युग में कदाचित् विभिन्न आकर्षण शक्तियों के कारण



मध्य पूर्वी एशिया में इरानियन पठार का निर्माण

भूखण्डों में हलचल पैदा हो गई। उत्तर के भूखण्ड दक्षिण की ओर खिसकने लगे। दक्षिण का गोंडवाना भूखण्ड भी बहुत सख्त चट्टानों का स्थायी 'ब्लोक' था। इस पर इस तरशियरी हलचल का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ा, बल्कि 'टिथीज' (Tethys) के अन्दर जो पदार्थों की पर्त थी, वह धीरे धीरे उत्तरी भूखण्डों के दबाव से ऊपर उठने लगीं और अन्त में इन्होंने लहरियोंदार (Fold) पर्वतों का रूप धारण कर लिया। इसी प्रकार से इन 'तरशियरी' पर्वतों का जन्म हुआ। 'टिथीज' सागर की उपस्थिति 'मैजोजोयेक' युग के पहले थी। परन्तु भूभागों में ये हलचल 'तरशियरी' युग से आरम्भ हुई। यद्यपि प्रत्येक श्रेणी भूखण्ड के किनारों के समानान्तर नहीं है, परन्तु फिर भी ये एक ही पेटी में सम्मिलित हैं।

(४) अन्य शेष बचे हुए भाग:—

एशिया के अन्य बचे हुए भागों में विभिन्न प्रकार की चट्टाने पाई जाती हैं। कुछ विद्वानों का मत है, कि इसमें 'हरशिनियन' (Hercynian) व 'आरमो-रिकन' (Armorican) युग की चट्टानें भी मिलती हैं। परन्तु इस प्रश्न पर अभी वाद विवाद है। योरोप में जो इस युग की चट्टानें प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होती हैं। एशिया के इन भागों में 'पेल्योजोयेक' तथा 'मैसोजोयेक' युग की चट्टानें मिलती हैं, परन्तु इनमें एक विशेष बात यह है, कि ये तरशियरी युग के पहले ही सिलूरियन (Silarian) व 'डिवोनियन' (Devonian) युग में बन चुकी थीं।

भूगोलवत्ताओं का कथन है कि इसमें सन्देह नहीं कि यहां पर कुछ 'फोल्ड' ऐसे भी हैं जो कि आरमोरिकन, हरशिनियन तथा केलिडोनियन युगों के हैं। इनके अन्दर प्राचीन चट्टानों का चूरा भरा हुआ है। कुछ स्थानों पर ये आन्तरिक सख्त चट्टानों से अलग भी हो गये हैं जैसे दक्षिणी चीन में।

अब यदि पुनः उक्त विचारधाराओं की ओर ध्यान दिया जाय, तो हम देखेंगे कि यही एक ऐसी विशेषता है, जो कि आरगंड तथा संकीर्ण विचार धाराओं में अन्तर डालती है।

आरगंड का विश्वास था कि समस्त उत्तरी एशिया का भाग "काँण्टीनेण्टल ड्रिफ्ट" के पहले एक पूर्ण भाग था। यह सम्पूर्ण भाग टुकड़ों टुकड़ों में खण्डित हो गया और यह टुकड़े इधर उधर बह गये। इनके मध्य के भागों में, जिनमें कि छोटे छोटे सागर थे, तमाम चट्टानों के पदार्थ एकत्रित होते रहे और अन्त में दबाव के कारण मुड़कर ऊपर उठ गये। संकीर्ण मतानुसार बीच के भाग जिसमें कि छोटे छोटे सागर थे, अनावर्तीकरण के और भी अधिक शिकार हुये। इनका दबाव, मुड़ाव मेसोजोयेक युग तक बिल्कुल ही बन्द हो गया। अन्य 'फोल्ड' बराबर मुड़ते रहे। कदाचित् इसी कारण ये भाग धीरे धीरे नीचे की ओर धस गये।

अन्त में हमको आरगंड के सिद्धान्त को मानना पड़ता है। क्योंकि इसमें वेगनर की "काँण्टीनेण्टल ड्रिफ्ट" विचारधारा का तत्व भी शामिल है। इस विचारधारा के अन्तर्गत यह भी सिद्ध हो जाता है, कि गौंडवानालैंड के टुकड़े कैसे हुए और चार कठोर चट्टानों के भूखण्डों की उत्पत्ति कैसे हुई।

एशिया की जलवायु

यद्यपि एशिया का अधिक भाग शीतोष्ण कटिबन्ध क्षेत्र में है, परन्तु फिर भी यहां पर महाद्वीपीय वातावरण मिलता है; ऐसे वातावरण में ग्रीष्म ऋतु बहुत गर्म तथा शीत ऋतु बहुत ठण्डी रहती है। उष्ण कटिबन्ध क्षेत्र के तीन दक्षिणी प्रायद्वीप तथा शीतोष्ण कटिबन्ध क्षेत्र के चीन, जापान, फारस, सीरिया तथा अनाटोलिया को छोड़ कर, शेष भाग का जलवायु-सम्बन्धी वातावरण समान ही है। अरल बेसिन जो कि समुद्र सतह से २०० फीट ऊंचा है तथा तिब्बत का पठार जो कि कहीं भी १०००० फीट से नीचा नहीं है, ग्रीष्म ऋतु में बहुत अधिक गर्मी तथा शीत ऋतु में बहुत ही अधिक ठण्डक प्राप्त करते हैं।

वास्तव में एशिया की जलवायु पर कई तत्वों का प्रभाव पड़ता है, परन्तु इनमें तीन ही प्रमुख हैं पहला एशिया का रूप, दूसरा धरातल, तीसरा समुद्र व भूमध्य से दूरी। यहां के उच्च भागों तथा विस्तृत क्षेत्रों का प्रभाव विशेष तौर पर यहां

की जलवायु पर पड़ता है। मध्य के भाग तो इतने अधिक शुष्क हैं, कि जिनका उदाहरण योरोप व अमरीका में भी नहीं मिल सकता। यद्यपि धरातल एकसा नहीं है, परन्तु फिर भी मध्य के भाग में शुष्क वायुमंडल, मिट्टी तथा अचानक तापक्रम में हेरफेर होने के कारण वातावरण में समानता ही पाई जाती है। उदाहरण के लिये हम उस १२०० मील लम्बे क्षेत्र को ले सकते हैं, जो उत्तर से दक्षिण तक फैला हुआ है और जिसमें १२०० फीट ऊंचा पामीर का पठार, मंगोलिया का रेगिस्तान तथा तिब्बत के बंजर क्षेत्र सम्मिलित हैं। दूर दूर तक यहां पर एक से ही वीरान क्षेत्र दृष्टिगोचर होते हैं।

यदि एशिया की जलवायु के इतिहास का अध्ययन किया जाय, तो पता चलेगा कि मध्य के भाग में बहुत अधिक नमी रहती थी परन्तु गत वर्षों से बहुत शुष्क हो गया है। प्राचीन काल में तारिम बेसिन के स्थान पर सि-हाई (पश्चिमी सागर) नामक समुद्र था, जो कि भूमध्य सागर का ही एक खंड था और यह अब सूखते सूखते लाबनोर के रूप में परिवर्तित हो गया है। इस सागर के निकट हेन-हई नामक एक और विस्तृत सागर था, जो लगभग वर्तमान भूमध्य सागर के ही बराबर था। सम्पूर्ण जुंगेरिया का क्षेत्र इसी में सम्मिलित था; यहाँ तक कि कदाचित् रूसी तुर्किस्तान का भाग भी इसी सागर में शामिल था। इन सागरों के सूखने के पश्चात् कई ने खारी मिट्टी वाले रेगिस्तानों का रूप धारण कर लिया है। कई बड़े बड़े नगर, जो कि किसी समय यहाँ पर पाये जाते थे, अब केवल उनके रेत में दबे हुए खंडहर ही पाये जाते हैं।

यद्यपि दक्षिणी पश्चिमी पठार तथा आन्तरिक क्षेत्र बहुत शुष्क हैं, परन्तु इनके विपरीत दक्षिणी तथा दक्षिण पूर्वी भाग विश्व के सबसे नम भाग हैं। विद्वानों का मत है, कि पृथ्वी की कुल वार्षिक वर्षा का आधा भाग केवल भारतवर्ष, इंडोचीन तथा फिलीपाइन व मलाया द्वीपसमूह में ही बरस जाता है। नम मानसून हवायें बंगाल की खाड़ी को पार करती हुई हिमालय पर्वत के किनारे किनारे ब्रह्मपुत्र व गंगा की घाटी तक चली जाती हैं। इन हवाओं से बहुत अधिक वर्षा होती है। इस वर्षा का प्रभाव यहाँ के वातावरण पर बहुत गहरा पड़ता है।

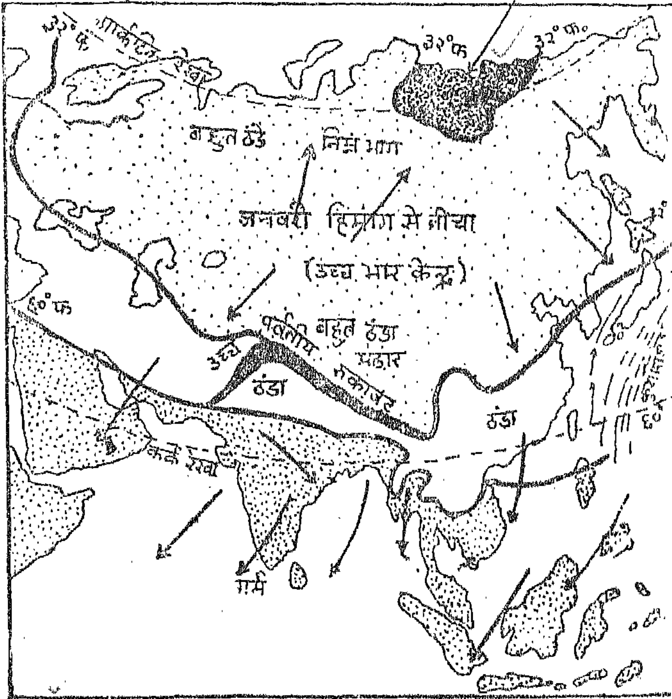
एशिया की जलवायु का अध्ययन दो भागों में किया जा सकता है। प्रथम शीत ऋतु तथा द्वितीय ग्रीष्म ऋतु। इन दोनों ऋतुओं में जलवायु सम्बन्धी वातावरण प्रत्यक्ष है। नीचे दोनों प्रकार के वातावरण का वर्णन किया गया है:—

शीत ऋतु का वातावरण :—

शीत ऋतु में जब कि सूर्य की किरणें दक्षिणी गोलार्द्ध पर सीधी पड़ती हैं।

तो उत्तरी गोलार्द्ध में एशिया के आन्तरिक भाग बहुत ठण्डे हो जाते हैं। एशिया महाद्वीप का अधिक विस्तार होने के कारण, समुद्री हवायें, जो कि कदाचित आन्तरिक क्षेत्रों पर कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य डालतीं हैं, अन्दर तक पहुंचने में असमर्थ रहतीं हैं। इसके अतिरिक्त मध्य तथा उत्तर के विस्तृत मैदान समुद्री हवाओं के प्रभाव से ऊंची ऊंची पर्वत श्रेणियों द्वारा अलग रहते हैं। इसी ऋतु में जो हवायें उत्तरी ध्रुव से चलतीं हैं, वह यहां के वातावरण को बहुत ठण्डा बना देती हैं। इस प्रकार से शीत ऋतु में यहाँ उच्च भार वाले क्षेत्र स्थापित हो जाते हैं।

विश्व का सब से ठंडा भाग

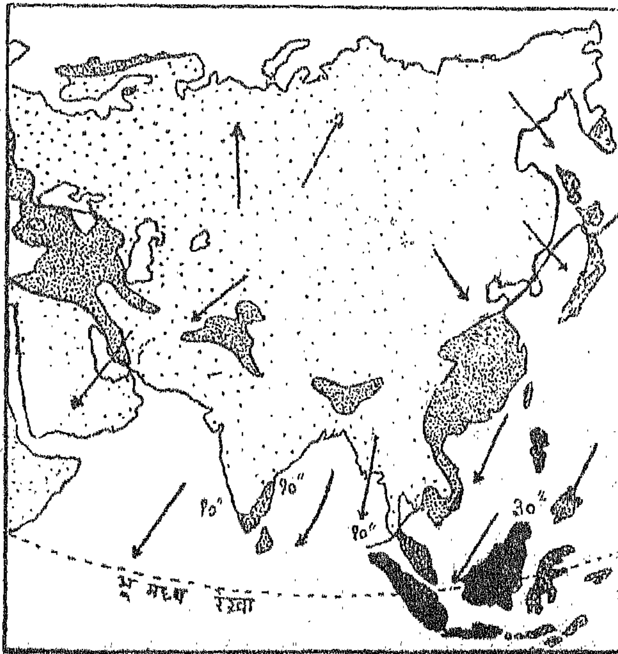


एशिया में शीत ऋतु की दशायें

ठण्डी व भारी हवायें इस उच्च भार वाले क्षेत्र से समुद्र की ओर दौड़तीं हैं, क्योंकि वहाँ भार आन्तरिक क्षेत्रों की अपेक्षा कम रहता है। इन दोनों भार वाले क्षेत्रों में जितना भी अधिक अन्तर होगा, उतनी ही गति से हवायें समुद्र की ओर चलेंगी। यह हवायें मध्य एशिया के चारों ओर चलतीं है, पूर्वी एशिया के देशों के लिये यह शुष्क हवायें बड़ी हानिकारक सिद्ध होती हैं, क्योंकि यह हवायें न केवल बहुत ही ठण्डी वरन् बहुत ही तीव्र व लगातार गति से चलती हैं। भाग्यवश भारतवर्ष इन

हवाओं के प्रभाव से वंचित हैं, क्योंकि इनके मार्ग में ऊंची ऊंची हिमालय पर्वत की श्रेणियाँ हैं, जिनको कि यह हवायें पार नहीं कर सकतीं। इन पर्वत श्रेणियों द्वारा ही दक्षिणी एशिया के देश सुरक्षित रहते हैं। भारतवर्ष के शीत ऋतु के मानसून का मध्य एशिया के उच्चभार से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं रहता। साधारण गति से चलने वाली यह हवायें जो उत्तरी भारत में चलती हैं अपना एक दूसरे ही उच्च भार से सम्बन्ध रखतीं हैं। यह उच्च भार उत्तर-पश्चिमी भारतवर्ष में स्थापित हो जाता है।

योरोप में शीत ऋतु में पछुआ हवायें चलती हैं, सम्पूर्ण भाग उन चक्रवातों से प्रभावित होता है, जो पश्चिम से पूर्व की ओर चलते हैं। जब तक यह चक्रवात एशिया में आते हैं, क्षीण हो जाते हैं और मध्य एशिया के उच्च भार के कारण



एशिया में शीत ऋतु की वर्षा तथा हवायें

पूर्व तक पहुँचाने में असमर्थ रहते हैं। पछुआ हवायें जो योरोप में इस ऋतु में चलती हैं, दो धाराओं में विभाजित हो जाती हैं। पहली धारा उत्तर की ओर चलती है जो साइबेरिया में उत्तर-पश्चिम की ओर से प्रवेश करती है, और दूसरी धारा दक्षिण की ओर चलती है, जो बिलोचिस्तान, पंजाब में थोड़ी सी वर्षा करती हुई आगे चल कर समाप्त हो जाती है।

जो हवायें मध्य एशिया से इस ऋतु में चलती हैं वह बहुत ठण्डी तथा

शुष्क होतीं हैं। यही कारण है कि इन हवाओं से उन क्षेत्रों में जिनमें यह प्रवेश करतीं हैं, वर्षा नहीं हो पाती। वर्षा केवल उस समय होती है जब कि यह किसी जलाशय के ऊपर से होकर गुज़रती हैं, उदाहरण-जापान, दक्षिण-पूर्वी चीन इन्डोचीन का तटीय भाग फिलीपाइन तथा लंका। इन भागों को छोड़ कर अन्य भागों में इस ऋतु में वातावरण शुष्क रहता है। सम्पूर्ण महाद्वीप पर केवल पांच ही निम्नलिखित क्षेत्र हैं, जिनमें इस ऋतु में वर्षा होती है। शेष भाग शुष्क रहते हैं।

(१) उत्तर-पश्चिमी साइबेरिया का भाग, जिसमें चक्रवातों द्वारा बर्फ वर्षा हो जाती है। यह भाग पछुआ हवाओं की पेटी में सम्मिलित है।

(२) मध्य-पूर्वी एशिया में टर्की, पेलेस्टाइन, सीरिया, अरब, ईराक, ईरान, अफगानिस्तान, बिलोचिस्तान, पाकिस्तान तथा काश्मीर इत्यादि ऐसे भाग हैं, जिनमें उन चक्रवातों से वर्षा होती है, जो भूमध्य सागर से चलते हैं। यह दक्षिण-पश्चिमी एशिया का भाग भी पछुआ हवाओं की पेटी में शामिल है।

(३) लंका में वर्षा उत्तर-पूर्वी मानसून से होती है। मध्य एशिया से चलने वाली ठण्डी हवायें इरावदी की घाटी में प्रवेश करके बंगाल की खाड़ी को पार करती हैं, और दक्षिणी भारत के पूर्वी भाग तथा लंका में वर्षा करती हैं।

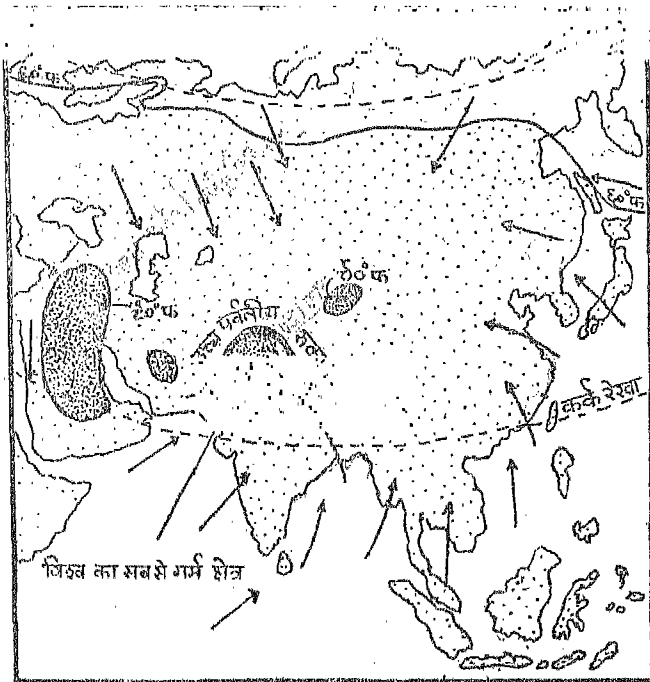
(४) पूर्वी द्वीप समूह में साल भर वर्षा होती है क्योंकि इनकी स्थिति भूमध्य रेखीय प्रदेश में है। वर्षा का वितरण द्वीपों के धरातल पर निर्भर रहता है।

(५) एशिया महाद्वीप के पूर्वी तट के कुछ भागों में समुद्र के प्रभाव से काफी वर्षा हो जाती है। मध्य एशिया से जो हवायें पूर्व की ओर चलती हैं, वह समुद्र को पार करके जापान के पश्चिमी तट तथा मध्य व दक्षिणी चीन में वर्षा करती हैं।

ग्रीष्म ऋतु का वातावरण :—

जिस समय सूर्य की किरणें उत्तरी गोलार्द्ध में कर्क रेखा पर सीधी पड़ती हैं, उस समय सम्पूर्ण एशिया पर महाद्वीप पर बहुत सख्त गर्मी पड़ती है मध्य एशिया के उच्च भार वाले क्षेत्र निम्न भार वाले क्षेत्रों में परिवर्तित हो जाते हैं। इस ऋतु में भी धरातल का जलवायु पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। ऊंची ऊंची पर्वत श्रेणियाँ यहां भी हवाओं की दिशाओं में परिवर्तन कर देतीं हैं। यदि समभार वाली रेखाओं के मानचित्र पर एक दृष्टि डाली जाय तो पता चलेगा कि निम्न भार वाले क्षेत्र दक्षिणी-पश्चिमी एशिया में अरब बिलोचिस्तान, उत्तर-पश्चिमी भारतवर्ष तथा तिब्बत तक पाये जाते हैं। वास्तव में देखा जाय तो इन निम्न भार वाले क्षेत्रों

का सम्बन्ध उन निम्न भार वाले क्षेत्रों से जो मध्य एशिया में पाये जाते हैं कोई विशेष नहीं है। एशिया के दक्षिण-पश्चिम में जो निम्न भार वाले क्षेत्र स्थापित हो जाते हैं वह बहुत शक्तिशाली होते हैं। भूमि का गर्म होना एवं उच्च भार वाले

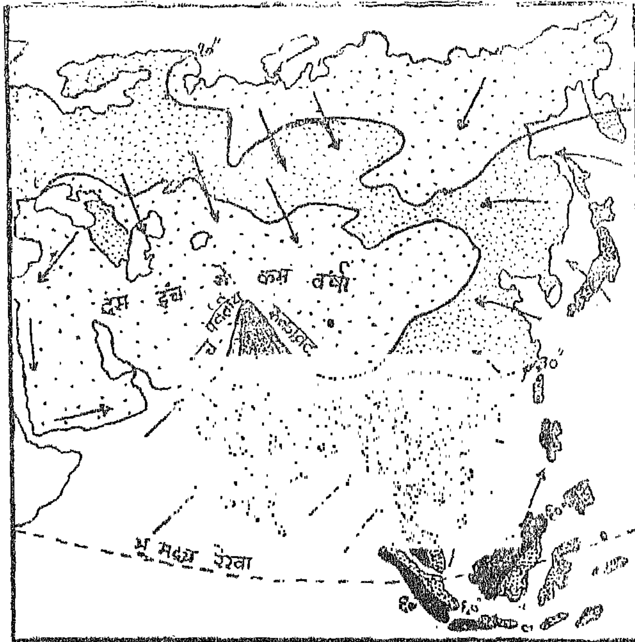


एशिया में ग्रीष्म ऋतु की दशायें

क्षेत्रों का निम्न भार वाले क्षेत्रों में परिवर्तित हो जाना बहुत धीरे धीरे होता है। इन उच्च भार वाले क्षेत्रों से जो हवायें बाहर की ओर चलती हैं, वह धीरे धीरे क्षीण होती जाती हैं। अप्रैल व मई तक ये हवायें बिना किसी निश्चित दिशा के इधर उधर चलने लगती हैं। इसके पश्चात् यकायक मानसून अथवा मौसमी हवायें आने लगती हैं, यह अपने साथ बहुत सी नमी लाती हैं, जो वर्षा के रूप में तुरन्त बरस जाती हैं। जो हवायें निम्न भार वाले क्षेत्र में प्रवेश करती हैं, वह शक्ति व समानता में भिन्न होती हैं। भारतवर्ष में यह हवायें काफी शक्तिशाली हैं, तथा एक सी चलती हैं। चीन और जापान में यह बहुत क्षीण हो जाती हैं, क्योंकि निम्न भार वाले क्षेत्र एशिया के आन्तरिक भागों में समुद्र से बहुत दूर उत्पन्न होते हैं। वास्तव में यदि देखा जाय तो भारतवर्ष में ग्रीष्म ऋतु के मानसून शक्तिशाली तथा शीत ऋतु के क्षीण होते हैं। इसके विपरीत चीन में शीत ऋतु के मानसून

शक्तिशाली तथा ग्रीष्म ऋतु के कमजोर होते हैं।

कहीं भी दृष्टि डाली जाय, आन्तरिक क्षेत्रों की ओर आने वाली हवायें प्रायः नम ही हुआ करती हैं। ग्रीष्म ऋतु ही एक ऐसी ऋतु है, जिसमें कि लगभग



एशिया में ग्रीष्म ऋतु की वर्षा तथा हवायें

सम्पूर्ण एशिया में वर्षा होती है। वर्षा वास्तव में धरातल के आधार पर होती है। जिन स्थानों पर ऊंची ऊंची पर्वत श्रेणियां अथवा ऊंचे ऊंचे पठार पाये जाते हैं, वहां एक ओर तो बहुत अधिक वर्षा तथा दूसरी ओर बहुत कम वर्षा हो पाती है। वास्तव में एशिया के मध्य के भाग इसी कारण शुष्क रहते हैं। इस ऋतु में केवल दक्षिणी-पश्चिमी एशिया के देश ही ऐसे भाग हैं जिनमें वर्षा नहीं हो पाती। शेष भागों में मानसून से थोड़ी बहुत वर्षा हो जाती है। 'मानसून' शब्द का अर्थ ही मौसमी हवायें है। यह इसी ऋतु में चलती हैं।

चक्रवातों का प्रभाव :—

प्रत्येक महाद्वीप की जलवायु पर चक्रवातों का गहरा प्रभाव पड़ता है। एशिया महाद्वीप में अन्य महाद्वीपों की अपेक्षा बहुत कम चक्रवात आते हैं। चक्रवातों की संख्या यहाँ उन चक्रवातों से कम है, जो अटलांटिक महासागर को

पार करके आते हैं। इस महाद्वीप पर जो चक्रवात आते भी हैं, वह आन्तरिक क्षेत्रों तक पहुंचते पहुंचते समाप्त हो जाते हैं। बहुत ही कम ऐसे चक्रवात हैं, जो अपना प्रभाव एशिया के आन्तरिक क्षेत्रों पर डालते हैं। वास्तव में साइबेरिया में जो कुछ भी वर्षा होती है, वह चक्रवातों द्वारा ही होती है। जब अटलांटिक चक्रवात प्रशान्त महासागर के निकट पहुंचते हैं, तो जलवायु में हर प्रकार की गड़बड़ी उत्पन्न हो जाती है। इनके अन्तर्गत चीन तथा जापान की ऋतुओं में अनेक परिवर्तन होते हैं।

इसके अतिरिक्त पूर्वी एशिया में चक्रवातों की हवायें दक्षिणी चीन सागर से नमी प्राप्त करती हुई उसी प्रकार आती हैं, जिस प्रकार कि मैक्सिको की खाड़ी से उत्तर-पूर्वी उत्तरी अमेरिका में प्रवेश करती हैं। इसमें सन्देह नहीं कि बहुत सा चीन तथा उत्तरी अमेरीका का भाग अर्ध रेगिस्तान रहा होता, यदि इनके दक्षिण में सागर न रहे होते। शीत ऋतु में जब कि पछुवा हवायें कुछ दक्षिण की ओर चलने लगती हैं, तब यह चक्रवात पेलेस्टाइन, ईरान तथा उत्तरी भारत की ओर चलने लगते हैं। परन्तु ग्रीष्म ऋतु में यह प्रमुख मार्ग काफी उत्तर की ओर हो जाता है। उष्ण कटिबन्धीय चक्रवात जो तूफानों के रूप में आते हैं, दक्षिण-पूर्वी एशिया में ग्रीष्म व पतझड़ की ऋतुओं में वर्षा करते हैं।

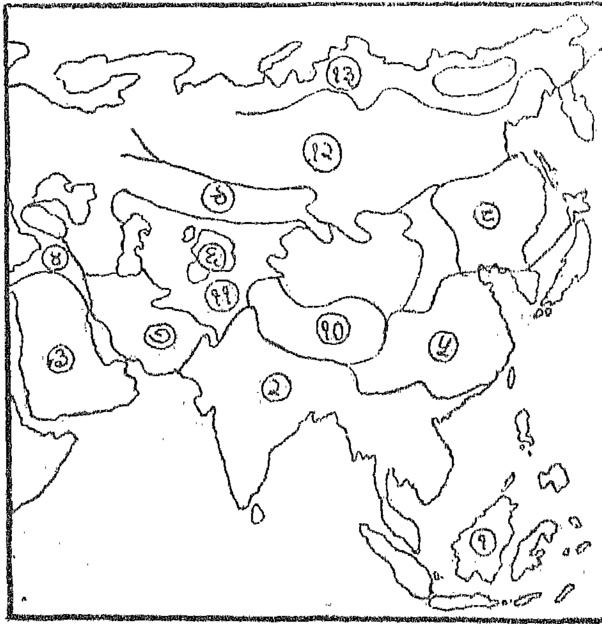
जहां तक कि महासागरों के प्रभाव से सम्बन्ध है, वह अपने ही क्षेत्र में सीमित है, उदाहरणार्थ—हिन्द महासागर का प्रभाव हिमालय पर्वत श्रेणियों के कारण इन श्रेणियों के दक्षिण तक ही सीमित है। प्रशान्त महासागर का प्रभाव पूर्वी मंगोलिया तक या अधिक से अधिक बेकाल झील तक ही सीमित रहता है। ठंढे आर्कटिक महासागर का प्रभाव उत्तर की ओर काफी पड़ता है। टुण्ड्रा के भाग में तीव्र ठन्डी हवायें तथा वर्षा हो जाया करती हैं। अटलांटिक महासागर, यद्यपि एशिया महाद्वीप से काफी दूर स्थित है, परन्तु फिर भी इसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। इस महासागर के कारण इस महाद्वीप के लगभग एक तिहाई भाग पर वर्षा होती है। न केवल इतना ही, बल्कि वह क्षेत्र जो अटलांटिक महासागर से ४००० मील पूर्व में स्थित है, पछुआ हवाओं द्वारा इसी महासागर का जल वर्षा के रूप में प्राप्त करते हैं। इतना सब कुछ होते हुये भी यहाँ लाखों वर्ग मील के ऐसे भू-भाग हैं, जो न तो किसी भी प्रकार की नमी प्राप्त करते हैं, और न उन पर समुद्रों का प्रभाव ही पड़ता है। इन भू-भागों में यदि कभी बूंदा-बाँदी हो भी जाती है, तो वह स्थानीय नदियों या झीलों के कारण होती है। यह स्थानीय जलाशय धीरे-धीरे सूख रहे हैं, साथ ही, इन भू-भागों का वातावरण भी दिन प्रतिदिन शुष्क होता जा रहा है।

इस महाद्वीप पर तापक्रम की दशायें भी भिन्न भिन्न पाई जाती हैं। तापक्रम

का अन्तर भूमध्य रेखा से उत्तर-पूर्वी एशिया की ओर बढ़ता जाता है। उदाहरणार्थ—सिंगापुर तथा कोलम्बो में तापक्रमान्तर केवल एक डिग्री का रहता है। कर्क रेखा पर यह अन्तर केवल २०° है। मास्को का औसत अन्तर ४५° तथा पेकिंग का ६०° फा०, बेकाल झील के आसपास वार्षिक तापक्रम अन्तर ७१° रहता है। उत्तर पूर्वी एशिया में बरखोयानस्क एक ऐसा स्थान है, जहां तापान्तर ११६° फा० तक पाया जाता है।

एशिया के जलवायु-विभाग

एशिया एक बहुत बड़ा महाद्वीप है, इसकी जलवायु में अनेक विभिन्नतायें



एशिया के जलवायु विभाग

पाई जाती हैं। वास्तव में इसकी जलवायु को विभिन्न जलवायु खंडों में बांटना भी बहुत कठिन है। यहां की जलवायु के विशेष तत्व निम्नलिखित हैं :—

(१) शीत ऋतु की ठण्डी व शुष्क हवायें जो मध्य एशिया से बाहर की ओर चलती हैं।

(२) ग्रीष्म ऋतु की गर्म व नम हवायें, जो समुद्र से अन्दर की ओर चलती हैं।

(३) एशिया महाद्वीप के धरातल तथा विस्तार का प्रभाव।

इन तत्वों के आधार पर हम इस महाद्वीप के निम्नलिखित जलवायु विभाग कर सकते हैं :—

(१) उष्ण कटिबन्धीय भू-भागों में :—

(अ) भूमध्य रेखीय जलवायु—(१)

(ब) मानसूनी जलवायु—(२)

(स) पश्चिमी मरुस्थल अथवा सहारा तुल्य जलवायु (३)

(२) गर्म शीतोष्ण कटिबन्धीय भागों में :—

(अ) भूमध्य सागरीय जलवायु—(४)

(ब) चीन तुल्य जलवायु—(५)

(स) तूरान तुल्य जलवायु—(६)

(द) ईरान तुल्य जलवायु—(७)

(३) शीत शीतोष्ण कटिबन्धीय भागों में :—

(अ) मंचूरिया तुल्य जलवायु—(८)

(ब) प्रेयरी तुल्य जलवायु—(९)

(स) तिब्बत तुल्य जलवायु—(१०)

(द) अल्टाई तुल्य जलवायु—(११)

(४) शीत प्रदेश :—

(अ) साइबेरिया अथवा टैगा तुल्य जलवायु—(१२)

(ब) टुण्ड्रा तुल्य जलवायु—(१३)

उष्ण कटिबन्धीय भू-भागों में:—

(अ) भूमध्य रेखीय जलवायु:—जैसा कि नाम से प्रतीत होता है, यह जलवायु एशिया महाद्वीप में भूमध्य रेखा के निकट पाई जाती है। इसकी पेटी भूमध्य रेखा के ५° उत्तरी अक्षांश तथा ५° दक्षिणी अक्षांश तक सीमित है। इस भाग में उत्तर-पूर्वी [illegible] हवायें चलती हैं, जो कि परस्पर डोलड्रम पर आकर मिल जाती हैं। सूर्य की किरणें सीधी पड़ने के कारण यहां पर बहुत अधिक गर्मी पड़ती है। इसी कारण यहां पर कम भार वाले क्षेत्र होते हैं। हवायें सर्वदा इन अधिक भार वाले क्षेत्रों से कम भार वाले क्षेत्र की ओर चलती हैं। इन हवाओं की स्थिति में परिवर्तन उसी समय होता है, जब कि सूर्य की स्थिति में परिवर्तन होता है।

वर्ष में एक बार तो सूर्य की किरणें कर्क रेखा पर सीधी पड़ती हैं, तथा दूसरी बार मकर रेखा पर। इस प्रकार से भाग में सब से अधिक तापक्रम एक बार कर्क रेखा के निकटवर्ती क्षेत्र में तथा दूसरी बार मकर रेखा पर पाया जाता है। भूमध्य रेखा जो कि पृथ्वी के बिल्कुल मध्य में है, प्रतिवर्ष दो बार सबसे

अधिक तापक्रम प्राप्त करती है। कर्क अथवा मकर रेखाओं के निकटवर्तीय क्षेत्र वर्ष में केवल एक ही बार अधिक तापक्रम तथा वर्षा प्राप्त करते हैं, परन्तु भूमध्य रेखीय प्रदेश दो बार।

इस प्रकार की जलवायु की विशेषता यह है कि तापक्रम हमेशा ऊंचा तथा एकसा रहता है। यहां इतना अधिक तापक्रम नहीं पाया जाता, जितना कि कर्क व मकर रेखा पर पाया जाता है। औसत तापक्रम यहां पर ८०° फा० रहता है। कुछ लोग कहते हैं, कि भूमध्य रेखा पर सबसे अधिक गर्मी पड़ती है परन्तु यह कथन उचित नहीं है। यहां पर औसत तापक्रम तो ऊंचा रहता है, परन्तु नम वातावरण के कारण यह १००° फा० से अधिक नहीं पाया जाता। ग्रीष्म व शीत ऋतु के ताप में बहुत कम अन्तर पाया जाता है। समुद्र तट पर तो यह अन्तर केवल दो या तीन डिग्री का ही रहता है। आन्तरिक क्षेत्र में जलवायु बहुत नम तथा भद्दी रहती है, क्योंकि प्रायः हवा शान्त और तापक्रम ऊंचा रहता है।

अधिक से अधिक गर्म व ठण्डे तापक्रम में अन्तर ५०° फा० से कम ही रहता है। अधिक से अधिक १००° फा० और कम से कम ६०° फा० तो प्रायः अंकित किया ही जाता है। बहुत कम ऐसा होता है जब कि अन्तर ४०° फा० से अधिक हो जाय।

दिन व रात के ताप में अन्तर २०° फा० से अधिक नहीं रहता। यहाँ के लोग वास्तव में गर्म जलवायु में रहने के आदी हो गये हैं, इसलिये जब कभी भी रात का तापक्रम ७०° फा० हो जाता है, तो यह लोग तापने के लिये आग जला लेते हैं। इसीलिये कहा जाता है, कि यहां की रात्रि ऐसी होती है, जैसी गर्म शीतोष्ण भागों की शीत ऋतु।

इस प्रकार की जलवायु वाले भागों में वर्षा साल भर होती है। नित्य वर्षा दिन के समय तीसरे पहर से आरम्भ होती है और रात के आठ या नौ बजे तक होती रहती है। यह क्रम वर्ष भर रहता है, शुष्क ऋतु यहाँ पर नहीं होती है। दिन के आधे समय तक अधिक गर्मी के कारण बादल बनते रहते हैं। समुद्र से चलने वाली नम हवायें बराबर ऊपर उठा करती हैं। यह बादलों का रूप धारण कर लेती हैं। बहुत ज़ोर की गड़गड़ाहट के साथ तीसरे पहर से वर्षा आरम्भ हो जाती है।

यद्यपि यहां पर साल भर वर्षा होती है, परन्तु फिर भी अधिक वर्षा वर्ष में केवल दो ही बार होती है – पहली अप्रैल तथा दूसरी नवम्बर में। जैसे ही जैसे हम भूमध्य रेखा से अलग हटते हैं, वैसे ही वैसे शुष्क ऋतु आरम्भ होती जाती है और अन्त में उष्ण कटिबन्धीय मानसून वातावरण आरम्भ हो जाता है।

भूमध्य रेखीय जलवायु—तापक्रम व वर्षा

स्थान	अक्षांश	समुद्र तट से ऊँचाई	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जोलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	औसत	तापान्तर	वर्षा का योग
सिंगापुर	१° उ०	१० फिट	७८	७९	८०	८१	८१.५	८१	८१	८१	८०	८०	७९	७९	८०	३.२	
			८.५	६.१	६.५	६.९	७.२	६.७	६.८	८.५	७.१	८.२	१०.	१०.४			९२.९
बटेविया	६° द०	२३ फिट	७८	७८	७९	७९	८०	७९	७८	७९	७९	८०	७९	७८	७९	२.०	
			१३.०	१३.६	७.८	४.८	३.७	३.६	२.६	१.३	२.३	४.१	५.०	८.७			७०.७
एम्बायना	४° द०	४० फिट	८१	८१	८१	७९	७९	७८	७७	७८	७८	७९	८०	८१	७९	३.६	
			५.६	४.५	[illegible]	१०.९	२०.१	२३.२	२३.२	१६.०	९.१	६.९	४.१	५.७			१३५.८
पिनांग	५° उ०	२३	८०	८०	८१	८२	८१	८१	८०	८०	८०	८०	७९	७९	८०	२.९	
			३.९	३.०	४.७	७.०	११.०	७.२	८.९	१२.८	१९.०	१६.१	[illegible]	४.८			१०९.३
सेन्डाकन	५° उ०	९८	७९	७९	८१	८२	८२	८१	८१	८१	८१	८१	८०	७९	८०	२.९	
			१९.४	९.९	७.८	४.१	५.१	८.६	१०.०	६.९	९.५	१०.२	१६.४	१९.३			१२७.२

(ब) मानसूनी जलवायु:—इस प्रकार की जलवायु इस महाद्वीप पर ५° उत्तरी अक्षांश से ३०° उत्तरी अक्षांश तक पाई जाती है। इसके अन्तर्गत भारत, पाकिस्तान, ब्रम्हा, इण्डोचीन, दक्षिणी चीन व जापान, इण्डोनेशिया के कुछ भाग, तथा फिलीपाइन द्वीप समूह सम्मिलित हैं। मध्य तथा उत्तरी चीन व जापान भी इसी प्रकार की जलवायु के अन्तर्गत आते हैं, क्योंकि इन भागों में वर्षा की वही विशेषता है जो कि मानसून जलवायु में पाई जाती है, यद्यपि यह दोनों भाग ३०° उत्तरी अक्षांश से बाहर स्थित हैं। तापक्रम के दृष्टिकोण से दक्षिण-पूर्वी एशिया इन भागों की अपेक्षा अधिक गर्म है। शीत ऋतु में इन मानसून प्रदेशों पर थल भागों के उच्च भार से बाहर समुद्र की ओर चलने वाली ठण्डी व भारी हवाओं का प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि शीत ऋतु में केवल कुछ भागों को छोड़कर शेष भाग शुष्क रहते हैं। वह भाग जिनमें कि इस ऋतु में कुछ वर्षा होती है, अनाम, लंका तथा दक्षिण पूर्वी भारतीय महाद्वीप हैं। इन भागों में वर्षा होने का कारण यह है कि यहाँ पर जो हवायें आती हैं, वह निकटवर्तीय समुद्र को पार करके ही आती हैं, और इसीलिये उनमें इतनी नमी रहती है कि वह वर्षा कर सकें। इन मानसून विभागों की ग्रीष्म ऋतु वास्तव में बड़ी महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि अधिकतर वर्षा इन भागों में इसी ऋतु में होती है। इस ऋतु में हवायें समुद्र से उन निम्न भागों की ओर चलती हैं, जो महाद्वीप के आन्तरिक क्षेत्रों में अधिक तापक्रम के कारण उत्पन्न हो जाते हैं। जलवायु के दृष्टिकोण से उष्ण कटिबन्ध मानसूनी प्रदेश को तीन ऋतुओं में विभाजित कर सकते हैं—

(१) नवम्बर से लेकर फर्वरी तक का ठण्डा मौसम, जिसमें वर्षा बहुत कम होती है।

(२) मार्च से लेकर जून तक की गर्म ऋतु, जिसमें वर्षा नहीं होती।

(३) जुलाई से लेकर अक्टूबर तक की वर्षा ऋतु। वास्तव में यह ऋतु ग्रीष्म ऋतु के जलवायु सम्बन्धी वातावरण में ही सम्मिलित है। परन्तु वर्षा के कारण वायुमण्डल का तापक्रम ठण्डा रहता है।

वह भाग जो कि ग्रीष्म ऋतु में शुष्क रहते हैं प्राकृतिक तौर पर उन भागों की अपेक्षा गर्म रहते हैं जिनमें काफी वर्षा होती है। यही कारण है कि यहां तापक्रम अन्तर बहुत अधिक पाया जाता है, उदाहरणार्थ पूर्वी पंजाब, उत्तरी पाकिस्तान (पश्चिमी), उत्तर-पश्चिमी सीमान्त प्रदेश। इसके विपरीत वह नम भाग जो कि समुद्र तट पर स्थित हैं बहुत ही कम तापान्तर अंकित करते हैं। वर्षा का प्रभाव यहां स्पष्ट है, क्योंकि बम्बई का तापक्रम उस समय थोड़ा सा बढ़ जाता है, जब कि वर्षा थम जाती है, विशेष तौर पर अक्टूबर के माह में।

लाहौर का तापक्रम अन्तर ४०° (९०°–५०° फा०) दिल्ली का ३४° (९२°–५८° फा०), बम्बई १०° फा० तथा चेरापूंजी १८° फा० अंकित करते हैं।

मानसून प्रदेश में वर्षा वितरण धरातल पर निर्भर रहता है। जब कभी भी नम हवाओं के सम्मुख तटीय क्षेत्रों के उच्च भाग आ जाते हैं, तो एकायक वर्षा हो जाती है। धरातल का प्रभाव वर्षा-वितरण पर यदि देखना है, तो सबसे उत्तम उदाहरण चेरापूंजी है जो भारतवर्ष में आसाम के दक्षिण में है। चेरापूंजी ४९०० फीट की ऊंचाई पर स्थित है यहां पर औसत वर्षा ४५८ इंच होती है। दूसरा उदाहरण उत्तरी भारत से दिया जा सकता है। मानसून हवायें हिमालय पर्वत के किनारे किनारे भारत के पश्चिम तक वर्षा करती हुई चली जाती हैं। यही कारण है कि तराई के भागों में अधिक वर्षा तथा तराई के दक्षिण में कम वर्षा होती है। इस प्रकार के अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं।

(ख) पश्चिमी मरुस्थली अथवा सहारा तुल्य जलवायु :—इस प्रकार की जलवायु इस महाद्वीप पर २०° से ३०° उत्तर तथा दक्षिण की ओर पश्चिमी भाग में पाई जाती है। इसके अन्तर्गत अरब, सीरिया तथा थार के मरुस्थल आते हैं।

इस प्रकार की जलवायु का नाम सहारा रेगिस्तान पर पड़ा है क्योंकि यहां पर इस जलवायु की विशेषतायें पूर्णरूप से पाई जाती हैं। वास्तव में सहारा मरुस्थल का विस्तार अरब रेगिस्तान तक है, और कुल क्षेत्रफल ३० लाख वर्ग मील से भी अधिक है। एशिया में गर्म मरुस्थल दक्षिणी-पश्चिमी भाग में ही पाये जाते हैं। यह कर्क रेखा के निकटवर्तीय क्षेत्र तक ही सीमित है। ये मरुस्थल उच्च भार वाली पेटी में सम्मिलित हैं, और मानसून तथा भूमध्य सागरीय जलवायु के प्रभाव से वंचित रहते हैं। एशिया के ये मरुस्थल दो भागों में विभाजित किये जा सकते हैं—प्रथम वे जो कि शुष्क मानसून जलवायु में शामिल हैं, जैसे सिन्ध नदी का निचला भाग तथा थार रेगिस्तान। द्वितीय वे जो शुष्क भूमध्य सागरीय जलवायु में सम्मिलित हैं, जैसे—सीरिया, मैसोपोटामिया तथा फ़ारस।

सहारा तुल्य जलवायु अत्यन्त कड़ी एवं शुष्क है। यह वह भाग हैं, जिनमें संसार में न्यूनतम वर्षा और अधिकतम (जैकोबाबाद १३५° अंकित करता है) तापक्रम मिलता है। उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित इन रेगिस्तानों में जुलाई का औसत तापक्रम ९०° फा० तथा जनवरी का ६०° फा० होता है। इस प्रकार की जलवायु वाले भागों में वार्षिक तथा दैनिक तापान्तर बहुत अधिक होता है। रात्रि का तापक्रम बहुत कम हो जाता है क्योंकि शुष्क

मानसूनी जलवायु-तापक्रम व वर्षा

स्थान	अक्षांश	समुद्र तल से ऊँचाई	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जौलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वा० औ०	तापान्तर	वर्षा का योग
बम्बई	१८° ५४′	३७	७४	७५	७८	८२	८५	८२	७९	७९	७९	८१	७८	७५	७९	१०·१	
			०·१	०	०	०·१	०·५	२०·६	२४·६	१४·	१ ·८	१·८	·५	०·१			७४·१
रंगून	१६° ४६′	१८	७५	७७	८१	८५	८२	८०	७९	७९	७९	८०	७८	७६	७९	१०·३	
			०·१	०·२	०·२	१·७	११·७	१८·३	२१·४	१९·६	१५·९	७·१	२·५	०·१			९८·८
मांडले	२१° ५९′	२५०	६९	७४	८२	८९	८८	८५	८५	८५	८३	८२	७७	६९	७९	२०·४	
			०·१	०·१	०·२	१·२	५·२	·७	३·३	४·१	६·२	४·५	१·७	०·३			३२·६
देहली	२८° ३९′	७१८	५८	६२	७४	८६	९२	९२	८६	८५	८४	७८	६८	६०	७०	३४·३	
			१·०	०·६	०·७	०·३	०·७	३·२	८·४	७·४	४·६	०·४	०·१	०·४			२७·३
करांची	२४° ५१′	१३	६५	६८	७५	८१	८५	८७	८४	८२	८२	८०	७४	६७	७८	२१·५	
			०·६	०·३	०·२	०·२	०	०·४	३·२	१·८	०·७	०	०·२	०·२			७·३

पश्चिमी मरुस्थलीय अथवा सहारा तुल्य जलवायु—तापक्रम व वर्षा

स्थान	अक्षांश	समुद्र तल से ऊँचाई	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जौलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वार्षिक	तापान्तर	वर्षा का योग
जैकोबाबाद	२८° १७'	१८६	५७	६२	७४	८६	९४	९८	९५	९२	९७	७९	६७	५९	७९	४०.४	
			०.३	०.३	०.२	०.२	०.२	०.१	१.२	१.२	०.२	०	०.१	०.२			४.२
अदन	१२° ४६'	९४	७६	७७	७८	८१	८६	८९	८८	८६	८७	८२	७९	७७	८२	१२.९	
			०.३	०.२	०.७	०.३	०.२	०	०	०.१	०.२	०	०.१	०.१			२.२
बगदाद	३३° २१'	२२०	४९	५३	५९	६८	७९	८७	९२	९२.५	८६	७९	६१	५२	७१	४३.७	
			१.३	२.१	१.६	०.६	०	०	०	०.१	०	०	१.०	१.८			९.०

आकाश के समय रेत से ताप का विकिरण तीव्र गति से होता है। मरुस्थलों की रजनी शांत, शीतल तथा विश्राम दायिनी होती है। शीतकालीन रात्री में बहुधा कोहरा छा जाता है, और तापक्रम हिम बिन्दु तक गिर जाता है। दिन के समय आकाश पूर्ण रूपेण स्वच्छ रहता है, तो सूर्य की किरणें सीधी भूमि पर पड़ती हैं, और उसे बहुत गर्म कर देती हैं। इसके विपरीत रात में यह गर्मी भूमि से निकल जाती है और वातावरण ठण्डा हो जाता है।

इन मरुस्थलीय भागों में ग्रीष्म ऋतु में वर्षा नहीं होती, इसलिये तापान्तर बहुत अधिक रहता है। यहाँ कुछ ऐसे भी भाग हैं, जो बहुत ही अधिक तापान्तर प्राप्त करते हैं।

(२) गर्म शीतोष्ण कटिबन्धीय भागों में: -

(अ) भूमध्य सागरीय जलवायु:—गर्म शीतोष्ण कटिबन्ध वाले भागों के पश्चिम में यह जलवायु एशिया महाद्वीप पर टर्की तथा सीरिया में पाई जाती है। भूमध्य सागरीय जलवायु विशेष तौर पर पश्चिमी जलवायु है, क्योंकि यह हर स्थान पर महाद्वीप के पश्चिम में ३०° और लगभग ४५° अक्षांशों के मध्य उसी प्रकार मिलती है, जिस प्रकार कि चीन तुल्य जलवायु महाद्वीपों के पूर्व में इन्हीं अक्षांशों के मध्य मिलती है। सबसे प्रमुख विशेषता इस प्रकार की जलवायु की यह है, कि यह भाग उष्ण कटिबन्धीय व्यापारिक हवाओं तथा शीतोष्ण कटिबन्धीय पछुवा हवाओं के मध्य आते हैं। ग्रीष्म ऋतु में, यह क्षेत्र सम-उष्ण कटिबन्धीय उच्च भार से उस समय प्रभावित होते हैं, जब कि यह बहुत अधिक गर्म तथा शुष्क हो जाते हैं और वह भी केवल आन्तरिक क्षेत्रों से चलने वाली शुष्क हवाओं से। शीत ऋतु में यह भाग पछुवा हवाओं की पेटी से प्रभावित होते हैं। इसी ऋतु में यहां वर्षा होती है। यह ऋतु अन्य ऋतुओं की अपेक्षा छोटी होती है और साधारण गर्मी पड़ती है। सबसे ठण्डे महीने का औसत तापक्रम ४०° - ५०° फा० के लगभग रहता है। ग्रीष्म ऋतु लम्बी, गर्म और शुष्क होती है। सबसे गर्म महीने का औसत तापक्रम ७०°–८०° फा० के लगभग होता है। वार्षिक तापान्तर १५° फा० से ३०° फा० तक रहता है। गर्म रेगिस्तानों से आनेवाली हवाओं, उदाहरणार्थ सिरीका वायु से ठंढक कुछ कम हो जाती है। चमकदार सूर्य की किरणों से भी शीत कुछ घट जाता है। दैनिक औसत तापान्तर काफी रहता है। शुष्क और गर्म महीनों में यह और भी अधिक हो जाता है।

इस प्रकार की जलवायु की कुछ विशेषतायें निम्नलिखित हैं:—

(१) यहाँ केवल शीत ऋतु में ही वर्षा होती है। वार्षिक वर्षा का औसत १५" से ३५" है। ग्रीष्म ऋतु बिल्कुल शुष्क रहती है।

(२) ग्रीष्म ऋतु काफी गर्म और शीत ऋतु साधारण ठंढी रहती है।

भूमध्य सागरीय जलवायु—तापक्रम व वर्षा

स्थान	अक्षांश	समुद्र तल से ऊँचाई	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रेल	मई	जून	जौलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वर्ष	तापान्तर	वर्षा का योग
स्मरना	३८°२५'	३३	४६	४८	५१	५९	६९	७६	८१	८२	७५	६६	५८	५२	६३.७	३६	
			२.८	२.६	३.२	१.१	०.९	०.४	—	०.४	०.५	०.८	३.४	३.८			१९.९
हैफा	३२°५४'	११५	५४	५७	६०	६६	७०	७६	८०	८२	८०	७५	६४	५८	६८.५	२८	
			६.१	३.५	२.१	१.०	०.३	—	—	—	०.०	०.६	४.४	७.०			२५.०

गर्म से गर्म माह में ७०° फा० और ठंडे से ठंडे महीने में ४३° फा० तापक्रम रहता है।

(३) दिन के समय धूप काफी पड़ती है क्योंकि आसमान बादल रहित रहता है।

(ब) *चीनतुल्य जलवायु*:—यह जलवायु 'गर्म शीतोष्ण कटिबन्धीय पूर्वी तटीय जलवायु भी कहलाती है। इस प्रकार की जलवायु भूमध्य रेखा के उत्तर तथा दक्षिण ३०° व ४०° अक्षांशों के मध्य महाद्वीपों के पूर्वी भागों में मिलती है। इन्हीं अक्षांशों के मध्य महाद्वीपों के पश्चिम में भूमध्य रेखीय जलवायु पाई जाती है। एशिया के मध्य तथा उत्तरी चीन के भाग इसी जलवायु में सम्मिलित हैं। यद्यपि मध्य व उत्तरी चीन के भाग एशिया के मानसून प्रदेश में आते हैं, परन्तु फिर भी एक जलवायु तत्व ऐसा है, जो कि इसको मानसून जलवायु की विशेषताओं से अलग करता है। चीन तुल्य जलवायु की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि शीत ऋतु का तापक्रम कभी कभी उत्तर की ओर हिमांक से भी नीचे गिर जाता है। उत्तरी चीन के शाण्टन्ग और पेकिंग के भाग जो कि लगभग उसी अक्षांश पर हैं, जिस पर कि मेलबोर्न है, चार माह तक ०° फा० तापक्रम अंकित करते हैं। गर्म शीतोष्ण प्रदेश की उत्तरी सीमा वास्तव में ४३° फा० समताप रेखा द्वारा निश्चित होती है। और यह रेखा यांगटीसी नदी के दक्षिण से होकर जाती है। इस रेखा के उत्तर में चीन अपनी बहुत ठण्डी जलवायु के कारण शीतोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में सम्मिलित हो जाता है। पेकिंग नगर का औसत तापक्रम शीत ऋतु में २३.५° फा० तथा सिडनी का ५५° फा० रहता है। भारतवर्ष इस दृष्टिकोण से बड़ा भाग्यशाली है, क्योंकि उत्तर की ठण्डी हवाओं का प्रभाव हिमालय पर्वत श्रेणियों के कारण नहीं हो पाता। चीन में इस प्रकार की कोई रुकावट नहीं है, इसी कारण इस ऋतु में यहाँ बहुत कड़ी सर्दी पड़ती है। प्रायः ३२° समताप रेखा कर्क रेखा को छूती है। इस ऋतु में यहां मैदानी क्षेत्रों में बर्फ पड़ना एक साधारण बात है। दक्षिणी चीन में शीत ऋतु की वर्षा चक्रवातों द्वारा ही होती है। इसका वितरण चक्रवात के मार्गों से निश्चित होता है। मध्य चीन में दक्षिणी चीन की अपेक्षा कुछ अधिक वर्षा होती है, क्योंकि यांगटिसी नदी की घाटी द्वारा यह आसानी से आन्तरिक क्षेत्रों तक चले जाते हैं। चक्रवात अपनी ऋतु में काफी जल्दी जल्दी आने शुरू हो जाते हैं।

ग्रीष्म ऋतु का तापक्रम अधिक रहता है। इस ऋतु में यहां पर्याप्त गर्मी पड़ती है। औसत तापक्रम ८०° फा० हो जाता है। परन्तु हवायें इस ऋतु में समुद्र से आती हैं इसलिये तापक्रम में कुछ कमी हो जाती है। आन्तरिक क्षेत्रों में अधिक

भूमध्य रेखीय जलवायु—तापक्रम व वर्षा

स्थान	अक्षांश	समुद्र तट से ऊँचाई	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जौलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वर्ष	तापान्तर	वर्षा का योग
शंघाई	३१°१३'	३३	३८	३९	४६	५६	६५	७३	८०	८०	७३	६३	५२	४२	५९	४२·८	
			२·२	२·३	३·४	३·८	३·७	६·५	५·५	५·९	४·७	३·२	१·७	१·२			४४·१
हाँको	३०°३५'	११८	३९	४०	४९	६१	७१	७८	८३·५	८३	७६	६५	५४	४३	६२	४४·७	
			२·१	१·१	२·८	४·८	५·०	७·०	८·६	४·६	२·२	३·९	१·१	·६			४३·८
पेकिंग	३९°५५'	१३१	२३	२९	४१	५७	६८	७६	७९	७६	६८	५५	३८	२७	२३	५५·३	
			०·१	०·२	०·२	०·६	१·४	३·०	९·४	६·३	२·६	०·६	०·३	०·१			२४·८
टोकियो	३५°४०'	६९	३७	३८	४४	५४	६१	६९	७५	७८	७२	६१	५०	४१	५७	४०·५	
			२·०	२·६	४·३	५·९	५·९	६·३	५·६	४·६	७·५	७·२	४·३	२·३			५७·९

गर्मी पड़ती है, क्योंकि ८५° समताप रेखा मध्य चीन को भी सम्मिलित कर लेती है।

वार्षिक तापान्तर भी यहां अधिक रहता है। पेकिंग का वार्षिक तापान्तर ५५° फ० तथा सिडनी का केवल १६° फ० पाया जाता है। इस हेरफेर का प्रमुख कारण यह है कि दक्षिणी गोलार्द्ध में समुद्री प्रभाव से शीतकालीन तापक्रम अपेक्षाकृत अधिक रहता है। वर्षा इन भागों में इसलिये होती है, क्योंकि एशिया के मध्य में ग्रीष्म ऋतु में निम्न भार वाले क्षेत्र स्थापित हो जाते हैं। इन निम्न भार वाले क्षेत्रों की ओर समुद्र से आने वाली हवायें आकर्षित होती हैं। तटीय क्षेत्रों में सबसे अधिक वर्षा होती है।

चक्रवात :—इस प्रकार की जलवायु का सबसे विशेष तत्व यह है, कि उष्ण कटिबन्धीय चक्रवात जिन्हें 'टाइफून' (Typhoon) अथवा टारनेडो (Tornado) कहते हैं, प्राय: आया करते हैं। इसका औसत दस चक्रवात प्रति वर्ष का है। ग्रीष्म ऋतु (जुलाई से सितम्बर) में ये अधिक आया करते हैं। इनका प्रभाव दक्षिणी चीन पर बहुत पड़ता है। शीत ऋतु में इन पर आन्तरिक उच्च भागों का प्रभाव पड़ता है, इसी कारण ये अन्दर तक नहीं जा पाते। परन्तु ग्रीष्म ऋतु में ये टांकिंग व दक्षिणी चीन में प्रवेश करते हैं, जैसे ही जैसे ये अन्दर की ओर आते हैं, इनका प्रभाव कम होता जाता है। तटीय भागों के अतिरिक्त मध्य तथा उत्तरी चीन में ये काफी वर्षा करते हैं। इनके मार्ग धनुषाकार रूप में हुआ करते हैं, यह इसलिये कि इनमें हवाओं का वेग बहुत तीव्र होता है। इन चक्रवातों से पर्याप्त वर्षा हो जाती है। हॉंगकांग में २४ घण्टे में २७" से अधिक वर्षा अंकित की गई है, परन्तु आठ घण्टे में २०" वर्षा हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। साधारण तौर पर चीन में पर्याप्त वर्षा होती है और वार्षिक औसत ३०" से ५०" तक है। धरातल व स्थिति की भिन्नता के कारण वर्षा भी न्यूनाधिक होती है। वैसे तो यहां पर वर्ष पर कुछ न कुछ वर्षा होती ही रहती है, परन्तु अधिकांश ग्रीष्म ऋतु में यह वर्षा व्यापारिक हवाओं द्वारा ही होती है। यह मानसून हवायें कहलाती हैं।

शंघाई—ऊंचाई ३३'

जनवरी तापक्रम ३६°फ	ग्रीष्म ऋतु में
जुलाई तापक्रम ८२°फ	वर्षा ४४"

(स) तूरान तुल्य जलवायु :—इस प्रकार की जलवायु एशिया महाद्वीप के आन्तरिक क्षेत्र में पाई जाती है, इसीलिये इस प्रदेश की जलवायु स्थलीय है। महाद्वीप के आन्तरिक भागों में स्थित होने के कारण ये समुद्र के समकारी प्रभाव से वंचित रहते हैं। यहां की जलवायु अत्यन्त कड़ी है। ग्रीष्म ऋतु में बहुत

शीतोष्ण मरुस्थली तुल्य जलवायु—तापक्रम व वर्षा
(अथवा तूरान, ईरान, तिब्बत तथा ग्रीष्म तुल्य जलवायु)

स्थान	अक्षांश	समुद्र तल से उंचाई	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जौलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वर्ष	तापान्तर	वर्षा का योग
	३९°३०′	४,२५५	२२	३४	४६	६१	७०	७७	८०	७६	६६	५५	४०	२६	५५	५७·६	
कासगर																	
			०·३	०	०·२	०·२	०·८	०·४	०·३	०·७	०·३	०	०	०·२			३·४

सख्त गर्मी पड़ती है, औसत तापक्रम लगभग ८०° फ० रहता है। परन्तु कभी कभी दिन का तापक्रम ११०° फ० भी हो जाया करता हैं। इसके विपरीत शीत ऋतु में बहुत सख्त सर्दी पड़ती है। सबसे ठण्डे माह में प्राय: सब स्थानों पर तापक्रम हिम बिन्दु अथवा इससे भी नीचा गिर जाया करता है। यदि देखा जाय तो दक्षिणी गोलार्द्ध वाले इन भागों में जलवायु इतनी विषम नहीं हो पाती और वार्षिक तापान्तर ऊपरी भागों की अपेक्षा कम ही रहता है। इसका प्रमुख कारण यह है, कि यहां पर समुद्र का प्रभाव विशेष तौर पर रहता है।

तूरान तुल्य जलवायु की विशेषता यह है कि यहां वर्षा बहुत कम होती हैं। ग्रीष्म ऋतु में जब कि एशिया के आन्तरिक भागों में बहुत सख्त गर्मी पड़ती है, तो वहां निम्न भार वाले क्षेत्र स्थापित हो जाते हैं, और समुद्री हवायें इस ओर चलने लगती हैं। इन भागों की स्थिति प्राय: समुद्र तट से अन्दर की ओर होती हैं। इसी कारण वर्षा यहां बहुत कम हो पाती हैं। इन भागों में पहुंचते पहुंचते वायु की नमी बहुत कम हो जाती है। परन्तु फिर भी जितनी भी वर्षा होती है, वह ग्रीष्म ऋतु में ही हो पाती है। इस ऋतु में वर्षा वायु में वाहनिक धारायें उत्पन्न हो जाने के कारण भी हो जाया करती है।

शीत ऋतु यहां शुष्क रहती है। इस ऋतु में वर्षा नहीं हो पाती, क्योंकि इन दिनों अधिक शीत के कारण एशिया के निम्न भार वाले क्षेत्रों के स्थान पर उच्च भार वाले क्षेत्र स्थापित हो जाते हैं। हवायें ऐसे थल भागों से जल भागों की ओर चलने लगती हैं। उत्तरी व दक्षिणी अमरीका में वर्षा का औसत कुछ अधिक ही रहता है। यहां की वार्षिक वर्षा ३५" है। इस वर्षा का कारण यह है, कि ये भू-भाग समुद्री हवाओं के मार्ग में पड़ जाते हैं। इसीलिये ये आन्तरिक क्षेत्रों तक पहुंच कर वर्षा कर देती हैं। एशिया के इन भागों में वर्षा इसलिये कम होती है, कि ये भाग पर्वतों के पीछे पड़ जाते हैं। और इसके अतिरिक्त ये समुद्र तट से काफी दूर भी हैं। यहां पर वार्षिक वर्षा केवल ७" हो पाती है।

(द) ईरान तुल्य जलवायु:—एशिया महाद्वीप पर इस प्रकार की जलवायु भूमध्य सागरीय जलवायु एवं उष्ण रेगिस्तान प्रदेशों के मध्य मिलती है। इस प्रकार की जलवायु की विशेषता यह है कि ग्रीष्म ऋतु में बहुत सख्त गर्मी पड़ती है। आकाश स्वच्छ तथा निर्मल रहता है, तथा धूप तेज पड़ती है, तापक्रम कभी कभी ११०° फ० से भी ऊंचा हो जाता है। तेहरान का तापक्रम ८६° फ० रहता है। क्योंकि इसकी ऊंचाई समुद्र सतह से ३८०० फीट है। शीत ऋतु में बहुत कड़ी सर्दी पड़ती है। तापक्रम कभी कभी हिम बिन्दु से भी नीचे गिर जाता है। रात्रि के समय बहुत ओस पड़ती है। तेहरान नगर का जनवरी का औसत तापक्रम इस ऋतु में ३४° फ० रहता है। इन भागो में भूमध्य सागरीय प्रभाव

शीतोष्ण मरुस्थली तुल्य जलवायु-तापक्रम व वर्षा
(अथवा तूरान, ईरान, तिब्बत तथा ग्रीष्म तुल्य जलवायु)

स्थान	अक्षांश	समुद्र तल से ऊंचाई	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वर्ष	तापान्तर	वर्षा
तेहरान	३५°४२	४,००२	३४	४२	४८	६१	७१	८०	८५	८३	७७	६६	५१	४२	६२	५१·३	
			१·२	०·६	२·४	०·६	०·४	०	०·४	०	०·१	०·१	१·२	१·३			८·६

पर्याप्त रहता है। वर्षा यहाँ शीत ऋतु में ही होती है। तेहरान में वर्षा का औसत १०" है। प्राय: जलवर्षा यहां पर वर्फ वर्षा के रूप में हुआ करती है। पठारी भागों में वर्षा का औसत १५" है। कुछ अन्य भागों में ग्रीष्म ऋतु में वर्षा हो जाया करती है। वर्षा का औसत २०" के लगभग रहता है। इन भागों में वर्षा के अभाव का कारण यह है, कि ये समुद्र से बहुत दूर हट कर बसे हुए हैं। कुछ तो पर्वत श्रेणियों के पीछे पड़ जाते हैं।

(३) शीत शीतोष्ण कटिबन्धीय प्रदेश :—

(अ) *मंचूरिया तुल्य जलवायु* :—इस प्रकार की जलवायु सेस्टलारेन्स तुल्य जलवायु भी कही जाती है। एशिया में उत्तरी चीन, मंचूरिया तथा आरमीनिया में मिलती है। इसका विस्तार ३६° से लेकर ८०° उत्तरी अक्षांशों के मध्य है। शांटंग, ल्योटंग तथा बोर्नियो भी इसी प्रकार की जलवायु में सम्मिलित हैं।

शीत ऋतु में जब कि मध्य एशिया में उच्च भार के क्षेत्र स्थापित हो जाते हैं, तो हवायें पूर्व की ओर बड़ी तेज़ी से चलने लगती हैं। ये शुष्क व ठण्डी हवायें उत्तरी चीन में अधिक तापान्तर के कारण बड़ी तीव्रता से चलती हैं। इस प्रकार की जलवायु में शीत ऋतु बहुत कठोर तथा लम्बी होती हैं। इन ठण्डी हवाओं के प्रभाव से तापक्रम बहुत नीचा हो जाता है। समुद्र का प्रभाव ऐसी दशा में बिल्कुल भी नहीं पड़ पाता। चीन में कई स्थानों पर इस ऋतु में वर्षा हो जाती है। विशेष तौर पर उत्तर-पूर्व की ओर। यहाँ पर महाद्वीपीय प्रभाव पर्याप्त रहता है। शीत ऋतु के तीन महीनों में वार्षिक वर्षा का योग ५ प्रतिशत से कम ही पाया जाता है। ये वर्षा वास्तव में चक्रवातों के प्रभाव से ही होती है। वर्षा करने वाली हवायें दक्षिण-पूर्व की ओर से प्रवेश करती हैं। इसी कारण सब से अधिक वर्षा तटीय क्षेत्र में होती हैं। आन्तरिक क्षेत्र की ओर वर्षा की मात्रा कम होती जाती है। हांगहो तथा शांटंग में वर्षा शीत ऋतु में बर्फ के रूप में होती है। इसी कारण ऋतु बहुत खराब रहती है। व्लाडीवोस्टक में केवल ७° फ० तापक्रम रहता है।

ऋतु परिवर्तन यहाँ पर अचानक ही होता है। उत्तरी चीन में शीत ऋतु के बाद ग्रीष्म ऋतु आरम्भ हो जाती है। जैसे ही जैसे उच्च भार वाले क्षेत्र निम्न भार क्षेत्रों में परिवर्तित होते हैं, वैसे ही वैसे समुद्र का प्रभाव गहरा होता जाता है। नम हवायें समुद्र की ओर से प्रवेश करने लगती हैं। वर्षा आरम्भ हो जाती है और धीरे धीरे मात्रा बढ़ती जाती है। यद्यपि यह आरम्भ की वर्षा मानसून वर्षा नहीं है, परन्तु फिर भी उत्तरी चीन व मन्चूरिया की बसन्त ऋतु की फसलों के लिये अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होती है। व्लाडी वोस्टक १५" वर्षा प्राप्त कर लेता

मन्चूरिया तुल्य जलवायु-तापक्रम व वर्षा

स्थान	अक्षांश	समुद्र तल से ऊँचाई	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वर्ष	तापान्तर	वर्षा का योग
हार्बिन	४५°४५'	३२५	−२	५	२४	४२	५६	६६	७२	६९	५८	४०	२१	३	३८	७३·८	
			०·२	०·२	०·६	१·०	२·४	३·२	६·७	४·३	२·६	१·७	०·५	०·२			२३·६
व्लाडीवास्टक	४३°१०'	५०	५	१२	२६	३९	४९	५७	६६	६९	६१	४९	३०	१४	४०	६४·६	
			०·३	०·२	०·३	१·२	१·३	१·५	२·२	३·५	२·४	१·६	०·५	०·२	—		१५·०

है। ग्रीष्म ऋतु में तापक्रम ८०° फा० से अधिक हो जाता है। परन्तु ब्लाडी वोस्टक का तापक्रम ६७° फा० रहता है। दक्षिणी पेकिंग अथवा उत्तरी चीन लगभग उतने ही गर्म हो जाते हैं, जितने कि दक्षिणी चीन के भाग। मानसूनी हवाओं से जो वर्षा होती है, वह जुलाई के माह में सब से अधिक होती है। वार्षिक तापान्तर भी वहां पर्याप्त रहता है। यह ४५° से लेकर ७०° तक हो जाता है शीत। ऋतु बहुत कड़ी व लम्बी होती है। ग्रीष्म ऋतु के मानसून से ही यहां पर्याप्त वर्षा हो जाती है।

(ब) *प्रेयरी तुल्य जलवायु*:—इस प्रकार की जलवायु वाले प्रदेश इस महाद्वीप पर पश्चिमी साइबेरिया में ४५° से ६०° उत्तरी अक्षांशों के मध्य पाये जाते हैं। यहां की जलवायु वास्तव में महाद्वीपी है, इसका प्रभाव होने के कारण वार्षिक तापान्तर बहुत अधिक रहता है। शीत ऋतु में यहां बहुत कड़ी सर्दी पड़ती है और ठण्डी तीव्र हवायें बराबर चलती रहती हैं। इन बर्फीली हवाओं के प्रभाव से जनवरी का औसत तापक्रम हिमविन्दु से भी नीचा हो जाता है। यहाँ पर ग्रीष्म ऋतु में गर्मी पड़ती है, परन्तु वह भी बहुत अधिक नहीं; जुलाई का औसत तापक्रम लगभग ७०° फा० अङ्कित किया जाता है।

इस प्रदेश में वर्षा बहुत कम होती है, यहां पर वार्षिक वर्षा का औसत १०" से २०" तक ही है। वैसे तो वर्षा यहां पर साल भर बराबर होती है। परन्तु ग्रीष्म ऋतु में वर्षा कुछ अधिक हो जाती है। मई, जून, और जुलाई के माह ऐसे हैं जिनमें कृषि के हेतु पर्याप्त वर्षा होती है। इन तीनों महीनों में इतने जोर से वर्षा होती है, कि जल वेग के साथ बह कर जलाशयों में एकत्रित हो जाता है। इस ऋतु में यहाँ हवा की वाहनिक धाराओं से भी वर्षा होती है, क्योंकि थल भाग बहुत गर्म हो जाते हैं और हवायें गर्म होकर ऊपर उठने लगती हैं। इसके साथ साथ ऊपर की ठण्डी हवायें नीचे ओर उतरने लगती हैं। साइबेरिया के क्षेत्र में वर्षा पश्चिम से पूर्व की ओर कम हो जाती है। यहाँ पर वर्षा केवल १०" ही हो पाती है। इसका कारण यह है कि पछुवा हवाओं की रुकावट के लिये मार्ग में कोई भी पर्वत श्रेणी नहीं है। शीत ऋतु में वर्षा बर्फ के रूप में होती है। इन दिनों कोहरा भी बहुत अधिक पड़ता है।

(स) *तिब्बत तुल्य जलवायु*:—वास्तव में इस प्रकार की जलवायु वाले भाग गर्म शीतोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में स्थित हैं; परन्तु अधिक ऊंचाई के कारण यह शीत शीतोष्ण प्रदेशों जैसी विशेषतायें रखती है। एशिया में यह जलवायु तिब्बत व पामीर के पठार पर पाई जाती है। इन दोनों पठारों की ऊंचाई समुद्र सतह से १२००० फुट से अधिक है। इसके अतिरिक्त चारों ओर से ये ऊंची ऊंची पर्वतश्रेणियों से घिरे हुये हैं।

शीतोष्ण महाद्वीपी जलवायु-तापक्रम व वर्षा

स्थान		अक्षांश	समुद्र तल से ऊँचाई	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वर्ष	तापान्तर	वर्षा का योग
बरनौल	तापक्रम	५३°२०'	४८०	−२	१	१३	३३	५१	६२	६७	६२	५०	३५	१६	४	३३	६९.३	
	वर्षा			०.३	०.२	०.३	०.४	१.०	१.४	१.८	१.६	०.९	०.९	०.७	०.६			१०.१

शीतोष्ण मरुस्थलीय तुल्य जलवायु-तापक्रम व वर्षा

(अथवा तूरान, ईरान, तिब्बत तथा ग्रीष्म तुल्य जलवायु)

स्थान	अक्षांश	समुद्र तल से ऊंचाई	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जौलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वर्ष	तापान्तर	वर्षा का योग
लेह	३४°१०'	११,५०३	१७	१६	३१	४३	५०	५८	६३	६१	५४	४३	३२	२२	४१	४५·३	
			०·३	०·४	०·२	०·२	०·३	०·२	०·६	०·५	०·२	०·२	०	०·२			३·२

इन पठारों पर ग्रीष्म ऋतु में पर्याप्त गर्मी तथा शीत ऋतु में कड़ी सर्दी पड़ती है। दिन और रात्रि के तापक्रम में भी पर्याप्त तापान्तर रहता है। रात्रि के समय बहुत तीव्र ठण्ढी हवायें चलती हैं। इसके अतिरिक्त कोहरा भी पड़ता है। परन्तु दिन के समय कड़ी धूप एवं लू चलती है। प्राय: यह भी देखा जाता है, कि धूप और छाँह के तापान्तर के अतिरिक्त प्रात: व सायं के तापक्रम में भी काफी अन्तर रहता है। ग्रीष्म ऋतु यहां छोटी तथा गर्म रहती है। रात्रि के समय यहां चारों ओर कोहरा ही कोहरा दृष्टिगोचर होता है। शीत ऋतु बहुत ठण्ढी होती है, और औसत तापक्रम ४०° फा० रहता है। इस ऋतु में भी पाला पड़ता है। अन्य भागों की अपेक्षा तिब्बत के पठार का तापक्रम अधिक रहता है। क्योंकि यह भूमध्य रेखा के कुछ निकट पड़ता है।

तिब्बत के पठार पर वर्षा बहुत कम होती है। केवल दक्षिण-पूर्वी भाग में मानसून से वर्षा हो जाया करती है। लासा में ४०" के लगभग वर्षा हो जाती है। जैसे ही जैसे यह मानसूनी हवायें पश्चिम की ओर जाती हैं, वर्षा की मात्रा कम होती जाती है। लेह में कुल ३.२" ही वर्षा होती है, और वह भी उन चक्रवातों से जो कि भूमध्य सागर से आते हैं।

(द) *अल्टाई तुल्य जलवायु* :—इस प्रकार की जलवायु इस महाद्वीप पर मध्य के भाग में पाई जाती है। इस भूभाग में तापक्रम प्राय: बहुत कम रहता है। साधारणतया ये ध्रुवीय भागों के समान ही रहता है। ग्रीष्म ऋतु की अपेक्षा शीत ऋतु यहां बड़ी कड़ी होती है। वार्षिक तथा दैनिक तापान्तर सब भागों में समान नहीं रहता। धरातल के अनुसार इसमें परिवर्तन होता रहता है। उच्च भागों में तापान्तर अन्य स्थानों की अपेक्षा कुछ अधिक रहा करता है। इसका कारण यह है कि ये समुद्र से काफी दूर स्थित हैं। सूर्य की किरणों का भी थोड़ा बहुत प्रभाव पड़ता है।

इस क्षेत्र में वर्षा का होना कई तत्वों पर निर्भर रहता है। भूतल की ऊंचाई स्थिति तथा ऋतु कुछ ऐसे तत्व हैं; जो अपना प्रभाव पर्याप्त डालते हैं। पर्वतों से टकरा कर हवायें ऊपर उठने लगती हैं। इसी के अन्तर्गत हिमवर्षा तथा जलवर्षा हो जाती है। पर्वतों के ढाल जो नम हवाओं के सम्मुख पड़ते हैं वर्षा प्राप्त करते हैं, परन्तु विपरीत ढाल प्राय: शुष्क ही रहते हैं। यही कारण है कि अल्टाई के उत्तरी ढालों पर तथा हिमालय के दक्षिणी ढालों पर पर्याप्त वर्षा हो जाती है।

अल्टाई तुल्य जलवायु

नगर	ऊंचाई	जनवरी तापक्रम	जुलाई तापक्रम	वर्षा	वर्षा की ऋतु
दार्जिलिंग	७३७६	४०°फा०	६२°फा०	१२२·७″	गर्मी
सोनम्लिक	१००६७	१६°फा०	४६°फा०	६४·७	गर्मी

(४) शीत प्रदेश :—

(अ) साइबेरिया तथा टैगा तुल्य जलवायु :—जैसा कि नाम से प्रतीत होता है, इस प्रकार की जलवायु साइबेरिया में पाई जाती है। यहां जलवायु अत्यन्त ठण्ढी तथा साधारणतया नम है। शीत ऋतु यहां बहुत लम्बी और पर्याप्त ठण्ढी होती है। ग्रीष्म ऋतु बहुत छोटी और साधारण गर्म होती है। यहां पर वर्ष में लगभग नौ माह शीत ऋतु तथा केवल तीन माह ग्रीष्म ऋतु रहती है। गर्मियों में दिन अठारह से २० घण्टे और रात्रि केवल चार से छः घण्टे लम्बी होती हैं। अत्यन्त गर्म माह यहां पर जुलाई का होता है। और इसका औसत तापक्रम ५४° फा० है। शीत ऋतु में प्रायः रातें बहुत लम्बी होती हैं। और चौबीस घण्टों में सिर्फ चार या छः घण्टे दिन के समय प्रकाश रहता है। तापक्रम की दशा यह रहती है कि वह प्रायः हिम बिन्दु से नीचे ही रहता है। यदि देखा जाय तो साइबेरिया के यह अन्य क्षेत्र बहुत ही ठण्ढे रहते हैं। उत्तर-पूर्वी साइबेरिया में बरखोयान्स्क का जनवरी के माह का औसत तापक्रम—५६°फा० अङ्कित किया जाता है। ऐसा कहा जाता है, कि एक बार १८६२ में फरवरी के माह में इसका औसत तापक्रम –६०° हो गया था। इन भागों में भी वार्षिक तापान्तर बहुत अधिक रहता है। कभी कभी तो १००° फा० तक तापान्तर अङ्कित किया गया है, इतना तापान्तर कदाचित भूमण्डल पर कहीं भी अङ्कित नहीं किया गया है। वैसे तो वर्षा यहां पर हर माह में कुछ न कुछ होती है, परन्तु ग्रीष्म ऋतु विशेष कर वर्षा के लिये प्रसिद्ध है। यहां पर वर्षिक वर्षा का औसत २०″ है। परन्तु कभी कभी ३०″ भी अङ्कित की गई है। शीत ऋतु में यहां हिमवर्षा होती है। यह हिम बसन्त ऋतु के आरम्भ में ही पिघलनी शरू हो जाती है। पौधों के लिये यह बड़ा लाभदायक सिद्ध होती है।

शीत शीतोष्ण जलवायु—तापक्रम व वर्षा

स्थान	अक्षांश	समुद्र तल से ऊँचाई	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जोलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वर्ष	तापान्तर	वर्षा का योग
वैनेजेव	६३°५०'	१००	—११	—२	११	२१	३५	५१	६१	५६	४२	२५	४	—७	२४	७२·०	
			१·०	०·६	०·८	१·३	१·६	२·२	२·४	२·३	२·३	१·१	१·३	०·५			१८·४

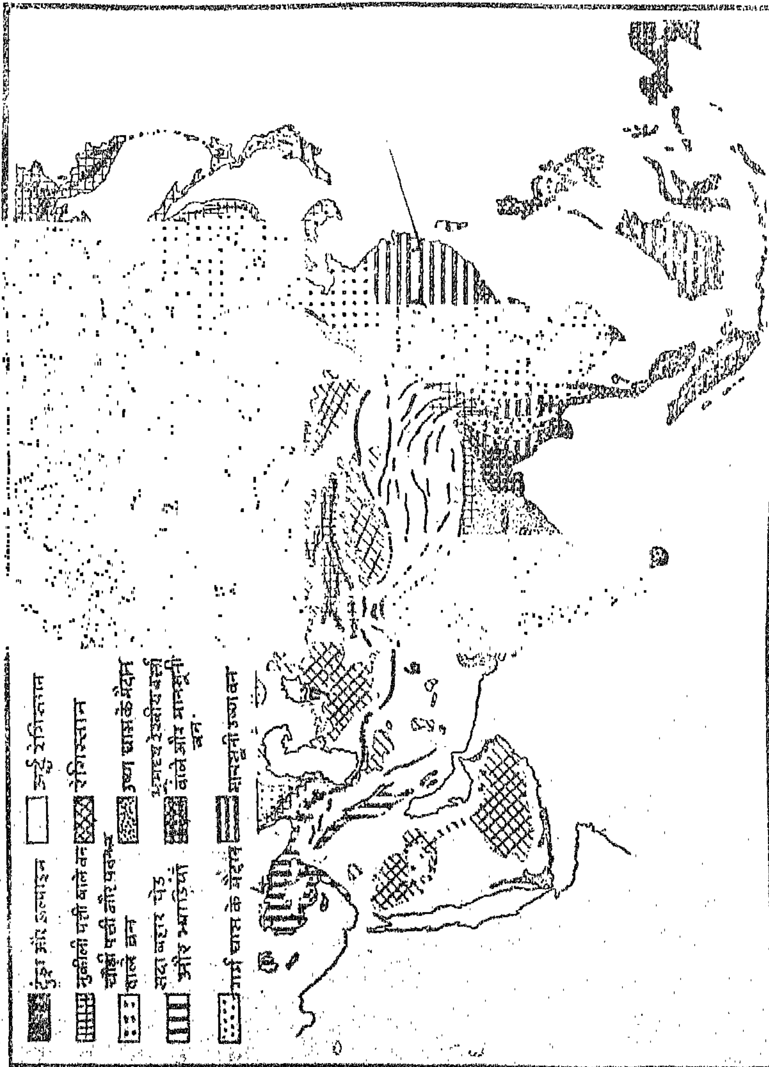
(ब) टुण्ड्रा तुल्य जलवायु :—इस प्रकार की जलवायु वाले भागों की सब से गर्म माह की ५०° समताप रेखा निम्न सीमा निश्चित करती है। ये क्षेत्र ५५° उत्तरी तथा दक्षिणी अक्षांशों के ऊपर ही मिलते हैं। वास्तव में आर्कटिक मरुस्थल सब से गर्म माह की ३२° फा० समताप रेखा द्वारा दो भागों में विभाजित हो गये हैं। प्रथम टुण्ड्रा की जलवायु, जिसमें कि दो ऋतुयें होती हैं। वर्ष में प्रायः आठ माह जाड़ा रहता है और सूर्य दृष्टिगोचर नहीं होता। भूतल पर कई फीट मोटी हिम की पर्त जमी रहती है। बहुत ही ठण्डी हवायें ध्रुव की ओर से चला करती हैं। ये ठण्डी हवायें यहां पर्गा (Purga) कहलाती हैं। शीत ऋतु का औसत तापक्रम ०° फा० से भी कम रहता है। कम से कम तापक्रम ६०° तक अंकित किया जाता है। ग्रीष्म ऋतु बहुत छोटी और तर होती है। इस ऋतु में चार माह में से आधे काल तक हफ्तों सूर्य प्रकाश देता रहता है। फलस्वरूप बर्फ पिघलने लगती है, नदियों के मुहानों को छोड़ कर शेष भाग खुल जाते हैं। यदि किनारे ऊंचे नहीं होते तो जल दोनों ओर दूर-दूर तक फैल जाता है और दलदल बन जाते हैं। ग्रीष्म ऋतु का औसत तापक्रम ५०° फा० रहता है। यहां पर वार्षिक तापान्तर भी पर्याप्त रहता है। वर्षा यहां कम होती है, परन्तु वह भी ग्रीष्म ऋतु में, शीत ऋतु की वर्षा चक्रवातों पर निर्भर रहती हैं। परन्तु वह भी हिम के रूप में ही होती है। वार्षिक औसत १५" से अधिक नहीं है। द्वितीय हिम मरुस्थल जिनमें कि हमेशा बर्फ जमी रहती है। वर्ष के चार माह से अधिक समय तक सूर्य दृष्टिगोचर नहीं रहता, शीत ऋतु बहुत ही अधिक ठण्डी रहती है। इस ऋतु में सिवाय बर्फ के और कोई भी वस्तु दृष्टिगोचर नहीं होती। वनस्पति का तो ऐसे वातावरण में अनुमान लगाना ही अनुचित है। हमेशा यहां पर तापक्रम हिमांक से भी नीचा रहता है।

शीत शीतोष्ण जलवायु—तापक्रम व वर्षा

स्थान	वर्खोयान्सक	
अक्षांश	६७°५०'	
समुद्र तल से ऊँचाई	३३०	
जनवरी	−५९	०·२
फरवरी	−४७	०·१
मार्च	−२४	०
अप्रैल	७	०·१
मई	३५	०·२
जून	५५	०·५
जौलाई	६०	१·२
अगस्त	५०	०·९
सितम्बर	३६	०·२
अक्तूबर	५	०·२
नवम्बर	−३४	०·२
दिसम्बर	−५३	०·२
वर्ष	३	
तापान्तर	११८·६	
वर्षा का योग		४·०

एशिया की प्राकृतिक वनस्पति

वास्तव में प्राकृतिक वनस्पति जलवायु पर निर्भर करती है। जिस देश में जिस प्रकार की जलवायु पाई जाती है, उसी प्रकार की प्राकृतिक वनस्पति। जल-वायु के अध्ययन से हम किसी भी देश की प्राकृतिक वनस्पति का अनुमान लगा



एशिया की प्राकृतिक वनस्पति

सकते हैं। जिस तरह हम जलवायु में भिन्नता पाते हैं, उसी प्रकार प्राकृतिक वनस्पति में। सच तो यह है कि यदि किसी भी क्षेत्र के जलवायु विभाग करेंगे तो यही उसके वनस्पति विभाग भी होंगे। प्रत्येक जलवायु विभाग अपने ही प्रकार की प्राकृतिक वनस्पति रखता है। भूमि उपयोगिता प्रकट करने का सब से अच्छा साधन प्राकृतिक ही है। टुण्ड्रा तथा टैगा के नुकीली पत्ती वाले वन उत्तर के ठण्डे भागों को सम्मिलित करते हैं। उष्ण कटिबन्धीय प्रदेश के वन, मरुस्थल तथा आन्तरिक पर्वतीय वनस्पति भूमध्य रेखा के निकट ही पाई जाती है। एशिया में केवल निम्नलिखित को छोड़कर लगभग सभी जलवायु विभाग पाये जाते हैं :—

(१) उच्च अक्षांशों के महाद्वीपों के पश्चिमी तट

(२) ध्रुव के क्षेत्र

प्राकृतिक वनस्पति के दृष्टिकोण से एशिया महाद्वीप को हम निम्नलिखित भागों में विभाजित कर सकते हैं :—

(१) भूमध्य रेखीय वन—जो कि नम सदाबहार वनस्पति को सम्मिलित करते हैं।

(२) मानसूनी वन—जो निम्नलिखित श्रेणी के हैं :—

(i) उन क्षेत्रों के नम सदाबहार मानसूनी वन जिनमें ८०" से अधिक वर्षा होती है।

(ii) पतझड़ वाले सदाबहार मानसूनी वन जहाँ ४०" से लेकर ८०" तक वर्षा होती है।

(iii) लम्बी लम्बी घास व झाड़ियों वाले क्षेत्र, जिनमें २०" से ४०" तक वर्षा होती है।

(iv) मरुस्थलीय प्राकृतिक वनस्पति उन भागों में जहां वर्षा केवल २० इन्च ही हो पाती है।

(३) चीन व जापान के शीतोष्ण मानसूनी वन

(४) मंचूरिया के वनीय प्रदेश

(५) मरुस्थलीय वनस्पति प्रदेश

(६) भूमध्य सागरीय वनस्पति

(७) घास के मैदान

(८) शीत शीतोष्ण वनस्पति प्रदेश

(९) आर्कटिक वनस्पति प्रदेश

(१) भूमध्य रेखीय वनस्पति :—

जैसा कि नाम से प्रतीत होता है, भूमध्य रेखीय वनों का विस्तार इस महाद्वीप पर भूमध्य रेखा के १०° उत्तर व दक्षिण तक सीमित है, क्योंकि यहाँ की

जलवायु गर्म व नम है, इसलिये यहाँ के सदाबहार वन बहुत ही घने हैं तथा इनके वृक्ष बहुत ही लम्बे तथा विस्तृत होते हैं। इन वनों की विशेषता यह होती है कि यहाँ के वृक्षों की लकड़ी कठोर तथा विभिन्न प्रकार के रंगों की होती है। इन वृक्षों पर बहुत अधिक गर्मी व नमी का प्रभाव पड़ता है, इसलिये पौधों का जीवन, यहां अन्य विभागों के मुकाबले अजीब ही हैं। इतने घने तथा सुन्दर पौधे एशिया के किसी भी प्रदेश में दृष्टिगोचर नहीं होते हैं। यह भूमध्य रेखीय वर्षा वाले वन केवल उन भागों को छोड़कर, जहां मिट्टी अधिक उपजाऊ नहीं है या लोगों ने वनस्पति को साफ कर दिया है, मैदानों तथा पहाड़ी, दोनों प्रकार के भागों में पाये जाते हैं।

भूमध्य रेखीय भागों में घनी वनस्पति ५,००० फीट की ऊंचाई पर पाई जाती है। इसके और भी ऊपर केवल कहीं कहीं पर ही वन मिलते हैं, और वह भी बहुत ही सीमित अवस्था में। वास्तव में देखा जाय तो बहुत ही घनी वनस्पति केवल अमेजन के बेसिन में ही देखने को मिलती है, क्योंकि वनस्पति घनत्व इतना अधिक है, कि सूर्य का प्रकाश नीचे धरातल तक तभी पहुंच पाता है, जब कि किरणें बहुत प्रचण्ड होती हैं। इतने घने अमेजन के प्रकार के वन एशिया में नहीं मिलते यद्यपि इन वनों के ऊपर का भाग बहुत घना होता है। परन्तु फिर भी इसको पार करके काफी प्रकाश धरातल पर पहुंच जाता है। इसके फलस्वरूप यहाँ धरातल पर भी बहुत घनी वनस्पति उग आती है। एशिया के भूमध्य रेखीय वनों को हम निम्नलिखित दो श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं :—

(१) वास्तविक वर्षा वाले वन, जो कि प्राय: उपजाऊ नदियों के मैदानों में पाये जाते हैं।

(२) वह बन जो कि आन्तरिक क्षेत्रों में उच्च भाग की सीमा के निकट अथवा घास के मैदान और नदियों के किनारे ऐसे स्थानों पर हैं जहां सूर्य की किरणें धरातल तक आसानी से पहुंचती हैं, और वहाँ अनेक प्रकार की झाड़ियों को जन्म देती हैं।

यहाँ की प्राकृतिक वनस्पति की प्रमुख विशेषता यह है, कि इसमें अनेक प्रकार के कठोर लकड़ी वाले वृक्ष पाये जाते हैं। वृक्षों के तने बहुत मोटे होते हैं, इसलिये लकड़ी जो इन वृक्षों से प्राप्त की जाती है, उसकी बहुत अधिक महत्ता होती है। इन वृक्षों की ऊंचाई २०० से लेकर ३०० फीट तक हुआ करती है, इनका रूप विभिन्न प्रकार का होता है, यद्यपि इनकी शाखायें सीमित होती है। एक और विशेषता इन वृक्षों की यह है, कि इनमें भांति भांति के रंगविरंगे फल फूल इत्यादि कम होते हैं। बहुत से वृक्ष तो ऐसे होते हैं, जिनका जन्म कई प्रकार के बीजों के मिश्रण से हुआ है। ऐसे वृक्षों को पहचानना बड़ा कठिन होता

है। यही कारण है कि ऐसे वृक्षों को आर्थिक दृष्टिकोण से काटना कठिन हो जाता है। एक ही प्रकार की जाति का वास्तविक पौधा पाना यद्यपि असम्भव तो नहीं है, परन्तु महंगा अवश्य है। इस कठिनाई के अलावा यहां नीचे धरातल पर हर प्रकार की कांटेदार बेलें, पेड़ पौधे तथा झाड़ियां होती हैं। इन्हे साफ करना बहुत कठिन हो जाता है, फलस्वरूप लकड़ी के वाणिज्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है लकड़ी के व्यापार में यह एक भारी कमी है। उष्णकटिबन्धीय क्षेत्रों में लकड़ी के धन्धे इसी कारण नहीं पनप पाये। परन्तु फिर भी कुछ इतनी उत्तम श्रेणी की लकड़ी यहां प्राप्त होती है, जिसकी मांग संसार में बराबर रहती है।

यहां के वनों में विभिन्न प्रकार के जीवजन्तु भी पाये जाते हैं। इन जीव-जन्तुओं में प्रसिद्ध बनमानुस, लंगूर, बन्दर तथा हाथी इत्यादि हैं। भांति भांति के पक्षियों के तो ये भंडार हैं।

जीवजन्तुओं व पक्षियों के अतिरिक्त यह भाग एशिया के कुछ आदि निवासियों के स्थान भी रहे हैं, उदाहरणार्थ लंका के वेदोज़, मलाया के सिमांग तथा बर्मा की अनेक जातियां।

जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है, इन भागों में जहां कहीं भी वन नहीं पाये जाते वहां घास पाई जाती है। ये घास के मैदान यहां दो प्रकार के हैं:—

(१) मैंग्रुव दलदल वाले क्षेत्र, जिसमें डेल्टे तथा ज्वारभाटों वाले तटीय क्षेत्र सम्मिलित हैं।

(२) रेतीले तटों की वनस्पति, जिसमें नारियल विशेषतौर पर उगता है।

जहां तक कि यहां की मिट्टी से तात्पर्य है, वह वास्तव में बहुत ही घुली हुई हुआ करती है, क्योंकि अधिक वर्षा, व तापक्रम से इनका उपजाऊपन नष्ट हो जाता है। इस प्रदेश में अधिकतर हमको लेटेराइट मिट्टी ही दृष्टिगोचर होती है। यह मिट्टी अधिक उपजाऊ नहीं होती, इसलिये आर्थिक दृष्टिकोण से इसकी कोई विशेष महत्ता नहीं है। हां केवल कुछ क्षेत्र ऐसे हैं, जिनमें नदियों ने बहुत ही उपजाऊ मिट्टी डाली है, जैसे जावा, मलाया तथा बोर्नियो। इनमें बहुत से ऐसे भी हैं, जिनमें ज्वालामुखी पर्वतों ने अति उपजाऊ मिट्टी डाली है। यह भाग कृषि के दृष्टिकोण से बहुत प्रसिद्ध हैं; और इसीलिये काफी घने बसे हुए हैं।

(२) मानसूनी वन:—

मानसून प्रदेश में पर्याप्त वर्षा तथा अधिक तापक्रम के कारण वनस्पति की बाहुल्यता रहती है। इन भागों में वर्षा की मात्रा में अन्तर के कारण वनस्पति में भी अन्तर पाया जाता है। जिन स्थानों पर ८०" से अधिक वर्षा होती है वहाँ उष्णकटिबन्धीय सदाबहार वन मिलते हैं। ये वन उतने घने नहीं होते जितने कि

भूमध्य रेखीय वन होते हैं। इनकी पत्तियाँ चौड़ी होती हैं, परन्तु एक बात अवश्य है, वह यह कि इनके धरातल पर अनेक प्रकार के पौधे उगे होते हैं। यहाँ के वृक्षों की आर्थिक महत्ता बहुत अधिक है, क्योंकि इनमें महोगिनी, लागवुड तथा देवदार इत्यादि महत्वपूर्ण लकड़ी प्रदान करने वाले वृक्ष उगते हैं। जिन स्थानों पर ४०" से ८०" तक वर्षा होती है, वहां चौड़ीपत्ती वाले मानसून वन पाये जाते हैं। इन वनों के वृक्षों की विशेषता यह होती है, कि यह ग्रीष्म ऋतु में पत्ते गिरा देते हैं। इनकी भी आर्थिक महत्ता काफी है, क्योंकि साल, सागौन, शीशम, आम, बाँस जसी उपयोगी लकड़ियाँ इन वनों से ही प्राप्त होती हैं। आर्थिक दृष्टि-कोण से यदि देखा जाय तो इन वनों की उपयोगिता भूमध्य रेखीय वनों की अपेक्षा अधिक हैं, क्योंकि यहां इनका उपयोग सुगमता से किया जा सकता है। इन वनों से जो लकड़ी प्राप्त होती है, वह भूमध्य रेखीय वनों की लकड़ी से कहीं अच्छी होती है। जिन भागों में २०" से ४०" तक वर्षा होती है, वहां घनी वनस्पति का अभाव रहता है, केवल झाड़ियां तथा बबूल के वृक्ष ही उग आते हैं। ऐसे भागों में जहाँ २०" से भी कम वर्षा होती है, वहां मरुस्थलीय बंजर भाग मिलते हैं, जिनमें कि छोटी छोटी कांटेदार झाड़ियों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं पाया जाता।

(३) चीन और जापान के शीतोष्ण मानसूनी वनस्पति विभाग:—

कदाचित् चीन में ऐसी कोई भी प्राकृतिक वनस्पति नहीं है, जिसे हम चीन की प्राकृतिक वनस्पति कह सकें। पूर्वी चीन के तो बहुत से वन साफ कर दिये गये हैं। आजकल वनस्पति इस देश में केवल तीन ही क्षेत्र में पाई जाती हैं:— (१) नानशन पर्वत (२) सिंगालिंग पर्वत (३) पश्चिमी पहाड़ी प्रदेश। चीन में चौड़ी पत्ती वाले वन, नुकीली पत्ती वाले वृक्षों के साथ लगभग हर स्थान पर मिलते है। यह विशेषतौर पर उच्च अक्षांशों की ओर अधिक दृष्टिगोचर होते हैं। बांस के वृक्ष तो देश भर में पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त एक और प्रकार का वृक्ष यहां पर उगता है, और वह है, तंग (Tung) जिसमें से विशेषतौर पर तैल निकाला जाता है। जिन वृक्षों से वार्निश निकाली जाती है, वह भी यहां पर काफी मात्रा में उगते हैं। वार्निश वृक्षों के तनों की छाल को छील कर निकाली जाती है। जापान की प्राकृतिक वनस्पति को हम दो श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं —(१)—दक्षिणी जापान, जिसमें अधिकतर गर्म शीतोष्ण कटिबन्धीय वन पाये जाते हैं, इन वनों में सदाबहार पतझड़ वाले वृक्ष, जिनकी पत्तियां चौड़ी, लकड़ी कठोर व मुलायम होती हैं, पाये जाते हैं। (२) उत्तरी जापान, जिसमें विशेषतौर पर नुकीली पत्ती वाले वन मिलते हैं, परन्तु इनमें कहीं कहीं पर चौड़ी पत्ती वाले वृक्ष भी दृष्टिगोचर होते हैं।

(४) मंचूरिया वनस्पति विभाग:—

जीव-विज्ञान के दृष्टिकोण से यदि देखा जाय तो इस वनस्पति विभाग में मंचूरिया के वह भाग सम्मिलित हैं, जो इन्हीं क्षेत्रों के निकट हैं। मंचूरिया के वनीय क्षेत्र में अधिकतर मिश्रित वन मिलते हैं, इनमें नुकीली पत्ती वाले तथा पतझड़ वाले वृक्ष अधिकाधिक मिलते हैं। घास के मैदान केवल निम्न भागों तक सीमित हैं। उच्च भाग अधिकतर वनों से ही ढके हुए हैं। यहाँ के शुष्क भागों में छोटी छोटी घास तथा झाड़ियां उन भागों में मिलती हैं जो नदी की घाटी तथा वनीय क्षेत्र के मध्य में हैं। ह्वांगहो नदी के क्षेत्र में यद्यपि वन तो नहीं मिलते परन्तु उत्तरी मंचूरिया के भाग में कुछ वन अवश्य पाये जाते हैं। वह भाग भी जो परिवर्तित नम महाद्वीपीय जलवायु में आते हैं, वनों से ढके हुए हैं। कुछ और पूर्व में नुकीली पत्ती वाले वह वन सम्मिलित हैं, जिनमें स्प्रूस, *सिलवर फर, लाल* पाइन इत्यादि के वृक्ष मुख्य हैं। कठोर लकड़ियों में जैसे ओक, ऐश तथा बिर्च इत्यादि इन वनों से प्राप्त होती हैं।

(५) मरुस्थलीय वनस्पति विभाग:—

निम्न तथा मध्य अक्षांशों के मरुस्थलीय क्षेत्र वह भाग हैं, जिनमें कि दूर दूर तक सूखी घास, झाड़ियां तथा अन्य मरुस्थलीय वनस्पति दृष्टिगोचर होती है। वास्तव में निम्न अक्षांशों के मरुस्थलीय भाग ऐसे भाग हैं, जिनमें कि सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं, और वाष्पीकरण उन भागों से अधिक होता है, जो मध्य अक्षांशों में स्थित हैं। ऐसे वातावरण में पशु चराने का धन्धा ही अधिक प्रचलित है। वह भाग जिसमें नदियों की घाटियाँ—जैसे दजला, फरात व सिन्ध काफी महत्वपूर्ण हैं, वहाँ मानव स्थापना अधिकतर चश्मों व सोतों पर या नदियों की घाटियों की सीमा पर निर्भर है। ऐसे स्थानों पर सुन्दर उद्यान स्थापित हो जाते हैं क्योंकि यहां की मिट्टी अति उपजाऊ होती है। मरुस्थल सामान्य रूप से निम्न लिखित दो श्रेणियों में विभाजित किये जा सकते हैं—

(१) वे जोकि बिल्कुल बंजर हैं, और जहां किसी भी प्रकार का जीवन नहीं पाया जाता है।

(२) वे जिन पर कि पशु व वनस्पति जीवन निर्भर रहता है, परन्तु एक निश्चित सीमा तक ही।

(६) भूमध्य सागरीय वनस्पति विभाग:—

दक्षिणी-पश्चिमी एशिया में कुछ छोटे छोटे वृक्ष पाये जाते हैं, जिनमें कि वास्तव में मरुस्थलीय (Xerophcrous) वन पाये जाते हैं। इन वनों के वृक्ष बहुत अधिक गर्मी व शुष्कता से बिल्कुल सुरक्षित रहते हैं। प्रमुख वृक्षों में जैतून, कार्क, बलूत, नारंगी व नींबू इत्यादि हैं। इन वृक्षों की पत्तियों पर छोटे छोटे से

चिकने रेशे होते हैं। इनके तने (चौड़े व चिकने होते हैं, कुछ की पत्तियाँ तो चमड़ीली व मोटी भी होती हैं, जैसे—लौरेल व मर्टिल। नारंगी, जिसके वृक्षों का रंग हल्का हरा तथा मोम की भाँति चिकनी पत्तियां होती हैं, बहुत ही अधिक मात्रा में उगती है। अंगूर की बेलें भी लगभग यही विशेषतायें रखती हैं, परन्तु इनकी जड़ें भूमि में बहुत गहराई तक पहुंच जाती हैं। भूमि पर घास यहां बहुत कम उगती है, परन्तु झाड़ियां तथा काँटेदार वृक्ष अधिक पाये जाते हैं।

पौधों की छोटी छोटी पत्तियाँ इनको बहुत सख्त शुष्कता से बचाती हैं तथा साथ ही ग्रीष्म ऋतु में इनकी नमी को सुरक्षित रखती हैं।

(७) घास के मैदानों वाले प्रदेश:—

एशिया में घास के मैदान दक्षिणी पश्चिमी साइबेरिया, मरुस्थलों के सीमा प्रदेश, मध्य एशिया के अर्ध रेगिस्तान, मंगोलिया तथा मंचूरिया के स्टेप्स में पाये जाते हैं। यह घास के मैदान उन बंजारे लोगों के लिये महत्वपूर्ण हैं, जो कि अपने पशुओं सहित इधर उधर घूमा फिरा करते हैं। ये भाग जापानी लोगों के लिये भी आर्थिक दृष्टिकोण से बड़े महत्वपूर्ण हैं। यहां पर केवल घास ही एक ऐसी वनस्पति है जो कि दूर दूर तक दृष्टिगोचर होती है। किन्तु यह घास उन स्थानों पर जहाँ वर्षा नहीं हो पाती मुर्झा जाती है, और दूर दूर तक भूरे रंग के बंजर क्षेत्र ही दृष्टिगोचर होते हैं। कुछ स्थानों पर ऐसी झाड़ियां भी दीखती हैं, जो घास को ढके रहती हैं। कुछ झाड़ियाँ ऐसी भी पाई जाती हैं, जिनमें रंग-बिरंगे फूल लगते हैं, यह यहाँ के प्राकृतिक दृश्य को बड़ा सुन्दर व रमणीय बना देती हैं। यहाँ की घास व झाड़ियों की पत्तियाँ नुकीली होती हैं। इनकी विशेषता यह होती है, कि यह शुष्क ऋतु में झुलस कर मुड़ जाती हैं।

शुष्क ऋतु में पत्तियाँ जब झुलस जाती हैं तब यह क्षेत्र स्टेप्स के मरुस्थल का रूप धारण करने लगती हैं, लेकिन जैसे ही जैसे हम उत्तर की ओर जाते हैं, वैसे ही वैसे यह नुकीली पत्ती वाले वनों में परिवर्तित हो जाती हैं।

८) शीत शीतोष्ण कटिबन्धीय वनस्पति विभाग :—

यह नुकीली पत्ती वाले वन टैगा कहलाते हैं। यहां की वन सम्पत्ति बहुत विस्तृत है। यह प्रदेश उत्तम लकड़ी प्राप्त करने का एक भण्डार है। पश्चिम में यूराल पर्वत से लेकर पूर्व में प्रशान्त महासागर तक यही वन दृष्टिगोचर होते हैं। इस वनों का विस्तार रूसी तुर्किस्तान, जुंगेरिया तथा मंगोलिया व मंचूरिया तक पाया जाता है। इस प्रदेश का क्षेत्रफल लगभग १००० लाख एकड़ है। इन वनों में चीड़, स्प्रूस, लार्च, फर, सीडार हेमलाक, इत्यादि वृक्ष आते हैं। इन वृक्षों की पत्तियां सुई के समान नुकीली होतीं हैं, जिससे कि बर्फ जो इन पर गिरती है, तुरन्त ही भूमि पर गिर जाती है। पत्तियों की ऊपरी पर्त मोटी तथा चिकनी होती

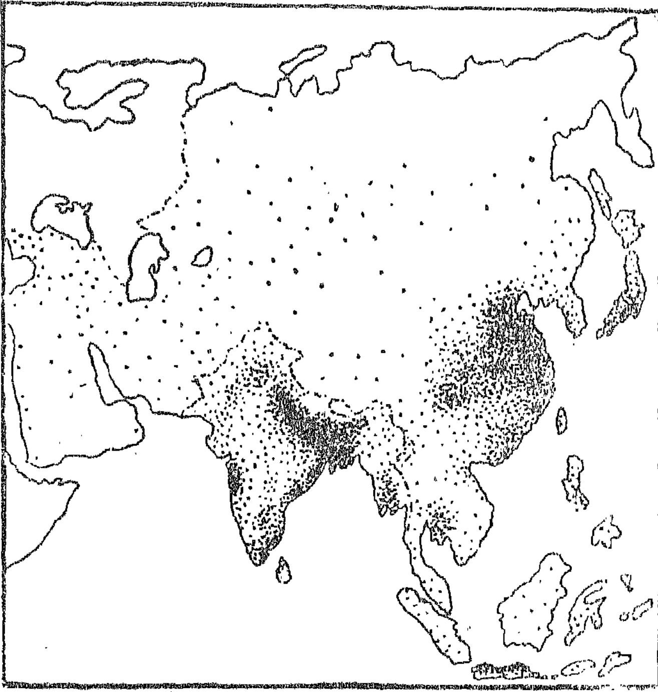
है, जिससे कि उनकी नमी भी बाहर नहीं निकलती है। वृक्षों की शाखाओं का फैलाव ढलुवां होता है जिससे कि बर्फ गिर कर आसानी से फिसल जाती है। इन वृक्षों के तने मोटे तथा शिखर नोकदार होते हैं। इन पर वायु की तीव्र गति का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। इस वन प्रदेश में दक्षिण की ओर कहीं-कहीं चौड़ी पत्ती वाले कुछ वृक्ष जैसे बर्च, आस्पेन, बिर्च, मैपिल इत्यादि भी उगते पाये जाते हैं। एश तथा एल्म के चौड़ी पत्ती वाले वृक्ष अधिकतर पूर्वी साइबेरिया में मिलते हैं। यह वन घटिया लकड़ी वाले हैं। यहां पर उतनी उत्तम श्रेणी की लकड़ी प्राप्त नहीं होती है जितनी कि अमेरिका के इस प्रदेश में होती है।

(६) आर्कटिक वनस्पति विभाग :—

इन भागों में टुण्ड्रा की वनस्पति सम्मिलित है। टुण्ड्रा प्रदेश में एशिया के उत्तरी भाग आते हैं। यहां इतनी कड़ी सर्दी पड़ती है, कि वनस्पति भली भांति उग भी नहीं पाती, चारों ओर दूर दूर तक बंजर क्षेत्र ही दृष्टिगोचर होते हैं। वनस्पति यहां ऐसी होती है, जो कि थोड़े ही समय के लिये उगती है। वैसे झाड़ियां तथा छोटे छोटे पौधे यहां हमेशा ही दृष्टिगोचर होते हैं। जो बहुत ही सुरक्षित स्थान हैं, वहां ऐसी झाड़ियां होती हैं, जिनमें बेरियां लगती हैं। यहाँ के वृक्ष ठिगने होते हैं इनकी ऊंचाई केवल कुछ ही इन्च होती है। यह अधिकतर भूमि पर ही फैलते हैं। कहीं कहीं पर जब कि बर्फ पिघल जाती है, तो दलदल बन जाते हैं। इन दलदली क्षेत्रों में मौस नामक वनस्पति उगती है। लीच अधिकतर शुष्क भूमि पर ही उगती दृष्टिगोचर होती है। जिन भागों में धूप पड़ती है, वहां सुन्दर सुन्दर रंग-बिरंगे फूल भी उग आते हैं। ग्रीष्म ऋतु छोटी परन्तु अति रमणीय होती है, वर्ष के अधिक समय तक भूमि बर्फ से ढकी ही रहती है।

एशिया के निवासी :—समाज, संस्कृति तथा धर्म

एशिया जिसके विषय में कुछ का विश्वास है कि यह 'मानव जाति का जन्म-स्थल' रहा है, विश्व की तीन चौथाई जनसंख्या का निवास स्थान है। परन्तु ये लाखों निवासी इस महाद्वीप के धरातल पर एक से वितरित नहीं हैं। पामीर का पठार, टुण्ड्रा के बर्फीले क्षेत्र तथा गोबी एवं तुर्किस्तान के प्रदेश लगभग बिल्कुल ही बंजर भाग हैं। साइबेरिया, तिब्बत, ईरान तथा अरब के क्षेत्रों में केवल कुछ ही बंजारों की जनसंख्या पाई जाती है। इसके विपरीत नम एवं उपजाऊ गंगा, यांगटिसी तथा ह्वांगहो नदियों की घाटियां विश्व के सबसे अधिक घने बसे हुये क्षेत्र हैं। सारांश यह है कि जनसंख्या घनत्व का बहुत कुछ सम्बन्ध वर्षा वितरण से भी है। उदाहरणार्थ—दक्षिणी-पूर्वी देश, जैसे—भारत, इण्डोचीन, चीन तथा जापान। ये सारा भाग उन नम हवाओं के सम्मुख पड़ते हैं, जो कि भारतीय तथा



एशिया में जनसंख्या का घनत्व

प्रशान्त महासागर से चलती हैं। इनमें कुल मिलाकर विश्व की आधी से अधिक जनसंख्या पाई जाती है। पहले इस विचारधारा पर कि इन देशों में इतनी घनी जनसंख्या वास्तव में पाई जाती है या नहीं, लोगों को सन्देह था। परन्तु सरकारी जनगणना जो कि चीन, भारतवर्ष तथा जापान में की गई है, उससे यह संदेह दृढ़ हो जाता है। नवम्बर १९५४ के 'पीपुल्स चाइना' के अनुसार अक्टूबर १९५४ में चीन की जनसंख्या ५९०,०९४,१०० (फारमूसा की ७,५९१,००० जन संख्या शामिल है।) भारतवर्ष की ३७२,०००,००० तथा जापान की ८८,०००,००० थी।

एशिया के निवासियों में लगभग सभी प्रकार के भौतिक रूप, भाषा, सामाजिक संस्कृति तथा धर्म इत्यादि पाये जाते हैं। काले घुंघराले बाल वाले 'नैग्रिटो' जाति के लोग न केवल अंडमन द्वीपों में, बल्कि आन्तरिक मलक्का तथा दक्षिणी भारत के पहाड़ी क्षेत्रों में भी पाये जाते हैं। इस महाद्वीप के उत्तर-पूर्व में चुकचीज जाति के लोग मिलते हैं, ये लोग उत्तरी अमरीका के एस्कीमों जाति के लोगों से कुछ मिलते जुलते हैं। इसी क्षेत्र के यूकागीर (Yukaghirs) कमचाडेल्स

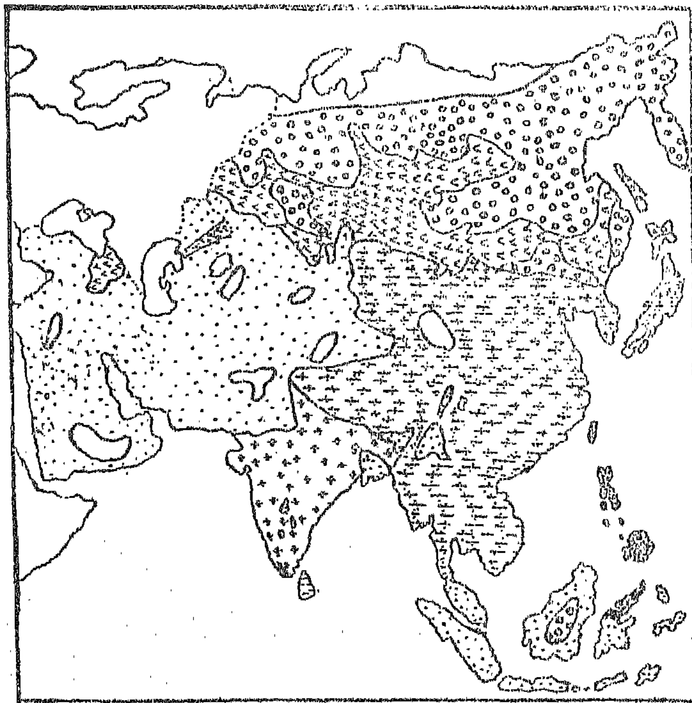
(Kamchadales) तथा कोरिआक्स (Koriaks) और साथ ही आइनस (Ainus) एवं गिलिआक्स (Giliaks) (ईज़ो साखालीन तथा आमूर डेल्टा के आदि निवासी) लोगों के वंशजों का सम्बन्ध अभी पूर्णरूप से ज्ञात नहीं हो सका है। केवल कुछ बाहरी जातियों को छोड़कर इस महाद्वीप के निवासी दो प्रमुख पीली और श्वेत जातियों के हैं।। पहली जाति मंगोलिक तथा दूसरी काकेसिक है।

अति प्राचीन काल से काकेसिक जाति के गोरे लोग काकेशस के दक्षिण-पश्चिमी प्रदेश तक सीमित रहे हैं। इसी प्रदेश से उन जातियों की उत्पत्ति हुई है, जो कि एशिया माइनर, सीरिया, अरबिया, ईरानिया, रूसी तुर्किस्तान तथा भारतवर्ष के उत्तर में पाई जाती हैं। वास्तव में ये लोग हिमालय, हिन्दूकुश तथा उत्तरी ईरान के पर्वतों की रुकावट के कारण मंगोलिक अथवा 'तुरानियन' जाति के अंश से वंचित रहे।

साथ ही कभी कभी इस जाति के लोग उसमें और उसके इसमें भी आते जाते रहे हैं। तुर्किस्तान, ईरान तथा टर्की ऐसे देश हैं, जो कि इस बुराई के शिकार हो चुके हैं। ऐसा प्रतीत होता है, कि मंगोल तथा काकेसिक जातियों का मिश्रण कोचिन चीन तथा यूनान में बहुत हुआ है, क्योंकि इन्हीं दो स्थानों पर यह प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिलता है। भारत के पठार की निम्न जातियां, यदि द्राविड़ व कोलिरियन जाति की भी नहीं हैं, तो काकेसिक के बजाय मंगोल जाति के तो अवश्य ही होंगे। अक्कद जाति के लोगों ने (जो कि दूर से ही 'तूरानियन' उत्पत्ति के बतलाये जाते हैं) बेबीलोनिया की आरम्भिक संस्कृति की नींव डाली थी और इस प्रकार से ये तमाम मंगोलिया, ईरानिया तथा अनाटोलिया में स्थापित हो गये और यहां के काकेसिक लोगों के साथ ऐसे घुल मिल गये, कि उनका भौतिक रूप रंग भी इन्हीं लोगों के प्रकार का हो गया। दूसरी ओर हम देखते हैं, कि अति प्राचीन काल में काकेसिक तजिक्स (Tajiks) जाति के लोग अरल बेसिन के मंगोल बंजारों के साथ स्थापित हो गये। जेवल्सकी (Prjevalsky) ने तो यहाँ तक कहा है कि ये तजिक्स और भी अधिक पूर्व में लोबनोर के तट तक पहुंच चुके थे।

इस महाद्वीप पर विभिन्न श्रेणियों की मानव संस्कृति का विकास हुआ है, उदाहरणार्थ—शिकार खेलना, पशुपालन तथा कृषि इत्यादि। यह मानव संस्कृति जातीय तत्व की अपेक्षा मिट्टी तथा जलवायु पर अधिक निर्भर रहती है। इसी कारण मंगोलियन चीनी व जापानी सैकड़ों वर्ष तक कृषक रहे हैं। इनके विपरीत काकेसिक अरब जाति के लोग सदा से ही बंजारे थे।

तंगस जाति जो कि पीले वर्ण की एक उत्तर-पूर्वीय शाखा है, शिकार खेलती है, भेड़ बकरियाँ चराती है तथा कृषि भी करती है। परन्तु ये धन्धे यह लोग अपने भौतिक वातावरण के अनुसार ही करते हैं। यदि ये आर्कटिक तट पर बसे हैं तो मछली पकड़ते हैं। यदि साइबेरिया के वनों में हैं, तो शिकार खेलते हैं और यदि आमूर के तटों पर हैं तो कृषि करते हैं। कुछ तुर्की जातियां जैसे उज़बेग्स (Uzbegs) तथा ओसमानी (Osmani) कदाचित बोखारा, खिवा तथा एशिया माइनर में स्थायी रूप से कृषक जातियों के रूप में स्थापित हो गई हैं। इनके विपरीत खिरगीज़ तथा कारा-खिरग़ीज जातियां जो कि पश्चिमी साइबेरिया के स्टैप्स



एवं त्यानशान पर्वतों पर रहती हैं, अब भी बंजारे हैं और डेरों में अपना जीवन व्यतीत करते हैं। ऋतुओं के अनुसार ये लोग इधर उधर उच्च व निम्न भूमि पर घूमा फिरा करते हैं। परन्तु यदि सामान्य रूप से देखा जाय तो मछली पकड़ने व शिकार खेलने वाली जातियां उत्तरी क्षेत्र तक ही सीमित हैं। दक्षिण में इनकी सीमा

६०° अक्षांश ही पूरी करती हैं। घूमने फिरने वाले बंजारे इस महाद्वीप के मध्य में केवल शुष्क ईरान व अरब को छोड़ कर ३५° उत्तरी अक्षांश तक ही सीमित हैं। अन्य स्थानों पर विशेषतया जापान, चीन, भारतवर्ष, इण्डोचीन तथा अनाटोलिया में आरम्भ से ही सभ्य स्थाई रूप से कृषि करने वाली जातियां रहती हैं।

परन्तु यदि सामाजिक संस्कृति पर बाहरी वातावरण तथा धर्म का प्रभाव पड़ता है, तो उसके साथ ही जाति तथा राष्ट्रीयता का भी प्रभाव अवश्य पड़ता होगा। एशिया एक ऐसा महाद्वीप है, जिस पर कि उन लोगों का जन्म हुआ है, जो कि एक ही परमात्मा (Monotheism) को मानते हैं। परन्तु इसमें ऐसे भी लोग रहते हैं जो कि किसी भी विशेष धर्म (Paganism) को नहीं मानते। यहाँ पर ब्रह्मा व बौद्ध सिद्धान्तों का कोने कोने में प्रचार हुआ है और इस धर्म का पालन करने वाले भी बहुत से लोग पाये जाते हैं।

ज्यूदा धर्म पेलेस्टाइन से बिल्कुल ही अलग हो गया और अब वहां पर कुछ यहूदी लोग ही मिलते हैं। ईसाई धर्म का बहुत धीरे प्रचार हो रहा है। परन्तु वह भी पादरियों तथा प्रचारकों के प्रयत्नों से। आज कल इसका प्रचार अनाटोलिया के 'हैलेन' लिबेनन पहाड़ियों के 'मेरोनाइट' तथा सीरिया के प्रचारक अधिक कर रहे हैं। वैसे इस धर्म का इतना प्रचार हुआ है, कि आरमीनिया ज्योरजिया, काकेसिया, उच्च दजला व उर्मिया झील के नेस्टोरियन (चाल्डियन) तथा यूरेशियन्स, इत्यादि सभी लोगों ने इस धर्म को अपनाया है। न केवल इतना ही, बल्कि भारतवर्ष, जापान, रूस, काकेशस इत्यादि देशों के लोगों ने भी हाल ही में ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया है।

भारतवर्ष, कफीरिस्तान, हिन्द-तिब्बत, सीमान्त प्रदेश, चीन के दक्षिण व पश्चिमी उच्च भाग में अब भी ऐसी जातियां मिलती हैं जो कि किसी भी विशेष धर्म को नहीं मानतीं। प्राचीन 'अग्नि पूजक' (Fire Worshippers) अब भी ईरान में पाये जाते हैं, परन्तु बहुत कम संख्या में। भारतवर्ष के पारसी इन्हीं के वंशज बतलाये जाते हैं। ये लोग ज़ोराष्ट्र (Zoroasters) धर्म को मानते हैं। इन धर्मों को छोड़ कर, एशिया की समस्त जनसंख्या या तो शामानिस्ट (Shamanist), बौद्ध (Buddhist), हिन्दू (Hindu) और या मुसलमान धर्म को अपनाती है। शामानिस्ट साइबेरिया अथवा मंचूरिया की फिनो-तातर (Finno-Tatar) जाति के लोगों के साथ मिश्रित दशा में पाये जाते हैं। बौद्ध धर्म को एशिया की कुल जनसंख्या का ⅓ भाग अपनाता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है, कि मंगोल जाति के वे लोग, जो जापान, चीन, भारतवर्ष, बर्मा तथा लंका में रहते हैं बौद्ध धर्म को ही मानते हैं। हिन्दू धर्म को अपनाने वाले लोग

भारतवर्ष में ३००,०००,००० हैं। मुसलमान धर्म दो गोत्रों में विभाजित है, पहला शिया और सुन्नी। इस धर्म को तुर्किस्तान के तातर, दक्षिण पश्चिमी साइबेरियन, पश्चिमी चीन के निवासी, ईरान, अनाटोलिया, सीरिया, अरेबिया तथा कुछ भारत के लोग मानते हैं। कलमुक तथा खिरगीज लोग जो कि बोल्गा के स्टैपलैंड में मिलते हैं, भिन्न प्रकार के धर्म से सम्बन्धित हैं। मङ्गोलियन, कलमुक अपने तुंगे-रियन तथा मंगोलियन साथियों की तरह बौद्ध धर्म को मानते हैं। खिरगीज भी अपने साइबेरियन तथा बंजारे खिरगीज की भांति मुसलमान धर्म को अपनाने लगे हैं। ठीक इसी प्रकार ईरान के निवासी शिया गोत्र के तथा पश्चिमी तुर्किस्तान तथा अफगानिस्तान के सुन्नी गोत्र के हैं। हेरत तथा काबुल के मध्य अफगान उच्च भूमि पर जो कि ऐमक (Aimaks) तथा हजारा (Hazarahs) जातियां रहती हैं, वे इनमें से किसी की भी उत्पत्ति नहीं है, बल्कि दोनों ही मंगोल जाति की उत्पत्ति हैं। परन्तु एक बात अवश्य है और वह यह, कि प्रथम ईरानियनों की भांति सुन्नी हैं और द्वितीय शिया गोत्र को मानने वाली हैं। इन दो गोत्रों के अतिरिक्त मुसलमान धर्म अन्य ऐसे सम्प्रदायों को भी मानते हैं, जो कि अजीब अजीब प्रकार की प्रथाओं को अपनाते हैं। न केवल इतना ही, बल्कि इनके पड़ोसी इन्हें शक व सन्देह की दृष्टि से देखते हैं उदाहरणार्थ—अनाटोलिया के 'किजिल-बाशिज' (Kizil Bashis), ईरान तथा अफगानिस्तान के निवासी जो कि बहुत अधिक प्राचीन परिवर्तित लोग नहीं हैं। अलावा इसके ड्रूसेज़ (Druses), सीरिया के नुसारीह (Nusarieh) तथा इज़ाइद (Yezides) जो कि कुर्दिस्तान के "भूत-प्रेत पूजक" (Devil Worshippers) हैं, कदाचित् मुसलमान और ईसा से भी पहले की जातियों के हैं।

एशिया—एक अतिशयता प्रधान महाद्वीप

एशिया एक इतना विस्तृत महाद्वीप है, कि इसमें अनेक प्रकार की भिन्नतायें मिलती हैं। इन भिन्नताओं का अध्ययन प्रत्येक भूगोल विद्यार्थी के लिये आवश्यक है। एशिया, जिसे अतिशयता प्रधान महाद्वीप कहा जाता है, उसमें भिन्नतायें न केवल एक क्षेत्र में, बल्कि अनेक क्षेत्रों में पाई जाती हैं। यह अतिशयता भौतिक, मानवीय, आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक रूपों में प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होती हैं। यहाँ हम इसी अतिशयता का अध्ययन कर रहे हैं।

यदि इस महाद्वीप के धरातल की ओर दृष्टि डाली जाय, तो यहां अनेक पर्वत श्रेणियां मिलती हैं। हिमालय पर्वत इनमें विश्व का सबसे ऊंचा पर्वत है। एवरेस्ट शिखा की ऊंचाई २६१२६ फीट है। इतनी ऊंची शिखा विश्व के किसी भाग में नहीं मिलती। इसके विपरीत इसी भू-भाग में वह भाग भी स्थित हैं, जो

समुद्र सतह से भी नीचे हैं, जैसे—मृत्यु सागर, जो कि समुद्र सतह से १२९७ फीट नीचा है। इसका उदाहरण कदाचित विश्व के किसी भी भाग में नहीं मिलता। यदि सागरों की गहराई की ओर ध्यान दिया जाय तो सबसे गहरा समुद्र भी यहीं पर है। फिलीपाइन द्वीप के निकट 'मिन्डनाओ डीप' ३५,३१० फीट गहरा है। प्रशान्त महासागर जो विश्व का सबसे गहरा सागर है, यहीं पर सबसे अधिक गहरा है। सबसे उथले सागरों में अनेक ऐसे हैं, जो बहुत ही उथले हैं, और जिनके धरातल पर गोताखोर बड़ी आसानी से मोती प्राप्त करते हैं।

एशिया की बनावट की ओर यदि ध्यान दिया जाय, तो हमको कई ऐसे खण्ड मिलते हैं, जो कैम्ब्रियन युग (धारवार युग) से भी पहले के हैं। कुछ भूगर्भ शास्त्रियों का तो कथन है, कि भारत के दक्षिण का पठार उस समय से है, जिस समय से पृथ्वी का जन्म हुआ। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि इसमें अति प्राचीन कठोर चट्टानें पाई जाती हैं। प्राचीन भूखण्डों में अरब प्रायद्वीप, अंगारा लैंड तथा चीनी 'मैसिफ' इत्यादि उल्लेखनीय हैं। अब यदि हम नवीन पर्वतों की ओर ध्यान देते हैं, तो भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत, जिनका विस्तार एशिया में काकेशस से लेकर दक्षिण-पूर्वी एशिया तक है, बहुत ही नवीन है। यह तरशियरी युग के बने हुये हैं और अब भी इनकी ऊंचाई बढ़ रही है। कुछ स्थानों पर तो हमको इनकी नवीनता के चिन्ह भी मिलते हैं। कई जगह चट्टानें इतनी मुलायम हैं कि कड़ी रबड़ की भांति थोड़ा लोच भी रखती हैं। शंख, सीप तथा अन्य समुद्री जीवजन्तुओं की आकृतियां चट्टानों पर प्रत्यक्ष दीखती हैं।

जलवायु के दृष्टिकोण से भी यह महाद्वीप महत्वपूर्ण है। यहां विश्व का सबसे ठण्डा स्थान वरखोयनस्क है, जो साइबेरिया में स्थित है। यहाँ का तापक्रम –९०°फा अंकित किया जाता है। सब से गर्म स्थान पाकिस्तान में जेकोबाबाद है। इतनी गर्मी कहीं और नहीं पड़ती, यहां का तापक्रम १२६°फा रहता है। किसी किसी वर्ष तो इससे भी अधिक हो जाता है। अब यदि वर्षा की ओर ध्यान दिया जाय तो चेरापूंजी विश्व में सबसे अधिक वर्षा प्राप्त करता है। यहाँ की औसत वर्षा ४५६" है। सन् १७६१ में केवल ११ माह में यहां कुल वर्षा ९०५" हुई, उसी वर्ष केवल जुलाई के माह में ३३६" हुई थी। इतनी अधिक वर्षा विश्व के किसी भी भाग में न हुई और न होती है। शुष्क भागों में मध्य एशिया का भाग ऐसा है जहां कुछ क्षेत्र तो केवल दो इंच औसत वर्षा प्राप्त करते हैं। इतने शुष्क भाग भूमण्डल पर बहुत ही कम मिलते हैं।

इस महाद्वीप का मानव इतिहास बहुत प्राचीन है। यहां ईसा से हजारों वर्ष पूर्व के खंडहर मिलते हैं। इन खंडहरों में जो वस्तुयें मिलती हैं, उनसे पता लगता है, कि अति प्राचीन काल में यहां लोग बड़ी उन्नति पर थे। धर्म! जनसंख्या

के अनेक क्षेत्र थे तथा लोगों की आर्थिक दशा बहुत अच्छी थी। ईराक में मौसुल के निकट जो खंडहर मिलते हैं, वे इस बात के प्रमाण हैं। टर्की का इतिहास भी बहुत प्राचीन है। ऐसे प्राचीन क्षेत्र चीन तथा भारतवर्ष में भी मिलते हैं। एशिया एक प्राचीन दुनिया कही जाती है, वह क्यों? कदाचित इसीलिये कि यहां का इतिहास पश्चिमी देशों की अपेक्षा अधिक पुराना है। इसके विपरीत अन्य कई ऐसे क्षेत्र हैं जो हाल ही में बसे हैं और जिनका इतिहास कुछ ही वर्ष पुराना है। मध्य एशिया तथा उत्तरी एशिया में कई ऐसे औद्योगिक क्षेत्र स्थापित हो गये हैं, जो जनसंख्या के केन्द्र हो गये हैं। और उनका इतिहास कुछ ही वर्ष प्राचीन है, कदाचित उनका इतिहास अभी बन ही रहा है।

एशिया में विश्व की तीन-चौथाई जनसंख्या रहती है। घनी जनसंख्या के क्षेत्र मानसून प्रदेश ही हैं। इतनी घनी जनसंख्या विश्व के किसी भी भाग में नहीं मिलती। जनसंख्या घनत्व यहां बहुत अधिक है। चीन, जापान, भारतवर्ष तथा जावा ऐसे देश हैं जो विशेष तौर पर घने बसे हुये हैं। इन देशों में नदियों की घाटियां विशेषतः सघन आबाद हैं। ऐसे क्षेत्र में ३००० व्यक्ति प्रति वर्ग मील से भी अधिक जनसंख्या में मिलते हैं। मध्य एशिया, साइबेरिया तथा दक्षिण-पश्चिमी एशिया के देशों में घनत्व बहुत कम है। मध्य एशिया में ही ऐसे भी भाग हैं, जिनमें केवल पांच व्यक्ति प्रति वर्ग मील में रहते हैं।

अब यदि हम आर्थिक दृष्टिकोण से इस महाद्वीप की ओर दृष्टि डालें, तो हम देखेंगे कि यहां प्राकृतिक वनस्पति के वह क्षेत्र भी हैं, जो बहुत ही घनी वनस्पति रखते हैं। भूमध्य रेखीय वन एशिया में इतने घने हैं, कि उन्हें साफ करना बिल्कुल असम्भव है। नीचे धरातल पर प्रकाश नहीं आ पाता। पूर्वी द्वीप समूह में ये वन बहुत अधिक क्षेत्र में फैले हुये हैं। कहीं-कहीं तो मानसून जलवायु वाले वन भी बहुत घने मिलते हैं। साइबेरिया नुकीली पत्ती वाले वनों का भण्डार है। कदाचित एशिया में जितनी आर्थिक वस्तुयें इन वनों से प्राप्त की जाती हैं, उतनी कहीं भी नहीं मिलतीं। लकड़ी, फल, गरम मसाले, दवाइयां, लाख, रबड़, रेशम तथा लुगदी इत्यादि इन्हीं वनों की देन हैं। साथ ही ऐसे भागों की भी यहां कमी नहीं है, जो अधिक शुष्क वातावरण के कारण बिल्कुल ही वनस्पति रहित हैं। उदाहरणार्थ, अरब के रेगिस्तानी क्षेत्र, मध्य एशिया में तारिम के कुछ भाग तथा मंगोलिया के क्षेत्र। यहां किसी भी प्रकार की वनस्पति नहीं होतीं बल्कि दूर-दूर तक रेत ही रेत दृष्टिगोचर होता है।

कृषि में यह महाद्वीप विश्व के किसी भी महाद्वीप से कम नहीं है। यद्यपि यहां पर बहुत कम भागों में आधुनिक ढंग से कृषि की जाती है, परन्तु फिर भी कुछ उपजें ऐसी हैं, जिनमें यह अन्तर्राष्ट्रीय महत्ता रखता है। चावल, चाय, जूट,

लाख, रबड़, गन्ना, सिनकोना, रेशम तथा तिलहन इत्यादि यहाँ विश्व में सबसे अधिक होती हैं। और ये सब यहीं से विदेशों को भेजी जाती हैं। दुर्भाग्य से यहां कुछ ऐसी वस्तुयें भी हैं, जो बिल्कुल ही उत्पन्न नहीं होतीं और होती भी हैं, तो बहुत कम मात्रा में। उदाहरणार्थ, ओट, राई, चुकन्दर, कार्क, जैतून तथा क़हवा इत्यादि।

जीवजन्तुओं की संख्या जितनी एशिया में है, उतनी किसी भी महाद्वीप में नहीं है। जंगली जीव-जन्तुओं को छोड़ कर पालतू यहां बहुत अधिक मात्रा में मिलते हैं। भेड़ें, बकरी, गाय, भैंस, बैल, घोड़ा, ऊंट, खच्चर, तथा गदहे विश्व में सबसे अधिक मात्रा में यहीं मिलते हैं। दुर्भाग्यवश इन जीव-जन्तुओं से यहां उतनी मात्रा में आर्थिक वस्तुयें प्राप्त नहीं की जातीं जितनी कि विदेशों में की जातीं हैं। यदि डेनमार्क तथा न्यूज़ीलैंड, मक्खन, दूध व पनीर के लिये प्रसिद्ध हैं, तो आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड ऊन के उत्पादन के लिये। इस दृष्टिकोण से एशिया बहुत पिछड़ा हुआ है। यहां केवल चमड़ा व खाल के अतिरिक्त अन्य कोई भी विशेष आर्थिक वस्तु प्राप्त नहीं की जाती। यहां अधिक से अधिक मांस खाने वाले लोग मिलते हैं तथा कम से कम ऐसे भी हैं जो कदापि नहीं खाते। मछली खाने में जापानी लोग बहुत प्रसिद्ध हैं। जितनी मछली ये लोग खाते हैं, उतनी अमरीका के लोग नहीं खाते यद्यपि पकड़ने में वे जापान की टक्कर लेते हैं। ऐसे भी लोग हैं जो मछली या मांस का सेवन नहीं करते, जैसे भारतवर्ष के आन्तरिक क्षेत्रों के लोग।

अब यदि खनिज पदार्थों की ओर ध्यान दिया जाय तो यहां कुछ ऐसे खनिज पदार्थ मिलते हैं जो विश्व के अन्य भागों में कम मिलते हैं। भूगर्भ शास्त्रियों का कथन है, कि चीन में जितना कोयले का कोष (रिजर्व) है, उतना विश्व में कहीं भी नहीं है। इसी प्रकार भारतवर्ष में जितना लोहे के कोष का अनुमान है, उतना ब्राजील को छोड़ कर कदाचित कहीं भी नहीं है। विश्व का लगभग समस्त मैंगनीज व अबरक एशिया में ही मिलता है। राँगे में यह बोलेविया से टक्कर लेता है। बहुमूल्य धातुयें जैसे रूबी, टंगस्टन तथा एन्टीमनी में भी इस महाद्वीप का अच्छा स्थान है। इसके विपरीत कुछ खनिज पदार्थ ऐसे भी हैं जो बहुत ही कम मात्रा में मिलते हैं, जैसे सोना, लोहा, पेट्रोल, निकिल, क्रोमियम तथा जिन्क इत्यादि।

कुछ उद्योग धन्धों में यह महाद्वीप बहुत उन्नति कर गया है। आजकल यहां पर बड़े बड़े लोहे व इस्पात के केन्द्र स्थापित हो गये हैं। चीन में आन्शान, भारत में टाटा तथा जापान में नागासाकी ऐसे केन्द्र हैं जो विदेशों से टक्कर लेते हैं। सूती, रेशमी व ऊनी कपड़ों में एशिया ने बहुत अधिक उन्नति की है। युद्ध

पूर्व जापान देशम सबसे अधिक तैयार करता था। वास्तव में औद्योगिक विकास में जापान का जितना हाथ रहा है, उतना विश्व के किसी भी अन्य देश का नहीं रहा है। यहां कई ऐसे भी भाग हैं जो कि उद्योग धन्धों में विल्कुल ही पिछड़े हुये हैं। इन पिछड़े हुये भागों में किसी भी प्रकार के उद्योग धन्धे स्थापित नहीं हो सकते क्योंकि वे सुविधायें नही मिलतीं जो विकास में सहायक हैं। घरेलू उद्योगों में एशिया की स्थिति विश्व में सर्वोत्तम है।

संसार की सबसे लम्बी रेलवे लाइन इसी महाद्वीप पर हैं। ट्रांस साइबेरियन रेलवे जो मास्को से ब्लाडीवोस्टक तक जाती है, ५४०० मील लम्बी है। इतनी लम्बी लाइन किसी अन्य भाग में नहीं पाई जाती। इसी महाद्वीप पर ऐसे भूभाग हैं जहां रेल तक नहीं है। मध्य एशिया का भाग अभी तक यातायात के साधनों में पिछड़ा हुआ है। स्वेज नहर एक अन्तर्राष्ट्रीय महत्ता रखती है। इस नहर द्वारा बहुत अधिक व्यापार होता है। इसकी महत्ता यूरेशिया के लिये बहुत ही अधिक है। यहां कुछ भागों में तो नदियां सैकड़ों मील तक नाव चलाने योग्य हैं, और कुछ विल्कुल ही बेकार हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में यहां कुछ ही देश ऐसे हैं, जो अधिक व्यापार में लगे हुए हैं और पश्चिमी देशों से व्यापार कर रहे हैं। और कुछ ऐसे हैं जो स्थानीय व्यापार भी नहीं करते। जैसे मध्य एशिया के कुछ भाग।

राजनैतिक क्षेत्र में एशिया ने जितनी उन्नति की है, उतनी किसी भी देश ने नहीं की है। एशियन रिलेशन्स कान्फ्रेंस (Asian Relations Conference) की महत्ता अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से बहुत अधिक है यह कान्फ्रेंस सर्वप्रथम मार्च १९४७ में दिल्ली में हुई थी। इस कान्फ्रेंस के अन्तर्गत एशिया के सब देशो में एक संगठन स्थापित हो गया। द्वितीय महायुद्ध के पूर्व ऐसे संगठन की आवश्यकता बहुत अधिक थी। इसी कान्फ्रेंस ने 'पंच शिला' की नींव डाली और विदेशी 'कालोनीयलिज्म' समाप्त करने की घोषणा की। न केवल इतना ही बल्कि जनवरी १९४९ में जो कान्फ्रेंस नई दिल्ली में हुई, उसमें इन्डोनेशिया के झगड़ों की रोकथाम करने की कोशिश की गई। एशिया निवासियों की भावनायें परिवर्तित हो गई हैं और अब वे कहते हैं, एशिया एशिया वासियों के लिए हैं। भारतवर्ष के प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के प्रयत्नों के फलस्वरूप बांडुंग में एक एशियन अफ्रीकन सम्मेलन १९५५ में हुआ। इस सम्मेलन का उद्देश्य एशिया और अफ्रीका में संगठन स्थापित करना था। पंडित नेहरू तथा चीन के प्रधान मन्त्री चाऊ-इन-लाई ने मिलकर पश्चिमी देशों को यह दिखला दिया है, कि विश्व शान्ति स्थापित करने में उनका कितना हाथ है। पंडित नेहरू ने जो अपनी रूस यात्रा जुलाई १९५५ में की, उसके अन्तर्गत विश्व के नेताओं के विचारों में घोर

परिवर्तन कर दिया है। शान्ति स्थापित करने के पक्ष में लगभग विश्व के सभी राष्ट्र हैं। एशिया के लगभग सब देश अब स्वतन्त्र हो गये हैं, इन सबका ध्येय अब आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास करना है। भारतवर्ष और चीन अब बहुत कुछ परिवर्तित हो गये हैं। अब ये देश उस प्रकार के नहीं रहे जैसे कि पहले थे। एशिया का भविष्य, यदि विश्व शान्ति स्थापित रही, तो अवश्य ही बहुत उजवल है।

एशिया की संस्कृति बहुत प्राचीन है, कदाचित इतनी प्राचीन संस्कृति किसी भी अन्य महाद्वीप की नहीं रही। बड़े बड़े सभ्यताओं के केन्द्र यहीं पर सर्व प्रथम स्थापित हुए थे। चीन में सर्व प्रथम छापे की मशीन तथा कागज बनाया गया था, भारत में सर्वप्रथम सूती कपड़ा बुना गया था। ढाका अपनी मलमल के लिये जगत प्रसिद्ध था। विश्व के जितने भी धर्म हैं, उन सबों का जन्मस्थल यही महाद्वीप रहा है। साहित्य के दृष्टिकोण से भी एशिया का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। संस्कृत, अरबी व फारसी साहित्य बहुत ही उच्च श्रेणी के साहित्य हैं। खगोल विद्या का ज्ञान जितना एशिया वासियों को रहा है, उतना किसी भी अन्य देश को नहीं रहा। दुर्भाग्य से इस महाद्वीप का बहुत सा साहित्य नष्ट हो चुका है। आजकल बहुत ही कम मात्रा में प्राचीन साहित्य मिलता है। यदि संस्कृत साहित्य अब भी रहा होता तो भारतवर्ष बहुत उन्नति कर सकता था।

एशिया महाद्वीप की विश्व-स्थिति का हमने संक्षिप्त अध्ययन किया, अब हम कुछ आवश्यक आंकड़े दे रहे हैं:—

एशिया के देशों की जनसंख्या तथा क्षेत्रफल

		वर्तमान (आफिशियल)* अनुमान (०००)	वर्ग किलोमीटर+
एशिया	कुल योग (सोवियत रूस रहित)	१,४३१,०००	२७,०६१,०००
अफगानिस्तान	...	१२,०००	६५०,०००
बर्मा	...	१९,२४२	६७७,९२४
कम्बोडिया	...	३,७४८	१३९,०००
लंका	...	८,३१५	६५,६०७
चीन	...	⌀ ५९०,०९४	β ९,७३६,२८८
भारतवर्ष	...	३७२,०००	३,२८८,२५१
इन्डोनेशिया	...	७८,१६२	१,४९१,५६४

*U.N. Statistical Papers, Series A. Vol. VI, No. 4 (October 1954)
+U. N. Statistical Year Book 1953.
⌀ From People's China, November 1951, and includes the estimate of Formosan population of 7,591,000.
β This includes Formosa 35,961 Sq. Km.

		वर्तमान (आफिशियल) अनुमान (०००)	वर्ग किलोमीटर
ईरान	...	२०,२५१	१,६३०,०००
ईराक	...	४,८८२	४३५,४१५
जापान	...	८८,०००	३६८,३०३
जोर्डन	...	१,३६०	६६,५१३
लेओाज़	...	१,३०६	२३६,८००
लिबेनन	...	१,३५३	२०,७१६
नैपाल	...	७,०००	१४०,०००
पाकिस्तान	...	७५,८४२	६४३,६६६
फिलीपाइन	...	२१,०४०	२९६,४०४
साउदी अरेबिया	...	७,०००	१,६००,०००
सीरिया	...	३,६३३	१८१,३३७
थाईलैंड	...	१६,६२५	५११,६३६
टर्की	...	२२,४६१	७६७,११६
वीटनम	...	२५,०००	३२६,६००
यमन	...	४,५००	१९५,०००

एशिया का विदेशी व्यापार
(०००००० यू० एस० डालर में)

	आयात		निर्यात	
	१९५१	१९५२	१९५१	१९५२
बर्मा	१३७·५	१६२·०	२०८·६	२६३·८
लंका	२४५·०	३२७·५	३९६·६	३१५·५
भारतवर्ष	१,७९३·५	१,६८३·३	१,६४५·७	१,३००·२
इन्डोचीन	३०४·७	४४८·८	१३५·१	११७·०
इन्डोनेशिया	८४१·७	९७४·३	१,२५८·६	९९२·४
ईरान	२४२·०	१६४·५	५६०·१	१५२·४
ईराक	१४२·४	१७३·२	८१·०	५५·९
जापान	२,०४४·३	२,०२८·२	१,३५४·५	१,२७२·९
जोर्डन	३६·५	१	५·४	१

	आयात		निर्यात	
लिबेनन	१३६·२	१४०·८	४०·६	३५·३
पाकिस्तान	५३०·१	६११·०	७६५·३	५३२·६
फिलीपाइन	४७६·५	४२६·४	४१०·१	३४७·६
सीरिया	१३३·०	१३८·४	१२६·५	१४५·८
टर्की	४०२·१	५५६·६	३१४·१	३६२·६
एशिया का कुल योग	११,५००·०	११,८००·०	१२११०·०	६,६८०·०

United Nations Statistical Year Book, 1953.

सन् १९५२ में अनुमान किया हुआ शक्ति के व्यापारिक साधनों का उपभोग (*कोयले में प्रकट की हुई)

	कुल योग (०००) मैट्रिक टनों में	पर केपिटा (मैट्रिक टन)
एशिया	१५३०००	०·१६
बर्मा	४६६	००·१
लंका	७८८	०·१०
भारतवर्ष	३६,६४७	०·११
इन्डोचीन	६००	०·०३
इन्डोनेशिया	५,६५४	०·०७
ईराक	१,०३२	०·२०
जापान	७५८१५	०·८६
पाकिस्तान	३,४६८	०·०५
फिलीपाइन	२,२६५	०·११
सीरिया तथा लिबेनन	१,०३३	०·२२
थाईलैंड	५३६	०·०३
टर्की	६,१५८	०·२८

*United Nations Year Book, 1953.

दक्षिण-पूर्वीय एशिया



दक्षिण-पूर्वीय एशिया

भारत तथा चीन दो अत्यन्त सघन आबाद देशों के बीच दक्षिणी-पूर्वी एशिया तथा पूर्वी द्वीप समूह स्थित हैं। यह दोनों भौतिक, राजनैतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक दृष्टिकोण से इन दोनों देशों से भिन्न हैं। पहला भाग, दक्षिणी एशिया का पूर्वी प्रायद्वीप है, इस प्रायद्वीप की दक्षिणी नोक मलाया प्रायद्वीप कहलाती है। प्रोफेसर एल० डब्लू० लाएड ने इसके लिये एक दूसरा शुद्ध शब्द प्रयोग किया है। वह है 'इन्डो पेसिफिक फेन'। जिसमें कि बर्मा, थाईलैंड, इण्डोचीन तथा दक्षिण में मलाया स्थित हैं। दूसरा भाग, भूमध्य रेखा के निकट पूर्वी द्वीप समूह है, जिसमें कि बोर्नियो, न्यूगिनी, सुमात्रा, जावा, सेलबीज इत्यादि टापू सम्मिलित हैं। इनके उत्तर में फिलीपाइन द्वीप समूह स्थित है। आजकल जावा, सुमात्रा तथा समीपस्त छोटे छोटे द्वीप मिलकर इण्डोनेशिया प्रजातंत्र राज्य कहलाते हैं। वैसे समस्त देश दक्षिण-पूर्वी एशिया के अन्तर्गत सम्मिलित हैं, क्यों कि ढाँचे व जलवायु के दृष्टिकोण से 'इण्डो पेसिफिक फेन' तथा पूर्वी द्वीप समूह मिलते जुलते हैं।

रचना के दृष्टिकोण से 'इण्डो पेसिफिक फेन' बहुत प्राचीन चट्टानों का बना हुआ है। यहाँ पर केम्ब्रियन युग से लेकर मध्य मेसोज़ोयेक के युग तक की चट्टानें पाई जाती हैं। ये प्राचीन चट्टानें मलाया तथा बर्मा में शान पठार पर प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होती हैं। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि यह सिंकेप, बाँका तथा बेलीतोंग द्वीपों तक होती हुई बोर्नियो तक चली गई हैं। ये चट्टानें मेसोज़ोयेक युग के परिवर्तनों के कारण प्रभावित होकर मुड़ी हैं। यह सम्पूर्ण प्रणाली, जो कि लगभग उत्तर-दक्षिण की ओर विस्तृत हैं, इण्डो-मलायन पर्वतीय प्रणाली (System) कहलाता है। इसमें केम्ब्रियन युग के पहले की स्लेटी चट्टानें, तथा दिवोनियन-कारबोनिफेरस युग की चूने की चट्टानें अधिकतर दृष्टिगोचर होती हैं, लेकिन वह लाल रंग की शेल जिसमें कि 'फासिल्स' (Fossils) है, मेसोज़ोयक चट्टानों के साथ मुड़ी हुई दशा में अब भी मिलती हैं। यहाँ एक अजीब बात यह है, कि कहीं कहीं पर क्रीटेशियस युग के ग्रेनाइट पत्थर भी दृष्टिगोचर होते हैं। इन ग्रेनाइट पत्थरों की महत्ता इसलिये अधिक है कि इनमें रांगा पाया जाता है, जो कि बर्मा, स्याम, मलाया तथा उच्च पूर्वी द्वीप समूह में

See—Asia and Africa in the Modern World, published by Asian Relations Organization (Lyde—Continent of Asia).

आजकल निकाला जाता है। नवीन चट्टानों में मिट्टी तथा शेल की अधिकता है। इन प्राचीन झीलों के गड्ढों में लिगनाइट तथा 'आयल शेल' के साथ ये मिश्रित दशा में पाये जाते हैं। स्याम में नदियों की डाली हुई मिट्टी के नीचे धरातल प्राचीन चट्टानों का ही बना हुआ है।

प्राचीन चट्टानों के पर्त के मध्य में तरशियरी युग के मुड़े हुए पर्वतों की चट्टानें पाई जाती हैं। इन चट्टानों तथा प्रचीन चट्टानों के मध्य जो कुछ भी मुड़े हुये पदार्थ हैं, उनमें तेल के कुयें पाये जाते हैं। यह खनिज तेल बर्मा, सुमात्रा, जावा तथा बोर्नियो में ऊपर मुड़े हुये पर्तों में पाया जाता है। तरशियरी युग के फोल्ड पर्वतों के साथ साथ ज्वालामुखी पर्वत भी पाये जाते हैं। इन्हीं ज्वालामुखी पर्वतों के कारण जावा इतना सुन्दर तथा उपजाऊ द्वीप है। प्राचीन चट्टानों में कहीं कहीं पर परिवर्तित चट्टानें भी दृष्टिगोचर होती हैं। इनमें कुछ खनिज पदार्थ मिल जाते हैं। पर्वतों की ऊँचाई कहीं भी दस या बारह हज़ार फीट से अधिक नहीं है।

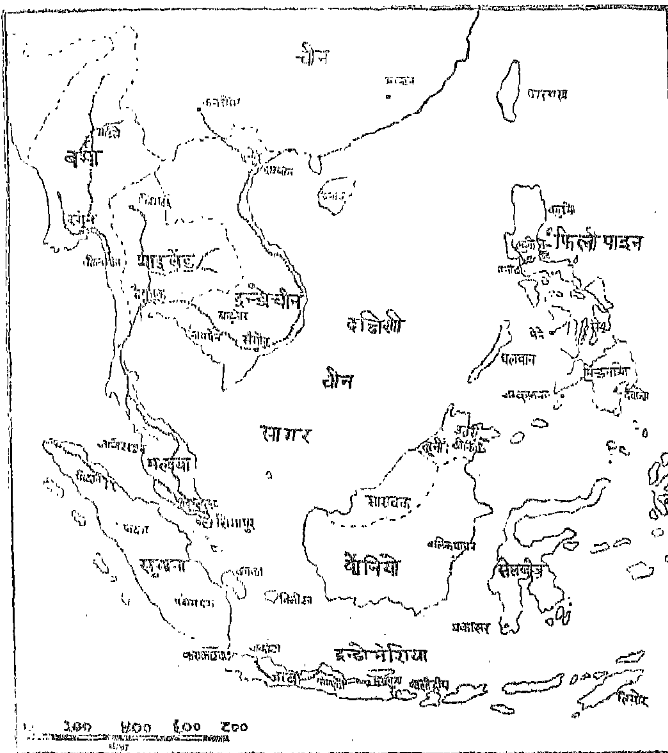
सम्पूर्ण दक्षिण-पूर्वी एशिया उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में स्थित है। इसका विस्तार दक्षिण में भूमध्य रेखा के भी नीचे तक है। इसकी जलवायु पर मध्य एशिया तथा आस्ट्रेलिया के रेगिस्तानी क्षेत्र का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो यहाँ पर भू-मध्य रेखीय जलवायु की विशेषतायें मानसून जलवायु से मिल गई है। स्थाई हवाओं की दिशायें शीतऋतु में उत्तर-पूर्व तथा ग्रीष्म ऋतु में दक्षिण-पश्चिम हैं, ये हमेशा परिवर्तनशील रहती हैं, परन्तु भू-मध्य रेखा की ओर ही चला करती हैं। जब ये इसको पार कर लेती हैं, तो दिशा में कुछ परिवर्तन हो जाता है। इसके मध्य में डोलड्रम की पेटी आ जाती है।

शीतऋतु में मध्य एशिया से बाहर चलने वाली हवायें, जो कि 'शीत ऋतु के मानसून' या 'वापिस लौटते हुये मानसून' (Retreating monsoons) के नाम से प्रसिद्ध हैं, इस दक्षिणी-पूर्वी एशिया के क्षेत्र में उत्तर-पूर्व से आती हुई दृष्टिगोचर होती हैं।

यह हवायें ठण्डी तथा कुछ नम होती हैं, परन्तु किसी किसी स्थान पर स्थानीय तापक्रम में परिवर्तन के कारण यह बड़े वेग से चलती हैं। ग्रीष्मऋतु में जो हवायें चलतीं हैं, वह 'ग्रीष्मऋतु के मानसून' कहलाते हैं और उत्तरी गोलार्द्ध में यह दक्षिण-पश्चिम से तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिण-पूर्व से चलती हुई दृष्टिगोचर होती हैं। यह हवायें बहुत अधिक वर्षा करती हैं। ऋतु-विभाजन के आधार पर हम कह सकते हैं कि एक तो बहुत अधिक शुष्क हैं, तथा दूसरी बहुत नम है। तापक्रम में परिवर्तन बादलों (Clouds) के कारण भी होता है। जून, जुलाई व अगस्त का तापक्रम मार्च, अप्रेल व मई के तापक्रम की अपेक्षा

अधिक रहता है। तापक्रम में अन्तर ऊँचाई के कारण भी पाया जाता है जो स्थान अधिक ऊँचे हैं, वहाँ कम तापक्रम मिलता है।

वर्षा-वितरण की ओर यदि ध्यान दिया जाय, तो हम देखेंगे कि यह भी धरातल के अनुसार होता है। जो अधिक खुले स्थान हैं और हवाओं के सम्मुख



दक्षिण-पूर्वी एशिया

पड़ते हैं, वहाँ अधिक वर्षा हो जाया करती है। बर्मा, मलाया का पश्चिमी तट ग्रीष्मऋतु में उन हवाओं से वर्षा प्राप्त करता है जो कि हिन्द महासागर से आती हैं। इन हवाओं से वर्षा मध्य मई से लेकर मध्य अक्टूबर तक होती है। मलाया, थाइलैंड प्रायद्वीप तथा इण्डोचीन के पूर्वी तटों पर वर्षा शीतऋतु में उन हवाओं से होती है जो कि मध्य एशिया से चलती है। इन हवाओं से वर्षा अक्टूबर से लेकर जनवरी तक होती है। जावा में वर्षा अधिकतर अक्टूबर से लेकर अप्रैल तक होती है, लेकिन जब आस्ट्रेलिया से शुष्क दक्षिण-पूर्वी हवायें चलती हैं, तब इसकी विपरीत ऋतु में कम वर्षा होती है। सिंगापुर जो कि भूमध्य रेखा के निकट

स्थित है, साल भर वर्षा प्राप्त करता है। फिलीपाइन द्वीप के पश्चिमी तट पर उष्ण-कटिबन्धीय चक्रवात या दक्षिण-पश्चिमी हवाओं द्वारा वर्षा होती है, परन्तु पूर्वी तट साल भर वर्षा प्राप्त करता है।

उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्रों की मिट्टी प्रायः कम उपजाऊ होती है। लेकिन नदियों की घाटियों या ज्वालामुखी पर्वतों के स्थानों पर काफी उपजाऊ मिट्टी मिल जाती हैं। सुमात्रा, बोर्नियो तथा न्यूगिनी में जो मिट्टियाँ पाई जाती हैं, वे इतनी धुली हुई हैं, कि उनका उपजाऊ-पन नष्ट हो चुका है। कृषि के दृष्टिकोण से यह मिट्टियाँ बेकार हैं। परन्तु जावा में जो लावा मिट्टी दृष्टिगोचर होती है, वह वास्तव में बहुत ही अधिक उपजाऊ है। और कृषि के हेतु बहुत ही महत्वपूर्ण मिट्टी समझी जाती है। इण्डोचीन, थाईलैंड तथा मलाया में भी कुछ ऐसी मिट्टियाँ पाई जाती हैं, जो अधिक उपजाऊ नहीं हैं। लेटिराइट मिट्टी दक्षिण-पूर्वी एशिया के लगभग सभी भागों में मिलती है। यही वह मिट्टी है जो कि वर्षा के कारण बहुत कट चुकी है, तथा जिसमें घुलने वाले अनेक खनिज पदार्थ बह गये हैं। इस मिट्टी में अब कुछ लोहा का तथा एल्युमिनियम का अंश पाया जाता है। यह मिट्टी ईंट बनाने के लिये कई स्थानों पर खोदी गई है, विशेषकर प्राचीन उजाड़ क्षेत्रों में। थाइलैंड, दक्षिणी इण्डोचीन, बोर्नियो तथा सुमात्रा प्राचीन कठोर चट्टानों के क्षेत्र हैं, यहाँ पर भूकम्प नहीं आते, इसलिए धरातल में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होते। यही कारण है कि यहाँ लेटिराइट मिट्टी अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त, फिलीपाइन व जावा कमजोर ढाँचे पर स्थित है, यहाँ भूकम्पों के कारण धरातल प्रायः परिवर्तित होता रहता है, इसी कारण लेटिराइट मिट्टी यहाँ बहुत कम पाई जाती है।

यदि दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों की जनसंख्या की ओर ध्यान दिया जाय, तो हम देखेंगे कि जावा यहाँ का सबसे अधिक घना बसा हुआ देश है। और कदाचित् इसको छोड़ कर किसी भी अन्य देश की जनसंख्या का घनत्व भारत, चीन तथा जापान से अधिक नहीं है। सन् १९४७ में यहाँ की जनसंख्या ७६,३६०,००० थी, और औसत घनत्व १०० प्रति वर्गमील था। फिलीपाइन द्वीप की जनसंख्या जावा से बहुत कम है, परन्तु औसत घनत्व सन् १९४७ में १७० प्रति वर्गमील था। इन सब भागों में सिंगापुर द्वीप की सबसे कम जनसंख्या है, परन्तु क्षेत्रफल कम होने के कारण घनत्व ४२८० प्रति वर्गमील है।

ऊपर हम यहाँ की जलवायु के विषय में बतला चुके हैं। यहाँ बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं, जहाँ काफी वर्षा हो जाया करती है। इन वर्षा वाले क्षेत्रों में घनी प्राकृतिक वनस्पति पाई जाती है। जिन भागों में कुछ उपजाऊ मिट्टी तथा ८० इंच

से अधिक वर्षा होती है, उन भागों में बहुत घने वृक्ष उग आया करते हैं। इन्हीं भागों में शुष्क जलवायु वाले स्थानों पर पतझड़ वाले वृक्ष भी पाये जाते हैं। जहाँ ४० इंच से कम वर्षा होती है, वहाँ कम घने वृक्ष तथा ऊँची ऊँची घास व झाड़ियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। सिनकोना, कोंक, गन्ना, नारियल तथा रबड़ इत्यादि यहाँ की कुछ लगाई हुई फसलें (Plantation Crops) हैं। यह वास्तव में स्थानीय महत्ता रखती है। इनमें से बाद वाली चार निचले भागों में ही उत्पन्न की जाती हैं, चाय और कहवा उच्च भूमि के ढालों पर तथा सिनकोना उससे भी अधिक उच्च भूमि पर उत्पन्न किया जाता है।

भू–उपयोगिता में वनों से लकड़ी प्राप्त करना पौधों का लगाना शामिल है। पौधों में चाय, कहवा, रबड़, नारियल, मसाला, तम्बाकू तथा गन्ना इत्यादि सम्मिलित हैं। वास्तव में यदि देखा जाय तो सम्पूर्ण दक्षिण–पूर्वी एशिया में पूर्णरूप से कृषि-उन्नति नहीं हो सकी है। यदि प्राकृतिक वनस्पति काट दी जाय, स्वास्थ्य तथा सिंचाई की पूर्ण व्यवस्था की जाय और साथ ही साथ यातायात के साधनों में भी प्रगति की जाय तो अवश्य ही यह भू–भाग बहुत उन्नति कर सकता है। यहाँ के बहुत से देश तो अपने यहाँ की कृषि दिन प्रति दिन बढ़ा रहे हैं। धान उत्पन्न करने वाले लोग बराबर वनों को साफ कर रहे हैं। इन देशों की आर्थिक उन्नति न होने के कई अन्य कारण भी हैं। यहाँ की राजनैतिक दशा के अतिरिक्त जातीय, सामाजिक तथा सांस्कृतिक दशायें भी कुछ न कुछ बाधा डालती है। कोलम्बो योजना के अन्तर्गत इन सबों को आर्थिक सहायता के अतिरिक्त अन्य सहायता भी प्रदान की जायेगी जिससे कि इनका पूर्णरूप से आर्थिक विकास हो सके।

निस्सन्देह कृषि यहां के लोगों का मुख्य धन्धा है। चावल यह लोग बहुत अधिक उत्पन्न करते हैं, क्योंकि यही उनका मुख्य भोजन है। चावल यहाँ दो प्रकार का होता है, पहला पर्वतीय तथा दूसरा दलदली। पर्वतीय चावल पर्वतों के ढालों पर, वनों को साफ करके बोया जाता है। अधिकतर वन जला दिये जाते हैं, जिससे कि राख मिट्टी में मिल जाय, और उसे उपजाऊ बना दे। दूसरे प्रकार का चावल समतल भागों में उत्पन्न किया जाता है। जहाँ वर्षा अधिक होती है, वहाँ छोटी छोटी क्यारियों में लबालब पानी भर कर धान के पौधे उगाये जाते हैं। धान बोने के यहाँ तीन ढङ्ग हैं, पहला पौधे लगाना, दूसरा पोली छड़ी द्वारा तथा तीसरा छिटका कर बोना। समतल भागों में पहला ढङ्ग अधिक प्रयोग किया जाता है। वनीय क्षेत्रों में चावल बोने का ढङ्ग अजीब ही है। वृक्षों की टहनियों, घास तथा झाड़ियों को शुष्क ऋतु के आरम्भ में काट दिया जाता है, जिससे कि वह सूख जाय, सूखने पर इस क्षेत्र में आग लगा दी जाती है। राख जो मिट्टी में मिल

जाती है उसे और भी अधिक उपजाऊ बना देती है। इस क्षेत्र में बिना गुड़ाई किये हुये एक इन्च की गहराई पर बीज छड़ी द्वारा बो दिये जाते हैं। इस प्रकार दो या तीन बार फसलें तो लेने के पश्चात् इसे त्याग देते है, यहाँ फिर से वन उग आते हैं। यह ढङ्ग भिन्न-भिन्न देशों में विभिन्न नामों से पुकारा जाता है इण्डोनेशिया में यह लदाग, लंका में चीना, आसाम में झूम, बर्मा में तौंग्या थाईलैंड में तमराई तथा फिलीपाइन में कैंजिन कहलाता है।

कुछ भागों में रबड़ के बग़ीचे भी लगाये जाते हैं। मलाया में रबड़ के वृक्षों के लिये जितनी आदर्श जलवायु सिद्ध होती है, उतनी किसी भी अन्य उपज के लिए नहीं होती। रबड़ यहाँ बहुत ही आधुनिक ढङ्ग से लगाई जाती है। बगीचों में मलाया के आदि निवासियों के अतिरिक्त चीनी जापानी, बरमीज़, भारतवर्ष के तामिल तथा जावा के निवासी भी काम करते हैं। रबड़ जावा में भी उत्पन्न होती है। परन्तु उतने अच्छे ढङ्ग से नहीं जितने कि मलाया में। सुमात्रा, बोर्नियो व फिलीपाइन भी रबड़ के उत्पादन में आगे बढ़ रहे हैं। मलाया संसार में सर्वोत्तम प्रकार की रबड़ पैदा करता है।

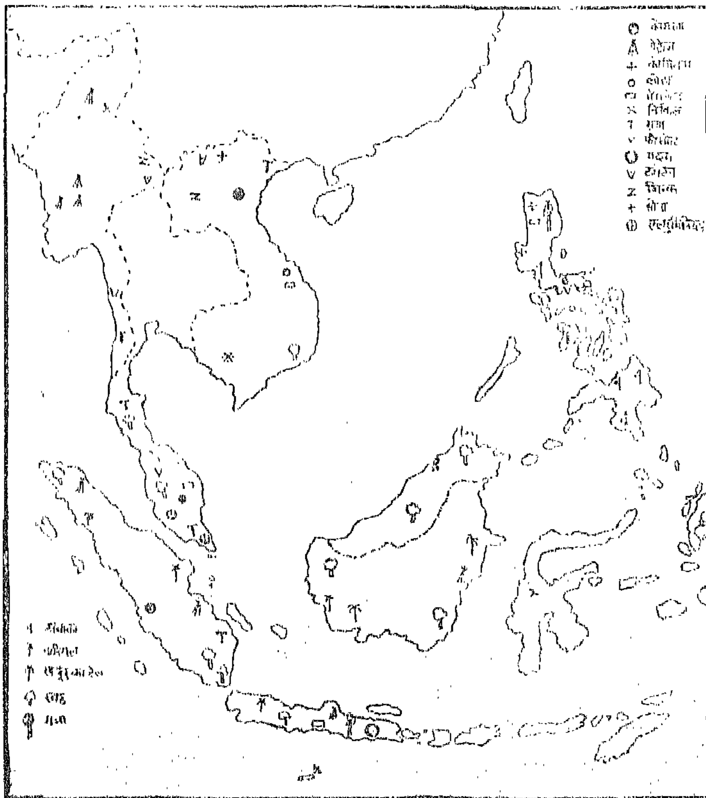
गन्ना, चाय तथा कहवा पूर्वी द्वीप समूह के कई टापुओं में उत्पन्न किया जाता है। शकर के लिए जावा दक्षिण-पूर्वी एशिया में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करता है। यहाँ पर ईख उत्पन्न करने की आदर्श दशायें पाई जाती हैं। चाय तथा कहवा जावा के अतिरिक्त मलाया तथा अन्य द्वीपों में भी बोई जाती हैं। परन्तु यह उतनी मात्रा में उत्पन्न नहीं होती, कि उसका विदेशी व्यापार हो सके।

अन्य उपजों में सिनकोना, साबूदाना, तम्बाकू, गरममसाले तथा और कई वस्तुयें हैं। केला, नारियल तथा सन इत्यादि भी उत्पन्न किया जाता है।

दक्षिण पूर्वी एशिया खनिज पदार्थों में भी महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करता है। यहाँ पर कई प्रकार की धातुयें निकाली जाती हैं। पेट्रोलियम की पेटी बर्मा से दक्षिण की ओर चली गई है, और फिर थोड़ी सी पूर्व की ओर भी मुड़ गई है। इस पेटी के बाद ज्वालामुखी पर्वत पाये जाते हैं। इस पेटी के मुड़ाव पर राँगा, लोहा, ऐलमुनियम, मेंगनीज, क्रोमियम तथा कोयला व अन्य खनिज पदार्थ भी मिलते हैं। पेटी के बाहर ऊपर लिखी हुई धातुओं के अलावा निकल, टंगस्टन जिन्क तथा सल्फर व फोस्फेट चट्टानें भी मिलती हैं।

यातायात के साधनों में यहाँ काफी प्रगति हुई है। नदियाँ यहाँ प्राकृतिक व्यापारिक मार्ग हैं। उत्तर में जो प्रायद्वीप का क्षेत्र है, उसमें छै बड़ी बड़ी नदियाँ बहती हैं। प्रत्येक तिब्बत के दक्षिण पूर्वी भाग से निकलती है। पश्चिम से पूर्व

की ओर यदि देखा जाय, तो मध्य बर्मा में इरावदी, इसी के समानान्तर सितांग तथा इसके भी पूर्व में सालवीन नदी हैं। इसके मुहाने पर मोलमीन का प्रसिद्ध बन्दरगाह स्थित है। और भी पूर्व में छोटी मीनाम नदी बेंकाक के पश्चात् सागर में गिरती है। इसी का एक भाग इण्डोचीन तथा थाईलैण्ड की सीमा पर आ गया है। इसके मुहाने पर सैगोन स्थित है। उत्तर व पूर्व की ओर लाल नदी है। प्रत्येक नदी के पृष्ठ प्रदेश में काफी धन है, जो भी वस्तुयें यहाँ से प्राप्त होती हैं, वह इन नदियों द्वारा बन्दरगाह तक ले आई जाती हैं।



दक्षिण-पूर्वी एशिया—खनिज एवं कृषि

रेल यातायात की भी यहाँ उन्नति हुई है। इण्डोचीन में एक रेल मार्ग हनोई से किनारे किनारे सैगोन तक आता है। थाइलैंड में बेंगकाक एक बड़ा केन्द्र है। यहाँ से एक रेल मार्ग मलाया को पार करता हुआ सिंगापुर तक गया है।

जावा में भी डच लोगों के कारण कई महत्वपूर्ण रेल मार्ग पाये जाते हैं। अन्य द्वीपों में रेलों की कोई विशेष प्रगति नहीं हुई है। रेलों के अतिरिक्त सड़कें थल यातायात का साधन हैं। सड़कें कई देशों में पाई जाती है। पक्की आधुनिक सड़कें जावा, मलाया, बर्मा, थाइलैंड तथा इण्डोचीन में दृष्टिगोचर होती हैं। अन्य अन्य पूर्वी द्वीप समूह के द्वीपों में भी अच्छी मोटर चलाने योग्य सड़कें पाई जाती हैं।

विदेशी व्यापार में दक्षिण–पूर्वी एशिया का एक महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ पर तैयार की हुई वस्तुयें आयात की जाती हैं और कच्चा माल निर्यात किया जाता है। कृषि से सम्बन्धित वस्तुयें जो यहाँ से निर्यात की जाती हैं, उनमें रबड़ प्रमुख है। यह मलाया, सुमात्रा, बोर्नियो तथा थाइलैंड से बाहर भेजी जाती हैं। नारियल जावा, सुमात्रा तथा फिलीपाइन से बाहर भेजा जाता है। मलाया व सुमात्रा से खजूर का तेल, मिण्डेनाओ से मनीलाहेम्प, जावा व फ़ुज़ाने से शक्कर तथा फिलीपाइन से कपोक निर्यात किया जाता है। इसके अतिरिक्त चावल सब से अधिक निर्यात करने वाले देश, बर्मा, थाइलैंड तथा इण्डोचीन हैं। इनके बन्दरगाह रंगून, बैंगकाक तथा सैगोन हैं। विभिन्न प्रकार की लकड़ियाँ भी यहाँ से बाहर भेजी जाती हैं। धातुओं में भी कई ऐसी हैं, जिनका निर्यात होता है। राँगा तथा एल्युमिनियम मलाया व इण्डोनेशिया, मैंगनीज़ तथा क्रोमियम फिलीपाइन तथा अन्य द्वीपों से, टंग्स्टन बर्मा, थाइलैंड तथा इण्डोचीन से, लोहा फिलीपाइन तथा मलाया से, जिंक व लेड बर्मा से, सोना फिलीपाइन से तथा निकिल सेलबीज व बर्मा से निर्यात की जाती है। यहाँ पर लोहा पाया जाता है, परन्तु कोयला दुर्भाग्य से इतनी निम्न श्रेणी का है, कि वह केवल घरेलू उपयोग के काम में ही ले लिया जाता है। कच्चा लोहा विदेशों को निर्यात किया जाता है। यहाँ पर प्रमुख ईंधन पेट्रोलियम ही है। यह सब से अधिक बोर्नियो व सुमात्रा में ही निकाला जाता है। वास्तविकता तो यह है कि यदि इन सब धातुओं का ठीक ठीक उपभोग किया जाय तो एशिया का यह भाग बहुत अधिक उन्नति कर सकता है।

यदि घरेलू मांग में वृद्धि हो, तो इन वस्तुओं के उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। आज कल वास्तव में उत्पादन बढ़ रहा है, और सम्भवतः भविष्य में और भी अधिक बढ़ जायेगा। बनस्पति घी यहाँ बड़ी सुविधा के साथ तैयार किया जा सकता है। लेकिन डर एक और है; वह यह, कि यदि कृत्रिम रबड़, प्लास्टिक की वस्तुयें, शक्कर, तथा बनस्पति घी इत्यादि वस्तुयें संसार में बहुत बड़ी मात्रा में तैयार की जाने लगीं, तो कदाचित् भविष्य में यहाँ की आर्थिक व्यवस्था पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ेगा।

दक्षिण–पूर्वी एशिया में यहाँ के आदि निवासियों के अतिरिक्त अन्य कई जाति के लोग भी रहते हैं। मंगोल जाति के लोग, जो कि या तो प्राचीन चीन से ओर या तिब्बत से आ बसे हैं। वे काफी संख्या में पाये जाते हैं। कुछ हिन्दू तथा द्रविण जाति के वह लोग भी मिलते हैं, जो अधिकतर भारतवर्ष से आये हैं। कुछ ऐसे भी लोग हैं, जो भारत व लंका से बौद्धधर्म लाये हैं। अरब के निवासियों ने यहाँ इस्लाम धर्म का प्रचार किया है। यहाँ पर पाये जाने वाले खँडहरों से प्रतीत होता है, कि सभ्यता यहाँ आज से एक हजार वर्ष पूर्व काफी उन्नति पर थी। इस सभ्यता के चिन्ह जावा में बोरोबुदुर तथा इण्डोचीन में अङ्ककोर नाम के खंडहरों में पाये जाते हैं। दक्षिण–पूर्वी एशिया में सत्तर लाख से अधिक चीनी लोग रहते हैं। चीनियों के अतिरिक्त यहाँ मौन, कम्बोडियन, अनामीज, ख्मेर, बरमीज, शान के निवासी, केले, थाई, लाओ इत्यादि जातियों के लोग पाये जाते हैं।

कदाचित् एशिया के किसी भी भाग में इतने विभिन्न राजनैतिक शासन नहीं रहे हैं, जितने कि इस भाग में।

थाईलण्ड के दोनों किनारों पर फ्रांस तथा ब्रिटिश लोगों के अधिकार रहे हैं। सम्पूर्ण मलाया अब भी ब्रिटिश लोगों के अधिकार में है। दक्षिण में डच लोगों का आतंक काफी समय से रहा है अब कुछ समय से स्वतन्त्र हो पाया है। फिलीपाइन द्वीप समूह पर एक ओर अमरीका का तथा दूसरी ओर स्पेन का राज्य रहा है। वास्तव में यह वही क्षेत्र है जिस पर कि जापानियों ने द्वितीय महायुद्ध के समय अधिकार कर लिया था। यहीं से उनको युद्ध के समय सामग्री प्राप्त होती थी। इण्डोचीन में अब तक लड़ाई हो रही थी। सन् १९५४ में जेनेवा कान्फ्रेंस के समझौते के अन्तर्गत, यहाँ पर युद्ध की रोकथाम की गई है, परन्तु अब भी समझौते में अनेक कठिनाइयाँ हैं।

दक्षिण पूर्वी एशिया को अपनी स्थिति से बड़ा लाभ है। जितने भी अन्तर्राष्ट्रीय जलमार्ग योरोप व अमेरिका को जाते हैं, वह इन्हीं द्वीपों के बन्दरगाहों को छूते हुये निकलते हैं। मलक्का जलडमरूमध्य में सिंगापुर की स्थिति इतनी महत्वपूर्ण है कि यूरोप से चीन व जापान जाने वाले जहाज़ यहीं से होकर गुजरते हैं। अनेक वायु मार्गों में प्रगति हो जाने के कारण एशिया के इस भाग के लगभग सभी बड़े बड़े नगरों में आधुनिक हवाई अड्डे पाये जाते हैं। उदाहरणार्थ रंगून, सिंगापुर, बैंगकाक, हनोई तथा मनीला इत्यादि।

बर्मा

बर्मा १९३७ तक भारत साम्राज्य में ही सम्मिलित था और भारतवर्ष का एक प्रान्त माना जाता था, परन्तु अब जब से यह अलग हो गया है, तब से इसका अध्ययन अलग किया जाने लगा है। यह देश न केवल भारतवर्ष से ऊंची ऊंची पर्वत श्रेणियों द्वारा अलग है, वरन् भौगोलिक दृष्टिकोण से यह इण्डोचीन का ही एक भाग है। बनावट, रूपरंग तथा रहन-सहन में भी यह भारतवर्ष से भिन्न है। इस देश का विस्तार ९.° उत्तरी अक्षांश से लेकर २८° उत्तरी अक्षांश तक तथा ९२° पूर्वी देशान्तर से लेकर १०१° पूर्वी देशान्तर तक है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी लम्बाई १२०० मील तथा पश्चिम से पूर्व तक इसकी चौड़ाई ५७५ मील है। इसका क्षेत्रफल २६१२८९ वर्गमील है। इसमें मुख्य बर्मा, चिन पहाड़ियाँ तथा कचिन पर्वतीय क्षेत्र को सम्मिलित करते हैं जो लगभग १८४,१०० वर्ग मील है। पूर्व में शान राज्य लगभग ६२३०० वर्ग मील तथा शासन-रहित क्षेत्र लगभग १६३०० वर्ग मील है। सन् १९४८ से यह देश 'ब्रिटिश कामनवेल्थ' से पृथक होकर स्वतन्त्र हो गया है।

भौतिक रूप (Physical Aspect)

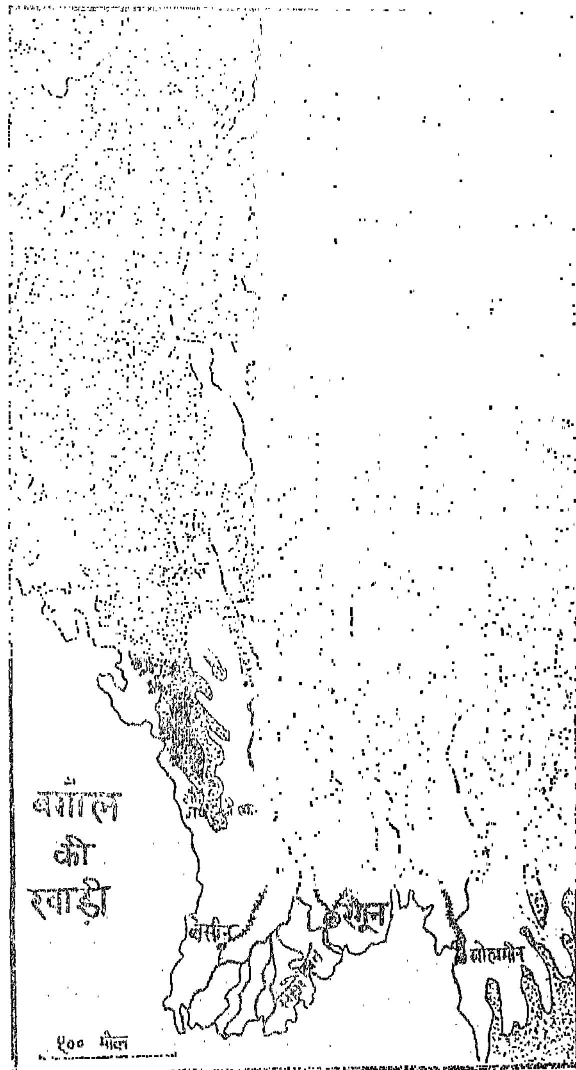
बनावट तथा धरातल (Structure and Relief)

वास्तव में बर्मा की बनावट टरशियरी (Tertiary) युग से सम्बन्धित है, परन्तु कहीं कहीं हमको बहुत प्राचीन चट्टानों के क्षेत्र भी मिलते हैं। इसके मध्य का भाग टरशियरी युग के पहिले एक खाड़ी के रूप में था परन्तु नदियों की डाली हुई मिट्टी द्वारा यह एक समतल मैदान के रूप में परिवर्तित हो गया है। बनावट तथा धरातल के दृष्टिकोण से हम बर्मा को तीन भागों में बाँट सकते हैं :—

(अ) पश्चिम में अराकान योमा की पर्वत श्रेणियाँ जो कि अधिकतर पर्तदार चट्टानों की बनी हुई हैं। यह चट्टानें हिमालय पर्वत श्रेणियों के समय की ही हैं। यह उत्तर से लेकर दक्षिण में बंगाल की खाड़ी तक चली आई हैं। इनके दोनों ओर बहुत मुड़ी हुई, कठोर पर्तदार चट्टानें तथा उत्तर की ओर प्राचीन दानेदार (Crystalline) चट्टानें मिलती हैं। इन पर्वत श्रेणियों की ऊँचाई १०००० फीट के लगभग है, विक्टोरिया शिखा दक्षिण-पूर्व की ओर सबसे ऊँची शिखा है। यही श्रेणियाँ बर्मा को भारतवर्ष से पृथक करती हैं।

(ब) अराकान पर्वत श्रेणियों के पूर्व में मध्य का बेसिन एक महत्वपूर्ण

भाग है। वैसे तो यह नदियों की डाली हुई मिट्टी का बना हुआ है, परन्तु इसके नीचे हमको तरशियरी युग की चट्टानें बहुत अधिक मिलती हैं। यही वह क्षेत्र है जहां बर्मा की प्रसिद्ध पेट्रोलियम फील्ड्स मिलती हैं। यहां हमको कहीं कहीं पर प्राचीन ज्वालामुखी पर्वतों के चिन्ह भी मिलते हैं, इनमें सबसे प्रसिद्ध माउण्ट पोपा है, जिसकी ऊंचाई समुद्र की सतह से ५,००० फीट है। यह क्षेत्र उत्तर की ओर कुछ ऊंचा होता गया है, इसका ढाल दक्षिण की ओर है।



बर्मा-सामान्य

(स) इरावदी नदी के बेसिन के पूर्व में शान का पठार स्थित है। यह एक विस्तृत क्षेत्र है और उत्तर से लेकर दक्षिण में तिनासिरिम पर्वत श्रेणियों तक फैला हुआ है। इसकी उत्पत्ति भी लगभग मेसोज़ोइक युग के पश्चात् ही हुई थी। इसीलिए इसको इण्डो-मलाया पर्वतीय क्षेत्र के नाम से भी पुकारते हैं।

इस पठार की अधिक से अधिक ऊँचाई ३००० फीट है। यह भाग मध्य के बेसिन से एकायक ऊँचा हो गया है तथा इसके किनारे पर, लगभग ५०० मील दूर तक ग्रेनेटिक (Granatic) चट्टानें मिलती हैं, परन्तु मध्य के भाग में नीसेज (Gneisses) नाम की बहुमूल्य चट्टानें भी मिलती हैं। डा० छिब्बर का मत है कि यहाँ इस क्षेत्र में लगभग सभी युगों की चट्टानें पाई जाती हैं, यहाँ तक कि केम्ब्रियन युग के पहले की (Pre-Cambrian) चट्टानें मोगक के स्थान पर मिलती हैं। टरशियरी व प्लीस्टोसीन युग की झीलों के चिन्ह भी खानों के रूप में पाये जाते हैं। मध्य व दक्षिण के क्षेत्र में चूने की चट्टानें भी दृष्टिगोचर होती हैं।

नदियाँ तथा नहरें (Rivers and Canals)

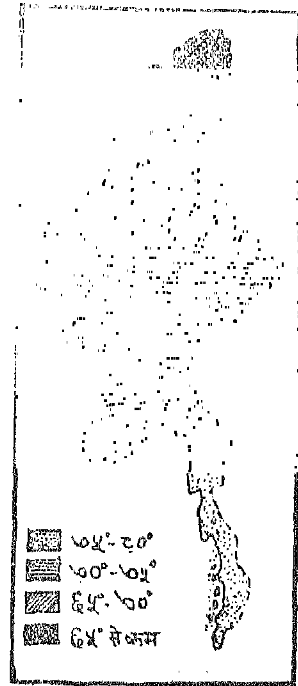
बर्मा की सबसे प्रसिद्ध नदी इरावदी है, यह लगभग १२०० मील लम्बी है और कचिन पहाड़ियों के उत्तर से निकलती है। इसकी सहायक नदी चिन्दविन मिंगयाँग के स्थान पर संगम बनाती है। डेल्टे के भाग में इसकी शाखायें लगभग २०० मील की चौड़ाई में फैली हुई हैं। बर्मा के लिए यह नदी उतनी ही महत्व रखती है जितना कि गंगानदी उत्तरी भारत के लिये। यहां की दूसरी प्रसिद्ध नदी सालवीन है यह लगभग १७५० मील लम्बी है और शान के उत्तर में यूनान (Yunan) की पर्वत श्रेणियों से निकल कर दक्षिण में मोलमीन के स्थान पर गिरती है। इस नदी ने अपने मुहाने पर कोई भी डेल्टा नहीं बनाया है और न कोई उपजाऊ क्षेत्र ही, बल्कि अधिकतर इसका भाग पठारी क्षेत्र में होकर आता है।

बर्मा में कुछ प्रसिद्ध नहरें भी पाई जाती हैं सबसे महत्वपूर्ण 'मांडले नहर' है। यह ४० मील लम्बी है तथा १६०२ में खोदी गई थी। इस नहर से १४ अन्य सहायक नहरें निकाली गई हैं। दूसरी नहर स्वीबो है जो लगभग २७ मील लम्बी है और १६०६ में खोदी गई थी। इस नहर से दो सहायक नहरें भी निकाल दी गई हैं। तीसरी मोन नहर है जो कि स्वीबो नहर से केवल दो वर्ष पहले ही बनी थी। यह नहर ५२ मील लम्बी है। इन नहरों से बर्मा को बहुत ही अधिक आर्थिक लाभ है।

जलवायु (Climate)

बर्मा में भारतवर्ष की भांति मानसून के प्रकार की जलवायु पाई जाती है। यहाँ भी हमको तीन ऋतुयें मिलती हैं, पहली शुष्क-शीत ऋतु, दूसरी ग्रीष्म ऋतु तथा तीसरी वर्षा ऋतु। प्रत्येक ऋतु में वातावरण भिन्न प्रकार का पाया जाता है। तापक्रम में लगभग उतनी ही भिन्नता पाई जाती है जितनी कि बर्मा में। इरावदी की ऊपरी घाटी अथवा शुष्क क्षेत्र (Dry Zone) ग्रीष्म ऋतु में बहुत

गर्म तथा शीत ऋतु में ठण्डा हो जाता है उदाहरणार्थ—ग्रीष्म में १००° फा० एवं शीत ऋतु में ६०° फा० । डेल्टे के भाग में यह अन्तर शुष्क क्षेत्र की अपेक्षा कम पाया जाता है । इस क्षेत्र में ग्रीष्म ऋतु में प्राय: ६०° फा० तथा शीत ऋतु में ७०° फा० तापक्रम रेकर्ड किया जाता है, इसका मुख्य कारण यह है कि यह क्षेत्र समुद्र तट के समीप स्थित है । शान पठार,

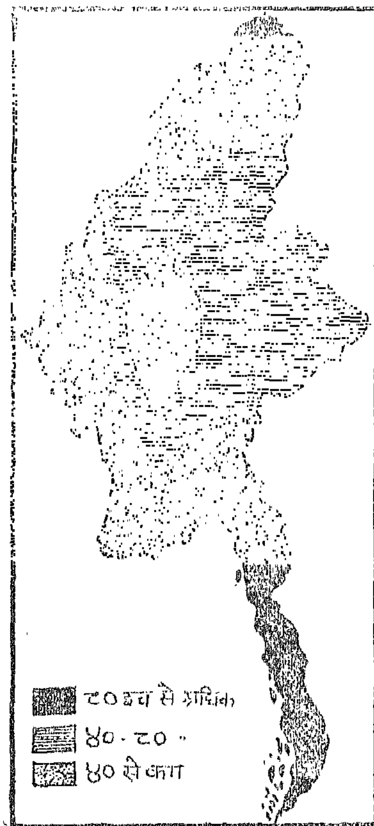


तापक्रम—जनवरी में

चिन पहाड़ियां तथा कचिन की पहाड़ियों पर समशीतोष्ण जल-वायु मिलती है। यहाँ बर्फ वर्षा नहीं होती, परन्तु कचिन की पहाड़ियों के उत्तर में कुछ चोटियाँ लगभग आठ माह तक बर्फ से ढकी रहती हैं । वर्षा ऋतु यहाँ आधे मई से प्रारम्भ तथा मध्य अक्टूबर तक समाप्त हो जाती है, अन्त के समय तूफान भी आते हैं । अराकान तथा तिनासिरिम पर्वत श्रेणियों



तापक्रम—जुलाई में



वार्षिक वर्षा

के तटीय भाग में वार्षिक वर्षा लगभग २०० व २५० इंच, रंगून के क्षेत्र में लगभग १०० इंच तथा शुष्क-भाग में केवल ३० इंच के होती है। अधिकतर वर्षा-वितरण धरातल पर निर्भर रहता है। शीत ऋतु में लौटते हुये मानसून से उत्तरी क्षेत्र में, विशेष तौर पर कचिन पहाड़ियों के समीप कुछ वर्षा हो जाती है। परन्तु शुष्क क्षेत्र फिर भी शुष्क ही रहता है।

मानव रूप (Human Aspect)

ऐतिहासिक आधार (Historical background)

यदि हम बर्मा के इतिहास पर एक दृष्टि डालें तो हमें यह ज्ञात होगा कि यहाँ पर अनेकों बार मंगोल जातियों के आक्रमण हुये। यह लोग धीरे धीरे समस्त बर्मा में इधर उधर फैल गये तथा छोटे छोटे समूहों में विभाजित हो गये। परन्तु फिर भी यह स्पष्ट है कि यहाँ की प्राचीन संस्कृति भारत से अधिक प्रभावित हुई है, क्योंकि भारतीय लोगों का ही वहाँ से अधिक आना जाना रहा है। इसका प्रमाण हमें प्रोम, पीगू तथा तिनेसिरिम व अराकान तटों के समीप के खण्डहरों से भली भाँति मिलता है।

पगन वंश (Pagan Dynasty) :—इतिहासकारों का मत है कि

प्राचीन प्रोम राज्य केवल ५०० वर्ष तक ही रहा। घरेलू झगड़ों के कारण यह लोग उत्तर की ओर भागने लगे और थमोकडेरिट (Thamokdarit) ने, जो कि प्यू (Pyu) लोगों का सरदार था, पगन (Pagan) के स्थान पर अपनी राजधानी बनाई। परन्तु वास्तविक इतिहास का जन्म राजा अनार्वथा (King Anawrathra A. D. 1044–77) के समय से होता है, क्योंकि इसी के समय से पूरे बर्मा पर एकतन्त्र की स्थापना होती है। इसी ने थेटन के मोंस (Mons of Thaton) को परास्त किया और वहाँ से धन तथा बौद्ध धर्म सम्बन्धी अनेकों वस्तुयें अपने साथ ले आया। इसने शान पर भी विजय प्राप्त की, और साथ ही पीगू को चींगमई (Chiengmai) के आक्रमणों से मुक्त कराया। पाली पवित्र पुस्तकों को लिखने की मुख्य भाषा मान ली गई। अनावर्था ने बर्मा में अनेक सुधार किये—सिंचाई के लिये नहरें, यात्रियों के लिये ठहरने को स्थान तथा शिक्षा के लिये पाठशालायें खुलवाईं। लगभग ढाई सौ वर्ष तक पगन बौद्ध सांस्कृतिक सभ्यता का केन्द्र रहा। वास्तव में इसी को हम "बर्मा का स्वर्णयुग" कह सकते हैं।

शान आधिपत्य (Shan domination) :—जब कि सन् १२५३ में तातर मध्य एशिया से यूनान की ओर बढ़ रहे थे, उस समय शान लोग भी पगन राज्य पर बहुत दबाव डाल रहे थे। जिसके अन्तर्गत १२८७ में पगन राज्य घेर लिया गया और उस वंश का अन्त हो गया। शान लोगों ने समस्त बर्मा पर अपना आतंक जमा लिया। परन्तु यह लोग शासन करना नहीं जानते थे इसीलिये यह कई राज्यों में बंट गया जो आपस में प्रायः लड़ते झगड़ते ही रहते थे। एक योरोपियन यात्री जो कि इस समय यहाँ आया था, उसका कथन था कि मोन (Mone) राज्य वास्तव में उन्नति पर था, परन्तु उत्तरी बर्मा की दशा बहुत शोचनीय थी। आवा राज्य पर बराबर शान लोगों के आक्रमण हो रहे थे, अन्त में सन् १५२७ में शान लोगों ने उस पर विजय प्राप्त की। बर्मा के निवासी वहाँ से भाग निकले और टौंगू में जो एक स्वतन्त्र राज्य था पनाह ली। टौंगू अब बर्मा के निवासियों का केन्द्र हो गया है। यहाँ के राजा ने फिर से अपने राज्य की स्थापना की तथा उसका विस्तार बढ़ाया।

टौंगू वंश (Toungoo Dyna ty 1531—1572)—टौंगू के राजा तबिशवेती (Tabin hweti) ने पीगू, प्रोम, मर्टोबन तथा अराकान व स्याम पर अपना आतंक जमा लिया, शेष कार्य उसने अपनी मृत्यु के बाद बेईनांग (Bayinnaung 1550—81) के कराने के हेतु छोड़ दिया। बेईनांग ने बर्मा की सीमा, पश्चिम में मनीपुर, उत्तर में युनान तथा पूर्व में चींगमई (Chiengmai) तथा अयूथिया (Ayuthia) तक बढ़ा ली। वह शान राज्य

की ओर भी धीरे धीरे बढ़ने लगा। अठारहवीं शताब्दी तक दक्षिणी बर्मा में जनसंख्या का घनत्व बढ़ गया, साथ ही वहाँ वन तथा ऊँची ऊँची घास भी उग आई। बर्मा के लोगों ने यह नहीं सोचा कि यहाँ का भविष्य, तट की उन्नति पर ही निर्भर है, तथा १६३५ में पीगू छोड़कर फिर आवा चले गये। मोंस लोगों को जैसे ही अवसर प्राप्त हुआ, पीगू की गद्दी पर अपना राजा बैठा दिया। इन लोगों ने लगातार ऊपरी बर्मा पर आक्रमण किये। अन्त में १७५२ में आवा को नष्ट करके अपना आतंक जमा लिया।

आलोंगप्या वंश (Alaungapya Dynasty 1752—1885)—आवा वंश का तो अन्त हो गया, परन्तु जब स्वीबो के आलोंगप्या ने मोंस को परास्त किया, तो बर्मा के निवासी फिर से संगठित हो गये। मोंस निवासियों को उत्तरी बर्मा से सम्वत् १७५६ में निकाल दिया गया। उन्होंने डेगन नगर अपने अधिकार में कर लिया और उसका नाम रंगून रख दिया। पुनः समस्त बर्मा का एक राजा नियुक्त किया गया। इन लोगों ने इधर उधर अनेक आक्रमण कर अपना राज्य बढ़ाने की चेष्टा की, साथ ही विदेशी आक्रमण को भी रोकते रहे। परन्तु अब इनको यह गर्व हो गया कि इनसे शक्तिशाली और कोई भी नहीं है। इसका परिणाम यह हुआ कि इनकी शासन प्रणाली क्षीण पड़ गई और राज्य में तमाम लूटमार करने वालों के समुदाय उठ खड़े हुये। पश्चिम में जब इन लोगों ने आक्रमण किये तो इन्हें ब्रिटिश लोगों से हार माननी पड़ी। यहाँ तक कि अराकान व टिनेसिरिम के भागों पर ब्रिटिश लोगों ने अधिकार जमा लिये। ब्रिटिश लोगों के सम्बन्ध इन लोगों से अब और भी खराब हो गये तथा १८५२ में दूसरी बर्मा की लड़ाई छिड़ गई। सम्पूर्ण दक्षिणी बर्मा ब्रिटिश लोगों के अधिकार में आ गया। परन्तु जब बर्मा तथा फ्रांस में १८८५ में एक समझौता हुआ, तो ब्रिटिश लोगों ने उत्तरी बर्मा पर अपना अधिकार जमा लेने की घोषणा कर दी। अब बर्मा का तीसरा युद्ध छिड़ गया, मांडले को चारों ओर से घेर लिया गया और थिबा राजा को गद्दी से उतार दिया गया। इस प्रकार समस्त बर्मा पर सन् १८८६ में ब्रिटिश लोगों का अधिकार हो गया।

जनसंख्या (Population)

बर्मा बहुत घने बसे हुए देशों में से नहीं है। इसकी जन-संख्या १९४१ में केवल १६,८२३,७९८, और सन् १९५३ में १९,०४५,००० थी। इसमें से मुख्य बर्मा के निवासी कदाचित् दो-तिहाई ही हैं, शेष लगभग ७० प्रतिशत के बारे में कहा जाता है कि वे बर्मा की भाषा आसानी से बोल लेते हैं। सन् १९४८ में यहाँ की नागरिक जन्म दर प्रति हज़ार ३७·१७ और नागरिक मृत्यु दर इसी सन् में ३१·९४ थी। बर्मा के आदि

निवासी उत्तर की ओर मंगोलियन तथा दक्षिण की ओर इण्डोनेशियन बतलाये जाते हैं, परन्तु इनमें स्थान स्थान पर मिश्रण हुआ है। अब यहाँ पर कई जातियाँ पाई जाती हैं, जो भिन्न भिन्न भाषायें बोलती हैं। मोंन जाति के लोग इरावदी सिलाँग तथा सालवीन के नदियों के डेल्टे वाले भागों में पाये जाते हैं। मुख्य बर्मा वासी अधिकतर ऊपरी बर्मा में बसे हुये हैं। शान जाति के लोग इरावदी नदी के पूर्व में दूर तक फैले हुये हैं। यह लोग वास्तव में दक्षिण पश्चिमी चीन से आये हुये हैं, वैसे तो वह बर्मा के निवासियों से मिलते जुलते हैं, आमतौर पर यह लोग उनसे कुछ गोरे तथा स्वस्थ होते हैं। इनका शरीर भी हृष्ट-पुष्ट तथा कुछ लम्बा होता है। यह लोग बहुत सभ्य नहीं हैं, परन्तु जब भी किसी के सम्पर्क में आ जाते हैं, बहुत कुछ सीख लेते हैं। करेंस Karens) जाति के बारे में विद्वानों में अभी मतभेद है। कुछ का तो कहना है कि यह लोग चीन से आये हैं, शान लोगों ने इन्हें दक्षिण की ओर भगा दिया तथा मोंन व बर्मा वासियों ने इन्हें अपने दबाव से पर्वतीय क्षेत्रों तक सीमित कर दिया है। ब्रिटिश लोगों के समय बहुत से करेन इसाई हो गये, परन्तु अधिक लोग ऐसे ही हैं, जो बौद्ध धर्म को मानते हैं। अब करेन मुख्य बर्मा-वासियों की भांति आधुनिक ढंग से रहते हैं। इनकी भाषा व रहन सहन से इन्हें कदापि नहीं पहचाना जा सकता ! चिन जाति के लोग अधिकतर तिब्बत-बर्मा की सीमा से आये हुये हैं। चिन्दविन नदी तथा उसके पश्चिम में स्थित लुशाई प्रदेश में इनका विस्तार अधिक है, परन्तु अब वह लोग अराकान योमा तक फैल गये हैं। वह लोग छोटे छोटे समूहों में इधर उधर फैले हैं और कई भाषायें बोलते हैं तथा आपस में लड़ते झगड़ते भी रहते हैं। आधुनिक सभ्यता से कुछ लोग सुधर गये हैं तथा फौज व पुलिस में सफलता पूर्वक काम करते हैं। कचिन (Kachins) जाति के लोग उत्तरी, उत्तर-पूर्वी तथा उत्तर-पश्चिमी बर्मा में पाये जाते हैं। यह लोग भी पर्वतीय क्षेत्रों में वितरित बस्तियों में ही रहते हैं। इनकी भाषा तथा रहन सहन भिन्न प्रकार का है, तथा आपस में भी कदापि नहीं मिलता।

इन जातियों के अतिरिक्त बर्मा में अन्य भी छोटी छोटी जातियाँ पाई जाती हैं। अराकान तट पर अराकानीज़ लोग बहुत ही साधारण जीवन व्यतीत करते हैं, भाषा व रहन सहन भी भिन्न है। तेलेइंग (Talaings) अधिकतर मोलमीन के चारों ओर पाये जाते हैं तथा तेवोयन (Tavoyauns) तेवोय (Tavoy) के समीप मिलते हैं, इनकी जनसंख्या लगभग १३० लाख है। यह लोग रूपरंग में चीनी लोगों से बहुत कुछ मिलते जुलते हैं। मर्गुई द्वीप समूहों में सीलंग या 'सी जिपसीज़' पाये जाते हैं। शान पठार के पूर्व में पालंग व वाज़ (Palaungs and Was) जाति के लोग मिलते हैं, यह लोग बहुत असभ्य हैं तथा खोपड़ियों का शिकार भी

खेलते हैं। इनकी बस्तियां भी दूर दूर तक वितरित हैं, तथा इनमें कोई भी शासन व्यवस्था नहीं है।

बर्मा में कई देशों के निवासी आकर बस गये हैं। परन्तु सबसे अधिक संख्या चीन तथा भारत वासियों की ही है। यह लोग व्यापार तथा वाणिज्य के दृष्टिकोण से यहाँ आ बसे हैं। और अधिकतर बड़े बड़े नगरों में ही रहते हैं। डा० क्रेसे के अनुसार बर्मा में ९,०००,००० बर्मा-वासी, १,२००,००० करेन, १,०००,००० शान, १,०००,००० भारतीय लोग, शेष में से २००,००० चीनी व असभ्य वितरित जन समूह पाये जाते हैं। यहाँ की ग्रामीण जन संख्या ८० प्रतिशत है। यही कारण है कि यहाँ बड़े बड़े नगर बहुत कम पाये जाते हैं। रंगून यहाँ का सबसे बड़ा नगर तथा बन्दरगाह है। इसकी जन-संख्या ५ ०,८०० से अधिक है। यह नगर समुद्र से २० मील दूर कई सहायक नदियों के संगम पर बसा हुआ है। यह इरावदी नदी पर स्थित नहीं है, परन्तु उससे एक नाव ले जाने योग्य नहर द्वारा मिला हुआ है, विदेशी व्यापार में यह नगर एक मुख्य स्थान रखता है तथा लगभग ८६ प्रतिशत व्यापार करता है। यह नगर रेल द्वारा मोलमीन, माँडले तथा प्रोम से मिला हुआ है। माँडले एक दूसरा मुख्य नगर है जो ऊपरी बर्मा में स्थित है। इसकी जन-संख्या सन् १९४१ में १६३५२७ थी। यह नदी, सड़क तथा रेल द्वारा रंगून से मिला हुआ है। टिनेसिरिम के किनारे मोलमीन एक प्रसिद्ध नगर तथा बन्दरगाह है। यह अधिकतर रबड़ तथा खनिज पदार्थों के व्यापार में महत्वपूर्व स्थान रखता है। अराकान तट पर अकयाब एक छोटा सा नगर व बन्दरगाह है, इसमें अधिकतर मछुआ लोगों की बस्तियाँ मिलती हैं। इनाँगयाँग नगर पेट्रोलियम की खानों के लिये बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ से यह खनिज तेल बाहर भेजा जाता है। जनसंख्या यहाँ बहुत थोड़ी पाई जाती है।

आर्थिक रूप (Economic Aspect)

प्राकृतिक वनस्पति (Natural Vegetation) :—

बर्मा में भिन्न भिन्न प्रकार की प्राकृतिक वनस्पति पाई जाती है। इसका वितरण प्राय: धरातल व वर्षा के आधार पर है। धरातल पर कोहरा नहीं पड़ता परन्तु तीन हज़ार फीट के ऊपर जिन जिन स्थानों पर पड़ता है, वहाँ भाँति भाँति के वृक्ष पाये जाते हैं, इनमें पाइन, सदाबहार, ओक तथा लम्बी लम्बी घास आदि मुख्य हैं। धरातल पर कोहरे की रेखा के नीचे वनस्पति वर्षा-वितरण के आधार पर ही पाई जाती है।

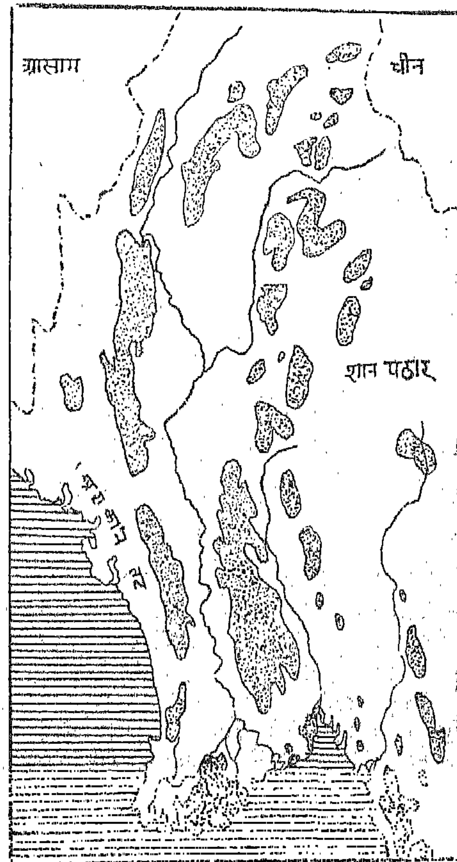
जिन स्थानों पर ८० इंच से भी अधिक वर्षा होती है, वहाँ सदाबहार उष्ण कटिबन्धीय घने वन पाये जाते हैं। इन वनों में बहुत बड़े बड़े वृक्ष पाये

जाते हैं। सागौन के अतिरिक्त वहाँ अनेक प्रकार के वृक्ष उगते हैं। ये वन इतने घने होते हैं कि इन्हें साफ करना असम्भव रहता है।

जिन क्षेत्रों में ४० इंच से ८० इंच तक वर्षा होती है, वहाँ प्राय: मानसून वाले वन मिलते हैं, इन वनों में अधिकतर पतझड़ वाले वृक्ष मिलते हैं। यह वन इतने घने नहीं होते जितने कि उष्ण कटिबन्धी वन हुआ करते हैं। ग्रीष्म ऋतु में इन वनों के वृक्षों की पत्तियाँ गिर जाया करती हैं। परन्तु बसन्त में यह फिर हरे भरे हो जाते हैं। यहाँ से अधिकतर टीक व साल की लकड़ी प्राप्त होती है।

जिन भागों में ४० इंच से भी कम वर्षा होती है, वहाँ वनस्पति बहुत कम घनी मिलती है। वृक्ष अधिकतर इधर उधर बितरित दशा में मिलते हैं। अधिकतर घास व झाड़ीदार पौधे ही पाये जाते हैं। किसी किसी स्थान पर मरुस्थलीय दशायें पाई जाने के कारण वनस्पति नहीं मिलती।

डेल्टे के भागों में ज्वार-भाटा वाले वन मिलते है। वृक्ष काफ़ी लम्बे व घने होते हैं। अधिकतर बांस व बेलें मिलती हैं। इन वनों का आर्थिक महत्व अधिक है।



बर्मा—रिजर्व वन सम्पत्ति

कुल टिम्बर उत्पादन
(Cubic tons of logs)

वर्ष	टीक	अन्य सख्त लकड़ियाँ
१९५२-५३	१३२,६७६	३६८,९००
१९५३-५४	११५,०००	३००,०००

(*Economic Survey of Burma, 1954*)

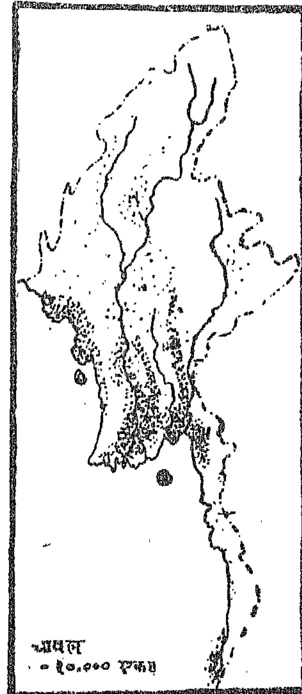
प्राचीन समय में लोग कृषि करने के हेतु बनों को साफ कर देते थे। दो या तीन वर्ष खेती करने के बाद इन क्षेत्रों को छोड़ दिया जाता था। इस प्रकार बहुत से क्षेत्रों से वनस्पति बिल्कुल साफ हो गई। पिछले पचास वर्षों से सरकार ने इन वनों की देख रेख अपने हाथ में ले ली है, अब अधिक महत्वपूर्ण वनों की बराबर रक्षा की जाती है। इन सुरक्षित वनों का क्षेत्रफल सन् १९४५ और ४६ में २०,०५७,२५१ एकड़ था। साल व सागौन जो कि अधिकतर मकान व फर्नीचर बनाने के काम आती है, मुख्य तौर पर सरकार या प्राइवेट कम्पनियों की अध्यक्षता में काटी जाती है। सन् १९५१-५२ में टीक का उत्पादन ११९००० टन तथा कठोर लकड़ी का २७५०० टन था। बर्मा टिम्बर बाहर भेजने वाले देशों में एक विशेष स्थान रखता है। लगभग २ लाख टन लकड़ी यहाँ से प्रति वर्ष विदेशों को भेजी जाती है।

कृषि (Agriculture)

बर्मा एक कृषि-प्रधान देश है। यहाँ ७० प्रतिशत से अधिक लोग कृषि में लगे हुये हैं। खेती योग्य भूमि का क्षेत्रफल २२० लाख वर्ग एकड़ से अधिक है। यह क्षेत्र अधिकतर घाटी व डेल्टे वाले भागों तक सीमित है। कृषि करने के यहां अनेक ढङ्ग प्रचलित हैं। ऊपरी बर्मा में भाँति-भाँति की उपजें जैसे मिलैट, कपास, मक्का, मटर तथा तिलहन इत्यादि बोई जाती है। निचला बर्मा अधिकतर चावल के लिये प्रसिद्ध है तथा इसी की कृषि सब से अधिक होती है।

चावल:—चावल उत्पन्न करने वाले देशों में बर्मा प्रमुख स्थान रखता है। यहाँ के निवासी अधिकतर चावल ही खाते हैं इसीलिये इसकी कृषि यहाँ बहुत प्राचीन-काल से होती चली आ रही है। चावल उत्पन्न करने के लिये यहाँ भौगोलिक परिस्थितियाँ बहुत ही उपयुक्त पाई जाती हैं। इसको बोने के तीन ढङ्ग अधिक प्रचलित हैं, प्रथम—पौधों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाकर लगाने का ढङ्ग, द्वितीय—चावल के बीजों को इधर उधर हाथ से फेंकना, तृतीय—बीजों को एक पोली छड़ी द्वारा छेद करके उसमें डाल कर बोना। पहला साधन सब से उत्तम समझा जाता है। निचले बर्मा में अधिकतर यही प्रचलित है। निचले

बर्मा में सम्पूर्ण चावल के क्षेत्र का ६० प्रतिशत भाग पाया जाता है। ऊपरी बर्मा में केवल ३० प्रतिशत भाग सम्मिलित है। शेष भाग पर्वतीय ढालों व समुद्र तटों के समीप का है। चावल का वार्षिक उत्पादन ७५ लाख टन से भी अधिक है। जब कि १९४५-४६ में इसका बोया हुआ क्षेत्र ६,२७४,३०७ एकड़ तथा उत्पादन २,६१९,६६५ टन था। और १९५२-५३ में ४,३३८,००० मेट्रिक टन ३,७३३,३६० हेक्टर्स क्षेत्र में उत्पन्न हुआ। इसमें से ३० या ४० लाख टन चावल विदेशों को भेज दिया जाता है। भारतवर्ष लगभग आधा चावल खरीद लेता है। धान कूटने के कई कारखाने बर्मा में पाये जाते हैं। इस उद्योग पर निर्भर अन्य उद्योग भी उन्नति कर गये हैं।



बर्मा—धान का वितरण

तिल (सिसमम) :—चावल के बाद सिसमम एक दूसरी महत्वपूर्ण उपज है, इसका क्षेत्र लगभग १५ लाख एकड़ है। इससे तेल प्राप्त होता है जो खाना पकाने व मशीनों आदि में प्रयोग किया जाता है। बर्मा इसका भी व्यापार विदेशों से करता है। प्रायः मूंगफली की पैदावार भी इसी दृष्टिकोण से की जाती है। बर्मा सरकार आजकल इसका क्षेत्र बढ़ाने की चेष्टा कर रही है।

कपास :—कपास की पैदावार यहाँ लगभग १५ लाख एकड़ भूमि में होती है। वास्तव में इसका भविष्य बहुत उज्ज्वल है। प्राचीन काल से जितना भी कपास उगता था घरेलू धन्धों में खप जाता था, क्योंकि प्रत्येक घर में खादी कपड़ा बुना जाता था, परन्तु अब आधुनिक ढङ्ग की मशीनों के बन जाने से यहाँ का यह धन्धा लगभग समाप्त सा हो गया है। आजकल बर्मा विदेशों से वस्त्र मंगाता है। यह कपास अधिकतर इरावदी के डेल्टे व मध्य की घाटी में बोया जाता है। इसके लिये भौगोलिक सुविधायें बहुत अच्छी पाई जाती हैं। यही कारण है, कि सन् १९५१ में ७००० टन चावल केवल ६५,००० हेक्टर्स के क्षेत्र में उत्पन्न हुआ।

कृषि उत्पादन
(हजार टन)

	१९५२-५३	१९५३-५४
१–धान	५,७४०	५,५२७
२–मूंगफली	१७६	१९१
३–सीसमम	५४	४४
४–कपास	२४	२१
५–मिश्र की मटर (Pentil)	१८१	१८७
६–तम्बाकू	४६	४७
७–ज्वार, बाजरा एवं गेहूं	७७	८०

(*Economic Survey of Burma, 1954 Rangoon*)

ईख :—ईख की पैदावार यहाँ पिछले कुछ ही वर्षों से प्रारम्भ हुई है। १९३० के पहले यहाँ कोई भी शक्कर का कारखाना नहीं था, बर्मा शक्कर बाहर से मंगाया करता था, परन्तु जब से विदेशी शक्कर का आना कम हो गया तब से बर्मा सरकार ईख की पैदावार की ओर विशेष ध्यान देने लगी। शक्कर बनाने के कारखानों में वृद्धि वास्तव में उसी समय से हुई है, जब से बर्मा भारत से अलग कर दिया गया है।

चाय :—चाय बर्मा का एक बहुत प्राचीन पौधा है। यह अधिकतर उत्तरी शान के पर्वतीय राज्यों में उगाया जाता है क्योंकि वहाँ इसके लिये भौगोलिक दशायें बहुत अच्छी पाई जाती हैं। अधिक उन्नति वास्तव में उसी समय से हुई है जब से कि अंग्रेज़ों ने अपनी देखरेख में इसकी पैदावार प्रारम्भ कर दी।

इन उपजों के अतिरिक्त बर्मा में तम्बाकू भी उगाई जाती है। यहाँ की तम्बाकू बहुत उत्तम तथा नशीली होती है। बर्मा में इसका उपभोग अत्यधिक है, क्योंकि यहाँ का लगभग प्रत्येक मनुष्य बीड़ी सिगरेट व चुरट पीने का आदी होता है। बर्मा रबड़ की उपज के लिये भी बहुत प्रसिद्ध है। रबड़ यहाँ दक्षिण में तेनासरिम पर्वत श्रेणियों के पश्चिम में बहुत होती है। यह वह क्षेत्र है जहाँ ८० इंच से अधिक वर्षा होती है। सन् १९४८ में रबड़ का उत्पादन १००० टन और १९४९ में ६००० टन था बर्मा के कुछ क्षेत्रों में रेशम के कीड़े भी पाले जाते हैं। बर्मा के निवासी रेशमी वस्त्र बड़े चाव से पहनते हैं। इसका धन्धा वास्तव में घरेलू ढंग पर प्रचलित है।

आज कल बर्मा में कृषि की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है । बर्मा सरकार ने कृषि योग्य भूमि बढ़ाने के हेतु अनेक योजनाये बनाई हैं। यहाँ की नहरों से कई मील लम्बी शाखायें निकाली गई हैं तथा सिंचाई के साधन बहुत अधिक बढ़ा लिये गये हैं। अब यहां कृषि आधुनिक ढंग से मशीनों द्वारा भी होने लगी हैं, अच्छी खाद तथा बीजों का भी प्रयोग किया जाने लगा है।

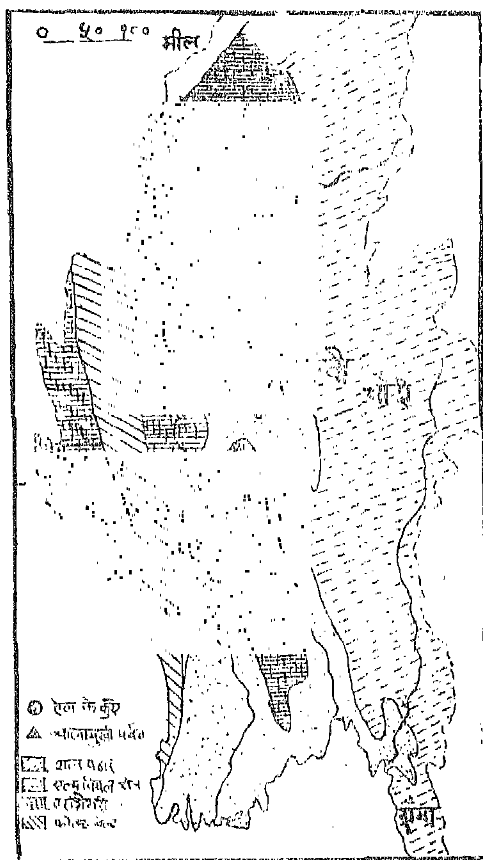
जीवजन्तु (Animal life)

बर्मा में अनेक जीवजन्तु पाये जाते हैं। यहाँ पर पशुओं की संख्या अधिक है। सन् १९४८ में गाय-बैलों की संख्या ५,२०७,०००, भैंसों की ७२१,०००, घोड़ों की १२,०००, भेड़ों की २१,०००, बकरों की १७२,०००, तथा सुअरों की ३९४,००० थी। बैल अधिकतर सामान ढोने व गाड़ियों में जोतने के काम में लाये जाते हैं। पहले ये हल जोतने के काम में भी लाये जाते थे, परन्तु अब भैंसे अधिकतर खेतों में कार्य करने लगे हैं। गाय व भैंस प्राय: ग्रामीण निवासी दूध, घी व मक्खन के लिये पालते हैं। शुष्क क्षेत्र में बकरे व बकरियाँ बहुत बड़ी संख्या में मिलते हैं। यह भी दूध व गोश्त की प्राप्ति के हेतु पाले जाते हैं । यहाँ भेड़ों की नस्ल बहुत खराब है, इसीलिये ये बहुत कम और कहीं कहीं पाली जाती हैं। अधिकतर पर्वतीय ढालों पर जो आदि निवासी रहते हैं, वही इन्हें पालते हैं। इनका महत्व केवल ऊन, खाल व गोश्त के हेतु ही है।

खनिज-सम्पत्ति (Mineral Wealth)

इस देश में कई प्रकार के खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं, परन्तु इन सब में पेट्रोलियम ही अधिक महत्वपूर्ण है। यह देश प्रारम्भ से ही पेट्रोलियम निकालने में प्रसिद्ध रहा है। प्राचीनकाल में इनांगग्यांग (Yenangyaung) के क्षेत्र से कुछ विशेष लोग छिछले कुओं से यह खनिज तेल निकालते थे। सन् १८८६ में बर्मा आयल कम्पनी (Burma Oil Company) की स्थापना हुई। दूसरे ही वर्ष पेट्रोलियम निकाला जाने लगा। उस वर्ष का उत्पादन २,३३५,३०५ गैलन था। सन् १९०४ में जब कि अमेरिका वासियों ने सर्वप्रथम आधुनिक ढङ्ग से मिट्टी के तेल का कुआँ खोदा, तब इसका उत्पादन ११८५००००० गैलन हो गया। सन् १९३७ तक यह संसार के उत्पादन का केवल ५०% भाग तेल उत्पन्न करता था, परन्तु १९५१ में इसका उत्पादन लगभग १२०० हजार टन हो गया। यहाँ की सबसे बड़ी पेट्रोलियम निकालने वाली कम्पनी 'बर्मा आयल कम्पनी' ही है। इसमें २०,००० से अधिक मनुष्य कार्य करते हैं। पेट्रोलियम के कुएँ अधिकतर इरावदी नदी की घाटी में स्थित हैं। इसका मुख्य कारण यह है, कि इस नदी के बेसिन की बनावट टरशियरी युग की है। यहाँ के सब से प्रसिद्ध कुओं में इन्दा, इनांगग्यांग, इनांगग्यात, सिन्गू, मिन्बू, लानिवा तथा इनानदा व पदाउकबिन

इत्यादि हैं। इन पेट्रोलियम क्षेत्रों के अतिरिक्त दक्षिणी अराकान पर्वत श्रेणियों में भी एक क्षेत्र है, जो अराकान के नाम से प्रसिद्ध है।



बर्मा—खनिज सम्पत्ति

अन्य खनिज पदार्थों में भी बर्मा बहुत प्रसिद्ध रहा है। चाँदी, सुरमा, टंग्स्टन, राँगा, ताँबा, बहुमूल्य पत्थर, चूना तथा चीनी मिट्टी इत्यादि। खनिजों में इसकी स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण रही है। चाँदी व सुरमे की खानें अधिकतर बौदविन (Bawdwin) के निकट पाई जाती हैं, क्योंकि यहाँ की चट्टानें 'प्राचीन आग्नेय चट्टानें' हैं जो प्रायः खनिजों में धनवान हुआ करती हैं। शान राज्य में भी स्थान स्थान पर चाँदी निकाली जाती है। साफ की हुई चाँदी रंगून भेज देते हैं, यहाँ से यह विदेशों को भेज दी जाती है। यह धातुयें "बर्मा कारपोरेशन लिमिटेड" जो नम्तू (Namtu) के स्थान पर स्थित है, के द्वारा निकाली जाती हैं। एक समय था जब कि बर्मा टंगस्टन उत्पन्न करने में संसार में प्रथम स्थान प्राप्त करता था, परन्तु जब से अन्य देशों ने अपना उत्पादन बढ़ा लिया, तब से इसकी स्थिति गिर गई और एक निम्न श्रेणी का उत्पादक हो गया। टंगस्टन अधिकतर शान राज्य तथा टिनेसिरिम पर्वत श्रेणियों से प्राप्त होता है। राँगे व ताँबे में बर्मा कोई विशेष स्थान नहीं प्राप्त करता, ये दोनों धातुयें शान राज्य के दक्षिण में तथा

खनिज पदार्थ-उत्पादन

	१९३९	१९४८	१९५३
१—अशुद्ध पेट्रोलियम (००० गैलन)	२७५,६७३	१२,६५८	३७,६४७
२—इमारत तथा सड़क बनाने का सामान (००० गैलन)	२५०४	२३६	८३०
३—सीसा तथा सीसे की तैयार की हुई वस्तुयें(०००गैलन)	७७·२	११·६	९·८
४—जिंक की तैयार की हुई वस्तुयें (००० गैलन)	५९·३	२·९	५·९
५—टंग्स्टन की तैयार की हुई वस्तुयें (००० गैलन)	४·३	०·४	०·६
६—राँगा तथा वुलफ्रेम की तैयार की हुई वस्तुयें (००० गैलन)	५·६	२·१	२·०

(*Economic Survey of Burma, 1954*)

तेनासिरिम पर्वत श्रेणियों में किसी किसी स्थान पर पाई जाती हैं। बहुमूल्य पत्थरों में हीरे, रूबी, जेड और कीमती मोती इत्यादि मुख्य हैं। हीरे व रूबी अधिकतर मोगक के स्थान पर प्राचीन केम्ब्रीयन युग की चट्टानों से निकाले जाते हैं। जेड मोती इत्यादि प्रायः केम्ब्रीयन से लेकर ज्यूरेसिक तक की सभी चट्टानों में जगह २ पाये जाते हैं। ऐसी चट्टानें शान पठार के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर बहुत कम मिलती हैं। चूने की चट्टानें अधिकतर दिवोनो-कारबोनिफेरस युग की हैं। इनमें से कहीं कहीं पर उत्तम संगमरमर भी प्राप्त हो जाता है।

वह खनिज पदार्थ जिनमें बर्मा कोई विशेष स्थान प्राप्त नहीं करता सोना, लोहा, अम्बर, नमक तथा कोयला आदि हैं। सोना उत्तरी बर्मा में नदियों के बेसिन से प्राचीन ढङ्ग से निकाला जाता है। अधिकतर यहाँ के आदि निवासी इसे घरेलू ढङ्ग पर निकालते हैं। सन् १९४८ में सोना ४२·४ औंस, एन्टीमनी १६९·४ टन, राँगा १०३५·५ टन, वुलफ्रेम ७८·०७ टन, चाँदी ४१५,०९९·१ औंस, ताँबा ११४·७ टन, लेड ११५७६ टन तथा जिंक २९४३·४ टन निकाला गया। लोहे की कोई विशेष खान नहीं है, वरन् प्राचीन समय में यह पर्वतीय क्षेत्रों से थोड़ी मात्रा में निकाला जाता था। अम्बर प्रायः हुकाँग (Hukawng) नदी के बेसिन से प्राप्त किया जाता है। कचिन लोग अधिकतर इस धन्धे में लगे हुये हैं। उत्तरी बर्मा में नमक भी कई स्थानों से प्राप्त किया जाता है, मुख्य क्षेत्र स्वीबो, चिंदविन, मिंगयान इत्यादि हैं। शान राज्य में भी कई स्थानों से नमक प्राप्त किया जाता है। बर्मा में कोयला मिलता अवश्य है, परन्तु वह इतनी निम्न श्रेणी का होता है कि उसका कोई भी आर्थिक प्रयोग नहीं हो सकता। यही कारण है कि यह अधिक मात्रा में नहीं निकाला जाता। भूरे रंग के कोयले की खानें चिंदविन की

घाटी तथा प्राचीन झीलों के क्षेत्रों में पाई जाती हैं। इसके रिजर्व का अनुमान २६५,०००,००० टन लगाया गया है।

खनिज पदार्थों के व्यापार में यह देश एक मुख्य स्थान रखता है। प्राचीन समय में बहुत सा जेड (Jade) व बहुमूल्य मोती, थल मार्ग द्वारा भामो होकर चीन को भेजे जाते थे। परन्तु अब ये खनिज पदार्थ अधिकतर रंगून के बन्दरगाह से विदेशों को प्रतिवर्ष एक बड़ी मात्रा में भेजे जाते हैं।

उद्योग धन्धे (Industries)

बर्मा में अनेक उद्योग तथा व्यवसाय होते हैं। अभाग्यवश वहाँ भारी उद्योग, जिनसे कि सहायक उद्योगों की उन्नति के साधन प्राप्त होते हैं, उन्नति नहीं कर पाये हैं। यहाँ पर जितने भी धन्धे होते हैं, वे सब अधिकतर यहाँ से प्राप्त किये हुये कच्चे माल पर ही निर्भर हैं। यहाँ पर बड़े बड़े तथा भारी उद्योग धन्धों की उन्नति इसलिये नहीं हो सकी क्योंकि आरम्भ से ही यहाँ कोयले का अभाव रहा है। साथ ही लोहा, जिसका उत्पादन नहीं के बराबर है, सदैव यहाँ की औद्योगिक उन्नति में बाधक रहा है।

जो कुछ भी विकास हुआ है वह उन सुविधाओं के आधार पर हुआ है जो यहाँ पर पूर्ण रूप से पाई जाती हैं। प्रमुख उद्योग धन्धों में धान कूटना, लकड़ी काटना, पेट्रोल सम्बन्धी वस्तुयें प्राप्त करना, मछली पकड़ना, रेशमी व सूती वस्त्र तैयार करना तथा बीड़ी, सिगरेट व सिगार आदि बनाना है।

हम पहले ही बतला चुके हैं कि यहां की मुख्य उपज चावल है। इरावदी की निचली घाटी व डेल्टे के भाग में धान अधिक बोया जाता है। इस क्षेत्र में जितने भी बड़े बड़े नगर तथा कस्बे हैं, उन सब में धान कूटने के कारखाने पाये जाते हैं। इन कारखानों में बहुत से मनुष्य काम करते हैं। धान के भूसे में कई उद्योग-धन्धों का विकास हुआ है। इसको सीमेंट में अन्य रसायनों के साथ मिला कर आवाज न होने वाली (Sound proof) चादरें बनाने के अतिरिक्त सैंडिल व जूतों में भी भरा जाता है। इससे उत्तम कागज भी तैयार किया जाता है। रंगून, प्रोम तथा टंगू इत्यादि नगरों में बहुत से धान कूटने के कारखाने पाये जाते हैं।

बर्मा के घने बनों से अनेक प्रकार की लकड़ी प्राप्त की जाती है विशेषरूप से सागौन। प्रारम्भ से ही बर्मा लकड़ी की उत्तम से उत्तम वस्तुयें तैयार करने में प्रसिद्ध रहा है। लकड़ी का सामान बनाने में यह सबसे प्रमुख रहा है, लकड़ी की वस्तुओं पर सुन्दर-सुन्दर बेल-बूटे बनाने में इसने बहुत ख्याति प्राप्त की है। यहां की यह वस्तुयें विदेशों तक में भेजी जाती हैं। यहाँ से लकड़ी भी विदेशों को भेजी जाती है। लकड़ी पर डिज़ाइन बनाने का केन्द्र पगन है।

खनिज तेल के उत्पादन में बर्मा का एशिया में एक मुख्य स्थान है। इससे यहां कई पदार्थ प्राप्त किये जाते हैं। जिनमें गैसोलीन, मिट्टी का तेल, गैस, मोम, बेनजाइन तथा बेनजोल नामक तेल इत्यादि प्रमुख हैं। वास्तव में पेट्रोल जब कुओं से निकाला जाता है, तब इसमें अनेक अशुद्ध पदार्थ मिले होते हैं। इसको साफ़ करने के पश्चात् हमें ऊपर लिखे हुये पदार्थ मिलते हैं। तैलशोधक केन्द्र (Refineries) सबसे अधिक सिरीयम (Syriam) नगर में जो रंगून के समीप स्थित है, पाये जाते हैं। रंगून में भी कई रिफ़ाइनरीज हैं। इनमें हजारों मनुष्य काम करते हैं। यहीं पर वे उद्योग भी पाये जाते हैं जो पेट्रोल से प्राप्त किये हुये कच्चे पदार्थों पर निर्भर है।

मछली पकड़ना यहाँ का मुख्य उद्योग है। समुद्र तट पर तथा आन्तरिक जल-भागों में अनेक प्रकार की आहार योग्य मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। यहां लगभग ८५००० से अधिक मनुष्य इस उद्योग में लगे हुये हैं। चावल के साथ बर्मा के निवासी उबाली हुई नमकीन मछली बड़े चाव से खाते हैं। नमक लगाई हुई मछलियों का ये लोग व्यापार भी करते हैं। विद्वानों का मत है, कि इस उद्योग का यहां बहुत विस्तृत क्षेत्र है, क्योंकि जन-संख्या वृद्धि के साथ-साथ नमकीन डिब्बों में बन्द की हुई मछलियों का मूल्य भी बढ़ रहा है। मरगुई द्वीप-समूहों के समीप मोती और मूंगे भी समुद्र से निकाले जाते हैं।

सूती व रेशमी वस्त्र-उद्योग धीरे-धीरे यहां उन्नति कर रहा है। पहले यह उद्योग घरेलू-उद्योग के रूप में था, परन्तु अब यह बड़े बड़े नगरों में आधुनिक ढंग पर विकास कर रहा है। आन्तरिक क्षेत्रों में कुछ विशेष सुविधायें न होने के कारण यह अभी उसी दशा में है, परन्तु समुद्र तट के समीप बड़े बड़े नगरों में यह बराबर पनप रहा है। मांडले के दक्षिण में अमरपुरा में रेशम के वस्त्र बनाने वाले कुशल कारीगर रहते हैं जो बहुत ही उत्तम कपड़ा तैयार करते हैं। रंगून में सूती कपड़ा तैयार करने के कारखाने पाये जाते हैं। कपड़े की रंगाई व छपाई में बर्मा एशिया में बहुत प्रसिद्ध है। यहां वनस्पति से प्राप्त किये हुये रंगों से कपड़ा रंगा जाता है। आन्तरिक क्षेत्रों में यह धन्धा अब भी एक घरेलू उद्योग है, जिसे स्त्रियाँ व बच्चे मिल कर करते हैं।

बर्मा के निवासी बीड़ी, सिगरेट व चुरट पीने के बड़े शौकीन होते हैं। ये नशीली वस्तुयें मनुष्य, स्त्री तथा बच्चे सभी प्रयोग करते हैं। इन वस्तुओं की अधिक मांग होने के कारण यह धन्धा भी बहुत उन्नति कर गया है। यहां इस उद्योग की उन्नति के लिए सबसे बड़ी सुविधा यह है कि तम्बाकू प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होती है। वैसे यहाँ के बने हुये सिगार तथा सिगरेट बाहर भी भेजी जाती हैं।

इन उद्योग धन्धों के अतिरिक्त यहाँ अन्य छोटे घरेलू व्यवसाय भी पाये जाते

चांदी के बर्तन बनाना यहाँ का प्रसिद्ध धन्धा है। इन पर सुन्दर सुन्दर डिज़ाइनें भी बनाई जाती हैं। पगन इस धन्धे का एक बड़ा केन्द्र है।

स्वतन्त्र बर्मा अब अपने उद्योग धन्धों की ओर विशेष ध्यान दे रहा है। यहाँ की सरकार भी इस बात का भरसक प्रयत्न कर रही है, कि उद्योग धन्धों में जितनी भी उन्नति हो सकती है, की जाये।

यातायात के साधन :— (Means of Transport and Communication)—

बर्मा में जल-मार्ग एक मुख्य यातायात का साधन है। यहाँ प्राचीन काल से जल-यातायात होता चला आ रहा है। इसका एक मात्र कारण यह है कि यहां की अधिकांश जनसंख्या नदियों की घाटियों में है तथा वर्षा भी यहाँ प्रचुर मात्रा में होती है। इसीलिए प्राय: गाँव भी नदियों या झीलों के किनारे पर ही बनाये जाते हैं। यहाँ के बच्चे, स्त्रियाँ सभी तट पर एकत्रित होकर मनोरंजन करते हैं। यह लोग सड़कें व पगडान्डियाँ कदापि पसन्द नहीं करते। यही कारण है कि लकड़ी, चावल, फल तथा तरकारियाँ आदि सब वस्तुओं का व्यापार नावों द्वारा ही किया जाता है।

इरावदी तथा उसकी सहायक नदियाँ बर्मा के मध्य में उत्तर से दक्षिण की ओर बहती हैं। यह बर्मा का एक बहुत प्रसिद्ध जलमार्ग है। इसके मध्य तथा डेल्टा प्रदेश में कई नाव्य-नहरों का निर्माण हुआ है। इन नहरों द्वारा व्यापार में बड़ी सुविधा प्राप्त हुई है। इसका मुख्य कारण यह है कि ये यहाँ के मुख्य उत्पादन क्षेत्र हैं। जिस समय से ट्वान्टी (Twante) नहर चौड़ी व गहरी कर दी गई है, उस समय से बड़े बड़े स्टीमर भी रंगून से मांडले तक बड़ी आसानी से आते जाते हैं। इरावदी व सितांग नदियों को मिलाने वाली पीगू-सितॉंग नहर है। यह भी एक बड़ा महत्वपूर्ण जल-मार्ग है। जो नावें इरावदी से सालवीन नदी में प्रवेश करना चाहती हैं, वे इसी नहर द्वारा जाती हैं। टंगू से रंगून तक भी लोग, रेलवे लाइन बनाने के पहले, इसी नहर द्वारा जाया करते थे। अब भी बहुत सी नावें प्रतिवर्ष इस नहर में होकर आती जातीं हैं। सालवीन नदी जल यातायात के दृष्टिकोण से कोई विशेष स्थान प्राप्त नहीं करती। इसका मुख्य कारण यह है कि यह अधिकतर ऊंचे नीचे व पर्वतीय क्षेत्र से होकर बहती है। तिनासरिम (Tenasserim) के समुद्री तट पर नावों व स्टीमरों द्वारा बहुत व्यापार होता है। मरगुई द्वीपसमूहों के कारण यहाँ कुछ प्राकृतिक सुविधायें भी पाई जाती हैं। अराकान का तट भी बहुत महत्वपूर्ण है। यहाँ भी किनारे पर नावों द्वारा व्यापार होता है।

रेलों द्वारा यातायात की उन्नति इस देश में अंग्रेज़ों के समय से ही हुई है।

इसका कारण यह है कि रंगून से प्रोम (१६१ मील) तक की रेलवे लाइन सर्व प्रथम १८७७ में ही खोली गई थी। सन् १८८५ में एक दूसरी रेलवे लाइन टंगू तक बना दी गई, इसके उपरान्त उत्तर में मध्य इरावदी की घाटी तक रंगून से माँडले तक ३८६ मील लम्बी रेलवे लाइन* है। कुछ समय बाद लगभग सभी बड़े बड़े नगर दो हज़ार मील लम्बी मीटर गेज लाइनों से मिला दिये गये। सन् १९१९ में बर्मा की रेलों को भारत सरकार ने अपने अधिकार में ले लिया था। परन्तु जिस समय से बर्मा भारत से अलग हुआ, यह रेल भी अलग कर दी गई। जब से इरावदी नदी पर आवा के स्थान पर पुल बना है, तब से रंगून को मितक्याना (Myitkyana) तक (७२३ मील) रेल द्वारा मिला दिया गया है। माँडले लेशिओ (Lashio) तक भी एक रेलवे लाइन बना दी गई है। इसके बन जाने से शान राज्य तक यातायात होने लगा है। जब बर्मा भारत का एक प्रान्त माना जाता था तब कई बार बर्मा तथा भारत को रेल द्वारा मिला देने की चर्चा हुई। यहां तक कि तीन मार्गों के निर्माण का निरीक्षण (Survey) भी हो चुका था परन्तु अधिक जनसंख्या परिवर्तन के भय से इस योजना को रद्द कर दिया गया। अब, जबकि दोनों देश स्वतन्त्र हैं, कदाचित् भविष्य में ऐसी योजना बना लें जिसके अन्तर्गत भारत तथा बर्मा के बीच रेल का सम्बन्ध स्थापित हो जाय। द्वितीय महायुद्ध के समय बर्मा की रेलों को बड़ी हानि हुई। सन् १९४२ में यहाँ २०५९ मील लम्बी रेलें थीं, परन्तु युद्ध उपरान्त १९५० में केवल १४०० मील लम्बी रेलें रह गई थीं अब पुनः इन रेलों की लम्बाई बढ़ाई जा रही है।

सड़कों द्वारा यातायात की उन्नति यहाँ अधिक नहीं हो सकी, क्योंकि ये सड़कें रेलों व जलमार्गों की सहायक समझी जाती थीं और इसीलिए इनका निर्माण भी बहुत धीरे-धीरे हुआ है। पक्की सड़कें बनाने में काफी रुपया व्यय होता है और साथ ही उत्तम पत्थर होना आवश्यक है। इन सब वस्तुओं की बर्मा में कमी रही है। यही कारण है कि १९४० में यहाँ केवल १७००० मील सड़कें थीं, इनमें से मोटर चलाने योग्य केवल १२५०० मील ही थी। यहाँ की मुख्य सड़क रंगून से मांडले तक गई है ये रेलवे लाइन के किनारे किनारे बनाई गई है। दूसरी रंगून से प्रोम तथा तीसरी मांडले से लेशियो तक गई है। इस सड़क को उत्तर की ओर और बढ़ा दिया गया है, अब यह यूनान की राजधानी कुनमिंग तक चली

* According to Statesman's Year Book, the length of the metalled roads is 3760 miles and there are 6770 miles of unmetalled roads.

गई है। कुनमिंग से एक सड़क भामो तक भी आई है। इस प्रकार से बर्मा यूनान (Yunnan) से दो पक्की सड़कों द्वारा मिल गया है।

वायु एवं जल यातायात में भी इस देश ने उन्नति की है। यहाँ पर बर्मा एयरवेज़ की स्थापना १६४८ में हुई थी। नवम्बर १६५० से इस कम्पनी के वायु यान विदेशों को भी जाने लगे। सन् १६५२ तक यहाँ पर ३२ सिविल हवाई अड्डे थे।

जलयानों के लिये बर्मा के आन्तरिक क्षेत्रों में जहाज़ चलाने योग्य नहरें भी बनाई गई हैं।

विदेशी—व्यापार

(Million Kyats)

	१६५१-५२	१६५२-५३	१६५३-५४ (Est.)
१—निर्यात	१,०६.३	१,२६५	१,१५५
२—आयात	८१६	८७६	१,०००

(*Economic Survey of Burma, 1954*)

मुख्य व्यापारिक साझीदार

(प्रतिशत)

निर्यात	१६५०	१६५१	१६५२	१६५३ (जनवरी—सितम्बर)
भारत	१८	२४	२८	२०
यू० के०	४	६	६	८
मलाया	६	६	१०	१३
सीलोन	३०	२१	१५	१२
जापान	१३	१४	१०	१३
इंडोनेशिया	१२	१२	१२	१३

		(जनवरी–सितम्बर)		
आयात	१६५०	१६५१	१६५२	१६५३
भारत	४३	२७	३०	२७
यू० के०	२३	२४	२४	२७
जापान	१०	१७	१३	१५
यू० एस० ए०	४	२	५	४
मलाया	४	६	६	५
चीन	२	१	—	१

(*Quarterly Economic Review of South East Asia London, September 1954.*)

सांस्कृतिक रूप (Cultural Aspect)

जाति एवं जीवन (Race and Life)

यह हम पहले ही बतला चुके हैं कि बर्मा के निवासी मंगोल जाति के लोगों से मिलते जुलते हैं, यद्यपि इनका रंग चीनी लोगों से कुछ गहरा होता है। ये लोग बड़े आकर्षक तथा भले स्वभाव के होते हैं तथा जिसके भी सम्पर्क में आ जाते हैं, उसकी आदतें ग्रहण कर लेते हैं। प्रायः यह देखा गया है कि एक साधारण निवासी यदि वह निर्धन है तो उसी दशा में सन्तुष्ट हैं, अधिक धन की उसे लालसा नहीं रहती। अब तो यह लोग अपने को आधुनिक वातावरण के अनुसार परिवर्तित कर रहे हैं। यहाँ की स्त्रियों में भी कुछ विशेषतायें पाई जाती हैं। समाज में इनका उच्च स्थान है, इन्होंने कभी भी पर्दा प्रथा नहीं अपनायी, और न इन्होंने अपने पैरों को चीनी स्त्रियों की भाँति छोटे रखने की रीति ही अपनाई। यहाँ की स्त्रियाँ तो हमेशा से एक साधारण तथा स्वतन्त्र जीवन पसन्द करती आई हैं। घरेलू उद्योग-धन्धों में भी इनका बड़ा हाथ है। स्त्रियाँ अपने पिता या पति का घर अपनी इच्छानुसार नौकरी करने के हेतु कभी नहीं छोड़ती। अपना वर पसन्द करने की इन्हें स्वतन्त्रता रहती है। विवाह अधिकतर सिविल नियमानुसार होते हैं। तलाक़ आसानी से दिया जा सकता है परन्तु प्रायः दिया नहीं जाता।

बर्मा के अधिकांश लोग कृषक हैं और बहुधा गाँवों में ही अपनी भूमि पर रहते हैं। ऊपरी बर्मा में प्रायः देखा जाता है कि गाँवों के चारों ओर बाँस या झाड़ियों की सीमा लगी होती है। इसमें एक फाटक होता है, जो रात्रि के समय बंदकर दिया जाता है। एक कुटुम्ब के पास प्रायः १५ एकड़ भूमि, दो बैल, एक

घर तथा बगीचा होता है। यहाँ का एक साधारण घर लकड़ी या बाँस का लगभग पाँच फीट ऊंचे खम्भों पर बना होता है, इसके सामने एक बरामदा खुला हुआ जहन होता है। ये लोग बहुत कम फर्नीचर रखते हैं। आधुनिक सभ्यता के प्रभाव से अब उनके जीवन में परिवर्तन हो गया है। इन लोगों में वर्तमान वस्तुओं का दिन प्रति दिन प्रयोग बढ़ता ही जा रहा है।

यहाँ के नगर के लोगों का जीवन ठीक उसी प्रकार का है, जिस प्रकार का हमें भारतवर्ष में मिलता है। उसी प्रकार के पक्के मकान, फर्नीचर तथा सजावट यहां के मकानों में भी देखने में आती है। यहां छूत-छात का नाम भी नहीं है, वरन् आपस में बड़ा प्रेम भाव रहता है। भोजन में यह उत्तम से उत्तम वस्तुय खाते हैं। धनी लोग यहाँ बहुत कम पाये जाते हैं परन्तु साथ ही भिखारियों की संख्या भी बहुत कम है।

इनका राष्ट्रीय वस्त्र एक लुंगी (Lungy) है, जो तहमत की भांति ऊपर से नीचे तक, सामने की ओर कुछ मुड़ाव देकर पहनी जाती है। यहाँ के निवासी गहरे रंग के रेशम के वस्त्र पहनना बहुत पसन्द करते हैं। निर्धन से निर्धन मनुष्य के पास एक लुंगी अवश्य पाई जाती है। मनुष्य या स्त्रियाँ दोनों लुंगी पहनते हैं, केवल भिन्नता यह होती है कि मनुष्य साथ में 'सिंगिल-ब्रेस्ट' तथा स्त्रियाँ 'डबल-ब्रेस्ट' की जाकट पहनती हैं। मनुष्य अब सिर पर कुछ नहीं पहनते, स्त्रियाँ पहले जो लम्बे लम्बे बालों में नारियल का तेल डाल कर जूड़ा बाँधती थीं, अब केवल एक आसानी से खुल जाने वाली गाँठ दे लेती हैं। युवा स्त्रियाँ बालों को सुन्दर फूलों द्वारा सुसज्जित करती हैं।

धर्म एवं शिक्षा—(Religion and Education)

बर्मा के निवासी बौद्धधर्म को मानते हैं। इनके जीवन में धर्म एक विशेष स्थान रखता है। कुछ क्षेत्रों में यह भी प्रथा पाई जाती है कि जब बालक बीस वर्ष की आयु से कम का होता है, तो उसे अच्छे से अच्छे वस्त्र पहना कर एक जुलूस में निकालते हैं, बाद में उसके यह कपड़े उतार कर गेरुये कपड़े पहना कर साधु-सन्तों के साथ रहने को कहा जाता है। वह अपनी इच्छानुसार उनके साथ रहकर धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करता है। कुछ तो शीघ्र ही वापस आकर आधुनिक जीवन प्रारम्भ कर देते हैं। परन्तु कुछ लोग आजन्म वहीं रहते हैं। इनके यहां प्रत्येक गाँव में एक धार्मिक-उपदेशक (साधु) पीले वस्त्र पहने हुये रहता है, वास्तव में यही एक उच्च माननीय पुरुष (Hpoongyi) होता है, जिसको सब लोग मानते हैं। हर एक गाँव में एक पेगोडा भी होता है, यह वह स्थान होता है जहां प्रत्येक निवासी जाकर शान्तिपूर्वक बौद्धधर्म के उपदेशों को स्मरण करता है। ये पेगोडे श्वेत रंग के पुते हुये बड़े सुन्दर दृष्टिगोचर होते हैं।

प्रारम्भ से ही यहां के बालक व बालिकाओं को बौद्धधर्म सम्बन्धी शिक्षा दी जाती है। प्रत्येक गाँव में पाठशालायें व स्कूल पाये जाते हैं, यही कारण है कि यहां अपढ़ लोगों की संख्या बहुत कम है। ६ से लेकर ११ वर्ष तक के बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा निःशुल्क दी जाती है। स्त्रियों की शिक्षा की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता। यहां के इतिहास की ओर एक दृष्टि डालने से ऐसा प्रतीत होता है कि यहां सर्व प्रथम सरकार ने वर्नाक्यूलर शिक्षा में विकास करने की योजना बनाई। बहुत से भिक्षुकों (Monks) से इस ओर कार्य करने को कहा गया और उन्हें शिक्षा सम्बन्धी सभी सुविधायें प्रदान की गईं। धीरे धीरे इस कार्य में सफलता मिलती गई। बहुत से अध्यापक रक्खे गये, जिन्हें सरकार की ओर से वेतन मिलता था। अंग्रेजों के समय में अंग्रेजी भाषा का बहुत प्रचार हुआ। ये लोग अपनी राष्ट्रीय भाषा भूल गये। इस सरकार ने बहुत सा रुपया सेकेण्ड्री स्कीम पर व्यय किया, बड़े बड़े कालेज विश्वविद्यालय खोले परन्तु बाद में दशा बहुत गिर गई। बर्मा के नगरों में शिक्षा की ओर अधिक ध्यान दिया जाने लगा, गांव वैसे के वैसे रहे।

कुछ भी हो, इतनी कठिनाइयां होने पर भी बर्मा ब्रिटिश भारत का सबसे शिक्षित प्रान्त समझा जाता था। रंगून में प्रत्येक १००० मनुष्य में ८२० से अधिक मनुष्य शिक्षित पाये जाते हैं। अब बर्मा एक स्वतन्त्र देश है, यहाँ की राष्ट्रीय सरकार इस बात की ओर विशेष ध्यान दे रही है कि यहां की राष्ट्रीय भाषा बर्मीज़ हो। अब बर्मा में अंग्रेजी भाषा का शनः शनैः उसी प्रकार प्रयोग कम हो रहा है जैसे कि भारत में।

प्राकृतिक विभाग (Natural Regions)

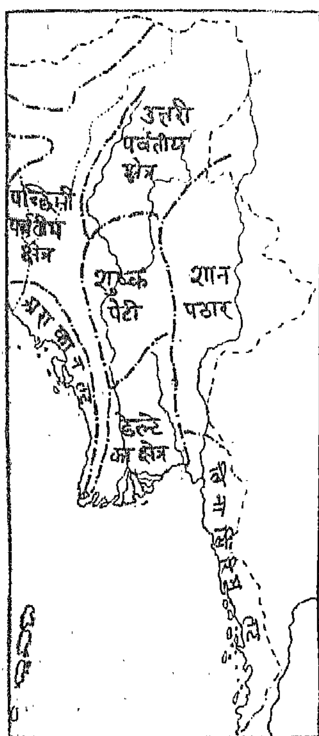
तेनासरिम—(Tenasserim)

यह दक्षिणी बर्मा का एक तटीय खंड है। इसका बहुत सा क्षेत्र पर्वतीय है, ये प्राचीन श्रेणियां प्राचीन पर्तदार चट्टानों तथा ग्रेनाइट पत्थर की बनी हुई हैं। तटीय भाग एक सँकरे मैदान के रूप में है। पर्वतीय क्षेत्रों से राँगा व टंगस्टन नामक धातुयें प्राप्त होती हैं। यहाँ की जलवायु गर्म व नर्म है यहाँ वर्षा अधिक होती है। चावल यहाँ की मुख्य उपज है परन्तु रबड़ के बगीचे भी यहाँ पाये जाते हैं। बनों से उत्तम लकड़ी भी प्राप्त की जाती है। समुद्र तट पर मछलियाँ भी पकड़ी जाती हैं, तथा यहाँ से मोती भी प्राप्त किये जाते हैं। यहाँ मरगुई द्वीप समूह मोती व मछली पकड़ने का मुख्य क्षेत्र है। यहाँ के आदि निवासी (Sea Gypsies) अधिकतर यही धन्धा करते हैं। इन द्वीपों पर मछली पकड़ने वाले कई गाँव व कई छोटे छोटे नगर पाये जाते हैं। तेनासरिम के उत्तर में मौलमीन एक

प्रसिद्ध नगर व बन्दरगाह है। मध्य का बन्दरगाह टेवैय तथा दक्षिण का मरगुई है। इन बन्दरगाहों से रबड़, लकड़ी, चावल, मोती, राँगा व टंगस्टन आदि वस्तुयें विदेशों को भेजी जाती हैं।

शान पठार—(Shan Plateau) :—

वास्तव में शान पठार चीन के यूनान के पठार का ही एक खण्ड है। इसका धरातल समतल एवं दूर तक फैला हुआ है। जो क्षेत्र बर्मा में आता है वह ३००० से ४००० फीट तक ऊँचा है। इरावदी की घाटी से इसकी ऊंचाई प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होने लगती है। यह भाग भी प्राचीन पर्तदार तथा ग्रेनाइट चट्टानों का बना हुआ है, इस भाग में कई स्थानों पर परिवर्तित चट्टानों के अतिरिक्त प्राचीन झीलों के क्षेत्र भी मिलते हैं। चाँदी व सुरमे की खानें बौवडीन के स्थान पर पाई जाती हैं। इस भाग की जलवायु सम है। यहाँ ग्रीष्म ऋतु अधिक गर्म तथा शीत ऋतु अधिक ठण्डी होती है, वर्षा लगभग ६५ इञ्च होती है। चावल, गेहूं, मक्का आदि यहां की मुख्य उपज हैं। यह एक बहुत कम घना बसा हुआ क्षेत्र है। यहां पर अधिकतर पहाड़ी असभ्य जातियां, जिनकी बस्तियां दूर दूर तक फैली हुई हैं, पाई जाती हैं। यहां कचिन, पालंग तथा बाज़ मुख्य जातियां हैं। शान पठार के दक्षिण में करैनी देश में अधिकतर करेन जाति के लोग पाये जाते हैं। सालवीन नदी के पूर्व में बहुत से खण्ड ऐसे हैं जिनमें कोई भी राज्य प्रबन्ध नहीं है। कुछ वर्ष पहिले शान पठार पर एक पहियेदार गाड़ी तक भी दृष्टिगोचर नहीं होती थी, परन्तु आजकल यहां पर दो पक्की सड़कों के अतिरिक्त दो रेलवे लाइनें भी बन गई हैं। यहां के प्रसिद्ध नगर बौवडीन लोशियो तथा कुलौंग आदि हैं। लोशियो एक पक्की सड़क द्वारा चीन में यूनान की राजधानी कुनमिंग से मिला हुआ है। यहां से मांडले तक एक मीटर-गेज रेलवे लाइन भी है।



बर्मा—प्राकृतिक भाग

उत्तरीय पर्वतीय प्रदेश - (Northern Hilly Region)

यह बर्मा के उत्तर में वह पर्वतीय क्षेत्र है, जहां से इरावदी व चिन्दविन नदियां निकलती हैं। इस पूरे क्षेत्र का ढाल दक्षिण की ओर है। ये पर्वत श्रेणियां तरशियरी युग की पर्वत श्रेणियों से सम्बन्धित है, इनमें कहीं कहीं पर बहुमूल्य खनिज-पदार्थ भी पाये जाते हैं। उदाहरणार्थ जेड तथा अम्बर। इस क्षेत्र की जलवायु बहुत ठण्डी है। यहां शीत ऋतु में कोहरा पड़ता है। ग्रीष्म ऋतु बहुत गर्म नहीं होती, वर्षा कहीं कहीं पर बहुत कम होती है। पर्वतीय ढालों पर वन अधिक पाये जाते हैं, इनमें कचिन तथा शान जाति के लोग निवास करते हैं; परन्तु इसका कोई भी शासन प्रबन्ध नहीं पाया जाता। यहां चिन्दविन नदी कुछ दूर तक नावें चलाने योग्य है, इसीलिये इस पर व्यापार भी होता है। मीटरगेज़ रेलवे लाइन मितकियाना तक चली आई है। यह स्थान मुख्य उत्तरी क्षेत्र से लगभग २५०० मील दूर पड़ता है। यहीं से यहां के खनिज पदार्थ बाहर भेजे जाते हैं।

मध्य शुष्क क्षेत्र (Central Dry Region)

यह क्षेत्र इरावदी और चिन्दविन नदी की जमा की हुई मिट्टी का बना हुआ है इसका ढाल दक्षिण की ओर है। मानसून के प्रभाव से दूर होने के कारण इस क्षेत्र में वर्षा कम हो पाती है, यही कारण है कि यहां पर नहरों द्वारा सिंचाई होती है। गेहूं, चावल तथा मक्का यहां की मुख्य उपजें हैं। वास्तव में इस क्षेत्र का महत्व खनिज तेल (Petroleum) के कारण अधिक है। इरावदी नदी दूर तक नाव्य है। यहां की उपजें आसानी से दक्षिण की ओर नदियों द्वारा भेज दी जाती हैं। सड़कें व रेलें भी इस क्षेत्र में पाई जाती हैं। वास्तव में यहीं पर बर्मा की राजधानी होनी चाहिये। कदाचित् प्राचीन समय में माँडले एवं आवा थीं भी परन्तु शुष्क जलवायु तथा अन्य कई कारणों से यहां से राजधानी हटा कर रंगून कर दी गई है।

डेल्टा प्रदेश (Delta Region) :—

यह भाग एक बहुत उपजाऊ तथा घना बसा हुआ क्षेत्र है। यहाँ नदियों द्वारा लाई हुई मिट्टी दूर तक पाई जाती है। इरावदी नदी यहाँ कई शाखाओं में बँट गई है। इस क्षेत्र को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं। पहला, इरावदी की घाटी व डेल्टा—जो चावल की उपज के लिये बहुत महत्वपूर्ण है, इसके अतिरिक्त यहाँ यातायात के साधन अच्छे होने के कारण सैकड़ों गाँव व छोटे छोटे नगर पाये जाते हैं। दूसरा, सितांग नदी की घाटी व डेल्टा, यह क्षेत्र भी चावल के लिये बहुत प्रसिद्ध है। सितांग नदी भी नावें चलाने योग्य है। स्टीमर तो टौंगू तक बड़ी आसानी से आ जाते हैं। नदी के दोनों किनारों पर

दूर दूर तक गाँव पाये जाते हैं। तीसरा, पीगू-योमा, यह एक वनों से ढका हुआ पर्वतीय भाग है। इसके उत्तरी ढालों पर सागौन के सघन वन मिलते हैं। प्रति वर्ष यहाँ से बहुत सी लकड़ी रंगून तक पहुँचायी जाती है। रंगून से यह लकड़ी विदेशों को निर्यात की जाती है।

पश्चिमी पर्वतीय क्षेत्र (Western Hilly Region) :—

वास्तव में ये हिमालय पर्वत की उन श्रेणियों में से हैं जो बर्मा में अराकान योमा के नाम से प्रसिद्ध हैं। यहाँ पर हमको मुड़ी हुई पर्तदार चट्टानें मिलती हैं। ये पर्त बहुत घने वनों से ढके हुये हैं। पूर्व की ओर सागौन के वृक्ष बहुत मिलते हैं। इन क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व बहुत कम है। यहाँ अधिकतर पर्वतीय जातियाँ, जिनमें चिन मुख्य हैं, पाई जाती हैं। ये लोग दूर दूर तक वितरित बस्तियों में रहते हैं। यहाँ का मुख्य धन्धा कृषि है, मक्का, ज्वार, बाजरा तथा चावल यहाँ की विशेष उपज है। यहाँ का जीवन एक कठोर जीवन है, लोगों ने वनों को साफ़ करके अपने निवास स्थान बनाये हैं। इस प्रदेश में यातायात के साधनों की बहुत कमी है। इन पर्वतश्रेणियों में कोई भी घाटी नहीं है। तराई के भाग स्वास्थ्य की दृष्टि से बड़े हानिकारक हैं।

अराकान का तटीय प्रदेश (Arakan Coastal Region) :—

यह भाग बंगाल की खाड़ी की उत्तरी-पूर्वी सीमा पर स्थित है। यहाँ अराकान पर्वत की श्रेणियाँ दक्षिण की ओर तटीय भाग तक चली गई हैं। तटीय भागों में मैदान, पथरीली भूमि होने के कारण इधर उधर वितरित है। ऐसे वितरित क्षेत्रों में ही जनसंख्या पाई जाती है। अकयाब बन्दरगाह के पृष्ठ-प्रदेश के अतिरिक्त बहुत से द्वीप जिन्हें रामरी द्वीपों के नाम से पुकारते हैं, कृषि के लिये प्रसिद्ध हैं। यहाँ वर्षा बहुत अधिक होती है, चावल तथा नारियल बहुत बड़ी मात्रा में उत्पन्न होता है। किनारे पर वन भी बहुत मिलते हैं इनमें अधिकतर बाँस के वृक्ष पाये जाते हैं, यहाँ के निवासी अराकानीज़ कहलाते हैं, इनका मुख्य धन्धा कृषि करना तथा मछली पकड़ना है। अकयाब यहाँ का मुख्य बन्दरगाह तथा व्यापारिक नगर है, यहीं से यहाँ का विदेशी व्यापार भी होता है।

मलाया

वास्तव में मलाया प्रायद्वीप एशिया महाद्वीप की दक्षिण-पूर्वीय नोक है। मलाया इस प्रायद्वीप का वह भाग है, जो १°२०′ उत्तरी अक्षांश से ६°४०′ उत्तरी अक्षांशतक तथा १००° पू० देशान्तर से लगभग १०४° पूर्वी देशान्तर तक विस्तृत है। इसकी आकृति एक बोतल की भांति है। उत्तर में करा भूखण्ड इतना तंग हो गया है कि उसकी चौड़ाई पश्चिम से पूर्व तक केवल साठ मील है, इसके उत्तर में थाइलैंड व बर्मा के राज्य आरम्भ हो जाते हैं। इस प्रायद्वीप की औसत चौड़ाई लगभग दो सौ मील है। इसका वर्तमान क्षेत्रफल ५०६६० वर्ग मील है, परन्तु कुछ लेखकों ने इसका सही क्षेत्रफल ५०६५० वर्ग मील तथा कुछने ५०८८० वर्ग मील बतलाया है। यहाँ की राजधानी क्वाला लम्पुर है।

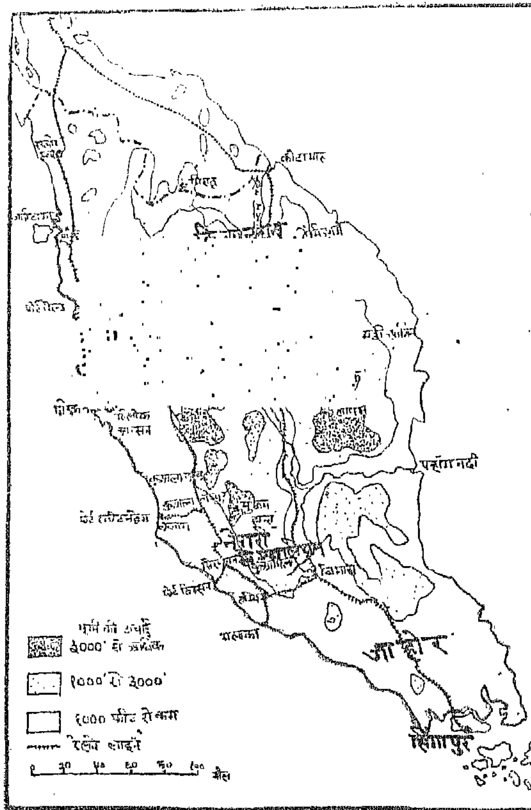
भौतिक रूप (Physical Aspect)

ढाँचा (Structure) :—

ढाँचे के दृष्टिकोण से मलाया दानेदार चट्टानों का बना हुआ है। ये चट्टानें अधिकतर ग्रेनाइट हैं। यहाँ की मुख्य पर्वत श्रेणी जिनमें कि अधिकतर ग्रेनाइट पत्थर मिलता है मेसोज़ोयेक युग की हैं। इनके पूर्व में बहुत ही ऊँची नीची चट्टानों के पर्त मिलते हैं। यहाँ अधिकतर क्वार्टज़ाइट तथा शेल दृष्टिगोचर होता है। और भी अधिक पूर्व में पुनः ग्रेनाइट चट्टानें मिलती हैं। प्रायद्वीप के पश्चिम में बहुत ही मोटी मोटी चूने की चट्टानो के पर्त पाये जाते हैं। जिन स्थानों पर ये कई फीट ऊँची हैं वहाँ कार्स्ट (Karst) क्षेत्र मिलते हैं। इनमें बहुत ही सुन्दर सुन्दर गुफायें तथा अनेक प्राकृतिक रूप दृष्टिगोचर होते हैं। ऐसा अनुमान है कि नदियों की घाटियों में जो शेल दीखता है वह मध्य मेसोज़ोयेक युग का है। प्राचीन ज्वालामुखी पर्वतों के चिन्ह भी यहाँ पाये जाते हैं। इसका कारण यह है कि लावा तथा अग्नेय चट्टानें पहांग के स्थान पर दूर तक विस्तृत हैं। कुछ तरशियरी चट्टानें, जिनमें कि कोयले के पर्त उपस्थित हैं ऐसे बेसिन में पाई जाती हैं जोकि मेसोज़ोयेक युग में बने हैं। सिलांजर (Selangor, रन्ताऊ पंजांग (Rantau Panjange) इनमें से एक प्रमुख बेसिन है, इसका महत्व कोयले की खानों के कारण बहुत अधिक है।

धरातल (Relief) :—

मलाया का धरातल विभिन्न प्रकार का है। यहाँ पर पर्वतीय तथा



मलाया—बोई हुई भूमि

पठारी क्षेत्र अधिक हैं। मैदान व समतल भाग बहुत कम दृष्टिगोचर होते हैं। मुख्य पर्वतीय क्षेत्र पश्चिम की ओर हैं। ऊँची ऊँची पर्वत श्रेणियाँ उत्तर से दक्षिण की ओर फैली हुई हैं। इनमें से कुछ की चोटियाँ सात हज़ार फीट से भी अधिक ऊँची हैं। गुनोंग (मलाया की भाषा में पर्वतीय शिखा गुनोंग कहलाती है।) तहान (७१८६') यहाँ की सबसे उच्च चोटी है। इसके बाद केरबाऊ (७१६०') तथा हुलू तिमेन्गार (७०२०') फीट है। गुनोंग तहान वास्तव में पूर्वी व पश्चिमी श्रेणियों को मिलाती है। पूर्व में तापिस (५०००') तथा मंडी अंगिन (४८००') सबसे ऊंची शिखायें हैं। पश्चिम में कुछ और भी ऐसी शिखायें हैं, जो उल्लेखनीय हैं, पहली बातू पुतेह (७०००'), दूसरी बिनोम (६६००'), तीसरी दक्षिण की ओर नुआंग (४६००'), तथा चौथी हन्तू (४८००') हैं। मध्य पर्वत श्रेणी के पश्चिम में तटीय भाग काफी ऊंचा नीचा है, साथ ही यह उपजाऊ व उन्नतिशील भी है। इस पर्वत श्रेणी के पूर्व में बहुत ही विस्तृत वनों से ढके हुये पठारी क्षेत्र हैं। यह इतना उन्नतिशील नहीं है, जितना कि पश्चिमी भाग। पश्चिमी व पूर्वी भाग का अन्तर जलाशय द्वारा भी देखा जा सकता है। पश्चिम का समुद्र शान्त है, और किनारे को अधिक तोड़ता फोड़ता नहीं है। इसके विपरीत पूर्वी तट को, दक्षिणी चीनसागर, जो कि अधिकतर तूफ़ानों से भरपूर रहता है, बहुत अधिक प्रभावित करता है।

उत्तर की ओर मुख्य पर्वत श्रेणी को पीरक नदी की घाटी काटती है। पश्चिमी तट पर और कोई ऐसी विशेष नदी नहीं है, जिसका कि वर्णन किया जाय। पूर्व की ओर गिरने वाली नदियों में किलान्टर उत्तर की ओर है, यह कोटा भरू के निकट समुद्र में गिरती है। किलान्टन के दक्षिण में पहाँग नदी है, यह बहुत लम्बी है तथा इसकी तीन सहायक नदियाँ हैं। पहली उत्तर में ताहान से, दूसरी केरबाऊ से तथा तीसरी दक्षिण में कुआलापिलाह से बहती हैं।

जलवायु (Climate)

मलाया की जलवायु भू-मध्य रेखीय (Equatorial) है। मैदानी भाग में औसत तापक्रम अधिक से अधिक ९०° फ० और कम से कम ७०° फ० रहता है, परन्तु पर्वतीय क्षेत्र में साधारणतया तापक्रम कम व तापान्तर अधिक अंकित किया जाता है। मलाया की स्थिति भू-मध्य रेखा के उत्तर में है, इसलिये इस पर मानसून जलवायु का प्रभाव भी पड़ता है। वैसे तो वर्षा यहाँ पर साल भर बराबर होती है। जैसे ही जैसे हम उत्तर की ओर जाते हैं, हमको मानसून जलवायु की विशेषतायें दृष्टिगोचर होती हैं। उत्तर की ओर शुष्क ऋतु, जैसी कि मानसून प्रदेशों की होती है, पाई जाती है। इसी कारण कम नमी तथा अधिक नमी वाले क्षेत्र पृथक किये जा सकते हैं। यदि हम सिंगापुर तथा पिनाँग की वर्षा की तुलना करें तो यह अन्तर स्पष्ट हो जायेगा। सिंगापुर में वर्षा का औसत जनवरी में ८·५ इंच तथा जुलाई में ६·८ इंच है। पिनाँग में जनवरी का ३·६ इंच तथा जुलाई में ८·६ इंच है। मलाया के पश्चिमी तट पर 'वर्षा ऋतु' उसी समय आरम्भ होती है, जब कि भारतवर्ष में। यह मानसून ऋतु कहलाती है। पूर्वी तट पर लौटते हुये (Returning Monsoons) या उत्तरी-पूर्वी मानसून से नवम्बर से लेकर मार्च तक वर्षा होती है। इस ऋतु में बड़े-बड़े तूफान आते हैं। यहाँ की औसत वर्षा १०० इंच से अधिक हो जाती है। परन्तु कुछ ऐसे स्थानों पर जो अधिक खुले हुये हैं, २९० इंच तथा जो घाटियों में हैं वहाँ ६० इंच वर्षा होती है।

यदि साधारण तौर पर देखा जाय तो यहाँ की जलवायु गर्म और तर है। परन्तु वर्ष के अधिकाँश समय में यहाँ की जलवायु सम रहती है। केवल पूर्वी तट को छोड़कर अन्य किसी भी स्थान पर कोई विशेष अन्तर दृष्टिगोचर नहीं होता। बहुत अधिक नमी के कारण ओस व कोहरा नित्य प्रात: ६ बजे से लेकर ९ बजे तक पड़ता है। हवा भी बहुत अधिक ठंडी होती है। दोपहर में सूर्य की गर्मी के कारण आकाश स्वच्छ हो जाता है और तापक्रम बढ़ने लगता है। साथ ही साथ बादल भी उठने लगते हैं। तीसरे पहर घोर वर्षा बिजली की चमक तथा गर्जन के साथ आरम्भ हो जाती है। ये सब बातें दक्षिण की ओर प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होती हैं। यहाँ की जलवायु के विषय में लोगों का कहना है, कि यह इन लोगों के

लिये, जो स्वस्थ हैं, स्वास्थ्यप्रद है, तथा उनके लिये जो कमजोर हैं, हानिकारक है।

मानव-रूप (Human Aspect)

जन संख्या वितरण (Population Distribution)

मलाया में विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं यह एक घना बसा हुआ देश है। यहाँ की जन संख्या आजकल ६,०५८,०००* है। यहाँ के क्षेत्रफल को देखते हुये यह विदित होता है कि यहाँ का औसत घनत्व ६५ व्यक्ति प्रति वर्गमील से कुछ अधिक है। परन्तु कुछ क्षेत्र ऐसे भी हैं, जहाँ जनसंख्या का घनत्व बहुत ही कम है, और केवल १५ या २० व्यक्ति प्रति वर्गमील भूमि पर रहते हैं। इसमें सन्देह नहीं, कि यहाँ कुछ ऐसे भी घने बसे क्षेत्र हैं, जहाँ एक हजार से अधिक व्यक्ति प्रति वर्गमील क्षेत्र में रहते हैं। प्राचीनकाल से यहाँ विदेशी लोग आते रहे हैं, कुछ लोग व्यापार के हेतु यहाँ बस चुके हैं। डच व पुर्तगालियों ने अपनी बस्तियाँ कई स्थानों पर स्थापित कर दी थीं। निकटवर्तीय देशों से भी लोग आते ही रहे हैं। इन सबों में चीनी, जापानी बर्मा के निवासी, भारत के तामील, जावा, फिलीपाइन, स्याम, बोर्नियो तथा हिन्द चीन के लोग सम्मिलित हैं।

यहाँ मलेशियनों (आदि निवासी) की जनसंख्या २,८६३,६५०, चीनियों की २,२१६,१०५, भारतीय पाकिस्तानियों की ६६१,४३१ तथा अन्य जातियों की ८०,३६२ है। (सन् १९५४ में लगाये हुए अनुमान के अनुसार) चीनी व मैलेज़ की सबसे अधिक संख्या है, इनमें से प्रत्येक सम्पूर्ण जनसंख्या का ४० प्रतिशत भाग रखता है। भारतवर्ष के लोग केवल १५ प्रतिशत ही हैं। चीनी और भारतवर्ष के निवासी अधिकतर रबड़ व राँगे की खानों में काम करते हैं। मैले लोग चावल की कृषि अपने प्राचीन ढंगों के अनुसार कर रहे हैं। परन्तु कुछ लोग अब रबड़ के बगीचों में भी काम करने लगे हैं। यहाँ के कुछ बड़े नगरों में अन्य विदेशी जातियों के योग से भी अधिक चीनी लोग रहते हैं। यहाँ के प्रमुख नगरों में पश्चिम की ओर कुआला लम्पुर, क्लाँग, पोर्ट स्वेदनहम, कुआला सिलाँगार, पोर्ट डिक्सन, मलाका, इत्यादि हैं तथा पूर्व की ओर कोटा भारू, तेमिआम, पकिन है।

सिंगापुर का क्षेत्रफल २२० वर्गमील है और यहाँ की जनसंख्या ९४१००० है।

आर्थिक रूप (Economic Aspect)

प्राकृतिक वनस्पति (Natural Vegetation)

यह देश भूमध्य रेखीय, सघन सदाबहार वनों से ढका हुआ है। वनीय

* According to the 1955 estimate. Vide Fact Sheets on the U. K. Dependencies British information Services.

क्षेत्र यहाँ पर दूर दूर तक विस्तृत हैं, पर्वतों पर यह पाँच हजार फीट की ऊँचाई तक पाये जाते हैं। ये वन काफी ऊँचे हैं। कहीं कहीं पर इनको साफ करके महत्वपूर्ण पौधे भी लगाये गये हैं। तटीय भागों में पश्चिम की ओर मैनग्रोव जाति के वृक्ष अधिक पाये जाते हैं। ये वृक्ष मिट्टी से नमकीन खारी पानी को बराबर प्राप्त करते रहते हैं उन दलदली भागों में जहाँ मैनग्रोव होते हैं, जड़ों से छोटी छोटी शाखायें सीधी इसलिये निकलती हैं जिससे कि जड़ें भी अपनी गन्दगी को निकाल सकें। लेकिन जब दिन में दो बार ज्वार भाटे आते हैं तब ये अपना कार्य नहीं कर पाते, क्योंकि दलदल में जल भर जाता है। मैनग्रोव वृक्ष यहाँ दो प्रकार के होते हैं। पूर्वीय तट पर रेतीले भाग में केसोरिना नाम के वृक्ष मिलते हैं। पाँच हजार फिट से ऊँचे भागों में उजाड़ पर्वत श्रेणियाँ दृष्टिगोचर होती हैं।

मलाया के वन अन्य भू-मध्य रेखीय वनों के समान अधिक घने नहीं हैं जिससे सूर्य की किरणें धरातल तक न पहुँच सकें। यहाँ के वन बड़े सुन्दर हैं। ये घने अवश्य हैं, परन्तु इनके वृक्षों पर इतनी घनी पत्तियों की छतरी होने पर भी प्रायः प्रकाश धरातल तक पहुँच जाता है। यहां कई प्रकार के वृक्ष होते हैं, और एक दूसरे के काफी निकट उगते हैं, ये लम्बे तथा सीधे होते हैं। इनमें अधिक शाखायें नहीं होती। लेकिन धरातल पर इतनी काँटेदार झाड़ियाँ तथा वनस्पति होती है, कि उनमें प्रवेश करना असम्भव हो जाता है। डिपटेरोकारपेशिया (Dipterocarpacea) यहाँ के वनों का सबसे लम्बा वृक्ष होता है, इसकी ऊँचाई डेढ़ सौ फीट से भी अधिक होती है। लगभग इतनी ही ऊँचाई के और प्रकार के भी वृक्ष होते हैं। इन वनों में ऐसे भी वृक्ष पाये जाते हैं, जो छाया में उगते हैं इनकी ऊँचाई धरातल से २० या २५ फीट तक रहती है। इनमें से बाँस, बेंत, फर्न, मॉस इत्यादि है। वनों में वृक्षों को लपेटे हुई अनेक बेलें (Climbers) पाई जाती हैं। इन वनों का वातावरण शान्त व नम रहता है, तथा उनमें अनेक कीटाणु पाये जाते हैं। इन वनों में जीव-जन्तु भी अधिकतर वृक्षों पर रहते हैं।

यहाँ की प्राकृतिक वनस्पति में अधिकतर किस्में ज़हरीली हैं, ऐसी बहुत कम वनस्पति मिलती है, जो भोजन के हेतु जड़ें या फल प्रदान करती हों। अधिकतर सख्त कठोर लकड़ी वाले ऐसे वृक्ष मिलते हैं, जिनको काटना बड़ा कठिन होता है। यदि वनों को साफ भी कर दिया जाय तो फिर से शीघ्र ही घास उग आती है। कुछ स्थानों को साफ करके कृषि भी की गई है, लेकिन हर समय वर्षा के कारण मिट्टी बह जाने तथा पौधों के मर जाने का भय रहता है। इन वनों में सिमाँग जाति के लोग रहते हैं। मलाया के सभ्य लोग पश्चिम में अधिकतर नदियों की उपजाऊ घाटियों में बसे हैं, ये यहाँ पर कृषि करते हैं तथा कुछ रबड़ के बगीचों में भी काम करते हैं।

कृषि (Agriculture):—

मलाया एक पहाड़ी देश है, परन्तु फिर भी यहाँ कृषि में यथेष्ट उन्नति हुई है। यहाँ सम्पूर्ण क्षेत्रफल के लगभग पन्द्रह प्रतिशत भूमि पर खेती की जाती है। इस देश में कृषि का बड़ा महत्व है। यहाँ की उपजों में तीन प्रमुख हैं—रबड़, चावल तथा नारियल। ये तीनों वस्तुयें यहाँ की ९२ प्रतिशत भूमि पर बोई जाती हैं। अन्य मुख्य उपजों में अनन्नास, टपाका, ताड़, साबा, कहवा, मिर्च, तम्बाकू, केला, गरम मसाला तथा रेशेदार पदार्थ हैं। यहाँ पर मिश्रित कृषि भी प्रचलित है, यह अधिकतर चीनी तथा मलाया के आदि निवासियों द्वारा की जाती है। चीनी लोग तरकारियाँ भी बोते हैं। मलाया के आदि निवासियों में संगठन शक्ति नहीं है, और न वे चीनियों की अपेक्षा अधिक मेहनती हैं। यह लोग केवल धान ही उत्पन्न करते हैं, लेकिन अब कुछ फल भी पैदा करने लगे हैं। चीनी लोग यहाँ



मलाया—बोई हुई भूमि

भी अपने ढङ्ग से खेती करते हैं और यहाँ उस ढङ्ग का प्रयोग भी कई क्षेत्रों में होने लगा है। मिट्टी के कटाव की समस्या यहाँ बड़ी जटिल है। समतल भूमि जो कि यहाँ बहुत कम पाई जाती है, इससे युक्त है, परन्तु पर्वतीय क्षेत्रों में इससे बड़ी हानि होती है। इसी समस्या के कारण यहाँ पर पश्चिमी कृषि करने के ढङ्ग प्रचलित नहीं हो सके। भूमि की उर्वरा शक्ति को रोकने के हेतु सब से उत्तम ढङ्ग 'लोगुमिनस' फसल का बोना है, इससे मिट्टी में खाद (नाइट्रेट) भी मिलती रहेगी। इसके अलावा और भी कई साधनों से मिट्टी का कटाव यहाँ बचाया जाता है।

(ग) रबड़ :—रबड़ यहाँ की प्रमुख उपज है, जितनी रबड़ यहाँ उत्पन्न होती है, उतनी संसार के किसी अन्य देश में नहीं होती। लगाई हुई रबड़ (Rubber Plantation) का श्रीगणेश यहाँ सन १८७८ से हुआ है। (अमेजन बेसिन के बाहर पारा रबड़ विखम (Wickham) ने आरम्भ की। ब्राजील से वह सन १८७६ में ७०००० बीज लन्दन के निकट स्थित (Kew) के बोटानिकल गार्डन में लगाने के हेतु ले गया। इनमें से कुल २८०० पौधे यहाँ सफलता पूर्वक उगे।) आरम्भ में लोगों ने इस ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया, क्योंकि भूमध्य रेखीय अफ्रीका की रबड़ के दाम उन दिनों बहुत गिरे हुये थे। परन्तु सन १८९५ से यहाँ लगाई हुई रबड़ की प्रगति दिन प्रतिदिन होने लगी। केवल दस वर्ष बाद ही इसकी उपज के क्षेत्र ४ फेडरेट मलाया राज्य में फैल गये, और उत्पादन क्षेत्र लगभग ४०,००० एकड़ हो गया। अगले पाँच वर्ष में २५०००० एकड़ तथा १९१५ तक यह उसके दुगने क्षेत्र में उत्पन्न की जाने लगी। उपज का क्षेत्र बराबर बढ़ता ही जा रहा था। यहाँ तक कि १९२५ में २,२५०००० एकड़ हो गया। ज्यों ज्यों क्षेत्रफल में वृद्धि हुई त्यों त्यों निर्यात की मात्रा भी बढ़ती रही। यदि इन आँकड़ों की ओर ध्यान दिया जाय, तो सब से अधिक निर्यात १९२९ में ५७७०००० टन का हुआ। इसके पांच वर्ष पहले १८३००० टन तथा पांच वर्ष बाद ४६५००० टन हुआ।

द्वितीय महायुद्ध के पूर्व मलाया संसार की ५४ प्रतिशत रबड़ उत्पन्न करता था। उत्पादक क्षेत्रों की वृद्धि वास्तव में मलाया के पश्चिमी भाग में ही हुई है, क्योंकि यहाँ पर भौगोलिक दशाओं के उपयुक्त होने के अतिरिक्त यातायात की सुविधायें भी पूर्णरूप से पाई जाती हैं। किलान्टन, ट्रेंगानू, पहांग तथा जोहोर में यद्यपि यातायात की सुविधायें बहुत नहीं हैं, परन्तु फिर भी परिस्थितियाँ अति अनुकूल होने के कारण उत्पादन में सिलान्जर तथा नेगरीसेम्बिलयन के बराबर ही रहती हैं। इस देश की बोई हुई भूमि के दो-तिहाई भाग पर रबड़ के नीचे हैं। इसमें से ३।५ भाग ऐसा है जिसमें प्रत्येक रियासत (Estate) १०० एकड़ की

है। इसमें से २ प्रतिशत योरोपियन की अध्यक्षता में, तथा शेष, एशिया के ही लोगों की देखरेख में हैं।

जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है, लगाई हुई रबड़ का उत्पादन १६०० में केवल चार टन था। परन्तु उपज बराबर बढ़ रही थी, और उस समय माँग व पूर्ति का कोई भी सम्बन्ध नहीं था। अक्टूबर १६२० तक यही दशा रही, और रबड़ के दाम बहुत गिर गये। बाद में दशा और भी शोचनीय होती गई। उस समय मलाया व लंका विश्व का तीन-चौथाई रबड़ उत्पन्न कर रहे थे, इसलिये तुरन्त उत्पादन को नियन्त्रण में रखने के हेतु एक योजना नवम्बर १६२२ में निकाली गई। इसे 'स्टीवेंसन योजना' (Stevenson Restriction Scheme) के नाम से पुकारते हैं। इसके अन्तर्गत उत्पादकों को उपज की मात्रा कम करके उस स्तर पर लाने पर बाध्य किया गया, जो माँग के अनुरूप हो और जिससे रबड़ का उचित मूल्य स्थिर हो सके। इस योजना का सब से बड़ा दोष यह था कि यह केवल अँग्रेजों के बगीचों पर ही लागू थी। अन्य देशों के लोगों को इसके अन्तर्गत अपनी उपज बढ़ाने का अवसर मिल गया। परिणामत: सन् १६२८ में इस योजना का अचानक अन्त कर दिया गया।

मलाया आजकल सब से उत्तम श्रेणी की पारा रबड़ उत्पन्न कर रहा है। इसके लिये यहाँ की जलवायु बहुत ही उत्तम है। ऊँचा तापक्रम तथा अधिक वर्षा यहाँ वर्ष भर रहती है। वर्षा प्राय: दोपहर बाद होती है, अतएव दोपहर से पहले ही रबड़ का दूध एकत्रित कर लिया जाता है। इसके अलावा भूमि उपजाऊ है, और बगीचे अधिकतर योरपवासियों के हाथों में है। तामिल, चीनी तथा यहां के आदि निवासी इनमें काम करते हैं। यातायात के साधनों के अतिरिक्त एक बड़ी सुविधा यहाँ पर चीनी मिट्टी की है जो रबड़ का रस जमा करने वाले प्यालों को बनाने के लिये प्रचुर मात्रा में मिल जाती है।

यहाँ पर रबड़ के बगीचों के विस्तार के हेतु लोगों ने घने बनों को साफ़ कर दिया है। ये लोग अब भी उत्तम से उत्तम रबड़ के पौधे लगाने की चेष्टा करते हैं। आदर्श जलवायु होने के कारण यहाँ वृक्षों से रबड़ का रस (Latex) साल भर बराबर निकलता है। यह रस वृक्ष की छाल में होता है। छाल को काटने के कई ढंग अपनाये गये हैं, परन्तु साधारणतया तने के एक तरफ़ आधी गोलाई में छाल को एक पतली सी नाली के रूप में काट देते हैं। ठीक इसी प्रकार से प्रति दिन भिन्न भिन्न स्थानों पर नालियाँ की जाती हैं। रस इन्हीं में से टपक टपक कर चमकदार प्यालों में गिरता रहता है। एक या दो घण्टे बाद इन प्यालों का दूध बड़े बड़े बर्तनों में एकत्रित कर लिया जाता है। गर्म करने के पश्चात् इनकी चादरें (Cripe) बाहर भेज दी जाती हैं।

यहाँ रबड़ के बग़ीचों की देख रेख वैज्ञानिक ढंग से की जाती है। एक चीनी या दक्षिणी भारत का तामिल ३००, ४०० वृक्षों की देख रेख करता है। ये लोग नित्य सूर्योदय के पहले उठते हैं, और रबड़ के बगीचों में जाकर वृक्षों की छाल छील कर उनके नीचे प्याले रखते हैं। इसके बाद वह बगीचों की सफाई तथा वृक्षों की देख रेख करते हैं। तीसरे पहर की वर्षा के पहले ही उन प्यालों के रस को एकत्र कर बर्तनों में गर्म करने के लिये पहुँचा देते हैं। यह काम यहाँ के मजदूर बड़ी कुशलता तथा शीघ्रता के साथ करते हैं।

गत वर्षों में द्वितीय महायुद्ध के कारण यहाँ रबड़ के बगीचों को काफी हानि पहुँची। युद्ध में घोर हानि होने पर भी मलाया प्रायद्वीप इस समय संसार में रबड़ की उत्पत्ति में प्रमुख स्थान रखता है। आजकल यहाँ ३३ लाख एकड़ से भी अधिक भूमि पर रबड़ के बग़ीचे लगाये गये हैं। यहां पर इस व्यवसाय में लगभग ५० लाख व्यक्ति लगे हुए हैं। सन् १९४९ में यहाँ का उत्पादन ७ लाख टन तथा १९५३ में ५७,२७६२ टन था। सन १९५३ में ही स्टेट का क्षेत्रफल २,०२६,७०६ एकड़ तथा निजी क्षेत्र १,६६७,८३४ एकड़ था।

चावल :—मलाया के लोगों का मुख्य भोजन चावल है। यहाँ यह समस्त बोई हुई भूमि के लगभग १५ प्रतिशत भाग में उत्पन्न किया जाता है। गत वर्षों में यहाँ लगभग ७२५००० एकड़ भूमि पर धान बोया गया। सन १९५२-५३ में चावल क्षेत्र ८,३४,०१० एकड़ और उत्पादन ४४१००० टन था। अगले ही वर्ष १९५३-५४ में क्षेत्र फल ८३८,४०० एकड़ तथा उत्पादन ४०४,७३० टन हुआ। उपज के क्षेत्र सब भागों में समान नहीं हैं। यह किडाह, क्लाएटन तथा परलिस में अधिक उत्पन्न किया जाता है, क्योंकि यहाँ पर मलाया के आदि निवासी प्राचीन काल से चावल उत्पन्न करते आ रहे हैं। यहाँ पर ९० प्रतिशत धान 'नमी' पहुँचाने वाले साधन (Wet Method) से उत्पन्न किया जाता है। यहाँ प्रति एकड़ उपज धान की बहुत कम है, परन्तु जिन भागों में वह वर्षा पर्याप्त मात्रा में हो जाती है, वहाँ सन्तोषजनक मात्रा है। सरकार ने इस ओर विशेष ध्यान दिया है अब सिंचाई की यहाँ पूर्ण व्यवस्था कर दी गई है। मलाया के आदि निवासियों का ही धान की कृषि पर अधिक अधिकार है। भूमि का यहाँ अभाव नहीं है, परन्तु वनों को साफ करना तथा दलदली भूमि को अपने लिये उपयोगी बनाना वास्तव में बड़ा कठिन कार्य है। चावल की खेती के लिये जल की मात्रा सदैव समान रहनी चाहिये। वर्षा से जल वितरण समान नहीं मिलता इसीलिये कुछ क्षेत्रों में जल को एकत्रित करके पानी बराबर एकसा दिया जाता है।

नारियल :—मलाया में नारियल बहुत अधिक होता है। प्रमुख उपजों में यह तीसरा स्थान प्राप्त करता है। इनकी उपज के क्षेत्र पश्चिमी तट की ओर स्थित हैं। नारियल के वृक्ष ६ या ७ वर्ष में फल देने लगते हैं और लगभग ६० वर्ष तक बराबर देते रहते हैं। उपजाऊ तट पर एक एक वृक्ष से ६० से भी अधिक नारियल प्राप्त होते हैं। तटीय भागों में इनकी प्रति एकड़ उपज बहुत अधिक है। यह नदियों की घाटियों में भी बहुत अधिक उत्पन्न होता है। सन १९५३ में नारियल के तेल का उत्पादन ७९४५९ टन और कोपरा (गरी) का उत्पादन १५१७९६ टन था। नारियल का प्रत्येक अङ्ग किसी न किसी प्रकार से काम में लाया जाता है। इस पर भी अनेक उद्योग निर्भर हैं।

अन्य उपजें :—

गत वर्षों यहाँ खजूर भी बोया जाना प्रारम्भकर दिया गया है। परन्तु कुछ ही एकड़ तक इसकी कृषि सीमित है। इसका भी प्रयोग कई प्रकार से किया जाता है। लेकिन इसके फल से विशेष तौरपर तेल ही निकाला जाता है। सन१९५३ में खजूर के तेल का उत्पादन ४९०९८ टन तथा करनेल (Kernel) का उत्पादन १२६६९ टन था। फलों की उपज में मलाया की स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है। अनन्नास यहाँ का एक प्रसिद्ध फल है। यह फल यहाँ से डिब्बों में बन्द करके बाहर भी भेजा जाता है। यह सब से अधिक इंगलैंड को निर्यात होता है। इसके अलावा फलों में केला भी एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करता है। फलों के अतिरिक्त गन्ना, कहवा, चाय, तम्बाकू तथा टेपियोका भी उत्पन्न किया जाता है। इसकी कृषि बढ़ाने का निरन्तर प्रयास किया जा रहा है।

खनिज सम्पत्ति (Mineral Wealth) :—

इस देश में कुछ खनिज पदार्थ भी मिलते हैं, परन्तु मुख्य खनिज पदार्थ रांगा है। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण खनिज पदार्थ है, क्योंकि इसका प्रयोग अनेक उद्योग धन्धों में होता है। संसार में राँगा उत्पादन के दृष्टिकोण से यह देश अग्रगण्य है। यहां से विश्व-उत्पत्ति का एक-तिहाई राँगा प्राप्त होता है। राँगा इस देश में प्राचीन काल से निकाला जा रहा है। चीनी विद्वानों का मत है कि यह पन्द्रहवीं शताब्दी में खोदा जाता था। किदाह तथा पीरक की राँगे की खानों पर अपना पूर्ण आतंक जमाने के हेतु सत्रहवीं तथा अठारहवीं शताब्दी में डच निवासियों ने भी चेष्टा की थी। अठारहवीं शताब्दी के अन्त तक सबसे अधिक उत्पादन पीरक राज्य का था और यहाँ पर किन्ता, पादंग तथा बातंग के स्थानों पर यहीं के आदि निवासी राँगा निकालते थे।

यहां पर राँगा उन प्रदेशों में मिलता है, जहां घाटियों में नदियों द्वारा

लाई गई मिट्टी एकत्रित हो गई है। वास्तव में यह घिसे हुये कंकड़ों (Detrital gravels) में मटर से लेकर, रेत के कण के बराबर तक के दानों के रूप में मौजूद रहता है। यह कंकड़ ग्रेनाइट चट्टानों तथा अन्य स्थानीय चट्टानों के टूटने-फूटने के कारण बने हैं। पश्चिमी तट की ओर जो नदियाँ बहती हैं और जहाँ पर ग्रेनाइट पत्थर चूने की चट्टानों के इर्दगिर्द पाया जाता है, वहाँ अनेक बहुमूल्य खानें पाई जाती हैं। नदियाँ उन चट्टानों पर होकर बहती हैं जिनमें रांगा होता है, यह राँगा बह कर मध्य तथा निचली घाटी तक पहुंच जाता है। राँगे की खुदाई में कोई विशेष कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। यह हाथों से भर कर बड़ी आसानी से मोटर ट्रक तथा रेलों द्वारा साफ करने के केन्द्रों तक पहुंचाया जा सकता है। नदियों के नीचे धरातल पर रांगे के जो दाने मिलते हैं वह जल सहित बाहर निकाल लिये जाते हैं, बाद में उन्हें साफ करते हैं। रांगा वजन में भारी होता है, इसलिये बड़ी आसानी से साफ हो जाता है। साफ करने के स्थान सिंगापुर तथा पिनांग हैं। इन दोनों केन्द्रों पर रांगा साफ होने के लिये बर्मा, थाईलैंड तथा हिन्द-चीन तक से आता है पहले यह प्राचीन ढंग से साफ किया जाता था, परन्तु अब यह काफी आधुनिक ढंग से साफ कर लिया जाता है। अधिकांश राँगा पिनांग से १०० मील दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित क्षेत्र से प्राप्त किया जाता है। सन् १९४० में यहां का उत्पादन ८०,६५७ टन था। सन् १९५२ में ५६,८३८ और १९५३ में ५६,२५२ टन हुआ। यहां का रांगा विश्व में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

लोहा :—

लोहे के उत्पादन में मलाया दक्षिण-पूर्वी एशिया में मुख्य स्थान प्राप्त करता है [illegible] तथा मैंगनीज़ भी निकाला जाता है। वास्तव [illegible] की खानें पहले जापानियों के अधिकार में थीं, और वही लोग इन धातुओं को निकालते थे। लोहा यहां बहुत उच्चकोटि का नहीं होता। जोहोर राज्य जो कि दक्षिण में स्थित है, लोहे के उत्पादन में प्रमुख स्थान रखता है। लोहे की खानें किलान्तन तथा ट्रेंगानों में भी पाई जाती हैं। द्वितीय महायुद्ध के पूर्व इन तीनों राज्यों से लगभग [illegible] टन लोहा प्राप्त किया जाता था।

कोयला :—

इस देश में थोड़ा सा कोयला भी निकाला जाता है, परन्तु कोयला निम्न-कोटि का है। उत्पादन १९५२ में ३१४,९२२ टन तथा १९५३ में २८६,३६४ टन हुआ। इसकी खानें अधिकतर सिलंगोर रियासत में रन्तांऊ पंजांग नामक

स्थान पर पाई जाती हैं। इसका उपभोग अधिकतर रेलों, कारखानों तथा राँगे के उद्योग में होता है।

अन्य धातुयें :—

अन्य धातुओं में मैंगनीज़ किलान्टन तथा ट्रंगानों राज्यों से और बाक्साइट जोहोर राज्य से प्राप्त किया जाता है। फास्फेट या गुआनों चूने की चट्टानों के क्षेत्र में गुफाओं के अन्दर पाया जाता है। बालफ्रम सिलंगोर राज्य से प्राप्त होते हैं। इन खनिजों के अतिरिक्त सोना, मोनेजाइट केओलिन तथा चीनी मिट्टी भी मिलती है।

उद्योग-धन्धे (Industries) :—

इस देश में अधिकतर वही उद्योग-धन्धे पाये जाते हैं, जो कि यहां से प्राप्त किये हुये कच्चे माल पर निर्भर हैं। इनमें से प्रमुख वही हैं, जो कि रबड़ और राँगे पर निर्भर हैं। हमको सिंगापुर में कई ऐसे कारखानें मिलते हैं, जो कि रबड़ से अनेक वस्तुयें तैयार करते हैं, इनमें से टायर, जूते, नली, खिलौने इत्यादि विशेषतौर पर बनाये जाते हैं। पिनाँग और सिंगापुर में कुछ कारखाने हैं, जो राँगा साफ करने के अतिरिक्त राँगे की चादरें भी तैयार करते हैं। नारियल का तेल निकालना यहाँ का एक प्रसिद्ध उद्योग धन्धा है। अनन्नास फल डिब्बों में बन्द करके विदेशों को भेजा जाता है। इसीलिए यह उद्योग भी बहुत अधिक उन्नति कर गया है। इसके कई कारखानें पाये जाते हैं। इस उद्योग का राँगे से घनिष्ठ सम्बन्ध है, क्योंकि जो डिब्बे बनाये जाते हैं, वह राँगे के ही बनते हैं। यहाँ पर कुछ सूती कपड़े के कारखाने भी स्थापित हो गये हैं। लकड़ी चीरने के यहां अनेक कारखानें पाये जाते हैं क्योंकि वनीय क्षेत्रों से यहाँ बड़ी उत्तम लकड़ी प्राप्त हो जाती है। इन उद्योगों के अतिरिक्त यहाँ अन्य उद्योग धन्धे उन्नति कर गये हैं जिनमें प्रमुख साबुन, सिगरेट, दियासलाई, फर्नीचर, बर्तन, रस्सी, टोकरी, हैट, रासायनिक पदार्थ, शराब, रबड़ एकत्रित करने के प्याले तथा सीमेंट इत्यादि हैं। इन सबों में सीमेंट का उद्योग बहुत शीघ्रता से उन्नति कर रहा है। यहाँ के लोग मछलियों का शिकार भी खेलते हैं क्योंकि यह बहुतों का मुख्य भोजन भी है।

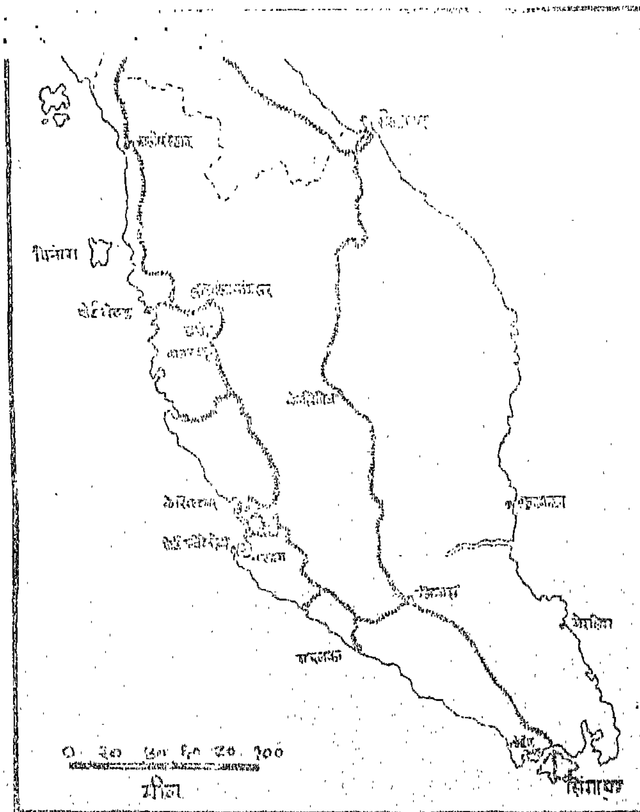
यातायात के साधन (Means of Transport & Communication)—

थल यातायात की प्रगति इस देश में पश्चिमी तट की ओर बहुत अधिक हुई है। रेलों की अपेक्षा सड़कों का बहुत अधिक विकास हुआ है। यहाँ की सड़कों की कुल लम्बाई ६३५४ मील है*। ये सड़कें पक्की तथा मोटर चलाने योग्य हैं।

* Total of Federal and State roads is 6354 miles—From—British Information Service.

उनकी उन्नति का एकमात्र कारण रबड़ तथा राँगा हैं। यह दोनों ही वस्तुयें अधिकतर मलाया के पश्चिमी तट की ओर प्राप्त की जाती हैं। आज कल तो सड़कों का जाल और भी अधिक घना हो गया है। सबसे अधिक सड़कें पश्चिम की ओर दो क्षेत्रों में दृष्टिगोचर होती हैं, पहला क्षेत्र पिनांग द्वीप के पूर्व में पीरक तथा किदाह राज्यों के मध्य में है। यहाँ सड़कों का जाल बहुत घना है। दूसरा क्षेत्र जो इससे भी अधिक घना है, वह सिलांजर, नेगरी, सेम्बलियन तथा मलक्का को शामिल करता है।

रेलों का विकास भी पश्चिम की ओर अधिक हुआ है। एक सबसे प्रमुख रेलवे लाइन सिंगापुर से गिमास (Gemas) जाती है। यहां से एक शाखा



मलाया—रेलवेज़ तथा मुख्य नगर

उत्तर-पूर्व की ओर के लिपिस तथा दूसरी पश्चिम की ओर उस लाइन में मिल

जाती है, जो मलक्का से आरम्भ होती है, और दूर उत्तर में कुआला कंगसार तथा अलोर स्टार होती हुई निकल जाती है। इस मुख्य रेलवे लाइन के मध्य में कई शाखायें पश्चिमी तट के बन्दरगाहों तक गई है। एक दूसरी रेलवे लाइन उत्तर-पूर्वी तट पर स्थित कोटा बारू बन्दरगाह से उत्तर की ओर करा तक चली गई है। रेलों की कुल लम्बाई आजकल इस देश में १२१६ मील है। हवाई यातायात में भी इस देश ने बहुत उन्नति की है। यहाँ दो अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे हैं, प्रथम कोटा भारू और द्वितीय पिनाँग। इसके अलावा ६ अन्य बड़े बड़े तथा १६ छोटे छोटे हवाई अड्डे हैं।

विदेशी व्यापार (Foreign Trade) :—

विदेशी व्यापार यहां अधिकतर तीन बन्दरगाहों द्वारा होता है। सबसे प्रथम स्थान सिंगापुर का है, यह मलाया का तीन-चौथाई विदेशी व्यापार करता है। इसके बाद पिनांग तथा मलक्का का नम्बर है, शेष व्यापार उन्हीं दोनों बन्दरगाहों से होता है।

जो वस्तुयें यहां से निर्यात की जाती हैं, उनमें रबड़ व रांगा मुख्य हैं, शेष में डिब्बों में बन्द किया हुआ अननास, नारियल का तेल, रबड़ की चीजें व अन्य वस्तुयें सम्मिलित हैं।

सन् १६५४ में जो वस्तुयें यहां से निर्यात की गईं उनमें रबड़ १०५·३ (मिलियन पौंड), रांगा व रांगे की वस्तुयें ४७·१ (मिलियन पौंड), खजूर का तेल ३·७ (मिलियन पौंड) तथा नारियल का तेल ६·५ (मिलियन पौंड) था।

वे वस्तुयें जो यहाँ आयात की जाती हैं, उनमें पेट्रोल तथा अन्य तैयार की हुई वस्तुओं की मात्रा अधिक रहती है। यहाँ चावल, गन्ना, सूती, ऊनी व रेशमी वस्त्र, पटशन, तम्बाकू व डिब्बों में बन्द किया हुआ दूध, मशीनें, मोटर, गाड़ियां तथा इन्जीनियरिंग की वस्तुयें विशेष तौर पर आयात की जाती हैं।

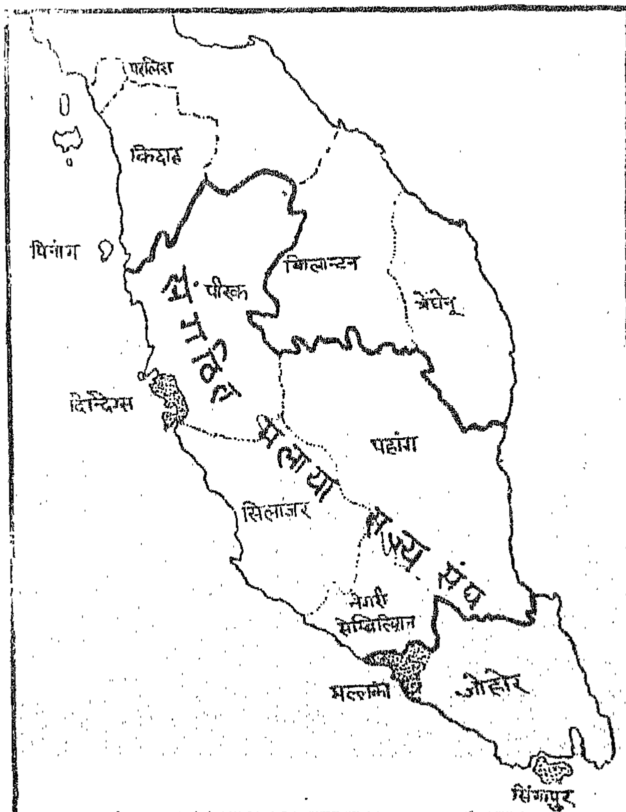
सिंगापुर—यह एक छोटा सा द्वीप है और मलाया के बिल्कुल दक्षिण में स्थित है। इसकी लम्बाई २७ मील के लगभग तथा चौड़ाई १४ मील है। भूमध्य रेखा से यह लगभग ७५ मील उत्तर में स्थित है। मलाया प्रायद्वीप से यह एक मील चौड़ी खाड़ी द्वारा पृथक है। यह खाड़ी जोहोर जलडमरूमध्य कहलाती है। इस खाड़ी पर ६ फर्लांग लम्बा पुल बना हुआ है। इस पुल के द्वारा मलाया तथा सिंगापुर सड़क तथा रेल द्वारा परस्पर मिले हुये हैं। जहाज़ी बेड़ा उत्तर की ओर तथा मुख्य सिंगापुर नगर दक्षिण की ओर स्थित है। यहां पर अनेक उद्योग-धन्धे स्थापित हैं। पूर्व की ओर अंग्रेजी सेनाओं का हवाई तथा समुद्री अड्डा है। व्यापार के दृष्टिकोण से इस नगर की स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है। इस द्वीप पर योरोप, पूर्वी तथा दक्षिणी अफ्रीका, भारत, पाकिस्तान, चीन, जापान, आस्ट्रेलिया, कनाडा

तथा संयुक्त राज्य अमरीका से आने वाले जल मार्ग मिलते हैं। इसके बन्दरगाह पर किसी भी विदेशी जहाज़ को कर नहीं देना पड़ता। यहाँ के बन्दरगाह से मलाया की उपजों के अतिरिक्त दक्षिण-पूर्वी एशिया की एकत्रित अन्य उपजें भी बाहर भेजी जाती हैं। कुछ वस्तुयें तो केवल निर्यात करने के हेतु यहाँ आयात की जाती हैं। इस नगर में कई कारखाने भी पाये जाते हैं। रबड़ की वस्तुयें तैयार करने तथा राँगा साफ करने के यहां कई कारखाने हैं। सिंगापुर की जनसंख्या १६४१ में ७२७००० थी। इसमें से ७१ प्रतिशत चीनी, ६ प्रतिशत भारतीय ६ प्रतिशत मलाया के निवासी, १·५ प्रतिशत योरोपियन और ·५ प्रतिशत जापानी हैं।

राजनैतिक रूप (Political Aspect)

राजनैतिक विभाजन (Political Divisions):—

ब्रिटिश लोगों का प्रभाव मलाया के तीन क्षेत्रों पर सबसे अधिक पड़ा है।



मलाया—राजनैतिक विभाग

(१) स्ट्रेट्स सेटिलमेंट (Straits Settlement) यह एक ब्रिटिश कोलोनी है। (२) फेडरेटेड मेले स्टेटस् (Federated Malaya States) इसमें पीरक, सिलांजर, नेगरी सेम्बलियन तथा पहांग के राज्य सम्मिलित हैं। (३) अनफेडरेटेड स्टेटस् (Unfederated States) इसमें जोहोर, किदाह, परलिस, किलान्टन तथा त्रेंगेनू राज्य सम्मिलित हैं।

(१) स्ट्रेटस् सेटिलमेंट (Straits Settlement)—इस ब्रिटिश कोलोनी का क्षेत्रफल लगभग १२५० वर्गमील है; इसमें मलाया प्रायद्वीप के तथा अन्य कई वितरित क्षेत्र सम्मिलित हैं। मलाया प्रायद्वीप में मलक्का, दिदिंग तथा वेल्सली, पिनांग व सिंगापुर के द्वीप, कोकोज द्वीप समूह, क्रिस्मस द्वीप तथा बोर्नियो के निकट लबुआन कोलोनी सम्मिलित हैं। मलक्का एक अति प्राचीन योरोपियन बस्ती रही है। यहाँ पुर्तगाल के निवासी १५११ में आ बसे थे, ये १५११ से १६४१ तक रहे, इसके उपरान्त डच निवासी रहे, यह १६४१ से १८२४ तक रहे। इसके बाद यह अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गया। पिनाँग पर १७८६ में अंग्रेज़ों ने आतंक जमा लिया था। सिंगापुर का पहले कोई विशेष महत्व नहीं था, परन्तु बाद में जब यह अंग्रेज़ों ने सन् १८१६ में जोहोर राज्य से प्राप्त कर लिया तब से इसका महत्व बढ़ गया। कोकोज १८८६, क्रिसमस १८८६ तथा लबुआन १६०७ में इसमें सम्मिलित कर लिये गये।* इनका शासन प्रबन्ध एक गवर्नर के अन्तर्गत है, यह फेडरेटेड मलाया स्टेटस् का हाई कमिश्नर भी होता है। इसके नीचे नौ सदस्यों की एक (Executive) कौन्सिल होती है। इसके भी नीचे एक और २६ सदस्यों की कौन्सिल होती है जो लेजिसलेटिव कौन्सिल कहलाती है।

(२) फेडरेटेड मेले स्टेटस् (Federated Malaya States)—यह मुसलमानी राज्य ब्रिटिश लोगों की अध्यक्षता में हैं। इन चारों राज्यों में अलग अलग सुल्तान राज्य करते हैं। प्रत्येक को एक एक अंग्रेज़ रेज़ीडेण्ट परामर्श देता है। नेगरी सेम्बलियन एक ऐसा राज्य है जो कि नौ छोटे छोटे राज्यों के संगठन से १८८६ में बना था। ब्रिटिश लोगों ने अपनी अध्यक्षता में यह चारों राज्य १८७४ में लिये थे। प्रत्येक राज्य में एक स्टेट कौन्सिल होती है। इसमें सुल्तान अंग्रेज़, रेजीडेण्ट, सुल्तान का सेक्रेट्री तथा अन्य कई सदस्य होते हैं। चारों राज्यों के मामले एक फेडरल कौन्सिल, जिसकी स्थापना १६०६ में हुई थी, करती है। इस कौन्सिल में हाई कमिश्नर, चीफ सेक्रेट्री तथा चार सुल्तान होते हैं। इन चारों राज्यों का क्षेत्रफल २७४५६ वर्ग मील है।

(३) अनफेडरेटेड स्टेटस् (Unfederated States)—इसका क्षेत्रफल

*Essentially from L. D. Stamp—Asia, A Regional & Economic Geography Page 406—407.

७५,०० वर्ग मील है। इसमें पांच राज्य सम्मिलित हैं। इन पांचों में से जोहोर राज्य का समझौता ब्रिटिश राज्य से १८८५ में हुआ है। जोहोर मलाया प्रायद्वीप के दक्षिण में स्थित है। शेष चार राज्य थाईलैंड की सीमा के निकट स्थित हैं। इन पांचों में भी अलग अलग सुल्तान राज्य करते हैं, प्रत्येक के पास एक एक कौन्सिल होती है, जिसको कि अंग्रेज़ परामर्शदाता परामर्श देता है।

मलाया अब इस बात की चेष्टा कर रहा है, कि वह भी भारतवर्ष की भांति स्वतन्त्र हो जाय और ब्रिटिश कामनवेल्थ देशों में उसी प्रकार सम्मिलित रहे, जिस प्रकार इस समय भारतवर्ष है।

सांस्कृतिक रूप (Cultural Aspect)

जाति (Race) :—

मलाया में अनेक पूर्वी देशों के लोग पाये जाते हैं। मेले जाति के लोग, जिनके कारण इस देश का नाम पड़ा है, बहुत अधिक संख्या में नहीं पाये जाते हैं। अधिकतर जनसंख्या चीनियों की ही है। यह लोग यहां के अनेक उद्योगों में लगे हुये हैं। मेले जाति के लोगों में विभिन्न जातियाँ पाई जाती हैं। यह लोग विभिन्न प्रकार की भाषायें बोलते हैं। ऐसा कहा जाता है कि प्राचीन काल में मेले जाति एक भयानक जाति समझी जाती थी, अन्य जातियाँ इसे घृणा की दृष्टि से देखती थीं। समयानुसार इन लोगों के चरित्र में परिवर्तन होता गया, अब वह बहुत ही सीधे सादे तथा साधारण लोग हैं। एक मेले यदि रहने के लिये एक घर तथा कृषि के लिये थोड़ी सी भूमि प्राप्त कर लेता है, तो वह अपने को बड़ा भाग्यवान समझता है, और सदैव सन्तुष्ट रहता है। उसकी इच्छायें बहुत ही कम होतीं हैं। कुछ लोग जिनके पास कुछ रबड़ के वृक्ष होते हैं अपने को धनी समझते हैं।

शिक्षा (Education) :—

बहुत से उच्च श्रेणी के लोग अपने बच्चों को उच्च कोटि की शिक्षा देने के के हेतु विदेशों को भेजते हैं। यहाँ पर बच्चों को ब्रिटिश सभ्यता के आधार पर शिक्षा देना लोग अच्छा समझते हैं। ८ अथवा ६ साल की आयु पर एक साधारण मेले बच्चा पढ़ना शुरू कर देता है। आरम्भ की शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् वह विश्वविद्यालय में प्रवेश हो जाता है। यहाँ के कालेज बहुत अच्छे बने हुये हैं, इनके आगे खेलने के लिये क्रीड़ास्थल होता है। लड़के हाकी, फुटबाल तथा क्रिकेट खेलते हैं। उच्च शिक्षा की प्रगति यहाँ बड़ी तीव्रता से हो रही है।

निम्न श्रेणी के लोगों में शिक्षा का प्रचार बहुत कम है, वह लोग किताबों से डरते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में पाठशालायें खोल दी गई हैं और बराबर अशिक्षित लोगों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। छोटे छोटे बच्चों को कुरान पढ़ना तथा लिखना सिखाया जाता है। परन्तु अधिकतर बच्चे बड़े होने पर भूल जाया करते

हैं। यहाँ के लोग मुसलमान जाति के हैं। ये इस्लाम धर्म को मानते हैं। यह अपने धर्म के बड़े कट्टर होते हैं, और शराब इत्यादि का कदापि सेवन नहीं करते। अपने सुल्तान के ये बड़े वफादार होते हैं। धर्म के लिये यह अपनी जान तक न्यौछावर कर देते हैं।

जीवन (Life) :—

मलाया के आदि निवासी सेकेज (Sakais) कहलाते हैं। ये लोग यहाँ घने वनों में अति प्राचीन काल से रहते चले आ रहे हैं। मेले जाति के आने के पहले भी यह लोग यहाँ असभ्य दशा में रहते थे। अब भी वे नगरों की ओर आने में सकुचाते हैं। इस प्रायद्वीप में अब भी ऐसे लोगों के चिन्ह दृष्टिगोचर होते हैं, जो अति प्राचीनकाल में यहाँ रहते थे। सेकेज लोगों का जीवन बहुत ही पिछड़ी हुई दशा में है। अधिकतर इनकी बस्तियाँ उच्च पर्वत श्रेणियों के ढालों पर घने बनों में छिपी हुई दृष्टिगोचर होती हैं।

यह लोग अपने घर बाँस के बनाते हैं, और शेर की खाल की पोशाक पहनते हैं। बहुत ही साधारण फसलें उत्पन्न करके यह अपना जीवन व्यतीत करते हैं। शिकार खेलने में यह बहुत निपुण होते हैं। इनके तीर 'इपो' पौधे के विष में हर समय डूबे रहते हैं। सेकेज का रूप-रंग मेले लोगों की अपेक्षा अधिक उज्ज्वल होता है। यह लोग अपने कार्य में बड़े निपुण होते हैं। इनकी संख्या ठीक ठीक नहीं बतलाई जा सकती। यह लोग किसी भी प्रकार से सभ्य लोगों के लिये हानिकारक नहीं है। एक इटेलियन व्यक्ति (Captain Ceruti) जो इन लोगों के साथ कई वर्ष रहा, अपनी पुस्तक ("My Friends the Savages") में लिखता है 'यह असभ्य लोग मेरे मित्र हैं'।

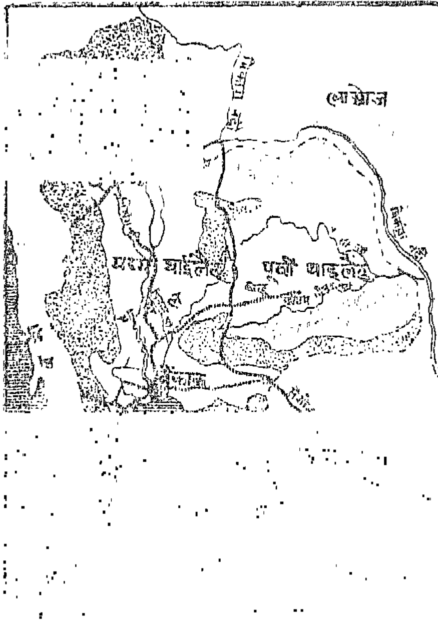
थाइलैण्ड

मुआँग थाई या स्याम शब्द का अर्थ है—'स्वतन्त्र व्यक्तियों का देश', दूसरे शब्दों में यह 'श्वेत हाथियों का देश' अथवा 'पीले वस्त्र का देश' भी कहा जा सकता है, क्योंकि यह यहाँ के निवासियों का एक धार्मिक चिन्ह भी है। यह देश एक स्वतन्त्र राष्ट्र है। किसी भी अन्य देश ने इस पर अधिकार नहीं किया, केवल जापानियों ने इस पर १९४१ में द्वितीय महायुद्ध के समय आक्रमण कर दिया था। यह देश पहले 'स्याम' के नाम से प्रसिद्ध था, परन्तु १९३९ से यह 'थाइलैंड' या थाई लोगों का देश कहलाने लगा है। इन लोगों ने माध्यमिक (Buffer) राज्य भी कहा है क्योंकि इसकी स्थिति (६° उ० अ० से २१° उ० अ० तथा ९७° पू० दे० से १०६° पू० दे०) दो ऐसे देशों के मध्य में है, जिनमें से एक अंग्रेज़ों तथा दूसरा फ्रांसीसियों के अधिकार में है। आज से लगभग ५९ वर्ष पहिले इन दोनों शक्तियों में एक ऐसा समझौता हुआ, जिसके अन्तर्गत थाइलैंड को एक स्वतन्त्र राष्ट्र घोषित कर दिया गया। ये लोग बड़े स्वतन्त्र विचार के हैं। तथा अपने मतानुसार जो बात ठीक समझते हैं, वही करते हैं। इस देश का कुल क्षेत्रफल १९८,२४७ वर्गमील है।

भौतिक रूप (Physical Aspect)

धरातल (Relief) :—

थाइलैंड का उत्तर-पूर्वीय, उत्तरी तथा पश्चिमी भाग पर्वतीय है। इसकी पूर्वी सीमा मीकांग नदी बनाती है। यहां की पर्वत श्रेणियां वास्तव में हिमालय पर्वत की पूर्वी शृङ्खलाओं का क्रम है जो बर्मा को पार करती हुई यहां आती हैं। तथा इन्हीं का और भी विस्तार दक्षिण में मलाया प्रायद्वीप तक है। उत्तरी थाइलैंड में इनकी अधिकतम ऊँचाई ८००० फीट हो गई है। पश्चिम की ओर अधिकतर ऊँचाई एक मील से कम ही है। उत्तर में पर्वत श्रेणियाँ तथा घाटियाँ बहुत कुछ समानान्तर हैं। यह उत्तर से दक्षिण की ओर विस्तृत हैं। घाटियों में कहीं कहीं चूने की नग्न चट्टानें उठी हुई मिलती हैं। तिनेसिरिम पर्वत श्रेणियां जो कि दक्षिण-पूर्व की ओर केवल उच्चभूमि के रूप में हैं, थाइलैंड के एक तिहाई भाग में फली हैं।



थाइलैंड—सामान्य

समतल मैदान केवल तीन नदियों की घाटियों तक ही सीमित है। मिनाम तथा मेकलौंग का समतल भाग लगभग १८० मील चौड़ा तथा २५० मील लम्बा है। नदियों की लाई हुई मिट्टी की एक पेटी उत्तर-पूर्व की ओर भी पाई जाती है। यह नमसुन के नाम से प्रसिद्ध है। मध्य थाइलैंड का पूर्वी भाग कम्बोडिया कहलाता है। शेष भाग में ऊँची नीची एक सी पहाड़ियाँ दीखती हैं। यह क्षेत्र अधिक उपजाऊ नहीं है। मध्य थाइलैंड में पथरीली धरातल एल्यूवियल मिट्टी के कारण दिखलाई नहीं पड़ता है।

रचना (Structure) :—

भूगर्भ शास्त्रियों का मत है, कि यहां के पर्वतों का सम्बन्ध इन्डोमलायन पर्वत श्रेणियों से है। इन पर्वतों में कैम्ब्रियन युग से भी अधिक प्राचीन चट्टानों से लेकर मेसोज़ोयेक चट्टानें तक पाई जाती हैं। ऊँची ऊँची पर्वत श्रेणियाँ अधिकतर ग्रेनाइट (Granite) पत्थर की ही हैं, परन्तु नीचे तथा अन्य स्थानों पर नीस (Gneisses), सिस्ट (Schists), स्लेट (Slate), सैण्डस्टोन (Sandstone) तथा चूने (Limestone) की चट्टानें भी मिलती हैं। पश्चिम की ओर श्रेणियों में आग्नेय चट्टानों के अंश स्पष्ट रूप से मिलते हैं।

नदियाँ (Rivers) :—

इस देश की प्रमुख नदी मिनाम है। सालवीन तथा मिकाँग, दोनों नदियाँ बहुत दूर तक इस देश की सीमायें निश्चित करती हैं। परन्तु मिनाम ही एक ऐसी नदी है, जिसको हम पूर्ण रूप से थाईलैंड की ही नदी कह सकते हैं।

मेपिंग तथा मिवाँग दो ऐसी छोटी छोटी नदियाँ हैं, जिनमें कि हर समय बाढ़ का भय रहता है। मियोम तथा मिनाम पूर्व के कुछ कम ऊंचे भागों से निकलती हैं, और दूर तक शान्तपूर्वक बहती हैं। और अपने मुहाने तक ये नदियाँ नवकागम् है।

जलवायु (Climate) :—

यह मानसूनी जलवायु का एक प्रदेश है। यहाँ पर दो ऋतुयें होती हैं, एक ग्रीष्म और दूसरी शीत। यहाँ ग्रीष्म ऋतु में दक्षिणी-पश्चिमी मानसून से वर्षा अप्रैल के अन्त तक होती है। शीत ऋतु में शुष्क हवायें उत्तर-पूर्व से नवम्बर से लेकर मध्य फरवरी तक चलती हैं, परन्तु इसके बाद ही गर्म ऋतु आरम्भ हो जाती है।

भू-मध्य रेखा (Heat Equator) के उत्तरी व दक्षिणी गोलार्द्ध में पहुंचने के साथ साथ यहाँ दो बार डोल्ड्रम के क्षेत्र आते हैं। यहाँ हवायें ऊपर उठती रहती हैं, और आकाश में बादल छाये रहते हैं, इस प्रकार यहाँ स्थानीय वर्षा प्राय: हो जाया करती है। उत्तर-पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी व्यापारिक हवायें जोकि डोल्ड्रम के दोनों ओर चलती हैं, पश्चिम की मानसूनी दशाओं से परिवर्तित हो जाती हैं। उष्ण कटिबन्धीय चक्रवात प्राय: दक्षिणी चीन सागर को पार करके थाईलैंड में प्रवेश करके समाप्त हो जाते हैं। इनसे भी थोड़ी सी वर्षा होती है।

यहाँ पर तापक्रम कभी कभी बहुत ऊंचा पाया जाता है। मध्यवर्ती भाग के तापक्रम में हेरफेर बादलों के कारण भी हुआ करता है। अधिक तापक्रम मार्च, अप्रैल तथा मई में रहता है। जब आकाश में बादल होते हैं, तब यह तापक्रम कम हो जाता है। यहाँ का अधिकतम तापक्रम १००°फा० और न्यूनतम तापक्रम ६०°फा० तक रहता है। शीतकाल में ऊनी वस्त्रों का प्रयोग होता है तथा घरों में अंगीठी जलाई जाती है।

थाईलैंड के दक्षिणी प्रायद्वीप में ग्रीष्म ऋतु लम्बी नहीं होती क्योंकि उन मानसून हवाओं से जो कि बंगाल की खाड़ी से आती हैं यहाँ घोर वर्षा होती है। यह मई से लेकर सितम्बर तक रहती है। पूर्वी तट पर शीत ऋतु की वर्षा अक्टूबर से जनवरी तक होती है। वर्षा का अधिकतम औसत १२० इंच का है। मध्यवर्ती भाग में लगभग ४० इंच के वर्षा होती है, यह वाहिनिक (Convectional) वर्षा है, जो दक्षिण-पश्चिमी हवाओं से होती है। ग्रीष्म ऋतु में बैंकाक (यहाँ वार्षिक वर्षा ५० इंच होती है, इसी ऋतु में औसत तापक्रम रात्रि में ६५°–७५°फा० और दिन में ७५°–८५°फा०, यानें प्राय: उतना ही रहता है, तापक्रम ४०°–५०°फा० तक अङ्कित किया जाता है। तापक्रम ६०°फा० से अधिक नहीं अङ्कित किया जाता) के चारों ओर सामुद्रिक हवायें आती हैं। शीत ऋतु में

भी ये हवायें उत्तर-पूर्व की ओर से आती हैं। यहाँ कुछ ऐसे भी क्षेत्र हैं, जिनमें इतनी भी वर्षा नहीं होती, जिससे चावल उत्पन्न किया जा सके।

मानव रूप (Human Aspect)

ऐतिहासिक आधार (Historical Background) :—

विद्वानों को इस देश के प्राचीन इतिहास के विषय में बहुत कम ज्ञान है। यहाँ का वास्तविक इतिहास सन् १२५० के आरम्भ से होता है, उस समय अयूथिया (Ayuthia) राज्य की नींव बैंकाक के उत्तर में थोड़ी ही दूर पर पड़ी थी। यह नगर बाद में बर्मा के निवासियों द्वारा १७६७ में नष्ट कर दिया गया। ऐसा कहा जाता है कि यहाँ के सैनिकों ने बर्मा के एक सैनिक-नेता को इस सम्बन्ध में घेर लिया था। परन्तु उसने पहले ही वर्तमान वंश की नींव सन् १७८२ में डाल दी थी। बाद में ग्रेट ब्रिटेन के साथ इस वंश का सन् १८५५ में समझौता हुआ। आगे चलकर फ्रांस के साथ इसको अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। और इस सम्बन्ध में इसको बहुत से क्षेत्र फ्रांस तथा ग्रेट ब्रिटेन को देने पड़े। सन् १९१७ में इस देश का युद्ध जर्मनी, आस्ट्रिया-हंगरी से छिड़ गया। बाद में एक समझौते के अन्तर्गत यह युद्ध समाप्त हो गया था। द्वितीय महायुद्ध के समय जापान ने इस पर अपना आतंक जमा लिया था, परन्तु अब पुनः यह एक स्वतन्त्र राष्ट्र है।

जनसंख्या वितरण (Population Distribution) :—

यहाँ की वर्तमान जनसंख्या १९,५५६,००० हैं। अधिकतर इनमें थाई वंश के लोग हैं। यही इस देश के प्रमुख निवासी हैं। परन्तु इनमें चीनियों की संख्या ५ लाख तथा ५० लाख से अधिक अन्य मिश्रित लोग हैं, जिनमें कि चीनियों का कुछ अंश पाया जाता है। चीनी लोगों के हाथ में यहाँ का आयात-निर्यात व्यापार है। आन्तरिक क्षेत्रों में भी यही लोग व्यापार करते हैं। प्रायः यहाँ जाति मतभेद के कारण भी झगड़े उठ खड़े होते हैं।

यहाँ क्षेत्रफल के आधार पर औसत जनसंख्या घनत्व ८६ प्रति वर्ग मील है। परन्तु यह घनत्व कहीं अधिक और कहीं बहुत ही कम है। अधिकतर मैदानी भागों में, विशेषकर बैंकाक के चारों ओर, जनसंख्या का घनत्व अधिक मिलता है। उत्तरी व दक्षिणी क्षेत्रों के घनत्व में बड़ा अन्तर पाया जाता है। उत्तर में केवल १३ तथा दक्षिण में लगभग ३६२ व्यक्ति प्रति वर्ग मील में रहते हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में बहुत ही कम ऐसे भाग हैं, जहाँ जनसंख्या घनत्व अधिक पाया जाता है। यहाँ की ७० प्रतिशत जनसंख्या कृषि में लगी हुई है। जनसंख्या की कमी तथा

घनत्व में असमानता के कारण यहाँ प्रतिवर्ष प्रचुर मात्रा में धान बाहर भेजने के लिये बच रहता है।

आर्थिक रूप (Economic Aspect)

प्राकृतिक वनस्पति (Natural Vegetation) :—

प्राकृतिक वनस्पति वास्तव में जलवायु के आधार पर ही हुआ करती है। मानसूनी जलवायु होने के कारण यहाँ पर मानसून प्रदेश के वन मिलते हैं। यहाँ के ६७ प्रतिशत क्षेत्र में वन-सम्पत्ति पाई जाती है। इन वनों में अधिकांश कठोर लकड़ी वाले वृक्ष होते हैं, जो कि बहुत धीरे धीरे उगते हैं। सागोन की लकड़ी जो यहाँ के वनों से प्राप्त होती है, आर्थिक दृष्टिकोण से बड़ी महत्वपूर्ण है। लाख और रबड़ के अतिरिक्त यहाँ पर बाँस, बेंत, नारियल, महोगिनी, गटापार्चा, चन्दन, सिनकोना, ऐबोनी, रोजवुड आदि के भी वृक्ष पाये जाते हैं। लकड़ी का निर्यात बर्मा तथा सैगोन द्वारा भी होता है। सन् १९५३ में ४४,४०० टन सागोन (Teak) निर्यात हुआ।

कृषि (Agriculture) :—

थाईलैंड के निवासियों का प्रमुख धन्धा कृषि करना है। सन् १९४७ की जनसंख्या के अन्तर्गत ९१ प्रतिशत (७९ लाख) व्यक्ति कृषि व मछली के उद्योग में, और २·३ प्रतिशत अन्य उद्योग धन्धों में लगे हुए हैं। यहाँ की कुल भूमि के १०% भाग में कृषि की जाती है। डेल्टा प्रदेश में यह भी देखा गया है कि खेती की भूमि का क्षेत्र ४०% है। यहाँ पर इस उद्योग में भली भांति प्रगति हो सकती है, क्योंकि अब भी बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं, जो कृषि करने योग्य हैं। कृषि-फार्म का औसत क्षेत्र यहाँ चार एकड़ का है। यहां के कृषिकों के सम्मुख भी अनेक समस्यायें हैं। अधिकतर धान के खेतों में भैंसे जोते जाते हैं, लेकिन साथ ही बैलों की संख्या भी कम नहीं है। यहां की प्रमुख उपजों में चावल प्रमुख है।

चावल यहां की कुल बोई भूमि के ९५% भाग में उत्पन्न किया जाता है। यह उपज यहां की ८० लाख एकड़ भूमि में होती है। विद्वानों के मत हैं कि यहां की प्राचीन सभ्यता का विकास वास्तव में चावल के ही कारण हुआ है, यहां की कुल जनसंख्या का ९/१० भाग धान पर अपना जीवन निर्वाह करता है। यहाँ कुल विश्व के धान के उत्पादन का ५ प्रतिशत भाग उत्पन्न होता है। इस देश में सन् १९५०-५१ में ६६ लाख टन चावल उत्पन्न हुआ। यह विश्व का चावल निर्यात करने वाला तीसरा बड़ा देश है। सन् १९५३ में यहां से १,३५३,०००

* 'Asia and Africa in the Modern World' (Asian Publishing House) Page 100.

मेट्रिक टन चावल का निर्यात हुआ, जबकि १६५१ में कुल १,५५५,००० मेट्रिक टन हो पाया था। राष्ट्रीय आय की एक-तिहाई आमदनी चावल के निर्यात से ही होती है। प्रथम महायुद्ध के पहले यह सबसे अधिक चावल योरप को भेजा करता था, परन्तु युद्ध के उपरान्त धान आयात करने वाले क्षेत्रों में भारतवर्ष, सिंगापुर, चीन तथा क्यूबा इत्यादि मुख्य थे।

धान की खेती अब भी यहाँ प्राचीन ढंग से ही होती है परन्तु सिंचाई के साधनों में यहाँ बड़ी उन्नति होती चली आरही है। यहां कई स्थानों पर नल कूप भी हैं।

यह देश कुछ शक्कर भी उत्पन्न करता है। सन् १६५० में इसका उत्पादन ६४४३ टन, १६५१ में ८८६७ टन तथा १६५२ में १३६६४ मेट्रिक टन था;

ग्रामीण क्षेत्रों में सहकारी समितियाँ भी स्थापित हो गई हैं। अब यहाँ अकाल पड़ने की कोई भी सम्भावना नहीं है। वर्ष में केवल एक ही फसल उत्पन्न की जाती है, परन्तु चियेंगमई की घाटी में अनेक फस्लें प्रति वर्ष बो दी जाती हैं। यह देश धान उत्पन्न करने में कुशलता प्राप्त कर चुका है। अन्य उपजों में रबड़ तथा नारियल महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। रबड़ यहाँ ४१ लाख एकड़ तथा नारियल १½ लाख एकड़ भूमि में उत्पन्न किया जाता है। तम्बाकू का क्षेत्र यहाँ ६६८०० एकड़ है कपास ७८०००एकड़ तथा विपर ५०००एकड़ क्षेत्र में होता है। सन् १६५३ में रबड़ का निर्यात ६५,५७४ टन हुआ जब कि १६५१ में केवल १०८,८१८ ही टन हुआ था। इन वस्तुओं के अतिरिक्त तम्बाकू, कपास, बीन, मक्का तथा विभिन्न प्रकार की तरकारियाँ भी उत्पन्न की जाती हैं।

लाख के उत्पादन में थाइलैंड एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह पदार्थ लेसीफर लक्का (Laccifer Lacca) नामक खटमल की जाति के कीड़े से प्राप्त किया जाता है। जो पदार्थ यह कीड़ा अपने शरीर से निकालता है, वह बहुत चिपचिपा होता है। यह कीटाणु पलाश, बेर, घोंट, कुसुम, बरगद, पीपल, गूलर, सिरस, खैर सीसू, फालसा इत्यादि वृक्षों पर पलते हैं। यह अधिकतर समुद्रतल से १००० फीट की ऊँचाई वाले भागों पर जहाँ ६० इंच के लगभग वर्षा होती है, अधिक पनपता है।

आजकल देश में लाख का उत्पादन अधिक बढ़ गया है। अब सरकार की सहायता से ही देश में लाख से चमड़ा तैयार कर लिया जाता है। यहाँ के उत्पादन व निर्यात की वृद्धि का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है, कि युद्ध-पूर्व यहाँ से केवल ५००० टन लाख की छड़ियां भारत को चपड़ा तैयार करने के लिये भेजी जाती थीं, परन्तु १६४७ के प्रथम नौ माह में यहाँ के बैंकाक बन्दरगाह से १०००० टन लाख की छड़ियां तथा १५०० टन चपड़ा विदेशों को भेजा गया।

वर्तमान समय में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका तथा अन्य विदेशी राष्ट्रों को यह देश स्वतन्त्रता पूर्वक निर्यात करता है। आजकल विश्व में इसका भारतवर्ष के बाद स्थान है।

खनिज पदार्थ (Minerals):—

खनिज पदार्थों में इस देश की स्थिति विशेष सन्तोषजनक नहीं है। जितने भी खनिज पदार्थ यहाँ निकाले जाते हैं, उन सबों में राँगा एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करता है। यह धातु दक्षिणी थाइलैण्ड के प्रायद्वीप से प्राप्त होती है। इसका उत्पादन आजकल १७ हजार टन से अधिक है। विश्व में इसका नवाँ स्थान है।

राँगा निकालने का यहाँ लगभग वही ढंग है जो मलाया में मिलते हैं। राँगे के बाद दूसरी महत्वपूर्ण धातु टंगस्टन है। अन्य धातुओं में सोना, चाँदी, ताँबा, मेंगनीज़, रूबी, जिंक, ज़िरकन, एण्टीमनी तथा सीसा प्राप्त किया जाता है।

खनिज पदार्थों की उत्पत्ति

[००० पाईकल (Piculs)			[००० मेट्रिक टन (Metric tons)		
[वोल्फ्रैम (Wolfram) लेड (Lead)			[जिपसम (Gypsum) ऐण्टीमनी (Antimony) आइरन ओर (Iron ore)		
सन	वोल्फ्रैम	लेड	जिपसम	एण्टीमनी	आइरन ओर
१६५१	२२·२	४३·७	१·३	२·१	६·५
१६५२	२६·६	४०·७	—	२·३	२·६

1. *Asian Annual 1954, The Eastern World Handbook, London*

शक्ति के साधनों की दृष्टि से इसकी परिस्थिति अच्छी नहीं है। क्योंकि औद्योगिक प्रगति न होने के कारण शक्ति के साधनों का अभाव ही है। कोयला यहाँ पर बहुत ही कम मात्रा में पाया जाता है, और जो कुछ भी मिलता है, वह

In 1951 production of other major crops was as follows :—

Sugarcane 1921, Coconuts 671, Cotton tobacco, peper and maize 41·7, Soyabean 20·7, groundnuts 75·9, mun-bean 26·0 Sesame 7·2, thousand metric tons.

बहुत ही निम्न श्रेणी का होता है। पेट्रोलियम यहाँ कदापि नहीं मिलता, और जलशक्ति भी केवल थोड़े ही स्थानों पर उत्पन्न की जाती है। धान से जो भूसा प्राप्त किया जाता है वही यहाँ कुछ घरेलू उद्योगों में शक्ति के रूप में प्रयोग किया जाता है। बैंकाक के शक्ति गृहों में शक्ति उत्पन्न करने के हेतु यह भूसा ही जलाया जाता है।

उद्योग-धन्धे(Industries) :—

थाईलैंड में शक्ति के साधनों के अभाव के कारण बड़े बड़े उद्योग धन्धों का विकास नहीं हो सका है यहां बहुत कम कारखाने पाये जाते हैं, और दो एक जो हैं भी, वे केवल बैंकाक तथा अन्य बड़े बड़े नगरों में ही स्थित हैं। मुख्य उद्योगों में धान कूटना, लाख तैयार करना, लकड़ी का काम, सूती, रेशमी वस्त्र तैयार करना तथा चमड़े व हाथी दांत की वस्तुयें तैयार करना इत्यादि है। यहां अधिकतर यह उद्योग घरेलू रूप में ही होते हैं। इन उद्योगों का अब धीरे धीरे विकास हो रहा है।

यातायात के साधन(Means of Transport and Communication):—

यातायात के साधनों में इस देश की स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। व्यापारिक मार्गों का सब से बड़ा केन्द्र बैंकाक नगर से ही आरम्भ होती हैं। एक रेल मार्ग यहाँ से दक्षिण को सिंगापुर तक जाता है, दूसरा पश्चिम को तथा तीसरा पूर्व की ओर हिन्द- चीन में प्रवेश करता है। एक रेलमार्ग उत्तर-पूर्व की ओर तथा दूसरा उत्तर पश्चिम की ओर बर्मा तक गया है। रेल मार्ग कुल दो हज़ार मील लम्बे हैं। देश की विशालता को देखते हुए यहां पक्की मोटर चलाने योग्य सड़कें बहुत कम हैं। इन सड़कों का केन्द्र भी बैंकाक नगर ही है।

इनकी कुल लम्बाई एक हज़ार मील है। कच्ची सड़कें लगभग सभी नगरों को मिलाती हैं। कुछ को पक्की बनाने की योजना भी है। कदाचित भविष्य में यह सब पक्की बना दी जायेंगी। पहली जनवरी सन १९५१ में यहां १०१०० कारें, ६५७१ ट्रकें, ६८१ बसें तथा १३०२ मोटर साइकिलें थीं।

थाइलैंड का दक्षिण का भाग जो कि मलाया के उत्तर में एक संकरा भूखण्ड है अन्तर्राष्ट्रीय महत्ता रखता है। ब्रिटिश, फ्रेंच तथा जापानियों ने इस स्थान पर एक ऐसी नहर बनाने की चेष्टा की थी जो कि पश्चिमी व पूर्वी सागरों को परस्पर मिलाती, परन्तु यह प्रयत्न सफल न हो सका। इसके बनाने में कई निर्माण सम्बन्धी (Engineering) समस्याओं का सामना करना पड़ता तथा एक २५० फीट विस्तृत पहाड़ी चट्टान को काट कर टेढ़ी बड़ी नहरों का निर्माण करना पड़ता।

विदेशी व्यापार (Foriegn Trade)

थाइलैण्ड कई वस्तुओं में अन्तर्राष्ट्रीय महत्व रखता है चावल तथा लाख, दो ऐसे पदार्थ हैं, जो यहां से विशेष रूप से निर्यात किये जाते हैं। परन्तु सुन्दर व कठोर सागौन भी यहाँ से बहुत निर्यात की जाती है। अन्य वस्तुओं में नारियल, रबड़, तम्बाकू, रांगा, टगंस्टन इत्यादि हैं।

मुख्य वस्तुओं का व्यापार
प्रतिशत

निर्यात	१९५०	१९५१	१९५२	१९५३ जनवरी से जून तक	आयात	१९३७	१९३८	१९४९
चावल	४६	४२	४७	५५	रेशेदार पदार्थ	१८	२०	१६
राँगा	७	७	१०	७	खाद्य पदार्थ	१५	१३	१७
रबड़	२४	२६	१७	१३	धातु की तैयार वस्तुयें	६	१०	६
					खनिज तेल	६	८	७
					मशीनें	६	५	३
					तम्बाकू	५	३	३
					सूत तथा डोरी	३	४	७

(*Quarterly Economic Review of Continental S.E. Asia London, September 1954.*)

विदेशी व्यापार का मूल्य
(दस लाख भाट* में)

	१९४८	१९५२	१९५३
निर्यात	२,४८४	५,६८३	५,७७६
आयात	१,७५७	५,६७८	६,६२५

* *One pound Sterling = 55 Bahes or Ticals.*

यह देश अधिकतर तैयार की हुई वस्तुयें आयात करता है, जैसे सूती, ऊनी व रेशमी वस्त्र, मशीनें व पुर्जे, प्लास्टिक का सामान, मोटर, साइकिलें, चमड़े की वस्तुयें, कागज तथा अन्य स्टेशनरी इत्यादि। खाद्य-पदार्थों में अनाज, तिलहन, शक्कर, चाय, कहवा तथा कोको इत्यादि वस्तुयें उल्लेखनीय हैं।

मुख्य व्यापार करने वाले देश
(प्रतिशत)

निर्यात	१९५०	१९५१	१९५२	१९५३	आयात	१९५०	५१	५२	५३
संयुक्त राज्य तथा कनाडा	२५	३३	२७	२१	जापान	२५	१८	१२	१७
मलाया	३१	२७	२६	२९	सं० राज्य तथा कनाडा	१५	२१	२०	१९
जापान	१३	११	१५	२५	मलाया	१४	१३	१५	११
होंगकाँग	९	६	९	१५	यू० के०	११	१३	१३	१३
भारतवर्ष	४	८	०	०	होंगकांग	१०	६	१४	१२
यू० के०	३	२	१	१	भारतवर्ष	३	७	०	०

राजनैतिक रूप (Political Aspect)

संवैधानिक रूपरेखा (Constitutional Framework):—

थाइलैंड का संविधान एक विचित्र संविधान है। अनेक अधिकार राजा के पास ही रहते हैं। लेकिन शासन प्रबन्ध अधिकतर राज्य के मन्त्री ही करते हैं। रायल हाउसहोल्ड के मन्त्री भी इसी शासन-प्रबन्ध सम्हालने के कार्य में व्यस्त रहते हैं। इन सब मन्त्रियों का कार्य वही होता है, जो कि उन्हें बताया जाता है, परन्तु इसके अतिरिक्त राजा की संकटों में भी रक्षा करना इन्हीं का कार्य है। यहाँ पर किसी भी प्रकार की संविधान सभा इत्यादि नहीं होती, और न यहाँ चुनाव इत्यादि होते हैं। श्रम का यहाँ प्रश्न ही नहीं उठता, जो श्रम करता है वह पेट भर भोजन पाता है, और जो नहीं करता वह भूखों भी नहीं मरता है। भूमि नाम मात्र को ही राजा की रहती है, क्योंकि वह उसमें या उससे सम्बन्धित कार्यों में तनिक भी बाधा नहीं डालता। उदाहरण के लिये यदि एक स्थान पर धान बोना चाहते हैं तो उनके बीच कोई भी रुकावट नहीं होती, वरन् वह स्वतन्त्रता-पूर्वक बो सकते हैं।

सांस्कृतिक रूप (Cultural Aspect)

जाति (Race) :—

थाइलैंड के आदि निवासियों के विषय में विद्वानों को बहुत थोड़ा ज्ञान है, परन्तु अनुमान लगाया जाता है, कि अति प्राचीन काल में यहाँ नेग्रीटोज़ (Negritos) जाति के लोग रहा करते थे। बाद में जब मङ्गोलियन जाति के लोग उत्तर तथा उत्तर-पश्चिम की ओर से नदियों की घाटियों द्वारा आने लगे, तब वह इस भूमि को छोड़ कर भागने लगे। इनकी जाति के लोग अब भी यहां मिलते हैं, परन्तु मिश्रित दशा में। मोन, अनामीज़ तथा कम्बोडियन वास्तव में नेग्रीटोज़ जाति के ही उदाहरण हैं। ऐसा कहा जाता है, कि ईसा से पूर्व बर्मा तथा तिब्बत के निवासी धीरे धीरे इरावदी घाटी को पार करके थाइलैंड में प्रवेश कर आये, यह लोग भी यहां देखने को मिलते हैं। छठी शताब्दी में भारतवर्ष की संस्कृति तथा लोग, जावा व सुमात्रा में होकर प्रवेश कर आये। इन्होंने भी अपना प्रभाव यहां पर फैला दिया। जिस समय कुबलाई खां ने चीन पर चढ़ाई कर दी थी, उस समय यांगटीसी घाटी के लोग, जो कि लाओ-ताई कहलाते थे, आकर यहां बसने लगे थे। थाइ जाति के लोग जिनकी संख्या यहां सबसे अधिक है, इन्हीं के वंशज हैं।

सामाजिक प्रथायें (Social Customs) :—

थाईलैंड एक इतना अच्छा व सुन्दर देश है, कि यहां की प्रत्येक वस्तु बड़ी भली और आकर्षित मालूम होती है। यहां पर लोगों की सामाजिक रीतियां भी बड़ी सुन्दर हैं। भूमि गोड़ने का पर्व (The Ploughing Festival) एक बहुत ही मनोरंजक अवसर होता है। इस पर्व के अन्तर्गत खेतों के बोये जाने का उद्घाटन किया जाता है। ज्योतिषी एक शुभ दिन निकालता है और यहां के राजा का प्रतिनिधि राजकुमार बुलाया जाता है। राजकुमार की शान अजीब होती है। वह बड़ा सुसज्जित बैठा रहता है, उसके ऊपर एक लाल रंग का बड़ा सा छत्र होता है। इस छत्र में बहुत ही सुन्दर बेल बूटों का काम होता है, कहीं कहीं पर बहुमूल्य मोती भी लगे रहते हैं। राजकुमार का मुकुट सोने और बहुत ही चमकदार मोतियों का बना होता है। यह जलूस, जिसमें कि एक छोटी सी पीली गाय, जो फूलों से ढकी होती है, आगे आगे चलता है, और बाजे व नक्कारों के साथ बोई जाने वाली भूमि तक आता है। इसके पश्चात् तीन छोटे बड़े कपड़े के बण्डल लाये जाते हैं, राजकुमार इन तीनों में से एक चुन लेता है। यदि वह सबसे लम्बा चुनता है तो लोग अनुमान लगाते हैं कि शुष्क ऋतु आयेगी और यदि छोटा चुनता है तो वर्षा अवश्य होगी। चुने हुये बण्डल को वह अपने शरीर में बांध

लेता है और उस स्थान पर जहां तीन बांस लगा दिये जाते हैं, नौ बार भूमि को गोड़ता है, एक ऋषि बैल के आगे आगे चलता है और पानी की बूंदें छिड़कता जाता है। अन्त में बैलों को छोड़ देते हैं, और चावल, घास, बीज तथा मक्का उनके सम्मुख रख देते हैं, यदि बैल इन वस्तुओं में से एक को खाने में जुट जाते हैं, तो लोगों को इस बात का विश्वास हो जाता है कि यही फस्ल इस वर्ष सबसे अधिक होगी, अन्य फस्लें साधारण रूप से सफल होंगी।

प्राचीन काल में यहाँ श्वेत हाथियों से सम्बन्धित अनेक उत्सव हुआ करते थे। शाही हाथी केवल वही हुआ करते थे, जिनके शरीर पर कुछ श्वेत रंग के प्राकृतिक धब्बे रहते थे। इनका बड़ा आदर, सत्कार होता था, इनके शरीर पर सोने के तग्मे लगे होते थे, उन पर इनका नाम तथा अन्य बातें लिखी होती थीं। इनके निजी गुलाम, सुन्दर सुन्दर नाचने वाली लड़कियाँ तथा गाने वाले हर समय इनके साथ रहते थे। जब यह श्वेत हाथी सोते थे, उस समय अति योग्य ऋषि लोग लोरियाँ गाते थे, और गा-गाकर इन्हें सुलाते थे। परन्तु दुर्भाग्य से अब यह सब प्रथायें समाप्त हो गई हैं, और हाथी बेचारे आधे भूखे, निर्धन स्थानों पर रखे जाते हैं।

बैंकाक—

बैंकाक जो कि यहाँ की राजधानी है, एक बहुत ही सुन्दर नगर है। इस नगर में चारों ओर नहरें ही नहर दृष्टिगोचर होती हैं, इसीलिये इसको प्रायः* 'पूर्व का वेनिस' (Venice of the East) भी कहते हैं। इस नगर में मोटर तथा गाड़ियों के अतिरिक्त नावें अधिक दीखती हैं। जल में चारों ओर नावें तथा स्टीमर ही दृष्टिगोचर होते हैं। यदि देखा जाय तो वेनिस की अपेक्षा इस नगर में हमको ऐसे मकान अधिक मिलेंगे जो कि नावों पर बने हुये हैं तथा बहुत ही सुन्दर मालूम होते हैं। इन मकानों में एक ऐसी चहल पहल रहती है, जो कि अन्य वेनिस में भी देखने को नहीं मिलती। यहाँ के 'गोल्डन' हिल पर जो २०० फीट ऊँचा मन्दिर बना है, वह वास्तव में देखने ही योग्य है। इस मन्दिर के चारों ओर बहुत ही सुन्दर बगीचे हैं, इसकी शिखायें चमकदार तथा मन्दिर के अन्दर एक बड़ा सा शीशे का बना हुआ बौद्ध भगवान का दाँत रखा हुआ है। इस समय यहाँ की जन संख्या लगभग आठ लाख है। अब तो यहाँ बड़ी बड़ी इमारतें, कारखाने, विद्यालय, महाविद्यालय व विश्व विद्यालय भी मिलते हैं। यहाँ एक प्रसिद्ध हवाई अड्डा भी है। सड़कें यहाँ की काफी चौड़ी तथा स्वच्छ हैं। पुलिसमैन अपनी अंग्रेजी ढङ्ग की वर्दी पहने चौराहों पर खड़ा हुआ दृष्टिगोचर होता है। आजकल यह एक अन्तर्राष्ट्रीय नगर हो गया है, अब यहाँ बड़े-बड़े

* *The outline of the world Today-page 116*

होटल, संग्रहालय, (Museum), क्लब, अस्पताल इत्यादि भी पाये जाते हैं।

वर्तमान समय में यह एक राजनैतिक केन्द्र हो गया है और अब यहाँ प्रायः अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स भी हुआ करती हैं।

भौगोलिक प्रदेश (Geographic Regions)

थाईलैण्ड देश को चार भौगोलिक प्रदेशों में विभाजित किया जा सकता है :—

(१) उत्तरी थाइलैण्ड (२) मध्यवर्ती थाइलैण्ड (३) दक्षिणी थाइलैण्ड (४) उत्तर पूर्वी थाइलैण्ड।

(१) उत्तरी थाइलैण्ड (Northern Thailand) :—

यह एक पर्वतीय प्रदेश है, इसके अन्तर्गत सालवीन तथा मिकाँग के मध्य का क्षेत्र है। इस क्षेत्र में कई पर्वत श्रेणियां उत्तर से दक्षिण की ओर फैली हुई हैं। पहाड़ियां उत्तर तथा पश्चिम की ओर अधिक ऊंची हो गई हैं। पर्वतों की ऊंचाई एक मील से अधिक नहीं है। सम्पूर्ण भाग का क्षेत्रफल ३५,००० वर्गमील है। यहाँ की पर्वत श्रेणियाँ सघन वनों से ढकी हुई हैं, क्योंकि मानसून हवाओं से इन क्षेत्रों में काफी वर्षा हो जाती है। यहाँ कई छोटी छोटी तीव्र बहने वाली नदियाँ भी पाई जाती हैं। घाटियाँ उत्तर की ओर सँकरी हैं तथा दक्षिण की ओर चौड़ी हो गई हैं। इन चौड़ी घाटियों में थोड़ी बहुत कृषि की जाती है, यद्यपि यहाँ की मिट्टी विशेष उपजाऊ नहीं है। इन चौड़ी व विस्तृत घाटियों में जनसंख्या काफी घनी मिलती है। उत्तरी थाइलैण्ड की वर्तमान जनसंख्या सम्पूर्ण देश की केवल १६% ही है। अधिकतर वहाँ पर शान जाति के लोग रहते हैं। ये लोग कुल भूमि के ७ प्रतिशत भाग में ही कृषि करते हैं, यहाँ अधिकतर, चावल, कपास, तम्बाकू तथा अफीम इत्यादि बोई जाती हैं। सागौन की लकड़ी यहाँ से विशेषरूप से निर्यात की जाती है। चिगमाई इस प्रदेश का मुख्य नगर है यह रेल द्वारा बैंकाक से मिला हुआ है, इसकी दूरी केवल ४१० मील है।

(२) मध्य थाईलैंड (Central Thailand) :—

मध्य थाईलैंड का भाग आर्थिक दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण भाग है, यहां इसका क्षेत्रफल ६८००० वर्गमील है। यहां पर सबसे घनी आबादी पाई जाती है, क्योंकि यह एक समतल भाग है, जो पश्चिमी पर्वतीय क्षेत्र से पूर्व तक तथा उत्तर से लेकर दक्षिण में स्याम की खाड़ी तक फैला है। इस मैदान के मध्य में दक्षिण की ओर मीनाम-मेकलोंग नदियां बहती हैं। इन नदियों में बाढ़ आने का भय रहता है। इन नदियों में इतनी मिट्टी जमा हो गई है, कि निकटवर्ती क्षेत्रों से यह कुछ ऊँची होगई हैं। इस क्षेत्र में ३०" से ६०" तक वर्षा होती है। यहां के वन प्रदेश उत्तर, पूर्व व पश्चिम की ओर तथा डेल्टे के निकट ही दृष्टिगोचर होते हैं।

बीच में कहीं कहीं पर लम्बे पालमीरा नामक खजूर तथा बाँस के वृक्ष भी दिखलाई पड़ते हैं। यहां सम्पूर्ण देश का ५०% कृषि उद्योग होता है, यद्यपि यहां १५% भूमि पर कृषि होती है। धान यहां की प्रमुख उपज है, और सम्पूर्ण फसलों का ३ ४ भाग सम्मिलित करता है। यहाँ पर चावल फेंक कर बोया जाता है। वर्षा ऋतु में खेत पानी से लबालब भर जाते हैं। ऐसे खेत 'फ्लोटिंग' धान के नाम से प्रसिद्ध हैं। बाढ़ के भय के कारण बहुत से व्यक्ति ऐसे गांवों में रहते हैं, जो कि घने बसे हुये हैं। नदियां व नहरें यहां के प्राकृतिक जलमार्ग हैं। इन पर नावों द्वारा व्यापार किया जाता है। शुष्क ऋतु में जब नदियों में जल कम रहता है, बैलगाड़ियाँ प्रयोग की जाती हैं। गाँव में लोग अपने मकान बांस बल्लियों के ऊपर धरातल से कुछ ही ऊँचे बनाते हैं। सड़कों की भी यहाँ बहुत उन्नति हुई है। अब इन नदियों व नहरों पर पुल बना दिये गये हैं। नदियों के किनारे पर कहीं कहीं बौद्ध मन्दिर भी मिलते हैं। डेल्टे वाले भाग में बाँस अधिक उगता है, इसके पीछे ही लम्बी लम्बी घास उग आया करती है। दक्षिण-पश्चिम तथा दक्षिण-पूर्व की ओर धान के खेतों की अपेक्षा बनीयक्षेत्र अधिक दृष्टिगोचर होते हैं। पूर्वी पहाड़ी भागों में अधिक तथा पश्चिम की ओर कम वर्षा होती है। बैंकाक नगर जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है, एक प्रसिद्ध नगर तथा बन्दरगाह है। यह समुद्र से पन्द्रह मील दूर स्थित है, परन्तु फिर भी जहाज यहां तक चले आते हैं। इस क्षेत्र का यह एक बड़ा औद्योगिक केन्द्र भी है।

(३) दक्षिणी थाईलैंड (Southern Thailand) :—

दक्षिणी थाईलैंड का क्षेत्रफल लगभग २८००० वर्गमील है। इसमें मलाया का संकरा प्रायद्वीप सम्मिलित है। संकरी पट्टी उत्तर से दक्षिण की ओर फैली हुई है, इसकी चौड़ाई कहीं भी ७० मील से अधिक नहीं है। बर्मा की सीमा के निकट इसकी चौड़ाई केवल १० मील की है। यह एक अति रमणीय क्षेत्र है, समुद्र तट बहुत ही सुन्दर दृष्टिगोचर होते हैं। यहां की जलवायु भी बहुत ही अच्छी है, पश्चिमी तट की ओर ग्रीष्म ऋतु में, तथा पूर्वी तट पर शीत ऋतु के मानसून से वर्षा हो जाया करती है। वर्षा का औसत सौ इंच के लगभग है। बर्मा और थाईलैंड की सीमा करा के क्षेत्र में पर्वतश्रेणियाँ निश्चित करती हैं। इन पर्वत श्रेणियों के मध्य में कई घाटियाँ हैं जिनमें होकर रेल मार्ग व सड़कें जाती हैं। निकट के द्वीपों में या समतल भाग की झीलों में चूने की चट्टानें सीधी खड़ी हुई बहुत ही सुन्दर दृष्टिगोचर होती हैं। इन चूने की चट्टानों में फास्फेट जो कि गुआना चमगादड़ों से प्राप्त होता है, मिलता है। अधिकतर श्रेणियाँ ग्रेनाइट पत्थर की ही बनी हुई हैं। इनमें कई जगह राँगा पाया जाता है। राँगे की यहाँ कई खानें हैं और कई विधियों से यह प्राप्त किया जाता है। 'पुकेत' नगर जिसमें कि

अधिकतर चीनी लोग रहते हैं वर्षों से इस धन्धे के लिए प्रसिद्ध हैं। राँगा यहाँ पर अनेक कम्पनियां भी निकालती हैं, तथा ग्रामीण लोग भी अलग अलग घरेलू ढङ्ग से निकालते हैं। प्राकृतिक वनस्पति में यहाँ उष्ण कटिबन्धीय वन, मानसूनी सदाबहार वन, मैंग्रोव, घास वाले मदान तथा नवीन जल वाले दलदल मिलते हैं। इन वनों में बांस व नारियल के वृक्ष भी बहुत मिलते हैं। रबड़ के बगीचे भी यहां बहुत पाये जाते हैं। हेविया नामक रबड़ यहाँ विशेषतया उत्पन्न होती है। कृषि यहाँ के लोगों का मुख्य धन्धा है। मैदानी क्षेत्र जहाँ कि जनसंख्या अधिक रहती है, लकन तथा पातालंग के नगरों के चारों ओर मिलता है। चावल यहाँ के लोगों का मुख्य भोजन है, इसलिये यह अधिक उत्पन्न किया जाता है। परन्तु कभी कभी उपज कम हो जाने के कारण यह आयात भी किया जाता है। समुद्र तट पर मछली पकड़ने का धन्धा प्रचलित है। सिंगापुर से बैंकांक जाने वाला रेल मार्ग इसी क्षेत्र से होकर जाता है। इस दक्षिणी भाग से टिन, रबड़, चावल, तथा मछली का निर्यात होता है।

(४) उत्तर-पूर्वी थाईलैंड (Northern-Eastern Thailand) :—

यह क्षेत्र एक पर्वतों से घिरा हुआ बेसिन है। इसका क्षेत्रफल लगभग ६२००० वर्गमील है। वास्तव में यह कोरत का पठार कहलाता है। यह पठार दोंगफिया येन पर्वत के उत्तर व पूर्व के क्षेत्रों को सम्मिलित करता है। मध्य थाईलैंड के भाग से यह एकायक उठे हुये हैं। इनकी ऊँचाई पांच हजार फीट के लगभग है। यहाँ की चट्टानें अधिकतर गुलाबी रंग की सेन्डस्टोन हैं। कहीं कहीं पर आग्नेय चट्टानें भी हैं। कोरत पठार की ऊँचाई लगभग ६०० फीट है। यहां पर वन अधिक मिलते हैं। यहां की मिट्टी अधिक उपजाऊ नहीं है। कृषि केवल ७ प्रतिशत भागों में ही होती है। यहां की जलवायु खेती के अनुकूल नहीं है। यहां वर्षा स्थानीय दशाओं के कारण भी अनिश्चित है। धान की उपज में यहां की कुल बोई हुई भूमि का ९९% है। सेमुन तथा नसी नामक दो छोटी छोटी नदियां सिंचाई के लिये बड़ी महत्वपूर्ण है, यह दोनों मिकांग नदी की ही सहायक नदियाँ हैं। इस भाग में पशु तथा सुअर भी पाले जाते हैं। क्योंकि गाँवों के निकट उत्तम और उपजाऊ मिट्टी मिलती है। तम्बाकू, कपास, तथा शहतूत की खेती भी थोड़े से संकुचित क्षेत्र में होती है। मिकाँग नदी व्यापारिक दृष्टिकोण से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है, क्योंकि जगह जगह पर इसमें झरने मिलते हैं। इस भाग की जनसंख्या ५० लाख के लगभग है। इनमें कुछ लाओज़, स्यामीज़ तथा कम्बोडियन भी शामिल हैं।

भूतपूर्व सामूहिक राज्य
(फ्रेंच इन्डोचीन)

यह प्रदेश दक्षिणी-पूर्वीय एशिया में एक प्रायद्वीप पर स्थित है। इसके पश्चिम में थाइलैंड तथा उत्तर-पूर्व में दक्षिणी चीन सागर प्राकृतिक सीमायें बनाते हैं। दक्षिण की ओर यह स्याम की खाड़ी से घिरा हुआ है। इस प्रदेश का क्षेत्रफल २,७२,३५५ वर्गमील है। एशिया महाद्वीप के दक्षिणी-पूर्वीय भाग में इतना विस्तृत तथा घना बसा हुआ प्रदेश अन्य कोई भी नहीं है। पहले यह पूरा भाग कोचीन चीन कहलाता था। फ्रांसीसी लोगों का अधिकार इसके कुछ भाग में सन् १८५८ में हो गया था। इन्डोचीन संघ की स्थापना सन् १८६६ में उस समय हुई थी, जब कि फ्रांस ने अनाम, कम्बोडिया, लेओज़, टोंगकिन तथा कोचिन चीन की फ्रेंच उपनिवेश को फ्रेंच प्रोटेक्टोरेट (Protectorate) दे दी थी। संविधान के अन्तर्गत इन्डोचीनी संघ एक फ्रेंच उपनिवेश ही था, यद्यपि पाँच में से चार राज्यों को प्रोटेक्टोरेट (Protectorate) दी गई थी। फ्रेंच इन्डोचीनी संघ का अन्त सन् १६४६ में हुआ जब कि कम्बोडिया, लेओज़ तथा वीटनम (बाद वाले में अनाम, कोचिन चीन तथा टोंगकिन सम्मिलित हैं) फ्रेंच संघ के अन्तर्गत स्वतन्त्र राज्य घोषित कर दिये गये। सन् १६५० से यह तीनों देश सामूहिक राज्यों के नाम से पुकारे जाने लगे। प्रत्येक राज्य में एक कमिश्नर जनरल (General Paul Ely) फ्रांस के प्रतिनिधि के रूप में रखा गया। वास्तव में एशिया का यह भाग विश्व में राजनैतिक चर्चा का केन्द्र रहा है। कई वर्षों तक यहां राजनैतिक संघर्ष भी होता रहा। जेनेवा सम्मेलन के समझौते के अन्तर्गत अब यहाँ कुछ शान्ति स्थापित हो गई है। उन्तीस दिसम्बर सन् १६५४ के पेरिस समझौते के अन्तर्गत प्रत्येक राज्य को पूर्ण राज्य सत्ता (Sovereignty) प्रदान कर दी गई है।

भौतिक रूप (Physical Aspects)

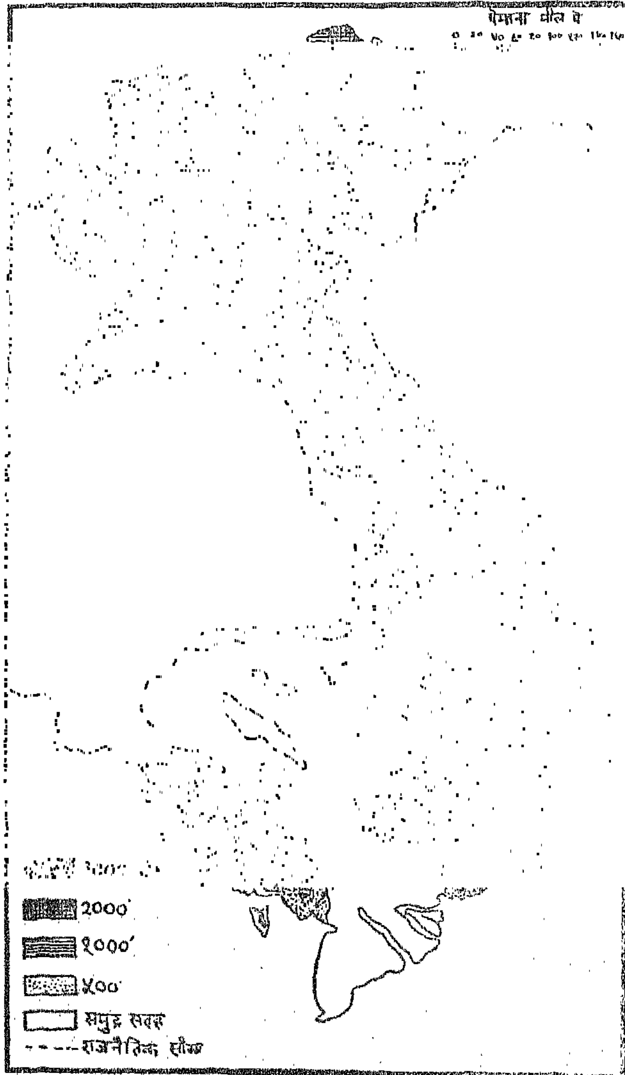
धरातल तथा बनावट (Relief and Structure)—

इण्डोचीन के धरातल का अध्ययन करने से हमें यहां पर वे पर्वत श्रेणियां मिलती हैं जो कि दक्षिणी चीन की श्रेणियों का क्रम है, तथा देश को कई बेसिनों में विभाजित करती हैं। वास्तव में समस्त इंडोचीन के आधे भाग में इन पर्वत श्रेणियों का विस्तार है। ये पर्वत श्रेणियां उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर फैली हुई हैं। इनमें तीन प्रमुख हैं। उत्तर की ओर चीन की सीमा के निकट एक

शाखा लाल नदी के बेसिन के उत्तर में स्थित है, यह टौंगकिंग को चीन से अलग करती है। यह श्रेणी बहुत घिसी हुई है और कई स्थानों पर इसमें चूने की चट्टानें भी पाई जाती हैं। इन चट्टानों में सीधी दीवारों वाली गहरी गहरी घाटियां बन गई हैं। टांगकिंग की खाड़ी में कई ऐसे द्वीप हैं, जो इसी श्रेणी से सम्बन्धित हैं तथा जिनमें कार्स्ट (Karst) क्षेत्र पाये जाते हैं। इस श्रेणी की अधिक से अधिक ऊँचाई ७८७६ फीट है। इसी के निकट कुछ पठार चार या पांच हज़ार फीट ऊंचे हैं। यहां से अनामाइट कार्डिलिरा (Annamite Cordillera) जो कि द्वितीय श्रेणी है, दक्षिण-पूर्व की ओर फैली हुई है। यह श्रेणी अनामीज़ तट के समानान्तर विस्तृत है, और अनामराज्य को लाओज़ राज्य से पृथक करती है। इस द्वितीय श्रेणी में कई अन्य छोटी छोटी श्रेणियां तथा पठार सम्मिलित हैं। यह देश के एक कोने से दूसरे तक विस्तृत हैं। पर्वत शिखाओं की ऊँचाई १०००० फीट से आधक है। इस श्रेणी में घाटियां काफी ऊँचाई पर पाई जाती हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध 'अनामगेट' नामक घाटी है, इसी में होकर अनामाइट लोगों ने दक्षिण की ओर अपने शत्रु कोचीन-चीनियों पर आक्रमण किया था। अनाम व लाओज़ के मध्य केवल एक ही प्रसिद्ध घाटी है, वह अइलाओ (Ailao) कहलाती है तथा मिकांग नदी पर स्थित है। इस श्रेणी की कई चोटियां ६००० फीट से भी ऊंची हैं। मिकांग तथा पूर्वी तट के मध्य इन पर्वतों के कारण यातायात असम्भव हो गया है। तृतीय श्रेणी के पर्वत दक्षिण-पश्चिम की ओर कम्बोडिया के भाग में हैं। यह अधिक ऊंचे नहीं हैं, अधिक से अधिक ऊंचाई ४१५० फीट है। वास्तव में यदि देखा जाय तो बोलोवन दक्षिण में तथा इसी की शाखा जो पश्चिम की ओर स्याम की खाड़ी के तट तक चली गई है, डाँकफाक कहलाती है। भूगर्भशास्त्रियों का कथन है कि यह पर्वत तथा उत्तर के अनामाइट कार्डिलिरा, ढाँचे के दृष्टिकोण से यूनान के पहाड़ी क्षेत्र से ही सम्बन्धित हैं। इनका टरशियरी पर्वत श्रेणियों से कोई सम्बन्ध नहीं है।

मैदानी भाग यहाँ पर आन्तरिक क्षेत्रों में तथा समुद्र तट पर ही पाये जाते हैं। आन्तरिक क्षेत्रों में जो समतल मैदान पाये जाते हैं उनमें उत्तर की ओर वह टांगकिंग का मैदान है जिसमें थोड़ा सा भाग लाओज़ का भी सम्मिलित है। दक्षिण की ओर कम्बोडिया का समतल बेसिन तथा बिल्कुल दक्षिण में मिकांग नदी का समतल डेल्टा भी इसमें सम्मिलित है। कम्बोडिया के भाग में एक बड़ी झील है जिसका क्षेत्रफल १००० वर्गमील है तथा जो कि टौलिसाप (Tonle Sop) के नाम से प्रसिद्ध है। यह झील मिकांग नदी से, एक इसी नाम के चालीस या पचास मील जलाशय द्वारा मिली हुई है। इस झील की विशेषता यह है कि वर्षा ऋतु में छः माह तक जब कि मिकांग नदी में बहुत अधिक जल आ

जाता है, उस समय एक जलधारा मिकांग से झील की ओर बहती है, तथा शुष्क ऋतु के छै माह तक, जबकि झील क्षेत्र में केवल एक तिहाई ही रह जाती है,



इण्डोचीन का भौतिक रूप

तो इसका जल मिकांग नदी की ओर बहने लगता है। थोड़े समय तक इस झील पर समुद्र के ज्वार-भाटों का भी प्रभाव रहता है यद्यपि समुद्र यहां से लगभग १८०

मील दूर है। आर्थिक दृष्टिकोण से इसकी महत्ता इसलिए अधिक है कि यह बाढ़ के प्रवाह को कम करती है, तथा लोगों के लिए मछली प्रदान करने का साधन है। उत्तर में टांगकिंग के मैदान में लाल नदी (सोंग-कोई) तथा उसकी सहायक काली नदी (सोंगबा) का डेल्टा स्थित है जिसका क्षेत्रफल साढ़े पाँच हजार वर्गमील के लगभग है। ऐसा प्रतीत होता है कि लाल नदी का धरातल कुछ ऊपर उठ गया है, क्योंकि हनोई समुद्र सतह से केवल पन्द्रह फीट ऊंचा है। शेष नदी का धरातल अन्य निकटवर्तीय क्षेत्रों से ३० फीट से भी अधिक ऊंचा उठा हुआ है। जल को रोकने के लिए नदी के दोनों ओर बाँध बनाने पड़े हैं।

अनाम का समुद्र तट कई छोटे छोटे डेल्टों तथा सकरे तटीय मैदानों से घिरा हुआ है। इस तटीय भाग में बहुत से ऐसे स्थान हैं, जो सुरक्षित नहीं हैं। केवल एक बन्दरगाह केमरान की खाड़ी (Cam Ranh Bay) प्रसिद्ध है, यही एक ऐसा सुरक्षित स्थान है, जहां जलयान निडर होकर ठहर सकते हैं। इस सम्पूर्ण तटीय भाग का क्षेत्रफल लगभग ७८०० वर्ग मील हैं।

मिकांग डेल्टा वास्तव में नोम पेन (Pnom Penh) से आरम्भ होता है, इसका बहुत सा भाग कोचीन क्षेत्र में भी सम्मिलित है, लेकिन यह कम्बोडिया तक विस्तृत चला गया है। मिकाँग नदी अपने साथ इतनी अधिक मिट्टी लाकर डेल्टे पर एकत्रित करती है, कि यह भाग समुद्र की ओर लगभग ८४ गज प्रतिवर्ष बढ़ रहा है। वास्तव में यह भाग इण्डोचीन का सबसे बड़ा मैदान है, इसका क्षेत्रफल लगभग २६००० वर्ग मील है।

जलवायु (Climate)—

मानचित्र पर इण्डोचीन की स्थिति उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में है। यह देश भी मानसून प्रदेश में सम्मिलित है। यहां पर भी अन्य मानसून देशों की भांति दो ऋतुयें प्रत्यक्ष हैं, पहली ग्रीष्म ऋतु, जिसमें कि वर्षा दक्षिणी-पश्चिमी मानसून से यहाँ के बहुत से क्षेत्रों में होती है। दूसरी शीत ऋतु, जिसमें वर्षा उत्तरी-पूर्वी मानसून से केवल अनाम में ही हो पाती है एवं शेष भाग शुष्क रहता है। ग्रीष्म-ऋतु अप्रैल से अक्टूबर तक तथा शीत ऋतु नवम्बर से मार्च तक रहती है। दोनों ऋतुओं के तापक्रम पर स्थानीय वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ता है। उत्तर की ओर अनाम लाओज तथा टांगकिंग में शुष्क ऋतु कुछ ठण्डी रहती है, परन्तु वर्षा

In Saigan April, the warmest month records 86° F and Dec. the coolest records 80° F. Rainfall amounts to 78 inches. Wettest month Sep. records 14 inches and driest month February records 1 inch. —From G. B. Cressey Asia's Lands and its People.

ऋतु में तीव्र समुद्री हवाओं के अतिरिक्त कभी कभी तूफ़ान भी आ जाया करते हैं। दक्षिण की ओर कोचीन चीन, कम्बोडिया तथा दक्षिणी अनाम में तापक्रम वर्ष भर ऊंचा ही रहता है, और गर्मी का मौसम तो और भी विषम रहता है। मध्य अनाम तथा लाओज में मई, जून, जुलाई तथा अगस्त के महीने बहुत ही गर्म रहते हैं। वर्षा यहां जनवरी व फरवरी तक होती रहती है। यहां पर जलवायु सम्बन्धी वातावरण वास्तव में उसी प्रकार का पाया जाता है, जैसा कि भारतवर्ष के दक्षिणी-पूर्वी भाग में प्रायः रहता है। यहां पर कुछ ऐसे भी पर्वतीय क्षेत्र हैं, जहां वर्षा दो सौ इंच से भी अधिक हो जाया करती है। परन्तु वह भी केवल दक्षिणी-पश्चिमी मानसून से।

मानव रूप (Human Aspect)

ऐतिहासिक आधार (Historical Background)

इण्डोचीन का वास्तविक इतिहास २०० बी० सी० से प्रारम्भ होता है। इस समय अनामीज़ लोगों ने इस देश पर आक्रमण कर दिया था और सम्पूर्ण देश में फैल गये थे। अनामीज़ का वास्तविक स्थान दक्षिणी चीन बतलाया जाता है। इस प्रकार से चीनियों का राज्य इस देश पर २१३ B.C. से ९३१ A.D. तक रहा। ये लोग बड़े कुशल, परिश्रमी तथा समझदार हैं, इनमें चीनी संस्कृति की लगभग सभी विशेषतायें पाई जाती हैं। यह लोग आपस में लड़ते झगड़ते भी रहते थे। फ्रैंच लोगों का आना यहां सत्रहवीं शताब्दी में आरम्भ हुआ। इन लोगों को राजनैतिक अधिकार प्राप्त करने के लिये अनेक युद्ध लड़ने पड़े थे। सन् १८८४ तक इन लोगों ने मिकांग नदी से लेकर चीन सागर तक के क्षेत्र में अपना आतंक जमा लिया। अनाम तथा टांगकिंग (१८८४–८६) तक समझौते के अन्तर्गत फ्रैंच राज्य में सम्मिलित हो गये। इसमें सँकरा तटीय मैदान है, जो उत्तर से दक्षिण तक फैला हुआ है। इसके तीन भाग हैं, पहला टौंगकिंग या टंग-नोई जिसे पूर्वी क्षेत्र भी कहते हैं, और जिसे सौंगका का जल स्पर्श करता रहता है। दूसरा कौंचिन चीन या दंगकांग जो कि आन्तरिक क्षेत्र कहलाता है। तीसरा चिआम्पा या सियाम्पा कहलाता है, यह प्रायद्वीप के बिल्कुल दक्षिण-पूर्व में स्थित है। इस सम्पूर्ण भाग में वह क्षेत्र भी सम्मिलित हैं, जो कि आधा स्वतन्त्र है, और जिसमें कि जंगली जातियाँ (मोई) रहती हैं। इसके अलावा मिकांग के

Cambodia was added in 1884, Tongking after a longer and more costly conquest in 1884, Laos in 1893. The present limits date from 1907 when Indochina absorbed a small area from Siam.

पश्चिम का भी थोड़ा सा भाग जहां लाओ लोग रहते हैं, इसके अन्तर्गत है। पहले अनाम, कम्बोडिया तथा मिकांग डेल्टे तक अपना अधिकार प्रकट करता था। बाद में ये सब भाग फ्रेंच इण्डोचीन में ही सम्मिलित कर लिये गये।

फ्रेंच साम्राज्य में इण्डोचीन ही सबसे घना बसा हुआ तथा उन्नतिशील प्रदेश है। फ्रेंच लोगों को यह बात रुचिकर नहीं है कि उनके साम्राज्य में कोई ऐसा देश हो, जो कि उन्हीं की अध्यक्षता में स्वतन्त्र हो।

द्वितीय महायुद्ध के समय यहाँ पर गृह-युद्ध (Civil War) उत्पन्न हो गया, क्योंकि इसपर जापानियों ने युद्ध के समय अपना अधिकार जमा लिया था, और साथ ही कम्युनिस्ट लोग अपना प्रभाव फैलाने की चेष्टा कर रहे थे। इन्हीं दो कारणों से राज्यों में तनातनी उत्पन्न हो गई, और उसी समय गृह विद्रोह उत्पन्न हो गया - इस विद्रोह के फल-स्वरूप यहाँ पर दो क्षेत्र स्थापित हो गये। पहला जो कि दक्षिण की ओर है 'वीट नम' (Viet Nam) तथा दूसरा जो कि शेष उत्तर का भाग है 'वीट मिन' Viet Min) कहलाने लगा।

जनसंख्या वितरण (Population Distribution)

इण्डोचीन की वर्तमान जनसंख्या २७,४६०,००० से अधिक है। सन् १९०८ में यह २१,५००,०००; १९३१ में लगभग २१,६५२,००० तथा १९४७ में यह २७,०३०,००० हो गई थी। इनमें से चीनियों की संख्या ३२६००० से अधिक तथा योरोपवासियों की लगभग ४३००० है। जनसंख्या वितरण पर यहाँ के धरातल का गहरा प्रभाव पड़ा है। पर्वतों की अपेक्षा समतल भागों में जनसंख्या घनत्व अधिक पाया जाता है। टांगकिंग डेल्टा प्रदेश में १५०० व्यक्ति से अधिक लोग प्रति वर्ग मील में रहते हैं। अनाम के समतल भागों में औसत घनत्व केवल ५५० व्यक्ति प्रति वर्ग मील है। मध्य कोचिन चीन में लगभग ४०० व्यक्ति प्रति वर्ग तथा कम्बोडिया में केवल २०० व्यक्ति प्रति वर्ग मील ही पाये जाते हैं। शेष पर्वतीय भागों में घनत्व केवल पन्द्रह या बीस प्रति वर्ग मील ही है। इन कम घने क्षेत्रों के विपरीत यहाँ ऐसे भी क्षेत्र पाये जाते हैं जैसे टांगकिंग डेल्टा प्रदेश, जहाँ प्रति वर्ग मील घनत्व ६००० व्यक्तियों से भी अधिक है। यहाँ पर उन ग्रामीण लोगों की अधिक जनसंख्या है, जो धान की खेती करते हैं।

यहाँ के प्रमुख नगरों में हनोई एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहाँ की जनसंख्या १५०००० है। यह नगर समुद्र से ६ या ७ मील भीतर की ओर स्थित है। यह एक बहुत ही सुन्दर नगर है। यहाँ पर आधुनिक भवन, बाजार तथा कारखाने पाये जाते हैं। नगर के मध्य में एक सुन्दर झील है और एक पेगोडा भी मिलता है, जिसमें बुद्ध भगवान की मूर्ति रखी है। फ्रेंच लोगों ने

इसे और भी रमणीय बना दिया है। यहाँ का बन्दरगाह हाईफोंग है।

दूसरा प्रसिद्ध नगर सैगान है, इसकी जनसंख्या १८६,७५० है, यह भी एक सुन्दर नगर है तथा वर्तमान समय में यह एक अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक केन्द्र भी हो गया है। तीसरा नगर चीलोन जिसकी जनसंख्या २००,००० है, इसी के निकट स्थित है, यह एक औद्योगिक नगर है। इन नगरों के अतिरिक्त अन्य ऐसे नगर भी हैं जिनकी जनसंख्या एक लाख से अधिक है।

आर्थिक रूप (Economic Aspect)

प्राकृतिक वनस्पति (Natural Vegetation) :—

यह देश मानसून प्रकार की जलवायु में स्थित है। अतः अधिक वर्षा केवल ग्रीष्म ऋतु में ही होती है। ऐसे क्षेत्र जिनमें अधिक वर्षा होती है, वनों से ढके हुये होते हैं। ये वन भी पर्वत श्रेणियों तथा तराई-प्रदेशों की मुख्य सम्पत्ति हैं। समतल भागों में घनी वनस्पति नहीं मिलती। कम्बोडिया के आधे भाग में वन मिलते हैं। यहाँ से बहुमूल्य लकड़ी प्राप्त होती है। अनाम तथा लाओज के बहुत से भाग उत्तम श्रेणी की लकड़ी के लिये प्रसिद्ध हैं। यहाँ के वनों से लाख भी प्राप्त किया जाता है। उत्तर में टांगकिंग की पहाड़ियां साधारण वनों से ढकी हुई हैं। वनीय क्षेत्रों में हमको रबड़, बाँस, सागौन, कपूर, नारियल आदि वृक्ष मिलते हैं। वर्षाऋतु में उत्तम श्रेणी की लकड़ी मिकांग नदी में बहाकर सैगान बन्दरगाह पर लाई जाती है। यहाँ से विदेशों को लकड़ी निर्यात भी की जाती हैं।

कृषि (Agriculture) :—

यहां के लोगों का मुख्य धन्धा कृषि है। जनसंख्या का सबसे अधिक भाग इसी उद्योग में लगा हुआ है। यहां की समस्त भूमि के १३% पर कृषि की जाती है। धान तथा कपास यहां की प्रमुख उपजें हैं। धान तो यहां इतना अधिक उगाया जाता है, कि उपज का २/३ भाग निर्यात कर दिया जाता है। फ्रांसीसी इसे कुछ अपने देश में भी आयात करते हैं। चाय यहां पर लाओज़ की पहाड़ियों पर उत्पन्न होती है। कम्बोडिया में थोड़ा सा कहवा भी उत्पन्न किया जाता है। इसके अतिरिक्त गेहूं, जौ, मक्का भी थोड़ी मात्रा में उत्पन्न किया जाता है। कुछ भागों में गन्ना, तम्बाकू, गरम मसाले भी उगाये जाते हैं। इनके अलावा भांति भांति की तरकारियां उत्पन्न की जाती हैं। यहां से इन वस्तुओं का निर्यात भी होता है। सुपारी नील तथा पीपर की कृषि भी यहां आरम्भ हो गई है।

कृषि करने के ढंग यहां प्राचीन हैं। आधुनिक मशीनों का प्रयोग यहां नहीं किया जाता। जो कृषक ऐसे मैदानी भागों में रहते हैं, जहां विदेशी लोग भी रहते

हैं, वे कुछ साधारण सी मशीनों का प्रयोग करने लगे हैं। भूमि सम्बन्धी समस्यायें भी यहाँ अनेक हैं। यहाँ की प्रति एकड़ उपज बहुत कम हैं। खाद डालने के ढंग भी यहाँ प्राचीन ही हैं। जो चीनी लोग यहाँ रहते हैं, वे कृषि अपने ही ढंग से करते हैं। अधिकतर चीनी सब्ज़ी इत्यादि उत्पन्न करते हैं।

वर्तमान समय में जहाँ कम्यूनिस्टों का प्रभाव पड़ा है, वहाँ कृषि आधुनिक ढंग से की जाने लगी है, परन्तु आर्थिक दशा सन्तोषजनक न होने के कारण बहुत ही कम लोग इससे लाभ उठा पाते हैं। परन्तु भविष्य में यदि इस देश में शान्ति स्थापित रही तो अवश्य ही कृषि में विकास होगा। यहाँ के निवासी मछलियां भी पकड़ते हैं। यह भी इनका मुख्य भोजन है। मछलियां समुद्र, नदी तथा झीलों से अधिक पकड़ी जाती हैं। कम्बोडिया से चीन को मछली निर्यात भी की जाती है।

खनिज पदार्थ सम्पत्ति (Mineral Wealth) :—

खनिज पदार्थों में इस देश की स्थिति सन्तोषजनक है। यहाँ के अधिकांश खनिज पदार्थ उत्तर में पाये जाते हैं। परन्तु अब कुछ धातुयें दक्षिणी-पश्चिमी भाग में भी निकाली जाने लगी हैं। उत्तर में टांगकिंग की कोयले की खानें बहुत प्रसिद्ध हैं। इनसे पहले ६ लाख टन उत्तम श्रेणी का एन्थ्रेसाइट कोयला प्राप्त किया जाता था। सन् १६३७-३८ में उत्पादन बढ़ कर २५ लाख टन हो गया, परन्तु, दुर्भाग्य से १६४६ में यह केवल २॥ लाख टन से कुछ अधिक रह गया। यहाँ की प्रसिद्ध कोयले की खान होंगहे है, जो कि हाइफाँग के पूर्व में स्थित है। वास्तव ये टांगकिंग की खानें सबसे पहले ब्रिटिश लोगों ने तट के निकट एक द्वीप पर खोदी थीं, परन्तु बाद में फ्रांसीसियों ने इसकी खुदाई आधुनिक ढंग से आरम्भ कर दी। कोयले का उत्पादन इस समय कम्यूनिस्टों की देख रेख में बढ़ रहा है।

अन्य खनिज पदार्थों में रांगा, जिंक, टंगस्टन, ऐन्टीमनी, क्रोमियम, लोहा तथा मैंगनीज़ इत्यादि प्राप्त [illegible] हैं। [illegible] नाम की चट्टानें दक्षिण की ओर खोदी जाती हैं। इनका भण्डार बहुत ही विस्तृत है, इसी लिये इस खनिज का भविष्य बड़ा उज्ज्वल है। खनिज पदार्थों का यहाँ से निर्यात भी होता है।

उद्योग-धन्धे (Industries) :—

इण्डोचीन में आधुनिक उद्योग धन्धे बहुत कम पाये जाते हैं। वैसे यहाँ पर औद्योगिक प्रगति के लिये अनेक सुविधायें पाई जाती हैं। जल-शक्ति का यहाँ पर्याप्त विकास हुआ है, कोयला भी यहाँ शक्ति के रूप में इन उद्योगों में प्रयोग किया जा सकता है। इसके अलावा कच्चा माल जो कि आधुनिक उद्योगों में

प्रयोग किया जाता है, यहाँ पर प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता हैं। हल्के तथा घरेलू उद्योगों के लिये कपास, रबड़, रेशम, लकड़ी तथा रसायन इत्यादि यहाँ पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं।

यहाँ के आधुनिक उद्योग धन्धों की स्थापना वास्तव में फ्रेंच लोगों के कारण ही हुई है। दक्षिण-पूर्वी एशिया में फ्रेंच लोगों की कदाचित कोई भी ऐसी कोलोनी नहीं है, जिसमें इतनी अधिक औद्योगिक प्रगति हुई हो, अथवा होने की सम्भावनायें हों। औद्योगिक दृष्टिकोण से इस देश का भविष्य बहुत उज्ज्वल है।

वर्तमान समय में जो उद्योग धन्धे यहाँ पर पाये जाते हैं, उनमें चावल कूटना, सूती, ऊनी व रेशमी वस्त्र, शक्कर तैयार करना, रसायन, सीमेन्ट, शीशा इत्यादि उल्लेखनीय हैं। भारी उद्योगों की भी यहाँ काफी उन्नति हुई है। रेलों व साइकिलों के कारखाने भी यहाँ पर खुल गये हैं। लोहे व इस्पात के उद्योगों में अधिक उन्नति न होने के दो ही प्रमुख कारण हैं। पहला—द्वितीय महायुद्ध के प्रभाव के कारण, दूसरा वीट-नम तथा वीट-मिन के क्षेत्रों में आपसी झगड़े। यदि यहाँ पर शान्ति रहे तथा सुविधायें प्रचुर मात्रा में प्राप्त हों तो निश्चय ही यह देश उद्योग धन्धों में शीघ्र उन्नति कर जायेगा।

यातायात के साधन (Means of Transport & Communication)

यातायात के साधनों की यहाँ अधिक उन्नति नहीं हो सकी, क्योंकि यहाँ का अधिकांश भाग पहाड़ी है, इसके अतिरिक्त औद्योगिक विकास कम होने से यातायात के साधनों की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जा सका। यहाँ पर कुछ जल तथा थल मार्गों का विकास हुआ है।

रेलवे लाइनों की ओर यदि ध्यान दिया जाये तो हम देखेंगे कि एक रेल-मार्ग समुद्र के किनारे किनारे दक्षिण तक आता है, उत्तर में इसी की दो शाखायें दक्षिणी चीन में प्रवेश कर जाती हैं। ये दोनों रेल मार्ग बड़े महत्वपूर्ण हैं। एक नवीन रेलमार्ग दक्षिण-पश्चिम में और बना दिया गया है, यह नाम पेन (Pnom-penh) को थाइलैण्ड से मिलाती है। इसके अलावा और कोई भी रेल मार्ग इस देश में नहीं पाया जाता।

जल मार्गों की दृष्टि से सब से महत्वपूर्ण नदी मिकांग है, जो अपने मुहाने से ३५० मील भीतर तक जहाज चलाने योग्य है इसके मार्ग में कई झरने हैं इसलिये यह अधिक दूर तक उपयोगी न हो सकी। लाल नदी एक दूसरी महत्वपूर्ण नदी है, यह २५० मील से भी अधिक दूर तक जहाज़ चलाने योग्य है इन दोनों नदियों में जहाज़ों द्वारा आन्तरिक क्षेत्र तक व्यापार होता है।

हवाई यातायात में भी अब यहाँ धीरे धीरे प्रगति हो रही है। यहां लगभग सभी बड़े बड़े क्षेत्रों के वायुयान आते हैं छ, सेगोन तथा पिनांग से, सैगोन, बैंकाक तथा होंगकोंग से और एक तीसरा वायुमार्ग बैंकाक से हनोई तथा कन्टन

तक जाता है। इन वायु मार्गों पर लगभग सभी बड़ी बड़ी कम्पनियों के वायुयान आया करते हैं। आधुनिक हवाई अड्डे, सैगान तथा हनोई में ही मिलते हैं।

विदेशी व्यापार (Foreign Trade)

विदेशी व्यापार में इस देश का दक्षिण पूर्वी एशिया में एक महत्वपूर्ण स्थान है। गत वर्षों से अधिक विदेशी व्यापार फ्रांसीसियों के अधिकार में था, और वे सब से अधिक वस्तुएं अपने देश को ले जाते थे, परन्तु अब यह देश अन्य देशों से भी कुछ वस्तुओं का व्यापार करने लगा है।

चावल यहाँ का मुख्य निर्यात पदार्थ है, इसके अतिरिक्त मछली, काली मिर्च, मक्का, रबड़, लकड़ी, खनिज पदार्थ इत्यादि वस्तुयें भी बाहर भेजी जाती हैं।

आयात की जाने वाली वस्तुओं में सूती, ऊनी व रेशमी कपड़ा, मशीनें, फौलाद धातु का सामान, कागज़, जूट, चाय, शराब तथा रसायन आदि मुख्य हैं।

राजनैतिक रूप (Political Aspect)

राजनैतिक संघर्ष (Political Conflict):—

वास्तव में इण्डोचीन पाँच भागों में ही विभाजित था, वे क्रमशः अनाम, कम्बोडिया, टाँगकिंन, कोचिन-चीन तथा लाओज़ हैं। अधिक जन संख्या अनामट लोगों की ही है। सोलहवी शताब्दी के मध्य से सम्पूर्ण देश फ्रांसीसियों के अधिकार में आ गया था। इण्डोचीन के इतिहास में नवीन परिवर्तन १९४४ में हुआ, जबकि नाजी लोगों ने फ्राँस पर अधिकार कर लिया था तथा फ्राँस की विची (Vichy) सरकार को जापानियों को इण्डोचीन में अपना आधार, सिंगापुर के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही करने हेतु, बनाने की अनुमति देनी पड़ी। परन्तु जब १९४५ में जापानी लोग हार गये, तो ब्रिटिश तथा चीनी सेनायें इण्डोचीन में प्रवेश कर गईं यद्यपि नेशनलिस्ट लोगों ने उन्हें हटाने का भरसक प्रयत्न किया। सन् १९४६ में कुछ राजनैतिक परिवर्तनों के बाद फिर से इण्डोचीन फ्राँस को वापिस मिल गया। परन्तु नेशनलिस्ट लोगों ने अपने योग्य नेता हो ची मिन (जो कम्युनिस्ट हैं) की सहायता से फ्राँसीसियों के विरुद्ध एक विद्रोह उत्पन्न कर दिया इसमें फ्राँसीसियों को बड़ी हानि उठानी पड़ी। तुरन्त उन लोगों ने यह निश्चय कर लिया कि वीट नमीज़ (टाँककिंन तथा अनाम के निवासियों) को स्वतन्त्र कर दिया जाय, परन्तु वह रक्खे फ्रैंच यूनियन में ही जायें। इस प्रकार से मार्च १९४५ में यह एक रिपब्लिक घोषित कर दिया गया, इसके नेता हो ची मिन ही हुये। यह लोग कोचिन चीन को भी अपने राज्य में सम्मिलित करना चाहते थे,

इसीलिये यह संघर्ष समाप्त नहीं हुआ, वरन् दशा बिगड़ती ही गई। एक गोलमेज कान्फ्रेंस भी बुलाई गई, परन्तु इससे भी कोई विशेष सफलता प्राप्त नहीं हुई। सम्राट बाओ दाई ने फ्राँस को सलाह दी कि वीट नमीज़ के प्रस्ताव को स्वीकार कर लें, परन्तु वह न माने इसी प्रकार कोचिन चीन की एसेम्बली ने भी वीटनम के साथ मिलने के लिये चुनाव में वोट दिया था। फ्राँसीसी यह चाहते थे कि बाओ दाई वीटनम के सम्राट हो जायें, परन्तु नेशनलिस्टों ने इसका विरोध किया।

इस प्रकार बाओ दाई, (जिसे फ्रेंच सहायता दे रहे थे,) तथा हो ची मिन (जिसे नेशनलिस्ट की सहायता प्राप्त थी) में बराबर संघर्ष चलता रहा। संयुक्त राज्य अमरीका यह नहीं चाहता कि वीट नम कम्युनिस्ट लोगों के अधिकार में चला जाय, क्योंकि इसका मतलब यह होगा कि सम्पूर्ण दक्षिण-पूर्वी एशिया उनके अधिकार में चला जायेगा। इसी दृष्टिकोण से संयुक्त राज्य अमरीका ने छिपे तौर पर फ्राँसीसियों की सहायता की जिससे कि वे वहाँ डटे रहें। वीट नमीज़ लोग कम्युनिस्ट चीन से सहायता की आशा कर रहे थे और उन्हें मिल भी गई। इस प्रकार से यहाँ दोनों पार्टियों में कई बार घमासान युद्ध हुये।

जुलाई सन* १९५४ में जेनाआ कान्फ्रेन्स में इस बात की बहुत कोशिश की गई कि किसी प्रकार इण्डोचीन में शान्ति स्थापित हो जाय। कई दिन बराबर वाद-विवाद होने के पश्चात् यह निश्चय हो गया, कि २८ जुलाई तक इस क्षेत्र में पूर्ण शान्ति स्थापित कर दी जाय। वीट नम तथा लाओज़ में साढ़े सात वर्ष के बाद एक समझौता हो गया। कम्बोडिया में शान्ति स्थापित करने के लिये इण्डोचीन के तीनों राज्यों को हस्ताक्षर करने पड़े।

शान्ति स्थापित कराने के हेतु एक संयुक्त अन्तर्राष्ट्रीय कमीशन नियुक्त किया गया, इसमें भारतवर्ष, पोलैंड तथा कनाडा सम्मिलित हैं। वर्तमान स्थिति यह है, कि+ समझौते के अन्तर्गत यहाँ पर पूर्ण शान्ति स्थापित हो गई है, तीनों राज्यों (वीट नम, लाओज़ तथा कम्बोडिया) को पूर्ण स्वतन्त्रता दे दी गई है। गत महीनों में कैदियों को बदलने का कार्य भी हुआ है। अब एक सामान्य चुनाव होने को है, इस चुनाव में गुप्त निर्वाचन प्रणाली अपनाई जायेगी। कदाचित भविष्य में कुछ और राजनैतिक परिवर्तन होने की आशा है।

---

* Free election would take place in Cambodia and Laos in 1955 and Viet Nam in July 1956.

\+ On July 21, the cease fire agreements for Viet Nam, Laos, and Cambodia were signed at Geneva.

(Hindustan Times, dated July 23, 1954)

सांस्कृतिक रूप (Cultural Aspect)

जाति (Race) :—

इन्डोचीन में विभिन्न जातियों के लोग पाये जाते हैं। परन्तु इन सब में अनामीज की संख्या सबसे अधिक है। अनामीज लोग जैसा कि हम पहले बतला चुके हैं, ईसा से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व दक्षिण चीन से आकर बसे हैं अतः हम कह सकते हैं कि ये लोग मंगोल जाति के हैं। इनका आकार व रूपरंग चीनी लोगों से बहुत कुछ मिलता जुलता है। भाषा यद्यपि कुछ भिन्न है परन्तु स्वर चीनी भाषा से बिल्कुल मिलते जुलते हैं। अनाम के पश्चिम में लाओज़ आदि के लोग बसे हुये हैं। इनके विषय में कहा जाता है कि यह थाई जाति के हैं, क्योंकि थाईलैंड के उत्तर में भी कुछ लाओज जाति के लोग मिलते हैं। इनके विषय में यह भी कहा जाता है, कि यह उसी जाति के हैं जिसके कि शान तथा स्यामीज़ हैं। इनकी भाषा का जन्म यद्यपि एक ही लिपि से हुआ है, परन्तु आपस में थोड़ी सी भिन्नता पाई जाती है। दक्षिण में कम्बोडियन अथवा खमेर (Khamer) एक प्राचीन आस्ट्रो-एशियाटिक जाति है। ये यहाँ पर अति प्राचीन काल से रह रहे हैं। इन पर सबसे गहरा प्रभाव मौन्स (Mons) जाति का पड़ा है, क्योंकि कम्बोडियन लोगों ने इनको दक्षिणी थाईलैंड से मार भगाया था। कम्बोडियन लोगों ने अपनी संस्कृति भारतवर्ष से प्राप्त की है क्योंकि इन लोगों ने बौद्ध धर्म को अपनाया है। इन लोगों ने नवीं शताब्दी में इन्डोचीन के दक्षिण में एक शक्तिशाली राज्य स्थापित कर लिया था। इसकी राजधानी अंगकोर थी। आजकल यह जातियाँ मिश्रित दशा में पाई जाती हैं। इन पर योरोपियन लोगों का गहरा प्रभाव पड़ा है परन्तु फिर भी इनकी संस्कृति इनके जीवन में झलकती है।

चरित्र (Character) :—

इस देश के निवासी अच्छे स्वभाव के होते हैं। ये आपस में बड़े प्रेम से रहते हैं। अपने से बड़ों की इज्जत करना ये अपना परम कर्तव्य समझते हैं। किसी को दुख देना इनकी प्रकृति के बाहर है। पाप से वे बहुत डरते हैं और धर्म का पालन करते हैं। ये लोग बड़े समझदार व बुद्धिमान होते हैं। धन एकत्रित करने में ये अधिक विश्वास नहीं करते। उतना ही परिश्रम करना यह लोग उचित समझते हैं, जितने में पेट भर खाना प्राप्त हो जाये।

धर्म का पालन ठीक उसी प्रकार से करते हैं, जिस प्रकार से चीनी लोग करते हैं। इनकी सामाजिक रीति-रिवाज भी बहुत कुछ चीनियों से मिलती जुलती है। ये लोग लिखने पढ़ने के इच्छुक रहते हैं, परन्तु पर्याप्त सुविधायें न होने के कारण अपढ़ ही हैं। नगर के रहने वाले लोगों के जीवन में शिक्षा व विदेशी सभ्यता के कारण काफी परिवर्तन आ गया है।

भौगोलिक प्रदेश (Geographic Regions)

जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है, मार्च १९४५ के पहले इन्डोचीन पाँच भौगोलिक प्रदेशों में बँटा हुआ था, वे थे (१) टाँगकिन (२) अनाम (३) लाओज (४) कम्बोडिया तथा (५) कोचिन-चीन। इन भौगोलिक प्रदेशों का अध्ययन, अलग अलग बहुत ही आवश्यक है। इन्डोचीन के वर्तमान राजनैतिक विभागों से उनका कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है परन्तु इसमें सन्देह नहीं, कि इन विभागों का गूढ़ अध्ययन करने के पश्चात् ही हम आधुनिक विभागों की भौगोलिक दशा को समझ सकते हैं। वर्तमान राजनैतिक विभागों का हाल संक्षेप में आगे दिया गया है।

(१) टांगकिन (Tongkin) :—

जलवायु तथा स्थिति के दृष्टिकोण से टाँगकिन इन्डोचीन के समस्त भागों से अलग ही है। यह प्राकृतिक तौर पर न केवल चीन के दक्षिणी बन्दरगाह कान्टन से मिला है, वरन् शताब्दियों से चीनियों की अध्यक्षता में रहा है, तथा उन्हीं के अनुसार यहाँ के निवासियों का रहन-सहन भी है। लाल नदी की दो सहायक नदियों सोंग (ब्लैक नदी) तथा सोंग लो (श्वेत नदी) के नाम भी चीनी भाषा में हैं।

इसका क्षेत्रफल लगभग ४०५३० वर्गमील (जो सम्पूर्ण क्षेत्रफल का १४% है) है तथा जनसंख्या ८५.० लाख या कुल इन्डोचीन की लगभग ४३% है। दोनों की ओर दृष्टि डालने पर पता चलता है, कि यहां जनसंख्या घनत्व बहुत अधिक है।

जैसा कि ऊपर बतलाया गया है लाल नदी तथा उसकी सहायक दो नदियाँ इस क्षेत्र की मुख्य नदियां हैं। लाल नदी प्रतिवर्ष ७०,०००,०००,००० क्यूबिक फीट मिट्टी अपनी घाटी में जमा करती है। हनोई जो किसी समय समुद्र तट पर था, अब समुद्र से साठ मील अन्दर की ओर है। इसी प्रकार हंग-पेन जो कि सत्रहवीं शताब्दी में समुद्र तट पर था, अब ३५ मील अन्दर की ओर स्थित है। नदी की घाटी कहीं कहीं पर निकटवर्ती धरातल से ७ फीट ऊँची है प्राचीन समय में इस नदी का जल दूर दूर तक के क्षेत्रों में बाढ़ के रूप में फैल जाया करता था, परन्तु अब बाँध बना कर जल के प्रवाह को कम कर दिया गया है।

इस भाग के पश्चिम में पहाड़ी भाग है, पर्वत श्रेणियाँ बहुत ऊँची नहीं हैं, बल्कि दक्षिणी चीन की ही शाखायें हैं, जो यहाँ तक आई हैं। अधिक क्षेत्र वनस्पति से ढके हुये हैं; क्योंकि यहाँ की जलवायु नम तथा गर्म है। वर्षा अधिकतर ग्रीष्म ऋतु के मानसून से होती है। खनिज पदार्थों में यह देश बड़ा धनवान है, कोयला तथा अन्य धातुयें यहाँ पर विशेषरूप से पाई जाती हैं। कोयले

का निकालना तथा व्यापार बहुत ही सरल है। कोयले की खानों का विस्तार ११० मील के घेरे में सात पैगोडा से लेकर मोन काई तक पाया जाता है। दोनों क्षेत्र तथा अलोंग की खाड़ी प्रसिद्ध, क्षेत्र है। कोयला उत्तम श्रेणी का ऐन्थ्रसाइट किस्म का है। अन्य धातुओं में जिन्क लोहा फास्फेट, राँगा तथा ग्रेफाइट हैं। जिन्क की खानें स्वेत नदी के ऊपर थुयेन-क्वांग पर तथा सोंग-साई के ऊपर थाई-गुयेन पर मिलती हैं। लोहा उत्तम किस्म का हिमेटाइट थाई-गुयेन के स्थान पर काफी मिलता है। राँगा तथा टंगस्टन दोनों दाने दार चट्टानों के साथ प्राचीन चूने की चट्टानों में मिलता है, खानें पीआ वक (६३००') के स्थान पर है।

यहाँ के लोगों का प्रमुख धन्धा कृषि है। मुख्यत: चावल उत्पन्न किया जाता है। अन्य उपजों में चाय, मक्का अखरोट, तम्बाकू तथा तिलहन इत्यादि मुख्य हैं। इस प्रदेश में रेशम के कीड़े पालने का कुटीर उद्योग उन्नति कर रहा है। इसका मुख्य केन्द्र नम-दिन है। सूती कपड़े तथा कागज़ के उद्योग के लिये नम-दिन, हनोई तथा हई-फोंग बहुत प्रसिद्ध हैं।

यहाँ का प्रमुख नगर हनोई है। यह एक बहुत ही सुन्दर आधुनिक नगर है। विदेशी व्यापार अधिकतर ईफोंग से होता है।

(२) अनाम (Annam) :—

इस प्रदेश का विस्तार सम्पूर्ण देश के लगभग २० प्रतिशत भाग पर है। यहाँ पर कुल जनसंख्या का लगभग २२ प्रतिशत भाग निवास करता है। यह एक अनामाइट लोगों का देश है और फ्रेंच लोगों की अध्यक्षता में रहा है। जनसंख्या अधिकतर तटीय भागों में तथा बड़े बड़े नगरों में ही पाई जाती है। इसका अधिक क्षेत्र पर्वतों से घिरा हुआ है, पर्वतों की ऊँचाई ७५०० फीट है। इन भागों में अधिकतर मोंइस (Mois) जाति के लोग रहते हैं।

इस भाग में औसत तापक्रम समुद्र के प्रभाव के कारण ५° फ० से लेकर ७७° फ० रहता है। सौंग के डेल्टा पर वार्षिक वर्षा ७२" हो जाती है। विन में ३०" सितम्बर में तथा १४" अक्टूबर में, हेनोई में २" नवम्बर और ४" अक्टूबर में, २७" जुलाई तथा ७२" अगस्त में तथा थान-होआ में २६" सितम्बर तक १५" अक्टूबर में वर्षा हो जाती है। जलवायु के दृष्टिकोण से थान-होआ मैदान के दो भाग किये जा सकते हैं। इनमें प्रत्यक्ष रूप से उत्तर पश्चिमी तथा दक्षिणी-पूर्वी हवायें चलती हैं। उत्तर-पूर्वी मानसून थल भाग से ही आते दृष्टिगोचर होते हैं। इसी समय यदि आन्तिरिक क्षेत्र में उच्च भार वाले क्षेत्र स्थापित हो जाते हैं तो वर्षा बहुत कम होती है। ग्रीष्म ऋतु में दक्षिण-पश्चिमी मानसून जब पू-लुओंग में प्रवेश करते हैं तब यह फोन (Fohn) हवाओं का रूप धारण कर लेते हैं। जुलाई और अगस्त में ये मानसून वर्षा करने की अपेक्षा नमी को सोख लेते हैं।

आन्तरिक पर्वतीय क्षेत्र वनों से ढके हुये हैं, इन वनों से विभिन्न प्रकार की लकड़ियाँ प्राप्त की जाती हैं। कृषि करना यहाँ के लोगों का मुख्य धन्धा है। यहाँ धान अधिकतर उत्पन्न किया जाता है, सौंग का तथा सौंग भर के डेल्टा क्षेत्र इसकी कृषि के लिये विशेष तौर पर प्रसिद्ध हैं। इसके अलावा चावल इस प्रदेश के कई उपजाऊ मिट्टी के क्षेत्रों में उगाया जाता है। गन्ना तथा मसाले भी उतनी ही महत्वपूर्ण उपजें हैं जितनी कि चावल। यहाँ पर चाय तथा कहवा भी उगाया जाता है। तटीय भाग में मछलियां भी पकड़ी जाती हैं। मछलियाँ पकड़ने के दो प्रसिद्ध स्थान हैं। पहला क्वाँग-गाई (Kwang-Ngai) प्रायद्वीप, दूसरा केप वेरिला के दक्षिण में, यहाँ नमक भी निकाला जाता है। मछलियाँ यहाँ डिब्बों में बन्द करके विदेशों को भी भेजी जाती हैं। यही यहाँ के लोगों का मुख्य धन्धा है। पशुपालन आन्तरिक क्षेत्रों में पर्वतीय ढालों पर या मदानों में किया जाता है। वनों से भी अनेक महत्वपूर्ण वस्तुयें प्राप्त होती हैं, जैसे दवाइयाँ, मसाले तथा कच्चा रेशम।

खनिज पदार्थों में लोहा, कोयला तथा सोना इत्यादि महत्वपूर्ण हैं। लोहा थान-हाओ तथा हाई-फोंग से प्राप्त होता है, यह उत्तम प्रकार का होता है। कोयला यहाँ अच्छी प्रकार का प्राप्त नहीं होता, इसीलिए यहाँ खनिज पदार्थ प्राप्त करने का तथा अन्य उद्योगों की उन्नति नहीं हो सकी। कोयला केवल नोंग-सोंग खानों से ही प्राप्त होता है। जल-मार्ग द्वारा आसानी से तौरेन तक ले आया जाता है। सोना क्वाँग नाम की खानों से प्राप्त किया जाता है।

यहाँ यातायात के साधनों में अधिक उन्नति नहीं हो सकी है, क्योंकि धरातल अनुकूल नहीं है। ह्यू की स्थिति मध्य में है, इसीलिये यह इस प्रदेश की राजधानी रह चुका है। थुआन आन बन्दरगाह नहीं है, बल्कि इसकी स्थिति आठ मील अन्दर की ओर है। तैरेन वास्तव में एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है, जो आयात-निर्यात के व्यापार में लगा हुआ है। क्वाँग-ट्री से लेकर फइ-फो तक कोई भी ऐसा बन्दरगाह नहीं है जो विदेशी व्यापार में लगा हो। यह बन्दरगाह किसी नदी पर स्थित नहीं है, बल्कि दो पहाड़ी प्रायद्वीपों के मध्य सुरक्षित है। क्वीनैन, बिनदिन का हो बन्दरगाह है।

दक्षिणी उच्च भूमि वाले प्रदेश में 'लंग बिआंग' एक प्रसिद्ध सेनीटोरियम है। यह ४००० फीट ऊंचा है, इसके उत्तर-दक्षिण तथा मध्य में पर्वत श्रेणियाँ ५,००० फीट ऊंची पाई जाती हैं। थानरंग से ढालत रेल द्वारा आसानी से जाया जा सकता है, यद्यपि चढ़ाई एक मील में २५० फीट के लगभग है। सैगोन से रेल या सड़क द्वारा यहाँ का मार्ग केवल आठ घण्टे का है। धानतीत सैगोन का ही एक भाग है, केप्ता का समुद्र तट भी इसी के निकट एक रमणीय स्थान है।

विन उत्तर में केवल एक ही प्रमुख केन्द्र है। यह रेल, सड़क व जलमार्ग का केन्द्र है। सड़क द्वारा यह लाओज़ से मिला हुआ है। यहाँ से बेन-थुई बन्दरगाह तक एक तीन मील लम्बी रेलवे लाइन जाती है। यह बन्दरगाह भी एक महत्वपूर्ण बन्दरगाह हो गया है।

(३) लाओज़ (Laos) :—

इस प्रदेश का विस्तार देश के लगभग एक-तिहाई क्षेत्र में है, यहाँ की जनसंख्या समस्त जनसंख्या की केवल ६ प्रतिशत ही है। इस प्रदेश में अन्य प्रदेशों की अपेक्षा जनसंख्या का घनत्व बहुत ही कम है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक लगभग ७५० मील के विस्तार में घने वन पाये जाते हैं, क्योंकि मानसून से पर्याप्त वर्षा हो जाती है। १६° उत्तरी अक्षांश से १९° उत्तरी अक्षांश तक सघन वन हैं। परन्तु इन अक्षांशों के मध्य बड़े गहरे खड्ड (Ravines) मिलते हैं और यह देश मिकाँग में समाप्त हो जाता है। इन खाइयों वाले क्षेत्र में चूने व सैंडस्टोन की चट्टानें दृष्टिगोचर होती हैं। यहाँ का जल-निकास अच्छा है, जलवायु स्वास्थ्य के लिये लाभदायक है। ऐसी दशाओं ने दो पक्की सड़कें बनाना सम्भव कर दिया है। पहली विन और दूसरी ह्यू से पाक-हिन-बुन या थकेक तथा स्वन्नाकेत है। इन सड़कों द्वारा विशेषरूप से थाइलैंड से व्यापार होता है।

उत्तर और दक्षिण में कई चौड़े उच्च बेसिन पाये जाते हैं। ट्राहिंक बेसिन च्योग कुआंग तथा लुआंग प्रबांग के मध्य स्थित है। यह एक पक्की सड़क द्वारा इन दोनों से मिला हुआ है। बोलोवन अपनी नदियों व सेडेन तथा सिखोंग की घाटियाँ सहित बड़ी महत्वपूर्ण हैं। दोनों स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्थान हैं। सरकार ने इसकी आर्थिक व राजनैतिक दशाओं की ओर काफी ध्यान दिया है।

यहाँ के लोग 'आर्य' जाति के बतलाये जाते हैं, परन्तु बहुत से विद्वानों में इस सम्बन्ध में मतभेद है। जो उन्हें आर्य जाति के लोग बतलाते हैं, वे कहते हैं इण्डोचीन, लाओ-थाइज़ और साइनो-अनामीज़ का विभाजक है। थाई जाति के लोग स्वतन्त्र हैं, और वे अवश्य ही मङ्गोल जाति के हैं। कुछ और भी ऐसी जातियां हैं, जो मंगोलियन हैं। परन्तु कुछ ऐसी भी पाई जाती हैं जो आर्य हैं।

कृषि इस प्रदेश का प्रधान धन्धा है। लोग अधिकतर धान उत्पन्न करते हैं, परन्तु कहवा, चाय, तथा तम्बाकू भी यहां उत्पन्न होते हैं। जंगलों में लाख भी एकत्रित किया जाता है। लाख साफ करने का धन्धा यहाँ बहुत प्रचलित है। यहाँ राँगे की खानें भी पाई जाती हैं, लोग राँगा प्राप्त करके इसका व्यापार भी करते हैं।

लुआंग प्रबाँग एक प्रसिद्ध केन्द्र है, इसकी स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है।

नमख्रान जो कि एक छोटी सी सहायक नदी है, ऊपरी मिकांग को नाव्य बना देती है। यह नगर, पेगोडा पहाड़ी (जो दो सौ फीट ऊंची है) पर स्थित है। इस क्षेत्र का सम्पूर्ण व्यापार यहीं से होता है। वनों से प्राप्त की हुई वस्तुयें लाख, मोम, रेशम तथा गरम मसाले, यहीं पर व्यापार करने के हेतु इकट्ठा की जाती हैं। ये वस्तुयें सड़कों द्वारा भेजी जाती थीं परन्तु अब ये मिकांग नदी द्वारा भेज दी जाती हैं, यद्यपि इसमें ४२ दिन लग जाते हैं।

नगर की ऊंचाई समुद्रतल से १००० फीट है। इसकी जलवायु बहुत ही उत्तम है, यहाँ शुष्क ऋतु भी होती है। नवम्बर से लेकर मार्च तक केवल ४ इं० वर्षा होती है। तापक्रम दिसम्बर में ७०° फ० तथा जनवरी में ६९° फ० रहता है। अगस्त में वर्षा १० या १२ इंच और कभी कभी ४५ इंच भी हो जाती है। मई, जून तथा सितम्बर में वर्षा केवल ६ या ७ इं० तथा अप्रैल में ४½ इं० तक हो जाती है। कभी कभी अक्टूबर में भी वर्षा होती है।

(४) कम्बोडिया (Cambodia) :—

कम्बोडिया जिसे दूसरे शब्दों में हम 'स्रोकख्मेर' (Srockhmer) कह सकते हैं, मुख्यत: मिकांग नदी के निचले बेसिन में स्थित है। इस प्रदेश का क्षेत्रफल ६७,५५० वर्ग मील है, और इसकी जनसंख्या सम्पूर्ण देश की १५% ही है। यह बहुत कम जनसंख्या वाला भाग है। यह एक तश्तरी के आकार का है। इसके किनारे पर्वत श्रेणियों द्वारा बने हुये हैं। पर्वतों की ऊंचाई पूर्व तथा पश्चिम में अधिक है। इसके मध्य के भाग में होकर मिकाँग नदी बहती है। बाढ़ के समय यह बहुत ही महीन, उपजाऊ मिट्टी जमा कर देती है। इसके उत्तरी भाग में एक 'टानले साप' नामक झील है। इस झील की लम्बाई कम से कम ६० मील तथा अधिक से अधिक १२० मील है। नदी द्वारा यह एक ६० मील लम्बी 'ब्रेजडुलेक' (Bras du Lac) नामक जलाशय से मिली हुई है। शुष्क ऋतु के अन्त में इसका क्षेत्रफल १०० वर्गमील रहता है और इसकी गहराई केवल ५ फीट, परन्तु बाढ़ के समय इतना जल इसमें आ जाता है कि क्षेत्रफल ७५० वर्गमील तथा गहराई ५० फीट हो जाती है। एक ऋतु में जल का प्रवाह झील की ओर तथा दूसरी ऋतु में नदी की ओर रहता है। बाढ़ को वास्तव में यह झील ही रोकती है।

इसकी महत्ता मछलियों, के लिये बहुत है, लोग यहाँ से बहुत बड़ी मात्रा में मछलियाँ पकड़ते हैं। लगभग ४० लाख व्यक्ति जो इसके निकट रहते हैं, इसी पर अपना जीवन निर्वाह करते हैं। सैगोन बन्दरगाह से लगभग ३० लाख टन मछलियां प्रतिवर्ष निर्यात की जाती हैं। यद्यपि यहां की जलवायु तथा मिट्टी कृषि उद्योग के लिये काफी महत्वपूर्ण है। यहां केवल ५% से कुछ अधिक भाग में

कृषि की जाती है। इसके ⅘ भाग पर चावल उत्पन्न किया जाता है। इसके साथ साथ पीपर भी उगाया जाता। यह काफी मात्रा में कमपोत से निर्यात होता है। अन्य उपजों में कपास, रेशम, मक्का, तम्बाकू तथा रबड़ इत्यादि उल्लेखनीय है।

रेशम के कीड़े पालना यहाँ के लोगों का मुख्य धन्धा है तथा हर भाग में किया जाता है। पूरे इण्डोचीन के लगभग आधे शहतूत के वृक्ष केवल कम्बोडिया ही में हैं। रेशम के उद्योग के लिये नामपेन (Pnom Penh) प्रसिद्ध है। कपास भी इस प्रदेश के हर भाग में उत्पन्न किया जाता है। यहाँ पर इसकी कई किस्में भी पाई जाती हैं।

इसकी उपज भौगोलिक परिस्थितियों में भिन्नता के अनुसार भिन्न भिन्न भागों में भिन्न हैं।

नदी के किनारों पर दूर दूर न केवल शहतूत के वृक्ष ही लगे हुये हैं, बल्कि तम्बाकू, तिलहन तथा कपास भी उगाया जाता है। ये उपजें अधिकतर बाढ़ समाप्त हो जाने के उपरान्त ही बोई जाती हैं। कुछ कठिनाइयों के कारण अब ये उच्च भूमि पर भी बोई जाने लगी हैं। 'स्तंग त्रेंग', 'कोमपोंग' स्वाई के स्थानों पर यह दोनों वस्तुयें केवल वर्षा पर ही निर्भर रहती हैं। इन स्थानों पर ये अगस्त में बो दी जाती हैं तथा जनवरी व फरवरी में पक जाती हैं। कपास की किस्म अच्छी होती है।

पशु पालन भी यहां के लोगों का मुख्य उद्यम है। गाय, भैंस, बकरी, भेड़ इत्यादि अधिकतर नाम-पेन नगर के चारों ओर के क्षेत्रों में पाले जाते हैं।

खनिज पदार्थों में यहां फासफेट बहुत होता है, परन्तु बहुत कम निकाला जाता। वन-सम्पत्ति यहाँ पर बहुत घनी है, लोग लकड़ी काटने व निर्यात व्यापार में लगे हुये हैं। इन भागों के निकट ही रेशम का धन्धा होता है। आधुनिक उद्योग धन्धों में यहाँ रेशमी व सूती वस्त्र, चटाई तथा चीनी बर्तनों का उद्योग अधिक प्रचलित है।

नामपेन एक प्रसिद्ध औद्योगिक नगर है। यहाँ एक बहुत ही सुन्दर पेगोड़ा बना हुआ है। प्राचीन काल में यह ख्मेर लोगों की राजधानी थी। झील के उत्तरी छोर तथा नामकुलेन पहाड़ी के मध्य अंगकोर नगर स्थित है। अन्य नगरों में थोय तथा बट हैं, जो नदी के तटों पर स्थित है। यहाँ के प्राचीन खण्डहरों में कुछ ऐसी वस्तुयें पाई जाती हैं जो कि बड़ी आश्चर्यजनक हैं, ऐसा भी अनुमान लगाया जाता है, कि प्राचीन काल में एक पक्की सड़क चीन के लेंगसन नगर से सांगकिन होती हुई यहाँ तक आती थी।

(५) कोचिन चीन (Cochin China) :—

यह भाग मिकाँग नदी के डेल्टे के क्षेत्र को सम्मिलित करता है। इसका

क्षेत्रफल २६०० वर्ग मील है। यहाँ का धरातल अधिक उपयोगी नहीं है। उत्तर में पर्वत तथा दक्षिण में निचला दलदली भाग है। दलदली क्षेत्र इतना नीचा है, कि इसमें हर समय पानी भरा रहता है। क्रेटी के दक्षिण में यह नदी पश्चिम की ओर वा दिन क्लोक (२९००) तक पहुंच जाती है और नाम पेन के नीचे दो भागों में बँट जाती हैं। दक्षिण में यह कुछ पूर्व की ओर पुन: हो जाती है। यहाँ फिर ऊँचे ऊँचे अनाम के पर्वत में, डान नाई, सैगोन तथा वैकको इत्यादि नदियाँ मिल कर 'सैगोन नदी' बन जाती हैं। भौतिक दृष्टिकोण से वह मिकांग डेल्टे का ही भाग है, परन्तु व्यापारिक दृष्टिकोण से यह बिल्कुल ही अलग है।

मिकांग के डेल्टे में नौ शाखायें पाई जाती हैं, इनमें से एक तो बिल्कुल पश्चिमी तथा दूसरी बिल्कुल पूर्वी है। ये आर्थिक दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण हैं। नाम-पेन तक ज्वारभाटों का प्रभाव रहता है। बड़े बड़े व्यापारिक समुद्री पोत के लिये केवल मिकाँग ही महत्वपूर्ण है। यह नौ शाखायें एक दूसरे से नहरों द्वारा मिला दी गई हैं। एशिया के किसी भी भाग में इतना अच्छा जलाशय का विस्तार दृष्टिगोचर नहीं होता, यही कारण है कि चोलोन इस प्रायद्वीप का सब से बड़ा बन्दरगाह है।

इस प्रदेश में कुल जनसंख्या का २० प्रतिशत भाग निवास करता है। क्षेत्रफल कम होने के कारण यहाँ घनी जनसंख्या पाई जाती है। लोग अधिकतर कृषि करते हैं। कुल क्षेत्रफल के ३६% भाग पर कृषि होती है। चावल के लिये लोग ९० प्रतिशत भूमि दे देते हैं। यह प्राचीन ढंग से बोया जाता है, खेतों में भैंसे हल चलाते हुये दृष्टिगोचर होते हैं। अन्य उपजों में पिपर, शकरकन्द, केले, गन्ना तथा तम्बाकू प्रसिद्ध हैं। लोग मछलियाँ भी बहुत पकड़ते हैं। मछलियों के सुखाने के बाद कई वस्तुएं बनाई जाती हैं। परन्तु आम तौर पर इनकी चटनी तथा कतरियाँ अधिक तैयार करते हैं। मछली के उद्योग के साथ साथ, यहाँ पर नमक निकालने का धन्धा भी बहुत उन्नति कर गया है। इसके दो केन्द्र हैं, पहला वरिया तथा दूसरा बैक्ल्यू, इसकी वार्षिक वर्षा जनवरी से मार्च तक केवल डेढ़ इंच से भी कम है।

सब से महत्वपूर्ण व्यापार चावल का है, इसी से व्यापार ने चोलोन को जो कि एक छोटा सा गाँव था, एक बड़ा नगर बना दिया। अब यह एक औद्योगिक नगर हो गया है, यहाँ पर धान के कारखाने, लकड़ी काटने के तथा वानिश तैयार करने की फैक्टरियाँ पाई जाती हैं। जनसंख्या इसकी दो लाख से ऊपर है। एक दूसरा प्रसिद्ध नगर सैगोन है जो कि सैगोन नदी पर ४५ मील के अन्दर की ओर स्थित है। यह उष्ण कटिबन्धीय चक्रवातों से बिल्कुल सुरक्षित है। क्योंकि शीत ऋतु में ये चक्रवात प्राय: समुद्र तट से टकराते हैं। नदी में जल ४० फीट

से अधिक गहरा रहता है, इसलिये बड़े बड़े जहाज आसानी से सैगोन तक चले आते हैं। यह एक घना बसा हुआ सुन्दर नगर है। फ्रैन्च लोगों ने इस पर अपना बहुत गहरा प्रभाव डाला है। इसका रूप ही योरोपियन पद्धति के अनुसार हो गया है। सम्पूर्ण कम्बोडिया का भी विदेशी व्यापार अधिकतर इसी बन्दरगाह द्वारा होता है। इस नगर की जलवायु भी बहुत ही उत्तम है। यहां पर आधुधिक ऊंचे ऊंचे भवन, चौड़ी चौड़ी सड़कें, सुन्दर मकान, कालिज, अस्पताल, रेस्टोरेण्ट तथा होटल इत्यादि मिलते हैं। चीनी लोग यहां अधिक दृष्टिगोचर होते हैं। जनसंख्या सवा लाख से अधिक है।

सैगोन तथा चोलोन दोनों ही नगर व्यापारिक दृष्टिकोण से बड़े महत्वपूर्ण हैं। यहाँ से विदेशों को चावल, मछली, मछली का तेल, पिपर, कपास, कोपरा, रबड़, मसाले इत्यादि वस्तुएं जाती हैं। सैगोन के बन्दरगाह पर प्रतिवर्ष साढ़े तीन सौ विदेशी व्यापारिक पोत आकर ठहरते हैं। इन नगरों में धान कूटने, लकड़ी चीरने, सिगरेट बनाने, टायर बनाने के कारखाने पाये जाते हैं। विदेशों से वस्तुओं का आयात भी इन्हीं बन्दरगाहों द्वारा होता है।

वर्तमान राजनैतिक विभाग (Present Political Divisions)

इण्डोचीन के राजनैतिक संघर्ष का वर्णन करते समय हम बतला चुके हैं, कि मार्च १९४५ में वीटनम राज्य की स्थापना हो गई थी। ठीक उसी समय से इण्डोचीन के तीन राजनैतिक विभाग हो गये जो क्रमशः वीटनम, लाओस तथा कम्बोडिया कहलाते हैं। नीचे हम तीनों का अलग अलग संक्षिप्त विवरण वर्तमान राजनैतिक दशा को ध्यान में रखते हुये दे रहे हैं।

वीटनम (Viet Nam)

[उत्तरी व दक्षिणी]

वीटनम इंडोचीन प्रायद्वीप के पूर्वी तट पर उत्तर से दक्षिण तक फैला हुआ है। इसका विस्तार ८° उत्तरी अक्षांश से २३° उत्तरी अक्षांश तक तथा १००° पूर्वी देशान्तर से १०९° पूर्वी देशान्तर तक है। इसका क्षेत्रफल ३२९,६०० वर्ग किलोमीटर है। अक्टूबर सन १९५४ में इसकी जनसंख्या २५०००,००० थी। यहाँ जनसंख्या का मध्यमान घनत्व ७५.८ प्रति वर्ग किलोमीटर है। वीटनम के क्षेत्र में दो प्रमुख धान उत्पन्न करने वाले भाग हैं, पहला उत्तर की ओर लाल नदी की घाटी तथा दूसरा दक्षिण की ओर मिकाँग नदी की घाटी। सैगोन तथा हनोई यहाँ के प्रसिद्ध नगर हैं, और दोनों उपजाऊ घाटियों में ही स्थित हैं। केवल कुछ उपजाऊ तटीय क्षेत्र तथा दोनों नदियों की घाटियों को छोड़कर शेष भाग पर्वतीय है।

यहाँ की जलवायु गर्म व तर है। ग्रीष्म ऋतु में यहाँ अधिकाँश वर्षा होती है। मई से लेकर अक्टूबर तक बराबर पानी बरसता है। शीत ऋतु ठंडी होती है तथा बहुत कम वर्षा हो पाती है।

यहाँ के लोगों का मुख्य धन्धा कृषि है। धान यहाँ की एक प्रमुख उपज है। इसके अतिरिक्त यहाँ अन्य वस्तुयें भी उत्पन्न की जाती हैं। कृषि यहाँ प्राचीन ढङ्ग से ही की जाती है। आर्थिक दशा सन्तोषजनक न होने के कारण कृषि में विकास नहीं हो सका। उद्योग धन्धों की प्रगति यहाँ इसीलिए नहीं हो सकी क्योंकि आवश्यक खनिज पदार्थ आरम्भ से ही यहाँ कम रहे हैं, इसके अलावा कोयला जो कि एक परम आवश्यक शक्ति का साधन है, यहाँ बहुत ही थोड़ी मात्रा में पाया जाता है। यातायात के साधनों में आन्तरिक जल यातायात अधिक प्रचलित है।

इस देश में फ्रांस के निवासी किस प्रकार आये, इनके विषय में यह कहा जाता है कि जब अठारहवीं शताब्दी के अन्त में कोचिन चीन के राजा ने फ्रेन्च पादरी से सहायता मांगी, तब कोचिन के राजकुमार फ्रेन्च पादरी के साथ पेरिस गये और वहाँ १७८७ में एक सन्धि पर हस्ताक्षर हुये। राजा को इस प्रकार सहायता मिली, और बाद में उत्तरी टांगकिन की विजय भी प्राप्त हुई। इस प्रकार से अनाम की सीमायें निश्चित हो गईं। यहाँ के लोगों को फ्रैंच निवासियों की चालाकियों पर सन्देह हुआ, फौरन विद्रोह आरम्भ हो गया, १८३३ से १८४३ तक सैकड़ों पादरी मौत के घाट उतार दिये गये। इसके उपरान्त १८५८ में फ्रेन्च तथा स्पेन ने मिलकर चढ़ाई कर दी और सैगोन जीत लिया गया। सन १८७२ में एक सुलह हुई, इसके अन्तर्गत इन लोगों को धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई। तीन बन्दरगाह व्यापार के लिये खोल दिये गये। लगभग २० वर्ष बाद फ्रांस के लोगों ने एक नई सुलह की घोषणा की। मना करने पर उन्हें हनोई तथा अन्य डेल्टा प्रदेश के नगरों को अपने अधिकार में लेना पड़ गया। ह्यू जो कि राजधानी थी वह भी जीत लिया गया। उधर चीनी लोगों का प्रभाव अनाम पर बहुत काफ़ी था। सन १८८५ में तीन्सटिन में एक सुलह हुई, इसके अन्तर्गत फ्रेन्च-अनामीज़ में भी सुलह हो गई। इण्डोचीन यूनियन की स्थापना १८८७ में हुई। इसमें कोचिन चीन, अनाम, टाँगकिंग, कम्बोडिया तथा लाओस इत्यादि सम्मिलित थे। फ्रांस तथा इण्डोचीन संघ के मध्य केवल गवर्नर जनरल ही एक सम्बन्धी था। वही यहाँ की सिविल सर्विसेज़ का नियन्त्रण करता था। बाद में विदेशी शक्ति को और भी अधिकार प्राप्त हुये। सम्राट को सलाह देने के लिये एक फ्रेन्च रेजीडेण्ट ह्यू में रखा गया। जून १९४० में फ्रेन्च इण्डोचीन बिना किसी सुरक्षा के वैसे ही

छोड़ दिया गया। जापानियों के दबाव के कारण फ्रांसीसियों ने चीन को भेजी जाने वाली वस्तुयें भेजना बन्द कर दीं।

सन १९४५ में जापानियों ने इण्डोचीन राज्यों को स्वतन्त्र घोषित कर दिया। यह राज्य लाओस, कम्बोडिया तथा अनाम थे। सम्राट बाओदाई अनाम में ही रक्खे गये। कोचिन चीन अगस्त में टाँगकिंग तथा अनाम से मिला दिया गया, इस प्रकार से एक नवीन राज्य का निर्माण हुआ, और वह वीटनम कहलाता है। जब जापानी लोग हार गये तब उस पार्टी ने जो कि होचीमिन ने १९४१ में सङ्गठित की थी, बराबर यह कोशिश की कि देश का विभाजन हो जाय। फलस्वरूप १६° समानान्तर के आधार पर देश दो भागों में विभाजित कर दिया गया। चीनियों को उत्तर का भाग तथा अंग्रेजों को दक्षिणी वीटनम का भाग प्राप्त हो गया। वीटमिन पार्टी उस समय के पहले ही जबकि सितम्बर १९४५ में ब्रिटिश सैगोन पहुंचे थे दक्षिणी भाग में काफी सङ्गठित हो चुकी थी। उसी वर्ष २ सितम्बर को देश स्वतन्त्र कर दिया गया और वह डिमोक्रेटिक रिपब्लिक आफ वीटनम कहलाने लगा। ठीक ६ जनवरी १९४६ को एक नई विधान सभा बना ली गई।

मार्च ६ को पेरिस में एक सुलह पर हस्ताक्षर हुये। इसके अन्तर्गत वीटनमीज़ जिसके नेता हो ची मिन थे, पूर्णरूप से स्वतन्त्र कर दिये गये। बाद में जबकि फ्रेंच सेना, चीनी सेना के स्थान पर पहुँची तब कुछ ऐसी तनातनी हुई कि १९ दिसम्बर १९४६ में एकाएक हनोई के स्थान पर फ्रांस तथा वीटनम में युद्ध छिड़ गया। बाओदाई जो कि कुछ समय तक हो ची मिन के सलाहकार थे, मार्च १९४६ में चीन गये, परन्तु वहाँ से वापिस ही नहीं हुये। बाओदाई ने १५ सितम्बर को वीटनम के लोगों के नाम एक सन्देश दिया, कि वह फ्रेंच लोगों से मिलने की इच्छा रखते हैं। आठ मार्च १९४९ को फ्रेंच लोगों ने बाओदाई को वीटनम का दूसरा सम्राट बना दिया। इस परिवर्तन के अन्तर्गत वीटनम को पूर्ण स्वतन्त्रता किसी भी दशा में नहीं मिल सकी। विदेशी नीति तथा रक्षा सम्बन्धी मामलों में वीटनम को फ्रांस से राय लेनी पड़ती थी। इस प्रकार से हो ची मिन तथा फ्रेंच लोगों में बराबर युद्ध होता ही रहा। इस युद्ध का अन्त उस समय हुआ जबकि २१ जुलाई १९५४ को वीटनम, लाओस, कम्बोडिया की शान्ति के हेतु जैनेवा में एक सन्धि पर हस्ताक्षर हुये।

वीटनम की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक है। यहाँ पर विभिन्न प्रकार के खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। यहाँ का प्रसिद्ध क्षेत्र टांगकिंग है। यहाँ से उत्तम

श्रेणी का ऐन्थ्रेसाइट कोयला प्राप्त लिया जाता है। उत्तरी लाओस तथा उत्तरी टाँगकिन में राँगा, टंगस्टन, ज़िंक, लोहा तथा मैंगनीज़ इत्यादि काफी मात्रा में निकाला जाता है। कृषि उपजों में रबड़ १९५२ में ६१४२० टन प्राप्त किया गया था, यहाँ धान की कृषि में बहुत सी भूमि दी जाती है। सन् १९५२ में यहाँ ५७०,००० टन चावल उत्पन्न हुआ था। अन्य उपजों में मक्का, ईख, कपास, तम्बाकू, चाय, कहवा तथा मटर इत्यादि हैं। यहाँ पर वनीय क्षेत्र ७६,५७०,००० एकड़ है। बड़े पैमाने पर यहाँ अधिक उद्योग धन्धे नहीं पाये जाते, केवल थोड़े से शक्कर, धान कूटने, सूती व रेशमी कपड़े, काग़ज़, लकड़ी चीरने तथा सीमेंट तैयार करने के कारखाने पाये जाते हैं।

उत्तरी वीटनम

उत्तरी वीटनम का क्षेत्रफल १६४,१०२ किलोमीटर है। इसमें उत्तरी वीटनम के २९ प्रान्त और मध्य वीटनम के ४ उत्तरी प्रान्त सम्मिलित हैं। सन् १९५३ में यहाँ की जनसंख्या १२,९६३,९०० थी। इसमें साठ हज़ार चीनी तथा सत्तर हज़ार फ्रेंच भी शामिल हैं। यहाँ के प्रसिद्ध नगरों में हनोई महत्वपूर्ण है। यह नगर यहाँ की राजधानी है। इसकी जनसंख्या सन् १९५३ में २९७९०० थी। हैफोंग एक दूसरा नगर है, इसकी जनसंख्या इसी सन् में १८८६०० थी। अधिक घनी जनसंख्या लाल नदी के डेल्टे प्रदेश में पाये जाती है। यहाँ जनसंख्या घनत्व १००० व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर तक पाई जाती है।

इस क्षेत्र को वीटमिन भी कहते हैं, क्योंकि सोवियत रूस व चीन इस देश को इसी नाम से स्वीकार करते हैं। यहाँ के सभापति श्री हो ची मिन हैं। उक्त सभापति एवं विदेश मन्त्री श्री फाम-वान-डौंग हैं।

यहाँ की प्रमुख उपज चावल है। यहाँ की जनसंख्या के हेतु इसकी उत्पत्ति प्रर्याप्त है। अन्य उपजों में मक्का, कहवा, चाय, शकरकन्दी, तम्बाकू, गन्ना, अंडी का तेल तथा लाख हैं। स्थानीय क्षेत्रों में रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। आन्तरिक क्षेत्रों में तथा सागरों व खाड़ियों के तट पर मछलियाँ भी पकड़ी जाती हैं। भैंसे, सुअर तथा मुर्गियाँ भी पाली जाती हैं।

खनिज पदार्थों में कोयला बहुत ही अच्छी किस्म का यहाँ मिलता है। एलोंग की खाड़ी के तट पर एन्थ्रेसाइट कोयला मिलता है। सन् १९५३ में यहाँ ८८७,००७ मेट्रिक टन इसी सन में उत्तरी क्षेत्र का उपभोग ४४०,००० टन था। अन्य खनिज पदार्थों में लोहा (१३०,२९८ टन), ज़िंक (११७,३५ टन), राँगा (१०२३ टन), टंगस्टन (५५५ टन), ऐन्टीमनी (१६१ टन), मैंगनीज़

(२२१४ टन), बाक्साइट (१६० टन) महत्वपूर्ण हैं। इनके अतिरिक्त चूना, फास्फेट तथा नमक भी स्थान स्थान पर खोदा जाता है।

इस क्षेत्र में अनेक उद्योग धन्धे भी पाये जाते हैं। सीमेंट बनाने का कारखाना हैफोंग में है। सन् १९५३ में यहाँ २९१,००० मेट्रिक टन सीमेंट तैयार हुआ। शराब बनाने का हनोई में, इसी सन् में शराब का उत्पादन १८७,००० हैक्टोलीटर बीयर तैयार हुई। दो बर्फ तैयार करने की, दो सूती वस्त्र तैयार करने और एक शीशी बोतल बनाने की फैक्टरियां भी मिलती हैं। रेशमी वस्त्र तैयार करने के कारखाने के अतिरिक्त यहाँ रसायन तैयार करने के कारखाने भी पाये जाते हैं।

यहाँ यातायात के साधनों में भी प्रर्याप्त उन्नति हुई है। सन् १९५४ में जो रेलवे लाइनें चालू थीं, उनमें से हनोई-हैफोंग (१०४ किलोमीटर), हनोई-वानदीन (९ किलोमीठर) प्रसिद्ध हैं। और लाइनें जो उत्तर की ओर हैं लड़ाई में टूट जाने के कारण मरम्मत की दशा में हैं। सन् १९५२ के अन्त तक यहाँ १३५०० मील लम्बी सड़कें थीं। पक्की तारकोल की सड़कें केवल ७५० कि० लम्बी ही हैं। अन्य सड़कें उत्तर की ओर चीन सरकार के सहयोग से बनाई जा रही हैं। पानी के जहाजों की संख्या सन् १९५३ में १५१५ थी। सन् १९५३ में हैफोंग के हवाई अड्डे पर १९४३ तथा हनोई के हवाई अड्डे पर १४४९३ वायुयान उतरे। सन् १९५४ में इसका चीन से एक समझौता हुआ है। इस समझौते के अन्तर्गत चीन इसको वायुयान, हवाई अड्डे सम्बन्धी सामग्री तथा जलवायु सम्बन्धी सूचनायें ज्ञात करने के यन्त्र देगा।

यहाँ भी शिक्षा प्रचार बराबर हो रहा है। लोग धीरे धीरे सभ्यता की ओर अग्रसर हो रहे हैं। बौद्ध, ईसाई तथा कन्फ्यूसियन, तीनों ही धर्म माने जाते हैं।

दक्षिणी वीटनम

दक्षिणी वीटनम का क्षेत्रफल १७०,२३१ वर्ग किलोमीटर है। इसमें १४ प्रान्त मध्य के भाग में एवं २१ प्रान्त दक्षिणी वीटनम के सम्मिलित हैं। सन् १९५३ में इसकी जनसंख्या ९,६४८,९७० थी। इसमें से लगभग ६ लाख चीनी, १·२ लाख कम्बोडियन तथा १९ हज़ार फ्रेंच सम्मिलित थे। यहाँ के बड़े बड़े नगरों में सैगोन महत्वपूर्ण है। यह नगर यहाँ की राजधानी है, इसकी जनसंख्या १९५३ में १,६१४,२०० थी। ह्यू एक दूसरा नगर है, इसी सन् में इसकी जनसंख्या ९६४०० थी, तौरेन एक तीसरा नगर है जिसकी जनसंख्या ५७००० थी जनसंख्या घनत्व मिकांग डेल्टे पर अधिक है। उत्तर की उच्च भूमि पर प्राचीन असभ्य

जातियाँ रहती हैं। वीटनम के निवासियों से ये कदापि भिन्न हैं। इनकी कुल जनसंख्या १६५३ में ५०००००० थी।

चावल और रबड़ यहाँ की दो प्रमुख उपजें हैं, केवल कोचिन चीन में ही १३४०००० हेक्टर्स क्षेत्र था, और १६०००० टन उत्पादन था। सम्पूर्ण वीटनम का निर्यात १६५४ में १०३४३० मेट्रिक टन था। सन् १६५३ में रबड़ के बाग ६२,२७४ हेक्टर्स क्षेत्र पर थे, तथा उत्पादन ४०११८ मेट्रिक टन था। अन्य प्रमुख उपजों में चाय, कहवा, कुनैन, रंग, बाँस, लकड़ी, रेशम तथा तरकारियाँ शामिल हैं। मक्का, गन्ना, मूंगफली, कोपरा तथा तम्बाकू भी महत्वपूर्ण उपजें हैं। मछली पकड़ना तथा पशुपालन प्रमुख उद्योग धन्धों में शामिल हैं।

खनिज पदार्थ भी इस क्षेत्र में पाये जाते हैं। कोयले की खानें तौरेन के निकट नोंग सोन में, सोने की बोंग मीन, में मिलतीं हैं।

यहां अनेक उद्योग धन्धों का भी विकास हुआ है। सैगोन में आक्सीजन, कार्बोनिक एसिड तथा अन्य रसायन तैयार करने का कारखाना है। बर्फ, शराब, चावल तथा शक्कर तैयार करने की मिलें भी मिलती हैं। पांच तम्बाकू के कारखाने सिग्रेट बनाती हैं। सन् १६५३ में ७२६२ टन तम्बाकू की सिग्रेट बनीं। एक दियासलाई की एक साइकिल की तथा ५ साबुन बनाने की फैक्ट्रियाँ पाई जाती हैं।

यातायात के साधनों में भी यहाँ पर्याप्त उन्नति हुई हैं। यहाँ की प्रमुख रेलवे लाइनों में (१६५४ को) सैगोन–मिथो (७० कि०) सैगोन-लोकनिन (१४१ कि०) सैगोन-नातरंग (५७५ कि०) डियूत्री-नालरंग (३४ कि०), तौरचम-दालत (८४ कि०) उल्लेखनीय हैं। सड़कों में भी यहां वृद्धि हुई है। कुल लम्बाई १३००० किलोमीटर १६५३ में थीं। सबसे उत्तम सड़कें यहां दक्षिण की ओर हैं। पानी के जहाज यहां बन्दरगाहों पर २६५२ की संख्या में सन् १६५३ में थे। इसी सन् में नाव्य नहरें ४६०० किलोमीटर लम्बी थीं। वायु यातायात में भी यहां उन्नति हुई है। सन् १६५३ में यहां सैगोन के निकट स्थित तोन-सेन हवाई अड्डे पर १०३२ विदेशी कम्पनियों के वायुयान उतरे।

यहां के लोग शिक्षित होते जा रहे हैं। चौदह से अधिक यहाँ टेक्निकल स्कूल खुल गये हैं। लड़के व लड़कियों की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। आजकल ६८१ से अधिक प्राइमरी स्कूल पाये जाते हैं।

यहाँ पर अनेक धर्म के मानने के व्यक्ति मिलते हैं। बौद्ध धर्म के अतिरिक्त १० लाख रोमन कैथोलिक भी मिलते हैं। कन्फ्यूसियन धर्म का भी प्रचार यहाँ काफी हुआ है।

विदेशी व्यापार का मूल्य
(Million Piastres)

	१६४८	१६५२	१६५३	१६५४ जनवरी—अप्रैल
निर्यात	११७२	२,४०४	२७६६	१०१६
आयात	२३६०	६,२३२	११,१५०	३७६८

मुख्य व्यापार करने वाले देश
(प्रतिशत)

निर्यात	जनवरी—अप्रैल			आयात	जनवरी—अप्रैल		
	१६५०	१६५३	१६५४		१६५०	१६५३	५४
फ्राँस	४३	२१	१५	फ्राँस	७६	७६	७६
मलाया	८	१५	८	चीन	३	२	३
सं.रा. अमरीका	१६	१६	२०	जापान	१	२	३
हाँगकाँग	११	६	४	सं. रा. अमरीका	६	४	७
जापान	१	४	२३	इन्डोनेशिया	२	३	३
इण्डोनेशिया	०	५	०				

व्यापार की हुई वस्तुयें
प्रतिशत

निर्यात	१६५०	१६५३	१६५४ [ज० अ०]	आयात	१६५०	१६५३	५४ [ज० अ०]
चावल (तथा उसकी वस्तुयें)	३३	२८	५३	कृषि उपजें तथा खाद्य पदार्थ	२२	२४	२३
मक्का ,,	२	२	२				
रबड़ ,,	३६	३८	३०	खनिज पदार्थ	४	५	५
पंख ,,	५	१	०	रेशेदार वस्तुयें	२८	२६	२४
गोल मिर्च (पिपर)	२	२	०	धातुओं की तैयार वस्तुयें (मोटर गाड़ियां)	२६	२६	२६
कोयला	३	६	६				
भद्दा चमड़ा	२	१	०	अन्य वस्तुयें	१६	१६	६२

(*Quarterly Economic Review of Continental South East Asia, September, 1954 London*)

कम्बोडिया (Combodia) :—

कम्बोडिया की स्थिति १०° उत्तरी अक्षांश से लेकर १५° उत्तरी अक्षांश तक तथा १०२° पूर्वी देशान्तर से १०८° पूर्वी देशान्तर तक है। इसके उत्तर तथा पश्चिम में थाईलैंड, दक्षिण में स्याम की खाड़ी तथा उत्तर-पूर्व में लाओस व वीटनम के देश स्थित हैं। मध्य का खण्ड तोनली सेप बड़ी झील कहलाती है। मिकांग नदी वीटनम में होकर बहती है। स्याम की खाड़ी तथा बड़ी झील के मध्य पर्वत श्रेणियां हैं। उसकी अधिकतम ऊंचाई ५००० फीट है। कम्बोडिया का क्षेत्रफल ७०००० वर्ग मील है। सन् १९५३ में इसकी जनसंख्या ४,०७३,९९७ थी, इसमें २२०००० लाओसियन तथा वीटनमी, २१८०० चीनी, तथा ४५०० योरोपीयन शामिल हैं। उत्तर-पूर्व केयनीय क्षेत्रों में अनेक असभ्य जातियां रहतीं हैं। प्रमुख नगरों में नाम-पेन (Pnom Penh) यहां की राजधानी तथा प्रमुख नगर है। सन् १९५३ में इस नगर की जनसंख्या ३७५००० थी। अन्य नगरों में बातम बंग केमपोत, तथा कम्पोंग-च्रेम उल्लेखनीय है।

जैसा कि पहले बतलाया जा चुका है, यहां की जलवायु में दो ऋतुयें प्रधान हैं। पहली ऋतु मध्य अक्टूबर से मध्य अप्रैल तक की है, यह बहुत शुष्क होती है। दूसरी ऋतु वर्षा ऋतु है, जो मध्य अप्रैल से मध्य अक्टूबर तक रहती है। वर्षा यहां इस ऋतु में दक्षिण पश्चिमी मानसून से होती है।

यहां पर विभिन्न प्रकार की उपजे भी प्राप्त की जाती हैं। उदाहरणार्थ चावल, लकड़ी, कपास, गन्ना, रबड़, इलायची, लाख तथा गरम मसाले इत्यादि। इन वस्तुओं के अतिरिक्त समुद्र तट पर यहां के लोग मछलियाँ भी पकड़ते हैं। धान यहां की प्रमुख उपज है। बोई भूमि के ८० प्रतिशत भाग पर इसकी पैदावार है। सन् १९५३ में इसकी उत्पत्ति १,४०७,००० मेट्रिक टन थी, इसमें से १३८,७२५ मेट्रिक टन धान निर्यात कर दिया गया। धान के बाद मक्का का स्थान है। सन् १९५१ में इसका उत्पादन ९०००० टन हुआ। अन्य उपजों में रबड़ २२४७४ टन, तथा पिपर १५००० टन हुआ।

पशु पालन यहां के लोगों का प्रमुख धन्धा है। अन्य उद्योग धन्धों में रेशमी, व सूती वस्त्र उद्योग, धान कूटने, तेल निकालने तथा लकड़ी चीरने के कारखाने पाये जाते हैं। वनीय क्षेत्र यहां २९० लाख एकड़ भूमि पर हैं। तीन चौथाई भूमि पर ये वन फैले हुये हैं।

यातायात के साधन भी यहां पर्याप्त पाये जाते हैं। रेलवे लाइन नाम-पेन से पोईपत तक जाती है, इसकी लम्बाई ३८१ किलोमीटर है। सन् १९४९ में यहां १००० कि० पक्की सड़कें, २५०० साधारण सड़कें तथा ३००० कि० कच्ची सड़कें पाई जाती थीं। सन् १९५३ में नाम-पेन तक १८८ जहाज पहुंचे। आंतरिक जलमार्गों की लम्बाई ८७५ किलोमीटर है। वायुयातायात, में भी यहां पर्याप्त उन्नति हुई है सन् १९५२ में यहाँ के हवाई अड्डे (नामपेन के निकट) पर ११९२ वायुयान उतरे और २१०२४ यात्रियों ने यात्रा की।

यहां के निवासी थाई लोगों से बहुत कुछ मिलते जुलते हैं। ऐसा कहा जाता है कि ये लोग आर्य तथा मंगोल जाति के मिश्रण से उत्पन्न हुये हैं। यहाँ के लोग बौद्ध धर्म को मानते हैं। इस धर्म का प्रचार यहाँ भारतवर्ष से हुआ है। इसका प्रभाव यहां के उच्च लोगों पर अब भी पाया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि शताब्दियों पहले भारतवर्ष के निवासी भारतीय प्रायद्वीप के पूर्वी तट से कम्बोडिया पहुँचे इन लोगों ने अपनी संस्कृति का यहां बड़ा प्रचार किया, यहाँ तक कि संस्कृत भाषा भी यहां आ गई। पांचवीं शताब्दी में यहां एक ऐसे वंश की स्थापना हुई जो कि बहुत ही शक्तिशाली था। अगली शताब्दियों में भी यह शक्तिशाली रहा। इन लोगों का पतन तेरहवीं शताब्दी के अन्त से आरम्भ हुआ और वह इसलिये कि थाई लोग बराबर उत्तर पश्चिम से हमला कर रहे थे। अठारहवीं शताब्दी के अन्त तक बातम बंग तथा सीमरीप थाईलैंड में शामिल कर लिये गये। अन्त में थाईलैंड का पूर्णरूप से कम्बोडिया पर राजनैतिक प्रभाव पड़ने लगा इन्हीं दिनों फ्रेंच लोगों ने भी अपना प्रभाव डालना आरम्भ कर दिया। इस सम्बन्ध में अनेक झगड़े भी हुये, परन्तु १८८४ में एक फ्रेंच-कम्बोडियन सुलह के अन्तर्गत राजा के अधिकारों को और भी कम कर दिया गया।

द्वितीय महायुद्ध के पहले फ्रेंच लोग ही इस देश की बागडोर सम्हाले हुये थे। परन्तु युद्ध के समय जापानियों के दबाव के कारण इन लोगों के हाथ से बहुत से क्षेत्र निकल गये। परन्तु फिर १९४६ की थाई-फ्रेंच सुलह, जो कि वाशिंगटन में हुई थी, के अन्तर्गत कम्बोडिया को वापस कर दिया गया।

जब जापानियों ने फ्रेंच लोगों को मार्च १९४५ में शक्तिहीन कर दिया था, तब कम्बोडिया के राजा को स्वतन्त्र होने का अवसर प्राप्त हो गया, और उसने तुरन्त स्वतन्त्र होने की घोषणा कर दी। १० अक्टूबर को फ्रेंच, ब्रिटिश तथा भारतीय सेना ने नाम-पेन पर अधिकार कर लिया। इसके बाद ७ जनवरी १९४६ को एक समझौते पर फ्रेंच तथा कम्बोडिया के हस्ताक्षर हुये। इसके अन्तर्गत एक फ्रेंच हाई कमिश्नर कम्बोडिया के लिये नियुक्त किया गया, यह कम्बोडिया के राजा को भी आवश्यक मामलों पर परामर्श देता है। ठीक ३१ मई १९४६ में एक नियम बनाया गया, जिसके अन्तर्गत चुनाव का प्रस्ताव पास किया गया। चुनाव सितम्बर में हुआ और, ६ मई १९४७ को एक विधान निर्माण हुआ।

सन् १९४७ के संविधान के अन्तर्गत राजा के सब अधिकार नेशनल असेम्बली मंत्रिमंडल तथा कोर्ट आदि विभागों में विभाजित कर दिये गये। सन् १९४९ में नेशनल असेम्बली भंग करदी गई। केवल दो वर्ष बाद ही नये चुनाव हुये जिसमें डिमोक्रेटिक पार्टी विजयी हुई। जिस प्रकार फ्रांस व वीटनम में मार्च १९४९ में एक सन्धि हुई थी, ठीक उसी प्रकार की फ्रेंको-कम्बोडियन समझौता

हुआ। कम्बोडिया में फ्रेंच यूनियन के ही अन्दर एक स्वतन्त्र राष्ट्र घोषित कर दिया गया। बाद में कुछ परिस्थितियों के कारण जून १९५२ में यहां के राजा ने डिमोक्रेटिक गवर्नमेंट के सब अधिकारों को अपने हाथों में ले लिया। उसने यह वादा कर दिया, कि तीन वर्ष के अन्दर ही वह यहां पूर्ण रूप से शान्ति स्थापित करने के उपरान्त स्वतन्त्र कर देगा। इसी कारण उसने नेशनल असेम्बली पुन: बनाई और उसे कुछ अधिकार सौंप दिये। परन्तु जनवरी १९५३ में उसने इस असेम्बली को भी रद्द कर दिया, क्योंकि उसे सन्देह था, कि इसमें कुछ ऐसी वार्ता भी होती है जो उसकी शान के विरुद्ध पड़ती है। राजा ने बहुत प्रयत्न किया कि कम्बोडिया में पूर्ण शान्ति स्थापित हो जाय तथा यह पूर्ण स्वतन्त्रता भी प्राप्त करले। परन्तु उसे सफलता प्राप्त न हुई।

फ्रांस के प्रधान मंत्री ने, ३ जुलाई १९५३ को इण्डोचीन के सब राज्यों को स्वतन्त्रता प्रदान करने की घोषणा कर दी। कम्बोडिया को स्वतन्त्रता तथा सैनिक अधिकार ९ अक्टूबर १९५३ को फ्रेंच कम्बोडियन सुलह के अन्तर्गत प्राप्त हुये। जेनोआ सुलह के अन्तर्गत इस देश पर जो वीटनम सेनायें थीं हटा लीं गईं। इसी समझौते के अन्तर्गत कम्बोडिया, लाओस तथा वीटनम को पूर्ण स्वतन्त्रता घोषित करदी गई। सितम्बर १९५४ में सोन गोनथैन जो कि विरुद्ध पार्टी के नेता थे स्वयं हार मान गये। ठीक १० फरवरी १९५५ में यहां के राजा को राज्य करने के अधिकार (चुनाव के अन्तर्गत) प्राप्त हो गये।

लाओस (Laos) :—

यह राज्य इण्डोचीन प्रायद्वीप पर १३°४०' उत्तरी अक्षांश से लेकर २२°४० उत्तरी अक्षांश तक तथा १००° पूर्वी देशान्तर से १०७° पूर्वी देशान्तर तक विस्तृत है। इसका विस्तार उत्तर से दक्षिण तक ६०- मील है। इसका क्षेत्रफल ९०००० वर्गमील है। यह देश दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहला उच्च तथा, दूसरा निम्न। उच्च लाओस में गहरी गहरी घाटियां तथा ऊंची-ऊंची पर्वत श्रेणियां पाई जाती हैं। इन श्रेणियों की अधिकतम ऊंचाई ६५०० फीट है। निम्न लाओस एक समतल भाग है, जो कि हरी-हरी घास से ढका हुआ है। ये भाग पशु चराने के हेतु बड़े महत्वपूर्ण हैं। सन् १९४७ में यहां की जनसंख्या १,१६६,००० तथा १९५४ में १,३०९,००० थी। लाओस की दो तिहाई जनसंख्या का सम्बन्ध थाई बर्मा के शान लोगों से है। शेष जनसंख्या में अनेक जातियों का मिश्रण पाया जाता है, जैसे मोई, मुआंग माँस, मिओज़ तथा लोलोज। ऐसा प्रतीत होता है कि यह लोग प्राचीन काल में दक्षिणी चीन से यहां पर आकर बस गये थे।

यहां पर विभिन्न प्रकार की जलवायु सम्बन्धी दशायें पाई जाती हैं। इसकी

जलवायु के विषय में ऊपर काफी बतलाया जा चुका है। विंतेनशियेन का न्यूनतम तापक्रम ५०° फा० तथा अधिकतम् तापक्रम १००° फा० रहता है। यहां पर वर्षा दक्षिणी पश्चिमी मानसून से होती है। इस राज्य के अधिक भाग में वर्षा ४५" से ८०" तक हो जाती है।

इण्डोचीन प्रायद्वीप पर केवल यही एक ऐसा राज्य है, जिसका आर्थिक विकास अधिक नहीं हो सका है। वन सम्पत्ति यहां की काफी विस्तृत है, परन्तु उत्तम श्रेणी की लकड़ी प्राप्त नहीं की जाती। सागौन ही केवल एक ऐसी लकड़ी है, जो व्यापार के दृष्टिकोण से इन वनों से प्राप्त की जाती है। खनिज सम्पत्ति का भण्डार भी यहां अपार है परन्तु देश की निर्धनता के कारण उनका विकास नहीं हो पाया है। रांगा ही केवल ऐसी धातु है, जो प्रचुर मात्रा में यहां से प्राप्त की जाती है। इसकी औसत प्राप्ति प्रतिवर्ष २००० टन हो जाती है। उद्योग धंधों का विकास यहां बहुत अधिक नहीं हो पाया, केवल कुछ घरेलू उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों में पाये जाते हैं। बड़े पैमाने पर कोई भी उद्योग स्थापित नहीं हो सके। यातायात साधन भी यहां बहुत कम उन्नति कर पाये हैं। यहां पर रेलें नहीं पाई जाती। व्यापार केवल नदियों द्वारा ही होता है। मिकांग एक लम्बी व्यापारिक नदी है और सात प्रान्तों में होकर समुद्र में पहले प्रवेश करती है।

ननचावो राज्य की स्थापना लाओशियन लोगों ने ७१३ A. D. में की थी। अठारहवीं शताब्दी के अन्त में लाओस से अधिक भाग में स्यामीज लोगों का तथा उसी समय अनाम लोगों का देश के दक्षिणी पूर्वी भाग पर आधिपत्य हो गया था। सन् १८८३ में तीन फ्रेंच सेनाओं ने लाओस के मुख्य नगरों को अपने अधिकार में कर लिया। जिस समय स्याम को फ्रेञ्च लोगों के अधिकार में आना पड़ा था, उस समय लाओस का बहुत बड़ा भाग भी ३ अक्टूबर १८९३ की सुलह के अनुसार फ्रेञ्च लोगों के पास चला गया था। सन् १९०७ में स्याम ने फ्रांसीसियों का आधिपत्य स्वीकार कर लिया। प्रथम युद्ध के पूर्व लाओस का दक्षिणी भाग फ्रेञ्च के तथा उत्तरी भाग तक लुआंग प्रवांग के राजा के अधिकार में था। जापानी आधिपत्य के समय में भी यह उसी प्रकार रहा, इसमें कोई भी परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं हुआ।

जापानियों ने ९ मार्च १९४५ में इस पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया। और इसे स्वतन्त्रता भी प्रदान कर दी। एक लाओशियन गवर्नमेंट १५ अप्रैल को बना दी गई। पहली सितम्बर को जब कि जापानी लोग हार गये तब राजकुमार पेटसराथ जो कि प्रधान मन्त्री थे, शासक बना दिये गये। सितम्बर १५ को लाओस राज्य स्थापित कर दिया गया और उसका राजा लुआंग प्रबांग घोषित कर दिया गया। सन् १९४६ के आरम्भ में पुनः फ्रेञ्च लोगों ने लाओस पर विजय करली।

स्वतंत्र लाओस निवासियों को बैंकाक में शरण लेनी पड़ी।

फ्रांस तथा लाओस के राजा में २७ अगस्त १९४६ को एक समझौता हुआ, इसके अन्तर्गत लाओस स्वतन्त्र होगया। राष्ट्रीय विधान सभा के डिप्टियों का चुनाव जनवरी १९४७ को ही हो गया। ठीक ११ मई को संविधान बना दिया गया। अगस्त के माह में नेशनल असेम्बली के चुनाव हो गये। उन्नीस जुलाई १९४९ को लाओस और फ्रांस के मध्य एक समझौता हुआ। लाओस फ्रेञ्च यूनियन के अन्तर्गत एक राज्य घोषित कर दिया गया। मार्च १९५४ तक ३७ राज्यों ने लाओस अपना लिया।

लाओस ने पाउ-कान्फ्रेन्स में भाग लिया। यह कान्फ्रेन्स फ्रान्स में जून से नवम्बर तक हुई थी। इसमें फ्रान्स तथा इण्डोचीन राज्यों के कुछ रुपये पैसे सम्बन्धी मामले तय किये गये। राजा सिसावंग वोंग तथा फ्रांस के मध्य २२ अक्टूबर १९५३ को एक समझौता हुआ। इसके अन्तर्गत लाओस को पूर्ण स्वराज्य प्राप्त हो गया। लाओस की रक्षा का भार फ्रांस ने अपने ऊपर ले लिया।

वीटमिन तथा स्वतन्त्र लाओशियन सेनायें बराबर उपद्रव कर रही थीं। वीटमिन सेनायें ६ फरवरी १९५४ को लुआंग प्रबांग से केवल बारह मील ही दूर रह गई थी। जैनेवा सन्धि [जो कि जुलाई १९५४ में हुई थी] के अन्तर्गत यह उपद्रव समाप्त हो गया। वीटमिन तथा फ्रेञ्च सेनाओं को तुरन्त देश छोड़ देने का आदेश दिया गया। जैनेवा सुलह के अन्तर्गत इस राज्य के सम्बन्ध में दो घोषणायें की गई। पहली—इसको पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान की जाय, दूसरी—सामान्य चुनाव किये जांय।

लाओस में संवैधानिक राजतंत्र सरकार है। यहां राजा अपने मन्त्रियों की सहायता से शासन करता है। नेशनल असेम्बली केवल चार वर्ष के लिये बनाई जाती है। उसके पास सर्वाधिकार रहता है, राजा की काउन्सिल में दो सदस्य होते हैं, जो केवल चार वर्ष के लिये ही चुने जाते हैं। इसमें से ६ राजा स्वयं चुनता है, शेष तीन असेम्बली चुनती है। इनका प्रमुख कार्य सलाह करना ही होता है। प्रमुख अधिकार काउन्सिल के मन्त्रियों को ही प्राप्त रहते हैं।

इण्डोनेशिया

दक्षिण-पूर्वी द्वीप समूह में जावा, मदुरा तथा अन्य बाहरी द्वीप सम्मिलित हैं। पहले यह नेदरलैंड इण्डीज़ कहलाते थे, परन्तु १६४६ से यह नेदरलैंड राज्य से पृथक हो गये। अब यह स्वतन्त्र राज्य है। इन सबों में सब से महत्वपूर्ण द्वीप जावा है और यही सबसे घना बसा हुआ है। जावा और मदुरा का क्षेत्रफल ५१०३५ वर्गमील है तथा बाहरी अन्य द्वीप ७०२,२३२ वर्गमील हैं, इस प्रकार से इन्डोनेशिया का अनुमानित क्षेत्रफल ७५३,२६७ वर्ग मील है। [कुछ लेखकों ने इस देश का क्षेत्रफल ५७५,८६३० वर्गमील भी बतलाया है] इसमें सबसे बड़ा द्वीप बोर्नियो है, जिसका क्षेत्रफल २१३५८६ वर्गमील, इसके बाद सुमात्रा, जो १६२,२६८ वर्गमील और फिर पश्चिमी न्यूगिनी १५३३२१ वर्गमील तथा सेलबीज़७१७६३ वर्ग-मील हैं। ये सब तीन वर्ग में विभाजित किये जा सकते हैं, पहला जो कि सुण्डा वर्ग कहा जा सकता है, जिसमें जावा, सुमात्रा, बोर्नियो तथा सेलबीज़ तथा अन्य छोटे छोटे द्वीप जो कि सुन्डा छिछले सागर में स्थित है, आते हैं। दूसरा वर्ग वह है जो कि बाली द्वीप से तिमोर तक विस्तृत है, तथा तीसरा मोलक्काज़, पश्चिमी न्यूगिनी को तथा आस्ट्रेलियन छिछले सागर के अन्य द्वीपों को शामिल करता है।

ये सब द्वीप भूमध्य रेखा को पार करते हुए लगभग तीन हज़ार मील से भी अधिक दूरी तक विस्तृत है, उत्तर से दक्षिण तक इसका विस्तार एक हज़ार मील से भी अधिक है। भू-क्षेत्र कदाचित संयुक्त राज्य अमरीका का चौथाई ही हैं। किसी सीमा तक ये एशिया के भूगोल के अन्तर्गत हैं, परन्तु कुछ विद्वानों का मत है कि ये आस्ट्रेलिया तथा मेलेनेशिया में सम्मिलित हैं।

भौतिक रूप (Physical Aspect)

बनावट तथा धरातल (Structure and Relief)

भूगर्भ शास्त्रियों ने इण्डोनेशिया के ढाँचे के विषय में बतलाया है कि यह एशिया के टरशियरी युग के पर्वतों से सम्बन्धित है, इस दृष्टिकोण से हम इसको तीन खण्डों में विभाजित कर सकते हैं। पहले खण्ड में तथा अन्त के खण्ड में हमको कई कठोर भाग मिलते हैं। इन भागों में कई स्थानों पर अनावृत्तीकरण-कृत मैदान पाये जाते हैं। यदि हम प्राचीन भूगर्भ इतिहास का अध्ययन करें तो

*Indonesia comprises 4 islands:—Java, Sumatra, Borneo and Celebes, besides some 15 minor but still important islands, and thousands of small ones.

हमें मालूम होगा कि कई हज़ार वर्ष पहले इण्डोनेशिया का सम्बन्ध एशिया तथा आस्ट्रेलिया से था, क्योंकि हमको द्वीपों के मध्य कई छिछले सागर मिलते हैं; और इसके अलावा यहां भी लगभग वैसी चट्टानें पाई जाती हैं जैसी कि इन दोनों महाद्वीपों में पाई जाती हैं। इण्डोनेशिया के कुछ क्षेत्र तो हाल ही में समुद्र तल से उठे हैं, उदाहरणार्थ उत्तरी जावा तथा सुमात्रा का भाग। छोटे सुण्डा समूह में बहुत ही गहरे गहरे सागर पाये जाते हैं, इसके अतिरिक्त द्वीप भी सीधे सीधे उठे हुए हैं। कदाचित, यहाँ पर्वतों की रचना अभी तक बराबर हो रही है; क्योंकि यहां प्राय: भूचाल के अतिरिक्त ज्वालामुखी पर्वतों के विस्फोटन भी हुआ करते है।

ज्वालामुखी पर्वतों की श्रेणियां जावा, सुमात्रा तथा बोर्नियो तक चली गई हैं, और न्यूगिनी में मोड़ बनाती हुई फिलीपाइन द्वीप समूह तक चली आई हैं। जावा में सबसे अधिक पर्वत हैं, और वह भी सब जीवित अवस्था में, इनमें से किसी न किसी का विस्फोटन हर समय होता रहता है। सुमात्रा तथा अन्य द्वीपों में जो पर्वत पाये जाते हैं, वह अधिक जीवित अवस्था में नहीं पाये जाते हैं। जावा के इन पर्वतों ने यहां के निवासियों को बड़ी हानि पहुंचाई है। हजारों की संख्या में लोग धधकते हुये लावा में दबकर नष्ट हो गये। कई ज्वालामुखी पर्वत तो ५५०० फीट से भी अधिक ऊंचे हैं। इण्डोनेशिया के कई महाद्वीपों में ज्वालामुखी पर्वत डेढ़ मील से भी अधिक ऊंचे हैं। कई स्थानों पर काल्डिरा तथा क्रेटर दृष्टिगोचर होते हैं। इसके अतिरिक्त अग्नि चट्टानों के अनेक भौतिक रूप भी देखने को मिलते हैं।

इन पर्वतों में सबसे अधिक प्रसिद्ध कराकाटवा है। यह सुन्डा के जल-डमरूमध्य में जावा व सुमात्रा के मध्य एक द्वीप था। ठीक २७ अगस्त सन् १८८३ में यहां एकायक एक भयंकर उद्‌गार हो गया, इसके लगभग सौ वर्ष पहले भी यहाँ एक उद्‌गार हुआ था, परन्तु वह इतना भीषण था, कि पूरे द्वीप का दो-तिहाई भाग उड़ गया। क्रेटर पर १००० फी० गहरा जल भर गया था, चट्टानों के कण तथा भाप वायुमंडल में १७ मील की ऊंचाई तक पहुँच गई, सौ मील की दूरी तक खिड़कियों के शीशे भी टूट गये थे। विस्फोट की भयंकर ध्वनि १५० मील दूर तक गूंज गई थी। साधारण आवाज आस्ट्रेलिया तथा भारतवर्ष तक सुनाई दी थी। आकाश पर कई दिनों तक अन्धकार छा गया था, और दोपहर में भी सूर्योदय तथा सूर्यास्त जैसे दृश्य दृष्टिगोचर होने लगे थे। समुद्र में लहरें ४६७ मील प्रति घन्टे की चाल से दौड़ पड़ी थी। इनका प्रभाव यहां से ६४६० मील दूर दक्षिणी अफ्रीका तक पड़ा था। इस उद्‌गार के अन्तर्गत ३६००० मनुष्यों का विनाश हुआ।

Dr C. B. Cressey--Asia's Lands & its People, pages 529—30

सन् १९२७ में एक और छोटा सा द्वीप इसी के स्थान पर दृष्टिगोचर होने लगा। यह अनेक कंराकाटवा कहलाता है। दूसरे शब्दों में यह कंराकाटवा का बच्चा कहलाता है। विशेषज्ञों का मत है कि १८१५ का तमबोरा का उद्गार भी लगभग इतना ही भयंकर था।

जलवायु—(Climate) :—

इण्डोनेशिया उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में भूमध्य रेखा के निकट ही स्थित है, यहां तापक्रम ६६° फा० से लेकर ६६° फा० तक अङ्कित किया जाता है। यह तापक्रम समुद्र से बराबर प्रभावित होता रहता है। वार्षिक तापान्तर बहुत ही कम मिला है। जकार्टा में केवल २° तथा सिंगापुर ३° तापान्तर मिलता है। गर्म रातें तथा अधिक नमी मिलकर निचले भागों की जलवायु को बहुत ही उत्तम बना देती हैं। कुछ समय तक पर्वतों पर भी रहने की आवश्यकता पड़ जाती है। तापक्रम ऋतु की अपेक्षा ऊंचाई से अधिक प्रभावित होता है। यहां का मौसम तापक्रम की अपेक्षा वर्षा पर अधिक निर्भर रहता है और यह द्वीपसमूह दक्षिण-पूर्वी एशिया तथा उत्तरी आस्ट्रेलिया के महान् मानसून क्षेत्रों के मध्य स्थित हैं। मानसून हवायें जो कि ऋतुओं को इन देशों में नियन्त्रित करती है, इन्हीं के ऊपर होकर गुजरती हैं। अधिक भार व न्यून भार वाले क्षेत्र भी यहां स्थापित हो जाते हैं, इनके कारण उत्तर-पूर्वी व दक्षिण-पूर्वी हवाओं में भी परिवर्तन हो जाया करता है।

स्थानीय विशेषतायें भी कई जगह दृष्टिगोचर होती हैं। यहां कई ऐसे चैनेल तथा जल-डमरूमध्य है, जिनमें स्थानीय वायु के प्रचंड झोंके (Squalls) तथा अन्य ऋतु सम्बन्धी परिवर्तन पाये जाते हैं। उदाहरणार्थ मलक्का जल डमरूमध्य में बहुत ही तीव्र वायु के प्रचंड झोंके आया करते हैं, साथ ही यहां बिजली की गर्जन तथा चमक के साथ वर्षा भी खूब होती है। कहीं कहीं पर गर्म सागर तथा अनेक पर्वत श्रेणियों के कारण वर्षा बहुत अधिक हो जाया करती है। जावा के पश्चिम में २०० इंच वर्षा हो जाया करती है। औसत वार्षिक वर्षा जकार्टा में ८०" तथा कलमन्तान व सुमात्रा में १२२—१४४° अंकित की जाती है। जावा के पश्चिम में बोगोर यहां का चेरापूंजी है।

जितनी वर्षा इण्डोनेशिया में होती है, उतनी कदाचित विश्व के किसी भी भाग में नहीं होती। यहां पर वर्षा ऋतु में उत्तर से दक्षिण तक भिन्नता पाई जाती है। शीत ऋतु में जब कि मध्य एशिया से लौटते हुये मानसून चलते हैं तब इन उत्तर-पूर्वी हवाओं से भूमध्य रेखा के उत्तर में काफी वर्षा हो जाती है। यद्यपि ये हवायें शुष्क होती हैं, परन्तु फिर भी समुद्र से कुछ नमी प्राप्त करके पर्वत

W. G. Kendrew, The Climates of the Continents, Pages 144-145.

श्रेणियों से टकरा कर बरस जातीं है । जब ये हवायें भूमध्य रेखा को पार करके दक्षिण की ओर आतीं हैं, तब ये मुड़ जातीं हैं और इनकी दिशा उत्तरी-पश्चिमी हो जाती हैं।

ग्रीष्म ऋतु में दशायें विपरीत पाई जाती हैं। इस ऋतु में यहां आस्ट्रेलिया के शुष्क भागों से दक्षिण-पूर्वी व्यापारिक हवायें चलती हैं। इनसे बहुत कम वर्षा होती है, और वह भी उन स्थानों पर जहां ये हवायें पर्वतों के सहारे ऊपर उठ जातीं हैं। इनसे भी कहीं कहीं पर घोर वर्षा हो जाती है। यदि देखा जाय तो वर्षा सबसे अधिक मई से लेकर अक्टूबर तक होती है, शीत ऋतु में दिसम्बर से लेकर जनवरी तक वर्षा बहुत कम होती है। वह स्थान जहां वर्षा बहुत ही कम होती है, जलवृष्टि छाया प्रदेश (Rainshadow) वाहनिक वर्षा या 'कनवेक्शनल रेन' कई स्थानों पर होता है।

इन्डोनेशिया को तीन वर्षा–क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। (१) उत्तरी सुमात्रा तथा उत्तरी आधा बोर्नियो, जहां कि अगस्त में दक्षिण पश्चिमी हवाओं से बहुत अधिक वर्षा तथा फरवरी में बहुत कम होती है।

भूमध्य रेखा पर तथा उसके निकट वर्षा साल भर बहुत अधिक होती है, तथा यहाँ हवा में बड़ी आद्रता रहती है।

(३) दक्षिणी बोर्नियो, दक्षिणी सेलीवीज़, जावा तथा सुन्डा द्वीप नवम्बर से लेकर अप्रैल तक बहुत अधिक, और मई से सितम्बर तक बहुत कम वर्षा प्राप्त करते हैं। पूर्वी द्वीपों की ओर शुष्क ऋतु रहती है।

चक्रवात (Typhoons) यहाँ बहुत अधिक आते हैं। इनके द्वारा यहाँ बहुत हानि होती है। यह कुछ समय के लिये ऋतु को भी परिवर्तित कर देते हैं। चक्रवात जुलाई से लेकर नवम्बर तक बहुत अधिक, मई जून तथा दिसम्बर में अधिक, जनवरी, मार्च तथा अप्रैल में कम तथा फरवरी में बहुत ही कम या बिल्कुल भी नहीं आते हैं।

कुछ चक्रवात तो पश्चिम की ओर अपना मार्ग परिवर्तित कर लेते हैं, और इन्डोचीन के तट की ओर चले जाते हैं, शेष उत्तर की ओर धनुषाकार रूप में कीरोसिवो गर्म धारा के मार्ग पर जापान व चीन की ओर चले जाते हैं।

मानवीय रूप (Human Aspect)

जनसंख्या वितरण—(Population Distribution) :—

सन् १६२० से लेकर अब तक इन्डोनेशिया में जन-गणना नहीं हुई है। डा० एन० कीफिज़ (Dr. N. Keyfitz) ने यहां की जनसंख्या के अनुमान जो लगाये, उसके अन्तर्गत १६५४ में यहां ८१,१००,००० और १६५५ में

८२,३००,००० थी। बाद वाले आँकड़ों में बीस लाख विदेशी भी सम्मिलित हैं। जावा व मदुरा की जन-संख्या इसी सन् में ५४,२००,००० तथा बाहरी द्वीपों की २८,१००,००० थी। श्री जे० राधाकृष्णनन के अनुसार जावा की जनसंख्या ७८,०००,००० है। इस द्वीप की जनसंख्या घनत्व इसी वर्ष ४१०.६ व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर बाहरी द्वीपों का १५.८ प्रतिवर्ग किलोमीटर था। संसार के किसी भी देश में इतनी घनी कृषिक जनसंख्या नहीं पाई जाती जितनी की जावा में पाई जाती है। इसके विपरीत यहाँ कुछ ऐसे भी क्षेत्र पाये जाते हैं, जिनमें बहुत ही कम जनसंख्या है, उदाहरणीय आन्तरिक बोर्नियो में तथा न्यूगिनी में। इन्डोनेशिया के द्वीपों की जनसंख्या वृद्धि पर है। जावा की जनसंख्या बहुत अधिक बढ़ गई है सन् १८१३ में ५० लाख १८४५ में ९४ लाख १८८० में १९५ लाख, १९०० में २८४ लाख तथा १९३० में ४०९ लाख थी। आश्चर्य की बात यह है कि, इतनी अधिक जनसंख्या भी इस देश में बड़ी सुविधा के साथ रहती है। कदाचित विश्व के किसी भी भाग में इतने प्रसन्न तथा सन्तुष्ट लोग नहीं पाये जाते। आज से लगभग १५ वर्ष पहले अरब के निवासियों की संख्या ७१००० तथा चीनियों की १२३४००० थी। ये अधिकतर व्यापारी ही हैं। यहां की जन्मदर ४० प्रति हजार तथा मृत्युदर २० प्रति हजार है। इन आंकड़ों को देखते हुये पता चलता है कि जन संख्या वृद्धि मोटे तौर पर २० व्यक्ति प्रति हजार है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है, कि जनसंख्या में प्रतिवर्ष वृद्धि १.५% होती है।

आर्थिक रूप (Economic Aspect)

प्राकृतिक वनस्पति (Natural Vegetation) :—

इन्डोनेशिया की स्थिति भूमध्य रेखीय प्रदेश में है, इसीलिये यहां बहुत घनी वनस्पति पाई जाती हैं। जिन स्थानों पर बन साफ नहीं किये गये है, वहाँ इतनी घनी वनस्पति है, कि धरातल पर सूर्य का प्रकाश तक नहीं आ पाता। इन बनों में वृक्ष बहुत लम्बे होते हैं। इनकी लम्बाई २०० फीट से लेकर ३०० फीट तक होती है। इनकी चोटियां छतरीनुमा होती हैं, और सूर्य का प्रकाश भी छनकर नीचे नहीं पहुंच पाता। वृक्षों के बीच में अनेक प्रकार की बेलें उग आती हैं, जो प्रायः वृक्षों के तनों से लिपट जातीं हैं। इन बनों में महोगिनी, गटापोर्चा, संदल, बांस, बेंत, रबर, ताड़, सिनकोना, आबनूस, रोजवुड इत्यादि वृक्ष उगते हैं। इन वृक्षों की लकड़ी बहुत कठोर होती है और थोड़े से क्षेत्र में ही अनेक प्रकार के वृक्ष उगे होते हैं। कभी कभी एक वृक्ष के ऊपर दूसरे किस्म का और दूसरे के ऊपर तीसरे किस्म के वृक्ष भी उग आया करते हैं।

दलदली क्षेत्रों की भी यहां कमी नहीं है। सुमात्रा, जावा तथा अन्य द्वीपों के कुछ भागों में दलदली क्षेत्र पाये जाते हैं। बेंत, बांस तथा नारियल समुद्र तट तथा डेल्टे वाले क्षेत्रों में ही अधिकतर उगते हैं। बांस यहां काफी मोटे होते हैं। इनके तने ३० इंच से कम मोटे नहीं होते।

कृषि (Acriculture) :—

कृषि यहां के लोगों का मुख्य धन्धा है। कृषि उद्योग का विकास यहाँ पर प्राकृतिक सुविधाओं के कारण हुआ है। मिट्टी यहां कई स्थानों पर बहुत उपजाऊ मिलती है। ज्वालामुखी पर्वत पाये जाने के कारण यहां पर लावा मिट्टी भी मिलती है कुछ तो इतनी उपजाऊ है कि उनमें खाद देने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती। इसके विपरीत सुमात्रा, बोर्नियो, सेलीबीज़ तथा न्यूगिनी में ज्वाला मुखी पर्वतों के न पाये जाने के कारण कुछ भागों में मिट्टी कदापि उपजाऊ नहीं है।

कृषि उद्योग यहां पर दो रूप में पाया जाता है। पहला तो छोटे पैमाने पर जो कि यहां के लोग अपने भोजन के लिये करते हैं, इससे जो उपजें प्राप्त होतीं हैं, उनका व्यापार बहुत कम होता है। दूसरा वह जो बड़े पैमाने पर किया जाता है, इसमें लगाई हुई उपजें सम्मिलित हैं। इनसे प्राप्त हुई उपजें विदेशी व्यापार के काम आतीं हैं और अधिक से अधिक मात्रा में निर्यात कर दी जातीं हैं।

मुख्य निर्यात फसलों का उत्पादन

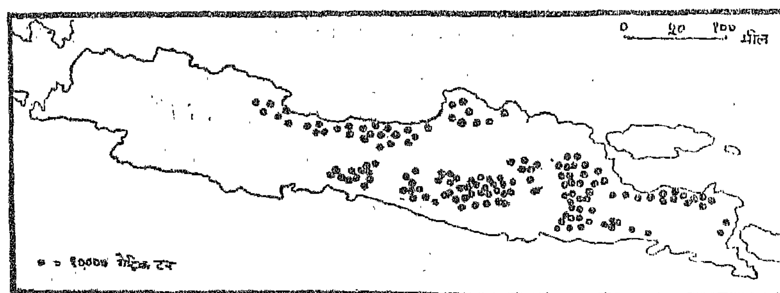
	१६५०	१६५२
रबर	१७८,०७६	३०६,७८२
चाय	३५,३८४	३६,७७८
काफी	११,१११	२१,८४७
सिन्कोना-छाल	७०८	१,११५
कोको	८५८	२,२२०
शकर	२७७,०६१	६१६,५२१
खजूर का तेल (Palm-oil)	१२६,४६१	१६०,५६६
खजूर	३०,७७५	४२,३७७
कठोर रेशे	७,०२५	२७,४३५

(Report on Indonesia, August —September, 1954)

एक विशेष बात डच लोगों के शासनप्रबन्ध में यह थी, कि यहां की कृषि भूमि (जो कि यहां के आदि निवासियों के अधिकार में रही है) पर किसी भी

विदेशी को हाथ नहीं रखने दिया गया, यहां तक कि डच लोग स्वयं ही भूमि पर अधिकार प्राप्त कर पाये। इस तरह यहां के आदि निवासियों के पास उपजाऊ भूमि सुरक्षित रही है। गन्ने की कृषि के हेतु विदेशी लोग लगान देकर खेत ले लेते हैं। परन्तु फिर भी आदि निवासियों को तीन वर्ष में एक बार भूमि जोतने का अधिकार दिया जाता है।

धान के खेत यहाँ उसी प्रकार के हैं, जैसे कि भारतवर्ष में, इन्हें यहाँ 'सवाह्ज' (Sawahs) कहते हैं। चावल यहां दो प्रकार के क्षेत्रों में उत्पन्न किया जाता है, पहला निचले भागों के दलदली क्षेत्र में तथा दूसरा उच्च भागों के पर्वतों के ढाल पर। ज्वालामुखी पर्वतों की डाली हुई मिट्टी इन पर्वतीय ढालों पर बहुत अधिक पाई जाती है, यह धान की कृषि के हेतु बहुत ही लाभदायक होती है। धान के अतिरिक्त अन्य खाद्यपदार्थों में मक्का, शकरकन्दी, आलू, कैसवा, मटर, सोयाबीन इत्यादि मुख्य हैं। फलों के वृक्ष तथा तरकारियों के छोटे छोटे खेत सभी घरों के सामने पाये जाते हैं। धान के खेत जो काफी तर होते हैं, उनमें



जावा—ईख का उत्पादन

भैंसे तथा जो कुछ शुष्क होते हैं, उनमें बैल प्रयोग किये जाते हैं। कुछ भागों में स्थाई रूप से भूमि पर कृषि की जाती है, यहां सिंचाई की व्यवस्था नहीं रहती, ऐसे भागों में नारियल, केपोक, पिपर, गरम मसाले तथा रबड़, कैसवा व कहवा इत्यादि उत्पन्न किया जाता है।

इंडोनेशिया में कृषि-उपजें १९५३
(००० मेट्रिक टनों में)

चावल	—	६,६६५
मक्का	—	२,४१६
कैसवा (जड़ें)	—	८,३३२
बटाटा (जड़ें)	—	१,३१९

मूंगफली	—	१९६
सोयबीन	—	३०४
चाय	—	६

लगाई हुई उपज की यहां बहुत उन्नति हुई है, क्योंकि विदेशी पूंजी की सहायता से हर प्रकार की सुविधायें प्राप्त हो गई हैं। इसके अतिरिक्त यहां की भौगोलिक परिस्थितियां तथा जन-संख्या भी अनुकूल पाई जाती हैं। आज से लगभग १५ वर्ष पहले २२० लाख एकड़ भूमि से अधिक जावा में घरेलू खाद्यपदार्थ के लिये तथा निर्यात फसलों की उत्पत्ति के लिये प्रयोग की जाती थी। सुमात्रा, बोर्नियो, सेलीबीज़, तथा अन्य द्वीपों में केवल ८० तथा ५० लाख एकड़ भूमि का उपयोग हुआ, जबकि छोटी-छोटी रियासतों में १५ लाख एकड़ भूमि इस कार्य के उपयोग की थी। कुछ रियासतें केवल एक ही वस्तु उगाने में प्रसिद्ध हो गई हैं। इनमें से रबड़, कोपरा, चाय, कहवा, सिनकोना इत्यादि कुछ विशेष निर्यात की जाने वाली उपजें हैं। इनके अतिरिक्त चीनी, तम्बाकू, कपोक, ससिल तथा खजूर का तेल इत्यादि अन्य हैं। जावा के बाद सुमात्रा ही एक ऐसा द्वीप है, जहां रियासतों पर की उपज का क्षेत्र सबसे अधिक है। तम्बाकू इनमें प्राचीन काल से उत्पन्न की जाती है।

इंडोनेशिया में कृषि-उत्पादन १९५३ में (लगाई हुई उपजें)
(००० मेट्रिक टनों में)

शक्कर	—	६११.५
रबड़	—	३०६.८
चाय	—	३६.८
कहवा	—	२१.८
खजूर का तेल	—	१६०.६
कठोर रस्सी का रेशा	—	२७.४
कुनैन की छाल	—	१.१
तम्बाकू	—	२.६
कोको	—	१.२

इन द्वीपों के उपजाऊपन के कारण ही यहाँ विश्व की ९०% कुनैन, ८०% पिपर तथा ७५% केपोक होता है। विश्व का एक-तिहाई रबड़, एक चौथाई वृक्षों से प्राप्त किया हुआ तेल यहीं से प्राप्त किया जाता है। शक्कर तथा कहवा निर्यात की उपजें हैं। जावा यहां का एक ऐसा द्वीप है जो कृषि सम्बन्धी उपज में आत्मनिर्भर है। अन्य बाहरी द्वीपों में भी उन्नति होने की सम्भावनायें हैं। यद्यपि कुछ ऐसे भी द्वीप हैं, जिनमें मिट्टी अधिक उपजाऊ नहीं है। जावा में इस बात के

प्रयत्न किये जा रहे हैं, कि लोग अन्य द्वीपों में भी जा बसें, जिससे कि यहाँ की जनसंख्या का दबाव कुछ कम हो जाय।

जीव जन्तु (Animals) :—

इस राष्ट्र में अनेक जीवजन्तु पाये जाते हैं। सन १९५२ में इनकी संख्या इस प्रकार थी—गायें ४,५६६,०००, भैंसे २,८५१,०००, घोड़े ५४६,०००, भेड़ और बकरे ७,८४५ ०००, सुअर १,०६६,०००, इन जीव जन्तुओं के अतिरिक्त यहां अनेक पक्षी भी पाये जाते हैं।

खनिज सम्पत्ति (Mineral Wealth) :—

इन्डोनेशिया में विभिन्न प्रकार के खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। यद्यपि प्रत्येक की मात्रा कम है। परन्तु काफी महत्वपूर्ण है। महत्वपूर्ण तथा मूल्यवान खनिजों में पेट्रोलियम सुमात्रा में पाया जाता है। पहला क्षेत्र यहाँ पलेमबंग के निकट तथा दूसरा उत्तर में मिदान तथा तीसरा उत्तर में जाम्बी है। बोर्नियो में तराकान तथा बालिकपापन प्रसिद्ध क्षेत्र हैं। जावा में रेमबाँग के निकट बहुत ही थोड़ा पेट्रोल निकाला जाता है, सिरम द्वीप में भी थोड़ी मात्रा में पेट्रोल प्राप्त किया जाता है। पेट्रोलियम की कुल उत्पत्ति यहां १९४८ में १५८ लाख मेट्रिक टन से अधिक थी। सन १९५३ में इसका उत्पादन १०,२२५,००० मेट्रिक टन था।

पेट्रोलियम के बाद दूसरा महत्वपूर्ण खनिज पदार्थ राँगा है। राँगा बाँका व बिलटिन के द्वीपों में होता है। समस्त एशिया की उत्पत्ति का एक तिहाई राँगा इन्हीं द्वीपों से प्राप्त किया जाता है। उत्पादन १९५३ में ३३,८२२ टन था। बाक्साइट विन्तन द्वीप से, कोयला, गन्धक, नमक तथा मैंगनीज़ जावा से तथा निकिल सेलबीज़ द्वीप से प्राप्त किया जाता है।*

टिन का उत्पादन तथा निर्यात

(In Long tons)

	उत्पादन	निर्यात	
	टिन (in concentrates)	टिन (in concentrate)	टिन-धातु
१९५२	३५,००३	३४,६०१	१५
१९५३	३३,८२२	३७,७३२	२२४

(Bank of Indonesia Report, 1953-54)

*In 1953 Production of Bauxite was 150,000 tons, Coal 897,000 tons and Salt 266,000 tons.

From Statesmen Year Book 1955.

खनिज तेल तथा खनिज तेल के पदार्थों का उत्पादन
आयात तथा निर्यात (००० टन)

अशुद्ध तेल			खनिज तेल के पदार्थ	
उत्पादन	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९५२-८,५२३	१,६०१	५६६	११८	६,८५४
१९५३-१०,२२५	२,२७६	३,०८६	६६	७,५१३

(Bank of Indonesia Report, 1953-54)

बाक्साइट एवं कोयले का उत्पादन तथा निर्यात
(००० ग्रास टन)

	उत्पादन		निर्यात	
	बाक्साइट	कोयला	बाक्साइट	कोयला
१९५१	६४४	८६८	६११	११६
१९५२	३४४	६१६	२२०	१०८
१९५३	१५०	८६७	१६२	१३६

(Bank of Indonesia Report, 1953-54)

उद्योग धन्धे : (Industries)

इन्डोनेशिया में उद्योग धन्धों का विकास नहीं हो सका है। इसका प्रमुख कारण यह है कि यहां पर औद्योगिक विकास की सुविधायें पूर्ण रूप से नहीं पाई जातीं। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर बी० एन० गांगुली ने बतलाया है कि यदि समस्त एशिया संगठन से काम ले तो इन्डोनेशिया की औद्योगिक उन्नति अवश्य हो सकती है। कच्चे लोहे का प्रयोग यहाँ पर उसी समय हो सकता है, जब कि सस्ता कोयला प्राप्त हो सके। यदि कोयला नहीं भी मिलता है, तो विद्युत शक्ति या अणु शक्ति का प्रयोग करना पड़ेगा। जो खनिज पदार्थ यहां पर पाये जाते हैं उनके आधार पर कला कौशल की प्रगति बहुत काफी हो सकती है। जावा में कुछ उद्योग धन्धे उन्नति कर गये हैं। और अब जब कि यह स्वतन्त्र हो गया है, और भी अधिक उन्नति हो रही है। इस छोटे से टापू पर डच लोगों ने गत वर्षों में कई उद्योग धन्धे स्थापित कर दिये हैं। यहाँ छोटे पैमाने पर लोहे व स्पात, सूती वस्त्र,

शक्कर, धान कूटने, लकड़ी काटने, कुनैन तैयार करने तथा रबड़ इत्यादि के कारखाने पाये जाते हैं। पोत निर्माण केन्द्र तंदजुक प्रियक, सुराबाया, सिन्नारांग तथा अम्बोयना में मिलते हैं। कई सूती कपड़े कारखाने भी खुल गये हैं। अब दो बड़े बड़े कागज तैयार करने वाले कारखाने भी स्थापित हो गये हैं। मोटरकार ढालने, टायर बनाने तथा शीशा व रसायन तैयार करने के कारखाने खुल गये हैं। सीमेंट भी यहाँ पर तैयार किया जाता है। सन् १९५३ में इसका उत्पादन १४०००० टन था। यदि कुछ सुविधायें और मिल जायें और ढंग से औद्योगिक योजनायें तैयार की जायं, तो निसन्देह यह बहुत उन्नति कर जायेगा।

यातायात के साधन (Means of Transport & Communication):—

यातायात के साधनों में यहाँ पर्याप्त उन्नति हुई है। सन् १९५४ में यहाँ ४८४० किलोमीटर, जावा में, १४४६ किलोमीटर सुमात्रा में लम्बी रेलवे लाइनें हैं। डेली रेलवे कम्पनी की लाइनें ५४४ किलोमीटर लम्बी हैं। सड़कों की लम्बाई १९५३ में ७५००० किलोमीटर थी। इसमें जावा और मदुरा १६,८५०, सुमात्रा १५८००, बोर्नियो २२५०, सेलीबीज़ ५०९०, बाली व लम्बोक १२५० तथा तिमोर २१०० किलोमीटर लम्बी सड़कें शामिल हैं सन् १९५२ में यहाँ के बन्दरगाहों पर १३१ जहाज़ थे। हवाई यातायात में भी इस राष्ट्र ने बहुत उन्नति की है। सन् १९५३ में २९६,००० पेसेंजरों ने यात्रा की और १५४०० टन सामान ढोया गया।

आयात-निर्यात:—(Import & Export)

इन्डोनेशिया से जिन वस्तुओं का निर्यात होता है, उनमें रबड़, पेट्रोलियम, शक्कर, राँगा, तेल इत्यादि उल्लेखनीय हैं। संयुक्त राज्य अमरीका इन वस्तुओं की एक तिहाई मात्रा क्रय कर लेता है। इस निर्यात का सबसे अधिक लाभ डच लोगों को ही होता था। सूती माल जापान से, मशीनें तथा इन्जीनियरिंग का सामान संयुक्त राज्य अमरीका से, तथा नेदरलैंड से खाद्य पदार्थ, लोहे व स्पात की वस्तुयें

इन्डोनेशिया का सन्तुलित व्यापार
(Rp. Million)

	योग			असम्मिलित तेल कम्पनियाँ		
	निर्यात	आयात	संतुलन	निर्यात	आयात	संतुलन
१९५१	१४,३४०	९,१८०	+५१६०	१२,४३८	८,६९०	+३,७४१
१९५२	१०,३८७	१०,५३३	—१४६	८,३१७	९,५४६	—१,२२९
१९५३	९,३४४	८,५८४	+७६०	७,०५२	७,६८९	—६३७

(*Bank of Indonesia Report, 1953-54*)

मुख्य व्यापारिक साझीदार
प्रतिशत

निर्यात	१९५१	१९५२	१९५३	आयात	१९५१	१९५२	१९५३
मलाया तथा सिंगापुर	३४	२७	२४	जापान	१९	१४	१७
नीदरलैंड	२१	२१	२३	नीदरलैंड	१२	१३	१२
यू० एस० ए०	१७	२६	२१	यू०एस०ए०	२०	१७	१८
यू० के०	६	३	२	यू० के०	६	७	७
जर्मनी	३	४	५	जर्मनी	६	७	७
जापान	३	३	६	मलाया तथा सिंगापुर	५	२	१
				भारत	३	२	३

(Quarterly Economic Review of Indonesia
October 1954, London)

आयात की जाती है। इन वस्तुओं के अतिरिक्त तैयार किया हुआ अन्य माल योरोप के देशों से भी मंगाया जाता है।

राजनैतिक रूप (Political Aspect)

इन्डोनेशिया के सफल शासक डच लोग ही रहे हैं। इन द्वीपों का आर्थिक विकास वास्तव में यहां के आदि निवासी तथा डच लोगों के दृढ़ संगठन के कारण ही हुआ है। कदाचित कोई भी योरोप की जाति आजन्म तक एक उपनिवेश क्षेत्र में रहना पसन्द नहीं करती, परन्तु डच लोग ही ऐसे हैं जिन्होंने यहाँ आजन्म रहना निश्चय कर लिया है। जातीय विभिन्नता तथा भेद-भाव यहाँ कदापि दृष्टिगोचर नहीं होता। मिश्रित जाति के बच्चे भी यहाँ उसी स्तर पर रहते हैं, जिस स्तर पर डच लोग रहते हैं।

नैदरलैंड इन्डीज़ सन् * १९४९ से नैदरलैंड राज्य से पृथक हो गया है, और अब स्वयं सोवरेन स्टेट के रूप में है। इण्डोनेशिया दस प्रान्तों में विभाजित है। वे इस प्रकार हैं—पूर्वी, मध्य तथा पश्चिमी जावा, उत्तरी, मध्य तथा दक्षिणी सुमात्रा, कलिमन्तान, सेलीबीज़, मोलुकाज़, नुसा–टैंगारा (छोटे छोटे सुण्डा द्वीप, जैसे बाली, लम्बोक, सुम्बा, फ्लोर्स, सुम्बावा तथा इण्डोनेशियन तिमोर मिलाकर सन् १९५४ से नुसाटुंगारा बने)। यहां के सभापति डा० सुकारनो तथा प्रधान मन्त्री अली सास्त्रा मिजोजो हैं।

* As a result of the round-table conference, held from 23 Aug. to 2 Nov. 1949, complete and unconditional sovereignty was transferred to the Republic of the United States of Indonesia.

सांस्कृतिक रूप (Cultural Aspect)

जातियां:—(Races)

यहाँ विभिन्न जातियाँ पाई जाती हैं। ये इस प्रकार हैं—अचिनीज़, बटक सुमात्रा के मनान क़बाउज़, जावा के जावानीज़ तथा सुण्डानीज़, मदुरा के मदुरीज़, बाली के बालिनीज़, लम्बोक के ससाक्स, सेलीबीज़ के मिनाडोनीज़ तथा न्यूगिनीज़, बोर्नियो में डयाक्स, न्यूगिनी में पपुआज़। परन्तु सबसे अधिक संख्या मेलेज़ (Malays) लोगों की है। ये लोग बड़े बुद्धिमान व प्रसन्न चित्त होते हैं। कार्य करने में बड़े निपुण तथा परिश्रमी होते हैं। परतु साथ ही यह भी देखा गया है, कि ये लोग आमोद-प्रमोद करने में भी अपना काफी समय लगा देते हैं।

इन द्वीपों में लगभग ढाई सौ विभिन्न भाषायें बोली जाती हैं। इनमें से मुख्य मलेशियन, इन्डोनेशियन तथा पोलिनेशियन इत्यादि हैं। इस्लाम यहाँ के लोगों का मुख्य धर्म है। इस धर्म का प्रचार तेरहवीं शताब्दी में अरबों द्वारा हुआ था। यवनों की संख्या यहाँ अधिक पाई जाती है। ईसाइयों की संख्या यहाँ ३० लाख से अधिक है। बौद्ध धर्म के मानने वाले लोगों की संख्या केवल १० लाख है।

शिक्षा (Education) :—

यहां की जातियों में शिक्षा का प्रचार बहुत ही कम है। सन् १९५२ में यहां अशिक्षित लोगों की संख्या ३८,७७३,००० (४७%) थी। वैसे यहां के लोगों का मुख्य कार्य अपने बच्चों को उच्च से उच्च शिक्षा देना है। जब बच्चा बहुत छोटा होता है, तब वह अपनी मां की गोद को नहीं छोड़ता, परन्तु जब वह कुछ बड़ा हो जाता है तो पिता उसकी देख रेख करता है। उसका मामा उसे धार्मिक शिक्षा देता है तथा बाबा वंशीय इतिहास बतलाते हैं। यहीं इनके बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा है।

रीति रिवाज (Customs) :—

इनके यहां शादी की रीति रिवाजें भिन्न भिन्न प्रकार की पाई जाती हैं। जब युवक व युवती में शादी का सम्बन्ध स्थापित होता है, तो लड़के के पिता लड़की वाले को बहुत से नारियल देते हैं, इनके बदले में लड़की के पिता लड़के वाले को हलुवा भेजता है। इसके साथ चटाइयां, वस्त्र तथा अन्य वस्तुयें भी होती हैं। पोलिनेशियन जाति के लोगों में शादी का सम्बन्ध बहुत ही साधारण तौर पर स्थापित कर लिया जाता है। इनकी केवल बातचीत ही एक प्रकार से शादी का सम्बन्ध स्थापित करा देती है।

हाथ, पैर व पूरे शरीर को गुदवाने की प्रथा लगभग सभी जातियों में पाई जाती है। स्त्री व पुरुष दोनों ही इसमें विश्वास करते हैं। गुदवाने के पश्चात इनका शरीर अजीब प्रकार का दृष्टिगोचर होता है। ये लोग भूत प्रेतों में भी विश्वास करते हैं। इन लोगों में तरह तरह के अन्ध विश्वास भी पाये जाते हैं।

जावा तथा मदुरा

जावा इन्डोनेशिया का प्रमुख द्वीप है। इसी के निकट उत्तर-पूर्व में एक छोटा सा द्वीप मदुरा है, जो वास्तव में जावा का ही एक अंग है। उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्रों में यहां सबसे घनी जनसंख्या पाई जाती है। साथ ही जनसंख्या वृद्धि इतनी अधिक है, कि संसार भर में कहीं भी इतनी अधिक जनसंख्या-वृद्धि नहीं पाई जाती है। जावा की स्थिति वास्तव में भूमध्य रेखा के दक्षिण में ७° दक्षिणी अक्षांस से ६° दक्षिणी अक्षांश तक है। इसका क्षेत्रफल मदुरा को सम्मिलित करते हुए ५१०३५ वर्गमील है।

ढाँचे तथा धरातल के दृष्टिकोण से यदि देखा जाय तो यह तरशियरी युग के फोल्ड से घनिष्ठ सम्बन्ध है, यही नहीं वरन् तरशियरी युग की मुख्य श्रेणी तो जावा द्वीप के समानान्तर ही चली गई है। यह दक्षिण की ओर है, इसी कारण दक्षिण का भाग अधिक ऊंचा नीचा तथा उठा हुआ है। जो चट्टानें ऊपर प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होती हैं वे तरशियरी युग की हैं और जो नीचे की हैं



जावा—भौतिक रूप

वे कदाचित काफी पुरानी हैं। यहाँ के ढाँचे तथा धरातल की प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ स्थान स्थान पर जाग्रत ज्वालामुखी (Active Volcanoes) पर्वत पाये जाये हैं, परन्तु यह भी कमजोर पर्त तक ही सीमित हैं। अनेक पर्वत ऐसे हैं जो आठ हजार फीट ऊंचे हैं। कुछ तो दस हजार से भी अधिक ऊंचे चले गये हैं। जिन स्थानों पर ये पर्वत ऊंचे हैं वहाँ कृषि नहीं होती। परन्तु जहां उचाई कम है और वातावरण बहुत ही अनुकूल है वहाँ बड़ी महत्वपूर्ण मिट्टी मिलती है, और

काफी कृषि की जाती है। जावा के उत्तरी भाग में कुछ समतल भाग मिलते हैं। यह संकरे मैदान उन आग्नेय चट्टानों के घिसने के कारण बना है जो कि यहां के ज्वालामुखी पर्वतों से प्राप्त हुई हैं तथा जो नदियों द्वारा यहां डाल दी गई हैं। इन आग्नेय चट्टानों की मिट्टी तथा यहां की जलवायु इतनी आदर्श है कि कृषि की बहुत ही अधिक उन्नति हुई है। भौतिक दृष्टिकोण से हम जावा को पांच भागों में बांट सकते हैं।

पहला—उत्तरी भाग, यहां केवल कुछ स्थानों को छोड़ कर शेष समतल मैदान हैं। यहां पर अग्नि चट्टानों के घिसने के कारण नदियों द्वारा बहुत ही उपजाऊ मिट्टी जमा हो गई है और वह कृषि के लिए अति लाभदायक सिद्ध हुई है जावा की सबसे घनी आबादी यहीं पर पाई जाती है।

दूसरा—दक्षिण की ओर, यह भाग बहुत ही ऊंचा नीचा तथा पथरीला है। यहां पर तरशियरी युग की चट्टानों की मिट्टी पाई जाती है। यह पहले की अपेक्षा कम उपजाऊ है। जावा के तेल के कुयें यहीं पर पाये जाते हैं। बनों की प्रसिद्ध लकड़ी सागौन भी यहां से प्राप्त की जाती है। इस भाग में जनसंख्या वितरण कुछ कम है।

तीसरा—कुछ और दक्षिण की ओर, ज्वालामुखी पर्वत की पेटी मिलती है। इस पेटी में कई समानान्तर श्रेणियां हैं, जो कि लावा की चट्टानों के चूरे से भरी पड़ी हैं। पर्वतों के दलों पर बहुत ही सुन्दर पत्तियोंदार धान के खेत दृष्टि-गोचर होते हैं। ऊंचे ऊंचे स्थानों पर पर्वतश्रेणियां बर्फ से ढकी हुई हैं। वर्षा भी इन देशों में काफी मात्रा में हो जाती है। और इसी कारण सिंचाई में बड़ी सुविधा मिलती है।

चौथा—और अधिक दक्षिण की ओर यहां फोल्ड पर्वत की पेटी है, यह तरशियरी युग की चट्टानों से बनी हुई हैं, इनमें अधिकतर चूने की चट्टानें तथा रेतीली चट्टानें हैं। भूमि बहुत ही ऊंची नीची तथा पथरीली है। दूर दूर तक बंजर क्षेत्र मिलते हैं। वन बहुत ही घने हैं, इनको साफ करना असम्भव है। उत्तर दक्षिण की ओर आना जाना बहुत ही कठिन है इस भाग में किसी भी प्रकार की उन्नति होना असम्भव है।

पांचवां—दक्षिण की पेटी बड़ी संकरी है, यह बहुत ही ऊंची नीची है, समुद्र तट तक ऊंची ऊंची सीधी खड़ी हुई चट्टानें पाई जाती हैं। कई स्थानों पर मूंगे की चट्टानें मिलती हैं। यहां अधिकतर लेटिराइट पत्थर मिलता है।

From L. Dudley Stamp—Asia, A Regional and Economic Geography.

जावा की स्थिति को यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो पता चलेगा कि यह भूमध्य रेखीय पेटी से हट कर दक्षिण की ओर स्थित है। परन्तु फिर भी यह भूमध्य रेखीय प्रदेश के इतने निकट स्थित है, कि वातावरण पर उसका पूरा प्रभाव पड़ता है। यहां पर तापक्रम ऊंचाई व समुद्र से दूरी पर निर्भर रहता है। जकार्टा के गर्मी व सर्दी के तापक्रम में औसत अन्तर २°फा० का ही रहता है। कोहरा यहां बहुत अधिक पड़ता है। हिमरेखा (Snowline) काफी ऊंची है। शुष्क से शुष्क ऋतु में भी जकार्टा औसत नमी केवल ७८ प्रतिशत ही रखता है। यदि यहां की जलवायु का हम ध्यानपूर्वक अध्ययन करें तो हमें दो ऋतुयें दृष्टिगोचर होंगी। पहली ग्रीष्म ऋतु, जो कि वास्तव में शुष्क ऋतु है। इस ऋतु में द्वीप दक्षिण-पूर्वी या पूर्वी हवाओं से प्रभावित होता है। इस ऋतु में दक्षिण की ओर बहुत ही अधिक वर्षा होती है। दूसरी नम ऋतु, इसमें वह द्वीप उत्तर पश्चिमी या पश्चिमी मौसमी हवाओं से प्रभावित होता है। यही मुख्य वर्षा करने वाली हवायें हैं। केवल दक्षिणी भाग को छोड़ कर ये हवायें शेष भाग में बहुत अधिक वर्षा करतीं हैं। कभी कभी स्थानीय हवाओं के कारण या अन्य परिवर्तनों के कारण इन हवाओं का पहचानना बड़ा कठिन हो जाता है। यहाँ अधिकांश वर्षा बादलों के गर्जन के साथ होती है। उत्तर पूर्वी भाग में वर्षा का औसत ४० इंच है, वैसे उत्तरी समतल भागों में ६०"–१००" तक हो जाया करती है। लेकिन सबसे अधिक वर्षा पर्वतीय क्षेत्रों में होती है। यहां कभी कभी ४०० इंच तक वर्षा हो जाती है।

जावा तथा मदुरा दोनों बहुत ही घने बसे हुये है। यहाँ अधिकतर जन-संख्या कृषकों की है। यहां की जनसंख्या का औसत घनत्व ८१७ मनुष्य प्रति वर्ग मील है। यह घनत्व यहां समान नहीं है, क्योंकि अधिकतर भूमि ऊंची नीची तथा पथरीली है। परन्तु फिर भी जनसंख्या–घनत्व यहां पर बराबर बढ़ रहा है। लगभग गत शताब्दी से आज तक का जनसंख्या घनत्व दूना हो गया है।

यदि हम जावा की जनसंख्या वृद्धि का ध्यानपूर्वक अवलोकन करें तो हमें ज्ञात होगा कि यहां पर कई क्षेत्रों में घनत्व आवश्यकता से अधिक तथा कई क्षेत्रों में कम हो गया है। वनीय क्षेत्रों में जहां रबर या गन्ना के बगीचे (Plantations) लगाये जा रहे हैं, वहां बराबर जनसंख्या घनत्व अधिक होता जा रहा है। जन-संख्या मिश्रित लोगों की पाई जाती है। १९३० के लगभग चीनी लोगों की संख्या ५८५००० एवं योरोपियनों की संख्या लगभग २००००० थी। इन योरोपियनों में सबसे अधिक डच लोगों की संख्या थी। डच लोग अधिकतर नगरों में रहते हैं, जकार्टा से ३२,०००, सिमारंग में १२,५०० तथा बाडुंग में १६,५०० का औसत है। यहाँ पर इन लोगों के स्थाई निवास स्थान हैं, इनका ध्येय

यहाँ पर स्थानीय रूप से रहने का है। ये जावा के आदि निवासियों से इतने घुलमिल गये हैं कि आपस में शादियाँ भी होने लगी हैं। मृत्यु की दर की ओर यदि ध्यान दिया जाय तो योरोपियनों में प्रति १००० में १६ व १६ के मध्य है। यह मृत्यु दर यहाँ के आदि निवासियों में प्रति १००० में से १८ ही है। यहाँ योरोपियन लोगों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होता क्योंकि जलवायु इनके लिये अधिक लाभदायक सिद्ध नहीं होती। जावा के आदि निवासियों का भौतिक रूप रङ्ग मंगोलियन लोगों से मिलता जुलता है। इनमें से अधिकतर इस्लाम धर्म को मानते हैं और जाति के मुसलमान हैं।

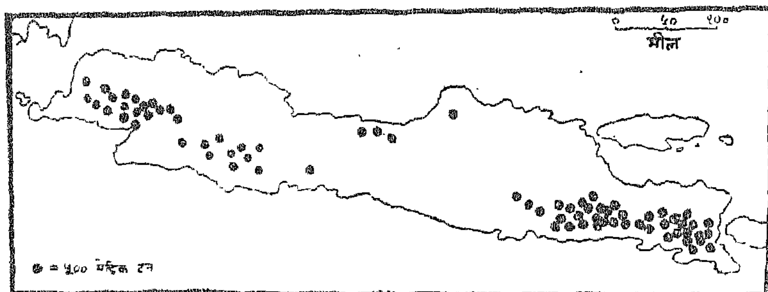
यहाँ के लोगों का मुख्य धन्धा कृषि करना है, अधिकतर जनसंख्या इसी उद्योग में लगी हुई है। कृषि यहाँ दो प्रकार की होती है, पहली-स्थानीय कृषि तथा दूसरी-बोई हुई अथवा लगाई हुई कृषि। यहाँ की उपजाऊ मिट्टी पर अधिकतर सरकार का अधिकार रहता है। सरकार यहाँ के मुख्य कृषकों को भूमि उठा देती है। इसमें यह लोग साधारण प्रकार से कृषि करते हैं। जावा के पश्चिम में चीनी या योरोपियनों के अधिकार में बहुत अधिक भूमि होती है, ये जमींदार लगाई हुई उपजों की कृषि करते हैं।

चावल यहाँ की मुख्य उपज है। यहाँ की दो तिहाई उपजाऊ भूमि पर नम धान, शेष पर शुष्क धान उत्पन्न किया जाता है। समतल भागों में धान के पौधे वर्षा ऋतु के आरम्भ में बो दिये जाते हैं, तथा शुष्क ऋतु में काट लिये जाते हैं। शेष ऋतु में अन्य फसलें उसी में बो दी जाती हैं। धान की इतनी उत्पत्ति होते हुये भी जावा विदेशों से आयात करता है। आजकल स्थिति कुछ अच्छी हो गई है। अब आयात केवल निकटवर्तीय द्वीप ही करते हैं। धान की उपज का औसत ३० बुशल प्रति एकड़ है। वर्तमान समय में क्षेत्रफल तथा उपज दोनों में वृद्धि हो रही है। चावल के अतिरिक्त यहाँ के निवासी अन्य वस्तुयें भी खाते हैं। मक्का यहाँ पर बहुत मात्रा में उत्पन्न किया जाता है, प्रति एकड़ उपज १५ बुशल हो जाती है।

केसवाँ एक और उपज है जो कि यहाँ विशेष रूप से उत्पन्न की जाती है। यह १६,८०,००० एकड़ से अधिक क्षेत्र में उत्पन्न होता है। इसको अधिकतर संयुक्त राज्य अमरीका को निर्यात कर दिया जाता है। मक्का यहाँ ४६,५०,००० एकड़ क्षेत्र में उत्पन्न की जाती है। आलू भी यहाँ उत्पन्न किया जाता है। मीठा तथा सफेद आलू विशेष रूप से उत्पन्न होता है। इसका क्षेत्रफल ४,२०,००० एकड़ से अधिक है। मूंगफली तथा सोयाबीन भी यहाँ के खाद्य पदार्थों म सम्मिलित है। मूंगफली का क्षेत्र ४-५,००० एकड़ तथा सोयाबीन का ५,२१००० एकड़ है। इन

L. Dudley Stamp, Asia—a Regional and Economic Geography page 417.

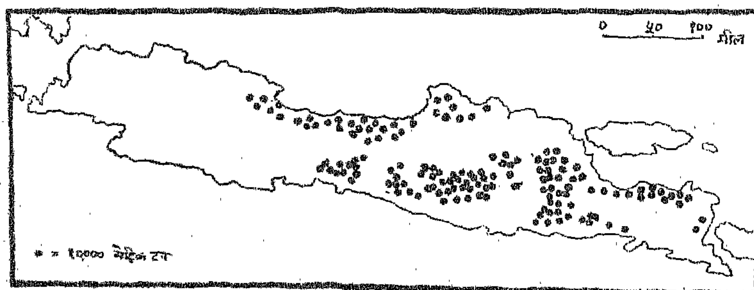
उपजों के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार की दालें, तम्बाकू, चाय, नील, मिर्चें तथा नारियल इत्यादि की भी उत्पत्ति होती है।



जावा—रबड़ का उत्पादन

रबड़ जावा की एक प्रमुख लगाई हुई उपज है। गत वर्षों से इसकी उत्पत्ति बराबर बढ़ रही है। जावा में इसके बग़ीचे ३०० से लेकर १५०० फीट तक की ऊंचाई पर पाये जाते हैं। रबड़ की उत्पत्ति आजकल इतनी अधिक बढ़ गई है, कि १९५३ में यहाँ से ३०६७८२ टन विदेशों को निर्यात की गई, जबकि १९५० में केवल १७८०७६ टन ही निर्यात हुई।

गन्ने की उपज के लिए जावा आरम्भ से ही प्रसिद्ध रहा है। सन १९३२ के पहले अन्य उपजों के मुकाबले यह सर्वोच्च स्थान प्राप्त करती है। उस समय यहाँ ४५०००० एकड़ भूमि पर यह उत्पन्न किया जाता था तथा २८००,००० टन शक्कर प्राप्त की जाती थी, और कदाचित १८० से अधिक कारखाने पाये जाते थे। गन्ने की कृषि यहाँ मध्य तथा पूर्वी समतल भागों में अधिक की जाती है। यहाँ के निवासी बराबर इस बात की ओर ध्यान दे रहे हैं, कि इसकी प्रति एकड़



जावा—ईख का उत्पादन

(From Report on Indonesia, August—September 1954)

उत्पत्ति बढ़ाई जाय। फलतः यहाँ प्रति एकड़ उपज का औसत ४० टन से भी अधिक हो गया है। गन्ने के धन्धे में यहाँ संगठित कार्य होता है, इसके धन्धे पर सबसे गहरा प्रभाव द्वितीय महायुद्ध का पड़ा है, इसीलिये गन्ने का क्षेत्रफल बहुत कुछ घट गया था, अब पुनः उत्पत्ति बढ़ाने की चेष्टा की जा रही है। सन १९३८ में २६०००० एकड़ में कृषि होती थी तथा १४२२००० टन की उत्पत्ति थी। सन १९५३ में यहाँ से ६१९५२१ टन शक्कर निर्यात की गई जबकि १९६० में यहाँ केवल २७७०९१ टन निर्यात हुई थी।

चाय की उत्पत्ति के लिये भी यह बहुत प्रसिद्ध रहा है। यह अधिकतर पर्वतीय ढालों पर उत्पन्न की जाती है। एक हजार से लेकर साढ़े चार हजार फीट तक यह पंक्तियोंदार खेतों में उगाई जाती है। गत वर्षों से इसकी उत्पत्ति बहुत कुछ बढ़ गई है। द्वितीय महायुद्ध के पहले यह एक लाख टन थी। योरोपियन तथा चीनी लोगों के बग़ीचों से ९० प्रतिशत चाय प्राप्त होती है। यह बगीचे पश्चिम की ओर अधिक हैं। चाय का निर्यात १९६० में ३५३८४ टन हुआ था, केवल तीन साल बाद यह ३६७७८ टन हो गया।

क़हवा भी यहाँ उत्पन्न किया जाता है। इसकी उपज में लोगों को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था, क्योंकि आरम्भ में अरब के क़हवे में कीटाणु लग गये और कृषि बरबाद हो गई। बाद में जबकि अफ्रीका से सेवस्टा नाम का क़हवा लाया गया, तब वह सफलतापूर्वक उत्पन्न किया जाने लगा है। यह अधिकतर पूर्वी जावा में उत्पन्न किया जाता है क्योंकि यहां पर एक विशेष प्रकार की ऐसी शुष्क ऋतु होती है, क़हवे के लिये बड़ी लाभदायक सिद्ध होती है। यहां से सन १९५० में यह ११,१११ टन तथा १९५३ में यह २१८४७ टन निर्यात हुई।

कुनैन जो कि सिनकोना वृक्ष की छाल से प्राप्त की जाती है, यहाँ पर बहुत अधिक मात्रा में निकाली जाती है। ऐसा कहा जाता है कि प्राचीन काल में सिनकोना का बीज सर्वप्रथम १८५४ में दक्षिणी अमरीका से लाया गया था। सिनकोना की उपज पश्चिमी जावा की पहाड़ियों पर १५०० फीट की ऊंचाई पर उत्पन्न होती है। इसकी उपज यहां दिन प्रतिदिन बढ़ रही है, क्योंकि वातावरण बहुत अनुकूल है। मलेरिया ज्वर की दवाइयों के हेतु भी इसका प्रयोग होता है। पहले इसकी कृषि सरकार की अध्यक्षता में होती थी, परन्तु अब प्राइवेट तौर पर भी लोग इसकी कृषि करने लगे हैं। सन १९५० में इसका निर्यात ५७०८ टन था, परन्तु १९५३ में यह बहुत गिर गया और केवल ११९५ टन ही रह गया।

यहां के निवासी मछलियां भी पकड़ते हैं। यह समुद्र से तथा आन्तरिक जलाशयों से प्राप्त की जाती हैं। कुछ स्थानों पर धान के खेत वर्षा से भर जाते हैं

और उनमें मछलियां पाई जाने लगतीं हैं। आजकल यह मछली पकड़ने का धन्धा काफी वृद्धि कर गया है।

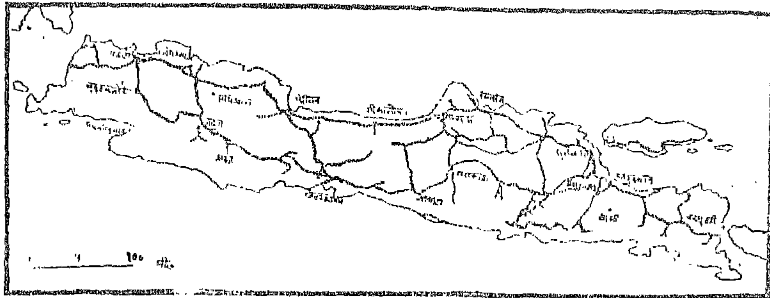
जावा में कुछ घरेलू उद्योग धन्धे भी उन्नति कर गये हैं। यहां के निवासी बहुत ही उत्तम बेलबूटे वाले वस्त्र पहनने के शौकीन होते हैं। यहां का प्रसिद्ध बटिक (Batik)* उद्योग घर होते हैं, यह विशेष तौर पर जकार्टा में केन्द्रित रहा है। आजकल विदेशों से भी छपे हुए छींटदार कपड़े आने लगे हैं। इस बटिक उद्योग को गत वर्षों में काफी हानि उठानी पड़ी थी, परन्तु अब पुनः यह संगठित हो रहा है। यहां के निवासी बास के टोप भी बनाने में निपुण रहे हैं। यह टोप लोग धान के खेतों में दोपहर में काम करते समय अवश्य पहनते हैं। अन्य उद्योगों की भी यहां काफी प्रगति हुई है। जावा अब एक स्वतन्त्र देश है। शक्ति के साधन यहां हर प्रकार के पाये जाते हैं, आजकल इन साधनों का प्रयोग लगभग सभी उद्योगों में हो रहा है। कोयला जिसके ऊपर लोहे व स्पात के धन्धे निर्भर हैं, यहां १९५१ में ८६८००० टन, १९५२ में ९५६००० टन तथा १९५३ में ८९७००० टन अन्य द्वीपों को मिला कर प्राप्त हुआ। अब यहां पर लोहे व स्पात की हल्की हल्की वस्तुयें ढालने के कारखाने पाये जाते हैं। पेट्रोलियम भी यहां कई स्थानों पर प्राप्त किया जाता है। सन १९५२ में ८५२३००० टन तथा १९५३ में १०२२५००० टन पेट्रोलियम प्राप्त हुआ। इन पर भी अनेक उद्योग धन्धे निर्भर हैं। बाक्साइट व रांगा भी यहां पाया जाता है। सूती, ऊनी व रेशमी वस्त्र भी तैयार किये जाने लगे हैं। यहां के बड़े बड़े नगरों में यह कारखाने स्थित हैं। जनसंख्या अधिक होने के कारण जावा बहुत सी तैयार की हुई वस्तुयें विदेशों से प्रतिवर्ष मंगाता है।

जावा का आधे से अधिक भाग पर्वतीय है। यहां पर यातायात के साधनों में बहुत अधिक उन्नति नहीं हो सकी। परन्तु फिर भी सड़कें इतनी अच्छी पाई जाती हैं कि हम उनकी तुलना हालैंड की सड़कों से कर सकते हैं। स्वतन्त्र देश अब इसके विकास की ओर अधिक ध्यान दे रहा है। डच लोगों ने यहां पर रेलवे लाइनें भी बिछा दी हैं। आजकल यहां का लगभग प्रत्येक बड़ा नगर रेल द्वारा मिला हुआ है। जकार्टा, सिमारांग तथा सुराब्बा ये तीनों नगर रेल के केन्द्र हैं।

---

*Batik work – It is the process of dyeing cotton clothes. The parts not to be dyed are covered with wax on both sides. The cloth is then dipped a dozen or more times in the dyeing solution. The wax is then cleaned off and the design is printed on the cloth. L. Dudley Stamp 'Economic and Regional Geography of Asia Page 424.

उत्तर की ओर ये नगर स्थित हैं और बहुत अच्छे बन्दरगाह होने के नाते एशिया के अन्य नगरों से मिले हुए हैं।



जावा—मुख्य नगर तथा रेलें

जावा में आधे दर्जन ऐसे नगर हैं, जिनमें एक लाख से अधिक जनसंख्या है। जकार्टा जो कि पहले बटाविया कहलाता था, तथा जिसकी स्थापना १६१६ में डच लोगों ने की थी, यहाँ की राजधानी तथा प्रमुख बन्दरगाह है। इस नगर की जनसंख्या सन् १६५३ में २५ लाख थी। इसमें ४१००० डच, १८०० योरोपीयन व अमरीकन तथा ८३००० चीनी लोग शामिल हैं। तंदजोंग प्रियक जो कि जकार्टा से ६ मील पूर्व की ओर स्थित है, एक सुन्दर बन्दरगाह है। जकार्टा के निकट मीस्टर कार्नेवेलिस तथा वेल्टीवीडन की सभ्य बस्तियाँ स्थित हैं। अधिक गर्मी पड़ने के कारण सरकारी आफिस तथा अन्य विभाग बुतेनज़ोर्ग आ जाते हैं। बुतेनज़ोर्ग एक सुन्दर पहाड़ी नगर है, यह अपने बगीचों के लिये बहुत प्रसिद्ध है। बांडुंग एक दूसरा पहाड़ी नगर है, यह बुतेनजोर्ग के पूर्व में स्थित है। यह एक बहुत ही रमणीय नगर है और ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि यह स्वयं एक छोटा सा हालैंड हो।

बन्दरगाहों में जकार्टा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ २४०० से अधिक जहाज लंगर डाले खड़े रहते हैं। यह पश्चिमी, दक्षिणी तथा पूर्वी एशिया से अधिक व्यापार करता है। सुराब्या, एक दूसरा नगर व बन्दरगाह है, यह एक आधुनिक नगर है। यहां पर कई शकर के कारखाने हैं। यह व्यापार में एक मुख्य स्थान रखता है। सिमारांग मध्य जावा के उत्तर में स्थित है। यह नगर भी थोड़ा सा वाणिज्य सम्बन्धी महत्व रखता है। अन्य प्रसिद्ध नगरों में सुराकार्टा, जोगजाकार्टा, गारुत, चेरीबोन, पिकेलोंगन तथा पासुरुआन इत्यादि हैं। डच लोगों के लिये सदा यह भाग्य की बात रही कि यहां अनेक सुन्दर व रमणीय पर्वतीय नगर पाये जाते हैं।

वास्तव में जावा की उन्नति डच लोगों के प्रयत्नों के फलस्वरूप हुई है।

गत हज़ार वर्षों से यहां के लोग इसी बात का प्रयास कर रहे हैं, कि किस प्रकार आत्मपूर्ण हो तथा कैसे आर्थिक विकास किया जाय। यहाँ पर वैसे हर जाति के लोग रहते हैं। मेलेज़ जाति के लोग पश्चिम की ओर, सूडानीज़ मध्य में, जावा में जावानीज़ तथा पूर्व में मदुरीज़ लोग हैं। इनके धर्म भी भिन्न भिन्न रहे हैं, परन्तु आठवीं तथा नवीं शताब्दी में बौद्ध धर्म को मानते थे, तथा बाद में हिन्दू धर्म को मानने लगे हैं। इनकी शिल्पकला बारोबुदुर के महान स्तूप में देखने को मिलती है। यह स्तूप मध्य जावा में स्थित है। इसको देखने से यहाँ की संस्कृति की झलक मिल जाती है। इण्डोचीन के अंगकोर केन्द्र के समय की ही यह सभ्यता दृष्टिगोचर होती है। यहाँ पर इस्लाम धर्म का प्रभाव पड़ा और इस संस्कृति का पतन होने लगा। गत शताब्दी में ही इन स्तूप व खंडहरों का पता चला है और यही इस बात के प्रमाण हैं, कि यहाँ पर एक समय काफ़ी ऊंची सभ्यता थी।

अन्य द्वीप (Other Islands):—

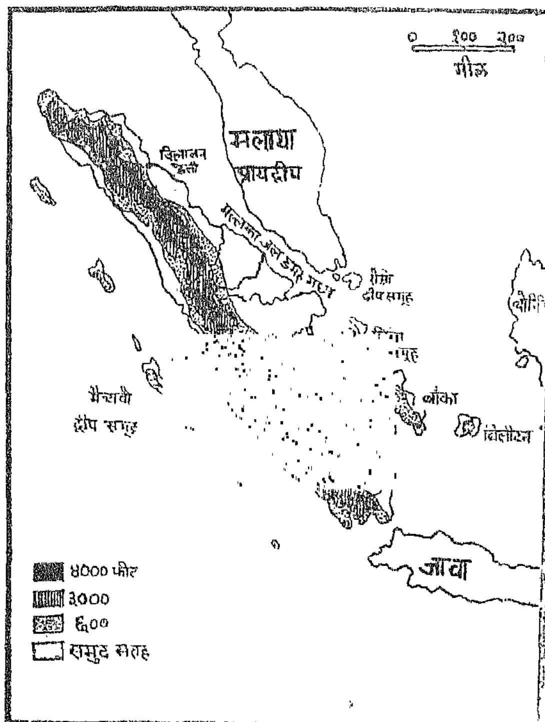
अन्य द्वीपों में सुमात्रा, दक्षिणी बोर्नियो, सेलबोज़, पश्चिमी न्यूगिनी तथा अन्य छोटे छोटे द्वीप सम्मिलित हैं। इन सबों की कुल जनसंख्या जावा की आधी जनसंख्या के बराबर है। परन्तु इसमें सन्देह नहीं है कि निर्यात की मात्रा यहाँ सबसे अधिक है। रबड़ जो कि इन द्वीपों में कई स्थानों पर उत्पन्न होती है, एक विशेष निर्यात की वस्तु है। यह सबसे अधिक सुमात्रा द्वीप पर उत्पन्न होती है। द्वितीय महायुद्ध के पहले इस द्वीप पर कई ऐसे रबड़ के क्षेत्र थे जिन पर कि डच, अमरीकन, ब्रिटिश, फ्रेंच तथा फ्लेमिश लोगों की पूंजी लगी हुई थी। सुमात्रा में अब यह क्षेत्र बहुत उन्नति कर गये हैं, और रबड़ की मात्रा अधिक हो जाने के कारण निर्यात मात्रा भी बढ़ गई है।

सुमात्रा (Sumatra)

सुमात्रा द्वीप, जावा के उत्तर-पश्चिम में स्थित है। इसका क्षेत्रफल १६२२६८ वर्ग मील है। यद्यपि यह जावा से बड़ा है, परन्तु फिर भी यह उसके बराबर उन्नतिशील नहीं हो सका है। इसका धरातल पर्वतीय है, पर्वत अधिकतर तरशियरी युग की चट्टानों से ढके हुये हैं, स्थान स्थान पर ज्वालामुखी पर्वत दृष्टिगोचर होते हैं। दक्षिण पश्चिम की ओर जो ज्वालामुखी पर्वतों की श्रेणी हैं, वे वास्तव में अब भी जाग्रत अवस्था में है। आजकल भी विस्फोटन हो जाया करते हैं। उत्तर पूर्व की ओर जितना भी क्षेत्र है, वह ऊंचा नीचा है। इसमें कहीं कहीं पर संकरे मैदान भी मिलते हैं, यह मैदान यहाँ की तीव्र बहने वाली नदियों ने बनाये हैं।

इस द्वीप को यदि मानवीय दृष्टिकोण से देखा जाय तो यहां मिश्रित जातियों के

G. B. Cressey: Asia's Lands & People page 537.



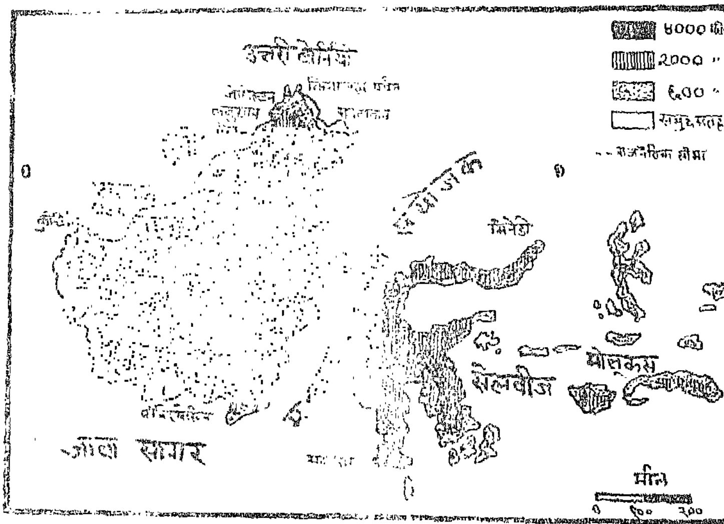
सुमात्रा

लोग मिलते हैं। शुद्ध आदि निवासी तो बहुत ही कम मात्रा में मिलते हैं, बल्कि जावा के निवासी यहां आकर बसे हैं, तथा अब भी जनसंख्या दबाव के कारण बस रहे हैं। इन लोगों के अतिरिक्त बहुत से चीनी, तामिल, जापानी तथा लंका के निवासी रबड़ के बगीचों में काम करने के हेतु, जा बसे हैं। सन् १९३१ में यहां की कुल जनसंख्या ७५ लाख से अधिक थी।

गत वर्षों से इस द्वीप में कुछ आर्थिक विकास भी हुआ है। द्वितीय महायुद्ध से पूर्व यहां पर विदेशियों ने अपनी पूंजी लगा कर हर प्रकार की उपजें प्राप्त की। अब 'कोलम्बो योजना' के अन्तर्गत और भी अधिक आर्थिक विकास होने की सम्भावना है। रबड़, वृक्षों से प्राप्त किया हुआ तेल, चाय, तम्बाकू इत्यादि कुछ ऐसी उल्लेखनीय उपजें हैं, जो आर्थिक दृष्टिकोण से बड़ी महत्वपूर्ण हैं। यातायात के साधनों की यहाँ अधिक उन्नति नहीं हो सकी, इसका मूल कारण यह रहा है, कि यहां की भूमि बहुत ऊंची नीची, तथा जलवायु अनुकूल नहीं है। इसके अतिरिक्त कोई विशेष ध्यान भी इस ओर नहीं दिया गया है। आजकल इस ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। नई रेलें बिछाई जा रहीं हैं। मुख्य बन्दरगाहों में पादंग तथा बिलावन देली उल्लेखनीय हैं।

बोर्नियो (Borneo)

यह द्वीप जावा के उत्तर में स्थित है, और क्षेत्रफल में सुमात्रा से भी बड़ा है। इसका क्षेत्रफल २१३५८६ वर्ग मील है। इस द्वीप पर डच तथा अंग्रेज लोगों का अधिकार रहा है। दक्षिणी भाग में डच लोगों का तथा उत्तरी व उत्तर पश्चिमी भाग पर अंग्रेजों का अधिकार था। यह एक पहाड़ी द्वीप है, जगह



बोर्नियो तथा सेलबीज़

जगह पर ज्वाला मुखी पर्वत दृष्टिगोचर होते हैं। चट्टानें अधिकतर टरशियरी व उससे भी प्राचीन युग की हैं। इनमें कई स्थानों पर खनिज़ पदार्थ भी पाये जाते हैं।

ब्रिटिश लोगों के अधिकार में जो क्षेत्र था, उसके उस समय तीन राजनैतिक भाग थे।

(१) उत्तरी बोर्नियो (२) ब्रूनी (३) सारावक

(१) उत्तरी बोर्नियो :—

बोर्नियो द्वीप का उत्तरी भाग उत्तरी बोर्नियो में है, इसका क्षेत्रफल २६,३८१ वर्गमील है। भौतिक दृष्टिकोण से यदि देखा जाय तो यह क्षेत्र तीन भागों में बाँटा जा सकता है। प्रथम मैदानों वाला, द्वितीय निचली पहाड़ियों वाला तथा तृतीय उच्च पहाड़ियों वाला भाग।

पहला—मैदानों वाला भाग, समुद्र तट के किनारे किनारे दो मील से लेकर छै मील तक की पेटी के रूप में विस्तृत है। यह कांप मिट्टी का बना

हुआ है तथा दूर दूर तक इस पर हरी हरी घास दृष्टिगोचर होती है। इसके उत्तर-पश्चिम में यहां के किसान धान उत्पन्न करते हैं। उत्तर--पूर्वी भाग में तम्बाकू उत्पन्न की जाती है।

दूसरा—इस भाग में निचली पहाड़ियां हैं, जो दूर से ऐसी प्रतीत होतीं हैं, जैसे कि समुद्र में कोई पर्वतीय द्वीप हों। इन क्षेत्रों में बगीचे पाये जाते हैं। वर्षा के कारण उपजाऊ मिट्टी बह जाने के कारण कुछ भाग बंजर भी हो गये हैं। परन्तु इनमें भी घास पाई जाती है।

तीसरा—पर्वतीय क्षेत्र उच्च पहाड़ियों वाला भाग है, इसमें श्रेणियाँ एक के बाद दूसरी ऊंची होती चली गई हैं। यहां तक कि ६००० फीट से भी अधिक ऊंची चोटियां पाई जातीं हैं। ये उत्तर से दक्षिण की ओर विस्तृत हैं। इनमें सबसे ऊंची शिखा माउन्ट किनाब्लू है। यह १३५००० फीट के लगभग ऊंची हैं। इन पहाड़ों में तरशियरी युग की चट्टानें पाई जाती हैं। इनसे कोयला तथा खनिज तेल प्राप्त किया जाता है।

बोर्नियो में बहुत कम नदियां हैं, और जो हैं भी वह अपने मुहाने पर रेत के टीले बना लेतीं हैं। यह टीले अधिकतर उन नदियों पर बनते हैं, जो कि पूर्व की ओर गिरतीं है। प्राचीनकाल से ही इन टीलों को साफ करके नावें आन्तरिक क्षेत्रों तक आतीं जातीं हैं। किनाबटनगन एक ऐसी नदी है, जो कि साढ़े तीन सौ मील लम्बी है, तथा जिसमें दो सौ मील अन्दर तक जहाज आ जा सकते हैं।

बोर्नियो द्वीप की स्थिति भूमध्य रेखीय क्षेत्र में है। किनारे के भागों में तापक्रम समुद्र से प्रभावित होता रहता है। औसत तापक्रम ८०° फ० से कुछ ही अधिक रहता है। यहाँ भी दो ऋतुयें होती हैं। पहली, उत्तरी-पूर्वी मानसून ऋतु तथा दूसरी दक्षिणी पश्चिमी मानसून ऋतु। वर्षा यहां अधिकतर उत्तर-पूर्वी मानसून से होती है। यह मध्य अक्टूबर से मध्य अप्रैल तक होती रहती है। दक्षिणी-पश्चिमी मानसून ऋतु इतनी कठोर नहीं होती, इसमें अचानक कभी कभी बूंदा बांदी हो जाया करती है, परन्तु अधिकतर हवायें शुष्क ही रहती हैं। अन्दर की ओर वर्षा कम हो पाती है, क्योंकि तटीय भाग अधिक वर्षा प्राप्त कर लेते हैं। तिनोम जो कि अन्दर की ओर है ६२ इंच तथा सन्दाकन जो किनारे की ओर है १२७ इंच वर्षा प्राप्त करता है।

उत्तरी बोर्नियो की जनसंख्या मिश्रित है। यहां पर आन्तिरिक क्षेत्रों में असभ्य निवासी आदि रहते हैं। चीनी तथा मुसलमान जाति के लोग अधिकतर तटीय भागों में ही रहते हैं। यहां की जनसंख्या १९३१ में २७०,२२३ थी, इसमें योरोपियन, युरेशियन, चीनी तथा मलेज लोग सम्मिलित थे। आदि निवा-

सियों की संख्या २०५२१६ के लगभग थी। इसमें दुसुन, मुरुत तथा बजाउस जातियों के लोग सम्मिलित थे। प्रमुख नगरों में जेसेलटन पश्चिमी तट पर तथा सन्दाकन पूर्वी तट पर स्थित है।

उत्तरी बोर्नियो का बहुत सा भाग घने बनों से ढका हुआ है। यहां पर सदाबहार भूमध्य रेखीय वन मिलते हैं। ये इतने घने होते हैं, कि प्रकाश धरातल तक कठिनता से ही आ पाता है। जीव जन्तु यहां पर उसी प्रकार के मिलते हैं, जिस प्रकार के एशिया महाद्वीप पर मिलते हैं। यहाँ का एक विशेष जीव ओरंग-उतान है।

इस द्वीप के उत्तरी भाग में आर्थिक वस्तुयें भी बहुत अधिक मात्रा में प्राप्त होती हैं। लकड़ी, चावल, नारियल, गोंद, कहवा, गरम मसाले, फल, तम्बाकू तथा रबड़ इत्यादि। इनमें से रबड़ तथा तम्बाकू आजकल बहुत काफी मात्रा में निर्यात किया जाता है। खनिज पदार्थों में पेट्रोल, कोयला, लोहा तथा सोना प्राप्त किया जाता है। यहां रेलवे लाइन जेसिल्टन से निलालाप तक जाती है। एक ब्रांच लाइन वेस्टन तक भी बनी है।

जो वस्तुएं यहाँ से बाहर भेजी जाती हैं, उनमें लकड़ी, तम्बाकू, रबड़, गरम मसाले, नारियल तथा कहवा इत्यादि हैं, परन्तु रबड़ और तम्बाकू का निर्यात दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। जो वस्तुयें आयात की जाती हैं, उनमें तैयार की हुई वस्तुओं की मात्रा अधिक है। उदाहरणार्थ— मशीनें, आमोद-प्रमोद की वस्तुयें इत्यादि।

* (२) ब्रूनी—यह बोर्नियो के उत्तर-पश्चिमी तट के मध्य में स्थित है। इसके एक तरफ उत्तरी बोर्नियो का राज्य तथा दूसरी ओर सारावक है। इसका क्षेत्रफल ४००० वर्ग मील है। यहाँ धरातल ऊँचा नीचा तथा पथरीला है। यहाँ की रचना निकटवर्तीय क्षेत्रों की सी है। यदि यहाँ की जलवायु की ओर ध्यान दिया जाय तो हम देखेंगे कि तापक्रम एकसा रहता है। औसत तापक्रम ८०° फा० से न तो कम और न अधिक होता है क्योंकि समुद्र का प्रभाव बराबर तापक्रम पर पड़ता है। औसत वर्षा यहाँ १०० इंच हो जाती है। यहाँ की प्रसिद्ध नदी ब्रूनी है।

यहाँ की जनसंख्या आज से बीस वर्ष पहले ३०१३५ थी, इसमें चीनी,

L. Dudley Stamp–Asia, A Regional and Economic Geography Page 434.

* Brune is a British Protectorate State under the rule of a native Sultan with a British Resident as adviser.

योरोपियन तथा भारतीय लोग सम्मिलित थे। इन लोगों के अतिरिक्त मेलेज़ तथा कुछ आदि निवासी भी पाये जाते हैं। ब्रूनी यहां का सबसे बड़ा नगर है। यह इसी नाम की नदी पर स्थित है। इस नगर से रेलें व सड़कें आन्तरिक क्षेत्रों की ओर तथा अन्य तटीय नगरों की ओर जाती हैं।

वर्षा अधिक होने के कारण बहुत से क्षेत्रों में घने वन पाये जाते हैं। इन वनों से बहुत ही सुन्दर लकड़ी प्राप्त होती है। कृषिक उपजों में सागौन, धान तथा लगाई हुई रबड़ महत्वपूर्ण है। ,मेनग्रूव' वनों से एक प्रकार की छाल प्राप्त की जाती है, इसे लोग 'कच्च' कहते हैं। आर्थिक दृष्टिकोण से यह बड़ी महत्वपूर्ण है। कुछ स्थानों पर खनिज पदार्थ भी मिलते हैं। लेकिन इन पदार्थों में केवल खनिज तेल ही महत्वपूर्ण है।

वहां पर अनेक उद्योग धन्धे भी उन्नति कर गये हैं। इन उद्योगों में कपड़ा बुनना, नाव बनाना, पीतल के वर्तन बनाना एवं चांदी की वस्तुयें बनाना इत्यादि मुख्य हैं। ब्रूनी स्वयं एक बड़ा औद्योगिक नगर है।

व्यापार अधिकतर ब्रूनी तथा लबुआन नगर से होता है। जहाज़ इन बन्दरगाहों से सिंगापुर केवल चार ही दिन में पहुंच जाते हैं, और आजकल यहाँ बराबर स्टीमर आते जाते रहते हैं।

विदेशी व्यापार में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। जो वस्तुयें यहाँ से निर्यात की जाती हैं, उनमें रबड़, लिलूतोंग तथा कच्च मुख्य हैं। आयात की जाने वाली वस्तुओं में चावल, मशीनें, तम्बाकू तथा कपड़ा इत्यादि हैं। द्वितीय महायुद्ध का इस व्यापार पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

सारावक—दक्षिणी-पश्चिमी तट पर यह ब्रूनी के दक्षिण में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ४२००० वर्ग मील है। उत्तरी बोर्नियो की भांति यहाँ भी आन्तरिक क्षेत्रों में, पर्वत, निचली पहाड़िया तथा समतल भाग मिलते हैं। यहां की पर्वत श्रेणियां तरांशयरी युग की हैं, और इनकी चट्टानें पर्तदार हैं। इस भाग में कई बड़ी बड़ी नदियां पाई जाती हैं, ये नदियां यातायात के दृष्टिकोण से बड़ी लाभदायक हैं। यहाँ की जलवायु उत्तरी बोर्नियो की जलवायु से मिलती जुलती है, परन्तु फिर भी भिन्न भिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार का वातावरण पाया जाता है। वर्षा यहाँ पर अप्रैल व अक्टूबर के मध्य में बहुत होती है। जलवायु सम्बन्धी वातावरण भारत के वातावरण से बहुत कुछ मिलता जुलता है।

यहाँ की जनसंख्या लगभग ४७५,००० है, यहाँ के आदि निवासियों में ड्याक्स, केनियास तथा मुरुत सम्मिलित हैं, अधिकतर लोग मेले जाति के हैं। परन्तु चीनी लोग भी कम संख्या में नहीं हैं। यहाँ के मुख्य नगरों में सारावक

है, यह यहाँ की राजधानी भी है। यहाँ से २५ मील दूर सारावक नदी के मुहाने पर कुचिंग नगर स्थित है। यह सीबू रिजाँग नदी के मुहाने से साठ मील उठकर बसा हुआ है। मारी नगर खनिज तेल का एक प्रमुख केन्द्र है।

कृषि यहाँ के लोगों का मुख्य उद्यम है। रबड़ यहाँ की प्रमुख उपज है, इसके अतिरिक्त सागौन, पीपर तथा नारियल इत्यादि की भी उत्पत्ति होती है। यहाँ के लोग जो कि समुद्र तट के निकट रहते हैं, मछलियां और मोती भी पकड़ते हैं। बोर्नियों में अनेक खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं। परन्तु सबसे महत्वपूर्ण तेल ही है। यह तरशियरी युग की ऊपर मुड़ी हुई चट्टानों में पाया जाता है। इसके केन्द्र मीरी तथा बकोंग हैं, पेट्रोल का उत्पादन दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है।

द्वितीय महायुद्ध का प्रभाव यहां के विदेशी व्यापार पर बहुत गहरा पड़ा है, परन्तु गत वर्षों से यह व्यापार बढ़ ही रहा है। जो वस्तुयें यहाँ से बाहर भेजी जाती हैं, उनमें रबड़, पेट्रोल, बेनजीन, मिट्टी का तेल इत्यादि मुख्य हैं। आयात की जाने वाली वस्तुओं में तैयार की हुई वस्तुयें, मशीनें, कपड़े तथा खाद्य पदार्थ हैं। सम्पूर्ण विदेशी व्यापार के मूल्य का तीन चौथाई मूल्य रबड़ तथा खनिज तेल का होता है। व्यापार अधिकतर सिंगापुर से ही होता है।

सेलबीज तथा अन्य आधीन द्वीप (Celebes and its dependencies):—

सेलबीज द्वीप पश्चिम में बोर्नियो से एक मकासर नाम के जलडमरू मध्य से पृथक है। इस द्वीप का क्षेत्रफल ७१७६३ वर्ग मील है। इसका स्थान अन्य द्वीपों में तृतीय है। इसकी आकृति एक ऐसे बंधे हुये प्रायद्वीपों जैसी है, जोकि कुछ कुछ हाथ की उंगलियों से मिलती जुलती हैं। यद्यपि लोगों ने इस द्वीप की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया, परन्तु फिर भी यह द्वीप बड़ा भाग्यशाली है। यहां के तटीय समतल भाग, उपजाऊ मिट्टी, अच्छी जलवायु, सुन्दर बन्दरगाह तथा चतुर व्यक्ति, यहां के लिये परमात्मा की देन है।

सर्वप्रथम यहाँ पर पुर्तगाल निवासी आकर बसे थे, बाद में १६६० में

Sarawak—It is a state ruled with pure autocracy by an English Rajah. In 1842 the Sultan of Brunic granted control of part of the present area of Sarawak to the Englishman, Sir James Brooke, who thus became the first Raja. The young State wat nearly overthrown by a Chinese mutiny in 1857. Additions of territory were made in 1861 and 1905, and in 1888 Sarawak was occupied as an independent state under the protection of Great Britain. The present Rajah, His Highness Charles Lyner Brooke is the third and succeeded in 1917.

डच लोगों ने इन्हें निकाल भगाया। इस प्रकार से सेलबीज के लोग लगभग तीन शताब्दी तक योरोपियन लोगों के सम्पर्क में रहे, इस द्वीप पर आजकल यहीं का सुल्तान राज्य करता है।

बहुत सा भाग वनों से ढका हुआ है। इन वनों से लकड़ी, गरम मसाले, तथा अन्य वस्तुयें प्राप्त होती हैं। लोग अधिकतर कृषि करते हैं। चावल, तम्बाकू, नारियल तथा कहवा यहाँ की मुख्य उपजें हैं। मकासर यहाँ का प्रमुख बन्दरगाह तथा नगर है, यहाँ से कोपरा, रटन तथा मकासर तेल निर्यात किया जाता है।

एक दूसरा क्षेत्र जो उत्तर में मुड़ा हुआ चला गया है, मिनेडो कहलाता है। यह एक बहुत ही स्वच्छ तथा सुन्दर क्षेत्र है, यहाँ से कोपरा, कहवा तथा गरम मसाले इत्यादि वस्तुएं निर्गत की जाती हैं।

द्वितीय महायुद्ध का इस द्वीप पर गहरा प्रभाव पड़ा था, यहाँ की आर्थिक स्थिति की बहुत बुरी दशा हो गई। कई वस्तुओं का आयात निर्यात पूर्णतया बन्द हो गया। आजकल पुनः इसकी आर्थिक स्थिति के ऊपर ध्यान दिया जा रहा है और अब देशी व्यापार में भी काफी प्रगति हो रही है।

बाली एवं लोम्बोक (Bali & Lombok) :—

जावा के पूर्व में लगभग एक मील दूर बाली नाम का सुन्दर द्वीप स्थित है। यह द्वीप इतना सुन्दर व आकर्षक है, कि लोग इसे 'पूर्व का मोती' (Jewel of the East) कहकर भी पुकारते हैं। कुछ लोगों ने इसे 'छोटा जावा का नाम भी दिया है, क्योंकि यह भौतिक दृष्टिकोण से बड़े जावा से बहुत कुछ मिलता जुलता है। बाली तथा लोम्बोक द्वीपों का कुल क्षेत्रफल लगभग चार हज़ार वर्ग मील है। सन् १९३० में इसकी जनसंख्या १८ लाख थी। दोनों पर्वतीय हैं। बाली के पूर्व में अमंग जिसे 'बाली चोटी' भी कहते हैं स्थित है। यह १०५,०० फीट ऊँची है। बाली तथा लोम्बोक द्वीप एक दूसरे से एक गहरी खाड़ी द्वारा अलग है। विद्वानों का मत है कि यही वह स्थान है जो कि एशिया तथा आस्ट्रेलिया की प्राकृतिक वनस्पति तथा जीवजन्तुओं को अलग करता है।

यहाँ की संस्कृति जावा से भिन्न ही है। यहाँ पर इतने सुन्दर, प्रसन्न तथा चतुर लोग पाये जाते हैं, कि इण्डोनेशिया में कहीं भी देखने को नहीं मिलते। यहाँ के लोग कलाकार हैं, नृत्यकला तथा गानकला में ये बहुत उन्नति कर गये हैं। यहां की कला तथा संस्कृति भारतवर्ष की संस्कृति से बहुत कुछ मिलती जुलती है। इसकी आर्थिक स्थिति भी सन्तोषजनक है।

सिंकेप, बांका तथा बेलीटोंग (Singkep, Banka and Belitong) :—

ये छोटे छोटे द्वीप वास्तव में मलाया प्रायद्वीप के दक्षिणी द्वीप कहे

जा सकते हैं। इनका सम्बन्ध भौतिक दृष्टिकोण से मलाया से बहुत अधिक है। जो पर्वत श्रेणियाँ मलाया में पाई जाती हैं वही इन द्वीपों में भी चली आई हैं। यहां की चट्टानों में भी रांगा पाया जाता है। सिंकेप द्वीप वास्तव में रिओ-लिंगा द्वीप समूह का ही एक अंग है। इस द्वीप से भी काफी मात्रा में रांगा प्राप्त किया जाता है। ये सभी द्वीप पर्वतीय हैं, इनमें मैदान केवल समुद्र तटीय भागों में ही हैं। यहाँ मिट्टी बड़ी उपजाऊ है। इसमें अधिकतर धान उत्पन्न किया जाता है, परन्तु अब रबड़ तथा नारियल भी बहुत उत्पन्न होता है।

निर्यात की वस्तुओं में रांगा, चावल तथा नारियल इत्यादि मुख्य हैं। आयात अधिकतर तैयार की हुई वस्तुयें तथा खाद्यपदार्थ ही किये जाते हैं।

तिमोर तथा अन्य आधीन द्वीप (Timor and its dependencies)

भूमध्य रेखा के दक्षिण में तिमोर द्वीप स्थित हैं, यह पहाड़ी द्वीप हैं। इनमें समतल भाग केवल समुद्रतटीय प्रदेशों में ही हैं यह द्वीप अधिकतर वनों से ढका हुआ है। इन वनों से लकड़ी प्राप्त की जाती है। यहां की उपजें धान, नारियल तथा तम्बाखू इत्यादि मुख्य हैं।

इन द्वीपों के पीछे पुर्तगाल तथा हालैंड में बड़ा संघर्ष रहा था, यह झगड़ा १८६६ में तय हुआ था, इसके अन्तर्गत सम्पूर्ण द्वीप के आधे भाग पर डच निवासियों को अधिकार प्राप्त हुआ। इस संघर्ष का परिणाम यह हुआ कि इन द्वीपों पर बहुत कम योरोपियन संस्कृति का प्रभाव रहा। भौतिक दशायें आस्ट्रेलिया के निकट वर्तीय क्षेत्रों से बहुत कुछ मिलती जुलती हैं। प्राकृतिक वनस्पति तथा जीवजन्तु भी उसी प्रकार के पाये जाते हैं, जिस प्रकार के निकटवर्तीय क्षेत्रों में पाये जाते हैं। तिमोर की डच अधिकार भूमि में फ्लोर सोलोर तथा अलोर नामक ज्वालामुखी पर्वतों से ढके हुये द्वीप सम्मिलित हैं।

यहाँ से जो वस्तुयें निर्यात की जाती हैं, उनमें लकड़ी, नारियल तथा तम्बाकू इत्यादि हैं, और जो आयात की जाती हैं, उनमें तैयार किया हुआ माल तथा खाद्य पदार्थ हैं।

मलक्का द्वीप तथा न्यूगिनी
(The Molucca Islands and New Guinea)

सेलबीज के पूर्व में मलक्का तथा न्यूगिनी द्वीप स्थित हैं। यह सेलबीज़ से सेलबीज़ सागर द्वारा अलग हैं। मलक्का द्वीप समूह न्यूगिनी से अनेक छोटे छोटे द्वीपों द्वारा पृथक हो गया है, इन द्वीपों पर असभ्य जातियाँ रहती हैं। उत्तरी मलक्का तरनेत रेज़ीडेन्सी तथा दक्षिणी अम्बोइना रेजीडेन्सी के नाम से प्रसिद्ध है। डच न्यूगिनी तरनेत के अन्तर्गत आता है। इन द्वीपों के अलावा यहाँ अन्य कई

ऐसे द्वीप हैं, जिनमें बहुत ही असभ्य लोग पाये जाते हैं। इन द्वीपों की किसी भी प्रकार आर्थिक उन्नति नहीं हो सकी, क्योंकि यहाँ अनेक प्रकार की बाधायें हैं।

डच बोर्नियो (Dutch Borneo)

डच बोर्नियो का क्षेत्रफल २०६६१० वर्ग मील है। यह बोर्नियो का एक पहाड़ी भाग है। यह अधिकतर वनों से घिरा हुआ है। यहाँ कई प्रकार के खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं। खनिजों में सबसे महत्वपूर्ण पेट्रोलियम है, यहाँ पेट्रोलियम के केन्द्र बालिक पापन तथा ताराकन हैं। यह दोनों पूर्वी तट पर स्थित हैं, और बहुत सा पेट्रोलियम यहाँ से निर्यात किया जाता है। निर्यात की वस्तुओं में तेल (Palm Oil) नारियल, रबड़ साबूदाना और आरारोट आदि हैं।

यहाँ के आदि निवासी डयाक्स (Dyaks) कहलाते हैं। ये लोग असभ्य होते हैं। इन लोगों में जीवित मनुष्यों को मारकर उनके सिर को रखने की प्रथा है। यह उनकी वीरता का प्रमाण समझा जाता है। जिसके पास इस प्रकार के सिर होते हैं। वही विवाह का अधिकारी होता है। ये लोग आन्तरिक व्यापार में लगे रहते हैं। डच लोगों की बस्तियाँ अधिकतर समुद्रतट के निकट ही पाई जाती हैं, ये लोग विदेशी व्यापार में अधिकतर लगे हुये हैं।

फिलीपाइन द्वीपसमूह

फिलीपाइन द्वीप समूह की स्थिति प्रशान्त महासागर में ४०°' २०°' से लेकर २१°२०' उत्तरी अक्षांश तथा ११६°५५' से लेकर १२६° पूर्वी देशान्तर के मध्य है। इस द्वीप समूह में ७१०० द्वीप सम्मिलित है। इसका क्षेत्रफल ११५,६०० वर्ग मील है। इस द्वीप समूह में केवल ४६६ द्वीप ऐसे हैं, जिनका क्षेत्रफल एक वर्गमील से अधिक नहीं है। सबसे बड़े द्वीपों में लुजोन (४०८१४ वर्ग मील) तथा मिन्डनाओ (३६,६०६ वर्ग मील) हैं, इनके अतिरिक्त नौ ऐसे द्वीप हैं, जिनका क्षेत्रफल मध्यम है, उदाहरणार्थ* समार, नेग्रोस, पालावन, पेने, मिन्डोरो, लीटी सीबू, बोहील तथा मसबेट। फिलीपाइन द्वीप समूह प्राचीनकाल से ही व्यापारिक दृष्टिकोण से बड़ा महत्वपूर्ण रहा है। मध्यकालीन युग से ही यहाँ विदेशी लोगों का आना आरम्भ हो गया था, इन लोगों का इस देश पर काफी गहरा प्रभाव पड़ा है।

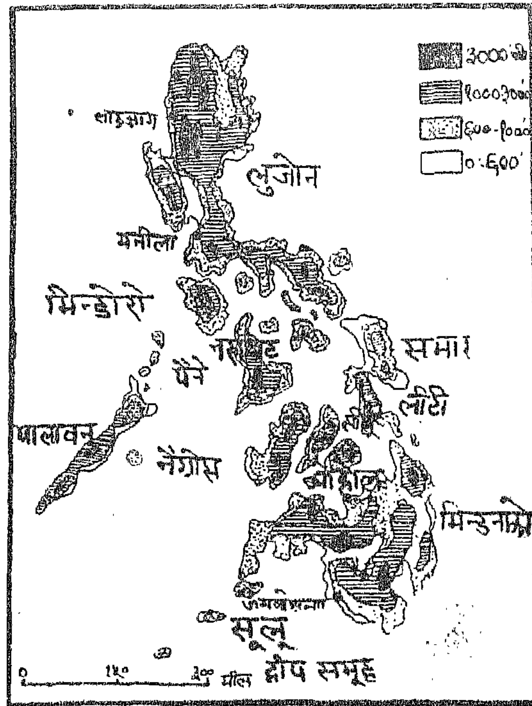
भौतिक रूप (Physical Aspect)

धरातल तथा बनावट (Relief & Structure) :—

इस द्वीपसमूह का धरातल नवीन मोड़दार (Folded) चट्टानों का बना हुआ है। यह द्वीपसमूह वास्तव में पर्वत श्रेणियों के वे शृङ्ग हैं, जो समुद्रतल से ऊपर निकले हुए हैं। इनका शेष भाग समुद्र में ही डूबा हुआ है। पर्वत श्रेणियाँ उत्तर से दक्षिण की ओर फैली हुई हैं। इनमें स्थान स्थान पर फोल्ड (Fold), फाल्ट (Fault) तथा ज्वालामुखी पर्वत हैं। मध्य के भाग में खड्ड हैं जो काफी गहरे हैं। खड्ड के दोनों ओर उभरे हुये भाग हैं। इन टापुओं पर लुप्त तथा जाग्रत ज्वालामुखी पर्वतों की संख्या लगभग बीस है। सबसे ऊँची चोटी माउन्ट आपो (६४५० फीट) मिन्डनाओ में है। बहुत ही सुन्दर तथा एकसी चोटियों में माउन्ट मेयन उल्लेखनीय हैं। यहाँ प्रायः भूकम्प भी आया करते हैं, परन्तु उनका प्रभाव बहुत अधिक नहीं होता।

---

* द्वीपों का क्षेत्रफल—समार ५०५० वर्गमील, नेग्रोस ४६०० वर्गमील, पालावन ४५५० वर्गमील, पेने ४४४६ वर्गमील, मिन्डोरो ३७५६ वर्गमील, लीटी २७८५ वर्गमील, सीबू १७०७ वर्गमील बोहोल १४६२ वर्गमील मसबेट १२६२ वर्गमील।



फिलीपाइन द्वीप समूह—भौतिक रूप

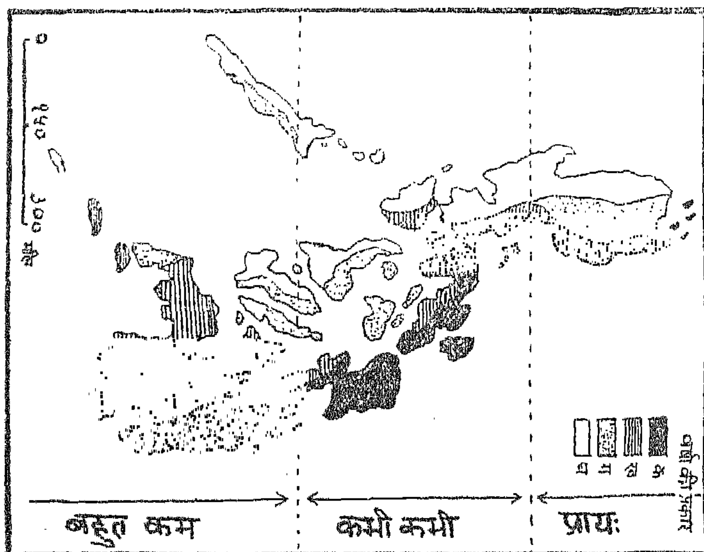
यहां की पर्वत-श्रेणियां तरशियरी युग की हैं। वास्तव में यह एशिया महाद्वीप के दक्षिण-पूर्वी भाग का मुड़ा हुआ किनारा है। द्वीप समूह का पश्चिमी भाग जो कि चीन सागर कहलाता है, एक धसा हुआ (Graben) भू-खंड है। फिलीपाइन भू-भाग में तरशियरी युग की पर्तदार चट्टानें तथा आग्नेय चट्टानें दोनों दृष्टिगोचर होती हैं। कुछ पर्वतश्रेणियाँ ऐसी भी हैं, जिनमें मुड़ी हुई चट्टानें तरशियरी युग से पहले की हैं। ये चट्टानें कदाचित मायोसीन तथा प्लायोसीन युगों के अन्त में ऊपर उठ गई हैं। किन्तु ये चट्टानें धरातल पर बहुत कम दृष्टिगोचर होती हैं। जितने भी ऊँचे ऊँचे पर्वत हैं, उन सबों में अधिकतर विभिन्न प्रकार की आग्नेय चट्टानें ही मिलती हैं। भूगर्भ शास्त्रियों का कथन है कि डूबी हुई पर्वत-श्रेणियाँ अब भी ऊपर उठ रही हैं। इस द्वीपसमूह के पूर्व में प्रशान्त महासागर बहुत गहरा है सबसे अधिक गहरा भाग मिन्डेनाओ से पचास मील दूर पर है, इसे 'मिन्डेनाओ द्वीप' कहते हैं, इसकी गहराई ३५४१० फीट है, इसका विस्तार ११५११ मील है।

फिलीपाइन द्वीप समूह में समतल भाग दो प्रकार के हैं, पहले तटीय मैदान तथा दूसरे पहाड़ों के मध्यवर्तीय समतल क्षेत्र। तटीय मैदान बहुत संकरे हैं इनकी अधिकतम चौड़ाई दस मील है। तटीय मैदान बहुत संकरे होने का कारण यह है कि पहाड़ी श्रेणियां तट के बहुत निकट तक फैली हुई हैं। पर्वतों के मध्यवर्ती

समतल क्षेत्र अपेक्षाकृत अधिक चौड़े हैं उदाहरणार्थ लूज़ोन के मध्य का मैदान, उत्तरी लूज़ोन में काँगया बेसिन, पनाय में मध्य का मैदान, पूर्वी मिडनाओ में आगूसन घाटी तथा काटाबाटो घाटी के मैदान।

जलवायु (Climate) :—

फिलीपाइन द्वीप समूह की स्थिति यद्यपि भूमध्यरेखीय प्रदेशों के बाहर है, परन्तु फिर भी यह उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में ही स्थित है। यहाँ की जलवायु मानसून हवाओं से प्रभावित होती है। ग्रीष्म तथा शीत ऋतु में जलवायु भिन्न रहती है। ग्रीष्म ऋतु में तापक्रम काफी ऊँचा रहता है। परन्तु समुद्र के प्रभाव



फिलीपाइन द्वीपसमूह—जलवायु

के कारण मध्य जून में १००° से अधिक नहीं हो पाता, नवम्बर से लेकर मार्च तक शीत ऋतु का तापक्रम ७०° से कम ही रहता है। यहाँ वर्षा भी पर्याप्त होती है। लगभग ४० इंच से अधिक वर्षा तो हर जगह ही हो जाती है। परन्तु वर्षा हर स्थान पर समान नहीं होती, किसी स्थान पर ग्रीष्म ऋतु, में अधिक तथा किसी स्थान पर शीत ऋतु में अधिक वर्षा होती है। इस द्वीपसमूह को वर्षा के आधार पर तीन भागों में बाँटा जा सकता है :—

(१) पश्चिमी (२) पूर्वी तथा (३) मध्यवर्ती

(१) पश्चिमी भाग में जून के माह से वर्षा ऋतु, आरम्भ हो जाती है। परन्तु १५ जून से लेकर १ दिसम्बर तक भली भांति वर्षा होती है। इस ऋतु में

वर्षा दक्षिण पश्चिमी मानसून से होती है। इन हवाओं को उत्तर से दक्षिण की ओर फैली हुई पर्वत श्रेणियाँ पूर्वी भाग में वर्षा करने से रोकती हैं। वर्षा का औसत १०० इंच के लगभग है। शीत तथा बसन्त ऋतु प्राय: शुष्क रहती है, क्योंकि इन दिनों यहाँ केवल दो इंच ही वर्षा हो पाती है।

(२) पूर्वी भाग में वर्षा शीत ऋतु में लौटते हुये मानसून (Retreating Monsoon) से होती है। यह दिसम्बर से मई तक होती है। और वर्ष भर में १००" से अधिक हो जाती है। मानसून हवायें यहाँ उत्तर-पूर्वी भाग से आती हैं, इनका प्रभाव शीत ऋतु, में ही सबसे अधिक होता है। ग्रीष्म ऋतु में यहाँ बहुत कम वर्षा हो पाती है। फिर भी यह भाग सबसे अधिक वर्षा वाला भाग है, और यहाँ आकाश प्राय: मेघाच्छादित रहता है।

(३) मध्य के भाग में प्राय: मार्च और अप्रैल के महीने शुष्क रहते हैं। इन दो महीनों के अलावा अन्य महीनों में न विशेष शुष्क और न विशेष नम वातावरण रहता है।

यह द्वीपसमूह हानिकारक झंझाँवातों (Cyclones) के रास्ते में पड़ता है। झंझावात वास्तव में फिलीपाइन द्वीप समूह के पूर्वी समुद्रों से उठते हैं। ये पश्चिम की ओर मुड़कर इन्डोचीन समुद्र तट के सहारे उत्तर-पूर्वी दिशा को चलते हुये चीन की ओर मुड़ जाते हैं। झंझावात अधिकतर जुलाई से लेकर नवम्बर तक आया करते हैं। मई, जून तथा दिसम्बर में ये कभी कभी आया करते हैं, और साथ ही अधिक हानिकारक भी सिद्ध नहीं होते। केवल फरवरी का ही माह ऐसा होता है, जिसमें कि ये झंझावात कदापि नहीं आते। इस द्वीप समूह का केवल उत्तरी भाग ही ऐसा है, जो पूर्णत: इन झंझावातों के रास्ते में पड़ता है। यही कारण है, कि यहाँ इनका प्रभाव बहुत अधिक पड़ता है। मध्य के भाग में ये अपेक्षाकृत कम घातक सिद्ध होते हैं, क्योंकि यहाँ ये अनिश्चित समय पर ही आते हैं। दक्षिणी भाग में तो ये प्राय: बहुत ही कम आते हैं, इसीलिये ये भाग इनके हानिकारक प्रभाव से सुरक्षित रहते हैं।

मानव रूप (Human Aspect)

ऐतिहासिक आधार (Historical background) :—

जिस समय मैगिलन, १५२१ में फिलीपाइन द्वीप समूह पहुंचा था, उस समय यह द्वीप समूह व्यापार में बहुत उन्नति पर था। यहाँ से विदेशी व्यापार चीन तथा अन्य पूर्वी देशों से अधिक हुआ करता था। सन् १५६१ से यहाँ स्पेन निवासियों का आतंक हो गया। इन लोगों के राज्य में यहां के निवासियों ने ३० बार बड़े बड़े विद्रोह किये। दिसम्बर ३० सन् १८९६ में जोसे रिजाल (Jose' Rizal) नामक एक प्रसिद्ध फिलीपाइन विद्वान को स्पेनिश लोगों ने मार डाला।

इसके अन्तर्गत एक भयंकर विद्रोह आरम्भ हो गया। एक प्रसिद्ध फिलीपाइन नेता ऐमिलियो ऐग्युनाल्डो (Emilio Aguinaldo) ने एक विशाल सेना एकत्रित करके स्पेन निवासियों को परास्त किया। वास्तव में स्पेन निवासियों का ध्येय व्यवहार करना तथा ईसाई धर्म का प्रचार करना था। यहाँ से मनीला गैलिओन (Manila Gaileon) बहुत बड़ी मात्रा में स्पेन व्यापारी मैक्सीको के मार्ग से स्पेन ले जाते थे। इसके बदले में मैक्सीको से उन्हीं जहाज़ों में लाद कर यहाँ चाँदी लाई जाती थी। चाँदी का व्यापार ये लोग चीन से किया करते थे। इन लोगों ने यहाँ अपना प्रभाव इतना अधिक डाला था, कि अब भी यहाँ ६५ प्रतिशत लोग 'रोमन कैथोलिक' धर्म को मानते हैं, तथा उच्च घरानों में इस समय भी स्पेनिश भाषा बोली जाती है।

अमेरिकन लोगों का अधिकार यहाँ उस समय से हुआ है, जब कि ऐडमिरल डेवी (Admiral Dewey) ने मनीला की खाड़ी में यहाँ के लोगों को परास्त किया था। पहली मई १८६८ में अमेरिकन लोग पहली बार इस द्वीप पर पहुंचे। संयुक्त राज्य अमरीका के प्रेसीडेण्ट मेकिन्ली (Mekinley) ने इस द्वीप पर अपना आतंक जमाये रखने का निश्चय कर लिया। फरवरी १८६६ में वहाँ के लोगों ने एक बड़ा विद्रोह आरम्भ कर दिया। इस विद्रोह को संयुक्त राज्य अमरीका के साठ हजार सिपाहियों ने तुरन्त दबा दिया। विद्रोहियों के नेता को इन लोगों ने क़ैद कर लिया और शान्ति पूर्वक अपना आधिपत्य जमा लिया। सन् १८६६ से लेकर १९१३ तक इन अमेरिकन लोगों का अधिकार दृढ़ रहा। दस बारह वर्ष के समय में यहाँ हर क्षेत्र में उन्नति हुई। यहाँ के स्थानीय स्वशासन में सुधार किया। अंग्रेजी ढङ्ग पर शिक्षा प्रणाली स्थापित कर दी, इसके अतिरिक्त सरकारी अफ़सर, जो कि आरम्भ में केवल अमेरिकन ही नियुक्त किये जाते थे, यहाँ के लोग भी लिये जाने लगे। यहाँ तक कि इन लोगों को असेम्बली तक में भी स्थान दिया गया, साथ ही फिलीपाइन कमीशन ने अपर हाउस तक की स्थापना की। इतना कुछ होते हुए भी यहाँ अमेरिकन लोगों का ही आधिपत्य रहा। सन १६५६ के चुनाव के पश्चात जबकि संयुक्त राज्य अमरीका की डिमोक्रेटिक पार्टी जीत गई, तब प्रथमबार फिलीपाइन को स्वतन्त्रता देने का प्रश्न उठाया गया था। परन्तु बाद में थोड़े से और अधिकार देकर इस प्रश्न को शान्त कर दिया गया।

फिलीपाइन की 'नेशनलिस्ट पार्टी' के नेता मैन्युल क्यूज़ोन (Manuel Quezon) एक विशेष 'मिशन' लेकर १६१६ तथा १६२४ में संयुक्त राज्य अमरीका अपने देश की स्वतन्त्रता माँगने के हेतु पहुंचे, परन्तु उन्हें कोई विशेष सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। इसके बाद कुछ और प्रयत्न करने के उपरान्त

संयुक्त राज्य अमरीका की काँग्रेस ने १९३४ में फिलीपाइन स्वतन्त्रता ऐक्ट अपना लिया। इस ऐक्ट के अन्तर्गत नवम्बर १९३५ में 'कामनवेल्थ आफ फिलीपाइन' की स्थापना हुई। इसके केवल दस वर्ष बाद ही स्वतन्त्रता प्रदान करने की शपथ थी। ४ जुलाई १९४६ में इस देश को पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान कर दी गई।

जनसंख्या वितरण (Population Distribution):—

फिलीपाइन द्वीप समूह की जनसंख्या सन १९५४ में २१,०४०,००० थी। जब कि १९४८ में १९२३४,१८२, १९३० में १२,५८८,०९९ और १९०३ में ७,६३५,४२६ थी। इस द्वीप समूह का क्षेत्रफल ११५६०० वर्ग मील है, इसलिये औसत घनत्व १९५४ में १८२ व्यक्ति प्रति वर्ग मील था। जब कि १९४८ में केवल १७० ही था। जनसंख्या घनत्व हर द्वीप में भिन्न है। मिन्डनाओ द्वीप पर केवल ३४ व्यक्ति प्रति वर्ग मील पाये जाते हैं। इसके विपरीत सीबू में सब से अधिक जनसंख्या घनत्व पाया जाता है। यहाँ पर ६२८ व्यक्ति प्रति वर्ग मील क्षेत्र में रहते हैं। यहाँ पर चीनियों की जनसंख्या १९४८ में १२१७०२ थी, जब कि १९३९ में यह केवल ११७४८७ ही थी। इन लोगों के हाथ में यहां का ७५ प्रतिशत व्यापार है। चीनियों के मुक़ाबिले जापानियों की संख्या कम है, जापानी यहाँ पर कुल २९२७२ थे, इसमें से आधे दक्षिण में देवाओं में रहते हैं। यहां नगरों में बहुत अधिक जनसंख्या पाई जाती है। सन १९५३ में मनीला की सनसंख्या १,२००,००० थी। नई राजधानी क्यूज़न सिटी (मनीला के उत्तर-पूर्व में) की सन् १९४८ में १,०७,९७७ थी। अन्य नगरों की जनसंख्या इसी सन में इस प्रकार थी—इलायलो-ओन-पैने ११०,१२२, सीबू-ओन-सीबू १,६७,५०३ मिंडनाओ पर स्थित जेम्बो आँगा १०३,३१७, इसी द्वीप पर स्थित देवाओं ११,२६३, बसीलन द्वीप पर स्थित बसीलन ११०,२९७, नीग्रोज़ पर स्थित बकोलोड़ १०१,४३२, लुज़ोन द्वीप पर स्थित ग्रीष्म ऋतु की राजधानी बागुइओ २९,२६२।

अमरीकन लोगों की संख्या यहाँ बहुत कम है, यह १९३९ में केवल ८७३९ थी। इसमें वे अमेरिकन सम्मिलित नहीं थे, जो कि सेना में थे और जो थोड़े ही समय के लिये यहां डटे हुए थे। इस द्वीप समूह की जनसंख्या धीरे धीरे बढ़ रही है और यह सम्भव है कि भविष्य में इसकी जनसंख्या जापान के बराबर हो जाय।

I. U. N. Statistical Papers, Series N. Vol. VI No 4. (Oct. 1954) Vide Asia & Africa in the Modern world. Published by Asia Publishing House, Calcutta.

आर्थिक रूप (Economic Aspect)

वन-सम्पत्ति (Forest Wealth) :—

इस द्वीप समूह की स्थिति तथा जलवायु ऐसी है कि इसका आधे से अधिक भाग सदैव घने वनों से ढका रहता है। अनुमान लगाया गया है कि यहाँ के सम्पूर्ण क्षेत्र के ४५.४८ प्रतिशत भाग पर वाणिज्य सम्बन्धी वन, १२.५२ प्रतिशत भाग पर साधारण वन, २.०७ प्रतिशत भाग पर दलदल तथा शेष बचे हुये क्षेत्र में बोई हुई उपजें या घास के मैदान मिलते हैं। वन मुख्यत: पहाड़ी ढालों पर पाये जाते हैं, क्योंकि इन भागों में वर्षा अधिक होती है। दक्षिणी भागों में अधिकतर भूमध्य रेखीय वन मिलते हैं। इन वनों से अनेक आर्थिक वस्तुयें प्राप्त की जाती हैं। इमारती व फरनीचर की लकड़ी विशेषरूप से प्राप्त की जाती है। कठोर लकड़ियों में यहाँ अनेक ऐसी हैं, जिनमें दीमक तक नहीं लगती, और न वे खराब होती है। लकड़ी के अलावा इन वनो से गोंद, रेज़िन, रंगने वाली छाल तथा वनस्पति तेल भी प्राप्त होता है। कठोर लकड़ी जिसे 'फिलीपाइन महारानी' के नाम से भी पुकारते हैं, बहुत बड़ी मात्रा में संयुक्त राज्य, जापान तथा चीन को निर्यात की जाती है। कुछ लकड़ियाँ तो ऐसी हैं जो कि बहुत ही अन्दर वनों में पाई जाती हैं, और जिनका काटना बड़ा कठिन है, यद्यपि ये सबसे उत्तम होती हैं।

कृषि (Agriculture) :—

इस द्वीप समूह के निवासियों का प्रधान व्यवसाय कृषि है। परन्तु आश्चर्य इस बात का है, कि यहाँ कुल भूमि के पन्द्रह प्रतिशत भाग पर ही कृषि की जाती है, क्योंकि अधिकांश भाग या तो ऊँचा नीचा है, और या घने वनों से ढका हुआ है। पर्वतीय ढाल इतने तिरछे हैं कि वहाँ पर पत्तियोंदार खेत बना कर कृषि करना असम्भव सा हो जाता है। यहाँ के लोगों के मुख्य खाद्य पदार्थ चावल व मक्का हैं। परन्तु यह दोनों वस्तुयें यहां की जनसंख्या को देखते हुये कम मात्रा में

The Philippines has a total area of 29,740,972 hectares, of which 11,415,000 hectares are commerical forest; 4,459,900 hectares non-commerical forest, 8,180,072 hectares cultivated land; 5073,300 hectares open land, 169300 hectares fresh marsh and 443400 hectares mangrove.

About 98·4% of the total cultivated area is owned by Filipinos; about 51% of the farms are less than 5 acres.

—Statement Year Book 1955

उगती हैं। इस कमी को पूरा करने के लिये चावल तथा गेहूं का आटा काफी मात्रा में आयात किया जाता है।

अन्य उपजों में गन्ना, नारियल, सन (मनीला हेम्प अथवा अबाका) तथा तम्बाकू महत्वपूर्ण हैं। इनके अतिरिक्त कपास, शकरकन्द, कहवा, रबड़, सीसल, सन, तथा केला, आम, पपीता, चीक, सन्तरा इत्यादि फल भी उत्पन्न होते हैं। फिलीपाइन निवासियों ने लगाई हुई उपजों को अधिक प्रोत्साहन नहीं दिया, इसीलिए यह कम मात्रा में पाई जाती हैं। चावल और तम्बाकू उपजाऊ घाटियों में ही बोया जाता है। नारियल रेतीले समुद्र तट पर ही उगता है, परन्तु एक हज़ार फीट ऊँची पहाड़ियों पर भी अब यह उगाया जाने लगा है। अबाका या मनीला हेम्प अधिकतर पूर्वी ढालों पर नम भागों में जैसे मिन्डैनाओ में बोया जाता है। मक्का तथा शकरकन्द शुष्क भूमि पर शुष्क भागों में उत्पन्न की जाती हैं। रबड़ बहुत कम और मिन्डनाओं द्वीप पर ही उत्पन्न की जाती है। कुछ द्वीप अनन्नास के लिये प्रसिद्ध हैं।

मुख्य निर्यात वस्तुओं का उत्पादन (फ़स्ल वर्ष १६५३ में)

उपजें	मात्रा (मि० टन में)	प्रतिशत १६३७	१६५१	१६५२
गिरी (कोपरा)	८१२,३१६	१५५·६	७८·४	८५·१
नारियल का तेल	१४१,२५४	६६·३	१०४·०	६७·१
खाने वाली गिरी (नारियल के तेल द्वारा तैयार की गई)	८२,६५८	५३·८	१०४·०	६७·१
सुखाया हुआ नारियल	५६,७००	१५६·७	८५·६	१०८·८
अबाका (बगैर तैयार किया हुआ)	११८,७०	५६·२	६१·०	१०३·६
नारियल द्वारा तैयार की हुई रस्सी	३,६६७	५३·२	७०·७	८३·८
तम्बाकू की पत्ती	२२,२७०	६१·४	७४·६	८३·५
शक्कर	१०२८,४४७	१०१·४	१२१·२	१०५·३
टिम्बर (लकड़ी)	१,३६०,५७३,००० (bd. ft.)	१५६·१	१००·७	११८·०
लम्बर (लकड़ी)	४२१,२७८,००० (bd. ft.)	१३३·४	६०·४	६६·४

यह क्षेत्र जिनके आधे भाग में कृषि की जाती है, उनमें मध्य तथा दक्षिणी लुज़ोन, दक्षिणी पेने, सीबू तथा पश्चिमी नेग्रोस तथा लोटी इत्यादि सम्मिलित हैं। उत्तरी लुज़ोन के पर्वतीय क्षेत्र पालावन तथा मिन्डनाओं में केवल दस प्रतिशत भूमि पर कृषि की जाती है। वहाँ पर लोग डबुल क्रॉपिंग भी करते हैं, केवल चौथाई लोग ही अपने खेतों में सिंचाई की व्यवस्था करते है। यहाँ की प्रमुख उपजों में चावल, तम्बाकू, नारियल, गन्ना तथा मनीला हैम्प उल्लेखनीय हैं।

चावल :—

यह इस द्वीप समूह की एक प्रमुख उपज है, और बोई जाने वाली भूमि के आधे भाग पर उत्पन्न की जाती है। यहाँ के निवासियों का यह मुख्य भोजन भी है। भाग्यवश चावल की उपज यहाँ उपयुक्त मात्रा में होती है। इसका मूल कारण यह है कि यहाँ पर इसकी उपज के लिये अनुकूल वातावरण मिलता है। धान बोने के यहाँ चार साधन अपनाये जाते हैं, पहला पौधे को दूसरे खेत में लगाना, दूसरा–बीज फेंक कर बोना, तीसरा–उच्च भूमि में खेतों को गोड़ कर बोना तथा चौथा–एक पोली छड़ी द्वारा एक एक बीज को थोड़े थोड़े फासले पर बोना। चालीस प्रतिशत चावल लुज़ोन के मध्य के समतल भाग से प्राप्त होता है। शेष उत्तरी लुज़ोन तथा पनाय के पर्वतीय तथा समतल भागों में उत्पन्न किया जाता है। मैदानों में जो चावल उत्पन्न किया जाता है, उसके लिये सिंचाई की भी पूरी व्यवस्था होती है। ३० जून १९५३ को पेले (Palay) अथवा चावल का उत्पादन ३,१४४,०६० टन था और यह २,६५५,३६० हेक्टर्स क्षेत्र में उत्पन्न किया गया।

खाद्य पदार्थों में यहाँ मक्का द्वितीय स्थान प्राप्त करता है। यह अधिकतर बोहोल तथा सीबू द्वीपों पर उस मिट्टी में उत्पन्न किया जाता है, जिसमें कि मूँगे की चट्टानों का अंश मिश्रित होता है। ऐसे स्थानों पर यह चावल के स्थान पर बोया जाता है, क्योंकि इसके लिये शुष्क जलवायु की आवश्यकता होती है।

नारियल :—

यह इस द्वीप समूह की प्रधान धन देने वाली उपज है, और कुल बोई हुई भूमि के १४ प्रतिशत भाग पर उत्पन्न किया जाता है। धान और मक्का के बाद इसी उपज का स्थान है। नारियल का आर्थिक महत्व बहुत अधिक है, क्योंकि लोग इसका हर प्रकार से प्रयोग करते हैं। नारियल का तेल बहुत बड़ी मात्रा में अमरीका भेजा जाता है। मरगेरिन, वनस्पति घी, ग्लेसरीन तथा इसी से प्राप्त अन्य वस्तुओं का बहुत अधिक महत्व है। इसकी उपज मध्य तथा पूर्वी क्षेत्रों तक ही सीमित है, क्योंकि यहाँ वर्षा काफी मात्रा में हो जाती है, साथ ही चक्रवात भी इन भागों में कम आते हैं। उपज समुद्री तटों के ढाल पर सबसे उत्तम होती है। माउन्ट बानाहोआ के ढाल इस दृष्टिकोण से बड़े आदर्श हैं। नारियल का

बीज पहले तो साधारण तौर पर बो दिया जाता है, जब यह एक फीट ऊँचा हो जाता है, तब इसको अन्य स्थान पर वैज्ञानिक ढंग से लगा दिया जाता है। अनेक बार प्रयोग करने के उपरान्त लोग इस निर्णय पर पहुँचे हैं कि प्रकाश तथा वायु अच्छी उपज के लिये अत्यन्त आवश्यक है, इसीलिये प्रत्येक १० या ११ गज की दूरी पर इसके पौधे को लगाया जाता है। केवल छै साल में यह फल देने लगता है और लगातार तीस या चालीस वर्ष तक देता रहता है। नारियल से जो कोपरा या गरी का गोला प्राप्त होता है, उसका बहुत ही अधिक महत्व है। क्योंकि इसी से अनेक वस्तुयें प्राप्त की जाती हैं। नारियल का उत्पादन ३० जून १९५३ को ३,०८४,४०० टन था जब कि यह १,०७३,८०० हेक्टर्स भूमि पर उत्पन्न हुआ। इस वस्तु के निर्यात में इस देश का इन्डोनेशिया के बाद दूसरा स्थान आता है। सन् १९४७ में यहाँ से १००७१८० लौंग टन नारियल तथा गरी के गोले निर्यात किये गये। सन् १९५२ में गरी के गोले ८५·१ प्रतिशत, नारियल का तेल ९७·१ प्रतिशत तथा गोले के अन्य पदार्थ ९७·१ प्रतिशत निर्यात किये गये । गरी, गरी का तेल तथा तेल निकाली हुई सूखी गरी संयुक्त राज्य अमरीका को निर्यात कर दी जाती है। सबसे अधिक उपज मनीला के दक्षिण-पूर्वी भाग से प्राप्त की जाती है। विश्व का एक चौथाई नारियल का तेल यहीं से प्राप्त किया जाता है।

गन्ना :—

यह भी इस द्वीप समूह की एक प्रधान धन देने वाली उपज है । द्वितीय महायुद्ध के पूर्व इसकी कृषि तथा व्यापार बहुत उन्नति पर थी, क्योंकि यहाँ से लगभग नौ लाख टन शकर संयुक्त राज्य अमरीका प्रति वर्ष भेजी जाती थी। विश्व के कुल उत्पादन के दो प्रतिशत भाग से लेकर यह बहुत जल्द ही सोलह प्रतिशत हो गई थी, परन्तु युद्ध के प्रभाव से इसकी कृषि को बड़ा धक्का पहुँचा था । अब दशा सुधरती जा रही है। गन्ने की कृषि इस द्वीप समूह के पश्चिमी तथा उत्तरी भाग में अधिक होती है। गन्ने के लिये सबसे प्रसिद्ध टापू नेग्रोस है, परन्तु पनाय और मध्य लूज़ोन में भी काफी गन्ना उत्पन्न किया जाता है। इन भागों की मिट्टी ज्वालामुखी पर्वतों के डाले हुये लावा से बनी हुई है, इसलिये प्राकृतिक तौर पर बड़ी उपजाऊ है। जलवायु भी यहाँ की गन्ने की कृषि के लिये बड़ी लाभदायक है। यहाँ पर शुष्क वातावरण उसी प्रकार का रहता है, जैसा कि विश्व के प्रमुख गन्ने के क्षेत्रों में पाया जाता है। वर्षा भी इन भागों में काफी हो जाती है। प्रति एकड़ उपज यहाँ पर अन्य देशों की अपेक्षा कम है। परन्तु अब बढ़ाये जाने की चेष्टा की जा रही है। सन् १९५३ में यहाँ १०२८,४४७ मेट्रिक टन गन्ना उत्पन्न हुआ। इसी सन् में ३० जून को इसका उत्पादन १,१९८,७७६ टन हो गया। इसका क्षेत्र इस समय केवल २४४७०० हेक्टर्स सन् १९५१ में १११·२ प्रतिशत तथा १९५२ में

१०५·३ प्रतिशत उत्पादन था। जितनी भी यहां गन्ने की उपज होती है, वह सब संयुक्त राज्य अमरीका को निर्यात कर दी जाती है।

मनीला सन –

अबाका, जिसे दूसरे शब्दों में हम मनीला सन भी कह सकते हैं, एक केले के प्रकार का वृक्ष होता है। इसकी ऊंचाई आठ या दस फीट से अधिक नहीं होती। फिलीपाइन द्वीप समूह को छोड़कर यह विश्व के अन्य किसी भी भाग में उत्पन्न नहीं होता। इसका रेशा बड़ा मजबूत होता है। यह खारी पानी में गल नहीं सकता इसलिये इसका प्रयोग जहाज़ों व नावों की मजबूत रस्सियाँ बनाने में अधिक होता है। इसका व्यापारिक नाम 'मनीला हेम्प' है। इस पौधे को काफी उपजाऊ मिट्टी की आवश्यकता है, इसीलिये यह पर्वतीय ढालों पर उत्पन्न किया जाता है। जिन भागों में एक सी वर्षा तथा अधिक नमी होती है वहां भी यह उत्पन्न किया जा सकता है। यह पूर्वी तट पर मध्य लूज़ोन से मिंडनाओं तक बोया जाता है। यहाँ उष्ण कटिबन्धीय नम जलवायु पाई जाती है, साथ ही झंझा-वात भी कम आते हैं। हवाओं के निकटवर्तीय क्षेत्रों में इसकी कृषि जापानियों ने आरम्भ की थी। इस धन्धे में लगे हुये व्यक्तियों में यहाँ के आदि निवासियों की संख्या अधिक है। पहले सभी काम हाथ से किये जाते थे, परन्तु अब बहुत कुछ कार्य मशीनों द्वारा होता है। इससे तैयार की हुई वस्तुओं का निर्यात बहुत अधिक होता है। संयुक्त राज्य अमरीका २५ प्रतिशत आयात करता है। कच्चा अबाका १९५३ में ११८७०० मेट्रिक टन तथा रस्सी ३९६७ मेट्रिक टन उत्पन्न हुई। फिलीपाइन सीसल इसी प्रकार का एक दूसरा रेशा यहाँ होता है, जो इसी प्रकार की वस्तुयें तैयार करने के काम आता है, परन्तु इसकी कृषि यहां सीमित है।

तम्बाकू —

उस समय जब कि यहां स्पेन के निवासियों का अधिकार था, तम्बाकू काफी मात्रा में उत्पन्न की जाती थी। परन्तु अब केवल बोई हुई भूमि के दो प्रतिशत भाग पर ही उत्पन्न की जाती है। सन् १९५३ में इसका उत्पादन २२·२५० मेट्रिक टन था। इसकी उपज का प्रमुख क्षेत्र उत्तरी लुज़ोन में कमयान की घाटी है।

अन्य उपजें :—

इन उपजों के अतिरिक्त कपास, कहवा, केसवा, फल, कैपोक, रबड़, रेमी, रेशम तथा वनीय पदार्थ भी उत्पन्न होते हैं। परन्तु बहुत अधिक मात्रा में उत्पन्न न होने के कारण इनका निर्यात नहीं होता, और इसलिये इनका महत्व भी कम है। फलों में यहां केला, आम, पपीता, लैंजोंस, पीलीवट, चीको, मैंडारिन तथा

नारंगियां होती हैं। दक्षिण की ओर रबड़ उत्पन्न होती है। इसका क्षेत्रफल कुल ८३८० एकड़ है।

जीवजन्तु (Animal Life) :—

इस द्वीप समूह पर भांति भांति के जीवजन्तु पाये जाते हैं। द्वितीय महायुद्ध के पूर्व इनकी मात्रा बहुत अधिक थी, परन्तु युद्ध के समय इनकी संख्या में बड़ा अन्तर आ गया। अब पुन: यह इन जीव जन्तुओं की संख्या बढ़ाने में लगा हुआ है। सन् १९४० में ३०१५४०० केरेबाओज़ (Water baffalo) पाये जाते थे। केवल पांच वर्ष बाद जब कि युद्ध समाप्त हो गया था, १३१७,१३० रह गये। ठीक इसी प्रकार पशुओं, घोड़ों, भेंड़, बकरियों, सुअरों इत्यादि की संख्या भी घट गई थी। अब इनकी संख्या धीरे धीरे बढ़ रही है। सन् १९५३ में यहां २,५१०,११० केरेबाओज़, ७६८,२९० गाय-भैंसें, २१६,३२० घोड़े, ३९१०३० बकरे तथा २०७१० भेंड़ें थीं।

खनिज सम्पत्ति (Mineral Wealth) :—

फिलीपाइन द्वीप समूह में अनेक खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। परन्तु प्रत्येक की मात्रा बहुत सीमित है। मुख्य खनिज पदार्थों में सोना, चांदी, क्रोमियम, ताँबा, लोहा, मैंगनीज़, जिपसम, जस्ता, सीसा, अजबेस्टस तथा सिलिका आदि की खानें हैं। इन सबों में आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण धातुयें सोना, चांदी, क्रोमियम व ताँबा हैं। अन्य खनिजों की उत्पत्ति उल्लेखनीय नहीं है। हां, केवल यूरोनियम अवश्य एक ऐसा खनिज है, जो कि सन् १९५४ में दक्षिणी लुज़ोन में लारन के स्थान पर प्राप्त कर लिया गया है।

सोना तथा चांदी :—

फिलीपाइन द्वीप समूह सोने की खानों के लिये बहुत प्रसिद्ध रहा है। दक्षिण-पूर्वी एशिया में यहीं सबसे अधिक सोना निकाला जाता है। द्वितीय महा-युद्ध के पहले यहां पर यह धातु एलास्का से भी अधिक निकाली जाती थी। सन् १९५३ में ४८०६२५ औंस तथा १९५२ में ४६९४०८ औंस उच्चकोटि का सोना प्राप्त हुआ। चाँदी भी यहां सोने की ही खानों के निकट पाई जाती है। सन् १९४१ में इसका उत्पादन लगभग दस लाख औंस था। सोने तथा चांदी की खानें अधिकतर उत्तरी लुज़ोन में बेगैट के क्षेत्र में पाई जाती हैं। मिंडनाओ तथा नसबेट दो अन्य ऐसे टापू हैं, जिनमें कि ये दोनों धातुयें पाई जाती हैं। इन्हीं खानों के निकट प्लेटिनम नाम की धातु भी पाई जाती है, इसका प्रयोग अधिकतर ऊपर लिखी हुई दोनों धातुओं के साफ करने में किया जाता है।

खनिज पदार्थों का उत्पादन

धातुयें	१९५३	१९५२	प्रतिशत वृद्धि एवं ह्रास (-)
सोना (उत्तम)	४८०,६२५	४६१,४०८	२·४
प्रमुख धातुयें	१८११,६११	१७५०,०३२	३·५
क्रोमाइट	५५७,०९०	५४३,५१४	२·५
मैंगनीज़	२१५ ८	२०,६२७	४·३
ताँबा	१२·७१५	१३,२४१	(–) ४·०
लोहा	१२१७ ८६४	११७०,३५०	४·१
लेड	२,४३४	२,३००	५·८

क्रोमियम—यह एक महत्वपूर्ण धातु है, और फिलीपाइन द्वीप समूह में बहुत अधिक मात्रा में निकाली जाती है। आश्चर्य की बात यह है कि द्वितीय महायुद्ध के पहले इस धातु का यहां पता भी नहीं था, परन्तु १९३९ में इसको विश्व में पांचवाँ स्थान प्राप्त हुआ और साथ ही इसी वर्ष उत्पादन विश्व के कुल उत्पादन का ११ प्रतिशत था। यह धातु पश्चिमी लुजोन में बहुत अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसका भण्डार यहां विश्व में सबसे अधिक है। क्रोमियम का रिज़र्व यहां १०००००००० टन से अधिक है। इस धातु में आधी अधिक शुद्ध क्रोमियम पाई जाती है सन १९५३ में कुल उत्पादन ५५७०९० टन था।

लोहा—इस द्वीप समूह में लोहा भी निकाला जाता है। सन १९५३ में यहाँ से १,२१७,८६४ टन लोहा प्राप्त किया गया जबकि १९५२ में इसका उत्पादन केवल १,१७०,३५० टन था। लोहे की खानें पूर्वी लुज़ोन (केमराइन नोटेर) समार द्वीप तथा पूर्वी मिंडनाओ [सुरी गाओ] द्वीप में पाई जाती है। सुरीगाओ के स्थान पर कच्चे लोहे का सबसे अधिक कोष पाया जाता है। कच्चे लोहे का कोष यहां ५००,०००,००० टन से अधिक है। कुछ कच्चा लोहा सिलिका, गंधक तथा फासफोरस आदि खनिजों के साथ मिश्रित दशा में भी पाया जाता है।

मैंगनीज—यहां पर मैंगनीज़ काफी मात्रा में पाई जाती है, परन्तु जो कुछ भी प्राप्त होती है, वह उत्तम श्रेणी की नहीं है। सन १९५३ में इसका उत्पादन २१५०८ टन था। यह अधिकतर संयुक्त राज्य अमरीका को निर्यात की जाती है।

तांबा—इस द्वीप समूह में ताँबा भी निकाला जाता है। परन्तु इसके क्षेत्र

अधिकांश उत्तरी लुज़ोन में मिलते हैं। खानों के स्थान पर पहुँचने के मार्ग बहुत कठिन होने के कारण यह धातु कम मात्रा में निकाली जाती है। १९५३ में इसका उत्पादन ११७१५ टन था। इसका निर्यात बहुत अधिक मात्रा में नहीं होता है।

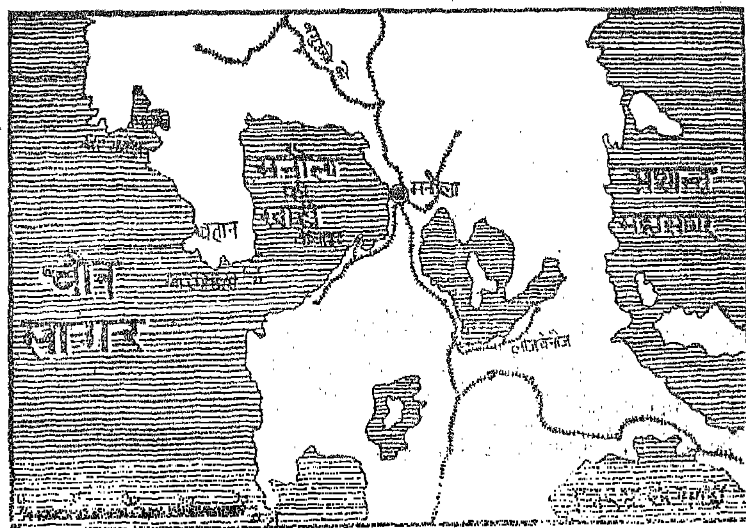
ताँबे के अतिरिक्त यहाँ पर सीसा तथा जिन्क भी निकाली जाती है। सीसे का उत्पादन १९५३ में २४३४ टन हुआ था। इन दोनों धातुओं का निर्यात बहुत अधिक मात्रा में नहीं होता है।

शक्ति के साधन (Power Resources) :—

फिलीपाइन द्वीपसमूह धातुओं में काफी धनी है, परन्तु यहां पर उपयुक्त शक्ति के साधन नहीं पाये जाते। कोयला तथा तेल दोनों ही यहां बहुत कम मात्रा में प्राप्त होते हैं। कोयला यहां पर बहुत ही निम्न श्रेणी का है। इसका उपयोग लोहा गलाने की भट्टियों में नहीं किया जा सकता। तेल भी बहुत ही बुरी दशा में पाया जाता है। इसकी भी मात्रा बहुत ही कम है।

उद्योग धन्धे (Industries) :—

उद्योग धन्धों का विकास यहां बहुत कम हो पाया है। इसका प्रमुख कारण यही है कि यहां उत्तम श्रेणी के कोयले की सदा कमी रही है। केवल अब सम्भव यह है कि या तो यहां से कच्चा लोहा विदेशों को भेज दिया जाये और या वहां से उत्तम श्रेणी का कोयला आयात किया जाय। प्राय: यही होता रहा है, कि



मध्य फिलीपाइन द्वीप

कच्ची धातुओं का यहां से निर्यात ही हुआ है। जो कुछ भी थोड़े बहुत उद्योग यहां पर पाये जाते हैं, उनमें अधिकांश ऐसे हैं, जो कि प्राचीन प्रणियों पर ही प्रचलित हैं। अधिकतर यहां पर ऐसे उद्योग धन्धे पाये जाते हैं जो कृषि से प्राप्त होने वाले कच्चे माल पर अवलम्बित हैं।

यहां के मुख्य उद्योगों में चीनी बनाना, धान कूटना बनस्पति तेल, लकड़ी चीरना, फर्नीचर तैयार करना, शराब बनाना, सिगरेट व सिगार, तथा सन निकालना इत्यादि प्रमुख हैं। इन उद्योगों के अलावा कुछ कुटीर उद्योग भी छोटे पैमाने पर प्रचलित हैं। इनमें चटाई व टोकरी बनाना, बर्तन बनाना, कपड़ा तैयार करना, गोटा किनारी का काम, कसींदा, कढ़ाई तथा सौंदर्य–प्रसाधन वस्तुयें उल्लेखनीय हैं।

द्वितीय महायुद्ध के पूर्व यहाँ पर १६८ लकड़ी चीरने के कारखाने थे। युद्ध के समय इनमें से १३८ नष्ट हो गये। परन्तु पुनः ये धीरे धीरे स्थापित किये जाने लगे। सन् १९४८ तक यहाँ पर ३४२ कारखाने स्थापित हो गये थे। शक्कर कारखाने यहां पर अनेक पाये जाते हैं। द्वितीय महायुद्ध के पूर्व यहां लगभग १०३'००० टन निम्नश्रेणी की, तथा ८०००० टन उत्तम श्रेणी की शक्कर तैयार की गई थी। महायुद्ध के उपरान्त उत्पादन इतना अधिक बढ़ गया कि १९५३ में यहां से १०२८४४७ टन शक्कर का निर्यात हुआ। सूती कपड़े बुनने के कारखाने यहाँ बहुत अधिक नहीं हैं। केवल एक ही कारखाना उच्च श्रेणी का है, इसमें युद्ध समाप्त होने तक केवल तीस हजार कातने की मशीनें थीं। गत वर्षों में यहां नवीन प्रणाली पर अनेक कारखानें स्थापित किये गये हैं। इनमें से अल्युमिनियम कांच, चमड़े तथा लाख की वस्तुयें तयार करने के मुख्य है। सन् १९५४ में यहाँ कारखानों की संख्या इस प्रकार थी—नारियल के तेल के १९, सिगार व सिगरेट के ७७, धान कूटने के ८२३२, चमड़े के जूते बनाने के १६५, रबड़ के जूते बनाने के ७, शक्कर के १८, सीमेंट तैयार करने के ३ और एक विद्युत उत्पन्न करने वाला हाइड्रो पावर स्टेशन था।

यातायात के साधन (Means of Transport & Communication):—

यातायात के साधनों में यहां अधिक विकास नहीं हो सका है। अधिकतर द्वीप पहाड़ी हैं, इसलिये समतल भाग बहुत ही संकरे तथा संकुचित है। रेलवे लाइन लुज़ोन, पैने तथा सीबू में ही हैं। सन् १९५४ में यहां ११४५ किलोमीटर लम्बी लाइनें थीं। इसमें से ९४२ किलोमीटर लुज़ोन पर तथा ११७ पैने पर थीं। सड़कें भी थोड़ी ही मिलती हैं। इनकी लम्बाई १९५३ में २९२१९ किलोमीटर थी। पक्की मोटर चलाने योग्य सड़कों का केन्द्र मनीला है। मोटरकारों की संख्या यहां १०८७६ तथा ट्रकों की ५६१२७ थी। पानी के जहाज़ों की संख्या

१९५२ में ३७०९ थी, इसमें से ९१९ अमरीकन, ८७३ जापानी, ५३४ नारवेजियन ३१० ब्रिटिश, २९७ डैनिश, १९० डच तथा १७१ फिलिपिनो थे। वायु यातायात में भी यहां पर्याप्त उन्नति हुई है।

फिलीपाइन का विदेशी व्यापार १९५१—५३

वर्ष	कुल आयात	कुल निर्यात	व्यापार संतुलन
१९५१	९६२.५	८१९.४	—१४३.१
१९५२	८४१.३	७०३.८	—१३७.५
१९५३	८५५.१	७ ४.९	—७०.२

(1953 Annual Report of the Central Bank of the Phillipines)

विदेशी व्यापार (Foriegn Trade) :—

इस द्वीप समूह से विदेशी व्यापार केवल संयुक्त राज्य से अधिक होता है। अनुमान लगाया जाता है, कि तीन चौथाई वस्तुओं का आयात निर्यात इसी देश से होता है। अन्य देशों में जापान तथा इंगलैंड उल्लेखनीय हैं। निर्यात की वस्तुओं में नारियल के तेल, गरी, चीनी, मनीला सन, तम्बाकू तथा इमारती लकड़ी इत्यादि प्रमुख हैं। आयात की जाने वाली वस्तुओं में कपड़ा, मशीनें, मोटरकार व ट्रकें, कागज, मांस, मक्खन, तथा आटा इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

सन् १९५३ में आयात की जाने वाली वस्तुओं का मूल्य निर्यात की जाने वाली वस्तुओं से अधिक था।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की दशा १९५३

	देश	आयात (०००* पेसोज़)	निर्यात (००० पेसोज़)
१.	समस्त देश	८५५.११६	७८४.९१७
२.	उत्तरी अमरीका	६६६.११२	५३३.८३७
३.	दक्षिणी अमरीका	१.९५६	२२.३७४
४.	उत्तर-पश्चिमी योरोप	४१.८०७	६७.१७८
५.	दक्षिणी योरोप	४.५३८	१३.२२०
६.	पूर्वी योरोप तथा रूस	२७४	+

देश	आयात	निर्यात
७. मध्य पूर्व	३०·६१६	४·६८३
८. जापान	४०·१५७	६६·५८६
९. इन्डोनेशिया	२०·७२४	६५६
१०. एशिया के अन्य देश	४५·३३८	१०·१२७
११. ओशेनिया	२·४५६	३९२
१२. अफ्रीका	७६०	२·७०८

फिलीपाइन का संयुक्त राज्य अमरीका के साथ व्यापार इस प्रकार है।

आयात ६४३·४७० हजार पेसोज
निर्यात ५२६·१४४ ,, ,,

* (1 Peso = 50 Cents U. S.)

राजनैतिक रूप (Political Aspect)

संम्वैधानिक रूपरेखा (Constitutional Framework) :—

स्वतन्त्रता ऐक्ट के अन्तर्गत फिलीपाइन को एक संविधान तैयार करना पड़ा। यह संविधान १९३४–३५ में तैयार हो चुका था। इस संविधान में राष्ट्रपति तथा उपराष्ट्रपति का समय (Term) ६ साल रखा गया था, १९४० में इस संविधान में कुछ सुधार हुए। आजकल इसमें दो हाउस हैं। इनमें से एक सीनेट (Senate) तथा दूसरा हाउस आफ् रिप्रेज़ेन्टेटिव कहलाता है। राष्ट्रपति का समय ६ साल से ४ साल कर दिया गया है। प्रबन्धक शक्तियाँ राष्ट्रपति से तथा न्यायालय सम्बन्धी शक्तियाँ सुप्रीमकोर्ट में निहित हैं। प्रमुख न्यायाधश तथा अन्य सहायक न्यायाधीशों को राष्ट्रपति कमीशन की सलाह से नियुक्त कराती है।

संविधान में एक 'बिल आफ राइट' है जिसमें २१ नियम हैं। इन नियमों के अन्तर्गत मानव अधिकारों को सुरक्षित रखा गया है। अनुसूची २० के अन्तर्गत राष्ट्रपति तीन सदस्यों का कमीशन एक नियुक्त करने वाले कमीशन की सलाह से ९ साल के लिये बना सकता है। अनुसूची २ में धारा ३ के अन्तर्गत संविधान युद्ध का त्याग करता है, और साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धान्तों को, राष्ट्र के नियमों का ही एक भाग समझता है।

सांस्कृतिक रूप (Cultural Aspect)

जातियाँ (Races):—

इस द्वीप समूह में विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं, परन्तु सबसे अधिक संख्या फिलिपिनो की है। इनमें से अधिक ऐसे हैं जो कि मिश्रित जाति के हैं। ये लोग बड़े चतुर होते हैं। इनको किसी भी कार्य को करने में हिचक नहीं होती।

यह भी प्राय: देखा गया है, कि ये लोग मनोरञ्जन में भी अपना काफी समय व्यतीत कर देते हैं। इस द्वीप समूह में विभिन्न भाषायें बोली जाती हैं। इनमें से मुख्य स्पेनिश, पोलिनेशियन, इन्डोनेशियन तथा इंगलिश इत्यादि हैं। यहाँ के लोग अधिकतर ईसाई धर्म को मानते हैं। रोमन कैथोलिक यहाँ ८३% हैं। रोमन कैथोलिक ईसाई धर्म का प्रचार यहां पर स्पेन के निवासियों ने किया था। वैसे यहाँ पर मुसलमान व बौद्ध धर्म मानने वाले व्यक्ति भी काफी मिलते हैं।

शिक्षा (Education) :—

विदेशी लोगों ने यहां पर शिक्षा का प्रचार भी किया है। परन्तु शिक्षित लोग अधिकतर नगरों व क़स्बों में ही पाये जाते हैं। यहां १० वर्ष से ऊपर बच्चे ७०% शिक्षित हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में लोग अधिक शिक्षित नहीं हैं। आजकल यहाँ के सभी लोग शिक्षा की ओर ध्यान दे रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने बच्चों को उच्च से उच्च शिक्षा देने की इच्छा करता है। फिलीपाइन विश्वविद्यालय की स्थापना १६०८ में हुई थी। सन् १६५४ में यहां १२०२८ विद्यार्थी थे। आरम्भ में बच्चों को किन्डरगार्टन (Kindergarten) प्रणाली पर शिक्षा दी जाती है। बड़े हो जाने पर बच्चे स्कूल व कालिजों को भेजे जाते हैं। इनको संसार की वर्तमान स्थिति तथा घरेलू रीतिरिवाज के विषय में भी प्रारम्भिक शिक्षा दी जाती है।

रीतिरिवाज (Customs & Manners) : —

यहाँ के लोगों में विभिन्न प्रकार की रीति-रिवाजें पाई जाती हैं। लोगों के रहन सहन भी भिन्न हैं। ईसाइयों में शादी विवाह योरोपीयन ढङ्ग से ही होता है। युवक तथा युवती का विवाह गिर्जाघर में होता है, इस अवसर पर सम्बन्धियों तथा मित्रगणों को आमन्त्रित किया जाता है। पादरी बहुत ही शान्त व सुगन्धित वातावरण में मंत्र इत्यादि पढ़ता है। लड़का व लड़की बहुत ही अच्छे ढंग से पादरी के सम्मुख आते हैं, और उन्हें शपथ खिलाई जाती है। बाद में यह क्रिया समाप्त होने पर एक चाय पार्टी दे देते हैं। साथ में हल्की आवाज़ में बैंड बजता है।

यहां के ग्रामीण क्षेत्रों में जहां अन्य जातियां रहती हैं उनमें भिन्न प्रकार से शादियां की जाती हैं।

यहाँ के लोगों में इसके अतिरिक्त अन्य भी कई प्रकार के रीतिरिवाज़ मिलते हैं।

पूर्वी एशिया

जापान

परिचय—

एशिया के पूर्व में कदाचित् कोई भी देश इतना प्रभावशाली नहीं है, जितना की जापान। द्वितीय महायुद्ध के पहिले यह देश एशिया का सबसे अधिक शक्तिशाली देश था। इसकी आर्थिक दशा उस समय इतनी अच्छी थी, कि संसार का कोई भी देश ऐसा न था, जहाँ इसकी कलाकौशल की वस्तुयें न बिकती हों। वास्तव में यह देश उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुंच चुका था, परन्तु जिस समय से हिरोशिमा पर प्रथम अणु बम गिरा कर परास्त किया गया, उस समय से इसकी दशा दिन प्रतिदिन शोचनीय होती गई। खाद्य-पदार्थों की कमी एवं उद्योग-धन्धों की अवनति के कारण लोग हजारों व लाखों की संख्या में भूखों मरने लगे। अब भी जापान की पंचवर्षीय योजना के अर्न्तगत कोई भी विशेष उन्नति नहीं हो पाई है। यद्यपि निकट भविष्य में इस प्रकार की कोई आशा भी नहीं है, परन्तु फिर भी इस देश को कुछ ऐसी सुविधायें प्राप्त हैं, जिनसे यह अनुमान लगाया जा सकता है, कि यदि परिस्थितियां अनुकूल रहीं तो यह देश पुनः पूर्वी संसार में उन्नति कर जायेगा।

इसकी स्थिति प्रशान्त महासागर में इतनी अच्छी है, कि यदि इसको एशिया का द्वार भी कहा जाय तो सम्भवतः ठीक ही होगा। इसके पश्चिम में केवल पाँच सौ मील दूर चीन, मंचूरिया, कोरिया तथा रूस जैसे शक्तिशाली देश, तथा पूर्व में लगभग चार हजार मील दूर संयुक्त-राष्ट्र-अमरीका व कनाडा जैसे उन्नतिशील देश स्थित हैं। दक्षिण में पूर्वीय-द्वीप-समूहों के अतिरिक्त भारत, पाकिस्तान, लंका, बर्मा, मलाया, श्याम, इन्डोचीन व मध्य पूर्वी एशिया के देश पाये जाते हैं।

वास्तव में इसकी स्थिति ऐसे व्यापारिक मार्गों पर है, कि इसको सदा अपने विदेशी व्यापार में सफलता मिलती रही। प्रथम मार्ग वह है जो योरोप से प्रारम्भ होता है तथा हिन्द महासागर को पार करता हुआ, सिंगापुर से हाँगकाँग तथा शंघाई होता हुआ कोबी व याकोहामा तक आता है। द्वितीय वह है जो उत्तरी अमरीका से पश्चिम की ओर एशिया के पूर्वीय देशों तक आता है। एक सुविधा जापान को यह भी है कि यह चारों ओर समुद्र से घिरा हुआ है और कोई भी आन्तरिक क्षेत्र सौ मील से अधिक दूर नहीं है। इसका तट भी बहुत कटा

फटा है तथा हजारों छोटे-छोटे द्वीप इसके निकट स्थित हैं। यही कारण है कि प्रारम्भ से ही जापानी अच्छे नाविक रहे हैं।

जापान की तुलना हम ग्रेट ब्रिटेन से भली प्रकार कर सकते हैं। दोनों देश लगभग एक ही अक्षांशों के बीच स्थित हैं। ग्रेट ब्रिटेन योरोप के पश्चिम में तथा जापान एशिया के पूर्व में है। पहले की जलवायु पश्चिमी तटीय तथा दूसरे की पूर्वी तटीय है, दोनों ही गर्म जल धाराओं से प्रभावित होते हैं। इन भौतिक दशाओं के अतिरिक्त अन्य बातों में भी दोनों देश परस्पर मिलते जुलते हैं। क्षेत्र-फल व जन-संख्या में भी दोनों देश लगभग समान ही हैं, दोनों कला कौशल की वस्तुयें बाहर भेजकर खाद्य पदार्थों का आयात करते हैं। और भी यहां अनेक ऐसी भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं जो लगभग एक सी पाई जाती हैं।

इस राज्य का विस्तार यदि मानचित्र पर देखा जाय तो वास्तव में ३०° उत्तरी अक्षांश से ४५° उत्तरी अक्षांश तक ही है चौड़ाई में यह १२६° पूर्वी देशान्तर से लेकर १४६° पूर्वी देशान्तर तक फैला है। वैसे दक्षिण में यह फारमूसा तथा उत्तर में मध्य शाखालीन तक विस्तृत था, परन्तु द्वितीय महायुद्ध के समय से ये क्षेत्र पूर्णतः इसके हाथ से निकल गये। अब अन्य छोटे-छोटे द्वीप जो कुल मिला कर १७५० से भी अधिक हैं, इसी राज्य में सम्मिलित हैं।

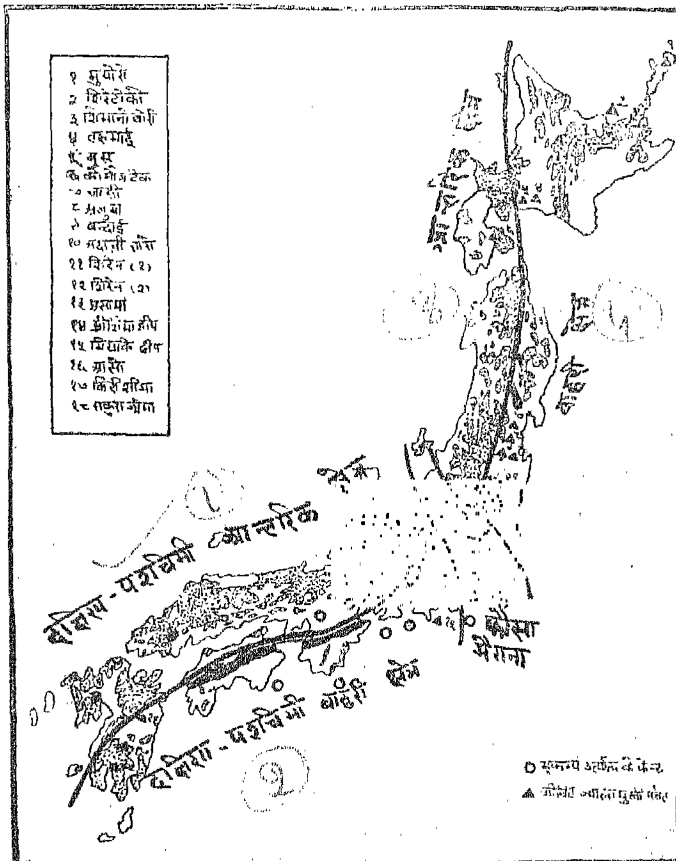
मुख्य जापान चार द्वीपों से मिल कर बना हुआ है यह सब उत्तर-पूर्व से दक्षिण पश्चिम तक धनुषाकार रूप में फैले हुये हैं। पहला, होकेडो जो सबसे उत्तर-पूर्व में, दूसरा होन्शू, तीसरा शिकोक्यू तथा चौथा क्यूशू है। इन सब का क्षेत्रफल १४१,५२९ वर्ग मील (३६८,४७४ किलोमीटर) वर्ग मील है। दक्षिण पूर्व में प्रशान्त महासागर, उत्तर में ला पेराउज (La Perouse strait) जल डमरू-मध्य, पश्चिम में कोरिया जल डमरुमध्य तथा जापान सागर स्थित हैं। होकैडा व होन्शू के मध्य में तंग सुंगारु जल डमरुमध्य क्यूशू, बूगो चेनेल, सूवो साउन्ड तथा शिमोनोसेकी जल डमरुमध्य द्वारा शिकोक्यू व होन्शू से पृथक हैं। होन्शू तथा शिकोक्यू के मध्य में बहुत ही सुन्दर व शान्त जलडमरुमध्य सीतोयूची (Seto Uchi) स्थित है।

भौतिक रूप (Physical Aspect)

बनावट (Structure) :—

पहले जापान की बनावट के बारे में लोगों का यह विचार था कि यह केवल उन आग्नेय (Ignious) चट्टानों का बना हुआ है, जो कि प्रशान्त महा-सागर के धरातल पर बनी हुई लम्बी खाई (Fissure) में जमा हो गई हैं। और जिनका सम्बन्ध उन ज्वालामुखी पर्वतों से है जो प्रशान्त महासागर में एक

चेन के समान फैले हुये हैं। परन्तु अब विद्वानों का मत यह है कि वास्तव में यह पूर्वी एशिया का ही एक अग्र भाग (An advanced Frontier of Asia)* है, तथा अति प्राचीन पर्तदार चट्टानों का बना हुआ है, जो बड़े महाद्वीप



जापान का ढाँचा

की भाँति गहरे जल में पैल्योज़ोइक युग (Paleaozoic Age) में जमा होती रहीं हैं, तथा अन्य पर्वतों के समान दबाव के कारण ऊपर उठ आई हैं। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि इसमें कई स्थानों पर बहुत सी लम्बी-लम्बी-खाइयाँ रह गई

* According to geological Surveys of Dr. Edmund Naumann continued over a period of five years (1881-85) and extented to nearly every part of the empire except Hokkaido.

थीं, जो बाद में आग्नेय चट्टानों से भर गई हैं। यद्यपि यहां की ऊंची से ऊंची चोटियाँ ज्वालामुखी पर्वतों के बुझे हुए मुख (क्रेटर) हैं, किन्तु फिर भी इसकी बनावट व निर्माण में ज्वालामुखी क्रियाओं का कोई विशेष हाथ नहीं रहा है।

धरातल पर पाई जाने वाली चिन्हदार चट्टानों (Fossiliferous rocks) में एक मुख्य 'रेडियोलेरियन स्लेट" (Radiolarion Slate) भी है। इस चट्टान के अध्ययन से यह ज्ञात होता है, कि यह उस कीचड़ की बनी हुई हैं, जो समुद्र के बहुत गहरे धरातल पर मिलती हैं। इससे यह प्रत्यक्ष है कि पैल्योजोइक युग (Paleaozoic Age) के समय कभी जापान की यह चेन गहरे समुद्र में डूब गई थी। पर्तदार व चिन्हदार चट्टानों में कदाचित् 'रेडियोलेरियन स्टोन' ही एक ऐसी चट्टान है, जो पृथ्वी पर सबसे प्राचीन है।

प्रो० जी० टी० ट्रिवारथा (Prof. G. T. Trewartha) का मत है, कि जापान द्वीप की बनावट कोई बहुत प्राचीन नहीं है। छोटे-छोटे मैदान यहां प्रारम्भ से ही नहीं थे, बल्कि इनके बनने का मूल कारण यह है कि ज्वार भाटों ने चट्टानों को काट काट कर ऐसे कई बेसिनों में जमा दिया है, जो आजकल मैदान के रूप में हैं। इसका प्रमाण यही है, कि चट्टानें मैदान में एक दम खड़ी हुई दृष्टिगोचर होतीं हैं। दूसरे, यदि हम 'एल्यूवियल फैन' का अध्ययन करें तो हमें यह ज्ञात होगा कि बड़े भद्दे कण (Coarse Texture) के बने हुये हैं। बहुत सी ऐसी सीढ़ियां भी मिलती हैं, जिनमें ऐसा प्रतीत होता है कि ये हाल ही में उठीं हैं, तथा इनकी चट्टानें इतनी मुलायम हैं कि बहुत जल्दी घिस रही हैं। इसका भी प्रमाण हमें गहरी तथा लटकी हुई घाटियों (Hanging Velleys) द्वारा मिलता है।

प्रो० ट्रिवारथा (Pro. Trewartha) ने चार भू-परिवर्तित (Geomorphological zones) क्षेत्र बतलाये हैं। उनमें दो भिन्न प्रकार की बनावट के दृष्टिकोण से समानान्तर क्षेत्र आन्तरिक तथा बाहरी प्रकट किये हैं। ये दोनों सम्पर्क में केवल उन स्थानों पर आये हैं जहां पृथ्वी या तो भूकम्प के या 'फाल्ट स्कार्प' (Fault Scarps) के कारण धस गई हैं।

पहला दक्षिणी-पश्चिमी आन्तरिक क्षेत्र—यह बहुत कटा-फटा है। यहाँ अनेक छोटे-छोटे पठार दृष्टिगोचर होते हैं, तथा ज्वालामुखी पर्वतों के चिन्ह भी पाये जाते हैं। पूर्व की ओर यह एक बड़े "फाल्टस्कार्प" "फोसा मैगना" (Fossa Magna) में जा मिलता है।

दूसरा दक्षिणी-पश्चिमी बाहरी क्षेत्र—यहां अधिकतर प्रशान्त महासागर के पर्वत पाये जाते हैं। इसमें लम्बी-लम्बी श्रेणियां व घाटियां बहुत पाई जातीं हैं।

यहाँ पर प्राचीन मुड़ी हुई चट्टानें भी कहीं कहीं दीखतीं हैं। इसी कारण धरातल बहुत ऊंचा नीचा है।

तीसरा, उत्तरी जापान का आन्तरिक क्षेत्र – यह पर्तदार चट्टानों का बना हुआ है, इसमें दो मुख्य ऊंची-ऊंची समानान्तर पर्वत श्रेणियाँ हैं। इनके मध्य में कई धसे हुये बेसिन (Fault Basins) हैं। इनमें पर्तदार चट्टानें टूट टूट जमा हो गई हैं।

चौथा, उत्तरी जापान का बाहरी क्षेत्र—यह क्षेत्र उत्तरी जापान के आन्तरिक क्षेत्र से उन टेक्टोनिक गड्ढों (Tectonic depressions) वाली रेखा से अलग हैं, जो इशिकारी के मैदान से क्वान्टों के मैदान तक फैले हुये हैं। इसकी बनावट बहुत कुछ दक्षिण-पश्चिमी बाहरी क्षेत्र से मिलती जुलती है।

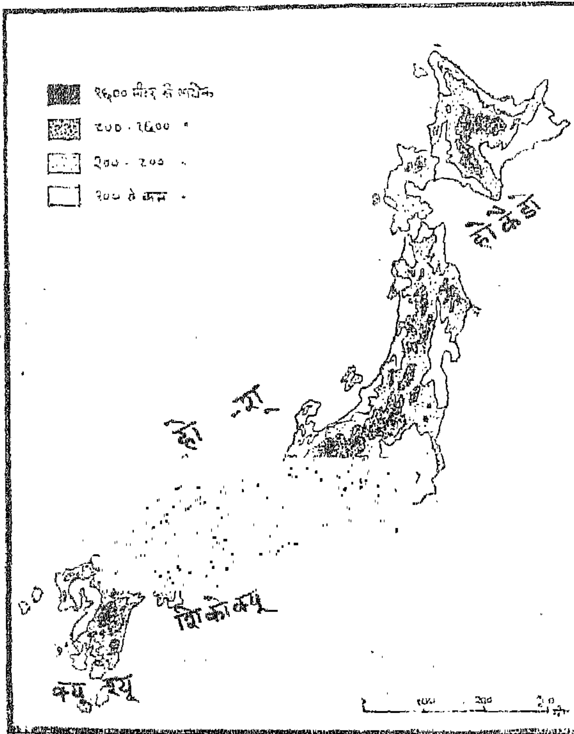
पांचवा, धसी हुई घाटी (Rift Valley) – इसे दूसरे शब्दों में फौसा-मेगना (Fossa magna) कहते हैं। यह समानान्तर पर्वत श्रेणियों के समकोण पर बनी है। इस घाटी में कई ज्वालामुखी पर्वत पाये जाते हैं, इनमें मुख्य फ्यूजीयामा है।

धरातल (Relief) :—

यदि हम जापान के धरातल का अध्ययन करें तो हमें दो मुख्य पर्वत श्रेणियाँ मुड़ी हुई दृष्टिगोचर होंगी। पहिली पश्चिमी तट के निकट तथा दूसरी पूर्वी। उत्तर में इन दोनों पर्वत श्रेणियों के मध्य की घाटी दृष्टिगोचर नहीं होती, परन्तु दक्षिण-पश्चिम में जिस स्थान पर आन्तरिक सागर है, वह प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होती है। बहुत से स्थानों पर ज्वालामुखी पर्वत जो प्रायः इन श्रेणियों के समकोण पर स्थित हैं पाये जाते हैं। होंडो (Hondo) के स्थान पर मध्य की घाटी पर्वत श्रेणियों की गांठ से इस प्रकार ढक गई है, कि तनिक भी प्रतीत नहीं होती। ये श्रेणियां 'जापानीज आल्पस का हिंदा- हिंडा श्रेणियों के नाम से प्रसिद्ध हैं, इनमें से कई चोटियां १०,००० फीट से भी अधिक ऊंची हैं। फ्यूजीयामा, एक प्रसिद्ध ज्वालामुखी पर्वत की शिखा है। इनमें पर्वतों की एक गांठ होकेडो में भी पाई जाती है, क्योंकि यहां पर जापान की वे दो मुड़ी हुई पर्वत श्रेणियां उन मुड़ी हुई पर्वत श्रेणियों से आकर मिलती हैं, जो दूर तक क्यूराइल द्वीप समूह (Kurile-festoon) बनातीं हैं। ठीक इसी प्रकार से क्यूशू में रियूक्यू पर्वत श्रेणी चली गई है, यहां बहुत से ज्वालामुखी पर्वत भी पाये जाते हैं।

जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है, होन्शू द्वीप में दो मुड़ी हुई पर्वत श्रेणियां, एक पश्चिमी तट पर तथा दूसरी पूर्वी तट की ओर स्थित है। पश्चिमी पर्वत श्रेणी, दो अन्य श्रेणियों, हिदा (Hida ranges or Japanese Alps) व अकाइशी (Akaishi) से मिलकर बनी है। इनकी ऊंचाई जैसा कि पतलाया

जा चुका है, १०००० फीट से भी अधिक है। मुख्य चोटियों में परीगा है, जो मैटरहॉर्न आफ जापान (Matterhorn of Japan) के नाम से प्रसिद्ध है। वास्तव में यह १०,००० फीट से अधिक ऊंची है। याकूशी केवल ६,८०० फीट है किन्तु इन श्रेणियों के दक्षिण में ओन्टेक १०,४५० फीट तथा नोरीकुरा १०,००० फीट ऊँची है। इस श्रेणी के पूर्व में जो शिखायें स्थित हैं, उनमें प्रसिद्ध काईगेन १०३०० फीट, आईनो १०२०० फीट तथा कोमेगा ६८०० फीट हैं। ये तीनों काई प्रांत (Kai Province) में सम्मिलित हैं।



जापान—भौतिक रूप

पूर्वी पर्वत श्रेणी के विषय में बतलाया जाता है कि वह ज्वालामुखी-प्रकृति की है, तथा मेरीआनी द्वीपों (Marianne) से प्रारम्भ होती है। फ्यूजीयामा के अतिरिक्त दक्षिण में कोई भी चोटी ५००० फीट से अधिक ऊँची नहीं है। फ्यूजीयामा स्वयं एक बहुत ही सुन्दर शिखा है; यह पिरेमिड के समान एक सी है। केंगा माइन (Kenga mine) चोटी जो ४००० फीट ऊंची है, तथा इसी के समीप स्थित है और इसको बहुत शोभायमान करती है। जापानी लोग इसको स्वर्ग मानते हैं। चित्रकारी में भी प्राय: वे लोग इसी को प्रदर्शित करते हैं। यतंगा शिखा जो ६५०० फीट ऊंची है, और जो मध्य की घाटी में (Great

middle ditch) स्थित है, एक ऐसी सड़क द्वारा फ्यूजीयामा से मिली हुई है, जो आगे को फिगोकू (Figoku) अथवा महान नरक (Big Hell) तक चली गई है यह सड़क "The Road from heaven to hell" के नाम से बहुत प्रसिद्ध है। फिगोक् एक बहुत खराब जगह है, यहां गंधक के झरने पाये जाते हैं, जिनमें से बुरी गन्द आया करती है।

हिदा श्रेणी के पश्चिम में हिदा नाम का पठार जो नैगोया के समीप तंग हो गया है स्थित है। यह बीवाझील के समीप भी थोड़ा सँकरा हो गया है। जापान का सबसे असभ्य भाग यही बतलाया जाता है।

बीवा झील एक बहुत ही सुन्दर झील है इसे "Eight Scenes of Special Beauty" भी कहते हैं। यह झील समुद्र की सतह से ३०० फीट ऊपर है। त्सुरगा की खाड़ी (Tsuruga Bay) से यह एक छोटे से जल डमरू मध्य से अलग है। लेकिन दक्षिण की ओर यह योदो तथा यमातो की घाटियों से मिली हुई है। बीवा झील के पूर्व में जो पठारी भाग है, वह दूसरा इजो कहलाता है। नैगोआत्सुरुगा लगभग एक ही रेखा पर जो ५५ मील लम्बी स्थित है। इसके पूर्व में ओवारी (Owari) खाड़ी व ऊंचा उथला भाग स्थित है। इस भाग पर दो प्रायद्वीप जो भिन्न श्रेणी के हैं, आकर मिलते हैं। पहिला पश्चिम से तथा दूसरा पूर्व से।

पश्चिमी प्रायद्वीप अथवा चुकोगू के बारे में लोगों का यह विचार है कि यह दो फोल्ड श्रेणियों से मिल कर बना है, उत्तरी फोल्ड सिनलिंग और कुनलुन से तथा दक्षिणी फोल्ड नानशान से सम्बन्धित है। ये श्रेणियां बहुत कुछ घिस गई हैं। इसके उत्तर में कुछ ज्वालामुखी पर्वतों के कारण चोटियाँ चोड़ी पाई जाती हैं। इनमें से प्रसिद्ध दाइसन दांगो तथा अजूमा हैं। छोटी छोटी तेज़ बहने वाली नदियों ने इन्हें काट कर पठारी रूप दे दिया है। परन्तु वास्तव में ये सब 'यंग फोल्ड' पर्वत हैं।

दक्षिणी प्रायद्वीप या शिकोक्यू एक ऐसा क्षेत्र है जो दानेदार सिश्ट (Schists) चट्टानों का बना हुआ है। ये चट्टानें काफी ऊंची हैं। ईशीज़ूशी (Ishizuchi) लगभग ६८०० फीट तथा त्सुरुगी (Tsurugi) ६५०० फीट ऊंची शिखायें हैं। योशीनों नदी जो केवल १५० मील लम्बी है, इन्हीं दो शिखाओं से जल प्राप्त करती है। उत्तर में सनूकी श्रेणी एक टेक्टोनिक क्षेत्र है, बेशी नाम की तांबे की खानें इशीज़ूशी के मटसुयामा क्षेत्र में स्थित हैं।

कुछ और दक्षिण में यही शिलशिला दक्षिण और पश्चिम की ओर होन्शू में भी चला गया है। इसकी ऊंचाई भी लगभग उतनी ही है, जितनी कि पहले वाले

की थी। कुनीमी सोबो तथा इशीवूसा काफी ऊंची शिखायें हैं, परन्तु उनकी बनावट व धरातल अद्वतीय है, यहां ज्वालामुखी विस्फोटन भी हुये हैं परन्तु केवल केगोशिमा खाड़ी के चारों ओर।

जापान की तट रेखा बड़ी लम्बी व कटी फटी है। इसकी लम्बाई १७०० मील है। यहां की ६ वर्गमील भूमि पर एक मील तट का औसत पड़ता है। प्रशान्त महासागर का तट पश्चिमी कटे फटे तट की अपेक्षा अधिक लम्बा है। जापान की तट रेखा में एक विशेष बात यह है कि इसमें जगह जगह पर खाड़ियाँ व आन्तरिक सागर पाये जाते हैं। सीतो-यूची (Seto-uchi) अथवा आन्तरिक सागर इनके लिए अच्छे मल्लाह बनने के हेतु उतने ही उपयोगी सिद्ध हुये हैं, जितना कि यूनानी लोगों को भूमध्य सागर में स्थित इजियन (Egean Sea) सागर है। एक आन्तरिक सागर जो सितोनो-यूचियूमी या सी-विदिन स्ट्रेट "Sea within Straits" के नाम से प्रसिद्ध है। यह केवल ३० फेदम गहरा है। जितने भी जल विभाजक पाये जाते हैं उनमें केवल हाया मोटो, (जो बंगो चैनेल पर हैं, तथा जिसकी चौड़ाई ८ मील है) को छोड़ कर कोई भी दो मील से अधिक नहीं है। उदाहरणार्थ शिमोनोसेकी तथा यूरा केवल ३००० गज और नरुटो केयल १५०० गज चौड़ा है। इनकी गहराई भी केवल बंगा चनेल को छोड़ कर (जो १३० फेदम है) साधारण ही है। किसी-किसी स्थान पर प्रशान्त महासागर का तट बहुत गहरा है। पूर्वी तट की ओर विशेष रूप से समुद्र धीरे धीरे गहरा होता जाता है, परन्तु पश्चिमी तट एकदम से काफी गहरा हो गया है।

जापान जैसे एक छोटे से पर्वतीय देश में बड़े बड़े मैदानों का पाया जाना पूर्णत: असम्भव है। यहाँ पर मैदान या तो तटीय भाग में और या नदियों की घाटियों में पाये जाते हैं। नदियों द्वारा बनाये हुये मैदान यहां बहुत तुच्छ हैं क्योंकि यहां की नदियां स्वयं ही बहुत छोटी व तेज बहने वाली हैं। मैदानी भाग वास्तव में यहां होन्शू द्वीप में ही मिलते हैं। और वह भी अधिकतर दक्षिणी-पूर्वी भाग में।

यहां का सबसे प्रसिद्ध मैदान क्वान्टो है, जो होन्शू के पूर्व में स्थित है। इसी मैदान में जापान के बड़े बड़े उद्योग-धन्धों की उन्नति हुई है, यहीं पर टोकियो व याकोहामा जैसे प्रसिद्ध नगर पाये जाते हैं। इनकी जन-संख्या लगभग १५० लाख है। दूसरा प्रसिद्ध मैदान नोबी है। यह होन्शू के दक्षिण में स्थित है और एक छोटे से आन्तरिक सागर से लगा हुआ है। यहाँ का सबसे बड़ा नगर व बन्दरगाह नेगोआ है, जो तट पर ही बसा हुआ है। यहाँ की जनसंख्या लगभग ५० लाख से भी अधिक है। होन्शू के दक्षिण में किन्की मैदान है, यह क्षेत्रफल में ऊपर वाले दो मैदानों से भी छोटा है। यहाँ की जनसंख्या लगभग ७५ लाख

से भी अधिक है। यहां के मुख्य नगरों में क्योटो, कोबी तथा ओसाका अति प्रसिद्ध हैं। ये तीनों नगर उद्योग-धन्धों में बहुत उन्नति कर गये हैं।

इन मैदानों के अतिरिक्त उत्तरी होन्शू में कुछ ऐसी नदियाँ पाई जातीं हैं, जिन्होंने उपजाऊ घाटियाँ बनाई हैं। शेष यहाँ की नदियाँ ऐसी हैं, जो आर्थिक दृष्टिकोण से, केवल जलशक्ति छोड़ कर अन्य किसी भी लाभ की नहीं है। वास्तव में यदि देखा जाय तो जापान के क्षेत्रफल का केवल पाँचवाँ भाग ही कृषि के योग्य है। अन्यथा शेष पथरीला है, जिसमें कि फोल्ड व ज्वालामुखी पर्वत पाये जाते हैं। धरातल पर एक-तिहाई भाग में आग्नेय चट्टानें मिलतीं हैं। यहाँ नदियों की डाली हुई दोमट मिट्टी केवल उन स्थानों पर मिलती है जहां नदियों ने डेल्टे बनाये हैं।

जापान की उल्लेखनीय नदियाँ वास्तव में होन्शू द्वीप के मध्य में ही पाई जातीं हैं। कुछ तो इनमें ऐसीं हैं, जो प्रशान्त महासागर में गिरतीं हैं तथा कुछ ऐसी हैं जो जापान सागर में गिरतीं हैं। प्रशान्त महासागर में गिरने वाली नदियों में कीसो, यहागी, तेरियू, ओहई, फ्यूजी, सागामी, टोनि, अबूकुमा तथा किताकामी हैं। दक्षिण की ओर प्रशान्त महासागर में गिरने वाली दो अन्य नदियों में कीनों तथा कुमानों मुख्य हैं। जापान सागर में जो नदियाँ गिरतीं हैं, उनमें उत्तर की ओर मोगामी, अकानों शिनानो मध्य में हाइम, कुरोबी, जोगाँजी, जिन्तस् तथा दक्षिण में तितोरी व कुजुरयू प्रसिद्ध हैं।

शिकोक्यू व क्यूशू द्वीप की नदियां इतनी छोटी हैं, कि केवल जल-शक्ति उत्पन्न करने के अतिरिक्त किसी भी कार्य में नहीं लाई जा सकतीं। इसी प्रकार से उत्तर में होकैडो द्वीप में अधिक ठण्ड पड़ने के कारण नदियाँ दो माह तक बर्फ से ढक जाया करतीं हैं। इसके अलावा होकैडो में जनसंख्या भी अन्य द्वीपों की अपेक्षा बहुत कम पाई जाती है। नदियों का यहां कोई विशेष आर्थिक महत्व नहीं है।

जापान की वे नदियां जिनकी लम्बाई ५० मील से अधिक है

नाम	निकलने का स्थान	गिरने का स्थान	लम्बाई (मील)	
शिनानो	पूर्वी शिनानो	निगैटा	१८०	,,
टोनि	उत्तरी कोडसुक	टोकियो की खाड़ी	१७०	,,
किताकामी	उत्तरी रिक्यूचू	रिकूज़न का पूर्वी तट	१४०	,,
इशीकारी	उत्तरी इशीकारी प्रांत	इशीकारी का पश्चिमी तट	१३०	,,
तैनरयू	सुआ झील	प्रशान्त महासागर	१२०	,,
कीसो	दक्षिणी पश्चिमी शिनानो	प्रशान्त महासागर	११५	,,

सकाटा	दक्षिणी उसेन	उसेन का पश्चिमी तट	११०	,,
ओकूमा	दक्षिणी-पश्चिमी इवाका प्रांत	इवाकी का पश्चिमी तट	११०	,,
नोशोरी	पश्चिम रिक्यू प्रान्त	रिक्यू का पश्चिमी तट	१००	,,
अकानो	इवाशिरो प्रांत में इनावाशिरो झील	ऐशिगो का पश्चिमी (निगेटा के समीप)	९०	,,
सुमीदा	पूर्वी मुसाशी	टोकियो की खाड़ी	९०	,,
टोशिया	दक्षिणी पूर्वी यूगो प्रांत	यूगो का पश्चिमी तट	७०	,,
फ्यूज़ी	कोशियू	प्रशान्त महासागर	७०	,,
योदो	पूर्वी ईगा	ओसाका की खाड़ी	७०	,,
बोन्यू	यामानाका (कोशियू)	प्रशान्त महासागर	६०	,,
ओई	उत्तरी कोशियू	प्रशान्त महासागर	५५	,,

प्राचीन समय से ही जापान एक ज्वालामुखी व भूकम्पों वाला देश कहा जाता है। यहाँ पर प्रतिवर्ष १५०० भूकम्पों से अधिक भूकम्प आया करते हैं। प्राय: हर तीसरे दिन एक बड़ा भूकम्प आ जाने का औसत है। वास्तव में जापान अपनी भौतिक बनावट के अनुसार पृथ्वी के एक कमज़ोर पर्त पर स्थित है, समुद्र भी विशेष रूप से दक्षिण व पूर्व में बहुत गहरा है। यही कारण है कि यहाँ पर इतने अधिक भूकम्प व ज्वालामुखी पर्वतों का उद्गार हुआ करता है। एक प्रकार से इतने अधिक भूकम्प व उद्गार होना जापान के लिये लाभदायक भी है, क्योंकि यदि वे इतनी मात्रा में न हों, तो यह सम्भव है कि कभी-कभी ये बड़ा भयंकर रूप धारण कर लें और सम्पूर्ण राष्ट्र के लिये हानिकारक सिद्ध हों। जापानी लोगों के जीवन में इनका कोई विशेष महत्व नहीं है। ये लोग इस प्रकार के वातावरण के आदी हो गये हैं। अपने घरों को मामूली भूकम्पों से बचाने के हेतु ये लोग इस प्रकार के मकान बनाते हैं, कि आसानी से उन्हें सहन कर सकें। यदि हम जापान के इतिहास पर एक दृष्टि डालें तो हमें यह प्रतीत होगा कि वहाँ पर कभी-कभी बड़े भयंकर भूकम्प आने के कारण लोगों को बड़ी हानि उठानी पड़ी है। नीचे दी हुई तालिकाओं से यह स्पष्ट है कि १ सितम्बर १९२३ का भूकम्प सबसे भयंकर भूकम्प था। विश्व-इतिहास में इसकी टक्कर का कोई भी भूकम्प नहीं आया है। इसका (Epicentre) सागामी खाड़ी के उत्तरी भाग में बतलाया जाता है। इसके प्रभाव से सम्पूर्ण याकोहामा जल कर राख हो गया। लगभग आधा टोकियो बिल्कुल नष्ट हो गया। विशेषज्ञों के कथनानुसार ५५८००० घर बरबाद हो गये तथा ९१,३४४ प्राणियों की मृत्यु हो गई।

जापान के कुछ भयंकर भूकम्प

सन्	स्थान	हानि	(मृत्यु)
१४९८	टोकेडो	२०,०००	मनुष्य
१७९२	हिजेन तथा हीगो	१५,०००	,,
१८४४	शिनानो	१२,०००	,,
१८५५	टोकियो	६,७००	,,
१८९१	मिन्द-ओवारी	७,३००	,,
१८९६	संरीकू	२७,०००	,,
१९२३ (१ सितम्बर)	उत्तरी सागामी की खाड़ी	९१,०००	,,

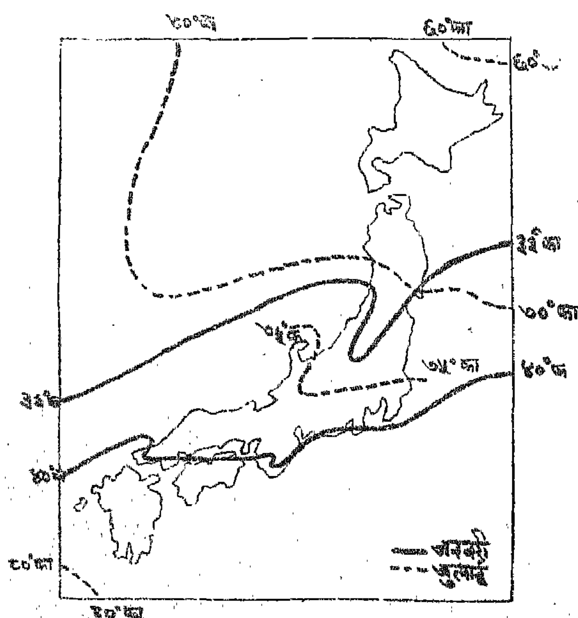
जापान के धरातल का अध्ययन करते समय हमने कई स्थानों पर यह देखा कि बहुत से ज्वालामुखी पर्वत शान्त अवस्था में पाये जाते हैं। इससे यह स्पष्ट है कि प्राचीन समय में यहाँ बहुत से ज्वालमुखी पर्वतों का उद्गार हो चुका है। परन्तु अब भी कुछ स्थानों पर गर्म जल के सोते व गेसर (Geyser) पाये जाते हैं, इनसे यह प्रतीत होता है कि यहाँ यह क्रिया अभी पूर्ण रूप से शान्त नहीं हुई है, तथा किसी भी समय ज्वालामुखी का उद्गार हो सकता है। ऐसे स्थानों पर, जहां पर गर्म पानी के सोते पाये जाते हैं, लोगों ने मनोरंजन के केन्द्र स्थापित कर लिये हैं।

जलवायु (Climate) :—

जापान वास्तव में समशीतोष्ण कटिबन्ध क्षेत्र में स्थित है, इसकी स्थिति एशिया महाद्वीप के पूर्व में है, इसीलिये इसकी जलवायु चीन की जलवायु से मिलती जुलती है। जापान में भी चीन की भांति शीत ऋतु में उत्तर-पश्चिमी तीव्र ठंडी हवायें तथा ग्रीष्म ऋतु में नम दक्षिण पूर्वी हवाओं का अनुभव होता है। यहाँ की जलवायु पर सबसे गहरा प्रभाव समुद्र का तथा उसमें चलने वाली जल-धाराओं का पड़ता है। चारों ओर समुद्र से घिरे रहने के कारण तथा ठंढी व गर्म जल-धाराओं के प्रभाव से वहाँ की जलवायु, एशिया महाद्वीप में इन्हीं अक्षांशों के मध्य में पाई जाने वाली जलवायु की अपेक्षा सम रहती है। यहाँ न तो बहुत अधिक और न बहुत कम तापक्रम रहता है, बल्कि वर्षा-वितरण भी साल भर लगभग समान रहता है। हाँ, ग्रीष्म ऋतु वर्षा की एक मुख्य ऋतु है, इस ऋतु में काफी क्षेत्र में वर्षा हो जाती है।

शीत ऋतु में जबकि मध्य एशिया के अधिक दबाव वाले क्षेत्र से तीव्र, ठंढी हवायें चलती हैं, तब जापान के पश्चिमी तट पर कुरोशिवो, गर्म जलधारा

का प्रभाव सबसे गहरा पाया जाता है। *'कुरोशिवो' जिसे 'ब्लैक स्ट्रीम' भी कहते हैं, अटलांटिक महासागर में पायी जाने वाली 'गल्फ स्ट्रीम' के समान ही है। इसके प्रभाव से, इस ऋतु में जापान का पश्चिमी तट काफी गर्म रहता है। जिब्राल्टर व मार्सलीज़ की अक्षांशों पर जापान का पश्चिमी तट इस ऋतु में कदापि नहीं जमता, परन्तु होकेडो जो ४२° व ४६° अक्षांशों में मध्य में है, स्काटलैंड (जिसकी स्थिति ५५° व ५६° के मध्य में है) से भी अधिक ठंडा रहता है, क्योंकि यहाँ पर किरोशिवो का प्रभाव कम पाया जाता है। इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि यद्यपि जापान के पश्चिमी तट इन ठंडी व तीव्र हवाओं के लिये सदा खुला हुआ है, परन्तु फिर भी पूर्वी तट की अपेक्षा यह तट इस ऋतु में प्रायः गर्म रहता है। उत्तर पूर्वी तट को इसी ऋतु में ओखोटस्क नाम की ठंडी जलधारा भी प्रभावित करती है, यही कारण है कि न केवल पूर्वी व पश्चिमी तट के तापक्रम में बड़ा अन्तर पाया जाता है, बल्कि जापान के उत्तरी व दक्षिणी पर्वतीय क्षेत्रों में भी काफी अन्तर मिलता है। उदाहरण के लिये जनवरी के माह में होकेडो के आन्तरिक क्षेत्रों में तापक्रम १०° फ० से भी कम पाया जाता है जबकि दक्षिण में केवल ४५° फ० के लगभग रहता है। परन्तु फिर भी दक्षिण में किसी-किसी स्थान पर जनवरी व फरवरी के माह में तीन या चार फीट मोटी बर्फ की तह जम जाती है। आकाश पर बादल छा जाते हैं तथा मनुष्य सूर्य के प्रकाश के हेतु सबसे ऊंचे व खुले हुये स्थानों को पसन्द करते हैं। आमतौर पर

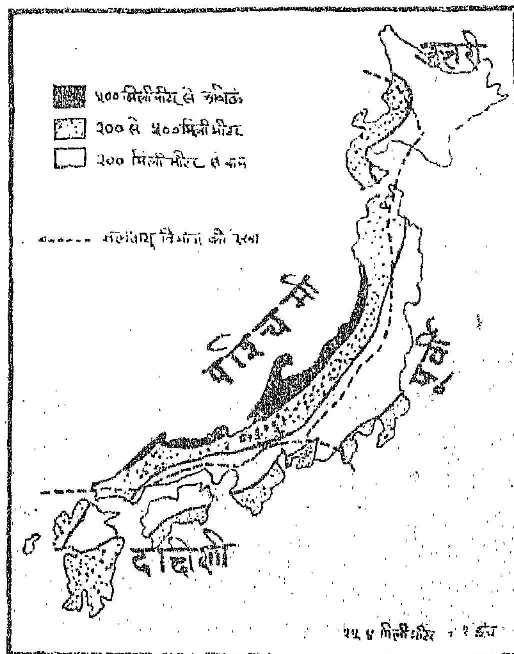


जापान की जलवायु—जनवरी व जुलाई समताप रेखायें

*Some writers are of opinion that the western board of Japan is washed by a branch of 'Kiroshiwo' warm current, while the Main stream flows essentially on the eastern coast of Japan.

जापान में शीत ऋतु सूखी रहा करती है। परन्तु भाग्यवश उतनी नहीं जितनी कि उत्तरी चीन में। जो ठंडी व तीव्र हवायें मध्य एशिया से पूर्व व दक्षिण की ओर चलती हैं, वे जापान सागर को जब पार करतीं हैं तो अपने साथ बहुत सी नमी ले लेती है। जिसके कारण जापान के पश्चिमी तट पर इस ऋतु में वर्षा नहीं होती क्योंकि उत्तर-पश्चिमी नम हवाओं को जापान की पर्वत श्रेणियाँ रोक लेती हैं। इस प्रकार से जापान का उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र, चीन के उत्तरी क्षेत्र की अपेक्षा काफी नम रहता है। किसी किसी स्थान पर तो ३ शीत ऋतु के माहों में ३५ इंच से भी अधिक वर्षा हो जाती है। पश्चिमी तट पर विशेषतौर पर ३८° अक्षांश के निकट जहाँ किरोशिवो गर्म जल धारा का प्रभाव कम पाया जाता है। काफी बर्फ वर्षा हो जाती है, उदहरणार्थ निगैटा पर बराबर ३२ दिन तक इस ऋतु में बर्फ वर्षा हुआ करती है।

ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ होते ही शीत ऋतु की दशायें परिवर्तित होने लगतीं हैं। मध्य एशिया का वह भाग जो शीत ऋतु में बहुत ठंडा हो जाता है, इस ऋतु में बहुत गर्म होने लगता है, जिसके कारण वहाँ कम दबाव वाले केन्द्र स्थापित हो जाते हैं। इन केन्द्रों की ओर मई में दक्षिणी-पूर्वी, मानसून हवायें चलना प्रारम्भ हो जातीं हैं। इनका प्रभाव सबसे अधिक जुलाई व अगस्त में अनुभव किया जाता है। सितम्बर व अक्टूबर में यह प्रभाव क्षीण पड़ जाता है। दक्षिणी जापानमें औसत तापक्रम ८०° फ० के लगभग पाया जाता है। श्री हेर० जे० हेन



शीत ऋतु की वर्षा तथा जलवायु सम्बन्धी विभाग

(Herr. J. Hann) के मतानुसार जैसे ही जैसे हम कम अक्षांशों की ओर बढ़ते हैं, वैसे ही वैसे ताप-क्रम दोनों तटों पर ऊंचा होता जाता है, परन्तु दक्षिण की अपेक्षा उत्तर में अधिक तथा पश्चिम की अपेक्षा पूर्व में अधिक होता जाता है। (केवल बसन्त ऋतु में पश्चिमी तट को छोड़ कर)। उनका कथन है कि ३६° अक्षांश तक पूर्वी तट पश्चिम की अपेक्षा अधिक गर्म रहता है। परन्तु ३८ अक्षांश के उत्तर में तापक्रम इसके विपरीत पाया जाता है। क्योंकि होन्डो (Hondo) की बनावट का प्रभाव जलवायु पर गहरा पड़ता है। जापान की जलवायु में एक विशेष बात यह है कि जितनी जोरों से मानसून उठते हैं, उतनी अधिक वर्षा नहीं होती। वास्तव में अधिक वर्षा केवल जून व सितम्बर में ही होती हैं। होन्शू में प्रारम्भिक वर्षा ऋतु मध्य जून से प्रारम्भ हो जाती है, तथा मध्य जुलाई तक रहती है। इस वर्षा को जापानी भाषा में 'बाई-यू' या 'प्लूम' वर्षा कहते हैं। क्योंकि इस ऋतु में प्लूम नामक फल पकने लगते हैं। वर्षा बराबर होती रहती है, आसमान बादलों से घिरा रहता है। इसी ऋतु में चावल की 'ट्रांसप्लाँटिन्ग' भी शुरू हो जाती है। दूसरी वर्षा सितम्बर के माह में उष्ण कटिबन्धीय चक्रवातों के कारण होती है। यह चक्रवात फिलीपाइन द्वीप समूह के निकट बनते हैं, तथा किरोशिवो जलधारा के मार्ग पर होकर जापान के दक्षिणी किनारे से टकरा कर वर्षा करते हैं। यह स्पष्ट है कि सबसे अधिक वर्षा जापान में दक्षिण व दक्षिणी-पूर्वी क्षेत्रों में, मुख्यत: शिकोक्यू व क्यूशू द्वीप के किनारों पर होती है। वर्षा यहां ९० व १०० इंच के लगभग हो जाती है, उत्तर में इसका प्रभाव कम हो जाता है, यहां तक कि होकेडो में केवल ३० इंच वर्षा हो पाती है। फिर भी हमको यह मानना पड़ता है कि पश्चिमी तट वर्ष भर सबसे अधिक नम रहता है। धरातल अधिक ऊंचा नीचा होने के कारण जापान में कुछ ऐसे भी आन्तरिक क्षेत्र पाये जाते हैं जहां बहुत कम वर्षा होती है।

यद्यपि जापान में धरातल के प्रभाव से कई स्थानों पर जलवायु में भिन्नता पाई जाती है, परन्तु फिर भी हम जलवायु के आधार पर इसको चार भागों में विभाजित कर सकते हैं।

[अ] उत्तरी जापान :—इस खण्ड में उत्तरी होकैडो तथा शाखालीन के भाग आते हैं। शीत ऋतु यहां बहुत ठंडी होती है, तापक्रम १० इंच फ० व १५ इंच फ० तक पाया जाता है। उत्तर व उत्तर पश्चिम से बहुत ठंडी व तीव्र हवायें चलती हैं जो प्राय: बर्फ वर्षा करती हैं। ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में तो तापक्रम और भी कम पाया जाता है। ग्रीष्म ऋतु, यहां बहुत गर्म होती, बल्कि गर्मियाँ प्राय: ठंडी ही होती हैं। तापक्रम

औसत ६६" फ० ६८° फ० जुलाई के माह में पाया जाता है। होन्शू के मध्य में ऊंचे ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में भी यही दशायें मिलती हैं।

(ब) पश्चिमी जापान — इसमें होन्शू का सम्पूर्ण पश्चिमी क्षेत्र, दक्षिणी होकैडो तथा क्यूशू का पश्चिमी किनारा सम्मिलित हैं। यहां शीत ऋतु में बहुत अधिक ठंड नहीं पड़ती क्योंकि किरोशिवो नामक गर्म जलधारा का प्रभाव पूरे तट पर रहता है। इस ऋतु में उत्तर-पश्चिमी ठण्डी व तीव्र हवायें चलती हैं। यह शुष्क होती हैं तथा जापान सागर से नमी लेकर पश्चिमी तट पर वर्षा करती हैं। इस ऋतु में प्राय: बदली रहने के अतिरिक्त चारों ओर कोहरा छाया रहता है। उत्तरी तट दक्षिण की अपेक्षा अधिक ठंडा रहता है। ग्रीष्म ऋतु में यहाँ वर्षा बहुत ही कम होती है। साथ ही तापक्रम भी मध्यम पाया जाता है।

(स) पूर्वी जापान—यह खंड होन्शू का पूर्वी भाग तथा होकैडो का थोड़ा सा दक्षिणी क्षेत्र सम्मिलित करता है। इस क्षेत्र में शीत ऋतु बहुत ठंडी रहती है, क्योंकि ओखोटस्क ठंडी जलधारा का प्रभाव बहुत अधिक पड़ता है। इस ऋतु में वर्षा भी बहुत कम होती है, क्योंकि उत्तर-पश्चिमी हवायें जो जापान सागर को पार करके पश्चिमी तट पर वर्षा करती हैं, होन्शू के मध्य में पर्वत श्रेणियों को पार करने में प्राय: असमर्थ रहती हैं। यही कारण है कि यहां वर्षा ३५° उत्तरी अक्षांश के उत्तर में बहुत कम होती है। ग्रीष्म ऋतु में दक्षिण की ओर कुछ अधिक तापक्रम पाये जाने के अतिरिक्त वर्षा भी काफी मात्रा में हो जाती है।

(द) दक्षिणी जापान — इसमें शिकोक्यू, क्यूशू के अतिरिक्त होन्शू द्वीप का आधा दक्षिणी भाग शामिल है। क्वान्टो व कोबी के मैदान भी इसी खण्ड में आते हैं। शीत ऋतु यहां अधिक ठंडी नहीं होती। जनवरी का औसत तापक्रम लगभग ४५° फ रहता है। इस ऋतु में वर्षा भी बहुत ही कम होती है। ग्रीष्म ऋतु में औसत तापक्रम ८०° फ० पाया जाता है, वर्षा अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक होती है। इस ऋतु में वर्षा की दो मुख्य झड़ियाँ पाई जाती हैं। पहली वह जो मध्य जून में प्रारम्भ हो जाती है तथा दूसरी वह जो सितम्बर में चक्रवात द्वारा होती है।

मिस ई० एम० सेन्डर्स (Miss E. M. Sanders)* ने जापान की जल-

---

* Miss E. M. Sanders—Ref. to Monthly Weather Reveiw, July 1920.

See map in Geographical Review Vol, XI, 1921 page 146.

Also-L. Dudley Stamp: Asia, A Regional and Economic Geography 1916 page 146.

वायु का विभाजन तीन भागों में इस प्रकार किया है।

(अ) दक्षिणी—जो जनवरी में ४०° फ से अधिक गर्म रहता है।

(ब) मध्यक—जिसका तापक्रम ३२° व ४०° फ के मध्य में जनवरी के माह में रहता है। इसके भी दो अन्य भाग किये गये हैं, पहला पूर्वी तथा दूसरा पश्चिमी।

(स) उत्तरी—जनवरी के माह में ३२° फ० से भी कम तापक्रम रहता है। इसमें उत्तरी होन्शू व दक्षिणी होकैडो आदि सम्मिलित हैं।

इस विभाजन में कुछ ऐसी त्रुटियां हैं, जिनके कारण यह अधिक लाभदायक सिद्ध नहीं हुआ है। सर्व प्रथम यह प्राकृतिक वनस्पति के विभाजन से बिलकुल पृथक है, दूसरे यह आन्तरिक सागर के कारण उत्तरी व दक्षिणी तटों को अलग रखता है।

मानव रूप (Human Aspect)

ऐतिहासिक आधार (Historical Background) :—

जापान का इतिहास वास्तव में इसी युग की प्रथम शताब्दी से प्रारम्भ होता है, परन्तु आधुनिक वंश का जन्म ६६० बी०सी० में सम्राट जिम्मू के समय से ही हुआ है। वैसे नृवंश विद्वानों का मत है कि ये लोग कई जातियों के तत्वों का मिश्रण है। कुछ जातियाँ उदाहरणार्थ इन्डोनेशियन (Indonesians) तथा मेलेयो-पोलिनेशियन (Malayo-Polynesian) दक्षिण की ओर से और मंगोलोयड (Mangoloid) दक्षिणी तट तथा उत्तर की ओर से सम्मिलित हो गई हैं। परन्तु निरीक्षण करने के उपरान्त हमें यह प्रतीत होता है, कि इन लोगों पर सबसे अधिक प्रभाव एशिया की जातियों का ही पड़ा है। विद्वानों का कहना है, कि यह जातियों का मिश्रण वास्तव में ईसा-युग के पूर्व ही हो चुका था। इस बात का प्रमाण हमें यहां के प्राचीन खंडहरों से भली भांति मिलता है। इनसे यह भी ज्ञात होता है कि यहाँ दो विशेष युग हुये हैं, पहला "ओशूी" तथा दूसरा "हेशी" कहलाता है।

प्रथम युग जो कि लगभग ११९२ A. D. तक रहा था, उसमें मिकेडोजा (Mikdosa) नामक राजा का शासन रहा था। मिकेडोजा जिम्मू वंश का ही एक राजा था। मिकेडोजा वास्तव में देव-वंश के सम्राटों के वंश का ही राजा माना जाता है। द्वितीय युग, जिसमें शोगन्स (Shoguns were actually military rulers) वंश का राज्य रहा, माध्यमिक युग के नाम से भी प्रसिद्ध है। यह लगभग १८६८ तक रहा। इस वंश की शक्ति की महत्ता को लोगों ने शीघ्र ही न समझ कर सोलहवीं

शताब्दी में समझा। लोगों का विचार था, कि उस समय यहाँ पर दो सम्राट राज्य करते थे। पहला शोगन जो कि इडो-टोकियो पर तथा दूसरा मिकेडो जो कि मिश्राकों पर राज्य करता था। परन्तु वास्तव में शोगन जो कि एक साधारण सेनापति था, मिकाडो पर अपना आतंक जमाये रखता था। उसने यहां तक किया कि धीरे धीरे राज्य की बागडोर अपने हाथ में ले ली और मिकाडो पर कड़ी दृष्टि रखी। फिर भी यह देखा गया कि शोगन सफल नहीं हो पाया, क्योंकि मिकाडो देव वंश का होने के अतिरिक्त जापान का असली राजा समझा जाता था।

कुछ समय पश्चात् १८७३ में एक और घटना हुई, जिसके अनुसार मिकाडो ने स्वयं ही एक विधान बनाने की घोषणा की। सन् १८७५ में एक सीनेट (Senate) तथा दाई-शिन-इन (Dai-Shin-in) जिसमें सुप्रीम काउन्सिल भी सम्मिलित थी मंत्रिगण College of ministers या Uio) सहित बनाई गई। १८७८ में इसको और भी शक्तिशाली बना दिया गया; साथ ही इसका नाम राष्ट्रीय सभा (National Assembly) रख दिया गया। इसकी प्रथम बैठक १८९० में हुई थी।

जापान ने इस समय से बहुत उन्नति की। यहां की जहाजी शक्ति अन्य शक्तियों की अपेक्षा बहुत बढ़ी। नाविक लोग प्राकृतिक तौर पर बड़े चतुर वीर व साहसी थे। इसका प्रमाण हमें १८९४-९५ के चीन-जापान युद्ध से भली भाँति मिलता है। इस युद्ध के उपरान्त १९०४-५ में रूस से युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध से जापान को हानि होने की अपेक्षा लाभ अधिक हुआ, क्योंकि वास्तव में उद्योग धन्धों की उन्नति जापान में इसी प्रकार से हुई है। द्वितीय महायुद्ध के पूर्व तक वह देश उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुंच चुका था। परन्तु जैसे ही युद्ध छिड़ा, वैसे ही इसकी आर्थिक दशा में परिवर्तन होने लगा। इसने एशिया के अन्य देशों पर आतंक जमा लिया और लगातार सात वर्ष तक ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध छेड़ता रहा। लेकिन जैसे ही अगस्त १९४५ में इसने हथियार डाल दिये, इसकी दशा बिगड़ती ही गई। युद्ध का सबसे गहरा प्रभाव नागरिक जीवन पर पड़ा। खाद्यपदार्थ, वस्त्र तथा अन्य वस्तुओं की कमी के कारण उन पर राशन लगा दिया गया। यह दशा १९४७ तक रही, इसके पश्चात् सन् १९४८ में कुछ सुधरी। दूसरे ही वर्ष जापान सरकार ने एक पंच वर्षीय योजना बनाई जिसके अन्तर्गत संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने इसको बहुत कुछ सहायता दी। धीरे धीरे पुनः उन्नति होने लगी, परन्तु दुर्भाग्य से १९५२ में व्यापार गिर जाने के कारण तथा कोरिया युद्ध के कारण फिर कुछ अवनति हुई, लेकिन

अन्य देशों से अच्छे सम्बन्ध होने के कारण यह तदन्तर उन्नति करता रहा। आज कल इसकी दशा पहले से कुछ अच्छी हो गई है। यद्यपि उस सीमा तक नहीं जिस सीमा पर युद्ध-पूर्व थी।

जन संख्या-वितरण (Population Distribution)

जापान संसार के बहुत घने बसे हुये देशों में से है। इसकी जनसंख्या १९४० में ७०० लाख, १९४८ में ८०२ लाख, १९५० में ८३० लाख, तथा १९५२ में ८५० लाख थी। इन आँकड़ों से प्रतीत होता है, कि यहां जनसंख्या वृद्धि कितने चिरकाल में हुई है। इस वृद्धि की दर का औसत लोगों का अनुमान है, १० लाख मनुष्य प्रतिवर्ष है, परन्तु कभी कभी इससे भी अधिक हो जाता है। विशेषज्ञों का कहना है, कि ४० वर्ष में जापान की जनसंख्या इसी दर से दुगुनी हो जायेगी।

आधुनिक जापान की जनसंख्या (पहली अक्टूबर सन् १९५४ के अनुसार) ८८,३००,००० है। इसका वितरण धरातल के अनुसार पाया जाता है। मैदानी भाग बहुत घने बसे हैं। पहली अक्टूबर १९५० में यहां का घनत्व ५८७·८ प्रतिवर्ग था। वास्तव में देखा जाय तो इसका जनसंख्या का मानचित्र ही धरातल का मानचित्र है।

अन्य देशों से तुलना करने पर हमें यह ज्ञात होता है, कि यहां का जनसंख्या घनत्व बहुत अधिक है। औसत घनत्व १९४० में ५०० मनुष्य प्रतिवर्ग मील, १९४८ में ५४३ मनुष्य प्रति वर्ग मील तथा १९५० में ५८८ मनुष्य प्रतिवर्ग मील था। किसी किसी स्थान पर मैदानी भाग में यह घनत्व १३०० मनुष्य प्रति-वर्ग मील तक हो गया है।

पहली अक्टूबर सन् १९५० की जनगणना के अन्तर्गत यहां ४०,८१२,००० पुरुष तथा ४२,३८८,००० स्त्रियाँ थीं। (दोनों का अनुपात ९६·३ मनुष्य तथा १०० स्त्रियां) दिसम्बर १९५३ में विदेशी लोग ६१९८८० थे, इसमें से ५५६,०८४ कोरियन, ८८४७ अमरीकन, १०४९ जर्मन तथा १८३८ ब्रिटिश निवासी थे।

जापान के क्षेत्रफल का केवल २० प्रतिशत भाग कृषि करने योग्य है। लेकिन कृषि वास्तव में १६ प्रतिशत भाग में ही होती है। सन् १९५२ में लगभग ५४ लाख हैक्टर भूमि में कृषि होती थी और ४३ प्रतिशत जनसंख्या इस कृषि पर अपना जीवन निर्वाह करती थी। संसार का कोई भी देश इतना घना बसा हुआ नहीं है। कृषि वाले क्षेत्रों में १२०० व १३०० मनुष्य प्रतिवर्ग मील में रहते हैं।

यद्यपि जापान के सम्मुख कृषि व उद्योग धन्धों की सुविधायें बहुत कम हैं,

परन्तु फिर भी हम यह नहीं कह सकते हैं कि वह आवश्यकता से अधिक घना (Over populated) बसा हुआ देश है। यदि राष्ट्रीय आय का ठीक ठीक विभाजन किया जाय तो कदाचित और भी जनसंख्या बड़ी सुविधा से रह सकती है। जापान के पास मछली पकड़ने वाले अनेक क्षेत्र हैं लेकिन फिर भी इस देश की जनसंख्या समस्या बड़ी जटिल है। वास्तव में यह समस्या राष्ट्रीय नीति के कारण ही जटिल हुई है, क्योंकि जो देश बहुत सा धन अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाने में व्यय करता है, वह देश राष्ट्र की अन्त समस्याओं के लिये बहुत कम धन खर्च करेगा। जापान भी एक ऐसा ही देश है, जिसने प्रारम्भ से ही अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाने की ओर ध्यान दिया।

यहाँ की जनसंख्या के दो प्रमुख रूप निम्नलिखित बतलाये जाते हैं (अ) जनसंख्या में शीघ्र वृद्धि (ब) जन समुदायों का ग्रामीण क्षेत्रों से नागरिक क्षेत्रों की ओर जाना। शहरों की जनसंख्या कई गुनी बढ़ गई है और अब भी दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। सन् १९३० में ४१ प्रतिशत मनुष्य ऐसे नगरों में रह रहे थे जिनकी आबादी १०००० मनुष्य से भी अधिक थी। सन् १९५० में कुछ नगरों की जनसंख्या इस प्रकार थी—टोकियो ६२·७ लाख, ओसाका १९·५ लाख, क्योटो ११·० लाख तथा नगोया १०·० लाख।

जापान में जन्मदर बहुत अधिक है। सन् १८९५ से लेकर १९३५ तक जन्मदर ३०-३६ तक प्रति हजार व्यक्ति था, यह संयुक्त राष्ट्र अमरीका से दूना था। सन् १९५३ में यही जन्मदर २१० प्रति हजार, १९५२ में २३·३ प्रति हजार तथा १९५१ में २५·५ प्रति हजार व्यक्ति थी। यदि हम जन्मदर का निरीक्षण करें तो हमें ज्ञात होगा कि यहाँ एक मिनट में चार बच्चे उत्पन्न होते हैं, यह दर कदाचित योरोपीयन देशों की दुगुनी है।

यहाँ की स्वास्थ्यप्रद जलवायु तथा अधिक सफाई रहने के कारण मृत्युदर बहुत कम है। नगरों की जनसंख्या बढ़ने के साथ साथ यहाँ की मृत्युदर वर्ष प्रति वर्ष घट रही है। सन् १९१८ में २६·८ प्रति हजार व्यक्ति, १९२० में २५·४ तथा १९३५ में १६·७ प्रति हजार व्यक्ति मृत्युदर था। सन् १९५३ में यही मृत्युदर ८·९ प्रति हजार तथा १९५१ में ९·९ प्रति हजार व्यक्ति थी।

यह आश्चर्य की बात है कि चीनी लोगों का तथा द्वितीय महायुद्ध का प्रभाव जापानी लोगों के जीवन पर नहीं पड़ा है। द्वितीय महायुद्ध के समय जापानी सरकार को अधिक जनसंख्या की आवश्यकता थी। इसलिये उसने उन लोगों को धन उधार दिया जो शादी करने के इच्छुक थे। साथ ही उन मनुष्यों को जो सबसे अधिक बच्चे उत्पन्न करते थे पुरस्कार दिये जाते थे। यही कारण था, कि जापान की जनसंख्या बहुत अधिक बढ़ गई। अब जापानी सरकार को यह

जनसंख्या वृद्धि भार सी प्रतीत होती है, इसलिये हाल ही में उसने एक कमेटी नियुक्त कर दी है। इसके ध्येय इस प्रकार हैं—(अ) वृद्धि को स्थिर रखा जाय (ब) उद्योग धन्धे व सेना के लिये मनुष्यों का दिया जाना (स) जापान की जनसंख्या का ठीक ठीक वितरण। इन बातों को ध्यान में रखते हुये सरकार ने बड़ी गृहस्थी वाले लोगों पर से कर हटा दिया तथा उत्पत्ति की अनेक सुविधायें दी हैं।

जापान की जनसंख्या रेखागणित नियमानुसार बढ़ी; परन्तु उत्पत्ति गणित नियमानुसार भी नहीं हो पाई। उदाहरणार्थ १६०५-३६ तक जनसंख्या तो बहुत अधिक बढ़ गई, लेकिन कृषि योग्य भूमि में वृद्धि बड़े धीरे धीरे हुई। यह वृद्धि केवल ४·६ प्रतिशत ही थी। नये क्षेत्रों में चावल उत्पन्न किया गया, लेकिन वह केवल इस वृद्धि के चौथाई भाग को ही सहारा दे सका। प्रति व्यक्ति Per-Capita) बोया हुआ क्षेत्र बहुत गिर गया। सन् १८७७ में प्रति व्यक्ति (Per-Capita) भूमि १३२ एकड़ तथा १६३६ में १२७ एकड़ थी।

वास्तव में जापान कच्चा माल विदेशों से मंगाता है तथा तैयार किया हुआ बाहर भेजता है। घरेलू मांग अधिक निर्धनता के कारण बहुत कम रहती है, इसके बाजार तो विदेशों में ही रहे हैं, विशेष तौर से एशिया में। युद्ध के समय इन देशों ने जापानी वस्तुओं पर कड़ी ड्यूटी (कर) लगादी, जिसका परिणाम यह हुआ कि जापानी तैयार किया माल बहुत कम बाहर भेजा जाने लगा। दूसरा कारण यह भी था, कि अन्य देशों ने भी उद्योगों में उन्नति कर ली थी।

अब जापान के पास इस समस्या को सुलझाने के केवल दो ही उपाय हैं। पहला ऋणात्मक (Negative) जिसमें उत्पत्ति अवरोध (Birth control) तथा विदेश में बसना (Emigration) तथा दूसरा, धनात्मक (Positive) जिसमें कृषि योग्य क्षेत्र में विकास, नई बस्तियों में बसना तथा देश का और भी अधिक उद्योग बढ़ाना है।

बहुत कम जापानी लोगों ने उत्पत्ति-अवरोध साधन को अपनाया। सन् १६३८ में, १६३७ के मुकाबले मृत्युदर बढ़ी तथा जन्मदर घट गई। सन् १६३८ में जन्मदर बहुत कम थी (केवल २६·७) लेकिन जनसंख्या में १६३७ की अपेक्षा केवल ३३ प्रतिशत की वृद्धि हुई। तात्पर्य यह है कि उत्पत्ति अवरोध के प्रभाव से जनसंख्या समस्या कुछ हल हुई।

द्वितीय महायुद्ध के पहिले जापान सरकार ने लोगों को अपने अधिकार में किये हुये देशों में या विदेशों में बसने की सुविधा दे दी। इसका ध्येय केवल जनसंख्या समस्या को हल करना ही था। सर्वप्रथम सन् १८८५ में श्रमिक लोग हवाई द्वीप में बसने के हेतु भेजे गये। केवल पाँच वर्ष बाद ही हवाई द्वीप पर जापानी लोगों की संख्या ३०००० व्यक्ति से अधिक हो गई। धीरे धीरे लोग

ब्राजील, मलाया, जावा, फिलीपाइन व बोर्नियो में भी स्थापित होते गये। ब्राजील में लगभग एक लाख जापानी कपास व कहवे की कृषि करते हैं।

जापानी आजकल कृषि बढ़ाने का भी प्रयत्न कर रहे हैं। बहुत वर्षों तक एक मनुष्य प्रति वर्ष लगभग ५॥ बुशल चावल खाता था, जबकि प्रति एकड़ उपज केवल ३८ बुशल थी। उस समय ७० लाख एकड़ भूमि पर जो चावल उत्पन्न होता था, वह केवल ५०० लाख व्यक्तियों को ही पूरा पड़ता था। बाद में उपज बढ़ाने के जितने भी प्रयत्न हुए, वह सब जनसंख्या वृद्धि की अपेक्षा कम ही रहे। परन्तु फिर भी कुछ तो समस्या हल हुई।

जापानी लोगों का दूसरे देशों में बसना बहुत धीरे धीरे हो पाया है। इसका मुख्य कारण यह था कि ये लोग अपने कुटुम्बी लोगों को छोड़ना कदापि पसन्द नहीं करते थे। लेकिन फिर भी कुछ देशों में जापानियों को अनेक प्रकार के लालच देकर बसाया गया।

उद्योग धन्धों में उन्नति जापान के प्रत्येक क्षेत्र में हुई। सूती, ऊनी, रेशमी कपड़े के उद्योग धन्धे स्थापित किये गये। लोगों को उनमें लगाया गया। स्त्रियां व बच्चे सभी इन कारखानों में कार्य करने लगे। मनुष्य अधिकतर भारी उद्यम में ही कार्य करना पसन्द करते हैं। जब स्त्रियाँ, मनुष्य, बच्चे सभी इनमें कार्य करने लगे तब उनका ध्यान सन्तान उत्पत्ति की ओर कम जाने लगा।

श्री ट्रिवाँथा (Trewatha) ने जापानी नगरों को दो श्रेणियों में विभाजित किया है। [१] प्राचीन नगर [२] छै बड़े आधुनिक नगर। प्राचीन नगर बहुत ही सुन्दर, छोटे छोटे क्वार्टरों के रूप के हैं, इनमें एक छोटी सी गृहस्थी बड़ी सुविधा के साथ रह सकती है। इनमें बड़ी बड़ी इमारतें बहुत कम पाई जाती हैं। केवल मन्दिर व अन्य धार्मिक स्थानों को छोड़ कर अन्य सभी निवास स्थान प्रायः छोटे ही होते हैं। बहुत से इस प्रकार के प्राचीन नगर डामों (Daimo) नगर कहलाते हैं। क्योंकि ये उस समय से स्थित हैं, जिस समय से यहाँ पर एक राजा अपने महल में रह कर राज्य करता था। उसके महल के चारों ओर अन्य छोटे छोटे घर पाये जाते हैं, इनमें सामूराई (Samurai) या सिपाही (Soldier) रहते थे। कुछ नगर धार्मिक केन्द्र होने के कारण उन्नति कर गये हैं, और कुछ इसलिये कि उनकी स्थिति मध्यमार्ग पर या किसी विशेष स्थान के समीप है। जापान में बहुत से नगर इसलिये प्रसिद्ध हो गये हैं, कि वे प्राचीन सम्राटों की राजधानी रहे हैं। यहाँ लगभग ६० राजधानियाँ थीं जो बीवा झील से लेकर आन्तरिक सागर तक फैली हुई थीं। क्योटो अभी तक प्रसिद्ध है। यहाँ पर ७९४ ऐ० डी० से लेकर १८६८ तक उच्च न्यायालय रहा। यह नगर आज भी वहाँ की राजधानी है।

यहां के बड़े नगरों में टोकियो (५,८७५,६६७), ओसाका (२,९८९,८७४), नैगोआ (१,०८२,८१६), कोबी (९१२१७९), क्यूटो (१०८०५९३) तथा याकोहामा (७०४२९०) हैं। ये छः नगर पश्चिमी देशों के नगरों की भांति बड़े तथा सुन्दर हैं। यहाँ उसी प्रकार के बड़े बड़े भवन तथा वाणिज्य केन्द्र मिलते हैं, जिस प्रकार के योरोप व अमरीका के देशों में पाये जाते हैं।

टोकियो :—संसार में तृतीय श्रेणी का नगर है। इसका नम्बर लन्दन व न्यूयार्क के बाद ही आता है। यहाँ भी ऊंचे-ऊंचे आसमान को चूमते हुये भवन मिलते हैं। सन् १९२३ के भूकम्प में इसको बड़ी हानि उठानी पड़ी। वैसे यहां के भवन आघात-प्रमाणित (Shockproof) बनाये जाते हैं। यह एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र भी है।

ओसाका :—यह नगर वास्तव में क्यूटो का बन्दरगाह है, परन्तु धीरे धीरे बढ़ता गया, और एक विशाल नगर में परिवर्तित हो गया। इसकी वास्तविक उन्नति सूती कपड़े के उद्योग धंधे के कारण हुई है। यहां पर इस उद्यम के लिए आदर्श भौगोलिक परिस्थितियां पाई जाती हैं। यह नगर जापान का 'मैनचेस्टर' कहलाता है, लेकिन अधिक जलमार्ग होने के नाते यह 'जापान का वेनिस' कहलाता है।

याकोहामा :—यह नगर टोकियो के निकट स्थित है। सन् १९२३ के भूकम्प में इसका भी सर्वनाश हो गया था, परन्तु धीरे धीरे इसने पुनः उन्नति कर ली। अब यह एक बड़ा व्यापारिक नगर है। यहाँ भी आधुनिक भवन तथा बाज़ार आदि पाये जाते हैं।

कोबी :—यह नगर ओसाका के समीप गहरे समुद्र तट पर स्थित है। व्यापारिक नगर होने के कारण यह एक प्रसिद्ध बन्दरगाह भी है।

नेगोया व योक्टो :—ये नगर आधुनिक होने के साथ ही साथ प्राचीन भी हैं, परन्तु भिन्नता होते हुये भी, बहुत उन्नति कर गये हैं। क्योटो अपने मन्दिरों व अन्य धार्मिक स्थानों के लिये बहुत प्रसिद्ध है।

मानव गृह निर्माण (Human Establishment) :—

यह पहले ही बतलाया जा चुका है, कि जापान की आधुनिक जनसंख्या ८८३ लाख है, लेकिन इसमें से ५० प्रतिशत मनुष्य कृषि पर अपना जीवन निर्वाह करते हैं। लगभग ४४ प्रतिशत से अधिक ९६०० ग्रामीण बस्तियों में रहते हैं। इनमें से प्रत्येक ग्रामीण बस्ती में ५००० नागरिक रहते हैं। लगभग २० प्रतिशत लोग ऐसे हैं, जो उन गांवों या नगरों में रहते हैं जिनमें कि ५००० हजार से लेकर १०००० मनुष्य रहते हैं। ये सभी ग्रामीण लोग हैं। जापान में हमको अधिकतर खलिहान के निकट गांव (Farm Villages) मिलते हैं। प्रायः ये धान के फार्म हुआ करते हैं। यहां के इन खलिहानों के निकट गांवों (Farm Villages) में

हमको दो विशेषतायें मिलती हैं :—

(अ) सर्व प्रथम यहां एक सामाजिक एकता पाई जाती है, जो कि पश्चिमी देशों में कदापि नहीं देखने को मिलती।

प्राय: यह देखा जाता है कि प्रत्येक गृह के साथ एक छोटा सा भूमि का टुकड़ा होता है। घर बहुत ही सुन्दर व स्वच्छ होते हैं। इनकी दीवारें वास्तव में शीत ऋतु से रक्षा करने के हेतु, विशेष तौर पर बनाई जातीं हैं। लेकिन यह इस तरह की बनी होती हैं, कि ग्रीष्म ऋतु में भी इनको हटाया जा सकता है। यह अधिकतर लकड़ी के ही बनाये जाते हैं। यहां गांव में छोटी छोटी सी दूकानें होतीं हैं, इनमें एक ही प्रकार की वस्तुयें मिलतीं हैं, जैसे तम्बाकू, सैनिकों के प्रयोग की वस्तुयें, कपड़ा आदि, यह सब चीजें बाहर 'शो विन्डो' (Show Window) में रखी रहतीं हैं। वास्तव में इन सब वस्तुओं के तैयार करने में रुपये खर्च होते हैं, परन्तु बजाय बिकने के यह चावलों के बदले दे दी जातीं हैं। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं, कि गांवों में अब भी वही चौदहवीं और सोलहवीं शताब्दी की रीति चावल से लेन देन की चली आ रही है। इस प्रकार से इन लोगों का जीवन गांवों में बड़े प्रेम व मिलाप का होता है, और थोड़े से चावल के धन पर अपना जीवन व्यतीत कर लेते हैं। यह लोग अपना कार्य करने के साथ साथ खेलते भी खूब हैं। इसी कारण इनका ग्रामीण जीवन सुन्दर तथा मनोरंजक होता है। यही कारण है कि जापान के कृषक बहुत ही सभ्य तथा योग्य होते हैं। ये लोग कारखानों में भी कम वेतन पर काम करते हैं क्योंकि देश भावना प्रत्येक के हृदय में जाग्रत रहती है। इनके यहां की तैयार की हुई वस्तुयें अन्य देशों की अपेक्षा इसी कारण कम दामों पर बाजार में बिकती हैं।

आर्थिक रूप (Economic Aspect)

प्राकृतिक वनस्पति (Natural Vegetation) :—

जिस देश में उपयुक्त वर्षा होती है उपजाऊ मिट्टी पाई जाती है तथा शीत व ग्रीष्म ऋतु के तापक्रम में बहुत अन्तर मिलता है, उस देश में यह स्वाभाविक है कि कई प्रकार की घनी वनस्पति पाई जायेगी। जापान भी एक ऐसा ही देश है, यहाँ पर वनीय क्षेत्र कृषि वाले क्षेत्र से चौगुने विस्तृत हैं। वास्तव में यहां का धरातल ही इस प्रकार का है, कि कृषि योग्य भूमि बड़ी कठिनाई से प्राप्त होती है। यही कारण है कि वनीय क्षेत्र इतने विस्तृत हैं। निचले तथा ऊंचे भागों की वनस्पति में काफी अन्तर पाया जाता है। निचले भागों में बहुत ही सुन्दर वृक्ष पाये जाते हैं, बड़े बड़े फलों के नीले रंगीन वृक्ष बहुत ही सुन्दर दृष्टिगोचर होते हैं।

जापान के वनों में कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण वृक्ष मिलते हैं। उदाहरणार्थ साइप्रेस, फर तथा 'अम्ब्रेलापाइन जिन्हें कोया माकी (Koya Maki) भी कहते हैं, प्राप्त होते हैं। यह वृक्ष १०० फीट से अधिक लम्बे होते हैं। इनकी पत्तियां भी बहुत घनी होतीं हैं। सिडार एक और भी लम्बी किस्म है, इसकी ऊंचाई २०० फीट से भी अधिक होती है। इसका तना १८ फीट से भी अधिक परिधि का होता है। कपूर के वृक्ष बड़े महत्वपूर्ण होते हैं, इसका तना ५० फीट परिधि का होता है। कपूर डलियों से छोटे छोटे टुकड़ों को काट कर सुखा लेने के पश्चात प्राप्त किया जाता है। बलूत के वृक्ष कई प्रकार के होते हैं, इनसे एक प्रकार का दाना प्राप्त होता है जो अधिकतर किसान लोगों के खाने के काम आता है। आर्थिक दृष्टिकोण से शहतूत के वृक्ष बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि उन पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। इनके अतिरिक्त इनकी छाल व लकड़ी, कागज़, डोरी तथा वस्त्र आदि तैयार करने की वस्तुयें बनाई जाती हैं। एक और बड़ा महत्वपूर्ण वृक्ष बाँस होता है, जो बहुत ही जल्द ५० या ६० फीट ऊंचा बढ़ जाता है, इसका उपयोग घरों की छतों, कागज, चटाई, छड़ी, पाइप तथा नावों के पतवार आदि बनाने में सबसे अधिक होता है।

जापान के पास इतना अधिक वन क्षेत्र व महत्वपूर्ण वृक्ष होते हुये भी किसी किसी वर्ष उसे बहुत सा काठ व वन सम्बन्धी आर्थिक वस्तुयें विदेशों से मंगानी पड़तीं हैं।

कृषि (Agriculture) :—

वास्तव में जापान एक कृषकों का राष्ट्र है। अति प्राचीन काल से यह एक कृषि प्रधान देश रहा है, और चावल उत्पन्न करना तो यहां के लोगों का प्रमुख उद्योग रहा है। आश्चर्य तो इस बात का है, कि इतना पश्चिमी देशों का प्रभाव, इतनी नागरिकता तथा इतनी कलाकौशल में उन्नति होते हुये भी यह देश अब भी कृषकों का ही राष्ट्र है, यहां तक कि सन १९४० में ४३ प्रतिशत जनसंख्या कृषि उद्योग में लगी हुई थी। पहली फरवरी १९५३ में फार्म संख्या ३७,९१५,००० थी इसमें से १५,८६०,००० अपने निजी फार्म पर लगी हुई थी। यदि हम जनसंख्या वृद्धि की ओर ध्यान दें, तो हम देखेंगे कि पिछले पचास वर्षों में वह बढ़ कर दुगनी से अधिक हो गई थी। परिणाम यह हुआ कि जापान खाद्य पदार्थ निर्यात करने की अपेक्षा आयात करने लगा। जापान की जनसंख्या बराबर १० या १५ लाख व्यक्ति प्रति वर्ष के हिसाब से बढ़ रही है, जिसके फलस्वरूप आजकल भी जापान विदेशों से खाद्यपदार्थ तथा कच्चा माल मंगाया करता है।

सन् १९३७ में कृषि-क्षेत्र १५०,००० एकड़ था, परन्तु १९४७ में द्वितीय महायुद्ध के प्रभाव से यह क्षेत्र केवल १२,२७६,४०० एकड़ रह गया। यह क्षेत्र

जापान के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का केवल १३ प्रतिशत ही है, जबकि युद्ध पूर्व १९३७ में यह १५.८ प्रतिशत था। अब यदि हम सन १९५२ के आंकड़ों की ओर ध्यान दें तो पता चलता है, कि कृषि क्षेत्र का क्षेत्रफल ५,४०१,१९८ हेक्टर्स अर्थात् कुल भूमि क्षेत्र का १६% था। इसमें से ३,००४,८९९ हेक्टर्स धान में, २,०९९२,७२६ हेक्टर्स अन्य फसलों में, ३०३,५७१ हेक्टर्स वृक्षों से घिरा हुआ था। वास्तव में यहां की कृषि आर्थिक पराकाष्ठा (Economic maximum) पर पहुंच गई है। क्योंकि यदि इसका क्षेत्रफल बढ़ाने की चेष्टा की गई तो निसन्देह वहां के सिन्चाई, खाद देने व बीज बोने के साधनों की उन्नति करनी होगी। वैसे जापान में खरिहान के मालिकों (Farm-House Holds) की संख्या सन १९४७ में ४,१७४,८९३ थी। कृषि भूमि प्रत्येक गृहस्थ के अधिकार केवल २.९ एकड़ आती थी, उसी समय इसके मुकाबले संयुक्त राष्ट्र अमरीका में प्रत्येक के हिस्से में १५५ एकड़ भूमि आती थी। [इसी सन में १,९३१,३५० खरिहान मालिकों की प्रत्येक गृहस्थी के पास औसत कृषि भूमि कृषि करने के हेतु १.२ एकड़ थी। अन्य १,६४७,६८० के पास जो खेत थे, उनका प्रत्येक का क्षेत्रफल १.२ एकड़ तथा २.४ एकड़ से अधिक नहीं था।] यह औसत क्षेत्र होकेडो में चौगुना हो गया है, परन्तु दक्षिण-पश्चिम में यह केवल दो एकड़ ही रह गया है। केवल यहाँ के फार्म हो छोटे नहीं हैं, वरन् यहां कुप्रथा के कारण यह दूर दूर पर वितरित दशा में पाये जाते हैं। इनमें कृषि करना आर्थिक दृष्टिकोण से कोई अधिक लाभदायक नहीं है। क्योंकि ७० प्रतिशत फार्म तो ऐसे हैं जो कि औसत से भी तुच्छ हैं। और ४० प्रतिशत ऐसे हैं जो कि १.२५ एकड़ से भी कम हैं यहां की सरकार ने इन खेतों को एकत्रित करने के भरसक प्रयत्न किये हैं। जिन स्थानों पर इसे सफलता प्राप्त हुई है, वहां उपज भी काफी बढ़ गई है. एक दृष्टिकोण से यह कृषकों के लिये हानिकारक भी हैं क्योंकि जिस समय बाढ़ आ जाय या फसल खराब हो जाय, तो उस समय निर्धन कृषक पर एक आध खेत कृषि करने के लिये बच ही रहता है। परन्तु फिर भी उपज के दृष्टिकोण से यह प्रथा बुरी ही कही जायगी।

चीन की भांति जापान में भी मनुष्य स्वयं अपने पुराने व भद्दे औजारों से कृषि करता है। उसके पास केवल एक बैल या घोड़ा सहारा देने को होता है। उत्तरी होन्शू तथा होकैडो ही ऐसे क्षेत्र हैं जहां अमेरिकन ढंग पर कृषि की जाती है। यहां कृषि करने के ढंग लगभग वही हैं, जो कि चीन में पाये जाते हैं। लेकिन भिन्नता केवल इस बात में है कि चीन में तो मृतक शरीर की खाद, गोबर, मछली व राख इत्यादि की खाद दी जाती है परन्तु जापान में चिली के शोरे (Chile Nitrate) तथा रसायन खाद (Chemical manures) का अधिक प्रयोग होता है। यह देश चिली से प्रति वर्ष बहुत सा शोरा मंगाता

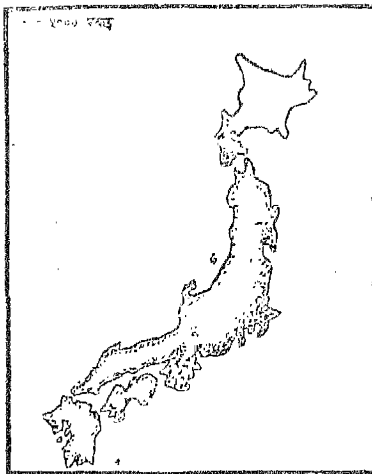
है, रसायन खाद के लिये बहुत सी फॉसफेट की चट्टानें (Phosphate manures) क्रिस्चीयन तथा ओशिनिया द्वीपों से मंगाई जाती हैं।

जापान एक पर्वतीय देश है। कृषियोग्य भूमि की प्राय: कमी रहा करती है, इसलिए यहां गाँव अधिकतर पर्वतीय ढालों पर या चट्टानों पर बसे होते हैं। ढालों पर खेत एकसी कतारों में दूर दूर बने होते हैं। सर एडविन आरनोल्ड (Sir Edwin Arnold) ने जापान के ग्रामीण क्षेत्रों की सुन्दरता (Countryside) का वर्णन बड़ा ही सुन्दर किया है। जापानी भूमि विशेषतौर पर दक्षिण पूर्वी प्रान्तीय क्षेत्रों में या तो स्वयं ही नदियों द्वारा मिट्टी पड़ने के कारण या ढालों पर एकसी कतारें बनाई जाने के कारण समान दृष्टिगोचर होती हैं, इन स्थानों पर चावल या अन्य अधिक जल चाहने वाले पौधे बोये जाते हैं। धान के खेत लबालब जल से भरे रहते हैं, इनसे जापानी स्त्रियाँ व मनुष्य कार्य करते दृष्टिगोचर होते हैं, खेतों के चारों ओर बाँस व काँटों की सीमा खिंची होती है। शीत ऋतु में धान के खेत वर्षा बहुत कम होने के कारण दलदल में भी परिवर्तित हो जाते हैं। पर्वतों के नीचे तराई के भाग में मुख्य मार्ग के दोनों ओर दूर दूर तक सड़कें कई गाँवों को मिलाती हैं। गाँव के मकान बड़े साधारण होते हैं। इनकी छतें भूसे की बनी होती हैं। दो या तीन कमरे होने के अतिरिक्त सामने छोटी सी फुलवाड़ी होती है। इन घरों की बनावट प्रत्येक क्षेत्र में भिन्न प्रकार की हुआ करती है। इनके गांव वास्तव में बड़े ही सुन्दर व आकर्षित होते हैं।

चावल :—

जापानियों के लिये चावल एक बहुत ही मुख्य खाद्यपदार्थ है। यह बहुत प्राचीन काल से यहां बोया जाता है। इसकी कृषि दक्षिण से लेकर उत्तर तक लगभग सभी भागों में होती है। कृषि वाले क्षेत्र के आधे भाग से अधिक (५६%) चावल की खेती से घिरा हुआ है। लगभग ५४ प्रतिशत कृषि भूमि में सिंचाई होती है, यह सम्पूर्ण क्षेत्र चावल की खेती के लिये प्रयोग किया जाता है। जिस प्रकार से अन्य पूर्वी देशों में "ट्रांस पलान्टिग" (पौधे को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान में जमाने की क्रिया) साधन अपनाया जाता है उसी प्रकार से यहां भी यह प्रचलित हो गया है। चावल के छोटे छोटे व पानी से लबालब भरे हुये खेतों में बोये जाने के पश्चात थोड़े दिनों बाद पौधे के रूप में उग आता है तब इसे अन्य स्थानों पर आधुनिक ढंग से कतारों में लगा दिया जाता है। इस कार्य में परिश्रम धैर्य तथा कुशलता की आवश्यकता रहती है। जापानी लोग धान की कृषि करने में बड़े निपुण होते हैं। ये मिट्टी में खाद डाल कर इसे उपजाऊ बना लेते हैं, साथ ही बीज भी उत्तम से उत्तम बोते हैं। यही कारण है कि अन्य

उपजों की अपेक्षा चावल की पैदावार बहुत अधिक है। यहां प्रति एकड़ चावल की उपज ४२ बुशल है जब कि भारत में केवल १० बुशल ही है। फारमूसा, शिकोक्यू तथा क्यूशू के दक्षिणी तट पर धान की एक वर्ष में दो फसलें हो जाती हैं। प्राय: दो फसलें साथ ही साथ बोई जाती हैं। एक दूसरी की अपेक्षा कई सप्ताह पहले तैयार हो जाती है। चावल जापान में अन्य उपजों के साथ भी बोया जाता है। चावल के खेतों के चारों ओर शहतूत के वृक्ष भी लगा दिये जाते हैं। कुछ सब्जी जैसे सोया बीन, गाजर व मूली इत्यादि धान के साथ ही बो दी जाती हैं ये अपने अपने समय तक पक कर तैयार हो जाने के पश्चात


जापान में चावल का वितरण

काट ली जाती है। जापान में धान की उत्पत्ति, (सन १९५१-५२ में चावल की उत्पत्ति २४७७४·३ मिलियन पौंड तथा १९५३-५४ में २२५९०·२ मिलियन पौंड थी।) जनसंख्या के हिसाब से बहुत कम है, क्योंकि धान की पैदावार प्रति वर्ष ३० लाख बुशल से भी कम है। जितना भी धान यहां पर उत्पन्न होता है, घर में ही उसका उपयोग हो जाता है, साधारणतया १५% या २०% और अधिक धान इसे आयात करना पड़ता है। इसको वास्तव में ३० या ३५ लाख टन चावल प्रति वर्ष विदेशों से मंगाना ही पड़ता है। साफ किये हुये धान का आयात १९४७ में ७ मिलियन पौंड तथा १९५३ में २,३३०, मिलियन पौंड था। द्वितीय महायुद्ध पूर्व जापान अपनी कमी को फारमूसा व कोरिया से चावल मंगा कर पूरा कर लेता था, परन्तु इन क्षेत्रों के निकल जाने से इसको बड़ी हानि हुई है। अब जापान की दृष्टि चावल के लिये दक्षिणी पूर्वी एशिया पर है। युद्ध के पहिले दक्षिणी पूर्वी एशिया (इन्डोचीन, थाईलैण्ड व बर्मा) लगभग १२० लाख टन चावल उत्पन्न करते थे, इसमें से ६० लाख टन प्रति वर्ष भारतवर्ष, मलाया, लंका व अन्य दक्षिण-पूर्वी देशों को भेज दिया जाता था। जापान इन देशों से उस समय केवल फसल खराब हो जाने के उपरांत ही मंगाता था। युद्ध पश्चात जापान दक्षिण पूर्वी एशिया से केवल ५,००,००० टन चावल प्रतिवर्ष मंगा पाता था, साथ ही उसे गेहूं व चावल संयुक्त राज्य अमरीका, कनाडा, आस्ट्रेलिया तथा

अन्य क्षेत्रों से भी मजबूरन मंगाना पड़ता था। अब यदि जापान को दक्षिण-पूर्वी एशिया के केवल १५ लाख टन चावल प्रति वर्ष मिल जाया करे, तो सम्भवतः इसकी यह समस्या हल हो जायेगी।

चावल के बाद अन्य फसलों में जो, रेपसीड़, बीन तथा मटर आदि मुख्य हैं। जौ का उत्पादन सन् १९५३ में २०००००० टन था। उन ऊपरी क्षेत्रों में जहाँ सिंचाई नहीं होती, गेहूं, राई, जौ तथा शकरकन्दी व अन्य तरकारियाँ बोई जातीं थीं। सन् १९५३ में गेहूं कुल १,५००,००० टन ही उत्पन्न हो पाया। जई, फ्लेक्स तथा प्याज़ का बोया जाना बहुत बाद में आरम्भ हुआ है। यहां सेव, नारंगी, नींबू व अन्य छोटे छोटे फल भी उगाये जाते हैं। तम्बाकू की कृषि सरकार के हाथों में है। कपास तथा नील की उपज जापान से जा चुकी है। धान के तथा अन्य फसलों के खेतों को पहचानने के लिये सरकारी तौर पर उपजाऊ भूमि को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

(१ चावल के खेत

(२) अन्य खाद्य पदार्थों के खेत

इनके अतिरिक्त कम उपजाऊ क्षेत्र जो कुछ ऊंचाई पर स्थिति है, और जिन्हें चरागाह अथवा 'मैदान' कहते हैं केवल खाद तैयार करने के लिये घास फूस और जीव जन्तुओं के लिये चारा उगाने के काम आते हैं। वैसे प्राकृतिक तौर पर यहाँ झाड़ियां आदि उगा करती हैं। जैसे ही जैसे जापान के ऊपर पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव पड़ा, वैसे ही वैसे यहाँ रोटियों का खर्च बढ़ने लगा। गेहूं की उत्पत्ति सन् १९३२ से ६०% हो गई। जापान इस अनाज में आत्म पूर्ण हो गया। पिछले १० वर्षों में गेहूं की अपेक्षा, जौ व राई की उपज तथा क्षेत्र बहुत कम हो गया, परन्तु सोयाबीन जो कि जापानी भोजन के साथ अनिवार्य है, अधिक उत्पन्न होने लगा। 'स्वीट पोटेटो' अधिकतर दक्षिण की ओर तथा 'व्हाइट पोटेटो' उत्तर की ओर बोया जाता है इसकी औसत उत्पत्ति ३४३००० टन है। साधारणतः आलू ६३०००००० एकड़ क्षेत्र में उत्पन्न होता है। यहां पर उत्पन्न होने वाले फलों में पीच, पीयर, प्लूम, अगर, नाशपाती, सेव तथा मैंडारिन हैं।

चाय की पैदावार जापान में आधी बोई हुई भूमि पर होती है। यह अधिकतर पर्वतों के ढालों पर पंक्तियों वाले खेतों में बोई जाती है। इसका क्षेत्र लगभग १००००० हजार एकड़ से भी अधिक है। यहां जितनी भी चाय होती है वह हरी ही होती है, दूसरे शब्दों में इसे सैंचा चाय कहते हैं। चाय के बगीचे अधिकतर दक्षिणी होन्शू, शिकोक्यू व क्यूशू में पाये जाते हैं। इन बगीचों में १०

लाख मनुष्यों से अधिक काम करते हैं। यह देश चाय में आत्म पूर्ण है, इसे विदेशों से मंगाने की कदापि आवश्यकता नहीं पड़ती।

रेशम :—

ऐसा कहा जाता है कि बिना रेशम के जापान उसी प्रकार होगा जिस प्रकार कि इगलैंड बिना लंकाशायर के तथा फ्रांस बगैर गुलाबी शराब के। वास्तव में जापान संसार का सबसे बड़ा रेशम उत्पन्न करने वाला देश है। यहाँ पर लगभग ४०० विभिन्न शहतूत के वृक्ष, जिन पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं, मिलते हैं। रेशम अधिकतर मध्य जापान के क्षेत्र से प्राप्त होता है। मध्य होन्शू में याकोहामा का पृष्ठ प्रदेश, शूबा राज्य, उत्तरी होकेडो तथा दक्षिण में शिकोक्यू व क्यूशू के क्षेत्रों में शहतूत के वृक्षों पर बहुत से रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। इन स्थानों की जलवायु शहतूत के वृक्षों के लिये बहुत लाभदायक है। ये अधिकतर पर्वतीय ढालों पर या खेतों के चारों ओर लगाये जाते हैं। नैगोया यहाँ का एक बहुत ही प्रसिद्ध रेशम उत्पन्न करने वाला क्षेत्र है। यहां ककून की तीन फसलें होती हैं, एक बसन्त में, दूसरी, ग्रीष्म तथा तीसरी पतझड़ की ऋतु में। बसन्त ऋतु प्रमुख है, क्योंकि इसमें ५७ प्रतिशत रेशम उत्पन्न होता है, और वह भी सबसे उत्तम प्रकार का। रेशम का उत्पादन यहां १९५१ में ४८·८९ हज़ार टन था। वास्तव में जापानियों के लिये 'केश क्रोप' (नकद रुपया देने वाली उपज) है, इसी से इन लोगों की प्रति वर्ष आय बढ़ती है। यहां इसकी उत्पत्ति के लिये अनेक सुविधायें पाई जाती हैं। सर्व प्रथम कुशल श्रम-जापानी स्त्रियां मनुष्य व बच्चे सभी इस कार्य में प्रारम्भ से निपुण रहे हैं। ये लोग रेशम उत्पन्न करने में विशेष दिलचस्पी रखते हैं। रेशम के कीड़ों को ये लोग अपनी भाषा में 'ओ को सामा' (O ko sama) कहते है जिसका अर्थ है '-मान्यनीय छोटा सा युवक" (The honourable little gentleman) दूसरे यहां के पर्वतीय ढाल कुछ ऐसे हैं जिन पर धान व अन्य फसलें उत्पन्न नहीं की जा सकतीं, तीसरा यहां की जलवायु जिसका वर्णन किया जा चुका है। रेशम के कीड़े नर व मादा बड़ी बड़ी तश्तरियों पर शहतूत के पत्तों के साथ डाल दिये जाते हैं। थोड़े दिनों में उन ट्रे में बहुत से कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं, पत्तियां बराबर दी जाती हैं, उन स्थानों पर जहाँ यह ट्रे रखी जाती हैं, किसी भी प्रकार का शोरगुल नहीं होता क्योंकि इसमें रेशम की क़िस्म ख़राब हो जाने का डर रहता है।

अन्य उपजों में तम्बाकू, शक्कर तथा कपूर हैं। ये तीनों वस्तुयें दक्षिण में जापान की अधिकता में उत्पन्न की जाती हैं। मुख्य "केश क्रोप" फ्लेक्स, हेम्प, पिपरमेंट तथा फल इत्यादि हैं। यहाँ कई प्रकार की सब्जियां भी उगाई जाती हैं। जैसे आलू, गाजर, मूली, सोया, मटर, लाल मटर तथा तारो इत्यादि। कई कई

तरकारियाँ एक साथ बो दी जाती हैं। फलों में दक्षिण की ओर मेंडारिन नारंगी परसीमन तथा उत्तर में होन्शू व होकेडो की पहाड़ियों पर सेब उत्पन्न होता है। अन्य फलों में चेरी प्लूम, पीच पीयर, अंगूर तथा नीबू होते हैं। फलों के रंग विरंगे वृक्ष देखने में बड़े सुहावने प्रतीत होते हैं।

जापान की जनसंख्या इतनी अधिक है कि यहां इस बात की आवश्यकता हो जाती है कि फसलों की उपज बहुत ही अधिक हो। परन्तु दुर्भाग्य से कुछ क्षेत्रों में मिट्टी उपजाऊ नहीं है, कहीं पर रेत व बंजर तथा कहीं धुली हुई, लावा मिट्टी पाई जाती है। भलीभांति सफल फ़स्ल का उगना केवल उसी समय सम्भव हो सकता है, जब कि बहुत ही उत्तम खाद का प्रयोग किया जाय। धान के लिये बहुत ही उत्तम खाद की आवश्यकता होती है, जापानी लोग खली, मछली, रेशम के ककून, बीन तथा अन्य खनिज पदार्थों के द्वारा बहुत ही उत्तम खाद तैयार करते हैं। ये लोग 'ग्रीन खाद', जो बहुत उपयोगी होती है, तैयार में बड़े निपुण होते हैं।

इस बात का पहले ही वर्णन किया जा चुका है, कि जापान में आधुनिक औज़ारों का प्रयोग कृषि में बहुत ही कम किया जाता है। हाँ खाद व बीज की बीमारियों को दूर करने के लिये इन्होंने बहुत ही उत्तम एवं आधुनिक साधनों को अपना लिया है, लेकिन मशीनों का प्रयोग खेतों पर पूर्णतः असम्भव है, क्योंकि यहां के खेत बहुत ही छोटे तथा ऊंचे नीचे स्थानों पर होते हैं। यही कारण है कि जापान कृषि की अपेक्षा कला कौशल व अन्य उद्योग धन्धों में अधिक उन्नति कर गया है।

जीव जन्तुओं का उद्योग यहां अधिक उन्नति नहीं कर सका, केवल थोड़े से घोड़े या पशु कृषि करने के हेतु किसान लोग रखते हैं, हां, होकेडो में ४० प्रतिशत गायें पाई जाती हैं। वह भी दुग्धशालाओं में दूध, मक्खन व पनीर के हेतु रखी जाती हैं। दक्षिण की ओर ये बहुत कम मिलती हैं। घोड़ों की अपेक्षा यहां सुअर बहुत कम हैं। भेड़ें तो और भी अधिक कम हैं। भेड़ बकरे व सुअर केवल सरकारी फार्म पर दृष्टिगोचर होते हैं। यह स्पष्ट है, कि यहाँ जीव जन्तुओं की कमी अधिक जनसंख्या, अच्छे चारागाह न होने व उनके लिये चारे की कमी के कारण ही है। यहां आरम्भ से ही मांस के स्थान पर जापानी लोग मछलियां खाते हैं।

मछलियों का धन्धा (Fisheries) :—

जापान संसार में एक बहुत ही महत्वपूर्ण मछली पकड़ने वाला राष्ट्र है। भार व मूल्य के दृष्टिकोण से यह बहुत ही उच्च स्थान प्राप्त करता है। विश्व की एक तिहाई से अधिक मछलियां यहां पकड़ी जाती हैं तथा निर्यात की जाने वाली

वस्तुओं में इसका सातवां स्थान रहता है। वास्तव में चावल व सब्जी के साथ मछली एक बहुत ही स्वादिष्ट भोजन है, यही कारण है कि आजकल यहां का उत्पादन ग्रेट ब्रिटेन के उत्पादन का चौगुना है। जापान में इस उद्योग की उन्नति कई भौगोलिक सुविधाओं के कारण हुई है। सर्वप्रथम इसकी स्थिति उत्तर से दक्षिण तक लगभग ३५ अक्षांशों के मध्य में है। दूसरे इस देश की बनावट इस प्रकार की है, कि इसके चारों ओर हजारों छोटेबड़े द्वीप स्थित हैं। इसकी तट रेखा बहुत कटी फटी होने का केवल एकमात्र लाभ यह है, कि यहां की बहुत सी जन-संख्या समुद्र के सम्पर्क में आ जाती है। इसके अतिरिक्त उत्तर-पूर्वी तट पर दो जलधारायें 'कीराशिवो' तथा 'क्यूरायल' आकर मिलती हैं, जिनके फलस्वरूप यहां बहुत अधिक मात्रा में "प्लैंकटन" (Plankton) समुद्र-धरातल पर एकत्रित हो जाती है। अधिक जनसंख्या, सीमित कृषि क्षेत्र तथा चरागाहों की अनुपस्थिति इत्यादि कुछ ऐसी बाधायें हैं, जिनकी वजह से यहां के इस उद्यम को प्रोत्साहन मिला है। जापानी लोग अन्य राष्ट्रों की अपेक्षा अधिक मछलियां खाते हैं। इसके दो कारण बतलाये गये हैं। पहला मांस प्रदान करने वाले जीव जन्तुओं की कमी, दूसरा देश के चारो ओर समुद्र का पाया जाना। समुद्र वास्तव में निवासियों को अपनी ओर आकर्षित करता है, इसीलिये लोग अच्छे मल्लाह व तैराक होते हैं। होकेडो, जापान का सबसे उत्तरी द्वीप है, वहां हम देखते हैं कि थोड़ा सा कोयला निकाला जाता है, लकड़ी काटी जाती है, तथा नाम मात्र को कृषि होती है। यहां के निवासी प्राकृतिक तौर पर नार्वे तथा न्यूफाउण्डलैन्ड के लोगों की भांति काड, हैरिंग तथा अन्य मछलियों पर निर्भर रहते हैं।

जापान के प्रत्येक समुद्र तट पर मछलियां पकड़ी जातीं हैं। मछुआओं के गांव अधिकतर ऐसे तटों पर स्थित हैं, जहां ऊंचे ऊंचे ज्वार भाटे आया करते हैं। बहुत से गांव यहां के उन निवासियों की निर्धनता व दीन दशा को स्पष्ट करते हैं, जो कि इन धन्धों में लगे हुये हैं। परन्तु प्रायः यह देखने में आता है, कि यहां का यह धन्धा बड़ी बड़ी संस्थाओं के हाथों में है, मछुवे लोग बड़ी संख्या में कुछ वेतन पर भर्ती कर लिये जाते हैं। इस उद्योग धन्धे में यहां २०००,००० से अधिक मनुष्य लगे हुये हैं। इनमें आधी के लगभग स्त्रियां व बच्चे सम्मिलित हैं। द्वितीय महायुद्ध पूर्व इसका उत्पादन ४० लाख टन (लगभग विश्व उत्पादन का आधा) था। उस समय मुख्य जापान ने ३५८५ लाख येन कीमत की मछलियां पकड़ीं। सन् १९५३ में यहां ४,३०२,६८६ मेट्रिक टन मछलियां सागरों व महासागरों से पकड़ी गईं, आन्तरिक क्षेत्रों से कुल ६०००० मेट्रिक टन प्राप्त की गईं। तट पर तथा तट के निकट ६१ प्रतिशत से अधिक मछलियां प्राप्त की

ती हैं। मुख्य खाने योग्य मछलियों में हैरिंग (Herring), सारडाइन (Sarne), मैकिरल (Mackeral), बोनिटो (Bonito), टनी (Tunny), टेल फिश (Cuttle fish), फ्लेटिश (Flatish), आक्टोपस (Octopus, ल्योटेल (Yellow tail) तथा सी ब्रीम (Sea bream) इत्यादि हैं। गहरे ागर में पकड़ी जाने वाली मछलियाँ २८ प्रतिशत तथा शेष ११ प्रतिशत में ह्वैल Whale) मछली, कोरल तथा मोती आते हैं। वास्तव में पश्चिमी तट पर काड रिंग, मैकिरल सालमन तथा क्रेब जाति की मछलियां पकड़ीं जातीं हैं। पूर्वी किनारे र बोनिटो, टनी और टर्टिल जाति की मछलियाँ प्रधान हैं। गहरे पानी में पाये ाने वाली मुख्य किस्में सारडाइन, हैरिंग, काड, बोनिटो, शार्क, मैकिरल त्यादि हैं।

यहां मछली पकड़ने के साधन विभिन्न हैं। आधुनिक ढंग ट्रालर्स व ड्रिफ्टर्स ्वारा मछलियां पकड़ने के अतिरिक्त यहां के मछुआ प्राचीन ढंग से नावों में बैठ कर कांटो व जालों द्वारा भी बहुत सी मछलियां पकड़ते हैं। आधुनिक शीतोत्पादक ंत्र (Refrigeration and cold storage) के बन जाने से अब यह सम्भव हो गया है, कि जहाज उत्तर में दूर अलास्का के किनारे तक जा सकें। इस शताब्दी में न केवल यह ही बल्कि यह भी सम्भव हो गया है, कि बड़े बड़े मछुआ जहाज मध्य आर्कटिक तथा ऐन्टार्कटिक तक जा सकते हैं।

ऐसा अनुमान किया जाता है, कि पिछले २५ वर्षों से इस देश में मछलियों के पकड़ने की मात्रा दुगुनी तथा मूल्य तिगुना हो गया है। पिछले समुद्र में मछलियों के पकड़ने के लिये यहां की सरकार मछुवाहों को प्रोत्साहन देती है, उन्हें धन उधार देने के अतिरिक्त अन्य आर्थिक सुविधायें, जैसे नाव व जाल इत्यादि भी दिये जाते हैं। बड़े बड़े भारी जालों द्वारा मछलियां पकड़ने की आज्ञा नहीं दी जाती, क्योंकि उसमें अधिक मछलियां पकड़े जाने का भय रहता है। ट्रालर द्वारा मछलियां केवल पूर्वी चीन सागर तथा पीले सागर में पकड़ी जातीं हैं। यहां का प्रसिद्ध बन्दरगाह नागासाकी एक मुख्य केन्द्र है।

जापान में होकेडो एक बहुत ही मुख्य मछली पकड़ने वाला क्षेत्र है, यहां गहरे समुद्र में तथा तट पर बहुत बड़ी मात्रा में मछलियां पकड़ी जाती हैं। यहां पकड़ी जाने वाली मछलियों का मूल्य सम्पूर्ण जापान की मछलियों का एक तिहाई है। जापान में आन्तरिक विस्तृत बाजार होने के कारण मछलियों का निर्यात बहुत कम होता है। जो कुछ भी मछलियां विदेशों को भेजी जातीं हैं, उनमें डिब्बों में बन्द की हुई अधिक महत्वपूर्ण हैं। इन मछलियों के लिये चीन एक मुख्य बाजार है।

यहां के मल्लाह मछली पकड़ने के हेतु एशिया के तट पर मुख्यत: कोरिया,

क्यूराइल व साखालीन द्वीप तक चले जाते हैं। उत्तरी प्रशान्त महासागर से सन् १९५३ में ४९१८ ह्वेल मछलियां पकड़ी गईं, इनसे ५८४० मेट्रिक टन तेल प्राप्त हुआ।

विशेषज्ञों का विचार है कि सर्व प्रथम मनुष्य ने मछलियों के लालच से ही समुद्र में नाव चलाना प्रारम्भ किया था। परन्तु धीरे धीरे सभी तटीय राष्ट्र उन्नति करते गये। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक जापान ने पोत निर्माण उद्योग में इतनी उन्नति की कि उसका स्थान द्वितीय महायुद्ध पूर्व विश्व शक्तियों में तृतीय हो गया। वास्तव में इसकी पोत-शक्ति पश्चिमी प्रशान्त महासागर में बड़ी प्रभावशाली है। वैसे जापान प्रारम्भ से ही अन्य देशों से पृथक रहा है, परन्तु फिर भी नावों द्वारा मछलियां पकड़ने में बहुत आगे रहा है। इस धन्धे से न केवल ८५० लाख व्यक्तियों को भोजन प्राप्त होता है, बल्कि सींगा पदार्थ तथा न खाई जाने वाली मछलियों द्वारा खाद भी प्राप्त होती है। वास्तव में यह धन्धा एक प्रकार से वहां के लोगों के लिये पाठशाला है, जिसमें कि ये लोग नावें व पोत चलाना, ऋतु तथा बादलों को देखना तथा अन्य बातों का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

उद्योग-धन्धे (Industries) :—

जापान ने अपने औद्योगिक जीवन में आश्चर्यजनक उन्नति वास्तव में उसी समय से की है, जब सन् १८९४-१८९५ में चीन व जापान का युद्ध हुआ। जिस प्रकार की कला कौशल पश्चिमी योरोप तथा संयुक्त राष्ट्र अमरीका में उन्नति कर गई थी, ठीक उसी प्रकार यहां भी कला कौशल में इन लोगों को अपनी कुशलता व चतुराई का प्रमाण देने का अवसर प्राप्त हुआ। इस तरह की आश्चर्यजनक औद्योगिक उन्नति हो जाने से यह सम्भव हो गया है, कि हम इस देश को "पूर्व का ब्रिटेन कह सकें" ("Britain of the Orient") परन्तु कर्मचारियों की संख्या ब्रिटिश द्वीप की अपेक्षा वहां बहुत कम है। लेकिन फिर भी आश्चर्य इस बात का है, कि पूर्व का कोई भी अन्य राष्ट्र न तो इतना कोयला व तांबा निकालता है न इतनी जलशक्ति उपभोग करता है, और न ही इतनी अधिक मात्रा में सूती व रेशमी वस्त्र निर्यात करता है। कला कौशल की अन्य वस्तुओं जैसे ऊनी कपड़े, चीनी व शीशे के बर्तन, कागज, खिलौने घड़ियां तथा मशीनों इत्यादि में यह देश बहुत प्रसिद्ध है।

रसायन उद्यम का जन्म सन् १९०४ व १९०५ में रूस व जापान युद्ध के समय से हुआ है। परन्तु वास्तविक प्रोत्साहन १९१४-१८ में योरोपियन महायुद्ध के समय से ही मिला है, क्यों कि यही वह समय था, जब यहां के उद्योग-धन्धे उन्नति की चरम सीमा पर पहुंच गये थे। जापानी माल की पूर्व के तमाम बाजारों में धाक जम गई थी। आश्चर्य तो इस बात का है, कि विश्व संकट होते

हुये भी इस समय से लेकर वर्तमान समय तक बराबर नवीन कारखाने खुलते गये। साथ ही उत्पादन भी बढ़ता ही गया, यद्यपि कर्मचारियों की संख्या कम हो गई।

गत वर्षों जापान में धातु उद्योग की प्रगति :—

सन्	१६१६	प्रगति	५	प्रतिशत
,,	१६२६	,,	६·४	,,
,,	१६३१	,,	८	,,
,,	१६३८	,,	२३·८	,,

प्रारम्भ से ही जापान का ध्येय यह रहा है, कि अपने यहां का औद्योगिक उत्पादन सेना की शक्ति के लिये बहुत बढ़ा दिया जाय। यही कारण है कि यहां दो प्रकार के धन्धे पाये जाते हैं। पहले वे जो कि सैनिक शक्ति के लिये अनिवार्य हैं, दूसरे वे जो कि विदेशी बाजारों पर अपनी धाक जमा लेने के लिये आवश्यक हैं। यहां के आन्तरिक बाजारों में वस्तुओं की माँग प्रायः बहुत कम रहा करती है, क्यों कि अधिकतर जनसंख्या निर्धन है। जापान ने इसी दृष्टिकोण से विदेशी बाजारों पर केवल कच्चे माल के हेतु अपना अधिकार जमा लिया। अपने यहां की वस्तुयें उसे कभी कभी वास्तविक मूल्य से भी कम दामों में बाजारों पर धाक जमाने के हेतु बेचनी पड़ी। सन् १६३१ तक यहाँ उद्योग धन्धे के प्रत्येक क्षेत्र में लगातार उन्नति होती रही। कारखानों की संख्या तथा तैयार किये हुये माल का मूल्य बराबर बढ़ता ही गया। इन सात वर्ष के अन्दर उत्पादन का मूल्य घट गया, कुशलता बढ़ी, सरकार का सैनिक उद्योग की ओर ध्यान बढ़ा तथा विभिन्न प्रकार की धातुओं की बनी हुई वस्तुओं की मांग बढ़ी। द्वितीय महायुद्ध पूर्व सूती वस्त्र अन्य वस्तुओं के उद्योग में कुछ कमी हुई लेकिन सैनिक वस्तुओं के उद्योग में बहुत अधिक वृद्धि हो गई थी। जैसे ही युद्ध छिड़ा वैसे ही लोहा, कोयला तथा अन्य खनिज पदार्थों का आयात विदेशों से बन्द हो गया। अधिक जनसंख्या होने के कारण कारखानों में कार्य करने के लिए श्रम सस्ता हो गया। लेकिन शहरों में रहना लोगों के लिये आवश्यक वस्तुओं के अधिक मूल्य के कारण पूर्णतः असम्भव हो गया। इसका प्रभाव यह हुआ कि नगर के कारखानों में श्रम का मूल्य बहुत बढ़ गया। जापान को कुछ कारखाने उस समय चीन में स्थापित करने पड़े। क्योंकि चीन उस समय सस्ते श्रम का भन्डार था।

दिसम्बर सन् १६५२ में जो दशा थी वह यह थी, कि छोटे बड़े सब कारखानों की संख्या मिला कर १६८,१०६ थी, इनमें ४,३१६,००० कुशल

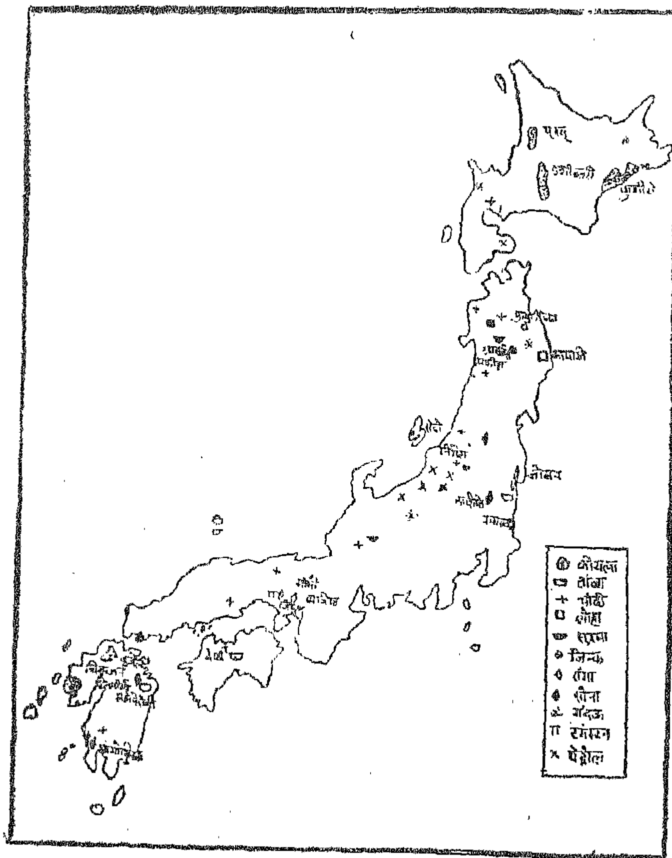
कारीगर लगे हुये थे, जिनके फल स्वरूप उत्पादन का मूल्य ४,६२६,६०३ मिलियन एन था।

वास्तव में जापान को कुछ ऐसी भौगोलिक सुविधायें प्राप्त हैं जिनके कारण ही वह उद्योग धन्धों में इतनी उन्नति कर सका। वे सुविधायें निम्नलिखित हैं।

(१) खनिज पदार्थ—जापान में कुछ खनिज पदार्थ जैसे कोयला व ताँबा उपयुक्त मात्रा में पाये जाते हैं। कोयले का उत्पादन दो-तिहाई है। सन् १९५२ में यहां ४६,५३०,६३८ मेट्रिक टन (सन् १९४१ में सबसे अधिक उत्पादन ५७,३१८,००० मेट्रिक टन था) परन्तु वह घटिया किस्म का है। वास्तव में कोयले के लिए जापान को विदेशों का मुंह ताकना पड़ता था। द्वितीय महायुद्ध पूर्व कोकिंग (भट्टियों में जलाने योग्य) कोयला चीन से ही आता था। चीन के अतिरिक्त इण्डोनेशिया का कोयला लोहा गलाने वाली भट्टियों में जलाने के हेतु उत्तम सिद्ध नहीं होता था। अब जापान की यह स्थिति है कि चीन, इण्डोचीन व भारतवर्ष से कोयला नहीं आ सकता, क्योंकि युद्ध पश्चात कोई समझौता नहीं हुआ है। अनुमान किया जाता है कि भविष्य में अमरीका ही इसको कोयला देगा। इस देश में अल्युमीनियम भी प्राप्त किया जाता है। सन १९५२ में इसका उत्पादन ४५,४९१ मेट्रिक टन था।

कोयले का प्रयोग वास्तव में भारी उद्योग धन्धों में ही होता है। हल्के उद्यमों में प्राय: जल शक्ति का ही उपयोग किया जाता है। जापान जैसे पर्वतीय देश में जहां अनेक छोटी छोटी तीव्र बहने वाली सरितायें हों बहुत अधिक वर्षा होती हो तथा कोयले की भी कमी हो, यह स्वाभाविक है कि जलशक्ति की उन्नति की जाये। इसकी उन्नति वास्तव में १८९१ से हुई है। लेकिन प्रोत्साहन चीन-जापान युद्ध (१८९४-९५) से ही मिला है। सरकार ने इस ओर विशेष ध्यान दिया, खोजें करवाई, बड़ी बड़ी स्कीमें बनाई गईं, युद्ध पूर्व वे पूरी भी की गईं। जापान सागर में गिरने वाली शिनानो व अकानों नदियों पर पचास लाख से अधिक अश्व-शक्ति विद्युत उत्पन्न की जाती है। प्रशांत महासागर में गिरने वाली कीसो व टेनयू नदियों पर भी लगभग इतनी ही मात्रा में शक्ति उत्पन्न की जाती है।

दिसम्बर १९५२ में विद्युत शक्ति का उत्पादन ११,२७०,००० Kw. था, इसमें ७,०५८,००० Kw. जलविद्युत थी। सन् १९५३ में यहां उपभोग की मात्रा ५५,७०४,०००,००० Kw. थी इसमें से ४१,६४३,०००,००० जल विद्युत शक्ति गृहों से प्राप्त हुई।

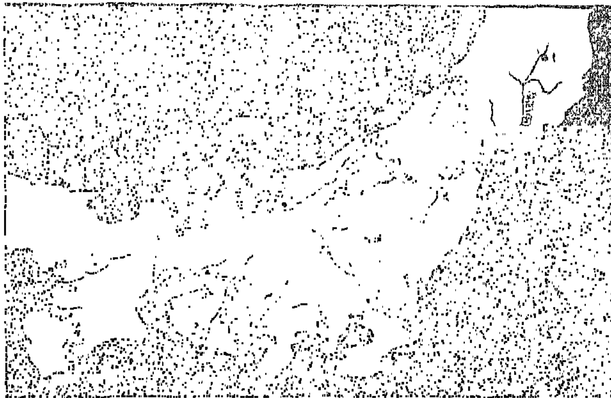


जापान—खनिज सम्पत्ति

इनके अतिरिक्त यहां अनेक छोटी छोटी सी नदियां हैं, जिन पर जल शक्ति ऐसे स्थानों पर उत्पन्न की जाती है, जहाँ कि सबसे अधिक उपयोग होता है। जैसे टोकियो, याकोहामा, नेगोया, क्योटो, ओसाका तथा कोबी ।

(२) जलवायु—इस देश का विस्तार उत्तर से दक्षिण तक बहुत अधिक है, इसलिये यहां की जलवायु विशेष तौर पर दक्षिण की ओर बहुत ही उत्तम है। कच्चे माल का उत्पादन वास्तव में जलवायु पर ही निर्भर है। अच्छी जलवायु होने की वजह से यहाँ भांति भांति की उपजें उत्पन्न होती हैं। विभिन्न उपजों पर ही उद्योग धन्धे निर्भर रहते हैं जैसे, रेशम जिसके लिये यह देश विश्व में प्रमुख स्थान रखता है।

(३) स्थिति—यह देश चारों ओर समुद्र से घिरा हुआ है। यहाँ लगभग प्रत्येक बड़ा नगर एक बन्दरगाह भी है। उद्योग-धन्धे का मुख्य क्षेत्र एशिया व दक्षिण-पूर्वी एशिया के निकट ही पड़ता है, इस वजह से इसको विदेशों से कच्चा माल आयात करने तथा तैयार किया हुआ माल निर्यात करने में बड़ी सरलता रहती है। वैसे यह देश पश्चिमी अमरीका से भी व्यापार करता है।



होन्शू की मुख्य नदियाँ तथा शक्ति-गृह

(४) सस्ता श्रम—जापान एक बहुत घना बसा हुआ देश है। जनसंख्या व निधनता अधिक होने क कारण यहाँ श्रम बहुत सस्ता प्राप्त हो जाता है यहाँ के श्रमिक इंग्लैंड के श्रमिकों के मुकाबिले बहुत कम वेतन पाते हैं। परन्तु फिर भी ये लोग सन्तुष्ट रहते हैं। इनके हृदय में देश भावना रहती है। यह लोग कारखानों में हरदम कार्य करने को तैयार रहते हैं। इनमें संगठन इतना अच्छा है, कि कभी भी हड़ताल व झगड़े आदि नहीं उठते। यही कारण है, कि उद्योग धन्धों की उन्नति में कभी भी बाधा नहीं पड़ी।

(५) बाज़ार—इसमें कदापि सन्देह नहीं कि उद्योग-धन्धों की वृद्धि उसी समय पूर्वी एशिया (जापान) में होती है, जब कि बाजार में तैयार की हुई वस्तुओं की मांग होती है। जापान के पास न केवल विदेशी बाजार ही हैं, बल्कि घर पर भी इतनी मांग रहती है, कि भाँति भांति की वस्तुओं का निर्माण करना अनिवार्य हो जाता है। जापानी लोग वैसे तो निर्धन हैं, परन्तु फिर भी कुछ ऐसी वस्तुयें हैं जिनकी प्रायः मांग रहा करती है।

(६) यातायात के साधन—इस देश में यातायात के साधन जैसे रेलें व सड़कें

इत्यादि भी बहुत अच्छे पाये जाते हैं। होन्शू द्वीप के दक्षिण में जहां उद्योग धन्धों में विशेष विकास हुआ है, यातायात के साधन बहुत ही उत्तम पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त किरोशिवो गर्म जलधारा के प्रभाव से समुद्र बर्फ से जमने नहीं पाता, जिसके फलस्वरूप बन्दरगाह बराबर शीत ऋतु में भी व्यापार के लिए खुले रहते हैं। जापान में वनीय क्षेत्र भी काफी विस्तृत हैं। इन वनों से भांति भांति की, पोत बनाने के अतिरिक्त कागज तैयार करने तथा खिलौने इत्यादि बनाने के हेतु बड़ी उत्तम लकड़ी प्राप्त की जाती है।

लेकिन जब कि जापान को एक ओर इतनी भौगोलिक सुविधायें प्राप्त है तो दूसरी ओर कुछ ऐसी भी बाधायें हैं, जिनके कारण देश के उद्योग-धन्धे उतनी उन्नति नहीं कर सके, जितनी करनी चाहिये। उदाहरण के लिये हम कोयले को ले सकते हैं यह एक ऐसा खनिज पदार्थ है जिसके बगैर कोई भी भारी उद्योग उन्नति नहीं कर सकता। दुर्भाग्य से जापान में अच्छे कोयले की बहुत कमी है। जो कुछ भी इसके पास है, वह वैज्ञानिकों का विचार है कि, पचास वर्ष से अधिक नहीं चलेगा। इस कमी को पूरा करने के लिये इस देश ने अपने यहां की जलशक्ति योजनायें पूर्ण की हैं और उनसे उद्योग धन्धों के लिये शक्ति प्राप्त की है।

इस देश के पास मुख्य धातुओं की भी बहुत कमी है। लोहे का विशेष तौर पर अभाव है। विशेषज्ञों का कहना है, कि यहाँ के लोहे की मात्रा केवल उतनी ही है जितनी कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका एक वर्ष में अपनी खानों से प्राप्त करता है। हां, केवल तांबा ही एक ऐसी धातु है, जो यहां उपयुक्त मात्रा में होती है, शेष अन्य धातुओं की जापान में प्रायः कमी रहती है। कुछ का तो इतना अभाव रहता है, कि राष्ट्र के औद्योगिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

जापान के सम्मुख एक समस्या और भी है। वह यह है, कि विदेशी बाजारों को किस प्रकार अपनाया जाय। कभी कभी यह बड़े सन्देह की बात पड़ जाती है, क्योंकि धीरे धीरे एशिया के सभी देश औद्योगिकता व आधुनिकता की ओर बढ़ रहे हैं। जिसके फलस्वरूप कुछ वर्ष बाद जापान के हाथों से इस बाजार के निकल जाने का भय है।

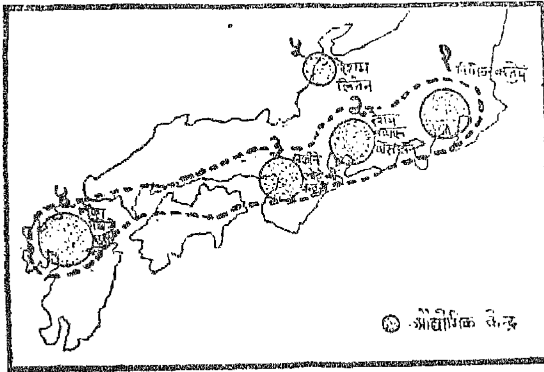
वास्तव में जापान एक औद्योगिक राष्ट्र बहुत बाद में हुआ है। पहले इसको विदेशी क्षेत्रों से, मुकाबिला लेना पड़ा, क्योंकि वहां पहले ही से कारखानों का तैयार किया हुआ माल उपस्थित था। यहाँ की सरकार ने इस ओर विशेष ध्यान दिया, अपने यहां के तमाम उद्योग धन्धों को हर प्रकार से सहायता दी, उन्हें प्रोत्साहन दिया गया तथा विदेशी बाजारों में वास्तविक मूल्य से कम दामों पर भी वस्तुयें बेची गई, जिससे कि वहाँ के बाजारों पर धाक जम गई। इस प्रकार से जापान सरकार ने सूती, रेशमी व ऊनी वस्त्र, लोहे व स्पात के उद्योग

धन्धों के अतिरिक्त लकड़ी, कागज व रसायन उद्योग धन्धों को भी सहायता दी। परन्तु जितना अधिक प्रोत्साहन रेशम के उद्योग को मिला, उतना कदाचित किसी भी उद्योग को नहीं मिला। सच तो यह है, कि जनसंख्या वृद्धि या निर्धनता की समस्यायें तब ही हल हो सकतीं हैं, जब कि उद्योग-धन्धों का विकास हो। प्रारम्भ से ही जापान का ध्येय विदेशी व्यापारिक बन्दरगाहों (चीन, मंचूरिया, भारतवर्ष तथा संयुक्त राज्य अमरीका) तक पहुंचने का यह था, कि मुख्य कच्चे पदार्थ प्राप्त किये जायें, विदेशी बाजारों पर अपना अधिकार जमाया जाय, तथा जन-संख्या वृद्धि समस्यायें हल की जायें। प्रारम्भ से ही इस देश ने इस बात की चेष्टा की कि विदेशी कच्चे माल की ऐसी वस्तुयें बनाई जायें, जो कि निर्धन से निर्धन मनुष्य सरलता से अपना सकें, ये वस्तुयें वास्तव में यहाँ मनुष्यों की कुशलता का प्रमाण हैं। प्राय: यह देखा जाता है कि प्रत्येक घर के पीछे के कमरे में एक छोटा सा कारखाना होता है, जिसमें कि गृहस्थी के सभी सदस्य कार्य करते हैं।

औद्योगिक क्षेत्र :— जापान का औद्योगिक क्षेत्र होन्शू के दक्षिण में स्थित है। उत्तरी क्यूसू व आन्तरिक सागर से लेकर पूर्व में टोकियो तक यह क्षेत्र फैला हुआ है। वास्तव में नागासाकी से लेकर टोकियो तक एक ६०० मील लम्बी पेटी है। इस पेटी में सैकड़ों कारखाने वाले कई नगर स्थित हैं। सिताउची आन्तरिक सागर (Setouchi Inland Sea) के दोनों किनारों पर बड़े बड़े औद्योगिक नगर बसे हुये हैं। इस पेटी में ५३ प्रतिशत से अधिक नागरिक जनसंख्या रहती है। इस क्षेत्र में ८० प्रतिशत के लगभग कारखानों में काम करने वाले श्रमिक पाये जाते हैं। लगभग इतने ही प्रतिशत तैयार किया हुआ माल यहां से द्वितीय महायुद्ध पूर्व प्राप्त होता था। इसके अतिरिक्त ७५ प्रतिशत कच्चा लोहा व ६० प्रतिशत स्पात भी यहीं तैयार किया जाता था। इस पेटी में चार बहुत ही मुख्य औद्योगिक केन्द्र हैं।

(१) किन्की केन्द्र :—इसको ओसाका, कोबी व क्यूटो केन्द्र भी कहते हैं। इसमें इन तीनों नगरों के अतिरिक्त अन्य भी कई औद्योगिक नगर पाये जाते हैं। ओसाका यहां का प्रमुख केन्द्र है। इस नगर को दूसरे शब्दों में 'जापान का मैनचेस्टर' (Manchester of Japan) भी कहते हैं, क्योंकि यह नगर सूती वस्त्र के उद्योग में एक विशेष स्थान रखता है। सूती कपड़े के अतिरिक्त यहां, रेशमी व ऊनी वस्त्र का व्यवसाय भी होता है। लोहे व स्पात के उद्यम में यह बहुत अधिक उन्नति कर गया है द्वितीय महायुद्ध के समय यह क्षेत्र कच्चा लोहा २५-३० प्रतिशत एवं स्पात भी इतना ही प्राप्त किया करता था। किन्तु रोलिंग मिल्स की वस्तुयें ४५ प्रतिशत तैयार की जाती थीं। पोत निर्माण उद्योग में भी यह नगर उच्च स्थान

रखता है, क्योंकि यह नगर छिछली खाड़ी पर स्थित है। पहले बड़े बड़े पोत कोबी बन्दरगाह पर ही खड़े होते थे, अब दोनों ही नगर अच्छे बन्दरगाह हैं। परन्तु कोबी प्रथम श्रेणी का तथा ओसाका तृतीय श्रेणी का बन्दरगाह है। ओसाका को एक बड़ी सुविधा यह है, कि यह नगर समतल भूमि पर स्थिति है। लेकिन कोबी जो पोत- निर्माण व अन्य उद्योगों में उच्च स्थान रखता है, एक 'ऐल्यूबियल फेन' पर स्थिति है।



जापान की औद्योगिक पेटी

क्यूटो वास्तव में प्राचीन राजधानी है, यह नगर अन्दर की ओर स्थित है। यह कोई आधुनिक नगर नहीं है। और न ही यह औद्योगिक केन्द्र है। वह कला-पूर्ण वस्तुयें निर्माण करने में उच्च-स्थान रखता है। रेशमी वस्त्र, मिट्टी व चीनी के बर्तन, शराब, बांस व कांसे की वस्तुयें तथा खिलौने आदि यहाँ विशेषतौर पर तैयार किये जाते हैं। वास्तव में यहां कलाकौशल की वस्तुयें पूरे जापान की ३० प्रतिशत तैयार की जाती हैं। यद्यपि इस क्षेत्र में न तो अच्छे शक्ति के साधन ही हैं और न यहां पर कच्चा माल है, परन्तु फिर भी श्रम अधिक होने के कारण विदेशी बाजारों के निकट होने की वजह से तथा स्थिति महत्वपूर्ण होने के कारण वह केन्द्र बहुत अधिक उन्नति कर गया है।

(२) क्वान्टो केन्द्र :—दूसरे शब्दों में इसे टोकियो-याकोहामा केन्द्र कह सकते हैं। यहां भिन्न भिन्न प्रकार की वस्तुयें तैयार की जाती हैं। ओसाका की भाँति टोकियो भी एक छिछली घाटी पर स्थित है। यहां का बन्दरगाह कोई विशेष महत्वपूर्ण नहीं है। इसीलिए पोत अधिकतर याकोहामा पर ही रुकते हैं। याकोहामा को एक बड़ी सुविधा यह है कि यह बन्दरगाह संयुक्त राष्ट्र अमरीका से अन्य बन्दरगाहों की अपेक्षा निकट पड़ता है। इसके पृष्ठ प्रदेश में रेशम बहुत अधिक उत्पन्न होता है। यही कारण है, कि यह क्षेत्र रेशमी वस्त्र तैयार करने में बहुत प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त यहां मशीनें, बिजली का सामान, छापेखानें की मशीनें, रसायन तथा खिलौने इत्यादि बड़ी मात्रा पर तैयार किये जाते हैं। द्वितीय महायुद्ध के समय इसने अपने भारी उद्योगों को और भी अधिक बढ़ा लिया। विशेषज्ञों का अनुमान है, कि उन दिनों इस क्षेत्र में १५ प्रतिशत लोहा खानों से

प्राप्त किया जाता था। पृष्ठ प्रदेश में जिन स्थानों पर पर्वत व तीव्र बहने वाली नदियाँ पाई जाती हैं, बहुत अधिक जल-शक्ति उत्पन्न की जाती है। यहां क्वान्टो के मैदान में अन्य भी कई औद्योगिक नगर पाये जाते हैं। इन नगरों में प्लास्टिक, रबड़ व लकड़ी के खिलौने बनाये जाने के अतिरिक्त कागज, मिट्टी व चीनी के बर्तन इत्यादि के भी कारखाने मिलते हैं। कहा जाता है कि युद्ध पूर्व यह केन्द्र भी ३० प्रतिशत वस्तुयें तैयार करता था। युद्ध के समय यहाँ अधिकतर सैनिक वस्तुयें ही तैयार की जाती थीं, लेकिन अब यह धीरे धीरे उन्हीं उद्योग धंधों को अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के हेतु अपना रहा है।

(३) नैगोया केन्द्र :—नैगोया स्थिति व उपजों में ओसाका से मिलता जुलता है। यह नगर भी एक छिछली खाड़ी के किनारे एक छोटी सी नदी पर स्थिति है। कोबी, याकोहामा व ओसाका के बाद ही इस बन्दरगाह का स्थान है। यह एक बड़ा औद्योगिक नगर है। यहां पर जापान की १० प्रतिशत वस्तुयें तैयार होती हैं। कोयले व लोहे के अभाव के कारण यहाँ हल्के उद्योग-धंधे ही उन्नति कर पाये हैं। ऊनी, कपड़े में इसका मुख्य स्थान है। जापान का ६० प्रतिशत ऊनी कपड़ा यहीं तैयार होता है। धातुओं से सम्बन्धित उद्योग यहां बहुत ही कम पाये जाते हैं। यह मामूली चीनी व मिट्टी के बर्तन बनाने में प्रसिद्ध हो गया है। द्वितीय युद्ध के समय कुछ औजार व मशीनें भी तैयार होने लगीं थीं।

(४)उत्तरी क्यूशू केन्द्र :— नागासाकी से लेकर मोजी तक का क्षेत्र इस केन्द्र में आता है। यहां तमाम छोटे छोटे नगर बसे हुये हैं। राष्ट्र की ६ प्रतिशत वस्तुयें यहीं से प्राप्त होतीं हैं। वास्तव में यह भारी उद्योग धंधों का आधार है। यहां पर सबसे अधिक लोहे गलाने वाली भट्टियाँ मिलती हैं। भारी भारी लोहे की वस्तुयें जैसे, पोत, रेलवे इञ्जिन, मशीनें व पुर्जे इत्यादि यहीं तैयार होतीं हैं। वास्तव में इस क्षेत्र में ४० या ४५ प्रतिशत इस प्रकार की वस्तुयें ढाली जातीं हैं। यहां के अन्य धन्धों में सीमेंट, शीशा तथा रसायन प्रसिद्ध हैं। एक सबसे बड़ी सुविधा इस केन्द्र को यह है, कि यहां कोयला पाये जाने के अलावा बहुत सी समतल भूमि पाई जाती है, यही कारण है कि समुद्र तट की ओर अनेक व्यवसाई नगर स्थित हैं। नागासाकी यहां का प्रसिद्ध नगर है। इसका सम्बन्ध प्राचीन काल से ही विदेशियों से रहा है। पुर्तगाल व डच निवासी यहां सबसे पहिले आये थे, उन्हीं लोगों ने यहां का पोत निर्माण उद्योग स्थापित किया। यह नगर वास्तव में योरोपियन जहाजों का 'कोल स्टेशन' था, लेकिन अब मोजी नगर 'कोल स्टेशन' हो गया है। मोजी नगर के निकट यवाटा में यहां की सरकार ने बड़े बड़े लोहे के कारखानें स्थापित करा दिए हैं। यह कदाचित् जापान का सबसे बड़ा लोहे व स्पात के उद्योग का केन्द्र है।

इन केन्द्रों के अतिरिक्त उत्तर में होकेडो भी एक तुच्छ केन्द्र है। इस द्वीप पर थोड़ा सा कोयला तथा मामूली कच्ची धातु पाई जाती है। दक्षिणी किनारे पर मुरोरन जापान का दूसरे नम्बर का लोहे व स्पात का कारखाना है। यहां पर भी भारी भारी वस्तुयें ढाली जाती हैं। होकेडो का उद्योग धन्धों में कोई विशेष स्थान नहीं है, क्योंकि यहां की जलवायु इस प्रकार की है कि वे उन्नति नहीं कर सकते। अधिक ठंड पड़ने के कारण कृषि भी मामूली ही होती है, लेकिन मछली पकड़ने का यह एक प्रमुख केन्द्र हो गया है।

जापान वास्तव में दो प्रकार की वस्तुयें तैयार करने में प्रसिद्ध रहा है। पहली वह जिनका कि युद्ध से सम्बन्ध है तथा दूसरी वह जिनकी वजह से यह देश दूसरे देशों के माल से टक्कर ले सके।

मुख्य उद्योग धन्धे :—

जापान में भारी उद्योग धन्धों की अपेक्षा हल्के उद्योग धन्धों की अधिक उन्नति हुई है। इन हल्के उद्योगों में रेशे वाले उद्योग प्रमुख हैं, क्योंकि जापानी निर्यात के कुल मूल्य का लगभग आधा केवल रेशेदार पदार्थ ही प्राप्त करते हैं इस उद्योग धन्धे में लगभग १० लाख मनुष्य से अधिक ही कार्य करते हैं।

सूती वस्त्र का उद्योग (Cotton Textile Industry) :—

पिछले चालीस वर्ष से जापान का सूती कपड़े का उद्योग धन्धा बहुत उन्नति कर गया है। सबसे प्रथम सूती वस्त्र का कारखाना १८६२ में कोगोशिमा (Kogoshima) के स्थान पर स्थापित हुआ था, केवल १५ वर्ष बाद ही कारखाने ओसाका नगर में तथा उसके चारों ओर बराबर खुलने लगे। सन् १९१२ से लेकर १९३४ तक कोई भी ऐसा वर्ष नहीं बीता, जिसमें कि बुनने व कातने वाले कारखाने न खुले हों। केवल इतना ही नहीं बल्कि चीन में भी जापान के सूती वस्त्र तैयार करने वाले कारखाने खुल गये। युद्ध पूर्व यहां का यह धन्धा उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुंच गया था, तथा जापान वास्तव में उस समय एशिया की फैक्टरी (Factory of Asia) कहलाने लगा। उन दिनों यहां लगभग २७० कारखाने जिनमें ९० लाख से अधिक तकलियां थीं, पाये जाते थे। (कुछ लेखकों ने बतलाया है, कि युद्ध पूर्व यहां १३,०००,००० तकलियाँ तथा २९२,००० करघे थे)। जापान का निर्यात उन दिनों २·७ बिलियन (०००,०००,०००) गज था। लेकिन जापान की स्थिति द्वितीय महायुद्ध के पश्चात बहुत गिर गई। और यहां केवल २,७८०,००० तकलियां तथा १२०,००० करघे रह गये। अगस्त १९५४ में यहां ७,८७६,३८२ तकलियाँ थीं, सूती धागे का उत्पादन १९५३ में ९१३,७००,००० पौंड (निर्यात इसी समय २१,२०१,२६३ पौंड हुआ) और सूती वस्त्र २८१०,६००,००० वर्ग गज था (निर्यात इसी समय

६१४,००६,२४४ वर्ग गज हुआ सन १६५४ में यही निर्यात १,२५०,०००,००० वर्ग गज हो गया।) आशा की जाती है, कि भविष्य में यह देश अपने इस धन्धे को सुधार लेगा, क्योंकि इसको निम्नलिखित कुछ ऐसी भौगोलिक सुविधायें प्राप्त हैं जो इस धन्धे के लिये अनिवार्य हैं—(१) उत्तम स्थिति (२) अच्छी जलवायु (३ सस्ती जलशक्ति (४) यातायात के अच्छे साधन (५) सस्ता व कुशल श्रम (६) चीन व दक्षिणी पूर्वी एशिया के बाजार इत्यादि के अतिरिक्त कुछ ऐसी भी सुविधायें इसके सम्मुख हैं जो कि किसी भी अन्य देश को नहीं हैं। प्रथम बहुत ही सस्ता व कुशल श्रम, द्वितीय—अति निकट बाजार जिनमें यहां के कपड़े की मांग रहती है, तृतीय-अच्छा संगठन, चतुर्थ—उत्तम मशीनें व अच्छी सर्विस।

अधिकतर इन कारखानों में स्त्रियां काम करतीं हैं, इनको प्रतिदिन औसत ·६५ येन वेतन मिलता है, इसमें बोनस तथा अन्य सुविधायें सभी शामिल हैं। योरोप व संयुक्तराज्य में श्रमिकों का वेतन कहीं अधिक है। सस्ता श्रम होने के अतिरिक्त यहां का श्रम अन्य देशों के श्रम की अपेक्षा बहुत ही कुशल है। जापान में स्व-चालू (Automatic), कपड़ा बुनने वाली मशीनें चल गई हैं, इन मशीनों में कम सूत टूटने के अलावा लागत भी कम लगती है। निकट बाजार होने के अतिरिक्त एक सबसे बड़ी सुविधा जापान को यह भी है, कि जापानी जहाज विदेशी जहाज़ों की अपेक्षा बहुत कम किराया लेते हैं। इस उद्योग धन्धे में अति उत्तम संगठन पाया जाता है। यहां माध्यमिक मनुष्य की (agent) व्यापार में आवश्यकता ही नहीं रहती, इस-कारण कपड़ा और भी अधिक सस्ते दामों पर बिकता है। कारखाने यहां पर दो 'शिफ्टों' में चलते हैं। मशीनों से अधिक से अधिक कार्य लिया जाता है, ये नित्य साफ की जातीं हैं, तथा खराब हो जाने पर तुरन्त बदल भी दी जातीं हैं। इस तरह से जापान के सब कारखानों में एक से एक उत्तम आधुनिक मशीनें लगी हुई हैं।

कपड़े का उत्पादन १६३६ में कुल वस्तुओं का २८·५ प्रतिशत था, परन्तु १६३६ में केवल २० प्रतिशत ही रह गया। यह वास्तव में युद्ध का समय था, अतः जापान का ध्यान अधिकतर युद्ध सम्बन्धी वस्तुओं की ओर चला गया। जिसके फलस्वरूप इसका उत्पादन गिरता ही गया। यहां का यह धन्धा वास्तव

In 1912 there were 147 Cotton Mills with 2·5 Million Spindles. And in 1913 there were 267 Cotton Mills with 9·5 Million Spindles.

L Dudley Stamp, Asia. A Regional and Economic Geograhpy page 607.

में विदेशी कच्ची कपास पर ही निर्भर रहता हैं। कच्ची कपास प्राय: चीन, भारतवर्ष, संयुक्त राष्ट्र अमरीका (टेक्साज), मिश्र व कोरिया आदि देशों से मंगा लिया जाता है। भारतवर्ष व संयुक्त राष्ट्र पहले ६० प्रतिशत कच्ची कपास भेजा करते थे, परन्तु अब जब से इन देशों के घर के कारखाने उन्नति कर गये हैं, कपास के निर्यात का कोटा कम कर दिया गया है। जापान सरकार ने इन समस्या को हल करने के लिये बहुत से जापानियों को ब्राजील कपास उगाने के लिये भेज दिया है, अब कुछ कपास दक्षिणी अमरीका से तथा कुछ ब्राजील से मंगा ली जाती है।

कोयले का अभाव होने के कारण यहां कारखानों में विद्युत शक्ति का ही प्रयोग होता है। ओसाका, कोबी, नैगोआ, याकोहामा तथा टोकियो आदि सूती वस्त्र के उद्योग धन्धों के केन्द्रों की उत्पत्ति होने का एक मूल कारण यह भी है, कि ये नगर विद्युत-शक्ति-उत्पादन के क्षेत्र के निकट ही हैं। आजकल यहां लगभग २,०५,००० मनुष्य कपड़ा बुनने में तथा १६५,००० व्यक्ति कपड़ा कातने में लगे हुये हैं। शेष अन्य विभिन्न भागों में कार्य करते हैं। इस उद्योग धन्धे में इतनी अधिक सुविधायें होने के कारण प्रत्येक क्षेत्र में विशेषता आ गई हैं। उदाहरणार्थ—यदि एक क्षेत्र 'शर्टिंग' के लिये प्रसिद्ध है, तो दूसरा 'ड्रिलिंग' के लिए इत्यादि।

सन् १९२४ तक चीन जापान का आधा सूती वस्त्र का निर्यात ले लिया करता था, परन्तु आठ वर्ष बाद व्यापार की यह दशा हुई, कि चीन उस समय का कुल पाँचवां भाग ही आयात करने लगा। कुछ वर्ष बाद, शोवा युग के आरम्भ में, जापान बहुत अधिक सूती कपड़ा निर्यात किया करता था, क्योंकि दक्षिणी पूर्वी एशिया ने भी जापानी कपड़े का आयात प्रारम्भ कर दिया था। इसके अतिरिक्त जापान के पास भारतवर्ष, डच ईस्ट इन्डीज़, दक्षिणी अफ्रीका तथा मध्य पूर्वी देश के बाजार भी आ गये। परन्तु भारतवर्ष धीरे धीरे अपने यहाँ का यह उद्योग धन्धा बढ़ा रहा था, और उस समय मोटा कपड़ा अधिक तैयार करता था। जापान ने इसके फलस्वरूप उत्तम कपड़ा निर्यात करना प्रारम्भ कर दिया। अब लंकाशायर का जापानी कपड़े से मुकाबिला पड़ गया, लेकिन विजय जापान की ही हुई।

वर्तमान स्थिति यह है, कि जापान के सूती वस्त्र का निर्यात धीरे धीरे घट

'Economic Rehabilitation and Foreign Commerce of Japan—April 1953. Published by the Bureau of Public Information and Cultural Affairs, Ministry of Foreign Affairs, Government of Japan.

रहा है, क्योंकि एशिया के देश इस धन्धे में बराबर उन्नति कर रहे हैं। युद्ध से पहले भारतवर्ष बहुत अधिक जापानी कपड़ा आयात किया करता था, और एक समय वह भी था, जब कि भारतवर्ष को ६००० लाख गज जापानी कपड़ा एक वर्ष में आयात करना पड़ा। अब भारतवर्ष की स्थिति बहुत अच्छी हो गई है। आयात करने की अपेक्षा यह देश निर्यात करने लगा है। आजकल जापान १,०००,०००,००० गज कपड़ा प्रतिवर्ष निर्यात करता है। इसमें से आधा केवल दक्षिण पूर्वी द्वीप समूह आयात करते हैं। इस उद्योग धन्धे में इस समय जापान की स्थिति संसार में सातवीं है। परन्तु आशा की जाती है कि यह देश अपने यहां के इस उद्योग में पुनः उन्नति करेगा।

रेशमी वस्त्र उद्योग :—

जापान में रेशमी वस्त्र का उद्योग एक बहुत ही प्रमुख उद्योग धन्धा है। इसकी स्थिति सूती वस्त्र के उद्योग से भिन्न है, क्योंकि यह देश कच्चे रेशम के लिये बहुत प्रसिद्ध है। यह उद्योग कोई ऐसा उद्योग नहीं है, जो किसी अन्य देश से यहाँ आया हो, बल्कि यह व्यवसाय जापान का प्राचीन व्यवसाय है, और बहुत प्राचीन काल से होता चला आ रहा है। इसमें जो मनुष्य लगे हुये हैं, वे कृषिक भी हैं तथा औद्योगिक श्रमिक भी हैं। कीटाणुओं में से रेशम निकालना कृषि की ही एक शाखा है, तथा उसके तार बना कर बुनना एक साधारण यन्त्र सम्बन्धी साधन है, जिसमें थोड़ी कुशलता की आवश्यकता रहती है। यद्यपि इसमें कोई भारी मशीन का प्रयोग नहीं होता, परन्तु फिर भी थोड़ी शक्ति का होना अनिवार्य है। वास्तव में पहले से ही यह धन्धा यहां कुटीर उद्योग के ढंग पर चालू है, लेकिन अब भी यहां का रेशमी कुटीर उद्योग कम महत्वपूर्ण नहीं, आजकल तो यहाँ रेशम के बड़े बड़े कारखाने बहुत बड़ी मात्रा में पाये जाते हैं।

जापान संसार का सबसे बड़ा कच्ची रेशम निर्यात करने वाला देश है, किसी किसी वर्ष ७० प्रतिशत से अधिक रेशम विदेशों को भेज दिया जाता है। ककून (Cacoons) को पालने तथा कच्ची रेशम के उत्पन्न करने के इस धन्धे ने जापान के उद्योग धन्धे व वाणिज्य को बहुत शक्तिशाली बना दिया है। जापानी किसान के लिए रेशम के कीड़े पालना प्रथम उद्यम है, यह एक प्रमुख 'कैश-क्रोप' है, इसके बाद चावल का नम्बर आता। वास्तव में देखा जाय तो यह चाय से भी अधिक महत्वपूर्ण है। जापान की सबसे अधिक रेशम संयुक्त राज्य अमरीका को निर्यात की जाती है। क्योंकि इस देश में जापानी रेशम का उपभोग बहुत अधिक है।

वर्तमान शताब्दी के आरम्भ से ही जापान के इस उद्योग में विकास, तथा कच्ची रेशम के उत्पादन में उल्लेखनीय उन्नति हुई है। सच तो यह है, कि

संसार की बढ़ती हुई माँग इस देश ने पूरी की है। अन्य देश तो रेशम के उत्पादन में स्थिर रहे, चीन द्वितीय महायुद्ध पूर्व केवल ६ प्रतिशत ही निर्यात किया करता था। वैसे चीन का स्थान, रेशम उत्पन्न करने वाले देशों में दूसरा है। चीन से तुलना करते हुये, ऐसा प्रतीत होता है कि जापान का इतना अधिक उत्पादन इसलिये है, कि यहाँ बहुत ही अच्छे रेशम के कीटाणु पालने तथा रेशम तयार करने के वैज्ञानिक ढंग हैं। इस उद्योग में बहुत ही उत्तम संगठन है, तथा बहुत ही अच्छे वाणिज्य के साधन हैं। वैसे व्यापार करने में दोनों ही देश कुशल हैं। दोनों देशों में यह कुटीर धंधा है, परन्तु चीन में प्राचीन ढंग से यह बटा व बुना जाता है। लेकिन जापान में ककून से रेशम निकाल कर बटने व बुनने का कार्य एक ऐसी मशीन द्वारा किया जाता है, जिसे "स्टीम फिलेचर" (Steam filature) कहते हैं। जापानी रेशम के कीटाणुओं को बीमारियों से बचाने के हेतु जीवाणु विज्ञान (Science of Bacteriology) का प्रयोग करने में बहुत प्रवीण हैं।

सन् १९५० में जापान में कच्ची रेशम का उत्पादन
(हजार टनों में)

जापान	४८·८६
चीन	—
इटली	१·३७
फ्रांस	०·०५
भारतवर्ष	१·०३

रेशम के उद्योग के प्रमुख केन्द्र वास्तव में औद्योगिक पेटी के बाहर ही है। मुख्य क्षेत्र—(१) पश्चिमी क्वान्टो (२) नेगोया (३) क्यूटो (४) फ्यूकी (५) इशीकावा (६) मध्य होन्शू की 'रिफ्ट वेली'। इन सबों में मध्य होन्शू में नेगोया, जो कि याकोहामा व टोकियो के उत्तर-पश्चिम में स्थित है, बहुत ही बड़ा रेशम के उद्योग धन्धे का केन्द्र है। रेशम के बटने के लिये यह क्षेत्र उल्लेखनीय है, राष्ट्र का २७ प्रतिशत रेशम यहीं बटा (Reeling) जाता है। दूसरा मुख्य केन्द्र क्योटो नगर है, जो सबसे अधिक प्रसिद्ध है। इन केन्द्रों को निम्नलिखित सुविधायें प्राप्त हैं।

(१) स्वच्छ जल की अधिक मात्रा।
(२) जल शक्ति, जो सबसे अधिक होन्शू द्वीप की नदियों से उत्पन्न की जाती है।
(३) ऐसे क्षेत्र में इस उद्योग की स्थिति जहां ककून बहुत अधिक मात्रा में होता है।

(४) समान सूखी व ठंडी वायु मंडल की दशायें।
(५) कुशल श्रम व उत्तम संगठन।
(६) व्यापारिक सुविधायें व यातायात के साधन।

क्योटो नगर को रेशमी वस्त्र के व्यवसाय के लिये उपरोक्त सुविधाओं के अलावा एक यह सुविधा और है, कि निकटस्थ बीवा झील का स्वच्छ जल रेशम साफ करने के काम में आ जाता है।

यहाँ रेशम के कारखानों में मुख्यत: दो प्रकार का कपड़ा तैयार होता है। पहला भारी व अधिक मूल्य वाला, दूसरा हल्का व सस्ता। भारी व कीमती कपड़ों में सेटिन, सिल्क, कोरा तथा ब्रोकेड आदि मुख्य हैं। यह अधिकतर घरेलू बाजारों में बिकता है, और अधिकतर स्त्रियाँ स्वयं हाथ से चलाने वाली मशीनों पर तैयार करती हैं। सस्ते व हल्के रेशमी कपड़ों में महीन 'जेप सिल्क' तथा फ्यूजी विदेशी बाजारों में इतनी प्रसिद्ध है, कि प्रतिवर्ष बहुत अधिक मांग रहा करती है। यह घरेलू बाजारों में बहुत ही कम दीखती है। द्वितीय महायुद्ध के समय शहतूत के वृक्षों को बम वर्षा के कारण बड़ी हानी हुई, साथ ही लोगों का ध्यान भी युद्ध की [illegible] उत्पादन इस समय बहुत ही कम हो गया। कच्चे रेशम का निर्यात भी पूर्णता बन्द हो गया, वैसे प्राय: ६० प्रतिशत रेशम छोटे छोटे कारखानों में बुना जाता है, जिसमें अधिकतर स्त्रियां बच्चे ही काम करते हैं।

वर्तमान समय में जापान पुन: अपने इस धंधे को जाग्रत कर रहा है। इसका उत्पादन धीरे धीरे बढ़ रहा है, तथा कच्चे रेशम का निर्यात युद्ध पूर्व सीमा पर पहुंच रहा है। सन् १९५० में इसका उत्पादन १,८०,००० बेल्स था। असली रेशम के तार का उत्पादन १९५१ में लाख पौण्ड तथा रेशमी कपड़े का १५-४ लाख वर्ग गज था। जापान सरकार ने अपने कृषि के महकमे को यह आदेश दिया है, कि ५० लाख शहतूत के वृक्ष लगाये जायें, जिससे कि १९५२ में रेशम का उत्पादन २४७,००० बेल्स हो जाये। फलस्वरूप असली रेशम के धागे का उत्पादन सन् १९५३ में ३३,०९५,००० पौंड तथा रेशमी वस्त्र का १७०,०००,००० वर्ग गज़ हो गया। सन् १९५४ में इसके निर्यात की मात्रा ७५९८९ बेल्स थी, इसमें से ६१% संयुक्त राज्य अमरीका ने आयात किया। रेशमी वस्त्र व रेशम का व्यापार दक्षिण पूर्वी द्वीप समूह, इण्डोनेशिया, स्याम, बर्मा,

---

'Steam filatures'—Machines for unwinding the Cocoons and preparing the raw silk of commerce. L. Dudley stamp—Asia A Regional and Economic Geography p. 608

मलाया, भारतवर्ष, पाकिस्तान तथा संयुक्त राज्य अमरीका से होता है। इसके निर्यात में जापान का कोबे बन्दरगाह प्रसिद्ध है।

कृत्रिम रेशम उद्योग—मनुष्य ने रेशम के कीड़ों के कार्य का अनुकरण करके उसे आपत्ति में डाल दिया है। रसायन विज्ञान के चमत्कार से अब इतना उत्तम रेशम तैयार किया जाता है, कि पहचाना भी नहीं जा सकता कि कौनसा असली है तथा कौनसा कृत्रिम। कई वर्षों की खोज के बाद कृत्रिम रेशम सबसे पहले एक फ्रांस निवासी काउण्ट शारडोनेट (Count Chardonnet) ने १८८४ में तैयार किया था। कई वर्षों तक लोगों का ध्यान इधर को ओर बिल्कुल नहीं गया, परन्तु धीरे धीरे कुछ लोगों ने इसके महत्व को समझा। इसके बनाने के चार ढंग हैं परन्तु सबसे अधिक प्रचलित विसकोस (Viscose) साधन है।

जापान में बनावटी रेशम का उद्योग १९१९ से प्रारम्भ हुआ है, इसके पहले पश्चिमी योरोपियन देश उन्नति कर चुके थे। इसका उत्पादन १९३३ में ९०० लाख पौण्ड था, लेकिन केवल एक वर्ष बाद ही यह बढ़ कर १४०० लाख पौण्ड हो गया। कृत्रिम रेशम में यह देश पहले पश्चिमी देशों से पीछे था, क्योंकि इसके तैयार करने के लिये कच्चा माल जैसे लकड़ी की लुगदी, रद्दी, कपास तथा रसायन आदि विदेशों से आता था। कनाडा और काराफुटो की लुगदी अधिक भेजा करते थे। लेकिन जापान ने ये कच्चे माल अपने देश में ही खोज निकाले। जिसके फलस्वरूप इस धन्धे में बराबर उन्नति होती गई। वैसे तो कृत्रिम रेशम, रासायनिक क्रियाओं द्वारा तैयार की गई लुगदी को बारीक छेदवाली कांच की नलियों में से दबाकर निकाला जाता है, लेकिन यहां पर जापानियों ने कुछ और भी आधुनिक ढंग प्रचलित कर रक्खे हैं।

जापान का यह धन्धा द्वितीय महायुद्ध पूर्व सर्वश्रेष्ठ था। इसका उत्पादन उस समय २५० लाख पौंड था। इसकी स्थिति संयुक्त राज्य अमरीका से भी अच्छी थी, विश्व में सन् १९३६ में इसका कृत्रिम रेशम के उत्पादन में प्रथम स्थान था। युद्ध के समय इस उद्योग को बड़ी हानि उठानी पड़ी, उत्पादन पहले की अपेक्षा केवल ३० प्रतिशत ही रह गया। सन् १९५० में, इसका उत्पादन विशेष तौर पर जून के माह में ७० लाख पौंड था, इसके बाद १२० लाख पौण्ड तथा एक वर्ष बाद ही यह बढ़ कर २२० लाख पौण्ड हो गया।

यहां कृत्रिम रेशम के वस्त्र विभिन्न श्रेणी के बनाये जाते हैं। दक्षिण-पूर्वी एशिया इन्डोचीन व अफ्रीका की असभ्य जातियों के लिये जापान विशेष तौर पर सस्ता, उत्तम व रंगीन वस्त्र तैयार करता है। इसने वास्तव में एशिया के सभी

Shri Hari Krishna Shrivastava—Industries of Japan Daily News 'Advance' published from Kanpur.

बाजारों पर अपना अधिकार जमा रक्खा है। आजकल युद्ध के प्रभाव से इसका स्थान विश्व में द्वितीय है। उत्पादन १९५० में लगभग २१०० लाख वर्ग गज तथा १९५१ में ३२३० लाख वर्ग गज़ था। सन् १९५३ में 'फिलामेंट रेयन' के वस्त्र का उत्पादन ५७५,४००,००० वर्ग गज़ तथा 'रेयन स्टेपिल' वस्त्र का ५०४,१००,००० वर्ग गज़ हो गया था।

कृत्रिम रेशम के उद्योग के केन्द्र जापान में होन्शू द्वीप के मध्य में स्थित हैं। इनमें से प्रमुख कैनाज़ावा, क्योटो तथा टोकियो हैं। वैसे अधिकतर असली रेशम वाले क्षेत्रों में ही बनावटी रेशम के केन्द्र पाये जाते हैं, क्योंकि यहां इसको तैयार करने के लिये कच्चा माल, श्रम तथा जलशक्ति उपयुक्त मात्रा में प्राप्त हो जाती हैं। आशा की जाती है कि जापान का यह धन्धा भविष्य में यदि कोई बाधा न पड़ी तो बराबर उन्नति करता ही जायेगा। वैज्ञानिकों का मत है कि वैसे तो सूती व रेशमी वस्त्रों के उद्योग पर कृत्रिम रेशम का प्रभाव पड़ा ही है। लेकिन वह समय भी दूर नहीं है, जब कि कृत्रिम-रेशम-उद्योग में इतनी उन्नति होगी कि असली रेशम अजायबघर या प्रदर्शिनी में रख दी जायेगी और लोग कृत्रिम रेशम के ही वस्त्र पहनेंगे।

ऊनी वस्त्र उद्योगः—

ऊनी वस्त्र के उद्योग-धन्धे में जापान बहुत अधिक उन्नति नहीं कर सका, क्योंकि प्रारम्भ से ही जापान के पास वे सुविधायें न थीं, जो कि इस उद्योग-धन्धे की उन्नति के लिये आवश्यक हैं। ऊनी कपड़े का व्यवसाय वास्तव में योरोप तथा उत्तरी अमरीका महाद्वीप पर बहुत बढ़ा चढ़ा है। ग्रेट ब्रिटेन तथा संयुक्त राज्य अमरीका में इसके क्षेत्र अग्रगण्य हैं। परन्तु एशिया में जापान ही एक ऐसा देश है जिसने कि पर्याप्त सुविधायें न होते हुये भी, इस उद्योग में काफी उन्नति की है। सर्व प्रथम ऊनी वस्त्र तैयार करने का सरकारी कारखाना १८७६ में यहां स्थापित हुआ था। इस उद्योग के विकास के लिये निम्नलिखित भौगोलिक सुविधायें होना आवश्यक हैं।

(१) ऊन को धोने व रंगने के लिये स्वच्छ एवं हलका जल।

(२) सम जलवायु

(३) कुशल व अनुभवी श्रम।

(४) कच्ची ऊन।

(५) अच्छे शक्ति के साधन।

(६) यातायात के साधन व ऊनी वस्त्रों की मांग।

जापान के पास तो सभी सुविधायें हैं, लेकिन ऊन के लिये दूसरे अन्य देशों का मुंह ताकना पड़ता है। बालों वाले जीव जन्तुओं को यहां विशेष रूप

से कमी है। ऊन मुख्यत: आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड तथा अन्य योरोपियन देशों से मंगाया जाता है। यदि विदेशी बाजार इसके लिए बन्द हो जाँय तो कदाचित यह धंधा भी ठप हो जायेगा। यह धन्धा सूती वस्त्र उद्योग की अपेक्षा अधिक तुच्छ है। परन्तु इस ऊद्योग का उत्पादन १९३०—३७ के मध्य दुगना हो गया। सन १९३५ में यहाँ लगभग ४७ बड़े व छोटे ऊनी वस्त्र तैयार करने के कारखाने थे। ये ऊनी कपड़े के कारखाने नेगोआ तथा ओसाका में अधिक पाये जाते हैं।

इन कारखानों में अधिकतर कम्बल, कालीन, सर्ज, ट्वइड, शाल, मोज़े, सूटर व बनियाइन इत्यादि वस्तुयें तैयार की जाती हैं। सन् १९५० में ऊनी वस्तुओं का उत्पादन ७१५ लाख पौंड था, परन्तु १९५१ में उत्पादन बढ़ कर ११३० लाख पौंड हो गया। इसमें ऊनी वस्त्र सम्मिलित नहीं थे। ऊनी वस्त्र का उत्पादन १९५० में लगभग ६९० लाख वर्ग गज तथा १९५१ में ११५० लाख वर्ग गज था। वास्तव में जापान इस उद्योग-धन्धे में दिन प्रति दिन उन्नति कर रहा है। सन् १९५३ में ऊनी धागे का उत्पादन १८६,६००,००० पौंड तथा ऊनी वस्त्र का १६७,६००,००० वर्ग गज हो गया था। लेकिन सबसे बड़ी अड़चन इसके सम्मुख यह है कि यहाँ ऊनी वस्त्र अधिकतर स्थानीय मांग की पूर्ति के लिये ही बनाया जाता है। जापान की जनसंख्या इतनी बढ़ गई है, कि अभी तक यह देश जनता की मांग की पूर्ति नहीं कर पाया है। आशा की जाती है कि भविष्य में यह देश अपने ध्येय को पूरा कर लेगा।

लोहे व स्पात का उद्योग-धन्धा :—

यद्यपि जापान में कोयले व लोहे का अभाव है, परन्तु फिर भी इस देश ने लोहे व स्पात के उद्योग में पूर्णत: उन्नति की है। सन् १९०० में इस देश के पास बहुत ही थोड़े आधुनिक उद्योग थे, और लोहे व स्पात का धन्धा प्राचीन ढंग से प्रचलित था। परन्तु द्वितीय महायुद्ध के प्रारम्भ होते ही इस देश ने अपने यहां के इस उद्योग को इतना बढ़ा लिया कि इसकी गणना स्पात तैयार करने वाले देशों में छठी हो गई। यहां आधुनिक लोहे व स्पात के उद्योग का जन्म उस समय से हुआ है, जब कि क्यूशू द्वीप के यवाता (Yawata) बन्दरगाह पर सर्व प्रथम "इम्पीरियल स्टील वर्क्स" (Imperial Steel Works) सन् १९०१ में (जिसकी शक्ति ९०००० टन स्पात प्रतिवर्ष तैयार करने की थी,) सरकार की सहायता से स्थापित किया गया। प्रारम्भ में यह उद्योग युद्ध के ध्येय से बड़ा आवश्यक समझा जाता था। इसीलिये यहाँ की सरकार ने इसको अपने हाथ में ले लिया। उस समय जितने भी कारखाने खोले गये सब सरकार के थे। यद्यपि निजी कारखाने खोलने वालों को अनेक प्रकार की सुविधायें प्रदान की जातीं थीं, परन्तु फिर भी १९३७ में ९० प्रतिशत कच्चा लोहा तथा ५० प्रतिशत स्पात सरकारी

कारखानों से ही प्राप्त हुआ। सरकार के प्रयत्न तथा लगातार व्यय का परिणाम यह हुआ, कि स्पात का उत्पादन बढ़ता ही गया। सन् १६१३ में वह २४०००० टन, १६३० में २,२६०,००० टन तथा १६३६ में ६,३४०, ००० टन था।

सन् १६३० के पश्चात् उत्तरी क्यूशू, होकेडो तथा हीजो (Heijo in Korea) की कोयले की खानें राष्ट्र की ६० प्रतिशत मांग को पूरा कर दिया करतीं थीं। घर का कोयला अधिक उत्तम नहीं था, अत: जापान को काईपिंग चीन में से कोयला मंगवाना पड़ा। यहां लोहे की खानें उत्तर पूर्वी होन्शू में कामाइशी के निकट तथा कुछ उत्तर-पूर्वी कोरिया में पाई जातीं हैं। लोहे की किस्म अधिक अच्छी नहीं है, इसको अपनी आवश्यकता पूर्ण करने के हेतु विदेशों से मंगाना पड़ता था। लगभग ६० प्रतिशत लोहा मलाया, चीन, फिलिपाइन, व आस्ट्रेलिया से बहुत कम व्यय पर आयात कर लिया जाता था। परन्तु यह ३० या ४० लाख टन लोहा जो प्रतिवर्ष आता था, जापान के स्पात केन्द्रों को सन्तुष्ट नहीं कर पाता था। इसके फलस्वरूप जापान को भारतवर्ष, मंचूरिया व संयुक्त राज्य अमरीका से कच्चा लोहा मंगाना पड़ता था। यहां के लोहे व स्पात के कारखाने समुद्र तट पर ही स्थित है, क्योंकि प्रारम्भ से ही यह धंधा विदेशी कच्चे लोहे पर निर्भर रहा है।

जापान में स्पात उद्योग के तीन मुख्य प्रदेश हैं :—

(१) मौजी क्षेत्र :—यह क्षेत्र उत्तरी क्यूशू में स्थित है। जापान का यह सबसे बड़ा केन्द्र है, तथा यहां तीन चौथाई लोहा व स्पात तैयार किया जाता है। कोयला नागासाकी के क्षेत्र से तथा चीन की काइलान (Kailan) की खानों से प्राप्त किया जाता है। लोहा यहां प्राय: होकेडो से तथा अन्य देशों से आयात किया जाता है। यवाता (Yawata) यहां का मुख्य केन्द्र है। यहां एक बहुत ही विशाल सरकारी कारखाना हैं, जिसमें भारी से भारी वस्तुयें तक ढाली जाती हैं।

(२) कैमिशी क्षेत्र :—यह क्षेत्र होन्शू द्वीप पर स्थित है। यहां कच्ची धातु व कोयला, दोनों ही वस्तुयें बाहर से मंगाई जातीं हैं। इस प्रदेश की कूजी, सिडाई तथा कामायशी खानों से कुछ कच्ची धातु प्राप्त हो जाती है। लेकिन लोहे व स्पात के केन्द्र ओसाका, टोकियो तथा याकोहामा में है इन नगरों में ही प्रसिद्ध कारखाने स्थित हैं।

(३) मुरोरन क्षेत्र :—यह क्षेत्र होकेडो द्वीप के दक्षिणी तट पर स्थित है। यहां कच्ची धातु कुरारी खान से तथा कोयला इशीकारी की खान से प्राप्त किया जाता है। यह केन्द्र अन्य केन्द्रों की अपेक्षा कुछ छोटा है। यहाँ का प्रसिद्ध केन्द्र वैनिशी (Wainishi) है।

सन् १९५४ में यहां के कारखानों की कच्चे लोहे की उत्पादक शक्ति ६,४०८,००० मेट्रिक टन तथा स्पात की १२,५६०,००० मेट्रिक टन थी। खानों से जो धातु, १९५३ में प्राप्त हुई वह १,१४०,३१५ मेट्रिक टन, और कच्चे लोहे का उत्पादन इसी वर्ष ४,५१८,००० मेट्रिक टन तथा स्पात का ७,६६२,००० मेट्रिक टन था।

द्वितीय महायुद्ध पूर्व यहां की लोहे व स्पात की बनी हुई वस्तुओं का निर्यात केवल चीन व मंचूरिया को ही हुआ करता था, परन्तु अब क्योंकि ये दोनों देश इस धन्धे में उन्नति कर रहे हैं, इसलिये दक्षिणी पूर्वी एशिया को भी इन वस्तुओं का निर्यात होने लगा है। मुख्य वस्तुयें जो यहाँ के कारखानों में बनतीं हैं, तथा मुख्यत: निर्यात की जातीं हैं उनमें ट्रैक्टर, बुलडोज़र, ट्रकें, खान खोदने व इंजीनियरिंग के औजार, मशीनें, जहाज, विद्युत सम्बन्धी वस्तुयें, मोटर गाड़ियाँ, साइकिलें व सीने तथा छापने की मशीनें इत्यादि हैं।

आजकल बुनने व कातने वाली मशीनें भारतवर्ष व पाकिस्तान को रोलिंग स्टोक, थाईलैंड को साइकिलें इण्डोचीन को, तथा 'इन्टरनल कम्बशन इञ्जन' भारतवर्ष को प्राय: निर्यात किया जाता है। दक्षिणी-पूर्वी एशिया को जो मशीनें युद्ध पूर्व निर्यात की जातीं थीं, उनका प्रतिशत केवल ५ था, लेकिन सन् १९५१ वह ११ प्रतिशत हो गया। कुल निर्यात का मूल्य कोई अधिक नहीं था, सन् १९५२ में यह ५०० लाख डालर से भी कम था।

वास्तव में इस देश का स्पात उद्योग अन्य देशों की अपेक्षा बहुत पीछे प्रारम्भ हुआ है, इसलिए कच्ची धातु प्राप्त करने व तैयार किया हुआ माल बेचने के हेतु अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क स्थापित करने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परन्तु एक लाभ इसका यह हुआ कि यह दूसरे देशों के अनुभव का उपभोग करके इस उद्योग की त्रुटियों से बचा रहा। यहाँ की मशीनों के उद्योग में दो उल्लेखनीय त्रुटियां हैं, प्रथम तो यह कि यहाँ की बनी हुई मशीनें अमरीकन व योरोपियन मशीनों से अच्छी नहीं होतीं तथा द्वितीय यह है, कि यह देश बहुत ही उत्तम स्पात का प्रयोग करने में असमर्थ है।

कुछ विद्वानों का मत है कि जापान में लोहे व स्पात के उद्योग की उन्नति वास्तव में ऐसे राजनैतिक व सैनिक खम्भों पर हुई है, जिनका कि आर्थिक आधार बहुत ही क्षीण है, और साथ ही जिनका भविष्य जर्मनी की भाँति अन्धकार में है।

J. Russell Smith & M. Ogden Phillps—Industrial and Commercial Geography pages 175-176.

See John. E. Orchard, Japan's Economic Position, Megrow Hill Book Co. Inc. New York. 1930.

रसायन उद्योग—आधुनिक युग में रसायन उद्योग प्रमुख स्थान रखता है। इसका जन्म सर्व प्रथम जर्मनी में प्रथम महायुद्ध के पूर्व हुआ, परन्तु वास्तविक उन्नति उस समय से हुई जब से कि सूती, ऊनी व रेशमी वस्त्रों का उद्योग कुटीर से कारखाना उद्योग हो गया। वैसे तो निकोलस ले ब्लेंक (Nicolas La Blanc's) ने १७९१ में सोडा ऐश, नमक, गंधक का तेज़ाब व चूने से तैयार करने के विभिन्न साधन निकाले। परन्तु सबसे अधिक आश्चर्य जनक कार्य जर्मनी के वैज्ञानिकों ने किया। इन लोगों ने कोयले से रंग, नाइट्रोजन, गैसोलीन तथा अनेक गौण पदार्थ प्राप्त किये। न केवल इतना ही बल्कि कपूर व रबड़ भी कोयले से बनाये जाने लगे हैं। आजकल कोयले से लगभग दो लाख वस्तुओं से अधिक प्राप्त की जाती हैं।

जापान जो कि एशिया का सबसे बड़ा औद्योगिक देश है, उद्योग धन्धे में बहुत अधिक उन्नति कर गया। यद्यपि इस उद्योग का जन्म इस देश में प्रथम महायुद्ध के पश्चात् योरप व अमेरिका की प्रगति के बाद ही हुआ है। द्वितीय महायुद्ध के पहले यह बहुत उन्नति पर था। यही नहीं वरन् युद्ध के समय भी इसको बराबर प्रोत्साहन मिलता रहा, क्योंकि आधुनिक युद्ध वास्तव में रसायन उद्यम पर निर्भर है।

जापान को इस उद्यम की उन्नति के लिये निम्नलिखित सुविधायें प्राप्त हैं :—

(१) **भांति भांति के साधन** :—जापान एक ऐसा देश है, जहां ज्वालामुखी पर्वत होने के कारण अनेक प्रकार के रासायनिक पदार्थ मिलते हैं। जैसे—नमक, कोयला, गंधक, चूना तथा अन्य प्रकार की धातुयें इत्यादि।

(२) **शक्ति के साधन** :—जापान में अनेक छोटी छोटी सी तीव्र बहने वाली नदियों पर जल शक्ति उत्पन्न की जाती है। शक्ति भी अधिकतर ऐसे क्षेत्र में उत्पन्न की जाती है, जहां ऊपर लिखे खनिज पदार्थ उपयुक्त मात्रा में मिलते हैं।

(३) **अन्य उद्योगों में रसायनों की मांग** :—जापान में अनेक ऐसे उद्योग पाये जाते हैं, जिनमें रसायनों की मांग रहा करती है, उदाहरणार्थ खिलौने, कागज़, प्लास्टिक, सूती ऊनी व रेशमी वस्त्र उद्योग इत्यादि।

(४ **कुशल तथा अच्छे वैज्ञानिक** :—जापानी लोग कार्य करने में बड़े कुशल होते हैं, योग्य वैज्ञानिक हर समय नवीन खोज किया करते हैं, इसीलिये यहां वस्तुयें बहुत बड़ी मात्रा में तैयार की जाती हैं।

(५) **यातायात के उत्तम साधन तथा सरकार की सहायता** :—जापान में यातायात के भी अच्छे साधन हैं, अतः खनिज पदार्थ, जो इस उद्यम में अनिवार्य हैं, तुरन्त ही क्षेत्र से केन्द्रों को पहुंचा दिये जाते हैं। यहाँ की सरकार ने

इस उद्योग को अनेक सुविधायें प्रदान करके बड़ा प्रोत्साहन दिया है।

रसायन उद्यम तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है। पहला—भारी रसायन उद्योग, दूसरा—कोलतार से रसायन उत्पादन, तथा तीसरा विद्युत रसायन उद्योग। जापान में तीनों श्रेणियों के रसायन उद्योग उन्नति कर गये हैं। प्रथम में...अधिकतर गन्धक व उसकी मिश्रित वस्तुयें, नमक का तेजाब, सोडा एश, कास्टिक सोडा व रसायनिक खादें बनाई जाती है। इनका विशेष उपयोग उद्योग-धंधों में किया जाता है। द्वितीय कोलतार का रसायन उत्पादन—इसमें कोलतार से बेन्जोल, ऐन्थ्रसीन तथा ऐन्थ्रासीन तेल प्राप्त किया जाता है। ये तीनों वस्तुयें रंग बनाने, गोला बारूद तैयार करने तथा खाने व सूंघने के इत्र बनाने के काम आतीं हैं। प्लास्टिक, दवाइयाँ तथा फोटो खींचने के विभिन्न रसायन बनाने में भी इसका प्रयोग किया जाता है। तृतीय विद्युत रसायन उद्योग—यह पिछले कुछ ही वर्षों से उन्नति कर पाया है। इसके द्वारा यहाँ कैलशियम कारबाइड, अल्यु-मीनियम, मैगनेशियम तथा फैरो मैंगनीज़ जैसी बहुमूल्य वस्तुयें प्राप्त होती हैं। इस उद्योग की यहां बहुत अधिक उन्नति हुई है, क्योंकि यहां जल शक्ति बहुत अधिक मात्रा में उत्पन्न की जाती है।

इसी रसायन उद्योग के ही कारण जापान इतना अधिक शीशा व शीशे की वस्तुयें, रंग, दियासलाई, कागज, साबुन व प्लास्टिक की वस्तुयें तैयार करता है। युद्ध-पूर्व जापान की स्थिति इस उद्योग में ऐसी थी कि यह इन रासायनिक पदार्थों का व्यापार भी करता था। अब भी इस उद्योग में जापान की स्थिति एशिया में बड़ी महत्वपूर्ण है।

कागज का उद्योग:—

पूर्वी देशों में कागज सर्वप्रथम मंगोल जाति के लोगों ने बनाया था, इसके पूर्व, हमें प्रमाण मिलता है, कि प्राचीन काल में मिस्र के निवासियों ने 'पोपरिश' नाम की वस्तु, जो कागज से मिलती जुलती है, नील नदी के तट पर उगने वाले 'रीड' से तैयार की थी। इसके बाद वास्प' (Wasps) व होरनेट (Hornets) ने कागज वनस्पति व रेशेदार पदार्थों द्वारा तैयार किया। फिर एक अंग्रेज ने १८२७ में एक ऐसा कागज निकाला, जिसके बनाने में उसने ऐसपार्टो (Esparte) नामक घास का प्रयोग किया।

पूर्वी देशों में सस्ता कागज धान के भूसे से तैयार किया जाता था। जापान में यह उद्योग बहुत प्राचीन काल से घरेलू ढंग पर प्रचलित है। पहले यहां बहुत उत्तम कागज़ हाथ से बनाया जाता था। परन्तु आधुनिक कारखाने उद्योग का जन्म, यहां सन् १८७२ से हुआ है। इसके पश्चात् यहां बराबर इस उद्योग की उन्नति होती रही। आजकल जापान में दो भिन्न प्रकार

के कागज़ का उद्योग पाया जाता है। प्रथम, वह जो कुछ मोटा, प्राचीन ढंग का ब्रुश से लिखने योग्य होता है, द्वितीय वह जो कि विदेशी ढंग से तैयार किया जाता है।

प्राचीन ढंग के मोटे कागज़ का उत्पादन लगभग १ लाख टन प्रतिवर्ष है, और यह अधिकतर घरों में प्राचीन ढंग से तैयार किया जाता है। ये ढंग वास्तव में शताब्दियों पहले वहां चीन से प्रचलित हो गये थे। विदेशी ढंग के कागज़ का वार्षिक उत्पादन लगभग १० लाख टन प्रतिवर्ष है। यह आजकल बड़े पैमाने पर आधुनिक कारखानों में तैयार किया जाता है। ऐसे कागज़ को तैयार करने का ढंग वही है, जो कि योरोप व अमरीका में प्रचलित है। दैनिक पत्रिकाओं का कागज़ विशेष तौर पर इन कारखानों में तैयार होता है। कागज़ अधिकतर लकड़ी की लुग्दी, चिथड़े व रेशों से तैयार किया जाता है।

वास्तव में जापान को इस उद्योग के लिये अनेक सुविधायें प्राप्त हैं। लकड़ी की लुग्दी होकेडो व दक्षिणी साखालीन द्वीप के नुकीली पत्ती वाले बनों से तैयार की जाती है। बांस होन्शू द्वीप के दक्षिण में बहुत उत्पन्न होता है, चिथड़े व रेशेदार पदार्थ यहाँ के सूती, ऊनी व रेशमी वस्त्र के उद्योग से बहुत बड़ी मात्रा में प्राप्त हो जाते हैं। जापान के पास इस सुविधा के अतिरिक्त स्वच्छ जलशक्ति के साधन, श्रम, यातायात के साधन, घरेलू बाजार तथा अधिक मांग वाले क्षेत्र हैं। द्वितीय महायुद्ध से पूर्व इस उद्योग का इतना विकास हुआ था, कि किसी किसी वर्ष बहुत सा कागज बनाने के लिये लुग्दी कनाडा व संयुक्त राज्य अमरीका से भी मंगवानी पड़ती थी।

जापान में हम देखते हैं, कि कागज का उपयोग भिन्न होने के अतिरिक्त बहुत अधिक है। यहां चमड़े के स्थान पर मोटा कड़ा कागज़ तैयार किया जाता है, क्योंकि जीव जन्तुओं की कमी के कारण चमड़ा बहुत कम होता है। बहुत ही मज़बूत कागज़ जो कि घर की दीवारों व छतों पर, लगाया जाता है, अधिकतर सीवीड (Seaweed) व ऊड़ों (Udo)* की झाड़ी द्वारा तैयार किया जाता है। कुछ ऐसा 'साउन्ड प्रूफ' व 'वाटर प्रूफ' कागज़ तैयार किया जाता है, जो घरों के बनाने में प्रयोग किया जाता है। इसे भूकम्प सुरक्षित (Earthquake proof)

See Clayton D. Carus, Japan:—Its Resources and Industries published by Harper and Brothers, Newyork.

* Udo—a bush, also called paper mulberry, or paper plant, is grown on many Japanese hillsides for the very strong paper that can be made from its bark.

रखने के लिये बांस की खपाचें इनके बीच इस प्रकार लगा दी जाती हैं, कि भूकम्प के समय मकानों को बिलकुल हानि नहीं होती। जापानी लोग सुन्दर डिज़ाइन के रंगीन कागज़ों का प्रयोग, छाते, लालटेनों, पतंगों, नेपकिन, रूमाल, खिलौने तथा बेलबूटे आदि बनाने में भी करते हैं।

द्वितीय महायुद्ध के पूर्व यह उद्योग बहुत उन्नति पर था, और यहां का तैयार किया हुआ कागज़ प्रतिवर्ष बहुत बड़ी मात्रा में विदेशों को भेजा जाता था। परन्तु युद्ध के प्रभाव से इस उद्योग को बड़ी हानि उठानी पड़ी। सरकार का ध्यान इस ओर से हट गया, लोग अधिकतर अन्य उद्योगों की ओर तथा सैनिक शक्ति की ओर अधिक ध्यान देने लगे। उत्पादन इन दिनों बहुत कम होगया। अब जापान पुन: इस उद्योग की उन्नति की ओर ध्यान दे रहा है। आशा है कि भविष्य में यह अवश्य उन्नति करेगा।

खिलौनों का उद्योग :—

जापान एशिया में एक ऐसा देश है जिसने प्रारम्भ से ही कला कौशल में अपनी कुशलता व योग्यता का प्रमाण दिया है। यद्यपि इस देश ने इस ओर बहुत बाद में कदम उठाया, परन्तु फिर भी इसने विश्व को अपनी कला पूर्ण आश्चर्यजनक वस्तुयें दिखा कर चकित कर दिया। वैसे तो यह देश प्रारम्भ से ही पश्चिमी देशों की वस्तुओं की नकल करता रहा है, परन्तु आश्चर्य तो इस बात का है, कि वही वस्तुयें यह इतने सस्ते दामों में तैयार करता है, कि निर्धन से निर्धन व्यक्ति भी अपनी इच्छा पूर्ण कर सकता है।

इस योग्यता का प्रमाण हमें यहाँ के खिलौने के उद्योग से भली भांति मिलता है। जापानी शुरू से ही कला व दस्तकारी के कार्य में निपुण रहे हैं। यह उद्योग घरेलू तथा कारखाने दोनों ही रूप में पाया जाता है, परन्तु अधिकतर स्त्रियां व बच्चे इसे घरेलू ढंग पर ही करते हैं। जिस प्रकार स्विटज़रलैंड में घड़ी का उद्योग जूरा पर्वत के क्षेत्र में अधिक प्रचलित है, उसी प्रकार जापान में होन्शू द्वीप पर यह धन्धा अधिक पाया जाता है।

वास्तव में यह उद्योग अन्य उद्योग धन्धों के गौण पदार्थों पर निर्भर है। लोहे व स्पात, सूती, ऊनी व रेशमी वस्त्र, कागज़, रसायन तथा अन्य उद्योगों के सहारे यह उद्योग धन्धा पनप पाया है। वैसे इस उद्योग के लिए यहाँ अनेक सुविधायें पाई जाती हैं। खिलौने बनाने के लिये कच्चा माल ऊपर लिखे उद्योगों से प्राप्त हो जाता है। जल शक्ति आसानी से प्राप्त हो जाती है। संसार के सभी बच्चों को जापानी खिलौने प्रिय हैं, इसलिए प्रत्येक देश के बाजारों में इनकी मांग रहती है। यातायात के साधन अच्छे होने के कारण ये खिलौने बड़ी शीघ्रता से विदेशों को भेज दिये जाते हैं।

यहां खिलौने प्लास्टिक, टीन, रबड़, कपड़े, रेशम, कागज़, लकड़ी तथा अन्य धातुओं के बनायें जाते हैं। वास्तव में प्रत्येक जापानी घर में एक न एक खिलौने बनाने का कार्य अवश्य ही करता है। और सभी घर के लोग उसमें हाथ बटाते हैं।

द्वितीय महायुद्ध पूर्व खिलौनों का उत्पादन इतना अधिक था, कि विश्व में कदाचित कोई बाज़ार ऐसा न होगा, जहां जापानी खिलौना न बिकता हो। एशिया में जापान के लिये चीन व भारतवर्ष सबसे बड़े ग्राहक थे। इस उद्योग को युद्ध के समय बड़ी हानि उठानी पड़ी। लोगों ने इस ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया, सरकार ने आवश्यक सुविधायें देना पूर्णता बंद कर दिया, क्योंकि उस समय अत्यन्त आवश्यकता युद्ध सम्बन्धी वस्तुओं की थी।

अन्य उद्योग-धन्धे :—

जापान के अन्य उद्योग धन्धों में चीनी व शीशे के बर्तन बनाना मुख्य है। चीनी के बर्तन यहां बहुत सुन्दर व सस्ते बनाये जाते हैं। यहां की बनी हुई शीशे की वस्तुयें बहुत प्रसिद्ध हैं। सीमेन्ट का उद्योग उन जगहों पर स्थापित हो गया है, जहां चूना व कोयला अधिक मात्रा में पाये जाते हैं तथा जो घनी आबादी के निकट हैं। आटा पीसना, शक्कर (चीनी) तैयार करना तथा तेल निकालना कई स्थानों पर प्रचलित है। रबड़ की वस्तुयें बनाने के कारखाने अधिकतर होन्शू के दक्षिण में पाये जाते हैं। चमड़े की वस्तुयें बड़े बड़े नगरों में बनाई जातीं हैं। चटाइयां, ब्रुश, कंघे, घड़ियां तथा गटे पार्चे की वस्तुयें बनाने के यहां अनेक कारखाने पाये जाते हैं। होकेडो में पिपरमेंट भी तैयार किया जाता है। दियासलाई बनाने में जापान का एशिया में महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि इस उद्योग के लिये यहां अनेक सुविधायें पाई जाती है।

द्वितीय महायुद्ध के समय कुछ उद्योगों को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। कुछ तो पूर्णतः नष्ट हो गये। परन्तु अब, जब कि जापान को जनसंख्या समस्या हल करने के हेतु, पुनः अपनी आर्थिक दशा को संभालना है, तो इन उद्योग-धन्धों का पुनः निर्माण करना आवश्यक है।

मुख्य व्यवसाय तथा व्यापार (Important occupations and trade)

भारतवर्ष की भांति जापान में भी लोगों के भिन्न भिन्न व्यवसाय तथा व्यापार पाये जाते हैं। जिस प्रकार भारत में दो प्रकार के व्यवसाय हैं एक नौकरी करने का तथा दूसरा व्यापार करने का, उसी प्रकार यहां भी ये दो व्यवसाय पाये जाते हैं। ग्रामीण लोग अधिकतर व्यापार में ही लगे हुये हैं, ये लोग अधिकतर कृषि करते हैं, शहतूत के वृक्षों पर रेशम के कीड़े पालते हैं, जलाशय

ये मछलियां पकड़ते हैं, बगीचों में फल व फूल उगाते हैं । जिन स्थानों पर घने बन हैं, वहाँ लकड़ी काटना तथा चीरना प्रचलित है, कुछ लोग इन वनों में शिकार भी खेलते हैं । जो लोग कृषि करते हैं वे अपने यहां की उपजें बड़े बड़े नगरों में जाकर बेच देते हैं, उनके स्थान पर अपनी दैनिक आवश्यकता की वस्तुयें खरीद लेते हैं, रेशम के कीड़े पालने के कार्य में अधिकतर स्त्रियां लगी हुई हैं, कीड़ों की बड़ी देखभाल होती है, बड़ी सावधानी से रेशम ककून से निकाल कर बटते हैं, और बड़े २ व्यापारियों को बेच दिया जाता है । वास्तव में कृषक लोग कृषि भी करते हैं तथा साथ ही रेशम का व्यवसाय भी करते हैं और नदी, नालों, तालाब व झीलों से अतिरिक्त क्षेत्र में मछलियां पकड़ कर लोग बड़े बड़े नगरों के बाजारों में बेच भी आते हैं । समुद्र तट पर तो गांव के गांव मछुआओं के ही बसे हुए हैं । इनका कार्य मछली पकड़ना, कांटे व जाल बनाना तथा नावें बनाना इत्यादि है । नगर के बड़े बड़े व्यापारी लोग इन मछुआओं से मछलियां खरीद लेते है । जापानी फलों व रंग बिरंगे फूलों के बड़े शौकीन होते हैं । प्रत्येक के घर में कई सुन्दर गुलदस्ते होते हैं, व्यापार के दृष्टिकोण से फल तथा तरकारियां ही बोई जातीं हैं । फूल तो लगभग प्रत्येक घर के सामने बो दिये जाते हैं । होकेडो तथा दक्षिणी होन्शू में जिन स्थानों पर घने बन हैं, लोग लकड़ी काटने का काम करते हैं । होकेडो के वनों से जो लकड़ी प्राप्त होती है वह मुलायम तथा लुगदी व दियासलाई बनाने योग्य होती है । परन्तु यह कार्य बड़ी बड़ी फैक्टरियों में ही होता है । शिकार खेलने योग्य जीव-जन्तु जापान में अन्य देशों की अपेक्षा बहुत कम पाये जाते हैं । होकेडो के वनों में बालों वाले जीव जन्तु पकड़े जाते हैं, लोग इनसे प्राप्त किये हुये फर को बड़े लाभ पर व्यापारियों को बेच देते हैं। जीव-जंतुओं की कमी के कारण यहां दुग्धशालाओं व चमड़े का कार्य नहीं पनप पाया । जो कुछ भी जीवजन्तु पाये जाते हैं, उनमें गाय, भैंस, बैल, भेंड़, बकरी तथा सुअर आदि मिलते हैं, यह भी बहुत थोड़ी मात्रा में । गड़रिये इन भेंड़, बकरियों को चरागाहों पर चराते हुये दृष्टिगोचर होते हैं । ये लोग थोड़ी सी ऊन व दूध प्राप्त कर लेते हैं, इन्हीं वस्तुओं को नगरों में जाकर बेच देते हैं । जापानी गांवों में बड़ा शांत वातावरण रहता है- अपने अपने व्यवसाय में लोग लगे रहते हैं, घरों में स्त्रियां व बच्चे खिलौने बनाते हैं, रेशम का कार्य करते हैं तथा फूलों की सुन्दर सुन्दर डिज़ाइनें तैयार करते हैं । इन कलापूर्ण वस्तुओं को ये लोग नगरों में जाकर बेच देते हैं । कभी कभी बेचने की अपेक्षा अन्य वस्तु के बदले में दे दी जाती हैं । कोई २ वस्तु बड़ी अच्छी कीमत पर बिक जाती है । पतंगे बनाना, सैनिक आवश्यकता की वस्तुयें तैयार करना तथा चीनी व शीशे के बर्तन बनाना भी यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय है ।

बड़े बड़े नगरों तथा शहरों में जो लोग रहते हैं, वे प्रायः नौकरी ही करते हैं। परन्तु जो व्यापारी हैं, वे बहुत धनवान हैं तथा व्यापार बड़े पैमाने पर करते हैं। कुछ तो सरकारी नौकरी कर रहे हैं तथा कुछ निजी व्यवसाय में लगे हैं। बहुत से ऐसे भी हैं जो सैनिक हैं, तथा बहुत से शिक्षा विभाग में भी लगे हुये हैं। वैसे तो शहरों में जो नौकरी करने वाले हैं वे सेक्रेटरियेट, खाद्य विभाग, पुलिस, शिक्षा तथा सरकारी कारखानों में कार्य करते हैं। लेकिन ऐसे भी लोग हैं जो प्राइवेट फैक्टरियों में लगे हुये हैं। कारखानों में अधिकतर थोड़े वेतन पाने वाले मज़दूर ही कार्य करते हैं। इनको नित्य या साप्ताहिक वेतन दे दिया जाता है। यातायात के विभाग में भी बहुत से लोग कार्य करते हैं। रेलवे, मोटर तथा ट्राम गाड़ियों में बहुत से मनुष्य व स्त्रियां नौकरी करती हैं।

कभी कभी ग्रामीण लोग नगरों में अधिक धन कमाने की दृष्टि से चले आते हैं। परन्तु भाग्य से हताश होकर उन बेचारों को रिक्शे चलाने पड़ते हैं, कुलीगीरी करनी पड़ती है, दफ्तरों में चपरासियों का कार्य करना पड़ता है या बड़ी बड़ी गृहस्थियों में नौकरी पड़ती है।

द्वितीय महायुद्ध के प्रभाव से जापान में इतनी अधिक बेकारी फैली हुई है कि कुछ लोगों को जान के लाले पड़ रहे हैं। जितने भी फौजी विभाग थे, बन्द हो गये। लोगों के पास पैसा नहीं रहा। सरकार का कोष भी समाप्त हो गया। खाद्य-पदार्थों की कमी हो गई, उद्योग धन्धे कम रह गये साथ ही विदेशी बाजार हाथ से निकल गये। हजारों मनुष्य शरणार्थी हो गये, जिनके न रहने को मकान न खाने को भोजन और न पहनने को वस्त्र ही थे।

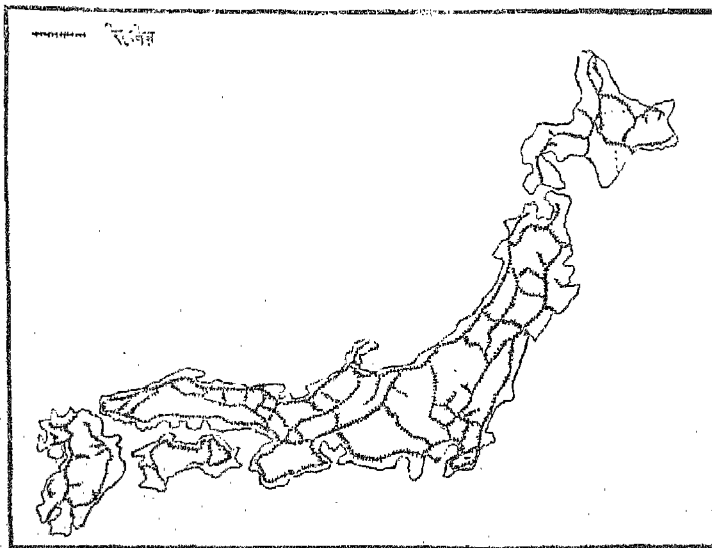
जापान सरकार ने युद्ध समाप्त हो जाने पर इस समस्या की ओर विशेष ध्यान दिया। आर्थिक दशा को सुधारने के हेतु यहां की सरकार ने योजनायें बनाईं। योजनाओं में इन उद्योग धन्धों का विकास विदेशी व्यापार का निर्माण तथा विदेशी वस्तुओं का आयात इत्यादि मुख्य वस्तुयें थीं। अब स्थिति ऐसी हो गई है, कि आशा की जाती है, कि बहुत जल्द ही जापान बेकारी की समस्या को को हल कर लेगा और पुनः एशिया में वही स्थान प्राप्त कर लेगा, जो कि युद्ध पूर्व प्राप्त किये था।

यातायात के साधन (Means of Transport & Communication)

जापान एक घना बसा हुआ देश है तथा एशिया में उद्योग-धन्धे व व्यवसाय के दृष्टिकोण से इसका बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। यह स्वाभाविक है कि एक ऐसे देश में जिसमें कि इतनी अधिक औद्योगिक उन्नति हुई हो, उतने अच्छे यातायात के साधन पाये जायें। जापान एक पर्वतीय देश है, जिसका क्षेत्रफल अन्य औद्योगिक देशों की अपेक्षा बहुत कम है, समतल भूमि यहां बहुत कम पाई जाती है।

परन्तु फिर भी इस देश ने यातायात के साधनों की उन्नति की है, वास्तव में यातायात के साधनों की उन्नति धंधे तथा व्यापार के साथ ही साथ हुई है। जैसे ही जैसे यहाँ व्यापारिक मार्गों की आवश्यकता बढ़ी, वैसे ही वैसे इन साधनों में विकास होता गया। दुर्भाग्य से जापान एक ऐसे पृथ्वी के पर्त पर स्थित है जो बहुत कमजोर है, जिसके कारण यहाँ प्राय: भूकम्प आया करते हैं। इन भूकम्पों से यातायात के साधनों को बड़ी हानि होती है। जापान के किसी न किसी क्षेत्र में एक हल्का सा भूकम्प नित्य आ ही जाता है, परन्तु किसी किसी वर्ष बड़ा भयंकर भूकम्प आ जाता है, जिसकी वजह से अनेक व्यापारिक मार्ग नष्ट हो जाते हैं। जापान सरकार इन व्यापारिक मार्गों की विशेष तौर पर रक्षा करती है। मुख्य यातायात के साधनों में रेलें, सड़कें, जलमार्ग तथा टेलीफोन व बेतार के तार यन्त्र इत्यादि हैं।

सर्वप्रथम १८७२ में एक रेलवे लाइन टोकियो से १७ मील की दूरी पर स्थित याकोहामा तक बनाई गई थी। इसके बाद इसमें धीरे धीरे उन्नति होती गई। सन् १६३३ में रेलवे लाइनों की लम्बाई ब्रिटिश द्वीप समूह की कुल लाइनों की आधी से अधिक लगभग १३३५०० मील थी। [इन रेलवे लाइनों की कुल लम्बाई मार्च १६५४ को २७७७३ किलोमीटर थी। इसमें से राष्ट्रीय रेलवे लाइनें २०,००८



जापान की रेलें

किलोमीटर (१८७७ कि० विद्युत) तथा निजी रेलवे लाइनें ७७६५ किलोमीटर (५६३६ कि० विद्युत) थीं।] आजकल जापान में तीन चौथाई रेलवे सरकार

के अधिकार में है यह इतनी घनी है कि प्रत्येक टापू के बन्दरगाहों को छोटे बड़े आन्तरिक नगरों से मिलती है। इन रेलों पर १९५३ में ७६२,०००,००० व्यक्तियों ने यात्रा की तथा १५,३०,४०० टन पर रेवेन्यू किराये के तौर पर प्राप्त हुआ। यहां की रेलवे का गेज ३ फीट ६ इंच है। सन् १९४३ तक यहां की कुछ रेलवे लाइनों को स्टैण्डर्ड गेज (४ फीट ८½ इंच) में १४ करोड़ पौंड की लागत में परिवर्तित कर दिया गया। कुछ क्षेत्रों में विद्युत् शक्ति से चलने वाली रेलवे लाइनें बनाई जा रहीं हैं बहुत सी बन भी गई हैं। तथा और भी अधिक बनाने की योजनायें हैं। टोकियो के पड़ोस के क्षेत्र में, ओसाका, कोबी, व याकोहामा आदि नगरों के चारों ओर विद्युत् शक्ति से चलने वाली रेलवे लाइनें पाई जाती हैं। आज यहां दो प्रतिशत से अधिक विद्युत् रेलवेज़ हैं। इनकी चाल मामूली कोयले से चलने वाली रेलों से अधिक होती है। यहां फास्ट एक्सप्रेस ट्रेन भी चलती हैं। टोकियो से ओमोरी (जो उत्तरी होन्शू में स्थित है) ४५७ मील दूर है, साधारण तीव्र गति से चलने वाली रेलगाड़ी केवल १७ घण्टे में पहुंचा देती है। इसी प्रकार टोकियो से पश्चिमी तट पर शिमोनोसेकी ६८२ मील दूर है और यहां पहुंचने के लिये साधारण तीव्र गति से चलने वाली रेलगाड़ी को केवल बीस घन्टे लगते हैं। ऊमोरी रेलवेफरी सर्विस होकेडो को तथा शिमोनोसेकी से कोरिया को नित्य होती है। क्यूशू व शिमोनोसेकी रेल द्वारा मिले हुये हैं यद्यपि मध्य में समुद्र है, परन्तु रेलवे लाइन खाड़ी के नीचे सुरंग बना कर निकाली गई है। द्वितीय महायुद्ध के समय सैनिक आवश्यकता के हेतु कुछ नई रेलवे लाइनें भी बनाई गई हैं, परन्तु लाभ की अपेक्षा हानि अधिक हुई क्योंकि कुछ क्षेत्र शत्रुओं के बमों से नष्ट हो गये थे। अब पुनः इनको सुधारने की योजना है।

मध्यकालीन युग में जापान में कई उत्तम सड़कें पाई जातीं थीं, यह सड़कें देश के गवर्नमेंट केन्द्र तथा धार्मिक स्थानों को परस्पर मिलातीं थीं। इन पर अधिकतर व्यापारी, सरकारी नौकर तथा धार्मिक यात्री ही चला करते थे। ये सड़कें मोटर गाड़ियां चलाने योग्य नहीं थीं। क्योंकि कुछ तो ऐसे क्षेत्रों से होकर निकाली गईं थीं जोकि पर्वतीय थे, और कुछ ऐसी थीं, जो कि बहुत तंग और कच्ची थीं। इन सबों में उस समय की बनी हुई सबसे प्रसिद्ध टोकेडो (Tokaido)* सड़क है जो कि उस समय की राजधानी क्योटो को टोकियो से मिलाती थी। इस समय इस सड़क की लम्बाई ३०० मील है। एक सड़क उत्तर की ओर जाती है। कुछ ऐसी भी सड़कें भी हैं, जो पश्चिमी तट को पूर्वी तट से मिलाती हैं, वास्तव में यह प्राचीन सड़कें आधुनिक मोटर गाड़ियों के लिये व्यर्थ ही हैं, क्योंकि

* See George B. Cressey—Asias Lands & its People—Page 206

ऊपर लिखी हुई कठिनाइयों के अतिरिक्त इनके दोनों किनारों पर लम्बे लम्बे वृक्ष पाये जाते हैं। मोटर गाड़ियाँ चलाने योग्य सड़कों का वास्तव में यहाँ अभाव है। यहां की कुल सड़कों की लम्बाई ६२१४०० मील से अधिक है। [सड़कों की कुल लम्बाई १९५३ में (नागरिक एवं स्थानीय सड़कों को छोड़ कर) १४०,६५७ किलो० थी। राष्ट्रीय सड़कों की लम्बाई २४०५१ किलो० थी, इसमें से पक्की केवल १४११ किलो० थी। शेष ११६६०५ किलो० थीं, जिसमें से १०००६ पक्की थीं।] इसमें से कुछ तो ऐसी हैं जो कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं और वह भी किसी किसी भाग में बड़ी तंग होने के कारण व्यापार की दृष्टिकोण से व्यर्थ ही हैं। एक सबसे बड़ी कठिनाई इस देश में यह है, कि यहां अधिक भूकम्प आने के कारण, प्राय: उत्तम से उत्तम सड़कें भी नष्ट हो जातीं हैं। पिछले वर्षों, दुर्भाग्य से इनकी उन्नति की ओर कोई विशेष ध्यान भी नहीं दिया गया। यहाँ लगभग सवा लाख से अधिक मोटर गाड़ियाँ हैं, टैक्सियों व बसों की संख्या अधिक है। प्राइवेट लोगों के लिए मोटर गाँड़ियाँ रखना बड़ा कठिन हैं, क्योंकि पेट्रोल का उत्पादन अधिक न होने की वजह से विदेशों से मंगाया हुआ मंहगा पड़ता है।

प्राचीन काल से जापान में जल मार्गों का बड़ा महत्व रहा है, क्योंकि यह देश चारों ओर समुद्र से घिरा हुआ है, तथा प्रारम्भ से ही यहाँ के लोग अच्छे मल्लाह रहे हैं। परन्तु जल मार्गों द्वारा विदेशी व्यापार १८५३ के पश्चात् ही शुरू हुआ है, क्योंकि इसके पूर्व टोकुगावा राज्य में बड़े बड़े जहाजों का बनना मना था, और जो कुछ भी व्यापार प्रचलित था, वह केवल समुद्र पर ही होता था। वास्तव में बड़े बड़े जहाज़ों का बनना बहुत बाद में प्रारम्भ हुआ हैं। सर्व प्रथम आधुनिक पोत १८९१ में बना था। उस समय से पोत निर्माण कार्य में बराबर उन्नति होती गई। इस उन्नति का अनुमान हम १९४० में ६०००००० टन के कुल रजिस्टर्ड वज़न (Tonnage) से लगा सकते हैं। यहाँ के जहाज़ी बेड़े का स्थान उस समय विश्व में तृतीय था। वास्तव में यह बड़े आश्चर्य की बात है, क्योंकि जापान के पास पेट्रोल की बहुत कमी है। फिर भी जो नये जहाज़ उन दिनों बने वह तेल की शक्ति से चलते थे। द्वितीय महायुद्ध के प्रभाव से यहां के जहाजी बेड़ों को बड़ी हानि हुई, युद्ध पश्चात् सन् १९५० में टनेज केवल १,७००,००० टन रह गया। वैसे तो जापान में अन्तर्राष्ट्रीय प्रख्याति के केवल तीन बन्दरगाह याकोहामा, ओसाका व कोबी ही हैं। इनसे ८८ प्रतिशत से अधिक वाणिज्य होती है, आयात ही केवल ८० प्रतिशत हैं। लेकिन निम्न श्रेणी के मिलाकर कुल बन्दरगाह ७५८ है, जिनमें से ३८ ऐसे हैं, जिन पर विदेशी पोत व्यापार के दृष्टिकोण से आया जाया करते हैं। विश्व मानचित्र पर देखने से हमें प्रतीत होता है, कि जापान में दो प्रमुख जलमार्ग हैं। पहला पूर्व की ओर जो

सेनफ्रांसिस्को, वैनकुवर, सीटेल व पनामा हॉनोलूलू होते हुये जाता है, दूसरा वह जो चीन के तट की ओर से होता हुआ इण्डोचीन, सिंगापुर, भारतवर्ष व लंका को जाता है। यह मार्ग योरोप तक चला गया है।

अन्य जापान के बन्दरगाहों से साधारण व्यापार होता है। नेगोया व मोजी केवल चार प्रतिशत विदेशी व्यापार करते हैं, शेष हेकोडेट, शिमूज़ू, योकोइची तथा नागासाकी एक प्रतिशत से भी कम व्यापार करते हैं।

विदेशी व्यापार (Foreign Trade):—

यह एक बड़े आश्चर्य की बात है कि एशिया में जापान एक तुच्छ देश से इतना शक्तिशाली राज्य बन गया। वास्तव में इसको प्रोत्साहन उसी समय से मिला है, जबसे कि संयुक्त राज्य जहाज़ी बेड़े के कमाण्डर पैरी ने सन् १८५४ में जापानी गवर्नमेंट को इस बात पर राज़ी किया कि वह अपने यहाँ के बन्दरगाहों को विदेशी व्यापार के लिये खोल दे। यही वह समय था, जबसे जापान के द्वार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिये खुले। परन्तु व्यापार में उन्नति प्रथम व द्वितीय महायुद्धों के समय ही हुई है। केवल ८० वर्ष के अन्दर जापान की आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए, जन संख्या दुगुनी हो गई, विदेशी क्षेत्र प्राप्त हो गये तथा कला कौशल की वस्तुओं का निर्माण हुआ, इनसब परिवर्तनों का जापान के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर गहरा प्रभाव पड़ा। सन् १८८८ में इसका विदेशी व्यापार १४४,०००,००० येन प्रतिवर्ष था। यह १९३८ में बढ़कर ५३३१०००००० येन हो गया। इस वृद्धि का कारण वह सुविधायें हैं, जो कि जापान के अतिरिक्त किसी भी अन्य देश को प्राप्त नहीं हैं।

यह भी एक आश्चर्य की बात है कि जापान में मुख्य कच्चे मालों का अभाव होते हुए भी, इतने उद्योग धन्धे तथा व्यवसाय पाये जाते हैं। वास्तव में इस अभाव के कारण आयात व्यापार को प्रोत्साहन मिला है। उद्योग-धन्धे तथा व्यवसाय अधिक पाये जाने के कारण यहां के निर्यात व्यापार की बहुत अधिक उन्नति हुई है। कलाकौशल की वस्तुयें विदेशी बाज़ारों में अन्य देशों की अपेक्षा बहुत सस्ती बिकती हैं, क्योंकि सस्ता व कुशल श्रम, शक्ति के साधन तथा बाज़ारों के समीप होने के कारण इन वस्तुओं का मूल्य अधिक नहीं बढ़ पाता, यही कारण है कि प्रति वर्ष जापान की बनी हुई वस्तुओं की बड़ी मांग रहती है। यदि मान लिया जाय कि जापान से निर्यात की जाने वाली वस्तुओं के मूल्य बढ़ जायें तो यह सम्भव है, कि विदेशों में भी उद्योग धन्धे उन्नति करने लगें। सच तो यह है कि जब तक जापानी वस्तुओं का विदेशी बाजारों में मूल्य कम रहेगा तब तक यह देश

In 1938 Japan's share of total world trade was 3·7 percent, United State's 11·8 percent and United Kingdom's 13·77 percent.

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में प्रख्याति प्राप्त करेगा, उसके बाद नहीं। परन्तु प्रारम्भ से ही इस देश का ध्येय यह रहा है, कि विदेशी बाजारों को अपनावे तथा अपनी कलाकौशल की वस्तुओं को बेचकर खाद्य पदार्थ व कच्चे माल को विदेशों से खरीदे।

वास्तव में प्रथम महायुद्ध के समय जापान को अपने विदेशी व्यापार में बड़ा लाभ हुआ। उन दिनों इसका निर्यात आयात से कहीं अधिक था। युद्ध समाप्त होने पर इसको कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा परन्तु फिर भी इसने विदेशी व्यापार में अपना स्थान ऊंचा ही रक्खा। सन् १९३० के पश्चात् इसके सम्मुख कुछ ऐसी जटिल समस्यायें आईं, जिनके फलस्वरूप इसको बड़ी हानि उठानी पड़ी। यह समस्यायें इसलिये उत्पन्न हो गई थीं, कि बहुत से राष्ट्रों ने विदेशी आयात होने वाली वस्तुओं पर कर लगा दिया, तथा राष्ट्रीय वस्तुओं का निर्माण आरम्भ कर दिया था। परन्तु फिर भी हम देखते हैं कि जापान ने अपनी चतुराई व कुशलता से थोड़े ही समय में इन समस्याओं को हल कर लिया और १९३१ से ३४* तक के समय में केवल यह ही एक ऐसा देश रहा, जिसने अन्तर्राष्ट्रीय कठिनाइयां होते हुए भी अपने विदेशी व्यापार को स्थिर रखा।

जापान को अपनी स्थिति बनाये रखने के हेतु कुछ आवश्यक वस्तुयें आयात करनी ही पड़ती हैं, उदाहरणार्थ कपास, ऊन, चमड़ा, पेट्रोलियम, चाय, लोहा, कोयला तथा मशीनें इत्यादि। खाद्य पदार्थ में तो कहा जा सकता है कि द्वितीय महायुद्ध पूर्व उसकी स्थिति सन्तोषजनक थी। सच तो यह है कि चाहे जापान अपना निर्यात बन्द कर दे, परन्तु फिर भी उसको ऊपर लिखी हुई वस्तुयें अवश्य ही आयात करनी होंगी। और यदि आयात करेगा तो इनके मूल्य को चुकाने के लिये इसे रेशम, मछलियाँ, कलाकौशल की वस्तुओं को निर्यात करना ही होगा।

जापान के विदेशी व्यापार में गत पचास वर्ष के समय में बड़े परिवर्तन हुये हैं, पहले जापान तैयार की हुई वस्तुयें आयात किया करता था और अब अधिकतर कच्चा माल आयात करता है। इसी प्रकार निर्यात में पहले कच्ची रेशम अधिक बाहर भेजी जाती थी और अब सूती वस्त्र तथा कलाकौशल की वस्तुएं भेजी जाती हैं। सन् १९१३ में तैयार की हुई वस्तुएं २९ प्रतिशत तथा १९३८ में ५९ प्रतिशत निर्यात की गईं। द्वितीय महायुद्ध पूर्व जो

*In 1934 there were certain marked changes due to world depression. Among exports raw silk rose to 13 percent, textiles rose to 35 percent, cotton goods 23 percent & rayon 5 percent. And among imports raw cotton 32 percent, raw wool rose to 8 percent and petroleum represented 4 percent.

वस्तुयें आयात की जाती थीं, उनमें कपास, ऊन, लोहा, स्पात, खनिज पदार्थ, पेट्रोलियम सम्बन्धी वस्तुयें, रसायन, मशीनें व औजार इत्यादि मुख्य थीं। और उस समय जो वस्तुयें निर्यात की जाती थीं, उनमें सूती वस्त्र, कच्ची रेशम, बनावटी रेशम, मछलियाँ, लकड़ी तथा कलाकौशल की वस्तुयें आदि मुख्य थीं।

जापान के विदेशी व्यापार के अध्ययन में एक बात यह ध्यान में रखनी चाहिये कि यहां विदेशी व्यापार के अतिरिक्त राष्ट्रीय व्यापार (Inter-imperial) भी होता है। इन दोनों प्रकार के व्यापारों में कुछ भिन्नता है। राष्ट्रीय व्यापार का तत्पर्य यह है—जापान के कुछ आर्थिक भाग हैं, जैसे आन्तरिक क्षेत्र तथा बाहरी क्षेत्र। बाद वाले क्षेत्र का कार्य यह है, कि यह पहले वाले क्षेत्र को खाद्य पदार्थ तथा कच्चा माल प्रदान करें। परन्तु फिर भी आन्तरिक क्षेत्र की सभी आवश्यकताओं को बाहरी क्षेत्र पूर्ण नहीं कर पाता। यही कारण है कि राष्ट्रीय व्यापार का महत्व अधिक है।

जब कभी भी जापान की मुद्रा का मूल्य घट जाता है, अथवा अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य बढ़ जाता है तब उसको बड़ी हानि उठानी पड़ती है। क्योंकि आवश्यक वस्तुओं के लिये उसे विदेशों पर निर्भर रहना पड़ता है। इस समस्या को हल करने के लिये जापान ने पूर्वी एशिया में एक ऐसा साधन बना रखा था, जिसे 'येन ब्लोक' (Yen Bloc) कहते हैं। इसका लाभ उस समय होता है, जब कि संसार में माल आवश्यकता से अधिक होता है, और समस्त राष्ट्र अपनी वस्तुओं को लागत से भी कम व्यय पर बेचने को तैयार रहते हैं।

पिछले वर्षों जापान का सबसे अधिक व्यापार चीन से, उसके बाद संयुक्त-राष्ट्र अमरीका से होता था। बाद वाले देश पर जापान को कपास, तेल, लोहा तथा मोटर कारों के लिये निर्भर रहना पड़ता था। ब्रिटेन का स्थान तीसरा था, क्योंकि इसका अधिक व्यापार भारतवर्ष से ही हुआ करता था। युद्ध के समय जापान को विदेशी व्यापार में बड़ी हानि उठानी पड़ी, क्योंकि विदेशों से वस्तुओं का आयात पूर्ण रूपेण बन्द हो गया। फलस्वरूप जापान के निर्यात पर उसका प्रभाव पड़ा।

युद्ध पश्चात जापान ने अपनी स्थिति संभालनी प्रारम्भ कर दी। सन् १९५१ तक जो कुछ भी उन्नति हुई, इससे ऐसा प्रतीत हुआ कि जापान शीघ्र ही आयात-निर्यात व्यापार में उन्नति कर लेगा, परन्तु १९५२ में विदेशी व्यापार घट

Compare 1937 with 1934—Imports: Raw cotton, 23 percent, raw wool 8 percent, petroleum 6 percent, and Exports: Raw Silk 13 percent, cotton tissues and yarn 20 percent, rayon 5 percent.

जाने के कारण उल्टा प्रभाव हुआ। इस समस्या को जापान उसी समय हल कर सकता है जब कि वह अपना व्यापार उन्हीं राष्ट्रों से बढ़ाये, जो कि शान्त हैं, तथा जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी है।

The table below shows the progress of Japan's Foreign trade from 1946 through the first six month of 1952. (Unit 1 $ million)

आयात और निर्यात वर्ष	निर्यात	आयात			आयात पर निर्यात की अधिकता	
		तिजारती खाता	अमरीकी सहायता	योग	तिजारती खाता	अमरीकी सहायता सहित
१९४६ *	१०३	११३	१०३	३०६	(—) ३	(—) २०३
१९४७	१७४	११९	४०४	५२३	(+) ५५	(—) ३४९
१९४८	२५८	२२२	४६१	६८३	(+) ३६	(—) ४२५
१९४९	५१०	३७०	५३५	९०५	(+) १४०	(—) ३९५
१९५०	८२०	६१३	३६१	९७४	(+) २०७	(—) १५४
१९५१	१३५४	१८७१	१८२	२०५३	(—) ५१७	(—) ६९९
१९५२ *	६९३	९९२	—	९९२	—	(—) २९९

* Part of 1945 inclusive * January-June

सन् १९५१ में जापान का निर्यात व्यापार १,३५४,०००,००० (डोलर) मूल्य का हुआ, १९५० के निर्यात की अपेक्षा यह ६५ प्रतिशत अधिक था, और १९५० के निर्यात का मूल्य ८२०,०००,००० (डोलर) था। आयात का मूल्य १९५१ में २०५३०००००० डोलर था, जो लगभग १९५० के मूल्य (९७४,०००,००० डोलर का) ११० प्रतिशत।

जापान की उन वस्तुओं के प्रकार, जिनके ऊपर विदेशी व्यापार निर्भर है, कई रूपों में परिवर्तित हो चुके हैं। द्वितीय युद्ध पूर्व लगभग ८० प्रतिशत निर्यात की वस्तुयें औद्योगिक हुआ करती थीं, तथा ७० प्रतिशत आयात की वस्तुयें खाद्य पदार्थ तथा अन्य कच्चा माल इत्यादि थीं। महायुद्ध पश्चात् औद्योगिक वस्तुओं का कुल निर्यात का ९० प्रतिशत १९५१ में था तथा इसी वर्ष खाद्यपदार्थ तथा कच्चा माल कुल आयात की हुई वस्तुओं का ८६ प्रतिशत था।

सन् १६५२-५३ में निम्न देशों के निर्यात तथा आयात (पूर्ण मात्रा १०लाख येनों में) जो २७७७ डालर अमेरिकन के बराबर है

देशों के नाम	निर्यात		आयात	
	१९५२	१९५३	१९५२	१९५३
एशिया :—				
भारत व पाकिस्तान	५५.६१७	१५.२३९	५६०१२	६५९४२
चीन	२२.०५५	१.६३४	२८.८४०	१०.६६२
इन्डोनेशिया	२१.५४३	३७.९५७	९८९५	१७.५८५
हॉंगकॉंग	२९.०५२	२२.८००	२४७४	२.८५२
कोरिया	१७.९४४	३५.४५९	७३५१	३.०८४
मलाया	४१६०	२६६१	१९५५१	१८१४७
फिलीपाइन	७०६६	९९१६	१८३७४	२२५८४
थाई लैंड	१३०९६	१८९१८	२२४८६	३०४७४
एशिया के अन्य भाग	६५७०४	८८४४६	६३२९३	११६२०२
उत्तरी अमेरिका	९४३८२	१०५५२९	३६२.०६८	३६२.४०३
यू० एस० ए०	८२.५०४	८१.६६३	२७६.५६७	२७२.०३३
दक्षिणी अमेरिका	१३.२०५	२०.९७०	१५.८४१	४५२९७
योरोप	६४.३८१	९२.७४८	४९.५३०	७३०६८
संयुक्तराष्ट्र	२६.३३०	११.९३१	१३२२०	१७६६६
फ्रांस	१०१४७	४२४३	३११४	९८२७
जर्मनी	५८३०	५६९७	८७०८	१५७९८
अफ्रीका	३४००३	४६३६१	१९०९१	२०११३
आस्ट्रेलिया	१६०३५	७७०४	५५५३४	७३०२५

जापान का व्यापार (येन मिलियन में)

	१९५०	१९५१	१९५२	१९५३
आयात	३४८,१९५,५८३	७३७,२४१,२९८	७३०,३५२, ००	८६७,४७३,०००
निर्यात	२९८,०३३,२१०	४८८,७७६,७७५	४५८,२४८,०००	४५८,९४३,०००

सन् १९५१ में मुद्रा क्षेत्र से व्यापार

निर्यात	प्रतिशत	आयात	प्रतिशत
डौलर क्षेत्र	२३·४	डौलर क्षेत्र	५८·७
स्टर्लिंग क्षेत्र	४५·२	स्टर्लिंग क्षेत्र	२३·१
स्वतंत्र क्षेत्र	३१·४	स्वतंत्र क्षेत्र	१८·२

महायुद्ध से पूर्व मुद्रा क्षेत्रों से व्यापार

निर्यात	प्रतिशत	आयात	प्रतिशत
डौलर क्षेत्र	४२	डौलर क्षेत्र	४३
स्टर्लिंग क्षेत्र	२२	स्टर्लिंग क्षेत्र	२३
स्वतंत्र क्षेत्र	३६	स्वतंत्र क्षेत्र	३४

नीचे दी गई तालिका उन परिवर्तनों को प्रकट करती है जो १९३५ से १९५१ के बीच हुये हैं :—

निर्माण में परिवर्तन
(निर्यात तथा आयात)

भिन्न प्रकार का तिजारती सामान	औसत निर्यात			औसत आयात		
निर्यात तथा आयात का योग	१००·०	१००·०	१००·०	१००·०	१००·०	१००·०
खाद्य सामग्री	९·५	६·३	५·१	२३·३	३४·५	२४·३
कच्चा माल	५·०	२·९	२·८	४८·३	४३·८	६१·७
निर्मित सामान जो उद्योग-धन्धों के काम आता है।	१९·९	२५·७	२९·४	१७·२	६·६	६·६
पूर्ण निर्मित सामान	६०·८	६४·४	६०·८	९·५	१५·१	७·३
भिन्न प्रकार का सामान	४·८	०·७	१·९	१·७	—	०·१

कच्चा माल (आयात) कपास, ऊन, कोयला, लकड़ी, कच्ची खाल, कच्ची रबर।

अर्ध-निर्मित उत्पादन (निर्यात) सूती धागा, कच्चा रेशम, बनावटी रेशा, ऊनी धागा, स्पात, रंगाई का सामान, मछली का तेल, औद्योगिक रसायन इत्यादि।

(आयात) लुग्दी, चमड़ा, धातुयें, फासफोनाइट, कच्चा तेल रंगाई का नक़ली सामान।

निर्मित उत्पादन (निर्यात) द्वितीय श्रेणी के रेशों के उत्पादक, मशीन और विभिन्न प्रकार के माल।

(आयात) जलाने का तेल, अन्य तेल तथा दवाइयाँ।

भिन्न प्रकार के प्रधान आयात का अनुपात

Unit 1 Dollar Million

विभिन्न प्रकार की व्यापारिक वस्तुएं	ओसत १९३४–३६		१९५०		१९५१		१९५२ (जनवरी से जून तक)	
	अनुपात का मूल्य		अनुपात का मूल्य		अनुपात का मूल्य		अनुपात का मूल्य	
खाद्य सामग्री	२२१·८	२३·३	३३६·६	३४·६	५०३·१	२४·६	[illegible]८१·०	३१·०
रेशम का कच्चा माल	२८८·७	३०·३	३४५·५	३५·५	[illegible]८७·०	३३·५	३१३·८	३४·७
कच्चा सूत	२२४·८	२३·६	२७७·२	२८·६	४[illegible]९·०	२२·९	२१९·२	२४·२
ऊन	५६·०	५·९	५९·१	६·०	१[illegible]·७	९·६	८५·७	९·५
सन और पटसन	७·९	०·८	९·२	१·९	२१·३	१·०	८·९	१·०
दवाइयाँ	३८·७	४·७	९·६	१·०	३६·९	१·८	१७·६	१·९
खाद व कच्चा माल	२३·७	२·५	३१·६	३·२	३८·१	१·९	३६·३	४·०
लोहा	१०·८	१·१	१४·५	१·५	५८·१	२·८	२२·२	२·५
कोयला	१६·३	१·७	१०·३	१·१	४८·[illegible]	२·४	५२·१	५·६
नमक	४·८	०·५	७·९	०·८	३४·२	१·७	११·८	१·३
तेल व चर्बी	१७·६	१·९	१२·६	१·३	१७·२	०·९	४·५	०·५
मिट्टी का तेल	३०·८	३·२	३२·१	३·३	९७·३	४·८	३३·५	५·९
कच्चा रबर	१७·६	१·९	४०·२	४·१	७८·६	३·८	२२·१	२·४
मशीन	४५·७	४·७	६·८	०·७	५[illegible]·३	२·८	३४·६	३·८
अन्य	२३५·४	२४·८	१२२·२	१२·९	३८९·४	१९·०	३२·६	६·४
योग	९५०·९	१००·०	९६९·९	१००·०	२,०४६·८	१००·०	९०५·१	१००·०

सन् १९५३ ई० के प्रमुख आंकड़े १००० मेट्रिक टनों में पूर्ण मात्रा तथा दस लाख येनों में मूल्य सहित (दस लाख येन = २७७७ डालर— ३६० येन = १ अमेरिकन डालर)

आयात C.I.F.	कुल मात्रा	मूल्य	निर्यात F.O.L.	कुल मात्रा	मूल्य
गेहूं और आटा	१७११	५१·१६३	सूती कपड़ा	९१४·००९	६४·५०३
चावल	१०७९	७७·३११	बनावटी रेशमी कपड़ा	३८०·५५१	२७·१५८
सोयाबीन	४४८	२०·०२९	रेशमी कपड़ा	१७·८९२	३·१३१
शक्कर	१०९४	४३·७२८	ऊनी कपड़ा	४·९८०	२·४५०
नमक	१५८६	१५·२५६	कच्चा रेशम	९·५७३	१५·७१०
खाद	१३०	१८	सूती धागा	८·५०१	१५·४१८
कच्ची रबर	४९२१	३२·३२९	बनावटी रेशमी धागा	२१·२०१	६·७२७
कोयला	—	५७·८७१	बुना हुआ सामान	४१·९४०	९·३२२
मशीन के भाग	—	३२·५६९	कयला	१०·०९५	४९८

[बुनी हुई वस्तुओं सहित कपड़े का सामान १००० वर्ग गजों में; बटा हुआ सूत व रेशम १००० पौंडों में]

उपरोक्त लिखी हुई मुख्य निर्यात वस्तुओं की तालिकायें हैं, जो वास्तव में अपेक्षित महत्ता स्पष्ट करती हैं, यह वस्तुयें आवश्यकतानुसार कुल निर्यात के हिसाब से हैं। इसमें प्रमुख वस्तुओं में रेशेदार वस्तुएं हैं। जिसके पश्चात् धातुयें, धातुओं की बनी हुई वस्तुयें, मशीनें तथा खाद्य पदार्थ सम्मिलित हैं, यह वस्तुयें कुल निर्यात की ८० व ९० प्रतिशत के मध्य हैं। एक उल्लेखनीय बात यह है कि युद्ध पूर्व तालिकाओं को देखने से प्रतीत होता है कि रेशेदार पदार्थ तथा खाद्य पदार्थों की अपेक्षित महत्ता कुछ गिर गई है, तथा अन्य मुख्य वस्तुयें जैसे:— मशीनों व धातुओं आदि की कुछ उठ गई है।

निम्नलिखित मुख्य आयात वस्तुओं की तालिकायें हैं, जो वास्तव में अपेक्षित महत्ता स्पष्ट करती हैं। इनसे प्रतीत होता है, कि द्वितीय युद्ध पूर्व खाद्य पदार्थ व रेशेदार कच्चा माल कुल आयात का ५३·६ प्रतिशत था, तथा मशीनें, दवाइयां, पेट्रोलियम, तेल, खादें तथा उन्हें तैयार करने के पदार्थ १५ प्रतिशत थे।

भिन्न प्रकार के मुख्य निर्यात का अनुपात

Unit 1 Dollar Million

विभिन्न प्रकार की व्यापारिक वस्तुयें	१९३४—३६ का औसत		१९५० का औसत		१९५१ का औसत		१९५२ जन० जून	
	अनुपात	मूल्य%	अनुपात	मूल्य%	अनुपात	मूल्य%	अनुपात	मूल्य%
रेशे की पैदावार	४८३·४	५२·२	३९९·३	४८·७	५९५·६	४४·७	२८१·३	३९·६
धातु व धातु की पैदावार	७६·३	८·२	१५८·९	१९·४	२५३·७	१८·७	२४३·५	३४·२
मशीन	६६·५	७·१	७०·७	८·६	१०६·१	७·८	६१·७	८·७
खाद्य सामग्री	८८·२	९·५	५०·५	६·१	६७·५	५·१	४०·८	५·७
नाइट्रोजन उपज	२७·४	३·०	३२·५	४·०	५५·२	४·१		
अन्य	१८६·६	२०·०	१·८·५	१३·५	२७६·४	२०·३	८३·२	११·८
योग	९२८·४	१००·०	८२०·२	१००·०	१३५४·५	१००·०	७१०·५	१००·०

द्वितीय महायुद्ध पश्चात कई वर्ष तक रेशेदार कच्चा माल तथा खाद्य पदार्थ कुल आयात का ५० प्रतिशत से अधिक हुआ करता था। परन्तु १९५१ में स्थिति में कुछ परिवर्तन हुआ, और खाद्य पदार्थों का आयात औद्योगिक कच्चे माल की अपेक्षा कम हो गया।

इसके अतिरिक्त कच्ची कपास, (जो कि बहुत ही मुख्य रेशेदार पदार्थ हैं) के स्थान पर ऊन व होम्प की अधिक मांग होने लगी है। कोरिया युद्ध के कारण लोहे व कोयले की मांग भी जापान में बढ़ गई। साथ साथ नमक, दवाइयों, तेल, डीज़ल आइल तथा रबड़ की मांग भी बढ़ गई है। परन्तु मशीनों की मांग जापान में अब भी कम ही है।

दक्षिण-पूर्वी एशिया से व्यापारिक सम्बन्ध

द्वितीय महायुद्ध के पूर्व दक्षिण पूर्वी एशिया को जापान अधिकतर रेशेदार पदार्थ, धातयें की बनी हुई वस्तुयें तथा अन्य चीजें भेजता था, इसके बदले में यह लोहा, कोयला, नमक, रेशेदार कच्चा माल प्राप्त करता था। योरोप और अमेरिका से जापान कुछ मशीनें भी आयात किया करता था, परन्तु इन देशों को वह कच्ची रेशम, कृषि उपजें तथा कुछ तैयार की हुई वस्तुयें निर्यात किया करता था।

युद्ध पश्चात् जापान व दक्षिण-पूर्वी एशिया के आर्थिक सम्बन्धों में कुछ परिवर्तन हो गया है, कोयले, नमक, लोहे तथा अन्य वस्तुओं का आयात चीन से पूर्णतया बन्द हो गया। यह वस्तुयें अब दक्षिणी-पूर्वी एशिया, मध्य-पूर्वी एशिया

तथा अमरीका से आने लगीं हैं।

अब निर्यात की स्थिति भी बहुत कुछ परिवर्तित हो गई है, क्योंकि दक्षिण-पूर्वी एशिया के देश भी अपने उद्योगों की उन्नति की ओर ध्यान देने लगे हैं। दूसरे संयुक्त राज्य व योरोपियन देश भी इनको इस कार्य में सहायता दे रहे थे। अब भविष्य में ऐसी आशा की जाती है, कि जापान इन देशों से बहुत सी वस्तुयें आयात करेगा किन्तु निर्यात व्यापार में इसको, ऊपर बतलाये गये कारण की वजह से कुछ हानि उठानी पड़ेगी।

दक्षिण-पूर्वी एशिया में कुछ ऐसी सामाजिक व आर्थिक परिस्थियाँ हैं जो कि योरोप अमरीका से पूर्णरूपेण भिन्न हैं। यही कारण है कि दक्षिणी-पूर्वी एशिया बहुत सी वस्तुओं व सहायता के लिये इन देशों पर अधिक निर्भर नहीं रह सकता। प्राकृतिक तौर इसको जापान की शरण लेनी पड़ेगी, क्योंकि सामाजिक व आर्थिक स्थिति दोनों देशों की आपस में मिलती जुलती हैं। औद्योगिक उन्नति के लिये हर प्रकार की आवश्यकतायें चाहिये। उदाहरणार्थ, उद्योगों के उन्नति के साधन, सिंचाई व शक्ति के साधन, दलदलों को ठीक करना, कृषि सम्बन्धी वस्तुओं को ठीक करना इत्यादि इत्यादि। यातायात व शक्ति के साधनों पर तो सर्वप्रथम दृष्टि डालनी हगी। इन वस्तुओं के लिये दक्षिण पूर्वी एशिया को जापान से सहायता लेनी पड़ी हैं. इसने अब तक बहुत सी छोटी मोटी वस्तुओं के उद्योगों का निर्माण कर लिया है। उधर जापान ने छोटी छोटो वस्तुयें इन देशों को निर्यात करनी कम करदीं हैं। अब ध्यान बड़ी बड़ी वस्तुओं की ओर है। जैसे—पोत, मशीनें तथा मोटर व साइकिलें इत्यादि। इन वस्तुओं की दक्षिण पूर्वी देशों में बहुत माँग रहती है। इस प्रकार से जापान का सम्बन्ध इन देशों से बहुत अधिक है। साथ ही वह इनकी आर्थिक स्थिति सुधारने में बड़ी सहायता कर रहा है।

सांस्कृतिक रूप (Cultural Aspect)

जाति (Race) :—

नृवंश विद्वानों का मत है, कि अति प्राचीन समय में केवल दो ही जातियां रहती थीं, पहली आइनस (Ainus) तथा दूसरी जापानीज़ (Japanese)। यह दोनों जातियाँ एक दूसरी से भिन्न हैं। भिन्नता हमको इनके स्वस्थ, वाणी तथा संस्कृति में मिलती है। जापानी लोग वास्तव में उस मंगोल वंश के हैं, जो कि बहुत प्राचीन समय से पृथक हो गये हैं। परन्तु किस मंगोल जाति की शाखा के यह लोग हैं, किसी को नहीं मालूम। कुछ का कथन है चीनी शाखा, कुछ बतलाते हैं, मंचू तथा कुछ कोरियन, और कुछ का यह भी मत है कि यह लोग मंगोल जाति के ही हैं। इस समस्या को हम उसी समय हल कर सकते हैं जब कि उनकी भाषा

का घोर अध्ययन करें। परन्तु वर्तमान जाति अपने वंश से इतनी पृथक हो गई है, कि भाषा के आधार पर भी हम कोई अनुमान नहीं लगा सकते।

जापानी वंश के लोग बहुत प्राचीन काल से इन द्वीपों पर रह रहे हैं। इन लोगों ने रह कर कुछ ऐसी भौतिक व मानसिक विशेषतायें उत्पन्न कर लीं हैं, जो कि महाद्वीपों की अन्य जातियों में नहीं मिलतीं। इन लोगों की कुछ तिरछी आँखें छोटी नाक, काले बाल, दाढ़ी पर थोड़े से बाल, गालों की हड्डियाँ एक सी तथा पीला सा रंग होता है। वास्तव में यह विशेषतायें मंगोल जाति से कुछ मिलती जुलतीं हैं। इन लोगों का रहन-सहन योरोपियन लोगों की भाँति है, यद्यपि इसका आधार चीन ही है। इस प्रकार का आश्चर्यजनक परिवर्तन होने का कारण यह मालूम होता है कि जापानी विदेशों की नकल करने में बड़े निपुण हैं, और इन लोगों ने बड़ी आसानी से विदेशी रहन सहन को अपना लिया है। परमात्मा ने इन्हें कुछ ऐसी मानसिक विशेषतायें व सूझ-बूझ दी है, कि यह लोग सामान्य ज्ञान में तो निपुण हैं हाँ, इसके साथ साथ मानवता की उच्च विशेषताओं को भी समझते हैं। चीनी लोगों से या मंगोल जाति की किसी भी अन्न शाखा से यदि तुलना की जाय तो यह लोग अधिक हंसमुख व भावुक मिलेंगे। परन्तु इन सब विशेषताओं के अन्दर शक व बदला लेने की भावनायें भी मिलती हैं। दूसरे की ओर कुदृष्टि स देखना प्राय: इन लोगों की आदत होती है, लेकिन साथ ही साथ मुस्करा कर बातें करना तथा अपरिचित व्यक्ति की सहायता करना इनका मुख्य कर्त्तव्य होता है। यह लोग स्वभाव के बड़े दयालु, ऐहसानमन्द तथा वीर होते हैं। इनको अपने पूर्वजों के महान् कार्यों का गर्व होता है। इन लोगों के हृदय में भी वीरता की भावनायें होतीं हैं। मौत से यह लोग कदापि नहीं डरते। इन लोगों के मन में सहानुभूति व दूसरों के प्रति मान होता है। यही कारण है कि 'हाराकीरी' (harakiri)* प्रकृति के यह लोग होते हैं।

आइनस यहां एक दूसरे वंश के लोग हैं। यह अधिकतर इज़ो द्वीप या होकेडो द्वीप के उत्तर में, शाखालीन के दक्षिण तथा क्यूराइल द्वीप के कुछ क्षेत्रों में पाये जाते हैं। नृवंश विद्वानों में इस जाति के विषय में कुछ मतभेद है, परन्तु फिर भी कुछ लोगों का यह कहना है कि एक समय था, कि यह जाति समस्त जापान द्वीपों पर वितरित थी, धीरे धीरे यह लोग उत्तर की ओर तथा दक्षिण

---

* Hara-Kiri—means "Happy despatch"

from hara—stomach, and kiri—to cut; but the more usual native name is seppuku, which is in fact the Chinese reading of the same character.

की ओर खिसकने लगे और या जापानियों के आक्रमण के कारण इन लोगों को इधर उधर खिसकना पड़ा।

मिल्ने (Milne) का कहना है, कि प्राचीन काल में आइनस होन्डो (Hondo) द्वीप में रहते थे, क्योंकि उनके बर्तनों के चिन्ह अब भी, वहां के खंडहरों में मिलते हैं। दूसरे प्रकार के चिन्ह इज़ो द्वीप के खंडहरों में भी मिलते हैं, जिनसे प्रतीत होता है कि यह लोग पहले भी यहां रहते थे। विद्वानों का भी यह कथन है कि ऐबिसू (Ebisu) या बारबेरियन (Barbarian) जो कि निपोन (Nippon) या जापान के कुछ भागों में मिलते हैं, वर्तमान आईनस जाति के पूर्वज हैं। वर्ष प्रतिवर्ष मुख्य आईनस उत्तर की ओर खिसकने लगे। ऐसा अनुमान लगाया जाता है; कि सन् ८०० में यह लोग मोरिओका के निकट लड़े थे और १२०० तक इन लोगों ने मुख्य निपोन या जापान को छोड़ दिया। और जो कुछ भी रह गये थे, वे आपस में घुल मिल गये।

होन्डो के उत्तर में हमको कुछ मिश्रण इन दो जातियों का मिलता है, केवल उन स्थानों पर जहाँ ऐबिसू प्राचीन काल से रहे हैं तथा जापानियों के साथ घुलमिल गये हैं। ऐबिसू लोग मानसिक दृष्टिकोण से बहुत ही तुच्छ स्थिति प्राप्त करते हैं। कुछ लेखकों ने तो यहाँ तक कह दिया है, कि यह लोग कदापि उन्नति नहीं कर सकते। परन्तु कप्तान ब्लेकिस्टन (Captain Blackiston) तथा मिस बर्ड (Miss Bird) ने इस जाति की विशेषताओं का भली भाँति अध्ययन करने के पश्चात् यह बतलाया है, कि यह लोग कुछ बहुत ही उत्तम विशेषतायें रखते हैं और अपने को सुधारने के लिये हमेशा कुछ न कुछ प्रयत्न करना चाहते हैं, परन्तु अन्य प्राचीन जातियों की भांति यह लोग भी उच्च संस्कृति के सम्मुख कदापि नहीं ठहर पाते। कुछ तो धीरे धीरे ओझल हो रहे हैं। ब्लेकिस्टन (Blackiston), ब्रॉट (Brandt) तथा पम्पली (Pumpelly) इस कथन से सहमत नहीं हैं। उनका कहना है वह लोग अभी तक पाये जाते हैं। यदि ऐसा ही था तो भांति भांति की बीमारियां उनको कदापि मिटा देतीं।

मिस बर्ड (Miss Bird) ने आइनस का वर्णन इस प्रकार किया है। एक साधारण आइनस की मध्यम ऊंचाई, चौड़ी वक्षस्थल, चौड़े कन्धे, गठीला शरीर, टाँगें व बाँयें छोटी और गठीली तथा हाथ व पैर बड़े होते हैं। कुछ के शरीर पर छोटे छोटे रुएँदार बाल होते हैं। मिस बर्ड का कहना है, कि उन्होंने दो ऐसे बालकों को देखा है, जिनकी पीठ पर बहुत ही सुन्दर व मुलायम बाल थे। वह एक सुन्दर बिल्ली के बालों की भांति चिकने भी मालूम होते थे। आइनस लोगों के माथे ऊँचे व चौड़े होते हैं, देखने से ऐसा प्रतीत होता है, कि यह लोग बड़े

बुद्धिमान व समझदार हैं। इनकी नाक सीधी व चौड़ी होती है। गालों की हड्डी कुछ नीचे झुकी हुई, भौंयें उभरी हुई होती हैं। परन्तु गोलाई की अपेक्षा वह सीधी होती है। इनकी आंखें बड़ी, यद्यपि थोड़ी धसी हुई होती हैं, लेकिन फिर भी बड़ी सुन्दर भूरे रंग की दृष्टिगोचर होती हैं। प्राय: इन लोगों के शरीर का रंग गहरे इटेलियन ज़ैतून के फल की भांति होता है। परन्तु गालों का रंग प्राय: कुछ भिन्न रहता है।

स्त्री व पुरुष दोनों ही एक सी पोशाक पहनते हैं। यह पोशाक हिरन की खाल की होती है, और घुटनों के नीचे तक लटकती है। कमर में एक पेटी द्वारा यह कसी होती है। स्त्रियों के माथे, होंठ, गाल तथा अन्य अङ्ग गुदे होते हैं। यह शरीर गुदवाने की रीति अब गवर्नमेंट ने बन्द करवा दी है। इन लोगों की धार्मिक भावनायें बहुत ही भद्दी होती हैं। लकड़ी की छड़ी व खम्भों को यह लोग देवताओं की दृष्टि से देखते हैं। इन छड़ी व खम्भों पर ऐसे चिन्ह होते हैं जिनके ऊपर कुछ चिपकते पदार्थ लगे होते हैं। यह अधिकतर घरों की छतों पर, बहते हुये पानी में या चट्टानों व पर्वतों पर गाड़ दी जाती हैं। कुछ ऐसी भी जातियां निकटवर्तीय क्षेत्रों में पाई जाती हैं, जो कि भालू को अपना देवता मानती हैं। भालू मार कर खाया भी जाता है, तथा देवताओं की भांति उसकी पूजा भी होती है। एक भालू बसंत ऋतु के प्रारम्भ में पकड़ लिया जाता है उसे सबसे बड़े सरदार के घर में, एक बड़े पिंजड़े में बन्द रखा जाता है। एक स्त्री उसका स्तन चूसती है, उसके बाद बच्चे उससे खेलते हैं। जब वह सरदार परेशान होकर नाराज हो जाता है, तब उसे मारकर उसकी दावत का उत्सव मनाया जाता है। आइनस लोगों की आंखों में सचाई होती है घर के बड़े बूढ़े सामाजिक रीतियों के अनुसार पूज्य होते हैं। लोग उनकी इज्जत करते हैं तथा उनकी प्रत्येक बात मानी जाती है। आजकल यह लोग जापान में भी पाये जाते हैं। इनका मुख्य धन्धा मछली पकड़ना व शिकार खेलना ही है। कुछ तो समुद्र में से मोती भी निकालते हैं। ब्लैकिस्टन का कहना है, कि उन्होंने कुछ ऐसे आइनस भी देखे हैं, जो कृषि करते हैं और आलू, मिल्लैट व टर्निप विशेषतौर पर उगाते हैं।

सामाजिक जीवन (Social Life) :—

जापान के निवासियों का जीवन एक अद्भुत जीवन है। यहां का स्वच्छ आकाश, चमचमाता हुआ जल तथा हरी भरी वनस्पति इत्यादि के साथ यहां के लोगों की रंग बिरंगी पोशाक खिल के रह जाती है। लोग हमेशा खुश रहते हैं, आराम से तरह तरह की बातें करने के अलावा चिन्ता रहित हैं। दूसरों के लिये उनके हृदय में दया होती है। हंसी मज़ाक करने में भी बड़े निपुण होते हैं।

कभी कभी सम्पूर्ण गृहस्थी के लोग विभिन्न प्रकार की रंग बिरंगी पतंगे उड़ाते हैं। कुछ लोग तरह तरह के पटाके वगुब्बारे उड़ाते हैं। मुख्य पटाकों में रोकेट व बोम्बशैल होते हैं। वह इतने अजीब होते हैं कि जब भी छुटाये जाते हैं, तब बजाय अग्नि के रंग बिरंगा धुआँ देते हैं। या विभिन्न प्रकार के चित्र आकाश पर बना देते हैं।

प्रत्येक नगर में एक मनोरंजन का स्थान होता है, जिसे जोशीवारा (Joshiwara) कहते हैं। इसमें तरह तरह के खेल तमाशे होते हैं, जोकर, जादूगर, नट तथा कठपुतली के तमाशे वाले लोगों को मनोरंजन कराते हैं। यह सब तमाशे खुले आम सड़क पर दिखलाये जाते हैं। बहुत से थियेटर व नाटक भी थोड़े से दामों में लोगों को खेल तमाशे दिखलाते हैं। यहाँ के लोगों को कुश्ती का भी बड़ा शौक होता है। कुश्ती देखते देखते उनके हृदय में उतना ही जोश आता है, जितना कि स्पेन के निवासियों को "बुलफाइट" देखने में आजाता है। जापानी लोग नित्य शाम को नहाने के पश्चात कुछ न कुछ मनोरंजन अवश्य चाहते हैं और शाम हमेशा इसी में व्यतीत की जाती है।

यह नहीं कहा जा सकता कि सामाजिक कुरीतियां पश्चिमी देशों की अपेक्षा जापान में अधिक है या नहीं। प्रेम व शादी के विषय में केवल इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि यह बहुत ही साधारण वस्तु है, और मामूली तौर पर मना ली जाती हैं। लेकिन यह बात अवश्य है कि शादी करके लोगों को वह निभानी पड़ती है। कभी कभी तो पति स्वयं ही, पत्नी की सलाह से अपने पिता जी या माता जी को पत्र लिखकर, घर में बहू को बगैर गिर्जाघर व कचहरी की कार्यवाही के ले आता है। पहले तो शादी दोनों की लिखी हुई अनुमति से भी हो जाया करती थी। कहीं कहीं पर अब भी इसी रीति से हो जाती हैं, और नव-वधू घर आकर सारा घर गृहस्थी का काम अपने सिर ले लेती हैं। नववधू घर आकर सर्व प्रथम अपनी सुन्दरता का बलिदान करती है, अपनी भौयें साफ करके उसमें पाउडर लगाकर दाँतों में काली इनेमिल लगा लेती हैं। तलाक देने की प्रथा यहां भी प्रचलित है। किसी कुवांरी लड़की के साथ व्यभिचार करना पाप समझा जाता है, तथा लोगों को इस अपराध में सजा दी जाती है। शादी अब सिविल नियमानुसार भी की जाती है।

जापान में स्त्रियाँ वस्त्र पहिनने की बड़ी शौकीन हैं। यह लोग गहरे लाल रंग का हिटेमोनो (Hitamono) या रेशमी 'अण्डर वीयर' पहनती हैं। इसके ऊपर ऋतु व अवसर के अनुसार दो व तीन या कभी कभी पांच व छै लम्बे लम्बे वस्त्र किमोनो (Kimono) पहने जाते हैं। यह भी प्रायः रेशमी होते

है। कुछ स्त्रियां हल्का व कुछ गहरा रंग पसन्द करती हैं। कमर में एक पेटी जिसे ओबी कहते हैं, और जो छः से लेकर आठ फिट लम्बी व एक फिट चौड़ी होती है, पहनी जाती है। यह या तो 'साटन' की या रेशमी भारी वस्त्र की बनाई जाती है। स्त्रियाँ व पुरुष दोनों ही छाते व पंखे का प्रयोग करते हैं। किन्तु बहुत ऐसे भी व्यक्ति मिलेंगे जो केवल एक लंगोटी सी पहने रहते हैं, इनके शरीर लाल व नीले रंग की विभिन्न गुदाइयों से गुदे रहते हैं। यह लोग अधिकतर नीची श्रेणी के कुली, धींवर, सईस व भिश्ती इत्यादि ही होते हैं। जिन लोगों ने शरीर गुदवाने की प्रथा छोड़ दी है, वह अच्छे अच्छे वस्त्र पहनते हैं। उच्च श्रेणी के लोग, जैसे राजे महाराजे रेशमी वस्त्र बहुत ही उच्च कोटि के पहनते हैं। पहले वह दो तलवारें अपने कमर में रखते थे, और घोड़े पर सवारी करते थे, बालों को बढ़ाने का अधिकार केवल उन्हीं को प्राप्त था, परन्तु अब सभी श्रेणी के लोग ऐसा करते हैं। कुछ लोग तो अब योरोपियन पोशाक भी पहनने लगे हैं।

जापान में लड़कियों की शादी सोलह वर्ष की आयु तक हो जाती है। जिनकी बीस वर्ष तक शादी नहीं होती उसका भाग्य खराब समझा जाता है। शादी के समय लड़की को श्वेत रंग का 'किमोनो' इसलिये पहना जाता है, जिससे कि यह स्पष्ट हो जाय कि लड़की बड़े दुख के साथ अपने घर को छोड़ रही है। सुगन्धित वातावरण उसी भांति कर दिया जाता जिस प्रकार कि मृतक शरीर को कब्र में ले जाते समय कर दिया जाता है। शादी की प्रथा बहुत ही साधारण होती है। इंग्लैंड की भांति कोई उत्सव इत्यादि नहीं होता और न ही कोई धार्मिक क्रियायें होती हैं। बल्कि विशेष रूप उसका यह होता है कि पति पत्नी बारी बारी से तीन प्याले तनबार पीते हैं। प्रत्येक प्याले में दो घूंट साकी (Saki) जिसे राष्ट्रीय पेय कहा जाता है, भरा होता है। यह पेय थोड़ा नशीला होता है, क्योंकि चावल को सड़ा कर तैयार किया जाता है। वास्तव में इस उत्सव का तात्पर्य यह है कि पति-पत्नी एक दूसरे के सुख दुख में बराबर साथ दें। इसके उपरान्त पत्नी शादी के वस्त्रों को उतार कर बहुत ही हल्के रंग के सुन्दर वस्त्र पहन लेती है। सुबह उसे सर्वप्रथम जगना पड़ता है, और घर की खिड़कियों को स्वयं ही खोलना होता है। यदि सास व ससुर घर पर हैं, तो उन्हें सन्तुष्ट रखना उनका परम कर्तव्य होता है। सास के लिये तो वह नौकरानी से भी अधिक होती है, और उसका बहुत ही अधिक आदर करती है। सास को घर के कामों से फुरसत मिल जाती है, कभी कभी जब सास बड़े क्रूर स्वभाव की मिल जाती है, तो पत्नी को बड़े दुख सहने पड़ते हैं। पहले स्त्रियों में यह रीति थी कि वह शादी के बाद अपने को बहुत अधिक बदसूरत बना लेतीं थीं। जिससे कि किसी बाहरी

व्यक्ति की दृष्टि उस पर न ठहरे। परन्तु अब यह प्रथा समाप्त हो गई है। पति की मृत्यु के पश्चात् पत्नी का जीवन व्यर्थ हो जाता है। वह दुःख में शृंगार इत्यादि का त्याग कर देती है, और सिर गंजा करा कर शोक प्रकट करने वाले वस्त्र धारण कर लेती है। ऐसा कहा जाता है कि जापान में कुआंरी लड़की "स्वर्ग की चिड़िया" (Bird of Paradise), नव वधू "फ़ाक्ता" (Dove) तथा विधवा "कोआ" (Crow) कहलाती है।

प्राय: जापान के चायघरों में वह स्त्रियां रखी जाती हैं, जो लोगों का मनोरंजन करती हैं। यह प्राय: किराये पर रखी जाती हैं, और प्रारम्भ से ही इनको गाने, नाचने व कहानियां सुनाने की शिक्षा दी जाती है। चूंकि यह मनुष्यों के मनोरंजन के लिये रखी जाती हैं इसलिये इन्हें गीशा (Geisha) कहते हैं। समाज में उन्हें अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता। बहुत सी शृंगार करने वाली स्त्रियां उन्हें देखकर जलती हैं, क्योंकि वह बहुत ही अपटूडेट फैशनेबुल वस्त्र पहने रहती हैं। घरों में सामाजिक उत्सवों पर भी गीशा किराये पर बुलाई जातीं हैं। परन्तु इसके लिये उनको कई दिन पहले से "गीशा-एक्सचेंज" को इत्तला करनी पड़ती है। गीशा बनने के लिये छोटी छोटी बालिकाओं को मुफ्त चायघरों "फ्री टी हाउस" में नाचना व गाना पड़ता है। यही उनकी ट्रेनिंग होती है। बाद में निपुण हो जाने के पश्चात् वे पेशेवर हो जाती हैं।

जापानी लोगों के सामाजिक जीवन में उनके रहने के घर एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इनके घरों की विशेषता यह होती है, कि छत बांस की या खपरैल की होती है। यह एक मंजिल के होते हैं, घरों के कमरे काफी बड़े होते हैं। दिन के समय दीवारें मोमजामे या तेल के कागज की प्रयोग की जाती हैं तथा रात्रि के समय शटर-पट्टी लगा देने से लकड़ी की हो जातीं हैं। यह बड़े हवादार बनाये जाते हैं। प्रकाश का पूरा प्रबन्ध होता है। जापान एक ऐसा देश है जहां बहुधा भूचाल आया करते हैं, इसीलिये यहां के लोगों को मकान लकड़ी के बनाने पड़ते हैं। बड़ी बड़ी इमारतें प्राय: पेंडुलम डुप्लैक्स (Pendulum Duplex) के आधार पर बनाई जाती हैं, जिससे कि भूचाल का कम से कम प्रभाव हो। यह लोग अपने घरों में कुर्सी, मेज, पलंग इत्यादि कोई भी वस्तु नहीं रखते। हां, चटाई व कालीन अवश्य भूमि पर बिछाते हैं। वह अपने घरों को सजाते भी नहीं हैं, परन्तु बहुत ही सुन्दर पोरसीलेन के जार व गुलदस्ते अवश्य रखते हैं। फूलों के यह लोग बड़े शौकीन होते हैं। तरह तरह के रंग-बिरंगे फूलों के गुलदस्ते रखते हैं। बड़े बड़े घरों में ऐसे पलंग होते हैं जिन्हें 'फूटन' कहते हैं। इनमें यह विशेषता होती है, कि लोग ऊपर नीचे सो सकते हैं, क्योंकि एक नीचे

उसके ऊपर दूसरा तथा उसके भी ऊपर तीसरा खींच कर सोया जा सकता है। जब सब हिस्से अन्दर की ओर होते हैं, तो यह एक साधारण अलमारी जैसी वस्तु प्रतीत होती है। इनका तकिया जिसे 'मकुरा' कहते हैं, एक आठ इंच लम्बा बक्स होता है, जिसके ऊपर नित्य मोमजामा चढ़ाया जाता है। बड़े बड़े नगरों में जहां आग लगने की सम्भावना होती है, ऐसी इमारतें बनाई जाती हैं, जिनमें आसानी से अग्नि न लग सके। लालटेनों पर शीशे की बजाय तैल का कपड़ा या मोमजामा लगाया जाता है; आग से लड़ने के हेतु 'शिकाशो' या 'फायर ब्रिग्रेड' हर समय तैयार रहते हैं। एक छोटी सी रिक्शा जिसे 'जिन-रिक्शा' (Jin-rikshaw) या हैक्नी कोच (Hackney Coach) कहते हैं, पर केवल दो ही व्यक्ति बैठ सकते हैं। यह प्राय: शहरों में देखने को मिलती हैं। इसको वह कुली खींचते हैं, जिन्हें यहां की भाषा में निनसोकू (Ninsoku) कहते हैं यह लोग इन्हें बड़ी तेजी से चलाते हैं।

जापानी लोग गाने बजाने के बड़े इच्छुक होते हैं। इनके तरह-तरह के बाजे बहुत सुन्दर ध्वनि उत्पन्न करते हैं। यह लोग अपने बच्चों को इस कला में निपुण बना देते हैं। लड़कियां प्राय: इस इस कला से प्रेम रखती हैं। गाने के अतिरिक्त यहां कई घरेलू खेल भी खेले जाते हैं। लड़के पतंगे उड़ाते हैं। छोटे छोटे शिशु खिलौने से खेलते हैं, लड़कियाँ व लड़के 'राटिल काक' 'बेसबाल', ताश, शतरंज तथा अन्य खेल भी खेलते है। जमनेशियम व स्पोर्ट के भी यह लोग बड़े शौकीन होते हैं। तैरने में भी जापानी बड़े निपुण होते हैं। शिकार खेलने में भी इनका उच्च स्थान है। कुछ लोगों को शिकार खेलने में बड़ा आनन्द आता है, और छुट्टी के दिन बनों में शिकार को जाया करते हैं। इस प्रकार से इनका सामाजिक जीवन बड़ा साधारण तथा मनोरंजक होता है।

धर्म (Religion) :—

जापानियों में कई प्रकार के धर्म पाये जाते हैं। परन्तु इन सबों में केवल तीन ही मुख्य हैं। इन तीनों में सबसे प्राचीन शिन्टो (Shinto) धर्म है, जिसमें कि कामी-नो-मिची (Kami-no-michi) या भूत प्रेतों की पूजा होती है। लोगों का ऐसा भी विचार है, कि जो राज्य करता है, उसके रक्त में भी थोड़ा भूत प्रेतों का अंश होता है। इस धर्म के मानने वाले यह भी कहते हैं कि तमाम ब्रह्माण्ड पर कामी-नो-मिची वास करते हैं। वह लोग इसे बहुत पवित्र समझ कर पूजते हैं। सारांश यह है, कि शिन्टो धर्म में प्राय: टैंका (Tanka) या ब्रह्माण्ड को ही पूजा जाता है। इस धर्म के अन्तर्गत लोगों का यह भी विश्वास है कि मृत्यु के पश्चात् आत्मा दूसरे शरीर में प्रवेश करती है, तथा अच्छे कर्मों का पुरस्कार

व बुरे कार्यों को सज़ा दूसरे जन्म में अवश्य मिलती है। अब लोग इन बातों को भूल गये हैं और विशेष रूप से नक्षत्रों को ही पूजने लगे हैं। इनको अब प्रकृति की शक्ति तथा तत्वों का ज्ञान होगया है, और सितारों को 'कामी' (Kami) या भूत प्रेतों के तौर पर पूजने लगे हैं। उनका कहना है कि इनकी कुल संख्या ८,०००,००० है, अर्थात् वह असंख्य हैं। यह लोग यह भी मानते हैं कि इनका जन्म 'मिकाडो' (Mikado) द्वारा हुआ है। 'मिकाडो' स्वयं एक सौ इक्कीसवां 'जिम्मोटिन्नो' (Jimmo Tenno) देवता है। जिम्मू टिन्नो अमेटिरसू (Amaterasu) या सूर्य देवी (Sun Goddess) द्वारा उत्पन्न हुआ है। यही देवी इस शिन्टो धर्म में सबसे अधिक पूज्य है। यही कारण है, कि जो राजा यहां राज्य करता है, वह सूर्यवंशी कहलाता है। बाद में इस धर्म में कई परिवर्तन हुये, और सन् ५५० (A. D.) में बौद्ध धर्म का बहुत अधिक प्रचार हुआ है। इसी समय से शिन्टो धर्म में बौद्ध धर्म प्रवेश कर गया, परन्तु कुछ परिवर्तनों के साथ। बौद्ध धर्म की बहुत सी मूर्तियां तथा मन्दिर जापान के कोने कोने में पाये जाते हैं। यह वास्तव में दूसरा प्रमुख धर्म है। इसके कुछ मन्दिर तो इतने विशाल तथा वैभवशाली बने हुये हैं, कि देखकर आश्चर्य होता है। इन मन्दिरों में हर प्रकार के देवी देवताओं की मूर्तियाँ पाई जाती हैं। त्योहार के दिन या किसी विशेष अवसर पर इन मन्दिरों में बहुत से मनुष्य एकत्रित होते हैं। जितने भी बड़े मन्दिर होते हैं, उन सबके अन्दर खेलने के स्थान, लोटरी, खेलकूद तथा अन्य मनोरंजन के साधन होते हैं। कहीं-कहीं पर तीर कमान चलाना या बन्दूक से निशाना लगाना भी सिखलाया जाता है।

दूसरा बौद्ध धर्म है। पिछले कुछ वर्षों से ऐसी क्रान्ति हो उठी है, कि बौद्ध धर्म, जिसको कि पहले शोगन (Shogun) लोग प्रोत्साहन देते थे, अब ठुकराया जाने लगा है। जो कुछ भी धन साधुओं ने एकत्रित किया था, हड़प कर लिया गया, मन्दिरों के कलापूर्ण खजाने लूट लिये गये। सन्तों को मन्दिरों में से निकाल भगाया गया। और बहुत से मन्दिर व्यर्थ कार्यों के लिये प्रयोग किये जाने लगे। बहुमूल्य घण्टे, जो इन मन्दिरों में लगे हुये थे, या तो अमरीका भेज दिये गये और या अन्य धातुओं को मिलाकर परिवर्तित कर लिये गये। तीसरा धर्म जो कि विशेष तौर पर तर्क शास्त्र पर निर्भर है, 'सीजा' कहलाता है। यह वास्तव में कनफ्यू-सियस के मूल सिद्धान्तों को सम्मिलित करता है। परन्तु आश्चर्य इस बात का है, कि बड़े लोगों से इस धर्म को प्रोत्साहन कदापि नहीं मिला। क्योंकि कामी धर्म जिसके विपक्ष में हमेशा बड़े लोग रहे हैं, इस धर्म से बिल्कुल मिलता जुलता है। कुछ वर्षों के उपरान्त यहाँ के तर्कशास्त्र पर अंग्रेजी तर्कशास्त्र का गहरा प्रभाव पड़ा, यहाँ तक कि बकिल (Bucle), मिल (Mill), डार्विन (Darwin), हक्सले

(Huxley) तथा हरबर्ट स्पेंसर (Herbert Spencer) इत्यादि लेखकों की पुस्तकें भी जापानी भाषा में प्रचलित होगई हैं।

सोलहवीं शताब्दी के मध्य में ईसाई धर्म का प्रचार होने लगा। फ्रांसिस जैवियर (Francis Xavier) ने इस धर्म को स्थापित करने के सर्व प्रथम प्रयत्न किये। प्राचीन समय के कुछ ऐसे चिन्ह भी मिलते हैं, जो इस बात के प्रमाण हैं, कि रोमन कैथोलिक पादरियों (Roman Catholic Priests) ने यह प्रयत्न किये कि यहां के राजाओं के मत को परिवर्तित करके, इसे स्पेन या पुर्तगाल के राज्य में मिला लिया जाय। इसके फलस्वरूप १५९६ में एक क्रांति हुई और इन लोगों को बहुत तंग किया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि पुर्तगालियों को जापान छोड़ना पड़ा। परन्तु ईसाइयों से कुछ भी नहीं कहा गया और वह वहीं रह गये। मिकैडो जिस समय से पुनः अपनी सर्वशक्ति पर आगया तब से ईसाई धर्म को पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान करदी गई। यद्यपि विदेशी धर्म प्रचारक संस्थायें केवल कुछ बन्दरगाहों तक ही सीमित रखी गईं।

जापान-रूस के युद्ध पूर्व रूसी धर्म संस्थाओं के संचालक पोप (Russian 'pope') [जिन्हें निकोलई का पिता (Father of Nikolai) कहना उचित है, और जो मास्कोवाइट ऐम्बेसी (Muscovite Embassy) से किसी समय संबन्धित थे], को सबसे अधिक सफलता प्राप्त हुई। यूनानी गिरजाघर पर हमेशा भीड़ रहती थी। समीप के सभी लोग अपनी अपनी मूर्तियों व देवताओं को बेचने लगे। क्योंकि उन्हें डर रहता था, कि कहीं वह स्वयं बाजारू दवा न बन जायें। रोमन केथोलिक पादरी मुख्य तौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में सफल हुये। इसी समय बौद्ध लोग अपने शत्रुओं की उन्नति देख कर घबड़ाये और पुनः अपने धर्म को शक्तिशाली बनाने के हेतु प्रयत्न करने लगे।

जापान में परस्पर दो राष्ट्र पाये जाते हैं, पहला शाही लोगों का तथा दूसरा आम लोगों का। शाही लोग, जिनको कि गत परिवर्तनों के कारण काफी हानि उठानी पड़ी थी, दो भागों में विभाजित किये गये हैं। पहला कुगे (Kuge) या कोर्ट नोबिलिटी (Court Novelty) तथा दूसरा 'ब्यूके' (Buke) या 'ऐरिस्टोक्रेसी आफ दि स्वोर्ड (Aristocracy of the Sword), इसके भी छै भाग हैं और प्रत्येक की कई डिग्री हैं।

व्यवसाय तथा पद के दृष्टिकोण से जापानी लोग प्राचीन काल से ही सात या आठ भागों में बांटे गये हैं। पहले, डेमिओज (Daimios) यह राज्य के सबसे उच्च शाही लोग हैं, वे प्रारम्भ से ही बड़े शक्तिशाली रहे हैं। मिकाडो से लगभग वैसा ही सम्बन्ध रहा है जैसा कि रहना चाहिये। इनकी मात्रा कोकू या प्रान्तों के

हिसाब से है। इसीलिये यहां प्रारम्भ से ही अठारह कोकश्यू डेमिओज़ हैं। दूसरे, वंशीय शाही लोग, इन्हीं में से प्रान्तों के गवर्नर, जेनरल तथा सरकारी अफ़सर इत्यादि बनाये जाते हैं। इसी श्रेणी में 'हैटोमोटो' (Hattomotto) या निम्न ऐरिस्टोक्रेसी (Lower Aristocracy) के लोग सम्मिलित हैं। तीसरे शिन्टो तथा बौद्ध भिक्षुक, चौथे सैनिक, जिनमें 'याकोनिन' तथा 'समुराई' भी शामिल हैं। यही वह लोग हैं, जिनको कि दो तलवारें तथा ढील कवच पहिनने की आज्ञा थी। पांचवें, उच्च श्रेणी के माध्यमिक लोग, इनमें डाक्टर, अफ़सर तथा प्रोफेसर इत्यादि आते हैं छठे में बड़े बड़े दुकान वाले तथा व्यापारी लोग शामिल हैं, यद्यपि इनकी आय कितनी ही क्यों न हो। सातवें, छोटे छोटे दुकान वाले, खोमचे वाले, कलाकार, रंगरेज, बढ़ई तथा जुलाहे इत्यादि तथा आठवें वह लोग जो नावें चलाते हैं, मछली का शिकार खेलते हैं या कृषि अथवा मजदूरी करते हैं।

यहां पर कुछ यीता या इतोरी जो परिया (Pariah) श्रेणी के लोग हैं, पाये जाते हैं। इनकी संख्या अधिक से अधिक तीन लाख है। वैसे यह लोग देश में चारों ओर फैले हुये हैं। यह वह लोग हैं, जिनमें चमड़ा रंगने वाले, खाल निकालने वाले, चमड़े का कार्य करने वाले तथा मृतक शरीर को दफनाने वाले सम्मिलित हैं। इन लोगों को अन्य बड़े लोगों के साथ नगरों व गांवों में रहने की आज्ञा नहीं है और न यह लोग जनसंख्या में शामिल किये जाते हैं। इन लोगों का स्वागत चायघर, सराय तथा होटलों में भी नहीं होता। जब कभी भी यह लोग यात्रा करते हैं, तो इन्हें अलग खुले में दूसरे बर्तनों में भोजन करना पड़ता है।

लेकिन यह आठो श्रेणियां अब मिला दी गई हैं और नवीन विभाजन के अनुसार तीन भागों में बांटी गई हैं। पहले क्वागोकी (Kwagoku) या शाही लोग (Nobles) दूसरे शिजोकू (Shigoku) या पुराने सैनिक लोग। तीसरे हीमिन (Heimin) या आम लोग (Commoners) अब जितनी भी सामाजिक कुरीतियां थीं अलग कर दी गई हैं, और प्रत्येक को समान अधिकार हैं, सब नियमानुसार एक हैं। आजकल जाति-पांत का कोई भेद भाव नहीं है।

जापानी भाषा (Japanese Language) :—

यद्यपि जापान में बोलचाल की भाषा प्रत्येक स्थान पर एक सी ही है, परन्तु फिर भी प्रत्येक प्रान्त में अपनी ही विशेषता की झलक दृष्टिगोचर होती है। जितने ही जितने हम राजधानी वाले प्रान्त से दूर होते हैं, उतने ही अधिक विशेषता प्रतीत होती है। जापानी भाषा को सीखना कोई कठिन कार्य नहीं है। ऐसा कहा जाता है कि सबसे उत्तम भाषा निगैटा (Nigata) है जो टोकियो (Tokyo) में बोली जाती है। स्त्रियों व पुरुषों का भिन्न उच्चारण (Pronun-

ciation) होता है, जिसको समझने के हेतु आदत डालनी पड़ती है। जिस प्रकार कि अंग्रेजी भाषा में क्रिया का प्रयोग गूढ़ अध्ययन में मन्द पड़ जाता है उसी प्रकार यहां भी अधिक अध्ययन के पश्चात् मुहावरों आदि का प्रयोग होने लगता है। यहां तक आने के पश्चात् व्याकरण की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है।

यह हम पहले ही बतला चुके हैं, कि जापानी वंश हजारों वर्ष पहले मंगोल जाति से अलग हुआ, परन्तु फिर भी हमको भाषा समानता कदापि नहीं मिलती। चीनी भाषा का जो कुछ भी तत्व हमको राष्ट्रीय भाषा में मिलता है, वह पिछले कुछ वर्षों से ही है, और स्वयं ही आ गया है। यह भाषा बहुत ही सुन्दर है तथा सुनने में ध्वनि कानों को बड़ी आकर्षक मालूम होती है, विशेष तोर पर उस समय जबकि स्त्रियां बोलतीं हैं। लिखावट तथा प्रोननसियेशन (Pronunciation) दोनों ही नवसिखियाओं के लिये कठिन होता है।

जापानी भाषा के लिखने का ढंग कुछ कठिन होता है। विश्व इतिहास में जापान के लोग ही ऐसे हैं, जिन्होंने किसी भी बाहरी दबाव के बिना विदेशी चरित्र, साहित्य, विचार तथा सदाचार को अपना लिया है। ऐसा कहा जाता है कि यह सब वस्तुयें इन्होंने चीनी लोगों से प्राप्त की हैं। यद्यपि इन्होंने अपने यहां की "फोनेटिक सिलेबरी" (Phonetic Syllabary) काफी उन्नति पर करली है। परन्तु फिर भी इन लोगों ने चीनी आइडिओग्राफिक (Ideographic) साधन को अपनाया। यह 'आइ-रो-हा' (I-ro-ha) साधन तीन प्रथम (Letters के नाम से बना है। इसमें कुल सैंतालिस सिलेबिल (Syllables) होते हैं। उनके केवल दो ही प्रमुख रूप हैं, पहला काटा काना (Kata-kana) तथा दूसरा हीरा-गाना (Hira-gana), दुर्भाग्य से यह साधन हीरागाना के अनेक रूप के कारण आगे चल कर बड़ा कठिन हो जाता है, और यह केवल लेखक के मतानुसार ही होता है। इसलिये विद्यार्थी को सर्वप्रथम चीनी आइडिओग्राफिक (Ideographic) चिन्हों का गूढ़ अध्ययन करना पड़ता है, उसके बाद दो फोनेटिक (Phonetic alphabets) तथा अन्त में इन तीनों के मिश्रण का,—अन्त वाला आजकल का साधारण लिखने का ढंग है। चीनी हायरोगिलिफ (Hieroglyph) के भी तीन प्रमुख रूप हैं। पहला जोकि छपने वाले कार्यों व कविताओं तक सीमित है, दूसरा जो अफसरों व व्यापारियों तक तथा तीसरा मामूली दैनिक पत्रों में प्रयोग होता है।

संस्कृति (Culture) :—

यद्यपि जापान की संस्कृति चीन पर निर्भर है, परन्तु फिर भी हम देखते हैं, कि इनका रहन-सहन योरोप के लोगों से मिलता जुलता है। आजकल यह लोग

बिल्कुल इन्हीं लोगों की संस्कृति में घुल मिल गये हे।

यह आश्चर्यजनक सामाजिक परिवर्तन कदाचित् इसीलिये हुये, कि यह लोग विदेशी सामाजिक रीतियों को ग्रहण करने में बड़े चतुर रहे हैं। इन लोगो की मानसिक शक्ति तथा सूझ बूझ इस प्रकार की रही है कि प्रारम्भ से ही इनको सामान्य ज्ञान प्राप्त करने की लालसा रहती है। विदेशी वस्तुओं की महत्ता को समझने के अतिरिक्त उनकी प्रशंसा करना इनका मुख्य कर्तव्य रहा है। यहां के प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर मानवता व उदारता की भावना जाग्रत रहती है। चीनी या किसी भी अन्य मंगोलियन जाति से यदि तुलना की जाय, तो कदाचित् यही वह लोग हैं जो उन दोनों से अधिक दयावान तथा उदार होंगे। परन्तु इन सब उत्तम विशेषताओं के होते हुये भी, ऐसा कहा जाता है, कि यह लोग साथ ही साथ बड़े शक्की, निर्दयी तथा शत्रु से बदला लेने वाले होते हैं, शत्रु को यह लोग धोका देकर अवश्य ही उसका अन्त कर देते हैं। परन्तु कुछ भी हो एशिया में इन लोगों ने एक महत्व पूर्ण शक्तिशाली राज्य द्वितीय महायुद्ध पूर्व स्थापित कर रखा था। युद्ध उपरान्त इसकी दशा बड़ी शोचनीय होगई। परन्तु आशा यह की जाती है, कि अवश्य यह देश अपनी उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुंच जायगा।

जापान के प्राकृतिक विभाग (Natural Regions of Japan)

चूंकि जापान एक पर्वतीय देश है तथा पृथ्वी के एक बहुत ही कमजोर पर्त पर स्थित है, इसलिए जनसंख्या घनत्व उन्हीं क्षेत्रों तक सीमित है, जहां समतल भूमि पाई जाती है। वास्तव में इस देश का भौतिक रूप इतना अजीब है, कि प्राकृतिक विभाग बनाना असम्भव सा होजाता है। कुछ लोगों ने इस ओर प्रयत्न भी किये हैं। परन्तु सफलता केवल कुछ ही लेखकों को मिली है। निम्नलिखित प्राकृतिक विभाग प्रोफेसर जी० टी० ट्रिवार्था के दिये हुये विभागों के आधार पर हैं :—

(अ) होकेडो
- (१) होकेडो प्रायद्वीप
- (२) इशीकारी यूफुटसू का निचला मैदान
- (३) पूर्वी होकेडो

(ब) उत्तरी होन्शू
- (१) पूर्वी उच्च भूमि
- (२) पूर्वी निचले मैदान
- (३) मध्य की पर्वत श्रेणियां

(४) पश्चिमी मध्य के बेसिन
(५) पश्चिमी पर्वत तथा पहाड़ियां
(६) पश्चिमी मैदान

(स) मध्य होन्शू
(१) मध्य की पर्वतीय गांठ
(२) जापान सागर के तटीय निचले मैदान :—
(३) प्रशान्त महासागरीय निचला तटीय भाग, जिसमें क्वान्टो व नगोया के मैदान सम्मिलित हैं।

(द) दक्षिणी-पश्चिमी जापान का आन्तरिक क्षेत्र
(१) किन्की का मैदान या पूर्वी सिटोची
(२) मध्य सिटोची क्षेत्र (आन्तरिक सागरीय क्षेत्र)
(३) सैनिन समुद्री तट (उत्तरी सुगुकोका सैनिन समुद्री तट)
(४) उत्तरी क्यूशू

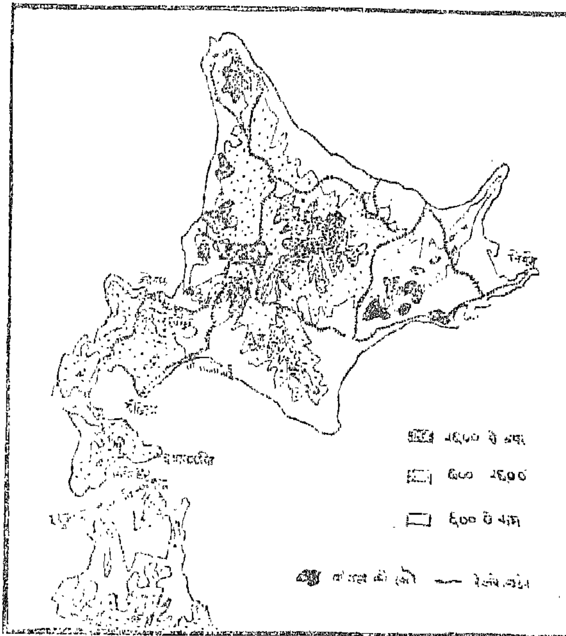
(क) दक्षिणी-पश्चिमी जापान का बाहरी क्षेत्र
(१) दक्षिणी क्यूशू
(२) दक्षिणी शिकोक्यू
(३) की प्रायद्वीप

(अ) होकेडो

होकेडो जापान का उत्तरी द्वीप है, यह अन्य द्वीपों से पूर्णत: भिन्न है। आधुनिक जापान के पहले यह द्वीप मुख्य जापान से पृथक था। यहां का सम्राट मींजी बड़ा शक्तिशाली राजा था। उसके समय में यहां बहुत थोड़े जापानी लोग रहते थे, और वह भी दक्षिण की ओर मछुआओं की बस्तियों में। यहाँ के आदि निवासी आयनू (Ainu) कहलाते हैं। आजकल इन लोगों की संख्या १६००० है, इनमें से कुछ उत्तरी होन्शू में बस गये हैं। इन लोगों का मुख्य धन्धा मछली पकड़ना, शिकार खेलना तथा प्राचीन ढंग से कृषि करना ही है। पहले ये लोग बड़े असभ्य थे, परन्तु बाद में अमेरिकन व योरोपियन लोगों के प्रभाव से ये लोग कुछ धंधे करने लगे हैं।

भौतिक बनावट में यह द्वीप मुख्य जापान से कुछ मिलता जुलता है। यहां भी हमको मध्य में दो प्रमुख पर्वत श्रेणियां मिलती हैं, ये वास्तव में क्यूराइल श्रेणियों की बनावट की हैं। स्थान स्थान पर ज्वालामुखी पर्वत दृष्टिगोचर होते हैं। उत्तर में इशीकारी मैदान का बहुत ही महत्वपूर्ण भौतिक रूप है। दक्षिण में ओशिमा का प्रायद्वीप तथा पूर्व में ऊंचा नीचा पठार व तटीय मैदान हैं। होकेडो

के मध्य में कई ऊंची ऊंची पर्वत शिखायें पाई जाती हैं। असाई डेक (Asahi Dake) ७७१३ फीट ऊंची शिखा है, जो बहुत ही सुन्दर है। दूसरी दक्षिण की ओर पोरो-शिरीज (Poro-shiris Dake) ६७३२ फीट तथा तीसरी शिखा आशी-बेटशू (Ashi-betsu Dake) ५६६७ फीट ऊंची है। इन पर्वतों से कई छोटी छोटी तेज बहने वाली नदियां निकलती हैं।

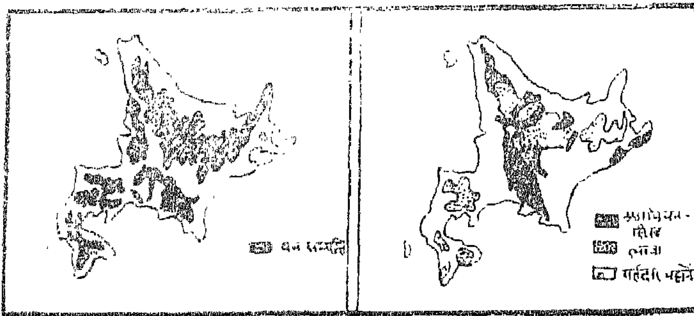


होकेडो—धरातल तथा कोयले की खानें

इस द्वीप की स्थिति लगभग उन्हीं अक्षांशों के मध्य है जिनमें कि नोवा स्कोटिया स्थित है। यहाँ की जलवायु बहुत ठंडी है। शीत ऋतु में चार माह तक बहुत कड़ी सर्दी पड़ती है। हैकोडेट तथा सेपोरो नगरों का इन चारो माह में तापक्रम हिमांग से भी नीचा रहता है। जनवरी के माह में केवल चार घण्टे सूर्य का प्रकाश दृष्टिगोचर होता है। ग्रीष्म ऋतु बड़ी सुहावनी होती है। परन्तु कभी कभी दक्षिण पूर्वी हवाओं से वर्षा हो जाती है। बहुत कड़ी सर्दी यहां नहीं पड़ती है। यहां औसत वार्षिक वर्षा ४० इञ्च हो जाती है। शीत ऋतु में पछुआ हवाओं से भी थोड़ी सी वर्षा हो जाती है। कोहरा यहां बराबर पांच माह तक पड़ता है किन्तु अधिक उत्तर में केवल तीन माह तक पड़ता है। ग्रीष्म ऋतु की वर्षा मई से सितम्बर तक तथा शीत ऋतु की वर्षा अक्टूबर के प्रारम्भ से मार्च तक होती है। इस प्रकार जलवायु सम्बन्धी दशायें यहां बड़ी उत्तम पाई जाती हैं।

जलवायु के आधार पर यहां वनीय क्षेत्र पाये जाते हैं। इन वनों में

नुकीली पत्ती वाले सदाबहार वृक्ष बड़ी मात्रा में हैं। उपजाऊ क्षेत्र यहां बहुत सीमित हैं। नदियों द्वारा डाली हुई मिट्टी केवल इशीकारी के मैदान में मिलती है। शेष भूमि बंजर है। इसमें जगह जगह पर खाइयाँ मिलती हैं। वन अधिकतर निचली पर्वत श्रेणियों या मैदानी भागों में मिलते हैं।



होकैडो की वन सम्पत्ति तथा बनावट

यहां के लोगों के मुख्य धन्धे तीन ही हैं। पहला–खान खोदना, दूसरा–वनों से लकड़ी प्राप्त करना तथा तीसरा–मछली पकड़ना। इस द्वीप में कोयले की कई बड़ी खानें हैं। परन्तु चट्टानें अधिक टेढ़ी-मेढ़ी व टूटी फूटी होने के कारण निकालने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। बिटुमिनस कोयले के अलावा उत्तम कोक भी मिल जाता है। लोहा यहां अन्य देशों से आयात कर लिया जाता है, यही कारण है कि यहां मुरोरन (Muroran) के स्थान पर जापान का द्वितीय श्रेणी का लोहे व इस्पात का केन्द्र स्थित है। कोयले के अतिरिक्त यहां अन्य धातुयें जैसे तांबा, सोना, चाँदी तथा गन्धक भी पाई जाती है। वनीय क्षेत्रों से यहां कई प्रकार की बहुमूल्य लकड़ी प्राप्त होती है। सम्पूर्ण जापान की लकड़ी का एक छटा भाग यहीं से प्राप्त करते हैं। इससे बहुत सी कागज़ व लुगदी तैयार कर ली जाती है। तथा शेष विदेशों को निर्यात कर देते हैं। मछली के उद्यम में इसका बहुत उच्च स्थान है। जापान की कुल मछली की पकड़ का पांचवां भाग केवल होकेडो प्रदान करता है। कृषि उद्योग में कोई विशेष उन्नति नहीं हुई, क्योंकि यहां की जलवायु बहुत ठंढी है, इसके अतिरिक्त उपजाऊ क्षेत्र भी बहुत ही कम हैं। परन्तु फिर भी चावल उत्पन्न करने में यह क्षेत्र सर्वश्रेष्ठ हैं। कुल उपजाऊ भूमि के २४ प्रतिशत भाग में धान उत्पन्न किया जाता है। यहाँ ओट भी बोया जाता है। लेकिन बीन का क्षेत्र सबसे अधिक विस्तृत है। यहां सेव, आलू, चुकन्दर तथा रसभरी इत्यादि भी उत्पन्न होते हैं। पिपरमेंट की कृषि के लिये यह द्वीप बहुत ही प्रसिद्ध है। यह वस्तु अधिकतर

अमरीका व योरोपियन देशों को निर्यात कर दी जाती है।

पिछले कुछ वर्षों से यहां दूध देने वाले जीव जन्तु भी पाले जाने लगे हैं। अमेरिकन ढंग पर यहां भी पशुओं को खली तथा दानों भरा सिलोज़ (Silos) दिया जाता है। यहां के पशु बड़े स्वस्थ होते हैं, इसीलिये दुग्धशालाओं का धन्धा यहां उन्नति कर गया है। घोड़े यहां अन्य पशुओं के अपेक्षा कई गुने अधिक पाये जाते हैं। इनकी मात्रा लगभग दो लाख से अधिक है।

जनसंख्या घनत्व इस द्वीप पर बहुत कम है, क्योंकि मामूली जापानी कोहोकेडो का जीवन बिलकुल पसन्द नहीं है। बाहरी लोगों का यहां पर बसना बहुत ही धीरे-धीरे हुआ है। लोगों का ध्यान शहरों में रहने की ओर बढ़ने लगा। जिसके फलस्वरूप शहरों की जनसंख्या में बहुत वृद्धि हुई। सेपोरो (Sepporo) (जो यहाँ की राजधानी है) की जनसंख्या १९४६ में २२७२२३ थी, हेकोडेट की उसी सन् में १८७,३६७ तथा मुरोरन की लगभग ५५८५७ थी। इस प्रकार से नगरों में रहने वाली कुल संख्या इसी वर्ष ८ लाख होगई, जबकि कृषकों की कुल संख्या २० लाख थी।

यातायात के साधनों में भी यहां बहुत कुछ उन्नति हुई है। सेपोरो रेल द्वारा हेकोडेट से मिला हुआ है। हेकोडेट से आओमोरी (Aomori) तक नित्य स्टीमर सर्विस होती है, सड़कों में भी बहुत अधिक उन्नति हुई है। इशीकारी के मैदान में पक्की सड़कें पाई जाती हैं। वे तट के लगभग सभी बड़े नगरों से मिली हुई हैं।

होकेडो को हम तीन प्राकृतिक भागों में बांट सकते हैं यह निम्नलिखित हैं :—

(१) होकेडो प्रायद्वीप :—

यह होकेडो के दक्षिण का भाग है। होंशू से यह सुगेरू जल डमरूमध्य (Tsugaru Strait) द्वारा अलग है। इसके पूर्व में यूचीयूरा (Uchiura) खाड़ी है। इस प्रायद्वीप को यहां ओशिमा (Oshima Peninsula) के नाम से पुकारते हैं। वास्तव में यहाँ उत्तरी मध्य होन्शू की श्रेणियों वाला भाग चला आया है। यही कारण है कि यह क्षेत्र पर्वतीय है। करीबायामा (Kariba-Yama) यहां की सबसे ऊंची शिखा है। यहां की जलवायु बड़ी उत्तम है। ग्रीष्म ऋतु यहां पर ठंडी व नम तथा शीत ऋतु बहुत अधिक ठंडी रहती है। कोहरा यहाँ प्रायः पड़ता है। यह भाग जीवजन्तुओं के चराने के लिये बहुत प्रसिद्ध है, कृषि यहां बहुत कम होती है। लोग अधिकतर घोड़े चराते हैं। यहां दस लाख से अधिक घोड़े पाये जाते हैं। जापानी सेना के लिये इन घोड़ों की बड़ी महत्ता है। गायों की संख्या अधिक से अधिक ३५,००० है। भेड़ें बहुत कम पाली जाती हैं। कुछ क्षेत्रों में वन पाये जाते हैं। लोग लकड़ी काटने का धन्धा इन वनों में

करते हैं। यहां मुलायम लकड़ी वाले वृक्ष बहुत मिलते हैं। यहां का प्रसिद्ध बन्दरगाह हैकोडेट (Hakodate) है।

(२) इशीकारी-यूफुटसू का निचला मैदान :—

होकेडो के मध्य तथा उत्तर में यह विस्तृत क्षेत्र है। उत्तर की ओर इशीकारी का मैदान सँकरा होता गया है, मैदान के दोनों ओर उत्तर से दक्षिण तक पर्वत श्रेणियां फैली हुई हैं। ऐसा कहा जाता है कि ये क्यूराइल की बनावट के हैं, और यहां स्थान स्थान पर ज्वालामुखी पर्वत की चोटियां पाई जाती हैं। इन दोनों श्रेणियों से छोटी छोटी तेज बहने वाली नदियां निकलती हैं। यहां की जलवायु बहुत ठंडी है। न केवल तीव्र ठंडी हवायें ही चलती हैं, वरन् जनवरी के माह में तापक्रम २५० हो जाता है। चार माह तक उत्तर की ओर बर्फ जमी रहती है। पश्चिम की ओर दशायें उसी प्रकार की पाई जाती हैं जिस प्रकार की होन्शू द्वीप के पश्चिमी तट पर पाई जाती हैं—शीत ऋतु में कभी वर्षा तथा कोहरा, और ग्रीष्म ऋतु में स्वच्छ आकाश तथा थोड़ी गर्मी रहती है। इस विस्तृत क्षेत्र में कृषि उद्योग बहुत उन्नति कर गया है। उत्तर में चावल पचीस प्रतिशत कृषि-योग्य भूमि पर होता है। चावल के अतिरिक्त ओट, बीन, आलू, मटर, राई तथा गेहूं भी बोया जाता है, यहां पर मिश्रित कृषि होती है। यहां पर जीव-जन्तु भी पाले जाते हैं। पश्चिम की ओर मुख्य तौर पर 'चावल व ओट' ही बोया जाता है। साठ प्रतिशत के लगभग चावल तथा शेष ओट उगाई जाती है। इस भाग में थोड़े वन भी पाये जाते हैं। इनमें मुलायम लकड़ी वाले वृक्ष अधिक मिलते हैं। यहां के प्राचीन आइनस लोगों ने इन वनों को साफ कर दिया है। कुछ स्थानों पर कोयले की खानें पाई जाती हैं परन्तु कोयला यहां बहुत कम मात्रा में प्राप्त होता है। लोहे की खानें बहुत महत्वपूर्ण हैं। लोग अधिकतर कृषि करते हैं, परन्तु लकड़ी काटने का काम, मछली पकड़ने व खान खोदने के धन्धे अधिक प्रचलित हैं। यहाँ का प्रसिद्ध नगर सैपोरो (Sapporo) है।

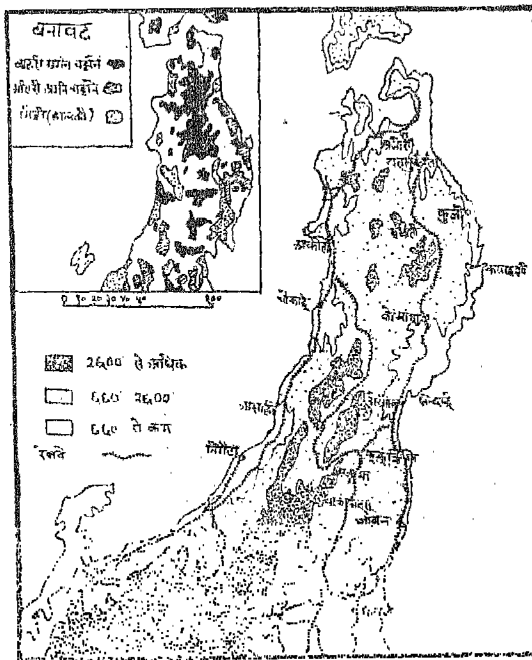
(३) पूर्वी होकेडो :—

होकेडो का यह भाग कुछ पठारी है। भूमि ऊंची नीची तथा कम उपजाऊ है। इस भाग में कुछ ज्वालामुखी पर्वत भी पाये जाते हैं, परन्तु अब इनमें विस्फोट बहुत कम होते हैं। कई स्थानों पर प्रसिद्ध झीलें भी मिलती हैं। समुद्र तट पर समतल भूमि दक्षिण में एवं पूर्व की ओर ढालू है। यहाँ की जलवायु भी ठंडी है, परन्तु उतनी नहीं जितनी कि उत्तरी भाग की। ग्रीष्म ऋतु ठण्डी तथा नम होती है। शीत ऋतु में कभी कभी तापक्रम हिमांक के नीचे भी पहुंच जाता है। कृषि बहुत कम क्षेत्र में होती है। अधिकतर चावल बोया जाता है। लेकिन

आलू, राई, ओट तथा गेहूं भी उत्पन्न किया जाता है। तटीय भाग में मनुष्य मछलियाँ पकड़ते हैं। यही इन लोगों का मुख्य धंधा है। जिस प्रकार न्यूफाउण्डलैण्ड में समुद्री तट मछलियों के लिये प्रसिद्ध है उसी प्रकार यहां का समुद्र तट भी बहुत महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में वन भी पाये जाते हैं, आन्तरिक क्षेत्रों में जो लोग रहते हैं वे इन वनों से लकड़ी काटते हैं तथा कृषि करते हैं, यहाँ के प्रसिद्ध नगरों में आबाशिरी उत्तर की ओर तथा ओबीहीरो दक्षिण की ओर, महत्वपूर्ण हैं।

(ब) उत्तरी होन्शू

वास्तव में यह पुराने जापान का उत्तरी भाग है, और प्राय: ३७° उत्तरी अक्षांश के उत्तर में ही पड़ता है। बनावट व धरातल के दृष्टिकोण से यह बहुत कमज़ोर चट्टानों का क्षेत्र है। यहां पर तीन लम्बी लम्बी पर्वत श्रेणियां उत्तर से दक्षिण की ओर फैली हुई हैं, इनका विस्तार एक सा दृष्टिगोचर नहीं होता। ये श्रेणियां मध्य में क्वान्टो मैदान में प्रवेश करने के पश्चात् समाप्त हो जाती हैं। यहां की जलवायु होकैडो की अपेक्षा कुछ गर्म है। तापक्रम जनवरी माह में ३२° फ० से भी नीचे गिर जाता है। परन्तु ग्रीष्म ऋतु में ७० व ८० मध्य में भी अंकित किया जाता है। कोहरा रहित वातावरण ६ माह से अधिक समय तक रहता है, लेकिन किसी किसी स्थान पर ३ माह तक पाया जाता है। यहां अधिकतर भूरी मिट्टी मिलती है, इसमें कहीं कहीं पर ज्वालामुखी का अंश भी मिश्रित है। नदियों द्वारा डाली हुई मिट्टी बहुत कम मात्रा में पाई जाती है, क्योंकि यहाँ की नदियां तुच्छ व तीव्र गति से बहने वाली हैं। ये भाग अधिकतर शीतोष्ण कटि-



उत्तरी जापान

वन्द वाले वनों से ढके हुये हैं, इनमें कहीं कहीं पर पतझड़ वाले वृक्ष भी पाये जाते हैं। होकैडो की अपेक्षा यहां पर जनसंख्या वितरण प्राय: घने बसे हुये गांवों के रूप में पाया जाता है। समुद्र तट पर जो नगर व गांव स्थित है, उनमें मछली पकड़ने वाले लोग ही अधिक रहते हैं। आन्तिरिक क्षेत्रों में जो मनुष्य रहते हैं वे कृषि करते हैं। चाय, चावल व शकरकन्दी यहां की मुख्य उपज है, शहतूत के वृक्षों पर रेशम के कीड़े भी पाले जाते हैं। परन्तु शहतूत ४०° उत्तरी अक्षांश के उत्तर में नहीं पाया जाता। निगेटा व सेंडाई यहां के प्रमुख नगर है।

(१) पूर्वी उच्च भूमि :—

यह उत्तरी जापान के बाहरी क्षेत्र का ही एक खंड हैं, इसमें दो बहुत ही मुख्य पर्वत श्रेणियां पाई जाती हैं। पहली किटाकामी (Kitakami) तथा दूसरी आबुकुमा (Abukuma)। इन दोनों की कोई विशेष ऊंचाई नहीं है, परन्तु दोनों एक दूसरे से सेंडाई मैदान द्वारा पृथक है। यहाँ की जलवायु का वर्णन ऊपर ही किया जा चुका है- परन्तु इस क्षेत्र में पश्चिम की अपेक्षा ग्रीष्म ऋतु में अधिक वर्षा होती है। यहां की पहाड़ियां शहतूत के वृक्षों के लिये प्रसिद्ध है, वनों में पतझड़ वाले व नुकीली पत्ती वाले, दोनों प्रकार के वृक्ष पाये जाते हैं। चावल चाय भी उगाये जाते हैं। कृषि कतारोंदार खेतों में होती है। जनसंख्या घनत्व नदियों के डेल्टे पर या 'ऐल्यूवियल फैन' पर अधिक है। यहां कुछ खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं। दो स्थानों पर लोहा पाया जाता है। दक्षिण में हिटाची के समीप तांबा तथा समुद्र तट पर वनों के निकट कोयला बड़ी मात्रा में पाया जाता है। यहां के प्रसिद्ध नगरों व बन्दरगाहों में हैचीनोही, व कामाइशी बड़े महत्वपूर्ण हैं।

(२) पूर्वी निचले मैदान :—

पूर्वी निचले मैदान को हम तीन भौतिक रूप में बांट सकते हैं। पहला— उत्तर में युतसू का मैदान, दूसरा किटाकामी या सेंडाई का निचला भाग, जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है, यह उत्तर तक विस्तृत है। तीसरा अबूकुमा का निचला भाग। वास्तव में आबूकुमा पठार के पूर्व में एक नदी की घाटी है। यह बहुत उपजाऊ क्षेत्र है। इस भाग का उत्तरी क्षेत्र होकैडो के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र से मिलता जुलता है, क्योंकि यहां भी हमको दूर दूर तक पथरीली भूमि व घास के टीले दृष्टिगोचर होते हैं। ऐसे क्षेत्रों में घोड़े अधिक चराये जाते हैं। यहां भांति भांति के घोड़ों की नस्लें भी तैयार की जाती हैं। निचले भाग अधिक उपजाऊ होने के कारण कृषि के लिये बहुत प्रसिद्ध हैं। चावल यहां विशेष रूप से बोया जाता है। किटाकामी में शहतूत बहुत उगता है। शीत ऋतु में दो फसलें एक

साथ नहीं उगाई जा सकतीं। यहां की जलवायु बड़ी उत्तम है। कुछ लोग मछलियां भी पकड़ते हैं। यह भाग बड़ा विस्तृत भाग है, इसलिये समुद्र तट तक फैला हुआ है। मतसुशीमा की खाड़ी अपनी सुन्दरता के लिये बहुत प्रसिद्ध है। समुद्र के तट पर यह ऊंचे ऊंचे पाइन के वृक्ष बहुत ही सुन्दर दृश्य उपस्थित करते हैं। सेंडाई यहां का आन्तरिक नगर है। उत्तरी मैदान का यह सबसे बड़ा नगर है। यहाँ पर एक इम्पीरियल यूनिवर्सिटी भी पाई जाती है। वैसे यह कोई कला-कौशल वाला नगर नहीं है। दक्षिण की ओर अबूकुमा का क्षेत्र शीत ऋतु में कुछ गर्म रहता है। यहां शहतूत के वृक्ष बहुत अधिक लगाये जाते हैं। लेकिन साथ ही साथ चावल भी बहुत उत्पन्न किया जाता है।

(३) मध्य की पर्वत श्रेणियां :—

मध्य की पर्वत श्रेणी का विस्तार उत्तर से दक्षिण की ओर एक सा है। यह वास्तव में सात ज्वालामुखी पर्वतों की एक रेखा है। इनमें से एक की ऊंचाई लगभग ६५०० फीट है। वास्तव में इस पर्वत श्रेणी के कारण उत्तरी क्षेत्र की जलवायु पर गहरा प्रभाव पड़ता है। ये पर्वत वनों से ढके हुये हैं। कई स्थानों पर खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं। इनमें से कुछ तो आर्थिक दृष्टिकोण से बड़े महत्वपूर्ण हैं। इस क्षेत्र में बहुत अधिक वर्षा होती है। इस ऋतु में तमाम नदी नाले जल से भर जाते हैं। बहुत सा जल विद्युत शक्ति उत्पन्न करने तथा सिंचाई के काम में लाया जाता है। शक्ति यहां छोटे छोटे नगरों व गांवों को भी दी जाती है। यही कारण है कि घरेलू उद्योग-धन्धे इस क्षेत्र में उन्नति कर गये हैं।

(४) पश्चिमी-मध्य के बेसिन :—

पश्चिमी मध्य भाग में कई बेसिन दृष्टिगोचर होते हैं। ये कुल मिलाकर नौ हैं, तथा इनका वितरण बड़ा विचित्र है। प्रत्येक बेसिन में एक छोटा सा बाढ़ का मैदान है। साथ ही एक छोटा सा ऐल्यूवियल फेन भी दिखाई देता है। यहां का प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही सुन्दर है। जलवायु यहाँ की बहुत ठण्डी है। शीत ऋतु प्रायः धुंधली व अन्धकारमय होती है। प्रायः बर्फ वर्षा भी हो जाया करती है। ग्रीष्म ऋतु बड़ी सुहावनी रहती है। गेहूं व जौ इस ऋतु में उत्पन्न किया जाता है। शीत ऋतु में बर्फ वर्षा के कारण ये वस्तुयें उत्पन्न नहीं हो पातीं। जिसके फलस्वरूप यहाँ इस ऋतु में कृषि को बड़ी हानि होती है। लोग अपने घर भी इस प्रकार के बनाते हैं, जो कि इसको सहन कर सकें। जन-संख्या वितरण यहां एक सा नहीं पाया जाता। अधिकतर गांव दृष्टिगोचर होते हैं। लोगों का मुख्य धन्धा कृषि करना ही है। उत्तर से दक्षिण की ओर बेसिनों के नाम इस प्रकार हैं— ऊमोरी, हनावा, ओडेट, योकोटे, शिन्जो, यमगाटा, योनीजावा, वाकामतसू तथा इनावाशिरो। इनमें से सबसे बड़ा योकोटे है।

(५) पश्चिमी पर्वत तथा पहाड़ियां :—

उत्तरी होन्शू में पश्चिम की ओर पर्वतश्रेणियां तथा कई पहाड़ियां पाई जाती हैं। ये क्रिस्टेलाइन चट्टानों की बनी हुई हैं। वास्तव में इनको हम चार भागों में बांट सकते हैं। यह विभाजन चार नदियों की घाटियों के आधार पर है। इसकी जलवायु ठण्डी है। शीत ऋतु में पश्चिमी हवाओं से वर्षा हो जाती है। ग्रीष्म ऋतु बड़ी सुहावनी होती है, परन्तु दक्षिणी पहाड़ियों पर कुछ मानसून से वर्षा हो जाया करती है। पहाड़ियों के ढाल वनों से ढके हुये हैं। परन्तु कहीं कहीं पर कतारोंदार खेत भी दृष्टिगोचर होते हैं। चावल, गेहूं व जौ की कृषि मुख्य तौर पर होती है। यहाँ कई प्रकार के खनिज पदार्थ भी मिलते हैं। दीवा पहाड़ियां खनिजों के लिये प्रसिद्ध हैं। पश्चिम की ओर समुद्र तट के निकट अकिता (Akita) नाम के तेल के कुयें मिलते हैं, और दक्षिण की ओर ऐशिगो (Echigo) मैदान के निकट कुछ अन्य तेल के कुयें भी पाये जाते हैं।

(६) पश्चिमी मैदान :—

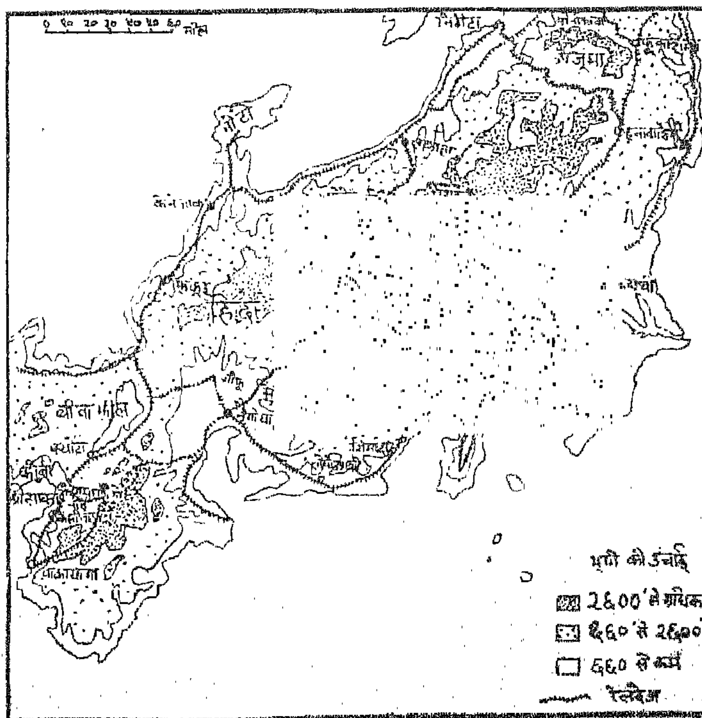
पश्चिमी समुद्र तट एक समतल भाग है। यहां पर ज्वार भाटों की डाली हुई मिट्टी बड़ी उपजाऊ है। दुर्भाग्य से मिट्टी का कटाव यहां सबसे अधिक होता है, क्योंकि पश्चिमी हवायें जो शीत ऋतु में चलती हैं, समुद्र में ऊंची ऊंची लहरें उत्पन्न कर देती हैं, जिनके कारण किनारे टकरा टकरा कर टूटा करते हैं। इस ऋतु में बर्फ वर्षा भी हुआ करती है। आश्चर्य इस बात का है कि समुद्र यहां जमने नहीं पाता; क्योंकि किरोशिवो गर्म जलधारा का प्रभाव यहां बहुत गहरा पड़ता है। ग्रीष्म ऋतु में बहुत कम वर्षा होती है। यहां पर चावल की कृषि विशेषतौर पर होती है। परन्तु शीत ऋतु में अधिक तूफान आने के कारण कृषि को हानि पहुंचती है, जनसंख्या पर भी इन तूफानों का प्रभाव पड़ता है। मकान यहां बहुत ही मजबूत छत के बनाये जाते हैं। समुद्र तट पर कोई विशेष बन्दरगाह नहीं पाया जाता। केवल निगैटा ही एक मुख्य नगर व बन्दरगाह है। उत्तर से दक्षिण की ओर जो छोटे छोटे मैदान पाये जाते हैं उनमें इवाकी, नोशीरो–ओमोनो, मोगामी, ऐशीगो या निगैटा तथा तकाता मुख्य हैं।

(स) मध्य होन्शू

मध्य होन्शू का भाग सबसे अधिक चौड़ा भाग है। यहां पर कई पर्वत श्रेणियां पाई जाती हैं। जगह जगह पर ज्वालामुखी पर्वत भी इन श्रेणियों में पाये जाते हैं। वास्तव में कुछ पर्वतश्रेणियां तो ज्वालामुखी पर्वत के कारण ही बनी हैं। ये श्रेणियां मध्य की गांठ से उत्तर-उत्तर पश्चिम व दक्षिण-दक्षिण पूर्व की

ओर समुद्र तट के लगभग समानान्तर गई हैं। इन श्रेणियों के मध्य प्रसिद्ध रिफ्ट वैली "फासा नेगना" पाई जाती है। इसमें बहुत अधिक मात्रा में लावा मिट्टी तथा अन्य ज्वालामुखी पत्थर जमा हो गये हैं। यहीं पर प्रसिद्ध ज्वालामुखी "फ्यूजीयामा" पाया जाता है। प्रशान्त महासागर की ओर तीन खाड़ियाँ जो कि पृथ्वी धस जाने के कारण बनीं है, पाई जातीं हैं। इनमें से दो तो मिट्टी से भर गई हैं, और आजकल क्वांन्टो व नोबी के मैदान के रूप में पाई जाती हैं।

इस भाग में जलवायु भिन्न प्रकार की पाई जाती है। पश्चिमी व पूर्वी तटों की जलवायु एक दूसरे से भिन्न हैं। पश्चिमी तट का तापक्रम पूर्वी तट की अपेक्षा कुछ ऊंचा रहता है, क्योंकि कोरोशिवो गर्म जलधारा का प्रभाव पश्चिमी तट पर बहुत गहरा पड़ता है। दोनों तटों पर वर्षा बहुत अधिक होती है। शीत ऋतु की अपेक्षा ग्रीष्म ऋतु में अधिक वर्षा होती है। गर्मी की ऋतु काफी दिनों तक रहती है। कोहरा रहित ऋतु ६ माह से ८ माह तक रहती है। शीत ऋतु



मध्य होन्शू

में किसी स्थान पर भी तापक्रम हिमांग के नीचे नहीं पहुंचता। यहां पर कई प्रकार की प्राकृतिक वनस्पति पाई जाती है। निचले भागों में चौड़ी पत्ती वाले सदाबहार वन अधिक मिलते हैं, क्योंकि इन स्थानों पर वर्षा अधिक होती है, उच्च स्थानों पर नुकीली पत्ती वाले सदाबहार वन मिलते हैं। इस क्षेत्र में चाय की उत्पत्ति सबसे अधिक होती है। परन्तु शहतूत के वृक्ष भी बहुत अधिक मात्रा में उगते हैं। रेशम के कीड़े पालने का यह एक प्रमुख क्षेत्र है। सम्पूर्ण जापान का आधा रेशम इसी क्षेत्र से प्राप्त होता है। यहां पर क्वान्टो का मैदान एक बहुत ही घना बसा हुआ क्षेत्र है। वास्तव में यहां जापान के अनेक उद्योग-धन्धे पाये जाते हैं। यही कारण है कि यहां बड़े बड़े नगर स्थित हैं और यह जापान का एक बहुत ही उन्नतिशील भाग हो गया है।

(२) मध्य की पर्वतीय गांठ:—

यह एक पर्वतीय क्षेत्र है। इसमें कई भौतिक खण्ड सम्मिलित हैं। पहला "फौसा मैगना' (Fossa Magna) जिसमें कई ज्वालामुखी पर्वत स्थित हैं; सबसे प्रसिद्ध "फ्यूजी यामा" है। दूसरा पूर्व की पर्वत श्रेणियां तथा तीसरा, बड़े बेसिन के पश्चिमी पर्वतीय क्षेत्र। जिस स्थान पर यह बड़ा गड्ढा जापान सागर से मिलता है, वहां एक ऐसा प्राकृतिक द्वार है जिसमें होकर क्वान्टो के मैदान में प्रवेश किया जा सकता है। इस भाग में कई ऐसे क्षेत्र हैं, जहां तरह तरह के चश्मे व सोते पाये जाते हैं, बहुत से लोग दूर दूर से इनको देखने के लिये आते हैं। इन भागों से कई छोटी छोटी तेज बहने वाली नदियां निकलतीं हैं। जलविद्युत शक्ति कई स्थानों पर इन नदियों द्वारा उत्पन्न की जाती है। जनसंख्या घनत्व यहां केवल उन स्थानों पर अधिक दृष्टिगोचर होता है जहां छोटे छोटे से बेसिन पाये जाते हैं, तथा उपजाऊ भूमि मिल जाती है। वास्तव में रेशम के कीड़े यहां बहुत अधिक पाले जाते हैं। सुवा बेसिन यहां का प्रमुख इस धन्धे का केन्द्र है। वैसे यहां चावल व चाय भी उत्पन्न की जाती है। प्रत्येक बेसिन में एक बड़ा नगर स्थित है। पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण यातायात के साधन व उद्योग-धन्धों में कोई विशेष प्रगति नहीं हुई है। मुख्य नगरों में मतसुमोतो मतसुमोतो नाम के बेसिन में, सुवा ओकाया में, कोफू कोफू में, नगोना नगोना में तथा यूइदा यूइदा बेसिन में स्थित हैं।

ज्वालामुखी पर्वतीय क्षेत्र के पूर्व में एक बहुत प्रसिद्ध नगर निक्को (Nikko) है। यह नगर बौद्ध धर्म की मूर्तियों व मन्दिरों के लिये बहुत प्रसिद्ध है। यहां का एशियो (Ashio) पर्वत अपनी तांबे की खानों के लिये बड़ा महत्वपूर्ण है। तांबा यहां सबसे अधिक निकाला जाता है। पश्चिमी पर्वतीय क्षेत्र में कई ऐसी बस्तियां पाई जातीं हैं, जहां लोगों का मुख्य धन्धा खान

खोदना ही है। करुईजावा एक सुन्दर नगर है, यहां के प्राकृतिक दृश्य देखने योग्य हैं।

(२) जापान सागर के तटीय निचले मैदान :—

वास्तव में ये नोटो प्रायद्वीप के दोनों ओर पाये जाते हैं। इसके उत्तर-पूर्व में नोटो की खाड़ी स्थिति है। प्रायद्वीप के पूर्व में तोयामा ऐल्यूवियल पीडमोन्ट (Toyama Alluvial Piedmont) पाया जाता है। यह अन्य जापान के निचले भागों से भिन्न है। भिन्नता केवल इस बात में है कि यहां कोई सम निचला क्षेत्र नहीं है वरन् यह ढालू ऐल्यूवीयल फेन का क्षेत्र है। इसमें चौड़े किनारे व रेत के टीले नहीं पाये जाते हैं। यहां पर पिछले वर्षों बंजर भूमि अधिक थी। परन्तु जापानियों ने अपने प्रयत्नों से इसमें के कुछ क्षेत्रों को उपजाऊ बना लिया है। अब इनमें कृषि की जाती है। जलवायु यहां की बहुत ही उत्तम है। शीत ऋतु में पछुआ हवाओं से वर्षा होती है। जनसंख्या वितरण वितरित रूप में पाया जाता है। अधिकतर बस्तियां मछुआओं तथा कृषकों की हैं। चावल अधिक मात्रा में उत्पन्न किया जाता है। पथरीला व ऊंचा नीचा प्रायद्वीप होने के कारण यहां के बन्दरगाह बड़े सुरक्षित हैं। तोयाना व तकाओका दो प्रसिद्ध व्यापारिक नगर हैं। वजीमा व ननओ मुख्य बन्दरगाह नोटो प्रायद्वीप के तटों पर स्थित हैं। प्रायद्वीप के पश्चिम में बहुत तंग नदियों की डाली हुई मिट्टी के मैदान हैं। इन मैदानों का नुकीली पत्ती वाले वृक्षों को लगा कर शीत ऋतु की तीव्र हवाओं से बचाया गया है। अब यहां पर कृषि की जाती है। इसके अतिरिक्त रेशम के कीड़े भी पाले जाते हैं। यहां का सबसे बड़ा नगर केनाजावा है, यह रेशम के उद्योग का सबसे बड़ा केन्द्र है। इसके समीप फ्यूकी दक्षिण की ओर स्थित है। इसकी प्रख्याति भी इसी उद्योग के हेतु है। अन्य छोटे छोटे से गांव भी इसी उद्योग में लगे हुए हैं।

(३) प्रशान्त महासागरीय निचला तटीय भाग :—

इस भाग में प्रसिद्ध क्वान्टो या टोकियो का मैदान सम्मिलित है। इसका क्षेत्रफल लगभग १६०० वर्गमील है। जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है, यह एक पृथ्वी का धंसा हुआ भाग है जो पहले समुद्र के रूप में था, परन्तु धीरे-धीरे परिवर्तनों के कारण इसमें पत्थर कंकड़, रेत व मिट्टी निरन्तर जमा होते रहे, अन्त में यह एक उपजाऊ मैदान के रूप में आजकल पाया जाता है। कहीं-कहीं पर लावा मिट्टी भी पाई जाती है, कुछ विद्वानों का मत है कि यह भाग धीरे-धीरे समुद्र में से उठ रहा है, यही कारण है कि नदियों की घाटियों के दोनों ओर ऊंचे उठे हुये टीले दृष्टिगोचर होते हैं। यहाँ पर प्रत्यक्ष रूप से दो कतारोंदार टीले दीखते हैं। पहले इस क्षेत्र की लावा मिट्टी अधिक उपजाऊ नहीं थी। यही कारण था कि

जनसंख्या यहां पर बाद में स्थापित हुई। ये क्षेत्र पहले उजड़े दृष्टिगोचर होते थे। केवल क्योटो, जहां पर उपजाऊ भूमि पाई जाती थी, एक ऐसा क्षेत्र था जो बहुत घना बसा हुआ था तथा काफी उन्नति पर था। सोलहवीं शताब्दी के बाद जब कि टोकुगावा-शोगन (Tokugawa Shagun) ने अपनी राजधानी व निवास-स्थान इदो या टोकियो रखा, तब इसकी वास्तविक उन्नति हुई। आजकल भी यह देखा जाता है कि यद्यपि जनसंख्या काफी बढ़ गई है, साथ ही औद्योगिक उन्नति भी हो गई है, परन्तु फिर भी ग्रामीण निवासियों की संख्या शहरों में रहने वालों की अपेक्षा आधी ही रही है।

यहां की जलवायु बहुत ही उत्तम है। ग्रीष्म ऋतु कुछ लम्बी होती है तथा तापक्रम मध्यम पाया जाता है। वर्षा मानसून हवाओं से होती है। शीत ऋतु काफी ठंडी होती है तथा वर्षा बहुत कम होती है। कृषि उद्योग यहां कुछ उन्नति कर गया है। चावल यहाँ की मुख्य उपज है। चाय भी उत्पन्न की जाती है, उच्च स्थानों पर शहतूत के वृक्षों पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। कुछ विस्तृत ऊंचे क्षेत्र चावल उत्पन्न करने के लिये बेकार हैं, इन स्थानों पर तरकारियां, दाने, मटर, शकरकन्दी, आलू, मिलेट, पतझड़ में गेहूं व जौ इत्यादि वस्तुयें बोई जाती हैं। चाय के बगीचे बड़े आधुनिक ढंग के हैं, और यहां उत्तम रीति से चाय तैयार की जाती है। इसी प्रकार तम्बाकू भी बड़ी सावधानी से उत्पन्न की जाती है। कुछ और उच्च स्थानों पर जहां घास पाई जाती है, बंजारे लोग बकरियों को चराते फिरते हैं। कुछ निचले भागों में सिंचाई का उत्तम प्रबन्ध न होने के कारण गांव ऐसे स्थानों पर बसे हुये हैं, जहां डाइक अथवा बांध बना दिये गये हैं। यहां लगभग ८० ऐसे नगर हैं जिनमें १०००० व्यक्ति से अधिक रहते हैं। परन्तु सबसे प्रमुख नगर टोकियो ही है। यह नगर यहां की राजधानी होने के अतिरिक्त अन्त-र्राष्ट्रीय केन्द्र भी है। दूसरा नगर याकोहामा है। दोनों नगर प्रसिद्ध बन्दरगाह भी हैं। इनके पृष्ठ प्रदेश में उत्तरी होन्शू तक के भाग आ जाते हैं, क्योंकि वहाँ कोई भी ऐसा बन्दरगाह नहीं है जो इनमें से किसी का भी मुकाबिला कर सके।

ईजू प्रायद्वीप से लेकर आइज की खाड़ी (Ise Bay) तक का समुद्री तट सुन एन (Sun-en) कहलाता है। इसमें कई डेल्टा-फैन पाये जाते हैं। ये सब बहुत घने बसे हुये हैं। कृषक लोग यहां पर चावल बोते हैं। किनारे के भाग में जहां पर रेतीले टीले पाये जाते हैं, वहां के लोग तरकारियां उगाते हैं। इन वस्तुओं की मांग बड़े बड़े नगरों में बहुत अधिक रहती है। यहां की जलवायु की विशेषता यह है, कि शीत ऋतु नम होती है, वर्षा बहुत अधिक इसी ऋतु में

Trewartha—See detailed account of this basin Geog. Review Vol xx, 1930 PP. 224-44

हुआ करती है। यही कारण है, कि रसदार फल यहां बहुत बड़ी मात्रा में उत्पन्न किये जाते हैं। मैन्डारिन नाम की नारंगियां यहां विशेष तौर पर उगाई जाती हैं। निकट के पर्वतीय ढालों पर चाय के बगीचे पाये जाते हैं। हरी चाय यहां बहुत अधिक उत्पन्न की जाती है। यह क्षेत्र वास्तव में टोकेड़ों रेलवे व सड़क पर क्वान्टो व किन्की के मैदान के मध्य पड़ता है। यह वास्तव में एक प्रसिद्ध औद्योगिक क्षेत्र भी है। यहां विद्युत शक्ति बहुत अधिक उत्पन्न की जाती है, इसलिये यहां के उद्योगों को यह बड़ी सस्ती पड़ती है। हमामित्सू (Hamamitsu) एक सूती वस्त्र के उद्योग का केन्द्र है। शिज़ुओका (Shizuoka) सूती वस्त्र उद्योग तथा चाय बांधने का मुख्य केन्द्र है।

नेगोया या नोबी का मैदान जिसे आइज़े की खाड़ी का निचला भाग भी कहते हैं, ठीक क्वान्टो की भांति है। यह भी एक धंसा हुआ पृथ्वी का भाग है। इसमें भी तमाम कंकड़ पत्थर व रेत जमा हो गया है। यहां पर नदियों की डाली हुई मिट्टी बड़ी उपजाऊ है। उच्च स्थानों के पर्वतीय ढाल पर जो कतारोंदार खेत होते हैं, उनकी मिट्टी बहुत कटा करती है। जलवायु कुछ कुछ क्वान्टो मैदान से मिलती जुलती है। वर्षा यहां भी शीत ऋतु में ही अधिक होती है। अधिकतर चावल व चाय उत्पन्न की जाती है, लेकिन कुछ स्थानों पर सूखी फसलें भी उगाई जाती हैं। नारंगी व शहतूत भी बहुत मात्रा में उत्पन्न होता है। रेशम के कीड़े इन शहतूत के वृक्षों पर बहुत पाले जाते हैं। यह वास्तव में एक औद्योगिक क्षेत्र है, नेगोआ यहाँ का प्रमुख नगर है। यहाँ कई प्रकार के उद्योग-धन्धे पाये जाते हैं। सूती वस्त्र का व्यवसाय विशेष रूप से उन्नति कर गया है। योकाइची (Yokkaichi) एक दूसरा प्रसिद्ध नगर व बन्दरगाह है। यहाँ से चीनी मिट्टी के बर्तन निर्यात किये जाते हैं, कपास यहाँ विदेशों से आयात किया जाता है।

दक्षिणी-पश्चिमी जापान का आन्तरिक क्षेत्र :—

इस क्षेत्र में आन्तरिक सागर के किनारे के भाग तथा होन्शू द्वीप का पश्चिमी भाग सम्मिलित है। जापान सागर के तट का भाग इसी में सम्मिलित है। यहाँ की भूमि पथरीली व ऊंची नीची है, लेकिन कहीं कहीं पर उपजाऊ मिट्टी भी पाई जाती है। कुछ ऐसे भी क्षेत्र हैं जहाँ लावा मिट्टी पाई जाती है। आन्तरिक सागर का तट काफी कटा फटा है। उत्तरी क्यूशू का भाग, वैसे तो खनिज पदार्थों में कोई विशेष स्थान प्राप्त नहीं करता, परन्तु कोयले की खानें अवश्य पाई जाती हैं। यहां की जलवायु उत्तम है, ग्रीष्म ऋतु में तापक्रम ७५° फ से लेकर ८०° फ तक पाया जाता है, तथा शीत ऋतु में लगभग ४०° फ हो जाता है। वर्ष में सात व आठ माह तक बिल्कुल कोहरा नहीं पड़ता। जापान सागर

की ओर शीत ऋतु में बहुत वर्षा होती है। कभी कभी वर्फ वर्षा भी हो जाया करती है। प्रति वर्ष दो या तीन इंच बर्फ गिरती है। आन्तरिक सागर का तट इस ऋतु में बड़ा अच्छा रहता है, यहाँ वर्फ वर्षा बिल्कुल नहीं होती, वरन् धूप निकलने के कारण मौसम बड़ा सुहावना हो जाता है। ग्रीष्म ऋतु में इन भागों में कुछ वर्षा मानसूनी हवाओं से हो जाती है।

प्राचीन जापान का क्षेत्र वास्तव में आन्तरिक सागर के बेसिन तक ही सीमित है। यही वह स्थान है जहाँ हमें प्राचीन जापान की सभ्यता के चिन्ह मिलते हैं। पुरानी राजधानी, धार्मिक स्थान, मन्दिर, मूर्तियाँ तथा महल इत्यादि इसी क्षेत्र में दृष्टिगोचर होते हैं। यही वह क्षेत्र है जहां जनसंख्या घनत्व भी अधिक है। पर्वतीय ढालों को काट कर पंक्तियोंदार खेत बनाये गये हैं, इनमें दुहरी फसल बोई जाती है। ग्रीष्म ऋतु में चावल तथा शीत ऋतु में गेहूं व जो बो दिया जाता है। यह भी वास्तव में जापान की औद्योगिक पेटी का एक खंड है। यहाँ हमको बड़े बड़े औद्योगिक नगर जैसे ओसाका व कोबी इत्यादि मिलते हैं।

(९) किन्की का मैदान या पूर्वी सिटौची :—

इस भाग में वे सब वितरित बेसिन आ जाते हैं, जो कि इस समय नदियों की डाली हुई मिट्टी से ढक गये हैं। ये बेसिन वास्तव में 'रिफ्ट वैली' (धंसे हुये भूखंड) हैं और कुल मिलाकर पाँच हैं। पहला बीवा (या ओमी), दूसरा यमाटो (या नारा), तीसरा क्योटो या (या यात्राशिरो) चौथा ओसाका (या सेट्स) तथा पाँचवाँ किनो है।

बीवा का बेसिन :—

यह सबसे बड़ा बेसिन है, इसमें जापान की सबसे प्रसिद्ध झील बीवा स्थित है। यह झील जापान की सबसे बड़ी झील है। यह बेसिन उत्तर में जापान सागर तक चला गया है। मध्य के पर्वतों को इस बेसिन ने काट दिया है, बहुत प्राचीन समय से यह एक मुख्य उत्तर की ओर जाने का मार्ग है। इसमें होकर रेल सुरंग के रास्ते से उत्तर की ओर तथा दक्षिण की ओर निकाली गई है जापान सागर का तट पृष्ठ प्रदेश में स्थित ओसाका व कोबी से इस मार्ग द्वारा मिल गया है। वास्तव में यह एक अद्‌भुत बेसिन है। इसके तीन क्षेत्र हैं। पहला क्षेत्र, जिसमें नदियों की डाली हुई मिट्टी व कटाव की हुई नदियाँ हैं। दूसरा क्षेत्र,—मध्य का भाग है, इसमें निचले कतारों वाले खेत व उपजाऊ मिट्टी है। तीसरा क्षेत्र,—बाहरी भाग है, इसमें ऊँची ऊँची कतारें व कंकड़ वाली मिट्टी है। इसके रूप बड़े भद्दे हैं। झील बीवा अपनी सुन्दरता के लिये संसार में बहुत प्रसिद्ध है। विदेशी लोग प्रति वर्ष इसको मनोरंजन के दृष्टिकोण से देखने आते। माउन्ट ही एक (Mt. Hieh)

अति सुन्दर चोटी है। इस पर कई बौद्ध मन्दिर व मूर्तियाँ बनी हुई हैं। धार्मिक लोग यहाँ प्रति वर्ष तीर्थ यात्रा के लिए आते हैं।

यमातो या नारा बेसिन:—

यह एक बहुत ही घना बसा हुआ क्षेत्र है। इसमें कई छोटे छोटे से चौकोर गांव पाये जाते हैं। इसका कारण यह है कि सातवीं शताब्दी के पहले भूमि का बंटवारा इस ढंग से होता था कि लोगों के हिस्से में चौकोर खंड आते थे। यहां की जलवायु कृषि के लिये बड़ी उत्तम है। शीतऋतु में पछुआ हवाओं से वर्षा हो जाती है। ग्रीष्म ऋतु में दक्षिण से आने वाली मानसून हवाओं से वर्षा होती है। चावल यहां की मुख्य उपज है, जितने भी निचले भाग इसमें आते हैं सब चावल उत्पन्न करने वाले प्रमुख क्षेत्र हैं। यहाँ पर दुहरी व कभी कभी तिहरी फसलें भी बोई जाती हैं। यहां का प्रमुख नगर नारा है। यद्यपि इस नगर की औद्योगिक दृष्टिकोण से कोई विशेष महत्ता नहीं है, और न ही इसकी जनसंख्या अधिक है, परन्तु फिर भी लाखो विदेशी प्रति वर्ष यहां के मन्दिरों को देखने आते हैं। प्राचीन जापान की राजधानी भी यही नगर था।

क्योटो या यामाशिरो बेसिन:—

यह अन्य बेसिनों से मिलता जुलता है। यहाँ भी हमको नदियों द्वारा डाली हुई मिट्टी मिलती है। कहीं कहीं पर इस मिट्टी में लावा मिट्टी का मिश्रण भी पाया जाता है। जलवायु यहां की उत्तम है। दक्षिणी मानसून हवाओं से ग्रीष्म ऋतु में काफी वर्षा हो जाती है। नदियों के किनारे व डेल्टे वाले भाग में बांस बहुत अधिक उत्पन्न होता है। यह क्षेत्र चाय की पैदावार के लिये विशेष रूप से प्रसिद्ध है। परन्तु नाशपाती, सेव तथा नारंगी इत्यादि भी शीतऋतु में वर्षा होने के कारण उगती है। यहां भी हमको चौकोर खेत दृष्टिगोचर होते हैं। यहां का सबसे मुख्य नगर क्योटो है, इसका स्थान जापान के समस्त नगरों में छटा है। यहां कई उद्योग भी पाये जाते हैं। सूती व रेशमी वस्त्र का उद्योग धन्धा यहां विशेष रूप से उन्नति कर गया है। यह एक प्राचीन नगर है इसमें मन्दिर, मूर्तियां व महल इत्यादि पाये जाते हैं, सुन्दर बाग, बगीचे व फुलवारी भी पाई जाती है। आधुनिक उद्योगों का प्रभाव इस पर बहुत कम पड़ा है। अब यहां पर कलापूर्ण वस्तुयें भी तैयार की जाने लगी हैं। ये वस्तुयें इतनी कीमती होती हैं कि इन्हें केवल धनी लोग ही खरीद पाते हैं।

ओसाका या सेटसू बेसिन:—

इस बेसिन की भिन्नता यह है कि यह तटीय मैदान के रूप में है। वास्तव में योदो नदी का डेल्टा इसी में सम्मिलित है। इस नदी का बांध बनाकर पानी के बहाव को इधर उधर जाने से रोका गया है। यह एक बहुत ही उपजाऊ क्षेत्र

है ; यहाँ की जलवायु भी कृषि के लिये बड़ी लाभदायक है। चावल यहां की मुख्य पैदावार है। वास्तव में यह क्षेत्र उद्योग-धन्धों के लिये बहुत प्रसिद्ध है। ओसाका-कोबी औद्योगिक क्षेत्र प्रथम तथा नकाई व कोशीवादा द्वितीय क्षेत्र है। यह सब औद्योगिक क्षेत्र इतनी उन्नति कर गये हैं कि यहाँ सम्पूर्ण जापान का एक तिहाई कलाकौशल का माल तैयार होता है तथा उद्योग धन्धों में कार्य करने वालों का चौथाई भाग काम करता है। ओसाका अपने सूती वस्त्र के लिये इतना प्रसिद्ध है कि इसे जापान का मैनचेस्टर भी कहा जाने लगा है। यह एक प्रसिद्ध नगर व बन्दरगाह भी है, परन्तु विदेशी व्यापार के दृष्टिकोण से इसका स्थान कोबी व याकोहामा के बाद ही आता है। कोबी लगभग सोलह मील नीचे खाड़ी के निकट स्थित है। यह आधुनिक नगर समुद्र तट से लगा हुआ है और एक प्रसिद्ध बन्दरगाह भी है। वैसे उद्योग-धन्धों में इसका महत्वपूर्ण स्थान है परन्तु फिर भी जो कच्ची कपास विदेशों से आती है यहीं उतारी जाती है, साथ ही जितना भी रेशम निर्यात किया जाता है। वह भी इसी बन्दरगाह से भेजा जाता है।

किनो बेसिनः—

यह एक तंग धंसा हुआ भू-खण्ड है, इसके दक्षिण में की जलडमरूमध्य (Kii Strait) है, जो होन्शू को शिकोक्यू से अलग करता है। वास्तव में यह भाग बहुत संकरा है। प्रारम्भ से यह नारंगी की उपज के लिये प्रसिद्ध रहा है। यहाँ शीतऋतु में भी वर्षा होती है और ग्रीष्म ऋतु में भी। समुद्र का प्रभाव तटीय क्षेत्र पर बहुत गहरा पड़ता है। बड़े नगरों की अपेक्षा गाँव अधिक पाये जाते हैं। चावल और चाय भी कहीं कहीं पर उत्पन्न की जाती है। जो गांव समुद्र तट पर स्थित हैं, वहां लोग मछलियां पकड़ते हैं। यहाँ का सबसे बड़ा नगर वकयामा (Wakayama) है। यह भी ओसाका-कोबी क्षेत्र के प्रभाव के कारण अब एक औद्योगिक नगर हो गया है।

मध्य सिटोंची क्षेत्रः—

वास्तव में यह आन्तरिक सागर के मध्य का तटीय भाग है। हम इसकी मध्य सागर के दोनों ओर के भू-भागों से तुलना कर सकते हैं। यह एक धंसा हुआ पृथ्वी का भाग है। जल भर जाने के कारण अब यह बहुत ही सुन्दर प्रतीत होता है। इसमें छोटे छोटे से तमाम द्वीप समूह हैं, ये सब नीले जल में बड़े सुन्दर दृष्टिगोचर होते हैं। पीछे की ओर नंगी पहाड़ियां हैं। इन पहाड़ियों के पीछे पंक्तियों दार हरे भरे खेत बहुत सुन्दर दीखते हैं। जनसंख्या भी इन्हीं पहाड़ियों के ढालों पर स्थित गांवों पर रहती है। इन क्षेत्रों में कई औद्योगिक केन्द्र तथा नगर पाये जाते हैं लेकिन ये नगर कोबी, ओसाका, मोजी-शिमोनोसेकी औद्योगिक केन्द्र के मध्य में स्थित हैं। इन नगरों में भांति भांति

के उद्योग पाये जाते हैं। सूती, रेशमी व ऊनी वस्त्र, रबड़, रसायन, धातुओं व शराब इत्यादि बनाने के उद्योग प्रसिद्ध हैं। तट पर कई स्थान ऐसे हैं जहां समुद्र से नमक निकाला जाता है। जो रीड (घास) समुद्र से प्राप्त होती है, उसकी चटाइयां इत्यादि बनाने के कारखाने भी तटीय क्षेत्र में पाये जाते हैं। यहां के प्रसिद्ध औद्योगिक नगरों में क्यूरे अपने लोहे के कारखानों, ओकेयामा अपनी विभिन्न फैक्टरियों के लिये बहुत महत्वपूर्ण हैं। हिरोशिमा यहां का सबसे बड़ा नगर है। यह नगर अपनी सुन्दरता के लिये बहुत प्रसिद्ध था। यहीं पर सबसे प्रथम अणुबम गिराया गया था। शिकोक्यू द्वीप की ओर टोकूशिमा तथा मतसुयामा मुख्य नगर हैं। यहां कुछ उद्योग-धन्धे भी पाये जाते हैं।

उत्तरी चुबुको का सेनिन समुद्री तट :—

जापानी भाषा में 'सेनिन' शब्द का अर्थ है, 'सायादार किनारा'। दूसरे शब्दों में इसका तात्पर्य यह है कि यह क्षेत्र प्रकाशहीन है। यहां प्रायः आंधी व तूफान आया करते हैं, क्योंकि इसकी स्थिति जापान सागर की ओर है, और यह सागर सिटोची सागर की अपेक्षा अधिक अशान्त है। वास्तव में यह भाग हर प्रकार से सिटोची की अपेक्षा भिन्न है। यहां का तट अधिक कटा फटा नहीं है, अतः यहां पर कुछ ही जनसंख्या रहती है तथा कुछ ही नगर स्थित हैं। कलाकौशल में भी कोई विशेष उन्नति नहीं हुई है। यहां पर लोगों का धन्धा कृषि करना है, और उसी पर ये लोग अपना जीवन व्यतीत करते हैं। बड़े बड़े मैदान यहां नहीं पाये जाते। कुछ लोग पशु भी पालते हैं। जो लोग समुद्र तट के निकट निवास करते हैं, वे मछली पकड़ते हैं, और उनका व्यापार करते हैं। यहां दो या तीन ही ऐसे नगर हैं, जिनकी जनसंख्या २५००० से अधिक है। मतसू (Matsue) यहां का प्रसिद्ध नगर है। पीछे की ओर जो पहाड़ियां पाई जाती हैं, वे वनों से ढकी हुई हैं। लोग चारकोल तैयार करते हैं। यही उनका मुख्य धन्धा है।

उत्तरी क्यूशू :—

यह एक प्राचीन पर्वतीय क्षेत्र है। इसमें भांति भांति की चट्टानें पाई जातीं हैं। तट रेखा पर कई स्थानों पर आन्तरिक सागर भी पाये जाते हैं। इस द्वीप का मानव भूगोल यहां की भौतिक दशा से बहुत अधिक प्रभावित हुआ है। यहां जगह जगह पर ज्वालामुखी पर्वत, लावा मिट्टी, ग्रेनाइट पत्थर की पहाड़ियां तथा झीलें इत्यादि पाई जाती हैं। यहां की जलवायु ऐसी है कि ग्रीष्म ऋतु में भी वर्षा होती है और शीतऋतु में भी। शीतऋतु में उत्तर-पश्चिमी हवायें बहुत तीव्र चलतीं हैं और पश्चिमी तट पर बहुत वर्षा करतीं हैं। इसी ऋतु में कभी कभी तूफान भी आ जाया करते हैं। ग्रीष्म ऋतु में दक्षिण पश्चिमी मानसून से वर्षा होती है। दक्षिणी तट सबसे अधिक वर्षा प्राप्त करता है। गर्मी की ऋतु काफी गर्म होती

है। सम्पूर्ण द्वीप में मिश्रित वन पाये जाते हैं। पतझड़ वाले व सदा बहार, दोनों ही प्रकार के वृक्ष इन वनों में उगते हैं। शहतूत के वृक्षों पर रेशम के कीड़े यहाँ के लोग पालते हैं। वैसे कृषि में चावल ही मुख्य उपज है। पश्चिम की ओर नारंगी, नीबू आदि रसदार फल भी उगते हैं। तरकारियां लगभग सभी क्षेत्रों में उगाई जाती है। यहां कुछ खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं। उत्तरी क्षेत्र उद्योग धन्धों में इसी कारण उन्नति कर गया है।

सुकशी पर्वतीय क्षेत्र तथा निकट सम्बन्धी मैदान :—

इस क्षेत्र में जापान की प्रसिद्ध कोयले की खानें पाई जाती हैं। यहीं पर प्रसिद्ध चिकूहो का बेसिन स्थित है। यहां के यातायात साधन बहुत ही उत्तम हैं। अतः कोयला तुरन्त ही उत्तर की ओर पहुंचा दिया जाता है। वाकामतसू व मोजी कोयला निर्यात करने के प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं। यहां के प्रसिद्ध औद्योगिक केन्द्र जैसे यवाता, मोजी तोबाता व कोकुरा यहीं से कोयला प्राप्त करते हैं। इन औद्योगिक क्षेत्रों में लोहे व स्पात का उद्योग ही प्रमुख है। यवाता को कुछ ऐसी सुविधायें प्राप्त हैं, जिसके कारण यहाँ के भारी उद्योग बहुत अधिक उन्नति कर गये हैं। मोजी आन्तरिक सागर के द्वार पर स्थित है। एक दूसरी कोयले की खान मीकी है, जो इस द्वीप पर दूसरे क्षेत्र पर स्थित है। यहां का प्रसिद्ध सागर ओमुता है। यह भी एक छोटा सा औद्योगिक केन्द्र है।

उत्तरी ज्वालामुखी क्षेत्र :—

यह कोई विशेष उन्नतिशील क्षेत्र नहीं है। यहाँ कई लावा के पठार पाये जाते हैं। यहाँ के प्राकृतिक दृश्य बहुत ही सुन्दर हैं। यह क्षेत्र कोयले वाले क्षेत्रों से पूर्णतः भिन्न है। कुछ जगहों पर जहां गर्म पानी के सोते पाये जाते हैं, मनोरंजन के स्थान बन गये हैं। यहां प्रतिवर्ष लोग घूमने के लिये आते हैं। यहां की प्रसिद्ध पर्वत शिखा आसो है, जिसकी महत्ता फ्यूजीयामा के बराबर ही है।

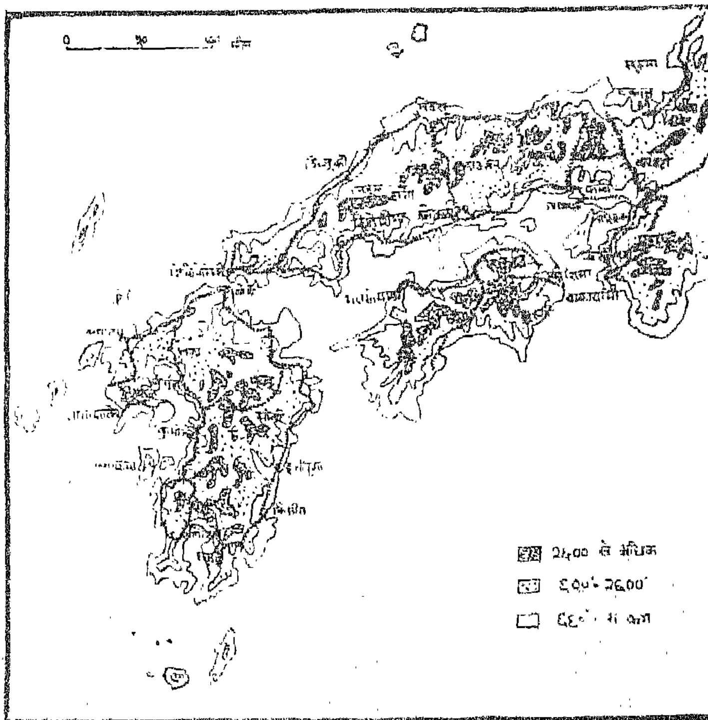
उत्तर पश्चिमी क्यूशू :—

इस क्षेत्र की भी भौतिक बनावट अजीब है। इसमें भिन्न प्रकार की चट्टानें व पठारी क्षेत्र मिलते हैं। हिगेन का प्रायद्वीप इसी में सम्मिलित है। अमोकुसा के द्वीप भी इसी क्षेत्र में आते हैं। हिगेन प्रायद्वीप पर दो प्रसिद्ध कोयले की खानें पाई जाती हैं, पहली ससेबो तथा दूसरी करात्सू। ससेबो नगर में एक बड़ा जहाज़ी बेड़ा है, यहाँ बड़े बड़े डौक्स हैं तथा एक आरसेनल भी है। करात्सू क्षेत्र का कोयला करात्सू बन्दरगाह से ही बाहर भेजा जाता है। इमारी तथा अरीता यहां के दो प्रसिद्ध नगर हैं, इनमें चीनी बर्तन बनाने के उद्योग बहुत अधिक उन्नति

कर गये हैं, क्योंकि समीप के क्षेत्रों में काओलिन मिट्टी प्राप्त हो जाती है। हिज़ेन प्रायद्वीप के दक्षिण में तीन ओर छोटे छोटे से प्रायद्वीप समुद्र की ओर मिले हुये हैं। नागासाकी एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर व बन्दरगाह है। यहां एक कोलिंग स्टेशन है, पहले यह जहाजों को तेल प्रदान किया करता था। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में इसका स्थान जापानी बन्दरगाहों में तीसरे से दसवाँ होगया है। वास्तव में यह चीन के बहुत निकट है, यही कारण था कि यह प्रारम्भ से ही विदेशी व्यापार में अन्य बन्दरगाहों की अपेक्षा आगे रहा है। आश्चर्य यह है कि पोत-निर्माण उद्योग के अतिरिक्त यह अन्य उद्योगों में बिलकुल उन्नति नहीं कर सका। वैसे यह एक बहुत सुन्दर नगर है। यहाँ की नग्न चट्टानें हरे-भरे खेत व सुन्दर गांव एक अजीब ही मनोरंजक दृश्य उपस्थित करते हैं।

दक्षिण-पश्चिमी जापान का बाहरी क्षेत्र :—

यह खंड धसे हुये क्षेत्र की सीमा के दक्षिण में है, आन्तरिक क्षेत्र



पश्चिमी जापान का धरातल

को बाहरी दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्र से अलग करता है। इस क्षेत्र की बहुत प्राचीन

बनावट है। यहाँ प्राचीन दानेदार शिष्ट (Schists) तथा प्राचीन पर्तदार चट्टानें अधिक पाई जाती हैं। धरातल बहुत ही ऊंचा नीचा व पर्वतीय है। यहां कई चोटियां व घाटियां पाई जाती हैं। यह घाटियां बहुत ही संकरी व ढालू हैं, इनमें से अधिकतर V. रूप की हैं। इनका विस्तार दक्षिण-पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर है। निचले भागों व मैदानों की यहां विशेष रूप से कमी है। यहाँ की जलवायु उष्ण कटिबन्धीय है। ग्रीष्म ऋतु में तापक्रम लगभग ८५° फ० पाया जाता है। वर्षा इस ऋतु में दक्षिण पश्चिमी मानसून हवाओं से होती है। शीत ऋतु बहुत अधिक ठंडी नहीं होती, तापक्रम लगभग ४५° फ० (औसत) अंकित किया जाता है। ग्रीष्म ऋतु में आठ माह से अधिक दिनों तक आकाश कोहरा रहित रहता है। शीतऋतु में ३० या ३५ दिनों तक कुछ कोहरा गिरता है। सबसे अधिक वर्षा ग्रीष्म ऋतु में ही होती है। और इस ऋतु के अन्त में तूफान (उष्ण कटिबन्धि चक्रवात) आते हैं। यहां की प्राकृतिक वनस्पति में उष्ण कटिबन्धीय तथा शीतोष्ण कटिबन्धीय वन अधिक मिलते हैं। ये मिश्रित वन हैं। इनमें पतझड़ वाले व सदाबहार सभी तरह के वृक्ष मिलते हैं। कपूर, पाम व शहतूत के वृक्ष मुख्यत: उगते हैं। जनसंख्या वितरण यहां पर विरल दशा में पाया जाता है, क्योंकि धरातल ऊंचा नीचा है। कृषि पर्वतों के ढालों पर केवल वहीं होती है, जहां उपजाऊ मिट्टी पाई जाती है। यहां अधिकतर चावल, चाय व आलू बोया जाता है। कहीं-कहीं तम्बाकू भी उत्पन्न की जाती है। घनी जनसंख्या का अभाव होने के कारण यहाँ बड़े बड़े बन्दरगाह नहीं पाये जाते है और न ही यहाँ उद्योग धन्धों की उन्नति हो सकी है। दो नहरें जो कि आन्तरिक सागर को प्रशान्त महासागर से मिलाती हैं, इस क्षेत्र को तीन भागों में विभाजित करती हैं।

(१) दक्षिणी क्यूशू :—

ऐसा विचार किया जाता है कि इस क्षेत्र में पहले अनेक ज्वालामुखी पर्वत पाये जाते थे। उन्हीं के चिन्ह के रूप यहाँ ऐश तथा लावा के पठार पाये जाते हैं। यहाँ का भौतिक रूप ऊंचा नीचा है, उपजाऊ भूमि बहुत कम पाई जाती है। वर्षा ग्रीष्म ऋतु में होता है। शीत ऋतु में यह क्षेत्र कम वर्षा प्राप्त करता है। यह क्षेत्र वनों से ढका हुआ है, और यहाँ पतझड़ व नुकीली पत्ती वाले सदाबहार वृक्ष मिश्रित वनों के रूप में पाये जाते हैं। लकड़ी काटने व तोड़ने का धन्धा यहाँ का एक प्रधान धन्धा है। यहां कई प्रकार के खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं। मुख्य खनिजों में तांबा व लोहा प्रसिद्ध है, ये दोनों सगानोसेकी (Saganoseki) के निकट निकाले जाते हैं। कुछ क्षेत्रों में यहां उपजाऊ मिट्टी

पाई जाती है, वहाँ चावल उत्पन्न किया जाता है। परन्तु अधिक उपजाऊ मिट्टी का अभाव होने के कारण चावल के स्थान पर बीन, आलू तथा शकरकन्दी इत्यादि भी बोये जाते हैं। शीत ऋतु में तम्बाकू तथा अन्य दानेदार अनाज बोये जाते हैं। यहां गन्ने की पैदावार भी बहुत होने लगी है। कुछ नवीन क्षेत्रों में भी कृषि करना प्रारम्भ हो गया है। यातायात के साधनों में भी कुछ उन्नति हुई है। अनेक पक्की सड़कों के अतिरिक्त एक रेलवे लाइन मियाज़ाकी तक बना दी गई है। इसके बन जाने से बहुत से लोग यहाँ आकर बस गये हैं। आवागमन के अच्छे साधन होने के कारण इस वर्ग का सम्बन्ध रियूक्यू (Ryukyu) द्वीपों से भी हो गया है।

(२) दक्षिणी शिकोक्यू :—

इस क्षेत्र की भौतिक दशा भिन्न है। यहाँ भी बहुत सा पर्वतीय क्षेत्र पाया जाता है। जगह जगह पर चोटियाँ व नदियों की घाटियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। चट्टानें यहां विशेष तौर पर पर्तदार पाई जाती हैं परन्तु कहीं कहीं पर परिवर्तित चट्टानें भी मिलती हैं। उपजाऊ भूमि की यहाँ भी बहुत कमी है, परन्तु फिर भी कुछ भागों में चावल, तम्बाकू व आलू उत्पन्न किया जाता है। कहीं कहीं थोड़ी सी ईख भी बो दी जाती है। यहां एक बहुत ही प्रमुख घरेलू उद्योग धन्धा काग़ज तैयार करने का है। यहाँ की झाड़ियों से एक विशेष प्रकार का रेशा प्राप्त किया जाता है। इसी से यहाँ के लोग उत्तम काग़ज तैयार करते हैं। वास्तव में यहाँ की राष्ट्रीय आय इसी धन्धे के कारण प्रति वर्ष बढ़ जाती है। यहाँ कुछ खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं। मुख्य खनिजों में तांबा ही है। बेशी (Besshi) के निकट निकाला जाता है। आन्तरिक सागर में स्थित एक छोटे से द्वीप पर यह धातु गलाई जाती है।

(३) की प्रायद्वीप :—

यह एक पथरीला क्षेत्र है। इसमें कई स्थानों पर ज्वालामुखी पर्वतों के चिन्ह पाये जाते हैं। इसमें कुछ वर्षा दोनों ऋतुओं में हो जाया करती है। इसीलिये पर्वत वनों से ढके हुये हैं। आन्तरिक क्षेत्रों में जनसंख्या बहुत कम पाई जाती है। थोड़े बहुत लोग समुद्र तट के मैदानों में रहते हैं। वहीं कुछ गाँव बसे हुये हैं। लोग मछली पकड़ते हैं और साथ ही कुछ कृषि भी करते हैं। यहाँ कोई विशेष औद्योगिक नगर नहीं पाया जाता।

रियूक्यू द्वीपसमूह

रियूक्यू द्वीप समूह जो कि एक धनुषाकार रूप में पाये जाते हैं वास्तव में एक समुद्र में डूबे हुये पर्वत की शिखायें हैं। इनमें सभी द्वीप पथरीले हैं और

ग्रेनाइट पत्थर अधिक पाया जाता है। द्वीप के चारों ओर मूंगे की चट्टानें पाई जाती हैं। ये द्वीप वनों से ढके हुये हैं, और इनमें यहाँ के असभ्य आदि निवासी रहते हैं। यद्यपि यह जापान सरकार के अन्तर्गत है, परन्तु फिर भी इनकी ऐतिहासिक संस्कृति भिन्न है। वास्तव में इन पर चीनी लोगों का गहरा प्रभाव पड़ा है। गत वर्षो तक यहाँ पर आदि निवासियों के वंश का ही राजा राज्य करता था। परन्तु बाद में जापानियों ने राज्य की बागडोर अपने हाथों ले ली। यहाँ के निवासी कृषि भी करते हैं। ये लोग चावल उत्पन्न करने के अलावा अन्य वस्तुयें भी पैदा करते हैं। अब इन लोगों ने बहुत उन्नति करली है, और आजकल अन्य खाद्य पदार्थों के अतिरिक्त शकरकन्दी भी उत्पन्न की जाने लगी है। यह यहां बहुत अधिक पैदा की जाती है। ईख यहाँ की एक मुख्य उपज हो गई है। इन द्वीपों पर कई शक्कर तैयार करने के कारखाने भी खुल गये हैं। ईख की महत्ता चावल से भी अधिक हो गई है। इन वस्तुओं के अतिरिक्त उष्ण कटिबन्धीय फल, केला, तथा पाव पाव (Paw Paw) भी उत्पन्न किया जाता है यहाँ पर कृषि में कोई विशेष आधुनिक साधन नहीं प्रयोग किये जाते हैं। यही कारण है कि खाद की कमी के कारण तथा ठीक देखरेख न होने की वजह से इसमें कोई विशेष उन्नति नहीं हो पाई है। यहाँ पर प्राय: खाद्य पदार्थों का अभाव रहता है। लोग यही सोचा करते हैं, कि किसी दूसरे देश में चले जायें तो अच्छा है कम से कम पेट भर खाना तो मिल सकेगा। यही कारण है कि बहुत से लोग मुख्य जापान तथा फारमूसा में रहने लगे हैं।

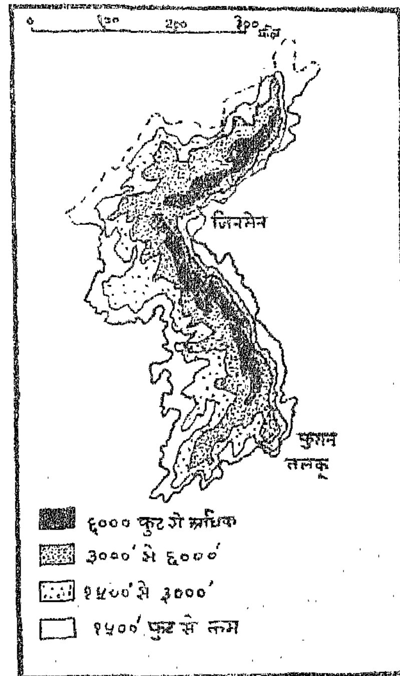
कोरिया

एशिया के पूर्व में कोरिया प्रायद्वीप स्थित है, यह मंचूरिया से यालू नदी की गहरी घाटी द्वारा रूस के तटीय प्रदेश से तुमन द्वारा अलग है। चीनी लोग सदा से इस देश को चोजेन अर्थात् 'Land of Morning Freshness' कहते आये हैं, परन्तु विश्व के अन्य लोग इसे कोरिया के नाम से पुकारते हैं। कोरिया शब्द की उत्पत्ति को-रियो (ko-ryo) वंश (९१८-१३९ A.D.) से हुई हैं। इस वंश के समय यह पूर्वी एशिया का वैभवशाली भाग था। मंचूरिया तथा रूस की सीमान्त नदियों के दक्षिण में सात डिग्री अक्षांशों (३४°३१ से ४२°४०) के अन्तर्गत जापान तथा पीले सागरों के मध्य स्थित है। इसके दक्षिण-पश्चिमी तट इतने कटे हुये हैं कि समुद्र का जल कहीं कहीं अन्दर तक चला गया है। इसका वर्तमान क्षेत्रफल ८५,२६६ (उत्तरी कोरिया ४९,११४ वर्ग मील तथा दक्षिणी ३६१५२ वर्गमील हैं।) वर्गमील है।

भौतिक रूप (Physical Aspect)

धरातल (Relief) :—

इस प्रायद्वीप का धरातल बहुत ऊँचा नीचा है। इसमें उच्च भूमि निम्न क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक है। इस उच्च भूमि पर अनेक गहरी गहरी घाटियाँ पाई जातीं हैं। यहाँ का धरातल पश्चिम से पूर्व की ओर कुछ ऊँचा होता चला गया है, यहाँ तक कि समुद्र तट पर यह ६००० से ८००० फुट तक समुद्र सतह से ऊँचा है। यह क्षेत्र उत्तर में सिखोता-एलिन (रूसी प्राँत) में जाकर लुप्त हो जाता है। कांग-वोन-डो श्रेणी तथा समुद्र के मध्य एक उपजाऊ समतल पेटी है, इसके आगे लैगून तथा रेतीले टीले मिलते हैं। चिगू-चेन-डांगू खाड़ी से अलमेजाइना अथवा डायमंड पर्वत तक एक घाटी है, जो कि वोयोंग तथा हेन नदियों की घाटियों के मध्य स्थित है। उत्तर की उच्च भूमि पेह तानशेन (पेक तू-सेन) या 'श्वेत-शिखाओं के पर्वत' कहलाते हैं। इसकी ऊँचाई प्राचीन चीनियों ने ७ मील बतलाई थी, परन्तु वास्तव में यह समुद्र सतह से ८६०० फुट ऊँचे हैं। यह श्वेत पर्वत एक ज्वालामुखी पर्वत का मुख (crater) है; जो इस समय एक ६ या ७ मील परिधि की झील के रूप में है। अब यदि उस पर्वत की ओर दृष्टि डाली जाय, जो कि तीन नदियों के बेसिनों से मध्य स्थित है, तो हम देखते हैं, कि यह क्षेत्र बहुत ही सुन्दर व रमणीय हैं, और इसमें विभिन्न प्रकार की वनस्पति मिलती है। पश्चिमी और पूर्वी ढालों पर यालू तथा तूमन नदियाँ बहती हैं। यालू नदी कोरिया की खाड़ी (पीले सागर का उत्तरी भाग) में तथा बाद वाली उत्तर पूर्वी जापान सागर में गिरती है। उत्तर की ओर सुंगारी नदी में अनेक छोटी छोटी तेज बहने वाली नदियाँ आ मिलती हैं।



कोरिया भौतिक

डा० बी० कोटो* ने कोरिया के धरातल की तुलना इटली से करते हुए बतलाया है कि दोनों प्रायद्वीप उत्तर की ओर पर्वत श्रेणियों से कटे हुए हैं। ये उत्तर की श्रेणियाँ दक्षिण की ओर यकायक निम्न भूभागों में परिवर्तित हो गई हैं। उत्तरी इटली में आल्पस पर्वत मध्य की स्थिति प्राप्त करते हैं, परन्तु कोरिया में 'आर्चियन' व 'पाल्योजोयेक' श्रेणियां जापान सागर की ओर स्थित है, सम्पूर्ण भाग में दो भिन्न क्षेत्र हैं; एक उत्तर की ओर और दूसरा दक्षिण की ओर। इन दोनों के मध्य स्यूक-का-रियोंग का गड्ढा है। इसके द्वारा दो समुद्रों के मध्य एक बड़ा सरल मार्ग है। ये दोनों भू क्षेत्र हर प्रकार से भिन्न हैं, दोनों के निवासी, जलवायु धरातल तथा इतिहास बिल्कुल भी मिलते-जुलते नहीं हैं। दक्षिण का भाग पहाड़ी है, इसके पूर्व में ऊँचे-ऊँचे पर्वत हैं, उत्तर में दो प्रकार का धरातल है, पहला–कायमा का पठार और दूसरा–दक्षिण की ओर च्यो-स्योन पहाड़ी भूमि। परन्तु बाद वाली दक्षिणी कोरिया के अन्य भागों से नीची है।

बनावट (Structure) :—

कोरिया की बनावट प्राचीन चट्टानों की है। डा० कोटो ने बनावट के दृष्टिकोण से इसको पांच भागों में विभाजित किया है, पहला— चाहे आरचियन मुड़े हुये पर्वत, यह दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर फैले हुए हैं, जिस स्थान पर यह शिलोता-एलिन श्रेणी से मिलते हैं, वहां इन्होंने प्रायद्वीप के आधे भाग को घेर रक्खा है। दूसरी चंग-पाई-शान की प्राचीन चट्टानें जो कि काइसा के क्षेत्र को पूर्व से पश्चिम तक तथा उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम तक काटती हैं। यह दक्षिणी मंचूरिया के मैदान का ऊपरी भाग है। तीसरा कोरिया प्रणाली, यह प्रायद्वीप पर उत्तर से दक्षिण तक फैली हुई है। चौथ हांन-शान श्रेणी यह दक्षिणी कोरिया तट पर स्थित हैं, इसकी बनावट बहुत बाद की है। पांचवां-अनेक उच्च चट्टानें, यह च्यो-स्योन (Chyo-Syon) भूमि को काटती हैं। ये विस्तृत चट्टानों के भाग भूरे रंग की चट्टानों के बने हुये हैं। ऐसा प्रतीत होता है, कि ये भूकम्प वाले क्षेत्र हैं, वास्तव में इन्होंने वर्तमान कोरिया की बनावट को यह रूप दिया है।

नदियां तथा झीलें (Rivers and Lakes) :—

कोरिया में बेसिनों तथा बहते हुए जल की बहुत कमी है। यहां केवल एक ही झील अथवा तार्न (Tarn) है, जो कि 'ड्रेगन प्रिसेज पूल' (Dragon Princess Pool) के नाम से प्रसिद्ध है। यह झील एक ज्वालामुखी मुख

* Dr. B. Koto (1902-3) a Japahese Geologist, crossed the peninsula from all directions, the results of his observations were published in the Tokyo Journal of the College of Science Vol, 19,1903.

(Crater) पर पैक-तू (Paik-tu) पर्वत की चोटी पर स्थित है। यहां से केवल तीन छोटी छोटी नदियां निकलतीं हैं। ये नदियां कोई विशेष उल्लेखनीय नहीं हैं। यहाँ तक कि हांन नदी, जो कि कदाचित् सबसे बड़ी आन्तरिक नदी है, पीले सागर में गिरती है यह नाव चलाने योग्य नहीं है। दो सीमान्त नदियों में तुमन (Tuman) भी नाव चलाने योग्य नहीं है। केवल यालू नदी ही एक ऐसी नदी है, जो कि ५०० से लेकर ८०० फीट तक चौड़ी है। इसकी एक शाखा हुन-च्यांग (Hun-Chiang) है, जो कि उत्तर-पूर्वी मंचूरिया के लाओ लिंग (Lao Ling) पर्वत से निकलती है। इस नदी की एश्चुअरी (Estuary) पर दीर्घ ज्वर (Spring tide) के समय ३० फुट ऊंचा पानी आजाता है। इसके बाद यालंग नदी हंग के स्थान तक स्टीमर चलाने योग्य है, न केवल इतना ही, बल्कि लगभग ६०० मील तक इसमें छोटी छोटी नावें चलाई जा सकती हैं। इस प्रायद्वीप में तमाम कुवें चश्में व झरने हैं। इन जलाशयों की सहायता से यहां जल का अभाव नहीं रहता, यद्यपि औसत वर्षा केवल ३३ इंच ही होती है।

जलवायु (Climate) :—

इस देश में केवल कुछ दलदली भागों को छोड़ कर शेष भाग की जलवायु स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से बड़ी लाभदायक है। उत्तर के भाग की जलवायु बहुत ही ठंडी तथा दक्षिण के भाग की जापान की जलवायु से मिलती जुलती है। शीत ऋतु में यह बर्फ वर्षा हर स्थान पर होती है। इस ठंड से यहां के लोग इतना डरते हैं कि बहुत से तो थोड़े समय के लिये अपना स्थान छोड़ कर अन्य स्थानों पर जा बसते हैं। इस ऋतु, में गर्म जल के नल, जो कि भूमि से एक फुट ऊंचे हैं, प्रत्येक घर में पाये जाते हैं।

मानव रूप (Human Aspect)

ऐतिहासिक आधार (Historical Background) :—

कोरिया का इतिहास बहुत प्राचीन है। ईसा से पूर्व बारहवीं शताब्दी में कित-जी (Kit-ze) जो कि एक चीनी नेता था, उसने सर्वप्रथम कोरिया वासियों को गुफाओं में रहते हुए देखा। इनके विषय में इतिहासकारों को बहुत कम ज्ञान है। लगभग दो हजार वर्ष तक कोरिया जापानियों या चीनियों की अध्यक्षता में एक स्वतंत्र राज्य रहा। देश पर उत्तर से चीनियों तथा मन्चूरियन लोगों ने बराबर आक्रमण किये थे। कोरिया बाद में विश्व के लोगों के लिये एक 'हरमिट राज्य' (Hermit Kingdom) के नाम से प्रसिद्ध हो गया। यह निश्चय नहीं हुआ कि कोरिया चीनियों के अधिकार में रहा या नहीं, किन्तु निस्सन्देह बाद में इसने

चीनियों से पनाह मांगी। परन्तु चीनियों ने कोई भी विशेष पनाह नहीं दी क्योंकि फ्रेन्च तथा अमरीकन लोगों को १८६६ तथा १८७१ में यहां आने की आज्ञा दे दी गई थी। इधर जापान ने कोरिया से सम्बन्ध स्थापित कर लिये थे। चीन बराबर कोरिया के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप कर रहा था, फलस्वरूप १८६४ में कोरिया ने पुनः चीन से एक विद्रोह शान्त करने के हेतु सहायता मांगी। फलस्वरूप चीनियों की फौजें लौट गईं और जापानियों ने अपने मंत्री की रक्षा के हेतु एक आदमी स्योल भेजा। जापानियों ने चीनियों से कहा कि जापान और चीन की फौजें यहां साथ साथ कार्य करेंगी, परन्तु कोरिया राजी नहीं हुआ और फलस्वरूप १८६४-६५ में साइनो जापानी युद्ध छिड़ गया।

जापान के बाद रूस दूसरा देश था, जो आरम्भ से कोरिया को अपने आधीन रखने का इच्छुक था। कोरिया की राजनीति में रूस द्वारा प्रथम हस्तक्षेप १८८० में हुआ, जब कि रूस के सेनाधिकारी कोरिया के दरबार में सुरक्षा के प्रश्नों पर परामर्श देने के लिये आने लगे। जापानी सेनाधिकारी भी छद्म-वेश में इसी अभिप्राय से कोरिया दरबार में आते थे। रूसियों ने क्योंज़ो (सऊल) में कोरिया सरकार के लिये एक शस्त्रागार का निर्माण भी किया और कोरिया के राजा को सिखा कर सब जापानियों को कोरिया से निकलवा दिया। रूसियों की इस चाल से क्रुद्ध होकर जापान ने १६०४ में रूस से युद्ध आरम्भ कर दिया और उसे परास्त किया।

इसके पूर्व जापानियों और रूसियों की चालों के फलस्वरूप १८१४ में कोरिया में उपद्रव आरम्भ हो गये; जिनसे तंग होकर कोरिया ने चीन से सहायता मांगी थी, चीन व जापान दोनों अपनी सेनाओं सहित उपस्थित हो गये। परन्तु जापान ने २३ जुलाई १८६४ को कोरिया के राजा को गिरफ्तार कर तथा चीन पर आक्रमण कर अपना वास्तविक इरादा प्रकट कर दिया। बीस अप्रैल सन् १८६५ को शिमोनोसेकी में एक सन्धि हुई, जिसके अनुसार चीन ने कोरिया की स्वाधीनता मान्य की। इस प्रकार चीनियों को कोरिया से बाहर निकाल कर जापान कोरिया-स्थित रूसियों की ओर बढ़ा। कोरिया के राजा पर तरह तरह के दबाव डाले गये, उसने तंग आकर ११ फरवरी १८६६ को सिऊल में स्थित रूसी दूतावास में शरण ली। इसी वर्ष रूस ने चीन पर दबाव डालकर एक रेलवे लाइन बनाने का अधिकार प्राप्त कर लिया, जो मन्चूरिया होती हुई व्लाडीवोस्टक तक जाये। इसके पश्चात् रूस और जापान ने भी ६ जून को एक समझौते पर हस्ताक्षर कर "कोरिया की सम्पूर्ण स्वाधीनता" को स्वीकार किया। परन्तु यह समझौता एक षड्यन्त्र मात्र था। जापान के इटो ने रूस से गुप्त वार्ता कर उसे आश्वासन दिया कि यदि वह कोरिया के सम्बन्ध में जापान से कुछ न कहे तो वह भी रूस द्वारा

मंचूरिया में हस्तक्षेप के विषय में कुछ नहीं कहेगा। जापानियों ने तो यह भी कहा कि ३८° समानान्तर रेखा से उत्तर के भाग वाले कोरिया को रूसी अपने अधिकार में रख सकते हैं और दक्षिण वाला भाग जापान के अधिकार में रहे। जहाँ रूस और अमरीका ने ३८ से समानान्तर के आधार पर कोरिया का विभाजन किया वहाँ यह प्रस्ताव पोट्सडम के उस सम्मेलन से ५० वर्ष पूर्व रखा गया था। इस प्रकार से यह देश तबसे दो प्रभुओं का दास है।

परन्तु इस समझौते के बावजूद रूस और जापान कोरिया को दबोचने के नये कुचक्रों में ग्रसित रहे और इन कुचक्रों का अन्त १९०४ के इतिहास प्रसिद्ध जापान-रूस युद्ध में हुआ।

रूस ने स्पष्ट कहा था कि वह कोरिया की ओर बढ़ेगा, मंचूरिया की ओर जाने वाली चाइनीज़ ईस्टर्न रेलवे का निर्माण इस प्रयत्न को पूरा करने के लिये ही है। ज़ार का यह साम्राज्य स्वप्न मिटा, तो स्टालिन के कम्यूनिज्म का प्रचार शुरू हुआ। पचीस जून १९५० को आरम्भ होने वाला कोरिया युद्ध इसका प्रमाण है। इस युद्ध में कोरिया वासियों के बलिदान (जिसमें ३ लाख से अधिक व्यक्ति मरे तथा ३५ लाख से अधिक बेघर हो गये) अपने ढंग का एक अनुपम बलिदान था। इस स्थान पर हम स्वाधीनता संघर्ष का पूरा विवरण नहीं दे सकते।

पिछले कोरिया युद्ध में एक बार जब सिउल नगर को कुछ ही घण्टों में खाली करने की नौबत आ गई थी, तब वहां की सरकार ने शस्त्रादि को छोड़ कर, सबसे पहले पुराने और सांस्कृतिक ग्रन्थों को ले जाने का आदेश दिया था। कोरिया के हेतु स्वाधीनता का महत्व यही है, कि उसने उसकी प्राचीन संस्कृति अक्षुण्ण रह सके।

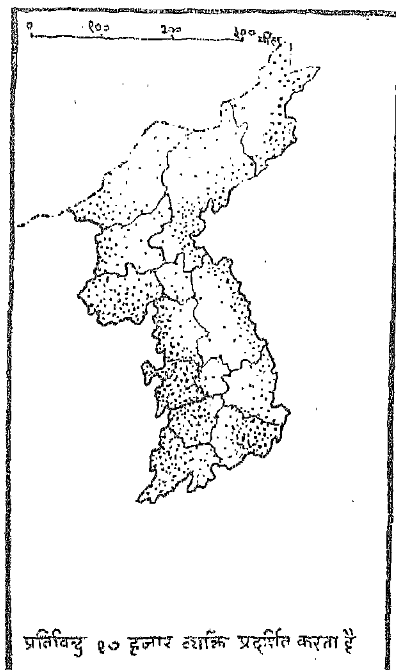
कोरिया का इतिहास इस बात का गवाह है, कि चीन, जापान और रूस द्वारा 'स्वाधीनता' की मान्यता दिये जाने पर भी उसे इन देशों द्वारा भयंकर त्रास दिया गया और इन देशों की गुलामी से उसे कभी भी छुटकारा नहीं दिया।

जनसंख्या वितरण (Population Distribution):—

कोरिया की वर्तमान जनसंख्या ३०,०००,००० से अधिक है। सन् १९१३ में यहां पर जो जनगणना की गई उसके अन्तर्गत १३,४५९,००० और सन् १९२५ में १९,५१९,९२७ सन् १९३५ में २२,८९९,०३८, सन् १९४० में २४,३२६,३२७, और१९४४ में २५,१२०,१७४ थी। सन् १९५० में यह बढ़ कर ५०० लाख हो गई। इन आंकड़ों से प्रतीत होता है, कि जनसंख्या बराबर यहाँ बढ़ रही है। औसत वृद्धि २५ प्रतिशत प्रतिवर्ष हो रही है। सन् १९३७ में यहां ६२९,००० जापानी थे, अन्य विदेशी लोगों की संख्या केवल दो वर्ष पहले ५९००० थी। यहां पर चीनियों की भी संख्या बहुत अधिक है। जापानियों की संख्या यहाँ बहुत

जल्दी ही बढ़ी है। सन् १९४० में औसत घनत्व २८५ प्रति वर्ग मील था, इस बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण ही इस छोटे से देश के सम्मुख अनेक समस्यायें उपस्थित हैं। यहाँ की जन्म दर ३१.८ प्रतिहज़ार, मृत्युदर २१.२ प्रति हज़ार है। यदि जनसंख्या वृद्धि की यही दशा रही तो कदाचित इस देश को भविष्य में अनेक कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ेगा।

यहाँ पर जापानी लोग अधिकतर बड़े बड़े नगरों में ही रहते हैं। प्रसिद्ध नगरों में सिऊल (जो जापानी भाषा में कीज़ो कहलाता है) यह एक प्रमुख औद्योगिक नगर है, इसकी जनसंख्या सन् १९३९ में १,४४६,०४९ थी। इसके बाद दूसरा नगर उत्तर-पश्चिम में प्योंगयांग (Pyong Yang) है (जिसको जापानी लोग हीजो कहते हैं।) इसकी जनसंख्या इसी वर्ष ४५,००० थी। दक्षिण-पूर्व में तहगू नगर में ३१३७०५ लोग रहते हैं। बन्दरगाहों में पुसन (४७३६१९) इंचोन (२६५७६७) दक्षिण की ओर हैं। उत्तर-पूर्व में उन्सी तथा नाजिन उल्लेखनीय नगरों में से हैं।



कोरिया—जनसंख्या

आर्थिक रूप (Economic Aspect)

प्राकृतिक वनस्पति (Natural vegetation) :—

कोरिया में कुछ वनीय क्षेत्र भी मिलते हैं, परन्तु यहां के वन बहुत घने नहीं हैं। बहुत से स्थलों पर यह वन साफ कर दिए गए हैं। यहां के वन दक्षिणी जापान के वनों से मिलते जुलते हैं। इन वनों में पाइन, (ब्लू येलो) ओक व वालनट के वृक्ष मिलते हैं, इन नुकीली पत्ती वाले वृक्षों के साथ बर्च भी मिलती है। स्प्रूस फ़र तथा ज्यूनिफ़र के वृक्ष भी उत्तरी कोरिया में उगते हैं। यहां की कुल

Figures from G. B. Cressey, Asia's Lands & Peoples Page 241. When the Population was 280 lakhs then 80 lakhs lived in North Korea (48000 sqr.) and 200 lakhs lived in South Korea (37000 sqr. miles).

भूमि पर वनीय क्षेत्र ७० प्रतिशत भाग पर हैं। नदियों में धान के मैदान मिलते हैं, उन्हें आजकल कृषि क्षेत्रों में परिवर्तित कर लिया गया है। वास्तव में गत वर्षों में वर्षा के कारण प्राकृतिक वनस्पति का नाश हो गया है। यहां की सरकार अब पुन: इसकी रक्षा करने के प्रयत्न कर रही है।

कृषि (Agriculture) :—

कोरिया एक कृषि प्रधान देश है, यहां पर कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल ११० लाख एकड़ से अधिक है, इस क्षेत्र पर विभिन्न उपजें उत्पन्न की जाती हैं। यहां की तीन चौथाई जनसंख्या इस धन्धे पर निर्भर रहती है, शेष १० और १५ प्रतिशत लोगों के जीवन का आधार भी यही है। कृषि योग्य भूमि के बढ़ाने की दर बहुत कम है, पाँच वर्ष में लगभग १२५,००० एकड़ बढ़ पाती है। यहां के खेत बहुत छोटे होते हैं। इनके मालिक धनी जमींदार या कृषक स्वयं होते हैं। यहां के लोगों को अन्य किसी भी धन्धे से अधिक लाभ नहीं होता, शताब्दियों से लोग मिट्टी को ही अपना जीवन आधार मानते आये हैं।

कोरिया के निवासी प्राचीन ढंग से कृषि करते हैं, इसके साधन बहुत ही सीमित हैं। अपने श्रम को यह लोग अधिकाधिक प्रयोग करते हैं। कृषि करने के औजार बहुत साधारण हैं। इनके पास इतनी पूंजी भी नहीं है जिससे कि आधुनिक औज़ार खरीद सकें। यही कारण है कि यहां प्रति एकड़ उपज बहुत कम होती है। प्रति फ़ार्म के पास औसत भूमि केवल साढ़े तीन एकड़ होती है। यहां की सरकार कृषि करने के साधनों में बराबर उन्नति करने की चेष्टा कर रही है। आधुनिक साधनों का उपयोग बराबर किया जा रहा है। कुछ भूमि तो जो कि दलदली बंजर तथा पर्वतीय है, कृषि की दृष्टि से बेकार है, इस प्रकार की भूमि का क्षेत्रफल २५ लाख एकड़ के लगभग है। सरकार इस भूमि का भी कृषि के हेतु उपयोगी बनाने की कोशिश कर रही है।

यहां की प्रमुख उपजों में चावल, जौ, गेहूं, सोयाबीन, इटेलियन ज्वार बाजरा तथा लालबीन हैं। इनके अतिरिक्त तम्बाकू, कपास तथा भांग इत्यादि भी उत्पन्न की जाती हैं। मूलियां जिनसे कि किमची (Kimchi) तैयार होती है बहुत बोई जाती है। किमची कोरिया वासियों की अति प्रिय 'डिश' अथवा भाजी होती है।

चावल यहां की एक प्रमुख उपज है। यह बोई हुई भूमि के २७ प्रतिशत भाग पर उत्पन्न किया जाता है। केवल कुछ भूमि को छोड़कर शेष भूमि पर चावल सिंचाई द्वारा उत्पन्न होता है। सन् १९३० में चावल का उत्पादन ९५० लाख बुशल था, केवल पाँच वर्ष बाद इसकी उपज अन्य उपजों के मुकाबले ७१·६ प्रतिशत थी। सन् १९३७ में समस्त कोरिया में चावल का उत्पादन २,७१२,७५२

मेट्रिक टन था। आजकल की दशा यह है, कि केवल दक्षिणी कोरिया का उत्पादन ३,२०५,००० मेट्रिक टन हो गया है। प्रति एकड़ चावल की उपज इस समय ५२ बुशल है। जापान के मुकाबले यह बहुत कम है। यह प्रतिशत प्रति वर्ष परिवर्तित होती रहती है। द्वितीय महायुद्ध के पहले ५० प्रतिशत चावल जापान को निर्यात कर दिया जाता था, क्योंकि उस समय जापान में धान की कमी थी। जापान के समस्त धान उपयोग का १० प्रतिशत भाग इसी देश से प्राप्त होता है।

दूसरी महत्वपूर्ण उपज जौ है। यह यहां की जनसंख्या का मुख्य भोजन है। चावल की कृषि का यह तीन-पांचवां भाग सम्मिलित करता है। दक्षिण की ओर जौ अक्टूबर व नवम्बर के महीनों में बोया जाता है और जून व जुलाई में काट लिया जाता है। इसका उत्पादन आज से २२ वर्ष पहले ४४० लाख बुशल था। उत्तर में यह बसन्त ऋतु में बोया जाता है। सोयाबीन तथा अन्य प्रकार की बीन का क्षेत्र उतना ही है, जितना कि जौ का। इसका उत्पादन लगभग २५० लाख बुशल है। यह भी यहां के लोगों का मुख्य खाद्य पदार्थ है। उत्तर-पश्चिम के क्षेत्र में ज्वार बाजरा उत्पन्न किया जाता है। इसका उत्पादन लगभग तीन सौ लाख बुशल है। गेहूं भी इसी क्षेत्र में उत्पन्न किया जाता है। इसकी उपज १०० लाख बुशल से अधिक है।

अन्य उपजों में ओट, कार्न, बकवीट तथा शकरकन्दी है। सोरगम भी उत्तर की ओर उत्पन्न किया जाता है। चीन में इसे केओलिंग तथा कोरिया में सुसु कहते हैं। दक्षिणी कोरिया में कपास उत्पन्न होती है इस क्षेत्र का उत्पादन आज कल ६५,००० गांठें हैं। इसकी उपज कुल मिलाकर २३०,०००,००० पौंड से कहीं अधिक है। तम्बाकू (जिसका कि उत्पादन सन् १९५३ में ३९,५००,००० पौंड था) के अलावा अन्य तमाम प्रकार की तरकारियाँ भी उत्पन्न की जाती हैं। यहां पर रेशम के कीड़े भी पाले जाते हैं केवल दक्षिणी कोरिया में ही १९५२ में ५८८६ मेट्रिक टन हुआ ककून हुआ। अब कुछ फल भी उत्पन्न किये जाने लगे हैं। सेब व नाशपाती फलों में मुख्य स्थान रखते हैं।

कृषि-विभाग :—

कोरिया के जलवायु के आधार पर दो कृषि विभाग किये जा सकते हैं पहला उत्तरी कोरिया का भाग तथा दूसरा दक्षिणी कोरिया का भाग। यह दोनों कृषि विभाग लगभग बराबर ही हैं। दक्षिण के भाग में तीन चौथाई गेहूं, कपास, शकरकन्दी तथा जौ उत्पन्न किया जाता है। उत्तर में कुछ चावल के अलावा सख्त उपजें उगाई जाती हैं जैसे, ज्वार, बाजरा, तम्बाकू, गेहूं तथा सुसु इत्यादि।

जीवजन्तु (Animal Life) : —

यहां पर अनेक प्रकार के जीवजन्तु भी मिलते हैं। इनमें से वह जो कि जंगली हैं वनों में पाये जाते हैं। चीता, भालू तथा हिरन यहां अधिक संख्या में मिलते हैं। इनके अतिरिक्त बतख, सारस तथा अन्य विभिन्न प्रकार के पक्षी भी बहुत पाये जाते हैं। पालतू जानवरों में यहाँ के पशु बहुत प्रसिद्ध हैं। गाय, बैल यहाँ के बड़े बड़े हृष्टपुष्ट होते हैं। यदि देखा जाय तो प्रत्येक फार्म का औसत दो पशु तो अवश्य ही पाये जाते हैं। पशुओं की संख्या यहाँ पर२० लाख के लगभग है। सुअर तथा मुर्गियाँ भी बहुत पाली जाती हैं। सुअर यहाँ पर १५० लाख से अधिक हैं। गाय तथा अन्य दूध देने वाले पशु उत्तरी कोरिया में हमक्योंग के स्थान पर अधिक पाले जाते हैं। इन पशुओं से जो आर्थिक वस्तुयें प्राप्त होती हैं; उनका निर्यात भी होता है। जापानियों ने यहाँ के मछुआ उद्योग को बड़ा प्रोत्साहन दिया है सन् १९५२ में २१०३५० मैट्रिक टन मछलियाँ पकड़ीं गई।

खनिज सम्पत्ति (Mineral Wealth) :—

खनिज पदार्थों की दृष्टि से कोरिया बहुत धनी देश है, यहां पर कई महत्व-पूर्ण खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। द्वितीय महायुद्ध के समय खनिज पदार्थों का उत्पादन बहुत बढ़ गया था। कहा जाता है, कि गत बीस वर्ष के अन्दर ही उत्पादन चौगुना हो गया है। यहां के प्रमुख खनिजों में सोना, लोहा, और कोयला है। सोना यहाँ पर केवल दो स्थानों से प्राप्त किया जाता है। प्रथम, उनसन (Unsan) की खानें तथा द्वितीय स्यूआन (Suian) हैं। इन दोनों खानों पर विदेशी कम्पनियाँ काम करतीं हैं। यह धातु यहाँ प्राचीन काल में भी निकाली जाती थी। लोहा यहाँ दूसरे नम्बर की धातु है, यह इस प्रायद्वीप के उत्तर-पश्चिम तथा उत्तर-पूर्व में मिलती है। प्रमुख खानों का केन्द्र वांगचाई (Whanghai) है। कच्चे लोहे का औसत उत्पादन लगभग दो लाख टन है। इस धातु का बहुत सा भाग जापान को निर्यात कर दिया जाता था। जबसे यहाँ इसका उत्पादन बढ़ा है, तबसे लोहे व इस्पात के यहाँ अनेक कारखाने भी खुल गये हैं।

लोहे के बाद कोयले का स्थान है। इसका उत्पादन यहाँ लगभग २५ लाख टन है। केवल दक्षिणी कोरिया का ही उत्पादन १९५३ में ८६६०० टन था कुल कोष का दो-तिहाई उत्तम श्रेणी का ऐन्थ्रेसाइट (Anthracite) कोयला है। खानें अधिकतर प्योंगयांग (Pyongyang) के निकट हैं। दक्षिण-पूर्वी कोरिया में समचोक के स्थान पर भी थोड़ा कोयला मिलता है। थोड़ी मात्रा में लिगनाइट प्रकार का कोयला भी मिलता है।

अन्य धातुओं में टंग्स्टन ताँबा, चाँदी उल्लेखनीय है, टंग्स्टन का उत्पादन १९५३ में ७७४१ टन था, परन्तु यह संख्या केवल दक्षिणी कोरिया की सैंगडोंग (Sang-

dong) खानों तक ही सीमित है। अन्य धातुओं में तांबा ५०० टन, मौलिब्डिनम ६०० टन नमक २०३८८६५ टन, केओलिन १७६३, सोना १५६५७० औंस, चांदी ६१३० औंस तथा बिसमुथ २४० टन। कुछ ग्रेफाइट भी यहाँ निकाला जाने लगा है। परन्तु उत्पादन बहुत अधिक नहीं है।

जलशक्ति :—

द्वितीय महायुद्ध से पूर्व यहाँ जलशक्ति का भी पर्याप्त विकास हुआ है। यालू नदी इस दृष्टि से एक महत्वपूर्ण नदी है। इस नदी पर तथा इसकी सहायक नदियों पर जलशक्ति उत्पन्न की जाती है। सुइहो का बांध (Suiho Dam) जो कि १९४४ में बनकर तैयार हुआ था, ३५० फुट ऊँचा है। यह ६४००० k. w. शक्ति उत्पन्न करता है। यह कदाचित एशिया का सबसे बड़ा बांध है। इस शक्ति की सहायता से अनेक उद्योग-धन्धों की उन्नति हुई है। विद्युत शक्ति का उपभोग १९५३ में ७३२० लाख k. w. h था।

उद्योग-धन्धे (Industries) :—

द्वितीय महायुद्ध ने कोरिया के अनेक उद्योग-धन्धों को प्रोत्साहन दिया है। यहाँ पर पहले बड़े बड़े उद्योग-धन्धे बहुत कम पाये जाते थे, परन्तु अब जबसे कि खनिज पदार्थों में पर्याप्त उन्नति हुई है, यह उद्योग धन्धे भी उन्नति कर गये हैं। उत्तरी कोरिया में उद्योग-धन्धों की स्थापना जापानियों की सहायता से हुई है। आजकल यहाँ अल्यूमिनियम, रसायन, सीमेण्ट, खाद तैयार करने के अनेक कारखाने पाये जाते हैं। यहाँ पर लोहे व इस्पात के धन्धे भी उन्नति कर गये हैं, अब यहाँ तरह तरह की मशीनें भी तैयार की जाने लगी हैं। बड़ी बड़ी लोहा गलाने की भट्टियां तथा कारखाने क्योमिपो (Kyomipo) के स्थान पर स्थापित हैं। यह स्थान प्योंगयांग के दक्षिण-पश्चिम में है। चोंगजिन (Chongjin) उत्तर-पूर्व की ओर इस धन्धे का दूसरा क्षेत्र है।

इन उद्योग-धन्धों के अतिरिक्त सूती, रेशमी व ऊनी कपड़े के कारखाने भी खुल गये हैं। सन् १९५४ में यहां सूत कातने की १००१९८ तकलियां तथा कपड़ा बुनने के १९६५ करघे थे। सिऊल, प्योंगयांग तथा ताइगू औद्योगिक नगर हैं जिनमें यह उद्योग-धन्धे पाये जाते हैं।

यातायात के साधन (Means of Transport & Communication :—

कोरिया ने यातायात के साधनों में पर्याप्त उन्नति की है। यहां दिसम्बर १९५२ में १०५६ बड़े जलयान तथा २४४८ छोटे जलयान थे।

आन्तरिक क्षेत्रों में यातायात रेलों, सड़कों (मोटरकार, बैलगाड़ी, घोड़े गाड़ियों) नदियों तथा वायुमार्गों द्वारा होता है। सन् १९५२ में यहां ७३१

ट्रैक्सी कैब, ६८४५ ट्रकें, १४७० बसें तथा ६७० निजी मोटरकारें थीं। सन् १६३६ में सड़कों की कुल लम्बाई २७८८७ मील तथा रेलों की १६७६ मील थी।

व्यवसाय (Occupation) :—

यहां के निवासी विभिन्न प्रकार के व्यवसाय में लगे हुये हैं। अस्सी प्रतिशत से अधिक लोग कृषि करते हैं। धान उगाना उनका प्रमुख व्यवसाय है। समुद्र तट तथा आन्तरिक जलाशयों के निकट जो लोग रहते हैं, वह मछली पकड़ते हैं। दक्षिण का तट जहां अनेक द्वीप समूह हैं, मछली पकड़ने के आदर्श स्थान हैं। इस स्थान पर समुद्र उथला है, और साथ ही गर्म व ठंडी जलधारायें भी यहां आकर मिलती हैं, फलस्वरूप यहां अनेक प्रकार की स्वादिष्ट मछलियां आकर एकत्र हो जाती हैं। पहले यहां पर मछलियां प्राचीन ढंग से पकड़ी जाती थीं परन्तु अब ये आधुनिक ढंग से पकड़ी जाती हैं। इस धन्धे में १० प्रतिशत से अधिक तो जापानी लोग लगे हुये हैं। अब धीरे धीरे यहाँ की जनसंख्या वर्तमान उद्योग-धन्धों की ओर भी आकर्षित हो रही है। कोरिया के निवासी, सूती, ऊनी व रेशमी कपड़ा बुनने में निपुण होते हैं। ये घरेलू ढंग पर भी कपड़ा तैयार करते हैं। बहुत से मनुष्य स्थानीय व्यापार में भी लगे हुये हैं।

विदेशी-व्यापार (Foreign Trade) :—

कोरिया का विदेशी व्यापार अधिकतर जापान से ही है। यहां से वस्तुयें अधिकतर जापान को ही निर्यात की जातीं हैं। द्वितीय महायुद्ध के पहले यहाँ का आयात निर्यात की अपेक्षा अधिक था। फलस्वरूप राष्ट्रीय आय का अधिक भाग आयात में चला जाता था, देश की पूंजी का धीरे-धीरे अन्त हो रहा था। द्वितीय महायुद्ध के समय जब जापान ने कोरिया को छोड़ दिया था, तो कुछ दशा ठीक हुई, परन्तु देश में औद्योगिक दृष्टि से अनुभवी व्यक्तियों की फिर भी कमी रही। पहले मंचूरिया से भी इसका विदेशी व्यापार होता था। चावल यहां सबसे अधिक निर्यात किया जाता था, उसके बाद रेशम का नम्बर था। फुसन यहाँ का विदेशी व्यापार के दृष्टिकोण से सबसे महत्वपूर्ण बन्दरगाह है, इसके बाद जिनसेन दूसरे का नम्बर का बन्दरगाह है। उत्तरी कोरिया का अधिकतर व्यापार रूस से है। निर्यात का कुल मूल्य १६४६ में ७४० लाख रूबल, १६४८ में २६४० लाख रूबल तथा १६४६ में ३३७० लाख रूबल था। दक्षिणी कोरिया का सन् १६५३ में कुल निर्यात ३६,५८६,००० डोलर तथा कुल आयात १५३,६३१,२२२ डोलर था।

In 1933 there were 1900 miles of railways & 10300 miles of roads. From L. D. Stamp. 'Asia' A Regional and Economic Geography p. 656

राजनैतिक रूप (Political Aspect)

कोरिया युद्ध (Korean War) :—

अमरीका के सभापति रूजवेल्ट महाशय ने १९४५ में मार्शल स्टालिन से जापान के विरुद्ध युद्ध के लिये कहा, इस पर रूस ने कोरिया पर चढ़ाई कर दी। ठीक एक महीने बाद अमरीका की फौजें दक्षिणी कोरिया में स्थापित हो गईं। क्योंकि ३८° समानान्तर कोरिया को दो बराबर भागों में विभाजित करती है, इस लिये यह एक निश्चित सीमा अमरीका तथा रूस के मध्य रक्खी गई। दिसम्बर १९४५ में एक कांफ्रेंस हुई, इसके अन्तर्गत यह निश्चय किया गया कि अमरीका और रूस एक मिश्रित कमीशन बनालें और कोरिया के प्रतिनिधियों की सहायता से इस देश में एक अस्थायी गवर्नमेंट स्थापित कर दें। यह सरकार केवल पांच वर्ष के लिये बनाई जाय, ऐसा निश्चय किया गया।

परन्तु कोरिया के लोग इस समझौते से बिलकुल ही सहमत नहीं हुये। रूस ने इस कमीशन में आने की केवल कम्युनिस्ट कोरिया को ही अनुमति दी। इस बात पर १८ माह तक बराबर संघर्ष रहा। अमरीका को हार कर मामला संयुक्त राष्ट्र संघ (U. N. O.) के सम्मुख रखना पड़ा। संयुक्त राष्ट्र संघ ने १९४७ के अन्त में कोरिया के लिये एक कमीशन भेजा, जिसका काम स्थायी सरकार बनाने के हेतु चुनाव करना था। फलस्वरूप मई १९४८ में चुनाव हुये। परन्तु रूस ने इस कमीशन को उत्तरी कोरिया में घुसने की अनुमति नहीं दी। अगस्त १५ सन् १९४८ को कोरिया में गणराज्य स्थापित कर दिया गया, इसकी राजधानी सिऊल बनादी गई, सभापति ७० वर्ष के एक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी नेता डा० सिंगमन री (Dr. Syngman Rhee) हुये। दक्षिणी कोरिया की इस स्वतन्त्रता को ग्रेट-ब्रिटेन तथा अमरीका ने भी मान लिया।

उधर दूसरी ओर रूस ने 'डिमोक्रेटिक कोरियन पीपुल्स रिपब्लिक' (Democratic Korean People's Republic) प्योंगयांग (Pyongyong) में स्थापित कर दी। इसकी स्थापना फरवरी १९४८ में हुई, इसके अन्तर्गत रूस ने अपनी फौजें उत्तरी कोरिया से हटा लीं। परन्तु उनके उपनिवेश जनरल शितोव वहीं रख दिये गये। वर्तमान संघर्ष २५ जून सन् १९५० से आरम्भ हुआ। उत्तरी कोरिया की फौजों ने ३८° अक्षांश पार करके दक्षिणी कोरिया पर आक्रमण कर दिया सम्पूर्ण विश्व को चेतावनी दे दी गई। योरोप के पश्चिमी देशों को पूर्ण विश्वास था कि एक और विश्व युद्ध आरम्भ हो जायगा। यद्यपि रूस तथा कम्यु-निस्ट चीन खुले तौर पर युद्ध में सम्मिलित नहीं थे, परन्तु फिर भी उत्तरी कोरिया के पीछे इन राष्ट्रों की शक्तियाँ थीं। जैसे ही उत्तरी कोरिया ने दक्षिणी कोरिया पर

आक्रमण किया वैसे ही सुरक्षा परिषद (Security council) ने एक प्रस्ताव पास किया, जिसमें यह किया बड़ी अनुचित (An act of aggression) बतलाई गई। इस प्रस्ताव को बहुत से परिषद के मेम्बरों ने सहायता दी; उत्तरी कोरिया की फौजें बराबर विजय प्राप्त करती आगे बढ़ती रहीं, अन्त में ३० जून १९५० को उन्होंने सिऊल (Seaul) जीत लिया। आरम्भ में ही संयुक्त राष्ट्र के साथ अमरीका भी था, परन्तु बाद में हांग-कांग तथा अन्य देशों की फौजें भी आ गईं। युद्ध का पांसा सितम्बर माह में पलटा। सिऊल वापस ले लिया गया। उत्तरी कोरिया की फौजों को पीछे हटना पड़ा। युद्ध बराबर चल रहा था, परन्तु संयुक्त राष्ट्र इस चेष्टा में लगा था, कि युद्ध समाप्त कर दिया जाय। कम्युनिस्ट चीन से प्रार्थना की गई कि कोरिया में युद्ध समाप्त करने की चेष्टा करें परन्तु उसने यह प्रार्थना १३ जून १९५० को ठुकरा दी। संयुक्त राष्ट्र संघ की फौजों के कमान्डर जनरल मैकार्थर थे, कुछ कारणों से प्रेसीडेन्ट ट्रूमन ने उन्हें अलग कर दिया, और उनके स्थान पर जनरल रिजवे नियुक्त किये गये। सन् १९५१ में ब्रिटेन ने स्थिति का अध्ययन किया और युद्ध समाप्त करने की भरसक चेष्टा की, परन्तु सब निष्फल रही।

जब २८ अप्रैल १९५२ में जनरल मार्क क्लार्क जनरल मैथ्यू रिजवे के स्थान पर आ गये थे, तब बराबर संयुक्त राष्ट्र संघ युद्ध थामने की चेष्टा कर रहा था। २३ जून १९५१ को श्री वाई० ए० मलिक ने जो कि सुरक्षा परिषद के सभापति थे, युद्ध रोकने के सम्बन्ध में एक भाषण दिया। यह प्रस्ताव उत्तरी व दक्षिणी कोरिया ने मंजूर कर लिया। इसके उपरान्त १० जुलाई को उत्तरी व दक्षिणी कोरिया के तथा चीनी प्रतिनिधियों ने मिलकर एक बैठक की। जो भी समझौता हुआ उसके अन्तर्गत ६ सितम्बर १९५३ तक कैदियों का हस्तांतरण होना तय हो गया। अब भारतीय तथा अन्य देशों की सेनाओं की सहायता से यह भी कार्य पूर्ण हो गया।

पांच नवम्बर १९५४ को संयुक्त राष्ट्र ने इस युद्ध में हानि के सम्बन्ध में जो घोषणा की उसके अन्तर्गत इसमें १४२,०९१ व्यक्ति पीड़ित हुये। ३३६२९ मनुष्यों की मृत्यु हुई, १०३२८४ घायल हुये, तथा ५१३३ बन्दी बना लिये गये।

सांस्कृतिक रूप (Cultural Aspect)

जाति (Race) :—

कहा जाता है कि नवीन पाषाण युग (New Stone Age) में भी कोरिया में मानव जाति रहती थी। इसका प्रमाण हमें मिगालिथिक ढाँचों (Megalithic structures) औज़ारों तथा अन्य मानव चिन्हों से मिलता है।

यह वस्तुयें अब भी इस प्रायद्वीप के खंडहरों में मिलती हैं। विशेषज्ञों ने जब इन वस्तुओं का गहन अध्ययन किया तो उन्हें मालूम हुआ कि यहाँ पर जो जाति रहती थी, वह कदाचित् योरोप तथा उत्तरी अफ्रीका से आई होगी, क्योंकि यहां चिन्ह इन देशों में भी कहीं कहीं पर मिलते हैं। मिस्टर टर्ली ने यालू के क्षेत्र में कुछ ऐसी बातें अध्ययन की हैं, जिससे पता चलता है कि उत्तरी कोरिया के निवासियों के रूप रंग काकेशियन से मिलता जुलता है, न कि मंगोलियन से। ये काकेशियन गोरे वर्ण के लम्बे तथा आंखें छोटी, नाक बड़ी, बाल भूरे तथा दाढ़ी रखे हुए होते हैं। दक्षिण के आदि निवासी सन-सन अथवा हान् जाति के हैं, इन्हीं लोगों पर देश का नाम 'ग्रेट हान' पड़ा था। इन्हीं लोगों की उन्नति के अन्तर्गत हान (को-रयो) वंश (६१८-१३६२ ए० डी०) की नींव पड़ी। इनका प्रभाव सम्पूर्ण उत्तर-पूर्वी एशिया पर था। यहीं से जापानियों ने पोसीलेन तथा काँसे की वस्तुयें तैयार करने की कला का आरम्भ किया था।

चरित्र (Character) :—

एक साधारण कोरिया का निवासी जैसा कि मिस्टर कोलियर लिखते हैं, एक चीनी या जापानी से बिल्कुल भिन्न होता है। चीनी एक आदर्श व्यापारी, जापानी एक योग्य योद्धा तथा कोरियन एक शान्त विद्यार्थी के समान है। यदि स्कूल के क्लास में एक जापानी, एक चीनी तथा एक कोरियन बैठाल दिया जाय, तो निस्सन्देह कोरियन ही अधिक बुद्धिमान निकलेगा। एक साधारण विदेशी इनको सुस्त, तथा काहिल कह कर छोड़ देता है परन्तु, वास्तविकता यह है कि कोरियन किसी के दिग्दर्शन में ही बुद्धिमान सिद्ध होता है।

संस्कृति (Culture) :—

कोरिया की संस्कृति ४००० वर्ष पुरानी है। यह प्रतिकूल परिस्थितियों के होते हुये भी १६ वीं शताब्दी से बराबर उन्नति कर रहा है। मुद्रण कला का आविष्कार चीन से भी पूर्व कोरिया में हुआ। सबसे पहले विश्व कोष कोरिया में ही तैयार हुआ। संसार में सबसे पुरानी वेधशाला, जिसके ध्वंसावशेष आज भी क्योंग-जू में देखने को मिल सकते हैं, कोरिया में ही थी। जापान के 'सम्राट हिन्द योशी' ने जो विश्व विजेता बनने के लिये जापान से निकला था, कोरिया पर आक्रमण किया, तो कोरिया ने उसे अपने यहाँ निर्मित और संसार के सबसे पहले लोह-युद्ध पोत की सहायता से पराजय दी थी।

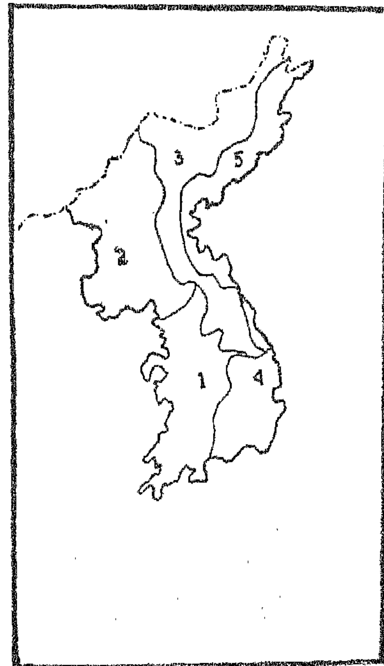
चीनी संस्कृति का प्रवेश यहाँ ११२२ बी० सी० से हुआ। कहा जाता है कि राजकुमार कुई चा (Kui-cha) अपने हजारों साथियों सहित उत्तरी चीन से मंगोलियन लोगों के भय से भाग कर यहां आ गया था। यहां पर उसे तथा

उसके साथियों को अपने युग का अतीव विज्ञान तथा शिक्षा प्राप्त हुई, उस राजकुमार के लोग इस सम्बन्ध में आज भी रखे हुये हैं। यहाँ पर पर्वतों की पूजा उसी प्रकार की जाती है, जिस प्रकार कि चीन में। वास्तव में इसको भी हम एक धार्मिक राज्य कह सकते हैं। यहाँ पर बौद्ध तथा लओ-त्सी सिद्धान्तों का पालन होता है। उच्च वर्ग के लोग कन्फूसिअस धर्म को मानने वाले हैं।

प्राकृतिक प्रदेश (Natural Regions):—

कोरिया में अनेक भिन्नतायें मिलती हैं, भिन्नतायें न केवल धरातल, जलवायु, वनस्पति तथा कृषि में हैं, बल्कि सामाजिक व साँस्कृतिक दृष्टिकोण से भी उपस्थित हैं। प्रो० बेलर के आधार पर किये गये प्राकृतिक विभाग यहाँ निम्नलिखित हैं :—

(१) दक्षिणी-पश्चिमी कृषि क्षेत्र :—दक्षिणी कोरिया का यह एक महत्वपूर्ण भाग है, राजनैतिक तथा आर्थिक दृष्टि से यह प्राचीन काल से प्रगतिशील खण्ड रहा है। हान नदी उत्तर-पश्चिमी बेसिन को दक्षिण-पश्चिमी बेसिन से अलग करती है। यहाँ पर दो फसलें एक साल में बोई जाती हैं। अक्टूबर व नवम्बर के माह कृषि के लिये बड़े महत्वपूर्ण होते हैं। इन महीनों में इधर तो चावल कटता है, उधर जौ बोया जाता है। गेहूं की कृषि भी यहां की जाती है। शहतूत के वृक्षों पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं।



कोरिया प्राकृतिक विभाग

(२) उत्तरी-पश्चिमी कृषि तथा खनिज प्रदेश :—इस भाग में शीत ऋतु में बहुत कड़ी शर्दी पड़ती है, भूमि इस ऋतु में इस योग्य नहीं रहती कि, कृषि की जाय। फलस्वरूप वर्ष में केवल एक ही फ़सल होती है। चावल यहां बहुत कम उत्पन्न होता है। गेहूं, ज्वार, बाजरा, जौ सोयाबीन यहाँ की प्रमुख उपजें हैं। खनिज पदार्थों में यहाँ कोयला, सोना तथा थोड़ा सा

लोहा मिलता है।

(३) मध्य तथा उत्तरी पर्वतीय भाग :—यह एक पर्वतीय भाग है, जगह जगह पर नवीन क्षेत्र तथा दलदल मिलते हैं। वातावरण यहां का बहुत खराब है। इसलिये जनसंख्या घनत्व यहां बहुत कम है। इस भाग में यहां की उच्च शिखरें स्थित हैं। यहां के निवासियों के गांव बहुत छोटे छोटे हैं। ये गांव छोटे छोटे खेतों के निकट बसे हुये हैं। इन गांवों के निवासी भूत प्रेतों पर बहुत विश्वास करते हैं।

(४) दक्षिणी-पूर्वी क्षेत्र :—इस भाग को नकतोंग वेसिन भी कहते हैं, इस वेसिन के चारों ओर शहतूत के वृक्ष लगे हुये हैं इन पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। यह धन्धा यहाँ बहुत उन्नति कर गया है। फुसन यहां का प्रसिद्ध बन्दरगाह है। यह क्षेत्र भविष्य में अवश्य उन्नति करेगा।

(५) पूर्वी मछली वाला क्षेत्र :—यह बहुत तंग तटीय भाग है। अधिकतर जन संख्या समुद्र तट के ही निकट रहती है, इनका मुख्य व्यवसाय मछली पकड़ना है। समुद्र में दूर दूर मछली पकड़ने वाली छोटी छोटी नावें दृष्टिगोचर होती हैं। ज्वार-भाटों का यहां गहरा प्रभाव नहीं पड़ता, इसलिये ये नावें समुद्र में दूर तक बिना किसी डर के चली जाती हैं। तट के पीछे थोड़ी कृषि की जाती है, ज्वार, बाजरा, गेहूं, चावल तथा तम्बाकू यहां की मुख्य उपजें हैं।

फारमूसा (ताइवान)

'फारमूसा' शब्द का अर्थ है 'सुन्दर'। यह नाम वास्तव में उन स्पेन के नाविकों ने रक्खा जो कि प्राचीन काल में यहां आये थे और इसकी सुन्दरता को देखकर मुग्ध हो गये थे। इस द्वीप को जापानी लोग 'ताइवान' के नाम से पुकारते हैं। इसकी स्थिति उत्तरी गोलार्द्ध में बड़ी महत्वपूर्ण है, कर्करेखा इसके मध्य से होकर जाती है। इस द्वीप के निकट होपोटो द्वीपों के अतिरिक्त अन्य सैकड़ों द्वीप स्थित हैं।

आन्तरिक भाग में एक ज्वालामुखी पर्वत की श्रेणी है। जिस पर अनेक बुझे हुये क्रेटर स्थित हैं। पश्चिम की ओर यह श्रेणी एक उपजाऊ मैदान में लुप्त हो जाती है। यहां पर अनेक तीव्र बहने वाली छोटी छोटी नदियाँ भी मिलती हैं। पूर्वी भाग में पहाड़ियाँ तट तक पहुँच गई हैं, यहां पर उपजाऊ भूमि का अभाव है। अधिकतर यहां असभ्य जातियां ही रहती हैं। मध्य के भाग में जो श्रेणी है

Dr. G. B. Cressey is of opinion that the name Farmosa is a Portugese word. It dates back to the 17th century when Portugese contested wi h Dutch & Spanish for possession.

उस पर कुछ प्रसिद्ध शिखायें मिलती हैं। पहली जो सबसे ऊंची है वह है माउन्ट मोरीसन (१२६५६ फुट) दूसरी माउन्ट सिल्विया (११३०० फुट), तीसरी नाशान (लगभग १२००० फुट)। इन तीन शिखाओं के अलावा एक ज्वालामुखी पर्वत की शिखा है जो उत्तर की ओर है, और डाल्टन कहलाती है। इसकी ऊंचाई ३६३० फुट है। दक्षिण की ओर मूंगे की चूने की चट्टानें व दलदली भाग हैं, जो कि कदाचित् हाल ही में उठे हैं।

इस द्वीप का पूर्वी तट बहुत ही सुन्दर है। यहां अनेक रमणीय प्राकृतिक दृश्य दृष्टिगोचर होते हैं। उपजाऊ मैदानों के ऊपर प्रथम श्रेणी ५००० फुट तथा द्वितीय श्रेणी १०००० फुट ऊंची है। इन श्रेणियों में अनेक पर्वतीय रूप जैसे सीधी खड़ी चट्टानें, लटकी हुई घाटियाँ, चोटियाँ तथा सुन्दर ढाल मिलते हैं, इन में कहीं कहीं पर घास से ढके हुये हरे भरे अति सुन्दर ढाल भी पाये जाते हैं। इनके पीछे रंग बिरंगी श्रेणियां नीले गगन के विरुद्ध बहुत ही अनुपम दृश्य प्रदान करतीं हैं। कहीं कहीं पर तीव्र छोटी छोटी नदियां जिनके किनारे अनेक गांव व झोपड़ियाँ मिलती हैं, बहुत मनमोहक लगतीं हैं। यहाँ की प्रसिद्ध नदी तमसुई है, यहाँ के पर्वतीय भाग में अनेक गर्म जल के स्रोत मिलते हैं, इनमें से कुछ तो आर्थिक दृष्टि से बड़े महत्वपूर्ण हैं।

यद्यपि कर्क रेखा इस द्वीप के मध्य से होकर जाती है, परन्तु जलवायु यहां की केवल उच्च भागों को छोड़ कर उष्ण कटिबन्धीय है। इस द्वीप के निकट से क्यूरोशियो गर्म जलधारा बहती है। इस धारा का यहां की जलवायु पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यहां का औसत तापक्रम फरवरी में ४०° फ० तथा जून या जुलाई में १००° फ० रहता है। तटीय भागों का तापक्रम जनवरी के माह में ६५° फ० और जुलाई में ८५° फ० रहता है। यह द्वीप मानसून जलवायु में सम्मिलित है। इसीलिये दक्षिणी भाग में दक्षिण-पश्चिम मानसून से ग्रीष्मऋतु में वर्षा होती है। उत्तर के भाग में शीत ऋतु के मानसून से शीत ऋतु में वर्षा हो जाती है। इस ऋतु में केशारयो २६० इंच औसत वर्षा प्राप्त कर लेता है, यद्यपि औसत वार्षिक वर्षा ७५ या ७६ इंच हो जाती है। दक्षिण की ओर भी बहुत मूसलाधार वर्षा होती है, फलस्वरूप नदियों में बाढ़ आ जाती है। चक्रवातों के कारण भी काफ़ी वर्षा कभी कभी हो जाया करती है।

यहाँ के निवासी अपने देश को ताइवान प्राचीनकाल से ही कहते चले आये हैं और जिस समय से जापानी आये उस समय से यह नाम और भी दृढ़ हो गया। चीनी लोग इस द्वीप पर १६८३ में आये, और उस समय तक रहे, जब तक कि साइनो-जापानीज़ युद्ध (१८९४-९५) हुआ। उस के उपरान्त जापानियों ने इसे

अपने अधिकार में कर लिया, परन्तु द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् यह पुन: चीन को प्राप्त हुआ।

फारमूसा की वर्तमान जनसंख्या ८० लाख से अधिक है, क्योंकि १९४६ में जब चीनी जनगणना हुई, तब इसकी जनसंख्या ७० लाख से कुछ ही अधिक थी। यहां की जनसंख्या बराबर बढ़ रही है, क्योंकि १९३२ में यह ५० लाख तथा १९०५ में ३१ लाख थी। जनसंख्य में ९५ प्रतिशत वह चीनी लोग हैं, जो फ्यूकीन तथा कान्टन से आकर यहां स्थायी रूप से स्थापित हो गये हैं। यहां के आदि निवासियों की संख्या १५०००० से अधिक नहीं है। जनसंख्या अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। यहां के मुख्य नगरों में ताई-होकू (तैपी) यहां की राजधानी है। इसकी जनसंख्या ३६२४०७ आज से १५ वर्ष पहले थी। अन्य प्रसिद्ध नगरों में तैनान, कलिग तथा ताइचू हैं।

फारमूसा का चित्र

इस द्वीप का ७० प्रतिशत से अधिक भाग उष्ण कटिबन्धीय वनों से ढका हुआ है, जिन स्थानों पर अधिक वर्षा होती है, वहां वन बहुत घने हैं। निम्न भागों में बाँस अधिक उगते हैं। उच्च भागों में ठीक उसी प्रकार की वनस्पति मिलती है, जिस प्रकार जापान में मिलती है। वनीय भागों का क्षेत्रफल लगभग २०० लाख एकड़ है। यहां वनीय भाग तीन प्रकार के मिलते हैं। प्रथम कागी नगर के पूर्व में 'अरिसन' का भाग। इस भाग में अनेक पहाड़ियां हैं, वन यहां २८०० से लेकर ८७०० फुट की ऊंचाई तक मिलते हैं। यहाँ पर नुकीली पत्ती वाले तथा चौड़ी पत्ती वाले, दोनों ही प्रकार के वन मिलते हैं। द्वितीय भाग ताइचू के पूर्व में है, यह हसेनजान कहलाता है, तृतीय भाग गिरन में 'दकसुई' का वनीय क्षेत्र कहलाता है। यह वेसे तो घनी क्षेत्र है, परन्तु इसमें बहुत ही असभ्य जातियाँ रहती हैं। पश्चिमी तट पर मैंग्रूव मिलते है, परन्तु साधारणतया यहाँ कपूर, साइप्रेस व बाँस के वृक्ष काफी मात्रा में उगते हैं।

कृषि यहां के लोगों का मुख्य धन्धा है। यहाँ ठीक उसी प्रकार से कृषि की जाती है, जिस प्रकार से कि चीन में। चीन की भाँति यहां पर भी कृषि करने के प्राचीन साधन अपनाये जाते हैं। ठीक उसी प्रकार के भैंसे, सुअर, दो पहियों की गाड़ियां, बनख तथा औजार स्तेमाल किये जाते हैं जिस प्रकार के चीन में। यहां की मिट्टी कृषि के दृष्टिकोण से बहुत उपजाऊ है, इसमें हर प्रकार की फसलें उत्पन्न हो जाती हैं। चावल यहां की प्रमुख उपज है। इसकी यहां दो फसलें होती हैं। द्वितीय महायुद्ध के पूर्व इसका उत्पादन इतना बढ़ गया था, कि सम्पूर्ण निर्यात व्यापार का अट्ठाइस प्रतिशत केवल इसी का निर्यात होता था। शकरकन्दी यहाँ के लोगों का वैसा ही भोजन है जैसा कि चावल। इसकी कृषि यहाँ चीनियों ने प्राचीनकाल में आरम्भ की थी। उत्तर व पश्चिम भाग में गन्ने की पैदावार होती है। द्वितीय महायुद्ध पूर्व इसका उत्पादन इतना बढ़ गया था, कि यह ४२ प्रतिशत निर्यात कर दिया जाता था। केले तथा डिब्बों में बन्द किये पाइन एपिल्स भी पहले जापान को भेजे जाते थे। यहां की ऊलंग (Oolung) नामक चाय जो कि बहुत ही स्वादिष्ट होती है, बहुत प्रसिद्ध है। इसका उत्पादन पहले २५० लाख पौंड था, और अधिकतर संयुक्तराज्य अमरीका तथा ग्रेट ब्रिटेन को निर्यात कर दी जाती थी। यहां पर जूट या 'रेमी' भी उत्पन्न होती हैं। अन्य उपजों में कपूर, भांग, अफीम तथा तम्बाकू उल्लेखनीय हैं। यहाँ पर अनेक प्रकार के फल तथा तरकारियाँ भी उगाई जाती हैं। इस द्वीप के लोग मछलियां भी पकड़ते हैं। समुद्र तट तथा आन्तरिक जलाशयों से इन्हें खाने योग्य मछलियां भी प्राप्त हो जाती हैं। इस धन्धे में दो लाख से अधिक लोग लगे हुये हैं।

यह द्वीप खनिज पदार्थों में भी धनी है। यहाँ विभिन्न प्रकार की धातुयें मिलती हैं, ये धातुयें अधिकतर जापानी लोग ही निकालते हैं। इन धातुओं में सोना, चाँदी तथा तांबा मुख्य हैं। अन्य खनिजों में कोयला उत्तर की ओर, नमक पश्चिमी तट पर, तथा पेट्रोलियम, गन्धक, फासफोरस आदि उल्लेखनीय हैं। कोयले की सबसे प्रसिद्ध खान कीलिंग है। यहां पर कोयले का उत्पादन बहुत अधिक नहीं है।

यहां के प्रमुख उद्योगों में, चाय तैयार करना, शकर से विभिन्न वस्तुयें बनाना तथा गन्धक व कपूर प्राप्त करना है। कपूर प्राप्त करने का धन्धा यहां गत वर्षों से बहुत उन्नति कर गया है। यह धन्धा सरकार के अधिकार में रहता है। वृक्षों की देखरेख भी केन्द्रीय सरकार करती है। इस उद्योग की प्रगति वर्तमान समय में इसलिये अधिक हुई है, कि कपूर का प्रयोग कई अन्य उद्योगों में होने लगा है। आजकल विश्व का तीन चौथाई प्राकृतिक कपूर फारमूसा में ही प्राप्त किया जाता है। अन्य लोगों में तम्बाकू से बीड़ी, सिमेंट बनाना, सन की वस्तुयें तयार

करना तथा चमड़ा, शीशे व गन्धक की वस्तुओं का निर्माण करना है।

यातायात के साधनों में यहाँ पर्याप्त उन्नति हुई है। एक मुख्य रेलवे लाइन तकाओ से कीलिंग तक बना दी गई है। इसकी लम्बाई २७५ मील है। इस लाइन की अन्य कई शाखायें हैं, कुछ शाखायें प्रशान्त तट तक भी जाती हैं। शकर के कारखानों की भी कई निजी लाइनें हैं, यह कुल मिलाकर लगभग डेढ़ हजार मील लम्बी है। यहां कई पक्की सड़कें भी पाई जाती हैं, जो लगभग सभी बड़े बड़े नगरों को मिलाती हैं।

यहाँ का आयात निर्यात व्यापार भी काफी उन्नति पर है। पहले यहाँ से ६० प्रतिशत निर्यात जापान को और ८० प्रतिशत आयात इसी देश से हुआ करता था। केवल जापान और संयुक्त राज्य ही ऐसे देश थे जो इससे व्यापार करते थे। यहां से निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में चावल, शकर, चाय, फल, कपूर कोयला, सन, भाँग तथा तम्बाकू इत्यादि मुख्य हैं। आयात की जाने वाली वस्तुओं में लकड़ी, पेट्रोलियम, तैयार किया हुआ माल (सूती व लोहे, तथा प्लास्टिक की वस्तुयें) तथा अफीम इत्यादि हैं।

गत वर्षों से इस द्वीप की राजनैतिक स्थिति बड़ी शोचनीय रही है। जिस समय १६५० के मध्य में माओ-सि-तुंग ने च्यांग काई शेक को हरा दिया था, तो माओ ने कम्युनिस्ट चीन की स्थापना की तथा च्यांग की नेशनल गवर्नमेंट को फारमूसा में पनाह लेनी पड़ी, उस समय से चीन की नेशनल गवर्नमेन्ट फारमूसा में स्थापित हो गई। कम्युनिस्ट चीन की राजधानी पेकिंग और फारमूसा की तेपे हो गई। रेड चीन बराबर यह प्रयत्न कर रहा था, कि फारमूसा भी अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया जाय। फलस्वरूप गत वर्ष चीन ने अपनी फौजें फारमूसा विजय के लिये भेज दीं। उधर अमरीका छिपे तौर पर नेशनल चीन की सहायता कर रहा था, और अब भी कर रहा है, फलस्वरूप यहाँ युद्ध छिड़ गया। विश्व के नेताओं ने इसे रोकने की बहुत चेष्टा की। भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने श्री वी० के० कृष्ण मेनन को चीन के प्रधान मन्त्री चाओ के पास इसी समस्या को हल करने के हेतु भेजा। इस वार्ता से कुछ आशा भी प्रकट हुई, परन्तु पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हुई। अब यहां युद्ध तो रुक गया है परन्तु पूर्णतया समस्या हल नहीं हो पाई है।

इस द्वीप पर विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं। यहाँ के आदि निवासियों के अतिरिक्त, चीनी, जापानी तथा इण्डोचीनी इत्यादि सभी जाति के लोग मिलते हैं। चीनी लोगों ने यहाँ के निवासियों के साथ विवाह कर लिये हैं और अब वह यहाँ स्थायी रूप से रहने लगे हैं। यहाँ पर ईसाई धर्म को मानने वाले लोग भी रहते हैं। बौद्ध धर्म तो चीनी और जापानी मानते ही हैं।

कैप्टन बोक्स का कहना है कि, यहाँ के आदि निवासी बाँस तथा खजूर के पत्तों की झोपड़ियाँ बनाते हैं। स्त्रियाँ तथा पुरुष दोनों ही अपने मुंह तथा शरीर को गुदवाते हैं। घर या झोपड़ी के दरवाज़ों पर जंगली जीवजन्तुओं की खोपड़ी ऐसे टाँग दी जाती हैं, जैसे कि कोई ट्रॉफी (Trophy) हो। मुंह पर होठों के नीचे, गालों तथा माथे पर पतली नीली लाइन से अजीब अजीब डिज़ाइनों की गुदाइयाँ की जाती हैं।

इन लोगों की भाषा मेले है। इससे ऐसा प्रतीत होता है, कि यह लोग किसी आपत्ति के कारण मलाया, फिलीपाइन, तथा अन्य द्वीपों से आकर बस गये हैं, और उसी समय से यहां रह रहे हैं। कुछ जातियां तो इतनी असभ्य हैं, कि मनुष्य की खोपड़ी का शिकार खेलती हैं। इसीलिये यहां की सरकार ने पूर्वी क्षेत्र को, जिसमें कि यह लोग रहते हैं, एक कांटेदार तारों की सीमा द्वारा (जिसमें सदा विद्युत धारा उपस्थित रहती है) सभ्य निवासियों की रक्षा के हेतु अलग कर दिया है।

चीन (China)

चीन संसार का एक पृथक तथा अति प्राचीन देश है। इसकी भौतिक रचना इस प्रकार की है कि कोई भी राष्ट्र आसानी से इसमें प्रवेश नहीं कर सकता है। इसके विस्तृत रेगिस्तान, बर्फ से ढकी हुई पर्वत श्रेणियां, ऊँचे पठार तथा बंजर भूमि के अतिरिक्त यहां के भूकम्प, लम्बी व चंचल नदियां, भयानक तूफान तथा भयंकर अकाल इत्यादि इतने प्रभावशाली रहे हैं, कि हजारों वर्षों तक कोई भी जाति इसमें प्रवेश नहीं कर पाई। यहां तक कि सिकन्दर महान ने भी इस देश की सीमा तक पहुंचने का साहस नहीं किया। यही कारण था कि यहां की सभ्यता अन्य पश्चिमी सभ्यताओं की तुलना में अधिक समय तक प्रचलित रही है। विश्व के मानचित्र पर इस देश की स्थिति एशिया के पूर्व में प्रशान्त महासागर के पश्चिमी तट पर है और इसका विस्तार १८° उत्तरी अक्षांश से लेकर ५३° उत्तरी अक्षांश तथा ७४° पूर्वी देशान्तर से लेकर १३४° पूर्वी देशान्तर तक है। वास्तव में सम्पूर्ण चीन का क्षेत्रफल एशिया का लगभग एक चौथाई है। परन्तु मुख्य चीन (China Proper) का क्षेत्रफल १५,३२,८००० वर्ग मील है। यदि इसमें मंचूरिया, मंगोलिया, तिब्बत तथा चीनी तुर्किस्तान को भी सम्मिलित कर लिया जाय तो इसका क्षेत्रफल ४२,७८,३५२ वर्ग मील (९,७३६,००० वर्ग किलोमीटर) होगा। पहले चीन साम्राज्य में ऊपर लिखे हुये देश सम्मिलित थे। परन्तु धीरे-

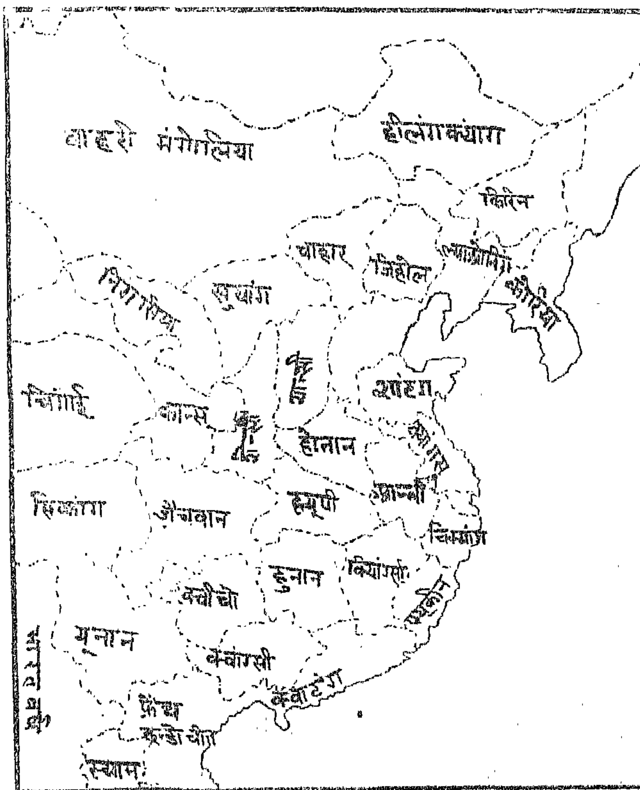
---

* According to "Asia and Africa in the modern World" published by Asian Relations Organizations, calcutta the area of China is 590 million sq. miles (including that of Formosa.)

According to L. Dudley Stamp...Asia, A Regional and Economic Geography page 463 the area is thus :—

China Proper	... 1532800 sp. miles	
Manchuria	... 363700 ,, ,,	
Other Territories		Tetal...4,278,352 sq. miles
Mangolia	... 1367953 ,, ,,	
Sinkiang of Chinese Turkistan	... 550579 ,, ,,	
Tibet	... 463320 ,, ,,	

धीरे लगभग सभी देश स्वतन्त्र हो गये। सन् १६०७ में मंचूरिया को चीन साम्राज्य से अलग करके स्वतन्त्र घोषित कर दिया गया था। मंगोलिया केवल नाम मात्र को चीन साम्राज्य में सम्मिलित था। वास्तव में इसका सम्बन्ध सबसे अधिक सोवियट रूस से रहा है, लेकिन अब यह भी एक स्वतन्त्र राष्ट्र है। तिब्बत की स्थिति संसार की सबसे ऊँची पर्वत श्रेणियों के मध्य में है। वह भी प्रारम्भ से विदेशी सम्पर्कों से पृथक् रहा है, और आजकल एक स्वतन्त्र पर्वतीय देश है। चीनी तुर्किस्तान एक बार चीन साम्राज्य से अलग हो गया था, परन्तु सन् १८७७ में पुनः चीन में ही सम्मिलित कर लिया गया।



आधुनिक चीन के प्रान्त

चीन न केवल सांस्कृतिक क्षेत्र में धनवान है, बल्कि इसकी भौतिक परिस्थितियाँ भी इतनी भिन्न हैं कि शायद ही किसी देश में हों। यहां यदि ऊँची-ऊँची पर्वत श्रेणियां मिलती हैं तो निचले मैदान भी दृष्टिगोचर होते हैं। ऐसे भी

क्षेत्र हैं जहां केवल एक इञ्च वार्षिक वर्षा होती है, इसके विपरीत कुछ ऐसे भी स्थान हैं जहाँ १०० इञ्च से भी अधिक वर्षा हो जाती है। यहाँ यदि घने वनों के क्षेत्र हैं तो साथ ही उजाड़ पर्वत श्रेणियाँ भी पाई जातीं हैं। इसके दक्षिणी भाग के निवासियों का मुख्य भोजन चावल है, परन्तु इसके विपरीत उत्तर में गेहूं का प्रयोग होता है। इसी प्रकार यदि शंघाई में योरोपियन वातावरण मिलता है, तो थोड़ी ही दूर पर आन्तरिक क्षेत्रों में वास्तविक चीनी वातावरण दृष्टिगोचर होता है। न केवल यही, बल्कि यहां के लोगों का वेशभूषा, भाषा तथा मनोविज्ञान में भी बड़ी विषमता पाई जाती है।

इन समस्त विभिन्नताओं के होते हुये भी चीन में एक ऐसी एकता पाई जाती है, जिसका उदाहरण नहीं दिया जा सकता। यद्यपि यहाँ की बोलचाल की भाषा प्रत्येक प्रान्त में भिन्न है, परन्तु फिर भी लिखने की भाषा एक ही है। आधुनिकता स्थान-स्थान पर भिन्न हो सकती है, लेकिन फिर भी उसमें वास्तविकता की झलक दृष्टिगोचर होती है। इस प्रकार का जीवन जिसमें कि प्रकृति से इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है, वास्तव में चीनी वास्तविकता का ही प्रमाण है। यहाँ हम देखते हैं, कि भौतिक तथा सांस्कृतिक भूगोल का न केवल पारस्परिक मिलाप होता है, बल्कि ये एक दूसरे में इस प्रकार प्रवेश कर गये हैं, कि एक नवीन ही रूप निर्मित हो गया है।

विश्व में, चीन कदाचित् सबसे घना बसा हुआ देश है। इसकी जनसंख्या जापान, योरोपियन रूस, ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य, कनाडा, जर्मनी, आस्ट्रिया, फ्रांस तथा इटली आदि देशों की जनसंख्या के योग से भी अधिक है। यहां की भूमि पर सर्व महत्वपूर्ण तत्व मिट्टी, वनस्पति तथा जलवायु नहीं है बल्कि वह मानव हैं जो कि चारों ओर दृष्टिगोचर होते हैं। कदाचित् कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं होगा जो कि मानव क्रियाओं से प्रभावित होकर परिवर्तित न हुआ हो। वास्तव में चीनी संस्कृति की जड़ें भूमि में काफी गहराई तक पहुंच चुकी हैं। इनकी कृषि, बाग-बगीचे, रेशम के धन्धे तथा मिट्टी के बने हुये मानव-गृह इस बात का प्रमाण देते हैं कि इनका प्रकृति से कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है। भूमि से इन लोगों को इतना प्रेम होता है कि कोई भी चीनी, चाहे जितने ही संकट में क्यों न हो, उसे कभी भी छोड़ने को तैयार नहीं होता। इस प्रकार यह स्पष्ट है, कि यहां मनुष्य व भूमि का इतना घनिष्ठ संबन्ध है, कि यहाँ के जीवन को देखकर हमें थोड़ी देर के लिये यह भूल जाना पड़ता है, कि मनुष्य एवं पृथ्वी दो भिन्न भौतिक तत्व हैं।

भौतिक रूप (Physical Aspect)

बनावट (Structure) :—

चीन की बनावट बहुत प्राचीन चट्टानों की है। वास्तव में चीन के ऊपरी धरातल का आधार नीचे की वह प्राचीन दानेदार (Crystalline) चट्टानें हैं, जो कि बहुत कठोर हैं। इनमें से कुछ तो इतनी प्राचीन हैं कि धारवार Dharwar) युग की बतलाई जाती हैं। चीन की बनावट के विषय में डा० क्रेसे का कथन है, कि यहाँ तीन ऐसे भू-खण्ड हैं, जिनके मध्य गड्ढों में बहुत से नवीन चट्टानों के पर्त जमा हो गये हैं। इनमें से एक जो पश्चिम में है वह तिबेशिया (Tibetia), जो उत्तर में है, वह गोबिया (Gobia) तथा जो दक्षिण-पूर्व में है, वह केथेशिया (Cathaysia) कहलाते हैं। इन भागों में कुछ ऐसी प्राचीन ग्रेनाइट व परिवर्तित चट्टानें हैं, जो कि अधिक समय तक समुद्र के धरातल के ऊपर ही रही हैं। इसके उपरान्त समुद्र के कई ऐसे आक्रमण हुये जिसके कारण कई हजार फीट ऊँची चूने की चट्टानें बालू की चट्टानें तथा शेल चट्टानें जमा हो गई। उत्तर की ओर बहुत से दलदली व वनस्पति वाले क्षेत्र दब गये, जो बाद में कोयले की खानों में परिवर्तित हो गये हैं। कदाचित् इसी समय दक्षिण पूर्वी भाग में लावा निकल कर चारों ओर फैल गया। और साथ ही मंगोलिया व उत्तरी-पश्चिमी भाग में पीली मिट्टी का बनना प्रारम्भ हो गया। इसमें कदापि सन्देह नहीं कि पूर्वी एशिया की बनावट बड़ी जटिल है। प्रशान्त महासागर के तट के निकट जो मोड़ व घुमाव पर्तों में पाये जाते हैं, वे वास्तव में तट के समानान्तर ही हैं। आन्तरिक क्षेत्र में पर्त पश्चिम से पूर्व की ओर भी पाये जाते हैं तथा लम्बी-लम्बी पर्वत श्रेणियां भी पाई जाती हैं। इनकी बनावट के विषय में लोगों के भिन्न-भिन्न विचार हैं। वैज्ञानिकों का विचार है, कि हांगकांग के दक्षिण-पूर्व से लेकर उत्तर-पूर्व में दक्षिणी कोरिया तक का भाग प्राचीन *केथैशिया (Cathaysia) नामक छोटे से महाद्वीप का है। इस प्रकार की बनावट का क्षेत्र आमूर नदी की घाटी तक चला गया है। मंचूरिया के मैदान में मैदान में, हांगहो के डेल्टे में तथा मध्य यांगटिसी की घाटी में अनेक प्राकृतिक गड्ढे भी दृष्टिगोचर होते हैं।

डा० एल० डडले स्टेम्प× का कहना है, कि शांटग का क्षेत्र तथा उत्तरी चीन के मैदान का निचला क्षेत्र वास्तव में प्राचीन केम्ब्रियन (Pre. Cambrian) चट्टानों का बना हुआ है। इस कठोर क्षेत्र से टकरा कर अन्य

* Dr. G. B. Cressey : Asia, Lands and Peoples p. 53

× L. Dudley Stamp—Asia, A Regional and Economic Geography pp. 471, 472 473.

विभिन्न युगों की चट्टानें बनी हैं। दक्षिणी चीन का भाग आरचियन (Archean) चट्टानों का बना हुआ है। डा० स्टेम्प ने बनावट के दृष्टिकोण से चीन को चार क्षेत्रों में बांटा है :—

(अ) उत्तर-पूर्व का आरचियन (Archean) क्षेत्र, इसे डि, लओनेन 'फौटि प्रिमिटिफ' के नाम से पुकारा है।

(ब) उत्तर-पश्चिम के बेसिन

(स) दक्षिणी चीन का खण्ड

(द) दूर पश्चिम के पर्वत

(१) उत्तर-पूर्व का आरचियन क्षेत्र :—

यह उत्तर-पूर्वीय कोरिया में प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिलता है। पूर्वी शांटंग व लिग्राटंग में भी यही आरचियन चट्टानें हैं। इनमें हमको प्राचीन केम्ब्रियन दानेदार (Crystalline) चट्टानें अधिकतर धरातल पर दृष्टिगोचर होतीं हैं। इनके पश्चिमी तट पर पैलियोज़ोइक (Paleaozoic) युग की चट्टानें पाई जातीं हैं, इनमें परमो-कार्बोनिफेरस युग का कोयला मिलता है। पश्चिमी शांटंग को स्वैस (Suess महाशय ने 'वितरित हार्स्ट' (Shattered horst) का नाम दिया है। क्योंकि इसकी पैलियोजोइक पर्तों की मोटाई बहुत अधिक है, तथा बनावट भी कुछ भिन्न प्रतीत होती है। चीन के बड़े मैदान के नीचे के विषय में लोगों का विचार है कि यह उन आरचियन चट्टानों का बना हुआ है, जो या तो फाल्ट (Fault) द्वारा धस जाने के कारण बना है या मुड़ (Fold) जाने से बन गया है।

(२) उत्तर-पश्चिम के बेसिन :—

इस बेसिन की महत्ता इसलिये है, कि इनमें बहुत सी कोयले की पर्तें पाई जाती हैं। पेकिंग के पश्चिम में बहुत सी ऊपर उठी हुई तथा नीचे मुड़ी हुई चट्टानें मिलती हैं, जो कि उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर धंसे हुये आरचियन क्षेत्र अथवा केथेशिया (Cathaysia) के लगभग समानान्तर चला गया है। ऊपर उठी हुई चट्टानें (Articlines) प्राचीन केम्ब्रियन युग की हैं तथा नीचे मुड़ी हुई (Synclines) में पोलियोजोयेक मेसोजीयेक चट्टानें पाई जाती हैं। वैज्ञानिकों का विचार है कि मोड़ कदाचित् जुरेसिक (Jurassic) युग में ही हुआ है। स्वैस तथा रिक्टॉफेन ने इन विशाल मोड़ों (Folds) को 'पेकिंग ग्रिड' का नाम दिया है और उत्तरी चिहली व उत्तरी शान्शी इनके मुख्य क्षेत्र बतलाये हैं। दक्षिण की ओर मुड़ाव कुछ थोड़े हो गये हैं, और नीचे मुड़े हुये बेसिन के पदार्थ कुछ मुड़ भी गये हैं। इस प्रकार का क्षेत्र दक्षिणी शान्शी में है, तथा सिन हो (Tsin Ho) पठार के नीचे का कोयला भी इसी क्षेत्र का बतलाया जाता है और पश्चिम में

उत्तरी शेन्शी का बड़ा बेसिन है तथा दक्षिण में वी हो (Wei Ho) की घाटी के उत्तर में ऊपर मुड़ा हुआ भाग है। इस सम्पूर्ण समतल क्षेत्र के नीचे परमो-कारबोनिफेरस व ज्यूरेसिक युगों का कोयला पाया जाता है, परन्तु इस मैदान में लोयेस मिट्टी की तह इतनी मोटी है कि यह बनावट दृष्टिगोचर ही नहीं होती।

(३) दक्षिणी चीन का खण्ड : —

कदाचित् यह दक्षिण-पूर्वी चीन के तट के समानान्तर है। कुछ लोगों का कथन है कि यह फाल्ट लाइन का क्षेत्र है, और इसमें कुछ विशेष नीचे मुड़े हुये बेसिन (Synclinal basins) पाये जाते हैं। इनमें भी कोयला भरा पड़ा है। बहुत से वैज्ञानिकों का विचार है, कि जब तरशियरी युग (Tertiary Age) में हिमालय की श्रेणियों का बनना प्रारम्भ हुआ तो यह क्षेत्र रुकावट डालता रहा, क्योंकि यह बहुत कठोर तथा मजबूत खण्ड था। इस क्षेत्र में क्रिटेशियस युग के पदार्थ तथा ग्रेनाइट पत्थर भी पाये जाते हैं। इस प्रकार से कदाचित् दक्षिणी चीन के पर्वत उतने ही प्राचीन हैं जितने कि इण्डो-मलायन श्रेणियाँ। मेसोज़ोयक युग (Mesozoic Age) में बहुत से प्राकृतिक गड्ढे मध्य चीन तथा ज़ैचवान के गड्ढों में क्रिटेशियन युग के लाल रंग के दानेदार पत्थर जमा हो गये, ये आजकल रेड बेसिन के नाम से प्रसिद्ध हैं, जो यांगटिसी की घाटी के उत्तर-पश्चिम में हैं।

(४) दूर पश्चिम के पर्वत : —

वैज्ञानिकों का मत है, कि यह तरशियरी युग (Tertiary Age) के बने हुये हैं। वास्तव में इन पर्वतों की बनावट के विषय में कोई विशेष अध्ययन नहीं हुआ है। इसलिये इनके बारे में यह प्रकट करना उचित नहीं है।

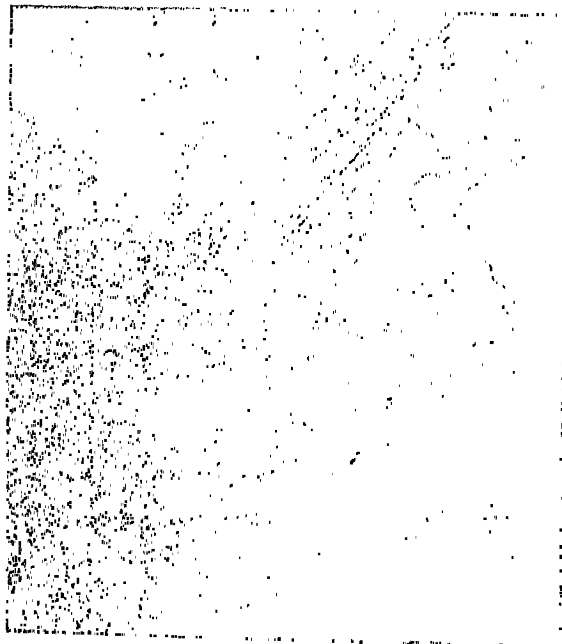
चीन में कुछ ऐसे भी क्षेत्र पाये जाते हैं, जहां कमजोर चट्टानों की पर्तें नीचे पाई जाने के कारण भूकम्प आया करते हैं। भूकम्प के प्रमुख राज्य कान्शू, ज़ैचवान तथा यूनान हैं, लेकिन इनके अतिरिक्त कुनलन, अल्टाई टाग तथा अल्टाई व नानशन भी हैं। वैसे छोटे-छोटे भूकम्प शाटंग में भी आ जाया करते हैं। कान्शू में एक भूकम्प १९२० में तथा १९२७ में बड़े पैमाने का आया था। इसी प्रकार मध्य होन्शू में भी १५५६ में एक बड़ा भयंकर भूकम्प आया था, जिसके कारण सैकड़ों मनुष्य अकाल पड़ जाने के कारण मारे गये।

धरातल (Relief) : —

वास्तव में चीन का ऊपरी धरातल नीचे की बनावट के ऊपर निर्भर है। मध्य एशिया के पर्वतीय व पठारी क्षेत्रों के पूर्व में हमको तीन मुख्य नदियों के बेसिन मिलते हैं, उत्तर में ह्वांगहो, मध्य में यांगटिसी तथा दक्षिण में सीक्यांग।

इन्हीं के आधार पर हम चीन के धरातल का भली भाँति अध्ययन कर सकते हैं।

उत्तरी-पश्चिमी चीन में मञ्चूरिया पठार एक विस्तृत क्षेत्र है। अन्दर की ओर उत्तरी गोबी के रेगिस्तान है तानू-ओला, खंगई तथा केन्टाई पर्वत श्रेणियाँ हैं। यह तीनों वास्तव में बाहरी मंगोलिया के क्षेत्र के अन्तर्गत हैं। गोबी के रेगिस्तान के दक्षिण में तान्चिंग व इनशान की श्रेणियाँ हैं। यह दोनों आन्तरिक मंगोलिया में हैं। तीसरा महत्वपूर्ण पर्वत श्रेणियों का क्षेत्र वह है जो कि पश्चिम से पूर्व की ओर फैला हुआ है। उदाहरण के लिये सिंगलिंग (Tsingling Range) पर्वत श्रेणी जो ह्वांगहो व यांगटिसी नदियों की घाटियों के मध्य स्थित हैं। ऐसा अनुमान है कि यह कुनलुन श्रेणियों के पूर्व की एक श्रेणी है। दक्षिण की ओर चौथी पर्वत श्रेणी नानलिंग (Nanling) है।



चीन—भौतिक रूप।

बहुत ही ऊंची व जटिल पर्वतश्रेणियाँ वह हैं जो तिब्बत को उत्तर की ओर से घेरे हुए है। हिमालय पर्वत वास्तव में तीन श्रेणियों से मिलकर बना है। यह तीनों आसाम में जाकर अन्त होती हैं। सबसे उत्तरी हिमालय की श्रेणी जो तिब्बत को उत्तर की ओर से घेरे हुए है, ट्रांस हिमालय कहलाती है। इसके पूर्व की ओर

जो पर्वतश्रेणियां पाई जाती हैं, वह उत्तर से दक्षिण को फैली हुई हैं। यह ज़ैचवान बेसिन में जाकर अन्त हो जाती हैं। और उत्तर की ओर हम दृष्टि डालें तो हमें प्रतीत होगा कि पठारी भाग कुनलुन व अल्टाई टैग पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ है। इसके बाद थियान-शियान व अल्टाई पर्वत श्रेणियाँ हैं।

दक्षिण पश्चिम की ओर यूनान का प्रसिद्ध पठार है। इस पठार में कई बहुत गहरी-गहरी घाटियां व गोर्जेज़ (Gorges) पाई जाती हैं। इसके उत्तर-पूर्व से सिंक्यांग नदी की घाटी प्रारम्भ हो जाती है। इसके भी उत्तर में दक्षिणी चीन के पर्वत प्रारम्भ हो जाते हैं। इन पर्वतों में कोई विशेष उल्लेखनीय श्रेणी नहीं है। यांगटिसीक्यांग नदी की घाटी के उत्तर में मूलिंग पर्वतश्रेणियां वास्तव में सिंगलिंग की ही एक शाखा प्रतीत होती है।

उत्तर की ओर किंगन पर्वत श्रेणी है, जिसकी एक शाखा जिहोल में होती हुई उत्तर पूर्व की ओर मन्चूरिया तक चली गई है। दक्षिण की ओर इसकी कई निचली श्रेणियाँ हो गई हैं। यह अधिकतर लोयेस मिट्टी से ढकी हुई दशा में है। दक्षिण की ओर चीन का प्रसिद्ध मैदान है, इसके दक्षिण में सिंगलिंग की वे श्रेणियां हैं जिनका ऊपर वर्णन किया जा चुका है तथा इन श्रेणियों के दक्षिण में कई झीलें हैं। यह अधिकतर यांगटिसी नदी के उत्तर व दक्षिण में पाई जाती हैं। इनमें से कुछ झीलें तो सूख चुकी हैं, जो कुछ बची हैं, उनमें सबसे प्रसिद्ध टंगटिंगली तथा पोयोंग हू हैं। यांगटिसी नदी के पश्चिम में रेड बेसिन का भाग एक ऐसा क्षेत्र है जो चारों ओर पर्वतों से घिरा हुआ है। उत्तर की ओर ज़ैचवान व मीन-शान तथा दक्षिण पश्चिम की ओर पुनलिंग की श्रेणियां हैं। यह चीन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

धरातल के साथ ही थोड़ा सा वर्णन लोयेस मिट्टी का दे देना अति आवश्यक है। वास्तव में लोयेस का क्षेत्र उत्तर-पश्चिम में १००,००० वर्ग मील में है। यह आजकल अर्द्ध शुष्क घास के मैदान के रूप में दृष्टिगोचर होता है। लोगों का मत है कि यह मिट्टी अधिकतर ह्वांगहो नदी ने ओरडोस (Ordos) व गोबी (Gobi) के रेगिस्तानों से लाकर डाली है। ऐसा प्रतीत होता है कि गोबी के रेगिस्तान से, शीत काल में जो शुष्क हवायें मध्य एशिया से पूर्व की ओर चलती हैं, उन्होंने बहुत सी महीन पीली मिट्टी उड़ा कर इस क्षेत्र में डाल दी है और अब उतनी महीन रेत गोबी में नहीं पाई जाती। हवाओं की गति देखने से यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है। आजकल भी यह मिट्टी बराबर जमा हो रही है। लोयेस का विस्तारपूर्वक वर्णन आगे भी दिया जायेगा।

यह आश्चर्य की बात है, कि प्लीस्टोसीन युग के (Pleistoscene Age) के पर्तदार ग्लेशियर का प्रभाव चीन पर बहुत कम पड़ा, यद्यपि दक्षिण में हिमालय

पर्वत तक इसका प्रभाव रहा। विद्वानों का मत है कि उस समय चीन की दशा अजीब थी। दक्षिणी चीन बहुत गर्म तथा उत्तरी चीन बहुत सूखी दशा में था। कुछ पर्वतों पर अवश्य छोटे-छोटे से ग्लेशियर पाये जाते थे। जिन स्थानों पर वास्तव में बर्फ पाई जानी चाहिये उन स्थानों पर हमको १०० से लेकर ३०० फीट मोटी लोयेस मिट्टी की तरह दृष्टिगोचर होती है।

नदियाँ (Rivers):—

चीन में तीन प्रसिद्ध नदियाँ हैं, ये तीनों पूर्व की ओर बह कर प्रशान्त महासागर (Pacific Ocean) में गिरती हैं। तिब्बत व मंगोलिया के आन्तरिक भागों में कोई ऐसी नदी नहीं है जो समुद्र में गिरती हो। आमूर नदी अपनी सहायक नदियों के साथ मन्चूरिया की सीमा बनाती हुई प्रशान्त महासागर में गिरती है। इसकी प्रमुख सहायक नदी सुङ्गारी मुख्य चीन में होकर ही बहती है।

उत्तरी चीन की सबसे बड़ी नदी ह्वांगहो है, इसकी लम्बाई २७०० मील है। यह नदी तिब्बत के पठार से निकलती है तथा उसी की सीमा में ओरिंगनोर झील में होकर उत्तर पूर्व की ओर तथा फिर मंगोलिया में प्रवेश कर पूर्व में मुड़कर दक्षिण की ओर अपनी सहायक नदी वीहो से मिलती हुई पूर्व की ओर तथा अन्त में उत्तर पूर्व की ओर पिचली की खाड़ी में जा गिरती है। जब यह तिब्बत से निकल कर कान्सू राज्य में बहती है, तब इसका पाट लगभग ७५ गज़ चौड़ा रहता है। इसकी गति भी तीव्र है, नावें बड़ी कठिनाई से इसको पार कर पाती हैं। जब यह उत्तर की ओर मंगोलिया में प्रवेश करती है तब यह आधा मील चौड़ी हो जाती है। इसका बहाव भी लोयेस मिट्टी के कारण धीमा हो जाता है। बीच-बीच में कई स्थानों पर टापू दृष्टिगोचर होते हैं। इस प्रसिद्ध नदी की केवल दो ही सहायक नदियाँ हैं, पहली फेन-हो जोकि शान्शी प्रान्त में है, तथा दूसरी वीहो जिसका वर्णन ऊपर कर दिया गया है। अन्त में नदी डेल्टे के समीप पीले मैदान में प्रवेश करती है। यहाँ इसका ढाल एक मील में केवल एक फीट है। वास्तव में इस नदी में इतनी अधिक लोयेस मिट्टी होती है कि किसी-किसी स्थान पर वह चारों ओर के क्षेत्र से ऊंची सतह पर बहती है। जल को ऐसे स्थानों पर बाँध (Dyke) बना कर रोका जाता है। इस नदी में जहाज इत्यादि का चलाना असम्भव है। पहले पहले सन् ११९१ से लेकर १८५२ तक यह नदी शानटंग के दक्षिण में गिरती थी, परन्तु १८५२ में इसने अपने मार्ग को बदल दिया और उत्तर में लगभग २५० फीट दूर हट कर गिरने लगी। उस परिवर्तन से यहाँ बड़ी हानि हुई थी। इस नदी को चीन का शोक भी कहते हैं। चीन-जापान के युद्ध के समय जब कि जापानियों ने सन् १९३८ में आक्रमण कर दिया था, तब चीनियों ने फाइफंग के पश्चिम का बाँध तोड़कर नदी का बहाव उस मार्ग के सम्मुख कर दिया जिससे होकर जापानियों का

आक्रमण करने का विचार था। संयुक्त राष्ट्र संघ की सहायता से इस बाँध को पुनः १९४७ में बनवा दिया गया है। अब इस नदी पर विशेष ध्यान दिया जाता है, और बराबर इसकी देख रेख होती रहती है।

ह्वांगहो तथा यांगटिसी नदियों के मध्य में ह्वाई एक ऐसी नदी है, जो कि पीले मैदान में होकर बहती है। जब ह्वांगहो नदी शाटंग के दक्षिण में गिरती थी, तब यह ह्वाई नदी को भी अपने में सम्मिलित कर लेती थी, परन्तु ह्वांगहो नदी ने इतनी लोयेस मिट्टी जमा की, कि ह्वाई नदी उससे अलग हो गई और समुद्र तक पहुंचने में असमर्थ रही। अन्त में इस नदी के कई खण्ड हो गये और उत्तरी कियांगसू में झीलों के रूप में परिवर्तित हो गई। बाढ़ के समय यह झील बहुत बढ़ जाती है और काफी विस्तृत क्षेत्र में फैल जाती है। इन दोनों नदियों का बहुत सा पानी यांगटिसी नदी के दक्षिण में ग्रांड केनाल के द्वारा पहुंच जाता है। दूसरी शाखा पूर्व की ओर समुद्र में गिरती है।

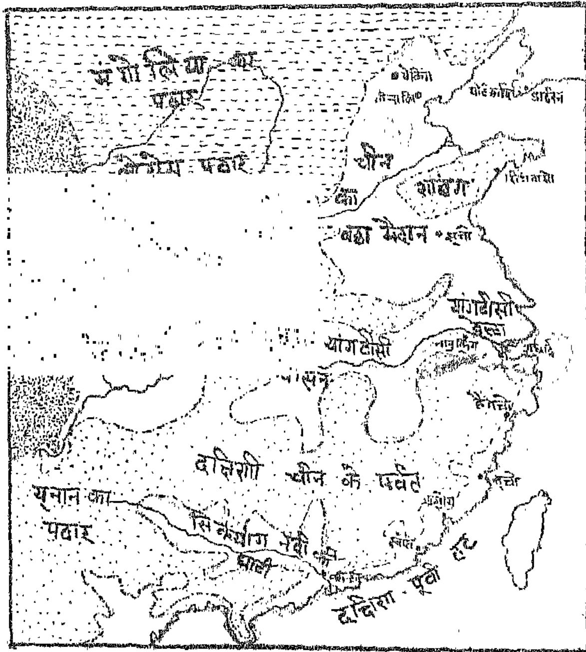
चीन की सबसे लम्बी नदी यांगटिसीक्यांग है। संसार की सबसे अधिक लम्बी नदियों में इसका स्थान छठवां है। इसकी लम्बाई ३२०० मील है। इसकी महत्ता वास्तव में इसलिये है कि यह चीन का सबसे बड़ा आन्तरिक जल-मार्ग बनाती है। नावें कदाचित् समुद्र से १६३० मील दूर तिब्बत की सीमा तक जा सकती हैं। जिस स्थान पर नदी ने गहरी घाटी (Gorge) बनाई है उस स्थान पर इसका बहाव बड़ा तीव्र हो गया है। यहाँ नावों का चलना बड़ा कठिन हो जाता है। इस गोर्ज (Gorge) में एक विशेष प्रकार की नावें ही चल सकती हैं। हैन्को (Hankow) तक जो कि समुद्र से ६३० मील अन्दर की ओर स्थित है, दस हज़ार टन के वज़न तक के जहाज ग्रीष्म ऋतु में आ जाते हैं। इसकी मुख्य सहायक नदियों में एक तो मिनकिआंग है जो कि ज़ैचवान पर्वत से निकलती है तथा दूसरी हैनकिआंग है। इसी सहायक नदी से हैंको नगर का नाम पड़ा है, दक्षिण की ओर से जो सहायक नदियाँ आकर मिलती हैं उनमें प्रमुख केवल दो ही हैं, पहली—सियांग तथा दूसरी केन। यह दोनों सहायक नदियां टङ्गटिंग तथा पोयांग झीलों में होकर बहती हैं। इन झीलों से यह लाभ है कि जब कभी भी यांगटिसीक्यांग नदी में बाढ़ आती है तो बहुत सा जल इन झीलों में ही जाकर भर जाता है। इस नदी का डेल्टा अधिक मिट्टी जमा हो जाने के कारण बराबर सत्तर वर्ष में एक मील की गति से बढ़ रहा है। डेल्टे के भाग में कई नहरें नावों व जहाजों के चलाने योग्य खोद दी गई हैं। शंघाई यहां का सबसे प्रसिद्ध नगर है जो इसी डेल्टे पर बसा हुआ है।

चीन की तीसरी प्रसिद्ध नदी सिक्यांग है, यह नदी दक्षिणी चीन में यूनान पर्वतीय क्षेत्र से निकलती है। डेल्टे के स्थान पर इसमें दो अन्य नदियाँ आकर

मिलती हैं। पहली ह्वंगकियांग जो पूर्वी नदी भी कहलाती है तथा दूसरी पीकियांग, जो उत्तरी नदी कहलाती है। सिक्यांग को तो पश्चिमी नदी भी कह सकते हैं। यह नदी २०० मील दूर क्वांगसी में बूचो नगर तक स्टीमर चलाने योग्य है।

चीन के भौतिक विभाग (Physical Units of China)

चीन की तीन प्रसिद्ध नदियाँ जिनका वर्णन ऊपर किया जा चुका है, वास्तव में चीन को तीन भागों में विभाजित करती हैं। पहला उत्तरी, दूसरा मध्यवर्ती भाग तथा तीसरा दक्षिणी भाग। चीन के धरातल की कुछ विशेषतायें



चीन के प्राकृतिक विभाग

उल्लेखनीय हैं। पहली तो यह है, कि चीन में जहां कहीं भी समतल भूमि है उसका प्रयोग कृषि के रूप में किया जाता है, चाहे उस भूमि तक पहुंचना कितना ही कठिन क्यों न हो। दूसरे यहाँ के पर्वतीय ढाल इतने ढालू (Steep) हैं, कि उन पर कृषि होना असम्भव है। तीसरे विस्तृत मैदान सम्पूर्ण क्षेत्रफल का केवल पांचवां भाग है। चौथे मैदान ह्वांगहो व यांगटिसीक्यांग नदी के डेल्टे पर, नदियों की घाटियों में तथा समुद्र तट पर ही दृष्टिगोचर होते हैं। अतः विभिन्न प्रकार की भौतिक रचना तथा ऐतिहासिक मिट्टी का कटाव होने के कारण इस

देश के धरातल के कई भौतिक खण्ड हो गये हैं, जो कि एल० डेडले स्टैम्प ने प्रोफेसर पी० एम० ऐक्सवी के आधार पर इस प्रकार प्रस्तुत किये हैं :—

उत्तरी चीन में (In Northern China) :—

(१) उत्तरी पश्चिमी लोयेस का मैदान, जिसमें होकर ह्वांगहो नदी एक गहरी व संकरी घाटी में होकर बहती है। इस भाग में उत्तरी कान्सू, उत्तरी शेन्शी तथा (थोड़ा सा) शान्शी के प्रान्त भी सम्मिलित हैं।

(२) मंगोलियन पठार का किनारा, जोकि पेकिंग के उत्तर में है, तथा चिहली प्रान्त के उत्तरी भाग में आता है।

(३) वी हो नदी की घाटी, जिसे दूसरे शब्दों में 'चीन का क्रेडिल' कहते हैं ऐसे भाग में है, जिसके उत्तर में लोयेस का पठार तथा दक्षिण में सिंगलिंग (Tsingling) की श्रेणियाँ पाई जाती हैं। यह मध्य शेन्शी के भाग को शामिल करता है।

(४) उत्तरी चीन का बड़ा मैदान, यह एक बहुत ही प्रमुख उत्तरी चीन का भौतिक विभाग है।

(५) शाण्टंग पर्वत, यह शान्टंग प्रान्त के दो तिहाई पूर्वी भाग में विस्तृत है, प्राचीन चट्टानों का यह भाग एक घाटी द्वारा दो भागों में विभाजित है।

उत्तरी व मध्य चीन के बीच के भाग में :—

(६) सिंगलिंग (Tsingling) या मध्य पर्वतीय भाग, यह एक चौड़ा पर्वतीय क्षेत्र है, जो कि ह्वांगहो तथा यांगटिसी नदियों की घाटियों को पृथक् करता है। इस भाग में दक्षिणी कान्सू, दक्षिणी शेन्शी, दक्षिण-पश्चिमी होनान तथा उत्तर-पश्चिमी ह्यूपे सम्मिलित हैं।

मध्य चीन में :—

(७) दूर पश्चिम के पर्वत या ज़ेचवानीज़ आल्पस, तिब्बत के पठार की उत्तरी सीमा इसमें सम्मिलित है और ज़ेचवान प्रान्त का पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

(८) रेड बेसिन, यह चीन का एक बहुत ही प्रसिद्ध क्षेत्र है। इसमें ज़ेचवान प्रान्त का बहुत सा भाग शामिल है। इस प्रान्त की पूर्वी सीमा के निकट उत्तरी तथा दक्षिणी पर्वत श्रेणियाँ बिलकुल समीप आ जाती हैं और यांगटिसी नदी उनके मध्य होकर एक गहरी घाटी द्वारा मध्य चीन में प्रवेश करती है।

(९) यांगटिसी के मध्य के बेसिन, जो कि रेड बेसिन से एक गहरी घाटी (Gorge) द्वारा अलग है और हैंको के चारों ओर स्थित हैं। इस भाग के उत्तर में ह्यूपे, हुनान तथा दक्षिण में क्यांगसी के प्रान्त शामिल हैं।

(१०) यांगटिसी का डेल्टा प्रदेश, यह उत्तर में दूर तक फैला गया है, और

उत्तरी चीन के मैदान में मिल गया है। इसमें एनहृी व कियांगसू के प्रान्त सम्मिलित हैं।

मध्य चीन व दक्षिणी चीन के बीच के भाग में :—

(११) दक्षिणी चीन का पठार एक जटिल क्षेत्र है, जिसका विशेष रूप यह है चारों ओर एक सा ऊंचा नीचा दृष्टिगोचर होता है, इसकी बनावट अति प्राचीन है, जैसा कि पीछे बतलाया जा चुका है।

दक्षिणी चीन में :—

(१२) यूनान का पठार, यह चीन के दक्षिण-पश्चिम में यूनान के प्रान्त में स्थित है।

(१३) सीक्यांग नदी की घाटी व डेल्टा प्रदेश :—यह अधिक क्वांगसी तथा क्वान्टंग के आधे पश्चिमी प्रान्तों में स्थित है।

(१४) चीन का दक्षिणी-पूर्वीय तटीय प्रदेश: —इसमें पूर्वी क्वांटंग, फ्यूकीन तथा चिक्यांग के प्रान्त सम्मिलित हैं।

मिट्टी (Soil) :—

चीन की मिट्टियों (Soils) का गूढ़ अध्ययन अभी तक बहुत कम हो पाया है। आधुनिक चीन की मिट्टियों का अध्ययन केवल श्री सी० एफ० शा* ने ही किया है। उनका मत है कि मिट्टी के मुख्य विभाग जलवायु के आधार पर ही किये जा सकते हैं। जिन क्षेत्रों में अधिक में वर्षा होती है वहाँ घुली हुई बिना केलकेरियस की मिट्टी पाई जाती है। ऐसे क्षेत्र दक्षिणी-पूर्वी चीन में हैं, जहाँ चावल की उपज मुख्य है। उत्तर में केलकेरियस मिट्टी है जिसमें गेहूं व काओलिंग होता है। जलवायु के आधार पर चीन के जो बड़े विभाग हैं, उनमें यद्यपि मिट्टी, वहाँ पाई जाने वाली चट्टानों से बनती है परन्तु फिर भी कटने व जमा होने का कार्य इतनी तीव्रता से होता है, कि हर समय मिट्टी नवीन ही रहती है। श्री शा ने नौ प्रकार की मिट्टियों के नाम दिये हैं, यदि हम चाहें तो लोयेस मिट्टी को भी उसमें शामिल कर सकते हैं।

(१) अपलैंड लाल मिट्टी का क्षेत्र :—यह दक्षिण में पाई जाती है और प्रायः लेटिराइट मिट्टी के समान होती है। जब कभी भी वन प्रदेश साफ कर दिये जाते हैं, तब भूमि का क्षरण तीव्रता से होता है।

(२) क्लेपेन मिट्टी का क्षेत्र :—यह भूरे रंग की मिट्टी होती है, परन्तु

* C. F. Shaw 'The Soils of China' Geological Survey of China, 1930.

इसमें लाल रंग का अंश भी मिला होता है। इसके साथ, नीचे की तह चिकनी मिट्टी की होती है। यह यांगटिसी क्यांग नदी के उत्तरी भाग में पाई जाती है।

(३) (४), ५) यांगटिसीक्यांग नदी के बाढ़ का मैदान, डेल्टा का क्षेत्र तथा ह्वाई नदी की घाटी—इन तीनों में एक ही प्रकार की मिट्टी मिलती है। इसकी विशेषता यह है, कि इसमें बहुत गहरी चिकनी दोमट, बलुई दोमट आदि मिट्टियाँ शामिल होतीं हैं, इनमें प्राय: बाढ़ आ जाया करती है, और केलकेरियस होने के नाते धान उत्पन्न करने के लिये प्रयोग की जाती है।

(६) भूरी मिट्टी वाला क्षेत्र :—इसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की मिट्टियां पाई जाती हैं। इसमें शाण्टंग व जिहोल के क्षेत्र आते हैं।

(७) उत्तरी चीन के मैदान वाली नदियों की लाई हुई मिट्टी का क्षेत्र :—यहाँ पर गहरी छोटे-छोटे कणों वाली मिट्टी पाई जाती है, यह केलकेरियस है तथा इसमें क्षार भी होता है। प्राय: इस मिट्टी वाले क्षेत्र में बाढ़ आ जाती है, जिसके कारण मिट्टी उपजाऊ हो गई है।

(८ प्राचीन डेल्टा वाली मिट्टी का क्षेत्र :—इस क्षेत्र में पाई जाने वाली मिट्टी में कुछ ऐसी भी मिट्टियाँ होती हैं, जिनमें खारीपन अधिक होता है।

६) संजोग मिट्टी का क्षेत्र :—इस प्रकार की मिट्टी वाला क्षेत्र उत्तरी चीन के मैदान के दक्षिण में है। इसमें एक पर्त केलकेरियस कंकड़ों की है, अथवा नीचे की तह पर संजोग है, उत्तरी भारत की कंकरीली मिट्टी से यह कुछ मिलती जुलती है।

जलवायु (Climate) :—

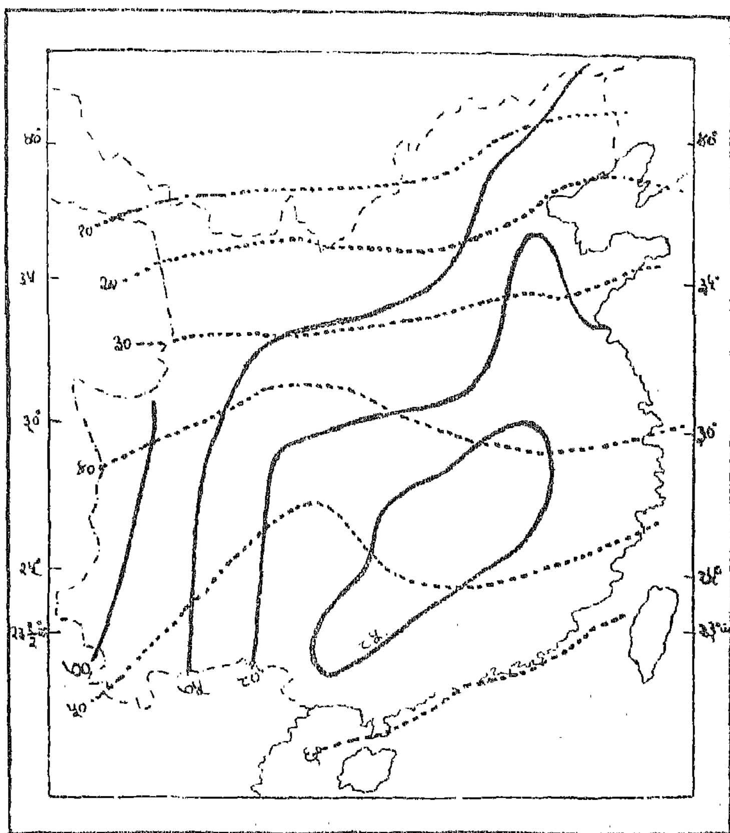
चीन की जलवायु का विस्तृत वर्णन नहीं दिया जा सकता, क्योंकि जलवायु सम्बन्धी सूचनायें आन्तरिक क्षेत्रों से बहुत कम प्राप्त होती हैं। वास्तव में ऋतु सम्बन्धी देखभाल के केन्द्र यहां बहुत कम हैं, और जो हैं भी वे सब समुद्र तट पर ही पाये जाते हैं। आन्तरिक क्षेत्रों में जलवायु सम्बन्धी बातों का जानना बड़ा कठिन हो जाता है। जो कुछ भी सूचनायें यात्रियों ने दी हैं, वह बहुत साधारण हैं तथा कुछ भ्रममूलक भी हैं, क्योंकि वे सूचनायें अल्पकालीन अनुभव के आधार पर प्राप्त की गई हैं। यही कारण है कि जलवायु का जो कुछ भी विवरण यहां दिया जा रहा है वह बहुत ही संकुचित है।

ग्रीष्मकालीन दशायें :—ग्रीष्म ऋतु में जब कि सूर्य की किरणें कर्क रेखा पर सीधी पड़तीं हैं तब उत्तरी गोलार्द्ध में अधिक गर्मी पड़ती है। अप्रैल के माह से मध्य एशिया का भू-भाग बहुत गर्म होने लगता है, जिसके फलस्वरूप वहां कम दबाव वाला क्षेत्र (Low Pressure Area) स्थापित हो जाता है, पूर्वी एशिया में हवाओं की दिशा भी बदल जाती है। जून व जुलाई में जब यहां

अधिक ताप के कारण प्रबल कम दबाव वाला क्षेत्र स्थापित हो जाता है तब हवायें समुद्र की ओर से स्थल की ओर चलने लगतीं हैं। दक्षिण-पूर्वी तथा पूर्वी हवायें जो इस ऋतु में चलती हैं यह गर्म व नम होती हैं, यह मानसून हवायें कहलाती हैं। यह हवायें बहुत तीव्र गति से नहीं चलतीं और न ये बहुत शक्तिशाली ही होती हैं। जल व थल के ताप में भी कोई विशेष अन्तर नहीं होता। यदि ध्यान पूर्वक देखा जाय तो ग्रीष्म ऋतु का तापक्रम एक-सा दृष्टिगोचर होगा। जुलाई के माह में ७६° फा० पेकिंग में, ८०° फा० शंघाई में, ८२° फा० हांगकांग में होता है। ग्रीष्म ऋतु व शीत ऋतु के ताप का अन्तर काफी होता है। पेकिंग में ५५° फा०, शंघाई ४३° फा० तथा हांगकांग २४° फा० होता है। वास्तव में ग्रीष्म ऋतु यहां इतनी गर्म नहीं होती, जितनी कि भारतवर्ष में परन्तु फिर भी दक्षिणी चीन में काफी गर्मी पड़ती है, और सितम्बर तक बराबर तापक्रम ऊंचा रहता है। जब वर्षा प्रारम्भ होती है, तब ताप थोड़ा गिर जाता है और मौसम अच्छा हो जाता है। उत्तरी तथा मध्य चीन में ग्रीष्म ऋतु बड़ी सुहावनी होती है। इस ऋतु में यहां न तो बहुत अधिक तापक्रम ही पाया जाता है, और न वर्षा ही अधिक होती है।

शीतकालीन दशायें :—शीत ऋतु में दशायें बिल्कुल भिन्न हो जातीं हैं। सूर्य की किरणें दक्षिणी गोलार्द्ध में मकर-रेखा पर सीधी पड़ने लगती हैं और उत्तरी गोलार्द्ध में एशिया के मध्य का भाग जो ग्रीष्म ऋतु में बहुत गर्म हो जाता है, इस ऋतु में बहुत ठण्डा हो जाता है। अब यहाँ पर बहुत उच्च गर्म भार (High Pressure) वाला क्षेत्र स्थापित हो जाता है। हवायें इस क्षेत्र से बाहर की ओर चलने लगती हैं। परन्तु जल व थल के ताप में अधिक अन्तर पाये जाने के कारण इनका वेग बहुत अधिक हो जाता है। क्योंकि यह हवायें एशिया के मध्य के रेगिस्तानी भागों से आती हैं; इसलिए अपने साथ प्राय: धूल के बादल ले आती हैं और चीन के उत्तरी भाग में जमा कर देती हैं। हवायें इतनी तीव्र व प्रबल होती हैं, कि ये कभी कभी तूफानों का रूप धारण कर लेतीं हैं। केवल इतना ही नहीं, बल्कि कभी-कभी उत्तरी चीन में घोर हिमपात भी हो जाता है। जिसके कारण यहां के आर्थिक जीवन को बड़ी कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं। हवाओं की दिशा उत्तरी चीन में उत्तरी-पश्चिमी, मध्य चीन में उत्तरी, तथा दक्षिणी चीन में उत्तरी-पूर्वी हो जाती हैं। चीन सागर में इस ऋतु की ये मानसून हवायें काफ़ी तीव्र हो जातीं हैं, और कई दिन तक बराबर चलती रहतीं हैं। सच तो यह है कि इस ऋतु में हवाओं की दिशायें स्थिर रहतीं हैं। यही कारण है कि तापक्रम बहुत कम रहता है। वास्तव में चीन की जलवायु 'पूर्वी-तटीय' है। जनवरी की समताप रेखा (Isotherm) को देखने

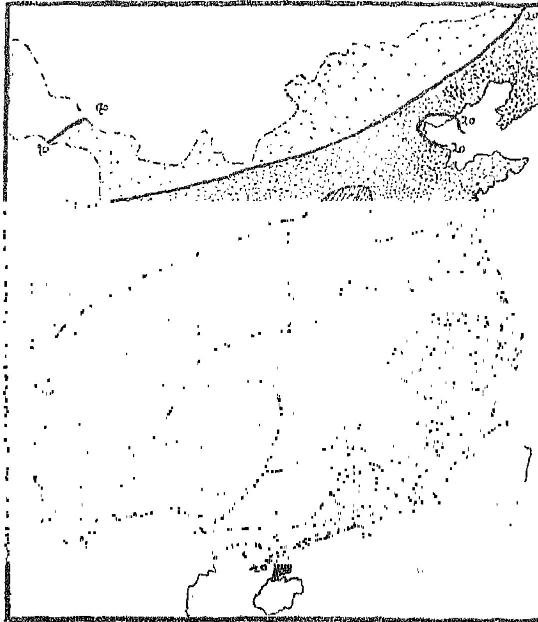
से तो ऐसा प्रतीत होगा कि पश्चिम से पूर्व की ओर, यूरेशिया में यह कुछ दक्षिण की ओर, झुक गई हैं, तथा चीन के तट के समीप और भी अधिक दक्षिण की



चीन का जलवायु—जनवरी व जुलाई

ओर आ गई है। ३२° फ० की समताप रेखा अपनी सब से निचली अक्षांश को छूती है। यह पूर्वी यूरेशिया को केवल ३५° अक्षांश पर तथा पश्चिमी यूरेशिया को ध्रुव के निकट छूती है। सम्पूर्ण उत्तरी चीन में तापक्रम इस ऋतु में हिमांक से भी नीचा होता है। हांगकांग में जो कि उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में है, फरवरी के माह में ५८° फ० औसत तापक्रम रहता है। शंघाई ने तो कभी-कभी १०° फ० तापक्रम भी अंकित किया है। कोहरा चीन में हर स्थान पर पड़ता है; हांगकांग व कारण्टन जो कोहरा न पड़ने के लिए प्रसिद्ध रहे हैं, वहां भी इस ऋतु में कोहरा पड़ता है। चीन में इतना कम तापक्रम पाये जाने का मुख्य कारण यह है कि

उसके उत्तर-पश्चिम में कोई विशेष ऊंची-ऊंची पर्वत श्रेणियां नहीं हैं जो इन हवाओं को रोक सकें। इस विषय में भारतवर्ष की स्थिति उत्तम है क्योंकि उत्तरी ठण्डी हवायें हिमालय पर्वत की ऊंची-ऊंची श्रेणियों को पार करने में असमर्थ रहती हैं और भारत उनके प्रभाव से बच जाता है। चीन के समुद्र तट भी खुले हुए हैं जिनके कारण हवायें बड़ी सुविधा से बिना किसी रुकावट के तटीय भागों तक चलती हैं। यदि देखा जाय तो वे घाटियां जो कि पर्वतों से घिरी हैं हवाओं के प्रभाव से तटीय भागों की अपेक्षा अधिक सुरक्षित हैं। उदाहरण के लिये यांगटिसीक्यांग नदी के डेल्टे पर शंघाई का तापक्रम ३८° फा०, हैंको के पास (जो ५०० मील भीतर की ओर है) ३६° फा० तथा चैंगटू के स्थान पर (जो और भी दूर रेड बेसिन में ज़ैचवान पर्वत पर १५०० फीट की ऊंचाई पर



चीन का जलवायु—वार्षिक वर्षा

स्थित है और चारों ओर से पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ है) ४४° फा० है।* रेड बेसिन के भाग में साधारण ठण्ड पड़ती है, वहां कोहरा भी नहीं दृष्टिगोचर होता और न तुषारपात ही होता है। परन्तु समुद्र तट के समीप क्यांगसी प्रान्त में

*W. G. Kendrew, M. A.—The climates of the continentes, PP. 133, 134, 135.

पोर्जग झील पर एक मोटी सी बर्फ की तह शीत ऋतु में जम जाती है। उत्तरी चीन में तो इस ऋतु में तेज़ बहने वाली नदियाँ भी बर्फ से जम जाती हैं। उदाहरण के लिये ह्वांगहो नदी कान्सू प्रान्त में जमती है। उत्तरी व दक्षिणी चीन के तापक्रम में इस ऋतु में बड़ा अन्तर पाया जाता है। जनवरी के माह में हांगकांग, पेकिंग की अपेक्षा ३६° फा० अधिक गर्म रहता है।

उत्तरी-पश्चिमी हवायें जो शीत ऋतु में एशिया के मध्य के रेगिस्तानों से आतीं हैं, बहुत सूखी हुआ करतीं हैं। आकाश बादल रहित रहता है और वर्षा कदापि नहीं होती। लेकिन जब कभी ये हवायें तेज चलतीं हैं, तो अपने साथ रेत उड़ा लातीं हैं। जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है, कभी-कभी रेत के तूफान भी आ जाया करते हैं। चारों ओर रेत ही रेत दिखाई देता है। पेकिंग में इस ऋतु में बड़ा खराब मौसम रहता है। वैसे तो ऐसा मौसम शीत ऋतु में बराबर रहता है; लेकिन प्रायः पश्चिमी तीव्र हवायें यहां बहुत चला करतीं हैं। मार्च, अप्रैल और मई तक ये हवायें चलती रहती हैं। कभी-कभी तो इतनी शुष्क दशायें हो जातीं हैं कि ऐसा प्रतीत होने लगता है, मानो ग्रीष्म ऋतु आ गई हो। इस प्रकार की दशायें उत्तरी चीन में ही होती हैं। मध्य व दक्षिणी चीन में वातावरण नम रहता है।

वर्षा (Rainfall) :—

वर्षा यहाँ ग्रीष्म ऋतु में होती है। दक्षिण-पूर्वी मानसून हवायें जो कि बहुत दूर से गर्म सागर पर बहती हुई आतीं हैं, अपने साथ बहुत सी नमी एकत्रित करके लातीं हैं। ये हवायें चीन में प्रवेश करके दक्षिण तथा पूर्व की ओर घोर वार्षिक वर्षा करती हैं। उत्तर की ओर तथा आन्तरिक क्षेत्रों में वर्षा कम हो जाती है। सिक्यांग नदी का मुहाना ८० इञ्च वार्षिक वर्षा प्राप्त करता है। चालीस इञ्च वाली सम-वर्षा-रेखा (Isobar) यांगटिसी नदी की घाटी के उत्तर से होकर जाती है। उत्तरी चीन पेकिंग को सम्मिलित करते हुये २५″ के लगभग वर्षा प्राप्त करता है। इस ग्रीष्म ऋतु की वर्षा से कभी-कभी नदियों में ऐसी बाढ़ आ जाती है, कि आर्थिक हानि होने के अतिरिक्त, सैकड़ों व हजारों मनुष्य अपनी जान खो बैठते हैं। अगस्त के माह में चुंकिंग के स्थान पर यांगटिसी नदी का पानी ७० फीट तक ऊपर बढ़ जाता है। परन्तु हैन्को के स्थान पर केवल ४० फीट ही तक ऊपर बढ़ता है।

यह बतलाया जा चुका है, कि चीन में सब से अधिक वर्षा ग्रीष्म ऋतु में होती है। परन्तु फिर भी हम वर्षा के दृष्टिकोण से चीन को तीन भागों में बाँट सकते हैं, जो क्रमशः उत्तरी, मध्यवर्ती तथा दक्षिणी भाग हैं। उत्तरी चीन के अन्तर्गत यांगटिसी नदी की घाटी के उत्तर के सभी क्षेत्र हैं। मध्यवर्ती चीन में

यांगटिसी नदी की घाटी तथा दक्षिणी भाग के वे प्रदेश सम्मिलित हैं जो यांगटिसी नदी की घाटी के दक्षिण में स्थित हैं।

उत्तरी चीन :—उत्तरी चीन में वर्षा सम्बन्धी दशायें बड़ी साधारण रहती हैं। पेकिंग में २२ इञ्च वर्षा होती है, जिसका ६१ प्रतिशत भाग मई से लेकर सितम्बर तक के महीनों में होता है, शेष सात महीनों में कुल १ इञ्च वर्षा होती है। ग्रीष्म कालीन वर्षा आरम्भ होकर जुलाई और अगस्त तक बढ़ती रहती है, परन्तु जैसे ही मानसून क्षीण पड़ने लगते हैं वैसे ही वर्षा की मात्रा घटने लगती है। वास्तव में यह एक विचित्र मानसूनी क्षेत्र है।

मध्य चीन :—यहां भी वर्षा ग्रीष्म ऋतु की मानसून से होती है। परन्तु वर्षा का समय इतना निश्चित नहीं है जितना कि उत्तरी चीन में होता है। शंघाई की कुल वर्षा का ५७ प्रतिशत भाग मई से लेकर सितम्बर तक के महीनों में होती है। वर्षा काल के किसी भी माह में १ इञ्च से कम वर्षा नहीं होती। सबसे अधिक वर्षा जून व जुलाई के महीनों में होती है। शीत ऋतु में भी कुछ वर्षा हो जाती है। यहाँ की इस वर्षा ऋतु में एक विशेष प्रकार का परिवर्तन पाया जाता है। आन्तरिक क्षेत्र में इशांग के स्थान पर शीत ऋतु में कम वर्षा होती है, और ग्रीष्म ऋतु में भी लगभग उतनी ही वर्षा हो जाती है। मई से लेकर सितम्बर तक के महीनों में ७८ प्रतिशत वर्षा हो जाती है।

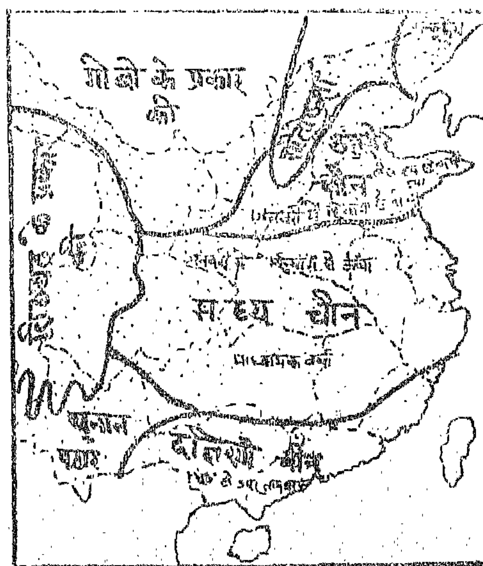
दक्षिणी चीन :—यह वर्षा का क्षेत्र कुछ-कुछ उत्तर के क्षेत्र से मिलता-जुलता है, लेकिन यहाँ वर्षा उत्तर की अपेक्षा अधिक होती है। हांगकांग में वार्षिक वर्षा ८४ इञ्च हो जाती है। किसी माह में १ इन्च से कम वर्षा नहीं होती। मार्च के अन्त से यहाँ अधिक वर्षा होना आरम्भ हो जाती है, और जून के प्रारम्भ में अधिकतम (Maximum) वर्षा होती है। ग्रीष्म ऋतु में प्रत्येक महीने में लगभग ३ इंच वर्षा हो जाती है, शेष पाँच महीनों में (मई से लेकर सितम्बर तक) १२ इंच से भी अधिक वर्षा होती है। इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि यहाँ पर ग्रीष्म ऋतु में अधिक वर्षा तथा शीत ऋतु में कम वर्षा होती है।

मध्य चीन की वर्षा में जो विशेषतायें हैं, उनका कोई संतोषजनक विवरण नहीं दिया गया है। ग्रीष्म ऋतु के प्रारम्भ में जो वर्षा होती है वह जापान तथा चीन के निकटवर्ती द्वीपों में भी होती है, इस प्रकार की वर्षा को 'लूम वर्षा' कहते हैं। ऐसा अनुमान है, कि ग्रीष्म ऋतु के प्रारम्भ में यांगटिसी क्यांग नदी के मध्य में चक्रवात बनते हैं और धीरे-धीरे घाटी में होकर समुद्र की ओर बहते हैं। चक्रवात उत्तर-पूर्व की ओर जापान में भी प्रवेश करते हैं। परन्तु इन चक्रवातों की उत्पत्ति के विषय में मतभेद है। कुछ विद्वानों का यह मत है, कि जैचवान के मैदानी क्षेत्र कहीं कहीं पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ने के कारण बहुत गर्म हो

जाते हैं, इसलिये प्राय: चक्रवात बन जाया करते हैं। अगस्त में जो वर्षा होती है, वह उष्ण-कटिबन्धीय चक्रवातों (Typhoon) के कारण होती है। ये चक्रवात इस माह में प्राय: चीन के पूर्वी तट के निकट आया करते हैं। वैसे तो ये उत्तर-पूर्व की ओर से चीन में प्रवेश करते हैं, लेकिन कभी-कभी तटीय भागों से सीधे ही टकराते हैं। इनके आने से बहुत बड़ी हानि होती है, क्योंकि ये बड़े विनाशकारी होते हैं। इनके आने के बाद कुछ वर्षा भी हो जाती है।

मध्य चीन में जो शीत ऋतु में वर्षा होती है, उन हल्के चक्रवातों से होती है, जो कि चीन के आन्तरिक क्षेत्र में बनते हैं तथा यांगटिसी क्यांग नदी की घाटी में होकर समुद्र की ओर चलते हैं। इन चक्रवातों के पूर्व में जो हवायें चलतीं हैं यह पूर्वी या दक्षिणी-पूर्वी होती हैं, और समुद्र की ओर से आती हुई प्रतीत होतीं हैं। यह कुछ गर्म होती है, तथा वर्षा भी करती हैं। चक्रवात के पीछे के हिस्से में तीव्र उत्तरी हवायें होती हैं, जो कि वास्तव में उत्तरी-पश्चिमी मानसून ही हैं। कोरिया का आधा पूर्वी भाग शीत ऋतु में कुछ इंच वर्षा प्राप्त करता है, क्योंकि सामने से शीत कालीन मानसून की उत्तरी हवायें आती हैं। लेकिन फिर भी सबसे अधिक वर्षा ग्रीष्म ऋतु में ही होती है।

अब हम चीन को तीन ऐसे जलवायु खण्डों में बाँट सकते हैं, जिनमें कि लगभग सभी रूप आ सकते हैं :—



चीन के जलवायु विभाग

(१) यांगटिसीक्यांग नदी के उत्तर का क्षेत्र :—

यह भाग शीत ऋतु में बहुत ठण्डा रहता है, उत्तर-पश्चिम से सूखी हवायें लगातार चलती हैं। कभी-कभी धूल के तूफान भी आ जाया करते हैं। ग्रीष्म व शीत ऋतुओं के तापक्रम में बड़ा अन्तर आ जाता है। ग्रीष्म ऋतु तो यहां इतनी गर्म होती है, जितनी कि दक्षिणी चीन की। मौसम में परिवर्तन स्पष्ट रूप से होता है। शीत ऋतु में वर्षा बिल्कुल नहीं होती। ग्रीष्म ऋतु में दक्षिणी-पूर्वी हवाओं से वर्षा होती है। सबसे अधिक वर्षा ग्रीष्म ऋतु के अन्त में ही होती है। कुल वर्षा फिर भी शेष चीन की अपेक्षा कम ही होती है।

(२) मध्य चीन का क्षेत्र :—

मध्य चीन का भाग भी एक ठण्डा भाग है, परन्तु यह उतना ठण्डा नहीं है जितना कि उत्तरी क्षेत्र। तापक्रम (मीन समुद्र तट तक) ३२° फ० रहता है। ऋतु परिवर्तन यहां धीरे धीरे ही होता है। शीत ऋतु के महीने नम होते हैं, क्योंकि कुछ न कुछ वर्षा हो ही जाती है। इस ऋतु में रेड बेसिन का भाग तट की अपेक्षा कुछ गर्म रहता है, क्योंकि तटीय भागों में उत्तरी ठण्डी हवायें बग़ैर रुकावट के प्रवेश करती हैं। इन दिनों ज़ैचवान में कोहरा बिल्कुल नहीं पड़ता। यांगटिसी की घाटी भी इस ऋतु में आर्द्र रहती है तथा बादलों से घिरी रहती है। चुक्यांग में हफ्तों सूर्य दृष्टिगोचर नहीं होता, परन्तु शेष घाटी के भाग में धूप भी निकलती है तथा मौसम भी स्वच्छ रहता है। चेन्गटू की जलवायु शीत ऋतु में सूखी है। लोगों का अनुमान है कि यूनान प्रान्त में जो इस घाटी के दक्षिण में है, और जिसे 'बादलों के दक्षिण का क्षेत्र' कहते हैं, खूब धूप निकलती है। ग्रीष्म ऋतु की वर्षा मई से प्रारम्भ होती है और सितम्बर तक बराबर होती रहती है। यह एक पठारी प्रान्त है, और कोई भी स्थान समुद्र की सतह से ६००० फीट से कम नहीं है। इसी कारण से योरोपियन लोगों को यहां की स्वास्थ्यप्रद जलवायु बड़ी रुचिकर है।

(३) यांगटिसीक्यांग नदी के दक्षिण का क्षेत्र :—

इसका वातावरण उष्ण-कटिबन्धीय है, परन्तु फिर भी शीत ऋतु ठण्डी होती है। यहां वर्षा पर्याप्त मात्रा में होती है। अधिकतर वर्षा ग्रीष्म ऋतु में मानसून हवाओं से होती है। शीत काल में भी कुछ वर्षा हो जाती है। जून में सबसे अधिक वर्षा होती है। समुद्र की सतह पर कोहरा व बर्फ बहुत ही कम पड़ते हैं।

मानव रूप (Human Aspect)

ऐतिहासिक आधार (Historical Background) :—

चीनी राष्ट्र के निर्माण के विषय में अभी विद्वानों में मतभेद है। परन्तु

इसमें सन्देह नहीं, कि यहां की सभ्यता आज से पांच हजार वर्ष पूर्व की है, लोगों का यह भी विचार है कि कदाचित् इतनी पुरानी सभ्यता संसार के किसी भी क्षेत्र में नहीं पाई जाती। ऐसा भी कहा जाता है कि आधुनिक चीन के लोगों का जन्म उस वंश से है जो कि सुमेर देश (Cradle of civilization) से सम्बन्धित है, परन्तु इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। सन् १९२८ में जो पेकिंग के निकट मानव स्कल (खोपड़ी) पाई गई, उसका अध्ययन करने से ऐसा प्रतीत होता है, कि लोग प्लीस्टोसीन युग (Pleistoceno Age) के प्रारम्भ में पाये जाते थे। यह लगभग वही युग है, जब कि जावा में पाईथेकेन्थ्रोपस स्कल (Pithecanthropus Skull) पाई गई थी। 'सिनेनथोपस' 'पेकिनेसिस' या 'पेकिंग मैन' का अध्ययन हमें यह बतलाता है, कि रूप रंग में वे लोग आधुनिक मंगोलियन लोगों से मिलते जुलते हैं।

चीन का इतिहास वास्तव में याओ महान (Yao the Great) जो कि २३५७ B. C. में हुआ था, से प्रारम्भ होता है क्योंकि यही उस समय यहां का सबसे बड़ा राजा था। आश्चर्य की बात यह है कि जो कुछ भी लिखित प्रमाण मिलते हैं वे सब १२०० B. C. से अधिक प्राचीन नहीं हैं। चीन का इतिहास तीन श्रेणियों* में बाँटा जा सकता है—प्रथम सामान्तशाही काल (Feudal Period), द्वितीय राजतन्त्र काल (Monarchical Period , तृतीय गणराज्य सम्बन्धी काल (Republican Period) इन तीनों में सबसे अधिक प्रसिद्ध राजतन्त्र काल ही है। जो कुछ भी लिखित प्रमाण मिलते हैं वे भी १२०० B. C. तक के ही मिलते हैं, उसके पहले के या तो मिलते ही नहीं और जो मिलते भी हैं तो वे व्यर्थ हैं।

इस बात का वर्णन हम पहले ही कर चुके हैं कि चीन की अति प्राचीन सभ्यता सम्भवत: मंगोलियन न हो, और कदाचित् योरोप या पश्चिमी एशिया की सेमेटिक (Semitic) सभ्यता की कोई शाखा हो। साथ ही यह भी सम्भव है कि गहरे रंग की, सुमेरियन तथा द्राविण सभ्यताओं का ही मिश्रण रहा हो। कुछ भी हो १७५० B. C तक चीन में जागीरदारी प्रथा (सामन्तशाही) प्रचलित हो गई थी। कई छोटे छोटे राज्य वितरित थे। यह सब शान्शी, शेन्शी, चिहली तथा शांटुग के तटों तक सीमित थे। द्वितीय शताब्दी तक इन लोगों ने अपनी

---

* "Feudal Period—from 2357 B. C. to 221 B. C.
Monarchical Period—from 221 B. C. to A. D. 1912
Republican Period—from 1912 onwards"
L. Dudley Stamp...Asia, A Regional and Economic Geography PP. 503, 504.

सीमाओं को बढ़ा लिया और दक्षिण में यांगटिसीक्यांग नदी, पूर्व में पीले सागर तक पहुंच गये। यह जागीरदार कुछ निश्चय धन, निश्चय समय पर धार्मिक राजा (Priest-emperor or 'Son of Heaven' कहलाता था) को देते थे। इस शंग-वंश (Shang Dynasty) का अन्त ११२५ तक हो गया और इसके उपरान्त चो वंश (Chow Dynasty) आया। यद्यपि यह वंश काफी समय तक रहा परन्तु अन्त में चीन के टुकड़े टुकड़े हो गये और पुनः जगह जगह पर सामन्तशाही राज्य स्थापित हो गये। कुछ वर्ष पश्चात् एक बहुत शक्तिशाली राज्य ने अन्य राज्यों को जीत लिया तथा चीन साम्राज्य में केवल एक राज्य स्थापित हो गया।

यहीं से द्वितीय राजतन्त्र काल का आरम्भ होता है। सबसे पहला सम्राट चिन शिह हांग टी (Chin Shih Huang Ti) था। इसने तमाम प्राचीन लिखित लेखों (Records) को जलाने का आज्ञा देदी थी। यदि सैकड़ों विद्यार्थियों ने मिलकर विरोध न किया होता तो कदाचित् चीन के प्रचीन इतिहास का कदापि लिखित प्रमाण न मिलता। इस सम्राट ने उत्तरी तारतर तथा अन्य जातियों को रोकने के लिये उस दीवार को पूरा कराया जो कि कई खण्डों में थी। इसने चीन की महान दीवार को और भी अधिक बढ़वा कर ११४५ मील लम्बी करा दी। धीरे धीरे शाटंग, क्यांगसू, आन्ची, होनान, ह्यूपे तथा शेन्शी के प्रान्त भी अपने राज्य में सम्मिलित कर लिये।

चीन के इतिहास में हन (Han) वंश (२०६ B. C. से २२१ A. D.) एक बहुत ही प्रसिद्ध वंश हुआ है, और इनके राज्य का युग भी एक अद्भुत युग है। इस काल में साहित्य, कला तथा सैन्य विज्ञान अध्ययन के मुख्य विषय थे। हन वंश के सम्राटों के समय हनिश (Hunnish) लोगों ने उपद्रव मचाया, स्थानीय राज्य करने वालों ने किसी को अध्यक्षता में कार्य करना बन्द कर दिया, सभी स्वतन्त्र हो गये। ऐसा कहा जाता है कि छठी शताब्दी में पाँच या छः हजार स्वतन्त्र राज्य थे। वास्तव में यह छोटा सा युग Age of Confusion कहलाता है। इन दशाओं को ठीक ठीक रखने के लिये कम से कम २५० वर्ष लगे। सम्राट वू टी (Wu Ti) जो कि एक कुशल सिपाही था, उत्तरी कोरिया तथा कान्सू राज्यों के सम्मिलित करने में सफल हुआ। इस प्रकार चीनी तुर्किस्तान एक सहायक प्रान्त हो गया। स्यान टी (Hsian Ti) के समय तक सम्पूर्ण मध्य एशिया ने चीन सम्राट को अपना सुरक्षक बना लिया, ये लोग दूर पश्चिम तक भगा दिये गये, चीन का प्रभाव कैस्पियन सागर तक फैल गया। बहुत समय पश्चात् इस वंश का अन्त हो गया और अन्य छोटे छोटे वंश आये परन्तु धीरे धीरे वे भी चल बसे। इसके बाद सम्पूर्ण साम्राज्य के तीन टुकड़े हो गये, पश्चिम में शू (Shu) मध्य तथा

दक्षिण वू (Wu) तथा उत्तर में वई (Wei) । इनमें थोड़े वर्षों बाद पुन: एकता हो गई और सुइ (Sui) सम्राटों के प्रयत्नों से शान्ति स्थापित हो गई । लगभग २८ वर्ष बाद तंग वंश (Tang Dynasty) का जन्म हुआ, वैसे इसके शत्रु तिब्बत, कोरिया तथा जापान में पाये जाते थे, परन्तु फिर भी इस युग में कविता कला में उल्लेखनीय प्रगति हुई । इसकी शक्ति साम्राज्य में कई राज्यवालों की सत्ता बन जाने के कारण क्षीण हो गई । इसके फलस्वरूप फिर से साम्राज्य छिन्न भिन्न हो गया और (Sung) वंश स्थापित हो गया । इस समय साहित्य व तर्कशास्त्र का बहुत विकास हुआ । दक्षिण के रंग किन लोगों से प्राय: लड़ा करते थे । चीन के इतिहास में १२१० के उपरान्त जो परिवर्तन हुये वे बड़े महत्वपूर्ण थे । मंगोलों ने चंगेज़खां, जिसने कि चीनियों को भी सहायता दी थी, की अध्यक्षता में चिहली, शेन्शी, शान्शी तथा होनान के प्रान्त जीत लिये ।

बाद में चंगेज़खां के उत्तरदायी ने दक्षिण में यूनान को भी जीत लिया । कुछ वर्ष उपरान्त मंगोल चीन साम्राज्य से पृथक हो गये । ऐसा कहा जाता है कि मंगोल के कुबलाई खाँ ने मार्कोपोलो को निमन्त्रित किया, और उसे कई आवश्यक सूचनायें भी दीं । सन् १३५६ के उपरान्त मंगोलियनों का पतन होने लगा । इसका मुख्य कारण यह था कि चीन क्रान्ति के नेता चू ने नानकिंग पर आतंक जमा लिया और मध्य चीन को भी अपने अधिकार में कर लिया था ।

चीन में मिंग राज्य स्थापित हो गया । यह सन् १३६८ से १६४४ तक रहा । नई सरकार ने अपनी राजधानी नानकिंग से पेकिंग बदल दी । पन्द्रहवीं शताब्दी में मंगोल लोगों ने पुन: आक्रमण करना चाहा, परन्तु असफल रहे । सोलहवीं शताब्दी में कुछ और महत्वपूर्ण परिवर्तन हुये, योरोपियन लोगों का आना भी इसी शताब्दी से प्रारम्भ हुआ, कुछ पुर्तगाल के निवासी सर्व प्रथम कान्टन में आये । व्यापार के बहाने, स्पेन, इंगलिश व डच लोग भी आकर बस गये । उत्तर में अभी पूर्ण रूप से मंगोल नहीं आ पाये थे, किनारे पर वर्षों से जापानी लोग आक्रमण कर रहे थे । विदेशी लोग अच्छी तरह से आ ही चुके थे, धीरे धीरे मिंग वंश का पतन प्रारम्भ हो गया । सन् १६१८ में मंचू जाति के लोगों ने उत्तर-पूर्व से लाओटंग प्रायद्वीप से होकर आक्रमण कर दिया और मुकडेन को अपनी राजधानी बना लिया, धीरे धीरे वह पेकिंग तक बढ़ आये, और उसे अपने अधिकार में ले लिया । सन् १६४४ से लेकर १९१२ तक उन्होंने चीन पर राज्य किया । इतने वर्षों के अन्दर विदेशियों को चीन से अपने घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करने का और भी अधिक अवसर मिल गया । कुछ देशों के राजदूत भी चीन में रहने लगे । सन् १७९३ में ब्रिटिश लोगों को कान्टन से व्यापार करने की अनुमति दे दी गई । कुछ कारणों से ब्रिटेन से 'ओपियम युद्ध' (Opium War) शुरू हो गया । यह

१८४० से १८४३ तक रहा, और इसके अन्तर्गत एक सन्धि हुई जो इतिहास में 'नानकिंग की सन्धि' के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अनुसार कान्टन, अओय, फूचू, निन्गावो तथा शंघाई विदेशी व्यापार के लिये खोल दिये गये तथा हौंग कांग द्वीप ब्रिटेन को दे दिया गया। इसके बाद ताईपिंग (Taspimg) क्रान्ति जो कि विशेष तौर पर धार्मिक कारणों से प्रारम्भ हुई थी, राजनैतिक बन गई और मंचू राज्य के विरुद्ध चीन भर में फैल गई। इस क्रान्ति में लगभग एक दर्जन प्रान्त तथा हजारों नगर नष्ट हो गये। सन् १८५६ में ब्रिटेन के साथ पुन: एक युद्ध सा छिड़ गया, अब की बार फ्रांस ने भी ब्रिटेन को सहायता दी। जब टिंशटिन विदेशी व्यापार के लिये खुल गया तब यह युद्ध समाप्त हुआ। इसके बाद सभी बन्दरगाहों से विदेशी व्यापार होने लगा, यहाँ तक कि १८७५ में इशांग, वूहू तथा अन्य नगर भी इस कार्य के लिये खुल गये। कोरिया सन् १८९५ में स्वतन्त्र हो गया तथा फारमूसा जापानियों के अधिकार में चला गया।

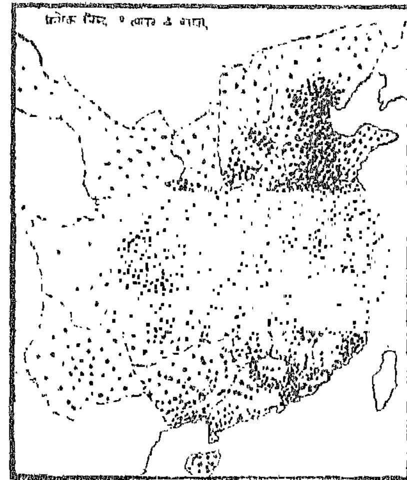
किओचो की खाड़ी पर सिंगताओ (Tsingtao) बन्दरगाह, १८९८ में जर्मनी ने ले लिया। इसके बाद १९१४ में जापानियों के अधिकार में आया तथा अन्त में फिर चीन को मिल गया। इसी समय ग्रेट ब्रिटेन को शांटंग में स्थित वई-हाई-वई (Wei-hai-wei) मिल गया। रूस की इच्छा पोर्ट आर्थर तथा दाइरन बन्दरगाहों को लेने की थी। रूस-जापान युद्ध छिड़ने से लोओटंग प्राय-द्वीप तथा पोर्ट आर्थर से चंग चुंग तक की रेलवे लाइन जापान को मिल गई।

सन् १९०० में चीन में विदेशियों के खिलाफ एक आन्दोलन जिसे 'बाक्सर' 'Boxer' कहते हैं, प्रारम्भ हुआ। इसका ध्येय इन लोगों को बाहर निकालना था। साथ ही साथ वाणिज्य व उद्योगों में उन्नति करना भी था। इधर मंचू राज्य की नींव भी ढीली पड़ रही थी। आन्दोलन के नेताओं ने मंचू राज्य समाप्त करने की घोषणा की। अन्त में मंचू राज्य फरवरी १९१२ में समाप्त हो गया। चीन में अब गण-राज्य सरकार स्थापित की गई। जिसके अध्यक्ष युआन शिकाई (Yuan Shih-kai) नियुक्त किये गये। केवल चार वर्ष बाद ही इनका देहान्त हो गया। फिर से राज्य में गड़बड़ी मच गई, लोगों ने संविधान में परिवर्तन कराने के हेतु उपद्रव शुरू कर दिया। चारों ओर क्रान्ति की आग भड़क उठी। राष्ट्रीय सरकार ने १९२८ में अपनी राजधानी पेकिंग से नानकिंग कर दी। जापान की अध्यक्षता में एक स्वतन्त्र राज्य मंचूको या मंचूरिया में बना दिया गया, जिसकी सीमायें महान् दीवार तक बढ़ा दी गई।

जनसंख्या वितरण (Population Distribution) :—

चीन संसार का सब से घना बसा हुआ देश है। इसकी जनसंख्या समस्त

एशिया की जनसंख्या से एक तिहाई से अधिक है। सम्पूर्ण योरप की जनसंख्या चीन से कुछ ही अधिक है। चीन के मानचित्र का अध्ययन करने से ऐसा दृष्टिगोचर होगा कि जनसंख्या लगभग सभी भागों में पाई जाती है। परन्तु अधिक घने बसे हुये क्षेत्र नदियों की घाटियों, समुद्र तट तथा अन्य समतल भागों में पाये जाते हैं। यदि कोई यात्री चीन के आन्तरिक क्षेत्रों में यात्रा करे तो जहाँ कहीं भी उसे थोड़ी सी जनसंख्या दृष्टिगोचर होगी, वहाँ उसका विचार तुरन्त इस ओर जायेगा कि, थोड़ी सी उपजाऊ भूमि पर मनुष्यों का कितना भार है। शताब्दियों से मनुष्य उसी थोड़े से क्षेत्र को अपने जीवन निर्वाह के लिये प्रयोग करता आया है। इसकी जनसंख्या की वृद्धि इतनी अधिक हुई है, कि साधारण से साधारण भूमि तक घने बसे हुये क्षेत्रों में सम्मिलित की जाने लगी है। कुछ भाग तो अधिक घने बसे हुये हैं। 'वहाँ जनसंख्या का घनत्व भूमि पर इतना अधिक है, कि जल पर रहने के लिये मजबूर हो गये हैं।



चीन की जनसंख्या

आरम्भ से ही चीन को अपनी जनसंख्या गणना में बड़ी कठिनाइयां रहीं हैं, क्योंकि कुछ आन्तरिक क्षेत्रों की स्थिति ऐसी है, कि उनसे प्रवेश करना बहुत ही कठिन है। यही कारण है कि हमको चीन की जनसंख्या के उचित आँकड़े (Census) नहीं मिलते। जनगणना वैसे तो कई संस्थाओं ने की है, परन्तु किसी ने भी ठीक ठीक संख्या नहीं दी। सर्व प्रथम, उन मकान मालिकों के आधार पर अनुमान लगाया गया जो कि कर दिया करते थे, लेकिन यह कोई आवश्यक नहीं था, कि सभी लोग कर दें, कुछ ऐसे भी व्यक्ति थे जो कर नहीं देते थे, मगर जनसंख्या गणना में उनकी गिनती होनी चाहिये थी। बोर्ड आफ रेवैन्यू ने भी अपनी जनगणना (Census) तैयार की, परन्तु वह भी कोई अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध नहीं हुई। द्वितीय, अनुमान चीनी कण्टीन्यूयेशन कमेटी ने

'ईसाइयों की बस्तियों* नामक पुस्तकों के तैयार करते समय घोषित किया। तृतीय गणना चीनी पोस्ट आफिस ने स्वतन्त्रापूर्वक १९२५ में की, उसने मुख्य चीन की जनसंख्या ४५८,७७९,७१४ घोषित की। कदाचित् इन दोनों संख्याओं का अनुमान उस समय को देखते हुये कुछ अधिक था।

चीन की वर्तमान जनसंख्या डा० क्रेसे के अनुसार ४४८,६६८,५०६ है। इसमें हाँगकाँग तथा कौलून की सीमाओं की जनसंख्या लगभग २०००००० तथा मकाओ की लगभग ५०००००० और भी सम्मिलित कर देनी चाहिये। संयुक्त राष्ट्र की सन् १९४८ की डिमोग्राफिक ईयरबुक में जो संख्या दी गई है वह ४६३,१९८,००० है। परन्तु यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि किसका योग विश्वसनीय है। साम्यवादी चीन ने हाल ही में चुनाव के सम्बन्ध में जो जनसंख्या घोषित की है वह लगभग ५००,०००,००० है; परन्तु चीन की प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत जो १९५६ की जनसंख्या दी गई है, वह ६००,०००,००० है।

चीन का बहुत सा क्षेत्र पर्वतीय है, इसीलिये जनसंख्या का घनत्व भिन्न भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न पाया जाता है। औसत घनत्व लगभग २४० व्यक्ति प्रति वर्ग मील है, परन्तु नदियों की घाटियों, डेल्टे तथा समुद्र तट के निकट जनसंख्या का घनत्व बहुत अधिक पाया जाता है। उत्तरी चीन के मैदान में औसत घनत्व ५४७ प्रति वर्ग मील है। परन्तु कृषि वाले क्षेत्रों में यह ९७८ हो गया है, कि आंगसू प्रान्त में, जो कि विशेष तौर पर कृषि वाला क्षेत्र है, घनत्व लगभग ९०० व्यक्ति प्रति वर्ग मील पाया जाता है। कुछ ऐसे भी क्षेत्र यांगटिसी क्यांग नदी की घाटी एवं डेल्टे वाले भागों में मिलते हैं, जहाँ घनत्व ४००० व्यक्ति प्रति वर्गमील से भी अधिक हो गया है। पिछले वर्षों चीन के लिये यह कहा जाता था कि खाद्य पदार्थों की अपेक्षा इसकी जनसंख्या बहुत घनी (Overpopulated) थी। परन्तु आधुनिक समय में चीन बहुत अधिक घना बसा देश नहीं कहा जा सकता, क्योंकि अब खाद्य पदार्थों की दशा बहुत सुधर गई है।

परन्तु चीन के सम्मुख एक और बड़ी जटिल समस्या यह है, कि जनसंख्या वृद्धि प्रति वर्ष बहुत अधिक हो रही है। पिछले वर्षों के आंकड़ों को यदि

---

* L. Dudley Stamp :—Asia, A Regional and Economic Geography p. 497 :—

China Proper	Govt. Gazette	China Centinuation Committee	Post Office
	(1911)	(1918—19)	(/925)
Estimate	302,113,000	420,926,847	458,779,914

ध्यान पूर्वक देखा जाय तो ऐसा प्रतीत होता है, कि ३० लाख व्यक्ति प्रति वर्ष के हिसाब से निरंतर वृद्धि हो रही है। श्री कुक के अनुसार चीन में मृत्यु दर २७.१ व्यक्ति प्रति हज़ार तथा उत्पत्ति दर ३८.३ व्यक्ति प्रति हज़ार है। इस प्रकार से वृद्धि ११.२ व्यक्ति प्रति हज़ार की दर से हो रही है, अर्थात् चालीस या पैंतालीस लाख व्यक्ति प्रति वर्ष के हिसाब से जनसंख्या वृद्धि हो रही है। भविष्य में आशा की जाती है, कि यहाँ की जन संख्या समस्त योरोप की जनसंख्या से भी अधिक हो जायेगी।

जिस देश में जितनी अधिक जनसंख्या होगी, उतना ही घना बसा हुआ वह देश होगा। जिस देश में अधिक प्राचीन विचार होंगे फलत: उस देश का रहन-सहन का स्तर भी बहुत ही निम्न कोटि का होगा। यदि इनके रहन-सहन स्तर ऊंचा किया जाय और स्वास्थ्य एवं स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाय, तथा अकाल दूर किये जायें तो मृत्यु दर बहुत घट जायेगी, परन्तु उत्पत्ति की दर यदि उतनी ही रही, तो निस्सन्देह यहाँ की जनसंख्या बहुत ही अधिक बढ़ जायेगी और यदि खाद्य पदार्थों में भी उतनी ही वृद्धि नहीं की गई तो कदाचित् जीवन निर्वाह के लाले पड़ जायेंगे।

आधुनिक चीन में ७५ प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या है, जो अधिकतर गाँवों में रहती है। गाँव लगभग सभी भागों में पाये जाते हैं, आन्तरिक क्षेत्रों में पर्वतीय ढालों, पठार व नदियों की घाटियों में गाँव मिलते हैं। जो ग्रामीण मनुष्य उनमें रहते हैं, वह कृषि करते हैं या रेशम के कीड़े पालते हैं। इन लोगों का जीवन बड़ा दुर्लभ होता है; क्योंकि इनको कभी कभी भीषण अकालों का सामना करना पड़ता है। प्राय: गाँव के गाँव बाढ़ के समय बह जाया करते हैं। वास्तव में ग्रामीण जनसंख्या का वितरण एकसा नहीं है, कहीं तो गाँव पास पास स्थित हैं और कहीं पर दूर दूर पाये जाते हैं।

शेष २५ प्रतिशत जनसंख्या नगरों में रहती है। ये नगर अधिकतर नदियों की घटियों, डेल्टों या समुद्र तटों पर ही पाये जाते हैं। चीन को हम पूर्ण रूप से नागरिक देश नहीं कह सकते। यहां केवल सात नगर ऐसे हैं जिनमें से प्रत्येक में १० लाख से अधिक जनसंख्या पाई जाती है। पेकिंग, तिनशिन शंघाई

Chew Hein Sen—'The Chinese Peasants' Page 4.

Total Population—458000000, Chinese 430000000 other Races 28000000.

Dr. G. B. Cressey—Asia's Lands and Peoples P. P. 43, 44.

Wilcox Thomson's Estimate—350 to 425 Millions.

Chinese Own Estimate— 442 millions.

नानकिंग, हैंको-वूशांग, चुंकिंग तथा केन्टन आदि यहां के मुख्य नगर हैं। अन्य नगर ऐसे हैं, जिनमें ५ लाख से भी कम व्यक्ति रहते हैं। ये नगर व्यापारिक केन्द्र हैं अथवा राजनैतिक महत्ता रखते हैं। कुछ बड़े नगरों में हमें योरोपियन वातावरण दृष्टिगोचर होता है, क्योंकि वहाँ भी कई मंजिले ऊंचे मकान, चौड़ी सड़कें, मोटर गाड़ियां तथा बड़े बड़े कार्यालय इत्यादि मिलते हैं।

चीन में जनसंख्या वितरण पर दो बातों का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है, प्रथम, वहां की भौतिक रचना—यहाँ समतल भूमि की बहुत कमी है। यहाँ के गाँवों का यदि औसत लिया जाय तो अधिकतर २००० फीट की समोच्च (Contour) रेखा के नीचे ही स्थित मिलेंगे। द्वितीय—यहाँ के लोगों की धार्मिक विचारधारा तथा अपने पूर्वजों की भूमि से घनिष्ठ प्रेम मिलेगा। यहाँ के कृषकों का कहना* है—कि "यदि हम दूसरे देश को चले जायेंगे तो हमारे पूर्वजों की कब्रों की कौन रक्षा करेगा"। बस इसी लालच में ये लोग अन्य उपजाऊ क्षेत्रों को छोड़ कर अपने पूर्वजों के स्थान पर ही पड़े रहते हैं। ऐसा नहीं है, कि इनको नवीन भूमि का ज्ञान नहीं हो, बल्कि ये लोग जाते भी हैं, तो तुरन्त ही थोड़े दिनों बाद भूमि पर वापस चले आते हैं। वास्तव में यदि देखा जाय तो इनका जीवन ही आर्थिक संघर्षों से भरा हुआ है। कभी कभी इनको जान भी देनी पड़ जाती है। कदाचित् इन सब कठिनाइयों का एक मात्र उपाय यही है, कि उत्तम यातायात के साधन हों, और वह भी सभी क्षेत्रों में उपलब्ध हों।

इस देश में प्रत्येक गृहस्थी की औसत आय उतनी नहीं है, कि वह एक रहन-सहन का स्तर रख सकें। किसी किसी क्षेत्र में तो खाद्य पदार्थों का इतना अभाव है, कि लोगों को पेट भर खाना भी नहीं मिलता है। इससे क्या हुआ, कि इतनी भोजन सामग्री हो जाय कि साल भर तक खा सकें। लेकिन जब कभी भी किसी वर्ष अचानक फ़सल बरबाद हो जाती है तो भीषण अकाल पड़ने लगता है। लोग भूखों मरने लगते हैं, और चारों ओर चीखें सुनाई पड़तीं हैं, यद्यपि सहायता पहुंचाने में कोई कसर नहीं रखी जाती। चीनी लोगों का भोजन, उत्तरी क्षेत्र में गेहूं, तथा दक्षिणी क्षेत्र में चावल है। चाय, तेल तथा सब्जी इत्यादि तो ऐसे खाते हैं, जैसे कि कोई बड़ी अमूल्य वस्तु खाई जा रही हो। गोश्त व मछली केवल धनी व्यक्ति ही खाने का साहस करते हैं। अकाल के समय इनका

* L. Dudley Stamp—Asia—Regional and Economic Geography Page 498.
Pearls Buck—'The Good Earth'.

भोजन मिट्टी, लकड़ी का बुरादा, भूसा, मूंगफली का छिलका, तथा पत्तियों का पिसा हुआ आटा और चाय के स्थान पर गर्म पानी (जिसमें नाम मात्र को भी चाय की पत्ती नहीं होती) होता है।

बहुत से विशेषज्ञों ने जनसंख्या के आधिक्य की समस्याओं को दूर करने के उपाय प्रकट किये थे, परन्तु कोई भी सफल दृष्टिगोचर नहीं हुए, उत्तरी क्षेत्र में कम वर्षा व बाढ़ के कारण कभी कभी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। लोगों ने मंगोलिया व मंचूरिया के क्षेत्रों की ओर संकेत किया, परन्तु वहाँ स्वयं ही उत्तरी मैदान के लोग आ बसे हैं। अब प्रश्न यह है कि आखिर जनसंख्या का आधिक्य क्यों तथा कैसे हुआ। सबसे प्रथम कारण यह है कि यहाँ के लोगों में एक ऐसा सामाजिक अन्ध विश्वास है, कि जिसके कारण वह लोग किसी हालत पर भी अपने पूर्वजों की भूमि को नहीं छोड़ सकते और न उनकी कही हुई बातों को ही टाल सकते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि कुछ चीनियों ने अपनी विचार धारा को परिवर्तित किया है और आधुनिकता को अपनाया है। ऐसे लोग* पूर्वी द्वीपसमूहों में या मलाया में भी जा बसे हैं, परन्तु फिर भी अपनी मातृभूमि से घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं, और जब कभी भी अवसर पाते हैं तुरन्त लौट आते हैं।

द्वितीय उपाय जो विशेष तौर पर उत्तरी क्षेत्र के लिये बतलाया गया है वह यह है कि बाढ़ को कन्ट्रोल किया जाय, सिंचाई के अच्छे साधन अपनाये जायें, वन लगाये जायें तथा उद्योगों की उन्नति की जाये। वास्तव में यह सब बातें उसी समय सम्भव हो सकती हैं, जब कि एक सफल सरकार स्थापित हो जाये। आजकल की सरकार जैसा कि आगे बतलाया गया है, इस विषय में बड़ा ध्यान दे रही है। तृतीय उपाय यहां के लोगों की शिक्षा है। शिक्षा का अभाव यहां प्रारम्भ से ही रहा है, यही कारण है कि लोग अन्ध-विश्वासों को मानते हैं और उन पर अटल रहते हैं। चीन की नवीन सरकार इस क्षेत्र में विशेष ध्यान दे रही है।

चीन को छोड़कर संसार में कदाचित् कोई ही ऐसा देश होगा, जहाँ इतने अधिक अकाल पड़ते हों। ऐसा कोई भी वर्ष नहीं जाता जबकि किसी न किसी प्रान्त में अकाल न पड़े। वर्षों से अकाल के कारण हजारों व लाखों मनुष्य

---

* Chinese of Canton are more forward, they have emancipated themselves from traditional ideas. But when they live in foreign land they retain a close connection with their homeland,' often return in their old age with riches accumulated there.
L. Dudley Stamp—Asia – A Regional and Economic Geography Page 501.

मौत के मुँह में जाते रहे हैं। उत्तरी चीन* एशिया में एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ प्रति वर्ष अकाल पड़ते हैं। उत्तरी चीन में सन् १६२०-२१ में ५० लाख व्यक्ति मारे गये तथा २०० लाख बेघर हो गये।

मि० मैलौरी ने अकाल के कारणों को चार श्रेणियों में विभाजित किया है, वह इस प्रकार हैं:—(क) प्राकृतिक (ख) आर्थिक (ग) राजनैतिक (घ) सामाजिक।

(क) प्राकृतकि कारणों में सर्वप्रथम वर्षा का एक सा न होना है, इसके पश्चात् टिड्डी दल का आक्रमण, वर्फ वर्षा, उष्ण कटिबन्धीय विनाशकारी चक्रवात (टाइफून) तथा भूकम्प इत्यादि हैं। (ख) यहां के लोगों की आर्थिक दशा के विषय में पहले ही बतलाया जा चुका है। खाद्य पदार्थों की कमी तथा अधिक जनसंख्या के घनत्व के कारण यहाँ के लोग निर्धन हैं, इन्हें यदि पेट भर खाना भी मिल जाता है तो ये अपने को बड़ा भाग्यशाली समझते हैं। (ग) सन् १६४६ तक चीन में कोई शक्तिशाली व स्थायी सरकार नहीं थी, राष्ट्र की दशा बड़ी शोचनीय थी, कोई भी विशेष शासन प्रबन्ध नहीं था। लेकिन अब जब से कि यहां जनतन्त्रात्मक गण-राज्य स्थापित हुआ है, पञ्चवर्षीय योजना बनाई गई है जिसके अन्तर्गत प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति की जाने की संभावना है। अब यदि यहाँ की राजनैतिक दशा में कुछ परिवर्तन होता है, तो निस्सन्देह राष्ट्र को बड़ी हानि उठानी पड़ेगी, (घ) सामाजिक त्रुटया भी कुछ ऐसी हैं, जो कि अकाल को प्रोत्साहन देती हैं। उदाहरणार्थ— उच्च जन्म-दर जिसके कारण बराबर जनसंख्या में वृद्धि हो रही है। लोग त्योहार व अन्य अन्ध-विश्वासों पर व्यर्थ ही बहुत सा धन खर्च कर देते हैं। बहुत सी भूमि कब्र व स्मारक बनाने में बरबाद कर दी जाती है। इसके अतिरिक्त यहाँ एक प्रथा यह भी है कि पिता की मृत्यु के पश्चात् खेतों का बंटवारा पुत्रों में कर दिया जाता है। इस प्रथा के कारण यहाँ के खेत इतने छोटे हो जाते हैं, कि उनमें कृषि पर्याप्त रूप से नहीं हो पाती।

इस बात को हम पहले बता चुके हैं, कि चीनी लोग अपने पूर्वजों की भूमि को आसानी से नहीं छोड़ते। यही कारण है कि ये लोग विदेशों में जाकर बहुत कम बसे हैं। ऐसे लोगों की कुल संख्या ७०,००००० है। यदि उन लोगों को भी सम्मिलित कर लिया जाय जिन्होंने विदेशी नागरिकता को अपना लिया है या अन्य जातियों के लोगों से विवाह करके मिश्रित हो गये हैं, तो यह संख्या ६०,००००० से भी अधिक हो जाती है। चीनी लोग अधिकतर पूर्वी द्वीपसमूह, स्याम, इण्डोचीन, मलाया तथा भारतवर्ष में पाये जाते हैं।

---

* Mr. Mallory mentions that between the years 108 B. C. & A.D. 1911, there are records of 1828 famines.

राष्ट्रीयता (Nationalism) :—

चीन के इतिहास का अध्ययन करने से हमें ज्ञात होता है कि इस देश को बहुत प्राचीन काल से कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। विदेशी जातियों के आक्रमण, भीषण अकाल व भूकम्प इत्यादि तो प्रति वर्ष आया ही करते थे। परन्तु इसके अतिरिक्त फ्रांस व ग्रेटब्रिटेन से युद्ध १८९४ में जापान से तथा १८९८ में जर्मनी से हुये। इसी वर्ष रूस ने भी पोर्ट आर्थर पर आतंक जमा लिया तथा वर्षों तक एक प्रकार का संघर्ष चलता रहा। बीसवीं शताब्दी में मंचू वंश का अन्त हुआ, विद्रोह हुये तथा क्रान्ति हुई, इसके पश्चात् १९३० में कुछ शान्ति हुई। द्वितीय महायुद्ध के समय से कम्युनिस्टों का प्रभाव पड़ना आरम्भ हो गया।

जो चीनी विद्यार्थी गण विदेशों को गये वे वहां से राष्ट्र के लिये एक नवीन विचार धारा लाये, लोगों के हृदय में राष्ट्रीयता की भावना न केवल इन लोगों के कारण बल्कि अन्य परिस्थितियों के कारण जाग्रत होने लगी। परिवर्तन प्रायः घृणा की दृष्टि से देखा जाता है, विशेष तौर पर पुराने विचार धारण करने वाले लोग विद्रोह करने लगते हैं। कुछ भी हो, चीन की दशा वास्तव में बड़ी शोचनीय थी। एक ही उपाय दृष्टिगोचर होता था और वह था, इन सब कठिनाइयों से छुटकारा। इतिहास में एक समय था, जब कि लोगों के हृदयों में विद्रोह की भावना थी। गुप्त रूप से विद्रोह के कई समाज (Boxers) बने हुये थे, बौद्ध धर्म के प्रचारक हर जगह गड़बड़ी फैला रहे थे, कुछ तो अपने चेहरे को भयानक बनाने के हेतु रंग* भी लगा लेते थे। वैसे तो ये लोग बड़े बगुला भगत बनते थे, परन्तु कार्य इनके इतने घृणास्पद थे, कि कोई भी सभ्य मनुष्य इनके प्रति प्रेम नहीं प्रकट कर सकता था। एक बात इन लोगों में अवश्य पाई जाती थी, वह थी राष्ट्रीय भावना। इसी भावना के अन्तर्गत इन्होंने एक बार ३०,००० ईसाइयों को मौतके घाट उतार दिया फरवरी १९१२ में इस मंचू वंश का अन्त हो गया और एक गण-राज्य सरकार की स्थापना हुई, जिसके प्रेसीडेण्ट (अध्यक्ष) सुन-यात-सेन थे। एक विधान सभा बनी और दूसरे ही वर्ष एक महान् नेता व सिपाही ने, जिसका नाम युआन-शि-काई था, राज्य की बागडोर अपने हाथ में ले ली। लेकिन फिर भी दशा में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ, चारों ओर वही विद्रोह व गड़बड़ी थी और आर्थिक

* Such Buddhist monks were known as 'Red Eyebrows' between 9 & 58 A. D. They wore White Lilies from 1260 to 1368 and Water Lilies in 1796 and Righteous Harmony Fists Society in the 20th century.

दशा भी बहुत ही गिरी हुई थी। इसके उपरान्त सन् १९२३ में एक जनरल को प्रेसीडेण्ट बना दिया गया। कुछ वर्षों तक शान्ति रही, फिर जब कि द्वितीय महायुद्ध प्रारम्भ हुआ, तो कम्युनिस्टों का प्रभाव दिन प्रति दिन बढ़ने लगा। वही दशायें पुन: दृष्टिगोचर होने लगीं। जिस समय सन् १९४९ में च्यांगकाई शेक की पार्टी को कम्युनिस्टों ने चीन से निकाल भगाया था, उस समय चीन में लगभग २ करोड़ एकड़ भूमि थी, और ४ करोड़ चीनी लोग, बाढ़ व सूखा से प्रभावित थे। ४००० मील रेलवे लाइन तथा २७०० पुल बरबाद थे, न केवल इतना ही, बल्कि ४००,००० चोर और उचक्कों के समूह थे, उद्योग तथा व्यापार बहुत ही अवनति की दशा में था।

चीन की सरकार जिसके प्रेसीडेण्ट माओ-सेतुंग हैं, उससे यह आशा की जाती है कि वह एक सफल सरकार होगी। कम्युनिस्टों ने चीनियों के हृदयों में एक नई राष्ट्रीय भावना उत्पन्न कर दी है। चीनी लोगों की विचार धारा भी धीरे धीरे परिवर्तित हो रही है। इस नई सरकार ने सन् १९५२ में एक पंचवर्षीय योजना बनाई। अब १९५६ में चीन अपनी पंचवर्षीय योजना के चतुर्थ वर्ष में प्रवेश कर चुका है। इस योजना में कृषि व उद्योग धन्धों पर विशेष ध्यान दिया गया है। यद्यपि ऋतुओं के कारण कृषि में कुछ हानि हुई, परन्तु फिर भी बाँध इत्यादि बना कर उसमें उल्लेखनीय उन्नति की गई है। आधुनिक मशीनों के प्रयोगों के अतिरिक्त उत्तम बीज व खाद्य का भी प्रयोग किया जाने लगा है। पहले चीन एक निर्धन देश था, मशीनें व मुख्य खनिज पदार्थ विदेशों से आयात किये जाते थे, परन्तु अब पंच-वर्षीय योजना के अन्तर्गत १४१ मुख्य कारखाने स्थापित किये जायेंगे। प्रत्येक प्रकार की मशीनों व उद्योगों में उन्नति करने की सम्भावना है। मोटर, रेलें, जहाज़ तथा पोत इत्यादि वस्तुओं का निर्माण चीनी व्यक्ति स्वयं करेंगे। जलशक्ति उत्पन्न करने के लिये स्थान भी चुन लिये गये हैं, कई नदियों पर बांध भी बना दिये गए हैं। उस ४००० मील लम्बी रेलवे लाइन तथा २७०० पुलों की मरम्मत हो चुकी है, जो कि च्यांगकाई शेक के समय नष्ट हो गये थे। यातायात के साधनों में निरन्तर उन्नति हो रही है। नौ नवीन रेलवे लाइनें बन चुकी हैं तथा अन्य बनाई जाने को हैं। पक्की सड़कें व नहरें भी बनाई जायेंगी। कुछ नये स्टीमर व पोत भी बनेंगे, जिससे आन्तरिक व्यापार को प्रोत्साहन मिलेगा। इसमें लगभग ३० प्रतिशत वृद्धि करने की योजना है। इस प्रकार से आशा की जाती है कि विदेशी व्यापार ३२ प्रतिशत बढ़ जायेगा।

वास्तव में चीन अब वह नहीं रहा जैसा कि पहले था, और कदाचित् चीनी भी वैसे नहीं रहे जैसे कि पहले थे। आर्थिक दशा में भी बराबर विकास हो रहा है। यहां के लोगों की आर्थिक दशा अब दिन प्रति दिन सुधर रही है। अब

प्रत्येक चीनी का ध्येय अधिक उत्पत्ति की ओर है, हां ! एक बात अवश्य है। वह यह कि ग्रामीण चीन में परिवर्तन कुछ धीरे ही होगा। यदि सम्पूर्ण चीन की आर्थिक दशा को ध्यान में रखते हुये देखा जाये, तो हम देखेंगे कि उद्योग धन्धों के विकास के कारण उत्पत्ति पहले की अपेक्षा अब बहुत अधिक बढ़ गई है। स्पात का उत्पादन १९५२ में १९४९ की अपेक्षा ९·४ गुना अधिक था, कच्चे लोहे का उत्पादन ७·५ गुना, सीमेंट ४·३ पेट्रोल ३·५ कोयला २, विद्युत शक्ति का १·८ गुना अधिक हो गया। यह तो हुआ भारी उद्योगों के विषय में, अब कुछ हल्के उद्योगों के विकास पर दृष्टि डालिये—कागज ३·३, कपड़ा २·८, आटा २·२, कपास २·२ शक्कर २, सिगरेट १·५ तथा दियासलाई १·३ गुनी अधिक बढ़ गई। इस प्रकार से आधुनिक उद्योग १९४९ में १७·४ प्रतिशत चीन के कुल उत्पादन (उद्योग तथा कृषि) का था। १९५२ में यह २७·८ प्रतिशत हो गया।

ऊपर दिये गये विवरण से यह स्पष्ट है, कि चीनी लोग कितने उत्साह से अपने देश की उन्नति में लगे हुए हैं। इनको देश से कितना प्रेम है, ये लोग कितने देशभक्त हैं। डा० क्रेसे का कहना है, कि चीनी हमेशा चीनी ही रहेगा चाहे कितना भी किसी दूसरी जाति का प्रभाव इस पर क्यों न पड़े। आजकल चीन एक विशेष अन्तर्राष्ट्रीय महत्ता रखने लगा है। अन्तर्राष्ट्रीय संघ में इसको स्थायी रूप से स्थान दिया गया है। समस्त एशिया में भारत को मिलाकर केवल दो ही ऐसे देश हैं, जो कि संसार में शान्ति स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। सन् १९५४ में चीन के प्रधान मन्त्री चाऊ-इन-लाई ने भारत के प्रधान मन्त्री पंडित नेहरू से देहली में, एशिया की शान्ति के सम्बन्ध में एक ऐतिहासिक वार्ता की। भविष्य में ऐसी आशा की जाती है, कि ये दोनों देश विश्व में शान्ति स्थापित करके समस्त एशिया के राष्ट्रों की राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक दशा को सुधारेंगे।

'आर्थिक रूप' (Economic Aspect)

प्राकृतिक वनस्पति (Natural Vegetation) :—

प्राकृतिक वनस्पति में चीन एक धनवान देश है। यद्यपि वनीय क्षेत्र तो यहां पर बहुत कम पाये जाते हैं परन्तु सदाबहार वनस्पति बहुत अधिक दृष्टिगोचर होती है। यह वनस्पति उन छोटी छोटी झाड़ियों व पौधों के रूप में पाई जाती हैं, जो कि विभिन्न प्रकार की हैं। यदि कोई व्यक्ति उत्तर में मंचूरिया की सीमा से दक्षिण में इन्डोचीन की सीमा तक भ्रमण करे, तो उसे प्रतीत होगा कि वनस्पति में परिवर्तन बहुत धीरे धीरे पाया जाता है। इसी कारण कुछ मध्य के क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की वनस्पति का मिश्रण इतना अधिक पाया जाता है, कि देख कर आश्चर्य

होता है। यदि कहीं पर बलूत के वृक्ष हैं तो कहीं पर बांस भी उग रहा है; यदि कहीं पर गेहूं व मक्का बोई गई है तो कहीं पर चावल, गन्ना व कपास भी उगाई जा रही है। साधारणतः बोई हुई वनस्पति का क्षेत्र इतना बढ़ रहा है कि वह जंगली वनस्पति के क्षेत्र में भी प्रवेश कर गया है। कुछ क्षेत्र तो ऐसे हैं, जिनमें कि जंगली वनस्पति कदापि दृष्टिगोचर नहीं होती। यहाँ केवल तरकारियाँ फल, गन्ना, कपास, पोप्पी, शहतूत, चावल, बांस तथा चाय के वृक्ष ही पाये जाते हैं।

प्राचीन समय से लोग यहां के वनों से प्राप्त की हुई लकड़ी को अपने अनेकों आर्थिक धन्धों में प्रयोग करते आये हैं। यही कारण है कि मुख्य वनीय क्षेत्र अब नहीं पाये जाते। जो कुछ भी वन हैं, वे या तो दक्षिण पूर्व के क्षेत्रों में हैं जहां अधिक वर्षा होती है और या मन्दिरों, गावों व बग़ीचों में, जहां अब भी वही वृक्ष पाये जाते हैं, जो कि वास्तविक हैं। वैसे, चीन को हम ऐसा नहीं कह सकते कि यह देश प्राकृतिक वनस्पति में निर्धन है। बल्कि कुछ स्थान तो ऐसे हैं जहां बहुत ही घने वन पाये जाते हैं। उत्तरी चीन में लगाये हुए वृक्ष यहाँ अधिक मिलते हैं, फ्यूकिन में वनों से ढके हुये विस्तृत क्षेत्र हैं, तथा दक्षिणी क्षेत्र में अधिक वर्षा वाले पर्वतीय ढाल वनों से ढके हुये हैं। यह भी सम्भव है, कि कुछ भागों में तो प्रारम्भ से ही घनी जनसंख्या के कारण प्राकृतिक वनस्पति नहीं उग पाई। उदाहरणार्थ दक्षिण में सिक्यांग नदी की घाटी, मध्य में याँगटिसीक्यांग की घाटी व डेल्टा तथा उत्तर में ह्वांगहो नदी का डेल्टा तथा पीला मैदान है। इन क्षेत्रों में जिस समय से नदियाँ मिट्टी डाल रही हैं, उस समय से जनसंख्या रहती चली आ रही है। इसी कारण यहां वन नहीं उग पाये।

डा० क्रेसे ने श्री जेम्स थोर्प के किये हुये प्राकृतिक वनस्पति के विभागों की बड़ी सराहना की है। श्री जेम्स थोर्प ने चीन की प्राकृतिक वनस्पति को निम्नलिखित दस श्रेणियों में विभाजित किया है।*

चीन के वनस्पति-विभाग :—

(१) बोये हुये नदियों के मैदान

(२) [illegible]

(क) केवल रेत

(ख) नमक सहन करने वाले पौधे

(ग) ज़ीरोफिटिक या कांटेदार पौधे

---

* Throp James, "Geography and the Soils of China" Nanking National Geological Survey (1936).

(३) स्टेप्स वाले घास के मैदान
(क) छोटी घास वाले स्टेप्स
(ख) लम्बी घास वाले स्टेप्स
(i) लम्बी व छोटी घास (मिश्रित)
(ii) मिश्रित घास तथा कहीं कहीं पर वनीय क्षेत्र
(४) अर्द्ध-शुष्क झाड़ियां
(५) शुष्क पर्वतीय वनस्पति
(६) पठारी वन
(क) मंगोलिया की सीमा के पठारी क्षेत्र के पतझड़ वाले नुकीली पत्ती वाले तथा शुष्क वन
(ख) मध्य पठारी भाग के पतझड़ वाले, नुकीली पत्ती वाले, नम प्रकार के वन
(ग) दक्षिण-पश्चिम के नुकीली पत्ती वाले एवं पतझड़ वाले नम प्रकार के घने वन
(७) ज़ैचवान के निचले भागों की वनस्पति
(८) उच्च पर्वतीय वनस्पति
(९) समउष्ण कटिबन्धीय वन
(१०) उष्ण कटिबन्धीय चौड़ी पत्ती वाले वन

(१) बोये हुये नदियों के मैदान :—प्राय: नदियों की घाटियों में बाढ़ के कारण प्रति वर्ष नवीन मिट्टी जमा होती रहती है। इसलिये प्राकृतिक वनस्पति नहीं उग पाती। पश्चिमी नदियां, यॉंगटिसीक्यॉंग, व्हाई तथा ह्वांग-हो कुछ ऐसी ही नदियां हैं। उत्तरी पाइन, पोपलर तथा विलोज उन स्थानों पर हैं जहां गांव या क़ब्रिस्तान हैं। विलोज़ व पोपलर नदियों व नहरों के दोनों तटों पर दूर दूर तक लगे हुये हैं। मध्य व दक्षिण में विभिन्न प्रकार की वनस्पति पाई जाती है। मध्य की झीलों वाले क्षेत्र में तथा यांगटिसीक्यांग के डेल्टे के भागों में अधिकतर रीड नाम के वृक्ष मिलते हैं।

(२) मरुभूमिय वनस्पति :—(क) गोबी व शामो के रेगिस्तान में रेत कम पाया जाता है। तकलामकन रेगिस्तान ही एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ सबसे अधिक रेत दृष्टिगोचर होता है। शेष भाग पथरीला है, जहां कहीं भी थोड़ा सा जल प्राप्त हो जाता है, वहां झाऊ के वृक्ष (Tamarisk) उग आते हैं। वैसे स्थान स्थान पर भूमि के अनुसार कुछ न कुछ वनस्पति उग ही आती है।

(ख) नमक सहन करने वाले पौधे ऐसी भूमि में उगते हैं जिसकी खारी व नमकीन चट्टानें हैं। ऐसे क्षेत्र कहीं कहीं पर ही पाये जाते हैं। कुछ तो अर्द्ध शुष्क

भागों में मरुस्थली में अधिक दृष्टिगोचर होते हैं, तथा कुछ समुद्री तट पर होपी से शंघाई के दक्षिण-पूर्व तक विस्तृत हैं, इन भागों में 'हलोफाइट' नमक चाहने वाली वनस्पति उगती है।

(ग गोबी, तकलामन तथा अन्य उत्तर-पश्चिम के रेगिस्तानों में प्राय: सूखी कांटेदार झाड़ियाँ ही दृष्टिगोचर होतीं हैं। लेकिन कहीं कहीं पर झाड़ियां छोटी छोटी घास तथा अन्य फूलों वाले पेड़ पौधे भी उग आया करते हैं। ये अधिकतर ग्रीष्म ऋतु की वर्षा में उगते हैं तथा शुष्क ऋतु में ओझल हो जाते हैं।

(३) स्टेप्स वाले घास के मैदान :— (क) छोटी छोटी घास वाले स्टेप्स आन्तरिक मंगोलिया के चाहार प्रान्त तथा उत्तरी-पश्चिमी सुय्यान में मिलते हैं, परन्तु तिब्बत, सीक्यांग व मंगोलिया के बाहरी भागों में भी ये दृष्टिगोचर होते हैं। चीन के उत्तरी-पश्चिमी भाग से ज्यों ज्यों हम दक्षिणी-पश्चिमी भाग की ओर आयेंगे, हमको वर्षा अधिक मिलती जायेगी। इसके फलस्वरूप चरागाह भी दूर तक फैले हुये मिलते हैं। उत्तर-पश्चिम में जहां वर्षा कम होती है वहां कहीं कहीं पर ही घास उगती है। उन नम भागों में जहां मिट्टी में खारीपन बहुत कम मिलता है काफी ऊंची घास उग आती है। इनमें बहुत से फूलों वाले वृक्ष व झाड़ियां भी होती हैं।

(ख) उच्च घास वाले स्टेप्स, छोटी घास वाले आन्तरिक मंगोलिया के क्षेत्र के दक्षिण-पूर्व की ओर ही पाये जाते हैं। घास के अतिरिक्त इन भागों में फूलों वाले पौधे, झाड़ियाँ तथा विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ होतीं हैं। ऊंचाई के अनुसार भी कुछ वनस्पति में परिवर्तन पाये जाते हैं। उदाहरणार्थ पर्वतीय ढालों पर पाइन व ऐम के वृक्ष कहीं कहीं मिलते थे। परन्तु ये बहुत समय हुआ तब ही काट लिए गये, अब बहुत कम दृष्टिगोचर होते हैं। पूर्वी चिंघाई तथा कान्सू के प्रान्त ऐसे हैं जिनमें मिश्रित घास मिलती है। कोकोनोर उल्लेखनीय स्थान है, जो इस प्रकार के मिश्रण के लिये प्रसिद्ध है, और दक्षिण की ओर मैदान में तथा ढालों पर लम्बी व छोटी दोनों प्रकार की घास पाई जाती है। उत्तर के ढालों पर फर व स्प्रूस के वृक्ष कहीं कहीं पर दृष्टिगोचर हो जाते हैं।

(४) अर्द्ध शुष्क झाड़ियां :—शेन्शी व कान्सू प्रान्तों में लोयेस की मिट्टी जो वनस्पति उगती है, वह अर्द्ध शुष्क घास तथा झाड़ियाँ ही हैं। कुछ उपजाऊ मिट्टी वाले क्षेत्रों में तो अति प्राचीन काल से कृषि की जा रही है। पर्वतीय ढालों पर मिश्रित काँटेदार झाड़ियाँ तथा ऊँची-नीची घास प्राय: उगा करती हैं। मन्दिरों के चारों ओर वृक्ष पाये जाते हैं। पेगोडा, पोपलर, पाइन तथा सडार नाम के वृक्ष यहाँ अधिकतर मिलते हैं। इन वृक्षों से ऐसा प्रतीत होता है कि लोयेस की पहाड़ियाँ प्राचीन समय में वनों से ढकी रही होंगी। परन्तु

मन्दिरों के स्थान पर जो वृक्ष होते हैं वे लगाये जाते हैं।

इस क्षेत्र में कुछ ऐसे भी स्थान हैं, जिनकी ऊंचाई लायेस की ऊंचाई से अधिक है। इन उच्च स्थानों पर पहले घने नुकीली पत्ती वाले व पतझड़ वाले वन थे। इन वनों के चिन्ह अब भी कहीं कहीं पर दृष्टिगोचर होते हैं। नदियों की घाटियों में पोपलर (Poplars) के कुँज पाये जाते हैं। जिन भागों में सिंचाई का प्रबन्ध है, वहां ये शीघ्र उग आते हैं। विलोज़ (Willows) नदियों के मैदानों में बलुई भूमि में लगाये जाते हैं। इनसे लकड़ी प्राप्त होने के अलावा नदी का प्रवाह भी एक सा रहता है। पश्चिमी चीन में उन पर्वतीय ढालों पर जिन पर कि सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं तथा उन पर जिन पर कि प्रकाश नहीं पहुंचता, वनस्पति भिन्न प्रकार की पाई जाती है। प्राय: ऐसा देखा जाता है कि यदि प्रकाश वाले ढालों पर छोटी छोटी घास उत्पन्न होती है, तो छायेदार ढालों पर लम्बी घास उत्पन्न होगी, और इसके विपरीत यदि प्रकाश वाले ढालों पर लम्बी घास उत्पन्न हो तो छायेदार ढालों पर छोटी घास।

(५) शुष्क पर्वतीय वनस्पति, जिसमें कि वृक्ष व घास दोनों ही मिश्रित होते हैं, अधिकतर चिंघाई, उत्तरी-पश्चिमी कान्सू तथा उत्तरी सिकाँग में मिलती है। घाटियाँ व निचले पर्वतीय ढाल हरी हरी घास से ढके हुए हैं। पर्वत व घाटियां भी कुछ स्थानों पर मिश्रित घास से ढके हुए हैं। पर्वतों पर १०,००० फीट की ऊंचाई पर कम प्रकाश वाले ढालों के वन मिलते हैं, जिनमें पोपलर, स्प्रूस व फ़र के वृक्ष अधिकता से होते हैं। इसके भी ऊपर लगभग १४,००० फीट की ऊंचाई पर प्रकाश वाले ढालों पर अलपाइन वनस्पति, जिसमें छोटी-छोटी घास व फूलों के पौधे होते हैं, पाई जाती हैं। कुनलुन पर्वत श्रेणी, ह्वांगहो नदी के उच्च क्षेत्र इत्यादि कुछ ऐसे भाग हैं, जिनका धरातल केवल नग्न चट्टानों के ही रूप में है।

(६) पटारी वनों में अधिकतर नुकीली पत्ती वाले व पतझड़ वाले मिश्रित वृक्ष मिलते हैं। ये अधिकतर मंगोलिया के किनारे के उच्च भागों में पाये जाते हैं। आजकल ये क्षेत्र घास से ढकी हुई पहाड़ियां हैं या नग्न पर्वतीय क्षेत्र हैं जिनमें कहीं कहीं पर वन मिलते हैं। वृक्षों में मुख्य ओक, ऐम, चेस्टनट, मेपिल तथा अन्य नुकीली पत्ती वाले उदाहरणार्थ पाइन व ज्यूनियर आदि मिलते हैं। हरी-हरी घास के साथ जुजुबी (Jujube) के वृक्ष भी दृष्टिगोचर होते हैं।

निचली पहाड़ियों व एल्यूवियल फैन की गहरी मिट्टी पर पतझड़ वाले वृक्ष पाये जाते हैं। मिट्टी की पतली पर्त पर पाइन के वृक्ष उगते हैं। वैसे ये पाइन के वृक्ष जगह-जगह पर लगाये भी जाते हैं।

घाटियों में पोपलर्स, विलोज़, लोकस्ट तथा ऐम इसलिए लगा दिये गये हैं

जिससे कि लकड़ी प्राप्त हो सके तथा मिट्टी का कटाव अधिक न हो सके। कुछ कुंजों का तो पुन: निर्माण कर लिया जाता है तथा उनमें अर्द्ध प्राकृतिक वनस्पति उग आती है।

मध्य की उच्च भूमि पर पहले वन थे, परन्तु अब मनुष्य रहने लगे हैं। सिगलिंग पर्वत श्रेणियों तथा होबरन प्रान्त में जो चिन्ह मिलते हैं, उनसे प्रतीत होता है, कि यहां पर पहले मंगोलिया की सीमा की वनस्पति से भी अधिक घनी पतझड़ वाली वनस्पति पाई जाती थी। दक्षिण में कहीं-कहीं पर चौड़ी पत्ती वाले सदाबहार वृक्ष मिलते हैं। पतली पर्त वाली पर्वतीय, व खारी मिट्टी पर पाइन के वृक्ष पाये जाते हैं। लगभग सभी वास्तविक बन साफ कर दिये गये हैं। परन्तु उत्तम मिट्टी पर नई वनस्पति तुरन्त ही उग आती है। ऐन्वी होनान प्रान्त में वनों के बजाय घास उग आती है और लोग उसे ही ईंधन के तौर पर प्रयोग करते हैं। ईंधन एकत्र करने वाले व्यक्ति वृक्ष का न केवल ऊपरी हिस्सा ही काटते हैं, बल्कि जड़ों तक को साफ कर देते हैं।

घने नुकीली पत्ती वाले व पतझड़ वाले वन अधिकतर दक्षिणी-पश्चिमी पर्वतीय उच्च-भूमि, ज़ैचवान मैदान के चारों ओर के पर्वत, पूर्वी क्यांगसी तथा पश्चिमी फ्यूकीन के पर्वतों पर पाये जाते हैं। दक्षिण के अन्य पर्वतों में बहुत कम ऐसे क्षेत्र हैं, जहाँ ऐसे बन पाये जाते हों। वनस्पति विशेषतौर पर अधिक वर्षा व नमी पर आधारित है। ज़ैचवान-ह्यूपी-शेन्शी की सीमा के तापा पर्वतीय क्षेत्र, तथा यांगटिसी क्यांग के दक्षिणी पर्वतीय क्षेत्रों में वास्तविक वन दृष्टिगोचर होते हैं। इनमें मुख्य वृक्ष स्प्रूस, फर, हेमलोक इत्यादि उच्च पर्वतों पर तथा पतझड़ वाले ओक, चेस्टनट व स्वीटगम, निचले ढालों पर दृष्टिगोचर होते हैं। क्वीचो की पहाड़ियों पर के बहुत से बन साफ कर दिये गये हैं, और अब उन स्थानों पर ऊंची-ऊंची घास ही उगती है। सदाबहार चौड़ी, मोटी, चमकीली व गहरे पत्ती वाले वृक्ष दक्षिण में पाये जाते हैं। मन्दिरों के चारों ओर भी कुछ वृक्ष मिलते हैं।

(७) ज़ैचवान के निचले भागों में जो वनस्पति मिलती है, उसमें पाइन, बाँस व साइप्रस के वृक्ष ही अधिक होते हैं। लगभग सभी घाटियां व पहाड़ियाँ बोई हुई फसलों के लिये प्रयोग की जाती है। कहीं-कहीं पर पाइन व साइप्रस के बन लगा दिये गये हैं। उच्च पहाड़ियों पर बहुत से पतझड़ वाले वृक्ष पाइन वृक्षों के साथ मिश्रित हैं। किसी-किसी स्थान पर ओक के वृक्ष भी पाये जाते हैं। इस क्षेत्र के पश्चिम में नानम् चौड़ी पत्ती वाले सदाबहार प्रकार के वृक्ष उगते हैं। कुछ खजूर की भी किस्में मिलती हैं। ज़ैचवान में एक बहुत ही महत्वपूर्ण वृक्ष बरगद का होता है। यह बहुत प्राचीन काल से यहां उग रहा है। यह चौड़ी

पत्ती वाला सदाबहार वृक्ष है। इसकी महत्ता धार्मिक दृष्टिकोण से बहुत अधिक है।

(८) उच्च पर्वतीय वनस्पतियों वाले क्षेत्र अधिकतर ज़ैचवान मैदानी भाग व तिब्बत की सीमा पर पाये जाते हैं। मित नदी की घाटी व पश्चिमी ज़ैचवान ऊंची पहाड़ियों पर नुकीली पत्ती वाले वन मिलते हैं। और उत्तर-पश्चिम में घास दक्षिणी ढालों पर, तथा नुकीली पत्ती वाले वन उत्तरी ढालों पर दृष्टिगोचर होते हैं। गहरी घाटियाँ या तो नंगी हैं और या स्प्रूस, फर तथा पाइन से ढकी हुई हैं।

(९) सम उष्णकटिबन्धीय बनों में सदाबहार चौड़ी पत्ती वाले वृक्ष मिलते हैं। पाइन, फर, बांस बहुत बड़ी मात्रा में यांगटिसीक्यांग नदी के दक्षिण में उत्पन्न होते हैं। अपनी वास्तविक दशा में ये दूर कम घने क्षेत्रों में या पवित्र पर्वतों पर पाये जाते हैं। अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ पर पतझड़ व नुकीली पत्ती वाले या मिश्रित वन मिलते थे। लाल व पीली मिट्टी पर पाइन व बलूत के वृक्ष पाए जाते हैं।

आजकल इन भागों में बहुत ही आधुनिक ढंग से फर तथा बाँस लगाये जाते हैं, और साथ ही साथ सदाबहार चौड़ी पत्ती वाले तथा पाइन के वृक्ष भी उत्पन्न किये जाते हैं। निचली पहाड़ियों के ढ़ालों को ईंधन के हेतु साफ कर डाला गया है।

कुछ भागों में तो ऐसी प्रथा चल रही है, कि प्रति वर्ष घास में आग लगा दी जाती है। चिकियाँग व फ्यूकिन प्रान्तों में इन घासों व पौधों की जड़ों से वनस्पति पुनः उग आती है। बुरी मिट्टी पर तो यह जलाने के पश्चात् कदापि नष्ट हो जाते हैं। मध्य व दक्षिणी क्वाँग्सी इस प्रकार बिल्कुल ही साफ कर दिये गये हैं। कहीं-कहीं पर घास व फर्न भी उगते हैं। लाल मिट्टी दक्षिणी चीन में, जो क्वाटंग व क्वाँगसी प्रान्तों में पाई जाती है। उसमें, प्रायः भद्दे फर्न उग आया करते हैं।

कब्रिस्तानों में घनी पत्तियों वाले वृक्ष उगाये जाते हैं। इनमें कपूर व गोंद मुख्य हैं। शताब्दियों से कपूर गाँव के चारों ओर भी लगाया जाता है। क्वाँगसी व होनान के कपूर के वृक्ष बहुत ही प्रसिद्ध हैं।

इस समय उष्ण कटिबन्धीय बनस्पति की उत्तरी सीमा उन स्थानों तक है जहाँ खजूर व अन्य रसदार फल उत्पन्न होते हैं।

(१०) उष्ण कटिबन्धीय चौड़ी पत्ती वाले वन केवल दक्षिण की ओर ही पाये जाते हैं। ये चौड़ी पत्ती वाले बन पतझड़, सदाबहार, बाँस व पाइन इत्यादि

के मिश्रण हैं और दक्षिणी-पूर्वी तट पर हैनान के प्रान्त में अधिक मिलते हैं। लाल मिट्टी तथा पर्वतीय ढालों पर पाइन वृक्ष ही अधिक मिलते हैं। टूटी हुई पहाड़ियों पर घास व फर्न दृष्टिगोचर होते हैं। कुछ स्थानों पर रसदार फलों वाले वृक्ष-गन्ना, केला तथा अन्य फल चावल की कृषि के साथ उत्पन्न किये जाते हैं। क्वाटंग व क्वाँगसी के क्षेत्रों में विशेष वृक्ष तथा बाँस उगाये जाते हैं।

कुछ दक्षिण व दक्षिण-पूर्व के बनों के उष्णकटिबन्धीय क्षेत्रों में सेल्वा (Selva) उत्पन्न होता है। ऐसे बनों में चौड़ी पत्ती वाले घने वृक्ष पाये जाते हैं। इनकी पत्तियाँ इतनी घनी होती हैं, कि प्रकाश धरातल तक भली भाँति नहीं पहुँच पाता है।

कृषि (Agriculture) :—

चीन प्रारम्भ से ही एक कृषि प्रधान देश रहा है और अब भी यहा के लोगों का यह एक मुख्य धन्धा है। वर्तमान चीन के भाग्य का निर्णय वह मनुष्य नहीं करता जो कि सड़कों पर फिरता है, बल्कि वह करता है, जो कि कृषक है। सच तो यह है, कि इनकी संस्कृति का आधार मिट्टी ही है। जितना घनिष्ठ सम्बन्ध इन लोगों का प्रकृति से रहा है, उतना कदाचित् किसी भी अन्य मानव जाति का नहीं रहा। वास्तव में यहाँ की ८० प्रतिशत जनसंख्या का व्यवसाय कृषि करना ही है।× इन लोगों की नींव यहाँ की भूमि में बहुत गहरी है, क्योंकि पाँच हजार वर्ष पूर्व से ही इनके पूर्वज इसी भूमि पर कृषि करते आये हैं। लोगों ने यहाँ की एक एक इञ्च भूमि तक का प्रयोग किया। वैसे, चीन एक पर्वतीय देश है तथा यहां समतल भूमि का अभाव है। सम्पूर्ण क्षेत्र+ का लगभग ६४ प्रतिशत भाग पर्वतीय, पहाड़ी व पठारी है, २६ प्रतिशत मैदानों व घाटियों से घिरा हुआ है, तथा १० प्रतिशत में स्टेप्स व नखलिस्तान हैं। बहुत अधिक जनसंख्या के कारण मैदानों व घाटियों में घनत्व इतना अधिक है, कि विश्व में इनका कोई उदाहरण नहीं है। नदियों की घाटियों व अन्य समतल भागों में कई स्थान ऐसे भी हैं, जिनकी मिट्टी उपजाऊ नहीं है। इस प्रकार से कृषि करने योग्य भूमि की तो और भी अधिक कमी है। कुछ सामाजिक प्रथाओं के कारण उत्तम भूमि मन्दिर, मस्जिद व कब्रिस्तानों के लिये दे दी जाती है। मिट्टी पर इतना अधिक दबाव है कि देख कर आश्चर्य होता है।* एक औसत चीनी खेत पर ६·२ मनुष्य रहते हैं, जिसके पास केवल ४·२ एकड़ भूमि होती है।

× The distribution of farm tenancy in 1946 was; —Owners 40% ; tenants 35%

+ Total arable land in China is estimated at about 192,062 Sq. miles.

* Dr. G. B. Cressey...Asia's Lands and its Peoples Page 86.

यदि हम संयुक्त राज्य अमरीका से इसकी तुलना करें, तो देखेंगे कि एक फार्म पर वहां ४·२ मनुष्य हैं तथा प्रत्येक फार्म के पास १५५ एकड़ क्षेत्र हैं। सन् १९५३ में यहाँ २३४० स्टेट फार्म थे, १९५४ में ९५,००० कृषि-सहकारितायें थीं, इनमें १,७००,००० मेम्बर सम्मिलित थे।

चीनी कृषक (Chinese Peasants) :—

यदि हम चीन व चीनियों को जानने की इच्छा करें, तो हमारे लिये यह आवश्यक होगा कि पहले हम चीनी कृषकों के विषय में कुछ जानें। चीनी किसान एक साधारण व्यक्ति होता है। उसे लोग हान, चेन, सन या किसी अन्य नाम से पुकारते हैं। लोग उसका सम्मान करते हैं, उसका पिछला नाम प्रारम्भ में लिया जाता है। 'सन' और 'मस्टर' उन लोगों के नाम के आगे लगाया जाता है, जो कि उन ३०० लाख व्यक्तियों में से है, जो यांगटिसीक्यांग नदी की घाटी में रहते हैं। प्रत्येक 'सन' के पास छै मौं० (एक एकड़) भूमि होती है। यही उसके परिवार व पूर्वजों की भूमि है, यहीं वह जन्म लेता है तथा यहीं पर वह परलोक सिधारता है। उसकी माँ, स्त्री तथा तीन बच्चे केवल इतनी भूमि पर ही जीवन निर्वाह करते हैं। वास्तव में उसके रहने की दशायें दिन प्रति दिन गिरती ही जाती हैं। वर्ष भर उसका भोजन चावल या अन्य निम्न श्रेणी का अनाज है। कुछ लोग जो कि भूमि का भाड़ा तक नहीं दे सकते हैं, उन्हें अपने जीवजन्तु गाय तक बेचने पड़ जाते हैं। इस प्रकार से जब पशु उनके हाथ से निकल जाते हैं, तब वे श्रमिकों के रूप में अन्य धनवान किसानों के सम्मुख उपस्थित होते हैं। कभी कभी परिस्थितियाँ उनको आत्महत्या तक करने पर बाध्य कर देती हैं। कुछ अपनी जन्मभूमि को छोड़ कर दर-दर ठोकरें खाते फिरते हैं, अथवा दूसरों का मुंह ताकते हैं। मध्यम श्रेणी के किसान भी अधिक कर के कारण परेशान रहते हैं। दामों के हेर-फेर के कारण उनका दिवाला निकल जाता है और या तो निर्धन किसान हो जाते हैं या श्रमिक।

आखिर इस निर्धनता के क्या कारण हैं? हम बतला चुके हैं कि इसके कई कारण हैं। उदाहरणार्थ—राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक, परन्तु इनके अतिरिक्त भौतिक कारण सब से प्रमुख हैं। भूकम्प आना, झंझावातों का टकराना, वर्षा का न होना, नदियों का उमड़ना तथा तूफानों का आना इत्यादि भौतिक कारणों में ही सम्मिलित हैं। इनके कारण प्रतिवर्ष लाखों व करोड़ों व्यक्ति निर्धन हो जाते हैं या मौत की गोद में सो जाते हैं। राजनैतिक समस्या प्रारम्भ से ही बड़ी शोचनीय दशा में रही है, जापान व रूस से तो प्रायः युद्ध ही होता रहा है। लेकिन साथ ही कोई भी सफल केन्द्रीय सरकार स्थापित न हो सकी। आर्थिक

दशा के विषय में इतना कहना पर्याप्त होगा कि कृषि सम्बन्धी उपजों की कमी, खनिज पदार्थों व औद्योगिक वस्तुओं के अभाव के कारण भी यह निर्धनता है। सामाजिक व धार्मिक कुरीतियाँ इतनी खराब हैं कि सभ्य मनुष्य तो इन्हें घृणा की दृष्टि से देखते हैं। किसी सीमा तक ये भी निर्धनता के कारण हैं।

चेन हन-सेंग ने कृषकों के क्षेत्रों को तीन भागों में विभाजित किया है। (१) पश्चिमी सीमा-प्रदेश २) उत्तरी (३) दक्षिणी

(१) पश्चिमी सीमा प्रदेश के कृषक :—इस क्षेत्र में किसानों के परिवार को निजी भूमि रखने का कोई अधिकार नहीं है, बल्कि किसान एक दीन श्रमिक होता है, जिसको दबाव डाल कर रखा जा सकता है। वास्तव में स्थानीय शासक भूमि का मालिक होता है। जनसंख्या के अभाव के कारण यहाँ श्रमिक बलपूर्वक रखा जाता है। उदाहरण के लिये हम सीक्यांग प्रान्त को ले सकते हैं। यहाँ पर प्रति वर्गमील में सात व्यक्ति रहते हैं। कुल जनसंख्या लगभग १,२००,००० है। ये लोग चार श्रेणियों में विभाजित हैं। पहली सीपा (Tsepa) लोगों की है। इस शब्द का अर्थ है 'राज्य के कर्मचारी'। ये लोग अपने मालिकों से भूमि कृषि करने के हेतु पाते हैं, वह एक प्रकार से वंश परम्परागत किरायेदार हो जाता है, फसल पर इसका पूरा आतंक रहता है। कुल उत्पादन का १/१० भाग मालिक को दे देना पड़ता है। इनकी कुल संख्या सम्पूर्ण जनसंख्या की ७० प्रतिशत है। दूसरी किपा (Kepa) है, ये लोग सीपा से कुछ भूमि प्राप्त करते हैं, केवल एक वर्ष रखने का अधिकार इन्हें रहता है। इसका किराया भी इन्हें देना होता है। इनका फसल पर वैसे तो पूरा अधिकार रहता है, लेकिन सीपा लोगों को प्रत्येक कार्य करने होते हैं। इनकी संख्या २० प्रतिशत है। तीसरी श्रेणी लता (Lata) लोगों की है। इस शब्द का अर्थ है, परमात्मा के लोग, जो अधिकतर तिब्बत की सीमा पर मिलते हैं। ये लोग लामा तथा अन्य बड़े लोगों के दास होते हैं। चौथे लोग तन्तू (Tantu) हैं। ये वह लोग हैं जो कि गाँव के बाहर के हैं। ये वास्तव में किराये पर रखे हुये कृषक श्रमिक हैं, इनको वेतन खाने-कपड़ों के रूप में दे दिया जाता है। कुछ लोग तो घरेलू उद्योगों में लग गये हैं। लता लोगों की संख्या ८ प्रतिशत है तथा तन्तू लोगों की संख्या केवल २ प्रतिशत है।

इसी सीमा के अन्य क्षेत्रों में किसानों को जीव जन्तुओं की भांति काम कम करना पड़ता है। ऐसे क्षेत्रों में किसान अपने मालिक के यहाँ केवल पाँच दिन कार्य करते हैं। लेकिन किराया उसे बराबर देना पड़ता है। इस कुप्रथा के कारण किसानों के रहन-सहन का स्तर बहुत ही अधिक शोचनीय हो गया है। वास्तव में देखा जाय तो पश्चिमी सीमा प्रदेश के कृषकों का आर्थिक व सांस्कृतिक आधार इतना गिरा हुआ है, कि स्थानीय व्यापार भी बाहरी लोग संभालते हैं।

प्राचीन समय में पश्चिमी व पूर्वी देशों से जो व्यापार होता था, वह सिकांग होकर ही होता था, और अन्य कुशल चीनी ही संभालते थे। आज कल भी यहां का बाजार अन्य लोगों के हाथों में है। यहाँ के किसान इन बाहरी लोगों से अपनी आवश्यकता की वस्तुयें जैसे चाय, कपड़ा, मसाले, पीतल व ताँबे की वस्तुयें क्रय करते हैं। परन्तु खेद इस बात का है, कि यहाँ के किसान जो अपने यहाँ की वस्तुयें बाहरी लोगों को बेचते हैं, जैसे फर, खाल, टिम्बर, जड़ी बूटियां तथा अफीम इत्यादि, उनके दाम कभी भी अच्छे नहीं मिलते।

पश्चिमी सीमा प्रदेश के किसानों की प्रमुख समस्या यह है कि ये लोग जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी इस कुप्रथा को छोड़ कर भूमि को अपनाने की प्रथा प्रारम्भ कर दें। जब सभी किसानों के पास थोड़ी बहुत भूमि होगी, तभी उसको स्वतन्त्रता भी मिलेगी, अन्यथा नहीं। उत्पत्ति भी उसी समय बढ़ेगी जब इनके पास स्वयं की भूमि होगी, साथ ही इन पर विदेशी लोगों के व्यापार का भी कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

उत्तरी कृषक :—उत्तरी चीन का एक साधारण कृषक एक निर्धन व्यक्ति है, जिसके पास बहुत थोड़ी भूमि होती है। कुल भूमि का क्षेत्रफल दस या पन्द्रह मो (Mow) होता है, कृषक के परिवार के पालन पोषण के लिये इतनी ही भूमि और होनी चाहिये। इस निर्धन किसान की भूमि का केवल चौथाई भाग ही सिंच पाता है। श्रमिकों की कमी के कारण श्रम बहुत महँगा रहता है, उसे मजबूर होकर गदहे या घोड़े रखना पड़ते हैं, जिसका व्यय इतना आता है कि कुल फसल की आय का १५ प्रतिशत होता है।

उत्तरी चीन में १९३७ से १९४५ तक दो प्रकार के शासन रहे थे। पहला जापानी तथा दूसरा स्थानीय लोगों का शासन। इन शासनों में किसानों की दशाओं में बड़ा हेर-फेर हुआ है। जापानी शासन में किसानों की दशा बड़ी शोचनीय हो गई थी। उदाहरण के लिये शेन्शी प्रान्त के दो ग्रामीण क्षेत्रों को ले सकते है। टंगसन गांव में जापानियों ने ७०० मो भूमि सेना के लिये ले रखी थी। किसानों को उस पर २० दिन तक प्रत्येक महीने कार्य करना पड़ता था। प्रति-दिन ३० कृषक जापानियों के लिये कार्य करते थे। कर इतना अधिक था, कि वह कृषि-आय का ६० प्रतिशत होता था। कुछ लोगों को तो कर देने के हेतु अपनी भूमि तक बेचनी पड़ती थी। इस प्रकार से इस क्षेत्र की सम्पूर्ण उत्पत्ति बहुत गिर गई। ताइयूआन एक दूसरा गांव इसी प्रान्त में है, जहां जापानियों ने गेहूं नष्ट करा कर चावल उत्पन्न कराना प्रारम्भ कराना चाहा, किन्तु लोगों ने मना कर दिया। इस पर इन लोगों ने २३ गांवों में बलपूर्वक इस कार्य को कराया और

प्रत्येक मौ से ३५० पौंड चावल लेना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार चावल एक ऐसी वस्तु हो गई, जो कि युद्ध के हेतु उत्पन्न की जाने लगी। न केवल इतना ही बल्कि इनकी हालत और भी अधिक खराब की गई।

द्वितीय प्रकार के शासन में किसानों की दशा अच्छी थी। यहां पर किसानों को दो प्रमुख सुविधायें थीं। पहली, कर, किराया व ब्याज की दर में विशेष कमी तथा दूसरी, कृषि सहकारिता जिसका दूसरा नाम 'लेबर एक्सचेंज ग्रुप्स' था। कर इस ढंग से लगाया जाता था कि जैसे जैसे आय बढ़े उसकी दर भी बढ़ती जाय। इसमें कृषकों को बड़ी सुविधा रहती थी। जिनकी आय १५० पौंड से कम होती थी, उन पर से कर तुरन्त हटा लिया जाता था। निर्धन व्यक्ति अपनी आय का तीन प्रतिशत, मध्यम किसान १० प्रतिशत तथा धनवान १६ प्रतिशत और वह जो कि जमींदार थे ३० प्रतिशत देते थे। ठीक इसी प्रकार से किराये व ब्याज की दर में भी विशेष नम्रता थी। किसानों को बहुत थोड़े ब्याज पर रुपया मिल जाता था और वे इस प्रकार अपने आवश्यक कार्यों को पूरा कर लेते थे।

दक्षिणी कृषक :—दक्षिण में किसान साधारणतः एक किरायेदार होता है, जो कि अपने जमींदान से भूमि किराये पर ले लेता है। इस क्षेत्र में जमींदार ही सब कुछ है, परन्तु कोई भी खेतों पर कार्य नहीं करता और न यहाँ के किसान धनी बनना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति यही चाहता है, कि जितनी हो सके उतनी भूमि किराये पर दे दी जाय। इसका कारण यह है कि किराये से जो आय है, वह सुरक्षित है तथा फसल की आय से अधिक है। सन् १९३० में दक्षिणी चीन के वूसीह (Wusih) जिले से धनी किसानों ने कुल भूमि का केवल १८ प्रतिशत कृषि में प्रयोग किया तथा निर्धन किसानो ने कुल का ५१ प्रतिशत। ऐसा कहा जाता है, कि यहाँ की दशायें ठीक उसी प्रकार की हैं जिस प्रकार कि क्रान्ति के पूर्व रूस की दशायें थीं। सच तो यह है कि जितनी ही भूमि चीनी कृषक के पास होती थी, उतना ही अधिक वह किराया पाने के लालच से उठा दिया करता था।

सन् १९३७-४५ में साइनो-जापानी युद्ध के समय ज़मींदारों के पास भूमि एकत्र होती गई। कृषि प्रमोशन कमेटी ने १९४२ में बतलाया* कि औसत भूमि जो एक बड़े जमींदार के पास होती थी, वह ७७० मौ (Mow) होती थी। यूनान व होनान प्रान्तों के जमींदारों के पास १४२० मौ तथा ११२० मौ रहती थी। मध्यम श्रेणी के जमींदारों के पास औसत १०८ मौ रहती थी। ज़ेच्चवान प्रान्त में किरायेदारों का प्रतिशत १९४२ में ४४% था। किन्तु १९४४ में ४६% हो गया। इससे यह

* Chen Han-Sen—'The Chinese Peasant' Oxford University Pamphlet. (Next Page)

प्रत्यक्ष है कि भूमि जमींदारों पर इसी रफ्तार से एकत्रित होती गई।

भूमि का इस प्रकार एकत्र होना तथा किरायेदारों का निरन्तर बदलना—यह एक ऐसी वस्तु थी जिसके कारण जमींदारों को लाभ था तथा किसानों को हानि। किसानों की स्थिति तो दिन प्रति दिन गिरती ही जा रही थी। जमींदारों ने कर का भार किरायेदारों के कन्धों पर रखा था। वह वार्षिक लगान अपनी इच्छानुसार ही वसूल करता था। युद्ध प्रारम्भ होते ही जमींदार किराया मुद्रा के बदले अन्य रूप में वसूल करने लगे। कई उदाहरण ऐसे भी हैं कि किसान अपनी फसल का दो तिहाई जमींदारों को किराये के रूप में दे देता था। कुछ ऐसे भी हैं जिनके अन्तर्गत किसानों को अपनी फसल का ७० प्रतिशत देना पड़ा था।

साधारणतः उत्तरी चीन की भूमि अधिक उपजाऊ नहीं है, और यही कारण है, कि लगान दक्षिणी चीन की अपेक्षा बहुत कम है।

कृषि करने के साधन (Means of Cultivation):—

इस बात का हम पहले ही वर्णन कर चुके हैं, कि उपजाऊ क्षेत्रों में

Land Concentration in South China

	Percent to total No. of families	Percent to total Average owned
Landlords	3	47
Rich Peasants	6	17
Middle Peasants	20	20
Poor Peasants	71	16
	100	100

Land Co-centration in North China

	Percent to total No. of families	Percent to total Average owned
Landlords	5	12
Rich Peasants	8	28
Middle Peasants	25	33
Poor Peasants	62	27
	100	100

जनसंख्या का घनत्व वर्षों से बहुत अधिक है, और सदा से उपजाऊ भूमि का अभाव रहा है। यही कारण है कि कृषि यहाँ पर कुछ विशेष ढंगों से की जाती है। ये ढंग अन्य देशों से भिन्न हैं। संयुक्त राज्य अमरीका में प्रति मनुष्य के पास लगभग ३·४ एकड़ भूमि कृषि के हेतु है और चीन में इसकी अपेक्षा ०·३ या ०·२ से भी कम है। यही कारण है कि यहां के लोगों ने थोड़ी सी भूमि से अधिक उपज प्राप्त करने के हेतु कुछ विशेष साधनों को अपनाया है।

कृषि करते समय दो बातों पर ये लोग विशेष ध्यान देते हैं। पहली, मिट्टी के उपजाऊपन को दृढ़ रखना तथा दूसरी, बहुत ही उत्तम साधन से थोड़े क्षेत्र में फसलों का बोना। मिट्टी का उपजाऊपन किसी वैज्ञानिक ढंग से रसायन इत्यादि के द्वारा दृढ़ नहीं बनाया जाता, बल्कि जीवजन्तुओं के मृतक शरीर, अन्य सड़े हुये गंदे पदार्थ तथा राख इत्यादि को मिलाकर स्थिर रखते हैं। मृतक शरीर के पदार्थ, द्रव्य तथा ठोस, जिन्हें कि अन्य सभ्य देश घृणा की दृष्टि से देखते हैं, चीनी लोग प्रयोग में लाते हैं। ऐसी खाद का प्रयोग एक विशेष ढंग से किया जाता है। यह वैसे ही साधारण तौर पर मिट्टी में नहीं मिला दी जाती, बल्कि इसको तैयार करने में महीनों का समय लग जाता है। मृतक शरीर के पदार्थों को नदी की कीचड़ या मिट्टी में मिला कर गड्ढों में भर देते हैं। ये गड्ढे कई महीनों बाद खोद लिये जाते हैं, और मानव खाद्य इन गड्ढों में से निकाल ली जाती है। मध्य तथा दक्षिणी चीन में जहाँ बहुत सी बाढ़ की मिट्टी एकत्रित हो जाती है सिंचाई करके लोग इन क्षेत्रों में कृषि करते हैं। उत्तर में यद्यपि प्रति वर्ष बाढ़ आया करती है, परन्तु कृषि के लिये यह लाभदायक है, क्योंकि बाढ़ के साथ यहाँ नवीन उपजाऊ मिट्टी एकत्र हो जाया करती है। वैसे बाढ़ से स्वयं कृषि तथा मनुष्यों को बहुत हानि होती है। पर्वतीय क्षेत्रों के पंक्तियोंदार खेतों में कृषि की जाती है, मिट्टी के कटाव को रोकने के लिये इन लोगों ने ऐसे साधन निकाले हैं, जिनको देख कर आश्चर्य होता है। जल पर्वतीय ढालों से बगैर उपजाऊ मिट्टी के बह जाता है, उपजाऊ मिट्टी उन्हीं पंक्तियोंदार खेतों में स्थिर रहती है। इस कार्य में बहुत से श्रमिकों की आवश्यकता होती है। चीन में कुछ क्षेत्र तो ऐसे हैं जहां बहुत से श्रमिक इस कार्य में लगते हैं, परन्तु फिर भी लोग मारे मारे डोलते हैं। मिट्टी के पल्वों में भर कर ले जाने का कार्य बहुत ही कठिन होता है, इसको भी यही लोग करते हैं, क्योंकि कुछ बंजर भूमि पर उपजाऊ मिट्टी की पर्त जमा करके भी ये लोग कृषि करते हैं। अधिक सस्ते श्रम के कारण यह कार्य सम्भव भी है अन्यथा दूसरे सभ्य देशों में यह असम्भव है।

दूसरी वस्तु है कृषि करने के उत्तम साधन। यदि कोई भी व्यक्ति चीन के आन्तरिक क्षेत्रों में भ्रमण करने जाय तो उसे प्रत्येक खेत एक सुन्दर बगीचे के

रूप में दृष्टिगोचर होगा, क्योंकि खेतों के चारों ओर रेशम के कीड़े पालने के हेतु शहतूत के वृक्ष लगे होते हैं। इन छोटे छोटे खेतों में ये लोग इतने अच्छे ढंग से मिट्टी डालते हैं, बीज बोते हैं, सिंचाई करते हैं, कि कई कई फसलें बोना सम्भव हो जाता है। भारतवर्ष में गेहूँ की केवल दो फसलें होतीं हैं, पहली ग्रीष्म ऋतु में तथा दूसरी शीत ऋतु में। चीन में गेहूँ की तीन फसलें होतीं हैं। एक पकती है तो दूसरी तय्यार होती है, यदि दूसरी पकती है तो तीसरी तैयार हो जाती है। जिस प्रकार भारतवर्ष में चावल बोने का एक ढंग "ट्रान्सप्लांन्टिग" है, ठीक इसी प्रकार चीन में भी है, परन्तु आश्चर्य यह है कि, यदि पन्द्रह एकड़ भूमि में से एक एकड़ पर धान के बीज 'ट्रांसप्लाँन्टिग' के हेतु बोये गये हैं, तो भारतवर्ष में तो शेष चौदह एकड़ व्यर्थ पड़ी रहेगी, लेकिन चीन में उतने समय में जब कि एक एकड़ भूमि पर पौधे बढ़ें, शेष चौदह एकड़ पर अन्य फसल तैयार हो जातीं हैं। चीन में अब भी वही पुराने ढंग के हलों का प्रयोग होता है। इन हलों को पशु द्वारा खेतों में चलाया जाता है। कृषि में बैलों व भैंसों का प्रयोग अधिक किया जाता है। यह लकड़ी के हल इस प्रकार के होते हैं कि गुड़ाई करते समय मिट्टी मुलायम बना देते हैं तथा ऊपर एक नम पर्त जमा कर देते हैं। अधिक गहरा नहीं खोदते, क्योंकि उसमें मिट्टी के कटाव का भय रहता है। खेतों की गुड़ाई यहाँ समानान्तर पंक्तियों में होती है, क्योंकि धान के लिये यह मुलायम मिट्टी की पंक्तियाँ बड़ी लाभदायक सिद्ध होती हैं। साथ ही इस ढंग को अपनाने से मिट्टी का कटाव भी रुक जाता है, तथा सिंचाई भी भली भाँति हो सकती है। भाँति भाँति की तरकारियाँ जैसे आलू, मटर, अदरक तथा गाजर इत्यादि भी इन्हीं पंक्तियों पर उगाते हैं। इस प्रकार से चीन के लोगों ने बहुत ही विशेष कृषि करने के ढंगों को अपनाया है।

आधुनिक परिवर्तन (Modern Changes) :—

सन् १९४९ में जनरल च्यांग काई शेक की पार्टी को चीन से हटा दिया गया था और चीन में लोकतन्त्रात्मक गणराज्य की स्थापना हुई। उस समय चीन की दशा बड़ी शोचनीय थी। कृषि को बाढ़ तथा सूखा के कारण बड़ी हानि हुई, लाखों एकड़ भूमि तथा करोड़ों चीनी निर्धन हो गये। इस नवीन सरकार ने पंचवर्षीय योजना बनाई, जिसके अन्तर्गत चीन की आर्थिक दशा को सुधारना है। अब सन् १९५८ में चीनी लोग अपनी पंचवर्षीय योजना के द्वितीय वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं। ऋतु सम्बन्धी हानियाँ होते हुये भी १९५२ की अपेक्षा १९५३ में कृषि बहुत उन्नति कर गई है। आजकल चीन में सिंचाई के हेतु बड़ी बड़ी जल एकत्र करने की योजनायें बन गई हैं, बहुत सी नदियों पर बाढ़ रोकने के लिये बाँध भी

बना दिये गये हैं। जो क्षेत्र युद्ध के कारण उजड़ गये थे अब पुनः उन पर कृषि की जाने लगी है। केवल तीन वर्ष में जो कृषि में सुधार हुए हैं, उन्हें देख कर आश्चर्य होता है। ऐसा कहा जाता है कि ३००,०००,००० निर्धन तथा अति निर्धन किसानों को कृषि करने के हेतु भूमि दे दी गई है।

जमींदारों की भूमि को निर्धन किसानों में बांट देने के कारण यहाँ की कृषि पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। भूमि के इस विभाजन से पूंजी कदापि एकत्र नहीं हो सकती। अब किसानों को लगान ज़मींदारों को नहीं देना पड़ता बल्कि वह जो कुछ भी धन प्राप्त करते हैं उसे खाद या औजार खरीदने में लगा देते हैं। अब उत्पादन निरन्तर बढ़ रहा है। आजकल यहाँ साधारण सी भूमि पर चावल की उपज प्रति एकड़ २० या २२ प्रतिशत अधिक बढ़ गई है। इस वृद्धि का कारण कृषि सहकारितायें भी हैं और उसके साथ साथ कृषकों के हृदय में वह राष्ट्रीय भावना भी है जो इनको प्रतिक्षण उत्साह दिलाती है।

वर्तमान चीन में प्रत्येक कृषक की आर्थिक व्यवस्था व घरेलू उद्योगों का संगठन किया गया है। भूमि के विभाजन के पश्चात् तुरन्त ही उनको कृषि सम्बन्धी शिक्षा दी गई। साथ ही परस्पर सहायता समूह तथा कृषि उत्पादन सहकारिताओं के लाभ भी बतलाये गये। सन् १९५२ के अन्त तक यहाँ ११ "क्लैक्टिव फार्म्स", ५२ 'मेकेनाईज्ड स्टेट फार्म्स', ३६६३ 'एग्रीकलचरल प्रोडयूसर्स कोआपरेटिव' और ८,३००,००० से भी अधिक 'म्यूचुअल ऐड टीम' (परस्पर सहायता समूह) थीं। इसी समय तक २००,०००,००० किसानों ने खेतों व चारागाहों पर कार्य करने के हेतु अपने को संगठित किया। इसके अतिरिक्त सैकड़ों 'मारकेटिंग सहकारियों', जिनका कार्य कृषि उपजों को राज्य के लिए खरीदना तथा किसानों को औज़ार व अन्य आवश्यक वस्तुयें देने का था, खुल गईं, और उनकी संख्या इस समय तक ३४ ००० हो गई थी। इसके सदस्य १४०,०००,००० लोग थे। इस प्रकार से विनिमय के क्षेत्र को चौड़ा करके तथा लोगों के लिये वस्तुओं के निश्चित दाम रखकर इन सहकारिताओं ने किसानों व उत्पादकों में आदर्श सम्बन्ध स्थापित कर दिया है।

मशीनों का प्रयोग (Use of Machines) :—

वर्तमान चीन की कृषि में मशीनों का भी प्रयोग किया जाने लगा है। यहाँ के लोगों ने नये नये कृषि करने के साधनों को ढूँढ निकाला है, और कई प्रकार के औज़ारों का भी आविष्कार कर लिया है। प्रत्येक माह में कुछ न कुछ नये प्रस्ताव आधुनिक कृषि सम्बन्धी औज़ारों को बनाने व सुधारने के हेतु रखे जाते हैं। इसके लिए एक कमेटी नियुक्त कर दी गई है, जो इन प्रस्तावों पर विचार करती है। यदि वास्तव में उनकी कोई उपयोगिता होती है तो उन्हें

क्रियात्मक रूप दिया जाता है और आविष्कारक को उचित पुरस्कार मिलता है। सन् १६५३ के प्रारम्भ में ६ माह के अन्दर कार्यकर्ताओं ने ८८ सुझाव दिये, उनमें से ४३ को उचित समझ कर अपनाया गया। इन सुझाओं से १०२,०००,००० (येन) की आर्थिक बचत की गई।

उत्तरी चीन में सर्वप्रथम पेकिंग (Peking) नगर में १६४६ में एक कृषि सम्बन्धी औज़ार बनाने का कारखाना स्थापित किया गया। थोड़े ही समय बाद इस में तरह तरह के औज़ार व मशीनें बननी प्रारम्भ हो गईं। मुख्य मशीनों में सिंचाई के पम्प, धान काटने वाली मशीनें तथा उत्तम हल इत्यादि हैं। अब इस कारखाने को और भी अधिक बढ़ा दिया गया है। साथ ही विदेशी विशेषज्ञों को भी अधिक वेतन पर रख लिया गया है। इनमें इतनी उन्नति हुई है, कि १६५२ में इसका उत्पादन १६५० की अपेक्षा पांचगुना हो गया। कर्मचारियों की संख्या इस कारखाने में आजकल इक्कीस गुनी बढ़ गई है।

इस कारखाने के अलावा चीन में इसी प्रकार की और भी कृषि सम्बन्धी वस्तुयें तैयार करने के कारखाने हैं, जो कि उत्तर-पूर्व से लेकर पश्चिम में तिब्बत की सीमा तक फैले हुए हैं। यहाँ इन कारखानों की सबसे प्रमुख समस्या मशीनों की डिज़ाइन की है। चीन के छे मुख्य इंजीनियर इस कार्य में निपुणता प्राप्त करने के लिये अमरीका भेजे गए। वहाँ उन्होंने अन्य कृषि सम्बन्धी जानकारी भी प्राप्त की, लौटने पर इन लोगों ने ५ या ६ इंच तक गहरी मिट्टी खोदने के हल बना लिए। अब कारखाने इन हलों को भी तैयार करने लगे। गत वर्ष एक ३८ वर्ष के कुशल इन्जीनियर ली केटसो (Li Ketso को ८" व १०" गहरी गुड़ाई करने वाले हलों के आविष्कार पर पुरस्कार दिया गया। इस इन्जीनियर ने बड़े उत्साह व श्रम के साथ कृषकों से मिलकर इस प्रकार के नवीन हल का आविष्कार किया था। यह न केवल सस्ता व उत्तम था, बल्कि इसमें एक ही हेन्डिल था जो कि यहाँ के किसान विशेष तौर पर चलाते थे।

इन औज़ारों के मूल्य भी गिराने की चेष्टा की गई है। पहले मशीनों की डिज़ाइनें बनाने का अभ्यास न होने के कारण वास्तविक मूल्य अधिक होता था, परन्तु जैसे ही जैसे उन्नति होती गई वैसे ही वैसे मूल्य भी गिरने लगे। सात इंच गुड़ाई करने वाले हलों का मूल्य एक चौथाई रह गया। इसके अतिरिक्त १० इंच गहरी घोड़ों द्वारा गुड़ाई करने वाले हलों की कीमत दो ही वर्ष के अन्दर आधी कर दी गई है।

जैसे ही जैसे कर्मचारियों एवं कृषकों में संगठन होता गया, वैसे ही वैसे और भी बड़े औजारों का बनना प्रारम्भ होता गया। यहाँ तक कि "सिंगिल फरो प्लोज़", "सिंगिल रो कल्टीवेटर" तथा "फाइव रो सीड ड्रिल्स" आदि मशीनें बन

गई, और अब वह समय है, जब कि चीन न केवल इन मशीनों को बल्कि "नाइन रो सीड ड्रिल्स", "टू फरो प्लोज़" तथा "होर्स ड्रान रीपर" आदि मशीनों का भी प्रयोग कर रहा है। इन मशीनों का प्रयोग "म्युचूअल ऐड टीम" या "ऐग्रीकलचरल प्रोडयूसर्स कोआपरेटिव" के द्वारा यहाँ के कृषक करते हैं। यहाँ के सरकारी कर्मचारी जो कि इस विभाग से सम्बन्धित हैं, इन किसानों को उत्साह दिलाते हैं तथा इन मशीनों के प्रयोग की महत्ता बतलाते हैं।

इंजीनियर व कार्यकर्ताओं का एक समूह १६५२ में इन मशीनों के प्रयोग को बतलाने हेतु गाँव-गाँव में चक्कर लगाता फिरा। एक स्थान पर जब वह लोग पहुंचे तो उन्होंने देखा कि ५०० एकड़ भूमि पर गेहूं के खेत पक कर तैयार हो गए हैं, लेकिन काटने के लिए श्रम का अभाव था। इन लोगों ने तुरन्त मशीन द्वारा गेहूं की फसल को काट कर दिखाया, लोग चकित हो गए, चारों ओर से किसान इस आश्चर्य को देखने के लिए एकत्र हो गए। उन्होंने देखा कि मशीन १२ एकड़ भूमि के गेहूं को एक दिन में काट देती है जब कि इसको काटने के लिए २५ मनुष्यों की आवश्यकता है। इस प्रकार से इन लोगों ने किसानों को बतलाया कि यह काटने की मशीन समय व श्रम दोनों ही बचाती है।

किसानों को ये मशीनें सहकारिताओं द्वारा बेची जाती हैं। ये सहकारितायें कारखानों से बड़े पैमाने पर खरीद लेती हैं और किसानों को थोड़े मूल्य पर दे देती हैं। इन्होंने १६५३ में १००,००० हल बेचे, इनके अतिरिक्त अन्य भी मशीनें लोगों ने खरीदीं। वास्तव में इन किसानों को इनका प्रयोग करना तथा इनको सुधारना नहीं आता है, जिसके कारण बहुत से कृषक इनको खरीदने में झिझकते हैं। सरकार ने वैसे तो कई स्थानों पर ऐसे 'टेकनीकल गाइडेन्स स्टेशन' स्थापित कर दिये हैं जिनका कार्य है, उत्तम खाद व बीज देना नई मशीनों का प्रयोग, सिखलाना, सुधारने की युक्ति बतलाना तथा इनके पुर्जों से परिचय प्राप्त कराना। परन्तु खेद इस बात का है, कि चीन एक ऐसा विस्तृत देश है, कि प्रत्येक ग्रामीण क्षेत्र में ऐसे स्टेशनों का स्थापित करना एक समस्या है।

ऐसी आशा की जाती है कि चीन भविष्य में इस समस्या को हल कर लेगा और यहां भी कृषि ठीक उसी ढंग से होने लगेगी जिस प्रकार से रूस व उत्तरी अमेरिका में हो रही है।

मुख्य फसलें:—चीन में चावल गेहूं तथा ज्वार-[illegible] [illegible] पर बोया जाता है। यही तीन [illegible] कुल [illegible] भूमि का [illegible] भाग छोड़ कर शेष भाग में यही फसलें उत्पन्न की जाती हैं। उसमें से लगभग आधे क्षेत्र में चावल तथा शेष आधे में गेहूं व ज्वार-बाजरा

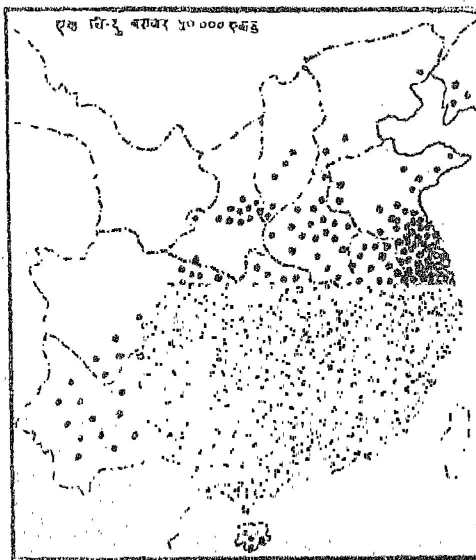
बो दिया जाता है। चावल यहां बहुत प्राचीन काल से बोया जा रहा है। यह अधिकतर मध्य व दक्षिण के भागों में उत्पन्न किया जाता है। कुछ लोगों को यह भ्रम है कि चीनी लोगों का मुख्य भोजन चावल ही है, परन्तु यह विचार गलत है। क्योंकि चीन में ही जो चीनी उत्तर में रहते हैं, उन्होंने गेहूं के अतिरिक्त अन्य कई भी अनाज खाना नहीं सीखा, और जो कि दक्षिण के हैं उन्होंने चावल छोड़ कर अन्य किसी भी अनाज की ओर दृष्टि भी नहीं डाली। पिछले वर्षों में अनाज का उत्पादन यहाँ बहुत कम था। सन् १९५१-५२ में कृषि बहुत उन्नति कर गई और वार्षिक उत्पादन १६१,१७१,२५६ टन हो गया। यह १९४२ की अपेक्षा ४५ प्रतिशत अधिक था।

अनाज का कुल उत्पादन मई १९५४ में इस प्रकार था:—

(मिलियन मेट्रिक टनों में)

१९४९ —	११०
१९५० —	१३०
१९५१ —	१४०
१९५२ —	१६३
१९५३ —	१६५

(१) चावल—कदाचित् चीन संसार में सब से अधिक चावल उत्पन्न करने वाला देश है। दुर्भाग्यवश चीन में चावल के उत्पादन के विश्वसनीय आंकड़े प्राप्त नहीं हैं, किन्तु अनुमान लगाया जाता है कि यहां लगभग साढ़े चार करोड़ टन चावल प्रति वर्ष पैदा होता है। चावल उत्पन्न करने वाले प्रमुख क्षेत्र दक्षिण-पूर्वी तट तथा दक्षिणी चीन में हैं। मध्य चीन में भी, जहाँ उपयुक्त मात्रा में वर्षा होती है, कुछ क्षेत्रों में चावल की खेती की जाती है, किन्तु उत्तरी चीन में इसकी कृषि नगण्य

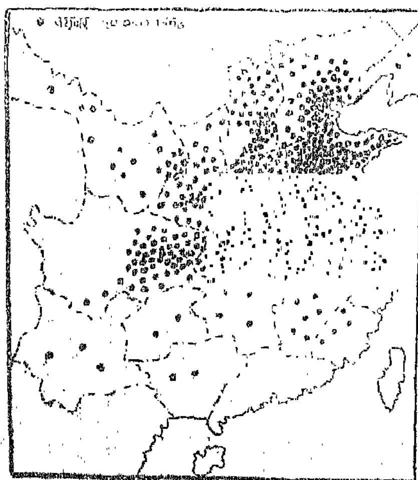


चीन—चावल का वितरण

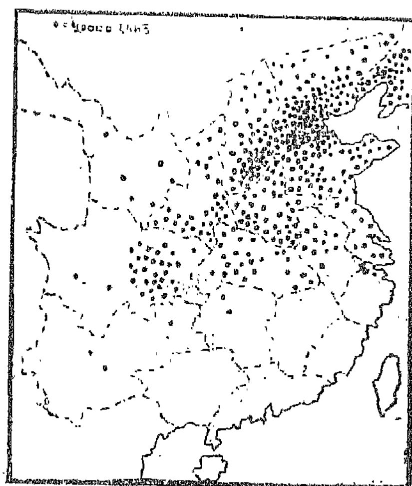
है। इसके कारण इस प्रकार हैं:—(क) उत्तरी चीन की लोयेस रेतीली मिट्टी है। इसमें जल धारण करने की शक्ति नहीं है। (ख) ग्रीष्म ऋतु बहुत छोटी तथा शुष्क होती है। (ग) सिंचाई की कोई विशेष व्यवस्था नहीं है। (घ) उत्तरी चीन के निवासी प्रारम्भ से ही चावल नहीं खाते, इन्हें इसका स्वाद ही नहीं पसन्द आता।

चीन में चावल की प्रति एकड़ उपज गत वर्षों में बहुत बढ़ गई है। यह आजकल २४३३ पौंड प्रति एकड़ से भी अधिक है। पहले की अपेक्षा यह २२ प्रतिशत साधारण भूमि पर अधिक हो गई है। आजकल चीन की जनसंख्या बहुत अधिक बढ़ गई है, उत्पादन इतनी गति से नहीं बढ़ सका। अब चीन की सरकार पञ्चवर्षीय योजना के अन्तर्गत शीघ्र ही चावल का उत्पादन बढ़ा रही है।

२. गेहूँ:—उत्तरी चीन की प्रमुख फसल गेहूं है। यही वहां के लोगों का मुख्य खाद्य पदार्थ है। दक्षिण में गेहूं कोई विशेष खाद्य पदार्थ नहीं है और न यह उत्पन्न किया जाता है। लेकिन मध्य में यह कुछ महत्वपूर्ण है और चावल के साथ ही बोया जाता है। उत्तर में जो क्षेत्र प्रसिद्ध हैं, उनमें उत्तरी चीन का मैदान तथा व्हीं हो नदी की घाटी मुख्य है, वैसे मंचूरिया की सीमा में भी गेहूं उगाया जाता है। गेहूं की प्रति एकड़ उपज बहुत कम है, इसको बढ़ाने की बराबर चेष्टा की जा रही है। आजकल यहां कई प्रकार के बीज बोये जाने लगे हैं। ये कृषकों को सहकारिताओं द्वारा मिलते हैं। दुहम नाम का बीज यहां विशेष तौर पर बोया जाने लगा है। मंगोलिया की सीमा पर जो अर्द्ध शुष्क भाग हैं, उन पर भी गेहूं उगाने की चेष्टा की जा रही है। लोगों को इस कार्य में कुछ सफलता भी प्राप्त हुई है। गत वर्षों में यहां उत्पादन बहुत कम था उदाहरणार्थ १६३५–३६ तक का योग कुल ७१५० लाख बुशल था। परन्तु १६४६-५० में यह इतना बढ़ा कि ६०५० बुशल एक ही वर्ष में हो गया।


चीन—गेहूं का वितरण

३. ज्वार-बाजरा:— यहाँ अनाज की फसलों में ज्वार-बाजरा का भी प्रमुख स्थान है। यहां के निर्धन कृषकों का



चीन—ज्वार-बाजरा का वितरण

यही एक मुख्य भोजन है। ऐसा कहा जाता है कि यह चीन में अब से ५००० वर्ष पूर्व भी बोया जाता था। ऐतिहासिक खोज करने वालों को इसके प्रमाण भी मिले हैं। यहाँ इसकी दो जातियां हैं। पहली—सोरगम तथा दूसरी केओलिंग। इसके लिये शुष्क जलवायु की आवश्यकता होती है। इसीलिये यह यहां ४० इंच से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में उगाया जाता है। वैसे यह जहां २० इंच वर्षा होती है, वहां भी उत्पन्न किया जा रहा है। साधारण उपजाऊ भूमि इसके लिये उपयुक्त होती है। इसका पोधा आम तौर पर ८ या १० फीट ऊंचा हो जाता है। काट लेने के पश्चात् इसमें से मटर के दाने के बराबर भूरे रंग के दाने निकलते हैं। यह अधिकतर चीन के उत्तर-पूर्व में बोया जाता है, परन्तु मंचूरिया की सीमा पर भी इसकी कृषि होती है। सब से उत्तम भूमि गेहूं के लिये दे दी जाती है और शेष इसके लिये।

प्रमुख अनाजों की उपज
(चीन का अनुमान)
(१९४९ में) (००० टनों में)

धान	४४५००
गेहूं	२०६००
जौ	६०००
मक्का	६५००
जई	७३०
सोयाबीन	४८८०
ब्रोडबीन	३३४२
सूखी मटर	३११३

प्रमुख अनाजों की उपज
(रूस का अनुमान)
(१९५० में) (००० टनों में)

धान	४२८५०
गेहूं	१८५९७
जौ	६७७०
मक्का	५५७०
जई	७५४

अन्य उपज :—

कपास :—समस्त एशियाई देशों में कपास के उत्पादन में चीन का

प्रमुख स्थान है। कुछ वर्षों पहले संसार में इसका (संयुक्त राज्य अमरीका व भारतवर्ष के बाद) तृतीय स्थान था, किन्तु गत वर्षों से इसका उत्पादन कुछ कम हो गया। परन्तु आज कल फिर इसका उत्पादन बढ़ रहा है। यहां कपास की इतनी खपत है, कि किसी किसी वर्ष इसे विदेशों से आयात करना पड़ता है। इस देश में भाग्यवश कपास के लिये उपयुक्त भूमि की कमी नहीं है। लेकिन सघन जनसंख्या वाला देश होने के कारण खाद्यान्नों की इतनी अधिक माँग रहती है, कि अधिकांश क्षेत्र पर खाद्य पदार्थ उत्पन्न करने पड़ते हैं। इस देश में दक्षिणी चीन कपास के लिये उपयुक्त क्षेत्र है। मध्य व उत्तरी चीन में यांग-टिसी क्यांग तथा ह्वाँगहो नदी की घाटियों में चिहली, शेंसी, शाँसी तथा होनान प्रांतों में भी कपास पैदा की जाती है। सन् १६३८ में इसका उत्पादन २३०१ गांठें १६४५-४६ में १८२०, १६४६-४७ में १६२१, तथा १६४७-४८ में पुनः बढ़ कर २१५० गाठें हो गया। तत्पश्चात् यह १६५२ में १,२६०,००० तथा १६५३ में १,१७०,००० टन हो गया। प्रति एकड़ उपज यहां अन्य देशों की अपेक्षा कम है, परन्तु इसको बढ़ाने का भरसक प्रयत्न किया जा रहा है। चीन, कपास गत वर्षों में विदेशों से भी मांगता था और १६५०-५१ में इसने ३६००० टन आयात की। आजकल इसने विदेशों से मंगानी बन्द कर दी है।

चाय :—विद्वानों का मत है कि सर्व प्रथम चाय का पौधा चीन में जंगली अवस्था में उगता हुआ पाया गया, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि प्राचीन काल में यहां चाय की ईंटें अथवा प्याले बना लिये जाते थे, जिन्हें लद्दू पशुओं पर लाद कर ले जाया जा सकता था। यह चाय के प्याले या ईंट बनाने के हेतु चाय का चूरा करके उसमें रसदार चिपचिपा पदार्थ मिला देते थे, और इन्हें सांचे में ढाल लेते थे। यात्री लोग इन्हें विशेष तौर पर अपने साथ रखते थे जब कभी रास्ते में उन्हें आवश्यकता होती थी, तो उन प्यालों में खौलता हुआ पानी भरने से चाय तुरन्त तैयार हो जाती थी। ऐसी लम्बी यात्रा के समय वह प्याले या ईंटे बड़ी उपयोगी सिद्ध होती थीं। आजकल भी चीन में कुछ ऐसे क्षेत्र हैं, जहां यह प्रथा अभी तक चली आ रही है। इस देश के कुछ प्रान्तों में तो आश्चर्यजनक प्रथा चाय पीने की है। योरोप को चीन से चाय का निर्यात सत्रहवीं शताब्दी में आरम्भ हुआ और उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक चीन ही चाय का निर्यात करता रहा। मुख्य खरीदने वाले देशों में रूस व ग्रेट ब्रिटेन थे। अब चाय निर्यात करने में इसका स्थान बहुत गिर गया है, क्योंकि इसका उत्पादन तीव्र गति से नहीं बढ़ रहा है। सन् १६४६-५० में इसका कुल उत्पादन ३६० लाख पौंड तथा १६५२ में ८२,५०० टन था, जब कि भारतवर्ष ने अपना उत्पादन ६८०० लाख पौंड इसी

इसी सन् में कर लिया था। चाय उत्पन्न करने वाले यहां तीन प्रमुख क्षेत्र हैं :— (१) दक्षिणी-पूर्वी चीन के पर्वतीय क्षेत्र (शंघाई तथा हांगकाँग के मध्य चाय अधिक उत्पन्न होती है)। (२) यांगटिसीक्यांग नदी का बेसिन। (३) जैचवान का पर्वतीय प्रदेश।

सोयाबीन :—प्राचीन काल में भी यह चीन में उगता था। परन्तु यहां के लोग इसकी महत्ता को नहीं समझते थे। गत वर्षों से ही इसका प्रयोग बढ़ने लगा है, और लोग इसकी कृषि उचित ढंग से करने लगे हैं। वास्तव में यह एक तिलहन है, और इससे एक प्रकार का बड़ा स्वादिष्ट तेल प्राप्त किया जाता है। सोयाबीन शुष्क जलवायु में उगता है, इसके लिये अधिक वर्षा की आवश्यकता नहीं होती, यही कारण है कि चीन में यह उत्तरी चीन व मंचूरिया की सीमा पर उत्पन्न किया जाता है। गत वर्षों से इसका उत्पादन बहुत अधिक हो गया है।

अन्य उपजें :—अन्य उपजें चीन में भिन्न भिन्न स्थानों पर स्थानीय वातावरण के अनुसार उत्पन्न की जाती हैं। उदाहरणार्थ उत्तरी चीन में यदि जो बोया जाता है तो दक्षिणी-पूर्वी नम क्षेत्रों में कार्न (Corn) बोया जाता है। यहां प्रत्येक फार्म पर कुछ क्षेत्र तरकारियों के लिये छोड़ दिये जाते हैं। शकरकन्दी विशेषतौर पर दक्षिणी-पूर्वी क्षेत्र में उगती है, वैसे तो यह थोड़ी बहुत मात्रा में प्रत्येक प्रान्त में बोई जाती है। इसके अतिरिक्त आलू, प्याज, गाजर, मूली, टिमाटर तथा फलियां हर जगह उगाई जाती हैं। आलू का उत्पादन १९४८ में १९५२००० टन था। अनेक किसान तरबूज व खरबूजा खाने के शौकीन होते हैं, इन्हें भी ये लोग बो लेते हैं। तम्बाकू व मूंगफली शुष्क जलवायु वाले क्षेत्र में बो दी जाती है। तम्बाकू का उत्पादन १९५२ में २०२००० मैट्रिक टन था। गर्म जलवायु में फलों के बगीचे भी पाये जाते हैं। इनमें नारंगी, नीबू, लीची अदरक, केले इत्यादि उगते हैं। गन्ने की पैदावार भी इसी प्रकार की जलवायु में होती है। और इन्हीं मध्य के क्षेत्रों में ईख बोई जाती है, परन्तु उत्पादन अन्य देशों की अपेक्षा बहुत कम है।

यहां के किसान शहतूत के वृक्षों पर रेशम के कीड़े भी पालते हैं। शहतूत के वृक्ष इनके खेतों के चारों ओर लगे रहते हैं। इनकी स्त्रियां व बच्चे इस कार्य को बड़ी कुशलता से करते हैं। मुख्य क्षेत्रों में यांगटिसीक्यांग नदी की घाटी उत्तरी-पूर्वी तट तथा दक्षिणी-पूर्वी तटीय प्रदेश हैं।

रेशम के ककून का उत्पादन ३,३००,००० पाइकल्स (Piculs) था, इसमें से ४० प्रतिशत मध्य क्यांगसू, चिक्यांग तथा आन्वी में हुआ। कच्ची रेशम का उत्पादन १९४९ में ७३००० पाइकिल्स (Piculs) था।

चीन के कृषि-विभाग :—

चीन को हम कई विभागों में बांट सकते हैं, प्रत्येक विभाग में भिन्न प्रकार का भौगोलिक वातावरण मिलता है। इन कृषि-विभागों का क्षेत्रफल लगभग १,६६०,००० वर्ग मील है, नीचे दिये गये कृषि-विभाग डा० क्रेसे के किये हुये विभागों के आधार पर हैं और जो कुछ भी आंकड़े दिये गये हैं, वह श्री बक की "लैंड यूटिलाइज़ेशन इन चाइना" नामक पुस्तक में से लिये गये हैं, परन्तु कहीं-कहीं पर सोवियट रिपब्लिक द्वारा दिये गये आंकड़ों का भी प्रयोग किया गया है।

(१) शीत ऋतु वाला गेहूँ व काओलिंग का क्षेत्र :—इसका क्षेत्रफल ११८६६३ वर्ग मील है। सम्पूर्ण पीली मिट्टी वाला समतल क्षेत्र इसी में सम्मिलित है, थोड़ा सा शांटंग का भाग भी इसी में आता है। मुख्य प्रान्तों में होपी, शांटंग व होनान महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इस भाग में ६८ प्रतिशत उपजाऊ भूमि है, जिस पर मुख्यतः गेहूं ही उत्पन्न किया जाता है। औसत वर्षा २४ इंच हो जाया



चीन के कृषि विभाग

करती है। यहां १० प्रतिशत क्षेत्र में सिंचाई करके फसलें बोई जाती हैं। यहां की मिट्टी में चूने का अंश अधिक है, लेकिन कहीं-कहीं पर खारी मिट्टी भी पाई जाती है। शीत ऋतु में गेहूं तथा ग्रीष्म में ज्वार-बाजरा उत्पन्न होता है। इसके अतिरिक्त

कोर्न, कपास, सोयाबीन तथा शकरकन्दी व आलू इत्यादि उत्पन्न किये जाते हैं। जौ यहां बहुत कम बोया जाता है। फलों के बगीचे भी अनेक स्थानों पर मिलते हैं। नगरों के निकट तरकारियां बहुत अधिक बोई जाती हैं। प्रति फार्म पर औसत कुल ५·१ प्रतिशत भूमि का पड़ता है। प्रतिवर्ग मील पर ११६५ व्यक्ति रहते हैं, कुल जनसंख्या ८०० लाख से अधिक है। खाद्य पदार्थ बोने की ऋतु २४१ दिन की प्रतिवर्ष होती है। कभी-कभी बाढ़ आ जाने या सूखा पड़ने के कारण कृषि को बड़ी हानि भी होती है।

(२) शीत ऋतु वाला गेहूँ व ज्वार-बाजरे का क्षेत्र :— इसका क्षेत्रफल ३१८८६ वर्ग मील है। यह लोयेस की पहाड़ियों के पश्चिम में है, इसकी मिट्टी उपजाऊ है, लेकिन अधिक कटाव के कारण पहाड़ियों के ढाल अधिक हो गये हैं। मुख्य मैदानी क्षेत्रों में शान्शी व शेन्शी प्रान्त में फेन व ह्वी नदियां हैं। यहां पहाड़ियों पर पंक्तियोंदार खेत पाये जाते हैं। इस क्षेत्र में केवल २२ प्रतिशत उपजाऊ भूमि है, और १० प्रतिशत पर सिंचाई करके वस्तुयें उत्पन्न की जाती हैं। प्रति फार्म पर केवल ३·७ एकड़ भूमि है। मुख्य वस्तुयें जो इस क्षेत्र में उत्पन्न की जाती हैं, उनमें शीत ऋतु का गेहूं, ज्वार-बाजरा, काओलिंग तथा कपास इत्यादि हैं। गेहूं तथा काओलिंग नदियों की घाटियों में उत्पन्न किया जाता है, लेकिन ज्वार-बाजरा केवल पहाड़ियों पर ही उगाया जाता है। यहां 'डबल क्रोपिंग' भी होती है। इस भाग में प्रतिवर्ग मील पर १२३४ व्यक्ति रहते हैं। खाद्य पदार्थों के बोने की ऋतु प्रतिवर्ष २२५ दिनों की होती है।

(३) बसन्त ऋतु वाला गेहूँ का क्षेत्र :—इसका क्षेत्रफल २२०५४ वर्ग मील है, यह मंगोलिया की सीमा पर चीन की दीवार के दोनों ओर स्थित है। यह भी एक पहाड़ी भाग है, जिसकी ऊंचाई ३००० से लेकर ८००० फीट है। वर्षा यहां औसत में १४ इंच हो जाती है। यह बहुत कम है, यहाँ सिंचाई द्वारा १३ प्रतिशत भूमि पर कृषि करनी पड़ती है। प्रति फार्म के पास ७·३ एकड़ भूमि का औसत पड़ता है। प्राकृतिक रूप से उपजाऊ भूमि का क्षेत्र १८ प्रतिशत है। यहां ७ माह तक कोहरा पड़ता है। शीत ऋतु बहुत ठण्ढी होती है। मुख्य फसलों में गेहूं, ज्वार-बाजरा, आलू, जौ, काओलिंग, ओटो, कोर्न तथा चावल हैं। कहीं कहीं पर भांग भी उगाई जाती है। यहां कभी-कभी अकाल बड़ा भीषण पड़ता है। यही कारण है कि जनसंख्या प्रतिवर्ग मील ८५८ ही है। लोगों के रहन-सहन का स्तर बहुत गिरा हुआ है। खाद्य पदार्थों के बोने की ऋतु प्रतिवर्ष १६६ दिनों की होती है।

(४) मंचूरियन सोयाबीन-काओलिंग का क्षेत्र :—इसका क्षेत्रफल ५,००० वर्ग मील है। यह बहुत विस्तृत है, और मंचूरिया के मैदान से भी दूर

पूर्वी मंचूरिया की पहाड़ियों तक फैला हुआ है। इस क्षेत्र में २० प्रतिशत उपजाऊ भूमि है। यहां सिंचाई की अधिक आवश्यकता नहीं पड़ती, यही कारण है कि यहां केवल ५ प्रतिशत उपजाऊ भूमि पर सिंचाई होती है। प्रति फार्म के पास केवल ८.० एकड़ भूमि है। यही एक ऐसा भाग है, जहां प्रत्येक किसान के पास अधिक से अधिक उपजाऊ क्षेत्र आता है। आजकल इस क्षेत्र में मशीनों का भी प्रयोग होने लगा है। पशु भी यहां सबसे अधिक मिलते हैं। प्रमुख फसलों में काओलिंग उत्तर की ओर तथा सोयाबीन दक्षिण की ओर पैदा होते हैं। इनके अतिरिक्त ज्वार, बाजरा, गेहूं, कार्न, जौ तथा चावल उत्पन्न होता है। मध्य के भाग में वर्षा भी काफी होती है, और साथ ही मिट्टी भी उपजाऊ है। इसीलिए कृषि बड़ी सफलतापूर्वक की जाती है। उगने की ऋतु यहां १५० दिनों की होती है। यहां की कुल जनसंख्या ५०० लाख से कुछ अधिक है। प्रति वर्ग मील पर ८०० मनुष्य रहते हैं।

(५) यांगटिसीक्यांग का चावल-गेहूँ का क्षेत्र :—इसका क्षेत्रफल ४०३२८ वर्ग मील है। यह क्षेत्र अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा बहुत छोटा है। यह एक समतल मैदानी भाग है। इसकी महत्ता शंघाई के पृष्ठ प्रदेश होने के नाते बहुत अधिक है। इसकी ३५ प्रतिशत भूमि तो प्राकृतिक तौर पर उपजाऊ है, और उसपर बिना सिंचाई किए हुये उपजें उग आती हैं। सिंचाई वाले क्षेत्र ६१ प्रतिशत हैं। कई छोटी बड़ी नहरें यांगटिसीक्यांग नदी से उत्तर तथा दक्षिण की ओर निकाली गई हैं। झीलों से भी सिंचाई की जाती है। एक फार्म में ३.५ एकड़ भूमि होती है। जो पहाड़ियाँ इसके निकट पाई जाती हैं, उन पर घास उग आती है और वह जीव-जन्तु चराने के लिए उपयोगी है। चावल यहाँ दक्षिण की ओर बहुत अधिक होता है क्योंकि वह लोगों का मुख्य भोजन है। उत्तर की ओर गेहूं उत्पन्न किया जाता है, परन्तु उसकी मात्रा चावल से कम ही है। अन्य शीत ऋतु की उपजों में जौ तथा तिलहन मुख्य हैं। ग्रीष्म ऋतु में कपास, कार्न व सोयाबीन भी उत्पन्न किया जाता है। उगने की ऋतु २६३ दिनों की होती है। यहाँ का सबसे महत्वपूर्ण वृक्ष शहतूत का है, क्योंकि इसपर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। जनसंख्या का घनत्व यहां अधिक पाया जाता है। प्रति वर्ग मील में १२६० लोग रहते हैं। यहां वर्षा ४२ इंच होती है।

(६) चावल व चाय वाला क्षेत्र :—इसका क्षेत्रफल ४२६२४ वर्ग मील है। यह अधिकतर पठारी व पर्वतीय है, इसमें समतल भूमि का अभाव है। इसमें जो प्रान्त आते हैं, उनमें चिक्यांग, क्यांगसी तथा होनान मुख्य हैं। यहाँ औसत वर्षा ५६ इञ्च हो जाती है। बोई हुई भूमि का क्षेत्रफल कुल का १८ प्रतिशत है। परन्तु सिंचाई कुल की ७८ प्रतिशत भूमि पर होती है। एक फार्म पर २.२ एकड़

भूमि से अधिक नहीं है। शीत ऋतु की उपजों में थोड़ा सा गेहूं, जौ तथा रेपसीड (तिलहन) इत्यादि मुख्य हैं। धान यहाँ की मुख्य उपज है। इसके अतिरिक्त सोयाबीन, कोर्न, तुङ आयल, शकरकन्दी इत्यादि हैं। पर्वतीय ढालों पर चाय बहुत अधिक उत्पन्न की जाती है। इन वस्तुओं के उगने की ऋतु ३०८ दिनों की होती है। यहाँ प्रति वर्ग मील में १७८८ जनसंख्या पाई जाती है।

(७) जैचवान चावल का क्षेत्र :—इसका क्षेत्रफल ४७५७६ वर्ग मील है। इसमें बहुत सा भाग पर्वतीय है, लेकिन कहीं कहीं पर समतल भूमि भी मिलती है। यह सबसे अधिक उपजाऊ क्षेत्रों में से है। इसमें उत्तर व दक्षिण, दोनों में फसलें बोई जाती हैं। बोई हुई भूमि कुल की ३२ प्रतिशत है। कुल भूमि की ७० प्रतिशत पर सिंचाई द्वारा खाद्य पदार्थ उत्पन्न किये जाते हैं। ग्रीष्म ऋतु में यहाँ चावल विशेष रूप से उत्पन्न किया जाता है, परन्तु शीत ऋतु में गेहूं, रेपसीड तथा बीन (तिलहन) इत्यादि बोये जाते हैं। पर्वतीय ढालों पर शकरकन्दी आलू, कार्न, काओलिंग, गन्ना, सरसों, तम्बाकू तथा सोयाबीन उगाया जाता है। यहां पर औसत वर्षा ३६ इञ्च होती है। प्रति फार्म के पास ३·१ एकड़ भूमि होती है। इन वस्तुओं के उगने की ऋतु यहां ३३४ दिनों की होती है। यहां प्रति वर्ग मील पर १६१० लोग रहते हैं।

(८) डबल-कापिंग चावल का क्षेत्र :—इसका क्षेत्रफल १६१५५ वर्ग मील है। यह पहाड़ी क्षेत्र है, जिसमें समतल भूमि का अभाव है, इसकी स्थिति सम उष्णकटिबन्धीय भाग में है। क्वाटंग प्रदेश का १२ प्रतिशत भाग उपजाऊ है। इसकी १३ प्रतिशत भूमि उपजाऊ है, और सिंचाई कुल भूमि के ६६ प्रतिशत भाग में होती है, यहां पर वैसे तो साल भर वर्षा होती है, लेकिन औसत वार्षिक वर्षा ६६ इञ्च हो जाया करती है। प्रति फार्म के पास २·३ एकड़ भूमि से अधिक नहीं है। यहां के पर्वतीय क्षेत्रों में मिट्टी का कटाव बहुत अधिक हुआ है, जिसके फलस्वरूप इन पर ऐसी जंगली घास उग आई है, जो कि केवल ईंधन के रूप में ही प्रयोग की जाती है। इस क्षेत्र के तीन-चौथाई भाग पर डबल-क्रॉपिंग होती है, लेकिन बसन्त से लेकर पतझड़ तक के समय में चावल की यहाँ दो फसलें बड़ी आसानी से हो जातीं हैं। यह खाद्यान्न यहां बहुत बड़ी मात्रा में उत्पन्न किया जाता है। इसके अतिरिक्त यहाँ शकरकन्दी, आलू, तम्बाकू, गन्ना, चाय, शहतूत तथा नारंगियां भी उत्पन्न की जाती हैं। प्रति वर्ग मील में यहां २०७२ व्यक्ति रहते हैं। उगने की ऋतु यहां ३६५ दिनों की है, अकाल पड़ने की बहुत कम सम्भावना रहती है।

(९) दक्षिण-पश्चिमी चावल का क्षेत्र :—इसका क्षेत्रफल १७०४२ वर्ग मील है। यह भी एक पर्वतीय क्षेत्र है, पहाड़ियों की ऊँचाई ५,००० फीट से अधिक

है। निचली घाटियों में कृषि की जाती है। यहां की कुल भूमि के ७ प्रतिशत भाग में प्राकृतिक तौर पर कृषि हो जाती है, लेकिन सिंचाई द्वारा कुल भूमि के ८२ प्रतिशत भाग में होती है। ग्रीष्म ऋतु में यहां चावल उत्पन्न किया जाता है। ओपियम तथा चौड़े किस्म की बीन भी निचले भागों में उत्पन्न किये जाते हैं। उच्च भूमि पर कार्न, ज्वार, बाजरा, जौ की कृषि की जाती है। फलों के बगीचे भी यहाँ बहुत पाये जाते हैं। प्रति फार्म पर २·० एकड़ भूमि है। यहां प्रति वर्ग-मील पर २६३६ लोग रहते हैं। कृषि करने की ऋतु ३६० दिनों की होती है। वर्षा यहां ४६ इंच औसत हो जाया करती है।

संगठन कृषि में उन्नति :—

अनुमान लगाया जाता है, कि १९५३ में चीन में ४८,०००,००० कृषकों ने म्यूचुअल ऐड टीम या कृषि सहकारिताओं द्वारा कृषि की। यह संख्या कुल कृषकों की ४३ प्रतिशत है, और यह १९५२ की अपेक्षा २० प्रतिशत अधिक है। सन् १९५३ में कुल १४,००० कृषि उत्पादकों की सहकारितायें थीं, जिनमें २७३,००० कृषक परिवार सदस्य थे, यह भी संख्या १९५२ की अपेक्षा तिगुनी थी। साथ ही, "लांग-टर्म-म्यूचुअल ऐड टीम" के सदस्यों में वृद्धि १९५२ की अपेक्षा २१ प्रतिशत अधिक थी।

संगठित कृषक परिवार की संख्या विभिन्न क्षेत्रों में इस प्रकार थी :—उत्तर-पूर्व में ७४ प्रतिशत, उत्तरी तथा पूर्वी चीन में ५० प्रतिशत, उत्तरी-पश्चिमी चीन में ४५ प्रतिशत, दक्षिण-पश्चिम में ४० प्रतिशत, मध्य व दक्षिणी क्षेत्र ३० प्रतिशत। इसमें यदि उत्तर-पूर्वी क्षेत्र को लिया जाय तो प्रतीत होगा कि भू-उन्नति काफी पहले हो चुकी थी, लेकिन फिर भी इन संगठित कृषक परिवारों में सहकारितायें केवल २ प्रतिशत ही थीं। उत्तर, उत्तर पूर्व तथा पूर्वी चीन में "लांग टर्म म्यूचुअल ऐड टीम" कुल संगठित कृषक परिवारों की केवल एक तिहाई ही थी।

संयुक्त कृषि के लाभ सदस्यों को अधिक उपज तथा अधिक आय के रूप में बहुत अधिक हुए हैं। सब क्षेत्रों में सहकारिताओं ने पड़ोस की 'म्यूचुअल ऐड टीम' के स्वतन्त्र कृषक की अपेक्षा १९५३ में १० से लेकर २० प्रतिशत अधिक उत्पन्न किया। किसी किसी क्षेत्र में तो इतना अधिक कि यह १०० प्रतिशत तक भी था।

'रूरल क्रेडिट मूवमेंट' (Rural Credit Movement) में विकास :—

पिछले चार वर्ष से 'रूरल क्रेडिट मूवमेंट' में बराबर उन्नति हो रही है। ये एक प्रकार की स्थानीय बैंक हैं, जो कि किसानों को आवश्यकता के समय रुपया

(Hsinhua News—January, 14, 1954)

उधार देतीं हैं। इनकी संख्या आजकल ६८७१ है। सन् १९५० में यह १०२ थी, और आजकल इनके सदस्यों की संख्या ४,०००,००० है। इनके अतिरिक्त १४,००० 'क्रेडिट म्यूचुअल ऐड ग्रुप' हैं, यह भी उसी प्रकार कार्य करतीं हैं, परन्तु इनके पास कोष नहीं रहता।

सबसे अधिक उन्नति 'क्रेडिट कोऑपरेटिव' की मध्य चीन में हुई है। यहां पर कृषकों का सुधार पिछले वर्षों ही हुआ है। आजकल यहां पर ३५८५ क्रेडिट कोऑपरेटिव हैं, जब कि १९५१ में केवल ४ ही थीं।

कृषकों को रुपया उधार देकर इन्होंने बड़ा उपकार किया है। किसानों को बीज, खाद, औज़ार तथा नकद रुपया इनसे मिल जाता है। इस प्रकार से यहाँ के कृषक हर प्रकार के दुर्भाग्य से बचे हैं। प्राचीन समय में इनके न होने के कारण से इनको बड़े संकट का जीवन व्यतीत करना पड़ता था। इस क्षेत्र में उधार लिये गये रुपये ने कृषकों की सिंचाई सम्बन्धी समस्यायें हल कर दीं हैं। किसानों ने सिंचाई के हेतु नहरें निकाल ली हैं, ट्यूब वैल कुदवा दिए हैं तथा इनके साथ साथ जीव जन्तु, मशीनें, व खाद भी खरीद ली है।

आजकल यहां पर किसानों की आर्थिक दशा इतनी उन्नति के कारण सुधर गई है। पहले उधार देने वाले पूंजीपति बहुत अधिक ब्याज पर रुपया इन लोगों को देते थे। इस बुराई को इन बैंकों ने दूर कर दिया है। इनके कारण कोई भी अन्य बड़ी बैंक गाँव में अपनी शाखा स्थापित नहीं कर सकती।

जीव जन्तु (Livestock) :—

चीन में भाँति भाँति के जीव जन्तु पाये जाते हैं। परन्तु पालतू जीव-जन्तुओं की संख्या अधिक है। ये जीव-जन्तु कृषि विभागों में विशेषतौर पर पाये जाते हैं। इनका वितरण कई भौगोलिक परिस्थियों पर निर्भर रहता है। चीन में सुन्दर स्टेपलैंड का विशेषरूप से अभाव है, साथ ही यहाँ इनके खाने के लिए चारा भी बहुत कम उत्पन्न होता है। अकाल वाले क्षेत्रों में इनका प्रारम्भ से ही अभाव रहा है। अब भी जितने भी जीव-जन्तु पाये जाते हैं, वह अधिकतर उन क्षेत्रों में हैं, जो कि कृषि के दृष्टिकोण से बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। घनी आबादी का भी इनके वितरण पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इस देश में माँस खाने का प्रचार नहीं है। चीनी लोग अधिकतर दूध, घी, मक्खन व पनीर इत्यादि का प्रयोग करते हैं। यहां के कृषक जीवजन्तुओं का प्रयोग कृषि में भी करते हैं, और इसी दृष्टिकोण से ये यहाँ बहुत महत्वपूर्ण हैं।

चीन के उत्तरी शुष्क भाग में अधिकतर घोड़े व खच्चर मिलते हैं। अधिकतर

(Hsinhua News from Embassy of China—January 6, 1954)

इनका प्रयोग बोझा ढोने के लिये किया जाता है। यह दक्षिण में धान के खेत में कार्य करने योग्य नहीं हैं। भारतवर्ष की भाँति चीन में पशुओं का प्रयोग बोझा ढोने के लिये ही होता है। यहां पर गायें कृषि व दुग्धशालाओं के हेतु पाली जातीं हैं। ये लोग गाय का गोश्त बहुत ही कम मात्रा में खाते हैं। यहाँ पर घोड़े व खच्चरों की संख्या ६० लाख से अधिक है। यह उत्तरी चीन में मंचूरिया तक फैले हुये हैं।

मध्य चीन में अधिकतर बैल व भैंस पाई जातीं हैं। भैंसे प्रायः धान के खेतों में कार्य करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। बैल हल चलाने में प्रयोग किए जाते है। इनकी कुल संख्या २० लाख से अधिक है। यहाँ के कृषक गाय को दूध के हेतु भी पालते हैं। चीन के दक्षिणी भाग में भी जीवजन्तु दृष्टिगोचर होते हैं। सीक्याँग बेसिन एक प्रमुख क्षेत्र है, जहां ये विशेष तौर पर मिलते हैं।

चीन में कई ऐसे क्षेत्र हैं, जहां दुग्धशालाओं की उन्नति हो सकती है। परन्तु शुरू से यह एक अधिक उन्नतिशील देश नहीं रहा इसलिए इनका विकास नहीं हो सका। चीन की आधुनिक सरकार द्वारा इस ओर अब विशेष ध्यान दिया जा रहा है। अब भी कई ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ यह धन्धा उन्नति कर गया है। आशा है कि भविष्य में यह धन्धा अवश्य उन्नति कर जायेगा।

चीनी लोग प्रायः सुअर का मांस ही खाते हैं। इसका गोश्त बड़ा स्वादिष्ट होता है। यह चीन भर में पाये जाते हैं, इनका विस्तार अधिकतर उन क्षेत्रों में है, जिनमें चावल, गेहूं, जो, ज्वार-बाजरा इत्यादि उत्पन्न होते हैं। मध्य का क्षेत्र इस दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो इनके वितरण का घनत्व भी जनसंख्या के घनत्व पर निर्भर है। इनकी कुल संख्या ६० लाख से अधिक बतलाई जाती है।

उत्तर व पश्चिम के अर्द्ध शुष्क भागों में भेड़ें अधिक पाई जाती हैं। इनका विस्तार थ्येनशान पर्वत श्रेणियों से लेकर मंगोलिया व मंचूरिया तक है। नानलिंग पर्वतश्रेणियों के ढालों पर भी यह पाली जाती हैं। इनके पालने का ध्येय यह है, कि इनसे ऊन व चमड़ा प्राप्त किया जाय। भेड़ों को अधिकतर बंजारे लोग या गड़रिये पालते हैं। ये लोग इसके अतिरिक्त कोई अन्य विशेष धन्धा नहीं करते। कुछ भागों में लोग इन भेड़ों का गोश्त भी खाते हैं। मुर्गियों के अण्डे खाने का यहाँ प्रचार नहीं है। कुछ लोग मुर्गियाँ व्यापार के दृष्टिकोण से पालते हैं। प्रति वर्ष बहुत से अण्डे व अण्डों से तैयार की हुई वस्तुयें विदेशों को भेजी जाती हैं।

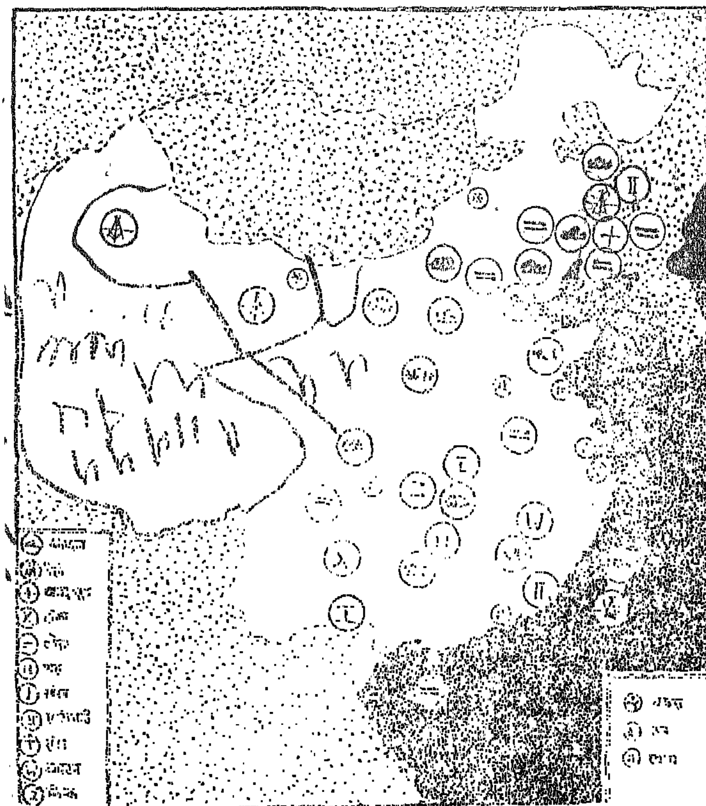
चीन की नई सरकार ने बोझ ढोने वाले जीव-जन्तुओं के विकास की ओर पिछले दो वर्षों से बहुत अधिक ध्यान दिया है, जिसके फलस्वरूप जीव-जन्तुओं की संख्या १९५३ में ५,५००,००० हो गई। ऐसा कहा जाता है, कि

१९५२ में यह संख्या काफी कम थी। अब जीव-जन्तुओं में सुअर, बकरे तथा चिकिन मुख्य हैं। इनकी कुल संख्या १९५३ में १५० लाख थी।

सुअर पालने का धन्धा होनान प्रान्त में इतनी उन्नति कर गया है, कि इसकी आय, चावल जो कि यहाँ सबसे अधिक होता है, उसके मूल्य का १/५ वां हिस्सा है। उत्तरी चीन के शान्शी प्रान्त में किसानों को मुर्गियों के अण्डों से इतना लाभ हुआ, कि उसका मूल्य ४,०००,०००,००० युआन (Yuan) था, यह वास्तव में सम्पूर्ण चीन की कृषि की आय का ३·७ प्रतिशत था। इस कृषि आय में औद्योगिक फसलें सम्मिलित नहीं हैं।

खनिज-सम्पत्ति (Mineral Wealth):—

आधुनिक औद्योगिक उन्नति के आधार खनिज पदार्थ ही हैं। वर्तमान मशीन युग वास्तव में दो ही प्रमुख खनिजों पर निर्भर है। पहला कोयला तथा



चीन—खनिज पदार्थ तथा औद्योगिक कृषि उपज

दूसरा लोहा। यही दो ऐसे स्तम्भ हैं जिन पर कि आधुनिक सभ्यता उन्नति कर रही है। दुर्भाग्य से चीन एक ऐसा देश है, जिसकी स्थिति एशिया में अद्वितीय है। वर्षों से यह अन्य संसार के देशों से अपनी भौतिक परिस्थितियों के कारण पृथक रहा है। प्रारम्भ से ही यह एक कृषि प्रधान देश रहा है। इसने खनिज पदार्थों की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। परन्तु कृषि उन्नति के लिये खनिज पदार्थों का होना भी आवश्यक है।

विशेषज्ञों का कहना है, कि आज से दो हज़ार वर्ष पहले चीनी लोगों को कुछ आवश्यक खनिज पदार्थों का ज्ञान था और कदाचित् वे उन्हें प्रयोग भी करते थे। योरोपियन यात्रियों ने तो मध्यकालीन युग में कैथे (Cathay) की सम्पत्ति के विषय में विचित्र लोकोक्तियाँ प्रचलित की थीं। न केवल इतना ही, बल्कि मार्कोपोलो जब वापस पहुंचा तो उसने वेनेशियन लोगों को यह बतलाया कि एशिया में चीन एक ऐसा देश है, जो कि आप लोगों से भी अधिक लोहे व कोयले का प्रयोग करता है। हज़ारों वर्षों तक लोगों को इस बात का विश्वास नहीं था, कि चीन एक निर्धन देश है और यहाँ के लोगों का जीवन कठिनाइयों व संकटों से भरा हुआ है।

पिछले वर्षों जो कुछ भी भूगर्भ-विज्ञान सम्बन्धी खोजें हुई हैं, उनसे कोई सन्तोषजनक सूचनायें नहीं ज्ञात हुईं। 'नेशनल ज्योलोजिकल सर्वे' जिसकी स्थापना प्रथम महायुद्ध के अन्त में हुई थी, और जो कि संसार में अपने सफल कार्यों के हेतु प्रसिद्ध थी, उसने भी कई स्थानों पर खोज की, परन्तु खोजें निष्फल रहीं।

प्रारम्भ से ही यह देश उन धातुओं में निर्धन रहा है, जिनकी उद्योग-धन्धों में बहुत आवश्यकता रहती है। यदि इनमें से किसी की भी अधिकता होती तो निस्सन्देह यह देश उद्योगों में कुछ उन्नति कर गया होता। लोहा यहाँ पर पाया जाता है, परन्तु उतनी मात्रा में नहीं कि बड़े बड़े आधुनिक उद्योग-धन्धे स्थापित हो सकें, रांगे में भी इसकी स्थिति महत्वपूर्ण है। टंगस्टन व ऐन्टीमनी के लिये भी यह संसार में बहुत प्रसिद्ध है। तांबा यहाँ कई क्षेत्रों में पाया जाता है और इस धातु में भी यह एक मुख्य स्थान रखता है। लेड, ज़िन्क तथा बिस्मथ इत्यादि कुछ अन्य धातुयें हैं, जो कि कहीं कहीं पर मिल जाती हैं।

लोहा :—यह एक मुख्य धातु है, और चीन के कई प्रान्तों में पाई जाती है। परन्तु इसकी वास्तविक उन्नति पिछले कुछ ही वर्षों से हुई है। लोहे की खानों की स्थिति यहां कोई विशेष महत्वपूर्ण नहीं है, क्योंकि इनकी स्थिति बहुत ही आन्तरिक क्षेत्रों में है। दूसरे, यह कोयले की खानों से दूर हैं। यातायात के अच्छे साधनों के न होने के कारण इनमें अधिक विकास नहीं हो सका। उच्च कोटि का मेगनीटाइट लोहा यांगटिसीक्यांग नदी पर, हैन्को के निकट, तेईह तथा

ऐन्बी में मिलता है। यहां की धातुयें महायुद्धों के समय जापानी लोग अपने देश में ले जाया करते थे। इन खानों की स्थिति कोयले की खानों से बहुत दूर है। इन खानों से युद्ध पूर्व १० लाख टन लोहा, युद्ध के प्रारम्भ तक विदेशों को भेजा जा चुका था। पर्तदार हिमेटाइट नाम की धातु उत्तरी चीन में सुआन, हुआ-लु गयेन जो पेकिंग से १५० मील दूर उत्तर पश्चिम में है, पाई जाती हैं। यातायात की कठिनाई के कारण यहां से धातु अधिक मात्रा में नहीं निकाली जाती। दक्षिणी-पश्चिमी चीन में ज़ैचवान के स्थान पर तथा अन्य जगहों पर कुछ लोहा प्राप्त किया जाता है। मंचूरिया के दक्षिण में भी कुछ महत्वपूर्ण लोहे की खानें पाई जाती हैं। लोहा यहां पर घटिया किस्म का प्राप्त होता है। अन्शान तथा पेक्सिद् मुख्य खाने हैं। शान्सी में लोहे का रिजर्व ३००,०००,००० मेट्रिक टन है, मुख्य रिजर्व की मात्रा १९८४०,०००,००० मेट्रिक टन है। हैंको के निकट तैई (Tayeh) के स्थान पर रिजर्व सबसे अधिक है। चीन का कुल रिजर्व लोहा नेलसन डिकिन्सन के अनुसार २,१८४,७६५००० मेट्रिक टन है। (डा० सी के अनुसार धातु का कोष यहां ३६८०००००० टन आधुनिक साधनों से निकालने योग्य है। इस विस्तृत देश के लिये इतनी मात्रा बहुत काफी है। उत्पादन १९४२ में डा० क्रेसे के अनुसार ६,७२७,२१७ टन था, यांग टिसी क्यांग के क्षेत्र से ३० लाख टन तथा अन्य स्थानों से कुल १० लाख टन प्राप्त हुआ। सन् १९४६ में लोहे का उत्पादन ३६४००० मेट्रिक टन था, इसमें पिगआइरन की मात्रा ९४००० मेट्रिक टन, स्टील इनगोट एवं कास्टिंग ८३००० टन तथा पाइराइट ४२९०७ टन था। कुछ लोगों का यह भी मत है, कि चीन का यह धन्धा संसार में सबसे अधिक प्राचीन है, और प्राचीन लुहार इसको घरेलू ढंग पर किया करते थे।

चीन की आधुनिक सरकार ने बहुत सा लोहा पाओटोव (Paotov) जो कि ह्वांगहो नदी के उत्तर में सुइयूआन प्रान्त में है, पता चलाया है। यह इतनी मात्रा में है, कि एक ओर लोहे व स्पात का केन्द्र आनसन की टक्कर का स्थापित किया जा सकता है। इसकी खोज १९५३ में यहाँ की 'मिनिस्ट्री आफ ज्योलोजी' ने की थी। इसके अतिरिक्त अन्य स्थानों पर भी नवीन खोजों के अनुसार लोहे की खानों का पता चलाया गया है। कुछ तो पेकिंग पाओटोव रेलवे के निकट कोयले की खानों के समीप स्थित हैं। एक और नवीन लोहे की खान यांग टिसी क्यांग के बेसिन में स्थित टेई के स्थान पर १९५३ में पता लगा ली गई है। इस क्षेत्र का उत्पादन अब पहले की अपेक्षा बहुत अधिक हो गया है। इसी के निकट मध्य में एक और खान का पता चला है, यह इन दोनों अलग भागों में मिलाती है।

अब इस सम्पूर्ण क्षेत्र का उत्पादन बहुत अधिक बढ़ गया है और एक बहुत बड़े स्पात बनाने के कारखाने को स्थापित करने की योजना बनाई जा रही है।

२. तांबा :- तांबा एक बहुत ही प्राचीन धातु है, इसका प्रयोग चीन में २५०० वर्ष पूर्व भी होता था। इसका प्रयोग वर्तमान समय में दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। आजकल यह अनेक उद्योग धन्धों में प्रयुक्त किया जाता है। विद्युत-उद्योग में इसका सबसे अधिक प्रयोग होता है। चीन एक ऐसा देश है, जहां यह धातु प्राचीन काल से ही प्रयुक्त की जा रही है। यहां इसका वितरण कई स्थानों पर है। प्रमुख चीन में दक्षिण का भाग अथवा हुनान प्रदेश प्रसिद्ध है। वैसे फारमूसा व मंचूरिया के क्षेत्र तांबा निकालने में प्रमुख रहे हैं। चीन के अन्य क्षेत्रों में रेड बेसिन व ज़ेचवान भी हैं यहां भी कुछ मात्रा में तांबा निकाला जाता है। चीन, मंचूरिया व फारमूसा का कुल उत्पादन डा० क्रेसे के अनुसार ८२८९ टन था, इसमें से चीन (यूनान) का कुल ५३३ टन था इस धातु का भविष्य चीन में उज्ज्वल नहीं है। सन् १९५३ में जो खोजें की गई, उनमें कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई, लेकिन एक बात अवश्य है, वह यह कि इसका उत्पादन इस समय पहले की अपेक्षा २० प्रतिशत बढ़ गया।

टंगस्टन तथा ऐण्टीमनी :—यह दो धातुयें ऐसी हैं, जिनमें चीन एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह धातुयें नानलिंग पर्वत श्रेणियों के पूर्वी भागों में मिलती हैं। हुनान एक ऐसा प्रान्त है, जो इनकी खानों के लिये विशेष रूप से प्रसिद्ध है। प्रथम महायुद्ध के समय इतने बहुत बड़ी मात्रा में टंगस्टन प्राप्त की, अब भी यहाँ इस धातु का बहुत सा कोष है। चीन के क्वाण्टंग व क्वांगसी प्रान्त भी इन धातुओं के लिये प्रसिद्ध हैं। रिजर्व का यहां २,४६८८,६२४ टन से अधिक अनुमान लगाया गया है। श्री नेल्सन डिकरमेन के अनुसार १९३५ में इसका उत्पादन १४,५४१ टन था। सन् १९४८ में उत्पादन १२२०० मेट्रिक टन हो गया, जब कि विश्व का ३२००० टन था। यह विश्व में सब से अधिक था, आज कल भी इसका स्थान सर्व प्रथम है, बर्मा की स्थिति द्वितीय है। इस शताब्दी के प्रारम्भ से ही इस देश ने ऐण्टीमनी निकालना प्रारम्भ कर दिया था। पहले चीन विश्व की ६० प्रतिशत एण्टीमनी उत्पन्न करता था, परन्तु अब बोलेविया मैक्सीको संयुक्त राज्य अमरीका तथा दक्षिणी अफ्रीका संघ ने मिलकर इसे पछाड़ दिया है। सन् १९४८ में इसका उत्पादन केवल ३२५१ टन ही रह गया। अब भी इस धातु का रिजर्व बहुत अधिक है। यह धातु हुनान, क्वाण्टंग, क्वीचो प्रान्त में मिलती है। इसका उत्पादन १९३९ तक सब से अधिक रहा था, (लगभग १९६८९ टन सन् १९२८ में) परन्तु मेक्सीको व बोलेविया के उत्पादन ने इस देश को पिछाड़ दिया।

रांगा :—राँगा आजकल एक मुख्य धातु है, इसका प्रयोग अनेक उद्योग-धन्धों में होता है। इसकी वास्तविक महत्ता इसलिये अधिक है, कि इसमें कुछ ऐसे गुण होते हैं जो किसी भी अन्य धातु में नहीं पाये जाते। चीन में इस धातु का स्थान लोहे के बाद है। मुख्य क्षेत्रों में यूनान तथा क्वांगसी प्रसिद्ध है। श्री नेल्सन डिकरमेन के अनुसार इसका उत्पादन १६३८ में १५,४४० टन था। इसमें से यूनान का उत्पादन केवल १०७३२ टन था। यही उत्पादन १६४६ में ४३०० मेट्रिक टन हो गया। हुनान प्रान्त में थोड़ा सा राँगा निकाला जाता है। इस समय से दिन प्रतिदिन इसका उत्पादन गिरता ही गया। दक्षिण ईरान में कोच्यू जिला धातु प्राप्त करने का प्रमुख क्षेत्र है। यहां १०० से अधिक खानें हैं। इनमें १,००,००० से अधिक मनुष्य कार्य करते हैं। सरकार ने आधुनिक ढंग से निकालवाना सन् १६३२ से प्रारम्भ किया है। यह धातु साफ करने के लिये होंगकोंग या फ्रेंच इंडोचीन में हैफोंग भेज दी जाती है। यूनान का रिजर्व १५,००,००० टन बतलाया जाता है। अन्य भागों में जो रिजर्व है उसका अनुमान केवल १००००० टन लगाया गया है।

लेड व जिन्क :—इन दोनों धातुओं में चीन एक सन्तोषजनक स्थान प्राप्त करता है। लेड, जिसे हम दूसरे शब्द में सीसा कहते हैं, कहा जाता है कि यह एक ऐतिहासिक महत्ता भी रखता है। रोमन साहित्य में इसका वर्णन दिया गया है, साथ ही ऐसा भी कहा जाता है कि रोमन सभ्यता के समय इसका प्रयोग नल इत्यादि बनाने में होता था। चीन में यह धातु प्राचीन समय से हुनान प्रान्त में निकाली जाती है। किरिन व लिआओनिंग, अन्य स्थान हैं जो इस धातु के लिये प्रसिद्ध हैं। मंचूरिया भी इसके उत्पादन में मुख्य स्थान प्राप्त करता है। हुनान प्रान्त में श्युकोशान के क्षेत्र बहुत प्रसिद्ध हैं। लेड का उत्पादन १६३८ में ३८४४ टन तथा जिन्क का १६४१ में ४८०६ टन था। आधुनिक चीन सरकार ने खोजें की हैं, उनसे सन्तोषजनक परिणाम मिले हैं। लेड व जिंक का उत्पादन १६५४ में ६७ प्रतिशत बढ़ जाने की आशा है।

मैंगनीज :—यह एक महत्वपूर्ण धातु है, इसका प्रयोग स्पात तयार करने में सबसे अधिक होता है। वैसे इसके प्रमुख उत्पादक भारतवर्ष व रूस में हैं परन्तु चीन में भी यह निकाला जाता है। इनके क्षेत्र अधिकतर हुनान तथा क्वांगसी प्रान्तों में हैं। चीन में इस धातु का उत्पादन कभी भी स्थिर नहीं रहता। १६३७ में ७६,१८७ टन मैंगनीज़ निकाली गई। सन् १६४७ और ४८ दोनों में इसका उत्पादन २०,००० मेट्रिक टन हुआ। यह कदाचित् यहां का सबसे अधिक उत्पादन है, इससे अधिक और किसी भी वर्ष यह धातु नहीं निकाली गई। घरेलू रिजर्व

उपयुक्त मात्रा में बतलाया जाता है।

अल्यूमिनियम :—यह एक बहुत ही हल्की धातु है। सर्व प्रथम १८२५ में इसकी खोज एक डेनिश वैज्ञानिक हेन्सक्रिस्चीयन ओस्टेड ने की थी, इसके उपरान्त एक जर्मन वैज्ञानिक फ्रैडरिच वोलर ने इसके गुणों का पता चलाया। व्यापारिक ढंग पर इसका प्रचार १८८८ में पिट्सबर्ग नगर से प्रारम्भ हुआ। दुर्भाग्य से चीन में इस धातु का अभाव है। केवल होपी व लियाओनिंग प्रान्त ऐसे हैं जहाँ यह धातु कुछ मात्रा में प्राप्त होती है। बाक्साइट शाटंग व यूनान के प्रान्तों से भी प्राप्त किया जाता है। अल्युमिनियम का उत्पादन १९४२ में १५००० मेट्रिक तथा १९४५ में २९२,३०० मेट्रिक टन था, यही उत्पादन १९४६ में १३८,००० टन हो गया, अगले वर्ष तो और भी अधिक गिर गया।

मरकरी या पारा :—यह खनिज चीन में घरेलू आवश्यकता के लिये उपयुक्त मात्रा में पाया जाता है। इसके क्षेत्र हुनान व क्वीचो प्रान्त में हैं। वैसे यह फारमूसा में भी निकाला जाता है। सन् १९४८ में पारे का उत्पादन २९० मेट्रिक टन था जब कि १९४२ में यही ४२९३ मेट्रिक टन हुआ था।

सोना व चांदी :—इन बहुमूल्य धातुओं में चीन एक बहुत ही निर्धन देश है। सोना यहाँ कदापि नहीं होता, बल्कि तिब्बत की सीमा व मंचूरिया के क्षेत्रों से प्राप्त किया जाता है। वैसे तांबा खोदते समय या इसी के साथ थोड़ी बहुत मात्रा में प्राप्त हो जाता है। अनुमान लगाया जाता है कि इसका उत्पादन ५००,००० औंस से अधिक नहीं है। चांदी लेड के साथ ही मिश्रित दशा में पाई जाती है, इसके लिये हुनान प्रान्त प्रसिद्ध है, लेकिन फारमूसा भी मुख्य स्थान रखता है।

चीन में इन धातुओं के अतिरिक्त कुछ और भी खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। कोयला, तेल व जल का वर्णन आगे दिया गया है। यहाँ पर हम केवल गन्धक व नमक का ही वर्णन कर रहे हैं। गन्धक चीन में अनेक स्थानों पर प्राप्त की जाती है। मुख्य प्रान्तों में हुनान शांटंग हैं, लेकिन फारमूसा भी उच्च स्थान रखता है। आधुनिक चीन सरकार ने अन्य खोजों के अन्तर्गत इनका पता जैचवान लियाओनिंग तथा शान्शी में भी लगाया है और अब इन प्रान्तों से भी गन्धक प्राप्त किया जाता है। कुल उत्पादन डा० क्रेसे के अनुसार १९३६ में ७००८ टन, फारमूसा को सम्मिलित करते हुये था।

नमक चीन में कई स्थानों पर निकाला जाता है। परन्तु सबसे प्रमुख ढंग समुद्र के जल को सुखा कर ही है। इस ढंग से अधिकतर समुद्र तट पर यह प्राप्त किया जाता है। यांगटिसीक्यांग के डेल्टे का भाग एक प्रसिद्ध क्षेत्र है। नमक यहां झीलों से भी प्राप्त किया जाता है। मंगोलिया, शान्शी व मंचूरिया

के अन्तरिक क्षेत्रों में जो झीलें हैं, वह विशेष तौर पर प्रसिद्ध हैं। परन्तु उत्पादन अधिक नहीं है। जैचवान प्रान्त में कुछ ऐसे कुएं हैं; जिन में से नमक निकाला जाता है। कुछ अन्य प्रान्तों में शांटंग, क्यांगसू लियाओनिंग तथा होपी हैं। चीन का कुल उत्पादन अनुमान लगाया जाता है; कि ३० लाख टन से अधिक है।

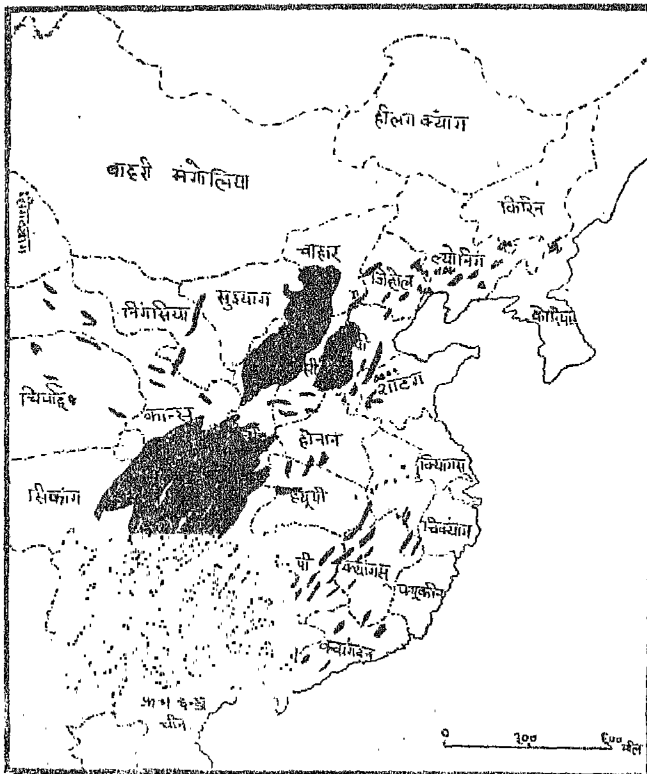
शक्ति के साधन :—वर्तमान युग औद्योगिक प्रगति का युग है, और उद्योग धन्धों की प्रगति का मूल आधार चालक शक्ति है। उच्च पैमाने पर उद्योगों की व्यवस्था करने के लिये विशाल यन्त्रों की आवश्यकता होती है। यन्त्रों को चलाने के हेतु चालक शक्ति होनी चाहिए। इस शक्ति की औद्योगिक महत्ता के कारण ही इसे औद्योगिक शक्ति के नाम से पुकारते हैं। चालक शक्ति के वैसे तो अनेक साधन है, परन्तु उनमें तीन ही मुख्य हैं—कोयला, खनिज तेल तथा जल-विद्युत्।

आज से चालीस वर्ष पहले कोयले का महत्व बहुत अधिक था, क्योंकि उस समय जल-विद्युत् व खनिज-तेल का प्रयोग अधिक नहीं था। विश्व की कुल चालक शक्ति का लगभग ९० प्रतिशत भाग कोयले से ही प्राप्त होता था। अब हाल में ही जल-विद्युत व तेल का प्रयोग बहुत अधिक बढ़ गया है, यद्यपि कोयले का महत्व अब भी उतना ही है, जितना कि पहले था। चीन एक ऐसा देश है, जिसमें कोयले के अतिरिक्त अन्य किसी भी शक्ति के साधन का विकास नहीं हो सका। जल शक्ति की ओर लोगों ने कोई विशेष ध्यान नहीं दिया और खनिज तेल में तो यह आरम्भ से ही निर्धन है। आधुनिक सरकार ने यद्यपि कई स्थानों पर खोजें कीं परन्तु कहीं भी सफलता पूर्वक खनिज तेल प्राप्त नहीं हो सका।

कोयला :—कोयला, जिस पर कि आज चीन का औद्योगिक विकास निर्भर है। अत्यन्त प्राचीन वनस्पति का परिवर्तित रूप है। इसकी महत्ता आजकल इतनी अधिक है, कि अनुमान लगाया जाता है कि विश्व के नित्य कार्यों के योग का दो तिहाई भाग इसी के द्वारा पूर्ण होता है। चीन में इसका प्रयोग प्राचीन काल से हो रहा है। यहाँ इसका वितरण कई स्थानों पर है। परन्तु प्रमुख क्षेत्र उत्तर की ओर ही हैं।

अमरीकन लेखकों के अनुसार विश्व में कोयले का रिजर्व अनुमान लगाया गया है कि सात ट्रिलियन (७०००,०००,०००,०००) टन है, इसमें से आधा केवल संयुक्त राज्य अमरीका में ही है। रूस के पास डेढ़ ट्रिलियन तथा कैनाडा के पास केवल एक ट्रिलियन है। चीन में इन देशों की अपेक्षा बहुत ही कम है। अनुमान

लगाया जाता है कि यहाँ रिजर्व '२८३,५३६,८३०,९०० टन है। अभी इस बात पर वादविवाद है, क्योंकि यह आँकड़े १९४५ के हैं। इसके पहले जो रिजर्व के आंकड़े हैं वह भिन्न हैं। सन् १९१३ में 'इन्टरनेशनल ज्योलोजिकल कांग्रेस' ने जो अपने आंकड़े प्रकाशित किए उनके अनुसार यह ९९४,९८७०००००००० टन था। यह आंकड़े श्री ड्रेक महोदय के आधार पर थे। इन्होंने जो अनुमान लगाया वह एक फिट मोटी पर्त का ४००० फीट गहराई तक का था। इसके उपरान्त 'ज्योलोजिकल सर्वे आफ चीन ने जो अनुमान लगाया, वह केवल २३,४३५,०००,००० टन था। यह अनुमान एक गज़ मोटी तह का १००० गज़ तक का था। जर्मन विशेषज्ञों का अनुमान केवल २२०,०००,०००,००० टन था। परन्तु 'ज्योलोजिकल सर्वे आफ चीन' ने जो १९४० के बाद अनुमान लगाया वह



चीन—कोयले की खानें

२५०,०००,०००,००० टन था, इसके बाद १९४५ में जो आंकड़े इसने दिये, वह

ऊपर दिये ही जा चुके हैं।*

वैसे चीन के प्रत्येक प्रान्त में थोड़ा बहुत कोयला पाया जाता है, परन्तु सबसे अधिक शेन्शी व शान्शी प्रान्तों के लोयेस के पठारों में मिलता है। यहाँ से चीन के कुल उत्पादन का लगभग ८० प्रतिशत कोयला प्राप्त होता है। अन्य समुद्र तटीय प्रान्तों में ल्याओनिंग, होपी व शान्टंग मुख्य हैं। चीन का कुल उत्पादन द्वितीय महायुद्ध पूर्व तीन करोड़ टन था, परन्तु युद्ध के समय इसका उत्पादन दुगुना बढ़ गया, और १९४३-४४ में यह ६२,४६४,९५६ टन हो गया। इसके बाद कोयले के उत्पादन में बराबर वृद्धि होती रही, और १९५४ में यह इतनाअधिक बढ़ा कि १९५३ के योग का ६ प्रतिशत अधिक है। इतना उत्पादन पिछले किसी भी वर्ष नहीं हुआ।

चीन में कोयले का उत्पादन :—

१९४६	—	१८·५	(मिलियन मेट्रिक टनों में)
१९४७	—	१७·२	,,
१९४९	—	१५·५	,,

कोयले की खानों का वितरण ** :—

(१) शान्शी व शेन्शी की खानें:—उत्तरी चीन में लोयेस के पठारी क्षेत्र में शान्शी व शेन्शी के प्रान्तों में बहुत अधिक कोयला पाया जाता है। लोगों का अनुमान है, कि यहां चीन के कुल रिजर्व का ९० प्रतिशत कोयला पाया जाता है। केवल शान्शी प्रान्त में ही ३६ बिलियन ऐन्थ्रेसाइट कोयले का भण्डार है इस क्षेत्र की बनावट के विषय में विशेषज्ञों ने बतलाया है कि यहां तीन लम्बी लम्बी पेटियाँ हैं जो कि उत्तर-पश्चिम की ओर फैली हुई हैं। मध्य की पेटी कुछ धंसी हुई है, और इसके तीन टुकड़े हो गये हैं। उत्तर की ओर तातंग, मध्य में निन्गब

* German estimate of Chinese coal reserve in 1937 was 220 billion tons while the world estimate was 4,600 billion and out of it U.S.A. 1975 billion, the same year. In 1932 the Chinese Geologist, W. H. Wong and T. F. Hou estimated the probable reserve to be 246 billion tons, including at least 185·2 billion tons of Bitaminous and 45·5 billion tons of Anthracite coal. In 1912 an American Geologist estimated Chinese Reserves to be 996·6 billion tons. For these and other estimates, see George B. Cressey, China's Geographic Foundations, page 112.

** On the basis of L. Dudley Stamp—'Asian' Regional and Economic Geography Page 476-478.

तथा दक्षिण में फेन्हो। पूर्वी पेटी संयुक्त राज्य अमरीका की पेंसिल्वेनिया की पेटी से मिलती जुलती है। इसमें पर्तें जगह जगह पर मुड़ी हुई हैं। पेटी के मध्य में प्राचीन चट्टानों की उठी हुई पहाड़ी हैं। यह लगभग चालीस हज़ार वर्गमील का क्षेत्र सम्मिलित करती है। इन तीनों पेटियों में कई मोटी मोटी कोयले की पर्तें हैं, इनकी मोटाई २० फीट से लेकर ३० फीट है। यहाँ के लोग अपने प्राचीन ढंग से कोयला इन खानों से प्राप्त करते थे। लेकिन आजकल यह बहुत ही आधुनिक ढंग से निकाला जा रहा है। आशा की जाती है, कि भविष्य में यह क्षेत्र एक बहुत ही बड़ा औद्योगिक क्षेत्र हो जायेगा।

(२) पेकिंग के निकट की खानें :– यह खानें शान्शी पठार के पूर्वी भाग में उत्तरी चीन के मैदान की सीमा पर हैं। यह खानें होपी से दक्षिण की ओर होनान तक फैली हुई हैं। यहाँ कोयला बहुत ही उत्तम प्रकार का मिलता है। अनुमान लगाया जाता है, कि चीन के मैदान के नीचे भी कई कोयले की पर्तें हैं। पीपिंग-हैंको रेलवे बन जाने से इस क्षेत्र को बहुत लाभ पहुंचा है। अभी तक यहां पर एक ब्रिटिश कम्पनी कोयला निकालने का कार्य कर रही थी, परन्तु अब चीन की नवीन सरकार ने स्वयं ही इस कार्य को हाथ में ले लिया है। सन् १९५४ में यहां का कोयले का उत्पादन पहले की अपेक्षा बहुत अधिक हो गया है।

(३) उत्तर की खानें :—इस क्षेत्र में कोयले की मात्रा बहुत कम है। इस में कई प्रान्त शामिल हैं, जिनमें जिहोल, चहार व सुइयान मुख्य हैं। कोयला यहां बहुत ही घटिया किस्म का प्राप्त होता है।

(४) शांटंग के निकट की खानें :—यहां अधिकतर बिटुमिनस किस्म का कोयला पाया जाता है। इस क्षेत्र में जो प्रान्त आते हैं उनमें शांटंग, उत्तरी क्यांग्सू तथा एन्वी मुख्य हैं। कोयले की बनावट बहुत प्राचीन है।

(५) मंगोलियन सीमा की खानें :—यह उत्तर पश्चिम में ऐसे बेसिन में पाई जाती हैं जो कि चारों ओर से पर्वतों से घिरे हुये हैं। यातायात के सुगम साधन न होने के कारण यहां से बहुत कम कोयला प्राप्त किया जाता है।

(६) यॉगटिसीक्यॉग की उच्च घाटी की खानें :—यह भाग रेड बेसिन का भाग भी कहलाता है। कोयला यहाँ बहुत बुरी दशा में पाया जाता है, और जो कुछ भी प्राप्त होता है, वह बहुत ही निम्न श्रेणी का है। पर्तें बहुत ही पतली हैं। लेकिन दक्षिण की ओर कुछ मोटी हो गई हैं।

(७) यांगसीक्यांग के मध्य की खानें :—ये खानें हुनान प्रान्त में [illegible] में हैं। इसमें छूपी की खानें भी सम्मिलित है। यहां कई कोयले की छोटी छोटी खानें हैं, लेकिन कोयला घटिया किस्म का ही मिलता है।

(८) यांगटिसीक्यांग की निचली घाटी की खानें :—इस डेल्टे वाले भाग में चिक्यांग प्रान्त की खानें तथा फ्यूकीन व क्वांगसी प्रान्तों की खानें शामिल हैं। कोयला आर्थिक दृष्टिकोण से कोई विशेष महत्वपूर्ण नहीं है।

(९) दक्षिण की खानें :—इस क्षेत्र में क्वान्टंग, क्वांगसी तथा यूनान प्रान्त की खानें सम्मिलित हैं। कोयला बहुत ही घटियां किस्म का है, तथा बहुत ही बुरी दशा में पाया जाता है। इसकी भी कोई विशेष आर्थिक महत्ता नहीं है।

चीन में कोयला अधिकतर उन्हीं क्षेत्रों से प्राप्त होता है, जहाँ की खानें या तो रेल के किनारे पर और या समुद्र तट के निकट स्थित हैं। यहां के कोयले का प्रयोग रेलों तथा जहाजों में अधिक होता है, परन्तु अब अनेक उद्योग-धन्धों में उन्नति हो जाने के कारण, इसका प्रयोग उनमें भी होने लगा है। बहुत सा कोयला घरेलू उपयोग के हेतु शंघाई, कान्टन व हैन्को आदि बड़े बड़े नगरों में भेज दिया जाता है। चीन का भविष्य उद्योग-धन्धों के दृष्टिकोण से बहुत ही उज्ज्वल है।

पैट्रोल :—

आज से प्रायः एक सौ वर्ष पहले पैट्रोल का बहुत कम प्रयोग होता था। परन्तु अब इसका प्रयोग चालक शक्ति, चिकना करने, ताप तथा प्रकाश के हेतु बहुत अधिक बढ़ गया है। धीरे धीरे यह कोयले का स्थान प्राप्त कर रहा है। साथ ही इसका आर्थिक महत्व भी दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। पैट्रोल का वितरण संसार में बहुत ही सीमित है। कुछ ऐसे देश हैं, जहाँ न तो पैट्रोल ही पाया जाता है और न भविष्य में पाये जाने की आशा ही है। चीन उनमें से एक है। यहां अनेक स्थानों पर खोजें की गईं, परन्तु कहीं भी संतोषजनक दशा में पैट्रोल प्राप्त नहीं हुआ। जो कुछ भी आशा की जाती है, वह या तो तिब्बत की सीमा पर कान्सू के उत्तर-पश्चिम में युमन के स्थान पर, या सिक्यांग प्रान्त में तियानशान पर्वतों पर वूसू के स्थान पर और या उत्तरी शेन्शी में येनशाँग के निकट है। इनमें से कुछ स्थानों पर निकाला भी जाता है*। इन स्थानों पर कुल मिलाकर ६१ से अधिक कुएँ हैं।

चीन में पैट्रोल का भविष्य उज्ज्वल नहीं है, और आशा यह की जाती है, कि यदि अन्य खोजों में सरकार को सफलता नहीं मिली तो कोयले से पैट्रोल प्राप्त किया जाने लगेगा।

यहाँ का कुल उत्पादन १६ लाख बैरेल से अधिक है। इसमें से कान्सू प्रान्त ने १९४४ में ६५६,१७६ बरेल, तथा लियाओनिंग ने ८०,३००० बैरेल १९४५

---

* Russel Smith—Industrial and Commercial Geography Page 85.

में प्राप्त किया । फारमूसा का १९४१ में १६०,००० बैरेल तथा होपी का १९३४ में १९२५ बैरेल था ।

चीन की आधुनिक सरकार ने अन्य कई स्थानों पर पैट्रोल की खोज की है, और ईंधन उद्योग की मिनिस्ट्री ने घोषणा की है, कि (१९५३) का उत्पादन १९५२ के उत्पादन का ३२·६ प्रतिशत अधिक था। यद्यपि यहाँ की सरकार अनेक प्रयत्न कर रही है, परन्तु फिर भी चीन से हम पैट्रोल के सम्बन्ध में कोई आशा नहीं कर सकते ।

जल-विद्युत् :—

आधुनिक युग में जल-विद्युत् का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है । क्योंकि इसमें किसी प्रकार का व्यय नहीं होता, यदि हम जल का उपयोग न करें, तो वह व्यर्थ ही बह जाता है । जल-विद्युत् उन्हीं स्थानों पर उत्पन्न की जा सकती है, जहां कि उत्पन्न करने के लिये भौगोलिक सुविधायें पाई जातीं हैं । चीन के दक्षिण-पश्चिम का भाग एक पर्वतीय व पठारी क्षेत्र है, इसमें कई छोटी छोटी तीव्र बहने वाली नदियाँ हैं । इसके अतिरिक्त यहां वर्षा भी अधिक होती है । चीनी लोगों ने कोयले की अधिकता के कारण इसकी ओर आरम्भ से ही कोई विशेष ध्यान नहीं दिया, यही कारण है कि यहां इसका विकास नहीं हो सका ।

आधुनिक चीन की सरकार अब इस ओर विशेष ध्यान दे रही है । सन् १९५३ में यहां १३ थर्मो-पॉवर स्टेशन तथा जल-शक्ति उत्पन्न करने के केन्द्र स्थापित किये गये । इनमें से ६ बहुत ही बड़े बड़े पावर स्टेशन सोवियट यूनियन की सहायता से बनाये गये हैं । यह पिछले स्टेशनों के मुकाबिले १९·२ प्रतिशत अधिक शक्तिशाली हैं । सन् १९५४ में विद्युत शक्ति उत्पादन १९५३ की अपेक्षा ३·७ प्रतिशत अधिक हो गया और यह १९५२ की अपेक्षा २३·९ प्रतिशत अधिक है ।

इस समय भी चीन के अनेक प्रान्तों में नये नये पावर स्टेशन बनाये जा रहे हैं । इनमें से कई तो पूर्ण रूप से स्थापित हो चुके हैं, और उन्होंने शक्ति प्रदान करना भी प्रारम्भ कर दिया है । चुंगकिंग व ताइयान के पावर स्टेशन भी बनाये गए हैं । फुशिन पावर प्लान्ट, जो कि उत्तर-पूर्व में है, से आशा की जाती है वह १५ लाख की जनसंख्या वाले नगरों को भी शक्ति प्रदान कर सकेगा । इसके अतिरिक्त ६१९ बड़े बड़े लोहे के खम्भे भी बनाये जा चुके हैं इनका प्रयोग २२०,००० Volts की शक्ति तारों द्वारा ले जाने के लिये किया जायेगा ।

चीनी लोगों का रहन-सहन का स्तर ऊँचा करने के हेतु यहां की सरकार जल-विद्युत विकास की ओर अब विशेष ध्यान दे रही है ।

उद्योग-धन्धे Industries) :—

चीन आरम्भ से ही एक कृषि-प्रधान देश रहा है, यहां की अधिकांश जनसंख्या कृषि में लगी है। औद्योगिक विकास के दृष्टिकोण से अभी यह देश बहुत पिछड़ा हुआ है। वास्तव में इस देश के आर्थिक विकास में अनेक बाधायें रही हैं। सर्व प्रथम इस देश की प्रगति में सबसे बड़ी बाधा राजनैतिक अव्यवस्था की रही है, लेकिन आज के चीन में साम्यवादी सत्ता के आरोपण से यह बाधा दूर हो गई है। दूसरे, चीनी लोग अपने प्राचीन विचारों एवं रीति-रिवाजों के कट्टर समर्थक हैं, और कृषि की ओर ही विशेष तौर पर ध्यान देते हैं इन लोगों ने व्यापार तथा उद्योग की ओर आरम्भ से ही बहुत कम ध्यान दिया। तीसरे, यहां के आन्तरिक क्षेत्रों में यातायात की कोई सुविधा नहीं है और न कोई साधन है। इस कठिनाई के कारण कोई भी उद्योग-धन्धा आन्तरिक क्षेत्रों में पनपने नहीं पाया। चौथे, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भी इसका कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं रहा, यह कभी भी यहाँ के औद्योगिक निर्माण में बाधा डालती रही है। पांचवें, पूँजी की यहाँ सदा से कमी रही है, क्योंकि यह देश ही निर्धन प्राणियों का देश है। यहां के लोग अन्य देशों के लोगों की भांति धनवान नहीं है। जापानी श्रमिकों से यदि तुलना की जाय तो यहां के श्रमिकों की गतिशीलता बहुत कम है। उद्योग-धन्धों के विकास में यह विशेषता होनी अति आवश्यक है।

चीन की प्रमुख औद्योगिक उपजें (१९५४ में)

(In million metric Tons)

कोयला	८१·९९	
पिग आइरन	३·०३	
क्रूड स्टील	२·१७	
सीमेंट	४·७३	
पेपर	४८००००	
सूत का धागा	४·६	(मिलियन गांठे)
विद्युत	१०८००	(मिलियन K w t)

आधुनिक चीन की साम्यवादी सरकार ने आश्चर्यजनक सुधार किये हैं। उद्योग-धन्धों की प्रगति में इसका सबसे बड़ा हाथ है। सन् १९५३ में यहां एक पंच-वर्षीय योजना चलाई गई है, जो अब भी प्रचलित है। इस योजना के अन्तर्गत उद्योग-धन्धों में आश्चर्यजनक उन्नति हो रही है। आशा की जाती है, कि भविष्य में यह एक बहुत ही उन्नतिशील देश हो जायेगा।

इस देश की औद्योगिक व्यवस्था के दो रूप हैं :—(१) कुटीर उद्योग

तथा (२) मिल उद्योग। अत्यन्त प्राचीन-काल से कुटीर उद्योग यहाँ प्रचलित था, यह घरेलू ढंग पर किया जाता है। अधिकतर यहाँ के कृषक ही इसमें लगे हुये हैं। मिल उद्योग अधिक प्राचीन नहीं है और धीरे-धीरे उन्नति कर रहा है। पिछले कुछ वर्षों से इसकी औद्योगिक प्रगति तीव्र हो चली है। सोवियत यूनियन के वैज्ञानिकों की सहायता से यहां १४१ बड़े बड़े कारखाने मुख्य स्थानों पर बनाये जा रहे हैं। अन्य छोटे छोटे स्थानों पर जहां कहीं भी कच्चे माल की सुविधा है, मध्यम श्रेणी के कारखाने स्थापित कर दिये गये हैं।

कुटीर उद्योग:—चीन में यह उद्योग अनेक स्थानों पर पाया जाता है। लेकिन इनकी अधिकता उन्हीं स्थानों पर है, जहाँ कच्चे माल व व्यापार की सुविधायें पाई जाती हैं। कुटीर उद्योग में रेशम के कीड़े पालने का उद्योग एक महत्वपूर्ण उद्योग है। यह धन्धा अधिकतर मध्य-पूर्वी व दक्षिणी चीन में अधिक प्रचलित है। अन्य कुटीर उद्योगों में लोहे व तांबे के बर्तन बनाना, कृषि के औजार, रस्सियां व टोकरियाँ, नमदे, कालीन, कपड़ा, चीनी के बर्तन, चाय तैयार करना, तेल व चर्बी निकालना, बीड़ी सिगरेट बनाना, साबुन, जूते, शक्कर, नमक, पोशाक बनियाइन, नावें गाड़ियाँ तथा नमक इत्यादि बनाना उल्लेखनीय हैं। इन कुटीर उद्योग-धन्धों का विस्तार काफी है।

आधुनिक चीन की सरकार इन उद्योगों की ओर बहुत अधिक ध्यान दे रही है। अभी तक तो यह धन्धे बहुत गिरी हुई अवस्था में थे, लेकिन आजकल यहाँ की सरकार इन्हें प्रोत्साहन दे रही है, हर तरह की सुविधायें प्रदान की जा रही हैं। पहले की अपेक्षा अब इनका उत्पादन बहुत अधिक हो गया है। भविष्य में आशा की जाती है, कि यह और भी अधिक उन्नति कर जायेंगे।

मिल उद्योग:—

मिल-उद्योगों का विकास पिछले दो एक वर्षों से ही हुआ है। पहले यहाँ बहुत ही कम कारखाने पाये जाते थे, परन्तु अब यह धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं। मिलों की संख्या बढ़ने के साथ-साथ चीन का आर्थिक विकास भी हो रहा है। मिल उद्योग के यहां दो रूप हैं। एक तो वह जो हल्की वस्तुओं का निर्माण करते हैं, और दूसरे वह जो भारी वस्तुओं का। जो नित्य उपयोग की हल्की वस्तुयें तैयार करते हैं, वह कारखाने कुछ छोटे होते हैं; लेकिन वह जो बड़ी व भारी वस्तुयें बनाते हैं, काफी बड़े होते हैं। मिल उद्योगों में सूती कपड़ा, लोहा व स्पात, रेशमी कपड़ा, चमड़ा रंगाई, दियासलाई, आटा पीसने के कारखाने, रसायन व विद्युत उद्योग इत्यादि मुख्य हैं, इनके अतिरिक्त रबड़ की वस्तुएं बनाना, दवाइयां तैयार करना तथा कुछ [illegible] वस्तुयें बनाना इत्यादि कुछ अन्य हैं। इनमें से कुछ छोटे-छोटे कारखानों के रूप में हैं तथा कुछ बड़े-बड़े कारखानों के रूप में। कुल कार-

खानों की संख्या १९४८ के आरम्भ में ७,८१५ थी।

चीन के कारखानों की संख्या
(सन् १९४८ के आरम्भ में)

भोजन	—	१८८८
रसायन	—	१८४०
रेशेदार पदार्थ	—	१६७९
मशीनें	—	९७०
वस्त्र	—	३८५
धातुओं के कारखाने	—	३५३
लोहे एवं स्पात	—	१६९
विद्युत मशीनें	—	१४६
अन्य	—	४२०

हल्की वस्तुयें बनाने के कारखाने लगभग सभी नगरों में पाये जाते हैं। आधुनिक चीन की सरकार इनके विकास की ओर विशेष ध्यान दे रही है। हल्के उद्योग-धन्धों के मन्त्री ने बतलाया है, कि वस्तुओं की उत्पत्ति पिछले वर्ष की अपेक्षा १९५४ में १०·४ प्रतिशत अधिक है। (सन् १९५३ में यहां फैक्ट्री तथा आफिस कार्यकर्त्ताओं की संख्या १३·७४ मिलियन थी)। यदि १९५२ की उत्पत्ति से तुलना की जाय तो यह २८ प्रतिशत अधिक है। पेंसिलीन की उत्पति पहले की अपेक्षा दस गुनी अधिक हो गई। सिगरेट, शराब, डिब्बों में बन्द किये हुए खाद्य-पदार्थ, शोर्ट वेव थिराफ्यूटिक मशीनें तथा अन्य आवश्यक दवाइयाँ इत्यादि १९५२ के उत्पादन की अपेक्षा ५० प्रतिशत अधिक हैं। इनके अतिरिक्त दर्जनों ऐसी नई वस्तुयें हैं जिनका निर्माण काफी अधिक मात्रा में हो चुका है। पिछले वर्ष अनेक आवश्यक वस्तुओं के मूल्य में भारी कमी कर दी गई है, क्योंकि उनकी उत्पत्ति का मूल्य भी घट गया है। कागज का मूल्य बराबर प्रति वर्ष १० प्रतिशत गिरा दिया जाता है। शक्कर के दाम [illegible] प्रतिशत गिर गये। सिगरेट, डिब्बों में बन्द किये हुए भोजन तथा दवाइयों के मूल्य में पर्याप्त कमी हो गई है। साथ ही इनमें सुधार भी कर दिया गया है। इस उद्योग का विभाग स्वयं इन वस्तुओं के निर्माण का निरीक्षण करता है। यदि इनमें कोई भी कमी होती है तो उसे दूर करने की चेष्टा की जाती है। सन् १९५४ में इस विभाग ने नमक, शक्कर, तेल, चर्बी, साबुन, रबड़ के टायर, रबड़ के जूते, शराब तथा दवाइयों के उत्पादन में वृद्धि करने की योजना बनाई है। आशा की जाती है, कि निकट भविष्य में यह देश अपनी आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का निर्माण करेगा तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भी अपना हाथ बंटायेगा।

भारी अथवा अधिक मात्रा में वस्तुयें तैयार करने के कारखाने अधिकतर बड़े बड़े नगरों में केन्द्रित हैं। इनका निर्माण पिछले कुछ ही वर्षों से हो रहा है। इनमें जो उद्योग सम्मिलित हैं, उनमें लोहे व स्पात के कारखाने, रेलें व जहाज बनाने की कम्पनियाँ, मोटर व मशीन बनाने के केन्द्र, विद्युत व जल-शक्ति उत्पन्न करने वाली कलें तथा सूती, रेशमी व ऊनी वस्त्र तैयार करने की मिलें इत्यादि हैं। अपनी पञ्चवर्षीय योजना के अन्तर्गत इस देश का आर्थिक दृष्टिकोण कृषि* के बजाय मशीनों पर जा रहा है। यदि आधुनिक फैक्ट्री के कुल उत्पादन को देखा जाय, तो १९५२ में प्राइवेट लोगों के उद्योगों का भाग ३१ प्रतिशत, सहकारिताओं के उद्योगों का भाग ३ प्रतिशत, राज्य के पूंजीपतियों का भाग ६ प्रतिशत तथा राज्य के उद्योगों का भाग ६० प्रतिशत था। वर्तमान राज्य के उद्योग ८० प्रतिशत से अधिक हैं, ये सब भारी भारी मशीनें तैयार करते हैं। राज्य के हल्के उद्योग केवल ५० प्रतिशत ही हैं। इन उद्योगों की उन्नति को देख कर सचमुच बड़ा आश्चर्य होता है। सन् १९५२ में स्पात की उत्पत्ति १९४९ की अपेक्षा ९.४ गुनी अधिक थी, स्पात के खम्भ की ८.२ गुनी, कच्चे लोहे की ७.५ गुनी, धातु काटने वाली आरियों की ६.५ गुनी, सीमेंट की ४.३ गुनी, पैट्रोलियम की ३.५ गुनी, कोयले की २ गुनी, विद्युत शक्ति की १.८ गुनी उत्पत्ति अधिक हो गई। इनके अतिरिक्त काग़ज की उत्पत्ति ३.३ गुनी, सूती वस्त्र की २.८, आटा २.२, सूत २, शकर २, सिगरेट १.५, तथा दियासलाई की १.३ गुनी बढ़ गई। चीन के एक प्रसिद्ध समाचारपत्र 'पेकिंग पीपुल्स डेली' ने ३ जनवरी १९५४ में लिखा है, कि १९५३ में जो औद्योगिक विकास की योजनायें चलाई गई थीं वह अब पूरी हो गई हैं। नीचे हम यहाँ के कुछ मुख्य उद्योग-धन्धों का वर्णन दे रहे हैं।

लोहे व स्पात का उद्योग-धन्धा—

कुटीर उद्योग के रूप में तो यह धन्धा इस देश में आठवीं शताब्दी से हो रहा है, परन्तु अब यहाँ नवीन बड़े बड़े कारखाने भी स्थापित हो गये हैं। कोयले व लोहे के निकट न होने के कारण इस उद्योग के विकास में बड़ी कठिनाइयाँ

---

* Output of Chinese Industry

Sector	1949 percent of Total	1952 percent of Total
State-owned	33·9	50
State-Capitalist	2·	5
Co-operative	1·0	3
Private	62·7	42

(from Chinese Reconstructs Jan.; Feb. 1954 Page 6)

पड़ती हैं। परन्तु फिर भी यातायात के साधनों में उन्नति हो जाने के कारण समस्या कुछ हल हो गई है और अब कई स्थानों पर कारखाने स्थापित हो गये हैं। यांग-टिसीक्यांग नदी की घाटी तथा उत्तरी खानों का क्षेत्र विशेष तौर पर इस धन्धे के लिये प्रसिद्ध हैं।

वर्तमान स्वतन्त्र चीन की पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत यहां आठ नवीन कारखाने स्थापित किये जा रहे हैं तथा १३ बने हुये कारखानों को बढ़ाया जा चुका है। सरकार के भारी उद्योग-विभाग ने ७ जनवरी १९५४ को घोषणा की थी कि १९५३ में जो कुछ भी इस उद्योग में वृद्धि करने की योजना थी वह सफल हो चुकी है। उत्पत्ति पहले की अपेक्षा ५० प्रतिशत अधिक बढ़ गई। २२ मुख्य वस्तुयें जिनमें लगभग सभी मुख्य धातुओं का प्रयोग होगा, तैयार की जायेंगी।

यहाँ के मुख्य कारखानों में उत्तरी चीन में आनशान लोहे व स्पात का केन्द्र इस राष्ट्र का सबसे बड़ा केन्द्र है। यह मंचूरिया के भाग में स्थित है। इसलिये इसका वर्णन भी आगे ही दिया गया है। उत्तरी चीन के शान्शी प्रान्त में यंग-चुआन एक प्रसिद्ध लोहे व स्पात का केन्द्र है, यहां अनेक प्रकार की लोहे की वस्तुयें ढाली जाती हैं। पेकिंग लोहे व स्पात का केन्द्र भी एक प्रसिद्ध केन्द्र है। इसमें हर प्रकार की मशीनें व औज़ार बनाये जाते हैं। पहले उत्तरी चीन लोहे की वस्तुओं का आयात किया करता था, परन्तु अब उत्पादन इतना अधिक हो गया है, कि बहुत सी वस्तुयें निर्यात करनी पड़ती हैं। याँगटिसीक्यांग की घाटी में जो मुख्य केन्द्र हैं, उनमें शंघाई लोहे व स्पात का केन्द्र, महत्वपूर्ण स्थान रखता है। पहले यह एक छोटा सा केन्द्र था, परन्तु अब यह और भी अधिक उन्नति कर गया है। यहां लोहे के गर्डर, पुल, पोत, मशीनें तथा औज़ार इत्यादि बनाये जाते हैं। यहां के कारखानों में बड़े योग्य इंजीनियर लगे हुये हैं। मध्य यांगटिसीक्याँग नदी की घाटी में सब से बड़ा केन्द्र हांकाऊ के निकट हानयांग है। इस केन्द्र को कच्ची धातु हांकाऊ तथा हूहू की खानों से प्राप्त हो जाती है। यह एक प्राचीन कारखाना है। जापानियों के आक्रमण के पूर्व यह केन्द्र कच्ची धातु संयुक्त राज्य पश्चिमी योरप तथा जापान से मंगाया करता था। परन्तु अब इस धातु का उत्पादन अधिक हो जाने के कारण बाहर से नहीं मंगानी पड़ती। इस केन्द्र पर भी बड़ी-बड़ी लोहे की वस्तुयें बनाई जा रही हैं। सम्पूर्ण घाटी की मांग इस क्षेत्र से पूरी हो जाती है। वर्तमान सरकार ने इसको इतना बढ़ा दिया है, कि अब यह आनशान लोहे व स्पात के केन्द्र से टक्कर लेने लगा है।

इन बड़े-बड़े लोहे व स्पात के केन्द्रों के अतिरिक्त यहां कई छोटे-छोटे लोहे के कारखाने भी हैं, जो कि मशीन व औजार बनाने में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

धातुयें निकालने की मशीनें, कृषि करने के औजार, मोटरकार व साइकिलें बनाने की फैक्टरियाँ, तेल साफ करने के कारखाने, जल विद्युत शक्ति उत्पन्न करने की मशीनें तथा विद्युत सम्बन्धी वस्तुओं को तैयार करने के कारखाने खुलगये हैं। यहां की सरकार ने इन वस्तुओं के निर्माण के हेतु एक विभाग बना दिया है। इस विभाग ने १९५३ में जो उत्पादन निश्चय किया था, वह १९५२ की अपेक्षा ६५ प्रतिशत अधिक था। मशीनों व औजारों का उत्पादन ११६ प्रतिशत, विद्युत मोटर तथा जेनेरेटर का उत्पादन ११८ प्रतिशत इसी वर्ष हुआ। दूसरे शब्दों में ६०० विभिन्न प्रकार की मशीनें सोवियट रूस के वैज्ञानिकों की सहायता से बनाई गईं। सरकार को लागत की अपेक्षा ५० प्रतिशत अधिक लाभ हुआ। सन् १९५३ से एक बड़ा मोटरकार बनाने का कारखाना भी स्थापित कर दिया गया है। नापने व काटने की मशीनें, औज़ार तथा एक बड़ा पोत निर्माण केन्द्र बूशंग के स्थान पर बना दिया गया है। सन् १९५५ में भी ६०० विभिन्न प्रकार की मशीनें बनाने की एक योजना है। यह भी लगभग पूरी हो रही है।

सूती वस्त्र का उद्योग :—इस उद्योग-धन्धे में प्रगति पिछले कुछ वर्षों से ही हुई है। यह व्यवसाय चीन का कदाचित् सब से बड़ा मिल उद्योग है। यहां इस उद्योग के विकास के लिये अनेक सुविधायें पाई जाती हैं। यहाँ कोयला, लोहा तथा श्रम का अभाव न होने के कारण से उन्नति उसी गति से हो रही है, जिस गति के द्वितीय महायुद्ध के पूर्व जापान में हुई थी। जनवरी १९३२ में यहां १२८ कारखाने थे, इनमें से १४३ जापानियों के ८४ चीनियों के तथा २ ब्रिटिश लोगों के थे। सूती वस्त्र का उत्पादन अब बहुत तीव्रता से बढ़ रहा है। कपड़े के कारखाने अधिकतर शंघाई, हैंगचो, नानकिंग, टीशटिन, कायटन, पीकिंग, शिगंताओ तथा सिनान में पाये जाते हैं। शंघाई यहां का सब से प्रसिद्ध केन्द्र है, यहां ५० प्रतिशत कपड़े की मिलें स्थित हैं, [illegible] शक्ति, श्रम पूर्ति तथा पर्याप्त माँग इत्यादि सुविधायें सुलभ हैं। इन कारखानों में पहले ब्रिटिश मशीनों, अमरीकन इंजनों तथा जापानी कोयले का प्रयोग होता था। उस समय यहां ५० लाख से अधिक तकलियां थीं। ये ग्रेट ब्रिटेन की १२ प्रतिशत थी। अब चीन के आन्तरिक क्षेत्रों में भी सूती वस्त्रों के कारखाने खोल दिये गये हैं। ये कारखाने स्थानीय कपास का प्रयोग करने के अतिरिक्त वहां की मांग की पूर्ति करते हैं।

वर्तमान चीन की जनता अब पहले की अपेक्षा बहुत कुछ सभ्य हो गई है। आज कल यहां के लोग बहुत ही गहरे रंग के विभिन्न डिजाइनों के कपड़े पसन्द करते हैं। एक से एक उत्तम डिजाइनों के कपड़े इन कारखानों में बनने आरम्भ

हो गये हैं। सन् १९५४ की ग्रीष्म ऋतु में सूती वस्त्र विभाग ने शंघाई नगर में एक प्रदर्शनी की थी, इसमें ७४० डिजाइनों के नमूने उपस्थित थे। इसका ध्येय जनता की पसन्द को समझना था। शंघाई का शेंशिंग सूती वस्त्र का कारखाना सब से बड़ा है, और विभिन्न प्रकार की छींटें व अन्य कपड़े तैयार करता है। अब अन्य कारखाने भी स्थानीय आवश्यकतानुसार कपड़ा तैयार कर रहे हैं। सन् १९५३ में यहां २८२,५००,००० मीटर कपड़ा तैयार किया, इसमें से लगभग १००० नवीन डिजाइनों की छींट, कम दामों वाली थी, जिसको कि ग़रीब अमीर सभी लोग आसानी से खरीद सकते थे। सन् १९५३ में जो कपास के सूत का उत्पादन हुआ वह निश्चित कोटे से २'७७ प्रतिशत अधिक सूती वस्त्र ३'०४ प्रतिशत, छींट ६ प्रतिशत, ऊनी वस्त्र ४२'६१ प्रतिशत तथा बोरे व टाट ५'०६ प्रतिशत थे। जो कुछ भी सरकार को इस धन्धे से लाभ हुआ वह इतना था, कि एक ५०००० तकलियों वाला कारखाना स्थापित हो सके। यदि १९५२ से तुलना की जाय तो 'स्पिनिंग फ्रेम' की उत्पत्ति ५'४५ प्रतिशत तथा बुनने वाले करघे की ५'६३ प्रतिशत बढ़ गई। यह आंकड़े चीन के इस उद्योग धन्धे की आश्चर्यजनक उन्नति के प्रमाण हैं।

रेशमी वस्त्र का उद्योग :—

चीन संसार का सबसे बड़ा रेशम उत्पन्न करने वाला देश है। रेशम उत्पन्न करने वाले क्षेत्र यहां यांगटिसीक्यांग नदी की घाटी, पश्चिमी पहाड़ी प्रदेश तथा शाटंग में पाए जाते हैं। यह उद्योग यहां का एक अति प्राचीन उद्योग है, तथा कई क्षेत्रों में घरेलू ढंग पर प्रचलित है। मुख्य उद्योग ३०° व २५° उत्तरी अक्षांशों के मध्य में पाये जाते हैं। सम्पूर्ण यांगटिसीक्यांग नदी की घाटी का रेशम शंघाई में एकत्र कर लिया जाता है। यहां इसकी सबसे बड़ी मण्डी है, कई आधुनिक रेशमी वस्त्र बनाने के कारखानें भी स्थापित हो गए हैं। अन्य केन्द्रों पर आधुनिक कारखाने कन्टन तथा पेकिंग में मिलते हैं। छोटे छोटे कारखाने जिनमें ५००

The 1954 official figures for key industrial products were as follows :—

Electric Power	10,800,000,000 Kwh.
Coal	81,990,000 tons
Pig Iron	3,030,000 tons
Steel	1,170,000 tons
Cement	4,730,000 tons
Cotton Yarn	4,600,000 bales

From :—Asia and Africa in the Modern World, published by Asian Relations Organization, Calcutta.

श्रमिक काम करते हैं, वे अधिकतर चिक्यांग, क्यांगसू, शैन्तुवान तथा यूनान प्रदेश में पाये जाते हैं। चीन में जंगली रेशम के वस्त्र भी तैयार किए जाते हैं, यह असली रेशम की अपेक्षा सस्ती होती है।

वर्तमान चीन इस उद्योग-धन्धे की उन्नति की ओर विशेष ध्यान दे रहा है। अब यहां रेशमी वस्त्र का उत्पादन बहुत अधिक हो गया है। इस व्यवसाय की उन्नति के लिए यहां कई सुविधायें पाई जाती हैं। कच्चा रेशम, श्रम, शक्ति मशीनें व पूंजी इत्यादि उल्लेखनीय हैं। सरकार ने घरेलू उद्योगों के विकास की ओर भी विशेष ध्यान दिया है। आधुनिक कारखानों रेशमी छींटें तथा अन्य विभिन्न डिज़ाइनों के कपड़े तैयार किए जाते हैं। आजकल चीन रेशमी वस्त्रों का विशेष व्यापार भी कर रहा है।

अन्य उद्योग धन्धे :—

चीन अब वह चीन नहीं रहा जो कि पहले था, अब यहां एक महान परिवर्तन हो रहा है! धीरे धीरे यह एक कृषक देश से औद्योगिक देश होने की चेष्टा कर रहा है। अब इन लोगों ने यह जान लिया है कि औद्योगिक विकास किस प्रकार किया जाय। सोवियट रूस के वैज्ञानिकों की सहायता से इन लोगों ने अनेक उद्योग धन्धों में प्रगति की है। लोहे व स्पात, सूती व रेशमी वस्त्रों के उद्योग के अतिरिक्त यहां और भी बड़े बड़े उद्योग-धन्धे पाये जाते हैं। रसायन उद्योग, पोत निर्माण उद्योग, मशीनों का उद्योग तथा व्यवसाय लगभग हर एक क्षेत्र में पाये जाते हैं, चमड़े की वस्तुयें तैयार करने के कारखाने, बड़े बड़े नगरों के अतिरिक्त अन्य छोटे छोटे स्थानों पर भी घरेलू ढंग के मिलते हैं। चमड़ा रंगने का काम क्यांगसू, होपे, शाटंग इत्यादि प्रान्तों में होता है। कारखानों की संख्या सौ से भी अधिक है। दियासलाई बनाने के कारखाने शाटंग, क्वाटंग तथा क्यांगसू प्रान्तों में मिलते हैं। पोत निर्माण उद्योग भी उन्नति कर रहा है। इन उद्योग धन्धों के अलावा चीन के लगभग सभी बड़े बड़े नगरों में साबुन, तेल, ऊनी वस्त्र, चमड़े की वस्तुयें इत्यादि बनाने के कारखाने पाए जाते हैं।

यातायात के साधन (Means of Transport & Communications):-

आधुनिक आर्थिक व्यवस्था में यातायात का विशेष महत्व है, प्राचीन काल में प्रत्येक देश अपनी आवश्यकता की वस्तुयें स्वयं उत्पन्न करता था और व्यापार का क्षेत्र बहुत ही सीमित था, उस समय वस्तुओं को ले जाने तथा लाने की समस्या नहीं थी, किन्तु अब तो यातायात वर्तमान व्यापारिक व्यवस्था का मेरुदंड बन गया है। चीन एशिया में एक ऐसा देश है, जो प्राचीन काल से ही व्यापार में लगा हुआ है। यहां का प्रसिद्ध रेशम तथा उसके वस्त्र थल मार्गों द्वारा विदेशों

को भेजे जाते थे। इस देश के यातायात के मार्गों को तीन प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है :—(१) स्थल यातायात (२) जल यातायात (३) वायु यातायात। इन तीनों में वायु यातायात का विकास यहां अधिक नहीं हो सका परन्तु अन्य दो में सन्तोष जनक उन्नति हुई है।

थल यातायात :— चीन का अधिक क्षेत्र पर्वतीय है, इसीलिये यहाँ पर कुछ विशेष प्रकार के थल व्यापार के साधन उन्नति कर गये हैं। यहाँ के यातायात के रूप व साधन इस प्रकार हैं,— पगडंडियां, सड़कें व रेलें। पगडण्डियों पर मनुष्य व पशु, तथा सड़कों पर पहियेदार गाड़ियों द्वारा यातायात होता है। आन्तरिक पर्वतीय क्षेत्र में चीनी कुली सामान इधर उधर ले जाते हुये दृष्टिगोचर होते हैं। ये लोग बड़े मेहनती व परिश्रमी होते हैं। चीनी कुली अपनी कुशलता के लिये अन्य देशों में भी प्रसिद्ध हैं। दक्षिण-पश्चिमी चीन में याक व खच्चर भी स्थानीय वस्तुओं के व्यापार के हेतु प्रयोग किये जाते हैं। पश्चिम व उत्तर-पश्चिम की ओर कारवां के मार्ग भी रेगिस्तानी भागों में होकर गये हैं। एक मार्ग तो पेकिंग के निकट होता हुआ बैकाल झील तक चला गया है। कारवां मार्ग दक्षिण-पश्चिम की ओर तिब्बत तथा पश्चिम में केस्पियन सागर तक जाता है। चीन के इन आन्तरिक क्षेत्रों में प्राचीन काल से ही कारवां द्वारा व्यापार होता चला आ रहा है। अब भी यहां के बड़े बड़े नगरों में ऊँट दृष्टिगोचर होते हैं। एक कारवां मार्ग ह्वांगहो नदी की घाटी में होता हुआ चीनी तुर्किस्तान तथा रूसी तुर्किस्तान को भी जाता है। एक और महत्वपूर्ण कारवां मार्ग वह है जो कि जैचवान की राजधानी चैंगटू को तिब्बत व लासा से मिलाता है, और अन्त में एक मार्ग मध्य चीन को यूनान की प्रसिद्ध रांगे व तांबे की खानों से मिलाता है। द्वितीय महायुद्ध के समय एक प्रसिद्ध मार्ग, जिसे 'बर्मा रोड' कहते हैं बना दी गई है, यह चीन को बर्मा से मिलाती है।

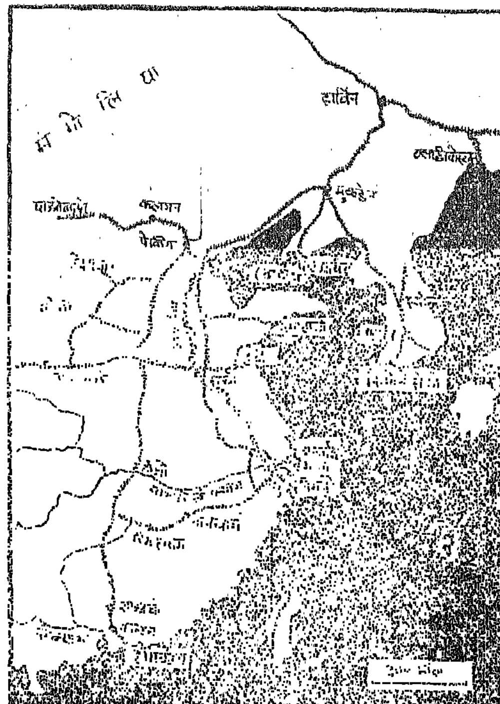
सड़कों की उन्नति केवल उत्तरी चीन में ही हो सकी है, क्योंकि दक्षिणी चीन का अधिक भाग पर्वतीय है। बैल गाड़ी या भैंसे गाड़ी केवल उत्तरी चीन में ही दृष्टिगोचर होते हैं, दक्षिणी चीन में सड़कें बहुत कम हैं इसीलिये पहियेदार गाड़ियां भी नहीं दीखतीं। अधिक निर्धन क्षेत्रों में जीवजन्तुओं का काम मनुष्य ही करते हैं। दक्षिण में धनवान पुरुष पालकियों में यात्रा करते हैं, इसको दो या दो से अधिक मनुष्य खींचते हैं, तथा किसी भी प्रकार की सड़क की आवश्यकता नहीं होती, पगडंडियों पर यहाँ के चीनी कुली इन्हें आसानी से ले जाते हैं। यांगटिसी क्यांग नदी की घाटी में एक अजीब प्रकार की गाड़ी जिसका रूप एक बन्द डिब्बे से मिलता जुलता है, इस्तेमाल की जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में बैंगी का प्रयोग सामान इधर-उधर ले जाने के हेतु किया जाता है। आधुनिक सड़कों की उन्नति

चीन में काफी समय पश्चात् हुई है। सन् १६२० तक यहां पर कोई विशेष पक्की मोटर गाड़ी चलाने योग्य सड़क नहीं थी। परन्तु धीरे धीरे पक्की सड़कों में उन्नति होती गई और सन् १६३० तक कई मुख्य प्रान्तों में सड़कें बन गईं। उदाहरणार्थ क्वांग्सो प्रान्त में, जो कि एक बहुत ही पिछड़ा हुआ प्रान्त था, २००० मील लम्बी मोटर चलाने योग्य सड़कें बन गईं। केवल पांच वर्ष पश्चात् ही २,५००,००० मील लम्बी सड़कें बन कर तैयार हो गईं, इसमें से २१,००० मील पक्की मोटरगाड़ी चलाने योग्य सड़कें थीं। आधुनिक चीन के यातायात विभाग ने प्रत्येक प्रान्त में पक्की सड़कें बनवा दी हैं। अब मोटर गाड़ियां चलाने योग्य पक्की सड़कें लगभग सभी बड़े बड़े नगरों को मिलाती हैं। सड़कों की कुल लम्बाई १४०००० K.m. है। एक प्रसिद्ध सड़क कान्टन से निगपो, हेंगच्रू व शंघाई होती हुई पेकिंग तक जाती है, यह सड़क पेकिंग से और आगे चली गई है। दूसरी पक्की सड़क कान्टन से शाचू व हेंको होती हुई उत्तर में पेकिंग तक जाती है। कान्टन स्वयं यूनान के आन्तरिक खनिज पदार्थों वाले क्षेत्रों से मिला हुआ है। शंघाई से इशांग तक यांगटिसीक्यांग नदी के किनारे किनारे एक सड़क बना दी गई है। पेकिंग उत्तरी चीन का एक प्रमुख केन्द्र है। यहाँ से कई पक्की सड़कें उत्तर-दक्षिण व पश्चिम को जाती हैं। यह एक पक्की सड़क द्वारा यह मंचूरिया के प्रसिद्ध नगर मुकडेन से मिला हुआ है। यहां से दक्षिण-पश्चिम में शेन्शी व शान्शी के प्रान्तों को भी सड़कें गई हैं। यह दक्षिण में चीन की प्राचीन राजधानी नानकिंग से भी मिला हुआ है। चीन के पश्चिमी पर्वतीय क्षेत्र में कोई विशेष पक्की सड़कें नहीं थीं, परन्तु आधुनिक सरकार ने अब कई पक्की सड़कें बनवा दी हैं। प्रसिद्ध बर्मा रोड भी अब पक्की मोटर चलाने योग्य हो गई है।

प्रमुख विदेशी सड़कों में 'बर्मा रोड' कुनमिंग से लेशिओ तक जाती है, यह ७०० मील लम्बी है। मोटर चलाने योग्य एक सड़क ज़ेचवान को सिक्यांग से मिलाती हुई तुर्किस्तान-साइबेरियन रेलवे तक चली जाती है (चुकिंग से यह २५०० मील लम्बी है। एक सड़क व रेलवे लाइन चीन को वीटनम से भी मिलाती है। एक सड़क लासा को किरगीज़िया तथा तदज़िखिस्तान सिक्यांग पर होकर मिलती है। सन् १६५४ में यह बनकर तैयार हो गई है। तिब्बत में यह जै-तॉंग-होक तक आती है।

चीन में रेलमार्गों की उन्नति बहुत समय पश्चात् हुई है। इसका मुख्य कारण यह था, कि आरम्भ से ही यह एक निर्धन देश रहा है, और इसके अतिरिक्त यहां कोई भी स्थाई सरकार नहीं रही। गत वर्षों रेलमार्गों में जो कुछ भी प्रगति हुई वह सम्पूर्ण देश को देखते हुये बहुत ही कम है। चीन में सर्व प्रथम रेलमार्ग

१८७६ में शंघाई से वूसंग तक बनाया गया था, परन्तु जनता ने इसका बहुत विरोध किया और दूसरे ही वर्ष तोड़फोड़ कर बर्बाद कर दिया। पुनः इसको संभाला नहीं गया, बल्कि नवीन मार्गों का बनना इस शताब्दी के अन्त से आरम्भ हुआ। आरम्भ में जो रेलमार्ग स्थापित किये गये थे, वह एक संस्था के हाथों में नहीं थे। कुछ समय पश्चात् इन रेलों का शासन प्रबन्ध चीन सरकार ने अपने हाथों में ले लिया। सन् १९३६ के प्रारम्भ तक यहाँ (मंचूरिया को छोड़ कर) केवल ८१३० मील लम्बा रेलमार्ग था। इस समय तक कोई भी रेलमार्ग ऐसा नहीं बना था जो कि उत्तरी व दक्षिणी चीन को मिलाता, मुख्य रेलमार्गों में से दो बहुत ही प्रसिद्ध थे, पहला उत्तर में स्थित पेकिंग से लेकर मध्य यांगटिसीक्यांग नदी के नगर हैंकों-तक तथा दूसरा पेकिंग तीन्तसिन व सूचो को शंघाई से मिलाने वाला रेल मार्ग था। सिक्यांग नदी के डेल्टे पर स्थित कान्टन नगर को हौंगकाँग से मिलाने की योजना कई वर्षों से थी, वह भी १९३६ में पूरी हो गई, और अब कान्टन एवं



चीन—रेलवे तथा प्रमुख नगर

होंगकांग रेल द्वारा पेकिंग से मिले हुये हैं। एक रेलमार्ग की शाखा हेन्को से व्हीं हो नदी की घाटी तक बना दी गई है। इस लाइन को भविष्य में रूस तक बढ़ा देने की योजना थी। पेकिंग नगर से एक रेल मार्ग तीन्तसिन होता हुआ मंचूरिया के प्रसिद्ध नगर मुकडेन तक जाता है। शंघाई से एक शाखा उस रेल मार्ग पर आकर मिलती है, जो कि कान्टन व हेन्को को मिलाती है। चीन का दक्षिणी प्रान्त यूनान रेल द्वारा फ्रेंच इण्डोचीन के प्रसिद्ध नगर हनोई से मिला हुआ है।*

सन् १९५४ की जनवरी २६ को जो रिपोर्ट रेलवे विभाग की सिनहुआ समाचार ऐजेन्सी द्वारा प्रकाशित हुई वह इस प्रकार थी :—सन् १९५३ तक चीन के रेल मार्गों में ५८६ किलोमीटर की और अधिक बृद्धि हो गई, इसके अलावा ४०० किलोमीटर लम्बी वह रेलवे लाइनें बनाई गई जो कि मिलों व खानों के क्षेत्र में प्रवेश करतीं हैं, और इसके साथ ही साथ १४० किलोमीटर रेलवे लाइनें डबुल कर दी गई। उत्तरी-पश्चिमी चीन में जो लेंचों-सिक्यांग रेलवे लाइन बनाई जा रही है वह १८० किलोमीटर तक पूरी हो गई है। यह रेलवे लाइन एक बड़े कठिन मार्ग से ले जाई जा रही है। चेंगटू-पाओकी रेल मार्ग जो कि १६० किलोमीटर लम्बा है दक्षिण-पश्चिमी व उत्तरी-पश्चिमी चीन को मिलाने में सहायता करेगा। किन्घन पर्वत के नवीन क्षेत्रों को मिलाने वाली रेलवे लाइन अब पूरी हो गई है, अब इस समय एक और रेलवे लाइन बनाई जा रही है। अब तक जितनी भी नई रेलवे लाइनें बनाई जा चुकी हैं, वह सब यतायात के लिये खोल दी गई हैं। सन् १९५४ में यहां कुल २५५००० Km. लम्बी रेलवे लाइनें थी। आर्थिक दृष्टिकोण से ये सब बड़ी लाभदायक सिद्ध हुई हैं। लेंचो-सिक्यांग रेल मार्ग के खुल जाने से युनेन के तेल के कुओं से सस्ता तेल प्राप्त हो जाता है। तिब्बत को इस लाइन द्वारा कान्सू प्रान्त से ऊन व चाय के व्यापार में लाभ हुआ है। यदि १९५२ के आँकड़ों से तुलना की जाय तो १९५३ में लोहे व स्पात का व्यापार ४१ प्रतिशत अधिक हुआ, लकड़ी का २१ प्रतिशत तथा बिल्डिंग बनाने के कच्चे माल का ७६ प्रतिशत हुआ। सन् १९५३ में रेलवे कर्मचारियों ने आवश्यकता से अधिक अपना कार्य पूरा कर दिया तथा ४० लाख+ युआन की अधिक आय प्रा

---

* Yunnan-Hanoi Railway line is 289 miles long and there are 152 tunnels and [illegible] bridges only in Chinese territory.

L. Dudley Stamp—Asia, and Regional and Economic Geography pages 507-503.

+ 40 Lakh Yuan equivalent to more than Sixty million pounds Sterling.

की। चीनी राष्ट्र अब यातायात के साधनों में बहुत उन्नति कर गया है। सन् १६५४ की ३१ जनवरी को पेकिंग से सोवियट रूस की राजधानी मास्को जाने वाली रेलवे का उद्घाटन हुआ। इसी दिन प्रातः ६ बजे प्रथम जनता ट्रेन मास्को के लिए पेकिंग के चीनमेन रेलवे स्टेशन से एक बड़े उत्सव के साथ रवाना हुई। इस उत्सव में रूस के राजदूत पी० ऐफ० युदिन अपने स्टाफ सहित तथा चीन के रेलवे विभाग के मन्त्री लू चेंग साओ तथा अन्य अफसर और रेलवे के ४०० कर्मचारी उपस्थित थे। यह रेल मार्ग ६०५० किलोमीटर लम्बा है, तथा मास्को रेलगाड़ी २१५ घंटे में पहुंचती है। नई ऐक्सप्रेस ट्रेन जो इस लाइन पर चलेगी उसमें जनता के लिए सभी तरह की सुविधायें प्रदान की गई हैं। सन् १६५४ जनवरी २५ को एक समझौता चीन का कोरिया से रेल यात्रा के सम्बन्ध में हुआ। इस समझौते के अन्तर्गत प्रथम जनता ट्रेन चीन से इसी वर्ष की पहली अप्रैल को गई, लेकिन वास्तविक यातायात इसी वर्ष की पहली जून से आरम्भ हुआ। रेलवे के बन जाने से चीन की कई आर्थिक समस्यायें हल हो गई हैं। यह जो कुछ भी उन्नति हुई है वह चीन की प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत हुई है। आशा है भविष्य में यहां के रेलमार्गों में और भी अधिक उन्नति होगी।

चीन की प्रमुख रेलवे लाइनें :—

(१) पेकिंग-हैंको	रेलवे	—	८१४ मील
(२) तीन्तसिन-पुकोव	,,	—	६८६ ,,
(३) कान्टन-हैंको	,,	—	७६८ ,,
(४) पेकिंग-मुकडेन	,,	—	८३२ ,,
(५) नानकिंग-शंघाई	,,	—	२४७ ,,
(६) शंघाई-हैंग्चो-निंगपो	,,	—	१७६ ,,
(७)*लुंग-हाई	,,	—	६८७ ,,
(८) क्याओचो-सिनान	,,	—	२८५ ,,
(६) पेकिंग-सुइयान	,,	—	५४० ,,
(१०) चिक्यांग-क्यांग्सी	,,	—	४०३ ,,
(११) तातुङ्ग-पूचो	,,	—	३८६ ,,
(१२) चेंगतू-चुकिंग	,,	—	३१५ ,,
(१३) यूनान रेलवे (टांगक्रिंग से कुनमिन तक)	,,	—	२८८ ,,

*लीनयुन-तीनशुई–२३४ मील की एक वृद्धि लैंचो तक सन् १६५२ में पूरी हुई।

(१४) दक्षिणी मंचूरिया रेलवे
(चांगच्चू से डाइरन तक) — ६६६ ,,

जल यातायात :—जल-यातायात में चीन एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करता है। जल यातायात को क्षेत्र की दृष्टि से दो भागों में बाँटा जाता है:—पहला आन्तरिक जल यातायात तथा दूसरा समुद्री यातायात। आन्तरिक जल यातायात में नाव तथा छोटे स्टीमर शामिल हैं, जो नदियों, झीलों व नहरों इत्यादि पर चलाये जाते हैं। इस देश में आदिम युग में लकड़ी के लट्ठों को बाँध कर बेड़े बना लिए जाते थे, अब भी यह प्राचीन ढंग प्रचलित है। कहीं-कहीं पर पेड़ों को खोखला करके नावें बना ली जाती हैं चीन की नदियां जल यातायात के दृष्टिकोण से बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। यांगटिसीक्यांग नदी न केवल चीन में, बल्कि समस्त एशिया में अपने व्यापार के लिए प्रसिद्ध है। यह नदी चीन के मध्य में पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है, ३५० मील तक इसमें बड़े बड़े पोत आन्तरिक क्षेत्रों तक प्रवेश करते हैं। छोटी छोटी नावें तो और भी दूर तक चली जातीं हैं। इस नदी की महत्ता, तीन कारणों से और भी बढ़ गई है:—पहला, इसकी सहायक नदियाँ, जो उत्तर दक्षिण व पश्चिम से आकर मिलतीं हैं, साथ ही कई गहरी नहरें जो इसमें से निकाली गई हैं, काफी दूर तक नावें चलाने योग्य हैं। दूसरा यह कि नदी एक बहुत ही घने बसे हुए क्षेत्र से होकर बहती है, यह जनसंख्या जल यातायात पर ही निर्भर है। तीसरा यहाँ कोई भी रेलमार्ग अधिक पर्वतीयक्षेत्र होने के कारण नहीं पाये जाते। केवल निचली घाटी में कुछ रेलमार्ग मिलते हैं। इस नदी की गहरी घाटियों में जो झरने पाये जाते हैं वे वास्तव में कुछ बाधा डालते हैं। फिर भी ज़ैचवान प्रान्त में यह नदी आर्थिक दृष्टिकोण से बड़ी लाभदायक सिद्ध होती है। चीनी लोग बड़े परिश्रमी होते हैं, अपनी नावों को वे छोटे छोटे झरनों के ऊपर चढ़ा ले जाते हैं। यांगटिसीक्यांग नदी के ही कारण शंघाई एशिया के सबसे बड़े बन्दरगाहों में से एक है।

दक्षिणी चीन में सिक्यांग नदी तथा उससे निकली हुई नहरें यातायात के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। परन्तु इसकी घाटी यांगटिसीक्यांग नदी की अपेक्षा छोटी है। इसीलिये इसकी अधिक महत्ता नहीं है। इसके मुहाने पर चीन का प्रसिद्ध बन्दरगाह केन्टन स्थित है। हाँगकाँग भी इसी नदी के मुहाने पर है, इस छोटे से द्वीप पर ब्रिटिश लोगों का अधिकार है। उत्तरी चीन में सबसे प्रसिद्ध नदी ह्वाँगहो है, इसको दूसरे शब्दों में 'चीन का शोक' भी कहते हैं। इस नदी में प्रतिवर्ष बाढ़ आ जाया करती है। जल के साथ बहुत सी पीली मिट्टी ओरडोस एवं मंगोलिया के रेगिस्तान से आकर मध्य व निचली घाटी में एकत्र हो जातीं हैं।

इस नदी का पाट अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक ऊंचा है, तथा अधिक रेत के कारण गहराई भी बहुत कम है। नावें व स्टीमर इसमें बड़ी कठिनाई से चलते हैं। कहीं कहीं तो मिट्टी निकाल कर गहरा करने की आवश्यकता पड़ जाती है। तीन्तासिन इसकी निचली घाटी पर सबसे प्रसिद्ध नगर है। यह पी नदी पर स्थित है, जो कि पेकिंग को भी एक बन्दरगाह का रूप देती है। एक प्रसिद्ध नहर जो 'ग्रान्ड केनाल' के नाम से पुकारी जाती है, ह्वांगहो के निचले बेसिन से लेकर यांगटिसीक्यांग नदी के डेल्टे के दक्षिण भाग तक जाती है। यह नहर चीन का एक महत्वपूर्ण जलमार्ग बनाती है, इसमें होकर नावें व जहाज़ उत्तर से मध्य चीन तक आते जाते हैं। नहर के दोनों किनारों पर शहतूत के वृक्ष लगे हुये हैं जिन पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। इन जलमार्गों वाले क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व इतना अधिक पाया जाता है, कि लोगों के रहन-सहन को देखकर आश्चर्य होता है। कान्टन नगर में तो लोग तैरते हुये घरों (Junks) पर रहते हैं। यहीं वह अपनी पूरी गृहस्थी को जीवजन्तुओं व अन्य सामान सहित रखते हैं। कुछ कृषि भी यहां पर कर लेते हैं। वर्षों से ये लोग इसी प्रकार से जल पर रह रहे हैं। इसी प्रकार के दृश्य शंघाई तथा अन्य शहरों में भी दृष्टिगोचर होते हैं।

वर्तमान चीन सरकार ने जल यातायात में विकास करने का निश्चय कर लिया है। अब कई नवीन नहरें खोदी जा रही हैं। कई नदियों पर बांध बनाये जा रहे हैं। ह्वांगहो नदी दूर तक गहरी कर दी गई है, जिससे स्टीमर आन्तरिक क्षेत्रों तक प्रवेश कर जायें। आन्तरिक क्षेत्रों में जो जलमार्ग हैं, उन्हें विद्युत प्रदान करने की भी योजना है। थोड़े वर्षों में चीन अपने जलमार्गों में पूर्ण रूप से विकास कर लेगा और एशिया में आर्थिक दृष्टिकोण से यहाँ के जलमार्ग अद्वितीय होंगे।

समुद्री यातायात का वृहत् साधन जलयान है। पहले ये जलयान बहुत छोटे होते थे और वायु की दिशा पर निर्भर रहते थे, क्योंकि नावें अधिकतर पालदार होती थीं। अब भी कुछ क्षेत्रों में इस प्रकार की नावों का प्रयोग होता है। आजकल इनका स्थान बड़े-बड़े जहाजों ने ले लिया है। यह वाष्प की शक्ति से मशीनों व यंत्रों द्वारा चलते हैं। पोत दो प्रकार के होते हैं। एक तो वे जो कि 'लाइनर' कहलाते हैं, इनका समय, भाड़ा तथा मार्ग नियत होता है। दूसरे वह जो कि 'ट्रेम्प' कहलाते हैं, इनका समय, भाड़ा तथा मार्ग नियत नहीं होता। ये कहीं भी लङ्गर डाल कर रुक सकते हैं। समुद्री मार्गों के प्रमुख केन्द्र केवल दो ही बन्दरगाह हैं, पहला शंघाई तथा दूसरा कान्टन। शंघाई से कान्टन, फारमूसा, नागासाकी तथा पोर्ट आर्थर तक जहाज आते जाते हैं।

कान्टन से पूर्वी द्वीपसमूह, हिन्द-चीन तथा फारमूसा व शंघाई को जलमार्ग गये हैं। अब पेकिंग भी एक मुख्य समुद्री यातायात का केन्द्र हो गया है। यहां भी हमको बड़े बड़े जहाज दीखते हैं। सन् १९४८ में इस देश के पास ११७६ जहाज (७१४,५४८ टन वजन के) थे। सन् १९५२ में यहां के जहाजों द्वारा ५.३ मिलियन टन कारगो ले जाया गया। बहुत समय तक कान्टन ही एक ऐसा बन्दरगाह था जो कि विदेशी व्यापारियों के लिये खुला हुआ था। परन्तु बाद में नानकिंग के समझौते के अनुसार अमोय, फूचू, निनापो तथा शंघाई भी विदेशी व्यापार के लिये खोल दिये गये थे। अब अन्य भी आन्तरिक बन्दरगाह विदेशी व्यापार के लिये खोल दिये गये हैं। ऐसे बन्दरगाहों की कुल संख्या ११०* से अधिक है। अब चीन विदेशी व्यापार में भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

चीन के बन्दरगाहों पर विदेशी जहाज़ (टनों में)

अमरीका	२,६४०,५२८
ब्रिटिश	२,४४५,७०५
नारवेजियन	५५४,००८
डच	५१७,८४४

वायु यातायात :—उन देशों के लिये जो कि बहुत विस्तृत हैं, वायु यातायात का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है, क्योंकि इनके प्रयोग से समय की बहुत बचत हो जाती है। आजकल पृथ्वी पर कोई भी ऐसा भाग नहीं है जो कि वायुयान द्वारा चालीस घण्टे से अधिक दूर हो। दुर्भाग्य से चीन इस यातायात के साधन में अधिक प्रगति नहीं कर सका। इसमें उन्नति न होने के वैसे तो कई कारण हैं, परन्तु मुख्य यह है कि यहां पर वह खनिज पदार्थ नहीं पाये जाते जो कि इसके निर्माण के लिये उपयोगी हैं। चीन के आन्तरिक क्षेत्रों में अब भी ऐसे लोग पाये जाते हैं, जिन्होंने वायुयान कभी नहीं देखा, उड़ते हुये वायुयानों को वह चकित होकर देखते हैं। प्रथम महायुद्ध के पश्चात् यहाँ के कुछ नगरों में जनता के हेतु वायुयान चलने आरम्भ हुये। लेकिन मार्ग द्वारा केवल उन्हीं नगरों को मिलाया गया जो कि काफी बड़े थे और जिनमें अधिक जनसंख्या थी। शंघाई से नानकिंग होते हुये पेकिंग तथा पेकिंग से इशांग तक यहां बराबर वायुयान आने जाने आरम्भ हो गये थे। कुल लम्बाई इन मार्गों की १५०० मील थी। द्वितीय महायुद्ध के समय कुछ और उन्नति हुई, और हवाई सर्विस द्वारा अन्य बड़े बड़े नगरों को भी मिला दिया गया। वर्तमान सरकार ने वायु यातायात में आश्चर्यजनक उन्नति की है। अब लगभग सभी बड़े बड़े नगर वायु मार्गों द्वारा

* E. T. Williams 'The Ports of China' Geog. Review Vol. IX, 1920

मिले हुये हैं। सितम्बर १६४७ में यहाँ ५७००० मील लम्बे वायुमार्ग थे। इन पर दो चीनी कम्पनियों (China National Airways Corporation and Central Airways Transport Corporation) के वायुयान उड़ते थे सन् १६५० में ये दोनों कम्पनियां मिला दी गई और इनका एक दूसरा नाम सिविल एवियेशन कम्पनी पड़ गया। कान्टन से शंघाई, कान्टन से हेन्को, शंघाई से पेकिंग, शंघाई से इशांग, पेकिंग से इशांग तथा पेकिंग से मुकडेन इत्यादि मिल गये हैं। आजकल पेकिंग व शंघाई दो ही प्रमुख वायु यातायात के केन्द्र हैं, परन्तु कान्टन व हांगकांग भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। पेकिंग व शंघाई विदेशी वायु मार्गों द्वारा अमरीका, भारतवर्ष, जापान, रूस तथा अन्य बड़े बड़े देशों से मिले हुये है।

चीन के प्रमुख वायुमार्ग (१ अगस्त १६५० में)

(१) तीस्तिन — केन्टिन
(२) तीस्तिन — चुंगकिंग
(३) चुंकिंग — हैंको
(४) चुंकिंग — कुनमिंग
(५) चुंकिंग — क्वीयाग
(६) चुंकिंग — चैंगट्ट

आजकल वायुयान निर्माण करने के कारखाने भी यहाँ स्थापित किये जा रहे हैं। चीनी सरकार के यातायात विभाग ने कई स्थानों पर छानबीन करके यह निश्चय किया है, कि उन स्थानों पर जहां कि सुविधायें पाई जाती हैं, वायुयान बनाने व मरम्मत करने के कारखाने स्थापित किये जांय। पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत आन्तरिक क्षेत्र के कई नगरों में हवाई जहाजों के अड्डे बनाये जायेंगे। कई जगह तो बनाये भी जा चुके हैं। वायु यातायात का भविष्य इस देश में बहुत उज्ज्वल है, आशा है कि कुछ ही वर्षों में यह देश बहुत उन्नति कर जायेगा।

विदेशी व्यापार (Foreign Trade) :—

यदि चीन के प्राचीन इतिहास पर एक दृष्टि डाली जाय, तो पता चलेगा कि यह देश दो हजार वर्ष पहले योरुप के देशों से रेशम, मोती तथा अन्य बहुमूल्य वस्तुओं का व्यापार किया करता था। इन वस्तुओं का व्यापार मध्य एशिया से होकर जाने वाली 'सिल्क रोड' द्वारा होता था। ईसा से तीन सौ वर्ष पूर्व अरब के निवासी सीक्यांग नदी पर स्थित कान्टन से व्यापार किया करते थे, यही एक मात्र ऐसा जलमार्ग था, जिसमें होकर ये लोग आन्तरिक क्षेत्रों में प्रवेश किया करते थे। उन दिनों से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक विदेशी व्यापार की विशेषता

यह थी कि निर्यात की हुई वस्तुयें प्राय: अधिक रहा करती थीं। परन्तु १८७७ के पश्चात् प्रति वर्ष आयात की हुई वस्तुओं का मूल्य बढ़ता ही गया। अन्त में एक समय वह आया जब कि योरुप चीन से चाय व रेशम आयात करने को प्रस्तुत था, परन्तु चीन उस समय इतना आत्म निर्भर था, कि उसे किसी भी वस्तु के आयात करने की आवश्यकता नहीं थी। चीन को उस समय केवल चाँदी की ही आवश्यकता थी, परन्तु चाँदी के व्यापार में योरोप व अमरीका को यह व्यवहार मंहगा पड़ता था। कुछ क्षेत्रों में फर (बाल) की भी माँग रहती थी, ऐसा भी कहा जाता है कि चीन के दक्षिणी भाग ग्रीष्म ऋतु में बर्फ आयात करते थे। विदेशी व्यापारियों को अफीम की आवश्यकता थी, परन्तु कुछ अन्तर्राष्ट्रीय संघर्षों के कारण इसका व्यापार सफलतापूर्वक नहीं हो सका।

प्रथम महायुद्ध के पूर्व चीन अधिकतर रेशम व चाय निर्यात किया करता था, परन्तु युद्ध पश्चात् इसने कच्चे मालों पर विशेष ध्यान दिया। निर्यात की जानेवाली वस्तुओं में कपास, ऊन कच्ची रेशम, तिलहन, बीज, चमड़ा व खालें, कोयला, टंगस्टन, ऐन्टीमनी इत्यादि वस्तुओं का व्यापार ५० प्रतिशत होता था। खाद्य पदार्थों में अंडे तथा अंडों से प्राप्त की हुई वस्तुयें लगभग ३३ प्रतिशत तथा तैयार की हुई वस्तुयें लगभग १६ प्रतिशत थीं। तैयार की हुई वस्तुओं का व्यापार दिन प्रति दिन बढ़ रहा है, क्योंकि चीन में अब औद्योगिक उन्नति हो रही है।

आयात की हुई वस्तुओं में अधिकतर तैयार की हुई वस्तुयें थीं। प्रथम युद्ध के प्रारम्भ तक तैयार किये हुए कपड़े का आयात ३३ प्रतिशत था, युद्ध पश्चात् १९३२ तक केवल १२.५ प्रतिशत हो गया। लोहे व स्पात की मशीनें, मोटर गाड़ियाँ, साइकिलें तथा खनिज तेल इत्यादि प्रमुख आयात की वस्तुयें थीं। अन्य कच्चे मालों में रंग, रसायन, कागज़, साबुन, मोमबत्तियां तथा खनिज पदार्थ इत्यादि वस्तुओं की प्रधानता थी। खाद्य पदार्थों में शक्कर, चावल, मछली तथा आटा आदि उल्लेखनीय हैं।

द्वितीय महायुद्ध के पूर्व चीन के विदेशी व्यापार का विस्तारपूर्वक हाल प्राप्त नहीं हो सका। क्योंकि चांदी का चलन होने के कारण यहां व्यापार में बड़ा हेरफेर पाया जाता था। परन्तु युद्ध के प्रारम्भ में यहां का चलन कुछ सन्तोषजनक दशा में हो गया।

यहां के व्यापार का सन्तुलन गत वर्षों से प्रतिकूल रहा है क्योंकि जो चीनी विदेशों में रहते हैं वह व्यापार नहीं करते थे, बल्कि अपने यहां का धन व्यय करते थे। लेकिन जो विदेशी चीन में आ कर बसे हैं, वे केवल व्यापार करने की दृष्टि से

* L. Dudley Stamp—Asia—An Economic and Regional Geography Page 509.

ही आये हैं। वे लोग व्यापार के द्वारा बहुत सा धन कमा कर अपने देश को ले जाते हैं। यही कारण है कि यहाँ का व्यापारिक संतुलन बहुत समय तक प्रतिकूल रहा है। आधुनिक चीन का व्यापार संतुलन अब कुछ सुधर रहा है। वर्तमान समय में जो विदेशी व्यापार में हेर-फेर हुआ है उसका हाल नीचे दिया गया है।

गत वर्षों चीन के विदेशी व्यापार की दशा राजनैतिक हेर-फेर के कारण कुछ अजीब रही है। प्रथम महायुद्ध के पूर्व हांगकाँग ही एक ऐसा बन्दरगाह था, जिसके द्वारा चीन का विदेशी व्यापार होता था, लेकिन धीरे धीरे चीन के अन्य बन्दरगाह अन्य देशों के बन्दरगाहों से सीधा व्यापार करने लगे। जापान से इसका सबसे अधिक व्यापार होता था। जापान से २५ प्रतिशत, ग्रेट ब्रिटेन से भी २५ प्रतिशत तथा हाँगकाँग से भी २५ प्रतिशत, शेष में संयुक्त राज्य, जर्मनी तथा फ्रांस सम्मिलित थे। द्वितीय महायुद्ध के कारण व्यापार में बहुत ही अधिक हेर-फेर हुआ, क्योंकि योरोप व एशिया दोनों ही युद्ध के क्षेत्र थे। इस समय चीन की दशा और भी अधिक शोचनीय थी, जापानियों ने यहां के निर्धन व्यक्तियों को बड़े संकट में डाल रखा था। जब तक जापान हार नहीं गया तब तक इन लोगों को कष्ट सहन करने पड़े।

सन् १९४८ में कुल आयात

यू० एस० ए०	४८·४०	प्रतिशत
भारतवर्ष व पाकिस्तान —	१०·५६	,,
ग्रेट ब्रिटेन —	८·०४	,,
कनाडा —	४·६३	,,

सन् १९४८ में कुल निर्यात

हौंगकांग —	३१·४४	,,
यू० एस० ए० —	२०·०६	,,
इन्डोनेशिया —	६·८८	,,
जापान —	५·५२	,,
ग्रेट ब्रिटेन —	३·८६	,,

द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् कोरिया महायुद्ध का क्षेत्र रहा, कई वर्ष तक यहां भी बराबर युद्ध होता रहा। यद्यपि चीन के आर्थिक विकास में कोई बाधा नहीं पड़ी, परन्तु विदेशी व्यापार में कुछ परिवर्तन अवश्य हुये। चीन की नवीन सरकार ने स्थिति को इतनी कुशलता से अपने वश में किया, कि दशाओं में कोई

The national income of China is estimated at 30 dollars billion and the per capita income about 60 dollars.

भी विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। अब चीन एक कृषक देश से औद्योगिक देश होने का प्रयत्न कर रहा है। इसका बहुत गहरा प्रभाव विदेशी व्यापार पर भी पड़ रहा है।

सन् १९५३ में होंगकाँग ने चीन से ५३·६ मिलियन मूल्य की वस्तुयें आयात कीं (कुल आयात का २२·१% भाग) और चीन ने होंगकांग को ३३·६ मिलियन मूल्य की वस्तुयें निर्यात कीं (कुल निर्यात का १६·८ %)

इसी सन् में सोवियत देशों से जो व्यापार हुआ वह चीन के विदेशी व्यापार का ७५ प्रतिशत था। अनुमानित कुल विदेशी व्यापार (१ मिलियन यू० के० डोलर में)

इस प्रकार था—

१९५०—११९०	।	१९५२—२३२०
१९५१—२३१०	।	१९५३—३०००

वर्तमान चीन ने कई देशों से नवीन व्यापारिक समझौते किये हैं। गत वर्षों में रूस, जापान, पूर्वी द्वीपसमूह तथा अमरीका इत्यादि देशों से कदाचित् इसके व्यापारिक समझौते हो चुके हैं। परन्तु अक्टूबर १४ सन् १९५४ को चीन का एक व्यापारिक समझौता भारतवर्ष के साथ हुआ है। इस समझौते के अन्तर्गत वह वस्तुयें जो कि चीन भारतवर्ष को निर्यात करेगा, इस प्रकार हैं :—

खाद्य पदार्थ :—चावल, चावल के अतिरिक्त अन्य अनाज, हरी बीन, सोया बीन।

मशीनें :—प्लानिंग व शेपिंग मशीनें, ड्रिलिंग मशीनें, औज़ार, प्रेस, रोक क्रशर, ढालने की मशीनें, ट्रांसफारमर, पम्प, इलेक्ट्रिक मोटर, सीने की मशीनें, स्टीम इंजन, हारवेस्टर, सड़क कूटने के इंजन, इलेक्ट्रिक पम्प, येयर कम्प्रेसर, सूती व ऊनी वस्त्र तैयार करने की मशीनें, जूट तैयार करने की मशीनें, टेलीफून एक्सचेंज, कन्ट्रोल रबड़ वाइपर, वेन्टीलेटर, स्टीम जेनेरेटर, मेडिल ऐपेरेटस इत्यादि।

खनिज पदार्थ :—ऐन्टीमनी, जिपसम, ग्रेफाइट, फ्लोरस्पार, सल्फर, ओरपीमेन्ट, बोरक्स, नेफथेलीन, साफ की हुई मिट्टी, आरसीनोलाइट इत्यादि।

रेशम व रेशम की वस्तुयें:—सफेद व पीली कच्ची रेशम, स्टीम फिलेचर, काती हुई रेशम, जंगली रेशम, डौफियन रेशम, उसके वस्त्र फ्यूजी रेशम, तथा तुशा रेशम।

पशुओं से प्राप्त वस्तुयें :—ऊन, खालें, चमड़ा, बतख के पंख, गूज के पंख, ऊन, सफेद मोम तथा शहद।

कागज तथा स्टेशनरी :—समाचार-पत्र का कागज, प्रिंटिंग पेपर, पेकिंग

पेपर, स्टेनन्सिल पेपर, ब्लोटिंग पेपर, फाउण्टेनपेन, पेन्सिल, स्याही, छापने की स्याही तथा नम्बरिंग मशीन।

रसायन :—बेन्जीन, सोडियम फोरफेट, फिनेल, पोटेशियम कारबोनेट, मोनो-क्लोर, बेन्ज़ील, ब्लीचिंग पाउडर।

तैल :—वुड आयल (तंग तैल), सिन्नेयन आयल, पिपरमेन्ट का तैल।

अन्य वस्तुयें :—कपूर केसीआ लिगनीया, मस्क, नटगल्ला, मेन्थोल क्रिस्टल, ऐप्रीकोट, करनेल गलंगल, रेजिन, तरकारियों से प्राप्त की हुई दवाइयाँ, हेयर नेट, पेण्ट, साइकिलें, खेलने का सामान, किताबें, डिब्बों में बन्द सामान, टोर्चलाइट, थरमस, बटन, फायर क्रोकर, मोज़े, बनियाइन, सुइयां; मछलियां तथा समुद्र से प्राप्त अन्य वस्तुयें, मेवा, तरकारियाँ, अदरक, चीनी सिनेमा की फिल्म।

निम्नलिखित वस्तुयें भारतवर्ष चीन (तिब्बत सहित) को भेजेगा :—

खाद्य पदार्थ तथा तम्बाकू :— चना, चावल, दालें, गरम मसाले, मिर्च तथा तैयार की हुई तम्बाकू।

खनिज पदार्थ :—क्रोम धातु, क्यानाइट धातु, मैंगनीज़, रांगा, तथा ज़िंक धातुयें।

वनस्पति तेल :—मूंगफली का तेल।

अन्य तेल :—लेमन, ग्रास आयल तथा चन्दन की लकड़ी का तेल।

रेशेदार पदार्थ :—कपास व ऊन।

लकड़ियों में :—चन्दन की लकड़ी।

चमड़ा व खाल :—बकरे की खाल, भेड़ की खाल, हल्के व भारी किस्म की खालें। रंगा हुआ चमड़ा।

अन्य वस्तुयें :—मेरोबलन, इसकी छाल, मोम तथा शिलैक।

रासायनिक पदार्थ तथा दवाइयां :—बाइक्रोमेट, केल्शीयम, क्लोराइड, क्रोमिक ऐसिड, ग्लेसरीन, मेगनेशियम, क्लोराइड, मेगनेसियम सल्फेट नेफ्थलीन, पोटेशियम ब्रोमाइड, पोटेशियम नाइट्रेट, सोडियम ब्रोमाइट, सोडियम सलफाइड, दवाइयाँ, जड़ी बूटियाँ, रंग तथा मछली का तेल इत्यादि।

औजार व यन्त्र इत्यादि :—थर्मामीटर, विद्युत् लेम्प व बल्ब, विद्युत् चिकित्सा सम्बन्धी यन्त्र, गणित सम्बन्धी यन्त्र, चीड़फाड़ करने वाले यन्त्र, एक्सरे का सामान, टेलीफोन तथा बिजली के पंखे।

मशीनें :—बाल तथा रोलर बीयरिंग, जेनेरेटर, कातने बुनने वाली मशीनें उदाहरणार्थ—तकलियाँ, करघे, फिनिशिंग मशीनें।

मशीन के औजार :—सेण्ट्रल लेथ, ड्रिलिंग मशीन, स्लोटिंग मशीन, प्लानिंग मशीन, हैकसाइंग मशीन, मशीन से चलने वाले प्रेस, लेथ चक्स, ड्रिलिंग चक्स, लेथ सेण्ट्रल, लेथ मनड्रिल्स, मशीन सम्बन्धी प्लेन, ड्रिल स्लीव, वुड थिकनेस प्लनर्स, ऐसीटिलीन जेनरेटर, राउण्ड सीमिंग मशीन, लिवरसेण्टर, हाथ से व पैर से चलाने वाले प्रेस तथा प्लेन मिलिंग मशीनें।

धातु की तैयार की हुई वस्तुयें :—जस्ते, पीतल व तांबे की वस्तुयें व स्पात की बनी हुई वस्तुयें — केवल कण्टेनर्स को छोड़ कर, नॉन-फेरस धातु की तैयार की हुई वस्तुयें : —

टेक्सटाइल या रेशेदार वस्तुयें :—कपास व कपास की तैयार की हुई वस्तुयें, कपास का कता हुआ सूत, फ्लैक्स की बनी हुई चीजें जैसे सीमल व रस्सियाँ, पटसन की बनी हुई वस्तुयें।

सवारी गाड़ियां :—साइकिलें व मोटरकारें।

अन्य वस्तुयें :—भारतीय फिल्में, हल्के इंजीनियरिंग का सामान, पम्प, जी० आई० बकिट, हरीकेन लालटेन, कपड़े सीने की मशीनें, प्लास्टिक की वस्तुयें, शिलैक, अबरक, एस्बस्टोज़, सीमेण्ट की चादरें, सीमेण्ट, ह्यूम पाइप्स, टायर ट्यूब, मशीनों में लगाने वाली पेटियाँ, कागज, कृषि सम्बन्धी मशीनें, इत्यादि।

भारत व चीन का यह व्यापारिक समझौता* इस समय केवल दो वर्ष के लिये ही हुआ है। परन्तु भविष्य में, यह आशा प्रकट की गई है, कि यह समझौता बढ़ा दिया जायेगा।

आधुनिक व्यापार भारतीय, ब्रिटिश, जापान तथा चीनी जहाजों द्वारा होगा परन्तु अन्य देशों के पोत भी चीन के बन्दरगाहों पर दृष्टिगोचर होते हैं। शंघाई यहाँ का एक ऐसा बन्दरगाह है जो कि सम्पूर्ण चीन का लगभग आधा विदेशी व्यापार करता है। इस बन्दरगाह का पृष्ठ प्रदेश बहुत ही विस्तृत तथा धनधान्य से पूर्ण है, दूसरे यांगटिसीक्यांग नदी में जहाज आन्तरिक क्षेत्रों तक प्रवेश कर जाते हैं। अन्य महत्वपूर्ण बन्दरगाहों में केंटन, तीन्तसिन, चीफू, पेकिंग तथा दक्षिणी पूर्वी तट पर फूचू हैं। आन्तरिक क्षेत्र का प्रसिद्ध बन्दरगाह हेन्को है। यह यांग-टिसी-क्यांग नदी की घाटी में स्थित है, और यहाँ दस हजार टन के पोत आसानी से आ जाते हैं।

* Expansion of trade between India and China—see The Hindustan Times, Saturday, October 16, 1954.

चीन तथा यू० के० का कुल व्यापार (ब्रिटिश बोर्ड आफ ट्रेड रिटर्न पौंड स्टर्लिङ्ग में)

	१६५३	१६५४
यू० के० में आयात	१०,२२२,१८२	६,०१७,४४४
यू० के० से निर्यात	६,१६१,३७२	६,८२५,८११
यू० के० से पुनः निर्यात	१०५,२३६	६३,०४६

थल मार्गों द्वारा विदेशी व्यापार पहले की अपेक्षा अब बहुत कम होता है। केवल रूस ही एक ऐसा देश है, जो कि थल मार्ग (रेल मार्ग) द्वारा चीन से कुछ विशेष वस्तुओं का व्यापार करता है। परन्तु इसकी महत्ता जलमार्गों की अपेक्षा बहुत कम है, क्योंकि बहुत थोड़ी मात्रा में वस्तुओं का व्यापार होता है।

राजनैतिक रूप

राजनैतिक विभाग:—

चीन के इतिहास पर दृष्टि डालने से प्रतीत होता है, कि इसकी अन्तर्राष्ट्रीय सीमायें कभी निश्चित नहीं रहीं, और यदि रही भी हैं तो केवल कुछ ही शताब्दियों के लिये। प्राचीन काल में जितने भी वंशों ने राज्य किया, उसमें से किसी ने तो उत्तरी इण्डोचीन, किसी ने पश्चिमी पामीर तथा किसी ने हिमालय पर्वत के दक्षिणी ढालों तक अपने साम्राज्य की सीमा प्रकट की है। किसी किसी ने तो फारमूसा, ल्यूचू द्वीप तथा कोरिया प्रायद्वीप को भी अपने साम्राज्य में सम्मिलित किया है।

कहा जाता है कि मिन वंश के अन्त तक सम्पूर्ण चीन १८ प्रान्तों तथा ४ ऐसे राज्यों में विभाजित था जो इस पर निर्भर थे। कभी-कभी ऐसा भी समय आया जब कि कई प्रांत सम्मिलित कर दिये गये। परन्तु आरम्भ से ही चीनी लोग महान दीवार के दक्षिण में १८ प्रांतों को मुख्य चीन में शामिल करते आये हैं। वास्तव में यह विचार लोगों का अनुचित था, क्योंकि महान दीवार के बाहर के भाग भी चीन में शामिल किये जाते हैं*। द्वितीय महायुद्ध के पहले सम्पूर्ण चीन २८ प्रांतों तथा दो राज्यों में विभाजित था। जब १८७८ में सिन्कियांग प्रांत बना दिया गया तब कुल १६ प्रांत हो गये।

वर्तमान चीन में २५ प्रांत हैं। आन्तरिक मंगोलियन (ओटोनोमस) प्रदेश, तिब्बत तथा चीन म्युनिसिपेल्टीज़ (पेकिंग, तीन्तसिन व शंघाई) केन्द्रीय सरकार के शासन में हैं। पेकिंग यहां की राजधानी है।

---

* Based on George B. Cressey—Asia's Lands and Peoples pages 39,40,41.

चीन के प्रान्त, राजधानी क्षेत्रफल, एवं जनसंख्या (मार्च १९५५)
(मंचूरिया को सम्मिलित करते हुए)

प्रान्त	राजधानी	क्षेत्रफल मीलों में	जनसंख्या
आन्वी	होफी (हो निंग)	५४,३०५	३०,३४३,६३७
चिक्यांग	हैंग्चो	३९,६२१	१९,६५७,५५१
चिंघाई	सिनिंग	२,५७,५५३	११,६७६,५३४
फ्यूकीन	फूचो	४५,५३९	१३,१४२,७२१
हीलंगक्यांग १	हारबिन	२,८८,२५२	११,९९७,३०९
होनान	काईफेंग	६३,७४४	४४,२१४,५९४
होपी (चिहली)	पाओतिंग	५४,४८४	३५,९८४,६४४
हूनान	चगंसा	७९,०४२	३३,२२६,९५४
ह्यूपी	वुहान	७१,९३६	२७,७८९,६९३
जिहोल	चैंगटी (जिहोल)	६९,४७३	५,१६०,८२२
कान्सू २	लैंची (काओलन)	२४१,१८३	१२,९२८,१०२
क्यांगसी	नानचंग	६६,७८३	१६,७७२,८६५
क्यांगसू	नानकिंग	४२,४५५	४१,२५२,१९२
किरिन	किरिन	४६,१२७	११,२९०,०७३
क्वांगसू	नानिंग	८४,५०५	१९,५६०,८२२
क्वांटंग	कान्टन	८६,४४३	३४,७७०,०५९
क्वीचो	क्वीयांग	६५,६९६	१५,०३७,३१०
ल्याओनिंग ३	शेनयांग	६१,३९८	१८,५४५,१४७
शांसी	ताइयूयान(यांगटू)	६०,३७८	१४,३१४,४८५
शाटंग	सिनान	५४,५४४	४८,८७६,५४८
शैंसी	सियान	७२,५३३	१५,८८१,२८१
सिकांग	यान	१७४,२८७	३,३८१,०६४
सिंगक्यांग	यूरुमिची	६६०,८०४	४,८७३,६०८
जैन्चवान	चैंगटू	११७,१९७	६२,३०३,०९९
यूनान	कुनमिंग	१६२,३००	१७,४७२,७३७

इसमें प्राचीन सुकयांग प्रान्त भी शामिल हैं। २. इसमें प्राचीन निंगसिया प्रान्त भी सम्मिलित है। ३. यह ल्याओतंग तथा ल्याओसी से मिलकर बना है।

चीन की नवीन सरकार ने कई सीमाओं को परिवर्तित कर दिया है, तथा दो नये क्षेत्रों की स्थापना कर दी है। पहला पिंगुआन प्रान्त, जिसमें हापी, होनान तथा शाटंग प्रान्तों की सीमायें आकर मिलती हैं। इसकी राजधानी सिनस्याँग (Hsinhsiang) है। इस प्रान्त का क्षेत्रफल १२३५८ वर्ग मील तथा जनसंख्या १५,७३८,००० है। दूसरा आन्तरिक मंगोलिया का क्षेत्र।

निम्नलिखित संस्थायें (मंचूरिया को मिला कर) चीन में १९५१ में इस प्रकार थीं :—

उत्तर-पूर्वी प्रांतों में :—ल्याओटंग, ल्याओसी, किरिन, संग क्याँग, हीलंग क्याँग, जिहोल, म्युनिसिपैलिटीज—मुकडेन पार्ट, आर्थर-डाइरेन आन्शान, फुशन, पैंकी।

उत्तरी चीन के प्रांतों में :—होपी, शान्शीं, चाहार, सुइयूआन, पिंगयान म्युनिसिपैलिटीज—पेकिंग, तींसतिन।

उत्तर पश्चिमी प्रांतों में :—सिंक्याग, चिंघाई, कान्सू, शेन्शी, निंगसिआ म्युनिसिपैलिटी—सिआन।

दक्षिणी-पश्चिमी प्रान्तों में :—जैचवान, सिकाँग, यूनान, क्यूचो, म्युनिसिपैलिटी चुङ्किंग।

मध्य दक्षिणी चीन के प्रान्तों में :—क्वाटंग, क्वाँग्सी, क्यांगसी, हुनान, ह्यूपी होनान, म्युनिसिपैलिटीज—हैंको, काण्टन।

पूर्वी चीन के प्रान्तों में :—शाटंग, क्यांग्सू, आन्वी, किचयांग, फ्यूकीन, (फोरमूसा) म्युनिसिपैलिटी—शंघाई।

इस प्रकार से प्रान्तीय चीन में ३२ प्रान्त हैं। इनमें यदि तिब्बत तथा नवीन आन्तरिक मंगोलिया भी शामिल कर दिया जाये तो बड़े चीन का क्षेत्रफल ३,६५७,७६५ वर्ग मील होता है तथा जनसंख्या ४४८,६६८,५०६ होगी।

सांस्कृतिक रूप (Cultural Aspect)

जातियां :—

सम्पूर्ण चीन पर यदि दृष्टि डाली जाये, तो यह प्रतीत होगा कि यहां विश्व की एक चौथाई जनसंख्या पाई जाती है। इसमें से नौ-दसवाँ भाग केवल मुख्य चीन में ही है। मंचूरिया के कुछ क्षेत्र भी घने बसे हुये प्रतीत होते हैं, लेकिन अन्य वह क्षेत्र जो कि मुख्य चीन के बाहर स्थित हैं, बहुत कम घने बसे हुये हैं। तिब्बत में जो कुछ भी जनसंख्या है वह सन-पो के बेसिन में है, मंगोलिया के उत्तर एवं गोबी के रेगिस्तान के पूर्व में, तारिम बेसिन में, काशगर, यारकन्द व आक्सू नदियों

की घाटियों में पाई जाती हैं। मुख्य चीन में नदियों की घाटियां संसार के सबसे अधिक घने बसे हुये क्षेत्रों में से है। हिन्द-चीन व तिब्बत की सीमाओं पर भी कुछ भागों में पर्वतीय जातियां पाई जाती हैं।

इन पर्वतीय जातियों को छोड़कर, जिनकी भौतिक विशेषताओं व उत्पत्ति के विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता शेष अन्य निवासी केवल काशगेरिया व जुन्गेरिया के ईरानियों व फारमूसा के मेलेय लोगों को छोड़ कर, मंगोलोतातर वंश की अनेक शाखाओं से भौतिक रूप-रंग में मिलते जुलते हैं। लेकिन यदि हम भाषा समूहों के दृष्टिकोण से देखें तो हमको कम से कम छः भाग मिलेंगे जो कि नीचे दी गई तालिकाओं में प्रकट किये गये हैं।

बहुत सी पर्वतीय जातियाँ अब भी प्रकृति पूजन करती हैं। इस्लाम धर्म काशगेरिया, जुन्गेरिया, पश्चिमी तथा उत्तरी-पश्चिमी चीन में प्रवेश कर गया है। ईसाई धर्म ने न केवल मुख्य चीन बल्कि मंगोलिया व मंचूरिया में भी अपने पैर जमा लिये हैं। ज्यूज़ लोग जो कि यहाँ "नीले मुसलमान" (Blue Mohammedans) कहलाते हैं, पहले बहुत अधिक थे, परन्तु अब थोड़े ही रह गये हैं और वह भी होनान की राजधानी काई-फंग-फू तक सीमित हैं। इन लोगों का कथन है कि यह असेर (Asser) जाति के हैं और हान वंश (202 B.C. 264 A. D.) के समय यहाँ आ बसे हैं। ये लोग अपनी वास्तविक भाषा भूल गये हैं और जो कुछ भी थोड़े से 'एरोनिस्ट' (Aronists) या ऐतिहासिक विशेषज्ञ मिलते हैं वह अब भी हेब्रू (Hebrew) शब्दों को चीनी ढंग से पुकारते हैं। उदाहरणार्थ 'इज़राइल' का उच्चारण यह लोग ई-जी-येली करते हैं। परन्तु कोई भी साधारण मनुष्य नहीं समझता और अब विचारों में इतना घोर परिवर्तन हो गया है कि ये लोग मक्का व मदीना को ही अपने पवित्र स्थान मानते हैं। इनमें से बहुत से लोगों ने बौद्ध धर्म को अपना लिया है और इनका राष्ट्रीय स्वभाव, आचरण तथा विचार इत्यादि सभी बदल गये हैं।

सम्पूर्ण चीन की जातियों का टेबिल

(१) मंगोलो-तातार पोलीसिलेबिक भाषा वाली मंगोलोयेड जातियां :—

शारा या पूर्वी मंगोलियन	खालका	तुशेतू, सी-सेंग, जासावत्, सैनजोयेन	मुख्यत: उत्तरी मंगोलिया
	उचुमसिन, चाकर, गोशिकेतन, बारिन, कोर्टसिन, जरोत, यूनिश्रोत, सुन्नी, तुमेत, कोर्टसिन, दरबान, उरत, नइमन, एहखानर, ओरडोस		दक्षिणी-पूर्वी भाग व दक्षिणी-पूर्वी मंगोलिया; ह्वांगहो नदी का उत्तरी मोड़
ऐल्दुत्स या कलमुक या पश्चिमी मंगोलियन	चोरस, तरगत, खोशोत, दर्बत		जुन्गेरिया, कुल्जा, उत्तर-पश्चिमी मंगोलिया
यूरिश्राहै	... ...		अपर येनेसी बेसिन
सोक-पा	... ...		उत्तरी - पूर्वी कस्पी (उत्तरी-पूर्वी तिब्बत)
तास्दी (१)	... ...		पश्चिमी सून्क
टगांस वंश	मचूंज़, टगांस		............मंचूरिया
	सोलोन्स, सिबोस		............अपर इली वेली, कुल्जा

तुर्की वंश

तुर्की वंश	तरांची, खिरगीज़-कजक	कुल्जा
	कारा खिरगीज़	मध्य तियान शान
	काशगेरियन	तारिम बेसिन, कुल्जा
	दोलन्स	काशगेरिया
	सालर (कारा-तगंत) .... ?	कदाचित् याँगटिसी नदी के निकलने का स्थान
	होरपा....................	पश्चिमी काची (उत्तरी-पश्चिमी तिब्बत)

(२) तिब्बत की माध्यमिक भाषा वाली मंगोलोयेड जातियां :—

बोद-पा (मुख्य तिब्बत के निवासी) ... सान-पो बेसिन

तंगुत्स (उत्तरी तिब्बत के निवासी) ... कान्सू, कुकुनोर साईदम

द्रोक-पा ... ..., चक्र-पा	मध्य काची, सोक-पा तथा होरपाके मध्य में
चम-पा	तोह के पूर्व में (तिब्बत में)
खम-पा	मध्य झील का क्षेत्र (तिब्बत में)
चंग-पा	खम-पा के पूर्व
सी-फन { अन्दोआन, तोचू, आरू, ग्यारंग, तेलू, मनयाक, मेलन }	कुकुनोर से लेकर यूनान तक की तिब्बत-चीनी सीमा के प्रदेश

(३) चीन की भिन्न भाषा वाली मंगोलोयेड जातियां :—

मुख्य चीनी	उत्तरी तथा मध्य चीन
पुन्ती ... ..., हाई-चन	क्वाटंग
हाका	क्वाटंग, फोकीन
होक-लो	स्वाले क्षेत्र (फोकीन)
तंगन्स	कान्सू, जुंगेरिया, कुल्ज़ा
चिम्पन, खातोसन { कदाचित् समाप्त हो गई हैं ! }	कुल्ज़ा

(४) वह पर्वतीय जातियां, जिनकी उत्पत्ति के वंश एवं भाषा सम्बन्धी

A. H. Keane, L. L. D.—Asia vol. I Northern & Eastern Asia, Pages 345, 346

प्रमाण नहीं मिलते :—

मान-सी (ई-ज्यू)	पश्चिमी सि-चुऐन
सुमू	

मियाओ-जी या नानमन समूह

पी-लोलो	यांगटिसीक्यांग नदी का दक्षिणी मोड़ दक्षिण सि-चुऐन, उत्तरी यूनान
शू-लोलो	
ही-लोलो	
सेन-लोलो	
चुंग, गुचुंग, तुमन	कुवी-चो उच्च प्रदेश
किलाओ, किताओ	
याओ	लीपो प्रदेश नानलिंग पर्वत श्रेणियों का दक्षिणी भाग
संग	नानलिंग पर्वत
तंग	उत्तरी क्वाटंग
लिसू	दक्षिणी-पूर्वी तिब्बत (लू-सी, क्याँग तथा लन सान-क्याँग के मध्य)

मोसो (सभ्य लिसू) ...	उत्तरी-पश्चिमी यूनान, लिसू का दक्षिणी क्षेत्र
लू-सी (अनौंग)	उत्तरी लिसू क्षेत्र
रेमीपंग	पूर्वी लिसू क्षेत्र
पागनी (पाई, तिरांग या बा-युल) ...	पश्चिमी लू-सी क्षेत्र
सारोंग	लू सी के उत्तर में
कूंसी	रेमीपंग के उत्तर में
दीजू	दीजू के उत्तर में
नू-आ (अनमपेल) ...	ऊपरी इरावदी की घाटी बर्मा का सीमा प्रदेश
शटंग	पश्चिमी यूनान
शंग-लाई	हैनान का द्वीप
शुक-लाई	

(५) आर्य वर्ग तथा भाषा :—

ताजिक्स	काशगरिया, कुल्जा
कारा-कुल्टसी ...	निचली तारिम नदी
लोबनोस्की या कारा-कुरचिन	लोब-नोर प्रदेश

इस टेबिल में जितनी भी जातियाँ प्रकट की गई हैं, उनमें से कोई भी

अपने को शुद्ध नहीं कह सकती। ईली बेसिन में जितनी भी जातियाँ मिलती हैं, वे कई बार तलवार या अग्नि के बल से बर्बाद हो चुकी हैं, और अब तरांची, तंगन्स, सोलन्स के अतिरिक्त काशगेरिया, कान्सू तथा मंचूरिया से आये हुये वे लोग मिलते हैं जो कि ऐसे विभिन्न रंगों के हैं जो या तो श्वेत और या पीले रंग से मिलकर बने हैं। ऐसा प्रतीत होता है ताल्दी लोग आधे चीनी, तथा आधे मंगोलियन हैं और सालार लोग, तिब्बत व तुर्की के मिश्रण मालूम होते हैं। काशगेरियन के विषय में कहा जाता है कि ये लोग तुर्की व इरानियन की मिलावट के हैं। न केवल इतना ही, बल्कि तन्गुत लोगों के विषय में यह कहा जाता है कि ये तिब्बत, मंगोल तथा चीनी जातियों के मिश्रण हैं। इन लोगों की ये भौतिक विशेषतायें 'प्रजेवल्सकी' (Prejevolsky) ने सर्वप्रथम अध्ययन कीं और 'तन्गुत' जो कि एक मंगोलियन नाम दिया गया। लेकिन रोकहिल ने जो कि चीनी व तिब्बती भाषा के पण्डित थे, यह बतलाया कि यह सब सी-फन अपने को बो-पा (जो कि बोद्-पा लिखा जाता है) कहते हैं। यह नाम सभी तिब्बत के लोग, केवल पूर्वी भाग को छोड़ कर, लेते हैं। इसीलिये अच्छा यही है कि इनको सी-फन तिब्बत के निवासी अथवा उत्तरी तिब्बत के निवासी कहा जाय।

दक्षिण तथा दक्षिणी-पश्चमी चीन के उच्चभागों की जाति की उन्नति तथा वर्ण के विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता, लेकिन हाँ हम यह विचार कर सकते हैं कि यह आदि निवासी यांगटिसीक्यांग नदी के बेसिन में, हान के बच्चों (लोग) के आने के पहले रहते थे। यहां ये लोग कुछ तो बर्बाद हो गये थे, कुछ यहीं अन्य जातियों में समा गये और कुछ तिब्बत के पठार से आक्रमण करने वाले पीले वर्ण के लोगों से डर कर भाग खड़े हुये, परन्तु पुनः धीरे धीरे स्थापित हो गये।

इस प्रकार से चीनियों को हम किसी भी प्रकार से शुद्ध जाति का नहीं बतला सकते। परन्तु इसमें संदेह नहीं कि ये लोग उस मंगोल वर्ण के हैं, जो कि कई बार अन्य मध्य व पूर्वी एशिया की जातियों से मिश्रित हो चुका है।

भाषा तथा निवासी (Language and Inhabitants) :—

चीनी लोग मंगोल जाति की एक प्रमुख शाखा हैं, और अब संख्या धन व शक्ति के दृष्टिकोण से यह लोग अन्य मंगोल जातियों से कहीं बढ़े हुये हैं। इनकी आधुनिक भाषा में अब भी प्राचीन संस्कृति की झलक दृष्टिगोचर होती है। यद्यपि अब व्याकरण सम्बन्धी विशेषतायें नहीं पाई जातीं। वाक्यों में शब्दों का प्रयोग इतना नियमित होता है, कि साधारण से साधारण मनुष्य इसको सीख सकता है। यही कारण है कि प्रत्येक वर्ग में भाषा कुछ न कुछ मिलती-जुलती है। अपनी भाषा के ही आधार पर इन्होंने सीमित साधनों के होते हुये भी बड़े-बड़े

कार्य पूर्ण कर लिये हैं।

इन लोगों का लिपि साधन भी इतना वास्तविक तथा महत्वपूर्ण है, कि इसमें स्वर की अपेक्षा विचार अधिक प्रकट होते हैं। इनकी लिखित भाषा में अक्षर नहीं होते, २१४ ऐसे चिन्ह ('Keys' or 'Tribunals') होते हैं, जिनको कि परस्पर मिलाकर इस प्रकार संयोग करते हैं, कि बोलने में एक अजीब उच्चारण होता है। इसमें लगभग उतने ही चिन्ह होते हैं जितने कि शब्द भाषा में होते हैं। कुल की संख्या ४३,४९६ है, लेकिन इसमें से ३००० तो बेकार हैं। वास्तव में साधारण साहित्य को प्रकट करने में ४००० चिन्ह काफी होते हैं। कन्फ्यूसियस तथा उनके चेलों की लिपि केवल २५०० शब्दों में ही पढ़ी जा सकती है। और कोई भी विद्यार्थी इनके आधार पर चीनी इतिहास अथवा तर्कशास्त्र का अध्ययन करता है।

इतनी प्राचीन भाषा व विचारों से अधिक लगन होने के कारण ही चीनी लोग अन्य राष्ट्रों की अपेक्षा वैज्ञानिक चमत्कारों को अपनाने में असमर्थ रहे, परन्तु कुछ भी हो, इनके सामाजिक व घरेलू जीवन में हमको कुछ ऐसी विशेषतायें मिलती हैं, जो कि अन्य किसी भी राष्ट्र में नहीं पाई जातीं। हम चीनी लोगों को यदि, उनके गिरे हुये रहन-सहन व संस्कृति की दृष्टि से देख कर उन्हें घृणा करें तो यह हमारी भूल होगी। उनके रहन-सहन, विचार व शिक्षा की श्रेणी कदाचित् सबसे भिन्न है। आश्चर्य की बात तो यह है कि निर्धनता होते हुये भी यह राष्ट्र धन का लालच जैसी अन्य त्रुटियों से दूर ही रहा है। ये लोग शराब व मदिरा पीने के आदी नहीं होते, परन्तु गत वर्षों से इन्होंने अफीम पीनी आरम्भ कर दी है। ये न केवल भारतवर्ष से प्राप्त की हुई अफीम का उपभोग करते हैं, बल्कि अब अपने देश में भी उपभोग के लिये उत्पन्न करने लगे हैं। भारतीय अफीम का उपभोग उच्च श्रेणी के लोगों में तथा चीनी अफीम का निम्न श्रेणी में होता है। अफीम खाने या पीने की आदत बुरी है या अच्छी, इसके विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। कुछ विशेषज्ञों का कथन है, कि यह पश्चिमी देशों की मदिरा शराब की अपेक्षा कुछ हल्की होती है, तथा स्वास्थ्य के लिये अधिक हानिकारक नहीं होती।

स्त्रियों का स्थान समाज में बहुत अच्छा होता है। निर्धन घर की स्त्रियों को गृहस्थी के पालन पोषण के हेतु बहुत घोर परिश्रम करना पड़ता है। ये बेचारी केवल मुट्ठी भर चावल व सब्जी से ही अपना पेट भर लेती हैं। कहीं कहीं तो इन निर्धन स्त्रियों को पेट भर खाना भी नहीं मिलता। पति अपने किसी अन्य साथी को तो मार सकता है, परन्तु अपनी स्त्री को नहीं। ऐसा तो देखने में ही नहीं आता कि स्त्री पुरुष को मारे।

लड़के का जन्म दिवस एक प्रमुख प्रसन्नता का दिवस होता है। परन्तु यदि लड़की का जन्म होता है, तो कभी कभी दाई (Midwife)* को फीस देने की भी एक समस्या हो जाती है। लड़के का जन्म, वास्तव में एक प्रसन्नता का अवसर है, क्योंकि लड़का आजन्म अपने माता-पिता के ही साथ रहता है, वह बुढ़ापे में उनको सहारा देता है। लड़की हमेशा दूसरों के घर जाती है, या अपने मां बाप के उपर भार बन कर रहती है। बुड्ढे लोगों का आदर किया जाता है। लोग प्रायः उनसे उनके बचपन की बातें सुनकर या उनकी आयु पूछकर प्रसन्न होते हैं। कोई भी गृहस्थी कार्य उनकी सलाह के बिना नहीं किया जाता। समाज भी उन्हें आदर की दृष्टि से देखता है।

सम्राट की मृत्यु पर सम्पूर्ण राष्ट्र शोकसागर में डूब जाता है, और निम्नांकित क्रियायें की जाती हैं। सौ दिन तक कोर्ट के अफसर लोग श्वेत रंग के वस्त्र पहनते हैं, यही इनके शोक प्रकट करने वाले वस्त्र हैं। मनुष्य शोक के समय अपने बाल तक नहीं बनाते और स्त्रियाँ अपने सिर के आभूषण तक नहीं पहनतीं। कुछ समय पश्चात् गहरे या काले रंग के आभूषण बारह महीने तक बराबर पहने जाते हैं। हर प्रकार के मनोरंजन तथा प्रसन्नता के उत्सवों का त्याग कर दिया जाता है।

चीन के निवासी यद्यपि बहुत बड़े व्यापारी नहीं हैं, परन्तु फिर भी संसार के अति प्राचीन व्यापारियों में से हैं। वर्षों से खरीदने वालों व बेचने वालों में एक ऐसा सम्बन्ध स्थापित है कि व्यापार में कोई अड़चन नहीं होती। जो रुपया उधार दिया जाता है, उसपर केवल तीन प्रतिशत प्रति माह कानूनन ब्याज मिलता है, इतनी अधिक दर का कारण रुपये देने वाले की शंका ही है। पारस्परिक लाभ पहुंचाने वाली व्यापारिक संस्थाओं का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। ये मूल्य को एकसा रखतीं हैं, संकट के समय रुपया उधार देती हैं, तथा अपने सदस्यों को हर प्रकार की कठिनाइयों से बचाती हैं। ये संस्थायें निर्धन मनुष्यों की मृत्यु पर स्वयं खर्चा करतीं हैं। कभी कभी अपने निजी 'फायर ब्रिगेड' रखती हैं जो अन्य लोगों को भी लाभ पहुंचाते हैं।

चरित्र तथा स्वभाव (Character and Temperament):— चीनी लोगों का यह विश्वास है, कि अभी उन्हें अन्य राष्ट्रों से अनेक बातें सीखनी हैं। ये लोग ईमानदार, परिश्रमी, उदार तथा सहनशील होते हैं। इनका तर्कशास्त्र

*"In midwifery cases a large fee will sometimes be paid spontaneously if the child be a boy, and no fee whatever if it be a girl" (Mrs. S. Heckford, The Queen Nov. 19, 1881)

इन्हें बतलाता है कि खाली समय का कैसे उपयोग किया जाय, तथा धन इनके लिये अधिक महत्वपूर्ण क्यों नहीं है। कुछ लोगों का कहना है कि इन लोगों के पास संयुक्त राज्य अमेरिका के निवासियों से भी अधिक सोना है, परन्तु यह उसको प्रकट करने की भावना नहीं रखते। साथ ही इनके चरित्र में यह भी देखा जाता है कि ये लोग क्रूर तथा दयाहीन होते हैं। इनकी बुद्धि भ्रम, घृणा तथा बचपने से भरी होती है, कभी कभी ये लोग ऐसे कार्य कर बैठते हैं, जिनको करने के पश्चात् इन्हें घन्टों पछताना पड़ता है। यह डरपोक और कायर भी होते हैं, जरा सी अफवाह पर ढंढोरा पीटने लगते हैं। इनके विचार बड़े सीमित होते हैं, जिसके कारण ये कभी कभी अपना चाल चलन भी गँवा बैठते हैं। इनका यह अन्ध-विश्वास है, कि ऊपर से लेकर नीचे तक जो कुछ भी वस्तुयें होती हैं, वह सब नियमानुसार ही होती हैं। साधारण से साधारण घटना भी उन्हें देवी देवताओं की याद दिला देती है।

इसमें सन्देह नहीं कि इन लोगों का चरित्र एक सा नहीं है। लड़ाई, झगड़े विद्रोह, अकाल तथा बाढ़ इत्यादि के कारण कभी कभी तो प्रान्त के प्रान्त उजड़ गये हैं, कहीं कहीं पर बिल्कुल नई बस्तियाँ स्थापित हुई हैं। जिन्होंने एकता लाने का साहस किया है। परन्तु फिर भी हमको उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम में, भाषा, विचार रीति-रिवाज, रहन-सहन तथा स्वभाव आदि में एक अजीब प्रकार की भिन्नता मिलती है। क्वाटंग एक विचित्र प्रान्त है, यहां के चीनी लोग कान्टन के निवासियों को अपने राष्ट्र के नहीं मानते। उत्तर के निवासी अपने को हान वंश के बतलाते हैं तथा दक्षिण के तँग वंश के। इस प्रकार से हम देखते हैं कि यहाँ पर संगठन न पाये जाने के कारण समस्त गुप्त समाज, तथा विद्रोह इत्यादि उत्पन्न हो जाते हैं, इनके कारण कभी कभी चीनी कुलियों में भीषण झगड़े भी हो जाते हैं। बहुत से भय के कारण मलाया, जावा तथा अन्य पूर्वी द्वीपसमूहों में भाग जाते हैं। एक कारण और भी बतलाया जाता है, वह यह है, कि यहां पर कोई स्थाई सरकार न होने के कारण लोगों के हृदय में राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत नहीं हो पाई है।

चीनी बच्चों में आरम्भ से ही कुछ न कुछ काम करने की आदतें डाली जाती हैं। लड़कियां सीने-पिरोने, काढ़ने, कपड़ा बुनने तथा अन्य प्रकार के घरेलू कामों में निपुण की जाती हैं और लड़के या तो पढ़ने जाते हैं और या बाहरी कामों में चतुर बनाये जाते हैं। आरम्भ से ही इनको ऐसे सिद्धान्त व नियम

सिखलाये जाते हैं, जिससे कि वे अपनी भावनाओं को वश में रख सकें, दूसरों से नम्रता व व्यवहार करें तथा किसी को दुःख न दें।* ये लोग जानते हैं, कि जीवन में कभी कभी लड़ने का भी अवसर आता है। परन्तु वास्तविक जीवन में ऐसी घटनायें बहुत ही कम होतीं हैं। इनकी जाति कोई लड़ाकू जाति नहीं है, और न यह युद्ध अथवा व्यापारिक सफलता की सराहना करते हैं। इनको जो वास्तविक प्रेम होता है वह ज्ञान से होता है। लेकिन साथ ही साथ नम्रता उदारता व सभ्यता से भी लगन रहती है। योग्यता का इनके जीवन में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है, शासन सम्बन्धी स्थान केवल उन्हीं नौजवानों को दिया जाता है, जो कि वास्तविक योग्यता रखते हैं।

यदि इन लोगों के चरित्र की तुलना पश्चिमी देशों से की जाय, तो हम देखेंगे कि इन लोगों का ध्येय विशेषतौर पर मनोरंजन की ओर तथा पश्चिमी देशों के लोगों का ध्येय शक्ति की ओर होता है। शक्ति से यहां पर तात्पर्य है, अन्य राष्ट्रों तथा प्रकृति पर विजय। चीनी लोग इस दृष्टि से सुस्त तथा काहिल हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं, कि बहुत ही अच्छी प्रकृति होती है। ये लोग बड़े परिश्रमी होते हैं, काम करने से कभी जी नहीं चुराते। जब इनके पास थोड़ा सा भी धन होता है, तब वह उसी पर अपना जीवन निर्बाह करने लगते हैं, और अपने धन को बढ़ाने की कभी चेष्टा नहीं करते। मनोरंजन के ये बहुत अधिक शौकीन होते हैं। सिनेमा या थियेटर जाना, चाय पीते समय घंटों वार्तालाप करना, प्राचीन चीनी कला की सराहना करना तथा सुन्दर दृश्यों को देखना इत्यादि इनके सर्वप्रिय मनोरंजन हैं। ये लोग निर्धन होते हुये भी प्रसन्न रहते हैं और अपना जीवन स्वतन्त्रतापूर्वक व्यतीत करते हैं। ये कोई भी ऐसा कार्य करना पसन्द नहीं करते जिसमें कि आर्थिक लाभ न हो और न यह ऐसी शिक्षा ग्रहण करते हैं जो कि इनकी इच्छाओं में बाधा डालती हो।

शिक्षा सम्बन्धी परामर्शों को ये लोग अपनाते हैं, मनुष्य से यह आशा की जाती है कि वह अपने माता पिता का आदर करे, बच्चों को कृपा की दृष्टि से देखे, निर्धन सम्बन्धियों के प्रति उदारता तथा सहानुभूति प्रगट करे यह कोई कठिन नियम नहीं है, बल्कि बहुत से चीनी इन सब बातों का पालन करते हैं। इनके चरित्र में एक उल्लेखनीय बात यह होती है, कि यह लोग वाद-विवाद पर अधिक ध्यान नहीं देते, यदि कोई ऐसी वादविवाद सम्बन्धी समस्या आ भी जाती है तो आदरणीय

* Bertrand Russell's Famous article—Happiness in this Modern World.

प्रौढ़ व्यक्तियों के परामर्श द्वारा सुलझा ली जाती है। चीन में जब कभी भी युद्ध के समय शत्रुओं की सेनाओं ने शक्ति का प्रयोग किया इन लोगों ने कभी चिन्ता नहीं की। इनके लिये साधारण सिपाही भी कोई महत्ता नहीं रखता। यहां कभी भी ऐसे झगड़े नहीं हुये है, जिनमें कि रक्त की नदियां बही हों। यहां का शासन तथा व्यापार प्रणाली इस प्रकार से चलती है, जैसे कि यहाँ कोई सेना या अन्य बाधा डालने वाली संस्था है ही नहीं। आपस की सुलह, परस्पर प्रेम तथा एक राष्ट्रीय भावना के ही कारण आज का चीन उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है।

अन्धविश्वास व धर्म (Superstitions and Religion)

चीनी लोगों के जीवन में धर्म कोई विशेष महत्वपूर्ण स्थान नहीं रखता। ये लोग भ्रमी होते है। भाग्यवान् दिन, स्थान, रंग तथा चिन्ह इनके लिये बहुत अधिक महत्ता रखते हैं। जब कभी भी विवाह का सम्बन्ध स्थापित करते समय, कोई प्लेट या प्याला फूट जाता है, तो सम्बन्ध तुरन्त ही तोड़ दिया जाता है, क्योंकि यह घटना बहुत ही अशुभ मानी जाती है। एक बार कान्टन नगर का इंगलिश गिर्जाघर लाल रंग से पोत दिया गया था। चीनी लोगों ने इस पर आपत्ति की क्योंकि उनके मतानुसार यह रंग अग्नि की ज्वालाओं से मिलता जुलता है, और पूरे नगर के लिये अग्नि का कारण बन सकता था। इस पर अंग्रेजों को यह गिर्जाघर किसी दूसरे रंग में पुतवाना पड़ा। इसी प्रकार जब कभी भी भूकम्प आता है, तो ये लोग तार के खम्भों को दोष देते हैं। एक बार जब एक नगर में अधिक बीमारी फैली हुई थी तब लोग ब्रिटिश कौन्सल के बंगले की छत पर लगे हुये एनोमीमीटर को दोष देने लगे, और उसे उखड़वा दिया। किन्तु वास्तव में उस बीमारी का कारण क्या था, नगर की गन्दगी। इसी प्रकार जब एक अंग्रेज निवासी एक पहाड़ी पर घूम रहा था, तो चीनी लोग उसके चारों ओर एकत्र होकर, उसकी नीली आंखों की ओर घूर-घूर कर देखने लगे। इन लोगों का अन्ध-विश्वास था कि इसकी नीली आंखें पृथ्वी के नीचे छिपे हुये खनिज पदार्थों को देख रहीं हैं, और ये खनिज पदार्थों की ही खोज में इन पहाड़ियों पर इधर- उधर घूम रहा है।

एक साधारण चीनी मनुष्य को इस बात का विश्वास होता है, कि भूत-प्रेत (Spirits) चारों ओर पाये जाते हैं, और वह हमेशा लोगों को हानि पहुंचाने की चेष्टा किया करते हैं। उनके और लोगों के मध्य केवल एक कागज की शीट का अन्तर है। यह चीनी लोगों का अन्ध-विश्वास है और जब कभी भी कोई ऐसी घटना होती है, जिसको कि वह समझने में असमर्थ रहता है, तो तुरन्त ही एक कागज की शीट उन भूत प्रेतों को भगाने के हेतु रख देता है। एक बार एक छोटा

सा बालक बीमार था, उसकी मां ने सोचा कि बालक की बीमारी किसी भूत-प्रेत के कारण है उसने एक पुजारी से, बालक की पीठ के बराबर कागज के टुकड़े पर एक प्रार्थना लिखने को कहा, लिख जाने के पश्चात् माँ ने उसको बच्चे की पीठ पर चिपका दिया और जोर जोर से उस पर लिखी हुई प्रार्थना को भूत-प्रेत को भगाने के हेतु पढ़ने लगी।

इसी प्रकार जब अंग्रेज, जर्मन तथा अन्य विदेशी लोगों ने चीन में रेलें, सड़कें तथा मकान आदि बनाने आरम्भ किये थे, तब उस समय चीनी लोगों ने सोचा कि इन लोगों को हम प्राचीन काल के शूरवीरों के शूक्ष्म शरीर (भूत-प्रेतों) द्वारा निकाल बाहर कर सकते हैं। इन लोगों ने एक समाज बनाया जो 'बाक्सर्स' (Boxers) कहलाता था। इस समाज में मन्त्र तथा अनोखे शब्द पढ़े जाते थे। लोगों का विश्वास था, कि इनकी सहायता से भूत-प्रेत सहायता करेंगे। लेकिन जब समाज के सदस्यों या उन लोगों से, जो इस अन्ध-विश्वास के अनुयायी थे, कहा गया कि बन्दूक के सामने खड़े हो जाओ तो ये लोग भ्रम में आकर खड़े हो गये परन्तु गोली लगते ही तुरन्त मर गये।

चीनी धर्म का आधार पूर्वजों का मान तथा उनकी पूजा है। यहाँ के लोग आजन्म अपने पूर्वजों की भूमि पर रहते हैं, उनकी समाधि पर अपनी जान तक गँवाने को तैयार रहते हैं। विभिन्न धर्म इनके लिये केवल तर्क शास्त्र के विद्यालय हैं। वास्तविक मोक्ष के विषय में इन्हें विश्वास है कि बिना पूवजों की पूजा के प्राप्त नहीं हो सकता।

इस देश में मुख्यत: तीन प्रकार के धर्म पाये जाते हैं। पहला बौद्ध, दूसरा ताओ तथा तीसरा कन्फ्यूसियन। यहां की बहुत सी जनसंख्या इन तीनों धर्मों को मानती है। परन्तु मन्दिर सबसे अधिक बौद्ध धर्म के ही मिलेंगे। इस धर्म की उत्पत्ति भारतवर्ष से हुई है। ताओ धर्म में ताओ लोगों को संकट के समय याद किया जाता है, केवल यह जानने के लिये कि कौनसा मार्ग अच्छे भाग्य का है। कन्फ्यूसियन में कन्फूसियस* की पूजा होती है। इस धर्म को मानने वाले इसके नियम व सिद्धान्तों का क्रियात्मक रूप से अपनाते हैं।

* In China Confucius lived 500 years before Christ. He was a soldier's son. His father was a brave officer, but he died when Confucius was only three. His mother encouraged the boy to study. So he studied ancient books. He married at nineteen and his mother died, when he was 23. He was then a teacher. He continued his studies and mastered the ancient writings. After

यहाँ तीन लाख से अधिक मन्दिर हैं और चालीस लाख से अधिक देवता हैं। लोगों के घरों में इन देवताओं के चित्र बने होते हैं, नीचे उनका नाम लिखा होता है। इनके निकट एक ऐसी वस्तु होती है, जिसमें से सुगन्धित धुआँ हर समय निकला करता है। कुछ मन्दिर तो बहुत ही सुन्दर होते हैं, साथ ही उनका वातावरण भी मनोरंजक होता है। इनकी छतें गोलाई में होती हैं, घरों पर तथा दीवारों पर मछलियों, पक्षियों तथा दैत्यों के चित्र खिंचे होते हैं। मन्दिर का पुजारी गंजी खोपड़ी रखता है और उसका रूप इतना विचित्र होता है, कि सभ्य लोग उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं। पढ़े लिखे लोग मन्दिर वाले देवताओं की मूर्तियों को नहीं मानते। परन्तु अधिक जनसंख्या ऐसी ही है, जो कि इनको पूजने बराबर आती है। बुद्ध भगवान को प्रसन्न करने के लिये ब्रह्मचारी लोग अपना सीधा हाथ कटा लेते हैं तथा मध्य चीन में १००० मील का चक्कर (परिक्रमा) लगाते हैं और साथ ही प्रत्येक छठे कदम पर प्रार्थना करते रहते हैं। इन देवताओं से भी अधिक महत्वपूर्ण पूजा पूर्वजों की टेबलेट (Tablet) की होती है। टेबलेट, एक आठ इंच लम्बी व तीन इंच चौड़ी लकड़ी होती है। यह एक तरफ मोटी होती है, दूसरी ओर इसको खड़े करने के हेतु कुछ लगा होता है। इस पर प्रत्येक पूर्वज का नाम लिखा होता है, किसी किसी घर में कई टेबलेट पंक्तियों में दबे पाये जाते हैं। यह बहुत ही पवित्र माने जाते हैं।

जब किसी धनी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तब उसकी पसन्द की सब वस्तुओं के मोडल बना कर जलाया जाता है। निर्धन व्यक्ति कागज पर वस्तुओं के चित्रों को अंकित करके जला सकते हैं। धनी लोगों की कब्र बड़ी सावधानी के साथ किसी सुन्दर व भाग्यवान जगह पर बनाई जाती है। दक्षिणी चीन में यह घोड़े के खुर के आकार की होती है। उत्तर की कब्र केवल मिट्टी के ढेर के रूप में होती हैं, परन्तु इन पर हरी-हरी वनस्पति उगा दी जाती है। जब कभी भी पूर्वजों की कब्रें दूर होती हैं, तो सब गृहस्थी के लोग उन स्थानों पर मनोरंजन (Picnic) के

---

that he gathered some pupils and spent his time in teaching. When he was fifty, he was made governor of the city. He worked so splendidly that he was promoted from superintendent of works to Minister of Crime for the whole state. Again, he showed genius. Everybody was surprised to see his work. Duke was tired of the sage and his high ideals. So Confucius left the job and wandered in every province and gave his teachings. In old age he settled down again and spent his time editing the ancient writings of which he was so fond.

दृष्टिकोण से जाते हैं, इन कब्रों की सफाई की जाती है और साथ ही पूर्वजों के प्रति श्रद्धा प्रकट की जाती है।

इन तीन धर्मों के अतिरिक्त चीन में दो अन्य धर्म भी पाए जाते हैं, पहला इस्लाम तथा दूसरा ईसाई। इस देश में उत्तर-पश्चिम तथा दक्षिण में इस्लाम-धर्म का अधिक (१८५०-७८) प्रचार हुआ है। वास्तव में अरब के व्यापारी यहाँ प्राचीन काल से व्यापार करते चले आये हैं। इन लोगों ने तलवार की शक्ति से अपने धर्म का प्रचार कई देशों में किया था। चीन भी उन्हीं में से एक है। यहाँ इस्लाम धर्म मानने वालों की संख्या तीस लाख के लगभग है। (लीना ई० जौंस्टन का कथन है कि चीन में ५० लाख से लेकर १०० लाख मुसलमान पाये जाते हैं) यूनान में इन्हें पन्थेज (बल्कि पूरे दक्षिण में) तथा कान्सू व जुंगेरिया प्रान्तों में (बल्कि पूरे उत्तर में) यह तंगन्स कहलाते हैं। चीन के यवन अन्य देशों के यवनों से भिन्न हैं। स्त्रियों का उनके धर्म में उच्च स्थान है। कई घरों में मस्जिदें होती हैं। वहीं ये लोग अपनी नमाज पढ़ लेते हैं। इनके धर्म में बीड़ी, सिगरेट, शराब व गोश्त खाना पाप समझा जाता है। इन लोगों ने कई ऐसी पाठशालायें खोल दी हैं, जिनमें अरबी भाषा सिखलाई जाती है।

कहा जाता है कि १५०० वर्ष पहले चीन में एक नेस्टर का पुजारी (Nestorian priest) आया। ताई संग (T'ai Tsung) ने जो उस समय का सम्राट था इसका बहुत आदर किया और जितनी भी ईसाई धर्म की पुस्तकें थीं उनको चीनी भाषा में लिखवा कर अपने पुस्तकालय में रखवा लिया। फ्रांस के निवासियों ने यहां 'रोमन केथोलिक' की स्थापना की, केवल १०० वर्ष बाद यहाँ 'प्रोटेस्टेण्ट' मिशीनरी आने लगे। ये लोग सम्राट के पास नहीं गये, बल्कि गिर्जे बनवाने, अस्पताल, स्कूल इत्यादि बनवाने शुरू कर दिये और धीरे-धीरे धर्म का प्रचार करने लगे। कुछ ही वर्षों में चीन के कोने-कोने में ये लोग फैल गये। यहाँ लगभग तीस लाख 'रोमन केथोलिक' ईसाई तथा सात लाख 'प्रोटेस्टेण्ट' ईसाई हैं। वह मनुष्य जो सब से प्रथम प्रेसीडेण्ट था, ईसाई धर्म का ही था और अब भी जो लोग चीन के शासन प्रबन्ध में लगे हुए हैं वे ईसाई धर्म के ही मानने वाले हैं।

वास्तव में यदि देखा जाय तो ईसाई धर्म के प्रचार से चीन की दशा बहुत कुछ सुधर गई है। स्कूल व कालिज में पढ़ाने वाले मास्टर व प्रोफेसर अधिकतर ईसाई हैं। ईसाइयों के पहले चीन में कोई भी राष्ट्रीय-गान नहीं था, लेकिन उस समय से जब से कि ये लोग आये हैं, राष्ट्रीय-गान अपना लिया गया है। कई वर्ष हुए एक चीनी समाचार-पत्र ने लिखा था, कि चीन के धर्मों को प्रोत्साहन मिलना

चाहिये, उन्हें नवीन जीवन मिलना चाहिए, बाद में कदाचित् कुछ कार्य भी हुआ परन्तु केवल ईसाई धर्म ही ऐसा था जिसने कुछ ठोस कार्य किया। सन् १८३५ में चीन का पहला अस्पताल कान्टन नगर में खोला गया। जाति-बिरादरी से निकाली हुई लड़कियों को मिशन में रखा गया और उनकी शादियों का प्रबन्ध किया गया। मिशन ने अन्धे, बहरे, लंगड़े तथा मूर्ख व्यक्तियों के लिये मदरसे, घर तथा चिकित्सालय बनवाये, जिससे कि इन लोगों की ठीक-ठीक देख-रेख हो सके। पुलिस के सिपाहियों को आज्ञा है कि वह भिखारियों तथा बेघर लड़कियों को शरणार्थ-घर में ले आया करें।

इस प्रकार से चीन में ईसाई-धर्म की नीव काफी गहराई तक जा चुकी है।

संस्कृति (Culture) :—

चीन कदाचित् संसार का सबसे मनोरंजक देश है, क्योंकि यह एक अति प्राचीन देश है। यहाँ की सभ्यता व संस्कृति पाँच हजार वर्ष पुरानी है बेबीलन व मिश्र की सभ्यता इसकी तुलना में कुछ भी नहीं हैं, और न यह इतनी अधिक प्राचीन है। पीछे हम बतला चुके हैं कि इसी से ५५१ वर्ष पूर्व कनफ्यूसियस महात्मा हुए थे। इन्होंने प्राचीन चीनी ग्रन्थों का अध्ययन किया था तथा स्वयं अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी थीं। कहा जाता है कि चीन उस समय विश्व का सबसे अधिक उन्नतिशील देश था। इसके पास ११२१ बी० सी० में दिशा देखने वाला कुतुबनुमा (Mariner's Compass) था। यहां मोज़ेज (Moses) के समय में भी स्कूल पाये जाते थे, न केवल इतना ही, बल्कि ईसा के पूर्व यह लोग बहुत ही सुन्दर तैल चित्र बनाया करते थे, कवितायें व मूर्तियाँ इत्यादि बनाने की कला भी प्रचलित थीं। परन्तु वास्तविक रूप से कविताओं का लिखना सातवीं शताब्दी से आरम्भ हुआ। छापने की युक्ति का यहीं से प्रचार हुआ है। उस समय यहाँ के लोग लकड़ी पर डिजाइनें व अक्षर खोद कर उन पर स्याही लगा कर उन्हें छापते थे। कदाचित् सर्वप्रथम पहिये का आविष्कार भी इसी देश में हुआ था।

जिस समय ग्रेट ब्रिटेन केवल बंजर टापू थे, मिश्र, ग्रीस तथा बेबीलन की सभ्यता का विकास भी नहीं हुआ था, उस समय चीन एक महान देश था। यहाँ बड़े-बड़े नगर, बड़ी-बड़ी इमारतें तथा विद्वान लोग पाये जाते थे। मध्य पूर्वी तथा भूमध्य सागरीय देश सभ्यता की सीमा पर भी नहीं पहुंच पाए थे कि चीन में पहले ही बड़े-बड़े व्यापारिक केन्द्र, चपटी नावें, कृषि करने के औजार तथा गाड़ियाँ इत्यादि पाई जाती थीं। चीन में ही सब से पहले रेशम की खोज हुई

थी और रेशमी वस्त्र तैयार किया गया था, पोरसीलेन व पारदर्शक बर्तन भी यहीं सर्वप्रथम बने थे। छापेखाने की मशीन काक्सटन के आविष्कार के पहले ही बन चुकी थी। बन्दूक के पाउडर का भी इसी देश में आविष्कार हुआ। एक कैमब्रिज के प्रोफेसर का कथन है, कि 'टेक्सी केब' यहीं सबसे पहले प्रयोग की जाती थी। न केवल इतना ही बल्कि ढोल व घण्टियों के बारे में भी यही विचार किया जाता है, कि यह वस्तुएं यहीं सर्वप्रथम प्रयोग की जाती थीं। यहाँ के प्रसिद्ध ऐस्ट्रानोमर, डाक्टर तथा प्रोफेसर इत्यादि विद्वानों के चिन्ह अब भी लेखों तथा इमारतों के रूप में पाए जाते हैं। आज के चीन में यदि हम भ्रमण करें तो हमें विश्वास हो जायगा कि यह वास्तव में एक अति प्राचीन देश है तथा यहाँ की संस्कृति बहुत उच्च है।

चीन के विभिन्न क्षेत्रों में लोगों के रीति-रिवाज तथा रहन-सहन के ढंग भिन्न हैं। आन्तरिक क्षेत्रों में कच्चे मकान मिलते हैं। प्रत्येक के आगे छोटा-सा बगीचा होता है। घर के अन्दर विशेष तौर पर उत्तरी चीन में शीत से बचने के हेतु अंगीठी जिसे 'कंग' कहते हैं, जलाते हैं। इसके चारों ओर गृहस्थी के लोग बैठ जाते हैं। दक्षिण में दूसरी ही रीति है, लोग ऊनी कपड़े पहनते हैं, कंग का प्रयोग बहुत कम होता है। इनके बालक जब बहुत छोटे होते हैं तब उनकी भाषा का उच्चारण अधूरा होता है लेकिन जब यह बड़े होते हैं तब पूर्ण रूप से कर लेते हैं। हर प्रकार की मशीनों के लिये 'चिआ' शब्द प्रयोग किया जाता है। मनुष्य विभिन्न स्थानों पर भिन्न नाम से पुकारे जाते हैं। पेकिंग के लोग 'जिन' स्वातो के 'निआंग' कारण्टन के 'यान', निंगपो के निंग तथा अमोय के 'लंग' कहलाते हैं। दिशाओं को प्रकट करने के लिये, उत्तर को 'पी' दक्षिण को 'नन' पूरब को 'तंग' तथा पश्चिम को 'सी' कहते हैं। पर्वत 'शान' समुद्र 'है' झील 'हू' तथा नदी 'हो' अथवा क्याँग के नाम से पुकारे जाते हैं। चीनी लोगों की भाषा पर किसी भी देश की भाषा का प्रभाव नहीं पड़ा है, और न विदेशियों ने इसको अपनाया है। वास्तव में विदेशी लोगों को यह कुछ कठिन भी मालूम होती है, क्योंकि यहां की भाषा के उच्चारण इस प्रकार होते हैं, कि कई-कई मतलब निकलते हैं। उदाहरणार्थ 'को' उच्चारण के आठ तथा 'की' के चौदह अर्थ निकलते हैं। इस प्रकार से इनकी भाषा विश्व की अन्य भाषाओं की अपेक्षा अधिक शुद्ध है।

यहां के निवासियों की दो कुप्रथायें हैं। पहली, नीचे तक बाल लटकाने की (Pigtails) तथा दूसरी पैरों को छोटा करने की (Crippled Feet)। गत वर्षों में बहुत अधिक प्रचलित थीं। परन्तु अब धीरे धीरे हट रही हैं। बाल लटकाने की प्रथा 'मंचू वंश' से सन् १६२१ में चली थी। इसका ध्येय केवल नम्रता व उदारता प्रकट करना था। बाद में रिपब्लिकनों ने सन् १६१२ में इस प्रथा को जड़

से उखाड़ने की चेष्टा की, कई स्थानों पर सिपाही रख दिये गये, और उन्हें ऐसे लोगों को पकड़ने की आज्ञा दे दी गई। धीरे धीरे यह प्रथा समाप्त होने लगी। पैर छोटे रखने की प्रथा स्त्रियों में अधिक थी। इसकी उत्पत्ति सन् ६३४ से बतलाई जाती है। जिस प्रकार से लैटिन जाति के निवासी हाथ की छोटी अंगुली के नाखून नहीं काटते और इसको स्वतन्त्रता व फैशन का चिन्ह समझते हैं, उसी प्रकार से चीनियों का यह विचार है कि मनुष्य की ऐसी पत्नी होनी चाहिये जिसके कि पैर छोटे हों। इन लोगों का अन्ध-विश्वास है, कि छोटे पैर वाली स्त्री घर से भाग नहीं सकती। पैर छोटे करने का साधन इन लोगों के यहां बचपन से ही अपनाया जाता है। पैर की उंगलियों को कस कर पैर के नीचे बाँध देते हैं, लड़कियों को इसमें तनिक भी कष्ट नहीं होता, बल्कि उन्हें एक प्रकार का आनन्द प्राप्त होता है। स्त्रियों की सुन्दरता का अनुमान पैरों के आकार से ही लगाया जाता है। अधिक छोटे पैर 'सुनहरे फूलों' (Golden Lilies) के नाम से पुकारे जाते हैं। क्योंकि मिट्टी या रेत पर इनका आकार फूलों के समान आता है। चार इंच लम्बा पैर अधिक 'फैशनेबिल' समझा जाता है, परन्तु ढाई इञ्च तक के पैर मिलते हैं। चीनी स्त्रियां अपनी सुन्दरता के लिये भी प्रसिद्ध हैं, ये बड़ी गुणवती व लज्जावती होती हैं। जितने ही इनके पर छोटे होते हैं, उतना ही स्वाभिमान इनमें पाया जाता है। पर को ये लोग उतना ही छिपा रखतीं हैं, जितना कि अन्य आवश्यक अंगों को। यदि कई व्यक्ति यहां की स्त्रियों के पैरों की ओर दृष्टि डालता है, तो वह समझतीं हैं कि अवश्य ही यह किसी बुरी भावना को धारण किये हुये है।

प्राचीन काल में स्त्रियों की दशा बड़ी शोचनीय थी, इन्हें कोई मान की दृष्टि से नहीं देखता था। कन्फ्यूसियस का कथन था कि स्त्रियां पुरुष से उतनी ही भिन्न हैं, जितना कि स्वर्ग पृथ्वी से। लेकिन गत वर्षों से स्त्रियों का स्थान समाज में उठ गया है, और अब वे भी स्वतन्त्रतापूर्वक रहतीं हैं। प्राचीनकाल में लड़कियों का विवाह माँ बाप के मतानुसार किया जाता था, परन्तु अब लड़की की भी अनुमति ले ली जाती है। आजकल यहां लड़के व लड़कियों को विवाह सम्बन्ध स्थापित करने का पूरा अधिकार है, और विवाह भी अब दोनों की अनुमति से होता है। यदि मनुष्य की पहली स्त्री जीवित है, तो भी उसे दूसरा विवाह करने का अधिकार प्राप्त रहता है। दूसरा विवाह औलाद के लिये अधिकतर किया जाता है। गृहस्थी में एक बच्चे का होना अति आवश्यक समझते हैं, क्योंकि पूर्वजों की देख-रेख के लिए सन्तान होनी ही चाहिए। घर में पहली पत्नी ही माननीय समझी जाती है। यही घर की मालकिन होती है तथा इसी के ऊपर गृहस्थी का सब भार होता है। लड़कियों को आरम्भ से ही गृह-शास्त्र की शिक्षा दी जाती है। यहां पर

सिखलाये जाते हैं, जिससे कि वे अपनी भावनाओं को वश में रख सकें, दूसरों से नम्रता व व्यवहार करें तथा किसी को दुःख न दें।* ये लोग जानते हैं, कि जीवन में कभी कभी लड़ने का भी अवसर आता है। परन्तु वास्तविक जीवन में ऐसी घटनायें बहुत ही कम होतीं हैं। इनकी जाति कोई लड़ाकू जाति नहीं है, और न यह युद्ध अथवा व्यापारिक सफलता की सराहना करते हैं। इनको जो वास्तविक प्रेम होता है वह ज्ञान से होता है। लेकिन साथ ही साथ नम्रता उदारता व सभ्यता से भी लगन रहती है। योग्यता का इनके जीवन में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है, शासन सम्बन्धी स्थान केवल उन्हीं नौजवानों को दिया जाता है, जो कि वास्तविक योग्यता रखते हैं।

यदि इन लोगों के चरित्र की तुलना पश्चिमी देशों से की जाय, तो हम देखेंगे कि इन लोगों का ध्येय विशेषतौर पर मनोरंजन की ओर तथा पश्चिमी देशों के लोगों का ध्येय शक्ति की ओर होता है। शक्ति से यहां पर तात्पर्य है, अन्य राष्ट्रों तथा प्रकृति पर विजय। चीनी लोग इस दृष्टि से सुस्त तथा काहिल हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं, कि बहुत ही अच्छी प्रकृति होती है। ये लोग बड़े परिश्रमी होते हैं, काम करने से कभी जी नहीं चुराते। जब इनके पास थोड़ा सा भी धन होता है, तब वह उसी पर अपना जीवन निर्वाह करने लगते हैं, और अपने धन को बढ़ाने की कभी चेष्टा नहीं करते। मनोरंजन के ये बहुत अधिक शौकीन होते हैं। सिनेमा या थियेटर जाना, चाय पीते समय घंटों वार्तालाप करना, प्राचीन चीनी कला की सराहना करना तथा सुन्दर दृश्यों को देखना इत्यादि इनके सर्व-प्रिय मनोरंजन हैं। ये लोग निर्धन होते हुये भी प्रसन्न रहते हैं और अपना जीवन स्वतन्त्रतापूर्वक व्यतीत करते हैं। ये कोई भी ऐसा कार्य करना पसन्द नहीं करते जिसमें कि आर्थिक लाभ न हो और न यह ऐसी शिक्षा ग्रहण करते हैं जो कि इनकी इच्छाओं में बाधा डालती हो।

शिक्षा सम्बन्धी परामर्शों को ये लोग अपनाते हैं, मनुष्य से यह आशा की जाती है कि वह अपने माता पिता का आदर करे, बच्चों को कृपा की दृष्टि से देखे, निर्धन सम्बन्धियों के प्रति उदारता तथा सहानुभूति प्रगट करे यह कोई कठिन नियम नहीं है, बल्कि बहुत से चीनी इन सब बातों का पालन करते हैं। इनके चरित्र में एक उल्लेखनीय बात यह होती है, कि यह लोग वाद-विवाद पर अधिक ध्यान नहीं देते, यदि कोई ऐसी वादविवाद सम्बन्धी समस्या आ भी जाती है तो आदरणीय

---

* Bertrand Russell's Famous article—Happiness in this Modern World.

प्रौढ़ व्यक्तियों के परामर्श द्वारा सुलझा ली जाती है। चीन में जब कभी भी युद्ध के समय शत्रुओं की सेनाओं ने शक्ति का प्रयोग किया इन लोगों ने कभी चिन्ता नहीं की। इनके लिये साधारण सिपाही भी कोई महत्ता नहीं रखता। यहां कभी भी ऐसे झगड़े नहीं हुये है, जिनमें कि रक्त की नदियां बही हों। यहां का शासन तथा व्यापार प्रणाली इस प्रकार से चलती है, जैसे कि यहाँ कोई सेना या अन्य बाधा डालने वाली संस्था है ही नहीं। आपस की सुलह, परस्पर प्रेम तथा एक राष्ट्रीय भावना के ही कारण आज का चीन उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है।

अन्धविश्वास व धर्म (Superstitions and Religion)

चीनी लोगों के जीवन में धर्म कोई विशेष महत्वपूर्ण स्थान नहीं रखता। ये लोग भ्रमी होते है। भाग्यवान् दिन, स्थान, रंग तथा चिन्ह इनके लिये बहुत अधिक महत्ता रखते हैं। जब कभी भी विवाह का सम्बन्ध स्थापित करते समय, कोई प्लेट या प्याला फूट जाता है, तो सम्बन्ध तुरन्त ही तोड़ दिया जाता है, क्योंकि यह घटना बहुत ही अशुभ मानी जाती है। एक बार कान्टन नगर का इंगलिश गिर्जाघर लाल रंग से पोत दिया गया था। चीनी लोगों ने इस पर आपत्ति की क्योंकि उनके मतानुसार यह रंग अग्नि की ज्वालाओं से मिलता जुलता है, और पूरे नगर के लिये अग्नि का कारण बन सकता था। इस पर अंग्रेजों को यह गिर्जाघर किसी दूसरे रंग में पुतवाना पड़ा। इसी प्रकार जब कभी भी भूकम्प आता है, तो ये लोग तार के खम्भों को दोष देते हैं। एक बार जब एक नगर में अधिक बीमारी फैली हुई थी तब लोग ब्रिटिश कौन्सल के बंगले की छत पर लगे हुये एनोमीमीटर को दोष देने लगे, और उसे उखड़वा दिया। किन्तु वास्तव में उस बीमारी का कारण क्या था, नगर की गन्दगी। इसी प्रकार जब एक अंग्रेज निवासी एक पहाड़ी पर घूम रहा था, तो चीनी लोग उसके चारों ओर एकत्र होकर, उसकी नीली आंखों की ओर घूर-घूर कर देखने लगे। इन लोगों का अन्ध-विश्वास था कि इसकी नीली आंखे पृथ्वी के नीचे छिपे हुये खनिज पदार्थों को देख रही हैं, और ये खनिज पदार्थों की ही खोज में इन पहाड़ियों पर इधर-उधर घूम रहा है।

एक साधारण चीनी मनुष्य को इस बात का विश्वास होता है, कि भूत-प्रेत (Spirits) चारों ओर पाये जाते हैं, और वह हमेशा लोगों को हानि पहुंचाने की ताक किया करते हैं। उनके और लोगों के मध्य केवल एक कागज की शीट का अन्तर है। यह चीनी लोगों का अन्ध-विश्वास है और जब कभी भी कोई ऐसी घटना होती है, जिसको कि वह समझने में असमर्थ रहता है, तो तुरन्त ही एक कागज की शीट उन भूत प्रेतों को भगाने के लिए रख देता है। एक बार एक छोटा

सा बालक बीमार था, उसकी मां ने सोचा कि बालक की बीमारी किसी भूत-प्रेत के कारण है उसने एक पुजारी से, बालक की पीठ के बराबर कागज के टुकड़े पर एक प्रार्थना लिखने को कहा, लिख जाने के पश्चात् माँ ने उसको बच्चे की पीठ पर चिपका दिया और जोर जोर से उस पर लिखी हुई प्रार्थना को भूत-प्रेत को भगाने के हेतु पढ़ने लगी।

इसी प्रकार जब अंग्रेज, जर्मन तथा अन्य विदेशी लोगों ने चीन में रेलें, सड़कें तथा मकान आदि बनाने आरम्भ किये थे, तब उस समय चीनी लोगों ने सोचा कि इन लोगों को हम प्राचीन काल के शूरवीरों के सूक्ष्म शरीर (भूत-प्रेतों) द्वारा निकाल बाहर कर सकते हैं। इन लोगों ने एक समाज बनाया जो 'बाक्सर्स' (Boxers) कहलाता था। इस समाज में मन्त्र तथा अनोखे शब्द पढ़े जाते थे। लोगों का विश्वास था, कि इनकी सहायता से भूत-प्रेत सहायता करेंगे। लेकिन जब समाज के सदस्यों या उन लोगों से, जो इस अन्ध-विश्वास के अनुयायी थे, कहा गया कि बन्दूक के सामने खड़े हो जाओ तो ये लोग भ्रम में आकर खड़े हो गये परन्तु गोली लगते ही तुरन्त मर गये।

चीनी धर्म का आधार पूर्वजों का मान तथा उनकी पूजा है। यहाँ के लोग आजन्म अपने पूर्वजों की भूमि पर रहते हैं, उनकी समाधि पर अपनी जान तक गँवाने को तैयार रहते हैं। विभिन्न धर्म इनके लिये केवल तर्क शास्त्र के विद्यालय हैं। वास्तविक मोक्ष के विषय में इन्हें विश्वास है कि बिना पूर्वजों की पूजा के प्राप्त नहीं हो सकता।

इस देश में मुख्यत: तीन प्रकार के धर्म पाये जाते हैं। पहला बौद्ध, दूसरा ताओ तथा तीसरा कन्फ्यूसियन। यहां की बहुत सी जनसंख्या इन तीनों धर्मों को मानती है। परन्तु मन्दिर सबसे अधिक बौद्ध धर्म के ही मिलेंगे। इस धर्म की उत्पत्ति भारतवर्ष से हुई है। ताओ धर्म में ताओ लोगों को संकट के समय याद किया जाता है, केवल यह जानने के लिये कि कौनसा मार्ग अच्छे भाग्य का है। कन्फ्यूसियन में कन्फूसियस* की पूजा होती है। इस धर्म को मानने वाले इसके नियम व सिद्धान्तों का क्रियात्मक रूप से अपनाते हैं।

---

* In China Confucius lived 500 years before Christ. He was a soldier's son. His father was a brave officer, but he died when Confucius was only three. His mother encouraged the boy to study. So he studied ancient books. He married at nineteen and his mother died, when he was 23. He was then a teacher. He continued his studies and mastered the ancient writings. After

यहाँ तीन लाख से अधिक मन्दिर हैं और चालीस लाख से अधिक देवता हैं। लोगों के घरों में इन देवताओं के चित्र बने होते हैं, नीचे उनका नाम लिखा होता है। इनके निकट एक ऐसी वस्तु होती है, जिसमें से सुगन्धित धुआँ हर समय निकला करता है। कुछ मन्दिर तो बहुत ही सुन्दर होते हैं, साथ ही उनका वातावरण भी मनोरंजक होता है। इनकी छतें गोलाई में होती हैं, घरों पर तथा दीवारों पर मछलियों, पक्षियों तथा दैत्यों के चित्र खिंचे होते हैं। मन्दिर का पुजारी गंजी खोपड़ी रखता है और उसका रूप इतना विचित्र होता है, कि सभ्य लोग उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं। पढ़े लिखे लोग मन्दिर वाले देवताओं की मूर्तियों को नहीं मानते। परन्तु अधिक जनसंख्या ऐसी ही है, जो कि इनको पूजने बराबर आती है। बुद्ध भगवान को प्रसन्न करने के लिये ब्रह्मचारी लोग अपना सीधा हाथ कटा लेते हैं तथा मध्य चीन में १००० मील का चक्कर (परिक्रमा) लगाते हैं और साथ ही प्रत्येक छठे कदम पर प्रार्थना करते रहते हैं। इन देवताओं से भी अधिक महत्वपूर्ण पूजा पूर्वजों की टेबलेट (Tablet) की होती है। टेबलेट, एक आठ इंच लम्बी व तीन इंच चौड़ी लकड़ी होती है। यह एक तरफ मोटी होती है, दूसरी ओर इसको खड़े करने के हेतु कुछ लगा होता है। इस पर प्रत्येक पूर्वज का नाम लिखा होता है, किसी किसी घर में कई टेबलेट पंक्तियों में दबे पाये जाते हैं। यह बहुत ही पवित्र माने जाते हैं।

जब किसी धनी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तब उसकी पसन्द की सब वस्तुओं के मॉडल बना कर जलाया जाता है। निर्धन व्यक्ति कागज पर वस्तुओं के चित्रों को अंकित करके जला सकते हैं। धनी लोगों की कब्र बड़ी सावधानी के साथ किसी सुन्दर व भाग्यवान जगह पर बनाई जाती है। दक्षिणी चीन में यह घोड़े के खुर के आकार की होती है। उत्तर की कब्रें केवल मिट्टी के ढेर के रूप में होती हैं, परन्तु इन पर हरी-हरी वनस्पति उगा दी जाती है। जब कभी भी पूर्वजों की कब्रें दूर होती हैं, तो सब गृहस्थी के लोग उन स्थानों पर मनोरंजन (Picnic) के

---

that he gathered some pupils and spent his time in teaching. When he was fifty, he was made governor of the city. He worked so splendidly that he was promoted from superintendent of works to Minister of Crime for the whole state. Again, he showed genius. Everybody was surprised to see his work. Duke was tired of the sage and his high ideals. So Confucius left the job and wandered in every province and gave his teachings. In old age he settled down again and spent his time editing the ancient writings of which he was so fond.

दृष्टिकोण से जाते हैं, इन कब्रों की सफाई की जाती है और साथ ही पूर्वजों के प्रति श्रद्धा प्रकट की जाती है।

इन तीन धर्मों के अतिरिक्त चीन में दो अन्य धर्म भी पाए जाते हैं, पहला इस्लाम तथा दूसरा ईसाई। इस देश में उत्तर-पश्चिम तथा दक्षिण में इस्लाम-धर्म का अधिक (१८५०-७८) प्रचार हुआ है। वास्तव में अरब के व्यापारी यहाँ प्राचीन काल से व्यापार करते चले आये हैं। इन लोगों ने तलवार की शक्ति से अपने धर्म का प्रचार कई देशों में किया था। चीन भी उन्हीं में से एक है। यहाँ इस्लाम धर्म मानने वालों की संख्या तीस लाख के लगभग है। (लीना ई० जौंस्टन का कथन है कि चीन में ५० लाख से लेकर १०० लाख मुसलमान पाये जाते हैं) यूनान में इन्हें पन्थेज (बल्कि पूरे दक्षिण में) तथा कान्सू व जुंगेरिया प्रान्तों में (बल्कि पूरे उत्तर में) यह तंगन्स कहलाते हैं। चीन के यवन अन्य देशों के यवनों से भिन्न हैं। स्त्रियों का उनके धर्म में उच्च स्थान है। कई घरों में मस्जिदें होती हैं। वहीं ये लोग अपनी नमाज पढ़ लेते हैं। इनके धर्म में बीड़ी, सिगरेट, शराब व गोश्त खाना पाप समझा जाता है। इन लोगों ने कई ऐसी पाठशालायें खोल दी हैं, जिनमें अरबी भाषा सिखलाई जाती है।

कहा जाता है कि १५०० वर्ष पहले चीन में एक नेस्टर का पुजारी (Nestorian priest) आया। ताई संग (T'ai Tsung) ने जो उस समय का सम्राट था इसका बहुत आदर किया और जितनी भी ईसाई धर्म की पुस्तकें थीं उनको चीनी भाषा में लिखवा कर अपने पुस्तकालय में रखवा लिया। फ्रांस के निवासियों ने यहां 'रोमन केथोलिक' की स्थापना की, केवल १०० वर्ष बाद यहाँ 'प्रोटेस्टेण्ट' मिशीनरी आने लगे। ये लोग सम्राट के पास नहीं गये, बल्कि गिर्जे बनवाने, अस्पताल, स्कूल इत्यादि बनवाने शुरू कर दिये और धीरे-धीरे धर्म का प्रचार करने लगे। कुछ ही वर्षों में चीन के कोने-कोने में ये लोग फैल गये। यहाँ लगभग तीस लाख 'रोमन केथोलिक' ईसाई तथा सात लाख 'प्रोटेस्टेण्ट' ईसाई हैं। वह मनुष्य जो सब से प्रथम प्रेसीडेण्ट था, ईसाई धर्म का ही था और अब भी जो लोग चीन के शासन प्रबन्ध में लगे हुए हैं वे ईसाई धर्म के ही मानने वाले हैं।

वास्तव में यदि देखा जाय तो ईसाई धर्म के प्रचार से चीन की दशा बहुत कुछ सुधर गई है। स्कूल व कालिज में पढ़ाने वाले मास्टर व प्रोफेसर अधिकतर ईसाई हैं। ईसाइयों के पहले चीन में कोई भी राष्ट्रीय-गान नहीं था, लेकिन उस समय से जब से कि ये लोग आये हैं, राष्ट्रीय-गान अपना लिया गया है। कई वर्ष हुए एक चीनी समाचार-पत्र ने लिखा था, कि चीन के धर्मों को प्रोत्साहन मिलना

चाहिये, उन्हें नवीन जीवन मिलना चाहिए, बाद में कदाचित् कुछ कार्य भी हुआ परन्तु केवल ईसाई धर्म ही ऐसा था जिसने कुछ ठोस कार्य किया। सन् १८३५ में चीन का पहला अस्पताल काण्टन नगर में खोला गया। जाति-बिरादरी से निकाली हुई लड़कियों को मिशन में रखा गया और उनकी शादियों का प्रबन्ध किया गया। मिशन ने अन्धे, बहरे, लंगड़े तथा मूर्ख व्यक्तियों के लिये मदरसे, घर तथा चिकित्सालय बनवाये, जिससे कि इन लोगों की ठीक-ठीक देख-रेख हो सके। पुलिस के सिपाहियों को आज्ञा है कि वह भिखारियों तथा बेघर लड़कियों को शरणार्थ-घर में ले आया करें।

इस प्रकार से चीन में ईसाई-धर्म की नीव काफी गहराई तक जा चुकी है।

संस्कृति (Culture) :—

चीन कदाचित् संसार का सबसे मनोरंजक देश है, क्योंकि यह एक अति प्राचीन देश है। यहाँ की सभ्यता व संस्कृति पाँच हजार वर्ष पुरानी है बेबीलन व मिश्र की सभ्यता इसकी तुलना में कुछ भी नहीं है, और न यह इतनी अधिक प्राचीन है। पीछे हम बतला चुके हैं कि इसी से ५५१ वर्ष पूर्व कनफ्यूसियस महात्मा हुए थे। इन्होंने प्राचीन चीनी ग्रन्थों का अध्ययन किया था तथा स्वयं अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी थीं। कहा जाता है कि चीन उस समय विश्व का सबसे अधिक उन्नतिशील देश था। इसके पास ११२१ बी० सी० में दिशा देखने वाला कुतुबनुमा (Mariner's Compass) था। यहां मोज़ेज (Moses) के समय में भी स्कूल पाये जाते थे, न केवल इतना ही, बल्कि ईसा के पूर्व यह लोग बहुत ही सुन्दर तैल चित्र बनाया करते थे, कवितायें व मूर्तियाँ इत्यादि बनाने की कला भी प्रचलित थीं। परन्तु वास्तविक रूप से कविताओं का लिखना सातवीं शताब्दी से आरम्भ हुआ। छापने की युक्ति का यहीं से प्रचार हुआ है। उस समय यहाँ के लोग लकड़ी पर डिजाइनें व अक्षर खोद कर उन पर स्याही लगा कर उन्हें छापते थे। कदाचित् सर्वप्रथम पहिये का आविष्कार भी इसी देश में हुआ था।

जिस समय ग्रेट ब्रिटेन केवल बंजर टापू थे, मिश्र, ग्रीस तथा बेबीलन की सभ्यता का विकास भी नहीं हुआ था, उस समय चीन एक महान देश था। यहाँ बड़े-बड़े नगर, बड़ी-बड़ी इमारतें तथा विद्वान लोग पाये जाते थे। मध्य पूर्वी तथा भूमध्य सागरीय देश सभ्यता की सीमा तक भी नहीं पहुंच पाए थे कि चीन में पहले ही बड़े-बड़े व्यापारिक केन्द्र, सड़कें मार्ग, खेती करने के औजार तथा गाड़ियाँ इत्यादि पाई जाती थीं। चीन में ही सब से पहले रेशम की खोज हुई

थी और रेशमी वस्त्र तैयार किया गया था, पोरसीलेन व पारदर्शक बर्तन भी यहीं सर्वप्रथम बने थे। छापेखाने की मशीन काक्सटन के अविष्कार के पहले ही बन चुकी थी। बन्दूक के पाउडर का भी इसी देश में अविष्कार हुआ। एक कैमब्रिज के प्रोफेसर का कथन है, कि 'टेक्सी केब' यहीं सबसे पहले प्रयोग की जाती थी। न केवल इतना ही बल्कि ढोल व घण्टियों के बारे में भी यही विचार किया जाता है, कि यह वस्तुएं यहीं सर्वप्रथम प्रयोग की जाती थीं। यहाँ के प्रसिद्ध ऐस्ट्रोनोमर, डाक्टर तथा प्रोफेसर इत्यादि विद्वानों के चिन्ह अब भी लेखों तथा इमारतों के रूप में पाए जाते हैं। आज के चीन में यदि हम भ्रमण करें तो हमें विश्वास हो जायगा कि यह वास्तव में एक अति प्राचीन देश है तथा यहाँ की संस्कृति बहुत उच्च है।

चीन के विभिन्न क्षेत्रों में लोगों के रीति-रिवाज तथा रहन-सहन के ढंग भिन्न हैं। आन्तरिक क्षेत्रों में कच्चे मकान मिलते हैं। प्रत्येक के आगे छोटा-सा बगीचा होता है। घर के अन्दर विशेष तौर पर उत्तरी चीन में शीत से बचने के हेतु अंगीठी जिसे 'कंग' कहते हैं, जलाते हैं। इसके चारों ओर गृहस्थी के लोग बैठ जाते हैं। दक्षिण में दूसरी ही रीति है, लोग ऊनी कपड़े पहनते हैं, कंग का प्रयोग बहुत कम होता है। इनके बालक जब बहुत छोटे होते हैं तब उनकी भाषा का उच्चारण अधूरा होता है लेकिन जब यह बड़े होते हैं तब पूर्ण रूप से कर लेते हैं। हर प्रकार की मशीनों के लिये 'चिश्रा' शब्द प्रयोग किया जाता है। मनुष्य विभिन्न स्थानों पर भिन्न नाम से पुकारे जाते हैं। पेकिंग के लोग 'जिन' स्वातो के 'निश्रांग' काण्टन के 'यान', निंगपो के निंग तथा अमोय के 'लंग' कहलाते हैं। दिशाओं को प्रकट करने के लिये, उत्तर को 'पी' दक्षिण को 'नन' पूरब को 'तंग' तथा पश्चिम को 'सी' कहते हैं। पर्वत 'शान' समुद्र 'है' झील 'हू' तथा नदी 'हो' अथवा क्याँग के नाम से पुकारे जाते हैं। चीनी लोगों की भाषा पर किसी भी देश की भाषा का प्रभाव नहीं पड़ा है, और न विदेशियों ने इसको अपनाया है। वास्तव में विदेशी लोगों को यह कुछ कठिन भी मालूम होती है, क्योंकि यहां की भाषा के उच्चारण इस प्रकार होते हैं, कि कई-कई मतलब निकलते हैं। उदाहरणार्थ 'को' उच्चारण के आठ तथा 'की' के चौदह अर्थ निकलते हैं। इस प्रकार से इनकी भाषा विश्व की अन्य भाषाओं की अपेक्षा अधिक शुद्ध है।

यहां के निवासियों की दो कुप्रथायें हैं। पहली, नीचे तक बाल लटकाने की (Pigtails) तथा दूसरी पैरों को छोटा करने की (Crippled Feet)। गत वर्षों में बहुत अधिक प्रचलित थीं। परन्तु अब धीरे धीरे हट रही हैं। बाल लटकाने की प्रथा 'मंचू वंश' से सन् १६३१ में चली थी। इसका ध्येय केवल नम्रता व उदारता प्रकट करना था। बाद में रिपब्लिकनों ने सन् १६१२ में इस प्रथा को जड़

से उखाड़ने की चेष्टा की, कई स्थानों पर सिपाही रख दिये गये, और उन्हें ऐसे लोगों को पकड़ने की आज्ञा दे दी गई। धीरे धीरे यह प्रथा समाप्त होने लगी। पैर छोटे रखने की प्रथा स्त्रियों में अधिक थी। इसकी उत्पत्ति सन् ९३४ से बतलाई जाती है। जिस प्रकार से लैटिन जाति के निवासी हाथ की छोटी अंगुली के नाखून नहीं काटते और इसको स्वतन्त्रता व फैशन का चिन्ह समझते हैं, उसी प्रकार से चीनियों का यह विचार है कि मनुष्य की ऐसी पत्नी होनी चाहिये जिसके कि पैर छोटे हों। इन लोगों का अन्ध-विश्वास है, कि छोटे पैर वाली स्त्री घर से भाग नहीं सकती। पैर छोटे करने का साधन इन लोगों के यहां बचपन से ही अपनाया जाता है। पैर की उंगलियों को कस कर पैर के नीचे बाँध देते हैं, लड़कियों को इसमें तनिक भी कष्ट नहीं होता, बल्कि उन्हें एक प्रकार का आनन्द प्राप्त होता है। स्त्रियों की सुन्दरता का अनुमान पैरों के आकार से ही लगाया जाता है। अधिक छोटे पैर 'सुनहरे फूलों' (Golden Lilies) के नाम से पुकारे जाते हैं। क्योंकि मिट्टी या रेत पर इनका आकार फूलों के समान आता है। चार इंच लम्बा पैर अधिक 'फैशनेबिल' समझा जाता है, परन्तु ढाई इञ्च तक के पैर मिलते हैं। चीनी स्त्रियां अपनी सुन्दरता के लिये भी प्रसिद्ध हैं, ये बड़ी गुणवती व लज्जावती होती हैं। जितने ही इनके पर छोटे होते हैं, उतना ही स्वाभिमान इनमें पाया जाता है। पर को ये लोग उतना ही छिपा रखती हैं, जितना कि अन्य आवश्यक अंगों को। यदि कोई व्यक्ति यहां की स्त्रियों के पैरों की ओर दृष्टि डालता है, तो वह समझती हैं कि अवश्य ही यह किसी बुरी भावना को धारण किये हुये है।

प्राचीन काल में स्त्रियों की दशा बड़ी शोचनीय थी, इन्हें कोई मान की दृष्टि से नहीं देखता था। कन्फ्यूसियस का कथन था कि स्त्रियां पुरुष से उतनी ही भिन्न हैं, जितना कि स्वर्ग पृथ्वी से। लेकिन गत वर्षों से स्त्रियों का स्थान समाज में उठ गया है, और अब वे भी स्वतन्त्रतापूर्वक रहती हैं। प्राचीनकाल में लड़कियों का विवाह माँ बाप के मतानुसार किया जाता था, परन्तु अब लड़की की भी अनुमति ले ली जाती है। आजकल यहां लड़के व लड़कियों को विवाह सम्बन्ध स्थापित करने का पूर्ण अधिकार है, और विवाह भी अब दोनों की अनुमति से होता है। यदि मनुष्य की पत्नी भी जीवित है, तो भी उसे दूसरा विवाह करने का अधिकार प्राप्त रहता है। दूसरा विवाह औलाद के लिये स्वीकार किया जाता है। गृहस्थी में एक बच्चे का होना अति आवश्यक समझते हैं, क्योंकि पूर्वजों की देख-रेख के लिए सन्तान होनी ही चाहिए। घर में पहली पत्नी ही मालकिन समझी जाती है। यही घर की मालकिन होती है तथा इसी के ऊपर गृहस्थी का सब भार होता है। लड़कियों को आरम्भ से ही गृह-शास्त्र की शिक्षा दी जाती है। यहां पर

लगभग ३००० लड़कियों के विद्यालय हैं। नीचे एक साधारण चीनी व्यक्ति के दैनिक जीवन की विशेषता दी गई है, यह ली-ची के एक प्रसिद्ध लेख का कुछ परिवर्तित अंश है।

एक साधारण चीनी खाते समय कभी शोर नहीं करता, हड्डियों को दांतों से नहीं काटता और न मछली को उल्टा रखता है। कुत्ते को वह कभी भी हड्डियां नहीं डालता और न ही वह किसी वस्तु को छानने में विश्वास करता है। ज्वार बाजरा खाते समय चावल खाने वाली छड़ियों का कभी प्रयोग नहीं करेगा और जब कोई मेहमान भोजन में कोई त्रुटि निकालेगा तो तुरन्त क्षमा मांग लेगा और कहेगा 'मैं निर्धन हूं'। जब कभी भी मेहमान बाहर जायेगा तो वह धीरे से जाकर उसके जूते उठा लायेगा, और एक तरफ से मेहमान के आगे खिसका देगा। यदि दो व्यक्ति खड़े होकर या बैठ कर बातचीत कर रहे होंगे तो साधारण चीनी वहां पर कदापि नहीं जायेगा।

चीन के नमस्कार करने की प्रथायें बड़ी विचित्र हैं। प्राचीन रीति-रिवाज के लोग अब भी भूमि तक कई बार झुक कर प्रणाम करते हैं। नव वधू तो कई मिनट तक अपनी सास के सम्मुख झुकी रहती है। ये प्रणाम करने की रीतियां अब कुछ कम हो गई हैं, पश्चिमी लोगों के हाथ मिलाने व टोप उतारने के ढंग वर्तमान चीन के कई क्षेत्रों में दृष्टिगोचर होते हैं।

वहां के निवासी इस बात का विश्वास करते हैं, कि मरने के पश्चात् शरीर से आत्मा बड़ी दुखित होकर निकलती है, उसको सरलता से वापस बुलाया जा सकता है, और वह इसी भ्रम में मृतक शरीर को काफी देर तक घर में रखे रहने देते है। साथ ही, कई बार घर की ऊंची छतों पर चढ़ कर जोर-जोर से आत्मा को वापस बुलाते हैं, क्योंकि वे सोचते हैं, कि मरने के पश्चात् आत्मा सीधी आकाश की ओर ही जाती है।

चीन के प्राकृतिक विभाग

दक्षिणी चीन के प्राकृतिक विभाग

(१) दक्षिणी-पूर्वी तटीय प्रदेश :—

इस भाग में पूर्वी क्वांटंग, चिक्यांग तथा फ्यूकीन के प्रान्त सम्मिलित हैं। यह तीनों ओर पर्वतों से घिरा हुआ है, इसका ढाल पूर्व में समुद्र की ओर है, केवल तटीय भाग व नदियों की तंग घाटियों को छोड़ कर शेष भाग ऊंचा-नीचा पथरीला है। कृषि योग्य भूमि का अभाव है, अधिकतर नदियों की घाटियों व समुद्र तट के निकट कृषि होती है। यहां की जलवायु चीन के अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक नम व गर्म है। वर्षा यहां दक्षिणी-पूर्वी मानसून से होती है। कुछ

क्षेत्र अधिक वर्षा प्राप्त करते हैं, परन्तु कहीं कहीं पर बहुत कम वर्षा होती है। पर्वतीय ढाल वनों से ढके हुये है। कहीं कहीं पर ये वन साफ किये गये हैं, लेकिन कहीं पर अब भी घनी वनस्पति दृष्टिगोचर होती हैं।

यहां पर नारंगी, नींबू, शहतूत व चाय के बगीचे देखने को मिलते हैं, ये यहां की मुख्य उपजें हैं। पर्वतीय ढालों तथा अन्य क्षेत्रों में गेहूं, चावल, कपास तथा बोड़ा (बीन) इत्यादि की कृषि की जाती है। चावल यहां का प्रमुख खाद्य पदार्थ है। इस क्षेत्र में उद्योग-धन्धों की अधिक उन्नति नहीं हो सकी, क्योंकि यहाँ पर वह सुविधायें नहीं पाई जातीं जो कि उद्योग-धन्धों की प्रगति के लिये आवश्यक हैं। इस विभाग की जनसंख्या लगभग ५०० लाख है जनसंख्या का घनत्व नदियों की घाटियों व तटीय भागों में अधिक पाया जाता है। (कहा जाता है कि फ्यूकीन प्रान्त में १०८ भाषायें बोली जाती हैं।) यहां के प्राकृतिक दृश्य बहुत ही सुन्दर व मनोरंजक हैं। लोगों का रहन सहन मध्यम श्रेणी का है, जो लोग नगरों में रहते हैं, वे अपना रहन-सहन ऊंचा रखते हैं। विदेशी पहनावे का वहाँ के लोगों पर काफी प्रभाव पड़ा हैं। यातायात के साधनों में यहां कोई विशेष उन्नति नहीं हो सकी, केवल एक मुख्य रेलमार्ग है जो कान्टन से शंघाई होकर गुज़रता है, सड़कें कई क्षेत्रों में पाई जाती हैं, परन्तु कुल क्षेत्रफल को देखते हुये, मोटरकार चलाने योग्य पक्की सड़कों की कमी है। यातायात के लिये कुछ नहरें भी खोदी गई हैं। आजकल यह क्षेत्र उन्नति कर रहा है।

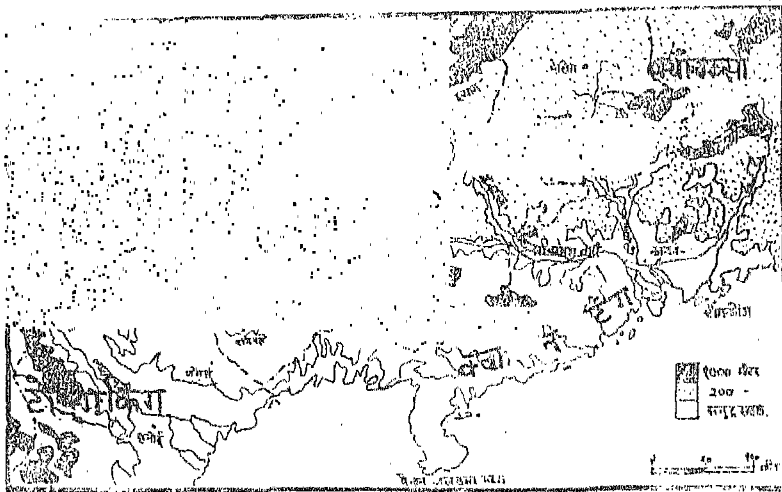
यहां के प्रसिद्ध नगरों व बन्दरगाहों में क्वाँटंग प्रान्त में स्वातो, चिक्यांग में निंगपो तथा फ्यूकीन में फूचो तथा अमोय हैं।

सिक्यांग नदी की घाटी व डेल्टा :—

दूसरे शब्दों में इस भाग को कान्टन का पृष्ठ प्रदेश कह सकते हैं। इसमें पूरा क्वाँग्सी प्रान्त तथा क्वांटंग का पूर्वी भाग व तट शामिल है। इस क्षेत्र का लगभग तीन चौथाई भाग समतल है, शेष पहाड़ी। लेकिन उपजाऊ भूमि की यहां कमी है। सिक्यांग नदी ने अपने डेल्टे के स्थान पर कई अन्य विभाजक नदियां बना लीं हैं। वैसे सिक्यांग नदी चीन की अन्य नदियों की अपेक्षा कम महत्वपूर्ण है। इसकी घाटी छोटी है तथा आर्थिक दृष्टिकोण से कोई विशेष महत्ता नहीं रखती। इसकी दक्षिणी सहायक नदी सो कियांग (Tso Kiang) या कोई नदी ... की पहाड़ियों से निकलती है, और यातायात के दृष्टिकोण से बड़ा महत्ता रखती है।

वास्तव में यहां की जलवायु उष्ण कटिबन्धीय है, और भारतवर्ष की

जलवायु से मिलती जुलती है। कर्क रेखा इसके मध्य से होकर गुजरती है। ग्रीष्म ऋतु यहां काफी लम्बी होती है, तापक्रम ऊंचा रहता है तथा काफी वर्षा होती है। दक्षिणी-पूर्वी तटीय प्रदेश की अपेक्षा यहां वार्षिक वर्षा ७५" से अधिक होती है। शीत ऋतु, अधिक ठण्डी नहीं होती, फिर भी यहां २ इञ्च वर्षा का औसत है। तापक्रम ग्रीष्म ऋतु में ६०° व १००° फ० तक चढ़ जाता है, लेकिन शीत ऋतु में कठिनाई से ७०° फा० पहुंचता है।



दक्षिणी चीन

कहा जाता है कि प्राचीन काल में यहां की पहाड़ियाँ वनस्पति से ढकी हुई थीं, परन्तु बहुत स्थानों पर वनों को साफ कर दिया गया है, और अब बहुत कम घने वन दृष्टिगोचर होते हैं। जिन स्थानों पर वनों को साफ किया गया था, वहां अब लम्बी लम्बी घास ही दीखती है।

कृषि उद्योग यहाँ पर विशेष तौर पर उन्नति कर गया है। वैसे वनीय क्षेत्रों में हमको केले, पाइन ऐपिल, लीची, जैतून, अंजीर तथा चाय के बगीचे दृष्टिगोचर होते हैं, परन्तु चावल ही यहाँ की प्रमुख उपज है। चावल के अतिरिक्त, कपास, तम्बाकू तथा अन्य वस्तुयें भी उत्पन्न की जाती हैं। धान की कृषि के लिये यह क्षेत्र दूर दूर तक प्रसिद्ध है। कुछ चावल ऐसे स्थानों पर भी बोया जाता है, जहाँ सिंचाई द्वारा पानी देने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती, ग्रीष्म ऋतु में धान की दुहरी कृषि की जाती है। चावल के अतिरिक्त रेशम के कीड़ों को पालने का काम भी किया जाता है, साथ ही समुद्र तट के आन्तरिक क्षेत्रों से मछलियाँ भी

प्राप्त की जाती है। कृषि वाले क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व लगभग २५०० व्यक्ति प्रति वर्ग मील है।

अब भी कई क्षेत्रों में यहाँ के आदि निवासी रहते हैं। यहाँ के निवासियों पर विदेशी लोगों का भी गहरा प्रभाव पड़ा है। कान्टन नगर में पश्चिमी देशों के लोग आरम्भ से ही आते रहे हैं, और यहाँ के भी निवासी विदेशों को जाते रहे हैं। इन लोगों ने पश्चिमी सभ्यता व रहन-सहन को भी अपना लिया है, अब बहुत से चीनी भी ईसाई हो गए हैं।

यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो इस प्रदेश के दो खण्ड हैं, पहला क्वाँग्सी, जो कि पर्वतीय है तथा जहाँ चूने की चट्टानों (यूगोस्लोविया के कार्स्ट क्षेत्र की भाँति) के सुन्दर दृश्य मिलते हैं, इस खण्ड में यहाँ के आदि निवासी बहुत अधिक संख्या में मिलते हैं। नानकिंग, यहाँ का प्रमुख नगर व बन्दरगाह है, यह पर्ल नदी पर स्थित है। यह खण्ड मेस, सिनेमन तथा कैसिया केबिनट वुड के लिये विश्व विख्यात है। दूसरा खण्ड जो समुद्र से लगा हुआ है क्वान्टंग है, यह बहुत ही घना बसा हुआ है और सभ्य निवासियों का प्रान्त है। कान्टन जो यहाँ का प्रमुख नगर व बन्दरगाह है, एक अति प्राचीन अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक केन्द्र है। कान्टन के निवासी अपनी जन्म-भूमि से इतने लगे हुए नहीं हैं, जितने की अन्य चीनी। यह प्रान्त एक पर्वतीय प्रान्त है, इसके पर्वतीय ढाल वनस्पति रहित हैं, इसमें त्रिभुजाकार डेल्टा है, इसकी चौड़ाई सौ मील के लगभग है। यहाँ की मुख्य पैदावार में शकर, तम्बाकू, रेशम, तिलहन तथा चाय इत्यादि हैं।

काण्टन के विषय में थोड़ा सा विवरण ऊपर दिया जा चुका है। यह पूर्वी एशिया का बहुत ही अद्वितीय नगर है। इसकी स्थिति काण्टन नाम की नदी के पश्चिम में है। इस नगर के अन्दर हमको प्राचीन तंग सड़कें मिलतीं हैं। इन सड़कों पर पहियेदार गाड़ियाँ दृष्टिगोचर नहीं होतीं, धनी लोग पालकी या सिडन चेयर पर बैठ कर जाते आते हैं। दुकानें बहुत ही मिली हुई व गिरी दशा में पाई जातीं हैं। अधिकतर मनुष्य पैदल ही चलते हुए दीखते हैं। नगर के बाहरी भाग में कुछ सड़कें चौड़ी व दुकानें भी बना दी गई हैं और साथ ही एक योरोपियन लोगों की बस्ती भी पाई जाती है, यह बस्ती मुख्य नगर से कुछ हट कर एक छोटे से द्वीप पर है और इसे शमीन कहते हैं। काण्टन का बन्दरगाह देखने योग्य है, यहाँ पर लगभग सभी बड़े देशों के जहाज़ दृष्टिगोचर होते हैं। कान्टन वैसे तो अपने पृष्ठ प्रदेश का सबसे बड़ा नगर व बन्दरगाह है, साथ ही व्यापारिक व सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अद्वितीय है, परन्तु फिर भी एक बात का अभाव यहाँ पाया जाता है, और वह है रेलमार्गों का। काण्टन की टक्कर का यहाँ कोई भी अन्य नगर नहीं है। शंघाई एक बहुत असाधारण बन्दरगाह व नगर है, और पश्चिमी

व उत्तरी नदियों के मध्य स्थित है। यहाँ भी विदेशी व्यापार होता है। चाओकिंग पश्चिमी नदी पर स्थित है और एक बार वाइसराय का केन्द्र भी रह चुका है। उत्तरी नदी पर शाओचन नगर स्थित है।

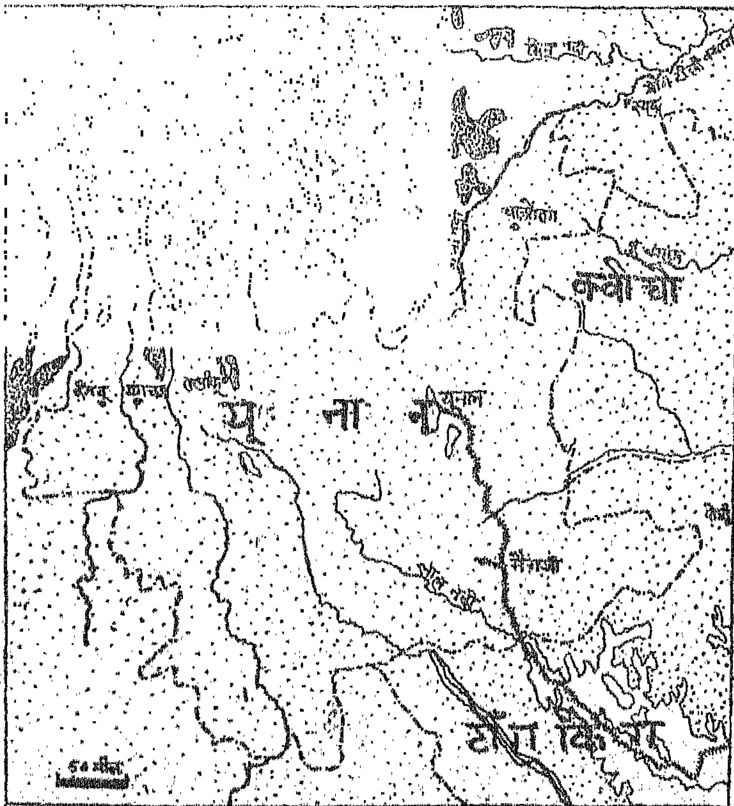
हांगकांग :—काएटन नदी के पूर्व में हांगकांग द्वीप स्थित है। यह काएटन नगर के दक्षिण में लगभग ८८ मील की दूरी पर है। यह एक पर्वतीय द्वीप है जिसका क्षेत्रफल ३२ वर्गमील है। मुख्यभूतल पर कोलून का बन्दरगाह स्थित है। हांगकांग द्वीपपर अंग्रेजों ने अपना अधिकार सन् १८४२ से किया है। कुछ वर्ष पश्चात् मुख्य-भूतल का थोड़ा सा भाग जिसका क्षेत्रफल ३५६ वर्गमील था, दे दिया गया, यह 'नवीन सीमा' के नाम से पुकारा जाता है। यहाँ बहुत सुन्दर बन्दरगाह हैं, प्रत्येक देश के जहाज़ यहाँ पर दृष्टिगोचर होते हैं। पश्चिम की ओर विक्टोरिया नगर व बन्दरगाह स्थित हैं। इस द्वीप के बहुत से क्षेत्र बंजर थे, परन्तु अब उनको ठीक करके उनमें बस्तियाँ स्थापित कराई गई हैं। अंग्रेजों के बंगले अधिकतर पर्वतीय ढालों पर पाये जाते हैं, मध्य पर्वत की चोटी से चारों ओर का दृश्य दृष्टिगोचर होता है। अंग्रेजों ने इस द्वीप पर कुछ उद्योग-धन्धे भी स्थापित कर लिये हैं। धान कूटने, जहाज़ बनाने, कपड़ा तैयार करने तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं के निर्माण करने के कारखाने पाये जाते हैं। यहाँ पर व्यापार के लिये शक्कर, रस्सी, तम्बाकू, सीमेन्ट तथा राँगे की वस्तुयें इत्यादि रखी रहती हैं। हाँगकाँग की बनी हुई टोर्च विश्व विख्यात हैं।

हैनान द्वीप :—चीन के दक्षिण में पूर्वी तट के निकट हैनान एक छोटा सा द्वीप है। इसका क्षेत्रफल १४००० वर्ग मील है। इसका अधिक भाग पर्वतीय है और यह मुख्य भूभाग से एक १५ मील चौड़े समुद्र द्वारा पृथक है। इसकी जनसंख्या लगभग ३० लाख है। लोग अधिकतर लोयेज़ जाति के हैं। यहाँ की जलवायु उष्ण कटिबन्धीय है। ग्रीष्म ऋतु में बहुत गर्मी पड़ती है तापक्रम १००° फा० से भी ऊंचा रहता है। शीत ऋतु बड़ी सुहावनी होती है। वर्षा ग्रीष्म ऋतु में मानसून से होती है।

कुछ पर्वतीय क्षेत्र वनों से ढके हुए हैं। यहाँ के पर्वत अधिक से अधिक ६६२८ फीट ऊंचे हैं। ये हाथ की उंगलियों की भाँति फैले हुये हैं। मैदान केवल उत्तर समुद्र तट के निकट है। धान यहाँ की प्रमुख उपज है। कुछ रबड़ भी उत्पन्न की जाती है। खनिज पदार्थों में यहां लोहा थोड़ी मात्रा में मिलता है। द्वितीय महायुद्ध के पहले यह धातु जापान भेजी जाती थी। परन्तु बाद में यह बन्द कर दी गई।

यहाँ का प्रमुख नगर किउनचो उत्तर में स्थित है। होईहो एक छोटा सा बन्दरगाह भी निकट ही स्थित है।

यूनान का पठार :—दक्षिण चीन में यूनान का पठार एक बहुत ही महत्वपूर्ण भाग है। इसी पठार को हम सिक्याँग नदी की ऊपरी घाटी भी कह सकते हैं। इसका क्षेत्रफल १०६६८० वर्ग मील है। इसका बहुत सा भाग पर्वतीय है। वास्तव में देखा जाय तो यह तिब्बत के पठार का ही एक पूर्वी खण्ड है, और पूर्ण रूपेण बंजर क्षेत्र है। उत्तरी-पश्चिमी यूनान के क्षेत्र से ही सालवीन, मिकौंग व याँगटिसी नदियाँ निकलती हैं। इन नदियों ने बहुत ही गहरी घाटियाँ बनाई हैं। यदि वायुयान द्वारा इस भाग को देखा जाय तो अनेक स्थानों पर गहरी-गहरी खाइयाँ दृष्टिगोचर होंगी, इससे प्रतीत होता है कि इसका धरातल समतल नहीं है। पठार की अधिक से अधिक ऊंचाई ७००० फीट है। बहुत सी तंग उपजाऊ



यूनान का पठार

घाटियाँ कृषि के दृष्टिकोण से बड़ी महत्वपूर्ण हैं। लेकिन जनसंख्या अधिकतर उन्हीं गाँवों में रहती है, जो कि कई हज़ार फीट ऊंचे स्थानों पर हैं। दक्षिण व पूर्व में पठार की ऊंचाई कम हो जाती है। हिन्द चीन में बहने वाली लाल नदी दक्षिण-पूर्वी ढाल से होकर बहती है।

इस भाग की जलवायु बहुत ठण्डी हैं, क्योंकि शीत ऋतु में ठण्डी तीव्र हवायें उत्तर-पश्चिम की ओर से चलतीं हैं। कभी-कभी बर्फ-वर्षा भी होती है। ग्रीष्म ऋतु बहुत गर्म नहीं होती, तापक्रम लगभग ७०° फा० है। जिन स्थानों पर वर्षा अधिक होती है, वहां कुछ वन भी मिलते हैं। यहाँ की मुख्य कृषि उपजों में चावल, मक्का, तम्बाकू व अफीम इत्यादि हैं। मक्का अधिकतर उत्तरी-पूर्वी भाग में तथा चावल दक्षिणी-पूर्वी भाग में उत्पन्न किया जाता है। इस क्षेत्र में खेत काफी विस्तृत दशा में पाये जाते हैं। उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र के निर्धन लोगों का मुख्य भोजन मक्का व ज्वार-बाजरा है तथा यहाँ के धनी लोग चावल भी खाते हैं।

यूनान का भाग खनिज पदार्थों के लिये विशेषतौर पर महत्वपूर्ण है। खनिज पदार्थ उत्पन्न करने वाले क्षेत्रों में इसका मुख्य स्थान है। यहाँ पर कोयला व खनिज तेल तो बहुत ही कम मात्रा में प्राप्त होते हैं, परन्तु धातुयें अवश्य कई प्रकार की पाई जातीं हैं। सोना, ताँबा, राँगा, ऐन्टीमनी, लेड, जिन्क के अतिरिक्त टंगस्टन, मरकरी तथा आरसेनिक भी निकाला जाता है। सोना यहाँ प्राचीन काल से निकाला जाता है, परन्तु यहाँ पर सोना नदियों के डाले हुए रेत से प्राप्त किया जाता हैं, यह मशीनों द्वारा नहीं निकाला जाता, बल्कि प्राचीन ढंग से यहाँ के आदि निवासी निकालते हैं। विद्वानों का कहना है कि प्राचीन काल में बर्मा से जेड यहाँ सोने के बदले में ही मंगाया जाता था। ताँबे की स्थिति यूनान में बहुत अच्छी है। चीन का सबसे अधिक ताँबा इसी भाग में निकाला जाता है। यह भी प्राचीन ढंग से प्राप्त किया जाता है। रांगे के लिए भी यह एशिया में बहुत प्रसिद्ध है। रांगा कोचिन, जो कि मैंगेज के पश्चिम में २० मील दूर है, निकाला जाता है। ऐन्टीमनी, मैंगेज जो कि टोकिंग-यूनान रेलवे पर स्थित है, के स्थान पर निकाली जाती है। लेड, जिन्क इत्यादि धातुयें भी प्राप्त की जातीं हैं। टंगस्टन, आरसेनिक तथा मरकरी (पारा) अब देश में ही निकालते हैं। लोहा व चांदी अब कुछ स्थानों पर निकाली जाती हैं।

यह बड़े आश्चर्य की बात है, कि चीन का यह भाग खनिज पदार्थों में इतना धनी होता हुआ भी अधिक उन्नति नहीं कर सका। आर्थिक उन्नति न होने के दो ही प्रमुख कारण बतलाये जा सकते हैं। पहला यहाँ के यातायात के साधन बहुत ही संकुचित हैं। यहाँ केवल एक ही रेलमार्ग है, जो लाल नदी की घाटी में

होकर यूनान नगर तक पहुंचता है। अधिक ऊंचा नीचा धरातल होने के कारण सड़कों की भी कोई विशेष उन्नति नहीं हो सकी। यदि साधारण मार्गों की ओर ध्यान दिया जाय, तो हम कह सकते हैं कि चीन, हिन्द-चीन से मिला हुआ है। यहाँ के प्रसिद्ध नगर तालीफू, यूनान तथा मेंगेज को अन्य दक्षिणी-पूर्वी एशिया के देशों की अपेक्षा, बर्मा से भामो सड़क द्वारा आसानी से माल पहुंचाया जा सकता है।

दूसरा कारण जो इसकी आर्थिक उन्नति में बाधा डालता है, वह है वहाँ के असभ्य निवासी। ये लोग बहुत ही कम संख्या में हैं। यहाँ की कुल जनसंख्या लगभग ८० लाख है। इन लोगों को चीन के निवासी मिआओसी (Miaotse) कहते हैं, इनका रहन-सहन हिन्द-चीन व स्याम के निवासियों से मिलता जुलता है।

यदि देखा जाय तो यह क्षेत्र चीन से उसी प्रकार पृथक है जिस प्रकार रेड बेसिन है। यह मध्य चीन से बहुत दूर पड़ता है। साथ ही मध्य में पर्वत भी पाये जाते हैं। पेकिंग यहाँ से दो हज़ार मील उत्तर की ओर है। शासन-प्रबन्ध में अधिक दूरी के कारण तथा यातायात के साधन अच्छे न होने के कारण कभी कभी बड़ी बाधायें पड़ती हैं।

दक्षिणी चीन के पर्वतीय पठार :—

याँगटिसी नदी की घाटी के दक्षिण में हमको कई ऐसे पठार दृष्टिगोचर होते हैं जो सिक्याँग नदी की घाटी व दक्षिण-पूर्वीय तटीय प्रदेश को मध्य चीन से अलग करते हैं। इस उच्च भूमि की चट्टानें लाल रंग की हैं, औसत ऊंचाई २००० फीट है। समतल भूमि केवल नदियों की घाटियों तक सीमित है। इस भाग में कुछ पर्वत श्रेणियां भी पाई जाती हैं, किन्तु वे अधिक ऊंची नहीं हैं। लू-पर्वत श्रेणी उत्तरी कियाँग्सी में स्थित है, इस पर एक अति रमणीय स्थान कुलिंग बसा हुआ है। दक्षिणी हुनान में हंग पर्वत श्रेणी बहुत प्रसिद्ध हैं। क्वाटंग से ही लगी हुई नानलिंग पर्वत श्रेणियाँ हैं। इन पर्वतों की ऊंचाई चार हजार फीट से अधिक है।

इस पठारी भाग से याँगटिसी नदी की चार सहायक नदियाँ निकलती हैं और उत्तर की ओर बह कर याँगटिसी में जा गिरती हैं। इनमें से हुनान में युआन एवं सियाँग है, जो दोनों ही टुंगटिंग झील में होकर यांगटिसी में जा गिरती हैं। कियांग्सी में केन नदी है, जो पोयांग झील में होकर यांगटिसी से मिलती है। चियेनतँग नदी चिक्यांग प्रान्त में होकर मुख्य नदी से आ मिलती है। प्राचीन काल में इन नदियों की महत्ता व्यापारिक दृष्टिकोण से बहुत अधिक

थी, परन्तु आधुनिक सड़कों व मोटर गाड़ियों के बन जाने के कारण कोई विशेष महत्ता नहीं रही।

इस क्षेत्र की जलवायु गर्म व नम है। ग्रीष्म ऋतु का तापक्रम ८५° फा० के लगभग रहता है। शीत ऋतु में कभी कभी तापक्रम ५५° व ६०° तक हो जाता है। वर्षा का औसत सब स्थानों पर ५०" का है, परन्तु कहीं कहीं पर यह ७०" भी हो जाता है। यहां पर कोहरा साल में केवल एक हफ्ते ही पड़ता है।

कुछ क्षेत्रों में बन भी पाये जाते हैं। इन वनों में फर, पाइन व बेम्बू अधिक उगते हैं। यह वन दक्षिण व पश्चिम की ओर अधिक पाये जाते हैं लेकिन फिर भी यहां मिट्टी का कटाव बहुत अधिक होता है। यहां पर नारंगी, खजूर, तंग व बांस के वृक्ष भी उगते हैं।

जिन स्थानों पर सिंचाई के साधन मिलते हैं, वहां चावल की फसल एक मुख्य ग्रीष्म ऋतु की फसल है। कहीं कहीं पर दोनों ऋतुओं में चावल उत्पन्न किया जाता है। धान के अतिरिक्त तिलहन, बीन तथा गेहूं भी बोया जाता है। मक्का, तम्बाकू व अफीम की कृषि भी यहां के लोग करते हैं। कुछ भागों में रेशम के कीड़े भी पाले जाते हैं। चीन में अनुमान लगाया गया है, कि चाय ३० लाख एकड़ भूमि पर उत्पन्न की जाती है, इसमें से २० लाख एकड़ तो केवल इसी क्षेत्र में है। मध्य हुनान में सियांग्टन इसकी पैदावार के लिए विशेषतः महत्वपूर्ण है।

दक्षिणी चीन के इस भाग में खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं। कोयला कियांग्सी प्रान्त में मिलता है, पिंग स्थियांग की खानें विशेषरूप से प्रसिद्ध हैं। क्वीचो प्रान्त लोहे व चांदी के लिये भी महत्वपूर्ण है। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य धातुयें भी पाई जाती हैं। मध्य हुनान से ऐन्टीमनी तथा दक्षिणी क्वांग्सी से टंगस्टन प्राप्त की जाती है। लेड व जिन्क तो प्राचीन काल से ही निकाली जा रही हैं। सड़कों व रेलों के निर्माण से इस क्षेत्र की महत्ता और अधिक बढ़ जायगी। यहां के प्रसिद्ध नगरों में से चंगटीह, चंगशा, नानचंग तथा हैंगचो हैं। कान्टन हैंको व पूर्वी-पश्चिमी रेलवे के खुल जाने से हैंगचो, नानचंग, चंगशा तथा क्वीचो के नगर आधुनिक व्यापार के लिये खुल गये हैं।

यहां के आदि निवासी मिआओ कहलाते हैं। ये कुछ न कुछ घरेलू उद्योग में लगे हुये हैं। जैचवान के निवासी धीरे धीरे यहां आकर बस रहे हैं, क्योंकि उनका प्रान्त बहुत घना बसा हुआ है।

पश्चिमी चीन के प्राकृतिक विभाग

जैचवान पर्वत श्रेणियां :—

इस क्षेत्र में तिब्बत पठार के किनारे की श्रेणियां भी सम्मिलित हैं परन्तु ये

पर्वत श्रेणियां भी जो कि जैचवान प्रान्त के उत्तर-पश्चिम तथा रेड बेसिन के दक्षिण-पश्चिम में फैली हैं, इसी भाग में शामिल हैं। इन पर्वत श्रेणियों की ऊंचाई लगभग २०,००० फीट है। मीन नदी* जो कि चेन्गटू पठार की एक महत्वपूर्ण नदी है, इन्हीं पर्वत श्रेणियों से निकलती है। याँगटिसी नदी तिब्बत की सीमा से निकल कर यूनान में बहती है, और फिर यूनान व जैचवान प्रान्तों की सीमा बनाती हुई रेड बेसिन में प्रवेश करती है। चेंगटू पठार जो कि रेड बेसिन का एक भाग है, उत्तर-पश्चिम में चिंग-चेंग शान नामक पहाड़ियों से घिरा हुआ है, चूने की सीधी सीधी चट्टानें धान के खेतों के पीछे बहुत ही सुन्दर दृष्टिगोचर होती हैं। दूर से ये चट्टानें दीवार की भांति दीखतीं हैं। कई तीव्र बहने वाली नदियाँ इसमें से निकलती हैं। इनका जल कृषि के लिये अति महत्त्वपूर्ण है। यदि इन चिंग-चेंग शान को दूर से देखा जाय तो यह केवल नीची नीची पहाड़ियों के रूप में ही दृष्टिगोचर होंगी, परन्तु इनके पीछे काफी ऊंची ऊंची बर्फ से ढकी हुई चोटियाँ पाई जाती हैं इनमें से बहुत सी चोटियाँ बीस हजार फीट से भी अधिक ऊंची हैं। वास्तव में यदि देखा जाय तो यह पहाड़ियाँ तिब्बत पठार की ही विस्तृत श्रेणियाँ हैं। जैचवान बेसिन के दक्षिण-पश्चिम में कई पर्वत श्रेणियाँ आ मिलती हैं। ये सब इसको यूनान से पृथक करती हैं। इन श्रेणियों के मध्य में ल्याँगशान का एक छोटा सा क्षेत्र है, इस पर असभ्य जातियां रहतीं हैं।

इस भाग की जलवायु ठण्डी है, प्रायः शीत ऋतु में यहां बर्फ वर्षा हो जाया करती है, परन्तु ग्रीष्म ऋतु में अधिक गर्मी नहीं पड़ती। कोहरा भी साल में केवल कुछ ही दिनों पड़ता है। निचली पहाड़ियों पर वन भी पाये जाते हैं। परन्तु अधिक महत्वपूर्ण लकड़ी प्राप्त नहीं होती। इस प्रदेश में अधिकतर असभ्य जातियां पाई जातीं हैं। यह अधिकतर वितरित दशा में चारों ओर फैली हुई हैं। ल्यांगशान के भाग में लोलो जाति के लोग मिलते हैं। कुछ लोगों ने तो कृषि करना आरम्भ कर दिया है। लेकिन फिर भी इनकी दशा अधिक अच्छी नहीं है। यहां की कुल जनसंख्या बहुत कम है, क्योंकि सम्पूर्ण क्षेत्र बंजर पड़ा हुआ है।

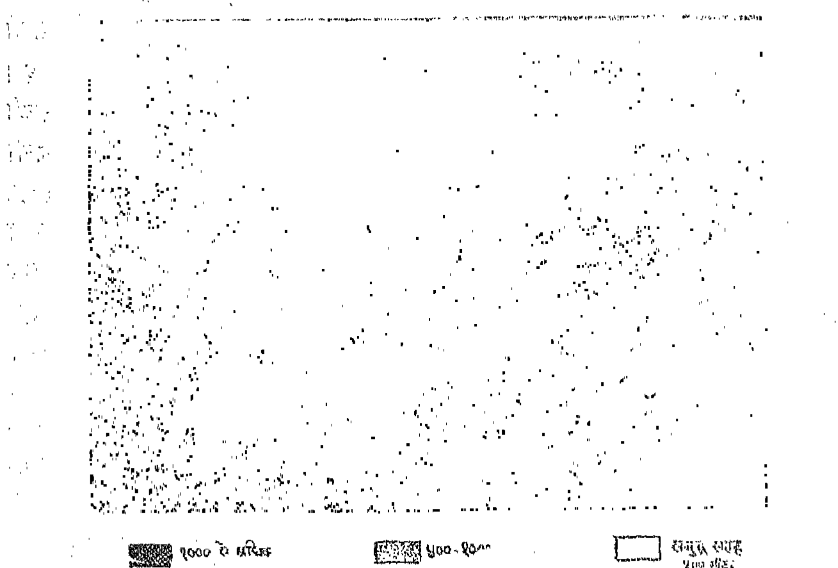
रेड बेसिन :—

वास्तव में यह भाग जैचवान का बेसिन है, क्योंकि यह जैचवान प्रान्त के बिल्कुल मध्य में स्थित है। एक जर्मन विद्वान बैरन वॉन रिक्टोफन (Baron

---

* Chinese writers are of opinion that the upper course of Yangtse River is Min river itself.

von Richtofen) ने इसको सर्व प्रथम रेड बेसिन के नाम से पुकारा था॰। उसने यहां पर क्रिटेशियस युग की गुलाबी व लाल रंग की चट्टानें पाई थीं। यह लगभग चारों ओर ऐसे ही रंग के शेल व सेन्डस्टोन नाम के पत्थरों से घिरा हुआ है। वह इनसे बहुत अधिक प्रभावित हुआ, और इसीलिए उसने इस ऊंचवाम बेसिन का नाम रेड बेसिन रख दिया था। इस विद्वान का यह भी मत था कि इस क्षेत्र के मध्य में तरशियरी युग के गड्ढे झीलों के रूप में थे, धीरे धीरे यह लाल रंग के शेल व सेन्डस्टोन नामक चट्टानों



चीन—रेड बेसिन

से भर गये और अब वह एक बेसिन के रूप में दृष्टिगोचर होता है। इस बेसिन में होकर यांगटिसी नदी बहती है। नदी ने इस बेसिन के पूर्व में इशांग के स्थान पर एक बहुत गहरी घाटी बनाई है। कुछ लोगों का ऐसा भी विचार है कि इस बेसिन के स्थान पर जो प्राचीन गड्ढा था उसमें कई ऐसी चूने की चट्टानें पाई जातीं थीं जो उत्तर-पूर्व से दक्षिण व दक्षिण-पूर्व तक फैली हुई थीं, इनके मध्य में क्रिटेशियस युग की लाल चट्टानें भर गईं। अब कटाव के कारण यहाँ एक विचित्र दृश्य दृष्टिगोचर होता है। कई गहरी गहरी चूने की चट्टानों की खाइयां

* L. Dudley Stamp—Asia An Economic and Regional Geography 523.

व घाटियां यहां पाई जातीं हैं। यांगटिसी नदी पश्चिम व दक्षिण-पश्चिम से पूर्व एवं उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। इसकी कई सहायक नदियां हैं, जो कि लाल रंग की अथवा चूने की चट्टानों से होकर बहती हैं। वास्तव में चीनी भाषा में जैचवान का अर्थ चार छोटी छोटी नदियों से है। ये नदियां इस प्रकार हैं :—(i) मिन नदी (ii) चुंग क्यांग की घाटी (iii) फुक्यांग की घाटी (iv) काइलिंग घाटी।

मिन नदी प्रमुख नदी किन्शा कियांग (Upper Course of Yaungtse River) से छोटी है, परन्तु इसमें जल अधिक रहता है तथा व्यापार के दृष्टिकोण से भी यह एक मुख्य मार्ग बनाती है। इसके ऊपरी बेसिन में चैन्गटू का पठार स्थित है। मिन नदी यांग टिसी नदी से सैइफू के स्थान पर मिलती है। चुंगक्यांग नदी की घाटी एक मध्य की घाटी है। फूक्यांग तथा काइलिंग नदियां यांग टिसी नदी से चुंगकिंग के स्थान पर मिलती हैं।

चैंगटू को छोड़कर शेष रेड बेसिन का भाग बहुत पथरीला तथा ऊंचा-नीचा है, इसकी औसत ऊंचाई २००० फीट है। यहां की जलवायु में कई विशेषतायें पाई जातीं हैं। शीत ऋतु में यहां बहुत अधिक सर्दी नहीं पड़ती परन्तु फिर भी तापक्रम ५०° फा० पाया जाता है। ग्रीष्म ऋतु में औसत गर्मी ८०° फा० पड़ती है। वर्ष में केवल एक माह तक कोहरा पड़ता है। उत्तरी ठण्ढी हवाओं से यह सिंगलिंग पर्वत श्रेणियों द्वारा घिरा हुआ है। यह आश्चर्य की बात है, कि रेड बेसिन का क्षेत्र चारों ओर पर्वतों से घिरा होने के कारण भी वर्ष में औसत वर्षा ४० इंच प्राप्त कर लेता है। यहां पर प्रत्येक समय आसमान पर बादल छाये रहते हैं तथा वातावरण नर्म रहता है। यहाँ की एक कहावत प्रसिद्ध है कि जब कभी भी यहां धूप निकलती है तो कुत्ते तक भौंकने लगते हैं।

जिन स्थानों पर धरातल अनुकूल है तथा भूमि उपजाऊ है, वहाँ कृषि की जाती है। ऐसा कहा जाता है कि लगभग ४० प्रतिशत क्षेत्र में कृषि की जाती है। यहां विभिन्न प्रकार की फसलें बोई जाती हैं जैसे उत्तर के भाग में गेहूं, ज्वार, बाजरा तथा कोर्न, दक्षिण की ओर चावल, रेपसीड तथा गन्ना। चावल यहां ग्रीष्म ऋतु में उन क्षेत्रों में उत्पन्न किया जाता है, जहां सिंचाई का प्रबन्ध है। शकरकन्दी शुष्क पहाड़ियों की उपज है। रेशम व चाय, कपास, तम्बाकू व अफीम इत्यादि कुछ अन्य उपजें है। गेहूं यहां शीत ऋतु में उत्पन्न किया जाता है। सम्पूर्ण घाटी में रसदार फल पैदा होते हैं। कृषि यहां बहुत ही प्राचीन ढंग से की जाती है। यहां पर अधिकतर पंक्तियोंदार खेत पर्वतों के ढालों पर मिलते हैं। सीढ़ीदार कतारों को बनाना यहां कोई विशेष कठिन नहीं है, क्योंकि पत्थर अधिक सख्त नहीं है। सिंचाई के साधन भी यहां बहुत ही अच्छे पाये जाते हैं। पानी या तो चेनपम्प द्वारा और या पहिये द्वारा सिंचाई के हेतु प्रदान किया जाता है। कृषकों के घर

बरगद, साईप्रस, पाइन, ओक तथा खजूर इत्यादि के वृक्षों से घिरे होते हैं। देखने में ये बड़े सुन्दर प्रतीत होते हैं।

रेड बेसिन के कई भागों में खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं। कोयला व नमक तो विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं, लेकिन प्राकृतिक गैस भी कुछ स्थानों पर प्राप्त होती है। कोयले का उत्पादन गत वर्षों से काफी बढ़ गया है। यह मिन व क्यालिंग नदियों की घाटियों में विशेष रूप से निकाला जाता है। लोहा, तांबा व सोना भी कई जगह मिलता है। आधुनिक उद्योग-धन्धे केवल चुन्किंग के स्थान पर ही उन्नति कर पाये हैं।

यातायात के दृष्टिकोण से यांगटिसी नदी की सहायक नदियों का महत्व अधिक है। कई सहायक नदियों में स्थान-स्थान पर तीव्र जल प्रवाह है, परन्तु फिर भी यहां के मल्लाह नावों को धारा के विपरीत ले जाते हैं, नदियों द्वारा व्यापार बहुत अधिक होता है, क्योंकि धरातल अनुकूल न होने के कारण सड़कें बहुत कम पाई जाती हैं। लेकिन अब इस भाग के प्रत्येक क्षेत्र में कुछ न कुछ सड़कें पाई जाती हैं।

जैचवान बेसिन की जनसंख्या के विषय में कहा जाता है कि अधिक जनसंख्या ऐसी है, जो कि ह्यूपे किवाँग्सी तथा अन्य पूर्वी प्रान्तों से आकर स्थापित हुई है। जनसंख्या का घनत्व यहाँ भी काफी है, मिट्टी पर आवश्यकता से अधिक दबाव पड़ रहा है और अब यहां के लोग यही चेष्टा कर रहे हैं कि कृषि क्षेत्र को जितना हो सके बढ़ाया जाय।

इस स्थान पर हम थोड़ा सा हाल चेंग्टू पठार का भी देना उचित समझ रहे हैं, क्योंकि यह भी जैचवान बेसिन का ही एक भाग है। चेंग्टू का पठार एक समतल क्षेत्र हैं। इसका क्षेत्रफल लगभग २८५० वर्गमील है। इसका ढाल उत्तर से दक्षिण की ओर है। याँगटिसी नदी से लगभग डेढ़ सौ मील ऊपर चढ़ने के पश्चात् यहां पठार दृष्टिगोचर होने लगता है। इसके विषय में भी विशेषज्ञों का मत है, कि यहां प्राचीन-काल में एक झील थी जिसमें पत्थर जमा हो गये हैं। उत्तम सिंचाई के साधन होने के कारण यह क्षेत्र एक मरुस्थल के रूप में परिवर्तित नहीं हो सका। मिन नदी इसी पठार से होकर बहती है। अनुमान लगाया जाता है कि जितना प्राचीन यहां का सिंचाई का प्रबन्ध (नहरें) था, उतना कदाचित किसी भी देश का नहीं था। श्री डडले स्टैम्प ने यहां की सिंचाई के साधनों का विवरण देते हुये कहा है कि प्राचीन सिंचाई के साधनों का श्रेय 'ली II'* को दिया जाता है, क्यों कि उसका ध्येय उत्तम से उत्तम शक्तिशाली बांध

*Li II was the son of Li Ping who overthrew the Shu kingdom in 215 B. C.

बनाना था। यद्यपि यहाँ १३ वीं शताब्दी के बने हुये डाइक मिलते हैं, परन्तु फिर भी हमको लकड़ी व बाँसों का प्रयोग प्राचीन लोहे के साथ अब भी मिलता है। आज कल यहाँ कई लम्बी लम्बी नहरें मिलती हैं, और अब लगभग सभी स्थानों पर कृषि की जाने लगी है।

जनसंख्या का घनत्व यहाँ भी बहुत अधिक हो गया है। कहीं-कहीं पर ४००० से भी अधिक प्रति वर्ग मील है। नहरों के दोनों ओर हरे भरे वृक्ष पाये जाते हैं। कहीं-कहीं पर मन्दिर इत्यादि भी दृष्टिगोचर होते हैं। चैंगटू पठार पर वन भी मिलते हैं, इन वनों में बाँस, नीबू, नारंगी इत्यादि अधिक महत्वपूर्ण हैं। कई स्थानों पर फलों के बगीचे भी पाये जाते हैं। जलवायु व उपजें मुख्य जैचवान बेसिन से मिलती-जुलती हैं। यहां भी गेहूं, ज्वार-बाजरा व कोर्न तथा तम्बाकू, अफीम व कपास इत्यादि वस्तुयें उत्पन्न होती हैं।

यदि चीन के भौतिक मानचित्र को ध्यानपूर्वक देखा जाय तो हमें यह ज्ञात होगा कि इस बेसिन में प्रवेश करना बहुत कठिन है, क्योंकि चारों ओर वह पर्वतों से घिरा हुआ है। वास्तव में यह शेष चीन से पृथक है और इसीलिये, यहां हर प्रकार की वस्तुयें उत्पन्न की जाती हैं। इस भाग में यूनान की ओर से भी प्रवेश कर सकते हैं। याँगटिसी नदी क्वीचो तथा आई-शांग के स्थान पर बहुत गहरी घाटी बनाई गई है, यह 'बुशन की महान घाटी' कहलाती है। इसकी लम्बाई २२ मील है। इसमें होकर, कहा जाता है, कि केवल नावें जा सकती हैं जो कि विशेष रूप से बनाई जाती हैं। साथ ही एक सड़क भी ऊंची-नीची भूमि को पार करती हुई पहुंचती है। अब एक सड़क को और भी अधिक उपयोगी बना दिया गया है। आजकल मोटर गाड़ियाँ भी इस मार्ग द्वारा रेड बेसिन में प्रवेश करने लगी हैं।

चुङ्गकिंग यहां का प्रसिद्ध नगर है, यह याँगटिसी नदी पर १४०० मील अन्दर बसा हुआ है। चुंगकिंग एक अति प्राचीन नगर है, यह ३२० बी० सी० का बसा हुआ ऐसा नगर है, जो कि ऐतिहासिक दीवारों से घिरा हुआ है। इसकी जनसंख्या* १९४६ में १००२७८७ थी। युद्ध के कारण यह १९४८ में गिर कर ९८५,६७३ हो गई। कहा जाता है, कि १९२७ के पहले यहां पर पहियेदार गाड़ियों का नाम तक न था और न सड़कें व मार्ग थे, परन्तु आजकल इसका रूप ही भिन्न है। अब मोटर गाड़ियों के चलाने योग्य पक्की सड़कें भी मिलती हैं, बाजारों में, साइकिलें व रिक्शे भी नजर आते हैं। रेड बेसिन का यह एक मुख्य व्यापारिक नगर हो गया है।

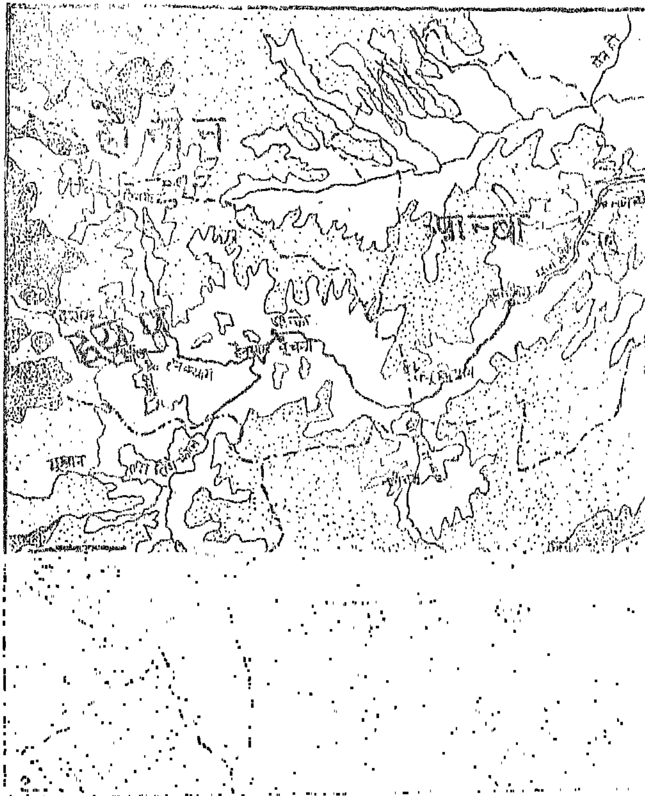
---

* Dr. G. B. Cressey—Asia's Lands and Peoples. P—132

जैचवान बेसिन का दूसरा मुख्य नगर चैंगटू है, जो कि इसी नाम के पठार पर स्थित है। यह नगर तिब्बत की सीमा के निकट बर्फ से ढकी हुई चोटियों के सम्मुख स्थित है और मिन नदी, जो कि ऐज्युरपर्वत से निकलती है, पर बसा हुआ है। इस मैदान का क्षेत्रफल १७३० वर्ग मील है, जनसंख्या ३७००००० तथा घनत्व २१५० प्रति वर्ग मील में है। चैन्गटू अपने इतिहास व संस्कृति में धनी है, यहां बहुत ही सीमित व्यापारिक उन्नति हो सकी है क्योंकि इसकी स्थित जैचवान बेसिन के पश्चिम में है। इसकी जनसंख्या १९४५ में ६२०,३०२ थी, अब यह नगर भी दिन प्रतिदिन उन्नति कर रहा है।

मध्य यांगटिसी नदी की घाटी:—

यांगटिसी नदी आइशंग के स्थान पर एक गहरी घाटी में बहने के पश्चात्



मध्य यॉंगटिसी नदी की घाटी

एक समतल भूभाग में प्रवेश करती है। इसके दोनों ओर दूर-दूर तक कई नहरें निकाली गई हैं। नदी की इस घाटी में कई झीलें भी पाई जाती हैं। वास्तव में इस क्षेत्र की तीन झीलें जो मिट्टी भर जाने के कारण वर्तमान मैदान के रूप में हैं, बहुत अधिक महत्वपूर्ण हैं। हम यह भी अनुमान लगा सकते हैं, कि यॉगटिसी नदी प्राचीन काल में इन झीलों में होकर बहती हुई प्रशान्त महासागर में गिरती हो, परन्तु कुछ भी हो हम इन तीनों समतल बेसिनों को एक ही विभाग में सम्मिलित करते हैं। पहला बेसिन पश्चिम की ओर सबसे बड़ा है, नदी ने इसको दो भागों में विभाजित कर दिया है। उत्तर के भाग में ह्यूपे तथा दक्षिण के भाग में हुनान प्रान्त शामिल हैं। आइशंग से लेकर इसका विस्तार वूशंग तक है। दक्षिण की तंगलिंग झील इसी का एक भाग हैं, अन्य छोटे-छोटे खण्ड भी झीलों के रूप में उत्तर की ओर पाये जाते हैं। दूसरा बेसिन मध्य में है, इसके भी दो खण्ड किये जा सकते हैं। ये दोनों भी यांगटिसी नदी द्वारा अलग हैं। उत्तर में मैदान बहुत तंग हैं, तथा पूर्व में इसका विस्तार अन्किंग तक है। दक्षिण की ओर पायाँग झील बड़ी तेजी के साथ सूख रही है, कियांगसू प्रान्त इसी में शामिल है। तीसरा बेसिन वास्तव में एक निचला बेसिन है। यह आनकिंग से लेकर नानकिंग तक फैला हुआ है। नदी के इसी भाग में हूवू नगर स्थित है। इसके बाद नदी इस भाग से अपने डेल्टे में प्रवेश करती है। यांगटिसी नदी का यह भाग लगभग चारों ओर पर्वत व पहाड़ियों से घिरा हुआ है। इस भाग में जब कभी भी बाढ़ आ जाया करती है तो चारों ओर जल ही जल दृष्टिगोचर होता है, बाढ़ आने का मुख्य कारण यही है कि मैदान तंग होने के कारण सारा जल समुद्र तक आसानी से नहीं पहुँच पाता।

इस भाग की जलवायु रेड बेसिन की जलवायु से कुछ गर्म है। यहां शीत ऋतु तथा पतझड़ बहुत ही सुन्दर मौसम होते हैं। आकाश स्वच्छ रहता है औसत तापक्रम ५०° फा० रहता है। ग्रीष्म ऋतु काफी गर्म व नम होती है। औसत तापक्रम ६०° व १००° के मध्य में रहता है। कोहरा वर्ष में केवल एक माह पड़ता है। शेष दिनों में कोहरा कदापि नहीं पड़ता।

कृषि उद्योग में भी यहाँ काफी विकास हुआ है। यहाँ की कुल जनसंख्या तीन चौथाई कृषक है। नदी के उत्तरी क्षेत्र में ह्यूपे प्रान्त गेहूँ, जौ, कपास के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं, लेकिन चावल भी थोड़ी मात्रा में उत्पन्न किया जाता है। रेशम के कीड़े तथा पशुओं का पालना भी यहाँ के लोगों का मुख्य धन्धा है। दक्षिण में तंगटिंग झील के बेसिन में चावल बहुत अधिक उत्पन्न किया जाता है। लेकिन चावल के साथ-साथ चाय, तम्बाकू, अफीम, तिलहन तथा कपास इत्यादि

भी उत्पन्न की जाती है। इस भाग में प्रति वर्ग मील भूमि पर ६०० व्यक्ति रहते हैं, सम्पूर्ण क्षेत्र का ७० प्रतिशत कृषि के लिये दिया जाता है। यहाँ की कुल जन-संख्या लगभग पांच करोड़ है।

यांगटिसी नदी का महत्व व्यापार के दृष्टिकोण से बहुत अधिक है। इसकी सहायक नदियां जो उत्तर व दक्षिण से आकर इसमें मिलती है, उनमें से उत्तर से आने वाली हेन तथा दक्षिण से आने वाली सियांग बहुत प्रसिद्ध हैं। नहरें भी इस नदी से निकाली गई हैं। बहुत सी नावें चलाने योग्य भी हैं। नहरें विशेष रूप से यांगटिसी नदी के दक्षिण तथा ताई झील के पूर्व में मिलती हैं।

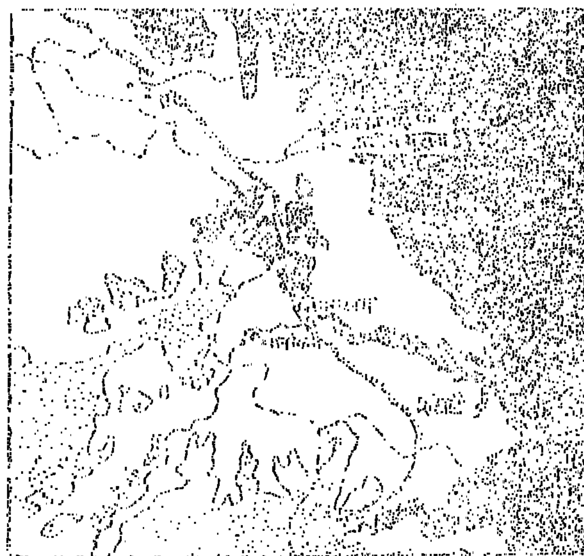
बड़े बड़े समुद्री जहाज यांगटिसी नदी में होकर हैन्को तक बड़ी आसानी से आ जाते हैं। कुछ बड़ी बड़ी नावें व स्टीमर कदाचित् आइशंग तक भी आ जाया करते हैं। झीलों की गहराई कम होने के कारण व्यापारिक दृष्टिकोण से यह कोई विशेषता नहीं रखतीं। लेकिन जिन झीलों में होकर सहायक नदियाँ बहती हैं, उनमें नावें चली जाती हैं। उदाहरणार्थ हेन नदी सियांगयाग तक केन नदी पोयांग तक, युआन तुंगतिंग झील में होकर क्वीचो की सीमा तक। वास्तव में देखा जाय तो यांगटिसी नदी यातायात के दृष्टिकोण से राइन नदी को छोड़ कर संसार में सबसे बड़ी है केवल कुछ मध्य के द्वीपों को छोड़ कर शेष भाग में गहराई अधिक है। साथ ही नदी का प्रवाह एकसा पाया जाता है। याँगटिसी अब भी एक युवा नदियों में से है, क्योंकि इसकी समुद्री सतह से ऊंचाई काफी कम है। आइशंग के स्थान पर यह केवल २६५ फीट समुद्र सतह से ऊंची है, यद्यपि यह नगर समुद्र से १००० मील दूर स्थित है। हैन्कों केवल एक दर्जन फीट समुद्र सतह से ऊंचा है। नदी में होकर ४००० टन के जहाज बड़ी आसानी से हैन्को, जो समुद्र से ६३० मील अन्दर की ओर स्थित है, तक आ जाते हैं। गर्मियों में दस हजार टन के वजन की नावें इस नदी के आन्तरिक क्षेत्रों तक आ जाती हैं।

इस भाग में तीन ऐसे नगर हैं, जिनकी जनसंख्या पांच लाख से ऊपर है, और लगभग आधे दर्जन ऐसे हैं, जिनमें से प्रत्येक में एक लाख से अधिक हैं। हैन्को तथा हैनयाँग यांगटिसी नदी के उत्तर में स्थित हैं। हैन्को हेन नदी के पूर्व में तथा हेनयांग पश्चिम में पाया जाता है। इन दोनों नगरों के सम्मुख वूशांग है। वूशांग तथा हेनयांग दोनों प्राचीन नगर हैं, इन दोनों के चारों ओर दीवारें पाई जाती हैं। हैन्को एक आधुनिक नगर तथा एक स्वतन्त्र व्यापारिक केन्द्र है। हेनयांग में तो अब लोहे व इस्पात के उद्योग की उन्नति हो चुकी है। यह तीनों नगर यहां के प्रमुख नगरों में से हैं। स्यूकियाँग नगर, जो कि हैन्को से १४० मील

नीचे है, मध्य बेसिन में सम्मिलित है। यह एक प्रकार से क्याँगसी का द्वार है। आन्किंग नगर जो कि आन्ह्वी प्रान्त में स्थित है, आर्थिक दृष्टिकोण से अधिक महत्ता रखता है।

यांगटिसी नदी का डेल्टा :—

भौगोलिक दृष्टिकोण से डेल्टे का मध्य भाग यांगटिसी नदी के मध्य भाग से बिल्कुल अलग है। इसमें क्याँग्सू प्रान्त का क्षेत्र शामिल है। यांगटिसी नदी नानकिंग नगर से लगभग २२ मील ऊपर 'दि पिलर्स' को पार करके कियांग्सू प्रान्त में प्रवेश करती है। यह स्थान समुद्र से २०० मील दूर है। केवल कुछ पहाड़ी चोटियों को छोड़ कर शेष भाग समतल है। दक्षिण की ओर जो पहाड़ी चोटियां हैं, वह समतल उपजाऊ भूमि में द्वीप के समान दृष्टिगोचर होती हैं। सम्पूर्ण कियांग्सू प्रान्त एक उपजाऊ क्षेत्र है। यांगटिसी नदी से दोनों ओर दूर-दूर तक लम्बी नहरें निकाली गई हैं। यदि इस क्षेत्र को इस ध्येय से देखा जाय, तो



चीन—यांगटिसी डेल्टा

यह 'चीन का हॉलैंड' कहा जा सकता है। यहां कुछ ऐसे भी क्षेत्र हैं, जो कि समुद्र की सतह से नीचे हैं, और कृषि 'पोल्डर' भूमि में की जाती है। कहीं कहीं पर दलदल भी दृष्टिगोचर होते हैं। उत्तर की ओर यांगटिसी नदी का डेल्टा चीन

के उत्तरी मैदान में मिल जाता है। हांगहो नदी का प्राचीन डेल्टा भी इस प्रान्त के उत्तर में ही आता है।

डेल्टे के क्षेत्र में ही 'ग्रान्ड कैनाल' जिसे हम दूसरे शब्दों में बड़ी नहर कह सकते हैं, बहती है। यह नहर चीन के उत्तरी मैदान को यांगटिसी नदी के इस क्षेत्र से मिलाती है। वास्तव में इस नहर का निर्माण कुबलाई खांन ने किया था। इस नहर के दोनों किनारों पर शहतूत के वृक्ष लगे हुये हैं। रेशम के उत्पादन में यह क्षेत्र प्रमुख स्थान प्राप्त करता है।

इस भाग की जलवायु सम है। यहाँ ग्रीष्म ऋतु में न ज्यादा गर्मी और शीत में न अधिक ठण्डक पड़ती है। वर्षा यहाँ दोनों ऋतुओं में होती है, लेकिन ग्रीष्म ऋतु में सबसे अधिक वर्षा हुआ करती है। यहाँ की मुख्य उपज चावल है। लेकिन साथ में, कपास, तम्बाकू, अफीम व फल तरकारियां इत्यादि भी उगाई जातीं हैं। कपास का प्रयोग शंघाई के कारखानों में, तम्बाकू, अफीम तथा फल तरकारियां व्यापार के लिये शंघाई तथा अन्य नगरों में भेज दी जाती हैं। डेल्टे के इस भाग में कई बड़े बड़े नगर भी पाये जाते हैं। शंघाई व्यापारिक केन्द्र, चिन्कयाँग औद्योगिक नगर तथा नानकिंग एक राजनैतिक केन्द्र तथा प्राचीन राजधानी है।

शंघाई :—शंघाई चीन का एक प्रमुख नगर है। इसकी महत्ता इसके पृष्ठ प्रदेश से और भी अधिक हो गई है। पृष्ठ प्रदेश में सम्पूर्ण मानव जाति का दसवां भाग रहता है। संसार का कोई भी नगर इतना बड़ा वाणिज्य का केन्द्र नहीं है और न ही इतना उन्नतिशील पृष्ठ प्रदेश रखता है। इसकी स्थिति इतनी महत्वपूर्ण है, कि यदि याँगटिसी का भाग बर्मा व कान्टन से भूमार्गों द्वारा भी व्यापार करे तो भी इसकी महत्ता स्थाई बनी रहेगी। शंघाई युद्ध पूर्व टोकियो के बाद गिना जाता था, और विश्व में इसका पांचवाँ स्थान था। सन् १९४८ में इसकी जनसंख्या ४,६३०,३८५ थी। द्वितीय महायुद्ध के समय शंघाई में ७५,००० विदेशी तथा ५,००० अमरीकन रहते थे। यह नगर विदेशी व्यापार के हेतु सन् १८४३ में खोला गया था। इसकी स्थिति दक्षिण में यांगटिसी की मुख्य धारा से लगभग १४ मील दूर वंगपू (R. Whanpoo) नदी पर है। अधिक मिट्टी के जमाव के कारण कई रेत के टापू व उथले जलमार्ग दृष्टिगोचर होते हैं। जहाजों को या तो उच्च ज्वार भाटों के हेतु रोक दिया जाता है, या कुछ स्थानों पर बालू हटाकर गहराई बढ़ा दी जाती है। रेत के टापू यहां 'फेरी फ्लेट' (Fairy Flats) कहलाते हैं।

आजकल इस नगर में एशिया की सबसे ऊंची इमारतें पाई जाती हैं। वास्तव में आधुनिक शंघाई तीन राजनैतिक क्षेत्रों से मिल कर बना है। पहला,

प्राचीन दीवारों से घिरा हुआ नगर, दूसरा दो इधर-उधर के क्षेत्र, जो एक शताब्दी पहले विदेशी लोगों के लिये थे, तीसरा फ्रेंच कन्शेसन व 'इण्टरनेशनल सेटिलमेंट' के क्षेत्र (इसी क्षेत्र ने आधुनिक व्यापारिक केन्द्र प्रदान किया है)। आजकल यह नगर और भी अधिक बढ़ गया है और अब वांगपू नदी से लेकर मुख्य यांगटिसी नदी तक का क्षेत्र इसी नगर में आता है।

शंघाई एक व्यापारिक नगर है, परन्तु साथ ही साथ यह गत वर्षों से औद्योगिक भी हो गया है। इसके पृष्ठ प्रदेश में कपास व रेशम बहुत उत्पन्न होता है, इसलिये यहाँ रेशमी व सूती वस्त्र तैयार करने के कारखाने भी खुल गये हैं। चीन का लगभग आधा आयात व निर्यात व्यापार इसी बन्दरगाह द्वारा होता है। किसी भी अन्य बन्दरगाह में इतने विदेशी जहाज़ देखने को नहीं मिल सकते जितने कि इस पर, और न ही इतनी जहाज़ी कम्पनियाँ दृष्टिगोचर हो सकती हैं। द्वितीय महायुद्ध पहले यह नगर अपनी उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुंच चुका था, परन्तु युद्ध के कारण इसको एक ठोकर लग गई, लेकिन अब पुनः यह उन्नति कर रहा है।

नानकिंग:—नानकिंग नगर १४१६ के पहले मिंग व संग वंशों की राजधानी रह चुका है। इसका प्राचीन वैभव अब जा चुका है। इस समय यह केवल एक साधारण नगर के रूप में ही है। कुछ वर्ष हुए इस नगर ने भी उन्नति की थी। चीन की नेशनलिस्ट सरकार ने इस नगर को अपनी राजधानी बनाया था, यह १९२२ तक राजधानी रही। यह नगर शंघाई के उत्तर-पश्चिम में लगभग २०० मील की दूरी पर स्थित है। इसकी जनसंख्या १९४८ में १,११३,९७२ थी।

हैंगचो:—शंघाई के दक्षिण-पश्चिम में एक बहुत ही सुन्दर नगर हैंगचो स्थित है। रेल द्वारा एक व्यक्ति को इस नगर तक पहुंचने में केवल पाँच घण्टे लगते हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरू जब अपनी चीन यात्रा से वापस लौटे, तो उन्होंने भी इस नगर की सुन्दरता देखी। यह वास्तव में एक बहुत ही सुन्दर बाग़, बग़ीचे व टैंकों वाला नगर है। सूचो, जो कि शंघाई के पश्चिम में स्थित है, उसकी दूरी का अनुमान शंघाई से वहां तक के दो घण्टे की यात्रा से लगाया जा सकता है। वास्तव में देखा जाय तो यह नगर चीन के उपजाऊ मैदान में स्थित है। यहाँ की स्त्रियां अपनी सुन्दरता के लिये बहुत प्रसिद्ध हैं। शंघाई के निकट इन दोनों की स्थिति इतनी महत्वपूर्ण है कि लोग कहते हैं कि "स्वर्ग ऊंचा तथा सूचो व हैंगचो नीचे" ("Heaven above, Soochow and Hangchow below")। कुछ भी हो, १९४४ में हैंगचो की जनसंख्या ६०६१३६ तथा सूचो की इसी सन् में ५००,००० थी। दोनों ही बड़े महत्वपूर्ण नगर हैं।

के उत्तरी मैदान में मिल जाता है। ह्वांगहो नदी का प्राचीन डेल्टा भी इस प्रान्त के उत्तर में ही आता है।

डेल्टे के क्षेत्र में ही 'ग्रान्ड कैनाल' जिसे हम दूसरे शब्दों में बड़ी नहर कह सकते हैं, बहती है। यह नहर चीन के उत्तरी मैदान को यांगटिसी नदी के इस क्षेत्र से मिलाती है। वास्तव में इस नहर का निर्माण कुबलाई खान ने किया था। इस नहर के दोनों किनारों पर शहतूत के वृक्ष लगे हुये हैं। रेशम के उत्पादन में यह क्षेत्र प्रमुख स्थान प्राप्त करता है।

इस भाग की जलवायु सम है। यहाँ ग्रीष्म ऋतु में न ज्यादा गर्मी और शीत में न अधिक ठण्डक पड़ती है। वर्षा यहाँ दोनों ऋतुओं में होती है, लेकिन ग्रीष्म ऋतु में सबसे अधिक वर्षा हुआ करती है। यहाँ की मुख्य उपज चावल है। लेकिन साथ में, कपास, तम्बाकू, अफीम व फल तरकारियां इत्यादि भी उगाई जातीं हैं। कपास का प्रयोग शंघाई के कारखानों में, तम्बाकू, अफीम तथा फल तरकारियां व्यापार के लिये शंघाई तथा अन्य नगरों में भेज दी जाती हैं। डेल्टे के इस भाग में कई बड़े बड़े नगर भी पाये जाते हैं। शंघाई व्यापारिक केन्द्र, चिन्कयाँग औद्योगिक नगर तथा नानकिंग एक राजनैतिक केन्द्र तथा प्राचीन राजधानी है।

शंघाई :—शंघाई चीन का एक प्रमुख नगर है। इसकी महत्ता इसके पृष्ठ प्रदेश से और भी अधिक हो गई है। पृष्ठ प्रदेश में सम्पूर्ण मानव जाति का दसवां भाग रहता है। संसार का कोई भी नगर इतना बड़ा वाणिज्य का केन्द्र नहीं है और न ही इतना उन्नतिशील पृष्ठ प्रदेश रखता है। इसकी स्थिति इतनी महत्वपूर्ण है, कि यदि याँगटिसी का भाग वर्मा व कान्टन से भूमार्गों द्वारा भी व्यापार करे तो भी इसकी महत्ता स्थाई बनी रहेगी। शंघाई युद्ध पूर्व टोकियो के बाद गिना जाता था, और विश्व में इसका पांचवाँ स्थान था। सन् १९४८ में इसकी जनसंख्या ४,६३०,३८५ थी। द्वितीय महायुद्ध के समय शंघाई में ७५,००० विदेशी तथा ५,००० अमरीकन रहते थे। यह नगर विदेशी व्यापार के हेतु सन् १८४३ में खोला गया था। इसकी स्थिति दक्षिण में यांगटिसी की मुख्य धारा से लगभग १४ मील दूर वंगपू (R. Whanpoo) नदी पर है। अधिक मिट्टी के जमाव के कारण कई रेत के टापू व उथले जलमार्ग दृष्टिगोचर होते हैं। जहाजों को या तो उच्च ज्वार भाटों के हेतु रोक दिया जाता है, या कुछ स्थानों पर बालू हटाकर गहराई बढ़ा दी जाती है। रेत के टापू यहां 'फेरी फ्लेट' (Fairy Flats) कहलाते हैं।

आजकल इस नगर में एशिया की सबसे ऊंची इमारतें पाई जाती हैं। वास्तव में आधुनिक शंघाई तीन राजनैतिक क्षेत्रों से मिल कर बना है। पहला,

प्राचीन दीवारों से घिरा हुआ नगर, दूसरा दो इधर-उधर के क्षेत्र, जो एक शताब्दी पहले विदेशी लोगों के लिये थे, तीसरा फ्रेंच कन्शेसन व 'इण्टरनेशनल सेटिलमेंट' के क्षेत्र (इसी क्षेत्र ने आधुनिक व्यापारिक केन्द्र प्रदान किया है)। आजकल यह नगर और भी अधिक बढ़ गया है और अब वांगपू नदी से लेकर मुख्य यांगटिसी नदी तक का क्षेत्र इसी नगर में आता है।

शंघाई एक व्यापारिक नगर है, परन्तु साथ ही साथ यह गत वर्षों से औद्योगिक भी हो गया है। इसके पृष्ठ प्रदेश में कपास व रेशम बहुत उत्पन्न होता है, इसलिये यहाँ रेशमी व सूती वस्त्र तैयार करने के कारखाने भी खुल गये हैं। चीन का लगभग आधा आयात व निर्यात व्यापार इसी बन्दरगाह द्वारा होता है। किसी भी अन्य बन्दरगाह में इतने विदेशी जहाज़ देखने को नहीं मिल सकते जितने कि इस पर, और न ही इतनी जहाज़ी कम्पनियाँ दृष्टिगोचर हो सकती हैं। द्वितीय महायुद्ध पहले यह नगर अपनी उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुंच चुका था, परन्तु युद्ध के कारण इसको एक ठोकर लग गई, लेकिन अब पुन: यह उन्नति कर रहा है।

नानकिंग:—नानकिंग नगर १४१६ के पहले मिंग व संग वंशों की राजधानी रह चुका है। इसका प्राचीन वैभव अब जा चुका है। इस समय यह केवल एक साधारण नगर के रूप में ही है। कुछ वर्ष हुए इस नगर ने भी उन्नति की थी। चीन की नेशनलिस्ट सरकार ने इस नगर को अपनी राजधानी बनाया था, यह १९२२ तक राजधानी रही। यह नगर शंघाई के उत्तर-पश्चिम में लगभग २०० मील की दूरी पर स्थित है। इसकी जनसंख्या १९४८ में १,११३,९७२ थी।

हैंग्चो:—शंघाई के दक्षिण-पश्चिम में एक बहुत ही सुन्दर नगर हैंग्चो स्थित है। रेल द्वारा एक व्यक्ति को इस नगर तक पहुंचने में केवल पाँच घण्टे लगते हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरू जब अपनी चीन यात्रा से वापस लौटे, तो उन्होंने भी इस नगर की सुन्दरता देखी। यह वास्तव में एक बहुत ही सुन्दर बाग़, बगीचे व टैंकों वाला नगर है। सूचो, जो कि शंघाई के पश्चिम में स्थित है, उसकी दूरी का अनुमान शंघाई से यहाँ तक के दो घण्टे की यात्रा से लगाया जा सकता है। नक्शे में देखा जाय तो यह नगर चीन के उपरी मैदान में स्थित है। यहाँ की स्त्रियां अपनी सुन्दरता के लिये बहुत प्रसिद्ध हैं। शंघाई के निकट इन दोनों की स्थिति इतनी महत्वपूर्ण है कि लोग कहते हैं कि "स्वर्ग ऊंचा तथा सूचो व हैंग्चो नीचे" ("Heaven above, Soochow and Hangchow below")। कुछ भी हो, १९४८ में हैंग्चो की जनसंख्या ६०६१३६ तथा सूचो की इसी सन् में ५,००,००० थी। दोनों ही बड़े महत्वपूर्ण नगर हैं।

सिंगलिंग पर्वत श्रेणियां :—

यांगटिसी तथा ह्वांगहो नदी की घाटियों के मध्य में कुछ पर्वत श्रेणियाँ मिलती हैं। यह पर्वत श्रेणियां वास्तव में मध्य एशिया के पर्वतों से सम्बन्धित हैं तथा पूर्व में वैयांगशान (Hwaiyangshan) तक चली गई हैं। पश्चिम में यह तिब्बत के प्रकार की हैं तथा पूर्व में यह नानकिंग तक पहुंचते पहुंचते समाप्त हो जाती हैं। इन पर्वत श्रेणियों के उत्तरी ढाल शुष्क हैं, परन्तु जब कभी भी मानसून से थोड़ी भी वर्षा हो जाती है, तो वन व चावल इत्यादि वस्तुयें उग आती हैं। वास्तव में यदि देखा जाय तो यहां तक ही लोयेस मिट्टी की सीमा है। यहां तक चावल, चाय, शहतूत व बांस उत्पन्न किया जाता है।

सत्य तो यह है कि यह कुनलुन पर्वत श्रेणियों का ही एक भाग है, और इसकी उत्पत्ति पामीर के पश्चिम से हुई है। जब यह चीन में कान्सू प्रान्त के दक्षिण में प्रवेश करती है, तो यह मिन पर्वत श्रेणियों के नाम से प्रसिद्ध है, और ऊंचाई लगभग २०,००० फीट है। शेन्शी प्रान्त में यह १०,००० फीट ऊंची हैं, और इनका नाम सिंगलिंग पर्वत श्रेणियां पड़ गया है। इस नाम से यह पूरे पर्वत पुकारे जाते हैं। इन्हीं से सम्बन्धित होनान के फुन्यू पर्वत ६,००० फीट, ऐन्ह्वी की पहाड़ियां जिन्हें तेपी पर्वत कहते हैं, ३,००० फीट ऊंची है।

इसके अतिरिक्त मध्य के पर्वतों के उत्तरी किनारों के समानान्तर एक और श्रेणी हान नदी के दक्षिण में है। जैचवान के उत्तर में यह तापा तथा पूर्व में यांगटिसीक्यांग को पार करके गहरी घाटियों में प्रवेश कर जाते हैं।

यदि ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखा जाय, तो यह पर्वत श्रेणियां प्राचीन क्रांतियों के कारण सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक सीमायें भी बनाती थीं। आजकल यह उत्तर की गेहूं खाने वाली जनसंख्या को दक्षिण की चावल खाने वाली जनसंख्या से अलग करतीं हैं। इस पर्वतीय क्षेत्र का पश्चिमी भाग बहुत अधिक ऊंचा-नीचा है, इसके फलस्वरूप जनसंख्या बहुत कम पाई जाती है। पूर्व में समतल भूमि लगभग ५ या १० प्रतिशत मिलती है। यहां जनसंख्या का घनत्व अधिक मिलता है। प्रमुख नगर हानचंग है, यह हान नदी पर स्थित है।

यदि चीन के भौतिक मानचित्र को ध्यानपूर्वक देखा जाय तो ऐसा प्रतीत होगा कि ये पर्वत श्रेणियां न केवल ह्वांग हो व यांगटिसीक्यांग नदी की घाटियों को पार करती है, बल्कि ये यांगटिसीक्यांग के मैदान को रैड बेसिन से भी अलग करती है। यांगटिसीक्यांग नदी की गहरी घाटियां बहुत ही सुन्दर प्राकृतिक दृश्य प्रस्तुत करतीं हैं। इस गहरी घाटी में नाव चलाना बहुत ही कठिन है, क्योंकि वनसीन (Wanhsein) से लेकर इशांग तक नदी का सीधा तल तीन सौ फीट

ढालू है। मुख्य घाटियां उन स्थानों पर पाई जाती हैं, जो कि सख्त चूने की चट्टानों की लहरों को काटती हैं। छोटी छोटी नावें वर्ष भर इन घाटियों में होकर यातायात करती हैं। चीनी मल्लाह इतने कुशल नाविक होते हैं, कि तीव्र प्रवाह की भी चिन्ता नहीं करते और नाव को बड़ी सुविधा के साथ चला ले जाते हैं।

उत्तरी चीन के प्राकृतिक विभाग

शांटंग प्रायद्वीप :—

भौगोलिक दृष्टिकोण से यदि देखा जाय तो शांटंग का प्रान्त एक ऐसा प्रायद्वीप है जो कि अति प्राचीन चट्टानों का बना हुआ है। इसमें अधिकतर ऐसे पर्वत हैं जो देखने में मालूम होते हैं कि उत्तरी चीन के मैदान में से द्वीप के समान उठे हुये हैं, तथा जिनके पूर्व में दूर तक समुद्र फैला हुआ है। यह भी सम्भव है, कि अति प्राचीन काल में यह भाग एक द्वीप रहा हो और इसके पश्चिम में उत्तरी चीन के मैदान के स्थान पर भी समुद्र रहा हो। डा० क्रेसे का कथन है कि चीन के उत्तरी मैदान के स्थान पर पहले पीला सागर था, परन्तु धीरे धीरे ह्वांग हो नदी के डेल्टे ने आधा सागर भर दिया है। यदि बनावट की दृष्टि से देखा जाय, तो इसकी चट्टानें ल्याओटंग प्रायद्वीप, कोरिया व पूर्वी मंचूरिया तथा मियाओ द्वीप से सम्बन्धित हैं, और ऐसा भी प्रतीत होता है कि पिचली की खाड़ी में स्थित एक भू-खण्ड द्वारा इसका सम्बन्ध था। शांटंग की पहाड़ियां 'सिंगचो-क्याओचो' घाटी द्वारा पृथक हैं। पूर्वी भाग में अधिक प्राचीन दानेदार तथा परिवर्तित चट्टानें और पश्चिमी भाग में पर्तदार व चूने की चट्टानें दृष्टिगोचर होती हैं। कहीं कहीं पर बिटुमिनस कोयला भी मिलता है। पर्वतों की ऊंचाई अधिक से अधिक ५०५६ फीट है। ताईशान की पवित्र शिखा इतनी ही ऊँची है। इस प्रायद्वीप का तट बहुत कटा फटा है, कई स्थानों पर चट्टानें ऊँची ऊँची सीधी दीवार की भाँति खड़ी हुई हैं।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इस प्रायद्वीप तथा उसके बन्दरगाहों की स्थिति इतनी महत्वपूर्ण है, कि न केवल जापान व रूस ही इसकी ओर आकर्षित हुए, बल्कि कुछ योरोपियन राष्ट्रों को भी इसमें रुचि हुई। जापान ने जब १८९४-९५ में चीन पर विजय प्राप्त कर ली तब इसका थोड़ा सा भाग अपने अधिकार में कर लिया था। जर्मन लोगों ने क्याओ की खाड़ी के चारों ओर का क्षेत्र अपने अधिकार में ले लिया था, साथ ही सिंगताओ (T'sing T'ao) मछली पकड़ने वाले केन्द्र को भी एक बड़ा बन्दरगाह बना दिया। इसके अतिरिक्त इन लोगों ने अन्य प्रकार के सुधार भी यहां किये। प्रथम महायुद्ध के समय जापान ने इसको

अपने अधिकार में कर लिया, लेकिन 'वाशिंगटन पेक्ट' के अन्तर्गत पुन: चीन को यह नवम्बर १९२२ में वापस कर दिया गया।

कनफ्यूसियस महात्मा भी इसी प्रान्त में रहे थे, उनके शिष्य येनसियस भी यहीं उत्पन्न हुए। अब भी यहाँ इस धर्म को मानने वाले लोग रहते हैं, उनके वंश की ७८ वीं पीढ़ी के लोग इस समय भी उपस्थित हैं, ये लोग कंग कहलाते हैं।

शांटंग प्रायद्वीप का आर्थिक भूगोल उत्तरी चीन के मैदान से मिलता जुलता है। यहाँ भी लोगों के उसी प्रकार के कृषि करने व रहन-सहन के ढंग हैं तथा लगभग वही फसलें भी उत्पन्न होतीं हैं। उपजाऊ घाटियों में गहरी कृषि की जाती है। जनसंख्या का घनत्व यहाँ भी ३००० व ४००० प्रति वर्ग मील मिलता है। लोग हज़ारों गायें, गधे तथा सुअर पालते हैं। कृषि वास्तव में वर्षा पर निर्भर रहती है, लेकिन वर्षा के साथ साथ कुओं द्वारा भी सिंचाई की जाती है। गेहूं व ज्वार बाजरा मुख्य उपजें हैं। बलूत की पत्तियों पर रेशम के कीड़े भी पाले जाते हैं, किन्तु कहीं कहीं पर शहतूत के वृक्षों पर भी ये कीड़े पाले जाते हैं।

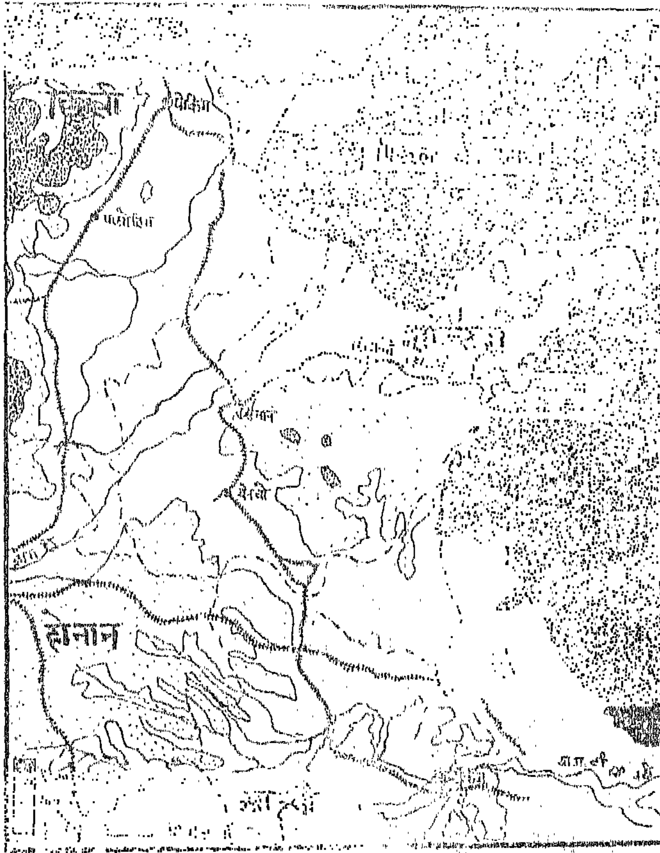
शांटंग की पहाड़ियां बंजर पड़ी हुई हैं, कई स्थानों पर मिट्टी के कटाव की बड़ी विकट समस्यायें हैं। यहाँ की सरकार इसको रोकने के प्रयत्न कर रही है। परन्तु वनीय क्षेत्रों का अभाव होने के कारण इस कार्य में कोई विशेष सफलता नहीं हो रही। जो कुछ भी जनसंख्या पाई जाती है, वह या तो तंग समुद्री तटों पर और या गहरी घाटियों में। यही कारण है कि जनसंख्या का घनत्व बहुत अधिक पाया जाता है।

चिफू एक प्रमुख व्यापारिक बन्दरगाह है। आन्तरिक नगरों में लाईचो सिंगचो तथा वोसीन मुख्य हैं, चीन के उत्तरी मैदान की ओर जो नगर स्थित हैं, उनमें येनचो तथा सिनान (Tsinan) बहुत प्रसिद्ध हैं।

उत्तरी चीन का बड़ा मैदान

उत्तरी चीन के प्राकृतिक विभागों में जितना महत्व इस पीले मैदान का है, उतना कदाचित् किसी का नहीं। यदि चीन के इतिहास की ओर एक दृष्टि डाली जाये तो हम देखेंगे कि शताब्दियों से यहाँ की मिट्टी ने लाखों व करोड़ों लोगों को जीवन प्रदान किया है। वास्तव में देखा जाय तो चीन की संस्कृति का रक्षकोष यही समतल मैदान है। इसकी स्थिति पश्चिम में लोयेस पठार के किनारे से लेकर पूर्व में शांटंग उच्च भूमि तक है। इसमें चिहली व पश्चिमी शांटंग का भाग भी शामिल है, साथ ही थोड़ा सा भाग उत्तरी-पूर्वी हुनान का भी सम्मिलित है। इस मैदान का क्षेत्रफल १,२५,००० वर्ग मील है। दक्षिण में यह यांगटिसीक्यांग नदी के डेल्टा से जु

गया है। पहले इस समतल मैदान के स्थान पर एक उथला सागर था, जिसके पूर्व में शांटुंग उच्च भूमि का द्वीप था। ह्वांगहो नदी लगातार इसमें पीली मिट्टी जमा



चीन का बड़ा मैदान तथा शांटुंग द्वीप

करती रही, इसी कारण यह पीली मिट्टी के मैदान के रूप में परिवर्तित हो गया। इसमें समुद्र के पत्थर, बालू तथा रेत पाया जाता है, ऊपर की तह नदी की डाली हुई बहुत ही मुलायम पीली मिट्टी की बनी हुई है। नदी की डाली हुई मिट्टी जिस पर कि अधिकतर शान्सी के पठार से निकलती हुई नदियों ने लोयस मिट्टी जमा कर दी है, बहुत ही उपजाऊ मिट्टी है। इस मैदान पर लोयस बराबर जमा होती जा रही है। कहीं कहीं पर तो यह आवश्यकता से अधिक एकत्र हो गई है और कई स्थानों पर इसका भाग इधर उधर की भूमि से ऊंचा हो गया है। सच तो यह है

कि लोगों को बराबर यह भय रहता है, कि कहीं नदी का जल इधर-उधर के खेतों में न फैल जाये। इस भय के कारण जिन स्थानों पर भाग ऊंचा है, वहां नदी के दोनों किनारों पर जल रोकने के लिये ऊंचे ऊंचे बाँध बना दिये गये हैं। जैसे ही जैसे लोयेस जमा होती जा रही है, वैसे ही वैसे अन्य स्थानों पर बाँध बनाने की आवश्यकता भी बढ़ती जा रही है। ऐसा कहा जाता है, कि उत्तरी चीन के पीले मैदान की नदियाँ बजाय घाटियों के कुछ चट्टानों पर बहती हैं। वास्तव में यह कथन ठीक ही है, क्योंकि यहाँ पर चट्टानों का अभाव है। दूसरे जो नदियाँ मैदान में बहती हैं वे बराबर अपना भाग उथला ही बनाती हैं, क्योंकि मिट्टी बराबर जमा होती रहती है और घाटियाँ नहीं बन पातीं। पत्थरों की कमी के कारण जो नदियों के दोनों ओर बांध बनाये जाते हैं, वे प्राय: मिट्टी के ही होते हैं जिसके फलस्वरूप बाढ़ के समय बहुत शीघ्र कट जाते हैं। कभी-कभी इन बांधों के कट जाने के कारण हजारों व लाखों व्यक्ति मौत के मुंह में चले जाते हैं। गत वर्षों में ऐसा भी हुआ है कि बाढ़ के समय चारों ओर दूर दूर तक जल फैल जाने के कारण लोग भूखों मरने लगे थे, और लाखों गृहहीन हो गये थे। यही कारण है कि ह्वांगहो नदी दूसरे शब्दों में "चीन का शोक" कहलाती है।

चीन की सब नदियों में ह्वांगहो नदी ही एक ऐसी नदी है, जिसने कि कई बार अपना मार्ग परिवर्तित किया है। अति प्राचीन काल में यह शांटंग के उत्तर में गिरा करती थी, परन्तु बाद में यह उसके दक्षिण में गिरने लगी। किन्तु १८५२ में जब ग्रेट-ब्रिटेन चीनी सरकार पर दबाव डाल रहा था, तब उसने नदी के मुहाने को घेर रखा था, और राष्ट्रीय जहाज दूर लंगर डाले कई माह तक खड़े रहे थे। जब बाद में यह घेरा हट गया तो लोगों को ज्ञात हुआ, कि नदी २५० मील उत्तर की ओर गिर रही है।

जिस समय जापानियों ने चीन के इस क्षेत्र पर आक्रमण किया था, उस समय (१९३८) चीनयों ने ह्वांगहो नदी के बाँधों को काट कर उसका मार्ग ह्वाई नदी की ओर कर दिया था। उस समय से १९४७ तक ह्वांगहो नदी बराबर ह्वाई नदी में गिरती रही, लेकिन इसी सन् में जब संयुक्त राष्ट्र ने चीन को आर्थिक सहायता दी, तब यह बाँध पुनः बना दिया गया और ह्वांगहो नदी ह्वाई नदी से पृथक हो गई।

ह्वांगहो नदी का बहाव बहुत ही धीमा है, इसके कारण बाँध बनाने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। नदी इतनी अधिक मिट्टी जमा कर देती है, कि एक बार एक बाँध के टूट जाने पर इसने ६० मील दक्षिण की ओर १८ इंच मोटी मिट्टी की तह जमा कर दी। क्योंकि नदी इधर उधर के क्षेत्र से उच्च मार्ग से होकर बहती है, इसलिये इससे नीचे की ओर ४०० मील दूर तक

कोई भी सहायक नदी नहीं गिरती। केवल एक जो आकर मिलती है, वह शाटंग के निकट ही मिलती है। नदी में बहुत कम ऐसे भाग हैं, जिनमें नावों द्वारा यातायात किया जाता है। ह्वांगहो के दक्षिण में ह्वाई नदी बहती है, इस नदी का कोई विशेष मुहाना नहीं है। पहले जब ह्वांगहो नदी शाटंग के दक्षिण में गिरती थी तब ह्वाई ने अपना वास्तविक मार्ग खो दिया था। अब जबकि ह्वांगहो उत्तर की ओर गिरती है, तो ह्वाई नदी कई टूटे हुये उथले भाग से होकर बहती है, इसके मार्ग में हुंगजी झील भी पड़ती है। अब इस नदी के इस भाग को खोद कर बनावटी तौर पर इसके मार्ग को ठीक कर दिया गया है। इसी में होकर चीन की महान् नहर जो 'ग्रान्ड केनाल' के नाम से प्रसिद्ध है, निकाली गई है। यह नहर वास्तव में कुबलाई खाँ ने बनवाई थी। यह दक्षिण में यांगटिसीक्यांग को पार करती हुई जाती है।

उत्तरी चीन के बड़े मैदान की जलवायु अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा कुछ ठण्डी है। शीत ऋतु में यहां बहुत ठण्ढी तीव्र हवायें मध्य एशिया के भाग से पूर्व व दक्षिण-पूर्व की ओर चलती हैं। इन ठण्डी हवाओं के कारण कभी कभी तापक्रम ०° फा० तक हो जाता है, बर्फ वर्षा तो प्राय: हो जाया करती है। इन हवाओं में नमी नहीं होती। प्राय: इन हवाओं के साथ धूल के तूफान भी आया करते हैं। ग्रीष्म ऋतु में तापक्रम १००° फा० तक पहुंच जाता है। वर्षा भी उन मानसून हवाओं से होती है, जो कि महासागरों को पार करती हुई आती हैं। पेकिंग का तापक्रम कान्टन की अपेक्षा अधिक रहता है। कोहरा यहां पाँच या छै माह तक बराबर पड़ता है। वार्षिक वर्षा का औसत इस क्षेत्र के दक्षिण में ३० या ३५ इञ्च तथा उत्तर में २० इञ्च के लगभग है। परन्तु वर्षा के समय मात्रा में प्राय: अन्तर रहा करता है। ग्रीष्म ऋतु में वर्षा मध्य जून तक आरम्भ नहीं होती। शीत ऋतु में जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है, केवल कभी कभी बर्फ वर्षा हो जाया करती है। तीनस्टिन में वर्षा का औसत २० इंच है, परन्तु हेर-फेर इतना अधिक होता है, कि साल में केवल १० या ३० इंच ही हो पाती है।

चीन के इस क्षेत्र की मिट्टी केलकेरियस है। किसी किसी स्थान पर तो इतनी अधिक खारी है, कि नमक तक प्राप्त कर लिया जाता है। कृषि के लिये ऐसी मिट्टी हानिकारक होती है, परन्तु फिर भी कई ऐसे भी उपजाऊ क्षेत्र हैं, जिनमें असुविधा होने पर भी लोग खेती करते हैं। जिन स्थानों पर पृथ्वी के नीचे से जल धरातल पर एकत्र होकर सूख जाता है, वहाँ श्वेत रंग की पतली सी नमक की पपड़ी जम जाती है। सम्पूर्ण उत्तरी चीन में थोड़ी सी ऐल्केलाइन मिट्टी है। अधिक बाढ़ तथा वाटर लेविल ऊँचा होने के कारण यहाँ पर शान्चियांग

मिट्टी मिलती है, इसकी विशेषता यह है, कि इसमें वाटर टेबिल के निकट बहुत से छोटे छोटे से कंकड़ पाये जाते हैं। खाद इत्यादि के प्रयोग से यहाँ की मिट्टी उपजाऊ बना ली जाती है। इस भाग में कुछ खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं। कोयला काइलन व उत्तरी होनान के क्षेत्रों में निकाला जाता है।

चीन में कदाचित् कोई भी ऐसा भाग न होगा जहाँ, इतनी अधिक कृषि होती हो। प्रत्येक जिले की लगभग ९० प्रतिशत भूमि पर कृषि की जाती है। सिंचाई केवल १० प्रतिशत भाग में ही होती है। लगभग ४० प्रतिशत भूमि पर वर्ष में दो फसलें उत्पन्न की जाती हैं। कृषकों की संख्या नगरों में रहने वालों से कहीं अधिक है। उपजाऊ क्षेत्र के प्रति वर्गमील में ११६५ लोग रहते हैं। इस आँकड़े से प्रतीत होता है, कि लोगों का लगाव भूमि से कितना अधिक है। किसी भी भाग में इतनी प्रकार की फसलें नहीं होतीं जितनी कि इसमें होती हैं। गेहूं यहाँ की मुख्य पैदावार है। चावल, सिंचाई के साधन उपयुक्त न होने के कारण यहाँ बहुत कम उत्पन्न किया जाता है। इन फसलों के अतिरिक्त सोरघम, काओलिंग तथा ज्वार-बाजरा, कपास व भाँग, शक्कर व अफीम इत्यादि भी उगाई जाती हैं। साथ ही साथ सोयाबीन तथा विभिन्न प्रकार की तरकारियाँ भी उत्पन्न की जातीं हैं। शीत ऋतु में विशेष तौर पर गेहूं, जौ व सोयाबीन उत्पन्न किया जाता है। इस क्षेत्र में अब आधुनिक ढंग की मशीनों द्वारा कृषि की जाने लगी है।

मनुष्य व परिस्थितियों का जितना घनिष्ठ सम्बन्ध यहाँ देखने को मिलता है, उतना कहीं और आसानी से नहीं मिल सकता। भूमि की एक एक इंच मिट्टी ऐसी मालूम होती है, जैसे कि वर्षों से मानव-संघर्षों का परिचय दे रही हो। जब कभी भी फसल अच्छी होती है, तो लोगों के मुखों पर रूखी मुस्कराहट आ जाती है। लेकिन प्रायः यह देखा गया है, कि मानव हमेशा अकाल, बाढ़, भूकम्प, सूखा इत्यादि संकटों से संघर्ष करता रहता है। सच तो यह है, कि जनसंख्या यहाँ पर आवश्यकता से अधिक है।

इस क्षेत्र में नगर व गाँव इतने घने स्थित हैं, कि आश्चर्य होता है। इनमें से कई तो महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र हैं। पेकिंग यहाँ का बहुत बड़ा नगर तथा राजधानी है, यह एक प्राचीन नगर है और इसकी स्थापना सन् ९२० A. D. में येन्शिङ्ग के नाम से हुई थी, लेकिन आधुनिक पेकिंग का रूप कुबलाई खाँ के प्रयत्नों द्वारा हुआ है। शताब्दियों से यहाँ पर कलाकार, विद्वान, लेखक, व्यापारी तथा नेता लोग आते रहे हैं। अब भी चीन का यह नगर एक महान् नगर है और प्राचीन चीन की संस्कृति प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिलती है यहाँ के सुन्दर भवन, मन्दिर, म्यूजियम, अजायबघर बाग बगीचे इत्यादि यहाँ के प्राचीन जीवन

तथा संस्कृति का परिचय देते हैं। इस नगर की स्थिति इतनी महत्वपूर्ण है, कि इसको आरम्भ से ही हर प्रकार की सुविधायें मिलती रही हैं। पीले मैदान के कोने में यह नानको घाटी के उस मार्ग के निकट है, जो मंगोलिया के पठार को जाता है। रेल मार्गों द्वारा भी यह नगर उत्तर में मुकडेन व शंघाई इत्यादि बड़े बड़े नगरों से मिला हुआ है। पेकिंग नगर चारों ओर से पाँच ऊंची ऊंची दीवारों से घिरा हुआ है। पहली दीवार के अन्दर जो नगर है, वह केवल सम्राटों के लिये ही था, इसके पश्चात् इम्पीरियल नगर, जो मंचू लोगों के लिये था, उसके चारों ओर पचास फीट ऊंची दीवार है, इसमें मंचू नगर बसा हुआ था और इसी में 'लीगेशन' क्षेत्र भी स्थित था।

इस नगर की जनसंख्या १९४८ में १,७२१,५४६ के लगभग थी। आधुनिक पेकिंग अब वह नगर नहीं है, जो कि प्राचीनकाल में था। अब यहां पश्चिमी सभ्यता की झलक पूर्ण रूप से देखने को मिलती है। (सन् १९०१ में सर्व प्रथम पेकिंग रेलवे का निर्माण हुआ और साथ ही यह पवित्र तारतर नगर विदेशियों के लिये खोल दिया गया)। यहां का रेलवे स्टेशन, सरकारी इमारतें, फिल्म स्टूडियोज़, होटल, पुस्तकालय, अस्पताल, कालेज तथा अन्य पूँजीपतियों के भवन बिल्कुल इसी स्टाइल के हैं जिस स्टाइल के पश्चिमी देशों में दृष्टिगोचर होते हैं।

इस पीले मैदान में यदि कमी है तो केवल अच्छे बन्दरगाहों की है। जो कुछ भी बन्दरगाह इसके निकट मिलते हैं, वह या तो शाटंग प्रायद्वीप और या ल्याओटंग प्रायद्वीप के तटों पर मिलते है। वास्तव में उत्तरी चीन का तट बड़ा दलदली है, कहीं कहीं पर उथला जल मिलता है। नदियों के मुहानों पर रेत के टीले या बहुत अधिक मिट्टी दृष्टिगोचर होती है, केवल तीन बन्दरगाह ऐसे हैं, जो बड़ी कठिनाइयों से स्थापित हो सके हैं। उत्तर की ओर चिनवंगताओ जिसका बन्दरगाह बनावटी है, स्थित है; मध्य में हई नदी पर टिन्टसिन है, दुर्भाग्य से यह समुद्र से चालीस मील दूर स्थित है। इसके दक्षिण में हैचो का बन्दरगाह स्थित है।

टिन्टसिन उत्तरी चीन का एक और महत्वपूर्ण नगर है। वास्तव में यह पेकिंग नगर का ही बन्दरगाह है। इस नगर की स्थापना ही इसके पृष्ठ प्रदेश के कारण हुई है। यह नगर जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है हई नदी पर स्थित है, इस स्थान पर यह नदी तीन सौ मील चौड़ी है। अपनी महत्वपूर्ण स्थिति के कारण यह एक औद्योगिक नगर हो गया है। यहां पर सूती, ऊनी व रेशमी कपड़े के कारखाने पाये जाते हैं। इनके अतिरिक्त अन्य कई उद्योग भी प्रगति कर गये हैं।

प्राचीन काल में इस नगर के चारों ओर ऊंची-ऊंची दीवारें थीं, परन्तु इन्हें गिरा कर अब चौड़ी-चौड़ी सड़कें, ऊंचे-ऊंचे भवन इत्यादि बना दिये गये हैं। हई नदी अपने मुहाने पर बहुत अधिक रेत व बालू एकत्र करती है, इसलिये बराबर इसको गहरा रखने की आवश्यकता रहती है। अब भी बड़े-बड़े पोत दूर ही लंगर डालते हैं। शीत ऋतु में कुछ समय तक नदी जम जाया करती है, परन्तु उस समय यहां बराबर यह बर्फ हटाई जाती है। बाढ़ के समय यहाँ इतनी अधिक मिट्टी जमा होती है कि एक बार तो केवल दो दिन में नौ फीट ऊंची तह जम गई। इस बन्दरगाह को यहाँ की सरकार ने आधुनिक सुविधायें प्रदान की हैं, और आजकल यहां से ऊन, चमड़ा, खाल, कपास, अंडे, अडों से तैयार की हुई वस्तुयें, कम्बल, रेशमी व ऊनी वस्त्र इत्यादि वस्तुओं का निर्यात होता है। साथ ही वे वस्तुयें जो विदेशों से उत्तरी चीन के लिये आतीं हैं, इसी बन्दरगाह पर उतारी जाती हैं।

इस क्षेत्र के अन्य नगरों में सिंगयुआन जो पहले पाओटिंग कहलाता था, तथा जो होपी की राजधानी है, काईफेंग जो हुनान की राजधानी है तथा सिनान जो शाटंग की राजधानी है, प्रसिद्ध हैं।

वी हो नदी की घाटी :—

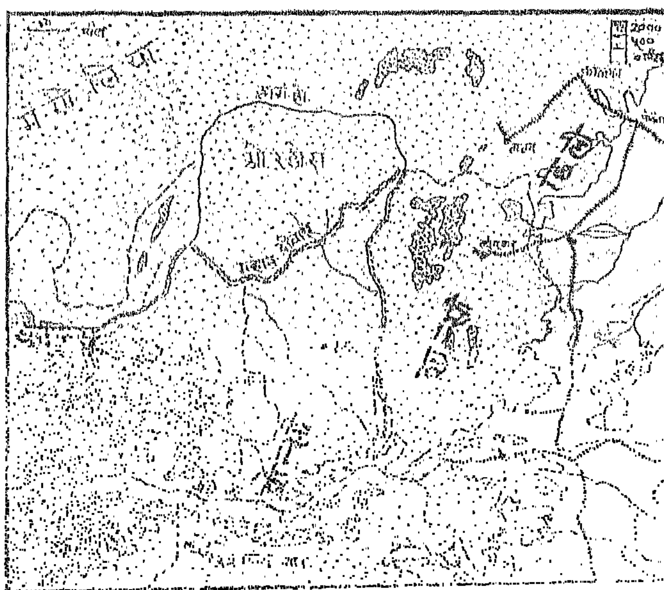
वी हो नदी हाँगहो नदी की एक सहायक नदी है, यह नदी पीलिंग (सिंगालिंग) पर्वत श्रेणियों से पश्चिम से निकलती है। इसकी घाटी वास्तव में लोयेस व सिंगालिंग पर्वत श्रेणियों के मध्य स्थित है। इस नदी की वह पेटी जो पश्चिम से पूर्व की ओर फैली हुई है, शेन्सी प्रान्त को उत्तर व दक्षिण के दो भागों में विभाजित करती है। चीन के उत्तरी मैदान में प्रवेश करने के पहिले ह्वांगहो नदी पांच सौ मील लोयेस में होती हुई दक्षिण की ओर मुड़ती है और शान्सी व होनान प्रान्तों की सीमा बनाती हैं। वी हो नदी ह्वांगहो से उसी स्थान पर मिलती है जहां कि यह उत्तर से आकर पूर्व की ओर उत्तरी चीन के मैदान की ओर बहती है। इस नदी की छोटी सी घाटी बहुत उपजाऊ है, क्योंकि यहां पर अति प्राचीन काल से यह सहायक नदी बराबर लोयेस मिट्टी जमा कर रही है। इस क्षेत्र का जन-संख्या—घनत्व बहुत अधिक है और कृषि उद्योग यह किसी भी अन्य क्षेत्र से कम नहीं है। सच तो यह है, कि सभ्यता का यह आरम्भ से ही एक केन्द्र रहा है। कई बार सियान नगर*, जो कि प्राचीनकाल में चंगान के नाम से प्रसिद्ध था, चीन साम्राज्य की राजधानी रह चुका है। चीन की प्राचीन सभ्यता लगभग दो हजार वर्षों के आरम्भ में, वी हो नदी की घाटी में उत्पन्न होने के पश्चात् ह्वांगहो

* Chang-an was the capital of the Chinese Empire under two dynasties-for 426 years from 206 B. C. to A. D. 220 vide L. Dudley stamp-Asia A Regional and Economic Geography Pages 516, 517.

के बेसिन में ही सीमित रही। परन्तु इस बात का भी प्रमाण मिलता है, कि सभ्यता ह्वांगहो नदी की सहायक नदियों की घाटियों में भी किसी समय विकसित थी। आजकल इस क्षेत्र में बहुत ही आधुनिक ढंग से कृषि व उद्योग धन्धों में विकास हो रहा है। सियान नगर अब चीन के अन्य बड़े नगरों से थल मार्गों द्वारा मिला हुआ है। यहाँ पर कई उद्योग भी पाये जाते हैं।

उत्तर-पश्चिम का लोयेस क्षेत्र : —

चीन के उत्तर-पश्चिम में एक ऐसा पहाड़ी व पर्वतीय क्षेत्र है, जिसमें कि अति प्राचीनकाल से पीली मिट्टी जमा हो रही है। इस मिट्टी की विशेषता यह है, कि यह बहुत ही मुलायम है और उंगली से रगड़ने पर कदापि खुरदुरी नहीं मालूम होती। इस पीली मिट्टी के यहां एकत्र होने के विषय में कई वैज्ञानिकों ने अपने मत प्रकट किये हैं। इन सबों में आपस में मतभेद भी है, परन्तु सब से सन्तोषजनक विचार एक जर्मन भूगर्भ शास्त्री बेरन वान रिक्टोफन का ही प्रतीत होता है। इस विद्वान ने योरोपियन पाठकों के लिये इस विषय पर अपने सिद्धान्त की रचना की थी। उसकी पुस्तक 'चीन', जिसमें कि इस सिद्धान्त का वर्णन मिलता है, उसकी अनेक भूगर्भ शास्त्रियों द्वारा आलोचना हुई है। परन्तु फिर भी बहुत से विद्वान उसके मत की सराहना करते हैं।



उत्तरी-पश्चिमी-चीन

इस भूगर्भ शास्त्री का कथन है, कि इस पर्वतीय क्षेत्र में पीली मिट्टी शीत ऋतु में चलने वाली तीव्र पछुआ हवाओं द्वारा मध्य एशिया के रेगिस्तानों से उड़ कर एकत्र हो गई है। अब भी शीत ऋतु में यहां प्रति वर्ष तीव्र हवाओं के चलने के कारण प्रायः धूल के तूफान आया करते हैं। उत्तरी चीन की शीत ऋतु इन्हीं आँधियों व तीव्र ठण्ढी हवाओं के कारण बड़ी कठोर होती है।

लोयेस की मोटाई अधिक गहरी घाटियों में हजारों फीट बतलाई जाती है, परन्तु यदि सम्पूर्ण क्षेत्र को देखा जाय तो यह अधिक से अधिक तीन सौ फीट मोटी है। पर्वत श्रेणियाँ, जो कि काफी ऊंची हैं, उनके ढालों पर लोयस मिट्टी नहीं पाई जाती। श्रेणियों की चोटियाँ किसी किसी स्थान पर समतल लोयेस मिट्टी में ऊपर टीले के समान निकली हुई हैं, दूर से देखने पर यह समुद्र में द्वीपों के समान दृष्टिगोचर होती हैं। निचली श्रेणियाँ तो बिल्कुल ही लोयस मिट्टी के नीचे दब गई हैं। वैसे लोयेस मिट्टी का विस्तार चीन के पीले मैदान से सिंकयाँग तक है, परन्तु वहां पर लोयेस मिट्टी नदियों की डाली हुई ऐल्यूवियल मिट्टी के साथ मिश्रित दशा में पाई जाती है। परन्तु जितनी अच्छी दशा में लोयेस उत्तरी-पश्चिमी क्षेत्र में मिलती है, उतनी कहीं भी नहीं मिलती। डा० क्रेसे ने लोयेस का क्षेत्रफल ११६०६० वर्ग मील बतलाया है। इस पठार के धरातल पर कई ऐसी चौड़ी चौड़ी घाटियां हैं, जो कि ऊंची उठी हुई चट्टानों द्वारा एक दूसरे से पृथक हैं। उत्तरी शेन्शी तथा शान्शी के क्षेत्र में इन घाटियों के मैदान 'हीन' (Hien) के नाम से पुकारे जाते हैं। इनके मध्य में हीन का एक बड़ा नगर 'अदना' किला होता है, जो प्रायः यहां की राजधानी होती है। शेन्शी प्रान्त में कुल मिला कर ७३ तथा शान्शी में ८६ घाटियों के मैदान या हीन पाये जाते हैं। लोयेस में किसी किसी स्थान पर जीव-जन्तुओं की हड्डियाँ भी देखने को मिलती हैं। इससे ऐसा प्रतीत होता है, कि वास्तव में धूल की आँधियों के कारण ही लोयेस के पठार का जन्म हुआ है। लोयेस में हमको कई महीन महीन छेद भी दृष्टिगोचर होते हैं। ये घास के कारण हुये हैं, क्योंकि बराबर इसके ऊपर घास उगती रही और लोयेस से ढक कर नीचे पहुंचती रही, इस प्रकार कई पर्तें लोयेस के नीचे दृष्टिगोचर होती हैं। लोयेस में नमक की मात्रा भी पाई जाती है, इसलिए यह बहुत ही अधिक उपजाऊ मिट्टियों में से है।

लोयेस के पठार को यदि वायुयान द्वारा ऊपर से देखा जाय तो हजारों गहरी गहरी तंग खाइयाँ दृष्टिगोचर होंगी। यह खाइयां मानव स्थापना के हेतु बड़ी महत्वपूर्ण हैं।

अब हमारे सम्मुख एक प्रश्न और भी आता है, वह यह कि आखिर यह लोयेस मध्य एशिया के किस क्षेत्र से आकर एकत्र होती रहती है। कुछ लोगों का

मत है, कि यह ओरडोस के रेगिस्तान से, जो कि महान् दीवार के बाहर स्थित है, आती है। इस स्थान पर हांगहो नदी बराबर बहुत बड़ी मात्रा में झील व अन्य नदियों से प्राप्त की हुई बालू एकत्र करती रहती है। शीत ऋतु में मध्य एशिया से चलने वाली शुष्क व तीव्र हवायें तुरन्त महीन व हल्के रेत को उड़ा कर यहां डाल देती है। भारी भारी बालू के कण वहीं पड़े रह जाते हैं। कुछ लोगों का यह भी विचार है, कि यह रेत मंगोलिया के भाग से उड़ कर आता है। परन्तु लोयेस के घोर अध्ययन से हमें इस सच्चाई का कहीं भी प्रमाण नहीं मिलता।

लोयेस का क्षेत्र वी हो नदी से लेकर फेन हो नदी तक फैला हुआ है। इसमें शान्शी, शेन्शी व कान्सू के अधिक भाग शामिल हैं तथा कुछ भाग चाहार, सुईयान, निंगसिया, होनान तथा होपी के भी शामिल हैं। वास्तविक क्षेत्रफल* २०३००० वर्ग मील जनसंख्या लगभग ४४० लाख है तथा प्रति वर्ग मील घनत्व केवल २११ ही है हाँगहो तथा अन्य नदियों ने यहां अधिक मुलायम लोयेस होने के कारण बहुत गहरी घाटियां बनाई हैं। जो कुछ भी पहियेदार मार्ग यहां बनाये गये हैं, वह बड़ी कठिनाई से बने हैं, क्योंकि धरातल बहुत ही ऊंचा नीचा है। शान्शी व शेन्शी के मध्य के भाग को हांगहो की गहरी घाटी को पहिएदार गाड़ियों द्वारा पार करना असम्भव है। कहीं कहीं तो सड़कें इतनी गहरी खाइयों में होकर बनाई गई हैं, कि दोनों ओर दीवारों में लोग घर बनाकर रहने लगे हैं। यह घर लोयेस की दीवारों में खोद लिये जाते हैं और अधिकतर दो मंजिलें होती हैं। दरवाजे व खिड़कियां लकड़ी की बनी होती हैं। यदि कोई व्यक्ति ऊपर से झांक कर देखना चाहे, तो नहीं दीखेंगे बल्कि नीचे खाई में एक पतली सी सड़क जो कि कई सौ फीट गहरी है, दृष्टिगोचर होती है। कृषकों के खेत ऊपर धरातल पर ही होते हैं, कृषकों को कृषि करने के हेतु कई सौ मील ऊपर आना पड़ता है। ये लोग अपने अपने मकान खाइयों की दीवारों में इसीलिए बनाते हैं, कि ग्रीष्म ऋतु में ठण्डे रहें तथा शीत ऋतु में मध्य एशिया से चलने वाली ठण्डी व तीव्र हवाओं से सुरक्षित रहें। इस क्षेत्र में जो कुछ भी नदियां मिलती हैं, वे मुलायम मिट्टी के कारण काफी गहरी घाटियां बनाती हैं। इसके फलस्वरूप कृषि करने में नहरों द्वारा सिंचाई करने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। क्योंकि लोयेस के नीचे का पर्वतीय भाग एक कमजोर पर्त पर स्थित है, इसलिये यहां अधिकतर भूकम्प आया करते हैं। इन भूकम्पों के कारण कभी कभी बहुत सी लोयेस अचानक गिर जाया करती है। एक बार जब १९२० में भूकम्प के कारण लोयेस मिट्टी खिसकी तो २४६००० मनुष्य दब

* Dr. G. B. Cressey—Asia's Lands and Peoples P. 103.

कर मर गये।

लोयेस के इस भाग की जलवायु चीन के अन्य भागों की अपेक्षा शुष्क है। ग्रीष्म ऋतु में तापक्रम ८५° से भी अधिक हो जाता है। शीत ऋतु में जो हवायें चलती हैं, उनसे लगभग तीन माह तक बराबर बर्फ वर्षा होती है, तापक्रम कहीं कहीं पर हिमांग से भी नीचा गिर जाता है। वर्षा लगभग १५" होती है। ग्रीष्म व शीत ऋतु के तापक्रम का अन्तर बहुत अधिक रहता है। कोहरा केवल चार माह तक पड़ता है। ऐसे क्षेत्रों में दुहरी कृषि की आवश्यकता रहती है।

यहां पर कृषि उद्योग में भी उन्नति हुई है और भांति भांति की उपजें उत्पन्न की जाती हैं। वर्षा कम होने के कारण यहां पर गेहूं, ज्वार बाजरा, काओलिंग, जो व मक्का इत्यादि उत्पन्न की जाती हैं, परन्तु कहीं कहीं पर कपास, तम्बकू व मूंगफली की भी कृषि होती है। कुछ ऐसे स्थान हैं, जहां अति उत्तम ऐप्रीकोट व अफीम भी उत्पन्न की जाती है। जिस वर्ष भी वर्षा नहीं होती, यहां भयंकर अकाल पड़ने लगता है। चीन के इस भाग की जनसंख्या बहुत कम घनी है। जितना कम दबाव जनसंख्या का मिट्टी पर इस क्षेत्र में है, उतना कदाचित् चीन के किसी भी क्षेत्र में नहीं है।

लोयेस के नीचे का पर्वतीय भाग कोयले के लिये बहुत प्रसिद्ध है, कोयले की खानें जितनी इस क्षेत्र में मिलती हैं, उतनी किसी भी क्षेत्र में नहीं मिलतीं। वैज्ञानिकों ने बतलाया है, कि कोयले का रिजर्व कोष यहाँ इतना है कि वर्षों तक निकाला जा सकता है।

वास्तव में यदि देखा जाय तो ऊपर जो कुछ भी कृषि के विषय में वर्णन किया गया है, वह है उत्तरी शेन्शी का, लेकिन कान्सू प्रान्त जो कि और भी अधिक पश्चिम में स्थित है बहुत कम वर्षा प्राप्त करने के कारण शुष्क है। यथार्थ में यह चीनी तुर्किस्तान में प्रवेश करने का मार्ग है। शान्शी प्रान्त उत्तर-पश्चिम उत्तर-पूर्व में फैली हुई पहाड़ियों से घिरा हुआ है, इनकी घाटियों में लोयेस मिट्टी भरी हुई है। ऐसा विचार किया जाता है, कि प्राचीन काल में यहाँ वन थे, परन्तु बाद में काट लिए गए, जिनके फलस्वरूप यहाँ की भूमि की उर्वरा शक्ति मारी गई। घाटियों के कारण वर्षा का अधिक जल पीली मिट्टी को बहा कर चीन के उत्तरी मैदान में एकत्र कर देता है।

चीन के इस क्षेत्र में हमको कई बड़े बड़े नगर भी दृष्टिगोचर होते हैं। परन्तु मुख्य नगर तो केवल वही हैं, जो कि प्रान्तों की राजधानी हैं। उदाहरणार्थ यंगनू जो कि शान्शी की राजधानी है, तथा जिसकी जनसंख्या सन् १९४६ में २५१,५७७ तथा काओलन जो कि कान्सू में है तथा जिसकी जनसंख्या इसी सन्

में १५६,४६८ थी । क्वीसुई, सुइयूआन में, निंगसिया इसी नाम के प्रान्त में तथा इनके अतिरिक्त कालगन तथा तंगवान भी प्रसिद्ध नगर हैं।

इन नगरों के कारण यहाँ के यातायात पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है। यहाँ पर केवल दो ही रेलमार्ग पाये जाते हैं। पहला वह जो कि उत्तर में पाओटो को जाता है तथा दूसरा वह जो ताइयुआन तक गया है। उत्तरी-चिहली में शान्ग्टू इसी का विस्तृत भाग है, इसी पर मंगोलिया की सीमा का प्रसिद्ध नगर कालगन भी स्थित है। कान्सू प्रान्त का प्रसिद्ध नगर लैंचो ह्वाँगहो नदी के दोनों ओर स्थित है। दोनों तटों को ६०० फीट लम्बे नावों पर बनाये हुये एक पुल द्वारा मिला रखा था, इस पुल की ख्याति चीन भर में बहुत अधिक थी, परन्तु सन् १६०६ में इस पुल को एक अमरीकन स्पात के पुल द्वारा बदल दिया गया है। बस यही केवल एक ऐसा पुल है, जो कि इस क्षेत्र में मिलता है, अन्यथा दूसरा तो पेकिंग हैन्को रेलमार्ग पर है।

यहाँ कुछ सड़कें भी पाई जातीं हैं, परन्तु धरातल ठीक न होने के कारण सड़कें बहुत ऊंची-नीची हैं। ऐसा कहा जाता है, कि प्राचीन काल में "रेशम का मार्ग" एक बहुत ही प्रसिद्ध मार्ग था, जो कि चीनी तुर्किस्तान की ओर जाता था। यह सियान से लैंचो तक तो है ही, लेकिन और भी दूर योरोप तक चला जाता है। यह मार्ग ल्यूपन पर्वत की ६,००० फीट ऊंची घाटी को पार करता है।

इस स्थान पर हम चीन की महान् दीवार के विषय में कुछ बतला देना आवश्यक समझते हैं। यह दीवार लगभग १००० मील लम्बी है, और मुख्य चीन की उत्तरी सीमा बनाती है। शान्सी के लोग बड़े परिश्रमी तथा हृष्ट-पुष्ट होते हैं। मैदान में रहने वाले लोग इनके आक्रमणों से हमेशा डरते रहते थे। यही कारण था, कि चीन की यह महान् दीवार बनाई गई। यह शान्सी की उत्तरी सीमा बनाती हुई जाती है। इसकी चौड़ाई इतनी है, कि इसके ऊपर मोटरें बराबर आसानी से दौड़ सकतीं हैं। थोड़ी थोड़ी दूर पर यात्रियों के ठहरने के लिए स्थान भी बने हुए हैं। इस महान् दीवार का अब केवल एक ऐतिहासिक महत्व रह गया है।

चीन का मंचूरिया प्रदेश

मंचूरिया, जिसे दूसरे शब्दों में 'मंचू' निवासियों का देश कह सकते हैं, मुख्य चीन के उत्तर-पूर्व में स्थित है। राजनैतिक दृष्टिकोण से यह मुख्य चीन में ही सम्मिलित है, परन्तु भौगोलिक दृष्टिकोण से इसमें कुछ ऐसी भौतिक विशेषतायें हैं जिनके कारण इसका पृथक रूप से अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। चीन के निवासी इस क्षेत्र को अपनी भाषा में 'तुंग-सैन-शेंग' (Tung-San-

Sheng) के नाम से पुकारते हैं। इस 'चीनी' शब्द का अर्थ है तीन पूर्वी प्रान्त। इनमें ल्याओ-तंग अथवा फेंग-तीन दक्षिण में, किरिन मध्य में हेलंग-क्यांग अथवा ब्लेक ड्रेगन नदी (आमूर नदी) उत्तर में सम्मिलित हैं। मंचूरिया ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक दृष्टिकोण से एक अद्वितीय स्थान रखता है। इसके सम्मुख भी कई ऐसी जटिल समस्यायें हैं जो कि भौगोलिक महत्व की हैं, उन समस्याओं को सुलझाना ही इनकी सद्बुद्धि का प्रमाण है।

मंचूरिया का विस्तार मानचित्र पर ३८° उत्तरी समानान्तर से लेकर ५३° उत्तरी समानान्तर तक ११५° पूर्वी देशान्तर से १३५° पूर्वी देशान्तर तक है। इसका सम्पूर्ण क्षेत्रफल ५०३४२७ वर्गमील है। इसकी प्राकृतिक सीमाओं में उत्तर की ओर आमूर नदी, पूर्व में साइबेरिया, कोरिया तथा पश्चिम में मंगोलिया तथा चीन मुख्य अथवा चीन की महान दीवार हैं। आज से लगभग बीस वर्ष पहले मंचू चौदह भागों में विभाजित थे। पहले इसमें पाँच ही प्रांत शामिल थे। इनमें से सिंगन (Hsingan) जिहोल (Jehol) हीलंग-क्यांग (Heilung-Kiang), किरिन (Kirin), फैंगटीन (Fengtin) इत्यादि मुख्य हैं। अन्य भागों में दक्षिणी मंचूरिया रेलवे का क्षेत्र तथा क्वाटङ्ग का क्षेत्रफल ३४६२ वर्गमील तथा दक्षिणी मंचूरिया रेलवे का क्षेत्र २६० वर्गमील था। मंचूरिया की स्थिति एशिया महाद्वीप के पूर्व में इतनी महत्वपूर्ण है कि इसको अनेक सुविधायें प्राप्त हैं। जिस प्रकार उत्तरी अमेरिका में सेन्टलारेन्स प्रदेश का भौगोलिक वातावरण है, लगभग उसी प्रकार का यहां भी पाया जाता है।

भौतिक रूप (Physical Aspect)

बनावट तथा धरातल (Structure and Relief):—

मंचूरिया बनावट के दृष्टिकोण से एक अति प्राचीन भू-भाग है। इसकी चट्टानें कुछ स्थानों पर कैम्बियन युग के पहले की पाई जाती हैं, परन्तु अधिक भाग में दानेदार चट्टानें, जिसमें कि पैल्योजोयेक चट्टानें मिली हुई हैं, पाई जाती हैं। किसी किसी क्षेत्र में तो नीचे को मुड़े हुए तथा धसे हुए चट्टानों के पर्त मिलते हैं। बनावट के दृष्टिकोण से मंचूरिया को हम तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं। पहला पश्चिमी तथा दक्षिणी पश्चिमी भाग, दूसरा मध्य का भाग, तीसरा पूर्व के पहाड़ी क्षेत्र, पश्चिम में किन्घन पर्वत श्रेणियाँ, पैल्योजोयेक दानेदार चट्टानें तथा ग्रेनाइट पत्थर मिलते हैं। कहीं कहीं पर इनमें कुछ आग्नेय चट्टानें भी पाई जाती हैं। मध्य में मध्यान्तर तक ल्याटङ्ग की खाड़ी का क्षेत्र था, परन्तु अब नदियों की डाली हुई मिट्टी से ढक गया है। उत्तर में कारबोनी-फेरस युग की चट्टानें मिलती हैं। पूर्व में कैम्बियन युग के पहिले की तथा शेष भाग में पैल्योजोयेक व मेसाजोयेक युग की चट्टानें मिश्रित दशा में दृष्टिगोचर होती हैं।

बनावट के आधार पर ही मंचूरिया के धरातल को हम तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं। पश्चिम व दक्षिण-पश्चिम में किन्घन पर्वतश्रेणियाँ एक दीवार की भाँति फैली हुई हैं, और इनकी अधिक से अधिक ऊंचाई ५५०० फीट है। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो किन्घन पर्वत श्रेणियाँ इतनी ऊंची व चौड़ी नहीं हैं कि किसी प्रकार की बाधा डालती हों। अधिक से अधिक इनकी चौड़ाई ढाई मील ही है। मानचित्र पर यदि एक दृष्टि डाली जाय तो मंचूरिया अंगरेज़ी अक्षर Y के समान दृष्टिगोचर होता है। निचला मैदान दक्षिण की ओर ल्यओ की घाटी में तंग हो गया है परन्तु उत्तर की ओर यह चौड़ा है, और ब्यूरिया अथवा छोटी किन्घन श्रेणी के घुमाव के कारण यह कई खण्डों में विभाजित हो गया है। सुंगारी नदी की एक शाखा उत्तर के खण्ड में तथा उसकी सहायक नोनी दक्षिण खण्ड में बहती है। इस प्रकार से आमूर नदी उत्तर की ओर तथा ल्याओ नदी दक्षिण की ओर बहती हैं। इसमें संदेह नहीं कि मध्य का यह भाग बीच में उथला है तथा उत्तर व दक्षिण की ओर ढालू होता गया है। पूर्व तथा दक्षिण-पूर्व में चंग-पाई तथा कैन्टी पर्वत श्रेणियां हैं। चंग-पाई की श्रेणियां दक्षिण में ल्याओ, तंग प्रायद्वीप तक चली आई हैं। एक स्थान पर जहाँ जहाँ चंग-पाई तथा कैन्टी परस्पर पृथक हुई हैं वहां इनको पार करने का ऐसा मार्ग है, जो पूर्वी तट तक पहुंचा देता है। इन श्रेणियों की अधिक से अधिक ऊंचाई ५,००० फीट है। कैन्टी श्रेणी सुंगारी नदी की घाटी द्वारा छोटे किन्घन तथा ब्यूरिया श्रेणियों से पृथक है। आमूर नदी ब्यूरिया तथा छोटे किन्घन की श्रेणियों को अलग करती हैं। सारांश यह है कि उत्तर का भाग बहुत अधिक पर्वतीय है और स्थान स्थान पर घाटियां पाई जाती हैं।

मंचूरिया के भौगोलिक विभाग

(Geographic regions of Manchuria) :—

श्री ई० ई० ऐहनर्ट ने मंचूरिया को भाग निम्नलिखित भौगोलिक विभागों में बांटा है। यह विभाग वैसे तो भौतिक रूप के आधार पर किये गये हैं, परन्तु इनके साथ साथ प्रत्येक में मानव रूप भी दृष्टिगोचर होता है।

(१) ल्याओतंग प्रायद्वीप :—भौतिक दृष्टिकोण से पूर्वी पर्वत श्रेणियों का ही एक भाग है, और बनावट के दृष्टिकोण से शान्टुंग से मिलता जुलता है, क्योंकि यहाँ भी हमको केम्ब्रियन युग के पहले की चट्टानें मिलती हैं। फुशान कोयले की खानें मुकडेन से [illegible] मील दूर पूर्व की ओर पाई जाती हैं, यह संसार की सबसे मोटी पर्त वाली बिटुमिनस कोयले की खानों का क्षेत्र है और इसका उत्पादन आज कल बहुत अधिक है।

(२) पूर्वी पर्वतीय प्रदेश :—यह क्षेत्र बहुत पथरीला तथा कटा फटा है,

अधिकतर पर्वत श्रेणियाँ वनों से ढकी हुई हैं। इनमें अधिकतर कोणधारी वृक्ष मिलते हैं। यह वन अपनी वास्तविक दशा में ही पाये जाते हैं। परन्तु जिन भागों में रेलमार्ग तथा सड़कें पाई जाती हैं, वहाँ कुछ वन काट लिये गये हैं।

(३) मध्य का उपजाऊ भाग :—इस भू भाग में दो नदियों की डाली हुई उपजाऊ मिट्टी पाई जाती है, उत्तर में सुंगारी नदी तथा दक्षिण में ल्याओ नदी की घाटियाँ स्थित हैं। यह मध्य में उथला है, जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है। ऐसा भी कहा जाता है कि यह भाग बहुत अधिक कटाव के कारण इस रूप में परिवर्तित हुआ है। उत्तरी चीन के मैदान से यह इसी कारण भिन्न है। यह उतना उपजाऊ भी नहीं है, जितना कि वह है। इसका धरातल कुछ ऊंचा नीचा है।

(४) जिहोल का पर्वतीय प्रदेश :—मुख्य चीन में इस क्षेत्र का वर्णन किया गया है। यह एक पर्वतीय भाग है, जो कि महान् दीवार के दक्षिण-पश्चिम में विस्तृत है। यह दक्षिण-पूर्व की ओर नीचा होता चला गया है।

(५) किन्घन-पर्वतीय प्रदेश :—यह प्रदेश उत्तर से दक्षिण तक फैला हुआ है। श्रेणियाँ कई स्थानों पर कटाव के कारण नीची हो गई हैं। यह वनस्पति से ढकी हुई हैं, वृक्ष अधिकतर कोणधारी, मुलायम लकड़ी के मिलते हैं। यह पर्वत यातायात में कोई विशेष बाधा नहीं डालतें। गाँव तराई के भागों में वितरित दशा में पाये जाते हैं।

(६) मंगोलियन स्टेप प्रदेश :—यह भाग किन्घन प्रदेश के पश्चिम में मंचूरिया की सीमा पर स्थित है। थोड़ी सी वर्षा हो जाने के कारण इसमें छोटी छोटी घास उग आया करती है। इसलिये यहाँ पर अधिकतर बंजारे लोग रहते हैं। धरातल कहीं पर ऊंचा तथा कहीं पर नीचा पाया जाता है।

(७) उत्तर में तंग आमूर नदी की घाटी :—इस भाग में आमूर-जिया का मैदान सम्मिलित है। यह एक उपजाऊ क्षेत्र है, क्योंकि नदी की डाली हुई मिट्टी से बना है। इसके दोनों ओर कठोर चट्टानों के पर्वत होने के कारण घाटी तंग बन पाई है। कृषि के हेतु इस क्षेत्र का महत्व बहुत अधिक है।

जलवायु (Climate) :—

बहुत से विद्वानों ने मंचूरिया की जलवायु सेंटलारेंशियन प्रकार की बतलाई हैं, परन्तु वास्तव में यह कथन उचित नहीं है। यहाँ पर मानसून जलवायु की विशेषता शुद्ध रूप से पाई जाती है। वर्षा का होना, तापक्रम का पाया जाना तथा चक्रवातों का सीमित दशा में आना इत्यादि विशेषतायें अच्छे रूप से यह प्रकट करती हैं, कि यहाँ पर मानसून के प्रकार की जलवायु है।

शीत ऋतु, यहां एक अद्वितीय मानसून ऋतु होती है। इस ऋतु में वर्षा नहीं होती, क्योंकि जो हवायें पश्चिम से चलती हैं, वह थल भागों से आती हैं। इसलिये प्राय: शुष्क होती है। तापक्रम मुकडेन में २०° फ० या कभी-कभी ३०फ० हो जाता है। उत्तर में आमूर नदी की घाटी, सुंगारी का निचला बेसिन तथा पर्वतीय क्षेत्र हैं। यहां कभी कभी बर्फ वर्षा भी हो जाती है। बसन्त ऋतु यकायक आरम्भ हो जाती है और वह भी बहुत छोटी होती है। जब कभी भी मंगोलियन स्टेप्स प्रदेश गर्म होने लगता है, तब यकायक धूल के तूफान चलने आरम्भ हो जाते हैं। फसलों का बोना मई तक बन्द कर दिया जाता है, जब कभी भी उत्तर के भाग काफी गर्म हो जाते हैं, जब कुछ नम हवायें चंग-पाई व केन्टी पर्वत श्रेणियों के गेप से होकर प्रवेश कर आती हैं। इनसे थोड़ी सी बूंदा बांदी हो जाती है।

ग्रीष्म ऋतु यहां बड़ी सुहावनी होती है। किसी भी क्षेत्र में तापक्रम ८० फ० से ऊंचा नहीं होता। हार्बिन जिसका जनवरी तापक्रम ज़ीरो डिग्री से भी कम रहता है, इस ऋतु में ७५°फ० (जुलाई) रेकार्ड करता हैं। इसी प्रकार डाइरन जो कि दक्षिण में पीले सागर के तट पर स्थित है जनवरी में २३° फ० तथा जुलाई या अगस्त में ७६° फ० तापक्रम रेकार्ड करता है।

वर्षा ऋतु जून के अन्त से आरम्भ होती है और जुलाई अगस्त तक बराबर होती रहती है। दक्षिण में औसत ११ व १२ इञ्च के लगभग वर्षा हो जाती है, यद्यपि उत्तर का क्षेत्र इतनी नहीं प्राप्त कर पाता। उत्तर-पूर्व का भाग तापक्रम व वर्षा के दृष्टिकोण से इस ऋतु में एक भाग्यशाली भाग है। चंग-पाई श्रेणियों तक पहुंचते पहुंचते मानसून क्षीण पड़ जाते हैं, और वर्षा बहुत कम हो पाती है। सुंगारी के मैदान में सितम्बर की वर्षा अगस्त की अपेक्षा ४० प्रतिशत कम तथा जुलाई की अपेक्षा ६० प्रतिशत कम होती है। वार्षिक वर्षा का औसत मंचूरिया में बहुत कम है* मुकडेन में २६.५ इञ्च, हार्बिन में १९.७ इञ्च तथा तिसिहार में १०.२ इंच कुल वर्षा होती है। मंचूरिया की जलवायु मानव स्वास्थ्य के लिए बड़ी लाभदायक है साथ ही कृषि के हेतु भी यह अद्वितीय है, क्योंकि गेहूं उगाने के लिये १५० दिन की ऋतु होती है। उत्तर-पश्चिमी शुष्क भाग को छोड़ कर शेष भाग कृषि के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

मिट्टी (Soil):—

मन्चूरिया में कई प्रकार की मिट्टियां मिलती हैं। इनमें से कुछ तो ऐसी हैं,

* L. Dudley Stamp, Asia A Regional & Economic Geography Page 548.

जो कि 'इनसितु' (in-situ) हैं, अर्थात् स्थानीय चट्टानों के टूटने व घिसने से बनी हैं, तथा कुछ ऐसी हैं जो कि अन्य भागों से नदियों द्वारा आकर एकत्रित हो गई हैं। मंचूरिया में 'चैरनोजेम' नाम की काली मिट्टी नहीं मिलती, क्योंकि जीवदार पदार्थों की कमी के कारण मिट्टी में ह्यूमस (humus) नहीं मिल पाता। यहां की मिट्टियों में नमक, सोडा व चूने की मात्रा पाई जाती है। यहां की एक विशेषता यह है, कि वर्षा के उपरान्त मिट्टी कुछ भारी हो जाती है तथा कुछ कणदार प्रतीत होने लगती है। पश्चिम में जहाँ रेतीली मिट्टी की अधिकता है, वहाँ यह विशेषता दृष्टिगोचर नहीं होती, क्यों कि वर्षा उपयुक्त मात्रा में नही हो पाती। मंचूरिया में बहुत से ऐसे बन्जर क्षेत्र भी हैं, जहाँ 'ऐल्केलाइन' अथवा खारी मिट्टी मिलती हैं। ऐसी मिट्टी वाले क्षेत्र आर्थिक दृष्टिकोण से अधिक महत्ता नहीं रखते। कुछ भाग ऐसे भी हैं, जहां सिंचाई के उपयुक्त साधन न होने के कारण कृषि नहीं की जाती हैं यद्यपि मिट्टी काफी उपजाऊ है। नदियों की डाली हुई मिट्टी ऊपरी व मध्य के भाग में बलुई व रेतीली दोमट के रूप में हैं तथा डेल्टे के निकट चिकनी दोमट के रूप में पाई जाती है। मैदानों के बाहर की मिट्टी स्थानीय चट्टानों से बनी है, इसलिये कई रंग की पाई जाती है। साधारणतः यह पीले या भूरे रंग की है, लेकिन कहीं कहीं पर लाल स्लेटी व बादामी रंग की मिट्टी भी मिश्रित दशा में दृष्टिगोचर होती है। ऐसी मिट्टियां अधिकतर पर्वतीय व पठारी भाग में अधिक मिलती है।

मानव रूप (Human Aspect)

ऐतिहासिक आधार (Historical background)

अति प्राचीनकाल में मंचू जाति के लोग बंजारे थे, और तंगस जाति के लोगों से मिलते जुलते थे। लड़ने-झगड़ने में यह आरम्भ से ही कुशल रहे हैं। इन्हीं के भय से चीन की महान् दीवार ईसा से २४४ वर्ष पूर्व चाओ-सिंग (Chao-Hsing) ने बनवाई थी। इस दीवार की लम्बाई दो हजार मील है और पूर्वी तुर्किस्तान से होती हुई उत्तरी चिहली (Chihli) को पार करती हुई शानहैदवान जो समुद्र तट के निकट है तक आती है। यह मिंग वंश में बन कर तैयार हुई थी। मंचू लोग उस समय बहुत सी कलायें जानते थे, जैसे कृषि करना, युद्ध लड़ना तथा कुछ औद्योगिक इत्यादि। सत्रहवीं शताब्दी में इन लोगों ने चीन पर आक्रमण कर दिया। उस समय चीन की दशा आन्तरिक अशान्ति के कारण बड़ी शोचनीय थी। चीन पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् इसने अपना आतन्क पूर्ण रूप से जमा लिया। चीन में कई प्रकार के सुधार किये गये। कला-केन्द्र तथा पाठशालायें खोली गईं। मंचू वंश १६४४ से स्थापित हुआ था, थोड़े

ही समय में इनका प्रभाव चीन के प्रत्येक कोने में पहुँच गया । ये लोग चीनियों से घुलमिल गये और कुछ उनसे सीखा तथा कुछ उन्हें सिखलाया । इस प्रकार से मंचू जिनको मछली पकड़ने व शिकार खेलने की आदतें थीं, वे सुधर गये । बाद में कुछ जनसंख्या में परिवर्तन भी हुए । चीनी लोग मंचूरिया में भी जा बसे और मन्चू स्त्रियों से विवाह करके वहीं रहने लगे । मंचूरिया के उत्तर में अब भी असली मन्चू मिलते मिलते हैं । उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में यहाँ की जनसंख्या १ करोड़ ४५ लाख थी, इनमें ६० प्रतिशत चीनी थे । मंचूरिया १९०७ के उपरान्त चीन का ही एक भाग समझा जाने लगा । यह एक चीनी गवर्नर की अध्यक्षता में तीन पूर्वी प्रान्तों के नाम से प्रसिद्ध था । बाद में यह एक गणराज्य (Republic State) हो गया ।

संसार के कई राष्ट्र मंचूरिया की ओर आकर्षित हुये । रूस ने साइबेरिया जीत लिया था, और समूर के व्यापार के आकर्षण से मंचूरिया के निवासी बहुत प्रभावित हुए रूस की सेना ने १८५२ में आमूर की घाटी पर आतङ्क जमा लिया । केवल पाँच वर्ष बाद कोजेक (Kozek) कृषक यहाँ स्थापित हो गये । रूस ने पूर्वी मन्चूरिया तक अपना प्रभाव फैला दिया और ट्रांस साइबेरियन रेलवे का विस्तार ब्लाडीवोस्टक तक कर दिया । जापानी लोगों के दांत कई वर्षों से मन्चूरिया पर थे, क्योंकि अपने यहाँ के खाद्य पदार्थों के साधन, बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण बहुत सीमित होते जा रहे थे । अतः जापान ने १९९४-९५ के चीन जापान युद्ध के उपरान्त तुरन्त ल्याओतंग प्रायद्वीप पर आतङ्क जमाने की घोषणा की, क्योंकि वह इस पर अपना अधिकार समझते थे । परन्तु रूस ने फ्रांस व जर्मनी की सहायता से उसे बचा लिया । तीन वर्ष बाद रूस का प्रभाव क्वाटंग तक पहुँच गया और पोर्ट आर्थर को अपनी जलसेना का केन्द्र बनाकर उसका नाम डाइरेन (Diaren) रख दिया । इसके अन्तर्गत (१९०४-५) रूस व जापान में युद्ध छिड़ गया । जापानियों ने रूस को परास्त कर दिया और दक्षिणी मन्चूरिया में रेलवे बनाना आरम्भ कर दिया । एक कम्पनी भी स्थापित कर दी, जिसका नाम दक्षिणी मन्चूरियन रेलवे कम्पनी (South Manchurian Railway Co.) रखा । इसके पूर्व रूसियों ने भी जापान के साथ युद्ध के समय पूर्वी मन्चूरिया में रेलवे बना दी थी । यह ब्लाडीवोस्टक तक जाती थी, परन्तु एक ब्रांच लाइन दक्षिण में पोर्ट आर्थर तक बढ़ा दी गई । यह इसलिये बढ़ा दी गई थी, कि ब्लाडीवोस्टक शीतऋतु में बर्फ से ढक जाया करता था । जापानियों की चीन से 'इक्कीस मांगें' (१९१५) में प्रकाशित हुईं, जो कि ऐतिहासिक दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण थीं, उनके अन्तर्गत जापानियों ने मंचूरिया तथा आन्तरिक मंगोलिया पर पूर्ण आतंक स्थापित कर लिया ।

जिस समय १६२२ में चीन में 'सिविल वार' (Civil war) शुरू हो गई थी, उस समय भी जापानियों ने यहां अपना अधिकार जमा रखा था। चीन की राष्ट्रीय सरकार ने जब अपनी राजधानी नानकिंग बनाई तब उसने मंचूरिया पर पूर्ण अधिकार प्रकट किया। लेकिन जापानी पहले ही मुकडेन पर अपना अधिपत्य सितम्बर १६३१ में जमा चुके थे। जब इस तरह की राजनैतिक स्थिति हो गई तब फरवरी १६२३ में तीन पूर्वी प्रान्तों जैसे फान्सतीन, किरिन तथा हीलंग-क्यांग (ज्होल सहित) मिलकर जापानियों की सहायता से स्वतन्त्र हो गये। उन्होंने मंचूको नाम से एक नवीन राज्य की घोषणा की, इसकी राजधानी सिंग-किंग (Hsing King) अथवा चंगचुन हुई। सन् १६३२ में लीग आफ नेशन (League of Nations) ने एक कमीशन लार्ड लिटन की अध्यक्षता में भेजा। लिटन की रिपोर्ट के अन्तर्गत चीन को अधिकार प्राप्त हुए। जापान ने मंचूको राज्य बनाने के छै माह पश्चात् इसे स्वीकार किया। रूस के साथ एक समझौता हुआ, परन्तु जर्मनी इटली, रूस व सालवेदर ने १६३८ में मंचूको राज्य को स्वीकार किया। न केवल इतना ही बल्कि जापान ने एक वंशीय राज्य भी इस राज्य के लिये १ मार्च १६३८ में नियुक्त कर दिया। इसके पहले १६३३-३४ में मंचूको की सीमायें पश्चिम में मंगोलिया तक बढ़ा दी गईं। वास्तव में यदि देखा जाये तो इस पर जापानियों का ही प्रभाव था। सन् १६३५ तक जापान ने चीन की पूर्वी रेलवे का क्रय समाप्त कर दिया और रूस के प्रभाव को दूर कर दिया। अब चीन की गणतंत्र सरकार (People's Government) के अन्तर्गत मंचूको इत्यादि सभी भाग संगठित हो गये हैं, आजकल मंचूरिया चीन का ही एक भाग माना जाता है।

जनसंख्या का वितरण (Population Distribution) :—

मंचूरिया की जनसंख्या के विषय में अभी तक कोई विश्वसनीय आँकड़े प्राप्त नहीं हो सके। परन्तु १६०५ में इसकी जनसंख्या १ करोड़ ३० लाख थी, इसमें से ल्याओतंग में ५५ लाख, किरन में ६० लाख तथा हलिंगक्यांग में १५ लाख थी। सन् १६६४ की जनगणना के अन्तर्गत लीज्ड भू-भाग तथा रेलवे क्षेत्र को छोड़कर। मंचूरिया की जनसंख्या ३०,८८०,००० थी। इसका औसत प्रत्येक गृहस्थी में छै व्यक्ति का पड़ता था। इसमें से लगभग ३०१ लाख चीनी, ६ लाख जापानी तथा ६८००० अन्य राष्ट्रों के लोग थे। जनसंख्या के अलावा क्वाटंग तथा रेलवे क्षेत्र की जनसंख्या १४ लाख थी, इसमें से लगभग ३ लाख जापानी तथा २ हजार अन्य राष्ट्रों के लोग शामिल थे। चीनी लोगों में ही ६८००० कोरियन भी सम्मिलित थे।

कई वर्ष हुए जापानियों ने मंचूरिया में दस वर्ष में १०,०००० व्यक्ति प्रति वर्ष भेजने का वादा किया था, कुछ जापानी आकर बसे भी, परन्तु, उतनी शीघ्रता से यह कार्य नहीं हुआ जितना कि मुख्य चीनी लोगों का हुआ। इसका एक कारण था, वह यह कि अधिक ठण्डे क्षेत्र होने के कारण जापानियों ने वहां बसना पसन्द नहीं किया। यही कारण था कि चीनी यहां एक ऐसे क्षेत्र में आकर बसे जो कि मुख्य चीन का चौथाई था, इस स्थान पर जनसंख्या का घनत्व बहुत अधिक पाया जाता है।

मंचूरिया एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ पर ८५ प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण है। लोग अधिकतर कृषि करते हैं, नगरों में रहने वाले लोगों की जनसंख्या बहुत कम है। जितने भी नगर यहाँ पाये जाते हैं, वे वास्तव में वैदेशिक प्रभाव के कारण अधिक उन्नति कर सके हैं। मुख्य नगरों में चंगचुन, जिसकी जनसंख्या १९४६ में ६०५२६७ थी, मंचूको की राजधानी सिंगकिंग (Hsing King) के नाम से रह चुका है। (Hsing King was formerly known as Chang Chun) ऊपर दिये हुये आँकड़ों में जापानी लोगों की जनसंख्या लगभग १ लाख थी। दूसरा नगर, मुकडेन, जिसकी जनसंख्या १९४८ में १०२१०५७ थी, यह १९३६ के आंकड़ों की दुगुनी है। तीसरा नगर हार्बिन है। इसकी जनसंख्या १९४८ में ७६०००० थी, इसमें अधिकतर रूसी लोग सम्मिलित हैं। चौथा नगर डाइरन यह एक बन्दरगाह भी है, पहले पोर्टआर्थर के नाम से प्रसिद्ध था, इसकी आबादी १९४८ में ५४,३६,९० थी। इन नगरों के अतिरिक्त अन्शेन में (१९४६) में ३१५२४२ किरिन में (१९४६) में २३९,३२५, फुशन (१९४०) में २६९,९१९ तथा आन्टान में २१३८६५ थी। इन नगरों में कुछ तो ऐसे हैं जिन पर रूसी लोगों का गहरा प्रभाव पड़ा है। हार्बिन नगर बिल्कुल एक योरोपियन ढंग का है। जो कि कई वर्षों तक मंचूरिया का एक वैभवशाली नगर रहा है। डाइरन एक दूसरा प्रसिद्ध नगर व बन्दरगाह है, यह भी योरोपियन ढंग का ही नगर है, मुकडेन मंचूरिया का एक तीसरा प्रसिद्ध नगर है। यह अति प्राचीन काल से एक व्यापारिक केन्द्र रहा है, अब भी यातायात का केन्द्र है।

जनसंख्या वृद्धि यहाँ बराबर कई वर्षों से हो रही है। गत पचास वर्षों में यहाँ की जनसंख्या लगभग १ करोड़ ८० लाख बढ़ गई। न केवल इतना ही बल्कि विदेशी लोग भी यहां आकर बसने लगे हैं। इस शताब्दी के आरम्भ में केवल पचीस वर्ष में ही १० लाख मनुष्य यहाँ बस गये। आने वाले लोगों में अधिक मात्रा चीनियों की थी और जो लोग शानटुंग प्रायद्वीप में रहते थे, वह सबसे अधिक आये। चीनियों के अतिरिक्त जापानी, रूसी व मंगोलियन लोग भी थे। चीनी लोगों में

कुछ तो ऐसे थे, जो कि थोड़े समय के लिए आते थे, और फिर वापिस चले जाते थे। सन् १६२४ से लेकर १६३० तक इतने अधिक चीनी आ बसे कि उनकी कुलसंख्या ६ लाख के लगभग थी।

बाहर के लोगों का आकर बसना बहुत कम होगया है। इसलिए जापानियों का बसना सफल नहीं हो सका, क्योंकि उनकी जो योजना थी, वह किसी प्रकार भी जलवायु के कारण सफल नहीं हो सकी। जो कुछ भी आकर बसे हैं, वह रेलवे क्षेत्र में ही बसे हैं। बसने वाले लोगों में मनुष्यों की संख्या सबसे अधिक बताई जाती है। क्योंकि वही आसानी से आ सकते हैं। चीनी लोग रेल से स्टीमर से या पैदल यात्रा करते हैं।

मंचूरिया से ही लगा हुआ देश 'कोरिया' है यह भी एक अत्यन्त घना बसा हुआ देश है। यहाँ से भी लोग शोचनीय स्थिति होने के कारण मंचूरिया में बसे हैं लेकिन एक दृष्टि से देखा जाय तो, यहाँ के निवासी भी जापानी हैं और जो कुछ भी वास्तविक कोरिया के लोग हैं, वह प्राचीन काल में मंचूरिया में ही रहते थे। मंचूरिया में जितने भी कोरिया के लोग जा बसे हैं, अधिकतर वे धान की खेती करते हैं।

आर्थिक रूप (Economic Aspect)

प्राकृतिक वनस्पति (Natural vegetation) :—

मंचूरिया के समतल भागों में घास के मैदान पाये जाते हैं, यही कारण है कि यहाँ की मिट्टी बहुत उपजाऊ है। घनी वनस्पति केवल पर्वतीय क्षेत्रों तक ही सीमित है। वर्षा कम होने के कारण यहाँ बहुत घने वन दृष्टिगोचर नहीं होते। पूर्वी पर्वतों पर तो कुछ ऐसे क्षेत्र हैं, जहाँ अधिक वर्षा होने के कारण वनस्पति कुछ घनी मिलती है। मंचूरिया में अधिकतर नुकीली पत्ती वाले वृक्ष मिलते हैं, इनमें पाइन, स्प्रूस, लार्च, फर, सीडर, हेमलाक इत्यादि मुख्य हैं। इन वृक्षों में से अधिक की पत्तियाँ सुई की तरह नुकीली होती हैं। इनका ऊपरी पर्त मोटा तथा चिकना होता है, ताकि बर्फ तथा शीत से सुरक्षित रह सकें और वाष्पीकरण की गति कम हो जाए। इन वनों से कई प्रकार की महत्वपूर्ण लकड़ी प्राप्त होती हैं। मुलायम लकड़ी का आर्थिक महत्व कई उद्योग-धन्धों के कारण बहुत अधिक है। यहाँ का सबसे प्रसिद्ध वृक्ष मंचूरियन पाइन है, यह पूर्वी तथा उत्तरी पर्वतों पर घने वनों में बहुत अधिक पाया जाता है। इसकी ऊँचाई २०० फीट तथा तने की मोटाई पाँच फीट होती है। पाइन के बाद जो महत्वपूर्ण वृक्ष हैं, वह लार्च है, यह भी बहुत अधिक पाया जाता है।

यहाँ के घास के मैदानों में कोमल हरी तथा छोटी छोटी घास उगती है।

इन घास के मैदानों को साफ करके अब यहाँ कृषि की जाती हैं। पर्वतीय ढालों पर गुच्छेदार घास के क्षेत्र हैं, यह स्टेप्स कहलाते हैं, इनका महत्त्व केवल पशु चराने के हेतु ही है।

कृषि (Agriculture) :—

कृषि यहां का एक मुख्य उद्योग है। लोग प्राचीनकाल से यहां कृषि करते आये हैं। वास्तव में मंचूरिया की जनसंख्या वृद्धि कृषि के ही कारण हुई है, लोग उपजाऊ भूमि के ही कारण अधिक आकर्षित हुये हैं। कृषि की उन्नति यहां पर नदियों की उपजाऊ घाटियों में अधिक हुई है, सुंगारी, आमूर तथा ल्याओ-हो नदियों ने अपनी घाटियों में बड़ी उपजाऊ मिट्टी डाली है। परन्तु वास्तविक उन्नति १५० मील चौड़ी मध्य की पेटी तक सीमित है। यह पेटी ल्याओ-हो के डेल्टे से लेकर उत्तर-पूर्व में दूर तक फैली हुई है। उपजाऊ क्षेत्रों में फैंग्टीन, हीलंगक्यांग तथा किरिन है। उत्तरी मंचूरिया का भाग 'लैंड आफ प्रोमिस* (Land of promise) के नाम से प्रसिद्ध हैं। अच्छी उपजाऊ भूमि के लालच से यहाँ लाखों और करोड़ों व्यक्ति आकर बस गये हैं, सन् १९५० में इन तीनों भागों की जनसंख्या ६ करोड़ से भी ऊपर थी। कृषि क्षेत्र की जनसंख्या का अनुमान यहाँ ४ करोड़ से अधिक ही है।

यहां की मुख्य फसलें उत्तरी चीन की फसलों से मिलती जुलती हैं। खेत यहां पर उतने ही बड़े हैं, जितने कि उत्तरी चीन में हैं। प्रति व्यक्ति उपज भी यहां अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक है। रहन-सहन का स्तर भी यहाँ ऊंचा है। उत्तरी मंचूरिया में सोयाबीन व गेहूं मुख्य उपजें हैं। दक्षिण में विभिन्न प्रकार की वस्तुएं उत्पन्न की जाती हैं। उदाहरणार्थ—काओलिंग, ज्वार, बाजरा, सोयाबीन, कोर्न तथा गेहूं।

सोयाबीन :—यह मंचूरिया की प्रमुख उपज है, इसकी विशेषता यह है कि यह यहां की परिस्थितियों में बहुत जल्द उग आती है। यही कारण है कि इसकी कृषि यहां बहुत अधिक की जाती है। सन् १९२९ में यहां विश्व की ६० प्रतिशत सोयाबीन उत्पन्न हुई। इसका महत्व आधुनिक युग में बहुत अधिक है।

L. Dudley stamp-Asia, A Regional and Economic Geography Page 549

Soya beans ...	... 28	Maize ...	... 9
Other beans ...	... 2	Wheat ...	... 7
Kaoling ...	... 23	Rice ...	... 2
Millet ...	... 18	Others ...	... 11

यह न केवल असंख्य चीनियों का मुख्य भोजन है, बल्कि पशुओं की खली व खाद बनाने का साधन भी है। अब तो अमरीका व योरोप के देश भी इसका महत्व समझने लगे हैं और प्रति वर्ष बहुत सा तेल व बीन यहाँ से आयात करते हैं। बीन का प्रयोग हरी तरकारी के रूप में भी किया जा सकता है। यह डिब्बे में भी बन्द की जा सकती है। सूखी तथा रसदार बीन दूध व पनीर में चटनी के तौर पर, नाश्ते के साथ तथा अन्य कई प्रकार से प्रयोग की जा सकती है। इसके तेल से मक्खन, घी तथा अन्य 'फैट' (चर्बी) पदार्थ तैयार किये जा सकते हैं। प्रथम महायुद्ध के समय संयुक्त राज्य-अमरीका ने बहुत बड़ी मात्रा में बीन-तेल आयात किया। सोयाबीन विभिन्न उद्योग-धन्धों में प्रयोग किया जाता है। साबुन, रंग, छापने की स्याही, वार्निश बारूद और दवाइयों इत्यादि में इसका प्रयोग बहुत अधिक होता है जितना भी बीन व बीन का तेल यहां से निर्यात किया जाता है, वह डाइरन के बन्दरगाह से किया जाता है। इसकी कृषि को बहुत कुछ प्रोत्साहन दक्षिणी मंचूरियन रेलवे से भी मिला है।

(४) गेहूँ :—जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है, कि गेहूं की कृषि अधिकतर मंचूरिया के उत्तर में होती है। आजकल यह उपज तीसरा या चौथा स्थान प्राप्त करती है। गेहूं की कृषि बहुत ही आधुनिक ढंग से की जाती है और सहकारिताओं की सहायता से उत्तम से उत्तम बीज व मशीनों का प्रयोग यहाँ के कृषक कृषि में करते हैं। गेहूं के साथ ही कहीं कहीं पर ज्वार-बाजरा भी उगाया जाता है। दक्षिण की ओर कृषि अमरीकन ढंग तथा उत्तर की ओर रूसी ढंग से की जाती है गेहूं की उपज बढ़ाने की यहां बराबर चेष्टा की जा रही है।

(५) काओलिंग:—यह यहां की जनसंख्या व जीव-जन्तुओं का मुख्य भोजन है। कदाचित् सोयाबीन की उपज के पहले इसकी महत्ता अधिक रही होगी। लेकिन अब इसका महत्व उतना नहीं है जितना कि सोयाबीन का। कृषि क्षेत्र भी सोयाबीन का बहुत बढ़ गया है। उत्तरी मंचूरिया में इसकी कृषि कम होती है, क्योंकि कोहरा अधिक पड़ता है। काओलिंग से यहाँ एक विशेष प्रकार की रंगीन शराब भी बनाई जाती है। इसके पौधे का प्रयोग ईंधन के रूप में, छतों तथा चटाइयों इत्यादि के बनाने में भी किया जाता है।

चावल :—धान की कृषि यहाँ बहुत कम होती है, क्योंकि जितने भी चीनी लोग यहाँ आकर बसे हैं, वे सब गेहूं खाने वाले हैं, क्योंकि ये उत्तरी चीन के रहने वाले हैं। चावल केवल उन्हीं क्षेत्रों में उत्पन्न किया जाता है, जहाँ जापानी लोग आकर बसे हैं। आधे से अधिक क्षेत्रों में पर्वतीय धान उत्पन्न किया जाता है। कोरिया के निवासी भी अधिकतर धान की कृषि करते हैं।

अन्य फसलें :—

अन्य वस्तुओं में यहाँ ज्वार-बाजरा, जौ, अफीम, कपास, चुकन्दर व बकव्हीट इत्यादि हैं। ज्वार-बाजरे का स्थान काओलिंग के बाद ही है। यह अधिकतर उत्तरी भाग में उत्पन्न किया जाता है। इसका प्रयोग जीव जन्तुओं को खिलाने में अधिक होता है। जौ की कृषि रूस-जापानी युद्ध के समय से ही आरम्भ हुई है। क्योंकि यह अधिकतर घोड़ों को खिलाने के कार्य में ही आता है। अफीम की कृषि यहाँ अति प्राचीन काल से हो रही है। यह सरकार की अध्यक्षता में की जाती है। इसकी मात्रा, क्षेत्र तथा उपज बहुत सीमित है। इसके क्षेत्र ज्होल तथा उत्तर पूर्वी किरिन में विशेष तौर पर पाये जाते हैं। आधुनिक समय में यह लगभग १,५०,००० एकड़ भूमि में उत्पन्न की जाती है। कपास उत्पन्न करने के लिये यहाँ का वातावरण अनुकूल नहीं है। इसीलिये यह सफलता पूर्वक उत्पन्न नहीं की जाती। जितनी भी कपास यहाँ पर उत्पन्न की जाती है, वह उत्तम श्रेणी की नहीं है। अच्छी कपास बोये जाने के यहाँ बराबर प्रयत्न किये जा रहे हैं। मंचूरिया के कृषक रेशम के कीड़े भी पालते हैं। यह उनका घरेलू धन्धा है। यहां अधिकतर जंगली रेशम प्राप्त की जाती है। इसका क्षेत्र क्वाटंग तक ही सीमित है। इन उपजों के अलावा, विभिन्न प्रकार की तरकारियां, फल इत्यादि भी उगाये जाते हैं।

वर्तमान मंचूरिया में बहुत ही आधुनिक कृषि करने के साधनों को अपनाया जा रहा है। अब चीन की सरकार ने कृषकों की दशा सुधारने के हेतु सहकारितायें ग्रामीण क्षेत्रों में खोल दी हैं। इनसे कृषकों को कई लाभ होते हैं। जो निर्धन कृषक हैं, उन्हें आर्थिक सहायता भी प्रदान की जाती है। मंचूरिया में अब कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहां कृषि नहीं होती। यह अधिकतर उत्तर में हैं, क्योंकि ठंढ पड़ने के कारण उपजों के लिये ऋतु छोटी होती है। पश्चिम की शुष्क जलवायु के कारण वीरान हैं। एक क्षेत्र उत्तर पूर्व की ओर सुन्गारी व उसूरी नदी की निचली घाटी में भी है। क्योंकि यहां पर दलदली भूमि मिलती है, इसलिये कुछ भी उत्पन्न नहीं हो सकता।

जीवजन्तु (Animals) :—

मंचूरिया में स्टैपलैंड कई भागों में पाये जाते हैं। जिन स्थानों पर कम वर्षा होती है, वहाँ छोटी छोटी घास उग आती है, और सुन्दर चरागाह बन जाते हैं। आरम्भ में मंचू लोगों का धन्धा भेड़ बकरियों को चराने का था, लेकिन बाद में कुछ परिवर्तन हुये हैं। अब भी मंचूरिया में अनेक स्थानों पर जीव-जन्तु पाले जाते हैं। मुख्य पशुओं में सुअर, गाय, बैल, घोड़े, गदहे, भेड़, खच्चर, इत्यादि बहुत

पाये जाते हैं। चीनी लोग इनको कृषि करने के हेतु रखते हैं। बहुत सी गाय भैंसे दूध, घी, मक्खन आदि के लिये भी पाली जातीं हैं। दुग्ध शालायें कई बड़े बड़े नगरों में पाई जातीं हैं। घोड़े यहाँ के विशेषत: प्रसिद्ध हैं। अधिकतर मंगोलियन ब्रीड के घोड़े यहां पाले जाते हैं। यह घोड़े यद्यपि छोटे हैं, परन्तु बड़े शक्तिशाली होते हैं। चरागाहों पर यहाँ के निवासी अपने जीव-जन्तुओं की देख रेख इन घोड़ों पर चढ़ कर करते हैं।

खनिज सम्पत्ति (Mineral Wealth) :—

मंचूरिया की खनिज सम्पत्ति वास्तव में स्थानीय ढांचे पर निर्भर है। जिन स्थानों पर कारबोनिफेरस तथा अन्य विभिन्न प्रकार की चट्टानें मिलतीं हैं, वहां खनिजों के पाये जाने की सम्भावनायें हैं। कुछ ज्वालामुखी क्षेत्रों में भी खनिज पदार्थ मिलते है। चङ्ग-पाई पर्वत, जिसे दूसरे शब्दों में हम 'सदा श्वेत' (ever-white) कह सकते हैं, अपनी प्रसिद्ध शिखा पैक-तो-सन के कारण ही इतना प्रसिद्ध है। खनिज पदार्थ के दृष्टिकोण से यह एक प्रमुख क्षेत्र है।

चीन से यदि तुलना की जाय, तो मंचूरिया खनिज-सम्पत्ति में कोई विशेष स्थान प्राप्त नहीं करता। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि यहां के आदि निवासी प्राचीन काल में नदियों की घाटियों से प्राप्त किये हुये रेती से सोना निकालते थे। यह सोना इस रेती में उन नीस (Gneiss) चट्टानों से प्राप्त हुआ है, जिनमें कि सोने का अंश पाया जाता है। अब भी यहाँ सुंगारी, यालू तथा ह्वीलुंग-क्यांग नदियों की घाटियों में सोना पाया जाता है।

कोयले की खानों में मंचूरिया एक धनवान देश है। ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर हम कह सकते हैं कि यहाँ कोयला चौदहवीं शताब्दी के आरम्भ से ही निकाला जा रहा है। उस समय यहाँ कोरिया व चीन के निवासी इस धन्धे में लगे थे। वास्तविक उन्नति उस समय से हुई है, जब से कि जापानियों ने दक्षिणी मंचूरिया रेलवे के साथ साथ कोयले की खानों पर भी अधिकार जमा लिया था और कोयला निकालना आरम्भ कर दिया था। कुछ लोगों का मत यह भी है कि वर्तमान कोयले की खुदाई रूसी लोगों के प्रयत्नों का प्रतिफल है। कोयले के रिजर्व का अनुमान लगाया गया है, कि वह २३,३६५,८३०,००० मेट्रिक टन है। सन् १९४४ का उत्पादन २६० लाख टन था। सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र मुकडेन के निकट लगभग २२ मील दूर फुशान है। यह यंगपान की घाटी में एक दस मील लम्बी व दो मील चौड़ी पेटी के रूप में स्थित है। अनुमान लगाया जाता है, कि इसमें १ अरब ३० करोड़ टन कोयले का रिजर्व पाया जाता है, इसमें कदाचित् संसार की सबसे मोटी कोयले की पर्तें पाई जाती हैं। अनुमान लगाया जाता है, कि पर्तों की मोटाई ४०० फिट से कम नहीं है। दूसरी महत्वपूर्ण कोयले की खान येनताई

(Yentai) है। इसका उत्पादन सवा लाख टन से अधिक है निम्नलिखित आँकड़े मंचूरिया के तीन प्रमुख प्रान्तों के दिये गये हैं।

प्रान्त	उत्पादन		सन्
ल्याओनिंग	१०,६४०,०००	टन	१९४४
किरिन	६,११७,०००	,,	,,
हलिंग क्याँग	३,०४७,०००	,,	,,
अन्य क्षेत्र	५,८९६,०००	,,	,,
कुल योग	२६,०००,०००	,,	,,

कोयले की खानों के निकट कुछ तेल भी प्राप्त किया जाता है। परन्तु उत्पादन अधिक नहीं है। खनिज तेल सबसे अधिक ल्याओनिंग प्रान्त से प्राप्त किया जाता है। मंचूरिया का कुल उत्पादन २० लाख टन प्रतिवर्ष से अधिक है। प्राकृतिक सोडा भी यहाँ पश्चिम के समतल भागों से प्राप्त होता है। यह मंगोलिया की सीमा के निकट भी प्राप्त किया जाता है। उत्पादन संतोषजनक है।

लोहे के उत्पादन में भी मंचूरिया एक महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण करता है। भूगर्भ शास्त्रियों का कथन है, कि यहाँ की परिवर्तित चट्टानों में बहुत सा अंश हीमेटाइट (Heamatite) नाम की लोहे की धातु का है। कुछ तो यहां के आदि निवासी अपने प्राचीन साधनों से निकाला भी करते थे। लोहे की प्रमुख खानें यहां केवल दो ही हैं। पहली पेन्सिहू (Penhsihu) तथा दूसरी अन्शान (Anshan), जिन में अन्शान का उत्पादन १९४५ में १,९५०,००० टन तथा पेन्सिहू का इसी सन् में ५७४,००० टन था। यदि मंचूरिया के प्रमुख प्रान्तों की ओर दृष्टि डाली जाय तो लोहे के रिजर्व में ल्याओनिंग न केवल चीन बल्कि समस्त एशिया में कदाचित् प्रथम स्थान प्राप्त करता है। इसका उत्पादन भी आधुनिक चीन में सबसे अधिक है। सन् १९४२ में इसका

Increase of coal Production (Only from Fushan Mines)

1907-8	about	200000	Tons
1919-20	—	3, 00,' 00	,,
1924-25	—	5,540,000	,,
1934	—	8,000,000	,,

From L. Dudley Stamp, Asia, A Regional and Economic Geography page 546

रिजर्व-प्रमाणित १,३८५,०५०,००० टन, अनुमानित ५,०००,००० टन तथा कुल रिजर्व १३९०,०५०,००० टन था और इसी सन् में उत्पादन ४,४१३,३०६ टन था।

लोहे के अतिरिक्त यहां अन्य महत्वपूर्ण धातुयें भी मिलती हैं। इनमें ताँबा एलमोनियम, लीड, जिन्क तथा इनके अतिरिक्त अन्य खनिजों में भी नमक व गन्धक इत्यादि हैं। ताँबे का उत्पादन यहां १९४३ में १७३६ टन था एलमोनियम अधिकतर ल्याओनिंग से प्राप्त की जाती है। लीड के उत्पादन में मंचूरिया का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। सन् १९३३ में ३८४४ टन तथा १९४३ में १११५८ टन उत्पादन था। जिन्क का उत्पादन सन् १९४१ में ३६६६ टन था। नमक पश्चिम के समुद्र एवं पहाड़ियों से प्राप्त किया जाता है। गन्धक अधिकतर ल्याओनिंग के क्षेत्र में मिलता है।

उद्योग धन्धे (Industries) :—

आरम्भ से ही मंचूरिया में कुछ ऐसी परिस्थितियां रही हैं, जिनके कारण वह उद्योग धन्धों में अधिक उन्नति नहीं कर सका। सर्वप्रथम मंचू जो यहां के आदि निवासी थे, केवल बंजारे ही थे। ये लोग बाद में विदेशियों से प्रभावित हुये दूसरे चीन के लोग जो मंचूरिया से आये वे उद्योग धन्धों के दृष्टिकोण से नहीं आये बल्कि उनका ध्येय कृषि करना ही था। वर्तमान उद्योग-धन्धे तो वास्तव में विदेशी लोगों के प्रभाव के कारण ही स्थापित हो सके हैं।

जापान ने जब अपना प्रभाव मंचूरिया पर पूर्ण रूप से डाल दिया था, तब इसने वहाँ कुछ बड़े-बड़े नगरों में कारखाने भी स्थापित करवाये। अब यहाँ पर उद्योग-धन्धे दो रूप में पाये जाते हैं। पहले आधुनिक कारखाने तथा दूसरे घरेलू उद्योग-धन्धे।

लोहे व इस्पात का उद्योग (Iron and steel Industry) :—

आधुनिक कारखानों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण लोहे व स्पात उद्योग के कारखाने हैं। सन् १९१८ में आन्शन नामक लोहे व स्पात के कारखाने की स्थापना हुई। यह कारखाना और भी अधिक बढ़ा दिया गया। सन् १९३३ में इसका नाम 'शोवा स्पात वर्क्स' पड़ गया। उस समय यह कारखाना लगभग १० लाख टन स्पात तथा ४३०००० टन कच्चा लोहा बनाने की शक्ति रखता था। 'शोवा इस्पात वर्क्स' में कई अन्य प्लाँट स्थापित कर दिये गये। इसका उत्पादन बढ़ कर १३,३०,००० टन स्पात तथा १९५०००० टन कच्चा लोहा हो गया। आधुनिक चीनी सरकार ने आन्शान के इस केन्द्र को और भी अधिक बढ़ा दिया है। यहाँ पर कई नये प्लांट स्थापित कर दिये हैं। कई भट्टियाँ और भी बना दी गई हैं। अब इसका उत्पादन बहुत अधिक हो गया है। दूसरा केन्द्र लोहे व स्पात

के उद्योग का बहुत छोटा है, परन्तु वर्तमान समय में उसको भी बढ़ाने की योजना है। वह है पैंसिहू, यहाँ भी दो प्लाँट लगे हुये हैं।

आन्शन के लोहे व स्पात का केन्द्र संसार के सबसे बड़े केन्द्रों में से एक है। यहाँ हर प्रकार की लोहे की वस्तुयें तैयार की जाती हैं। भारी-भारी वस्तुयें तैयार करने के प्लाँट सीमलेस, ट्यूबिंग, मिल तथा अन्य इञ्जीनियरिंग के सामान तैयार करने के कारखाने पाये जाते हैं। वर्तमान योजना इनको और बढ़ा देने की है। क्योंकि आन्शन में ६० प्रतिशत कच्चा लोहा तथा ४० प्रतिशत स्पात तैयार करने की शक्ति अभी और है। इस केन्द्र पर सैकड़ों व हजारों कर्मचारी काम सीखने के लिये बाहर से आते हैं। इसी के निकट मान्शान लोहे व स्पात के केन्द्र पर बहुत बड़ी बड़ी वस्तुओं से लेकर छोटी छोटी वस्तुयें तक ढाली जाती हैं। यहाँ पर भी छः बड़ी बड़ी लोहे गलाने की भट्ठियां पाई जाती हैं। आन्शान तथा मान्शान के केन्द्रों पर कुछ ओटोमेटिक भट्ठियां भी स्थापित कर दी गई हैं, इनमें सब प्रकार का कार्य स्वयं ही हो जाता है। लोहे की भारी-भारी वस्तुयें तथा अन्य साधारण वस्तुयें मुकडेन में भी बनने लगी हैं।

लोहे के उद्योग से ही सम्बन्धित कुछ अन्य उद्योग भी प्रगति कर गये हैं। उदाहरणार्थ 'डायरन शिपबिल्डिंग यार्ड' जिसमें कि आजकल बहुत बड़े जहाज बनाये जाते हैं। रसायन उद्योग भी यहीं प्रचलित हैं। दूसरा हार्बिन विद्युत सम्बन्धी वस्तुयें व मोटर बनाने के कारखानों तथा काटने वाली मशीनों के निर्माण के लिये प्रसिद्ध है। शकेकन में रेलों व इञ्जनों का निर्माण होता है।

अन्य उद्योग (Other Industries) :—

अन्य उद्योगों में बीन से तैल निकालने का उद्योग बहुत ही प्रमुख है। दक्षिणी मंचूरिया रेलवे के क्षेत्र में हजारों ऐसे कारखाने पाये जाते हैं, जो केवल तेल के कारखाने ही हैं। कुछ कारखानों में तो उन सभी औद्योगिक वस्तुओं का निर्माण होता है, जो कि इससे प्राप्त की हुई वस्तुओं से तैयार की जाती हैं। सोयाबीन के महत्व के विषय में हम पहले ही बतला चुके हैं। आटा पीसने की चक्कियां, तम्बाकू से सम्बन्धित धन्धे, कओलिंग की शराब तैयार करना, सूती, ऊनी व रेशमी वस्त्र इत्यादि तैयार करने के धन्धे भी यहाँ प्रचलित हैं। मुकडेन, हार्बिन, तथा डाइरन इन वस्तुओं के औद्योगिक केन्द्र हैं। आजकल यहाँ के निवासी हर प्रकार के सूती, रेशमी व ऊनी कपड़े तैयार करते हैं। वे उत्तम से उत्तम छींट व डिजाइन के वस्त्र तैयार करते हैं। सीमेंट व प्लास्टिक उद्योग भी यहां कई स्थानों पर उन्नति कर गये हैं।

मंचूरिया के आधुनिक उद्योगों में लगभग १० लाख व्यक्ति लगे हुये हैं।

यह उन्नति वास्तव में कम्युनिस्टों के प्रभाव के कारण हुई, और रूस सरकार अब भी हर प्रकार की सहायता प्रदान कर रही है। चीन की नवीन सरकार ने उत्तर-पूर्वी चीन अथवा मंचूरिया में अनेक नये उद्योग धन्धे स्थापित किये हैं। कारखानों ने भूमि का ७५० लाख वर्ग मीटर का क्षेत्र घेर लिया है। उत्पादन १९५२ की अपेक्षा ३० प्रतिशत बढ़ गया है। सन् १९५३ में जो कारखाने थे, उन्होंने पंच-वर्षीय योजना के अन्तर्गत कई गुना अपना उत्पादन बढ़ा लिया। वार्षिक लाभ का अनुमान लगाया जाता है, कि ६०० लाख पौंड प्रति वर्ष का है। कदाचित ५८ कारखानों में से ५० ने निश्चित से अधिक कोटा पार कर लिया है। इनमें कोयला विद्युत, गैसोलीन, कच्चा लोहा, स्पात-ढाली हुई लोहे की वस्तुयें, एलेक्ट्रो-प्लेटिंग, तांबे की वस्तुयें, ऐलेक्ट्रोलिटिक, लेड व जिन्क की वस्तुयें डाइनिमो, चट्टानें तोड़ने वाली मशीनें, मिलिंग की वस्तुयें, कागज, रेशम, सूत व सूती वस्त्र, ऊनी वस्तुयें तथा दैनिक कार्य में आने वाली वस्तुयें जैसे-तेल, साबुन, क्रीम, ब्लेंड्स, खिंग का सामान इत्यादि वस्तुयें उल्लेखनीय हैं गत वर्षों की अपेक्षा यहाँ के कार्यकर्त्ताओं ने आश्चर्यजनक निपुणता प्राप्त की है। मशीनों की देख-रेख उनसे अधिक उत्पादन प्राप्त करना तथा उनकी आधुनिकता को ध्यान में रखना इत्यादि बातों में इन लोगों ने बहुत प्रगति की है। (China Reconstructs) "चीनी रिकंस्ट्रक्ट" का कथन है, कि मशीनों के निर्माण के अन्तर्गत ३२० नई वस्तुयें तैयार की गईं। विद्युत शक्ति बढ़ाने की वस्तुओं के निर्माण की ओर विशेष ध्यान दिया गया। उत्तम से उत्तम कपड़ों की ओर ध्यान दिया गया है, और अब मखमल, लिनिन तथा मिश्रित अति उत्तम कपड़े तैयार किये जाते हैं। मंचूरिया के इन उद्योगों की उत्पादन शक्ति १९५२ की अपेक्षा १९५३ में १५ प्रतिशत अधिक थी।

भारतवर्ष के प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू जब नवम्बर १९५४ में चीन यात्रा को गये तब उन्होंने अन्शान लोहे तथा स्पात के केन्द्र के अतिरिक्त मुकडेन व हार्बिन के औद्योगिक क्षेत्रों का भी दौरा किया, वह डाईरन के बन्दरगाह को भी देखने गये। यहां की औद्योगिक प्रगति को देखकर प्रधान मन्त्री बहुत अधिक प्रभावित हुये।

घरेलू उद्योग मंचूरिया के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित है। कई नगरों में भी यह उद्योग साधारण रूप में पाये जाते हैं। गतवर्षों तक इनकी दशा बड़ी शोचनीय थी, परन्तु, आधुनिक सरकार ने इनको पूर्ण रूप से सहायता देना निश्चय किया है। घरेलू उद्योगों में, रेशम, सूती व ऊनी वस्त्र, कपड़े, शीशे, व लकड़ी की वस्तुयें तथा वनस्पति सम्बन्धी अनेक उद्योग धन्धे प्रचलित हैं। सरकार ने कई ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युत-शक्ति प्रदान कर दी है। इसके अन्तर्गत इन उद्योगों को विद्युत शक्ति मिल गई और अब उत्पादन बराबर बढ़ रहा है। यह काम

यहां शीघ्र उन्नति कर रहा है। भविष्य में आशा की जाती है, कि यह उद्योग बहुत उन्नति कर जायेंगे।

यातायात के साधन (Means of Transport & Communications)

यातायात के साधनों में मंचूरिया ने गत वर्षों से उन्नति की है। प्राचीन काल में यहाँ कच्चे थल मार्ग पाये जाते थे, कुछ तो इनमें बहुत लम्बे व अच्छे भी थे और इन पर व्यापार भी हुआ करता था, परन्तु यह आधुनिक पहियेदार गाड़ियों के लिये महत्वपूर्ण सिद्ध नहीं हुए। यदि देखा जाय तो यातायात के साधनों में वास्तविक उन्नति उसी समय से हुई है, जब से पहियेदार गाड़ियों का निर्माण हुआ है। रेलवे ने यहाँ महत्वपूर्ण कार्य किया है। और जिन जिन क्षेत्रों में यह स्थापित की गई है, बड़ी सफलता पूर्वक इन्होंने कार्य किया है। यदि ध्यान पूर्वक देखा जाय तो यहां पर तीन प्रमुख क्षेत्र रहे हैं, जिन पर भिन्न राष्ट्रों का प्रभाव रहा है। उत्तर में मंचूरिया का पूर्वी वह भाग जिस पर कि रूस का, दक्षिण-पूर्व में मंचूरिया का वह भाग जिस पर जापानियों तथा दक्षिण पश्चिम में पेकिंग मुकडेन का वह क्षेत्र जिस पर चीनियों का प्रभाव रहा है। इन रेलवेज की उन्नति के विषय में थोड़ा सा वर्णन हम पहले ही कर चुके हैं, साथ ही यह बतलाया जा चुका है कि किस क्षेत्र में किसका सबसे अधिक प्रभाव रहा है। जिस समय से चीनी पूर्वी रेलवे १९३५ में मंचूरिया के द्वारा खरीद ली गई थी, तो दक्षिणी मंचूरिया की रेलवे पर भी पूरा आतंक हो गया था, यहां तक कि अठारह वर्ष पूर्व कोरिया की रेलवे भी इसी के अधिपत्य में आ गई थी।

रेलों के निर्माण से मंचूरिया को बहुत अधिक आर्थिक लाभ हुआ है। दक्षिणी मंचूरिया रेलवे ने उसी श्रेणी का कार्य किया जिस श्रेणी का ट्रांस साइबेरियन रेलवे ने साइबेरिया के लिये किया है। यह एक बहुत बड़ी रेलवे कम्पनी है, और इसके पास ४४००००,००० येन की पूंजी है, उसमें से आधे से अधिक जापानी गवर्नमेंट के तथा शेष आधे भाग में जापानी व चीनी पूंजी-पतियों के हिस्से हैं। इसमें, यदि देखा जाय तो जापानियों का ही अधिक आधिपत्य है।

* इस कम्पनी ने २७ प्रतिशत रेलवे पर, ११ प्रतिशत खानों पर, ३ प्रतिशत अन्शान स्पात केन्द्र पर तथा ८ प्रतिशत बन्दरगाहों की उन्नति पर पूंजी लगाई, इसके अतिरिक्त अन्य भी कई प्रकार के कार्यों पर व्यय किया। इस कम्पनी ने कई बड़ी बड़ी इमारतें, अस्पताल, कालिज, स्कूल, होटल्स पोत, विद्युत गृह, गैस, ट्राम, कारखानें, रिसर्च लैब, फार्म, लान, स्वास्थ्य तथा आर्थिक विकास के लिये

* L. Dudley Stamp—Asia, A Regional & Economic Geography Page 555.

बनवाये। इस प्रकार से मंचूरिया की उन्नति का श्रेय दक्षिणी मंचूरिया रेलवे को ही जाता है।

जिस समय से मंचूको राज्य की स्थापना हुई है, उस समय से रेलों की लम्बाई दिन प्रतिदिन बढ़ती ही गई है। सन् १६३५ के अन्त तक यहां ५२५० मील लम्बी रेलें थीं, इनमें से ८८ प्रतिशत राज्य की रेलें कहलाती थीं। दक्षिण मंचूरिया रेलवे ७०० मील तथा उत्तरी मंचूरिया रेलवे राज्य की ११०० मील लम्बी थी।

हार्बिन रेलों का एक प्रमुख केन्द्र है। यहां से लाइनें, उत्तर-पश्चिम में (साइबेरियन रेलवे) चीता तक, पूर्व में व्लाडीवोस्टक तक, दक्षिण-पूर्व में राशिन बन्दरगाह तक, दक्षिण में सिंगकिंग होती हुई मुकडेन व डाइरेन तक, मुकडेन से एक शाखा ज्होल तथा दूसरी तिन्सतिन व पेकिंग तक जाती हैं।

आधुनिक मोटर चलाने योग्य सड़कों की प्रगति भी यहां काफी हुई है। सड़कों की उन्नति के लिये एक दस वर्षीय योजना बनाई गई थी, इसके अन्तर्गत ३७००० मील सड़कों का विकास हुआ, यह योजना १६३२ में पूरी हुई और मार्च के माह तक इन नवीन सड़कों का उद्‌घाटन हो गया। इसी समय से एक दो वर्षीय योजना और बनाई गई। इसके अन्तर्गत ४५०० मील पक्की मोटर चलाने योग्य सड़कों का विकास हुआ।

जलमार्गों की प्रगति भी यहां उपयुक्त मात्रा में हुई है। यहाँ की नदियों को और गहरा बना कर पोत चलाने योग्य बना दिया गया। आमूर, सुंगारी, ल्याओ नोन तथा यालू नदियाँ जहाज़ चलाने योग्य हैं। अधिक ठंडी जलवायु होने के कारण इन नदियों द्वारा यातायात वर्ष के आधे समय बन्द रहता है।

वायु यातायात की उन्नति गत वर्षों से ही हुई है, रूस ने इस यातायात के विकास में काफी सहायता दी है। कुछ नगरों में तो आधुनिक वायुयान के अड्डे बना दिये गये हैं, इन पर विश्व के सभी देशों के वायुयान ठहरते हैं। मुकडेन व हार्बिन में आधुनिक वायुयान के अड्डे पाये जाते हैं।

मंचूरिया के यातायात के साधनों में चीन की पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत और भी उन्नति की जा रही है। अब यह भाग चीन का उत्तर-पूर्वी भाग कहलाता है। आर्थिक उन्नति के साथ-साथ इन साधनों में भी प्रगति की जारही है, अब यहां सोवियत यूनियन के इन्जीनियरों की सहायता से रेलों, सड़कों व जल और वायु यातायात में आश्चर्यजनक प्रगति हो रही है।

विदेशी व्यापार (Foreign Trade) :—

वर्तमान मंचूरिया का विदेशी व्यापार वास्तव में चीन के विदेशी व्यापार के अन्तर्गत आता है क्योंकि राजनैतिक दृष्टिकोण से मंचूरिया चीन का ही एक

उत्तर-पूर्वी भाग है। यहां जो कुछ भी विदेशी व्यापार का वर्णन दिया जा रहा है, वह द्वितीय महायुद्ध के पहले का है। मंचूरिया के विदेशी व्यापार का वर्णन कुछ कठिन अवश्य है, परन्तु असम्भव नहीं है। सन् १६३३ तक जो दशा थी, उसके अन्तर्गत निर्यात-आयात से अधिक हुआ करते थे। निर्यात की वस्तुओं में आधे से अधिक सोयाबीन व उसकी तैयार की हुई वस्तुओं का होता था। कोयला व लोहा भी निर्यात की मुख्य वस्तुयें थीं, अन्य कृषि सम्बन्धी वस्तुओं में ज्वार-बाजरा काओलिंग तथा मूंगफली इत्यादि मुख्य थीं। पशुओं में सुअर बाहर भेजे जाते थे। आयात की वस्तुओं में सूती वस्त्र, आटा, कच्चा माल व तैयार की हुई वस्तुओं की मात्रा अधिक हुआ करती थी। अधिकतर व्यापार जापान, चीन व रूस से हुआ करता था। रूस से व्यापार कुछ समय के लिये घट गया था, परन्तु अब फिर बढ़ गया है। श्री डडले स्टाम्प के कथनानुसार सन् १६२६ के बाद संयुक्त राज्य अमरीका ने मंचूरिया की सोयाबीन का आयात कम कर दिया। परन्तु १६३२ से जर्मनी इसके व्यापार में प्रथम स्थान रखने लगा।

आजकल चीन सरकार मंचूरिया के बन्दरगाहों से लगभग सभी तैयार की हुई वस्तुयें निर्यात करती है। बहुत सी वस्तुयें जो चीन में आयात की जाती हैं, वह भी इन्हीं बन्दरगाहों पर उतार कर आन्तरिक क्षेत्रों में भेज दी जाती हैं।

यहाँ के मुख्य बन्दरगाहों में डाइरन एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करता है। यहाँ से मंचूरिया की मुख्य उपजें व तैयार किया हुआ माल निर्यात किया जाता है। इसका नम्बर शांघाई के बाद आता है। यह मंचूरिया के दक्षिणी प्रायद्वीप के सिरे पर स्थित है। आन्तन्ग मंचूरिया का एक दूसरा महत्वपूर्ण बन्दरगाह है, यह यालू नदी (ओरियोको नदी) के मुहाने पर स्थित है। यालू नदी चार माह तक बर्फ से जमी रहती है। अपने मुहाने से केवल २५ मील तक यातायात करने योग्य है। तीसरा बन्दरगाह पूर्वी तट पर राशिन हैं, यह वर्ष के आधे समय तक बर्फ से ढका रहता है, इस कारण इसकी कोई विशेष महत्ता नहीं है।

राजनैतिक रूप (Political Aspect)

प्रांत (Provinces) :—

मंचूरिया पांच प्रान्तों में विभाजित है। इनके नाम इस प्रकार हैं :— १ल्याओनिंग, २क्याओली, ३किरिन, ४सोंक्यांग तथा ५हीलोंगक्यांग। इन सभी में जन-संख्या के दृष्टिकोण से ल्योओनिंग तथा क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से होलंगक्यांग बड़े हैं। इन प्रान्तों की वर्तमान जनसंख्या तथा राजधानी नीचे बतलाई गई है। इनमें से कुछ प्रान्तों के नाम परिवर्तित हो गये हैं। यहां हमने आधुनिक नामों का वर्णन किया है।

ल्याओतुंग :—ल्याओतुंग प्रान्त का क्षेत्रफल ३६,७५५ वर्गमील है, इसकी जनसंख्या लगभग ८,५८७,६६६ है। यहाँ की राजधानी आन्तुंग है।

ल्याओसी :—इस प्रान्त का क्षेत्रफल २१६४३ वर्ग मील तथा जनसंख्या लगभग ७,३६१,४६२ है। इसकी राजधानी चिनचो है।

किरिन :—इस प्रान्त का क्षेत्रफल ४६,१२७ वर्ग मील और यहां की जनसंख्या लगभग ६,६३५,६७१ है, इसकी राजधानी किरिन है।

संगक्यांग :—इसका क्षेत्रफल ७६,२४३ वर्ग मील तथा यहां की जनसंख्या ५१४६,६०६ है तथा इसकी राजधानी हार्बिन है।

हीलंगक्यांग :—इस प्रान्त का क्षेत्रफल १०६,००६ वर्ग मील है। जनसंख्या ५,५२१,५८१ है। यहां की राजधानी सितसिहार है।

सांस्कृतिक रूप (Cultural Aspect)

जाति (Race) :—

ऐसा प्रतीत होता है कि मंचूरिया के आदि निवासी उत्तरी अमरीका के वन-क्षेत्रों के लाल मनुष्यों से मिलते जुलते हैं। परन्तु इतिहासकारों का मत है, कि मंचूरिया में चीनी लोग 'पाषाण युग' (Stone Age) में भी उपस्थित थे, और तन्गस जाति के लोगों से काँसे के बने हुये हथियारों से प्रायः लड़ते थे। ऐसा भी अनुमान लगाया जाता है, कि चीनी उस समय से यहां पाये जाते हैं, जिस समय से यहां विभिन्न जातियों में घमासान युद्ध हो रहे थे, तथा 'मंचू' लोगों ने विजय प्राप्त कर ली थी। परन्तु 'मंचू' भी कोई शुद्ध जाति नहीं कही जाती है। इसमें संदेह नहीं कि चीनी लोगों के लिये 'मंचू' लोग अजातीय तथा असभ्य राजनीति के दृष्टिकोण से एक विदेशी जाति थी। साथ ही यह लोग इतने चतुर नहीं थे, कि अपनी नवीन बस्तिओं को स्थापित कर सकते। संख्या में भी यह बहुत कम थे, और न इतने योग्य थे कि चीनी संस्कृति के सम्मुख ठहर सकते। समय-समय पर इन्हें मंगोल जाति के लोगों से भी सहायता मिली। कुछ इतिहासकारों ने तन्गस जाति को प्रोटो-मंचूज़ बतलाया है, उनका कथन है, कि यदि चीनी लोग वहां कार्य करते थे, तो उनके मालिक तन्गस थे। बाद में यह लोग मंचूरिया की तमाम सीमाओं तक फैल गये। उन्नीसवीं शताब्दी तक सम्पूर्ण आमूर का क्षेत्र इनके अधिपत्य में था।

चरित्र तथा रहन-सहन (Character and Living) :—

मंचू युवक देखने में स्वस्थ होते हैं। उनका शरीर गठीला व फुर्तीला तथा उनका रंग कुछ पीला व बदामी सा होता है। मंगोलियन जाति के लोगों से ये कुछ मिलते-जुलते हैं। कद में यह मंगोलियन से कुछ ऊंचा होते हैं। परन्तु ध्यानपूर्वक देखने से यह प्रत्यक्ष रूप से ज्ञात हो जाता है कि यह मंगोल जाति के

ही वंशज हैं। स्वभाव से यह लोग मंगोलियनों की भाँति उदार प्रकृति के होते हैं। लेकिन कभी-कभी अपना क्रूर स्वभाव भी प्रकट कर देते हैं। मंचू लोग आरम्भ से ही लड़ने-भिड़ने में बड़े निपुण रहे हैं।

सभ्यता इनमें नाममात्र को भी नहीं पाई जाती, क्योंकि अधिकांश लोग भेड़-बकरियों या अन्य पशुओं सहित इधर-उधर घोड़ों पर सवार होकर घूमा करते थे। कभी कभी निकट की अन्य जातियों पर आक्रमण भी कर दिया करते थे। इनको कोई भी विशेष कार्य करने की रुचि नहीं रहती। यही कारण है कि ये लोग उन्नति नहीं कर सके। वैसे ये बड़े निपुण घुड़सवार होते हैं, और सिपाही का काम करने में बड़े निडर व चतुर होते हैं।

इनके रहन-सहन का ढंग बहुत ही निम्न श्रेणी का है। यह बात ऊपर बतलाई जा चुकी है, ये लोग बंजारे हैं। इनका कोई भी रहने का निश्चित स्थान नहीं रहता था। यही कारण है, कि इनका रहन-सहन इतना पिछड़ा हुआ है। मनुष्य अधिकतर बाहरी कार्यों की देखभाल करते हैं। स्त्रियाँ घरेलू काम किया करती हैं। यहाँ अधिकतर मिट्टी या कांसे के बर्तनों का प्रयोग किया जाता है। ये लोग बड़े गन्दे रहते हैं। महीनों तक नहाने का नाम भी नहीं लेते। न केवल इतना ही, बल्कि बहुत से हाथ मुँह तक नहीं धोते। विदेशी जातियां वास्तव में इन्हें घृणा की दृष्टि से देखती हैं। ये लोग अपने भोजन में मांस भी खाते हैं, और जो जलाशयों के निकट रहते हैं, मछलियों का सेवन भी करते हैं।

वर्तमान मंचू बहुत कम देखने को मिलते हैं जो कुछ भी थोड़े से पाये जाते हैं, वह उत्तर की ओर ही दृष्टिगोचर होते हैं। अब ये लोग अन्य जातियों से घुल-मिल गये हैं, इसलिए मिश्रित अवस्था में ही पाये जाते हैं। कुछ तो पश्चिमी तथा चीनी व जापानी सभ्यता के प्रभाव के कारण बहुत कुछ परिवर्तित हो गये हैं, और अब ठीक उन्हीं लोगों की तरह का जीवन व्यतीत करते हैं।

मंचूरिया के प्राकृतिक प्रदेश (Natural Regions of Manchuria)

मंचूरिया का मैदान :—

मंचूरिया का समतल भाग, पहले एक ऊंचा-नीचा भाग था, परन्तु अधिक कटाव के कारण यह मैदान के रूप में परिवर्तित हो गया है। दो प्रमुख नदियाँ ल्याओ तथा सुंगारी इस भाग को उत्तरी व दक्षिणी भागों में विभाजित करती हैं। उत्तर से दक्षिण तक इसकी लम्बाई ६०० मील तथा पश्चिम से पूर्व तक इसका विस्तार ४०० मील है। यह उत्तर में लिटिल खिंगन (Little Khingan) पश्चिम में ग्रेट खिंगन, पूर्व में चांग बाइ शान पर्वतों से तथा दक्षिण-पश्चिम में जिहोल पर्वतों से घिरा हुआ है। दक्षिण में ल्याओ नदी की घाटी ७५ मील चौड़ी है।

इस क्षेत्र की जलवायु के विषय में थोड़ा सा हाल पहले ही बतलाया जा चुका है। शीतऋतु में यहाँ बहुत कड़ी सर्दी पड़ती है तथा पश्चिम से बहुत ही ठंढी व तीव्र हवायें मध्य एशिया से किंघन पर्वत को पार करती हुई आती हैं। ग्रीष्मऋतु शीतऋतु की तुलना में छोटी तथा गर्म होती है। जनवरी के माह में तापक्रम हिमांक से भी नीचे गिर जाता है, जुलाई में ६०° फ० तक तापक्रम पाया जाता है। वर्षा ग्रीष्मऋतु में मानसूनी हवाओं से होती है, और शीतऋतु में प्राय: बर्फ-वर्षा हो जाया करती है।

यह मंचूरिया का एक प्रमुख कृषि क्षेत्र है। यहां पर नदियों ने उपजाऊ मिट्टी जमा कर दी है। चीनी लोग, जो वर्षों से यहां आकर बसे हैं, इसी धन्धे में लगे हैं। उत्तर में गेहूं, सोयाबीन तथा दक्षिण में ज्वार बाजरा, काओलिंग, कोर्न इत्यादि की कृषि होती है। इस भाग में विभिन्न प्रकार के खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं, इनमें से कुछ का वर्णन ऊपर किया जा चुका है, और कुछ ऐसे हैं जो उल्लेखनीय नहीं हैं, क्योंकि बहुत कम भागों में निकाले जाते हैं।

मंचूरिया के इसी क्षेत्र में बड़े-बड़े उद्योग-धन्धे पाये जाते हैं। उद्योग-धन्धों के स्थानीयकरण की यहाँ अनेक सुविधायें पाई जाती हैं। कुछ मुख्य उद्योग-धन्धों का वर्णन हम ऊपर कर चुके हैं। औद्योगिक केन्द्रों में आन्शान, मुकडेन, हार्बिन तथा चंगचुन हैं। मैदान के प्रमुख नगरों में मुकडेन प्रसिद्ध हैं।

पूर्वी मंचूरिया की पहाड़ियां :—

मंचूरिया के मैदान के पूर्व में यह पहाड़ियाँ ल्याओतंग प्रायद्वीप से उत्तर की ओर आमूर व ऊसूरी तक विस्तृत हैं। इनकी लम्बाई ८५० मील तथा चौड़ाई लगभग दो सौ मील है। अधिकतर यह पहाड़ियाँ कटाव के कारण घिस गई हैं। इनकी बनावट के विषय में हम पहले ही बतला चुके हैं। इस भाग की जलवायु एक सी नहीं है। दक्षिण में कुछ गर्म तथा उत्तर में कुछ ठण्ढी हैं, यहां तक कि पश्चिम व पूर्व की जलवायु में भी कुछ अन्तर पाया जाता है। दक्षिण में गर्मी बहुत अधिक नहीं पड़ती। उत्तर में शीतऋतु बड़ी ठंढी होती है, और तापक्रम हिमांक से भी नीचा पहुंच जाता है। पश्चिम में शीतऋतु के समय बहुत तीव्र ठंढी हवायें चलती हैं। वर्षा मानसून से दक्षिण व पूर्व की ओर हो जाती है। उत्तर-पश्चिम में प्राय: बर्फ वर्षा हो जाया करती है।

ये पहाड़ियां वनों से ढकी हुई हैं। यह वन सदाबहार नुकीली पत्ती वाले हैं। इनमें अधिकतर पाइन, स्प्रूस, लार्च, ऐम, बर्च ओक व फर आदि के वृक्ष पाये जाते हैं। इन वनों से उत्तम लकड़ी प्राप्त की जाती है। यालू नदी में यह लकड़ी बहाकर आन्तंग के बन्दरगाह पर उतार ली जाती है। समूर वाले जानवर भी इन वनों से प्राप्त किये जाते हैं।

वर्षा मैदान की अपेक्षा अधिक होने के कारण यहां किसी किसी स्थान पर कृषि भी की जाती है। सोयाबीन, गेहूं, ज्वार बाजरा, काओलिंग इत्यादि यहाँ की मुख्य उपजें हैं। बहुत से कोरिया व जापान के निवासी यहाँ चावल भी उत्पन्न करते हैं। येन्की का क्षेत्र धान की उपज के लिये बहुत प्रसिद्ध है।

इस क्षेत्र में कुछ खनिज पदार्थ भी मिलते हैं। पश्चिम की पहाड़ियों में कोयले की खानें पाई जाती हैं। विद्वानों का मत है, कि पूर्व व दक्षिण में लोहे का कोष भरा पड़ा है। कोरिया के निकट जापानियों के प्रयत्नों के फलस्वरूप तंग-यियन्ताओं के स्थान पर एक लोहे व स्पात का केन्द्र भी स्थापित हो गया है। सुंगारी नदी पर जल-विद्युत शक्ति उत्पन्न की जाती है। यालू नदी भी इस दृष्टि-कोण से महत्वपूर्ण है। इस पर्वतीय क्षेत्र की सबसे ऊंची श्रेणी चंग-पाई-शान (White Mountain) जहाँ पर एक क्रेटर झील, जिसकी ऊंचाई ९००० फीट है, पाइताओ शान नामक ज्वालामुखी पर्वत पर पाई जाती है।

मुख्य नगरों में डाइरन है यह ल्याओतंग प्रायद्वीप पर एक प्रसिद्ध बन्दरगाह भी है। इस नगर के विषय में थोड़ा सा वर्णन पहले ही किया जा चुका है। यह दक्षिण में प्रायद्वीप के बिल्कुल किनारे पर स्थित है। इसकी स्थिति बड़ी महत्व-पूर्ण है, और इसीलिये एक अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का केन्द्र बन गया है। दूसरा नगर व बन्दरगाह अन्तंग है, यह यालू नदी के मुहाने पर स्थित है। किरिन एक तीसरा नगर है, जो इसी नाम के प्रान्त में स्थित है। एक चौथा महत्वपूर्ण औद्योगिक नगर पेनसिहू है। यह वास्तव में एक लोहे व कोयले का केन्द्र है। इसका वर्णन हम ऊपर भी कर चुके हैं।

किन्घन पर्वत :—

मंचूरियन मैदान के उत्तर- पश्चिम में किन्घन पर्वत श्रेणियाँ पाई जाती हैं। इनका क्षेत्रफल १६८००० वर्ग मील बतलाया जाता है। यह पर्वत श्रेणियाँ अधिक ऊंची नहीं है। उत्तर से दक्षिण की ओर जो बहुत विस्तृत श्रेणी है, वह 'ग्रेट किन्घन' के नाम से पुकारी जाती है। दक्षिण में यह मंगोलिया की सीमा तक फैली हुई है। उत्तर में यह क्षेत्र एक विस्तृत भाग में परिवर्तित हो गया है। उत्तर में आमूर के समानान्तर 'लिटिल किंघन' फैले हुये हैं।

इस क्षेत्र की जलवायु शुष्क है। उत्तर की ओर अधिक ठंड तथा दक्षिण की ओर मध्यम गर्मी रहती है। शीतऋतु में यहाँ बहुत ठंडी व तीव्र हवायें पश्चिम की ओर से आती हैं; वर्षा ग्रीष्म ऋतु में बहुत कम हो जाती है। यही कारण है कि यह पहाड़ियाँ छोटी-छोटी घास से ढकी हुई हैं। इन पर यहां के बंजारे लोग भेड़-बकरियाँ चराते हैं। किसी किसी स्थान पर साइबेरियन लार्च व

वर्च के बन भी दृष्टिगोचर होते हैं। यह बन अधिक घने नहीं हैं। कुछ लोगों ने यहाँ कृषि करना भी आरम्भ कर दिया है। गेहूं, ज्वार, बाजरा तथा काओलिंग उत्पन्न कर लिया जाता है।

इन पर्वतीय क्षेत्रों का कोई भी विशेष आर्थिक महत्व नहीं है। यही कारण है, कि यहाँ घनी जन-संख्या नहीं पाई जाती। जो कुछ भी बस्तियां मिलती हैं, वह लकड़हारों, बंजारों, शिकारियों तथा कृषकों की ही हैं। बड़े-बड़े नगर इस क्षेत्र में कई कारणों से स्थापित नहीं हो सके हैं।

जिहोल पर्वत :—

जिहोल प्रान्त चीन की महान् दीवार के बाहर स्थित है। यह प्राचीन काल में आन्तरिक मंगोलिया का ही एक क्षेत्र था। इस प्रान्त पर सबसे अधिक प्रभाव चीन की संस्कृति का पड़ा है। इसके पश्चिम में लामा लोगों के मन्दिर हैं और बंजारे लोग नहीं पाये जाते हैं।

इस प्रान्त का धरातल शान्टंग से मिलता जुलता है। यहाँ भी पहाड़ियां, पठार तथा तटीय मैदान पाये जाते हैं। अधिकतर धरातल ऊंचा-नीचा व पथरीला है। यहाँ की जलवायु मंगोलिया की जलवायु से कुछ मिलती-जुलती है। शीतऋतु में यहां भी बहुत तीव्र व ठंडी हवायें मध्य एशिया से चलती हैं। ग्रीष्म ऋतु कुछ गर्म होती है। परन्तु तापक्रम अधिक प्राप्त नहीं किया जाता। ग्रीष्मऋतु में मानसूनी हवाओं से कुछ वर्षा हो जाती है।

प्राचीन काल में यहाँ कई भागों में घने बन पाये जाते थे, और शिकार के लिये महत्वपूर्ण समझे जाते थे। लेकिन अब ये वन साफ हो गये हैं केवल उत्तर में कुछ ऐसे क्षेत्र हैं, जहां अब भी वन पाये जाते हैं। यहां के यातायात के साधनों पर धरातल का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। लेकिन वर्तमान मोटर चलाने योग्य सड़कों व पेकिंग से मंचूरिया जाने वाली रेलों ने इसके यातायात के साधनों का रूप ही परिवर्तित कर दिया है। ये मार्ग अब यहाँ की राजधानी चैंगटी से होकर जाते हैं।

जिहोल में कुछ खनिज पदार्थ भी मिलते हैं, पूर्वी सीमा पर कोयला निकाला जाता है। अन्य खनिजों की मात्रा उल्लेखनीय नहीं हैं। यहां के लोग कृषि उद्योग में भी लगे हुये हैं। मुख्य फसलों में ज्वार-बाजरा, काओलिंग तथा गेहूं हैं। अफीम यहां की प्रमुख उपज है। इन वस्तुओं का व्यापार भी यहां के लोग करते हैं। वर्तमान चीनी सरकार इस प्रान्त की उन्नति में पूरा सहयोग दे रही है।

मध्य [illegible]

मध्य एशिया के मृतक अङ्ग

(Dead Features of Central Asia)

यहाँ हम मध्य एशिया के उस मृतक हृदय का अध्ययन करने जा रहे हैं, जिसमें कि उच्च पर्वतश्रेणियां, विस्तृत रेगिस्तान, पठार, गहरी खाइयां तथा शुष्क चारागाह पाये जाते हैं। एशिया में इसकी स्थिति अद्वितीय है, इसके चारों ओर बड़े वैभवशाली देश पाये जाते हैं, उत्तर में सोवियत यूनियन, पूर्व में चीन, दक्षिण में बर्मा, भारत, काश्मीर, पाकिस्तान व अफ़ग़ानिस्तान तथा पश्चिम में रूसी तुर्किस्तान स्थित हैं। इसका क्षेत्रफल लगभग २७'५ लाख वर्ग मील है। एशिया का यह एक इतना वीरान व उजाड़ अङ्ग है, कि इसकी आर्थिक दशा का अनुमान यहाँ की जनसंख्या से बड़ी सरलता से लगाया जा सकता है। जनसंख्या यहां बहुत ही कम और वह भी अधिकतर उन बंजारों की है, जो कि शताब्दियों से विदेशी सम्पर्कों से वञ्चित रहे हैं। यहाँ की भौतिक रचनायें इस प्रकार की हैं, कि केवल चीन को ही इसमें प्रवेश करने में सफलता प्राप्त हो सकी है। आज से लगभग ४००० वर्ष पूर्व चीनी व्यापारी 'जेड गेट' द्वारा यहाँ के नखलिस्तानों से व्यापार किया करते थे।

इसमें सन्देह नहीं कि हजार वर्षों से यहां के बंजारों की संख्या बढ़ी नहीं है, कदाचित् घटी ही है। इसमें से कुछ तो निकटवर्तीय देशों में भी प्रवेश कर गये हैं, और अब वहीं के निवासी हो गये हैं। यहाँ के बंजारों में एक आश्चर्यजनक बात यह दृष्टिगोचर होती है, कि इनमें एक सरदार की अध्यक्षता में ऐसा संगठन पाया जाता है, जो कि हमेशा दृढ़ रहता है। सोवियत रूस के प्रभाव से अब यह लोग कुछ परिवर्तित भी हो गये हैं। इनको अपनी आर्थिक दशा सुधारने का अवसर मिल गया है। कुछ लोग उद्योगों में भी लग गये हैं। आशा है, कि निकट भविष्य में इनकी स्थिति और भी सुधर जायेगी। नीचे हम उन देशों का भौगोलिक विवरण दे रहे हैं, जो कि मध्य एशिया के इस मृतक अङ्ग में सम्मिलित हैं।

तिब्बत

मध्य एशिया में कुनलुन व हिमालय पर्वतों के बीच विश्व का एक गुप्त देश स्थित है, जो तिब्बत कहलाता है। इस देश की ओर अन्वेषण करने के हेतु शताब्दियों से लोग आकर्षित होते रहे हैं। इसमें प्रवेश करने के मार्ग जटिल होने

के कारण इनको कोई विशेष सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि एशिया की महान नदियाँ इसी प्रदेश से निकली हैं, और कुछ प्रसिद्ध झीलें भी यहीं पर पाई जाती हैं। प्राचीन चीन साम्राज्य का यह एक प्रान्त था और अब भी यह चीन में ही सम्मिलित है।

यह गुप्त देश एक उच्च पठार के रूप में पाया जाता है, इसकी ऊंचाई समुद्र-सतह से १२००० से लेकर १६००० फीट है, परन्तु लगभग तीन दर्जन ऐसी शिखायें हैं जो कि २५००० फीट से अधिक ऊँची है। इसके विस्तार का अनुमान हम इस प्रकार लगा सकते हैं—२७° उत्तरी अक्षांश से लेकर ३९° उत्तरी अक्षांश तक, तथा ७८° पूर्वी देशान्तर से लेकर १०२° पूर्वी देशान्तर तक है। इसकी सीमायें निश्चित नहीं हैं। उत्तर में कुनलुन पर्वत श्रेणियाँ तारिम बेसिन तक चली गई हैं। दक्षिण व पश्चिम में हिमालय पर्वत श्रेणियाँ दूर तक एक प्राकृतिक सीमा बनाती हैं। पूर्व में यह और भी अधिक अनिश्चित हैं और यहां पर केवल आड़ी आड़ी श्रेणियाँ सीमा निश्चित करती हैं। पश्चिम में लद्दाख, जो कि काश्मीर के उत्तर-पूर्व में स्थित है, भौगोलिक दृष्टिकोण से तिब्बत का ही एक भाग है। दक्षिण में सिक्किम भी तिब्बत में ही सम्मिलित था, भूटान में इसकी सीमा पाइन व बांस के वनों को पृथक करती है।

तिब्बत का क्षेत्रफल, सीमायें निश्चित न होने के कारण ठीक ठीक नहीं बतलाया जा सकता। आज से लगभग पचास वर्ष पहले लोगों का अनुमान था कि इसका क्षेत्रफल कदाचित् ४६,३००० से लेकर लगभग दस लाख वर्ग मील होगा। श्री ऐल० डी० डडले स्टाम्प का अनुमान सात या आठ लाख वर्ग मील का था।

भौतिक रूप (Physical Aspect)

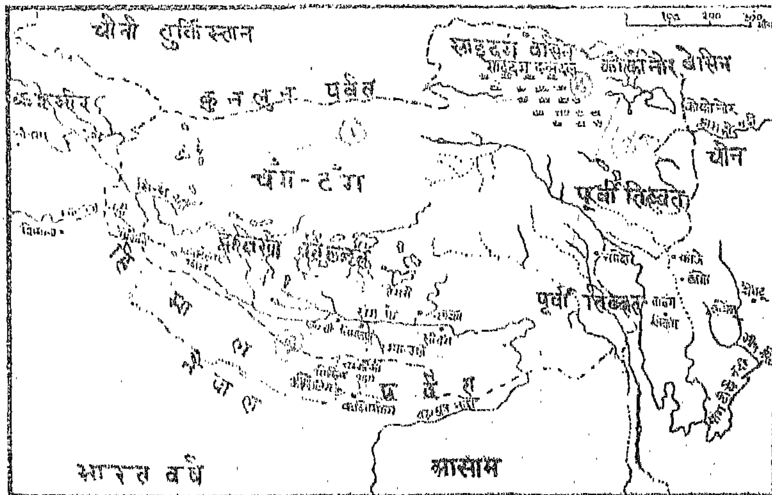
बनावट तथा धरातल (Structure and Relief) :—

भूगर्भ विज्ञान के विद्वानों का मत है, कि तिब्बत के स्थान पर अति प्राचीन काल (Palaeozoic Age) में एक विस्तृत सागर था, जिसका नाम एडवर्ड स्वेस ने 'टिथीज़' (Tethys) बतलाया है। क्रोबर के मतानुसार इस सागर से, उत्तर व दक्षिण के सख्त महाद्वीपों के परस्पर खिसकने पर हिमालय व कुनलुन पर्वत श्रेणियों के फोल्ड उठे हैं। इन दोनों के मध्य का भाग, जिसे हम 'मीडियन मास' (Median Mass) कहते हैं, तिब्बत कहलाने लगा। यह फोल्ड पर्वत तथा 'मीडियन मास' टरशियरी युग के बने हुए हैं। इनमें जो पर्तदार चट्टानें मिलती हैं, उनमें समुद्र में रहने वाले जीव-जन्तुओं की आकृति पूर्ण रूप से देखने को मिलती है। लेकिन कहीं कहीं पर हमको 'हर्सिनियन' व 'दियोनियन' युग की

चट्टानें भी दृष्टिगोचर होती हैं।

श्री एल० डी० डडले स्टाम्प ने तिब्बत को धरातल के अनुसार चार भौतिक विभागों में बाँटा है।

(१) उत्तर के मैदान (चङ्गतङ्ग) :—इस भाग में कई नदियाँ व घाटियाँ पाई जाती हैं। इसकी औसत ऊंचाई १०,००० फीट से अधिक है, लेकिन चोटियाँ व श्रेणियाँ इससे भी अधिक ऊंची हैं। इस भाग के उत्तर में कुनलुन व साइदम (Tsaidam) के स्टेप्स जो कि संगपो (Tsang Po) तक फैले हुये हैं, पाये जाते हैं। चङ्गतङ्ग में विभिन्न प्रकार की झीलें मिलती हैं। इनमें चारों ओर के पर्वतों द्वारा जल आता रहता है। यह झीलें खारी हैं। सोतों से स्वच्छ मीठा जल



तिब्बत के भौतिक विभाग

निकला करता है। बहुत सी झीलों का क्षेत्रफल १०० वर्ग मील से अधिक है। तेन्गरी नोर (Tengri Nor) का क्षेत्रफल १००० वर्ग मील है।

(२) दक्षिणी तिब्बत का क्षेत्र :—इस भाग में उत्तरी सिंध, सतलज, पश्चिम में, घाघरा, संगपो (Tsang Po), दक्षिण-पूर्व में ब्रह्मपुत्र की घाटियां पाई जाती हैं। इनमें से तीन प्रसिद्ध नदियाँ मानसरोवर झील से निकलती हैं। संगपो नदी चार सौ मील तक पठार पर १२००० फीट की ऊंचाई पर बहती है, इसका बहाव एकसा है तथा सम्पूर्ण मार्ग तक नाव चलाने योग्य है।

(३) पूर्वी तिब्बत :—इस क्षेत्र में चङ्गतङ्ग तथा चीनी सीमान्त प्रदेशों के मध्य का भाग सम्मिलित है। चङ्गतङ्ग के पूर्वी ढालों से दक्षिण-पूर्वी एशिया की महान नदियाँ निकलती हैं। उदाहरणार्थ सालवीन, मिकांग तथा यांगटिसी।

थोड़ी दूर उत्तर में ह्वांगहो नदी के निकलने का स्थान है। तीन प्रसिद्ध नदियां, जिनका वर्णन ऊपर किया जा चुका है, तीन समानान्तर गहरी घाटियों में होकर बहती हैं। इन तीनों के मध्य दस या बारह मील का ही अन्तर है।

(४) साइदम का बड़ा बेसिन, व दलदल एवं उत्तर-पूर्व का कोको नोर बेसिन इस खण्ड में सम्मिलित हैं।

जलवायु (Climate) :—

यहाँ की जलवायु पर सबसे गहरा प्रभाव दो तत्वों का पड़ता है, पहला—समुद्र-सतह से ऊंचाई तथा, दूसरा—ऊंची ऊंची पर्वत श्रेणियां। वायुमण्डल यहाँ पर इतना पतला है, कि दिन व रात के तापक्रम में काफी अन्तर पाया जाता है। कभी-कभी ८०° फ० भी रेकार्ड किया गया है। ग्रीष्म ऋतु में ६०° फ० तथा शीत में –४०° फ० ताप अधिक से अधिक व कम से कम पाया जाता है। शीत ऋतु में तीव्र ठण्डी हवायें भी चलती हैं। मानसून हवायें हिमालय पर्वत श्रेणियों के कारण तिब्बत में प्रवेश नहीं कर पातीं। दक्षिण-पूर्व में कुछ मानसून हवायें ब्रह्मपुत्र की घाटी में होकर संगपो के निचले मैदान में प्रवेश कर ग्रीष्म ऋतु में वर्षा करती हैं। रात में यहाँ बहुत गहरा कोहरा पड़ता है। लाशा में एक जलवायु सम्बन्धी सूचनायें रेकर्ड करने का केन्द्र १९३५ में स्थापित किया गया है। इस केन्द्र द्वारा तिब्बत की जलवायु का गहन अध्ययन किया जाता है। लाशा के निकट समान (मध्यम) जलवायु तथा उत्तरी मैदान में ठण्डे रेगिस्तान तथा हिमालय के निकट सम-उष्ण कटिबन्धीय दशायें मिलती हैं।

मानवीय रूप (Human Aspect)

ऐतिहासिक आधार (Historical background) :—

विश्व के इतिहास में तिब्बत का इतिहास भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहां के निवासी मंगोल जाति की तंगत (Tangut) शाखा के हैं। चीन के निवासी तंगत को क्यांग (Kiang) या गड़रिया (Shepherd) कह कर पुकारते थे। लगभग ११०० बी० सी० से पूर्व ही इन लोगों का ऐतिहासिक सम्बन्ध त्यांग-चो से रहा था। इसके निकट चेन-फेन भी एक केन्द्र था, जिसका सम्बन्ध कूकूनोर बेसिन से भी बहुत दिनों तक रहा। कदाचित् इस आमदो पठार पर सब से प्राचीन केन्द्र 'सिह-शिह' (Tsih-shih) या लम्पी स्टोन (Lumpy stones) था। इस केन्द्र की शक्ति दक्षिण में दंगला की ऊँची ऊँची श्रेणियों तथा यालंग के अपर बेसिन तक विस्तृत थी। जब यहाँ के शासकों ने अपनी शक्ति दक्षिण-पश्चिम में सनपो की घाटी (Tsanpo valley) तक बढ़ा ली, तब उन्होंने सिह-शिह (Tsih-shih) का अनुवाद ल्हाथो (Lha-tho) या

(Lumpy stones) में कर दिया, यालंग को यह लोग यारलंग करने लगे, यही इनकी राजधानी थी। लाशा की पहाड़ी पर इन्होंने एक महल बनवाया। इस यारलंग गवर्नमेंट के समय, कहीं पर भी, केवल बोद-पा लोगों को छोड़ कर, मानव स्थापना नहीं थी। हाँ! कहीं कहीं पर चरागाहों के बंजारे अवश्य दृष्टिगोचर हो जाते थे। बहुत ही कम लोग इस पठार पर कृषि करते थे और जो करते भी थे, वह रोंगवा Rongwa (Ravive Folk) कहलाते थे, यह लोग असली पठार के निवासी नहीं थे, बल्कि अति प्राचीन काल में नानशन की गहरी घाटियों में रहा करते थे।

कहा जाता है कि चीनी लोग तिब्बत की ओर सर्वप्रथम ६५० में आकर्षित हुये थे। सन् १२०६ में इस पर चंगेज़ खाँ ने विजय प्राप्त की और सन् १२७० में कुबलाई खाँ ने अपने को लामा-धर्म में परिवर्तित कर लिया तथा पुजारी-राजाओं का शासन स्थापित किया। चीनी लोगों का आतंक सन् १९११ तक रहा। ब्रिटिश लोगों का प्रभाव १६ वीं शताब्दी से आरम्भ हुआ है, इन लोगों ने एक टेलीफोन लाइन भी भारत व तिब्बत के मध्य स्थापित की थी और कभी कभी एक ब्रिटिश मिशन भी तिब्बत जाता था। आज कल तिब्बत, चीन की नवीन गवर्नमेंट की अध्यक्षता में है।

जनसंख्या वितरण (Population Distribution) :—

तिब्बत की जनसंख्या के विषय में भी लोगों में मतभेद हैं। किसी किसी ने तो १० लाख से लेकर ६० लाख तक के आंकड़े दिये हैं, कुछ ने निश्चय रूप से २० लाख बतला दी है। परन्तु वर्तमान तिब्बत की जनसंख्या ४० या पचास लाख से कम नहीं है। इनमें से बहुत से लाशा व तिब्बत की सीमा पर रहते हैं। पश्चिमी तिब्बत एक बंजर व वीरान क्षेत्र है, जनसंख्या का घनत्व यहां केवल १ मनुष्य प्रति वर्ग मील है। शेष अन्य क्षेत्रों में, जो कि पूर्व या दक्षिण की ओर है, परिस्थिति के अनुसार अधिक भी घनत्व पाया जाता है। लाशा नगर में १५००० या २०००० की जनसंख्या है, परन्तु तीर्थ स्थान होने के कारण कभी कभी बढ़ कर वह १००००० भी हो जाया करती है।

आर्थिक रूप (Economic Aspect)

प्राकृतिक वनस्पति (Natural Vegetation) :—

तिब्बत में प्राकृतिक वनस्पति बहुत कम पाई जाती है, क्योंकि अधिक भाग नंगी [illegible] मैदानों तथा पथरीले रेगिस्तानों से ढका हुआ है। अधिकतर यहां पर घाटियां कटीली पत्ती वाले वनों से ढकी हुई हैं। ऊँचे स्थानों पर अल्पाइन वनस्पति दृष्टिगोचर होती है। वास्तव में यदि देखा जाय तो इसी प्रकार की वनस्पति चारों

होती है क्योंकि यह पठार संसार के सब से ऊंचे पठारों में से है, इसलिये यहां ठण्ड अधिक पड़ती है। उत्तर के मैदानी भाग में कहीं कहीं घास उग आया करती है, इसलिए यह जीवजन्तु चराने के हेतु बड़े महत्वपूर्ण हैं। पूर्वी तिब्बत में कुछ वनीय क्षेत्र देखने को मिलते हैं, क्योंकि वहाँ कुछ वर्षा हो जाया करती है। अन्य भागों में जहां कम वर्षा होती है, वहां घास उग आया करती है।

कृषि (Agriculture) :—

तिब्बत का बहुत सा भाग इतना अधिक ऊंचा है, कि फसलों का पकना एक प्रकार से असम्भव हो जाता है। इस पठार की ऊँचाई पश्चिम तथा उत्तर की ओर अधिक है और पूर्व व दक्षिण की ओर कम है। दक्षिण-पूर्व में कुछ स्थान तो ऐसे हैं, जो कि समुद्र सतह से ५००० फीट से भी कम नीचे हैं। पूर्वी भाग की जलवायु भी कृषि के लिये लाभदायक है। यहाँ पर जौ, गेहूं, मटर, मक्का इत्यादि की कृषि की जाती है। जौ अधिकतर पश्चिम तथा दक्षिण की ओर, गेहूं तथा मटर मध्य के भाग में विशेष तौर पर उत्पन्न किये जाते हैं। चावल भी कई स्थानों पर जहां वर्षा उपयुक्त मात्रा में हो जाती है, बोया जाता है। अधिकतर कतारोंदार खेत पर्वतीय ढालों पर मिलते हैं। यहाँ आलू, मूली, गाजर इत्यादि तरकारियां भी बोयी जाती हैं। कृषि करने के ढंग यहाँ अति प्राचीन हैं, परन्तु फिर भी यहां के मेहनती लोग कृषि बड़े परिश्रम से करते हैं।

जीव-जन्तु (Livestock) :—

तिब्बत के पठार पर कई प्रकार के जीव-जन्तु भी पाये जाते हैं। इनमें से सब से प्रसिद्ध याक है, परन्तु गदहे, खच्चर, भेंड़, ऊँट, बकरी तथा बकरों की संख्या भी कम नहीं है। बड़े बड़े बालों वाले जीव जन्तु भी यहां देखने को मिलते हैं। यहां के निवासी आर्थिक दृष्टिकोण से उनका शिकार करते हैं। इन जीव जन्तुओं से खाल, चमड़ा, हड्डी तथा मांस इत्यादि प्राप्त किया जाता है, कुछ दूध देने वाले पशुओं से दूध, मक्खन, पनीर भी यहां के लोग तैयार करते हैं। सब से महत्वपूर्ण पशु याक है, क्योंकि यहां की ऊंची नीची भूमि पर यही आसानी से चल सकता है।

खनिज-सम्पत्ति (Mineral wealth) :—

यहां पर खनिज पदार्थ बहुत कम पाये जाते हैं, क्योंकि यहां का ढाँचा व धरातल तरशियरी युग का बना हुआ है; अधिकतर नमक, सोडा, बोरेक्स इत्यादि यहां की खारी झीलों से प्राप्त किया जाता है, जैसे [illegible] [illegible] ने बत-लाया है, कि यहां पर तरशियरी युग की कोयले की खानें भी पाई जाती हैं। परन्तु

अधिक ऊंचाई व पथरीले क्षेत्र होने के कारण यह निकाला नहीं जाता। अन्य धातुओं के विषय में अनुमान लगाया जाता है, कि पूर्वी भाग में कहीं कहीं पर लोहा, तांबा, रांगा, सोना व चांदी भी पाये जाते हैं। लोगों का विचार है कि कदाचित् पेट्रोल भी यहां पूर्व की ओर निकाला जा सकता है। परन्तु तिब्बत के भाग में अभी तक खनिज पदार्थों का निकालना आरम्भ नहीं हुआ है।

उद्योग-धन्धे (Industries) :—

इस देश में जो कुछ भी उद्योग पाये जाते हैं, वह घरेलू उद्योग के रूप में ही हैं। आधुनिक उद्योगों की तो झलक ही दृष्टिगोचर नहीं होती। घरेलू उद्योगों में कपड़ा तैयार करना, चमड़े व खाल की वस्तुयें बनाना तथा बर्तन इत्यादि बनाना है। कुछ घरेलू उद्योग अधिक उन्नति कर गये है और लाशा, सीतंग तथा ग्यान्तसी में पाये जाते हैं। कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय उपजों के आधार पर यह उद्योग प्रगति कर रहे हैं। आज कल चीन, तिब्बत के औद्योगिक विकास में काफी सहायता दे रहा है।

यातायात के साधन (Means of Transport & Communication :—

तिब्बत के निवासी बड़े अच्छे व्यापारी हैं, इसीलिये यहां पर कई महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग पाये जाते हैं। मुख्य सड़कें लाशा पर आकर ही मिलती हैं। एक सड़क श्रीनगर-लेह-सिगात्सी-लाशा है, इसको दूसरे शब्दों हिन्दुस्तान-तिब्बत सड़क भी कह सकते हैं; क्योंकि यह लेह के स्थान पर शिमला को जाने वाली सड़क से मिली हुई है, दूसरी महत्वपूर्ण सड़क दार्जिलिंग में स्थित कलिम्पोंग से आरम्भ होती है और चुम्बी घाटी में होकर पारी तक तथा यहां से लाशा को दो मार्ग जाते हैं। एक मार्ग आसाम से सीतंग होता हुआ लाशा जाता है। उत्तर की सड़क २०,००० फीट ऊंचे पर्वतों को पार करके उत्तर-पूर्व में तान्गार तक जाती है। कारवाँ द्वारा यह मार्ग पचास दिन में पूरा किया जा सकता है। ग्रीष्म ऋतु में याक चङ्गतङ्ग पर इस्तेमाल किया जाता है तथा ऊंट शीत ऋतु में। चीनी सड़क जिसे दूसरे शब्दों में "टी रोड" भी कहते हैं, लाशा से पूर्व की ओर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों व गहरी घाटियों को पार करती हुई जाती है। यह सड़क ग्याम्दा, चमदो, बातंग तथा लितांग से चैंगटू के पश्चिम में स्थित ततसिएन्लु* तक जाती है। क्योंकि यह सड़क पर्वत श्रेणियों के समकोण पर होकर जाती है, इसलिए यह बड़ी कठिनाई का मार्ग है, परन्तु फिर भी यातायात खूब होता है। पश्चिम की ओर जो आगे संग्पो की घाटी द्वारा मानसरोवर झील होता हुआ गारतोक तथा लेह तक

*Tatsienlu :—Is on the ellinographic frontier between Tibet and China and the chief entrepot of trade.

जाता है तथा जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है, ६०० मील लम्बा है और भी अधिक पश्चिम में कुछ ऐसे भी मार्ग हैं जो कि भारत को सिक्यांग से बुजिल व हुन्ज घाटियों द्वारा मिलाते हैं। दो अन्य महत्वपूर्ण मार्ग चीन व तिब्बत के मध्य २० दिसम्बर १९५४ को खोल दिये गये हैं और अब यह आशा की जाती है इन दोनों देशों में व्यापार और भी बढ़ जायगा।

व्यापारिक साधन :—

तिब्बत एक ऐसा देश है, जो कि विश्व के अन्य देशों से अलग है। इस पर किसी भी देश की संस्कृति का प्रभाव नहीं पड़ा है। आरम्भ से ही यह लोग अपने निकटवर्ती देशों से व्यापार करते आये हैं। व्यापार करने के साधन यहाँ के पशु ही हैं। याक, ऊँट, खच्चर व गदहे अधिकतर प्रयोग किये जाते हैं। याक लम्बे लम्बे बालों वाला पशु है, देखने में अजीब सा मालूम होता है। याक अथवा खच्चर दो मन से अधिक सामान ढो सकते हैं और एक दिन में २० या २५ मील चल सकते हैं; इनके मुकाबिले गदहे केवल १० या १५ मील ही प्रति दिन चल पाते हैं। भेड़ व बकरी भी बोझा ढोने के काम में लाई जाती हैं, परन्तु यह १० या १५ सेर से अधिक बोझा नहीं ढो सकतीं। याक तिब्बत के धरातल के लिये बहुत ही अनुकूल पशु है।

व्यापार (Trade) :—

वास्तव में तिब्बत एक ऐसा देश है, जो कि बहुत कम वस्तुओं का व्यापार करता है। खाने पीने की वस्तुओं में खाद्यान्न तथा चाय आयात की जाती है, इसके अतिरिक्त कुछ तैयार की हुई वस्तुयें भी बाहर से मंगाई जाती हैं। जो वस्तुयें यहाँ से निकटवर्तीय देशों को भेजी जाती हैं, उनमें ऊन, चमड़ा, व चमड़े की वस्तुयें, समूर तथा ऊनी कपड़े इत्यादि हैं। अधिकतर व्यापार भारतवर्ष, चीन व बर्मा से होता है। वर्ष में दो बार कोकोनोर के निकट कारवां सुरक्षा के हेतु रुक जाता है और व्यापारी तथा तीर्थयात्री लासा जाने के लिये कमर कसते हैं। ऊँट लासा तक आसानी से आ जाते हैं।

लासा (Lhasa) :—

तिब्बत की राजधानी लासा जो कि अनेक व्यापारिक मार्गों का केन्द्र है, एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। यहां के लोग इसकी यात्रा करने के हेतु प्रति वर्ष आते हैं। सन् १९०४ के पहले यहाँ केवल एक ही अंग्रेज बड़ी कठिनाई से पहुंच पाया था, परन्तु बाद में और भी कई पहुंच गये। यह एकान्त नगर एक घाटी में स्थित है और इसमें बहुत ही तंग सड़कें व चपटी छतों वाले मकान मिलते हैं। बाग़ बगीचे, जिनमें तरकारियां सेव तथा गोभियां इत्यादि उगते हैं, काफी मात्रा में पाये जाते हैं। घरों में कई खिड़कियाँ होती हैं, इनमें शीशे के स्थान पर महीन कपड़ा

लगाया जाता है। यहाँ पर एक छोटी सी पहाड़ी के ऊपर दलाई लामा का शानदार महल 'पोटाला' बना हुआ है। इसमें लाल व पीले रंग के कमरे हैं, शेष महल सफेद रंग का पुता हुआ है। धार्मिक कार्य के हेतु दलाई लामा बुलाये जाते हैं। दलाई लामा अपना बहुत सा समय एक और महल में, जो 'नोर्बु लिंगका' कहलाता है, व्यतीत करते हैं। आजकल लासा में बिजली भी है और साथ ही साथ टेलीफोन इत्यादि भी हैं। प्रति वर्ष इस नगर में धार्मिक उत्सव मनाये जाते हैं, दूर दूर के लोग इस समय यहाँ इसमें सम्मिलित होने के लिये आते हैं।

राजनैतिक रूप (Political Aspect)

तिब्बत के राजनैतिक इतिहास पर यदि दृष्टि डाली जाय तो प्रतीत होगा कि उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक यहाँ कोई भी योरोपियन नहीं पहुंच पाया था। सम्भवतः लोग अधिक ऊंचाई व कठिन मार्गों के कारण वहां न पहुंच सके हों। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि यहाँ के लोगों ने शान्तिपूर्ण साधनों से विदेशी सभ्यता के आक्रमणों को रोका है। उदाहरणार्थ भारतीय सरकार के प्रयत्न जो कि उसने १८७२ व १८७३ में किये थे, बड़ी सफलतापूर्वक रोक दिये गये थे। लेकिन १९१० में चीन ने बड़ी आसानी से लासा अपने अधिकार में कर लिया और दलाई लामा भारतवर्ष भाग आये। उनका यहाँ बड़ा सम्मान हुआ, कई अंग्रेज अधिकारी उनके मित्र हो गये और धीरे धीरे बाद में जब १९१२ में पुनः तिब्बत स्वतन्त्र हो गया तो यह लोग इसमें प्रवेश कर गये।

आजकल यहाँ लामावादी (Lamism) लोग रहते हैं, इनके राजनैतिक व आत्मिक जीवन का आधार लामा ही हैं। ये लोग पञ्चम लामा तथा तशी लम्पो लामा के नेतृत्व में हैं। तशी लम्पोलामा को ये अपना गुरू मानते हैं। लेकिन इनमें राजनैतिक दृष्टिकोण से अधिक शक्तिशाली दलाई लामा ही है, इसको यहाँ के लोग साक्षात् भगवान का स्वरूप मानते हैं। उनके मतानुसार बौद्ध की आत्मा दलाई लामा में पाई जाती है। दलाई लामा के निवास स्थान के विषय में हम पहले ही बतला चुके हैं। यह बहुत ही कम जनता के सम्मुख प्रकट होता था। किन्तु आजकल दलाई लामा चीन की नवीन सरकार के अन्तर्गत है और प्रायः पेकिंग आते जाते रहते हैं।

सांस्कृतिक रूप (Cultural Aspect)

जाति तथा धर्म (Race and Religion):—

हम इस बात का वर्णन कर चुके हैं कि यहाँ के निवासी मंगोल जाति की एक तातार शाखा के हैं। इनका मौलिक रूप रंग एक साधारण मंगोलियन से

बहुत कुछ मिलता जुलता है। यह देखने में ठिगने, स्वस्थ तथा हृष्टपुष्ट होते हैं। इनका मुंह चपटा, गोल तथा आँखें बादाम के आकार की छोटी छोटी होती हैं। साथ ही उनके होंठ मोटे तथा नाक चपटी होती है। वह साधारणतः बहुत सीधे व भोले भाले होते हैं। परन्तु साथ ही अपने वातावरण के प्रभाव से बड़े मेहनती व निडर भी हो जाते हैं।

यहां के लोग बौद्ध धर्म को मानते हैं। यह धर्म यहां भारतवर्ष से सातवीं या नवीं शताब्दी में प्रचलित हुआ था। इसमें कुछ परिवर्तन भी किये जा चुके हैं। परन्तु ये बहुत कुछ सीमित हैं। सोंग कापा ने जो कि १३५८ में उत्पन्न हुआ था, बहुत से सुधार किये। किन्तु दो शताब्दी बाद ही सोनाम ग्यात्सो, जिसने कि मंगोल सरदार अल्तान खाँ से दलाई लामा वज्रधारा का खिताब प्राप्त कर लिया था, ने भी अनेकों धर्म सम्बन्धी सुधार किये। लामा को मानने वाले यही लोग यहाँ के धार्मिक राजा हुए और इन्हीं लोगों ने शासन किया। यहां पर बौद्ध धर्म का इतना अधिक प्रचार है, कि तमाम जनसंख्या बौद्ध भिक्षुओं से भरी पड़ी है। लोग अधिकतर अपना समय अध्ययन में या गूढ़ विचार करने में व्यतीत करते हैं।

एक धार्मिक विचार इनका यह है, कि जब कोई बौद्ध भिक्षु मर जाता है, तो उसकी आत्मा उसी समय उत्पन्न हुए बच्चे में प्रवेश कर जाती है। इसलिए ये लोग ऐसी स्त्रियों की खोज में रहते हैं, जिनके कि बच्चा उत्पन्न होने की आशा होती है। ऐसे बच्चों के नाम रख लिये जाते हैं और लकड़ी पर खोद कर उसे एक सोने के कलश में रख देते हैं। जब बच्चा बड़ा होता है, तो यदि वह लामा वंश का हुआ, तो राजगद्दी पर बैठा दिया जाता है, अन्यथा उसे भिक्षुक बनने की शिक्षा दी जाती है।

चरित्र तथा रीति रिवाज (Character and Traditions):—

कुछ लोगों का यह विचार है कि तिब्बत के निवासी बड़े क्रूर, स्वार्थी तथा नीच प्रकृति के होते हैं, लेकिन सर चार्ल्स बेल ने कहा है कि हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि यह लोग १२००० फीट से लेकर १५००० फीट की ऊँचाई तक रहते हैं जहां बहुत ही कठोर सर्दी पड़ती है। तिब्बत के लोगों के पास घर गर्म रखने के कोई विशेष साधन नहीं होते हैं, यदि वह बाहरी सफाई नहीं रख सकते तो भिक्षुक अपने हृदय की सफाई अवश्य ही रखते हैं। एक बार दलाई लामा ने भी एक यात्री को बतलाया कि यहाँ के लोगों का एक सबसे बड़ा दोष यह है, कि ये उसी क्षण बिना सोचे समझे काम करना चाहते हैं।

यदि सम्पूर्ण तिब्बत को देखा जाये, तो यहाँ के लोग बड़े नियमित होते हैं। यहाँ तक कि लुटेरे को भी राज्य के नियमों का पालन करना पड़ता है। बहुत से लुटेरे वर्ष के आधे समय तक लुटेरे रहते हैं। वे लम्बे मार्गों पर जाने वाले

यात्रियों को लूट लेते हैं। शेष आधे समय तक, जब यह लाशा जाते हैं, तब शांतिपूर्ण व्यापारी हो जाते हैं। कुछ तो अपने क्षेत्र में लुटेरे तथा दूसरे क्षेत्र में व्यापारियों का कार्य करते हैं।

इन लोगों के यहाँ पोलिगेमी (Polygamy) की प्रथा प्रचलित है। धनवान जमींदार कई कई पत्नियाँ रख सकते हैं, साथ ही स्त्रियाँ भी अनेक पति रख सकतीं हैं। यह सब लोग कार्य करने में व्यस्त रहते हैं। एक साधारण तिब्बत के निवासी का जीवन एक भिक्षुक समान होता है। वह धर्म से बहुत गहरा सम्बन्ध रखता है, परन्तु उसका उतना सम्मान नहीं होता जितना कि एक वास्तविक भिक्षुक का होता है।

यहाँ के लोगों का मुख्य भोजन याक व बकरे का मांस, जौ का आटा, पनीर तथा मक्खन इत्यादि है। परन्तु चाय के सम्मुख इनका स्थान गिरा हुआ है। यहां चाय का अधिक सेवन होता है। एक एक मनुष्य तीस से लेकर साठ प्याले तक चाय दिन भर में पी जाता है। साधारणत: चाय छोटी छोटी ईंटों के आकार में परिवर्तित कर ली जाती है, और इसे लोग हजारों मीलों की यात्रा के समय अपने साथ रखते हैं। यह ईंटें मुद्रा (Currency) के रूप में भी प्रयोग की जातीं हैं।

प्राकृतिक प्रदेश (Natural Regions) :—

डा० केसे ने तिब्बत के सात निम्नलिखित प्राकृतिक विभाग किये हैं :—

(१) दक्षिण में हिमालय का भाग, जिसकी तीन समानान्तर श्रेणियां हैं।
(२) पश्चिम में कराकोरम हिमालय तथा कुनलुन के मध्य में।
(३) हिमालय के उत्तर में सांग पो की घाटी।
(४) उत्तरी तिब्बत का भाग जिसे चङ्गतङ्ग का पठार कहते हैं।
(५) उत्तर में अल्टाइन टैग तथा कुनलुन की श्रेणियां।
(६) उत्तर-पूर्व में सेदम और कोकोनोर के बेसिन, जो कि अल्टाइन टैग तथा कुनलुन के मध्य स्थित हैं।
(७) गहरी गहरी खाइयों तथा घाटियों वाला तिब्बत के पूर्व का क्षेत्र, जिसे दूसरे शब्दों में केम (Kam) कहा जाता है।

(१) तिब्बत के दक्षिण में हिमालय पर्वत की श्रेणियों का विस्तार लगभग १५०० मील है। इसमें तीन समानान्तर श्रेणियां पश्चिम से पूर्व तक फैली हुई हैं। दक्षिण में बाहरी श्रेणियों की ऊँचाई ५,००० फीट है, जिसमें शिवालिक व नेपाल की पहाड़ियां सम्मिलित हैं। इस बाहरी श्रेणी के उत्तर में कम ऊंचे (Lesser) हिमालय की श्रेणियाँ पाई जाती हैं। इसमें १५,००० फीट तक की ऊंची चोटियाँ

पाई जाती हैं। और अधिक उत्तर में जाने से ऊँची ऊँची (Greater) हिमालय की श्रेणियां दृष्टिगोचर होतीं हैं। इन पर २००० फीट से अधिक ऊंची चोटियां स्थित हैं। यहाँ पर ऐवरेस्ट, किंचिनजंगा तथा नन्दा देवी उल्लेखनीय चोटियां हैं, यह तीनों २५००० फीट से अधिक ऊंची है।

(२) पश्चिम में कराकोरम पर्वत श्रेणियां हैं जिन पर कि विश्व की द्वितीय नम्बर की ऊंची चोटी स्थित हैं। यहां बहुत विस्तृत ग्लेशियर भी देखने को मिलते हैं। इन ग्लेशियरों के कारण यह भाग ध्रुवीय भागों को छोड़ कर विश्व में सबसे अधिक बर्फीला है। कराकोरम की घाटी, जो कि कदाचित् संसार की सबसे ऊंची घाटियों में से है, इसी क्षेत्र में पाई जाती हैं।

(३) वास्तव में अपर ब्रह्मपुत्र नदी का भाग ही, दूसरे शब्दों में संग पो कहलाता है। तिब्बत के निवासियों ने ही इसको यह नाम दिया है। यदि ध्यान-पूर्वक देखा जाये तो यहीं मध्य तिब्बत का भाग है, जहां कि लाशा स्थित है। यहां अन्य तिब्बत के नगर भी पाये जाते हैं। यहीं पर सब से अधिक जनसंख्या मिलती है, और संगपो नदी पश्चिम से पूर्व की ओर १२००० फीट की ऊंचाई के क्षेत्र में होकर बहती है। इस नदी में लगभग ४०० मील तक नावें चलाई जा सकती हैं। यह भाग तिब्बत के शेष भाग से कम ऊंचा है।

(४) चङ्गतङ्ग के भाग में तिब्बत का सबसे अधिक भाग सम्मिलित है। इस भाग में बहुत से बंजर बेसिन व पर्वत श्रेणियाँ पाई जातीं हैं। यहां तीव्र हवाओं सूर्य की किरणों तथा कोहरा आदि का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। चङ्गतङ्ग में अनेक झीलें व सोते पाये जाते हैं। बहुत सी तो सोडा या नमक की पपड़ी के कारण श्वेतवर्ण की बड़ी सुन्दर दृष्टिगोचर होतीं हैं। कुछ तो झीलों के बजाय केवल ऐसे गड्ढे हैं, जिनके चारों ओर नमक, पोटाश, सोडा तथा बोरेक्स मिलता है। यह बड़ी आसानी से खोदा जा सकता है। तेंग्री नोर यहां की सबसे बड़ी झील है। इसका क्षेत्रफल ६५० वर्ग मील है। चङ्गतङ्ग वनस्पति के दृष्टिकोण से एक बिल्कुल बेकार क्षेत्र है, क्योंकि यहां आठ माह तक बर्फ जमी रहती है, शेष चार महीनों में दलदल पाये जाते हैं। इसका कारण यह है कि पानी बहने के लिये कोई भी मार्ग नहीं है। पूर्व से पश्चिम तक जो श्रेणियां फैली हैं उनमें दक्षिण की श्रेणी सबसे अधिक बड़ी है। यह कैलास के नाम से प्रसिद्ध है। श्री स्वेन हेडिन ने इसका नाम ट्रांस हिमालया दिया है। इस की औसत ऊँचाई हिमालय से अधिक है, परन्तु दुर्भाग्य से वे चोटियां इतनी ऊँची नहीं हैं, जितनी कि हिमालय की। उत्तर में तङ्ग ला दगातुरा तथा औंकाशिओ की श्रेणियां पाई जाती हैं।

(५) तिब्बत के उत्तर में कुनलुन तथा अल्टाइन टैग की श्रेणियां फैली हुई हैं। यह दोनों पामीर के निकट एक दूसरे से मिल गई हैं, परन्तु पूर्व में एक

दूसरे से पृथक हो गई हैं। उत्तर में अल्टाइन टैग तारिम बेसिन से उठी हैं। इनकी ऊँचाई १७,००० फीट के लगभग है। इसकी पूर्वी श्रेणियां चीन में नानशान के नाम से प्रसिद्ध हैं। रिक्टोफन पर्वत की श्रेणी भी इसी का अंग है। कुनलुन पर्वत पश्चिम में २०,००० फीट ऊँची अनेक शिखायें प्रकट करता है, परन्तु पूर्व में यह नीची होती गई है, और यह आमनी माचिन कहलाती हैं। चीन के दक्षिण में जब यह पहुंचती हैं, मिन व सिंगलिंग पर्वत श्रेणियों के नाम से प्रसिद्ध हो जाती हैं।

(६) इस क्षेत्र में कोकोनोर तथा साइदम के बेसिन सम्मिलित हैं। यह चारों ओर से अल्टाइन टैग तथा नानशान पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ है। अल्टाई टैग एक वीरान दलदल है, जो कि ६,००० फीट की ऊंचाई पर स्थित है। नानशान के क्षेत्र में १०,४०० फीट की ऊँचाई पर एक बहुत सुन्दर झील है। यह कोकोनोर कहलाती है, इसका क्षेत्रफल लगभग १००० वर्ग मील है, और यह तिब्बत की कदाचित सबसे बड़ी झीलों में से एक है। इसका जल खारी है। इस क्षेत्र में थोड़े से बंजारों की बस्तियां भी दृष्टिगोचर होती हैं।

(७) पूर्वी तिब्बत का भाग बहुत ही ऊंचा नीचा है। इसमें अनेक गहरी घाटियां तथा ऊंची चोटियां दृष्टिगोचर होती हैं। यह अधिकतर उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व तक फैली हुई हैं। यहां के निवासी इसे केम कहते हैं। इसी क्षेत्र में बहुत गहरी घाटियां बनाती हुई इरावदी, सालवीन, मिकोंग, यांगटिसी तथा हांग नदियां अपनी सहायक नदियों सहित बहती हैं। यद्यपि इस क्षेत्र की ऊंचाई, इनकी घाटियों से, लगभग एक मील है, परन्तु फिर भी इन्होंने कोई समतल भाग इस क्षेत्र में नहीं बनाया। लोग अधिकतर लगभग १०००० फीट की ऊंचाई पर रहते हैं। यह क्षेत्र वनों से ढका हुआ है, क्योंकि यहां वर्षा अधिक मात्रा में हो जाती है।

दक्षिण-पूर्व में ब्रह्मपुत्र तथा अन्य नदियां इस पठारी क्षेत्र में एक दूसरे से ४०० मील दूर हैं, परन्तु [illegible] करतीं हैं, तब एक दूसरे से इनकी दूरी दो हजार मील से भ[illegible]। क्योंकि प्रत्येक नदी एक गहरी घाटी में होकर बहती है, तथा दो घाटियों के मध्य का भाग काफी ऊंचा होता है, इसलिये चीन तथा भारत के मध्य कोई भी थल मार्ग सम्भव नहीं है।

दूर पूर्व में चीन के प्रान्त जैचवान व यूनान को जो पर्वत घेरे हुये हैं, वे 'ग्रेट स्नोई' पर्वतों के नाम से प्रसिद्ध हैं। इसका कारण यह है कि इनकी अनेकों चोटियां बीस हजार फीट से अधिक ऊंची हैं तथा कई बड़े बड़े ग्लेशियरों के कारण चारों ओर बर्फ ही बर्फ दृष्टिगोचर होती है। इन पर सबसे ऊंची शिखा मिन्या गोन्कर है जिसकी ऊंचाई २५,२५० फीट है।

सिक्यांग (Sinkiang)

एशिया के मध्य का भाग जो कि मुख्य चीन के पश्चिम में है सिक्यांग कहलाता है। इसे दूसरे शब्दों में हम चीनी तुर्किस्तान भी कह सकते हैं। इसका क्षेत्रफल लगभग ६६०८०५ वर्ग मील है। एशिया के इस मृतक अंग में कई ऊंची ऊंची पर्वत श्रेणियां, रेगिस्तान, बंजर भूमि तथा चारों ओर से घिरे हुये कई बेसिन पाये जाते हैं। इसकी तुलना हम रूसी तुर्किस्तान से भली भांति कर सकते हैं। दोनों क्षेत्र ढांचे तथा धरातल में लगभग एक से ही हैं दोनों में पर्वत श्रेणियां मैदान में इस प्रकार से सीधी खड़ी हुई हैं, कि घाटियां काफी ऊंचाई पर पाई जाती हैं। उदाहरणार्थ-किजिल आर्ट (१४०००) तथा तिरेक (१२७०० फी०) यहां तक कि दोनों भागों में उच्च शिखायें भी लगभग एक ही (२३००० फी०) ऊंचाई की हैं। दोनों भागों में निचले भाग समुद्र की सतह से नीचे हैं। जुंगेरियन निचले मैदान की तुलना बालकश मैदान से की जा सकती है। जलवायु के दृष्टिकोण से भी दोनों भाग मिलते जुलते हैं। इसका प्रभाव दोनों भागों के जलाशयों पर भी लगभग समान पड़ता है। दोनों तुर्किस्तानों की नदियां समुद्र में नहीं गिरतीं, बल्कि बहुत सी तो पहले ही पृथ्वी में समा चुकी हैं, और अब, कई दलदल में या साधारण भूमि में समा जातीं हैं। झीलें बराबर सूख रही हैं, और बहुत सी तो सूख कर मैदानों के रूप में भी परिवर्तित हो गई हैं। इस प्रकार से हम देखते हैं कि दोनों भागों में के भूतल में परिवर्तन हो रहे हैं। वर्षा व तापक्रम की दशा भी दोनों में लगभग समान ही है। वर्षा का अभाव होने के कारण तापक्रम में बहुत अन्तर पाया जाता है। सिक्यांग का दक्षिणी भाग जो कि तारिम बेसिन के नाम से प्रसिद्ध है, रूसी तुर्किस्तान के तूरान बेसिन से मिलता जुलता है। अधिक शुष्क ऋतु होने के कारण छोटी छोटी सी सहायक नदियां जिस प्रकार से तारिम नदी में नहीं मिल पातीं, वैसे ही तूरान बेसिन में भी सैकड़ों ऐसी सहायक नदियां हैं, जो कि आमू या सर नदियों में नहीं गिर पातीं। गत वर्षों में इन नदियों में कुछ परिवर्तन भी हुये हैं। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो कुछ ऐसी भी विशेषतायें इन दोनों भागों में मिलती हैं, जो कि एक दूसरे से भिन्न हैं। यह विशेषतायें भौतिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक हैं। नीचे हम केवल उस भाग को अध्ययन कर रहे हैं जो कि एक प्रकार से एशिया का मृतक हृदय है, तथा जो सिक्यांग के नाम से प्रसिद्ध है।

भौतिक रूप (Physical Aspect)

ढांचा तथा धरातल (Structure and Relief)

सिक्यांग की बनावट के विषय में अभी विद्वानों में मतभेद है, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि नीचे का ढांचा विभिन्न युगों की चट्टानों का बना हुआ है। इस

क्षेत्र के बेसिनों के विषय में कहा जाता है, कि तरशियरी युग के पहले यह समुद्र के रूप में थीं, कुछ लोगों का यह भी मत है, कि प्लीस्टोसीन ग्लेशियर के कारण इनका निर्माण हुआ है। पर्वत श्रेणियां अधिकतर पर्तदार चट्टानों की हैं। कुछ लोगों का मत है, कि यह तरशियरी युग की उठी हुई हैं। लेकिन इसमें सन्देह नहीं कि इस भाग में कहीं कहीं हरशीनियन व दिवोनियन युगों की चट्टानें भी दृष्टिगोचर होती हैं।

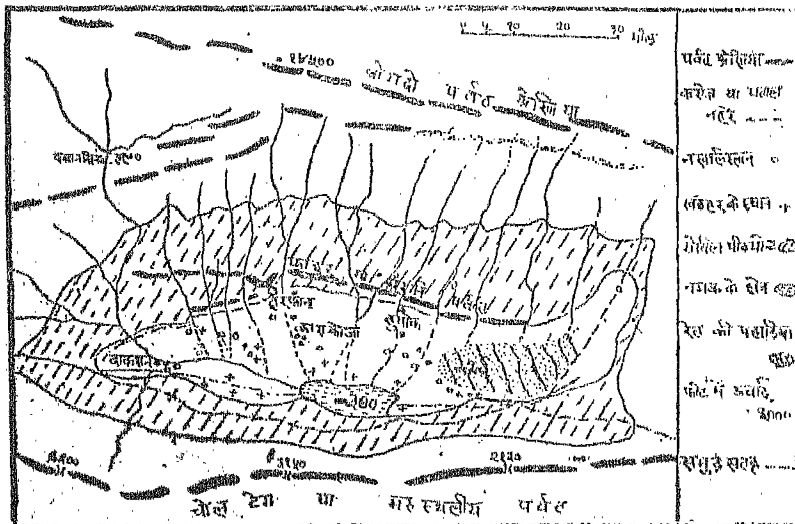
यहां की प्रमुख पर्वत श्रेणी जो कि लगभग १००० मील लम्बी है, त्यानशान है, पश्चिम में यह सोवियट रूस तक बिस्तृत है। तिब्बत के उत्तर में कदाचित् यह सबसे ऊंची पर्वत श्रेणी है। सिक्यांग में सबसे ऊंची शिखायें, इस श्रेणी पर दो हैं, पहली श्वांन तेंगरी पश्चिम में, तथा दूसरी बोगदा ओला पूर्व में। यहाँ कई ग्लेशियर पाये जाते हैं। सिक्यांग का धरातल बहुत ऊंचा नीचा है। कहीं कहीं पर ऊंचे उठे हुये 'पेनी प्लेन' अथवा समतल मैदान और कहीं पर चोड़ी घाटियां भी पाई जाती हैं। त्यानशान पर्वत पश्चिम में विभाजित हो जाते हैं और उपजाऊ ईली घाटी को चारों ओर से ढक लेते हैं। ईली नदी बालकश झील में में गिरती है। चीनी इतिहास में यह ईली नदी की घाटी देश निकाले हुये लोगों के निवास स्थान के नाम से प्रसिद्ध थी। सिंगक्यांग के अन्य पर्वतों में अल्टाई जो कि उत्तर में मंगोलिया में है, तथा अल्टाई टैग जो दक्षिण में तिब्बत की सीमा तक है, बहुत प्रसिद्ध हैं। पश्चिम में सोवियत रूस की सीमा पर कई श्रेणियाँ हैं, जो कि तारिम बेसिन को भी चारों ओर से घेरे हुये हैं। इनके मध्य केवल तीन ही निचले भाग हैं। प्रथम उत्तर में ब्लेक आइतिश, जो कि समुद्र सतह से १५०० फीट है। द्वितीय, अल्ताई, तथा तृतीय हरबागताई के मध्य है। दक्षिण में चुगचुक, यद्यपि अधिक नीचा नहीं है, परन्तु काफी उपयोगी है। 'ज़ुंगेरिया ग्रेट' जो कि १०६० फीट ऊंचा है, एक गहरी घाटी है, जिसके एक तरफ तरबागताई तथा दूसरी ओर ज़ुंगेरियन अल्ताऊ है। बाद वाली त्यानशान की सबसे उत्तरी शिखा है। यह भूमण्डल पर सबसे निचली घाटी है और ठण्डी तीव्र हवाओं के लिये बहुत प्रसिद्ध है।

नदियां व झीलें (Rivers and Lakes) :—

सिक्यांग की प्रमुख नदी तारिम है, अन्य छोटी छोटी नदियां जो इस क्षेत्र में पाई जाती हैं वह तारिम नदी तक पहुंचने की चेष्टा करती हैं। बहुत सी तो पहुंचते पहुंचते सूख जाती हैं, और या पृथ्वी में समा जाती हैं। कुछ का सम्पूर्ण जल सिंचाई के हेतु ले लिया जाता है। परन्तु इनके किनारों पर कृषि नहीं की जाती। पूरा बेसिन ही तारिम के नाम से प्रसिद्ध है। इसके मध्य का शुष्क भाग तकलामाकन रेगिस्तान के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ पर चारों ओर दूर दूर तक रेत की झाड़ियां दृष्टिगोचर होती हैं। इस भाग में केवल एक ही नदी पाई जाती है।

शेष भाग इतना शुष्क व रेतीला है, कि इस पर से होकर यात्रा करना कदापि सम्भव नहीं है। महीन महीन मिट्टी जो कि चट्टानों से घिस घिस कर बनी है चारों ओर के पर्वतीय ढालोंपर लोयेस के रूप में एकत्रित हो गई हैं।

यहां की प्रसिद्ध झील लोपनोर है, तारिम नदी इसी में आकर गिरती है। इस नमकीन झील का एक अद्वतीय इतिहास है। लगभग दो हजार वर्ष पहले यह एक ऐसे स्थान पर थी, जो कि ९०° पूर्वी देशान्तर तथा ४१° उत्तरी अक्षांश के मध्य था। इस स्थान पर अब एक उजाड़ व्यापारिक नगर लाओलन स्थित है। बाद में झील उस स्थान के दक्षिण की ओर ८८° पूर्वी देशान्तर तथा ३९° उत्तरी अक्षांश तक पहुंच गई। स्वेन हेडिन ने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि तारिम नदी अपने प्राचीन मार्ग पर आगई है, और लोपनोर भी अपनी वास्तविक स्थिति पर आ चुकी है। इस परिवर्तन का कारण टूटी फूटी चट्टानों का जमा हो जाना बतलाया गया है। इस बेसिन के अतिरिक्त एक और गड्ढा है जो कि समुद्री सतह से ९२८ फीट नीचा है, तरफान गड्ढे के नाम से प्रसिद्ध है।



तरफान बेसिन (हंटिंगटन पर आधारित)

त्यानशान के उत्तर में जुंगेरिया बेसिन है, यह तारिम बेसिन से पूर्णतः भिन्न है। यह समतल भाग पश्चिम व पूर्व में खुला हुआ है, इसमें कोई भी विशेष नदी नहीं हैं। केवल एक नदी, जो मानस के नाम से प्रसिद्ध है, कभी कभी तेलानोर झील में जिसकी ऊंचाई समुद्र सतह से ९५१ फीट है, से जाकर गिरती है। आज से सत्ताईस वर्ष पहले यह झील बिल्कुल सूखी पड़ी थी, क्योंकि बेसिन में इतनी

अधिक मिट्टी जमा हो गई थी, कि नदी का मुहाना पूर्व की ओर हो गया।

जलवायु (Climate) :—

यदि देखा जाय तो कदाचित् विश्व का कोई भी क्षेत्र समुद्र से इतनी दूर नहीं है जितना कि सिक्यांग। सिक्यांग पर समुद्र का प्रभाव कदापि नहीं पड़ता, हाँ कभी कभी हवायें अवश्य महासागरों से यहाँ तक आ जाती हैं। जो कुछ भी वर्षा इस क्षेत्र में होती है, वह अटलांटिक महासागर से आई हुई हवाओं द्वारा होती है। वार्षिक वर्षा काशगर में ३·५ इंच तथा यारकन्द में ०·५ इंच हो जाया करती हैं। वैसे प्रति वर्ष इसमें हेरफेर हुआ करता है, लेकिन शीत ऋतु में बर्फ वर्षा तथा ग्रीष्म ऋतु में जल वर्षा अवश्य हुआ करती है। पर्वतीय ढालों में २० व ३० इंच के लगभग वर्षा होती है। यहीं पर स्नोलाईन की ऊंचाई समुद्र सतह से तीन मील है।

इस शुष्क भाग में तापान्तर बहुत अधिक पाया जाता है। दिन व रात तथा ग्रीष्म व शीत ऋतु के ताप में काफी अन्तर रहता है। ग्रीष्म ऋतु का तापक्रम जून में १००° फ० तथा जुलाई में औसत ८०° फ० है। लोगों का कहना है, कि तरफान के भाग में ११८° फ० से भी अधिक तापक्रम जून में तथा ६०° फ० जुलाई में रेकर्ड किया जाता है। शीत ऋतु बहुत ठण्ढी होती है और जनवरी का तापक्रम हिमांक से नीचा ही रहता है। कई स्थानों पर २२° से भी कम ताप रेकर्ड किया जाता है। हेडिन ने तकलामाकन में जनवरी के आरम्भ में २५° फ० तापक्रम अंकित किया। झीलें व नदियां इस ऋतु में प्रायः बर्फ से जमी रहती हैं।

मानव रूप (Human Aspect)

ऐतिहासिक आधार (Historical background) :—

तिब्बत व मंगोलिया की भांति सिक्यांग पर भी चीनी लोगों का आतंक रहा है। ईसा से कदाचित् दो सौ वर्ष पूर्व हेन वंश के अधिकार में सिक्यांग का भाग था। इतना ही नहीं बल्कि चीन का प्रभाव काशगर तक पूर्ण रूप से दो हजार वर्षों में से लगभग चार सौ वर्षों तक रहा है। चीनी लोग इस भाग में व्यापार के दृष्टिकोण से आ चुके हैं। चीन का प्रभाव यहाँ पर उस समय से कम हो गया, जब से कि यवनों ने अपना अधिकार जमा लिया था। बौद्ध धर्म का अन्त इस्लाम के कारण हो गया था। चौदहवीं शताब्दी तक बौद्ध धर्म का बिल्कुल अन्त होगया। इतिहासकारों का कथन है, कि बीसवीं शताब्दी में यहां कई बार क्रान्ति हुई थी लेकिन फिर भी सोवियत रूस का प्रभाव सब से अधिक पड़ा है। वर्तमान समय में चीनियों का आतंक यहां केवल नाममात्र को ही है जैसे कम्युनिस्टों का बहुत

गहरा प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

जनसंख्या वितरण (Population Distribution) :—

यदि देखा जाय तो सिंक्यांग एक नखलिस्तानों वाला प्रदेश है, क्योंकि बहुत से मैदानी व पर्वतीय भाग पशु चराने व कृषि करने की दृष्टि से सर्वथा व्यर्थ है। जहां कहीं भी थोड़ा सा जल प्राप्त होता है, वह सिंचाई के हेतु इधर उधर नालों व बम्बों द्वारा दे दिया जाता है। वास्तव में यदि यहां की मानव स्थापना की ओर ध्यान दिया जाय तो यह हर दृष्टि में आत्म सन्तुष्ट दृष्टिगोचर होती है।

यहां की जनसंख्या ३,८७०,६५४ है, इसमें से लगभग ५०००० बंजारे लोग हैं। बंजारों का कोई स्थाई निवास स्थान नहीं रहता, यह लोग ऋतु के अनुसार इधर उधर घूमते फिरते रहते हैं। मुख्य नखलिस्तान, जो कि तारिम बेसिन के दक्षिण में अल्टाई टेग के निकट स्थित हैं, उनमें यारकन्द बहुत प्रसिद्ध है। इसका क्षेत्रफल ८१० वर्ग मील तथा जनसंख्या ६०००० से अधिक है। खोतान दूसरा प्रसिद्ध नगर है, इसका क्षेत्रफल ६२० वर्ग मील तथा जनसंख्या २६००० है। त्यानशान के दक्षिण में कुछ अच्छी बस्तियां दृष्टिगोचर हती हैं। काशगर, जिसका क्षेत्रफल १०००० वर्ग मील तथा जनसंख्या ३५००० है, दूसरा अक्सू-उस्त तरफन जो कुछ पूर्व की ओर स्थित है, क्षेत्रफल ६०० वर्ग मील तथा जनसंख्या २०००० है। अन्य उद्यानों में हामी, तरफान, कोरला, काराशर, कुचा, मारलवाशी है। इनकी औसत जनसंख्या ३००० व्यक्ति प्रति वर्ग मील है।

जुंगेरिया के उद्यान कोई विशेष महत्वपूर्ण नहीं हैं। त्यान-शान के उत्तर में वूसू, मनास, तिहवा, कुचेन्जी तथा बारकोल प्रसिद्ध हैं। यहां पर अधिक घास उगने के कारण लोग भेड़, बकरियों के चराने का काम करते हैं।

आर्थिक रूप (Economic Aspect)

प्राकृतिक वनस्पति (Natural Vegetation) : —

ऐसे क्षेत्र में जहां कि जलवायु इतनी शुष्क तथा अनिश्चित है प्राकृतिक वनस्पति का पनपना बड़ा कठिन है। अधिकतर वर्षा कम होने के कारण घास ही घास दृष्टिगोचर होती हैं, लेकिन जहां काफी वर्षा हो जाती है वहां कुछ वन भी पाये जाते हैं। वैसे अधिकतर यह क्षेत्र नंगी चट्टानों से ढका हुआ है। वन केवल उन्हीं स्थानों पर मिलते हैं, जहां कि प्रति वर्ष वर्षा उपयुक्त होती है, उत्तर की ओर कुछ नुकीली पत्ती वाले पाइन, फर, चीर इत्यादि के वृक्ष मिलते हैं लेकिन दक्षिण की ओर नीबू, नारंगी, संतरा इत्यादि अधिक हैं। रेगिस्तान में शुष्क भागों वाली काँटेदार झाड़ियाँ तथा मोटी पत्ती वाले छोटे वृक्ष भी दृष्टिगोचर होते हैं।

कृषि (Agriculture) :—

सिक्यांग में कृषि केवल उन्हीं भागों तक सीमित है, जहां कि कुछ वर्षा हो जाती है तथा सिंचाई की उपयुक्त व्यवस्था है। प्राचीन नगरों के खंडहर तथा नहरों के चिन्ह यह प्रकट करते हैं कि उस समय भी यहाँ कृषि की जाती थी तथा अधिक जनसंख्या वितरण था। परन्तु फिर भी राजनैतिक दशा, तथा जल के अभाव के कारण कुछ त्रुटियां अवश्य थीं। फसल की वृद्धि के साथ साथ सिंचाई के साधनों में भी उन्नति करनी पड़ती है। जुंगेरिया में ड्राई फार्मिङ्ग साधनों की अधिक सम्भावनायें हैं। मुख्य फसलों में गेहूं, ज्वार-बाजरा काओलिंग, बीन तथा चावल इत्यादि हैं। परन्तु फल, तम्बाकू तथा कपास की पैदावार भी काफी मात्रा में होती है। यह वस्तुयें विदेशी व्यापार के दृष्टिकोण से उत्पन्न नहीं की जातीं बल्कि स्थानीय मांग की पूर्ति के हेतु इन्हें उत्पन्न किया जाता है।

सिंचाई के साधन यहाँ निराले ही हैं। नहरों के स्थान पर आज कल यहां भूमि के अन्दर गुफाओं द्वारा जल सिंचाई के हेतु दूसरे क्षेत्रों तक पहुंचाया जाता है। यह गुफायें फारसी भाषा में 'करेज' कहलाती हैं। इनसे सब से बड़ा लाभ यह है, कि जल भाप बन कर आसानी से नहीं उड़ सकता। यह ऐसी तरकीब से बनाई जाती हैं, कि जल भूमि के अन्दर भी समा नहीं सकता।

उद्योग-धन्धे (Industries) :–

यहां उद्योग-धन्धों में प्रगति नहीं हो सकी, क्योंकि यहाँ का वातावरण अनुकूल नहीं है। जो कुछ भी घरेलू उद्योग धन्धे यहां पर पाये जाते हैं वह कच्चे माल, जो कि यहाँ काफी मात्रा में प्राप्त होते हैं, तक ही सीमित हैं। घरेलू उद्योग धन्धे यहां के नखलिस्तानों में किये जाते हैं। चमड़े व खाल का काम, ऊनी व सूती वस्त्र तैयार करने का उद्यम तथा लकड़ी व औजार बनाने का धन्धा विशेष तौर पर यहाँ के नगरों में प्रचलित है। यारकन्द, खोतान, काशगर तथा आक्सू विशेष तौर पर घरेलू उद्योगों के लिये प्रसिद्ध हैं। कई ऐसे स्टेशन भी स्थापित कर दिये गये हैं, जिनमें कृषि व जीवजन्तु के विकास के हेतु कुछ उद्योग-धन्धों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। खान खोदना तथा अन्य उद्योगों में भी काफी प्रगति हुई है। सोवियत रूस के प्रभाव के कारण कुछ अन्य उद्योग भी स्थापित किये जा रहे हैं।

यातायात के साधन (Means of transport & communication) :—

यदि हम विश्व इतिहास की ओर एक दृष्टि डालें, तो हमें पता चलेगा कि प्राचीन काल में, सिक्यांग पूर्वी व पश्चिमी विश्व के मध्य यातायात का एक द्वार रहा है। सिक्यांग में बहुत सी उत्तम ऐसी सड़कें पाई जाती थीं, जो कि प्राचीन

चीन को रोमन विश्व से मिलाती थीं। गत वर्षों में इन सड़कों को और भी अधिक अच्छा बना लिया गया है। द्वितीय महायुद्ध के समय सोवियत रूस इस मार्ग द्वारा चीन को बहुत सा सैनिक सामान प्रदान किया करता था। कहा जाता है कि मारको पोल भी इसी रास्ते से आया था, साथ ही बौद्ध धर्म के प्रचारक भी इसी मार्ग द्वारा चीन पहुँचे थे। कदाचित् कुनलुन से जेड भी इसी मार्ग द्वारा चीन भेजे जाते थे। इन्हीं सब कारणों से चीनियों ने यहां अपना आतंक जमाये रखने की चेष्टा की।

एक मुख्य सड़क जो कि शेन्सी के प्रसिद्ध नगर स्यान से आरम्भ होती है और मध्य एशिया की ओर लेन्चो तथा कान्सू में मोड़ बनाती हुई, ल्यागचो, कांचो, सूचो और फिर महान दीवार के निकट स्थित 'जेड गेट' को पार करती हुई आगे निकल जाती है। मंगोलिया के किनारे किनारे यह सड़क तानशान पर्वत श्रेणी के नीचे होती हुई निकल गई है। आन्सी के पश्चिम में असली 'सिल्क रोड' सिक्यांग में प्रवेश करती है और तारिम बेसिन के दक्षिण में लोप नोर को पार करती हुई यारकन्द तक जाती है। प्राचीन नखलिस्तान अब खंडहरों के रूप में पाये जाते हैं और यह सड़क एक बिल्कुल उजाड़ क्षेत्र में होकर गुज़रती है। इस मार्ग को अब जलवायु सम्बन्धी परिवर्तनों के कारण त्याग दिया गया है।

आधुनिक सड़क आन्सी से उत्तर की ओर बंजर रेगिस्तान को पार करती हुई त्यानशान पर्वत के नीचे हामी तक आती है, यहाँ पर मार्ग दो भागों में विभाजित हो जाता है। एक मार्ग पर्वतों के दक्षिण में नखलिस्तान को पार करता हुआ तरफान गड्ढे में होकर काशगर तक जाता है। यहां पर यह तिरेक की घाटी और पामीर को पार करता हुआ सोवियत फरगना तक जाता है। दूसरा मार्ग जो कि बहुत ही प्रसिद्ध है, त्यानशान के उत्तर में कुचेंग्ज़ी होता हुआ तिहवा अथवा उरुमची जो कि सिक्यांग की राजधानी है, जाता है। तीन सड़कें तिहवा से पश्चिम में (सोवियत सीमायें) तुर्क साइबेरिया रेलवे तक आती हैं। इनमें से पहली कुल्दजा व ईली घाटी में होकर, दूसरी प्रसिद्ध ज़ुंगेरियन गेट में होकर तथा तीसरी सीमान्त प्रान्त को चुगचक के निकट पार करती हुई जाती है।

इस इम्पीरियल राजमार्ग द्वारा चाहे स्यान से लेन्चो तक या सूचो या हामी या तिहवा और या ईली तक जाना हो तो प्रत्येक में १८ दिन लगते हैं। मोटर गाड़ियाँ इन मार्गों द्वारा इन नगरों को मिलाती हैं। कठिन मार्ग दक्षिण में काशगर से यारकन्द होता हुआ ऊँची ऊँची तिब्बत की घाटियों को पार करता हुआ भारतवर्ष निकल आता है। आरम्भ में इनमें से किसी मार्ग ने बंजारों को आकर्षित नहीं किया, क्योंकि उनको अल्ताई के उत्तर में काफी विस्तृत घास के भाग मिलते थे। परन्तु अब यह लोग भी इनसे लाभ उठा रहे हैं।

व्यापार (Trade) :—

यद्यपि यह भाग एशिया के अन्य भागों से काफी दूर पड़ता है, परन्तु फिर भी यहां के बंजारे तथा अन्य व्यापारी कुछ न कुछ व्यापार अवश्य करते हैं। विदेशी व्यापार उन्हीं वस्तुओं तक सीमित है, जो कि इस एशिया के मृतक अंग में उत्पन्न होती हैं। यहां के बंजारे ऊन, चमड़े तथा पशुओं से तैय्यार की हुई वस्तुओं को नखलिस्तानों तथा अन्य देशों के प्रसिद्ध नगरों में ले जाकर बेचते हैं। इन वस्तुओं के बदले यह वहां से अपनी आवश्यकता की वस्तुयें जैसे कपड़ा, खाने पीने की वस्तुयें, औज़ार इत्यादि खरीद लेते हैं।

बड़े बड़े नगरों में, जो कि इम्पीरियल मार्गों पर केन्द्रित हैं, आधुनिक व्यापार दृष्टिगोचर होता है। बड़ी बड़ी मोटर गाड़ियाँ सामने से लदी हुई चीन तथा रूस आती जाती दीखती हैं। सिक्यांग के नगरों में यह सामान बिकता हुआ नजर आता है। यहाँ की उत्पन्न की हुई वस्तुयें बहुत कम मात्रा में विदेशों को जाती हैं, क्योंकि यहां कोई विशेष औद्योगिक प्रगति नहीं हुई है।

राजनैतिक रूप (Political Aspect)

भौगोलिक सिंक्यांग राजनैतिक प्रान्त की अपेक्षा कुछ छोटा है। इसका कारण यह है कि यह बहुत सा तिब्बत का भाग जो कि मानचित्रों में राजनैतिक सीमा के अन्दर ही दिखाया गया है, सम्मिलित नहीं करता है। वैसे यदि देखा जाय तो सिंक्यांग को तीन भागों में बांटा जा सकता है। लेकिन यह विभाजन राजनैतिक दृष्टिकोण से नहीं किया गया है। (१) तारिम बेसिन दक्षिण में (२) त्यानशान मध्य में (३) अर्ध शुष्क जुंगेरियन बेसिन उत्तर में। इन तीनों में तारिम चीन के सबसे अधिक शुष्क भागों में से है, लेकिन जुंगेरिया का भाग कुछ नम है और गोबी के नम भाग से इसकी तुलना की जा सकती है। इन दोनों भागों का विस्तारपूर्वक वर्णन आगे किया गया है। यहाँ पर तुरकिश और मुसलिम संस्कृति का गहरा प्रभाव पड़ा है, इसलिए यह सोवियत मध्य एशिया से कुछ मिलता-जुलता है। सिंक्यांग को बहुत से विद्वानों ने पूर्वी या चीनी तुर्किस्तान का नाम भी दिया है।

सांस्कृतिक रूप (Cultural Aspect)

जातियां (Races) :—

सिंक्यांग में कई जाति के लोग पाये जाते हैं। लेकिन विद्वानों का मत है, कि ये वास्तव में मंगोल जाति की शाखा के ही हैं। उइगर (Uigurs) जाति के लोग यहां अधिक संख्या में मिलते हैं। यहां पर कलमुक (Kalmuck, जिनमें कि बूरियात हैं, मंगोल तथा ताजकी जाति के लोग हैं, जुंगेरिया बेसिन में तथा निकट-

वर्तीय क्षेत्रों में काफी मात्रा में पाये जाते हैं। कलमुक की कई शाखायें हैं, इनमें चोरेस, तरगत, खोशोत तथा दरबत हैं। यह कुल्जा तथा उत्तरी-पश्चिमी मंगोलिया तक फैले हुये हैं। इन लोगों पर इस्लाम धर्म का गहरा प्रभाव पड़ा है। बहुत से तो फ़ारसी उत्पत्ति से भिन्न हैं।

ये लोग देखने में ठिगने होते हैं। (परन्तु कुछ लम्बे शरीर के भी हैं)। इनका मुंह चौड़ा व चपटा और माथा कम चौड़ा होता है। इनकी आंखें तंग व तिरछी होती हैं। इन लोगों की भाषा विभिन्न भागों में भिन्न भिन्न प्रकार की पाई जाती हैं।

इन लोगों के क्षेत्र में परिस्थितियाँ भिन्न भिन्न प्रकार की पाई जाती हैं। ग्रीष्म ऋतु में अधिक गर्मी के कारण घास सूख जाया करती है। इसीलिए इन लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमना फिरना पड़ता है। शीत ऋतु भी इन लोगों के लिए कठिन होती है। शीत ऋतु में डेरा अधिक से अधिक चार या पाँच झोपड़ी का होता है। नवम्बर से लेकर मध्य अप्रैल तक चाहे चरागाहों में परिवर्तन हो या न हो ये लोग अपने डेरों में ही पड़े रहते हैं। यदि बहुत अधिक ठण्ड पड़ती है और ये लोग खुले हुये स्थान पर पड़े होते हैं, तो अपने 'फैल्ट' के खेमों के स्थान पर और मोटे डेरे स्थापित कर लेते हैं।

जीवन (Life) :—

यहां के बंजारे लोग अपने साथ घोड़े, ऊंट, भेड़, बकरी तथा गाय, भैंस इत्यादि रखते हैं। घोड़े सवारी के लिए रखे जाते हैं, घोड़ी का दूध ये लोग बड़े चाव से पीते हैं। इसकी शराब भी बनाई जाती है। यह लोग इसको पीकर मदमस्त रहते हैं। यहां पर घोड़ी का गोश्त भी बहुत अच्छा समझा जाता है। दक्षिण के शुष्क भाग में ये अपने साथ ऊंट रखते हैं। यहाँ भेड़ें विशेषतौर पर पाली जाती हैं, क्योंकि ये इन लोगों को मुख्य खाद्य पदार्थ प्रदान करती हैं। यह कई कई हजार की संख्या में चरागाहों पर चरती हुई दृष्टिगोचर होती हैं। ये लोग सींग वाले जानवर बहुत कम पालते हैं।

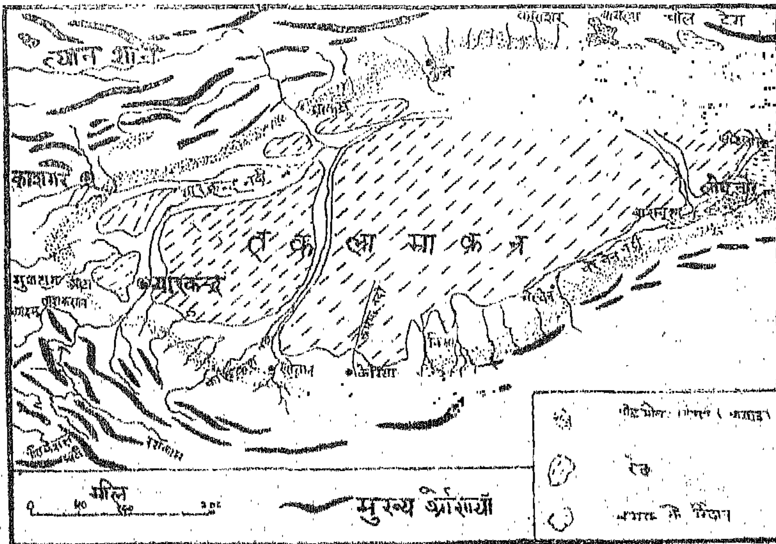
यहां पर कृषि सम्बन्धी वस्तुयें बहुत कम उत्पन्न होती हैं, इसका कारण यह है कि यहां के लोग घूमने फिरने वाले बंजारे हैं। जिन स्थानों पर भौतिक परिस्थितियाँ अनुकूल हैं, और नदियों द्वारा सिंचाई होना सम्भव है, ऐसे स्थानों पर थोड़ी बहुत कृषि कर ली जाती है। शहरों के निकट जो खेत होते हैं, उनमें यह लोग ज्वार, गेहूं, राई तथा दक्षिण की ओर चावल की कृषि कर लेते हैं।

ये लोग शिकार कम खेलते हैं। केवल धनी लोगों को शिकारी चिड़ियों द्वारा शिकार खेलने का बड़ा चाव होता है। ये धनी लोग अपने साथ कुछ

शिकारियों को भी रखते हैं। शिकारियों द्वारा यह लोग जंगली बत्तख, खरगोश तथा अन्य छोटे छोटे जानवरों का शिकार खेलते हैं। भेड़िये, लोमड़ी तथा हिरनों का शिकार घोड़े पर सवार होकर किया जाता है।

तारिम बेसिन (Tarim Basin)

तारिम नदी के बेसिन में मध्य एशिया के पठारी क्षेत्र का पश्चिमी भाग सम्मिलित है। चीनी भू-गर्भ शास्त्रियों ने इसे 'हन-हाई' अथवा सूखा हुआ समुद्री क्षेत्र (Dried-up Sea) बतलाया है। मानचित्र पर देखने से यह नाशपाती के आकार का दृष्टिगोचर होता है। पामीर से लोबनोर तक इसका विस्तार पश्चिम से पूर्व की ओर ६०० मील के लगभग है। इसकी चौड़ाई त्यानशान व कुनलुन पर्वत श्रेणियों के मध्य लगभग ५०० मील बतलाई जाती है। यदि इसके भौतिक रूप की ओर ध्यान दिया जाय तो यह एक विस्तृत रेतीला मैदान प्रतीत होता है, जिसके उत्तर व दक्षिण में घोड़े के नाल के रूप में पर्वत श्रेणियां फैली हुई हैं। इनकी चट्टानों की ऊँचाई १८००० से लेकर २०००० फीट तक है, परन्तु इनकी चोटियाँ २५००० से लेकर २७००० फीट तक ऊंची चली गई हैं। इन



तारिम बेसिन (हंटिंगटन तथा स्टीन पर आधारित)

पर्वतीय भागों की बर्फ व ग्लेशियरों से छोटी छोटी बहने वाली नदियाँ निकलती हैं। ये नदियाँ तारिम से लेकर लोबनोर तक बहती हैं।

इस बेसिन के उत्तरी व दक्षिणी तटों पर थोड़ी थोड़ी दूर के अन्तर पर

प्राचीन उपजाऊ नखलिस्तानों के खंडहर मिलते हैं। इनमें से लोब, चारचन्द, किरिश्रा, खेतान दक्षिण की ओर तथा हामी, कछार व आक्सू उत्तर की ओर स्थित हैं। इनमें से कुछ तो काफी बड़े व विस्तृत थे। और उनकी एक अद्वितीय महत्ता थी। परन्तु पूर्वी गोबी के रेगिस्तान से चलने वाली हवाओं ने बराबर इन उपजाऊ क्षेत्रों पर मिट्टी डाली, और धीरे धीरे इन घने बसे हुये वैभवशाली नगरों को आँखों से ओझल कर दिया। इन बड़े २ नगरों के खंडहरों में अब भी प्राचीन सोने व चाँदी के भूषण देखने को मिलते हैं। 'चाय की ईंटें' तो कई स्थानों पर दृष्टिगोचर होती हैं।

तारिम बेसिन को हम चार प्राकृतिक भागों में बांट सकते हैं :—

(१) उच्च प्रदेश (२) निचले मैदान (३) रेगिस्तान (४) दलदल।

(१) उच्च प्रदेश :—इस भाग में ऊंचे ऊंचे पठार, गहरी घाटियां तथा पर्वत श्रेणियां सम्मिलित हैं। इस भाग में नंगी पर्वत श्रेणियां हैं। वनस्पति तथा जीव-जन्तुओं का विशेषतौर पर यहां अभाव है। इन भागों में जहाँ समतल भाग हैं वहां छोटी छोटी घास वाले क्षेत्र दृष्टिगोचर होते हैं। इस पर्वतीय क्षेत्र के विषय में थोड़ा सा हाल ऊपर बतलाया जा चुका है।

(२) निचले मैदान :—इस पर्वतीय क्षेत्र तथा रेगिस्तानी भाग के मध्य में एक उपजाऊ मिट्टी वाला समतल क्षेत्र है। यही केवल एक ऐसा भाग है, जहाँ कंकड़ तथा पत्थर पर्वतीय क्षेत्रों से आकर एकत्रित हो गये हैं। दक्षिण में लगभग प्रत्येक घाटी के आगे एक एल्युवियल फैन पाया जाता है। वास्तव में यही केवल एक ऐसा भाग है जहाँ कुछ कृषि की जाती है, तथा घनी जनसंख्या पाई जाती है। यद्यपि यहाँ की मिट्टी कम उपजाऊ है। परन्तु फिर भी सिन्चाई द्वारा इसको खोतान, यारकन्द, काशगर तथा आक्सू में कृषि करने योग्य बनाया गया है।

(३) रेगिस्तान :—तकलामाकन (Taklamakan) रेगिस्तान तारिम बेसिन का सबसे अधिक क्षेत्र सम्मिलित करता है। यह एक पूर्ण व स्थाई रेगिस्तान है। इसमें अनेक उड़ने वाली पहाड़ियाँ (Sand dunes) पाई जाती हैं। प्रति क्षण यह पहाड़ियाँ इधर उधर उड़ा ही करती हैं। इस रेगिस्तान का रेत बहुत महीन है और इसकी विशेषतायें एल्यूवियल लोयेस से मिलती जुलती हैं। यह बहुत ही उपजाऊ है, जहाँ कहीं भी थोड़ी बहुत मात्रा में जल प्राप्त हो जाता है, वहां कृषि की जाती है। जिन क्षेत्रों में कृषि की जाती है वहाँ रेत की पहाड़ियों का कदापि भय नहीं रहता, क्योंकि भूमि में नमी रहती है। रेत की पहाड़ियाँ अधिकतर हवाओं की दिशा में उड़ा करती हैं। ये 'दवन्स' कहलाती हैं।

आमतौर पर ऐसा प्रतीत होता है, कि यह प्राचीन नदियों के मार्गों पर स्थित हैं।

(४) दलदल :— इस दलदली भाग में कई झीलें भी पाई जाती हैं, इनमें लोब, बगराच्च, येशील-कुल तथा करगा प्रसिद्ध हैं। ये वास्तव में नदियों में बाढ़ आ जाने के कारण बनी हैं। स्वास्थ्य के लिये ये बड़े हानिकारक क्षेत्र हैं। इन दलदलों में रीड (Reeds) तथा वाटर-फाउल (Water-fowl) नाम की वनस्पति उगती है। पोपलर के वन पतझड़ के मौसम में पत्तियों से ढक जाया करते हैं। यह पत्तियां अधिक गर्मी के कारण सूख कर झुलस जाती हैं तथा टूट-टूट कर धरातल पर गिर जाया करती हैं।

सम्पूर्ण खोतान बेसिन तथा कुनलुन पर्वतीय प्रदेश के निकटवर्तीय क्षेत्र खनिज-पदार्थों से भरे पड़े हैं। यहाँ पर सोना, चांदी, लोहा, तांबा, नमक, साल्टपीटर, गंधक, सोडा तथा कोयला पाया जाता है। सोना तथा बहुमूल्य पत्थर विशेषतौर पर नदियों के धरातल से प्राप्त किया जाता है। खोतान के निकट कापा, सोरधक तथा अन्य खनिजों के क्षेत्र हैं। इनमें हजारों व्यक्ति काम करते हैं और काफी मात्रा में यह बहुमूल्य धातुयें प्राप्त करते हैं। पहले इनका बिदेशी व्यापार होता था।

खोतान में रेशम के कीड़े भी पाले जाते हैं। परन्तु दुर्भाग्य से उच्च कोटि का रेशम प्राप्त नहीं हो पाता, क्योंकि यहां रेशम प्राप्त करने के साधन अधिक उत्तम नहीं है। और यही वजह है, कि इसका विदेशी व्यापार नहीं होता। खोतान की प्रसिद्ध दरियों व कालीनों में यह ऊनी व सुनहरे तागों के साथ मिलाकर प्रयोग किया जाता है। इन दरियों व कालीनों पर एक से एक सुन्दर बेलबूटे बनाये जाते हैं। यहाँ के लोग इस कार्य में बहुत ही कुशल हैं। यहां पर बहुत सी प्रसिद्ध वस्तुयें जेड द्वारा तैयार की जाती हैं। जेड केवल खोतान तथा कुनलुन पर्वत श्रेणियों की उत्तरी घाटियों तक ही सीमित है। इन क्षेत्रों से बहुत बड़ी मात्रा में जेड निकाला जाता है। काराकश की घाटी तथा दक्षिण खोतान में इसकी विशेष तौर पर खुदाई होती है। मध्य कालीन युग में यह बहुत दूर दूर तक भेजा जाता था, यहां तक कि पश्चिमी योरोप में इसके औजार भी बनाये जाने लगे थे। उत्तरी पश्चिमी कान्सू प्रान्त में महान् दीवार से लगा हुआ यूमेन (Yu-moun) का जेड-ग्रेट कहलाने का कारण यह है कि चीन की ओर जाते हुये जेड से लदे हुए कारवां यहीं से होकर प्रस्थान करते थे। यह ऐतिहासिक उद्योग कुछ समय के लिये बन्द हो गया था क्योंकि १८६४ में काशगेरिया से चीनी लोग निकाल दिये गये थे। परन्तु बाद में पुनः इस उद्योग का निर्माण हो गया। अब भी ये लोग इस उद्योग में लगे हुये हैं।

तकला-माकन रेगिस्तान, जिसके विषय में हम ऊपर बतला चुके हैं।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण से एक बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यहां पर यारकन्द जो कि तारिम नदी की एक शाखा है, पश्चिमी कुनलुन पर्वत श्रेणियों से निकलती है। इस नदी के दोनों ओर लगभग बीस मील की चौड़ाई में वन पाये जाते हैं। इस वनीय पेटी के बाहर दूर दूर तक रेत ही रेत दृष्टिगोचर होता है। इस रेत के गर्भ में अनेक आश्चर्यजनक वस्तुयें छिपी हुई हैं। बहुत से नगर जो कि किसी समय उन्नति की पराकाष्ठा पर थे, इसमें दबे हुये हैं। इन 'आश्चर्यजनक वस्तुओं' तथा 'वैभवशाली नगरों' की खोज वास्तव में स्वेन हेडिन ने १८९५ तथा १९०० में की थी। परन्तु पूर्ण रूप से इन वस्तुओं का ज्ञान डा० एम० ए० स्टीन के प्रयत्नों के फलस्वरूप ही हुआ। यह महाशय १९०१ में खोतान यात्रा के लिये आये हुये थे। अन्वेषण के पश्चात् यह अपने साथ लगभग एक दर्जन सन्दूक (खजाना) ले गये। यह बक्स अब भी ब्रिटिश म्यूजियम में रखे हुये हैं। कहा जाता है, कि इनके साथ उन्हें कई लकड़ी व चमड़े की खुदी हुई टेबिलेट भी मिली थीं, इनसे यह प्रत्यक्ष रूप से प्रमाणित होता है कि यहां पर लगभग दो हजार वर्ष पहले बौद्ध संस्कृति का पूर्ण रूप से विकास था। यहां पर कई भाषाओं* के लेख भी मिलते हैं, जो यहां की बीती हुई घटनाओं का वर्णन करते हैं। कुछ मूर्तियों व खुदाइयों में ग्रीक प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। कहा जाता है, कि सिकन्दर महान् के तक्षशिला विजय के केवल एक शताब्दी बाद ही ग्रेशो-बक्रियन ने खोतान पर चढ़ाई कर दी थी, और यहां करोस्थी भाषा को जन्म दे दिया था। कुछ ऐसी भी टेबिलेट का पता चला है, जिन पर 'लोलन' नाम का शब्द अंकित है। चीनी लोगों को दो हजार वर्ष पूर्व ही इस नाम का राज़ मालूम था।

इस रेगिस्तान में पाये जाने वाले खण्डहरों की दीवारों पर जो खुदाई पाई जाती है, उससे निस्सन्देह यह पता चलता है, कि यह खण्डहर बौद्ध युग के हैं, और इनमें से कुछ तो अवश्य ही पूजा पाठ करने के पवित्र स्थान रहे होंगे।

जुंगेरिया (Zungaria)

जुंगेरिया शब्द का निर्माण जुंगार (Zungars) से हुआ है। यह कलमुकस या पश्चिमी मंगोलियन जाति की एक शाखा है। अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में यह एकाएक उन्नति कर गये थे। इनका साम्राज्य पूर्व से पश्चिम में हामी से लेकर बाल्कश झील तक विस्तृत था। यह उस समय इतने शक्तिशाली

* There are records of passing events written in several languages, such as Karosthi, an early Hindu Prakrit, an archaic form of Tibetan, Chinese and Brahmi of the Indo-Scythic period

थे, कि उन्होंने तिब्बत पर अपना आतङ्क जमा कर उसकी राजधानी को १७१७ में अपने अधिकार में कर लिया था। परन्तु इनका पतन लगभग साठ वर्ष बाद उसी गति से हुआ जिस गति से वे लोग इतनी अधिक राजनैतिक उन्नति कर गये थे। जब चीनी लोगों ने इनपर १७५७ में आक्रमण किया, तब इनकी बड़ी दुर्दशा हुई थी, और सम्पूर्ण राष्ट्र बरबाद हो गया था। बाद में केवल इस क्षेत्र का नाम ही नाम रह गया, जो कि अब भी उसी प्रकार चला आ रहा है।

शासन-प्रबन्ध के दृष्टिकोण से जुंगेरिया कुल्जा (उत्तरी इली घाटी) का ही एक भाग है, परन्तु भौतिक दृष्टिकोण से यह उससे पृथक है। यह बेसिन मध्य त्यानशान तथा पश्चिमी अल्ताई पर्वतों के मध्य में स्थित है। पूर्व में मंगोलिया की ओर इसकी कोई भी प्राकृतिक सीमा दृष्टिगोचर नहीं होती, बल्कि यह बेसिन उसी में मिल गया है। यदि पश्चिम की ओर दृष्टि डाली जाय तो हम देखेंगे कि अल्ताई और त्यानशान की श्रेणियाँ अलग हो गई हैं। अन्य स्थानों पर यह काफी ऊंची हैं, और इस बेसिन को घेरे हुए हैं। जिस भाग में यह अलग हो गई हैं, वहाँ तीन घाटियाँ अरल-केस्पियन बेसिन की ओर झुकी हुई दृष्टिगोचर होती हैं। एकतंग अल्ताई तथा तरबागताई के मध्य में ऊपरी या ब्लैक इरतिश की घाटी है, जो सीधी मंगोलिया में उरुन्गु नदी की घाटी तक चली गई है। यह कहीं पर भी समुद्र सतह से २५०० फीट ऊंची नहीं है। दक्षिण की ओर एक दूसरी घाटी तरबागताई तथा अला-ताऊ के मध्य स्थित है। यह घाटी काफी गहरी है, और दो भागों में बंट गई है, इसका कारण यह है कि इसके मध्य में बरकुल-ओरकोचुक नाम की एक लम्बी सी पहाड़ी आ जाती है और यह भी पूर्व से पश्चिम तक फैली हुई है। इस पहाड़ी तथा सौरा (मस ताऊ) जो कि दूसरे शब्दों में पूर्वी तरबागताई पहाड़ियाँ कहलाती हैं, के मध्य चुगुचक के निकट वास्तविक "जुंगेरियन गेट" है। यह गेट वास्तव में एक दस मील गहरी घाटी है, जो समुद्र सतह से ७०० फीट ऊंची है। इस गेट द्वारा बालकश झील तथा "सात नदियों वाले क्षेत्र"* में प्रवेश करते हैं। इसी में होकर ऐमिल नदी अलाकुल झील में जा गिरती है, परन्तु यह निस्सन्देह जुंगेरियन बेसिन से बाहर स्थित है। तीसरी घाटी जो कि काफी दक्षिण की ओर है, उसमें अयारनोर ऐबीनोर तथा अन्य स्टेप्स की छोटी छोटी नदियाँ बहती हैं। पहले वाली दो नदियाँ प्राचीन काल में पूर्वी देशों से (गोबी) यातायात करने के प्रसिद्ध जलमार्ग थीं। पश्चिमी देशों से यह नदियां आला, सासिक तथा बालकश झीलों द्वारा मिली हुई हैं।

[illegible] भिन्न प्रकार की जातियाँ आधारित हैं जो कि इस साथ इली घाटी में स्पष्ट रूप से दीखती हैं। यहीं से यह घाटी विभिन्न जातियों की

---

* Vide The Continent of Asia by Lionel W. Lyde, Page 656.

रणभूमि रही है। कुल्जा, जो कि वास्तव में ऊपरी इली घाटी कही जा सकती है, प्राकृतिक तौर पर सबसे उपजाऊ क्षेत्र है। इतिहास में इस बात का परिचय मिलता है, कि यहाँ एक समय बहुत ही अधिक जनसंख्या निवास करती थी, तथा बड़े बड़े नगर स्थित थे। इस भाग में समय समय पर विद्रोह भी हुए हैं। पहला विद्रोह जुंगार लोगों का, दूसरा दंगानों का तथा तीसरा विद्रोह तराँची मुसलमानों का हुआ था। इन जातियों को कुछ सफलता भी प्राप्त हुई परन्तु बहुत बड़े मूल्य पर, हज़ारों व लाखों की संख्या में लोग मारे गये और वैभवशाली नगर नष्ट हो गये। अन्त में यह धनी क्षेत्र एक वीरान निर्जन क्षेत्र में परिवर्तित हो गया।

कुल्जा एक त्रिभुजाकार भूखण्ड है, इसका क्षेत्रफल लगभग २६००० वर्ग मील है। यह मध्य स्यानशान के अन्दर स्थित है और केवल इली घाटी की ओर से ही सेमिरेचिस्क तथा बालकश झील की ओर खुला हुआ है। कुछ समय तक इस पर रूस का आतङ्क भी रहा था, अब भी साम्यवादियों का यहाँ बहुत गहरा प्रभाव पाया जाता है। यहां की जनसंख्या लगभग सवा लाख से ऊपर है।

इनमें से अधिकतर लोग मुसलमान जाति के हैं। इनके कृषि करने के साधन बड़े प्राचीन हैं। ऐसा प्रतीत होता है, कि यहाँ पर केवल बौद्ध व इस्लाम धर्म का ही प्रचार हो सका है। कुलजा नगर में एक प्राचीन किला है, इसके चारों ओर ३० फीट ऊंची दीवारें हैं, जो कि दस फीट चौड़ी हैं। हन, यूइगर, कारा खिताई तथा चंगेज खाँ ने इस घाटी पर अनेकों बार आक्रमण किये थे। कुछ रेगिस्तानी खानाबदोशों ने यहाँ पर चौड़ी छत वाले मकान भी बना लिये हैं।

काले इरतिश बेसिन की ओर यदि देखा जाय, तो कोई विशेष महत्ता नहीं है। हाँ, केवल इतना अवश्य कहा जा सकता है, कि अल्ताई पर्वत से स्वेत इरतिश को जल प्राप्त हो जाता है। उरुन्गी नदी तो इस नदी तक पहुंच ही नहीं पाती, बल्कि वह झील उलुन्गर तक ही पहुंचते पहुंचते सूख जाती है। जनसंख्या अधिकतर डेल्टे पर ही पाई जाती है। वास्तव में यदि देखा जाय तो इरतिश बेसिन चारों ओर से घिरा हुआ है।

अल्ताई पर्वत देखने में कोई विशेष सुन्दर दृष्टिगोचर नहीं होते, यहाँ पर वर्षा बहुत अधिक होती है परन्तु इससे भी अधिक बर्फ गिरती है बहुत सा जल नदियों द्वारा बह जाता है, एक समय था जब कि बरचुन नगर स्टीमरों का केन्द्र समझा जाता था, इसका कारण यह है कि यह नदी के किनारे पर ही स्थित है।

दो झीलें, जो कि पूर्व में स्थित हैं, राजनैतिक दृष्टिकोण से कोई विशेष महत्व नहीं रखतीं, लेकिन इनका भौतिक रूप काफी महत्वपूर्ण है। बरकुल बेसिन पूर्व से पश्चिम की ओर साठ या सत्तर मील लम्बा है। इस झील की चौड़ाई २० मील से अधिक नहीं है। इसकी गहराई ५,००० फीट के लगभग है, पश्चिम की

ओर ऊंची ऊंची दीवारें हैं, जो कि दस मील तक ८००० फीट ऊंची हैं। झील के पूर्व में घाटी ३० या ४० मील चौड़ी हो गई हैं। बरकुल की पहाड़ी दक्षिण की ओर चली गई है। लेकिन इसकी ऊंचाई १३०० फीट के लगभग पाई जाती है। यह श्रेणी पूर्व में बोग दो-ओला को कारलिक से मिला देती है। यह कारलिक १५००० फीट ऊंची है, और इसके उत्तर में तरकुल झील स्थित है।

बरकुल श्रेणी के उत्तरी ढाल बनों से ढके हुये हैं, क्योंकि उधर की ओर वर्षा अधिक हो जाया करती है। दक्षिण के ढाल केवल नंगी चट्टानों के ही हैं। बेसिन के सम्पूर्ण धरातल पर सोते मिलते हैं। आजकल यहाँ पर कृषि की जाती है। अधिकतर भाग स्टेपलैंड हैं। यहां पर हजारों जंगली घोड़े चरते हुये दृष्टिगोचर होते हैं। पिछली शताब्दी तक यहाँ के तगलिक लोग हर साल पेकिंग को पन्द्रह हजार घोड़े भेजा करते थे। यद्यपि बरकुल नगर की स्थापना केवल ढाई सौ वर्ष पहले ही हुई थी, परन्तु बेसिन का इतिहास बहुत प्राचीन है।

तरफान बेसिन में बोगदो तथा चोल श्रेणियां इधर उधर पाई जाती हैं। इसका धरातल बरकुल बेसिन की अपेक्षा ६००० फीट नीचा है। निचला भाग झील से केवल ४० मील पूर्व व पश्चिम तक फैला हुआ है। बोगदो श्रेणी उत्तर की ओर तथा चोल दक्षिण की ओर इस तरह से स्थित हैं, कि मध्य का भाग एक समतल व उपजाऊ क्षेत्र हो गया है। इसमें कुछ छोटी छोटी नदियाँ भी बहती हैं इनमें से अधिकतर नमकीन दलदल में गिर जाती हैं। बोगदो की श्रेणियाँ काफी ऊँची हैं, इन पर से बहुत सा पानी बह कर नदियों में आ जाता है। यह जल 'करीज' (Kariz) सुरंग द्वारा इधर उधर सिंचाई के लिये ले जाया जाता है। जिन स्थानों पर सिंचाई का भली भांति प्रबन्ध है, वहाँ काफी घनी वनस्पति दृष्टिगोचर होती हैं।

जुंगेरिया का क्षेत्रफल १४६००० वर्ग मील है, यहाँ की जनसंख्या छै लाख से भी अधिक है। एक समय था, जब कि हंग-मियोतज्ञा उरूमसी सम्पूर्ण सिक्यांग की राजधानी थी। यहाँ पर बहुत ही शक्तिशाली सेना भी रखी जाती थी, क्योंकि रूसी विद्रोह का भय हर समय रहता था। चीनियों की यहाँ एक नया नगर स्थापित कराने की भी योजना थी, परन्तु उनको यह न मालूम था, कि यह स्थान सैनिक आक्रमणों के दृष्टिकोण से अधिक सुरक्षित नहीं था। गिरगाँग, जैसा कि हम ऊपर बतला चुके हैं, बहुमूल्य धातुओं, अनाज तथा रेशम व कपास उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करता है। यहां की जलवायु भी स्वास्थ्य के लिये बड़ी लाभदायक है। यहां हर प्रकार के फल व तरकारियां भी उत्पन्न की जाती हैं।

मंगोलिया (Mangolia)

मंगोलिया एक विस्तृत देश है। गत शताब्दी तक कोई भी इस देश की ओर ध्यान देना पसन्द नहीं करता था, लेकिन कुछ वर्ष हुये, जब से विश्व के लगभग सभी शिक्षित लोग इसकी ओर आकर्षित होने लगे हैं। अमेरिकन, इंगलिश, जर्मन तथा फ्रेंच सभी लोग इस देश में नवीन खोज करने में व्यस्त हैं। वास्तव में यह एक ऐसा देश है, जो कि भेदों से परिपूर्ण है। लगभग एक हजार वर्ष का समय हो गया, जब से कि यह बराबर रेगिस्तान का रूप धारण करता चला आ रहा है। परन्तु वास्तविकता यह है कि हजारों व लाखों वर्ष पहले यह एक अति उपजाऊ क्षेत्र था और यहां पर अनेक आश्चर्यजनक जीवजन्तु पाये जाते थे। विद्वानों का मत है, कि यह उसी प्रकार के थे, जिस प्रकार के योरोप व अमेरिका में मिलते थे। अमेरिका के विद्वानों ने एक ऐसे आश्चर्यजनक दिनोज्योर (Dinosaur) की खोज की है, जो कि चीनी 'ड्रेगन्स' कहलाते हैं। दिनोज्योर के अण्डों के फौसिल भी देखने को मिलते हैं, उनमें से कुछ तो ऐसे हैं जिनमें इस पशु के छोटे छोटे शरीर भी दृष्टिगोचर होते हैं। विदेशी अजायबघरों में हमको बहुत बड़े बड़े ऐसे आश्चर्यजनक जीवजन्तु मिलते हैं, जो कि यहां पर अति प्राचीन काल में पाये जाते थे। जिस प्रकार का बलोचिस्तान में पृथ्वी का सब से बड़ा मेमिल (रिनोसिरोस) मिला था, उसी प्रकार का उतना ही बड़ा यहां भी पाया गया था। अब भी बहुत से देशों के निवासी अन्वेषण करने के हेतु प्रतिवर्ष यहां आया करते हैं।

मंगोलिया में मध्य एशिया के पठारी क्षेत्र का उत्तरी-पूर्वी भाग आता है। इसके उत्तर में साईबेरिया, दक्षिण-पश्चिम में चीनी तुर्किस्तान, दक्षिण-पूर्व में चीन तथा उत्तर पूर्व में मंचूरिया स्थित हैं। इसका क्षेत्रफल लगभग १८७५००० वर्ग मील है। (श्री ए० एच० कीन के अनुसार मंगोलिया का क्षेत्रफल १२००००० वर्ग मील तथा जनसंख्या २० लाख है) पूर्व में खिन्घन पर्वत इसकी प्राकृतिक सीमा बनाते हैं, परन्तु पश्चिम की ओर से खन्गाई तथा अल्ताई इसके मध्य तक चले आते हैं।

भौतिक रूप (Physical Aspect)

बनावट (Structure) :—

भूगर्भशास्त्रियों का कथन है कि मंगोलिया के नीचे पैल्योज़ोइक युग (Paleozoic Era) के पहले का धरातल है, इसका विस्तार निश्चित करना बड़ा कठिन है, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि ग्रेनाइट बैथोलिथ (Granite batholith) का बना हुआ है। विद्वानों का यह भी मत है कि मध्य मंगोलिया

का भाग मध्य पैल्योजोयेक युग में एक महाद्वीप का रूप धारण किये हुये था, परन्तु यह कारबोनीफेरस (Carboniferous) तथा परमियन (Permian) युग में समुद्र में भी डूब चुका था कदाचित् यही कारण है कि इसके धरातल पर अनेक आश्चर्यजनक फोसिल्स (Fossils) देखने को मिलते हैं। नीचे चट्टानों के पर्त जगह जगह पर मुड़े हुये, घूमे हुये तथा टूटे हुये हैं, इनमें कहीं कहीं पर आग्नेय चट्टानें भी दृष्टिगोचर होती हैं। कुछ स्थानों पर वास्तविक पर्तदार चट्टानें, दानेदार (Gneiss) और सिस्ट (Schist) में भी परिवर्तित हो गई हैं। परन्तु अधिकतर ग्रेनाइट पत्थर ही देखने में आता है।

धरातल (Relief) :—

मंगोलिया वास्तव में एक समतल पेनीप्लेन (Peneplain) है, यह प्राचीन चट्टानों के घिसने के कारण इस रूप में परिवर्तित हुआ है। विश्व में बहुत कम ऐसे क्षेत्र मिलते हैं, जो घिसते घिसते इतने समतल हो गये हों। इस समतल भाग में कहीं कहीं पर प्राचीन सख्त चट्टानों के ऐसे खम्भे दृष्टिगोचर होते हैं, जो पूर्ण रूप से घिसने नहीं पाये हैं। दक्षिणी मंगोलिया में इस समतल भाग की ऊंचाई ५३०० फीट है, तथा आर्कटिक विभाजक की ओर यह ६००० फीट ऊंचा हो जाता है। इन दोनों ऊंचाइयों के मध्य में ऊंचाई कम पाई जाती है। मंगोलियन पेनीप्लेन के अन्दर एक और समतल घिसा हुआ भाग पाया जाता है, यह गोबी के नाम से प्रसिद्ध है, इसकी ऊंचाई लगभग ४००० फीट है। इसका अधिक भाग बहुत मुलायम चट्टानों का बना हुआ है और अधिकतर समतल है। ऊपर की चट्टानों का सम्बन्ध नीचे की चट्टानों से बहुत कम है। यदि गोबी के भाग को ध्यानपूर्वक देखा जाय तो कई स्थानों पर ऐसे प्राकृतिक गढ़े दृष्टिगोचर होते हैं जिनकी लम्बाई १ फर्लांग से लेकर १० मील तक है, तथा गहराई ६ गज से लेकर १३५ गज तक है। यह गड्ढे पंगक्यांग के नाम से पुकारे जाते हैं। इनमें से अधिकतर ऐसे हैं, जो कि पेनीप्लेन नहीं कहे जा सकते, यह इतने भी समतल नहीं हैं कि गोबी के भाग से तुलना की जा सके। इनमें कहीं कहीं पर झीलें व खराब भूमि (Bad land) भी दृष्टिगोचर होती है। यहां पर वर्षा कम होती है, परन्तु फिर भी अनेक खाइयां पाई जाती हैं। ऐसा प्रतीत होता है, कि पंगक्यांग के प्रकार के गड्ढे वायु द्वारा बहुत अधिक विखण्डित होते हैं, विशेषतया वहां जहां कि नवीन भूपदार्थ एकत्रित हो गये है। मंगोलिया में रेत की पहाड़ियां (Sand dunes) दृष्टिगोचर नहीं होती है। यह केवल तारिम बेसिन के तकलामाकन रेगिस्तान में ही पाई जाती है। गोबी के रेगिस्तान में सम्पूर्ण क्षेत्र के केवल ५ प्रतिशत भाग में ही यह पहाड़ियां दृष्टिगोचर होती हैं। गोबी के अधिकतर क्षेत्र में कंकड़ व पत्थर पाये जाते हैं। इसमें जितना भी रेत था वह सब उड़ कर अन्य स्थलों पर एकत्रित हो

गया है। यहाँ लोयेस कदापि देखने को नहीं मिलता।

अमेरिकन म्यूजियम आफ नेचुरल हिस्ट्री के कुछ विद्वानों ने मंगोलिया के समतल क्षेत्र में कुछ खोजें श्री आर० सी० ऐन्ड्रूज (R. C. Andrews) की अध्यक्षता में की थीं। उन्हें इस सम्बन्ध में बहुत सी नवीन बातों का ज्ञान हुआ। श्री बरकी (Berkey) और (Morris) का कथन है, कि गोबी के क्षेत्र में कई बड़े बड़े बेसिन पाये जाते हैं। इन लोगों ने बेसिनों को 'तालाज' (Talas) का नाम दिया है। उत्तरी-पश्चिमी मन्चूरिया में दलाई नोर ताला, (Dalai Nor Tala) जो कि ग्रेट किन्घन से लगा हुआ है, अपने उत्तरी भाग में कई झीलें रखता है, दक्षिण में कुछ लावा तथा ज्वालामुखी पर्वत पाये जाते हैं। इरेनताला (Iren Tala), कलगन तथा उलान बातुर के मार्ग पर गोबी के ठीक मध्य में पाया जाता है। इसका धरातल काफी ऊंचा नीचा है, और किनारे काफी ऊंचे हैं, इनके अन्दर सात और छोटे छोटे बेसिन पाये जाते हैं। गशुईन ताला, दक्षिण-पश्चिम में नानशान तथा गर्बन शैखान पर्वतों के मध्य स्थित है। इसकी एक छोटी सी नदी एडिसनल गोल है। इसका पूर्वी भाग अलाशान रेगिस्तान के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त ऐटसिन गोल ताला, खिरगीज नोर ताला तथा अबसा नोर ताला कुछ अन्य हैं। ओरडोस का भाग एक भिन्न ही भाग है। लगभग प्रत्येक ताला में अपनी ही नदियाँ हैं और प्रत्येक के अन्दर और भी छोटे छोटे बेसिन हैं, जो कि प्रत्यक्षरूप से दृष्टिगोचर होते हैं।

मंगोलिया के उत्तर-पश्चिम में कई बेसिन हैं। इनके चारों ओर टेक्टोनिक पर्वत पाये जाते हैं, यह बहुत छोटे हैं, यह सब वैली आफ लेक्स (Valley of the Lakes) कहलाते हैं।

बाहरी मंगोलिया की ओर यदि दृष्टि डाली जाय तो हमको कई पर्वत श्रेणियां दृष्टिगोचर होंगी। पश्चिम में तंग अल्ताई हैं जो साईबेरिया की सीमा पर हैं, और ६०० मील दक्षिण की ओर मंगोलिया के मध्य तक चले गये हैं। वैली आफ लेक्स के उत्तर में तन्नू ओला है, जो सोवियत यूनान की दक्षिणी सीमा निश्चित करता है। पूर्व में स्यान पर्वत मंगोलिया की सीमा तक ही नहीं वरन् सिलैंगा तक चले गये हैं। स्यान के दक्षिण में तथा तन्नू ओला के पूर्व में किन्घन पर्वत श्रेणियाँ हैं। सिलैंगा घाटी के पूर्व में कैन्टाई पहाड़ियाँ हैं। मंगोलिया के उत्तर-पश्चिम में तन्नू तुवा, जो कि तुविनियन पीपुल्स रिपब्लिक के नाम से प्रसिद्ध था स्थित है। सन् १९४६ से यह भाग सोवियत रूस के अधिकार में आ गया है। यह वास्तव में येनेसी घाटी का ही एक भाग है।

जलवायु (Climate) :—

मंगोलिया की जलवायु रेगिस्तानी जलवायु है। यहां पर ग्रीष्म ऋतु में

अधिक गर्मी तथा शीत ऋतु में कड़ी सर्दी पड़ती है। गोबी, वास्तव भूमंडल पर सबसे उत्तरीय रेगिस्तान है। पृथ्वी पर वैसे तो बहुत से ऐसे भाग हैं, जिनमें कि साधारण तौर पर ग्रीष्म व शीत ऋतु के तापक्रम में काफी अन्तर पाया जाता है। परन्तु फिर भी गोबी एक ऐसा भाग है, जो कि ग्रीष्म व शीत ऋतु के ताप में बहुत ही अधिक अन्तर रेकार्ड करता है। ग्रीष्म ऋतु में यह भाग इतने गर्म हो जाते हैं, कि ६०° फ० तापक्रम छाये में तथा १३८° फ० धूप में हो जाता है। शीत ऋतु बहुत काफी ठण्डी होती है। साधारण तौर पर तापक्रम ४०° या ५०° फ० तक आ ही जाता है, लेकिन –३०° फ०, –३५° फ० तथा –४०° फ० का भी पाया जाना आश्चर्य की बात नहीं है। दिन व रात के तापक्रम में बहुत अन्तर रहता है। रातें हमेशा ठण्डी रहती हैं। शीत तथा बसन्त ऋतु में बर्फ वर्षा हो जाया करती है। शीत ऋतु में इस वर्षा के कारण घास उग आती है। वैसे प्राय: ग्रीष्म ऋतु में ही वर्षा होती है। उलान बतारे में यह वर्षा केवल ८ इंच के लगभग हो जाती है। जैसे जैसे हम पश्चिम व दक्षिण की ओर प्रवेश करते जाते हैं वैसे वैसे ऋतु में शुष्कता मिलती जाती है। मध्य तथा पश्चिमी गोबी इस भाग का सबसे अधिक शुष्क क्षेत्र है। वर्षा बहुत धीमे धीमे तथा बूंदा बाँदी के रूप में होती है। यह बूंदा बाँदी चक्रवात से, या स्थानीय परिवर्तन के कारण भी हो जाया करती है।

अमेरिकन एक्सपेडीशन के नायक डा० चैनी का कथन है कि क्रिटेशियस तथा तरशियरी युग में किन्घन पर्वत उसी प्रकार से जल वर्षा के हेतु रुकावट थे, जिस प्रकार से आज हैं। इसके अन्तर्गत यहां सेक्यूया (Saquoia) वन पाये जाते थे, जिनके लिये ४० इंच के लगभग वर्षा आवश्यक थी परन्तु वह भी उन पर्वतीय ढालों की ओर जो हवाओं के सन्मुख पड़ते थे। शुष्क व अर्ध शुष्क दशायें उत्तरी भाग तक ही सीमित रहती थीं, और वहां नुकीली पत्ती वाले तथा पोपलर के वृक्ष उगते थे।

मानवी रूप (Human Aspect)

ऐतिहासिक आधार (Historical Background) :—

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से मंगोलिया एक अति प्राचीन देश है। जैसा कि हम ऊपर बतला चुके हैं, कि यहाँ पर अजीब से अजीब वस्तुयें अमरीकन लोगों ने खोज निकाली हैं। यह वस्तुयें इस बात का प्रमाण देती हैं, कि यहां किसी समय उच्च संस्कृत अवश्य पाई जाती थी। यदि जातियों की ओर ध्यान दिया जाय, तो भी यह पता चलता है, कि यहीं से उनकी उत्पत्ति हुई है, क्योंकि उनके रूप रंग मिलते जुलते हैं।

लगभग ६०. ऐ० डी० से १३०० ऐ० डी० मंगोलिया पर कई वीर योद्धाओं

ने आक्रमण किये, उदाहरणार्थ, चंगेज खाँ, कुबलाई खां तथा अन्य ऐसे लोगों ने जिनका नाम दूर-पूर्वी देशों में बहुत अधिक है।

मंगोलिया, चीन और रूस की संधियों (१९१२, १९१३ तथा १९१५) के अनुसार स्वतन्त्र कर दिया गया और इस पर बौद्ध भिक्षुकों ने राज्य किया। रूसी क्रांति के पश्चात् १९१७ में चीनियों ने फिर मंगोलिया पर अधिकार कर लिया, और धीरे धीरे बचा हुआ कर भी वसूल कर लिया। लेकिन बोलशेविकों (Bolsheviks) ने अपना अधिकार जमा लिया और १९२४ तक उसे स्थापित रखा। आजकल बाह्य मंगोलिया पर रूसी प्रभाव तथा आन्तरिक मंगोलिया पर चीनी प्रभाव अधिक दृष्टिगोचर होता है।

जनसंख्या वितरण (Population Distribution) :—

यदि मंगोलिया के क्षेत्रफल पर दृष्टि डाली जाय तो यह दस लाख वर्ग मील से अधिक ही प्रतीत होता है। यहां की जनसंख्या का अनुमान लगाना कठिन है, परन्तु फिर भी हम अन्दाज से बतला सकते हैं, कि मंगोलिया की जनसंख्या ३० लाख से अधिक नहीं है। इसमें से २० लाख ऐसे हैं, जो कि दक्षिण की ओर हैं और वे चीनी हैं। मंगोलियन पीपुल्स रिपब्लिक का क्षेत्रफल ५८०१५० वर्ग मील है, और यहां की जनसंख्या साढ़े आठ लाख के लगभग है। इसमें से पांच प्रतिशत चीनी तथा पांच प्रतिशत ही रूसी हैं।

यहां के प्रमुख नगरों में उलन बतोर है। यह नगर पहले उर्गा के नाम से प्रसिद्ध था, यहां की जनसंख्या लगभग एक लाख है, आजकल यह नगर भवन निर्माण एवं शिल्प कला में एक उच्च स्थान रखता है। यह मंगोलियन पीपुल्स रिपब्लिक की राजधानी तथा लामा धर्म का केन्द्र भी है। उत्तर में अल्तान-बुलग एक दूसरा नगर है, जिसकी जनसंख्या २०,००० है। अन्य बस्तियाँ केवल व्यापारिक केन्द्र ही हैं, तथा यह गांव के रूप में दृष्टिगोचर होती हैं। उदाहरणार्थ, दक्षिण में पाईलिंग मिआओ, उत्तर-पश्चिम में कोबदो तथा यूलिआसुताई आदि।

आर्थिक रूप (Economic Aspect)

प्राकृतिक वनस्पति (Natural Vegetation) :—

मंगोलिया के रेगिस्तान के मध्य धरातल अधिकतर नग्न चट्टानों के हैं। रेत बहुत कम दृष्टिगोचर होता है। इस बंजर भूमि में छोटी छोटी टेढ़ी मेढ़ी घास, केमिल सेज (Camel Sage) तथा छोटी कांटेदार झाड़ियां मिलती हैं। यह समतल भाग, जो कि बहुत दूर तक विस्तृत है, अधिकतर शुष्क ऋतु में चारों ओर भूरा तथा पीले रंग का दीखता है। लेकिन जब कभी भी थोड़ी सी बूंदाबांदी हो जाती है, तो यह हरा भरा हो जाता है। पर्वतों के ढाल, विशेषतया पूर्वी अल्टाई

या तो नंगी चट्टानों के हैं और या हरी भरी घास से ढके हुये हैं। वृक्ष केवल गोबी के भाग में ही दृष्टिगोचर होते हैं, लेकिन नदियों की घाटियों तथा एल्यूवियल फेन में भी काफी वृक्ष पाये जाते हैं। यह वृक्ष अधिकतर ऐम (Elm) के हैं और काफी पुराने हैं। नये वृक्ष तो बहुत कम उगते हैं। मंगोलिया के चारों ओर बहुत ही सुन्दर चरागाह हैं। दक्षिण की ओर केवल टेमेरिस्क (Tamarisk) तथा बालू ही दृष्टिगोचर होती है।

कृषि (Agriculture) :—

मंगोलिया जैसे शुष्क देश में कृषि करना एक जटिल समस्या है। गोबी के भाग में वर्षा केवल ८ इंच तथा सीमान्त प्रदेशों में केवल १२ इञ्च होती है। इसके अलावा धरातल तथा भूमि भी कोई विशेष उपजाऊ नहीं है। जो कुछ भी कृषि यहां की जाती है, वह उत्तरी व दक्षिणी भाग तक ही सीमित है। बहुत थोड़ी मात्रा में गेहूं, जौ, ज्वार-बाजरा, चावल उगाया जाता है। नदियों की घाटियों में चाय, तरबूज तथा विभिन्न प्रकार की तरकारियां उत्पन्न की जाती हैं। यहां के निवासियों का अधिकतर भोजन जीव जन्तुओं से प्राप्त होता है। वैसे यह लोग इन वस्तुओं का भी कभी कभी प्रयोग करते हैं।

जीवजन्तु (Livestock) :—

वास्तव में मंगोलिया एक ऐसा देश है, जिसमें कि अधिकतर जीवन घास पर ही निर्भर रहता है। जिन भागों में वर्षा १२ इञ्च से कम होती है, और अधिकतर चरागाह ही चरागाह दृष्टिगोचर होते हैं, वहां प्राकृतिक तौर पर लोगों का मुख्य धन्धा पशुपालन हो जाता है। यदि कोई विदेशी इस क्षेत्र का भ्रमण करे तो उसे चारों ओर दूर दूर तक भेड़, बकरियां, गाय, घोड़े व ऊंट इत्यादि पशुओं के समूह दृष्टिगोचर होंगे। यहां घास बहुत लम्बी नहीं होती इसलिये जहां तौर पर जहां वह समाप्त हो जाती है, वहां से यह पशु हटा लिये जाते हैं। बंजारे लोग जो कि यदि एशिया में देखा जाय तो पश्चिम में वोल्गा नदी से लेकर पूर्व में आमूर नदी तक पाये जाते हैं, अपना जीवन पूर्ण रूप से पशुओं पर ही व्यतीत करते हैं। इन्हीं जानवरों से यह लोग अपना भोजन, कपड़े, तम्बू, यातायात, ईंधन तथा धन इत्यादि प्राप्त करते हैं। यहाँ के निवासी मांस बड़े चाव से खाते हैं। इनके भोजन में मांस के अतिरिक्त दूध, मक्खन, पनीर इत्यादि वस्तुयें भी हैं। यह लोग कच्चा दूध पीते हैं, लेकिन कभी कभी चाय, नमक तथा मक्खन के साथ भी इसका सेवन करते हैं। यह लोग शिकारी कुत्ते अपने साथ रखते हैं, क्योंकि उनके द्वारा इनकी रक्षा होती है।

उद्योग तथा व्यवसाय (Industries & Occupations) :—

यहां के निवासी अधिकतर बंजारे हैं, यह लोग अपने जीव जन्तु लिये

इधर उधर घूमते फिरते हैं। मिट्टी से इनका इतना गहरा सम्बन्ध नहीं होता जितना कि जीव-जन्तुओं से। वास्तव में इनका जीवन पशुओं से बहुत ही अधिक सम्बन्धित है। इनके उद्योग अनेक व्यवसाय पशुओं पर ही निर्भर हैं। खनिज पदार्थ तो कोई विशेष यहां पाये नहीं जाते और न यहां पर किसी प्रकार के शक्ति के साधन ही हैं। जो कुछ भी उद्योग हैं, वे घरेलू ढंग के हैं। चमड़े की वस्तुयें बनाना, घर का सामान तैयार करना, खाल तैयार करना तथा हड्डियों की वस्तुओं की दस्तकारी प्रचलित हैं। यहाँ की स्त्रियाँ इन कामों को बड़ी आसानी से कर लेती हैं। इन धन्धों के अतिरिक्त थोड़ा बहुत कपड़ा तथा किरमिच भी तैयार की जाती है। अब कुछ छोटे छोटे कारखाने उर्गा में रूसी प्रभाव के कारण खुल गये हैं।

व्यापारिक मार्ग (Trade Routes) :—

मंगोलिया केवल एक रेगिस्तान है, यहां पर बड़े बड़े नगर व व्यापारिक केन्द्र नहीं पाये जाते। कदाचित यही कारण है कि यहां पर व्यापारिक मार्गों की उन्नति नहीं हो सकी है। हाँ, प्राचीन 'सिल्क रोड' अवश्य इसमें होकर प्रवेश करती है। आजकल जब कि इस देश पर कई निकटवर्तीय देशों का प्रभाव पड़ा है, कई अच्छी अच्छी पक्की सड़कें पाई जाती हैं। यहां तक कि उर्गा भी उत्तर में ट्रांस साइबेरियन रेलवे से मिला हुआ है, पाओतव, जो कि इनर मंगोलिया के पूर्व में किनारे की ओर बसा हुआ है, रेल द्वारा पेकिंग से मिला है। इन दो स्थानों के अतिरिक्त और कहीं भी रेलवे नहीं मिलती है। यहां की सड़कों पर अब मोटर गाड़ियां भी दौड़ती हुई दृष्टिगोचर होती हैं।

विदेशी व्यापार (Foreign Trade) :—

विदेशी व्यापार केवल उन वस्तुओं तक ही सीमित है, जो कि यहाँ पर घरेलू ढंग से किया जाता है। अधिकतर यहाँ का समूर (फर) विदेशों को बहुत बड़ी मात्रा में प्रति वर्ष भेजा जाता है। इसके अतिरिक्त ऊन, चमड़े के थैले, जूते, जीन तथा हड्डियों की बनी हुई चीजें भी निर्यात की जाती हैं। इनकी आयात की हुई वस्तुओं में कपड़ा, भोजन, चाय, तम्बाकू तथा अन्य आवश्यकता की वस्तुयें हैं।

राजनैतिक रूप (Political Aspect)

आन्तरिक राजनैतिक दशा (Internal Political Condition) :—

इसमें सन्देह नहीं कि भेड़ बकरियों को चराने का धन्धा यहां दिन प्रति दिन गिर रहा है। कुछ लोगों का विचार है, कि १९२४ के उपरान्त इस धन्धे की दशा अवनति पर रही। इसका मुख्य कारण साम्यवादी चीन का प्रभाव बतलाया जाता है। रूसी लोगों ने यहां सामूहिक कृषि (Collective Farming) आरम्भ कर

दी है, और अब यहां जिन भागों में खेती की जाती है, वहाँ बहुत ही वैज्ञानिक ढंग से होती है। मंचू वंश के समय मंगोलिया के बहुत से चरागाह क्षेत्र इधर उधर कई बंजारों की जातियों में बंटे हुये थे। इसके उपरान्त ही व्यापार आरम्भ हो गया था। चीनी व्यापारी अब निडर होकर व्यापार करने लगे थे। इसके प्रभाव से कई जातियां कर्जदार हो गईं। परन्तु बाद में फिर से यह जातियां कई भागों में बंट गईं। प्रत्येक भाग एक ही जाति के अधिकार में आया।

सन् १९२४ से बाहरी मंगोलिया एक घिरा हुआ क्षेत्र है। मंगोलियन पीपुल्स रिपब्लिक (Mongolian People's Republic) एक प्रकार से सोवियत यूनियन का ही क्षेत्र है। परन्तु कुछ ऐसे विदेशी भी यहां आकर बस गये हैं, जिनको रहने की आज्ञा मिल गई है। इस राजनैतिक दशा के अन्तर्गत यहां के लामा धर्म तथा आर्थिक व्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ा है। अब इस समय यह देश धीरे धीरे साम्राज्यवाद की ओर अग्रसर हो रहा है, आशा है, भविष्य में यह पूर्ण रूप से हो जायेगा।

सांस्कृतिक रूप (Cultural Aspect)

जाति (Race) :—

मंगोल जाति किसी समय विश्व की सबसे भयंकर जाति समझी जाती थी, इसका प्रभाव प्रशान्त महासागर से लेकर मध्य योरोप तक पाया जाता था। इनका जन्मस्थान वास्तव में वही क्षेत्र है, जिसे हम मंगोलिया कहते हैं। यहाँ के मनुष्यों पर आरम्भ से ही चीनी, तुर्की, तिब्बती, ईरानियन तथा अन्य विदेशी लोगों का प्रभाव पड़ता रहा है। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो उत्तरी मंगोलिया की खाल्का शाखा (Khalka Branch) काफी शुद्ध मंगोलियन है। इसके अतिरिक्त दक्षिण में अलाशान (Alashan) के क्षेत्र में भी वास्तविक मंगोल जाति के लोग पाये जाते हैं। कैप्टेन यंगहस्बैंड ने पश्चिमी तथा पूर्वी मंगोलिया की जातियों में काफी भिन्नता बतलाई है। पूर्वी मंगोलिया के लोगों का चेहरा गोल है इनके अन्य अंग भी कुछ गोलाई लिये हुये हैं, लेकिन पश्चिमी मंगोलिया में लोगों के चेहरे लम्बे तथा अन्य अंग कुछ लम्बाई लिये हुये हैं।

साधारणतः मंगोलियन न तो बहुत अधिक लम्बा और न ही बहुत अधिक ठिगना होता है। उसका मुंह गोल, नाक चपटी, आँखें छोटी तथा रंग पीला होता है। इसका शरीर गठीला व स्वस्थ होता है। मंगोलियन बहुत परिश्रमी होते हैं, यह काम करने से कदापि नहीं घबड़ाते। ऊंट या घोड़े पर यह लोग बराबर पन्द्रह घंटे तक सवार रह सकता है। यह प्रायः घोड़े पर ही सवार रहते हैं, घुड़सवारी में यह बड़े निपुण होते हैं। कभी कभी यह लोग अश्व-प्रतियोगिता में भी भाग लेते हैं।

इन लोगों पर लामा धर्म का बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा है, इसके अलावा लगभग ढाई सौ वर्ष से चीनी सरकार भी इस पर अपना अधिकार जमाये हुये हैं। इन दोनों प्रकार के प्रभावों के कारण इन लोगों ने अपनी वास्तविक वीरता व साहस को खो दिया है। अब यह लोग बहुत गिरी हुई दशा में इधर उधर वितरित हैं, तथा सामूहिक जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

चरित्र (Character) :—

आधुनिक मंगोलियन एक स्वतन्त्र नागरिक है, वह स्वतन्त्रता को प्रेम की दृष्टि से देखता है, साहस व सहनशक्ति उसकी नस नस में होती है। यही चरित्र की वह विशेषता है, जो कि इन लोगों में एक समय बहुत अधिक थी, और यह लोग बहुत ही शक्तिशाली योद्धा थे। अब धीरे धीरे इन लोगों का नैतिक पतन हो रहा है, यह लोग अन्ध-विश्वासी हो गये हैं, धीरे धीरे सुस्त और काहिल भी होते जा रहे हैं। कुछ वर्तमान लेखकों ने इनके विषय में लिखा है, कि इनकी आदतें व चरित्र इतना गिरा हुआ है, कि उनका वर्णन भी नहीं किया जा सकता।

एक साधारण मंगोलियन कई सेर मांस एक ही दिन में खा जाता है। कुछ तो ऐसे भी होते हैं, जो कि एक भेड़ पूरी चौबीस घंटे में निगल जाते हैं। इनका पूरा दिन छुट्टी मनाने में ही जाता है। अपने पशुओं की ओर यह अवश्य कुछ ध्यान देते हैं और उन्हें यह अधिक दुःख देना पसन्द नहीं करते। अब तो कुछ मंगोलियन इतने काहिल व सुस्त हो गये हैं, कि थोड़ी भी दूर पैदल चलना बड़ा कठिन कार्य समझते हैं। वह उतनी ही दूर घोड़े पर सवार होकर जायेगा। आरम्भ से ही इनके बच्चे घुड़सवारी सीख लेते हैं, चाहे उनकी टाँगें घोड़े तक पहुंचें और चाहे न पहुंचें। वह अपने बाहरी जीवन में अधिकतर घोड़े पर चढ़ा रहना ही पसन्द करता है। जंगली से जंगली घोड़ा किसी भी साधारण मंगोल को अपनी पीठ से किसी भी भाँति गिरा नहीं सकता।

जीवन (Life) :—

मंगोलियन का घरेलू जीवन बहुत ही दरिद्र होता है। यह लोग बहुत गन्दे होते हैं और अपना शरीर कभी भी नहीं धोते। हाथ, मुंह धोने की नौबत वर्ष में एक आध बार ही आती है। इनके कपड़ों पर गंदगी के कारण कीड़े मकोड़े रेंगते रहते हैं, लेकिन यह तनिक भी चिन्ता नहीं करते, बल्कि उन्हें मारने में इन्हें मनोरंजन होता है। अपनी गंदगी के कारण, इन्हें पानी व नमी से घृणा हो गई है। यह लोग कभी भी छोटे से छोटे दलदल को पार नहीं करेंगे, और न ही अपने खेमे नम भूमि में लगायेंगे। खेमे यह लोग नमदे तथा किरमिच के बनाते हैं, स्त्रियां अधिकतर इनके अन्दर घरेलू कार्य करती हैं।

धर्म (Religion) :—

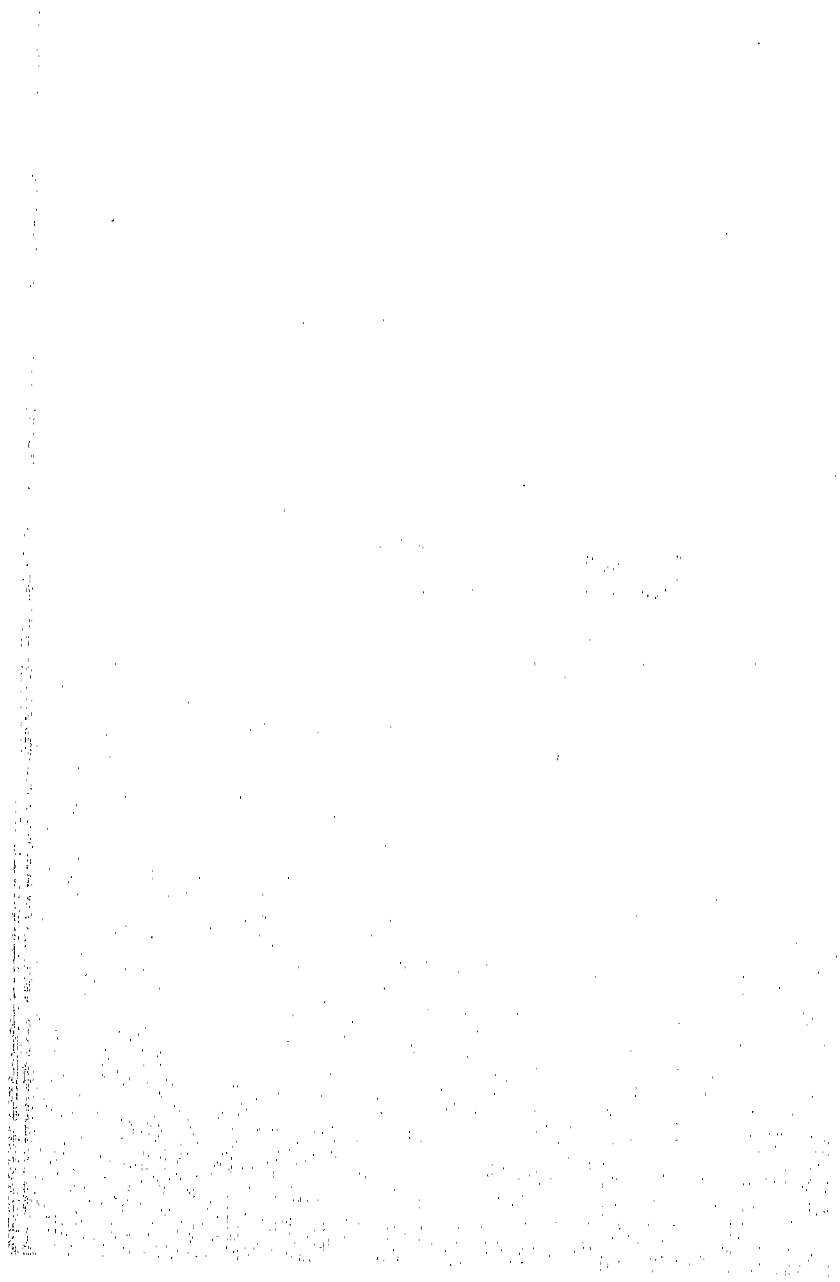
मंगोल जाति के लोग लामा धर्म को मानते हैं। यह धर्म इनकी नस नस में बसा हुआ है। उर्गा नगर में इनका कुतुखतू (Kutukhtu) तिब्बत की मोनेस्ट्री (Monastery) के बाद दूसरा स्थान प्राप्त करती है। इसके अलावा यहाँ लगभग सौ 'जिजेन्स' (Gigens) या छोटी श्रेणी के साधू पाये जाते हैं, इनका कार्य पूजा पाठ करना होता है। यह लोग विश्वास करते हैं, कि मृत्यु के बाद आत्मा दूसरे शरीर में प्रवेश कर जाती है। इस प्रकार से आत्मा कभी मरती नहीं है। इन साधुओं का समाज पर काफी गहरा प्रभाव पड़ता है। जब कभी भी कोई सन्त आता है और उसे कोई भी मंगोलियन प्रार्थना सुनाता है, तो वह बहुत प्रसन्न होता है। सन्त उसकी माला छू देते हैं और उसे दुआयें देते हैं, दुआयें सुन कर वह अपने को बड़ा भाग्यवान् समझता है। जो इन सन्तों पर विश्वास करते हैं, वह उन्हें कुछ उपहार भी देते हैं। लामा धर्म को बहुत से विद्वान इसलिये बुरा बतलाते हैं कि इसके अन्तर्गत धार्मिक कार्यक्रम करने वाले अधिकतर मनुष्य ही होते हैं, स्त्रियां नहीं।

अन्ध-विश्वास (Superstition) :—

यद्यपि धर्म ने इनके जीवन में इतना दृढ़ स्थान प्राप्त कर लिया है, परन्तु फिर भी यह लोग अन्धविश्वास व भूत-प्रेतों पर इतना विश्वास करते हैं, कि कोई भी शुभ कार्य इनको खुश किये बिना नहीं करते।

यह लोग अपने यहां के मृतक शरीर को बाहर पक्षियों व जंगली जीव-जन्तुओं को खाने के लिये छोड़ देते हैं। लामा सन्त यह बतलाता है, कि मृतक का सिर किस दिशा में होना चाहिये। राजकुमार, विद्वान् तथा लामा सन्तों की मृत्यु पर उन्हें जला दिया जाता है।

उत्तरी एशिया



सोवियत रूस

कोई भी व्यक्ति उस समय तक सोवियत रूस को नहीं समझ सकता, जब तक कि उसके भूगोल का भली भांति अध्ययन न करे। मनुष्य जब उसकी सीमा में प्रवेश करता है तो उसे एक अजीब ही प्रकार का वातावरण मिलता है, जिसके फलस्वरूप उसकी भावनायें परिवर्तित होने लगती हैं। उसके लिए यह वातावरण अन्य प्रकार के वातावरण से भिन्न है। वास्तविकता तो यह है कि सोवियत रूस स्वयं ही एक छोटा सा विश्व है, क्योंकि इसकी सीमाओं में मानव जाति की लगभग सभी आवश्यकताओं की वस्तुयें प्राप्त हो जाती हैं। इसका विस्तार पश्चिम में बाल्टिक सागर से लेकर पूर्व में बेरिंग जल-डमरू-मध्य तक, पृथ्वी की लगभग आधी गोलाई में है यदि अनुमान लगाया जाय तो कदाचित् विश्व के समस्त भूतल के क्षेत्र का सातवां भाग इसी में सम्मिलित है। ट्रांस साइबेरियन रेलवे को व्लाडीवोस्टक से मास्को तक पहुंचने में एक सप्ताह से अधिक समय लगता है। इसका वर्तमान क्षेत्रफल ८,५९७,००० वर्गमील है। इस क्षेत्र में अनेक प्रकार के भौतिक तत्व देखने को मिलते हैं। यदि भूतल की ओर दृष्टि डाली जाय तो पश्चिम से पूर्व तक विस्तृत पर्वत श्रेणियां, पठार व मरुस्थल दूर तक दृष्टिगोचर होते हैं। उत्तर का आर्कटिक तट, यद्यपि हजारों मील लम्बा है, परन्तु वर्ष के आधे से अधिक समय तक बर्फ से ढका रहता है। सोवियत रूस की जलवायु की विशेषतायें हैं। देश का अधिक भाग या तो बहुत ठण्डा, या शुष्क, और या बहुत ही नम है। उत्तर की तट रेखा पर समुद्र नौ या दस माह तक बराबर बर्फ से जमा रहता है। यहाँ तक कि नदियों का बहाव भी इससे प्रभावित होता है। केवल दो एक स्थानों को छोड़कर कहीं भी ऐसा सागर नहीं है, जो बराबर साल भर तक पोत चलाने योग्य हो। आरम्भ से ही यहाँ के निवासी इस समस्या को हल करने की चेष्टा कर रहे हैं। अब भी यहाँ ग्रीष्म ऋतु के छोटे से मौसम में सैकड़ों स्टीमर आकर एकत्रित हो जाते हैं। परन्तु प्रकृति से लड़ना कोई हंसी खेल नहीं है। इन्हें कितनी कठिनाई होती है इसका अनुमान नहीं लगा सकते, बल्कि वह रूसी वैज्ञानिक ही लगा सकते हैं, जो कि सदा इस बात की चेष्टा में लगे हुए हैं कि किस प्रकार देश के आर्कटिक तट का प्रशान्त महासागरीय तट से आर्कटिक मार्ग द्वारा मिला दिया जाय। दुर्भाग्य से रूस की स्थिति इस महाद्वीप पर

बड़ी एकान्त में है। अपने निकटवर्ती देशों से भी यह ऊँची ऊँची पर्वत श्रेणियों तथा विस्तृत मरुस्थलों द्वारा अलग है। काश, यह आर्थिक दृष्टिकोण से आत्मनिर्भर नहीं होता, तो कदाचित इसकी दशा बड़ी शोचनीय होती।

यदि देखा जाय तो योरोपियन रूस तथा साइबेरियन रूस एक ही खण्ड है, क्योंकि यूराल पर्वत ने इन दोनों के मध्य कोई भी राजनैतिक सीमा निश्चित नहीं की है। यद्यपि भौतिक तथा राजनैतिक दृष्टिकोण से ये एक ही भाग हैं, परन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से दोनों भिन्न हैं। योरोपियन रूस में योरोपियन संस्कृति तथा साइबेरियन रूस में एशियन संस्कृति दृष्टिगोचर होती है, परन्तु पूर्णतया नहीं। एक रूसी लेखक ने लिखा है कि "हम लोगों को योरोपियन लोग एशियन समझते हैं और एशियन केवल योरोपियन।

इसकी भौगोलिक एकता, जिसके अन्तर्गत विस्तृत समतल क्षेत्र मरुस्थल, पर्वत श्रेणियाँ, महाद्वीपी जलवायु तथा कृषि व औद्योगिक विकास इत्यादि हैं,—निरन्तर यहां के भौतिक तथा राजनैतिक रूपों को परिवर्तन कर रहीं हैं। इस भौगोलिक एकता के होते हुए भी यहाँ कई क्षेत्रों में भिन्नतायें पाई जाती हैं, उदाहरणार्थ—जातियाँ, संस्कृति तथा जलवायु; जिनमें कि भिन्नता प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होती है।

वर्तमान समय में रूस के सन्मुख केवल दो ही प्रमुख समस्यायें हैं। प्रथम—आर्कटिक तटीय भाग का उपयोग और द्वितीय-दूरी की समस्या को हल करना। द्वितीय समस्या उस समय तक हल नहीं हो सकती जब तक कि बहुत ही तीव्र गति से चलने वाले यातायात के साधनों का निर्माण न किया जाय।

भौतिक रूप (Physical Aspect)

धरातल (Relief)

सोवियत रूस के धरातल का अध्ययन तीन श्रेणियों में भलीभांति किया जा सकता है। प्रथम साइबेरिया का क्षेत्र जो कि एशिया के ठीक उत्तर में है, द्वितीय काकेशस का भाग जो कि पश्चिम में कालेसागर तथा कैस्पियन सागर के मध्य है, तृतीय रूसी तुर्किस्तान का क्षेत्र जो कि एशिया के मध्य में स्थित है।

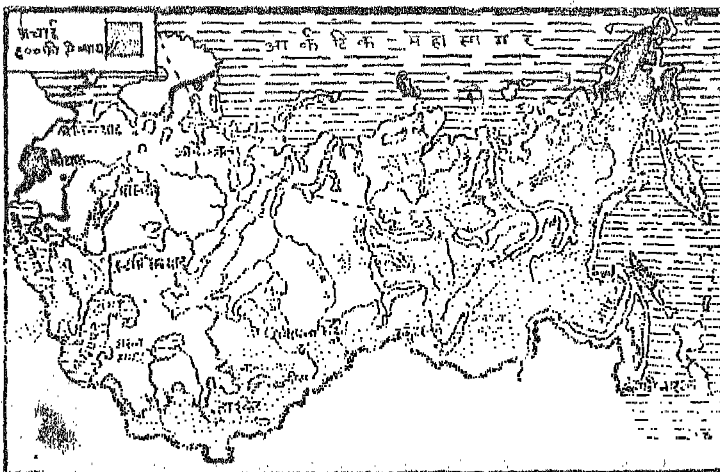
प्रथम—साइबेरिया का भाग ४६°–७८° उत्तरी आक्षांशों तथा ६०°–१९०° पूर्वी देशान्तरों के मध्य में स्थित है। इसका विस्तार पश्चिम में ओरल्क से लेकर उत्तर पूर्व में बेरिंग स्ट्रेट तक ४२०० मील तथा उत्तर में केप चिल्यास्किन से दक्षिण में तारबगताई श्रेणी तक २००० मील है। इसके क्षेत्रफल का अनुमान है कि यह ४८३०००० वर्ग मील है। इस सम्पूर्ण क्षेत्र का धरातल हर स्थान पर भिन्न है। दक्षिण-पश्चिम में निम्न भूभाग है, इस भूभाग में उच्च भूमि केवल दक्षिण व पूर्व की ओर ही मिलती है। इस उच्च

भूमि को अल्ताई पर्वत माला कहते हैं यह एक तरफ तरबगताई को स्पर्श करती है। तरबगताई कदाचित् त्यानशान का ही उत्तरी खण्ड है, इसी भाग से कई छोटी छोटी नदियाँ निकली हैं।

इरतिश की घाटी से अल्ताई (स्वर्ण पर्वत) उत्तर-पूर्व की ओर फैले हुए हैं। यह सयान श्रेणी से दोरिदन आल्पस तथा उससे भी आगे बैकाल झील तक चले गये हैं, इनके अनेक नाम हैं जैसे याब्लीनोयाई तथा 'स्टेनोवाइ' और 'कमचटका'। उत्तर पश्चिम में यह ईस्ट केप तक अन्त हो जाता है। यही श्रेणियां ओखोटस्क सागर के निकट एक ऊंचे उठे पठार के रूप में हैं।

अल्ताई पर्वत कोई श्रेणी के रूप में नहीं हैं, बल्कि इसमें अनेक पृथक पृथक श्रेणियां हैं जो कि अपर इरतिश एवं येनेशी की घाटी के मध्य फैली हुई हैं। इन दोनों घाटियों के दक्षिण में अल्ताई पश्चिम से पूर्व या उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व दिशाओं में फैले हुए हैं। परन्तु इनके उत्तर में दिशा उत्तर दक्षिण ही है। असली अल्ताई दमीनोगोरस्क (Sanke) पर्वत से लेकर उत्तर पूर्व में अल्तीन (Altyn) झील तक ही हैं।

अल्ताई पर्वत की मङ्गोलीय शाखा हुरका श्रेणी कहलाती है, यह गोबी रेगिस्तान में दक्षिण-पूर्व से, उत्तर-पश्चिम तक फैली हुई है। उत्तर में ८००० फुट



रूस का भौतिक रूप

ऊँचे उच्च भाग में परिवर्तित हो गई है। यहाँ से ८० मील तक एक रेतीला बन्जर गया है। इसमें अनेक पथरीले भाग हैं, जो कि इस श्रेणी को अल्ताई से मिलाते हैं।

रूसी भूगोल लेखकों ने अल्ताई को दो भागों में विभाजित किया है, पहला छोटा अल्ताई (Little Altai) तथा दूसरा बड़ा अल्ताई (Great Altai)। ऊपर छोटे अल्ताई का वर्णन किया जा चुका है। बड़ा अल्ताई मङ्गोलिया तक प्रवेश कर गया है। यह बिलूका माला है जिसके पश्चिम में कोबदो का पठार है।

पश्चिम का भाग रूसी अल्ताई का कोलीमन के नाम से प्रसिद्ध है। यह वनों से ढके हुए हैं, इनमें कहीं कहीं बहुत ही सुन्दर प्राकृतिक दृश्य हैं। यह भाग पश्चिमी यनेसी घाटी तक चला गया है। अन्य शिखायें इधर उधर कुछ ही ऊंची पाई जाती हैं।

बैकाल क्षेत्र के बाद एक पठारी क्षेत्र आता है। यह आर्कटिक और प्रशान्त महासागरों के मध्य है, इसकी लम्बाई ट्रांसबैकालिया से बेरिंग तक २४०० मील है। यहाँ पर याबलोनाय (Apple) श्रेणी, जो कि बैकाल झील के दक्षिण से चीन की सीमा तक चली गई है, पाई जाती है। यह अधिक ऊंची नहीं है। सड़क द्वारा चीता से बैकाल झील तक इसे पार किया जा सकता है। याबलोनाय के पूर्व में 'दौरिअन स्टेप्स' मिलते हैं। यह गोबी रेगिस्तान का ही भाग है।

आमूर तथा याबलोनाय के उत्तर में स्टेनोवाई पर्वत अल्दन तथा जीया के मध्य फैले हुए हैं। इनकी औसत ऊंचाई ७००० फुट है। उत्तर में कैप्टन ओखोटस्क के पश्चिम में ४३६० फुट ऊंची है। स्टेनोवाई के पूर्व में छोटे खिंघन पर्वत हैं। यह २५०० फुट ऊंची है और वनों से ढकी हुई है। इसके भी दक्षिण-पूर्व में मन्चूरियन पर्वत आ जाते हैं।

कमचटका का भाग इन सबों से अलग ही है। यह आग्नेय चट्टानों का बना हुआ है। इसमें लगभग १४ जीवित अग्नि पर्वत हैं। इनमें से क्लीचेवस्कया स्पोका (Klyuchevskaya Spoka) (१६००० फुट) एशिया में सबसे ऊंचा ज्वालामुखी पर्वत है।

अब यदि पश्चिमी साइबेरिया की ओर ध्यान दिया जाय तो हम देखते हैं कि यह एक समतल बहुत ही विस्तृत मैदान है, जो यूराल से पूर्व की ओर फैला हुआ है। यहाँ पर स्टेप्स हैं और इरतिश की घाटी में वन, दलदल तथा गड्ढे मिलते हैं। इरतिश के पूर्व में देश बिल्कुल स्टेपलैण्ड हो गया है। ओमस्क से यदि इस समतल भाग को देखा जाय तो प्रेरीज के मैदान मिलते हैं। इस क्षेत्र के दक्षिण में अरकत पहाड़ियाँ हैं यह केवल १२०० फुट ऊंची हैं। सेरजियोपोल (Sergio; ol) से तरबागताई श्रेणी की तरफ से बनी हुई चोटियाँ दीखने लगती हैं। [illegible] पहाड़ियों के उत्तर अलाताऊ दल दीखते हैं और इनके भी उत्तर में [illegible] है।

अब यदि तोबोलस्क से ओबी नदी की घाटी में उत्तर की ओर प्रवेश किया जाय तो कुछ वन तथा दलदल मिलते हैं, और आगे टुण्डा के क्षेत्र आ जाते हैं। यह उत्तर तथा उत्तर पूर्व में ओबे व यनेसी के डेल्टों तक फैले हुए हैं। यहां दूर तक केवल दलदल तथा बर्फीले भागों के अलावा और कुछ दृष्टिगोचर नहीं होता।

पश्चिमी एवं पूर्वी साइबेरिया की सीमाओं को येनेसी नदी निश्चित करती है। पूर्वी साइबेरिया में पहाड़ियां, चोटियाँ तथा पठार हैं। इन भूभागों ने नदियों के बहाव को भी परिवर्तित कर दिया है।

द्वितीय—रूसी तुर्किस्तान के विषय में कहा जाता है कि यह हर स्थान पर रेतीला तथा खारी समतल भूभाग है। परन्तु जितना ऊंचा धरातल यहाँ पर है, उतना रूस में और कहीं भी नहीं पाया जाता। यहाँ हमको ऐसे भी भाग मिलते हैं जो समुद्र सतह से ८५ फुट नीचे हैं तथा ऐसे भी मिलते हैं जो समुद्रसतह से २६००० फुट ऊंचे हैं।

उच्च भूमि जो कि रूसी तुर्किस्तान के पूर्व में है, दो, ही उच्च भूखण्ड रखती प्रथम पामीर तथा द्वितीय त्यानशान पर्वत (अलाई सम्मिलित करते हुए)। यह सब पश्चिम में तारिम तथा अरल-कैस्पियन निम्न भूमि में लुप्त हो जाती हैं।

*ग्रेट पामीर अथवा बाम-ई-दुनियां दूसरे शब्दों में 'विश्व की छत' (**Roof of the world**) कहलाती है। मध्य एशिया की उच्च पर्वत मालायें यहीं से प्रारम्भ होती हैं। यहीं पर दक्षिण-पश्चिम तथा दक्षिण पूर्व से हिन्दकोह (हिन्दकुश) तथा हिमालय, पूर्व से कुवलुन, त्यानशान उत्तर पूर्व से आकर मिलते हैं। यह पामीर का पठार पश्चिम में बर्फीली उच्च भूमि में लुप्त हो जाता है। पामीर पठार के बारे में बहुत कुछ जान लिया गया है। भूगर्भ शास्त्रियों का कथन है कि यह तिब्बत के पठार का ही उत्तरी-पश्चिमी भाग है। इसकी ऊंचाई १२००० फुट के लगभग है इस पठार की लम्बाई २८० मील तथा चौड़ाई १२० से १५० मील है। इसका क्षेत्रफल ३०००० वर्ग मील है। तीन ओर से यह बर्फीला चोटियों से ढका हुआ है। उत्तर में किज़िल आर्गन (२१५०० फुट), कौफमान (२३००० फुट)। दक्षिण-पश्चिम में कुन्ला (२२५०० फुट), [illegible] (२४००० फुट)। पूर्व में चारकुम (२२५०० फुट, ताग रमा (२५८०० फुट) तथा मुस्तागआता (२६००० फुट) इन ऊंचाइयों के मध्य में कई ऊंची उठी हुई श्रेणियां इस पठार पर हैं। जो पूर्व से पश्चिम की ओर विस्तृत हैं इनकी ऊंचाई १४००० से लेकर १८००० फुट है, इनमें गहरी गहरी घाटियां भी हैं। इन घाटियों को पामीर कहते हैं, परन्तु पामीर का अर्थ है उच्च समतल भाग का पठार वास्तविकता तो यह है कि इन घाटियों में अनावृत्तिकरण के प्रभाव से पठार [illegible]

*In 1938 Wood first penetrated into the Pamir from Afgan side and discovered lake Victories, main source of Oxus river.

हो गये हैं और अब यह बहुत काफी ढक चुकी है। यही विचार धारा यङ्गहजबैंड की है। इस बात का प्रमाण यह है कि इसका एक भाग जो ताग-दुम बास पठार कहलाता है, केवल १०३०० फुट तक ऊँचा है तथा दूसरा भाग १५००० फुट से अधिक इसका ढाल पश्चिम से काशगरिया की तरफ है। चीनी लोग इसे कङ्ग-लिंग (ओनियन पर्वत) के नाम से पुकारते हैं। तार्कमा की घाटी एक चौड़े स्टेप्लैंड के रूप में हैं, यहाँ बसंत ऋतु में अनेक खिरगीज आकर एकत्रित होते हैं। काराताश की घाटी जिसके द्वारा लोग मुस्तागअता पहुंच सकते हैं १६५०० फुट ऊँची है। पूर्व में पामीर तथा काशगेरिया के मध्य यह बड़ा निकट होगया है। काराकुल झील १२७६० फुट समुद्र सतह से ऊँची है। विद्वानों का मत है कि मुस्ताग-अता पर्वत पामीर से भी अधिक प्राचीन है।

पामीर का क्षेत्र एक बंजर भाग है। इसमें वनस्पति केवल नदियों के तटों या चश्मों के निकट बहुत थोड़ी मात्रा में पाई जातीं हैं। यहाँ पर बहुत ही उत्तम स्टेपलैंड मिलते हैं—कारा—खिरगीज जाति के लोग यहाँ रहते हैं। इस पठार पर मुलायम पत्थर की चट्टानें हैं, इसीलिये इसे पार करना कठिन नहीं होता, इसमें अनेक घाटियां इस कार्य के हेतु बना ली गई हैं। पामीर के क्षेत्र में अनेक बेसिन भी पाये जाते हैं। इनमें सबसे बड़ा कारकुल है जो १२८०० फुट ऊँचा है। यह किजिल आर्ट के दक्षिण में है। यहाँ प्रायः तूफान आया करते हैं, जिससे पानी में झाग उठ आते हैं। काराकुल के दक्षिण-पूर्व में रङ्ग-कुल नामक एक छोटा सा बेसिन है। यह 'ड्रेगनझील' के नाम से भी प्रसिद्ध है। यह बौद्धों का पवित्र स्थान है। इस झील का जल गहरा नीला है। यह झील अब धीरे-धीरे लुप्त हो रही है।

थ्यानशान पर्वत श्रेणियां 'सेलेशियल पर्वत' (Celestial Mountains) भी कहलाते हैं। यह पर्वत तारिम को इजीकुल तथा इली बेसिनों को उत्तर व दक्षिण में अलग करते हैं। थ्यानशान हामी से १२० मील पूर्व में काफी दूर तक फैली हुई हैं। इसमें आगे चलकर बोगदो ओला है जो हिम रेखा से भी ऊँची उठ गई है और अंत में तरफान बेसिन के उत्तर तक फैली हुई है। यहाँ पर श्रेणी को कोई भी नाम नहीं दिया गया है। थ्यानशान इसके आगे एक पठार में लुप्त हो जाते हैं। यहाँ कई चोटियाँ हैं, तथा उत्तर और दक्षिण की ओर दस मील के फासले पर भूमि नीची (Escarpment) हो गई है। चालिस मील तक इस पठार पर घिसी हुई पहाड़ियां हैं। यहां पर बरकुल पर्वत इससे मिल जाते हैं। यह बरकुल हामी श्रेणी से छू गये हैं। हामी-बरकुल पर्वत पर अनेक बर्फीली चोटियाँ हैं, यह थ्यानशान से ५० मील की दूरी पर है। इनका थ्यानशान से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है। तारिम-हामी एक उच्च समतल भाग है। यहाँ कई अलग-अलग पर्वत मालायें हैं, जो उत्तर पश्चिम से दक्षिण-पश्चिम की ओर फैली

हुई है। इसमें दक्षिण की ओर तजताऊ है। जो तरफान को दो भागों में विभाजित करता है। यहाँ यह त्याजीताऊ पर्वत कहलाता है। इनकी अनेक श्रेणियाँ २०० मील लम्बी हैं और ६००० से लेकर १०००० फुट ऊँची हैं। इनकी बनावट का सम्बन्ध हामी-बरकुल पर्वत श्रेणियों से है।

इसके पश्चिम में एक बर्फीली श्रेणी बोगदो-ओला में जा गिरती है। इसका यहाँ कोई नाम नहीं है। यहाँ का यह भाग अन्य भागों की अपेक्षा कुछ ऊँचा उठा हुआ है। बोगदो-ओला (**Bogdo-ola**) लार्डली पर्वत (**Lordly Mountain**) है। यह एक भगवान की 'राजगद्दी' के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। इसके पूर्व में उरमुत्सी से पश्चिम में कुल्जा की ओर दो श्रेणियां और हैं, पहली दौस-मिजेन-ओरा (**Doss-Megen-Ora**) (१६००० फुट) सबसे ऊँचे पर्वतों के नाम से प्रसिद्ध है। यह तीन श्रेणियों का केन्द्र भी है। इनमें से एक वह जो जुङ्गोरिया में प्रवेश कर गई है। खुस्ता नदी केवल १० या १२ फुट चौड़ी है, परन्तु १००० फुट गहरी घाटी में होकर बहती है। यह २६ मील लम्बी है।

दौस मिजेन ओरा (Doss-Megen-Ora) के आगे त्यानशान पश्चिम की ओर बढ़ गए हैं, यहाँ इनकी दो और समानान्तर श्रेणियाँ होगई हैं एक तो रूसी तुर्किस्तान में पङ्खे के आकार में और दूसरी दक्षिण-पश्चिम की अलाई तथा ट्रांस अलाई। ये पामीर के उत्तरी तट पर समानान्तर २४० मील तक रूसी तुर्किस्तान की ओर चली गई हैं। यह त्यानशान मुख्य से कोग आर्ट (Kog Art) और तरेक-दाबन (**Terek davan**) घाटियों द्वारा अलग हैं। इसके उत्तर में अलाई पर्वत हैं जो १८००० फुट ऊँचे हैं इनको पार करने योग्य अनेक घाटियां इसमें मिलती हैं यहाँ से त्यानशान की सबसे ऊँची शिखा कौफमन (Kaufmaun) जो २५००० फीट से अधिक ऊँची है दृष्टिगोचर होती है। ट्रांस अलाई दक्षिण पश्चिम में चली गई है, और पीटर I श्रेणी में मिल गई है।

त्यानशान की सबसे प्रसिद्ध पश्चिमी शाखा एलेक्जेन्डर पर्वत है, यह लगभग १५,००० फुट ऊँचे हैं। उत्तर पश्चिम में मध्य कुमनारीन तथा चुई घाटियों के मध्य अनेक चोटियाँ हैं, शामिश (१५५५०), काराबुरा (११०००), तालसताऊ तथा मिनझिल्के ७०००, बाद वाली काराताऊ से हैं।

हामी के पश्चिम में त्यानशान के पूर्वी भाग ८००० से १०००० फुट ऊँचे हैं। हामी और बरकुल के मध्य ये कोशेती दावन घाटी जो (९,००० फुट ऊँची है) द्वारा पार किये जा सकते हैं। इसके भी आगे चीनी व रूसी तुर्किस्तान के मध्य का प्राचीन मार्ग मिलता है। इसके पश्चिम में काहुन नामक एक श्रेणी मिलती है जो

१६००० फुट ऊंची है। यहाँ अनेक समानान्तर श्रेणियां हैं। इली घाटी के पश्चिम में सूखे हुए बेसिन मिलते हैं जो युलदुज (Yulduz) या 'स्टार' (Star) कहलाते हैं। यह दोनों समुद्र सतह से ७०० फुट ऊंचे हैं।

त्यानशान में आर्ट (Art), दावन (Devan), बेल (Bel), कुतल (Kutal) नाम की घाटियों को देखिये। आर्ट बहुत ऊंची तथा खतरनाक घाटी है, दावन बहुत ही कठिन पथरीला भाग है। बेल बहुत नीची सी साधारण घाटी है, और कुतुल एक चौड़ी पहाड़ियों के मध्य का मार्ग है।

युलदुज बेसिन के लिए कहा गया है कि पहले यह अल्पाइन झीलों के स्थान थे, इसका पानी धीरे धीरे घाटियों द्वारा निकल गया। युलजुल के उत्तर में आल्गो नदी तक अनेक चोटियाँ हैं। आल्गो नदी एक गहरे लुकचुन नामक गड्ढे में बहती है। इस गड्ढे में एक नमकीन झील है जो समुद्र सतह से नीची बतलाई जाती है। इसके उत्तर और पश्चिम में उपजाऊ क्षेत्र हैं। त्यानशान के दक्षिण में युलदुज घाटी तथा बगुर उद्यान के मध्य अनेक सीधे ढाल मिलते हैं। चट्टानें समुद्र सतह से १४ हजार फुट तक ऊंची है।

युलदुज बेसिन के दक्षिण में झील इजीकुल के पश्चिम में अनेक नाम होगए हैं। मुज-आर्ट-ताऊ तथा खान टेंगरी इत्यादि। बाद वाली की ऊंचाई २३६०० फुट हैं, इस पर ग्लेशियर तथा बर्फीली चोटियां भी पाई जाती हैं। युलदुज के पश्चिम में विस्तृत समुद्री क्षेत्र हैं, यह त्यानशान पीलू कहलाते हैं और पश्चिम की ओर कुछ उठ गये हैं। यहा पर एक झील सैराम स्थित हैं, इस झील के उत्तर में जुङ्गेरियन अलाताऊ हैं और दक्षिण में बोरो होरो श्रेणी है। बोरो होरो श्रेणी टीन सिजन ओरा का पश्चिमी भाग है। बोरो होरो के सम्मुख नानशान श्रेणी हैं। यह श्रेणी दक्षिण में एक दम से कुल्जा के मैदान से उठ गई है। इसके एक तरफ तेकीज (Tekes) और दूसरी तरफ किगेन (Kegen) नदियां हैं। नारिन घाटी के उत्तर में प्रमुख श्रेणी 'अलताऊ तेस्की' या (Shady Ala-Tau) कहलाती है

इजीकुल झील के सम्मुख अलताऊ कुङ्गी(Suny-Ala-Tau) स्थित है। यह बसंकुन घाटी द्वारा पार किये जा सकते हैं।

त्यानशान पर्वत की लम्बाई पश्चिम से पूर्व तक १५०० मील तथा चौड़ाई २५० मील है। इसका क्षेत्रफल ४००००० वर्ग मील है, दूसरे शब्दों में यूरोप के कुल पर्वतीय क्षेत्रफल के योग के बराबर है।

मुगोजर तथा नर्गिताई पहाड़ियों में मुगोजर पहाड़ी यूराल से एम्बा नदी के मध्य है। यह निम्न पहाड़ियों का एक भूभाग है जो पांचे को अरली-कैस्पियन बेसिन से अलग करता है। कुछ रूसी भूगर्भ शास्त्रियों का कथन है कि यह पहाड़ियां यूराल

पर्वत की ही लगातार पहाड़ियां हैं। यद्यपि अब यह ६ मील के अन्तर पर हैं। सबसे ऊंचा भाग आइरुक (Airuk) है जो समुद्र सतह से १९७० फुट है। यह बालकश झील के उत्तर में पूर्व की ओर चली गई है और अन्त में तर्बगताई से मिल गई है। यह मरमोल पर्वत कहलाते हैं। अपर इरतिश घाटी के पूर्व में दो झीलों के मध्य में स्थित है। इस नदी के ऊपर तस ताऊ (९८५० फुट), मुजताऊ (११३२० फुट) मुजताऊ के पश्चिम में खाबर-आंसू नामक घाटी है जो कि समुद्र सतह से ७६२८ फुट ऊंची हैं। साइबेरिया तथा इली बेसिन के व्यापारियों के हेतु, यह बड़ी महत्वपूर्ण घाटी है।

तुर्किस्तान का निम्न भाग कैस्पियन तथा यूराल नदी के मध्य एशिया की उच्च भूमि तक विस्तृत है। उत्तर में इसकी कोई निश्चित सीमायें नहीं हैं, बल्कि साइबेरिया के क्षेत्र में यह लुप्त हो जाता है। दक्षिण में इसकी सीमा हिन्दकोह (हिन्दूकुश) नामक पर्वत तथा हरी रुद घाटी से निश्चित होती है। इस भाग में अरलो-कैस्पियन गड्ढा बहुत ही महत्वपूर्ण प्रमुख भाग है। यहाँ पर भूमि भूमध्य सागर के धरातल से ८५ फुट नीची हो गई है। पूर्व की ओर कैस्पियन सागर उस्त उर्त पठार के द्वारा अरल सागर से अलग है।

इस उस्त उर्त नामक पठार का पूर्वी भाग समुद्र सतह से ५०० फुट ऊंचा है। दक्षिण ओर पश्चिम में यह २१० फुट नीचा होगया है। काला सागर, कैस्पियन तथा अरल सागर पहले अवश्य सम्बन्धित रहे होंगे। काले सागर के विषय में कहा जाता है कि बासफोरस के स्थान पर भूमध्यसागर फट गया था और उसका तमाम जल इसमें आकर एकत्रित हो गया। यह सच्चाई यहां की प्राचीन कथाओं में भी मिलती है।

अरल सागर के उत्तर में मैदान अथवा स्टेपलैंड पहले एक समुद्री क्षेत्र था। इसमें अब भी अनेक झीलें मिलती हैं, उदाहरणार्थ चुई और सारीपू। बालकश तथा काराकुल झीलों में इली तथा ताराज नदियां गिरती हैं, अरल या चुई से किसी भी भांति सम्बन्धित नहीं है। बालकश के विषय में कहा जाता है कि प्राचीन काल में यह अवश्य ही पूर्व की ओर फैला होगा और 'जुंगेरियन स्ट्रेट' में शामिल रहा होगा। जब इन समुद्रों में आपस में सम्बन्ध रहा होगा तब बालकश की सतह ५०० फुट रही होगी। क्योंकि इस समय यह ५१४ फुट है। मध्य एशिया का भाग बराबर बहुत ही धीरे धीरे उठ रहा है और शुष्क होता जा रहा है।

तुर्किस्तान निम्नभूमि के अनेक नाम हैं। अरल के उत्तर में यह 'काराकुम' या 'ब्लैक सैंड', ओक्सस (Oxus) तथा जैक्सार्टस (Jaxartas) के मध्य 'किजिल कुम' या 'रेड सैंड' ... श्रेणी तथा चुई नदी के मध्य ... या ...

'सेंड' और ख्वारिज्म (Khwarezm) या तुर्कोमन रेगिस्तान ऑक्सज और जक्जार्टस नदियों के मध्य कहलाता है। यह शुष्क भाग दूर तक भूरे रङ्ग का दृष्टिगोचर होता है।

तृतीय काकेशिया की स्थिति सोवियत रूस के मानचित्र पर बड़ी महत्वपूर्ण है। काले सागर पर स्थित पोती तथा कैस्पियन सागर पर स्थित दरबेन्ट के मध्य यह पश्चिम से पूर्व तक ३५० मील हैं। परन्तु कर्च की स्ट्रेट से लेकर कुमा के मुहाने तक यदि सीधी रेखा खींची जाय तो यह रेखा ५०० मील होगी। उत्तर से दक्षिण में अरारत की चोटी तक यह ४२० मील है। परन्तु ग्रेट काकेशिया के विषय में कोई सही अनुमान नहीं देते। अब यदि एक तिरछी रेखा तामन प्रायद्वीप से कैस्पियन सागर पर स्थित स्परिन प्रायद्वीप तक खींची जाय तो उसकी लम्बाई ७२० मील होती है। इस मध्य की श्रेणी से इस भाग के दो खण्ड हो सकते हैं। प्रथम सिस-काकेशिया तथा द्वितीय ट्रांस-काकेशिया। दोनों का क्षेत्रफल लग भग १८६००० वर्ग मील है।

काकेशिया पर्वत एक ऐसा क्षेत्र है, जिसका भली भांति अध्ययन किया जा चुका है। उत्तर की ओर से यदि इसे देखा जाय तो यह अखण्ड दीवार की भांति दृष्टिगोचर होता है। मैदान से यह एकदम ऊंचा होगया है, इसमें अनेक ऐसी शिखायें हैं जो बराबर बर्फ से ढकी रहती हैं। दक्षिण की ओर यह रिओन तथा कुरा घाटियों में एकदम से नीचा होगया है। दक्षिण में निम्न भूमि जो मिलती वह, उत्तर के मानिच निम्न भाग से मिलता जुलता है। इन दोनों निम्न भागों की मध्य की भूमि काकेशिया मुख्य या ग्रेट काकेशिया के नाम से प्रसिद्ध है। एन्टी काकेशिया या न्यून काकेशिया उस भाग को कहते हैं, जो कि रिओन-कुरा निम्न भूमि से हटकर हैं और जिसकी अनेक शिखायें उठी हुई हैं। इन दोनों पर्वतीय क्षेत्रों का सम्बन्ध सुरम या मेस्क श्रेणियों द्वारा ही है।

केवल इस स्थान को छोड़कर ग्रेट काकेशस दक्षिणी लजिस्तान तथा आरमीनियन उच्च भूमि से बिल्कुल अलग है। इसकी प्रमुख शाखा कैस्पियन सागर के नीचे होकर बाल्कान पहाड़ियों तक चली गई है। वास्तव में ग्रेट काकेशस उत्तर पश्चिमी इरानियम इस्कार्पमेंट (Escarpment) का ही एक भाग है। यह पश्चिमी हिन्दकोह (हिन्दूकुश) की ही शाखा है, यह केवल तजन्द घाटी द्वारा ही केवल एक स्थान पर कटी हुई है। दक्षिण-पूर्वी कैस्पियन तट पर खोरासन की सीमा पर यह कुरेन दाग के नाम से विस्तृत है। यहां इसकी दो शाखायें हो जाती हैं। पहली केस्पियन दक्षिणी तट पर है और एल्बुर्ज कहलाती है और उत्तर-पश्चिम में आरमीनिया उच्च भूमि से मिल जाती है। दूसरी वह है जो कैस्पियन के नीचे-नीचे बाल्कान तक चली गई है, और जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है। इस प्रकार से हम देखते हैं कि ग्रेट काकेशस

मध्य एशिया की ही शाखा है जो कि तामन प्रायद्वीप होती हुई दक्षिणी क्रीमिया की उच्च भूमि में लुप्त हो जाती है।

ग्रेट काकेशस बहुत कुछ योरोप के पिरेनीज पर्वत से मिलते जुलते हैं। दोनों ही दो समुद्रों के मध्य हैं। दोनों ही दो भागों में विभाजित किये जा सकते हैं। काकेशीश में, जो दोनों के मध्य खाई (डेनियल घाटी) पाई जाती है, वह दोनों सागरों के मध्य में है। काकेशस के पूर्वी भाग दगिस्तान कहलाते हैं। यह भाग जो कि ट्रांस-काकेशिया में ही शामिल है पश्चिम की अपेक्षा बहुत ऊंचे नीचे हैं। रिओन बेसिन के उत्तर में इनकी औसत ऊंचाई १०००० से १२००० फुट है, एल्बुर्ज १८५२६ फुट ऊंची है। कई चोटियां योरोप की माउन्ट ब्लैंक से ऊंची हैं। शखारा की दो शिखायें (१७०३६ तथा १६५६० फुट), जङ्गा की दो शिखायें (१६५६६ तथा १६५२७ फुट), कजबेक (१६५४६) खरतनताऊ (१६२६६ फुट) उसबा तथा आगिस दोनों ही १६००० फुट से ऊंची है। इस क्षेत्र में १०० मील तक कोई भी घाटी १०००० फुट से नीची नहीं है। मेमीशन घाटी जो कि रिओन के निकट है ६३५२ फुट ऊंची है।

एल्बुर्ज के पश्चिम में काकेशस तटीय श्रेणी का रूप धारण किये हुए हैं, यह रिओन के मुहाने से तामन प्रायद्वीप तक फैली हुई हैं। एल्बुर्ज से कुछ हटकर इस भाग में कई ऊंची ऊंची बर्फीली चोटियां पाई जाती हैं, इनमें मरुक, जमानताऊ तथा ओस्तेन प्रसिद्ध हैं। यह तीनों हिम रेखा के ऊपर ही स्थित हैं। तट के निकट यह पहाड़ियां १२००० फुट नीची हो गई हैं। कुबान डेल्टा के निकट इस भाग का अन्त हो जाता है। पूर्व में दगिस्तान में कोई भी चोटी इतनी ऊंची नहीं है जितनी कि पश्चिम में। बोरबालो पर्वत (११९०० फुट) इस भाग के पश्चिम में स्थित है, इस स्थान पर मुख्य शाखा के यहाँ दो भाग हो गये हैं, जिनके द्वारा अन्डी पहाड़ी दो खण्डों में विभाजित होगई है। एक अपशरिन प्रायद्वीप की ओर तथा दूसरी तिरेक डेल्टो की ओर। इस भाग में भी कई चोटियां १४००० फुट से अधिक ऊंची है सबसे ऊंची बसर जसी (१४७२२ फुट) है। कुमीनोताऊ (१४१४०), तुगामता (१३६४०), [illegible] (१३७८०), [illegible] (१३६१०), बेलेंकी-मीर (१३५२०), सारी-दाग (१२१६०), बाबा-दाग (१२०८०) फुट ऊंची हैं। इस त्रिभुजाकार क्षेत्र में दो चोटियां शाह-दाग तथा शलबुज दाग १४००० फुट से अधिक ऊंची हैं। दक्षिण-पूर्व में ये बहुत नीची होगई हैं और बाकू के निकट केवल कम ऊंची पहाड़ियां ही दृष्टिगोचर होती हैं। दगिस्तान में बोगोस श्रेणी मध्य में स्थित है, कई बार इसकी छान-बीन हो चुकी है। यह [illegible] रमणीय क्षेत्र है। यहां सुन्दर-सुन्दर [illegible] भी पाये जाते हैं। [illegible] के क्षेत्र में [illegible] तथा [illegible], [illegible] [illegible] ८ [illegible], [illegible] ५१ मील [illegible] ८ [illegible] ६ [illegible] हैं।

काकेशस का अदाई खोक पर्वतीय भाग अपने बर्फीले क्षेत्रों के लिए बहुत प्रसिद्ध है। इनमें से सीजा, दरगम, सोंगुता, एकलीकोम, कारागम तथा तुरजुला हर दिशाओं की ओर फैली हुई हैं। इन्हीं बर्फीले क्षेत्रों से रिओन आर्डन तथा उरूख इत्यादि नदियां निकलती हैं। ऊल्-चिरन काकेशस का सबसे बड़ा ग्लेशियर है, इसकी लम्बाई ११½ मील है।

काकेशस के उत्तरी और दक्षिणी ढाल अपने रूप में बिल्कुल भिन्न हैं। रिओन तथा कुरा की ओर ढाल बिल्कुल सीधे हैं, मगर मानिच की ओर ढाल इतने सीधे नहीं हैं। यहां पर अनेक समानान्तर श्रेणियां हैं, इसके बाद चूने की उठी हुई चट्टानें हैं, यह चूने की चट्टानों का भाग धीरे-धीरे स्टेपलैंड में परिवर्तित होगया है। मध्य की ओर यह क्षेत्र ३००० फुट ऊंचा होगया है। यह श्रेणी जो कि ३००० फुट ऊंची है, दानेदार चट्टानों की बनी हुई हैं। दोनों ओर 'शिस्ट' नामक चट्टानें भी मिलती हैं। यह इओसीन युग की हैं। काकेशस पर्वत पर झरने और झीलों का अभाव है, यह ग्लेशियल युग में उपस्थित थी।

एन्टी काकेशस पर्वत में अनेक भिन्नतायें मिलती हैं। इसमें अनेक ऊंचे-नीचे पठारी क्षेत्र हैं। इस भाग का धरातल इतना गड़बड़ है कि दक्षिण में कोई सीमा निश्चित नहीं की जा सकती। यह भाग रिओन तथा कुरा घाटियों से एकदम ऊंचा होगया है। दक्षिण में यह लजिस्तान तथा आरमीनिया उच्च भूमि में लुप्त हो जाता है। वास्तविकता तो यह है कि एन्टी काकेशस ईरान के पठार का पश्चिमी 'इस्कार्पमेंट' है। ग्रेट काकेशस केवल एक मेस्क (Mesk) नामक श्रेणी द्वारा इस भाग से सम्बन्धित है।

यह सम्बन्ध मेस्क श्रेणी द्वारा पूर्ण है। यह ८००० फुट ऊंची है। और दक्षिण-पश्चिम की ओर अजारा के रूप में चली गई है और लजिस्तान में परिवर्तित होगई है। यह श्रेणी जो कि काले सागर को एक मील हटकर छूती है, धीरे-धीरे तुर्किश सीमा तक ऊंची हो जाती है। यहां यह कर्च-खाल (११४१० फुट) से बातुम के दक्षिण-पश्चिम में मिल जाती है।

अजारा श्रेणी पूर्व में अखलकलाकी पठार से पूर्व में एक उच्च कुरा घाटी द्वारा अलग है। यह पठार बहुत ही ऊंचा नीचा है, इसकी ऊंचाई ८००० फुट है। इसकी स्थित अपर कुरा तथा अरस बेसिन के मध्य है। यह बहुत ही बञ्जर भाग है। पहले इसके मध्य में एक झील थी, जिसके चिन्ह अब भी चालडिर तथा अन्य छोटी छोटी झीलों के रूप में है, कुछ कुरा तथा अरस नदियों को जल प्रदान कर रही हैं। अन्य झीलें केवल दलदल तथा नमकीन मिट्टी के गड्ढे हैं। पूर्व में इस पठार पर अनेक ज्वालामुखी पर्वत की चोटियां हैं। इनमें से माउन्ट समसार (१११९५ फुट) ऊंची है।

इसका मुख (Crater) दो मील लम्बा है। इसी के निकट महान तथा तुच्छ अबुल (११००० फुट) नामक आग्नेय पर्वत हैं। यह अरारत से मिलते जुलते हैं।

दक्षिण में यह पठार उच्च भूमि में परिवर्तित हो गया है। यह उच्च भूमि समुद्र सतह से ३५०० फुट ऊंची है। इस उच्च भूमि के दो भाग हैं, एक एरीवन (Erivan) तथा दूसरी कार्स (Kars) यहाँ पर गोकचा तथा अलागोज नामक प्राचीन झीलों के बेसिन हैं, और दक्षिण में पठार अरास की घाटी तक चला गया है, और अरास को भी अपने में शामिल कर लेता है।

अरास तथा मुराद चाई (फरात की पूर्वी शाखा) के मध्य में स्थित श्रेणी पर माउन्ट अरारत की स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है। इस शिखर के विषय में यहाँ के निवासियों को अनेक कहानी किस्से मालूम हैं। आरमीनियाँ के निवासी इसे मेसिस लेर्न (Masis Lern) अर्थात् ग्रांड पर्वत (Grand Mountain) के नाम से, तातार तथा तुर्क लोग 'अगरी-देग' (Agri-dagh) अर्थात् 'बहुत ढालू पर्वत (Steep Mountain) तथा फारसी लोग कोह-इ-नूह (Kah-i-nuh) अर्थात् नो-हाज माउन्ट (Noah's Mount) के नाम से पुकारते हैं।

यदि अरारत की शिखर को नखी चिवन (Nakhicheven) के स्थान से देखा जाय, तो एक शंकुदार पर्वत (Cone) के रूप में दीखेगा। परन्तु इसमें दो शंकुदार (Conic) पर्वत हैं, एक ग्रेट (महान्) अरारत तथा दूसरा लिटिल (तुच्छ) अरारत। यह दोनों एक ही आधार पर स्थित हैं और एक दूसरे से एक गड्ढे द्वारा अलग हैं। इन दोनों में से सबसे ऊंची शंकु में दो शिखायें हैं। इस पूरे भागका क्षेत्रफल एरीवन तथा बायाजिद के मध्य ३७० वर्ग मील है। इसके उत्तरी ढाल पर एक खाई ग्लेशियर द्वारा ढकी हुई है तथा उत्तर-पूर्वी भाग में भी एक ग्लेशियर उपस्थित है।

यहाँ पर वर्षा कम होती है, इस कारण वन केवल ११००० फुट तक पाये जाते हैं। घास १३००० फुट तक और १४२०० फुट तक अल्पाइन वनस्पति तथा इससे भी ऊपर नंगी चट्टानें दृष्टिगोचर होती हैं। ग्रेट अरारत की ऊंचाई १६९१६ फुट है, और लिटिल अरारत की १२८४० फुट है। इसके मध्य को मिलाने वाली श्रेणी ८७८० फुट तथा अपर फारस की घाटी २८०० फुट ऊंची है। यही घाटी अरारत को अलागोज (Ala-goz) से अलग करती है। यह भी एक बहुत सुन्दर चोटी है। यह ज्वालामुखी पर्वत है जिसकी ऊंचाई १३४३६ फुट है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें विभिन्न रंग के सुन्दर पत्थर हैं जो दूर से देखने में बड़े सुन्दर प्रतीत होते हैं।

बनावट (Structure)

सोवियत रूस के चारों कोनों पर बहुत ही कठोर प्राचीन दानेदार चट्टानों के क्षेत्र हैं। ये सदा से समुद्र के ऊपर ही रहे हैं, इसलिए इन पर अनाच्छादन का

भाव भी गहरा पड़ा है। यदि धरातल के दृष्टिकोण से देखा जाय तो ये रूप में कुछ कुछ 'कैनेडियन शील्ड' से मिलते जुलते हैं। इन चारों कठोर खण्डों के मध्य युवा र्तदार चट्टानों के पर्वत बन गये हैं।

इन चारों में उत्तर-पश्चिम में स्कैन्डीनेविया का क्षेत्र है। इनमें प्राचीन ेनाइट (granite) नीस (gneistss) तथा परिवर्तित चट्टानें (Metamarphic ocks) पाई जाती हैं। इनको दूसरे शब्दों में बाल्टिक शीट भी कह सकते हैं, परन्तु एशियाई रूस में इसका केवल कैरेलिया (Karelia) तथा कोला प्रायद्वीप का ३००० फुट ऊँचा भाग ही सम्मिलित है।

काले सागर के उत्तर में यूक्रेन का भाग है, यह एक दूसरा कठोर चट्टानों का खंड है। यह 'अजोव-पदोलियन शील्ड' के नाम से प्रसिद्ध है, इसमें दानेदार चट्टानें समुद्र सतह से ६०० फुट नीची हैं। इसके उत्तर में एक छोटा सा कठोर चट्टानों का ही क्षेत्र है, जो कि वोरोनेज़ (Voronezh) ब्लॉक कहलाता है।

एक तीसरा खंड मध्य साइबेरिया में आर्कटिक के निकट है। येनेसी तथा लेना के मुहानों के मध्य नीस (gneiess) तथा शिस्ट (Schists) का क्षेत्र है। इसमें होकर अनाबार नदी बहती है, यह शील्ड स्वयं अनाबार शील्ड कहलाता है।

चौथा खंड बैकाल झील के निकट है, यह एक बहुत विस्तृत तथा बड़ा क्षेत्र है। इस झील के दक्षिण-पश्चिम से लेकर यह भाग पूर्व में आल्दन नदी की घाटी तक फैला हुआ है।

इन चारों खंडों में से तीन खंड आर्थिक दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण हैं। इनमें अनेक खनिज पदार्थ मिलते हैं। कोला प्रायद्वीप में विभिन्न खनिज, यूक्रेनिया में लोहा, कोयला एवं मैंगनीज़ तथा आल्दन शील्ड में सोना पर्याप्त मात्रा में निकाले जाते हैं।

इन शील्डों के मध्य पर्तदार चट्टानों के उच्च भाग तथा पर्वत श्रेणियाँ मिलती हैं। योरोपियन रूस के समतल भाग के नीचे प्राचीन बनावट के क्षेत्र स्थित हैं, जो कि उसी रूप में हैं जिस रूप में कि पहले थे। पश्चिमी साइबेरिया के मैदानी भाग में युवा समुद्री पदार्थ एकत्रित हैं। कहीं कहीं पर ग्लेशियर द्वारा डाली हुई रेत भी मिलती है। मध्य साइबेरिया की उच्च भूमि पर प्राचीन पदार्थ मिलते हैं। योरोपीय रूस के भाग से यह अधिक ऊँचा नीचा है। तीन हजार मील के इस क्षेत्र में केवल यूराल पर्वत ही ऐसे हैं, जो कि 'फोल्ड' पर्तदार चट्टानों के हैं। कैस्पियन सागर के पूर्व में एक और बेसिन है जिसके ऊपर बालू तथा नीचे पर्तदार चट्टानों के पर्त मिलते हैं।

इन बेसिनों के निकट अनेक ऊँचे नीचे उठे हुए पर्तदार चट्टानों के भाग हैं। उदाहरणार्थ क्रिमिया, काकेशस, हिन्दकोह (हिन्दकुश) तथा कमचटका के युवा पर्तदार

पर्वत। प्राचीन पर्वत ओखोटस्क सागर से लेना तक कहीं कहीं पर ही मिलते हैं। कज़ाखस्तान (Kazakhstan) तथा यूराल की बनावट तरशियरी फोल्ड के पहले की है। इनकी शिलायें घिस गई हैं, खनिज पदार्थों में भी यह धनी हैं।

सोवियत यूनियन के मध्य भाग में न तो ज्वालामुखी पर्वत ही मिलते हैं और न ही इनमें भूकम्प आते हैं। यह अधिकतर सीमान्त भागों में ही मिलते हैं। यूराल पर्वत के मध्य में कभी कभी भूकम्प आ जाया करते हैं, परन्तु बहुत ही कम। ज्वालामुखी पर्वत कमचटका तथा काकेशस तक ही सीमित हैं। परन्तु भूकम्प, काकेशस, मध्य पूर्व-एशिया के पर्वतीय क्षेत्र, बैकाल झील के भाग तथा दक्षिण-पूर्वी कमचटका में प्राय: आया करते हैं।

ग्लेशियर युग के समय सोवियत यूनियन का उत्तर पश्चिमी भाग बर्फ से ढका हुआ था। कहा जाता है कि पूर्वी भाग तो बराबर बर्फ से ढका रहता था। यहां पर तीन ग्लेशियर युगों के चिन्ह देखने को मिलते हैं। सबसे पहला ग्लेशियर युग मिण्डेल (Mindel) था, इसमें नीपर (Dnieper) की घाटी, मास्को के दक्षिणी भाग तथा डोन (Don) नदी की घाटी के भाग बर्फ से ढक गये थे। लोगों का विचार है कि वालगा के पूर्वी भाग, यूराल से लेकर येनेसी तक का क्षेत्र तथा उत्तर में आर्कटिक का भाग भी बर्फ से ढके हुए थे।

अन्तिम ग्लेशियर युग वर्म (Wurm) था, इसमें मास्को का उत्तरी भाग ओबे नदी का डेल्टा तथा तमिर प्रायद्वीप (Taimyr Peninsula) बर्फ से ढक गये थे। अधिक दक्षिण में इसका प्रभाव नहीं था।

आजकल ग्लेशियर केवल काकेशस, पमीर, त्यानशान, अल्ताई-स्यान, बैकाल तथा वरखोयानस्क पर्वतीय क्षेत्रों तक ही सीमित हैं। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि अब भी सोवियत यूनियन में ३७२८९०० वर्ग मील का क्षेत्र बराबर बर्फ से ढका रहता है।

मिट्टियां (Soils)

रूसी कृषि की उन्नति का मूल कारण वहां की मिट्टियों का अध्ययन है। यहां के वैज्ञानिकों ने अपने देश की मिट्टियों का घोर अध्ययन किया है। इन लोगों का कथन है कि मिट्टी पर जितना अधिक प्रभाव जलवायु का पड़ता है, उतना स्थानीय चट्टानों का भी नहीं पड़ता। रूस में जितनी भी मिट्टियां पाई जाती हैं, वे सब जलवायु से ही प्रभावित हुई हैं। मिट्टी की पेटियां यदि ध्यान पूर्वक देखा जाय तो यहां पश्चिम से पूर्व की ओर फैली हुई हैं। इस देश में निम्नलिखित मिट्टी की पेटियां प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होती हैं।

(१) **भूरी मिट्टी वाली पेटी:**—यह सोवियत रूस के दक्षिण में तूरानियन निम्न भूमि के क्षेत्र में मिलती है। इसकी विशेषता यह है कि यह अधिक भुरभुरी है क्योंकि यहां का वातावरण शुष्क है।

(२) **अल्केलाइन मिट्टी वाली पेटी**—अल्केलाइन (Alkaline) शब्द का अर्थ है, क्षार के गुण वाला पदार्थ। इस प्रकार की मिट्टी का रङ्ग कुछ लाल होता है, परन्तु उतना नहीं जितना कि उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्रों की मिट्टी का होता है। यह भूरी मिट्टी वाली पेटी के उत्तर में मिलती है। कहीं-कहीं पर यह कम खारी, कहीं पर अधिक तथा कहीं पर बहुत अधिक नमकीन है। इसमें कुछ पोटाश की मात्रा भी होती है।

(३) **चेस्टनट-वर्ण की मिट्टी वाली पेटी:**—यह मिट्टी अल्केलाइन मिट्टी वाली पेटी के उत्तर में मिलती है। यह अधिक उपजाऊ नहीं है, बल्कि स्टैपलैंड की ही वास्तविक मिट्टी है।

(४) **चेरनोजम मिट्टी वाली पेटी:**—चेरनोजम (Chernozems) अथवा चेरनाजिअम (Chernozyoms) मिट्टी वाली पेटी को काली मिट्टी वाली पेटी भी कह सकते हैं। यह योरोपियन रूस से साइबेरिया तक फैली हुई है। इसके दक्षिण में चेस्टनट मिट्टी मिलती है। यह रूस की सबसे उपजाऊ मिट्टी है और आर्थिक दृष्टिकोण से बड़ी महत्वपूर्ण है। ये मिट्टी लोयेस की भांति महीन व गहरी है और इसमें जीवांश (Humus) की मात्रा बहुत अधिक मिलती है। इसकी विशेषतायें यह हैं कि शीत-ऋतु में इस पर बर्फ गिरने का प्रभाव पड़ता है तथा ग्रीष्म ऋतु में शुष्क वातावरण का। शीत-ऋतु की बर्फ जब पिघल जाती है तब बसन्त ऋतु की वनस्पति इन क्षेत्रों पर उग आती है। इसी वनस्पति की जड़ों से मिट्टी को जीवांश (Humus) की मात्रा प्राप्त होती है।

(५) **पोडसल मिट्टी वाली पेटी:**—पोडसल वनीय मिट्टी है और इसीलिये चेरनोजम मिट्टी वाली पेटी के उत्तर में टुण्ड्रा की सीमा तक मिलती है। रूस का आधा भाग इस मिट्टी से घिरा हुआ है। इस भाग में टैगा के वनीय क्षेत्र स्थित हैं। इसका विस्तार पश्चिम में यूराल पर्वत से लेकर पूर्व में कमचटका के निकट तक है। चेरनोजम के उत्तर में यह हल्की पोडसल तथा पूर्व में सारवालीन व मंचूरिया के उत्तर में नम पोडसल और इसके भी उत्तर में दलदली पोडसल मिलती है। हल्की पोडसल के उत्तर में वास्तविक पोडसल की पेटी बहुत दूर तक फैली हुई है, इसके ऊपर में टुण्ड्रा प्रदेश है। इस

मिट्टी की विशेषता यह है कि इसका रंग राख जैसा होता है। यह बालू के प्रकार की होती है तथा अधिक उपजाऊ मिट्टी में से नहीं है। इसमें कहीं कहीं पर बोग (Bog) मिट्टी भी पाई जाती है।

(६) टुंड्रा मिट्टी वाली पेटी:—यह मिट्टी टुंड्रा के क्षेत्र में मिलती है। इस पर आर्कटिक दशाओं का गहरा प्रभाव पड़ता है। यद्यपि यहाँ पर वर्षा कम होती है, परन्तु फिर भी मिट्टी में नमी बहुत अधिक पाई जाती है। यह नमी यहाँ पर कम तापक्रम पाये जाने के कारण है। भूमि साल के आठ या नौ माह तक बर्फ से ढकी रहती है। यह अधिक उपजाऊ नहीं है। केवल कहीं-कहीं पर थोड़ी सी वनस्पति उग आती है।

नदियाँ एवं झीलें (Rivers and Lakes)

सोवियत रूस में जितनी नदियाँ व झीलें हैं, उतनी एशिया के किसी भी देश में नहीं मिलतीं। साइबेरिया का भाग इस देश का एक विस्तृत भाग है, इसमें अनेक महत्वपूर्ण नदियाँ पाई जाती हैं। यहाँ की प्रसिद्ध नदियों में ओबे, यानसी, लीनायाना, अनादिर तथा आमूर उल्लेखनीय हैं। झीलों में बैकाल तथा कल्का ही इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण हैं। साइबेरिया का भाग उत्तर की ओर ढालू होता गया है। जितनी भी नदियाँ दक्षिण की उच्च भूमि से निकलती हैं वह सब उत्तर में आर्कटिक सागर में ही गिरती हैं। यह तमाम क्षेत्र छोटी बड़ी नदियों के जाल से घिरा हुआ है और ३०००० मील तक यह नदियाँ नाव्य हैं। दुर्भाग्य से वर्ष के अधिक समय तक यह बर्फ से ढकी रहती हैं, केवल ग्रीष्म ऋतु में १० या १२ हफ्ते तक इनके मुहाने खुले रहते हैं। यहाँ तक कि आमूर नदी जो कि प्रशान्त महासागर के गर्म जल में जा गिरती है, वह भी वर्ष के आधे समय तक बर्फ से ढकी रहती है।

ओबे बेसिन:—यह नदी यद्यपि सबसे बड़ी नहीं है, परन्तु फिर भी साइबेरिया के एक बड़े क्षेत्र को अपने बेसिन में सम्मिलित करती है। ट्रोयट्स्क (Troitsk) जहाँ तक कि इसकी अनेक सहायक नदियाँ मिलती हैं। अपने डेल्टे से ७०० मील अन्दर की ओर स्थित है। इसका मुहाना ३ मील चौड़ा है। इसकी सहायक नदियों में—तोबोल तवदा सहित यूराल से, इशिम आरलो-कैस्पियन क्षेत्र से, इरतिश फोब्दो के पठार से तथा ओबे अपनी कातुन, बीया, [illegible] अलताई के उत्तरी ढालों से बढ़ कर उसमें मिलती हैं। तोबोल तथा [illegible] पर इरतिश में [illegible] होकर मिलती हैं, यही [illegible] ओबे नदी है।

[illegible] (Obdorsk) के नीचे की [illegible]ओं में [illegible]

कहलाती है। छोटी ओबे में स्टीमर अन्दर तक चले आते हैं और बड़ी ओबे से नावें समुद्र की ओर ही जा सकती हैं। दोनों शाखाओं में अनेक सहायक छोटी छोटी सी नदियां आकर मिलती हैं। यहां पर इसका पाट दो मील चौड़ा है तथा ४० से लेकर ६० फुट गहरा है।

यनेसी बेसिन:—यह बेसिन सम्पूर्ण मध्य साइबेरिया को सम्मिलित करता है। यह नदी मध्य एशिया के पठार से निकलती है। इसकी दो प्रमुख शाखायें है, एक तो यनेसी स्वयं और दूसरी सिलेंगा-अंगारा। पहली वाली चीनी सीमा से निकलती है, दूसरी जो पूर्व से आकर मिलती है वह भी चीनी सीमा से आकर बहती हैं। सिलेंगा इसी की शाखा है। अपने सङ्गम के निकट सिलेंगा नदी एक मोड़ बनाती हुई ओरखोन नदी से मिलती है। ओरखोन नदी गोबी के मरुस्थल से निकलती है। यनेसी के निम्न बेसिन में पूर्व की ओर से तीन शाखायें जाकर मिलती है। प्रथम अपर तुङ्गस्का (अंगारा) जो कि बेकाल झील से आकर मिलती है। दूसरी पथरीली तुङ्गस्का तथा तृतीय लोवर तुंगस्का जो कि तुरुखांस्क (Turukhansk) पर यनेसी नदी से मिलती हैं। १६२० मील लम्बी तथा आधे मील चौड़ी हैं। इसके पश्चात् इगारका के क्षेत्र में होती हुई यह नदी आर्कटिक सागर में जा गिरती है।

येनेसी का बेसिन ११८०००० वर्ग मील है। यह नदी ५००० मील तक नाव्य है, पश्चिमी शाखा २६०० मील तथा पूर्वी २६५० मील नाव्य है।

लेना नदी:—लेना नदी उस मध्य के पठार से निकलती है। जिसका ढाल उत्तर की ओर है। अपर लेना बेकाल झील की पश्चिमी उच्च भूमि से निकलती है। कुछ दूर तक यह अंगारा के समानान्तर बहती है। कहा जाता है, कि दोनों नदियां एक सूखे हुए गड्ढे द्वारा मिली हुई थीं। इस नदी की एक शाखा विटिम बेकाल झील के पूर्व में स्थित विटिम पठार से निकलती है और विटिमस्क्या (Vitimskaya) के स्थान पर मिलती है। इसी नदी को वास्तविक लेना कहा जा सकता है, क्योंकि इसमें पर्याप्त मात्रा में जल रहता है। इसके बाद यह नदी याकूटस्क उच्च भूमि के कारण पूर्व-उत्तर पूर्व की ओर मुड़ जाती हैं, फिर यह नदी उत्तर की ओर मुड़ जाती है। जब यह नदी पूर्व-उत्तर-पूर्व को बहती है, तो इसकी एक और सहायक नदी ओलिकिमा (Olekma) याब्लोनाय पर्वत से आकर मिलती है। याकूटस्क के आगे स्टेनोवाई पर्वत से बहकर आल्डन नदी पूर्व की ओर से आकर मिल जाती है। आल्डन के संगम पर इस नदी का पाट लगभग १२ मील चौड़ा हो जाता है, डेल्टे के निकट पहुंचते पहुंचते यह केवल ३ या ४ मील ही रह जाता है। इसके डेल्टे का क्षेत्रफल ६००० वर्ग मील है। सम्पूर्ण लेना बेसिन का क्षेत्रफल १० लाख वर्ग मील से अधिक है। इसका ६००० मील का

भाग नाव्य है। जब यह वर्खोयान्सक श्रेणी के समानान्तर बहती है तो पश्चिम से विलिया नदी इसमें आकर मिलती है।

येनेसी तथा लेना नदियों के मध्य में दो नदियां और हैं, जो कि मध्य साइबेरिया के उच्च भूमि से निकल कर उत्तर में लपटेव सागर (Luptev sea) में गिरती है इनमें से एक खटांगा (Khatanga) है जो पश्चिम की ओर है, और दूसरी ओलिनेक है, जो कि ६ मील चौड़ी है, अपने मुहाने पर २० फुट गहरी है। खटांगा नदी की लम्बाई ६०० मील तथा ओलिनेक इससे लगभग दूनी है।

ठीक इसी प्रकार वर्खोयन्सक श्रेणी के पूर्व में याना (Yana) आर्कटिक में गिरती है। इसके भी पूर्व में इन्दीगिरका (Indigirka) है, जो चेरस्की श्रेणी (Cherski Range) से निकल कर उत्तर में आर्कटिक सागर में जा मिलती है। कोलिमा नदी चेरस्की पूर्व से निकलती है और ऊपर वाली नदियों की भांति आर्कटिक सागर में गिरती है। इसकी एक सहायक नदी है, जो कोलिमा श्रेणी से निकल कर इसमें पूर्व से आकर मिलती है।

आमूर बेसिनः—आर्थिक दृष्टिकोण से आमूर नदी का बेसिन बहुत महत्व-पूर्ण है इस बेसिन में दो राजनैतिक क्षेत्र हैं, रूस तथा चीनी। यह नदी शिल्का (Shilka) तथा आरगुन (Argun) नदियों के सहयोग से बनी है। शिल्का माउन्ट केन्टाई (खान-उला श्रेणी में) से जो कि रूसी सीमा है तथा आरगुन (Argun) इसी श्रेणी के दक्षिण से आकर मिलती है। आरगुन के इस स्थान पर अनेक नाम हैं जैसे केरुलेन (Kerulen) एवं लुकिन (Lukin) इत्यादि यह चीनी सीमाओं में सम्मिलित हैं। आमूर की प्रमुख धारा में ब्लेगेवेचेनस्क (Blagevyeshchensk) के स्थान पर पूर्व से जिया (Zeya) नदी आकर मिलती है। यहाँ से लेकर डेल्टे तक यह नदी नाव्य है। इसमें छोटी छोटी नावें व स्टीमर चलते हैं। इसके बाद इस नदी में ब्यूरिया (Bureya) नदी इसी दिशा से आकर मिलती है। दक्षिण की ओर से इसमें सुंगारी (Sungari) तथा उसुरी (Usuri) नदियां आकर मिलती हैं। सुंगारी नदी किन्घन पर्वत से तथा उसुरी हन्का झील से निकलती हैं। आमूर नदी की पूर्ण लम्बाई डेल्टे तक २९२० मील है।

रूसी तुर्किस्तान की नदियां कैस्पियन सागर की ओर ही बहती हैं, क्योंकि तुर्किस्तान का अधिकांश निम्न भाग यही सागर है। परन्तु दुर्भाग्य से कोई भी नदी इस सागर में नहीं गिरती, हां एक नदी एम्बा (Emba) ऐसी है जो मुगोजर पहाड़ियों से निकलती है और दक्षिण-पश्चिम से उत्तरी तट तक २५० मील की लम्बाई किरगीज स्टेपीज में बहती है। शेष नदियां आदि, बालू रेत में लुप्त हो जाती और या झीलों में

गिर जाती है, जैसे सर और आमू नदियां। जो नदियां रेत में लुप्त हो जाती हैं, इस प्रकार हैं :—ताजन्द (Tajand), मुर्घ आब (Murgh-ab) ईरान के पठार से, जारफशान (Zarafshan), चुई (Chui), और तालस (Talas) त्यानशान उच्च भूमि से निकलती हैं। सर और आमू नदियां अरल सागर में गिरती हैं। यद्यपि अरल सागर भूमध्य सागर से १६० फुट तथा कैस्पियन से २५० फुट ऊंचा है। इसमें सन्देह नहीं कि इस क्षेत्र में केवल सर और आमू ही दो नदियां हैं, जो उल्लेखनीय हैं।

आमू दरिया:—इस नदी को अंग्रेजी भाषा में ओक्जस (Oxus) अरबी भाषा में जिहुन (Jihun) फारसी में आमूदरिया तथा हिन्दू लेखकों ने इस नदी को वकशू (Vak Shu) कहा है 'वकशू' शब्द तुर्की भाषा से अकसू (Ak-su) शब्द से अनुचित निकला है। इस शब्द का अर्थ है श्वेतजल।

इस नदी में पामीर की नदियां आकर मिलती हैं। विशेषतः यह नदी दो शाखाओं से मिलकर बनी है। पहली जो कि दक्षिण है अब-इ-पंज (Ab-i-panj) कहलाती है, और दूसरी जो उत्तर की तरफ से आती है, मुर्घ आब (Murgh-ab) कहलाती है। यह रोशन में काला सागर के स्थान पर मिल जाती है। इसके मध्य में छोटा पामीर, बड़ा पामीर, शिगनन की घाटी तथा वाखन के उत्तरी भाग सम्मिलित हैं। आब-इ-पंज जो कि दक्षिण से आकर मिलती है, दो अन्य नदियां पहली काला-इ-पंज (जो कि विक्टोरिया झील से मिलती है) तथा दूसरी वाखनसू (जो बारजर के स्थान से निकलती है) के संयोग से बनी है। मुर्घ-आब जो कि उत्तर से आकर मिलती है, *गज़कुल (Gaz Kul) नामक झील से निकलती है। किरगीज़ लोग इसे चक-मक-कुल तथा चक-मक-तिन कहकर पुकारते हैं। यह झील समुद्र सतह से १३०२१ फुट ऊंची है।

बामर संगम के नीचे यह नदी समुद्र से ६५५० फुट ऊंचे क्षेत्र से होकर बहती है थोड़ी सी पश्चिम की ओर बाल्ख (Balkh) की दिशा में मुड़ जाती है इसके उपरांत अरल सागर में दक्षिण की ओर से जा मिलती है। जब यह अपने उच्च बेसिन में बहती है तो इसमें एक सहायक नदी *सुर्ख-आब (Surkh-ab) [illegible] (K[illegible]l -Su) नामक ट्रांस अलाई तथा करातेघिन पर्वत से आकर [illegible]

That is "Goose Lake" a term applied to several basins in this region, no doubt because frequented during the season by flocks of Brahmin geese.

*Surkh-ab is simply the Persian translation of the Turki Kizil Su—Red River, Both forms are Common throughout Central Asia.

*Major Herbert Wood's Shores of Lake Aral page 377.

अन्य कई छोटी छोटी सी सहायक नदियां हिन्दकोह (हिन्दुकुश) तथा बोखारा उच्च भूमि से आकर मिलती हैं। नीचे के बेसिन में ७०० मील तक कोई भी नदी नहीं मिलती। किलिफ के स्थान पर इस नदी का पाट तङ्ग होकर केवल ३५० गज़ चौड़ा है, परन्तु मैदानी भाग में यह एकदम से ८०० गज चौड़ा और २० फुट गहरा हो गया है। नदी के जल का प्रवाह बाढ़ के समय ५ मील प्रति घन्टा हो जाता है। अनुमान लगाया गया है, कि यह नदी प्रतिवर्ष १६०००००० टन मिट्टी अपने बेसिन में डालती है।

मध्य एशिया के अन्य भागों की भांति रूसी तुर्किस्तान भी दिन प्रतिदिन शुष्क होता जा रहा है। जरफशान (Zırafshan) तथा मुर्गाब (Murga-ab) मध्य आमू की दाईं और बाईं नदियां पहुंचते पहुंचते मध्य में ही रेत में लुप्त हो जाती हैं। जरफशान अथवा सोना-बिछाने (Gold Distributor) वाली नदी अलाई श्रेणी के नीचे एक ग्लेशियर से निकलती है। इसी स्थान पर १३ अन्य छोटे छोटे ग्लेशियर भी उपस्थित हैं। यहीं पर एक अति रमणीय झील स्कन्दर (Iskander), जो कि समुद्र सतह से ७००० फुट ऊंची स्थिति है। इसके बाद यह जरफशान नदी पश्चिम की ओर बोखारो के मैदान में प्रवेश करती है।

मुर्गाब (Murgh-ab) नदी जो कि अंग्रेजी में "वाटर-फाउल-नदी" (Water Fowl River) कहलाती है, उत्तरी अफ़गानिस्तान के गरजिस्तान (Garjistan) पर्वत से निकलती है, यह भी रेत में लुप्त हो जाती है। मर्व का नखलिस्तान इसी नदी का बनाया हुआ है।

सर दरिया:—इस नदी को अंग्रेजी भाषा में जक्जारटीज (Jaxarte), अरबी भाषा में सिहुन (Sihun) तथा फारसी भाषा में सरदरिया (Sir Darya or Head stream) कहते हैं। यह त्यानशान पर्वत से निकलती है। इस नदी का ऊपरी भाग नारिन (Narin) कहलाता है। यह पेट्रोव (Petrov) ग्लेशियर निकलती है, और वहां से पहले पश्चिम की ओर रूसी प्रान्त फरगना में प्रवेश करती है; फिर इसके बाद उत्तर पश्चिम की ओर मुड़कर आमू के समानान्तर बहकर उत्तर-पूर्व की ओर से अरल सागर में जा गिरती है। इसकी कुल लम्बाई २००० मील है। जब यह नारिन ग्लेशियर से निकलती है, तो केवल ४६ मील के मार्ग में ही ३३०० फुट नीची हो जाती है। इसके बाद दो गहरी गहरी घाटियों (gorges) में प्रवेश करने के उपरान्त फरगना (Ferghana) के मैदान में प्रवेश करती है।

खोजेण्ड, (जहाँ से कि यह उत्तर-पश्चिम की ओर मुड़ती है) के स्थान पर इसकी चौड़ाई केवल ४३० फुट, गहराई १३ फुट तथा प्रवाह २½ फुट प्रति सेकेण्ड है। खोजेण्ड के निकट गहरी घाटी के पश्चात् यह ८ या ९ इन्च प्रति मील नीची ९९० मील तक होती जाती है। इस नदी को तुर्किस्तान की नील नदी कहा जा सकता है। इसके

मध्य में जगह जगह पर दलदल भी मिलते हैं। फरगना और खोजेण्ड के मध्य में नदी कभी भी बर्फ से नहीं जमती। नीचे कज़ालिस्क (Kasalinsk) के स्थान पर यह दिसम्बर से अप्रैल तक जम जाती है।

आमू नदी की भाँति यह नदी भी अपना मार्ग बदलती रहती है। परन्तु इसमें सन्देह है कि यह नदी किसी समय सीधी ही जाकर कैस्पियन सागर में गिरा करती हो, अथवा आमू में ही शामिल हुआ करती हो। यह दूसरी बात है कि इसका सम्बन्ध आमू नदी से यानी दरिया द्वारा किसी समय रहा हो। यानी दरिया पिरोफस्की (Peroff-sky) से सात मील नीचे से निकलती है। अपने गिरने के स्थान पर सर नदी की अनेक शाखायें हो गई हैं, इसका डेल्टा दलदली है, जो कि प्रायः अपना रूप बदला करता है। यहां भेड़िये व हिरन वगैरह रहते हैं। यह नदी नाव्य नहीं है, क्योंकि इसमें कहीं कहीं पर रेत के टीले मिलते हैं।

काले तथा कैस्पियन सागरों के मध्य काकेशस पर्वत से अनेक नदियां निकलती हैं। इनमें से तिरेक (Tereck), कुमा (Kuma) कलाउस (Kalaus) तथा कुबान (Kuban) उत्तर के ढालों की ओर तथा इंगुर (Ingur) रिओन (Rion) व कुरा (Kura) दक्षिण के ढालों की ओर बहकर काले तथा कैस्पियन सागरों में गिरती हैं। रिओन-कुरा निम्न भूमि के दक्षिण में अनेक छोटी-छोटी नदियां हैं। इनमें से कुछ गोक्चा (Gok-cha) झील में गिरती हैं। अरस के पूर्व में कैस्पियन सागर में, फरात फारस की खाड़ी में तथा चोरूख उत्तर-पश्चिम में काला सागर (Euxine) में गिरती हैं।

जिस समय से पोन्टो-कैस्पियन (Ponto Caspian) जल-डमरू-मध्य (Strait) का अन्त हो गया, उसी समय से तिरेक तथा कुमा नदियां पूर्व में कैस्पियन सागर में, कुबान पश्चिम में अजोव तथा काले सागर में तथा कलाउस (Kalaus) मानिच (Man ch) में बहती हैं। कलाउस एक वास्तविक स्टेप्स की नदी है। यह क्याकेशस पर्वत पर स्थित स्टावरोपोल (Stavropol) से निकलती है, और यूक्जाइन व कैस्पियन के मध्य मानिच में समुद्र सतह से २५ फुट ऊपर गिर जाती है। बाढ़ के समय इसका जल दो शाखाओं में विभाजित हो जाता है। पहिली शाखा पश्चिम में अजोव सागर की ओर और दूसरी शाखा पूर्वी मानिच से कैस्पियन में जा गिरती है।

तिरेक नदी समुद्र सतह से ८००० फुट ऊंची सिर्क (Cirque) से निकलती है। यह सिर्फ कज़बेक के उत्तरी ढालों पर है। नदी यहां डेरियल (Dariel) नामक गहरी घाटी में होकर बहती है। माल्का के ऊपर इसकी एक और शाखा आकर मिलती है। तिरेक नदी में इतनी अधिक मिट्टी आती है, कि इसका डेल्टा कैस्पियन सागर

में ४० गज़ प्रतिवर्ष की दर से बढ़ रहा है। कैस्पियन सागर को भरने का कार्य यह नदी वाल्गा से भी तेजी से कर रही है।

कुमा नदी एलबुर्ज के निकट की पहाड़ियों से निकलती है, और उत्तर-पूर्व में समान बहने के पश्चात् कैस्पियन सागर में जा गिरती है। गिरने के स्थान पर तिरेक वाल्गा के डेल्टों के मध्य उसकी अनेक छोटी छोटी शाखायें हो जाती हैं। लगभग १५० मील तक इसमें कोई भी सहायक नदी नहीं मिलती। अधिक शुष्क वातावरण के प्रभाव से अनेक स्थानों पर यह उथली है, और दलदली भाग में होकर बहती है। पहले यह नदी अपने डेल्टे पर बहुत सी कांप एकत्रित करती थी, परन्तु अब नहीं करती।

काकेशस पर्वत के उत्तरी ढाल से बहने वाली नदी केवल कुबन ही है। यह नदी यूवजाइम बेसिन में जा गिरती है। यह एलबुर्ज के पश्चिम से निकलती है, फिर उत्तर-पश्चिम में बहने के पश्चात् पश्चिम की ओर बहकर इकातेरीनोदर (Yekaterinodar) के नीचे डेल्टा बनाती है। इस नदी की मुख्य शाखा तामन (Taman) प्रायद्वीप से काले सागर तक लगातार पश्चिम की ओर बहती है। इसका बहुत सा जल अनेक छोटी छोटी सरिताओं द्वारा उत्तर की ओर अज़ोव सागर में जा गिरता है। बसन्त, ग्रीष्म तथा पतझड़ ऋतु की बाढ़ के समय इसमें बहुत जल आ जाता है, और इसका पाट ३०० से ४०० गज चौड़ा तथा १० फुट गहरा हो जाता है। अन्य ऋतुओं में इसकी गहराई कहीं भी ४ फुट से अधिक नहीं होती।

पश्चिमी काकेशस के दक्षिणी ढालों से दो महत्वपूर्ण नदियाँ काले सागर में गिरती हैं। इनमें से एक तो रिओन तथा दूसरी इंगुर है। इन दोनों के बेसिन उत्तर-पूर्व तथा दक्षिण में ग्रेट काकेशस, मेस्क तथा अजारा श्रेणियों द्वारा घिरे हुए हैं। इंगुर नदी की शाखायें काकेशस की दो चोटियों अदिशताऊ (Adish Tau) तथा उशबा (Ushba) के दक्षिणी ढालों पर बहती हैं। तट पर रिदुत-कालेह (Redut-Kaleh) में जब ये प्रवेश करती हैं तो अनेक गहरी घाटियों को पार करती हुई आती है।

रिओन तथा उसकी सहायक नदी किवराइल (Kvirile) बहुत ऊँचे स्थानों से निकलती हैं। रिओन माउन्ट गैरीबोलो (Mount Garibolo) के निकट पसिस्मटा (Pasismta) से तथा किवराइल रैमसिन घाटी (८५२० फुट) से निकलती है। किवराइल तुरन्त ही मिंग्रेलियन (Mingrelian) के मैदान में प्रवेश करती है, यहां पर नौंमी और रिओन नदी इससे कुटाइस (Kutais) के स्थान पर मिल जाती हैं। दोनों नदियां पोटी (Poti) के स्थान पर यूक्साइन (Euxine) में जा गिरती हैं। गिरने के स्थान पर इसने एक लैगून (lagoon) अथवा झील बनाई है। पहले रिओन

१०० मील तक नाव्य थी, परन्तु अब इसमें केवल २ फुट जल शुष्क ऋतु में रहता है। यह दोनों इंगुर तथा रिओन एक बहुत ही रमणीय क्षेत्र में होकर बहती हैं। इंगुर १८०० व १००० फुट गहरी सुन्दर घाटिओं को पार करती है।

ग्रेट काकेशस के दक्षिण में कुरा या साइरस (Cyrus) तथा अरस या अरक्जस Araxes नामक यद्यपि दो नदियाँ हैं, परन्तु एक ही में बहती हैं और यहाँ की सबसे महत्वपूर्ण नदी हैं। इस नदी के दो बेसिन हैं। दोनों ही आरमीनियाँ के पहाड़ों से निकलती हैं। आरस नदी बिलकुल ही आरमीनियन है, परन्तु कुरा जियोर्जियन (Georgian) मैदान में प्रवेश कर जाती है। यहीं इसकी अन्य अनेक छोटी-छोटी शाखायें आकर मिलती हैं।

कुरा नदी समुद्र सतह से १०३४० फुट ऊँचे किजल-ग्यादुक Kizil-Gyaduk नामक स्थान से निकलती है। यहाँ से यह पूर्व की ओर आरसियानी (Arsiyani) तथा अजारा (Azara) श्रेणियों के सहारे उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। मध्य में अनेक तीव्र गति से बहने वाली सरितायें इसमें मेस्क से आकर मिलती हैं। यहाँ से यह पूर्व की ओर फिर दक्षिण-पूर्व की ओर तथा अन्त में एब्शिरन प्रायद्वीप के नीचे कैस्पियन सागर में जा गिरती हैं। तिफलिस (Tiflis) मैदान के ऊपर यह बहुत ही ऊँचे नीचे धरातल पर होकर बहती है। यहाँ अनेक गहरी गहरी घाटियों को यह पार करती है। उत्तर से इसकी दो सहायक नदियाँ योरा तथा अलाजन आकर मिलती हैं। यह नदी काराबाग तथा मुगन से अपने मुहाने तक ४५० की दूरी तक नाव्य है।

आरस का मार्ग काफी टेढ़ामेढ़ा है, परन्तु कुरा का इतना नहीं। दोनों नदियाँ मिलकर अपना जल शीत ऋतु में ७००० क्यूबिक फुट तथा ग्रीष्म ऋतु में २५००० क्युबिक फुट सागर में डालती हैं।

आरस नदी एर्जीरम (Erzerum) के दक्षिण में बिन्गोल-दाग (Bingol-Dagh) से निकलती है, और कई मील तुर्किश सीमा में उत्तर-पूर्व की ओर कार्स (Kars) के नीचे बहती है। यहाँ से यह पूर्व की ओर एरीवन (Erivan) के मैदान (जो अरारत के उत्तर में है) प्रवेश करती है और रूस और फारस की सीमा पर गोलाई बनाती हुई कुरा नदी से मिल जाती है।

साइबेरिया में बैकाल झील एक बहुत ही प्रसिद्ध झील है। इसे दलाई-नोर (Dalai-Nor) या पवित्र सागर (Holy Sea) के नामों से भी पुकारते हैं। इसका क्षेत्रफल १४००० वर्ग मील है और औसत गहराई ८५० फुट है। आज ही में पता चलाया गया है, कि इस झील के मध्य में एक ऊँची उठी हुई चट्टान है, जो कि

इसको दो बेसिनों में विभाजित करती है । इस चट्टान के स्थान पर इसकी गहराई केवल २०० फुट है । रूसी भूगर्भ शास्त्रियों का कथन है कि यह झील प्राचीन काल में और भी अधिक विस्तृत थी । इसके पानी की सतह पहले की अपेक्षा अब २० फुट नीचे गिर गई है । इसके जल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह बहुत स्वच्छ है और ४० या ५० फुट नीचे धरातल की वस्तु प्रत्यक्ष रूप से दिखलाई दे सकती है । इस झील के ऊपर दिसम्बर से लेकर मई तक ४ या ५ फुट मोटी पर्त जम जाती है । परन्तु इस ऋतु में हवायें इतनी तीव्र चलती हैं कि पर्त के जगह जगह पर टुकड़े हो जाते हैं, जिसके द्वारा सालमन तथा स्टर्जन नामक मछलियां जो इसमें बहुत अधिक मिलती हैं, सांस लेती रहती हैं । इस झील में एक विशेष प्रकार की सील मछली पाई जाती है। इस झील की लम्बाई ३६० मील तथा चौड़ाई ३५ मील है । ग्रीष्म ऋतु में झील में स्टीमर चला करते हैं । लोग प्राय: ओल्खन (Olk hon) नामक द्वीप, जो कि इसमें हैं, और अपने अल्पाइन गुलाब के फूलों के लिए प्रसिद्ध हैं, में सैर के लिए जाया करते हैं । झील का उत्तर-पश्चिमी तट अपने प्राकृतिक दृश्यों के लिए बहुत प्रसिद्ध है, तट की श्रेणियों के ढालों पर पाइन तथा लार्च के सुन्दर वृक्ष लगे हुए हैं । झीलों के तटों पर अनेक गर्म जल के सोते मिलते हैं । यहां कभी कभी भूकम्प भी आ जाया करते हैं ।

साइबेरिया के पूर्व में आमूर नदी के बेसिन में एक प्रसिद्ध झील केन्का (Kenka) है जो कि बहुत ही विस्तृत तथा छिछली है । इसको चीनी लोग हन-आई (Hon-hai) भी कहते हैं। यह झील ६५ मील लम्बी तथा २५ मील चौड़ी है, इसका क्षेत्रफल १२०० वर्ग मील है, इस झील की गहराई ३० फुट से अधिक है । वास्तव में यदि देखा जाय तो यह झील का बेसिन चारों ओर की पहाड़ियों पर बरसने वाले जल के हेतु एक जलाशय का रूप धारण किये हुए है ।

रूसी तुर्किस्तान की प्रसिद्ध झील अरल [It is remarkable that neither the Greeks nor Marco Polo make any mention of the Aral.) सागर है । इसका क्षेत्रफल २६००० वर्ग मील है । यह आन्तरिक झील पहले बहुत विस्तृत थी चिन्क (Chink) पर जो जल के चिन्ह दृष्टिगोचर होते हैं, उनसे पता चलता है कि इसकी सतह वर्तमान सतह से २०० फुट ऊंची थी । अब भी यह कैस्पियन सागर की सतह से २४३ फुट तथा भूमध्य सागर की सतह से १५८ फुट ऊंचा है । कहा जाता है कि इस सागर में गिरने वाली सर और आमू दरिया ने [illegible] हुई है । [illegible] इन्हीं दो नदियों के कारण इस सागर का वर्तमान [illegible] है, [illegible] पहले

ही बतला चुके हैं, कि मध्य एशिया का यह भाग बराबर शुष्क होता जा रहा है। फलस्वरूप झील का वास्तविक क्षेत्रफल इस समय पहले की अपेक्षा १४०० वर्ग मील कम होगया है।

चिन्क के नीचे अरल सागर की गहराई २२५ फुट है। इसकी गहराई धीरे धीरे पूर्व तथा दक्षिण-की पूर्व ओर कम होती जाती है, और अन्त में इन भागों में इसने दलदल का रूप धारण कर लिया है। औसत गहराई इस सम्पूर्ण क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए यदि देखा जाय तो यह केवल ४० फुट ही होगी।

यद्यपि तुर्किस्तान का गड्ढा किसी समय समुद्री बेसिन रहा हो, परन्तु फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि अरल सागर कैस्पियन सागर की भांति रहा हो। इसके खारे जल में मीठे एवं नमकीन, दोनों प्रकार के जलों की वनस्पति तथा जीव मिलते हैं। बाद में जो अन्वेषण हुए उनसे यह पता चलता है कि, यह झील एक जलाशय है, जिसके जल की सतह ऊपर नीचे सर व आमू दरियाओं के जल के अनुसार होती रहती है।

बाल्कश झील भी अरल सागर की भांति एक आन्तरिक जलाशय है। यह भी पहले एक विस्तृत झील का बेसिन था। डबलू बेटसन ने (१८८६-८७) शैल (Shell) के अध्ययन द्वारा बतलाया था कि अरलो-कैस्पियन सागर पूर्व में इतना विस्तृत नहीं था कि इसमें बालकश झील का भी भाग शामिल रहा हो। बाल्कश झील समुद्र सतह से ५१४ फुट ऊपर है। यह पश्चिम की ओर अपने कुल क्षेत्रफल से तिगुनी या चौगुनी फैली हुई थी, और पूर्व की ओर केवल २५० मील विस्तृत थी। उस समय यह ससिक (Sassik), जलनाश (Jalanash) तथा आला (Ala) तरबागताई श्रेणी के दक्षिण में) नामक झीलों को भी सम्मिलित करती थी। अब यह झीलें इस बड़ी झील से बिलकुल ही अलग हैं। इसका वर्तमान क्षेत्रफल (यद्यपि दक्षिणी तट परिवर्तित होता रहता है) ८५०० वर्गमील है। इसकी लम्बाई ३३० मील तथा परिधि ८८० मील है। गहराई कहीं पर भी ५६ फुट से अधिक नहीं है। इसका जल बहुत कम खारी है। इसमें बहुत सी मछलियां मिलती हैं। दिसम्बर से अप्रैल तक यह बर्फ से जमी रहती है। इसका दक्षिणी तट ४५० मील लम्बा है। ईली के अलावा अन्य कई सरितायें इसमें आकर गिरती हैं। इस झील में कांप मिट्टी तीव्र गति से एकत्रित हो रही है।

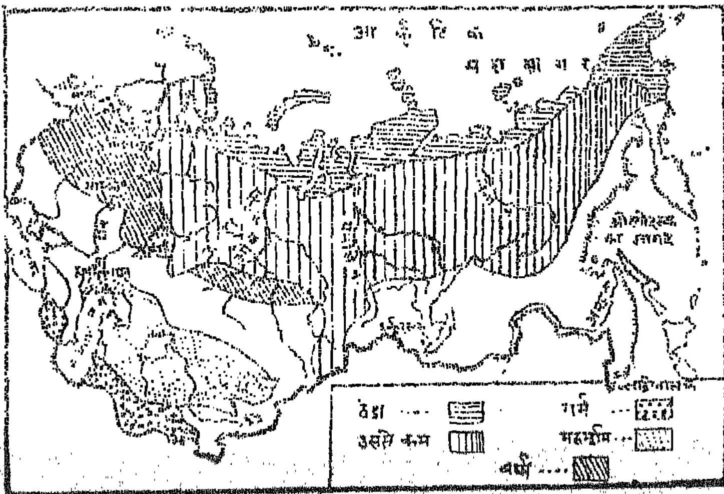
त्यानशान पर्वत के मध्य में इसिक-कुल (Essik-Kul) झील अलाताऊ कुंगी (Alatau kungei) तथा अला ताऊ तेर्सकी (Ala tau Ters Kei) के बीच स्थित है। यह सबसे बड़ी उच्च भाग की झील है। समुद्र सतह से इसकी ऊंचाई ५१६५ फुट है। इसका क्षेत्रफल २३०० वर्ग मील तथा गहराई १४०८ फुट है। यह झील भी क्षेत्रफल में अब बहुत घट गई है। जल के [illegible] जो यहां पाये जाते हैं, उनसे पता चलता

है कि झील की प्राचीन सतह वर्तमान सतह से २०० फुट ऊंची है। इस समय यह बेसिन चारों ओर से ढका हुआ प्रतीत होता है परन्तु प्राचीन समय में यह झील अवश्य ही कुटेमाल्दी (Kute maldi) द्वारा चुई से मिली रही होगी। झील की सतह जो कि उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में धीरे धीरे गिर रही थी, अब पुन: उठ रही। यह परिवर्तन अरल सागर की सतह में भी हुआ है। इसका कारण कदाचित वर्षा या नदियों का डाला हुआ जल ही हो सकता है।

काकेशस के क्षेत्र मेंआरमीनिया उच्च भूमि पर तीन घिरे हुए बेसिनों में से झील गोकचा (Gok-cha) सबसे छोटी है। इसका क्षेत्रफल ५४० वर्ग मील है। और समुद्र सतह से यह ६४०० फुट ऊंची है। इस झील की लम्बाई ४३ मील तथा चोड़ाई २० मील है। अधिक से अधिक इसकी गहराई ३६० फुट है। जब इस पर बर्फ जम जाती है तब इसका जल जङ्गा (Zang1) द्वारा आरस की (Aras) की तरफ एरीवान (Erivon) क्षेत्र में चला जाता है।

जलवायु (Climate):—

सोवियत यूनियन का अधिक भाग शीत-शीतोष्ण कटिबन्धीय भाग में स्थित है। इसीलिये इसके अधिकांश भाग पर जलवायु सम्बन्धी दशायें लगभग समान ही पाई जाती हैं। साइबेरिया के भाग में विशेष तौर पर लम्बी शीत-ऋतु तथा कम वर्षा



जलवायु के अनुसार रूस के हिस्से

होती है, और सरदी भी न तो यहाँ की जलवायु की अद्वितीय विशेषता है ही। यहाँ पर सबसे अधिक तापक्रम याकुतस्क में नहीं बल्कि वर्खोयान्स्क (Verkhoyansk)

में अङ्कित किया जाता है। औसत तापक्रम इस स्थान का जनवरी माह में ५८° फ० रहता है, परन्तु कभी–कभी यह ६०°फ० भी हो जाता है। ओइमेकन(Oimekon) में तो १६३८ में एक बार–१०८° फ० तापक्रम अङ्कित किया गया। वर्खोयानस्क नवम्बर से फरवरी, याकुतस्क दिसम्बर और जनवरी में, उस्तियानस्क जनवरी में तथा तोलस्तोय नौस इसी माह में इतने ठण्डे रहते हैं कि तापक्रम २८° सी से ३८° सी रहता है। इन स्थानों का जुलाई और अगस्त में अधिक से अधिक तापक्रम १०२°फ० तक पहुंच जाता है। इतना तापान्तर किसी भी अन्य भाग में नहीं मिलता, जितना कि यहाँ इन भागों में मिलता है। तापक्रम कभी-कभी तो एक दम से ध्रुव से भी अधिक ठण्डा और कभी–कभी भूमध्य रेखिक प्रदेशों की भांति हो जाता है।

ग्रीष्म–ऋतु, हर स्थान पर बहुत गर्म नहीं होती बल्कि साधारण सी गर्म रहती है। बहुत कड़ी सर्दी केवल कुछ ही हफ्ते रहती है। स्टेप्स के भागों में ७५°फ० तथा अन्य स्थानों पर ६०°फ० या ६८°फ० जुलाई तापक्रम रहता है। इन दो ग्रीष्म व शीत ऋतुओं के मध्य बसन्त व पतझड़ की ऋतु ही होती है। टुन्ड्रा के भाग में तो आठ या नौ माहों तक बराबर बर्फ जमी रहती है। जैसे ही जैसे हम दक्षिण की ओर आते हैं, तापक्रम बढ़ता ही जाता है। अल्टाई तथा आमूर की जलवायु स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होती है।

शीत-ऋतु में बहुत ठंडी हवाओं का उच्चभार वाला केन्द्र बैकाल झील के पश्चिम में स्थापित हो जाता है। साइबेरिया में यह ठंडी हवायें भिन्न दिशाओं से आती हुई दृष्टिगोचर होती हैं परन्तु इनके चलने का स्थान केवल यही उच्च भार वाला केन्द्र है। यूराल पर्वत तथा येनेसी के मध्यवर्ती क्षेत्र में यह दक्षिण तथा दक्षिण पश्चिम से और लेना बेसिन में, यह उत्तर–पश्चिम से आती है। यह ठंडी व तीव्र हवायें बराबर कई महीनों तक चलती रहती हैं। इनका प्रभाव न केवल साइबेरिया में बल्कि जापान, आमुर बेसिन तथा मंगोलियन पठार पर भी पड़ता है। ग्रीष्म-ऋतु में यह उच्च भार वाला केन्द्र धीरे-धीरे कम भार वाला केन्द्र हो जाता है। परन्तु यह केन्द्र बैकाल झील के निकट नहीं बल्कि गोबी रेगिस्तान के निकट स्थापित हो जाता है। इस समय हवायें बाहर से इस केन्द्र की ओर चलती हैं। हवायें इस ऋतु में पश्चिम तथा उत्तर–पश्चिम से और पूर्व में दक्षिण-पूर्व तथा पूर्व से आन्तरिक क्षेत्रों की ओर आती हैं। प्रशान्त महासागर से जो हवायें चलती हैं, वह अपने साथ बहुत सी नमी लाती हैं, और बैकाल झील के पूर्व में काफी वर्षा करती हैं। यह वही हवायें हैं जो भारत, चीन तथा जापान आदि देशों में मानसून हवाओं के नाम से प्रसिद्ध हैं। [illegible]

में आसमान बिल्कुल स्वच्छ रहता है। साइबेरिया के आर्कटिक क्षेत्र में शीत-ऋतु में कोहरा रहित दिन केवल ६० ही होते हैं, जबकि अन्य स्थानों पर इससे भी अधिक पाये जाते हैं।

रूसी तुर्किस्तान में, यद्यपि धरातल में बहुत भिन्नता पाई जाती है, परन्तु फिर भी जलवायु सम्बन्धी वातावरण समान ही मिलता है। महाद्वीपी वातावरण यहाँ की जलवायु की सबसे बड़ी विशेषता है। शीत-ऋतु में बड़ी सर्दी तथा ग्रीष्म-ऋतु में बहुत अधिक गर्मी पाई जाती है। शुष्क वातावरण इस भाग में चारो ओर मिलता है। जलवायु सम्बन्धी दशाओं में समानता केवल इसलिये मिलती है, कि यह अरलो केस्पियन निम्न भाग एक समतल भाग है और जो हवायें उत्तर से चलती हैं वह इस भाग में आसानी से प्रवेश कर आती हैं। ऊंचाई भिन्नता जो कि इस रूसी तुर्किस्तान, निम्न भूमि तथा त्यानशान एवं पामीर में मिलती है, उसका शीत-ऋतु पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता।

किज़िलकुम के रेगिस्तान में बालू जो कि समुद्र-सतह से केवल ३०० फुट है और पामीर के पठार पर जो १४००० फुट ऊंचा है, तापक्रम हिमांग से भी नीचा रहता है। निम्न व उच्च भूमि में भिन्नता मिलती है, परन्तु दूसरे ही प्रकार के वातावरण में वर्षा यहाँ उच्च भूमि पर होती है, और वह भी उन हवाओं से जो कि दक्षिण-पश्चिम से चलती हैं, और पामीर तथा त्यानशान को पार करती हुई आती हैं। इन भागों में वर्षा बहुत कम हो पाती है। कभी कभी कारा-कुम तथा किज़िल-कुम मरुस्थल में तो सालों तक वर्षा बिल्कुल नहीं हो पाती। केवल शीत ऋतु में कुछ भाग हिम वर्षा प्राप्त करते रहते हैं; और इसी वर्षा पर यहाँ मानव विकास हो पाया है। इन हिम वर्षा वाले भागों से अनेक सरितायें निकलती हैं। जिनकी वजह से यहाँ अनेक उद्यान बने हैं जैसे बोखारा, खिवा तथा मर्व इत्यादि।

पामीर पठार पर जो ऋतुयें पायी जाती हैं, उनका विवरण श्री एम० केपस ने बहुत अच्छा दिया है। उनका कहना है, कि इस पठार पर ग्रीष्म ऋतु में कोहरा नहीं पड़ता। कड़ी गर्मी केवल जुलाई के तीन माहों में ही पड़ती है। बसन्त तथा पतझड़ की ऋतुयें केवल दो दो माहों की होती हैं। वर्ष के शेष भाग में शीत ऋतु रहती है। शीत ऋतु में बहुत कड़ी सर्दी अधिक लम्बे समय तक नहीं पड़ती। दिन और रात, धूप और छाया के तापक्रमों में काफी अन्तर मिलता है। केवल २४ घंटे के अन्दर तापक्रम में बड़ा हेर फेर हो जाता है। बर्फ समान नहीं पड़ती, कहीं पर अधिक तथा कहीं पर कम। इसका वितरण बहुत कुछ हवाओं की दिशाओं पर निर्भर रहता है। लेकिन पर्वतीय ढाल, ऊंचाई, मिट्टी की प्रकृति आदि दशायें भी हिम-वितरण पर अपना प्रभाव डालती हैं। अलाई की अपेक्षा पामीर पर बहुत कम वर्षा होती है, क्योंकि पामीर के

चारों ओर जो पर्वत श्रेणियां है, वह वायु की लगभग सम्पूर्ण नमी को ग्रहण कर लेती हैं। बर्फ इन भागों में तुरन्त ही पिघल जाती है क्यों कि सूर्य की धूप तेज पड़ती है। इसी कारण यहां ग्लेशियर नहीं पाये जाते। मध्य एशिया का यह भाग दिन प्रतिदिन शुष्क होता जा रहा है।

आमू नदी की निचली घाटी चार पांच हफ्ते तक बराबर बर्फ से ढकी रहती है। ग्रीष्म ऋतु अप्रैल के माह से आरम्भ होती है, और नवम्बर तक रहती है। ग्रीष्म ऋतु का यह लम्बा व गर्म मौसम बहुत बुरा होता है, क्योंकि यहां तमाम धूल के तूफान चलते रहते हैं। इन तूफानों से भी अधिक भयंकर तिब्बद (Tebbad) अथवा 'ज्वर हवा'(Fever wind) है, जो कि किज़िल-कुमा तथा अन्य मरुस्थलीय भागों में चलती है। जब कभी भी यह हवा चलती है, तो कारवां के ऊंट रोने लगते हैं, और जोर जोर से कराहने की दर्दभरी आवाज निकालने लगते हैं। तुरन्त ही ये बेचारे बैठ जाते हैं और अपनी लम्बी गर्दन धरातल पर सीधी रख देते हैं, या अपने मुंह को बहुत गर्म रेत में गड़ा देते हैं। इन ऊंटों के साथ साथ पथ प्रदर्शक तथा यात्री भी दर्दभरी आवाज में चीखने लगते हैं; थोड़ी ही देर में सम्पूर्ण कारवां गर्म जलती हुई रेत में दब जाता है, और इस हवा के निकल जाने के पश्चात् चारों ओर रेत ही रेत दृष्टिगोचर होता है।

काकेशिया के भाग की जलवायु में जितनी भिन्नता मिलती है, उतनी किसी भी भाग में नहीं मिलती। इसका कारण यह है कि स्थिति दो आन्तरिक सागरों के मध्य है और दूसरे-इरानियन पठार का उत्तर-पश्चिमी भाग भी इसमें आ जाता है। न केवल इतना ही बल्कि एक तरफ तो बिलकुल ही नीचा मिंग्रेलियन (Mingrelian) मैदान और दूसरी ओर समुद्र सतह से १८,००० फुट ऊंची एलबुर्ज शिखा है।

उत्तरी काकेशिया का भाग उन हवाओं के लिये बिल्कुल खुला हुआ है, जो कि रूसी स्टेप्स को पार करती हुई यहाँ तक चली आती हैं। दक्षिणी ढालों की अपेक्षा यह भाग अधिक शुष्क व ठंडा है। यही कारण है, कि यहां की नदियां शीत ऋतु में बर्फ से ढकी रहती हैं और ग्रीष्म ऋतु में जल कम होने के कारण मार्ग में ही समाप्त हो जाती हैं, समुद्र तट पर भी नहीं पहुंच पातीं। ट्रांस-काकेशिया के भाग में जितनी भी नदियां हैं, वह सब साल भर जल से भरी रहती हैं। केवल जिस समय बहुत सर्दी पड़ती है, तब ही जमती हैं। काकेशस का पश्चिमी भाग युक्जाइन (Euxine) या काले सागर से बहुत ही नम व गर्म हवायें प्राप्त करता है। पूर्वी ढालों की अपेक्षा यहां गर्मी भी अधिक पड़ती है और वर्षा भी पर्याप्त होती है। यहां पर दो क्षेत्रों की भिन्नता प्रत्यक्ष है—मुगन तथा कारायाग स्टेप्स (लोअर कुरा) जो कि वर्षा रहित व शुष्क हैं तथा रिओन बेसिन जो कि साधारण गर्म है। यदि देखा जाय तो पश्चिमी ढालों पर वर्षा मध्य की

अपेक्षा तिगुनी तथा पूर्वी भाग की दगस्तिान श्रेणी के मुकाबिले बारह गुनी होती है। कैस्पियन सागर से जो हवायें आती हैं, उनसे इतनी कम वर्षा होती है कि तमाम वातावरण शुष्क रहता है। कभी कभी तो वर्षा होती ही नहीं है। निचले कुरा बेसिन में तो छः मास तक बराबर एक बूंद भी पानी नहीं बरसता। काकेशस पर्वत पर तापक्रम अतिशयता पिरेनीज तथा आल्पस पर्वत की अपेक्षा अधिक मिलता है।

सोवियत रूस की जलवायु में चक्रवातों का महत्व कम नहीं है। इन चक्रवातों से ऋतुओं में अनेक परिवर्तन होते हैं। पश्चिमी योरोप में इनके मार्ग भली भांति अध्ययन किये जा चुके हैं, परन्तु एशिया में जलवायु सम्बन्धी ज्ञान कम होने के कारण इनके ठीक ठीक मार्ग नहीं मिलते। रूस सरकार ने साइबेरिया में अनेक जलवायु सम्बन्धी सूचना केन्द्र स्थापित कर दिये हैं। यह केन्द्र सम्पूर्ण उत्तरी गोलार्द्ध के ऋतु-मानचित्र बनाता है। इस केन्द्र से फरवरी १९३६ को जो मानचित्र छपे, उनके अन्तर्गत इस भाग में ७ उच्च भार वाले चक्रवात तथा ५ निम्नभार वाले चक्रवात आये। इन चक्रवातों का प्रभाव बहुत कम था, क्योंकि यह योरप महाद्वीप को पार करने के पश्चात् यहां पहुंचते हैं।

एशियाई सोवियत रूस की जलवायु-सम्बन्धी दशायें

स्थान	वर्षा (इंच में)	जनवरी के तापक्रम (फ० में)		जुलाई के तापक्रम (फ० में)	
		औसत (Mean)	कम से कम (Min)	औसत (Mean)	कमसे कम (Min)
ब्लाडी वोस्टक	२२	७	—२२	६५	९६
वरखोयान्स्क	५	—५८	—९०	६०	९४
याकतस्क	१४	—४६	—८४	६६	१०२
इरकतस्क	१५	—६	—५२	६४	९४
टॉमस्क	२०	—३	—६०	६६	९५
स्वेर्डलोव्स्क	२२	३	—४५	६३	९९
ताशकन्द	१४	३२	—१९	८१	१०९
बाकू	९	३		७७	९९
बातुम	९३	३९		८२	९५
अस्त्राखान	७	१९	—२२	७७	११०

Data from 'Climate and Man' Washington; U. S, Department of Agriculture. (1941)

हुई, यहां तक बेलिंग्सहौजन ने अन्टार्कटिका की खोज की। जब प्रथम महायुद्ध के पूर्व रूसी-जापानी युद्ध में जापानी जल सेना ने रूस को परास्त कर दिया, तो उसका प्रभाव प्रशान्त महासागर पर से बिलकुल समाप्त होगया। लेकिन द्वितीय महायुद्ध के समय पुनः सोवियत रूस का प्रशान्त महासागर पर आधिपत्य होगया। वास्तविकता तो यह है कि रूसी साइबेरिया में कृषि खनिज पदार्थ, उद्योग धंधे तथा यातायात में उन्नति करने का उद्देश्य इसीलिए रहा है कि उसका आधिपत्य प्रशान्त महासागर पर दृढ़ होजाय।

जनसंख्या वितरण (Population Distribution):—

सोवियत रूस की जन संख्या यदि क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से देखी जाय तो बहुत कम है। यहाँ पर कुल जनसंख्या १९३९ में १७०,४६७,१८६ थी। इसके बाद कोई भी जनगणना नहीं हुई, अगले ही वर्ष जब अनुमान लगाया गया तो यह १९३,१९८,००० निकली। सन् १९५० में जब चुनाव हुए तब यहाँ प्रत्येक जिले में तीन लाख व्यक्तियों का अनुमान लगाया गया था। कुल जिले ६७१ थे, रूस की सम्पूर्ण जनसंख्या इसी समय २०१,३००,०० थी। जनवरी १९५४ में यह २१०,०००,००० हो गई। (इसी समय यहाँ इलेक्ट्रोरल डिस्ट्रिक्ट १०० थे और इनमें प्रत्येक की जनसंख्या ३००० थी। (इस अनुमान में कुछनगरों की जनसंख्या कारणवश सम्मिलितनहीं की जा सकी।

सन् १९३९ के पूर्व यहाँ केवल दो बार ही जनगणना हुई थी। प्रथम १८९७ में द्वितीय १९२६ में। प्रथम के अन्तर्गत इस देश की १२९,२००,००० तथा द्वितीय के अन्तर्गत १४६,९८९,४६० जनसंख्या थी। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो यहाँ की जनसंख्या बराबर बढ़ रही है। यद्यपि १८९७ के उपरांत यहाँ क्रांति व विद्रोह हुए, प्रथम महायुद्ध में हजारों व सैकड़ों लोग मारे गये, परन्तु फिर भी १९२६ में जनसंख्या वृद्धि १७,७८९,४६० होगई।

यहाँ की ग्रामीण व नागरिक जनसंख्या में सन् १९२६ व १९३९ के मध्य अनेक परिवर्तन हुए। इन तेरह वर्षों के अन्दर नगरों में रहने वाली जनसंख्या २६,३००,००० लोगों से बढ़कर ५६,०००,००० होगई। दूसरी ओर ग्रामीण-जनसंख्या १२०,७००,००० से केवल ११४,५००,००० रह गई। इन आंकड़ों से प्रतीत होता है कि देश में नगरों की जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है। कृषि में लोगों को इतनी सफलता प्राप्त हो रही है, कि नागरिक उद्योगों व वाणिज्य में लगी हुई जनसंख्या को बराबर खाद्य पदार्थ प्राप्त हो रहे हैं। थोड़े ही वर्षों में प्रत्येक नगर की जनसंख्या दूनी या तिगुनी हो गई है।

ऐसा कहा जाता है कि १९२६ में जो जनगणना हुई थी उसके अनुसार ८८

प्रतिशत ग्रामीण शेष नागरिक जन संख्या थी। ऊपर हम बतला ही चुके हैं कि यहां नागरिक जनसंख्या बराबर बढ़ रही है। प्रथम महायुद्ध के पश्चात् साइबेरिया के नगरों की ओर विशेष ध्यान दिया जाने लगा, वहां जल, मकान, विद्युत तथा अन्य सुविधाओं का प्रबन्ध कर दिया गया। लोग आराम से नगरों में जीवन व्यतीत करने लगे थे। सन् १६२६ में व्लाडीवोस्टक १०७६८०, नोवो सिबिरिस्क १२०७०० तथा ओमस्क आदि प्रत्येक एक लाख से अधिक जन–संख्या रखते थे। इसी समय इरकुटस्क, टोमस्क, केस्नोयारस्क, शिता, ब्लेगोव्येशचेनस्क तथा बरनौल में प्रत्येक की पचास हजार से एक लाख के मध्य थी। ये सब नगर ट्रांस-साइबेरियन रेलवे पर या उसके निकट ही स्थित हैं। वर्खोयानस्क जिसकी स्थिति बहुत उत्तर में है, केवल कुछ झोपड़ियों का नगर है और बहुत थोड़ी जनसंख्या रखता है। सन् १६३३ में जो अनुमान लगाया गया तो यह इस प्रकार हो गई–व्लाडीवोस्टक १६०००० नोवोसिबिरिस्क २७८,००० तथा ओमस्क २२७,०००। इरकूटस्क, टोमस्क तथा क्रेसनोयारस्क की जन–संख्या भी एक लाख से अधिक पहुंच गई थी।

सन् १६३६ में जो जन गणना हुई थी, उसके अनुसार सोवियत रूस की राजधानी की जन-संख्या ४,१३७,०१८ थी। अन्य प्रमुख नगरों में लेनिनग्रेड ३,१६१,३०४ गोरखी ६४४११६, रोस्टोव ५१०,२५३, स्टेलिनग्रेड ४४५,४७६, स्वर्डलोवस्क ४२५५४४, नोवोसिबिरिस्क ४०५५८६, यूक्रेन रिपब्लिक में–कीव ८४६२६३, खारकोव ८३३४३२, ओडीसा ६०४,२२३, बाइलो-रशियन रिपब्लिक में—मिनस्क २३८,७७२ आज़र बाईजान रिपब्लिक में बाकू ८०६३४७, आरमीनिया रिपब्लिक में एरिवान २०००३१, कजख रिपब्लिक में आलमा-अता, तुर्कमीनियन रिपब्लिक में अश्खाबाद १२६,५८०, उजबेक रिपब्लिक में ताशकन्द ५८५,००५, तबजिक रिपब्लिक में स्टेलिनाबाद ८२५४०, खिरगीज रिपब्लिक में फ्रूज ६२६५६, केरेलोफिनिश रिपब्लिक में पेट्रोजावोडस्क ६१६७६ लेटवियन रिपब्लिक में रीगा की जन संख्या ३६३२११ थी।

आर्थिक रूप [Economic Aspect]

परिचय—किसी भी देश को राजनैतिक स्वतन्त्रता उसी समय प्राप्त हो सकती है, जब कि वह आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर ले। मार्शल स्टेलिन (Marshall Stalin) ने एक बार कहा था कि मेरे लिये यह बहुत कठिन है कि मैं उस मनुष्य की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के विषय में सोचूं जो कि कहीं भी नौकर नहीं है तथा वह भूखों मर रहा है और दर-दर की ठोकरें खाता फिरता है। वास्तविक स्वतंत्रता केवल उसी स्थान पर पाई जा सकती है, जहां किसी भी प्रकार का अत्याचार

नहीं है, लोग बेकार तथा निर्धन नहीं है और न ही उनके मन में कल को देहरी व रोटी छूट जाने का भय है। केवल इसी प्रकार के समाज में हर तरह की स्वतंत्रता सम्भव है"।

रूस की आर्थिक उन्नति यहां की पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत हुई है। इस देश में लगातार पांच पंचवर्षीय योजनायें सफल हुई हैं। केवल इन पचीस वर्षों में यहाँ उद्योग धन्धों एवं कृषि में आश्चर्यजनक उन्नति हुई है। यहां तक कि एक समय ऐसा भी आगया कि देश में श्रम की कमी हो गई इस समस्या को भी हल किया गया। सीमांत प्रदेशों में कृषि एवं उद्योगों की ओर विशेष ध्यान दिया गया, नवीन क्षेत्रों पर कृषि की गई, नई नई खाने खोदी गईं तथा उद्योग धन्धे स्थापित किये गये। अब यहां पर कोई भी ऐसा रिपब्लिक नहीं है, जिसके स्वयं उद्योग धन्धे स्थापित न हुए हों। यहां अनेक नूतन नगर स्थापित हो गये हैं, यूराल पर्वत पर मेगनीटोगोरस्क (Magnitogorsk), आमूर की घाटी में कोमसोमोलस्क (Komsomolsk), प्रशान्त तट पर सोवियत हेवेन (Soviet Haven) और मेगाडन (Magadon) उत्तरी फिनो-करेलिया में किरोवस्क (Kirovsk) येनेसी नदी के मुहाने पर इगरका (Igarka) तथा कजाखस्तान में कारागन्डा (Karaganda) इन नगरों की जनसंख्या थोड़े ही समय में दुगुनी-चौगुनी बढ़ गई है। हजारों मनुष्यों को प्रत्येक वर्ग में ट्रेनिंग दी गई है। राज्य के खेतों (Collective farms) पर बंजारे व शिकारियों के बेटे व बेटी 'ट्रैक्टर' तथा 'हारवेस्टर' चलाने में निपुण कर दिए गये हैं। इनमें से बहुत से कालेज और विश्वविद्यालय में शिक्षा पाते हैं। स्थानीय कृषकों, वैज्ञानिकों, अध्यापकों, डाक्टरों तथा अफसरों की संख्या दूर के क्षेत्रों जैसे काकेशिया, मध्य एशिया तथा बहुत उत्तर में बढ़ गई है।

यह क्षेत्र अब सस्ता श्रम तथा पदार्थ प्राप्त करने के स्थान नहीं रहे, वरन अब ये बहुत ही शक्तिशाली औद्योगिक केन्द्र हो गये हैं। इनमें कोयला, लोहा, स्पात विद्युत, मशीनें, रसायन, रेशेदार पदार्थ तथा तैयार की हुई वस्तुओं का निर्माण होता है। प्राचीन कृषि करने के साधनों के स्थान पर अब संगठित खेतों पर नवीन उत्तम किस्म के आधुनिक साधनों का प्रयोग किया जाता है। अब यहां पर वैज्ञानिक ढङ्ग से खाद डाली जाती है, यहाँ तक कि कुछ भागों में वायुयान द्वारा बीज बोये जाते हैं तथा सिंचाई की जाती है। वैज्ञानिक ढङ्ग से कम समय में पकने वाली फसलें टुन्ड्रा के क्षेत्र में भी बोई जाने लगी हैं। न केवल इतना ही बल्कि कुछ नवीन फसलें जैसे यूक्रेन में चावल, काकेशस में चाय तथा रसदार फल, नयी नस्ल के पशु उत्पन्न किये जाने लगे हैं।

प्राकृतिक वनस्पति (Natural Vegitation):—

सोवियत रूस में विभिन्न प्रकार की वनस्पति मिलती है। बिल्कुल उत्तर में टुन्ड्रा का ठंढा प्रदेश है। यहां पर घास काई तथा छोटे छोटे पौधे (Mosses Lichens and grasses) दूर तक दृष्टिगोचर होते हैं। दूर तक वातावरण एक सा ही दीख पड़ता है। प्राकृतिक दृश्य वैसे तो बहुत सुन्दर होते हैं परन्तु मीलों तक पीले रंग का वातावरण दीखता है।शीत ऋतु में चारों ओर बर्फ ही बर्फ दिखलाई पड़ती है। बसन्त ऋतु में जब यह बर्फ पिघलती है, तो रङ्ग बिरंगे फूल दिखलाई पड़ते हैं। कुछ ही महीनों में इनका भी अन्त हो जाता है।

इन भागों के दक्षिण में *टैगा के वन आरम्भ हो जाते हैं। ये टैगा के वन नुकीली पत्ती वाले सदा बहार वन हैं। इनका विस्तार सोवियत रूस के उत्तर भाग में पश्चिम से लेकर पूर्व में प्रशान्त महासागर के तट तक है। टुण्ड्रा की वनस्पति तथा इस वनीय क्षेत्र में परिवर्तन बहुत धीरे-धीरे होता है। आरम्भ में तो केवल ठिगने वृक्ष ही दृष्टिगोचर होते हैं, कुछ और दक्षिण में ये कुछ लम्बे हो जाते हैं, और फिर ये पूर्ण रूप से टैगा के वृक्ष हो जाते हैं। इतना विस्तृत वनीय क्षेत्र विश्व के किसी भी भाग में नहीं मिलता ; सोवियत रूस के एक-तिहाई भाग पर इनका विस्तार है। वनीय भूमि का क्षेत्रफल ६५०,०००,००० हेक्टर्स (४४प्रतिशत) स्टैप्स (Pasture) २४१,०८४,०००हेक्टर्स (११प्रतिशत) बोने योग्य भूमि १६७,६११,००० हेक्टर्स (६ प्रतिशत) घास के मैदान ४६,४१५,००० हैक्टर्स (२ प्रतिशत) तथा बाग बगीचे ११,४६१,००० हेक्टर्स (०.५ प्रतिशत) शेष बंजर भूमि है। टुन्ड्रा प्रदेश के मुकाबले यहाँ गर्मी कुछ अधिक पड़ती है। योरोप की ओर जो टैगा वन हैं, उनमें फर व पाइन नामक वृक्ष मिलते हैं। इन भागों में नदियां ही केवल व्यापारिक मार्ग हैं, विशेष तौर पर आन्तरिक भागों में। लकड़ी, जो वनों से प्राप्त होती है वह इन नदियों द्वारा कारखानों तक पहुँचा दी जाती है। यहाँ बहुत से भागों में दलदल तथा छोटी-छोटी घास वाले क्षेत्र मिलते हैं, विशेषतौर पर पश्चिमी साइबेरिया के भाग में। बहुत से टैगा के वन इतने दूर आन्तरिक भागों में स्थित हैं, कि वहाँ तक पहुँचना भी बहुत कठिन है। इन्हें शताब्दियों से लोगों ने छुआ तक नहीं है। इनमें जो वृक्ष प्राप्त होते हैं, इनमें सिडार, गहरे रङ्ग की लार्च, लम्बे-लम्बे फर, मोस, घास, बरबेरियाँ,

*The term is used somewhat differently in different parts of Siberia. In the Altai, it means the wooded uplands abounding in for-bearing animals; in the north it is applied to the Zone of uninhabited woodland tracts bordering on the mossy Tundra, which stretches thence to the Arctic Sea board.

गिरे हुए वृक्ष तथा टेढ़ी-मेढ़ी अनेक बेलें पाई जाती हैं। इन वनों में कोई भी मनुष्य नहीं जाता। यहाँ केवल कुछ जंगली लोग शिकार खेलते हुए मिलते हैं, वह भी बहुत ही कम, दूर तक मनुष्य की शक्ल तक नहीं दीखती। यहाँ के वनों में विभिन्न प्रकार की बेरियां भी मिलती हैं। इन बेरों को यहां के मनुष्य जीव जन्तु भोजन के तौर पर खाते हैं।

इन वनों में कई जगह सिडार (Cedar), बर्चेज (Birches) तथा फर (Firs) के वृक्ष गिरी हुई दशा में भी मिलते हैं। कभी-कभी यहाँ भयंकर तूफान आते हैं इन तूफानों के कारण ही ये गिरी हुई दशा में हैं। हवायें इन वनों में सन-सन की आवाज़ करती हुई चलती हैं। नदियों की कुछ घाटियों में बहुत ही सुन्दर पोपलर (Poplar) तथा विलो (Willow) के वृक्ष दृष्टिगोचर होते हैं। घाटियों के उत्तरी ढाल पर घास तथा काई मिलती है। कमचटका के भाग में आन्तरिक जलाशयों के चारों ओर सुन्दर घास तथा रङ्ग बिरंगे फूलों वाले पौधे मिलते हैं। अल्पाइन गुलाब का (Alpine rose bushe,) तथा कनाचडेल लिली (Kanchadale lily) विशेष तौर पर दृष्टिगोचर होते हैं। यहाँ पर पहाड़ियों के ढाल पाइन वृक्षों से ढके हुए हैं और निम्न भागों में (Birch) के कुञ्ज दीखते हैं। आमूर नदी की घाटी में पत्तियोंदार झाड़ियां नदियों के तटों पर तथा अन्य भागों में नुकीली पत्ती वाले ओक (Oak), एम (Elm), एश (Ash) वालनट (Walnut) कार्क के वृक्ष (Cork Tree), मेपिल (Maple) तथा लिन्डेन (Linden) नामक वृक्ष उगते हैं। उसूरी नदी की घाटी में जिनसेंग (Ginseng) एक बहुत ही महत्वपूर्ण पौधा उगाया जाता है। यह हर प्रकार की बीमारियों की दवा है, तथा बहुत कीमती होता है। जंगली अंगूर की बेलें तथा अंगूर बहुत उगते हैं, लेकिन इस भाग में बहुत घनी घास भी उगती हुई दृष्टिगोचर होती है। इस भाग में उष्ण, शीतोष्ण तथा शीत क्षेत्रों की सभी प्रकार की वनस्पति उगती हैं।

रूसी तुर्किस्तान के क्षेत्र में कुछ भिन्न प्रकार की ही वनस्पति मिलती है। जिस समय से यहाँ जल का अभाव हुआ है, उस समय से सक्जाउल (Saxaul), जिद्दा (Jidda) जंगली जैतून (Wild Olive) तथा पोपलर (Poplar) आदि के वृक्ष पाये जाते हैं। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं, कि जो वनस्पति ईरान के पठार के उत्तरी भाग में मिलती हैं, वही साइबेरिया के भाग में भी मिलती है। यह एक आश्चर्यजनक बात है कि किस प्रकार से इस वनस्पति ने अपने को साइबेरिया के वातावरण के अनुसार बना लिया है। इन वृक्षों की इस वातावरण के अनुसार कुछ अजीब ही विशेषतायें होती हैं। इनमें कुछ कांटे तथा पत्तियों में रेशा होते हैं। सक्जाउल (Saxaual) जिसमें कि पत्तियां नहीं होती उन पर फल व फूल उगाते

है। यहाँ के नखलिस्तानों में कुछ ऐसे फल होते हैं जो खाने में बड़े ही स्वादिष्ट होते हैं, उदाहरणार्थ—सेव, नासपाती, अंगूर, तरबूज, शरीफे, अखरोट तथा बादाम इत्यादि। इन वृक्षों के अतिरिक्त पोपलर, नराउन (Naraun) तथा एम (Elm) के वृक्ष भी उगते हैं, ये अपनी लकड़ी के लिये बहुत प्रसिद्ध हैं। शहतूत के वृक्ष रेशम के कीड़े के हेतु उगाये जाते हैं, किन्तु सीमित क्षेत्रों में ही। नदियों की घाटियों के ऊपर घास के मैदान दृष्टिगोचर होते हैं। जुंगेरियन-अलताउ में ४६०० से लेकर ८५०० फुट तक की ऊंचाई पर बहुत ही सुन्दर वृक्षों के वन मिलते हैं। मध्य त्यानशान के वनों में एश तथा स्प्रूस के वृक्ष मिलते हैं परन्तु अब धीरे धीरे इनके स्थान पर सेव, अखरोट तथा नासपाती के वृक्ष लगाये जा रहे हैं। स्प्रूस का वृक्ष ७० से ८० फुट तक ऊंचा होता है। इसकी टहनियां २ या ३ फुट तथा तना ४ या ५ फुट मोटा होता है। यह वृक्ष यहाँ ८००० फुट की ऊंचाई तक उगता है। इन भागों में अनेक रूसी लोग आकर एकत्रित हो गये हैं। यहाँ हर प्रकार की सांस्कृतिक उन्नति हुई है, विशेष तौर पर सेमीरेचिनस्क(Semirechinsk)के निकटवर्तीय क्षेत्रों के कुछ भागों में जहाँ चारों ओर बंजर भूमि ही दृष्टिगोचर होती है किसी भी प्रकार की उन्नति नहीं हो पाई है सम्पूर्ण रूसी तुर्किस्तान में वनस्पति क्षेत्र लगभग १६२,०००,००० एकड़ हैं, इनमें से ६४५,००० एकड़ पर ऐसे वृक्ष हैं जिनमें उत्तम श्रेणी की लकड़ी प्राप्त होती है, तथा १६,००,००० एकड़ में झाड़ियाँ तथा झरबेरियाँ ही पाई जाती हैं। इन भागों में क्योंकि यहीं लकड़ी आसानी से प्राप्त हो जाती थी, इसलिये वनों को लोगों ने लकड़ी प्राप्त करने के हेतु काट दिया है। अब रूस सरकार दुबारा इन वनों को लगाने की चेष्टा कर रही है। इन लोगों को इस कार्य में समरकन्द के क्षेत्र में कुछ सफलता भी प्राप्त हुई है। सक्साउल जो कि पहले सरदरिया की घाटी में बहुत उगता था, अब स्टेप्स के भागों में ही उगता है। कदाचित वनों को साफ करने के कारण ही यहाँ की जलवायु और भी अधिक शुष्क हो गई है।

काकेशस के भागों में अनेक प्रकार की वनस्पति दृष्टिगोचर होती है। इस पर्वत श्रेणी के दोनों ओर विभिन्न प्रकार के वृक्ष उगते हैं। रियोन की घाटी विशेषतौर पर प्रसिद्ध है। ट्रांस काकेशिया का क्षेत्र अपने फलों के वृक्षों के लिये महत्वपूर्ण है। यहाँ शहतूत नारंगी नीबू, तथा अंगूर के वृक्ष उगते हैं। पहाड़ों की गहरी घाटियों में लम्बी लम्बी घास उगती है। ग्रेट काकेशिया के दोनों ओर वनीय पेटी ५०० लम्बी तथा १० से लेकर २० मील तक चौड़ी मिलती है। ऊंचाई पर मेपिल (maple) लाइम (lime) एश(ash), फर (fir), पाइन (pine), बीच (beech) तथा लार्च (larch) के वृक्ष मिलते हैं, इनके नीचे ओक (oak), चेस्टनट

(chestnut), पोपलर(Poplar), प्लैटेन (plantain), बोक्स (box), तथा वालनट (walnut), नामक वृक्ष मिलते हैं। घाटियों में फलों के वृक्ष बहुत बड़ी मात्रा में उगते हैं। दक्षिणी ढालों पर एक विशेष प्रकार की चाय भी उत्पन्न की जाने लगी है।

एक रूसी जवी-विज्ञान वक्ता(N·Altroff)ने कहा कि पश्चिमी काकेशिया की वनस्पति तरशियारी युग की वनस्पति से मिलती जुलती है। इसमें सदाबहार वृक्षों की कुछ नहीं तो १३ किस्में हैं, और नुकीली पत्ती वाले वृक्षों की ६ तथा ८६ पतझड़ वाले तथा झाड़ियों दार वृक्षों की विभिन्न किस्में मिलती हैं। वनों से यहां ३००० से ४००० फुट तक ऊंची श्रेणियाँ ढकी हुई हैं। बीच, वालनट तथा रोडेनडोन इत्यादि समुद्र सतह से ७००० फुट तक की ऊँचाई पर भी उगते हैं। इस ऊँचाई पर बर्च, पर्वतीय एश तथा अन्य ठिगने वृक्ष भी मिश्रित दशा में पाये जाते हैं।

रूसी आरमीनियां जो कि एक शुष्क भाग है वनों का भंडार है। इसके वनों में ओक, बीच, आस्पेन तथा पोपलर के वृक्ष मिलते हैं। यहाँ अनेक प्रकार के एश के वृक्ष भी उगते हुए दिखाई देते हैं।

जीव जन्तु (Livestock) :—

वास्तव में यदि देखा जाय तो साइबेरिया के टेगा प्रदेश जीव-जन्तुओं का भंडार है। मंचूरिया के उत्तर तक चीते मिलते हैं, लेकिन इसके साथ पेन्थर (Panther), भेड़िया (Wolf), लिंक्स (Lynx), तथा ग्लूटन (Glutton) भी काफी मात्रा में पाये जाते हैं। यहाँ दो प्रकार के भालू मिलते हैं। समूर वाले जानवरों में सेबिल (Sable), काली तथा लाल लोमड़ी (Black and red Fox) मार्टिन (Martin) तथा एरमाइन (Ermine) इत्यादि हैं। गहरे भूरे रंग की गिलहरी भी यहाँ पाई जाती है, इन गिलहरियों की खाल तथा बाल काफी कीमती होते हैं और तुरन्त बिक जाते हैं। हिरन, एल्क (Elk) तथा रो (Roe) भी पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। पक्षियों की यहाँ २०० से अधिक किस्में हैं। आमूर, उसूरी नदियों तथा केन्का झील विभिन्न प्रकार की स्वादिष्ट मछलियों के लिये बहुत प्रसिद्ध है। प्रमुख मछलियों में स्टर्जियन (Sturgeon), सालमन (Salman), कार्प (Carp) तथा स्टेरलेट (Sterlet) प्रसिद्ध हैं।

उत्तर-पूर्वी साइबेरिया के भागों में लेमिंग (Lemmings) नामक जीव मिलता है। ये ऋतुओं के अनुसार इधर उधर अपना स्थान बदलते रहते हैं।

Live stock (1 Oct. 1954) in million heads Cattle 64·9 (including 27·5 milch cows) pigs 51; Sheep and goats 138·4; horses 16·2

—Stateman's year Book—1955 page—1443

जो असभ्य लोग यहाँ रहते हैं, वह कड़ी ऋतु में इनसे तथा ये उनसे अपना भोजन छिपाकर रखते हैं। लेमिंग अपने खाने की सामग्री के चारो ओर विषैली जड़ी-बूटियाँ रख देते हैं, जिससे कि शत्रु उनका भोजन चुरा न ले जांय। इन उत्तर-पूर्वी भागों से समूर वाले जीव-जन्तु लगभग समाप्त हो गये हैं। परन्तु कमचटका के भाग से अब भी ६००० से ८००० सेबिल की खाल प्राप्त हो जाती है। साइबेरिया के भागों में शनैः शनैः जीव-जन्तुओं की किस्में कम हो रही हैं।

पश्चिमी साइबेरिया में अनेक पक्षी मिलते हैं। इनमें से गोल्डन ईगल (Golden Eagle), श्वेत गर्दन वाला अल्पाइन लार्क (Alpine lark), भूरी गर्दन वाली वेगटेल (Wagtail) इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

आरकाट की पहाड़ियों पर अरगाली (Argali) नामक प्रसिद्ध भेड़ मिलती हैं। इस भेड़ की गर्दन मोटी, टेढ़े-मेढ़े तीन फुट लम्बे सींग होते हैं। इसका वास्त-विक स्थान मध्य एशिया का पठार बतलाया जाता है। यह आदत में स्टीनबोक (Stenibok) तथा चेमोयेज़ (Chamois) से मिलते-जुलते है, और काफी तेज दौड़ते हैं, इनका पकड़ना बहुत कठिन होता है।

पालतू जानवरों में स्टेपलैंड के चौड़ी दुम वाली भेंड़ तथा ऊंट, टुन्ड्रा में रेनडीयर, ऊपरी येनेसी बेसिन में याक बहुत प्रसिद्ध हैं। प्राचीन काल में साइबेरिया अनेक जंगली जीव-जन्तुओं का निवास स्थान था। इनमें से रिनोसिरोज (Rhino-ceros) तथा मैमूथ (Mammoth) आदि के अब भी चिन्ह मिलते हैं।

रूसी तुर्किस्तान के निम्न भागों में स्कार्पियन (Scorpions), लिजार्ड (lizards), साँप (Snakes) तथा अन्य रेंगने वाले जानवर मिलते हैं। परन्तु यहाँ पर जो मच्छर तथा टिड्डी दल पाये जाते हैं, वे बड़े हानिकारक सिद्ध होते हैं। टिड्डी दल के विषय में एक यात्री (Major H. Wood) ने लिखा है कि जुलाई १८७४ में खिवन नामक उद्यान में जो टिड्डी दल आया था वह १५ मील लम्बे, दो मील चौड़े तथा आधे मील गहरे बादलों के रूप में आया था। इनसे इस सुन्दर उद्यान का सर्वनाश हो गया।

शिकार खेलने योग्य जीव-जन्तुओं में जंगली बोर (wild boar), चीता, आउंस (ounce) तथा भेड़िया (wolf), दलदली आमू तथा अरल डेल्टों पर पाये जाते ... ... पर तेज दौड़ने वाले जंगली गदहे (wild ass) तथा गेजिली (gazelle) मिलते हैं।

यहाँ के पालतू जानवरों में ऊंट, घोड़े, भेड़ तथा पशु बहुत प्रसिद्ध हैं, यह हर स्थान पर पाले जाते हैं। रूसी तुर्किस्तान में ऊंटों की संख्या बहुत कम

है। यहाँ चार लाख ऊँट तथा सोलह लाख घोड़े मिलते हैं। इनके अलावा १,१६०,००० पशु तथा १३५०००० भेंड़ें पाई जाती हैं। खिरगीज घोड़े बड़े परिश्रमी मजबूत तथा तेज दौड़ने वाले होते हैं। एक बार में ये ४० या ५० मील दौड़ जाते हैं, परन्तु इससे भी कहीं अधिक उत्तम तुर्कोमन (Turkomon) घोड़ा होता है, जो कि अरब या इंगलिश घोड़ों से टक्कर लेता है। इसकी अपनी भी कुछ विशेषतायें होती हैं।

काकेशिया के जंगली जानवरों में फारस की सीमा पर शेर-चीते कुरा तथा आरस बेसिन में ल्योपार्ड (Leopard) तथा हीना (Hyaena) नदियों की घाटियों तथा डेल्टों पर जंगली बोर (Wild boar) तथा वनीय क्षेत्रों में पैंथर (Panther), भेड़िया (Wolf), लिंक्स (Lynx) तथा भालू (Bear) मिलते हैं। काकेशस के भालू केवल ५,००० फुट की ऊँचाई तक ही मिलते हैं। इनके अलावा यहां मार्टेन (Marten), नीली लोमड़ी (Blue fox), गिलहरी (Squirrel), खरगोश (Hare), फिश ओटर (Fish otter) तथा अन्य छोटे-छोटे जानवर मिलते हैं।

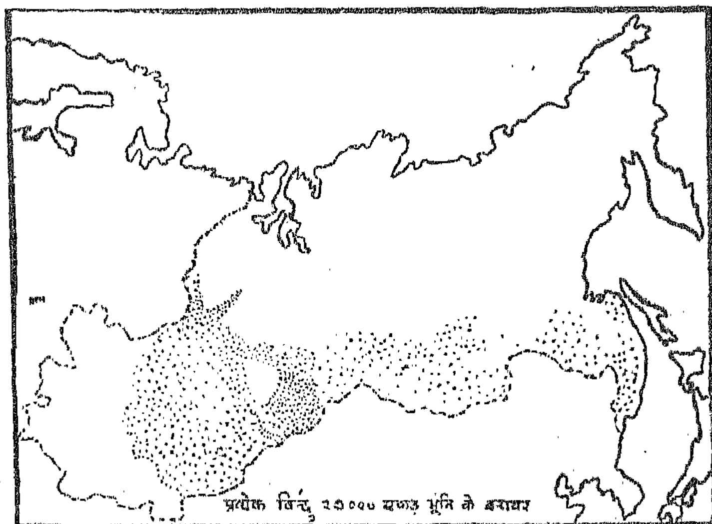
पालतू जानवरों में सींगदार पशु इंगुर तथा रिओनों के बेसिन में मिलते हैं। यहाँ पर दो प्रकार की नस्लें मिलती हैं। पहली छोटी तथा तेज होती है, तथा दूसरी बड़ी तथा देखने में सुन्दर प्रतीत होती है। ये यूक्रिनय नस्ल की उत्पत्ति है। अन्य पालतू पशुओं में घोड़े, गदहे, खच्चर तथा बकरे हैं। ये अपनी अच्छी नस्ल के लिये बहुत प्रसिद्ध हैं।

कृषि (Agriculture)

प्राचीन रूस केवल एक कृषि-प्रधान देश था, इसमें अधिकतर कृषि करने वाले व्यक्ति ही रहते थे। उन दिनों यद्यपि विस्तृत क्षेत्र, उपजाऊ मिट्टी तथा सन्तोषजनक जलवायु थी, परन्तु फिर भी उपज कम थी। कुछ उपजों का तो निर्यात व्यापार भी होता था। पश्चिमी योरोपियन देशों की अपेक्षा यहाँ प्रति व्यक्ति बोई हुई भूमि बहुत कम थी। इस देश में कृषि योग्य भूमि की यद्यपि कमी नहीं थी परन्तु फिर भी उन दिनों लाखों किसान भूखों मरते थे। अकाल तो प्राय: पड़ा ही करते थे। उत्तम से उत्तम मिट्टी पर धनी जमींदारों का अधिकार रहता था। किसान लकड़ी के बने हुये हल तथा अन्य औजारों का प्रयोग करते थे। रसायन—खाद का तो उपयोग था ही नहीं, अन्न तथा अन्य फसलों की उपज तो विशेषतौर पर कम थी।

यदि सोवियत रूस के क्षेत्रफल की ओर ध्यान दिया जाय, तो उसमें से केवल

८८८८००० वर्गमील भूमि कृषि योग्य है, दूसरे शब्दों में ५६८०००००० एकड़ भूमि पर कृषि की जा सकती है। परन्तु दुर्भाग्य से इससे कम भूमि पर ही वर्तमान रूस में कृषि की जाती है। सन १९५० में इसका क्षेत्रफल १५८४२६००० हैक्टर्स था।



साइबेरिया में कृषि–भूमि का क्षेत्र

प्रति एकड़ उपज भी इस देश में बहुत कम है। वास्तव में कठिनाई यह है कि यहाँ पर उपजाऊ भूमि पर भी लगातार कृषि नहीं की जा सकती, क्योंकि बीच बीच में अनेक कठिनाइयां आ जाती हैं। कभी ठंड अधिक पड़ती है, कभी वर्फ की वर्षा होती है, तो कभी टिड्डी के दल चले आते हैं। यही कारण था कि १९१३ में औद्योगिक उपज कुल की ४२.१% तथा कृषि उपजें ५७.९% थीं और १९३७ में औद्योगिक उपजें ७७.४% तथा कृषि उपजें २२.६% थी।

रूस में बोई हुई भूमि का उपभोग (१९५० में)

अनाज —	१०५.६	(मिलयन हैक्टर्स)
औद्योगिक पौधे —	११.९	,,
तरकारियाँ तथा आलू —	१२.७	,,
पशुओं को खिलाने वाली वस्तुयें —	२८.४	,,
अंगूर के बागात —	०.४२	,,

सिंचाई केवल कुछ ही क्षेत्रों में होती है, वह भी काकेशस तथा मध्य पूर्वी भाग में। कुल सिंचाई वाले क्षेत्र का क्षेत्रफल लगभग १६०००००० एकड़ है। पहले जो भाग वनों से ढके हुए थे, अब उन पर भी कृषि की जाने लगी है। स्टेप्स के लगभग सभी भागों में कृषि की जाती है। चेरनोज़म के भाग में गेहूं उत्पन्न किया जाता है। अन्य भागों में राई, ओट आलू तथा चुकन्दर उत्पन्न किया जाता है। सोवियत रूस इन कृषि क्षेत्रों को अब बराबर बढ़ाने की चेष्टा कर रहा है। गेहूं तथा जो अब काफी उत्तर तक उत्पन्न किये जाने लगे हैं।

यदि औसत लिया जाय तो यहाँ प्रति वर्ग मील पर केवल १५·८ ग्रामीण व्यक्ति रहते हैं। वैसे कहीं कहीं पर ०·०३ से भी कम लोग प्रति वर्ग मील पर रह रहे हैं। यूक्रेन के क्षेत्र में १७० ग्रामीण लोग प्रति मील पर रह रहे हैं। यदि यहां के कृषि क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए देखा जाय और यहाँ की जनसंख्या पर दृष्टि डाली जाय तो हम देखेंगे कि देश में जनसंख्या आवश्यकता से अधिक है। अब यदि देश साधारण मिट्टी तथा बंजर क्षेत्रों पर कृषि करना आरम्भ कर दे, तो अवश्य ही इसकी स्थिति बहुत अच्छी हो जायगी।

साइबेरिया में टुण्ड्रा का भाग दस लाख वर्ग मील में, तथा इसके दक्षिण में टैगा ४० लाख वर्ग मील में फैला हुआ है। इन दोनों भागों में, से कोई भी इस दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध नहीं हुआ। दस लाख वर्ग मील में ही मध्य एशियाई रूस के मरुस्थलीय भाग पाये जाते हैं। इसके विपरीत यदि यूराल पर्वत के पश्चिम की ओर दृष्टि डाली जाय, तो हम देखेंगे कि उत्तरी योरोपियन रूस में ६५ प्रतिशत तथा शेष योरोपियन रूस के ४३ प्रतिशत भाग पर कृषि होती है। यहाँ लेनिनग्रेड के दक्षिण में कृषकों की जनसंख्या १०० से लेकर २५० प्रति वर्ग मील है।

रूसी वैज्ञानिक यहाँ की कृषि की ओर विशेष ध्यान दे रहे हैं। उनका कथन है कि टुण्ड्रा के जमे हुए भाग, वनीय क्षेत्रों की खारी मिट्टी तथा शुष्क भागों पर भी कृषि भविष्य में की जायेगी। रूस की पन्चवर्षीय योजना के अन्तर्गत यहाँ कृषि में आश्चर्य जनक उन्नति हुई है। सन् १६४० के अन्त तक साइबेरिया के भाग में १७,२६७,००० एकड़ भूमि पर कृषि की जाने लगी, यह आरम्भ की पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत वृद्धि हुई थी। मध्य पूर्वी- एशियाई रूस, बाल्गा के पूर्व तथा बाइलोइस के दलदली भाग में कृषि योग्य भूमि बनाई गई। स्टेपलैण्ड के तो लगभग सभी भागों पर कृषि की जाने लगी है।

साइबेरिया में जो औसत लिया गया, तो उसके अन्तर्गत यहाँ प्रति मनुष्य

केवल २०'° एकड़ भूमि पड़ी। यह वास्तव में अन्य देशों को ध्यान में रखते हुए बहुत कम है। इसके अनेक कारण हैं, जिनका ऊपर वर्णन किया चुका है। पहले कृषि प्रधान क्षेत्रों में बहुधा अकाल आया करते थे। सन् १६२२ में जो अकाल आया था, उसके अन्तर्गत ५ लाख से अधिक लोग मृत्यु की गोद में सो गये। सन् १६३३ में भी एक बार वर्षा की कमी के कारण भीषण अकाल पड़ा था।

सोवियत रूस ने कृषि में बहुत उन्नति की है। सम्पूर्ण कृषि योग्य भूमि के क्षेत्र की ६ प्रतिशत 'स्टेट फार्म' (State farm or Sovkhoz) तथा ८५ प्रतिशत 'क्लेक्टिव फार्म (Collective farm Kolkhoz) से घिरी हुई है। 'स्टेट फार्म' का क्षेत्रफल बहुत होता है। यह दस हजार या उससे भी अधिक एकड़ हुआ करता है। क्लेक्टिव फार्म का क्षेत्रफल १२०० एकड़ या उससे भी कम होता है। भूमि उन्हीं लोगों की होती है, जो उस पर कृषि करते हैं। ये लोग एक कमेटी स्थापित कर लेते हैं, जो इन 'फार्म' की देख रेख करते हैं। नित्य कार्य का औसत लिखा जाता है, और वह 'लेबर डे (Labour day) कहलाता है। जब फस्ल कट जाती है, और अन्य फस्ल सम्बन्धी व्यय निकाल दिये जाते हैं, तो बची हुई फस्ल तथा पशु 'लेबर डे' के अनुपात से कर्मचारियों में बाँट दिये जाते हैं। यहाँ जो कुछ भी वेतन उसे नकद या किसी रूप में मिलता है, वह स्वतंत्रता पूर्वक खर्च करता है। किसान प्राय: इसमें से कुछ बेच देता है तथा शेष अपने उपभोग के लिए रखता है। प्रत्येक 'क्लेक्टिव फार्म' के परिवार के पास एक घर होता है जो कि उसी के नाम करा दिया जाता है। इस घर में पहले ही से कुछ पशु तथा मुर्गियाँ उसके प्रयोग के लिए उपस्थित रहती हैं।

दोनों 'स्टेट तथा क्लेक्टिव फार्म' पर हर तरह के कृषि करने के औजार होते, हैं जैसे—ट्रैक्टर (Tractor) तथा 'कम्बाइन्ड हारवेस्टर (Combined Harvester) इनके अलावा खाद तथा उत्तम श्रेणी के बीज भी इनके पास रहते हैं। इन सब वस्तुओं के प्रयोग करने की विधि बहुत अनुभवी व होशियार मनुष्य व स्त्रियां

In 1954 the Collective and state farms and tractor stations sowed 40·9 million hectares of winter grain, including 19·7 million hectares of wheat. Virgin and long-standing fallows land ploughed up in 1954 was 17·4 million hectares, of which 3·6 million hectares were sown with wheat and millet. The area under Flax has been fixed at 1·4 million hectares for 1955.

The Statesman Year Book 1955
Page No. 1442

बतलाती हैं, कभी कभी निकटबर्तीय 'रिसर्च' स्टेशन से वैज्ञानिक स्वयं ही आकर बता देते हैं। कि कोई कोई स्टेट 'फार्म' सिन्चाई तथा बीज बोने के हेतु वायुयान भी रखते हैं इन सब प्रयत्नों के कारण यहाँ की प्रति एकड़ उपज अब बहुत काफी बढ़ गई है।

सन् १६१३ में गल्ले की उपज यहाँ ७६० लाख टन थी। सन् १६३८ में यह बढ़कर ६३० लाख टन होगई। यहाँ की प्रमुख उपजों में अनाज १६४७ में १२२,३६०,००० टन, कपास १६५० में ३,७५०,००० टन, फ्लेक्स १६३८ में ५५०,००० का चुकन्दर १६५३ में २२,०००,००० टन तथा ओलियाजीनस पौधे (**Oleaginous plants**) १६३८ में ४,६६०,००० टन उत्पन्न हुए। साथ ही साथ यहाँ की प्रति एकड़ उपज भी बढ़ती जा रही है। खाद्य पदार्थों की वृद्धि यहाँ होनी अति आवश्यक है, क्योंकि नगरों की जन संख्या बराबर तेजी से बढ़ती जा रही है। कृषि की उपजों में अवश्य वृद्धि होनी चाहिए थी, क्योंकि देश औद्योगिक विकास की ओर भी ध्यान दे रहा है।

सोवियत रूस में स्टेप्स के भाग मुख्य खाद्यान्न उत्पन्न करने वाले भाग हैं। चौथाई से अधिक भाग दक्षिणी योरोपियन भाग में शामिल हैं। यूक्रेन, क्रीमिया, क्रेसनोदर, रोस्तोव तथा ओरजोनिकजी (**Ordzhonikidze**) सम्पूर्ण रूस के क्षेत्रफल के केवल तीन प्रतिशत ही हैं, परन्तु कृषि सबसे अधिक होती है। मध्य तथा निचली वाल्गा की घाटी, कुर्स्क तथा वोरोनेज (**Voronezh**) प्रदेश अन्य कृषि करने वाले प्रसिद्ध क्षेत्र हैं। पश्चिमी साइबेरिया, दक्षिणी यूराल, उत्तरी कजखस्तान बोई हुई भूमि का पांचवां भाग शामिल करते हैं, तथा पूर्वी साइबेरिया, मध्य एशिया एवं ट्रांस काकेशिया बोई हुई भूमि का दसवां भाग सम्मिलित करते हैं।

यद्यपि पूर्वी सोवियत रूस में बोई हुई भूमि का क्षेत्रफल काफी बढ़ाया गया है परन्तु फिर भी योरोपियन रूस मुख्य खाद्यान्न उत्पन्न करने वाले भाग हैं, विशेष तौर पर यूक्रेन, क्रीमिया क्रेसनोदर तथा रोस्तोव है। यहाँ पर शीत ऋतु के गेहूं का दो तिहाई भाग उत्पन्न किया जाता है। चौथाई बसन्त ऋतु का गेहूं वाल्गा के निकटवर्तीय क्षेत्रों में उत्पन्न किया जाता है। दक्षिणी योरोपियन रूस में समस्त रूस की ४० प्रतिशत राई उत्पन्न की जाती है।

स्टेपलैंड की उपजाऊ काली मिट्टी तथा शुष्क ग्रीष्म ऋतु खाद्यान्न उत्पन्न करने के हेतु विशेषतौर पर महत्वपूर्ण हैं। यद्यपि इनमें से कुछ भाग बहुत ही शुष्क हैं। इनमें शुष्कता सहन करने वाले पौधे लगाये जाते हैं। खाद, सिन्चाई तथा बीज आदि पर यहाँ विशेष ध्यान दिया जाता है।

स्टेप्सलैंड के उत्तर में जो वनीय प्रदेश हैं उनमें, दक्षिणी साइबेरिया के स्टेपलैंड तथा कजख में बहुत सा भूभाग अब भी फसलें बोने के काम में लाया जाता है। इन भागों में आधा बसन्त ऋतु का गेहूं उत्पन्न किया जाता है। क्रांति के पूर्व योरोपियन रूस के उत्तरी भागों में बहुत कम गेहूं उत्पन्न किया जाता था, यहाँ राई, ओट तथा जौ विशेष तौर पर बोए जाते थे। यहाँ पर हमेशा ही खाद्यान्न तथा अन्य भोजन पदार्थों की कमी रहती थी। इस भाग में कृषि का इतना विकास हुआ है, कि १६३७ तक ये दूध, माँस, तरकारियां, अनाज तथा आलू इत्यादि सभी आवश्यक वस्तुयें जनसंख्या के लिए देने लगा था। सन् १६२८ से १६३५ तक गेहूं में जो क्षेत्र था, वह छः गुना बढ़ गया। उत्पादन सबसे अधिक करेलिया तथा मास्को के भागों में बढ़ा। औसत उपज अब भी यहाँ दक्षिण की अपेक्षा अधिक है। यह उन्नति वास्तव में उत्तम जलवायु के कारण ही हैं। गर्म दिन यहाँ काफी संख्या में छोटे हैं, साथ ही बसन्त ऋतु में वर्षा तथा बर्फ के पिघलने से काफी नमी भी हो जाती है। कोहरा सहन करने वाली फसलें उत्तरी भागों में बोई जाने लगी हैं।

वास्तव में यदि देखा जाय तो सोवियत रूस में गेहूं तथा राई, दो ही प्रमुख फसलें हैं, ये कुल के तीन चौथाई भाग पर उत्पन्न होते हैं। सन् १६३८ में शीत ऋतु का गेहूं १६·३ तथा बसन्त ऋतु का १३·२ बुशल प्रति एकड़ भूमि पर उत्पन्न होता था। शीत ऋतु की राई १५·५ जौ १६·५ ओट २६·४ कार्न १६ तथा चावल १६·५ बुशेल प्रति एकड़ उत्पन्न हुए। मास्को, लेनिनग्रेड, योरोस्लोव तथा गोरकी के निकटवर्तीय क्षेत्रों में नये प्रकार का गेहूं उत्पन्न किया जाने लगा है। प्रथम महायुद्ध के पूर्व रूस ने केवल पाँच वर्ष में १६५० लाख बुशल गेहूं निर्यात किया, परन्तु द्वितीय महायुद्ध के पूर्व केवल इतने ही वर्षों में ५२० लाख बुशल बाहर भेजा गया इसका कारण था, रूस की बढ़ती हुई जनसंख्या। रूस का कपास का उत्पादन भी गत वर्षों से बढ़ गया है। इसके क्षेत्र ट्रांस काकेशिया तथा मध्य-पूर्वी एशियाई रूस के अलावा अस्त्राखान (वोल्गा नदी पर), दक्षिणी यूक्रेन तथा कुबान नदी की घाटी भी है। चुकन्दर रूस में यूक्रेन कुर्स्क, काकेशिया, मध्य एशियाई रूस तथा दूर पूर्व में उत्पन्न किया जाता है।

नारङ्गियाँ, अंगूर, चाय तथा अन्य रसदार फल ट्रांस काकेशिया में उत्पन्न होते हैं। वर्तमान रूस अब भी गेहूं के उत्पादन में प्रथम स्थान तथा राई, जौ, ओट चुकन्दर तथा आलू के उत्पादन में विश्व में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करता है।

इस देश में रबड़ के वृक्ष भी लगाए गए हैं। सबसे उत्तम श्रेणी की रबड़ कोक-सगीज़ (Kok-Sagyz) कहलाती है। यह १६३१ में मिलने लगी थी। अब यह कई स्थान पर उत्पन्न की जाने लगी है।

कपास यहाँ पर १९४३ में २०००००० हेक्टर्स पर उत्पन्न की जाती थी, परन्तु अब इन्हीं के क्षेत्रों में तेल के कारखाने भी स्थापित कर दिये गये हैं।

रेशम इस देश में बहुत अधिक प्राप्त किया जाने लगा है। मध्य एशिया तथा ट्रांस काकेशिया के भागों को छोड़कर यह यूक्रेन कीमिया, उत्तरी काकेशस वोरोनेज़, कुर्स्क तथा स्टालिनग्रेड आदि स्थानों पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। सन १९४० में इसका क्षेत्र ५१,००० हेक्टर्स था, सन १९४९-४७ में इसको बढ़ा कर २५६००० हेक्टर्स कर दिया गया है।

खनिज सम्पत्ति (Mineral Wealth)

जिस समय रूसी साम्राज्य पर जार लोगों (Tsars) का राज्य था, उस समय देश की आर्थिक दशा बड़ी शोचनीय थी। यद्यपि यहाँ लाखों मील के क्षेत्र में उपजाऊ काली मिट्टी, विस्तृत वन, हजारों नदियां व झीलें, विश्व का आधा तेल, बीस प्रतिशत कोयला, साठ प्रतिशत पीट तथा तीन-चौथाई मैंगनीज का भण्डार उपस्थित था, परन्तु फिर भी यहाँ के निर्धन कृषक बेचारे भूखों मरते थे। उन दिनों कृषि तथा उद्योग धन्धे, दोनों ही अवनति पर थे। प्राचीन रूस अपनी खाद्यान्न की आवश्यकताओं को भी पूर्ण करने में असमर्थ था, उन दिनों धातुयें, मशीनें तथा ऊनी व सूती वस्त्र आयात किये जाते थे। वास्तविकता तो यह है कि देश की अपार संपत्ति का लोगों को ज्ञान तक नहीं था, और न ही वे जानने का प्रयत्न करते थे। केवल कुछ स्थानों पर यहाँ विदेशी कम्पनियाँ खनिज पदार्थ प्राप्त किया करती थीं। स्वीडेन की कम्पनी तेल पर अधिकार प्राप्त किये हुये थी, डोन बेसिन की कोयले की खानें एक फ्रेंच कम्पनी के पास थीं, धातुयें केवल कुछ ब्रिटिश कम्पनी के प्रोत्साहन से ही निकाली जाती थीं। परन्तु रूसी बेचारे कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाते थे।

वास्तव में देखा जाय तो रूसी लोगों का नवजीवन १९१७ की क्रान्ति के पश्चात् ही आरम्भ हुआ है। केवल पच्चीस वर्ष के समय में इस देश ने इतनी उन्नति की है कि सारे जगत् को अचम्भे में डाल में दिया है। श्री एच० जी० वेल्स (H. G. Wells) ने लेनिन के प्रति कहा है कि "वह इस देश में आनन्द के लिए उत्पन्न हुआ है।"

प्रथम एवं द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत देश में अनेक अन्वेषण हुए, नई नई खानें खोदी गईं- अनेक उद्योग-धन्धे स्थापित किये गये। अपने यहाँ ही प्राप्त किए हुए पदार्थों से रूस ने खानों से कोयला, तेल, धातुयें प्राप्त कीं और बड़े बड़े उद्योग-धन्धे स्थापित किए। सोवियत रूस के ही बने हुये ट्रैक्टर फार्म पर दृष्टिगोचर होने गये। प्राचीन नगरों को आधुनिक रूप दिया गया तथा नवीन की

नींव डाली गई। अशिक्षित कृषक शिक्षित हो गये और प्रत्येक कार्य क्षेत्र में निपुणता प्राप्त कर ली। इनका रहन सहन का स्तर धीरे धीरे उठने लगा और अब वह दशा हो गई है, जब कि यह विश्व के सभ्य राष्ट्रों में गिने जाते हैं।

खनिज पदार्थ इन सब वस्तुओं का आधार है। जिस देश के पास वे सब वस्तुयें पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होंगी, वह अवश्य उन्नति करेगा। रूस एक ऐसा ही देश है जिसके पास अनेक महत्वपूर्ण खनिज पदार्थ हैं। भूगर्भ शास्त्र का अध्ययन उस समय से आरम्भ हुआ जब से कि 'पीटर-दि-ग्रेट' ने राज्य सरकार की ओर से यूराल पर्वत पर सन् १६६६ में खान खोदी। नीचे हम उन खनिज पदार्थों को ले रहे हैं जिनसे रूस को अपने औद्योगिक विकास के हेतु शक्ति प्राप्त होती है।

कोयला:—

कोयला एक अति महत्वपूर्ण शक्ति का साधन है। रूस दो तिहाई शक्ति केवल कोयले से ही प्राप्त करता है। आजकल इसका उत्पादन इतना बढ़ गया है कि रूस विश्व में तीसरा स्थान प्राप्त करता है। द्वितीय महायुद्ध के पूर्व इसका नम्बर उत्पादन की दृष्टि से संयुक्त राज्य अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन तथा जर्मनी के बाद आता था। पीट नाम के कोयले का उत्पादन भी यहां पर्याप्त मात्रा में बढ़ गया है। सन् १६५० में यहाँ का उत्पादन ४४४ लाख टन था। इसमें अधिक मात्रा बिटुमिनस (Bituminous) कोयले की है। इसी सन् में सम्पूर्ण उत्पादन का ८७ प्रतिशत कोयला इसी श्रेणी का था।

कोयले का *रिज़र्व इस देश में सन् १६३७ में १६५४,३६१० लाख टन था। संयुक्त राज्य अमरीका के बाद रिजर्व के दृष्टिकोण से इसी देश का स्थान था। यह रिज़र्व इस देश की राजधानी से लेकर प्रशान्त महासागर के तट तक फैला हुआ था। इस क्षेत्र में कुल खानें ८३ से अधिक पाई जाती हैं, परन्तु कोयला सब खानों से प्राप्त नहीं किया जाता। केवल कुछ ही खानें ऐसी हैं, जो उत्पादन के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं।

Soviet scientists claim that the U. S. S. R. Contains 20% of the world's Coal deposits, 58·7% of its oil, 53% of its iron ore, 76·7% of its apatite and 25% of all timber land in the world.

—Statesman's Year Book 1955 Pa'   '44.

*S. Harry-Russia's Soviet Economic—Page 214.

रूस में कोयले का रिजर्व (मिलियन टन में)

डोनेज बेसिन	८८८७२	कारागन्डा	५२६६६
काकेशस के उत्तरी ढाल	४०६८	कुजनेस	४५०,७५८
जिर्गोजिया	३०६	मिनूसिन्सक	२०,६१२
दक्षिणी मास्को	१२,४००	चुलिम येनेसी	४३,०००
पिचोरा	३,०००	कानस्क	४२,०००
पश्चिमी यूराल	४,७७७	इरकुटस्क	८१,३६७
पूर्वी यूराल	२,८७२	बूरिया	२६,११६
		सुचान	४२,०००
		तुगस्का	४००,०००
		लेना	६०,०००
		योग	१६५४,३६१

यहाँ की सबसे महत्वपूर्ण कोयले की खान डोनेज (Donets) बेसिन है, इसे डोनबास के नाम से पुकारते हैं। यह काले सागर में उत्तर में स्थित है। प्रथम महायुद्ध के समय से द्वितीय महायुद्ध के आरम्भ तक इसका उत्पादन तीन—चौथाई बढ़ गया था, परन्तु द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् इसके उत्पादन का प्रतिशत घट कर ३७ रह गया, क्योंकि इस समय तक साइबेरिया के भी अनेक क्षेत्रों से कोयला प्राप्त किया जाने लगा था इस खान का क्षेत्रफल दस हजार वर्गमील है। इसमें दो हजार से अधिक कोयले की पर्तें उपस्थित हैं। इस खान से बिटुमिनस कोयला अधिक प्राप्त होता है। खान का अधिक भाग यूक्रेन में स्थित है। यहाँ एन्थ्रेसाइट (Anthracite) श्रेणी का सबसे उत्तम कोयला निकाला जाता है। डोनबास की स्थिति इतनी महत्वपूर्ण है कि इसी के निकट क्रिवोई रोग (Krivoi Rog) की लोहे की खानें स्थित हैं, यह केवल दो सौ मील पश्चिम की ओर हैं, निकट में अनेक रसायन पदार्थ भी प्राप्त होते हैं, फलस्वरूप यहाँ अनेक उद्योग धन्धे स्थापित हो गये हैं।

यूराल पर्वत के पश्चिम में ठीक उत्तर की ओर पिचोरा नाम की कोयले की खान पाई जाती है। लेनिनग्रेड से थोड़ी ही दूर पर बोरकुता कोयले की खान मिलती है। इन दोनों का उत्पादन कई लाख टन प्रतिवर्ष है।

मास्को के उत्तर व दक्षिण में कुछ लिगनाइट (Lignite) कोयले की खानें मिलती हैं। यह कोयला उत्तम श्रेणी का नहीं है, इसलिये विद्युत शक्ति उत्पन्न

करने तथा रेलवे के काम में अधिक लाया जाता है। परन्तु, अब इसका उपयोग उद्योग-धन्धों तथा घरेलू काम काज में भी होता है। उत्पादन की दृष्टि से यह चौथा स्थान प्राप्त करता है।

यूराल के दक्षिण में पूर्व तथा पश्चिम के ढालों पर थोड़ा सा कोयला प्राप्त किया जाता है। पश्चिम के ढालों पर जो कोयला प्राप्त किया जाता है। वह बहुत उच्च श्रेणी के लोहे व स्पात के उद्योग के योग्य नहीं होता। इसमें गंधक की मात्रा अधिक होती है। इसका प्रसिद्ध केन्द्र किज़ेल है। पूर्व के ढालों पर जो कोयला मिलता है, वह लिगनाइट है। प्रसिद्ध केन्द्र चेलियाबिनस्क है। इनका उपयोग साधारण तथा घरेलू कार्यों विद्युत तथा उद्योग धन्धों में होता है। सम्पूर्ण यूराल के इस क्षेत्र का उत्पादन तीस लाख टन से अधिक नहीं है।

इस क्षेत्र के पूर्व में एक बहुत प्रसिद्ध कोयले की खान कारागन्डा (Kara-ganda) है। इसकी स्थिति इतनी महत्वपूर्ण है कि यूराल पर्वत के लोहे व स्पात के उद्योग धन्धे इसी खान से कोयला प्राप्त करते हैं। पहले जब कि इसका पता नहीं चला था, तब कोयला या तो डोनबास और या कुज़नेस बेसिन की खानों से मंगाया जाता था। सन् १६५० में इसका उत्पादन १६० लाख टन प्रतिवर्ष था।

मध्य साइबेरिया में कुज़नेस बेसिन (Kuknetz basin), जो कि कभी कभी कुज़बेस (Kuzbas) के नाम से पुकारी जाती है स्थित है। इसकी स्थिति ट्रांस साइबेरियन रेलवे के दक्षिण में बड़ी महत्वपूर्ण है। कोयले की खान के चारों ओर अनेक उद्योग धन्धे स्थापित हो गये हैं। इसका रिजर्व साइबेरिया में सबसे अधिक है। सन् १६५० में यह ४५०,६५८० लाख टन था। कुज़नेस बेसिन में स्थापित उद्योग धन्धों में होता है।

रूस में कोयले का उत्पादन

(In million Metric Tons)

१६४८—२०६.७

१६५०—२६४

१६५२—३००

१६५३—३२०

१६५४—३४५.६

कुज़नेस बेसिन के पूर्व में अनेक कोयले की खानें पाई जाती हैं। इनमें से एक मिनुसिंस्क (Minusinsk) बेसिन में स्थित है। ट्रांस साइबेरियन रेलवे के

दक्षिण में येनेसी घाटी में चेरनोगोरस्क (Chernogorsk) के स्थान पर कोयला पर्याप्त मात्रा में निकाला जाता है। दूसरी खान क्रेस्नोयारस्क (Krasnoyarsk) के उत्तर मे चुलिम–येनेसी (Chulym–Yensei) है। येनेशी के पूर्व में काँस्क (Kansk) नाम की कोयले की खान स्थित है। इस खान से भूरे रंग का कोयला प्राप्त होता है। इरकुटस्क के पश्चिम में भी एक कोयले की खान है, उत्पादन केवल ३० लाख टन है। आमूर नदी की घाटी में भी अनेक कोयले की खाने स्थित हैं। एक खान बुरिया की घाटी में तथा दूसरी ब्लाडीवोस्टक के निकट आरतेम (Artem) में स्थित है। सुचान के स्थान पर भी एक कोयले की खान स्थित है।

लेना तथा येनेसी की घाटियों में तो महत्वपूर्ण कोयले की खाने स्थित हैं। परन्तु इनसे उत्पादन बहुत अधिक नहीं है। येनेसी के पूर्व में तंगस्का (Tunguska) नाम की सोने की खान स्थित है। लेना बेसिन में संगर खाई (Sanger–Khai) के स्थान पर कोयला निकाला जाता है।

काकेशस तथा पामीर पर्वत की सीमाओं पर भी कोयला निकाला जाता है। पूर्व में साखालीन द्वीप में भी कई कोयले की खानें मिलती हैं। परन्तु उत्पादन की मात्रा बहुत कम है। इसीलिए ये क्षेत्र कोई विशेष औद्योगिक क्षेत्र नहीं बन पाये हैं।

रूस में कोयले का उत्पादन (१९५०)

(१० लाख टन में)

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कारागन्डा	अन्य	कुलयोग
९०·०	३२·०	३०·०	३०·०	१६·०	६२·६	६०·६

पेट्रोलियम:—

सोवियत रूश की स्थिति पेट्रोलियम में अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। वर्षों से इसकी स्थिति इसके उत्पादन में संयुक्त राज्य अमरीका के बाद रही है। इस खनिज पदार्थ का रिजर्व अनुमान लगाया जाता है विश्व में सबसे अधिक है। सन् १९३८ के आंकड़ों के अन्तर्गत यह ६,३७६,३००,००० टन था। इसका वितरण रूस में कई स्थानों पर है, परन्तु, इन सबों में एक ही क्षेत्र अधिक महत्वपूर्ण है। काकेशश पर्वत से लेकर कैस्पियन सागर तथा उत्तरी यूराल के पश्चिम में पिचरो तक पेट्रोलियम के कुएं मिलते हैं दूर पूर्व में साखालीन द्वीप तथा कमचटका में

आर्कटिक के निकट नार्डविक (**Nordvyk**), पामीर तथा कैस्पियन सागर के निकट पाया जाता है।

इन सबों में उत्पादन के दृष्टिकोण से बाकू बहुत प्रसिद्ध है। यह केस्पियन सागर के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यहाँ १८७० से पेट्रोलियम निकाला जाता है। सन् १९०१ तक यह विश्व का आधा पेट्रोलियम प्रदान करता था। पेट्रोलियम के कुएं यहाँ ८६४८ फुट से अधिक गहरे मिलते हैं। भूगर्भ शास्त्रियों का कथन है कि यह प्लाईओसिन रेत तथा क्रीटेशियस युग की चट्टानों से प्राप्त किया जाता है। इस केन्द्र से दो पाइप लाइन एक तो काले सागर के तट पर तथा दूसरी काकेशस के उत्तर में डोनेज बेसिन तक चली गई है।

काकेशस पर्वत के उत्तर में दो केन्द्र पेट्रोलियम के लिये बहुत प्रसिद्ध हैं। पहला माइकोप (**Maikop**) और दूसरा ग्रोजनी (**Grozny**)। इस भाग में कुछ प्राकृतिक गैसें भी निकलती हैं। एम्बा (**Emba**) नदी की घाटी में कई नमकीन चट्टानों के टीले मिलते हैं। इनमें से अनेक ऐसे हैं, जिनमें पेट्रोलियम भी प्राप्त होता है। यहाँ से एक पाइप लाइन उत्तर पश्चिम में ओरस्क तक तथा दूसरी पूर्व में साइबेरिया में प्रवेश कर गई है।

दक्षिणी यूराल से वाल्गा तक कई पेट्रोलियम के कुएं मिलते हैं। इन कुओं का पता १९२८ में लगाया गया था। कामा नदी से लेकर कैस्पियन की निम्न भूमि तक कुएं पाये जाते हैं। बाकू के बाद इन्हीं कुओं का स्थान है।

सन् १९५३ में पेट्रोलियम का उत्पादन ५२,०००००० मेट्रिक टन तथा १९५४ में ५८,०००,००० मेट्रिक टन था। यहाँ का सब पेट्रोलियम काकेशस की खानों से ही प्राप्त होता है। बाकू ७५-८० प्रतिशत तथा ग्रोजनी व माइकोप १५ प्रतिशत प्रदान करते हैं। आजकल यूराल—वाल्गा का क्षेत्र भी बहुत उन्नति कर गया है। यहाँ पर चार महत्व पूर्ण क्षेत्र हैं पहला कुबीशेव, बशकिरिया, इशिमबाइव (बशकिरिया) तथा मोलोटोव (पर्म)। यह क्षेत्र 'दूसरे बाकू' के नाम से प्रसिद्ध है। पूर्वी क्षेत्रों का उत्पादन कुल रूस के उत्पादन का आजकल ४४ प्रतिशत है।

The total length of pipeline on 1 Jan. 1939 was 4212 km., divided as follows:—

Baku-Batumi, 1717 km; Grozny-Makhach-Kala 150 km; Grozny-Armavir-Tuapse 618 km; Armavir-Trudovaya 488 km; Guriev-Orsk 8·5 km; & other 394 km.

Statesman's Year Book 1955 Page 1445

सोवियत रूस में पेट्रोलियम का उत्पादन
(१० लाख टन में)

बाकू	ग्रोजनी माइकोप	अन्य	कुल योग
१७·०	४·०	१६·५	३७·५

जलशक्ति:—

सोवियत यूनियन में विद्युत शक्ति अनेक स्थानों पर उत्पन्न की जाती है। यहाँ कई ऐसी प्रस्तावित योजनायें हैं, जिन पर कार्य हो रहा है। बहुत सी योजनायें तो पूर्ण होगई हैं। तीव्र गति से बहने वाली नदियाँ काकेशस, त्यानशान, पामीर तथा पूर्वी साइबेरिया में मिलती हैं। इन नदियों में बराबर जल रहता है, क्योंकि यह बर्फीले क्षेत्रों से होकर बहती हैं। यहाँ की बड़ी बड़ी नदियों पर अनेक विद्युत शक्ति गृह स्थापित किये जा सकते हैं।

विद्युत शक्ति निर्माण में सबसे अधिक सम्भावना लेना बेसिन तथा उससे कम येनेसी, अंगारा, दूर पूर्व, में रूसी तुर्किस्तान, ओबे, वाल्गा, काकेशस तथा कोला-करेलिया के भागों में है। इनमें से अधिक क्षेत्र तो औद्योगिक केन्द्रों से बहुत दूर हट कर स्थित है। सोवियत रूस के वैज्ञानिकों को यह विश्वास है कि यदि पूर्णतया इस शक्ति की उन्नति की गई तो अवश्य ही यह सबसे अधिक किलोवाट की शक्ति उत्पन्न करेगा।

सन् १६२० में लेनिन महाशय ने एक योजना बनाई थी, जिसके अन्तर्गत वाल्गा, नीपर व काकेशस पर शक्ति-गृह स्थापित किये जायेंगे तथा 'थरमल' (Thermal) पावर स्टेशनों के साथ मिला दिए जायेंगे। जब यह ग्रिड (Grid) तैयार हो जायेगा तब शक्ति बगैर रुकावट के बराबर निकटवर्तीय औद्योगिक क्षेत्रों को दी जायगी। यहाँ की अनेक प्रस्तावित योजनायें उसी श्रेणी की हैं, जिस श्रेणी की संयुक्त राज्य अमरीका में टी० वी० ए० तथा भारत में दामोदर घाटी है।

An atom-driven power station, with a capacity of 5000 K. W., was put into operation on 27 June 1954. Atom-driven power stations with capacities of 50000 to 100,000 K. W. are now under construction.

—Statesman's year Book-1955 Page No. 1446

योरोप की सबसे बड़ी योजना नीपर (Daieper) नदी पर बनी है। यह यूक्रेननियन उच्च भूमि पर जेपोरोज (Zoporozhe) के स्थान पर बाँध लगा कर बनाई गई है, द्वितीय महायुद्ध के समय से यहाँ ६ लाख किलोवाट शक्ति उत्पन्न की जाती है। सन् १९५० में सम्पूर्ण रूस की विद्युत शक्ति का उत्पादन ९०,३००,०००,००० किलोवाट-घण्टा थी, इसमें से केवल आठवां भाग जलशक्ति थी। दो बाँध बनाने की महत्वपूर्ण योजनाओं पर काम बराबर हो रहा है। पहली योजना वाल्गा नदी पर क्यूबीशेव (Kuibyshev) के स्थान पर और दूसरी अंगारा नदी पर। इन दोनों के अलावा आठ स्टेशन और खोले जायेंगे। चार इनमें से येनेसी नदी की ऊपरी घाटी पर स्थापित होंगे। इन योजनाओं के पूरा होने में काफी समय लगेगा।

धातुयें –

लोहा—रूस में अनेक धातुयें मिलती हैं परन्तु इनमें सबसे महत्वपूर्ण लोहा है। यह धातु यहाँ कई स्थानों पर निकाली जाती है। सन् १९४३ में यहाँ का रिजर्व १९४४७० लाख टन था, परन्तु वास्तविक रिजर्व केवल ९२३८० लाख टन ही बतलाया जाता है। इसके बाद वाले रिजर्व में तीन श्रेणियों का लोहा सम्मिलित है। पहला–भूरा लिमोनाइट, दूसरा मैगनाइट तथा तीसरा लाल हिमेटाइट। इसमें पहले की मात्रा सबसे अधिक है। यहाँ के प्रमुख लोहे के स्थानों में से क्रीवोई रोग विशेष तौर पर उल्लेखनीय है। इसके बाद यूक्रेन में कर्च तथा क्रीमिया, मास्को के दक्षिण-पूर्व में यूराल पर मेगनीटोगोरस्क तथा निजनी तागिल (NizhniTagil), कुजनेस बेसिन के दक्षिण में, कारागन्डा के निकट, अंगारा तथा दूर पूर्व की खानें उल्लेखनीय हैं:—

यूक्रेन में क्रीवोई रोग(Krivoi Rog) की लोहे की खानें बहुत प्रसिद्ध हैं। इस स्थान पर केम्ब्रियन युग के पहले की चट्टानें मिलती हैं। चट्टानों में जो धातु मिलती हैं, उसमें हिमेटाइट मेगनेटाइट तथा मारटाइट के मिश्रण मिलते हैं। कदाचित यह भी उसी समय की है, जिस समय की सुपीरिअर झील के पश्चिम में हैं क्रीवोई रोग के स्थान पर एक जगह ६० लाख टन तथा चार स्थानों पर बीस लाख टन लोहा प्राप्त किया जाता है। मारटाइट में इस धातु की प्रतिशत ६३ हिमेटाइट में ५१ है। गैगनेटाइट नामक भूरे रंग का कोयला ५८ प्रतिशत था। इस क्षेत्र के रिजर्व का अनुमान ११४२० लाख टन लगाया जाता है।

यूराल पर्वत का लोहा यहाँ के निवासियों ने बहुत प्राचीन समय से मालूम कर लिया था, परन्तु १९३१ तक यहाँ यह धातु नहीं निकाली गई। इस पर्वत पर

मेगनीटोगोरस्क के स्थान पर सबसे अधिक धातु निकाली जाती है। इसका उत्पादन यहाँ कई लाख टन है। चट्टानों में ५५ से लेकर ६६ प्रतिशत तक लोहा मिलता है। निजनीलागील इसी केन्द्र के निकट एक दूसरा केन्द्र है। मेगनीटोगोरस्क का उत्पादन ४५०० लाख टन एवं दोनों केन्द्रों का मिलाकर १३६०६ लाख टन है।

क्रीमिया के पूर्व में कर्च (Kerch) के स्थान पर भूरे रंग की धातु मिलती है, परन्तु इसमें फोसफॅटिक तथा मेगनीफोरस का भी मिश्रण पाया जाता है। लोहा यहाँ उत्तम श्रेणी का नहीं है। चट्टानों में केवल ३५ प्रतिशत ही धातु मिलती है।

मास्को के दक्षिण-पूर्व में दो खानें हैं, परन्तु उत्पादन के दृष्टिकोण से अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। एक खान तुला तथा दूसरी लिपेतस्क के स्थान पर हैं। रिजर्व ४००० लाख टन से कुछ अधिक ही है।

कुजनेस बेसिन में हाल ही में एक लोहे की खान पाई गई है। इसे गोरनया शोरिया (Gornaya Shoria) कहते हैं। चट्टानों में धातु की प्रतिशत केवल ४५ है। द्वितीय महायुद्ध के समय कारागण्डा के निकट भी एक खान प्राप्त कर ली गई थी। इसमें से अब भी लोहा निकाला जाता है।

बैकाल झील के पूर्व में धातु, पेट्रोवकस-जबाइकल आमूर घाटी के मुहाने तथा किन्घन पर्वत पर ही मिलती है। मास्को एवं खारकोव के मध्य कुर्स्क के स्थान पर बहुत अधिक रिजर्व का अनुमान लगाया गया है। यहाँ पर भविष्य में बहुत अधिक धातु निकाली जायगी, और यह भी उसी टक्कर का हो जायेगा, जिस टक्कर का क्रीवोई रोग। कोला प्रायद्वीप पर, काकेशश में तथा इसके अतिरिक्त अंगारा के किनारे इलिम नदी की घाटी तथा उत्तर पश्चिमी बैकाल में लोहे की खानें मिलती हैं।

सन् १९५० में इस देश में ४०० लाख टन उत्पादन था, जब कि १९४६ में २१० लाख टन, १९३३ में १४५ तथा १९२९ में ८० लाख टन था। उत्पादन में यह वृद्धि यहाँ की पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत हुई है।

सोवियत रूस में लोहे व स्पात का उत्पादन
(In million tons)

वर्ष	पिग लोहा	इन्गोट स्पात	रोल्ड स्पात
१९५२	२५·०	३५·०	२७·०
१९५३	२८·०	३८·०	२९·०
१९५४	३०·५	४१·०	३१·६

ताँबा—ताँबा इस देश में कई स्थानों पर प्राप्त किया जाता है। इसका रिजर्व यहाँ बहुत अधिक है, परन्तु उत्पादन में संयुक्त राज्य अमरीका से कम ही है। यह धातु उच्चकोटि की नहीं है। मुख्य क्षेत्रों में कजखस्तान है। यहाँ पर सबसे अधिक धातु निकाली जाती है। कुछ स्थान तो इस क्षेत्र में ऐसे हैं, जहाँ मुश्किल से एक या दो प्रतिशत ही धातु मिलती है। अन्य स्थानों में काकेशस तथा यूराल के क्षेत्र हैं जहाँ पर्याप्त मात्रा में ताँबा प्राप्त किया जाता है। परन्तु सबसे प्रसिद्ध खान बाल्कश झील के उत्तर में कौनरद(Kaunrad) के स्थान पर है। औसत उत्पादन एक लाख टन है। जेजकजगन (Djezkazgan) के स्थान पर कौनरद्र का दूना ताँबा प्राप्त किया जाता है। यूराल पर्वत के अलावा क्रेस्नोयारस्क से ५०० मील हट कर स्थित हैं। उत्पादन सन् १९४८ में १८०००० टन था।

मैंगनीज:—द्वितीय महायुद्ध के पूर्व मैंगनीज का उत्पादन भारतवर्ष में सबसे अधिक था, परन्तु इस समय रूस विश्व में सबसे अधिक मैंगनीज अपने देश से प्राप्त करता है। इसका उत्पादन १९४७ में १८० लाख टन प्रति वर्ष था, जबकि रिजर्व दस वर्ष पहले ७००० लाख टन था। इसकी खाने दक्षिणी यूक्रेन में निकोपोल के स्थान पर ज्योर्जिया में चिआतुरी (Chiatury) के निकट मिलती हैं। यूराल पर्वत पर भी यह धातु प्राप्त की जाने लगी है। इस धातु की पर्तें इन खानों में ४ फुट से लेकर १२ फुट मोटी हैं। धातु की महत्ता स्पात तैयार करने में बहुत अधिक है। यहाँ पर इसका घरेलू उपयोग भी बहुत है। वैसे यहाँ से निर्यात भी की जाती है।

अल्युमुनियम:—इस धातु में पहले रूस अपने को बड़ा निर्धन समझता था, परन्तु पञ्चवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत इसमें काफी विकास हुआ है। इस देश में बाक्साइट (Bauxit) जिससे कि यह प्राप्त किया जाता है, लेनिनग्रेड के पूर्व में तीखेपन के स्थान पर तथा यूराल पर्वत के उत्तर में काबाकोवस्क (Kaba-kovsk) की जगह प्राप्त किया जाता है। यूराल के दक्षिण में कमेंस्क (Kame-nsk) में भी यह धातु निकाली जाती है। नेफी लाइन (Nephiline) जो कि अल्युमुनियम के लिये आवश्यक धातु है, कोयला प्रायद्वीप पर निकाली जाती है। आज कल इस धातु में सोवियत यूनियन का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है, उत्पादन सन् १९४८ में ५००,००० टन था।

लेड व जिंक:—लेड का उत्पादन पहले बहुत अधिक था। परन्तु अब घट कर ६००० टन प्रति वर्ष के लगभग हो गया है। जिंक का उत्पादन इसमें कुछ ही अधिक है। इस देश में विश्व उत्पादन का ११ प्रतिशत लेड तथा १९ प्रतिशत जिंक

प्राप्त होती हैं। मुख्य क्षेत्रों में उत्तरी काकेशिया, ट्रांस बेकालिया, अल्ताई पर्वत पर रिडर तथा तटीय भाग इन धातुओं के हेतु प्रसिद्ध हैं।

सोना:—प्राचीन समय में भी साइबेरिया व यूराल के क्षेत्र इस धातु के लिये प्रसिद्ध थे। इस धातु का उत्पादन ४० लाख औंस से कुछ ही अधिक है। दक्षिणी अफ्रीका के बाद इसका स्थान है और फिर इसके बाद कनाडा व संयुक्त राज्य अमरीका का। यह याकूतिया में कोलिमा तथा आल्डन नदियों की घाटियों में प्राप्त किया जाता हैं। यूराल, काकेशस, रूसी मध्य एशिया तथा पूर्वी साइबेरिया में भी कुछ ऐसे क्षेत्र हैं, जहाँ सोना प्राप्त किया जाता है।

निकिल:—इस धातु के उत्पादन में यह देश विश्व में तृतीय स्थान प्राप्त करता है। इसका उत्पादन १६४७ में २५,००० टन था, और यह मध्य व दक्षिणी यूराल पर्वत पर तथा येनेसी की निचली घाटी में नोरल्सिक के स्थान पर निकाली जाती हैं। अब कोला प्रायद्वीप पर भी यह पाई जाने लगी है।

प्लेटिनम व क्रोमियम:—प्लेटिनम नाम की धातु यहाँ वर्षों से यूराल पर्वत पर पाई जाती थी, परन्तु आधुनिक ढङ्ग से यह निजनी तागिल (Nizni Tagil) की बेसिक चट्टानों से प्राप्त की जाने लगी है। उत्पादन में दृष्टिकोण से इस देश की स्थिति विश्व में तृतीय है। उत्पादन १६४८ में १२५,०००,००० ट्राय औंस था। क्रोमियम यूराल पर्वत पर निकाला जाता है। इसका उत्पादन दो लाख टन प्रतिवर्ष से अधिक ही है। आजकल रूस का विश्व में प्रथम तथा टर्की का द्वितीय स्थान है।

टंगस्टन बैकाल झील के पूर्व, कजाखस्तान तथा यूराल पर्वत पर, तथा रांगा भी इन्हीं क्षेत्रों में पाया जाता है।

अन्य खनिज पदार्थ:—

पोटाश:—रूस की स्थिति इस खनिज पदार्थ में बड़ी महत्वपूर्ण है। इसका उत्पादन विश्व में सबसे अधिक इसी देश में है। यह खनिज उत्तरी यूराल पर्वत के पश्चिमी ढालों पर सोलिकामस्क (Solikamsk) के स्थान पर प्राप्त किया जाता है। इसकी वास्तविक खोज १६२५ से आरम्भ हुई है। इसका उत्पादन १८ लाख टन से अधिक है। पोटेशियम नमक तथा मैगनेशियम नमक का रिजर्व भी बहुत अधिक है। जर्मनी का स्थान द्वितीय युद्ध के पूर्व बहुत उच्च था, परन्तु अब रूस ने उसे भी पीछे कर दिया है।

एपेटाइट:—इस खनिज में भी रूस उत्पादन की दृष्टि से प्रथम स्थान प्राप्त करता है। इस खनिज द्वारा फासफेट प्राप्त होता है। यह कोला प्रायद्वीप के विभिन्न

(Khinbin) नामक प्रायद्वीप पर निकाला जाता है। इसी के निकट एक नगर किरोवस्क (Kirovosk) स्थित है। इसकी उत्पत्ति प्रतिवर्ष २० लाख टन है। इसमें से निफेलाइन (Nephaline) तथा शुद्ध एपेटाइट दोनों ही वस्तुयें प्राप्त होती हैं। इसका भी रिजर्व रूस में बहुत काफी है। जिस स्थान पर यह निकाला जाता है, वहाँ भूमि में २० या २५ मील लम्बी गुफायें हैं, इनमें से प्रत्येक में बिजली लगी हुई है। बड़ी सुविधा के साथ यह धातु भूमि से निकाली जाती है। कृषि के हेतु इसकी महत्ता बहुत अधिक है।

एस्बेस्टोज:—यह खनिज यूराल पर्वत से प्राप्त किया जाता है। स्वेर्डलोवस्क में एस्बेस्ट (Asbest) के स्थान पर इसकी खानें मिलती हैं। अल्ताई–सयान पर्वत पर भी यह खनिज पाया जाता है। इसका रिजर्व यूराल पर्वत पर सबसे अधिक है। इसका रेशा कनाडा के मुकाबिले छोटा होता है। प्रतिवर्ष इस खनिज का उत्पादन एक लाख टन से कुछ ही अधिक है। विश्व में रूस की स्थिति इस खनिज के दृष्टि-कोण से द्वितीय है।

मैगनेसाइट:—यह खनिज यूराल पर्वत पर स्वेर्डलोवस्क (Sverldovsk) तथा चेलियाबिंस्क (Chelyabinsk) के स्थान पर निकाली जाती है। वार्षिक उत्पादन इस खनिज का ८ लाख टन है। इस देश के बाद उत्पत्ति में केवल आस्ट्रिया का ही स्थान आता है।

नमक तथा अन्य महत्वपूर्ण रसायन सोलिकामस्क एम्बा तथा डोनेज़ बेसिनों में मिलते हैं। यहां कैस्पियन सागर पर स्थित कारा बुगाज के स्थान पर भी प्राप्त किये जाते हैं।

बहुमूल्य पत्थर जैसे नग, मोती तथा रूबी शताब्दियों से यूराल पर्वत से निकाले जाते हैं। एमीराल्ड, बेरील, तोपाज तथा मेलेन्चाइट भी यहीं से प्राप्त होते हैं। यूक्रेन कैओलिंग के लिए जगत प्रसिद्ध है। यूक्रेन में फायर क्ले नहीं मिलती। पारा यूराल तथा डोनेज बेसिन में पर्याप्त मात्रा में प्राप्त किया जाता है। ताल्क एवं सोप स्टोन भी यूराल पर्वत से निकाले जाते हैं।

उद्योग धन्धे:—(Industries)

सोवियत रूस का ध्येय सदा से यह रहा है कि वह एक विश्व का शक्ति-शाली राष्ट्र हो जाय, इसी ध्येय को रखते हुए देश उन्नति कर रहा है। एक समय ऐसा था कि इसकी दशा बहुत गिरी हुई थी। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि इंगलैंड की दशा चौगुनी जर्मनी की पंचगुनी तथा अमरीका की दसगुनी सोवियत रूस से अच्छी थी। प्रथम महायुद्ध (सन् १९१४–१८) के समय से

इसने बराबर उन्नति करनी आरम्भ कर दी । आर्थिक दशा को सुधारने के हेतु इस देश ने पंचवर्षीय योजनायें बनाईं । इन पांच पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत इस देश ने आश्चर्यजनक उन्नति की । द्वितीय महायुद्ध के आरम्भ तक इतनी अधिक औद्योगिक उन्नति हो गई थी कि समस्त योरप में इसका प्रथम स्थान आता था। औद्योगिक उन्नति का आधार भारी भारी उद्योग-धन्धे हैं। यह अधिकतर यूक्रेन के क्षेत्र में सफलतापूर्वक स्थापित हो चुके थे, परन्तु द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् कुछ ऐसा सिलसिला चला कि बड़े बड़े औद्योगिक केन्द्र पूर्व की ओर बढ़ने लगे। आजकल दक्षिण में काकेशस तथा पूर्व में बैकाल झील तक ऐसे उद्योग-धन्धे स्थापित हो गये हैं। हम नहीं कह सकते कि भविष्य में क्या स्थिति होगी, परन्तु इसमें संदेह नहीं कि इस देश में औद्योगिक प्रगति बराबर हो रही है।

पश्चिमी साइबेरिया की खनिज सम्पत्ति व औद्योगिक केन्द्र

लोहे व स्पात का उद्योगः—औद्योगिक प्रगति का आधार लोहा व स्पात ही है। यह एक ऐसा स्तम्भ है, जिसके ऊपर रूस का आर्थिक ढांचा सधा हुआ है। पंच-वर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत इसने इस उद्योग में इतनी उन्नति की है, कि समस्त यूरेशिया में इसका प्रथम स्थान है। सन् १९५० में इसका कच्चे लोहे का उत्पादन १९५००-००० टन तथा स्पात का २६०००००० टन प्रतिवर्ष था। द्वितीय महायुद्ध पूर्व इस उद्योग-धन्धे के केन्द्र यूक्रेन के क्षेत्र में पूर्णतया स्थापित हो चुके थे। उस समय लोहे व स्पात के बड़े-बड़े कारखाने यहीं पर केन्द्रित हुए। उत्पादन भी यहाँ का सबसे था लोहे की अनेक वस्तुयें यहाँ तैयार की जाती थीं। द्वितीय महायुद्ध के समय जब जर्मनी ने यूक्रेन के क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया था, तो उसके पहले ही बहुत ही थोड़े समय में लोहे व स्पात के केन्द्र यूराल पर स्थापित कर दिये गये। इस समय से रूस का ध्येय इन उद्योग-धन्धों को पूर्व में स्थापित करने का हो गया। साइ-बेरिया के भाग सुरक्षित भी हैं, और आर्थिक दृष्टिकोण से धनी भी है। इन्ही भागों में बराबर नवीन कारखानें खोले जा रहे हैं।

काले सागर के उत्तर में यूक्रेन का क्षेत्र खनिज पदर्थों में बड़ा धनी हैं। यहाँ पर लोहा, कोयला चूने की चट्टानें, मैंगनीज तथा अन्य खनिज पदार्थ काफी मात्रा में मिलते हैं। समतल क्षेत्र होने के कारण इन खनिजों को इधर-उधर लाने ले जाने में कोई विशेष कठिनाई नहीं होती। फलस्वरूप यहाँ बड़े बड़े लोहे व स्पात के केन्द्र स्थापित हो गए हैं। कच्ची धातु क्रिवोई रोग, जो कि डोनेज बेसिन से दो सौ मील हट कर स्थित है, वहाँ से जहाजों द्वारा पूर्व की ओर कारखानों तक भेज दी जाती है। कारखाने कोयले की खानों के क्षेत्र में स्थित हैं। जो यहाँ पर बड़े बड़े केन्द्र स्थापित हो गये हैं, उनमें स्टेलिनों (Stalino), मकीवका (M ıkeevka) वोरोशिलोवस्क (Voroshilovsk), ओर्दजोनिकिजी (Ordzhonikidze), क्रेमेटोस्क (Kramatorsk), तथा क्रासनी सुलिन (Krasni Sulin), इत्यादि। कोयला भी २०० मील दूर पश्चिम में क्रीवाई रोग तक पहुँचाया जाता है क्योंकि वहाँ भी धातु निकालने के काम में कोयला आता है। मार्ग में [illegible] (Dniepropetrovsk) तथा जेपोरोझि (Zaporozhe), के के[illegible] दिया जाता है डोनबास कोयले की खान के पूर्व में स्टेलिनग्रेड के स्पात केंद्रों की स्थित है। इसे भी भी इस खान से कोयला दिया जाता है। आजोव सागर के तट पर स्थित ज्दैनोव (Zadanow) भी यहीं से कोयला प्राप्त करता है। लोहा यहाँ पूर्वी क्रीमिया की कर्च नामक खानों से प्राप्त किया जाता है। इस केन्द्र का कोयला २०० मील उत्तर तक भी भेजा जाता है। यहाँ के लोहे व स्पात केन्द्रों में बड़े बड़े गार्डर, रेल के इन्जन

पुल, क्रेन, ट्रैक्टर तथा कृषि के औजार इत्यादि तैयार किये जाते हैं।

यूराल पर्वत पर अनेक लोहे व स्पात के उद्योग धन्धे स्थापित हो गये हैं। यहाँ पर केवल दो ही ऐसे केन्द्र हैं, जो कि रूसके सबसे बड़े केन्द्रों में से गिने जाते हैं। पहला मेगनीटोगोरस्क (Magnitogorask) दूसरा निजनी तागिल (Nizhni Tagil), इन दोनों केन्द्रों के अतिरिक्त लगभग ५० और भी केन्द्र हैं, जिनमें से प्रत्येक किसी एक विशेष वस्तु के निर्माण से विशेषता प्राप्त कर चुके हैं। बड़े बड़े केन्द्रों को कोयला कारागन्डा तथा कुजनेज बेसिन से दिया जाता है। कुछ तो ऐसे भी है, जो कि स्थानीय मुलायम कोयले (Charcoal) पर निर्भर रहते हैं। लिगनाइट कोयला चेलियाबिंस्क (Chelyabinsk) के निकट निकाला जाता है। यह कोयला केवल काम चलाने योग्य ही है। मेगनीटोगोरस्क जिस समय स्थापित हुआ था, उस समय यहाँ चार बड़ी बड़ी लोहे गलाने वाली भट्टियाँ थीं। हाल ही में दो और बड़ी बड़ी भट्टियाँ स्थापित कर दी गई हैं। कच्चे लोहे को स्पात में परिवर्तित करने वाली लगभग २५ भट्टियाँ (Open Hearth) हैं, जो कि बहुत बड़ी बड़ी नहीं हैं। यह मेगनेट पर्वत (Magnet Mountain) का क्षेत्र पहले केवल एक बंजर क्षेत्र था, परन्तु अब इसमें घनी आबादी पाई जाती है यह विश्व का सबसे बड़ा केन्द्र बतलाया जाता है। हाँ, कभी कभी संयुक्त राज्य अमरीका का गेरी (Gary) केन्द्र इससे टक्कर ले लेता है। निजनी तागिल (Nizhni Tagil) की भट्टियाँ भी मेगनीटोगोरस्क की श्रेणी की हैं। इसके बिल्कुल निकट स्वेर्डलोवस्क (Sverdlovsk) स्थिति है। इस नगर में भी अनेक लोहे की वस्तुयें तैयार करने के कारखाने पाये जाते हैं। चेलियाबिंस्क तथा जलाटौस्ट अन्य केन्द्र हैं। मशीनें तथा खेती के औजार इन दोनों नगरों में तैयार किये जाते हैं। मेगनीटोगोरस्क में हर तरह की मशीनें तथा बड़ी से बड़ी वस्तुऐं ढाली जाती हैं। यूक्रेन के बाद रूस का दूसरा सबसे बड़ा औद्योगिक केन्द्र यूराल पर्वत ही है।

मास्को के दक्षिण में नई लोहे व स्पात की वस्तुयें तैयार करने वाले केन्द्र स्थापित हो गये हैं। तुला तथा लिपेतस्क उल्लेखनीय हैं, परन्तु पूर्व की ओर दो और भी केन्द्र हैं, पहला वीक्सा तथा दूसरा कुलेबाकी। इन दोनों में स्थानीय आवश्यकता की वस्तुयें तैयार की जाती हैं। तैयार किया हुआ लोहा अन्य क्षेत्रों से मंगाया जाता है, यहाँ पर केवल वस्तुओं का निर्माण ही होता है।

साइबेरिया में कुजनेत्स बेसिन एक बहुत ही प्रसिद्ध लोहा व स्पात का केन्द्र हो गया है। यहाँ पर कोयला, लोहा तथा चूना निकटवर्ती क्षेत्रों से बड़ी सुविधा के

साथ प्राप्त हो जाता है। यहाँ का केन्द्र मैगनीटोगोरस्क से १२०० मील दूर पड़ता है। जब कारागन्डा की खान का पता नहीं चला था, तो यहीं से मैगनीटोगोरस्क को कोयला भेजा जाता था। यह लम्बाई बहुत अधिक थी, इसी कारण यहाँ पर स्टेलिंस्क में दो बड़ी-बड़ी भट्टियाँ स्थापित कर दी गई हैं, अब इनको और भी शक्तिशाली बना दिया गया है। यह केन्द्र भी मैगनीटोगोरस्क की श्रेणी का है। यहां पर भी अनेक लोहे व स्पात की वस्तुयें तैयार की जाती हैं। यूराल के केन्द्र तथा ये मिलकर राष्ट्र का एक तिहाई स्पात तैयार करते हैं। इस समय साइबेरिया का यह भाग भी एक बहुत बड़ा औद्योगिक क्षेत्र हो गया है।

इन बड़े बड़े लोहे व स्पात के केन्द्रों के अतिरिक्त रूस में और भी कई स्थानों पर लोहे की वस्तुयें तैयार करने के कारखाने पाये जाते हैं। पेट्रोवस्क-जबाइकाल (Petrovsk-Zabaikal) बैकाल झील के पूर्व में स्थित हैं। आमूर की घाटी में कोमोसोमोलस्क (Komosomolsk) एक प्रसिद्ध केन्द्र है। इनके अलावा योरोपियन रूस में लेनिनग्रेड में भी कारखाने पाये जाते हैं। रूसी तुर्किस्तान में ताशकन्द इस उद्योग में १९४३ से बराबर उन्नति कर रहा है।

अन्य क्षेत्रों में जहाँ लोहा व कोयला निकट ही स्थित है, वहाँ अन्य केन्द्र स्थापित किये जा रहे हैं। जिन भागों में तांबा अल्युमिनियम, लेड व जिन्क मिलते हैं, उनमें इन खनिजों से संबधित उद्योग-धन्धे स्थापित हो गये हैं।

रेल के इन्जन, ट्रैक्टर तथा मोटरगाड़ियों के उद्योगः—वैसे तो ये वस्तुयें ऊपर बतलाये गये केन्द्रों पर बनाई जाती हैं, परन्तु इन्हीं के निकट कुछ केन्द्र हैं, जो इनमें से किसी एक वस्तु के निर्माण में विशेषता प्राप्त कर गये हैं।

रेल के इन्जन तथा उससे सम्बन्धित वस्तुयें यूक्रेन एवं यूराल के स्पात केन्द्रों पर तैयार की जाती हैं। वोरोशिलोवग्रेड (Voroshilovgrad), निजनी तागिल (Nizhni Tagil), तथा नीप्रोजेजिन्क (Dniepredzerzink), विशेष तौर पर प्रसिद्ध हैं। अन्य मशीनें मास्को, लेनिनग्रेड, स्टालिंस्क तथा तुला में तैयार होती हैं।

ट्रैक्टर तथा कृषि सम्बन्धी औजार बनाने का सबसे प्रसिद्ध केन्द्र यूराल पर्वत पर चेलियाबिंस्क है। इसके अतिरिक्त खारकोव और स्टेलिनग्रेड भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। रोस्तोव-डॉन, किरोवो तथा जापरोज हारवेस्टर (Harvester) तथा कम्बाइन्ड हारवेस्टर (Combined Harvester) बनाने में निपुणता प्राप्त कर चुके हैं। इन केन्द्रों से बहुत बड़ी मात्रा में कृषि सम्बन्धी औजार भी प्राप्त किये जाते हैं।

मोटर गाड़ियाँ बनाने के कारखाने मास्को, गोरकी तथा यारोस्लेव में मिलते हैं। ट्रकें अधिकतर लेनिनग्रेड, स्टेलिनग्रेड, खारकोव तथा चेलियाबिंस्क में तैयार की जाती हैं।

खान खोदने में जो मशीनें प्रयोग की जाती हैं, वे अधिकतर दो ही स्थान पर बनाई जाती हैं। पहला यूराल पर्वत पर स्वेर्डलोवस्क तथा दूसरा डोनबास में क्रेमेटोरस्क। हवाई जहाज बनाने का सबसे बड़ा केन्द्र यूराल पर्वत पर यूफा है। इस केन्द्र के अतिरिक्त अन्य भी कई केन्द्र हैं जो वायुयान निर्माण उद्योग में लगे हुए हैं। इनमें से कुछ तो ट्रांस काकेशिया के क्षेत्र में स्थित हैं।

पोत-निर्माण केन्द्र रूस में केवल थोड़े ही स्थानों पर स्थापित हो सके हैं। लेनिनग्रेड तथा निकोलाइवस्क (Nikolaevsk) बड़े-बड़े पोत बनाने के केन्द्र हैं। बाद वाला केन्द्र काले सागर पर ओडीसा (Odessa) के निकट स्थित है। वाल्गा नदी पर गोरकी तथा नीपर नदी पर कीव (Kiev) में भी छोटे-छोटे स्टीमर तैयार किये जाते हैं। इस उद्योग के विकास में अनेक रुकावटें हैं, जिनका कि हम पहले ही वर्णन कर चुके हैं। इनमें सबसे बड़ी कठिनाई सालभर बराबर खुले हुए बन्दरगाहों की है।

रसायन उद्योग:—पहले रूस का रसायन उद्योग विदेशों से आयात किए हुए पदार्थों पर निर्भर रहता था। फौसफेट (Phosphate) जो कि खाद बनाने के लिए अति आवश्यक होता है, उत्तरी अफ्रीका से मँगाया जाता था। यद्यपि रूस में सबसे अधिक फौसफेट युक्त चट्टानें मिलती हैं। प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत कोला प्रायद्वीप के खिबिन पर्वत से अपेटाइट (Apatite) नामक खनिज प्राप्त हुआ। विश्व का अपेटाइट सबसे अधिक यहीं मिलता है। इससे फासफोरस प्राप्त होता है। इस उद्योग का यहाँ एक केन्द्र स्थापित हो गया है, और वह है किरोवस्क (Kirovsk) यहाँ से बहुत बड़ी मात्रा में यह निर्यात भी किया जाता है। पोटाश जो कि खाद तथा रसायन दोनों उद्योगों में काम आता है, १९२६ से यहाँ यूराल पर्वत पर सोलीकामस्क (Solikamsk) के स्थान पर बहुत बड़ी मात्रा में प्राप्त किया जाने लगा है। पहले जर्मनी में सबसे अधिक मिलता था, फिर १९१८ से फ्रांस सबसे अधिक प्राप्त करने लगा था। कजाकस्थान तथा सारतोव के भाग में अन्य प्रकार के नमक पाये जाते हैं। गंधक और सल्फ्यूरिक एसिड, पटाखे, कारतूस, पेन्टर, रबड़ इत्यादि में प्रयोग होती हैं, ये मध्य एशिया के रूस में प्राप्त किये जाते हैं। यहाँ कराकुम रेगिस्तान, गौरदक तथा मध्य वाल्गा के क्षेत्र प्रसिद्ध हैं।

रसायन उद्योग में काम आने वाले सबसे महत्वपूर्ण नमक करा-बोगज-गोल के स्थान से प्राप्त होते हैं। यह कैस्पियन सागर के पूर्व में स्थित है। इस समुद्र का जल बहुत खारी है, जब कभी भी ज्वार भाटों के कारण तट पर जल एकत्रित हो जाता है तो वहाँ सूखने के पश्चात नमक की पपड़ी जम जाती है। यहीं से सोडा, सल्फेट, सल्फरिक एसिड तथा ब्रोमाइड इत्यादि खनिज प्राप्त हो जाते हैं।

एलेक्ट्रो-केमिकल (Electro-chemical) उद्योग यूक्रेन में नीपर बाँध के निकट स्थापित हो गया है। कोला प्रायद्वीप तथा काकेशस पर्वत पर जहाँ कहीं भी जल शक्ति उत्पन्न की जाती है, वहाँ यह उद्योग उन्नति कर गया है। त्यानशान तथा यूराल पर्वत पर हाल ही में विद्युत रसायन उद्योग-धन्धों के केन्द्र स्थापित हो गये हैं। साइबेरिया में भी कई कोलतार रसायन केन्द्र कुजनेस बेसिन में खुल गये हैं। यह रसायन उद्योग डोनेज बेसिन में भी उन्नति कर गया है।

सीमेंट-उद्योग रूस में कई स्थानों पर स्थापित हो गये हैं। यूराल पर्वत, यूक्रेन, ट्रांसकाकेशिया तथा कुजनेत बेसिन में सीमेंट बनाने के अनेक कारखाने हैं। इन भागों में इस उद्योग के लिए अनेक सुविधायें पाई जाती हैं। सन १९५३ में इसका उत्पादन १६०००००० मेट्रिक टन तथा १९५४ में १९०००००० मेट्रिक टन था।

अन्य उद्योगधन्धे:—

सूती वस्त्र उद्योग:—रूस में कई स्थानों पर कपास उत्पन्न किया जाता है। उत्पादन के दृष्टिकोण से इस देश का संयुक्त राज्य अमरीका तथा भारत के बाद नम्बर आता है। यह यहाँ उजबेक रिपब्लिक, कजखस्तान, तदजिकीस्तान, खिरगीजिया तथा तुर्कमेनिस्तान में उत्पन्न होता है परन्तु ट्रांसकाकेशिया में आजरबाइजान भी कपास उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत कपास दक्षिणी यूक्रेन, क्रीमिया, पश्चिमी क्रेसनोदर तथा ओर्दजोनिकदजी में भी उत्पन्न किया जाने लगा है।

सूती वस्त्र के उद्योग के केन्द्र अधिकतर उन्हीं स्थानों पर स्थापित हुए हैं, जहां स्थानीय मांग पर्याप्त है। मास्को, आइवनोवो तथा यारोस्लेव प्रमुख केन्द्र हैं। इन नगरों की स्थिति आन्तरिक क्षेत्रों में है। नम जलवायु की सुविधा उन्हें नहीं है, और न ही ये कपास उत्पन्न करने वाले भागों में स्थित हैं। द्वितीय महायुद्ध के उपरान्त नवीन कारखाने काकेशिया तथा साइबेरिया में खोले गये हैं। अन्य दूर-दूर स्थानों पर भी कारखाने खोले जाने की सम्भावनायें हैं।

सन १९४५ से सूती वस्त्र उद्योग में बड़ा विकास हुआ है। तीन क्षेत्र विशेष तौर पर उन्नति कर गये, प्रथम-यूराल, द्वितीय-मध्य एशिया तथा तृतीय-साइबेरिया। बड़े बड़े सूती वस्त्र तैयार करने के कारखाने १९५५-५६ से बराबर स्थापित किये जा रहे हैं। कामिशिन खेरसन, बरनोल तथा एन्जिलस इत्यादि उल्लेखनीय स्थान हैं, यहाँ इन कारखानों का निर्माण अब भी हो रहा है। सन १९५४ में इस देश का उत्पादन ५६१८००००० मीटर था।

लिलेन व ऊनी वस्त्र बनाने के केन्द्र अलग ही दूसरे नगरों में स्थापित हुए हैं। लिलेन का काम मास्को के पूर्वी भाग में होता है। यूक्रेन तथा यूराल के कुछ नगरों में ऊनी वस्त्र तैयार करने के कारखाने पाये जाते हैं। ऊनी वस्त्र का उत्पादन १९५४ में २३४,०००,००० मीटर तथा रेशमी वस्त्र का ५१६०००००० मीटर था।

शक्कर उद्योगः—शक्कर यहां चुकन्दर से प्राप्त की जाती है। यह उद्योग वहीं स्थापित हो सका है, जहां चुकन्दर उत्पन्न की जाती है। चुकन्दर उत्पन्न करने वाले भागों में यूक्रेन बहुत प्रसिद्ध है। शक्कर निकालने के उद्योग कीव तथा खारकोव में स्थापित हुए हैं।

लकड़ी काटने का उद्योगः—रूस में जहाँ कहीं भी वन मिलते हैं वहां लकड़ी काटने का व्यवसाय होता है। जहाँ कहीं भी नदी वनों को चीरती हुई निकलती है तथा जहां भी रेलवे लाइन है वहाँ अवश्य ही लकड़ी काटने का धन्धा उन्नति कर गया है। साइबेरिया तथा मध्य एशियाई रूस में कई स्थानों पर वनों से उत्तम लकड़ी जैसे प्लास्टिक, कागज, दियासलाई, फर्नीचर तथा कृत्रिम रेशम एवं रबड़ प्राप्त होती है। उद्योग धन्धे इसी पर आधारित हैं।

मछली उद्योगः—मछली रूस के बहुत से निवासी खाते हैं। यह समुद्र तथा आन्तरिक जलाशयों से प्राप्त की जाती है। स्टांजयन तथा कैवियर नाम की मछलियां अस्ट्राखान के निकट पकड़ी जाती हैं। यहां पर सबसे अधिक मछलियां पकड़ी जाती हैं। दूसरा मछली पकड़ने वाला प्रसिद्ध स्थान अजोव सागर तथा रोस्तोव है। यहां पर अनेक प्रकार की खाने योग्य मछलियां पकड़ी जाती हैं।

रबड़ उद्योगः—यहां पर उस प्रकार की रबड़ उत्पन्न नहीं हो सकती जिस प्रकार की मलाया तथा अमेजन बेसिन में उत्पन्न होती है। रबड़ यहां एक मरुस्थलीय वृक्ष जिसे कोकजाघिज़ (Kok Zaghiz) कहते हैं, से प्राप्त होती है, यह श्वेत रूस से लेकर पूर्व में त्यानशान तक उत्पन्न होती है। इससे जो रबड़ प्राप्त होती है, वह अधिक उत्तम नहीं होती। रूस ने द्वितीय महायुद्ध के समय से बनावटी रबड़ बनाना आरम्भ कर दी है। यह रबड़ आलू, चूने की चट्टान तथा पेट्रोलियम से प्राप्त की

जाती है। कज़न तथा यारोस्लेव के स्थानों पर आलू से एरीवान में चूने की चट्टानों से तथा बाकू में पेट्रोलियम से रबड़ तैयार करने के कारखानें पाये जाते हैं। जूते बनाने के कारखाने भी इस देश में पाये जाते हैं। चमड़े के जूतों की संख्या १९५४ में २७८०००००० जोड़े तथा रबड़ के जूतों की संख्या इसी सन में १२५००००००० जोड़े से अधिक थी। सन १९५६ में रूस सरकार ने भारतवर्ष के बने हुए जूते मांगे हैं। यह जल्दी ही भेजे जायेंगे।

फलों को बन्द करके बाहर भेजने का धन्धा उन्हीं स्थानों पर प्रचलित है, जहां फल अधिक उत्पन्न होते हैं, जैसे काकेशिया का क्षेत्र। यह उद्योग यहां प्राचीन काल से होता चला आ रहा है। काकेशस में शराब तैयार करने के कारखाने पाये जाते हैं। यूक्रेन तथा पश्चिमी साइबेरिया के नगरों में आटा पीसने के कारखाने स्थित हैं। मैदा तथा सूजी भी इन में तैयार की जाती है। मक्खन बहुत पुराने समय से यहां से पश्चिमी योरापीयन देशों को जाता था। मांस की मंडियाँ मध्य साइबेरिया में कुर्गान, नोवोसिबिरिस्क, बर्नोल तथा सेमीपालाटिंस्क में मिलती हैं। वाल्गा नदी पर एक प्रसिद्ध मांस की मंडी सारातोव है। यह पश्चिमी रूस के सभी भागों को मांस प्रदान करती है।

यातायात के साधन (Means of Transport and Communication)

वर्तमान रूस की सबसे बड़ी समस्या दूरी की है। इसको हल करने के लिए यहां अनेक यातायात की योजनायें बनाई गई हैं। परन्तु फिर भी बहुत से ऐसे भाग हैं, जिनमें कि यह सुविधा कदापि नहीं मिलती। यदि यहां के यातायात के साधनों के मानचित्र पर दृष्टि डाली जाये, तो हम देखेंगे कि उत्तर-पूर्व का भाग एक ऐसा भाग है, जहां न तो रेलें हैं, और न सड़कें हैं। केवल वायुयान ही यहां आ जा सकते हैं। इसके विपरीत घने व्यापारिक मार्गों वाला क्षेत्र योरोपियन रूस, ट्रांस काकेशिया तथा यूराल तक ही सीमित है।

साइबेरिया में केवल ट्रांस साइबेरियन रेलवे ही एक ऐसी है जो निकटवर्ती क्षेत्रों को भी लाभ पहुँचाती है। इसकी लम्बाई मास्को से ब्लाडीवास्टक तक ५४०० मील है। इस लाइन पर रेलें पोलैंड की सीमा से ब्लाडीवोस्टक तक चलती हैं। सब से तेज़ चलने वाली गाड़ी को ९॥ दिन ब्लाडीवोस्टक तक पहुंचने में लगते हैं। वास्तव में मध्य व पूर्वी साइबेरिया में जनसंख्या बढ़ने का श्रेय इसी रेल मार्ग को है। ज़ार सरकार ने इसी रेलवे लाइन को पूर्वी रूस में शासन की सुविधा के लिए बनाया था, परन्तु इस समय इसका व्यापारिक महत्व बहुत अधिक है। वास्तव

में इसी के कारण साइबेरिया में आर्थिक उन्नति हुई है। यह लाइन इकहरी है। मास्को से यह लाइन ओमस्क पहुँचती है। मार्ग में यूराल पर्वत तथा कृषि-प्रधान स्टेपी प्रदेश से होकर गुजरती है। ओमस्क से यह सीधी पूर्व की ओर जाती है। ओबे तथा येनेसी नदियों को पार करके इरकुटस्क तथा बैकाल झील पहुंचती है। मास्को यहाँ से ३४२० मील दूर है, यहां से आमूर की घाटी को पार करके ब्लाडी-वोस्टक तक पहुंचती है। मनचूरिया में हारबिन से इसकी शाखा मुकडन होती हुई पोर्टआर्थर तक जाती है। ओमस्क तथा इरकुटस्क के मध्य स्थित नोवोसिबिरिस्क से एक शाखा दक्षिण की ओर ताशकन्द तक जाती है। आगे यह बुखारा होती हुई कैस्पियन सागर पर स्थित करासनोवोड्स्क तक चली गई है। ताशकन्द से एक लाइन यूराल नदी को पार करके फिर ट्रांस-साइबेरियन रेलवे में मिल जाती है।

योरोपियन रूस में एक रेलवे मार्ग काले सागर पर स्थित ओडीसा से लेकर उत्तर में मुरमाँस्क (Murmansk) तक जाती है। इस लाइन पर मुरमाँस्क तक पहुंचने में ३½ दिन लगते हैं। यदि साइबेरिया में कोई व्यक्ति मंगोलिया से येनेसी नदी के मार्ग द्वारा नाव में बैठ कर उत्तर की ओर यात्रा करे तो उसे आर्कटिक तट तक पहुंचने में दो हफ्ते का समय लगेगा।

सबसे घना रेलों का जाल काले सागर के उत्तर में मिलता है। यूक्रेन के भाग में रेलों का जाल बहुत घना है। डोनेज तथा खारकोव के मध्य अनेक रेलवे मार्ग मिलते हैं। दूसरा क्षेत्र घनी रेलवे लाइन वाला यूराल है। यहाँ भी बड़े-बड़े औद्योगिक केन्द्र रेलों द्वारा एक दूसरे से मिले हुये हैं। मास्को एक सबसे बड़ा रेलवे लाइनों का केन्द्र है। मुख्य मार्गों में एक लेनिनग्रेड को, दूसरी पोलैंड की राजधानी वारसा को, तीसरी—ओडीसा को, चौथी बाकू को तथा पाँचवीं कारागान्डा को जाती है। तटीय भागों में बहुत कम रेल-मार्ग पाये जाते हैं। काले सागर के पूर्व में केवल पाँच ऐसी लाइनें हैं, जो टर्की, ईरान, मंगोलिया तथा मंचूरिया को जाती हैं।

यहां पर हजारों मील लम्बी विद्युत शक्ति से चलने वाली रेलवे लाइनें हैं। ये अधिकतर कोला प्रायद्वीप, मास्को, लेनिनग्रेड, यूक्रेन, ट्रांसकाकेशिया तथा यूराल के क्षेत्रों में पाई जाती हैं। मास्को में भूमि के नीचे (Underground) दूर-दूर तक ऐसी विद्युत से चलने वाली रेलें बनाई गई हैं।

सन् १९४५ में इस देश में कुल रेलों की लम्बाई ६६००० मील थी। परन्तु, इस समय ७०००० मील से अधिक लम्बी रेलवे लाइनें पाई जाती हैं। कई प्रस्तावित

योजनायें भी हैं, जिन पर बराबर कार्य हो रहा है। यहां की रेलवे का गेज (Gauge) पांच फुट का है। जब कि योरोप की अन्य रेलवे का ४ फुट ८½ इंच का है।

रूस में कई बड़ी-बड़ी नाव चलाने योग्य नदियां हैं। जिनमें वाल्गा, डान नीपर तथा नीस्टर प्रसिद्ध हैं। इनमें से कुछ तो उत्तर में आर्कटिक सागर में तथा कुछ कैस्पियन, काले या बाल्टिक सागर में गिरती हैं। इन नदियों में एक सबसे बड़ा दोष यह है, कि जाड़ों में यह बर्फ से जम जाती हैं। जिसके कारण किसी प्रकार का यातायात सम्भव नहीं होता।

वाल्गा योरोप की दूसरे नम्बर की नदी है। इसके बाद रूस में नीवा तथा स्वीर का नम्बर आता है। ये दोनों लेडोगा तथा अनेगा झीलों को मिलाती हैं। ओबे, येनेसी तथा लीना अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं। वाल्गा नदी की गहराई आर्थिक दृष्टिकोण से बड़ी लाभदायक है। इस नदी द्वारा द्वारा डोनावास का कोयला तथा बाकू का तेल उत्तर की ओर तथा उत्तर की सामग्री दक्षिण की ओर पहुंचाई जाती हैं। दुर्भाग्य से यह नदी कैस्पियन सागर में गिरती है, और यह एक आन्तरिक सागर है। डान से स्टेलिनग्रेड तक एक शाखा बना देने की योजना कई वर्षों से बनी रखी है। इस नहर द्वारा काला सागर कैस्पियन सागर से जल मार्ग द्वारा मिल जायेगा और बड़ी बड़ी नावें सामान बड़ी आसानी से इधर-उधर ले जा सकेंगी। मास्को वाल्गा की ही एक सहायक नदी पर स्थित है। वैसे इस नदी को लेडोगा झील से मिला दिया गया है। जबसे मास्को वाल्गा नहर बन गई है, उस समय से (१९३७) कैस्पियन से लेकर मास्को तक सामान से लदे हुए स्टीमर बड़ी आसानी से आ जाते हैं।

इस देश में नाव्य नदियों की लम्बाई ११३००० Km. है। इसके अतिरिक्त छोटी छोटी नावें चलाने योग्य ७३००० मील और भी नदियां हैं। बतलाया जा चुका है कि हजारों मील लम्बी नाव्य नहरें भी यहां पाई जाती हैं। इनमें से कुछ तो निम्नलिखित हैं:—

(१) बाल्टिक-व्हाइट सी केनाल २३५ Km.
(२) मास्को-वाल्गा केनाल १३० ,,
(३) वाल्गा डोन (स्टालिन से कैलाच) ५४० ,,
(४) आमू-क्रॉस्नोवोडस्क (प्रस्तावित) ११५० ,,

यूरोपीयन रूस में बाल्टिक-व्हाइट सागर नहर फिनलैंड की खाड़ी को श्वेत सागर से मिलाती है। यह मार्ग ओनेगा झील से होकर जाता है। इसमें बड़े-बड़े

स्टीमर बड़ी आसानी से चले जाते हैं। शीत ऋतु में जब बर्फ जम जाती है तब कुछ कठिनाई अवश्य होती है।

इस देश में जलमार्गों की कुल लम्बाई १९४० में ५६१७० मील थी। इस समय लगभग ६०००० मील है, इसका विकास बहुत धीरे-धीरे हो रहा है। जितनी जल्दी अन्य व्यापारिक मार्गों में विकास हुआ है, उतनी जल्दी इसमें नहीं हुआ। बड़े-बड़े जहाज काले सागर, कैस्पियन सागर तथा बाल्टिक सागर में चलते हैं। पूर्व में ब्लाडीवोस्टक के निकटवर्तीय सागरों में भी बड़े-बड़े पोत चलते हैं।

सड़कों का विकास योरोपियन रूस में अधिक हुआ है। साइबेरिया के भाग में यह अधिक उन्नति नहीं कर सकीं, क्योंकि उत्तर की ओर साल के आधे समय तक बर्फ गिरती रहती है। सड़कों की कुल लम्बाई १९३८ में ८४०००० मील थी। इसमें से पक्की कंकड़ों की बनी हुई सड़कों की लम्बाई साठ हजार तथा तारकोल की बनी हुई केवल दो हजार चार सौ मील थी, वास्तव में सड़कों का विकास धरातल पर निर्भर रहता है। दक्षिणी साइबेरिया, रूसी तुर्किस्तान तथा ट्रांस काकेशिया के भागों में पर्वत, मरुस्थल तथा दलदली भूमि होने के कारण इनका निर्माण नहीं हो सका। रूस सरकार की इस सम्बन्ध में अनेक प्रस्तावित योजनायें हैं। इनमें से कुछ पर कार्य हो रहा है, तथा कुछ को छुआ भी नहीं गया है। युद्ध पूर्व मोटर गाड़ियों की संख्या १,०००,००० थी। अच्छी मोटर गाड़ियां चलाने योग्य सड़कें १९५२ में १९४० की अपेक्षा तिगुनी होगई थी।

वायु यातायात का रूस में बड़ा महत्व है। वायुयानों का प्रयोग कृषि, खनीय क्षेत्रों में मछली पकड़ने, शिकार खेलने, घूमने तथा अन्वेषण इत्यादि में होता है। परन्तु यह आजकल सबसे बड़ा यातायात का साधन है। आर्थिक विकास में जितना महत्व इसका रहा है उतना कदाचित् किसी भी अन्य साधन का नहीं। इसकी वास्तविक उन्नति १९२२-२३ से हुई है। सबसे प्रथम वायु-मार्ग मास्को-गारकी तक बनाया गया था। इसके बाद मध्य एशिया, यूक्रेन, साइबेरिया तथा ट्रांस काकेशिया में भी वायु-मार्ग स्थापित कर दिये गये। सन् १९२३ से १९२८ तक प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत इसमें इतना विकास हुआ कि [illegible] के बजाय यह बढ़ कर ५,७८२ मील लम्बा हो गया। द्वितीय पंचवर्षीय योजना ([illegible]) के अन्तर्गत इसमें और भी विकास हुआ। फलस्वरूप देश में वायु मार्गों का एक जाल सा बन गया। सन् १९४८ में यहां वायु मार्गों की कुल लम्बाई [illegible] Km. थी। फरवरी १९४१ में ८५०० Km लम्बा वायुमार्ग मास्को तथा अनादिर (Anadyr. E Siberia) खोला गया था। निम्नलिखित अनेक इसके विकास के कारण हैं —

सन्	वायु मार्गों की कुल लम्बाई (मील में)
१९२३	२६०
१९२८	५७८२
१९३२	१९७७८
१९३३	३३,०४६
१९३४	४२,२८४
१९३५	४७,९००
१९३६	५४,३००
१९३७	६५,८८८
१९३८	७०,९१८

वायुमार्गों में उन्नति का ध्येय दूरी की समस्या को हल करना ही नहीं वरन् देश की आर्थिक दशा को सुधारना भी था। यहाँ पर तीन ट्रंक लाइनें हैं—प्रथम मास्को ब्लाडीवोस्टक, द्वितीय मास्को-तिबलिसी तृतीय मास्को-ताशकन्द ।

प्रथम लाइन योरोप से भी मिली हुई है। यह लाइन कजन, स्वेर्डलोवस्क, नोवासिबिरिस्क, इरकुटस्क तथा खाबारोवस्क के अतिरिक्त अन्य कई छोटे नगरों को मिलाती है। इसी की एक शाखा इरकुटस्क-याकुटस्क है। दूसरी खाबारोवस्क—ऐलेक्जेन्ड्रोवस्क तथा तीसरी खाबारोवस्क-ओखा है ।

मास्को वायुमार्गों का एक प्रसिद्ध केन्द्र है। यहाँ पर मास्को लेनिनग्रेड, मास्को-खारकोव, मास्को-कीव-ओडीसी तथा मास्को—मिंस्क लाइनें आकर मिलती हैं। इनके अलावा यहाँ से कई स्थानों को भी वायुमार्ग जाते हैं। इन लाइनों से देश को बड़ा लाभ पहुँचा है।

सन् १९३७ में मास्को-स्टोकहोम लाइन स्थापित हुई। अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से यह बड़ी महत्वपूर्ण लाइन है। इस लाइन पर U. S. S. R. तथा Swedish A. B. A. कम्पनियों के वायुयान उड़ते हैं। यह लाइन मास्को हालैंड, डेनमार्क, बेल्जियम ग्रेट ब्रिटेन तथा फ्रांस से मिलाती है। इस प्रकार से मास्को ब्लाडीवोस्टक लाइन द्वारा अटलांटिक सागरीय तट प्रशांत महासागरीय तट से मिल गया है।

Data from 'Soviet Civil Aviation' by V. Molokov, Published by Foreign Languages Publishing House, Moscow 1939.

मास्को-तिबलिसी ट्रंक लाइन मास्को को यूक्रेन, उत्तरी काकेशिया तथा ट्रांस-काकेशिया से मिलाती है। इसकी अनेक शाखायें हैं, जैसे तिबिलिसी-ऐरीवान तिबलिसी-सुखुमी, तिबलिसी-बाकू तथा अन्य वह जो कि ज्योर्जिया आर्मीनिया एवं आजरबाइजन को मिलाती है।

यूक्रेन के भाग में भी अनेक हवाई मार्ग हैं। जैसे-खारकोव-नीप्रोपेट्रोवस्क, ओडीसा, ओडीसा--खेरसन; खारकोव, गैरिओपोल--वर्दयाँस्क, खारकोव--कीव-कीव--रास्तोव।

मास्को ताशकन्द ट्रंक लाइन मध्य सोवियत यूनियन को मध्य एशिया की रिपब्लिकों से मिलती है। उत्तरी कजखस्तान को भी लाभ पहुँचाती है। ताशकन्द-काबुल लाइन रूस को अफगानिस्तान से मिलाती है।

मध्य एशिया की अनेक लाइनें रेगिस्तान व पर्वतों को पार करती हैं। स्टेलिनाबाद और खोरोव के मध्य की दूरी पैदल तीस दिन की है। परन्तु वायुयान द्वारा केवल दो घन्टे की।

हाल ही में एक वायुमार्ग मास्को-आल्माआता खुल गया है। इस मार्ग द्वारा मास्को कजख रिपब्लिक की राजधानी से मिल गया है। सोवियत रूस के उत्तर में भी कई वायुमार्ग स्थापित हो गए हैं। धीरे-धीरे वायुमार्गों में उन्नति हो रही है।

यात्री तथा फ्रेट (Freight) ले जाया गया

वर्ष	यात्री	मेल	(फ्रेट एवं मेल बैगेज Baggage) (टनमें)
१९२३	२००	१०	१०
१९२८	७०००	१००	१००
१९३२	२७,२००	४००	४००
१९३३	४२,८००	२०००	१४००
१९३४	६२ ०००	३८००	६७००
१९३५	१०६,७००	६,५००	१०,२००
१९३६	१७८,३००	७,९००	३५,०००
१९३७	२११,८००	९,१००	३६,९००
१९३८	२८७,२००	१०,८००	४३,६००

रूसी लोगों के जीवन में वायुयान ने बड़ा गहरा प्रभाव डाला है। यात्रियों को इधर उधर ले जाने के अतिरिक्त, वायुयान कृषि के औजार, मशीनें बहुमूल्य तत्व धातुयें, नाजुक मशीनें तथा औजार नष्ट होने वाले पदार्थ तथा दवाइयाँ, जमा हुआ भोजन, फल व मांस इत्यादि भी इधर उधर लाते ले जाते रहते हैं।

यहाँ के वैज्ञानिकों ने कृषि में आने वाले, अन्वेषण करने वाले, मछली व शिकार पकड़ने वाले, यात्रियों को ले जाने वाले, सामान लाने व ले जाने वाले तथा युद्ध के काम आने वाले अलग अलग किस्म के जहाज बनाये हैं। रूस अब भी वायु यातायात में बराबर उन्नति कर रहा है।

विदेशी व्यापार (Foreign Trade)

सोवियत रूस एक ऐसा देश है जिसने प्रथम एवं द्वितीय महायुद्ध के मध्य किसी भी प्रकार का विदेशी व्यापार नहीं किया। इस देश में किसी भी बाहरी देश की बनी हुई वस्तु नहीं आई। यहाँ तक कि यहाँ के बाजारों में एक भी ऐसी वस्तु नहीं पाई जाती थी, जो कि विदेशी बनी हुई हो। न केवल इतना ही, बल्कि एक मैगजीन तक दूसरे देश की छपी नहीं मिलती थी।

विदेशी व्यापार सरकार के अधिकार में रहा है। बहुत ही कम ऐसी वस्तुयें थीं, जो कि सरकार बाहर से मंगाती थी, या विदेशों को भेजती थी। इसके फलस्वरूप यहाँ एक ऐसी आर्थिक-राष्ट्रीय भावना लोगों के हृदय में उत्पन्न हो गई, कि लोग विदेशी वस्तुओं को घृणा की दृष्टि से देखने लगे।

युद्ध के समय जो कुछ भी वस्तुयें सरकार आयात करती थी, उनमें बहुत ही पेचीदी मशीनें, औजार, फैक्ट्री में काम आने वाली मशीनें, धातुयें जैसे ताँबा, अल्युमिनियम, तेल निकालने की मशीनें, तथा पाइपलाइन्स, कच्ची कपास एवं रबड़ इत्यादि विशेष तौर पर मंगाई जाती थीं। जो वस्तुयें इस देश से निर्यात की जाती थीं उनमें मैंगनीज, सोना, लकड़ी, समूर, एन्थ्रेसाइट कोयला, एसबेस्टोज, खाद, गेहूं तथा तेल मुख्य थीं।

राजनैतिक पक्ष प्राप्त करने के ध्येय से मंगोलिया, अफगानिस्तान, ईरान, बुल्गेरिया, रूमानिया, पोलैंड, तथा चैकोस्लोवाकिया जैसे देशों में निर्यात व्यापार किया जाता था। इन देशों को मोटर गाड़ियां, ट्रक, रूई व ऊनी वस्त्र, मशीनें तथा कृषि करने के औजार निर्यात किये जाते हैं।

संयुक्त राज्य अमरीका के साथ इसका व्यापार कभी भी सामान नहीं रहा है। अधिकतर आयात की हुई वस्तुओं की मात्रा ही अधिक रही है।

सन् १९५३ में इस देश के व्यापारिक सम्बन्ध अर्जेंटाइना, डेनमार्क, फिनलैंड, फ्रांस, ग्रीस, आइसलैंड, भारत इटली, नार्वे, फारस, तथा स्वीडन से स्थापित होगये थे।

सोवियत रूस तथा यू० के० से परस्पर कुल व्यापार (स्टर्लिंग में ५ वर्ष के हेतु)।

	१९५३	१९५४
यू० के० में आयात	३९,८९७,०८७	४१,७६६,५०९
यू० के० से निर्यात	३,३०७,१३९	९,५३८,३५६
यू० के० से पुनःनिर्यात	८,६५८,००८	४,५६८,८३३

राजनैति रूप [Political Aspect]

राजनैतिक समानता (Political Equality)

लेनिन ने प्राचीन रूस की व्याख्या इस प्रकार दी थी "अनेक राष्ट्रों का कारागार" इस कारागार की सभी कठिनाइयां लोगों को सहन करनी पड़ती थीं चाहे वे रूसी हों चाहे किसी अन्य जाति के। लोगों का जीवन उस समय इतना कठिन था, कि किसी के चेहरे पर भी मुस्कराहट नहीं दीखती थी। मानव जीवन की इस झांकी का वर्णन कई लेखकों की पुस्तकों में मिलता है। गोर्की, पुश्किन तथा नेक्रासोव जैसे विद्वानों ने विशेषतौर पर इसका वर्णन किया है। लोग उस समय अशिक्षित थे, वे न पढ़ सकते थे और न लिख ही सकते थे। इन कठिनाइयों को बेचारे अभ्यास करके ही पहचान पाते थे।

सन् १९१७ में जो क्रांति हुई उसके अन्तर्गत यह राष्ट्रों का कारागार परिवर्तित होकर राष्ट्रों का सुन्दर परिवार बन गया। क्रान्ति के थोड़े ही दिन बाद रूसी लोगों को अधिकार दे दिये गए। लोग राजनैतिक दृष्टिकोण से समान हो गये प्रत्येक छोटे छोटे राष्ट्रों को स्वतन्त्रता प्रदान कर दी गई वे स्वतन्त्र होगए और अपनी इच्छानुसार भाषा तथा संस्कृति स्थापित कर दी। जब इस प्रकार सभी राष्ट्रों में समानता आ गई और "यूनियन आफ सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक" बना दी गई, तब प्रत्येक को पूर्ण अधिकार प्राप्त होगया।

वास्तव में प्राचीन जारिस्ट रूस में जितनी भी कठिनाइयां थीं, सब जान बूझ कर उत्पन्न की हुई थीं। देश की आर्थिक एवं सांस्कृतिक उन्नति इन कठिनाइयों के बगैर कदापि नहीं हो सकती थी। लोगों को श्रमिकों की भांति दिन-रात कार्य

करना पड़ता था। देश की प्राकृतिक सम्पत्ति बगैर इतने परिश्रम के किस प्रकार प्राप्त हो सकती थी। वर्तमान रूस की आर्थिक उन्नति एवं दशा इन्हीं लोगों के फलस्वरूप है।

रिपब्लिकें (Republics)

समस्त देश में १६ रिपब्लिकें हैं। इन सबों की अलग अलग सीमायें हैं। ये स्वतन्त्र हैं, परन्तु फिरभी 'सोवियत स्टेट' के अन्तर्गत हैं। कुछ राष्ट्र जो कि सोवियत स्टेट से काफी दूर पर स्थित हैं। पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त किये हुए हैं। प्रत्येक छोटे२ राष्ट्र अपनी जनसंख्या, क्षेत्रफल, स्थित, आर्थिक एवं सांस्कृतिक दशा के अनुसार या तो पूर्ण स्वतन्त्र हैं और या 'स्टेट' के अन्तर्गत हैं। आगे दिये गये टेबिल में ये रिपब्लिक पूर्णतया दिखलाई गई हैं।

प्रत्येक रिपब्लिक का शासन प्रबन्ध तथा सरकारी कार्य राष्ट्र भाषा में किया जाता है। और सरकारी दफ्तरों में कार्य करने वाले व्यक्ति भी इसी राष्ट्र के होते हैं।

सोवियत यूनियन:—(Soviet Union)

सोवियत यूनियन के महत्वपूर्ण कार्य कई वर्गों में विभाजित हैं। जैसे—सुरक्षा विदेशी नीति, विदेशी व्यापार, भारी उद्योग, यातायात तथा आर्थिक विकास योजनायें इत्यादि। स्वास्थ्य शिक्षा तथा कार्य करने का समय इत्यादि मामले भी यूनियन के अन्तर्गत होते हैं। इस सम्बन्ध में यदि कोई बात निश्चय करनी होती है तो वह सुप्रीम सोवियत के अलावा आल यूनियन 'कमीसेरियेटों' द्वारा निश्चित की जाती है। आन्तरिक मामलों जैसे रुपये-पैसे सम्बन्धी, आर्थिक योजनायें बनाना, खाद्य, उद्योग-धन्धे, कृषि तथा नियम आदि में हस्तक्षेप करने का अधिकार यूनियन को होता है। हाल ही में यूनियन रिपब्लिकों को और भी अधिकार दे दिये गये हैं।

यूनियन रिपब्लिकें (सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिकें एस० एस० आर)	ओटोनोमस रिपब्लिकें (ए०एस०एस० आर यूनियन रिपब्लिकों के अन्तर्गत)	ओटोनोमस प्रांत (यूनियन रिपब्लिक के)	राष्ट्रीय प्रदेश
आर. एस. एफ. एस. आर [illegible] सोशलिस्ट रिपब्लिक)	तातार बशकिर मारी	ओइरत [illegible] [illegible]	नेनीर इवनकी यमगाली-नेनेट

१	२	३	४
	मोर्दोवियन	करान्चेइव	ओइरोयाक-वोगुल
	उदमुर्त	चेरकेश	चुखोत
	कोमी	ज्यूइश	कोरिआक
	याकूत		अगिन्सकी योरिआत
	ब्यूरियत-मंगोल		
	क्रीमियन		मंगोल
	दागिस्तान		कोमी पेरिम
	कबारदिनो-बाल्कर		उस्त-ओर्दिस्क
	उत्तरी ओसेशियन		ब्यूरियस मंगोल
	चेन्चन इगंश		
	चुवाश		
करीलो-फिनिश(एस.एस.आर)	—	—	—
एस्तोनियन (एस.एस.आर)	—	—	—
लेटावियन (एस.एस.आर)	—	—	—
लिथुनियन (एस.एस.आर)	—	—	—
बाइलोरशियन(एस.एस.आर)	—	—	—
माल्देवियन (एस.एस.आर)	—	—	—
यूक्रेनियन (एस.एस.आर)	—	—	—
ज्योर्जियन (एस.एस.आर)	अबखाजियन	दक्षिणी ओसेशियन	—
	अदजारियन		—
आजरबाईजान(एस.एस.आर)	नखीचवान	नगोरनों-काराबख	—
आरमीनियम (एस.एस.आर)	—	—	—
कज़ाख (एस.एस.आर)	—	—	—
उजबेक (एस.एस.आर)	कारा-कल्पक	—	—
तदजिक (एस.एस.आर)	—	गोरनी बादख्शान	—
खिरगीज (एस.एस.आर)	—	—	—
तुर्कमन (एस.एस.आर)	—	—	—

James S. Gregory—Land of the Soviets p. 50

साँस्कृतिक रूप [Cultural Aspect]

जातियाँ एवं विशेषतायें (Races and Characterstics):—

साइबेरिया के रूसी लोग विभिन्न जातियों के है। इनकी उत्पत्ति मंगोलों-तातर जाति की अनेक शाखाओं से हुई है। नीचे दिये गये टेबुल में इनकी जातियाँ दिखलाई गई हैं। इनमें बशकिर तथा खिरगीज जातियाँ अभी छोड़ दी गई हैं।

मंगोलियन वर्ण (स्टौक)

जातियाँ		धर्म
कलमुक	जगार, तरगुत, खोशोद, तरबेत, खोरेजेस, तेलेजी	बौद्ध एवं शमन
ब्यूरियत (पूर्वी शाखा)	कुदारा, सिलेंगा, खोरिस्क, बरगुजिन	शमन, बौद्ध एवं इसाई
ब्यूरियत (पश्चिमी शाखा)	तुन्का, ओल्खोन, कुदा, इदा, बालागस्क, अलारस्क	

मंचू वर्ण (स्टौक)

तगसेज़	लमुत, ओरोन्चेन, ओरोल्गोन, चेपोगिर, गोल्ड, गिलेआर, मंगुन, मानागिर, मतन्गोन, निजीदल बेगदाज, तार्जी, ओलेंस	शमन एवं अर्ध इसाई

फिनिक वर्ण (स्टौक)

सेमोयेड	युरक, सामूर, ऊवेतर, ओस्त्यल, शोयेश, मोटार, कारागसेज, कामस्क, तवगिस	शमन अर्ध ईसाई

यूगीअन	ओस्तियक वोगुल	शामन अर्ध इसाई
मिश्रित फिनो-तातर	दरखत सोयोन	बौद्ध
	आसान आरिन्जी कोटी	शामन

तुर्की वर्ण (स्टौक)

याकूत	इसाई एवं शामन
रेड तातर ब्लेक तातर	इसाई
तैल्यूत	सुन्नी
कुमंडीज	इसाई

मिश्रित सब-आर्कटिक जातियाँ

कोरिअक	पगन
चुकाचेज	पगन एवं अर्ध इसाई
यूकाधिर	शामन
कमन्चाडेल्स	अर्ध इसाई
अन्काली गिलिआक्स आइनस एस्कीमोज	पगन

स्लेव वर्ण (स्टौक)

ग्रेट रूसी तुच्छ रूसी पोलस	ओर्थोडौक्स रोम केथोलिक्स

सुन्दरी लोग

चीनी मंचू कोरिअक जापानी	बौद्ध

ब्यूरियत:—साइबेरिया में वास्तविक मंगोलियन जाति के लोग ब्यूरियत ही हैं, यह बैकाल झील के दोनों ओर मिलते हैं। इनका धर्म शमन है। बैकाल झील के पूर्व में जो लोग रहते हैं उन्होंने बाद में बौद्ध धर्म अपना लिया, बहुत से ईसाई हो गये। इन लोगों की बहुत ही आदतें मंगोलियन जाति के लोगों से मिलती जुलती हैं। ये शराब पीते हैं तथा तम्बाकू का भी सेवन करते हैं। आठ या नौ वर्ष के बालक पाइप पीते हुये दृष्टिगोचर होते हैं। यह शान्ति-प्रिय लोग हैं। पहले ये बंजारे थे, परन्तु अब कृषक हो गए हैं। ये बड़े चतुर होते हैं, और अपना कार्य मन लगा कर करते हैं।

तंगसेज:— ये लोग पूर्वी साइबेरिया में येनेसी बेसिन से लेकर प्रशांत महासागरीय तट तक पाये जाते हैं। उत्तर में यह बर्फीले भागों तक मिलते हैं। यह साइबेरिया की अन्य जातियों से भिन्न हैं। ये लोग बड़े सज्जन होते हैं। कठिनाइयों होते हुए भी इनके चेहरे पर मुस्कराहट रहती है। ये विश्वास-पात्र तथा जरा भी लालची नहीं होते, ये लोग बड़े निडर शिकारी होते हैं। इनका पहनावा जापानियों से कुछ कुछ मिलता जुलता है।

याकूत:—ये लोग मध्य तथा निम्न लेना घाटी में विशेषतौर पर मिलते हैं। परन्तु कोलिमा तथा इन्दिगिरका के बायें तट पर भी इनकी बस्तियाँ मिलती हैं। इनका अति प्राचीन सम्बन्ध तुर्की जाति से भी रहा है। पूर्व की ओर यह तुंगस जाति के लोगों से मिल गये हैं। यह हँसी-मजाक करने के बड़े शौकीन होते हैं, परन्तु साथ ही बड़े परिश्रमी होते हैं। कृषि करने तथा कलाकौशल की वस्तुयें तैयार करने में बड़े निपुण होते हैं। उत्तरी एशिया के सबसे चतुर व्यापारी ये ही लोग हैं। इसी वजह से ये 'साइबेरिया के ज्यूज' कहलाते हैं। ये लोग ईसाई धर्म को मानते हैं, परन्तु कुछ लोग अन्य धर्मों को मानने लगे हैं।

चुकची, कोरियाक, कमचाडेल:—चुकची लोग चुकची तथा कमचटका प्रायद्वीपों के लोग हैं, परन्तु याकूत तथा तुंगस के इर्द-गिर्द भी ये लोग मिलते हैं। सखालीन में भी इनकी कुछ बस्तियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। यह मंगोली-तातार जाति के हैं, और यूराल-अल्टाई जाति की विशेषताओं से बिल्कुल भिन्न विशेषतायें रखते हैं।

[illegible] जाति के वंशज आर्कटिक तट पर दूर तक पाये जाते हैं, परन्तु अलास्का लोग इसमें शामिल नहीं हैं। ये लोग स्वभाव के बड़े नम्र और खुशदिल होते हैं। कभी भी अपने मुँह पर बुरा शब्द स्त्रियों के प्रति नहीं लाते हैं। बच्चे तो बहुत ही लाड़-प्यार से रखे जाते हैं। बूढ़े तथा बालक दोनों ही कठिन कार्यों

से अलग रक्खे जाते हैं। इनका जीवन कठिनाइयों से भरा होता है। इनसे भिन्न लमुत जाति के लोग होते हैं। लमुत ओखोटस्क सागर के तटों पर रहते हैं।

कमचाडेल कमचटका प्रायद्वीप के आदि निवासी हैं। यह भाषा एवं व्यक्तित्व में कोरियाक जाति के लोगों से बिल्कुल भिन्न होते हैं। बीमारी, अकाल तथा अन्य संकटों के कारण इन लोगों की जनसंख्या बहुत कम रह गई है। ग्रीष्म ऋतु में यह नदियों तथा अन्य जलाशयों से सालमन मछली पकड़ते हैं। थोड़ी सी राई आलू तथा गाजर-मूली की कृषि भी ये लोग करते हैं। समूर तथा अन्य पशुओं से प्राप्त वस्तुओं के बदले ये लोग रूसी लोगों से चाय तथा शक्कर प्राप्त करते हैं। इनके घर बहुत साफ होते हैं, खिड़कियों में पर्दे लगे होते हैं तथा कड़ी सर्दी से बचने का पूर्ण इन्तजाम होता है।

ओस्टिआक, सेमोयेड तथा वोगुल्स:—पश्चिमी साइबेरिया में अनेक फिनिश जाति के लोग रहते हैं। फिनिश के विषय में कहा जाता है, कि ये लोग अल्ताई तथा सयान उच्च भूभागों से आये हैं। सोयोत जो कि यहाँ की प्रमुख जाति है, येनेसी के मुहाने पर वास्तविक रूप से पाई जाती है। परन्तु, तनुओला श्रेणी से उत्तर में क्रैसनोयारस्क तथा अपर येनेसी के पूर्व में व्यूरिल के क्षेत्र तक इन लोगों का विस्तार है। सोयोत लोग बड़े कुशल व चतुर होते हैं।

फिनिश वर्ग के अन्य कई लोग भी हैं। जैसे ओस्टिआक, सेमोयेड तथा वोल्गुस। ओस्टिआक, लोगों का विस्तार ओबी बेसिन के मुहाने तक तथा पूर्व में येनेसी तक है। इस चार लाख वर्ग मील के क्षेत्र में केवल पच्चीस हजार ओस्टिआक रहते है। या तो इनकी मृत्यु जल्दी जल्दी हो रही है और या ये अन्य रूसी जातियों में मिल रहे हैं। इन लोगों की दशा बहुत गिरी हुई है। इनका जीवन कठिनाइयों से भरा होता है। ये शमन धर्म को मानते हैं।

सेमोयेड लोग आर्कटिक तट पर पाये जाते हैं। खटंगा से यह पश्चिम में कनिन प्रायद्वीप तक मिलते हैं। आमतौर पर लोग समझते हैं कि ये समुद्र तट पर ही रहती हैं। परन्तु इनमें से कुछ ऐसी हैं जैसे तवगी जो कभी भी समुद्र तट पर नहीं रहते हैं। ये लोग शमन धर्म को मानते हैं।

यूराल के पूर्व में वोगुल जाति के लोग रहते हैं। पूर्व में इनका विस्तार ओब नदी की घाटी तक तथा निचली इरतीश घाटी तक है। ये लोग कदापि मिलनसार नहीं होते। अपने तम्बू वे दूर दूर लगाते हैं। एक से अधिक स्त्रियाँ रखते हैं। कभी कभी पति अकेला ही अपने रेनडियर तथा कुत्तों के साथ रहता है। ये अपने शरीर के सब अंगों को गुदवा लेते हैं। गुदा हुआ शरीर सुन्दर समझा जाता है।

रूसी तुर्किस्तान में विभिन्न जातियों के लोग मिलते हैं। अरलो-कैस्पियन बेसिन तुर्की जाति के लोगों का वास्तविक घर बतलाया जाता है। यहीं से इनकी उत्पत्ति हुई है, इसीलिये यह भाग 'तुर्किस्तान' कहलाया है। यहाँ पर पहले यह लोग बंजारों का जीवन व्यतीत किया करते थे। कुछ विद्वानों का मत है कि खिवा, बुखारा तथा फरगना के निकटवर्तीय कृषि-क्षेत्रों में बहुत पहले तुर्की एवं ईरानिया जाति के लोग रहते थे। ये दोनों जातियां मिश्रित दशा में पाई जाती हैं। एक तीसरी जाति जो कि इन दोनों से भिन्न है, और जो फरगना, जरफशान तथा आमू नदी के क्षेत्र में रहती है, वह गलचा कहलाती है। इस जाति के विषय में कहा गया है कि यह ईरानिक तथा इन्डिक (आर्य) शाखाओं के मध्य की एक शाखा है। कुछ कुछ वाखिस, बदखशीज, शिआ-पोस-काफिर, चगानीस आदि लोगों से मिलते जुलते हैं।

नीचे दिये हुए टेबिल में ये तीनों वर्ग दिखलाये गये हैं।

तुर्की वर्ग (स्टॉक)

जातियाँ		स्थान
उजबेग	कुन्ग्रेड	बोखारा, फरघना तथा खिवा
	नैमान	
	किपचाक	
	जलायर	
	अन्दीजनी	
कारकल्पाक	येमकली	
	खन्देलकी	
	अचामेली	
	इंगकली	
	शाकू	
	आन्तोतुरक	
किरगीज कजक	महान श्रेष्ठ होर्डि	बालकश झील एवं निम्न वाल्गा के स्टेपलैंड पर
	मध्य होर्डि	
	तुच्छ होर्डि	
	आन्तरिक होर्डि	
कारा-किरगीज बुरुत	[illegible] तियनशान (चीन)	तियनशान एवं पामीर
	[illegible] तियनशान ([illegible])	

तुर्कोमन	तेके गोकलन योमुद सारिक	उस्त-युर्त, ख्वारेज्म, दमन-ई कोह मध्य आमू का दायाँ तट
तुर्कोमन	सेलोर कारा अली एली एर सारी चाउदोर	उस्य-युर्त, ख्वारेज्म, दकन-ई-कोह मध्य आमू का दांया तट

ईरानिक वर्ग (स्टोक)

तजिक 'सर्ट' फारसी	खिवा बुखारा तथा फरघना

गलचा वर्ग (स्टोक)

अधिआंस शहुल फलघर मान्चस फेंग यागनब कारातेघिंस	फरघना, जारफशान, करातेघिन, तथा उच्च आमू घाटी

उजबेगः—मध्य एशिया के तुर्की लोगों में उजबेग बहुत ही सभ्य लोग हैं। इन लोगों ने बंजारों का जीवन त्याग दिया है और अब कृषि करने लगे हैं यहाँ के तजिक लोगों के मुकाबले उजबेग अधिक समझदार नहीं हैं। बहुत से तो यहाँ के बड़े-बड़े नगरों में रहने लग गये हैं, ये लोग व्यापार में भी लगे हुए हैं। इन लोगों का साहित्य तथा भाषा स्वयं का है। बाबर जिसने कि भारत में मुगल साम्राज्य की नींव डाली थी, इसी जाति का था। ये लोग सुन्नी जाति के होते हैं।

कारा-कल्पक, जो कि 'काली टोपी वाले' के नाम से प्रसिद्ध हैं, पहले काफी विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए थे, परन्तु अब अरल सागर के निकट सर और आमू नदियों के मध्य मिलते हैं। ये लोग बड़े सीधे सादे होते हैं।

खिरगीज:—कारा-खिरगीज या ब्लेक खिरगीज तथा कजक या खिरगीज कजक अरल-कैस्पियन भाग के उत्तरी एवं पूर्वी सीमान्त भागों में उच्च व निम्न भूमि पर रहने वाले लोग हैं। कजक जिनकी अनेक शाखायें हैं, कभी भी अपने को खिरगीज नहीं कहते हैं। रूसी लोगों ने बहुत प्रयत्न किया कि ये लोग अपने को यदि खिरगीज कहने लगें, तो 'कोसक' (Kossak) जाति पुकारने में आसानी हो जाय, क्योंकि कजक और कोसक दोनों का उच्चारण समान ही है। कारा-खिरगीज लोग त्यानशान तथा पामीर की उच्च भूमि पर रहते हैं। कजक तथा कारा-खिरगीज में बड़ा अन्तर है। कारा-खिरगीज चीनी तथा कलमक के 'बुरुत' हैं, और जुंगेरिया, तुर्किस्तान तथा पश्चिमी अल्ताई में रहते हैं। उस उच्च भू-भाग में जहाँ सर तथा उसकी सहायक नदियाँ निकलती हैं, ये लोग तुर्की भाषा बोलते हैं। उत्तर में इनके चरागाहों में कजक लोग मिलते हैं, दक्षिण में इनका विस्तार हिन्दूकुश तक है। त्यानशान पर कुछ गलचा लोग भी रहते हैं। कजक और कारा-खिरगीज में प्रायः झगड़े हुआ करते हैं।

कजक की स्थिति तुर्की और मंगोलियन जातियों के मध्य अजीब सी है। इनका रूप-रंग दोनों से मिलता जुलता है, परन्तु भाषा बिलकुल तुर्की है।

कजक के मुकाबले कारा-खिरगीज बड़े क्रूर स्वभाव के होते हैं। वैसे कुछ की प्रकृति अच्छी भी होती है। दोनों मुसलमान जातियाँ हैं, परन्तु धर्म के बिल्कुल ही कट्टर नहीं होते, इन्हें मस्जिद व मुल्ला की आवश्यकता नहीं रहती, केवल थोड़ी सी नमाज पढ़ लेते हैं। वास्तव में इनके ऊपर शमन धर्म का गहरा प्रभाव पड़ा है।

दोनों लोग पशु-पालन करते हैं, परन्तु खिरगीज कजक की अपेक्षा कृषि अधिक करते हैं। ये दोनों जातियाँ कुमिस (Kumiss) नाम की मदिरा पीते हैं। अब ये लोग कुछ सभ्य हो गये हैं, और कुछ न कुछ धन्धा भी करने लगे हैं। देश की राजनैतिक दशा को भी समझते हैं।

तुर्कोमान:—ये लोग बंजारे हैं और श्वेत रूस में ही अपने को शामिल करते हैं। बहुत प्राचीन समय से ये लोग घूमने-फिरने वाले बंजारे रहे हैं, कभी भी इनका एक शासन प्रबन्ध नहीं रहा है। ये अनेक जाति-समूहों में विभाजित हैं। इन जाति-समूहों (Khalks) में 'योकलान' सबसे मुख्य होता है। ये प्राचीनकाल से ईरान में पाये जाते हैं। तुर्कोमान के जीवन में धर्म महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

फारस में इनके अनेक समूह आपस में लड़ाई झगड़े किया करते थे, परन्तु अब रूसी शासन में बड़ी शान्तिपूर्वक रह रहे हैं। ये लोग बड़े नम्र स्वभाव के होते हैं। शिक्षा प्राप्त करने में इन्हें बड़ा आनन्द आता है। धार्मिक शिक्षा ग्रहण करना अपना परम कर्तव्य समझते।

ताजिक एवं स्लेवः—ताजिक लोग बहुत प्राचीन काल से तुर्किस्तान के उपजाऊ क्षेत्रों में स्थापित हो गये थे। ये लोग ईरानियन वर्ण के हैं। जो ईरानी लोग यहाँ पहले स्थापित हुए थे और जिनके वंशज ये ताजिक लोग हैं, अबके फारसी लोगों से बिल्कुल भिन्न हैं। ये लोग बड़े परिश्रमी होते हैं। इनका प्रमुख धन्धा कृषि करना ही है।

गलचा लोग भाषा में ताजिक तथा फारसी लोगों से मिलते जुलते हैं। यग-नौब एक अजीब आर्य भाषा बोलते हैं, ये वाखी व शिग्रा-पोश से बिलकुल मिलती जुलती है।

रूसी स्लेव इस भाग में बाद में आये हैं। भविष्य में हो सकता है कि यह स्थाई रूप से कृषि करने वाली जातियों से मिल जायें। इनका विस्तार यूराल के दक्षिण पूर्व में तुर्किस्तान के उत्तर, उत्तर पूर्व तक है। ये लोग कृषि करते हैं। फर-घना के निकटवर्तीय भागों में बहुत से रूसी स्लेव व्यापार में भी लगे हुए हैं।

काकेशिया के भाग में भी विभिन्न प्रकार की जातियाँ पाई जाती हैं। इन जातियों का रहन-सहन भाषा तथा पहनावा बिल्कुल भिन्न है। इनके उत्तर में रूसी स्लेव, और दक्षिण में आरमीनियन, कुर्दिस तथा फारसी ईरानियन पाये जाते हैं।

विद्वानों का मत है कि इस उच्च भाग में जितनी ही जातियाँ मिलती हैं, वे अति प्राचीन काल में निकटवर्तीय क्षेत्रों से आकर स्थापित हो गई हैं। परन्तु प्रो० विरचो इस विचार से सहमत नहीं हैं। उनका कहना है कि काकेशस पर्वत पर कोई भी ऐसा मार्ग नहीं था, जिसके द्वारा लोग इसमें आ जा सकें।

नीचे दिये हुये टेबिल से प्रतीत होता है कि काकेशस की तमाम जातियाँ चार प्रमुख श्रेणियों में विभाजित की गई हैं।

दक्षिणी भाग

कर्तवेली वर्ण (स्टोक)

ज्योर्जियन इमेरियन राचन	मेस्क श्रेणी के पूर्व में लिफलिस के जिले तक इमेरिया

मिंग्रेलियन गुरिअन लेच्चगुम		मिंग्रेलिया
लेज़		लजिस्तान
स्वान		अपर इंगुर ता शेनिश की घाटी
शेव खेवसुर		अलाजान और ओरा के निकलने के स्थान
चेरकेस	उबिन्न शपशन्न शीगेत	कुबान के पश्चिमी तट पर
अवखासिअन		कालेसागर के तट पर
कबार्ड		उत्तरी व पूर्वी एल्बुर्ज

पूर्वी भाग

चैन्चेज़	इंगुश गलगाई किस्त तुश काराबुलक	ऊपरी व मध्य तीरक के बायें तट पर
लेस्गिअन	अवर, काज़ी, कुमिक आर्ची दरगो, दीदो दुओं देज़ गर्द, कुबाची कुरीनी	दगस्तान

मध्य का भाग

ओस या ओसेसिअन	ग्रेट काकेशस के दोनों ढालों पर (कज़बेक)

कार्टवेलियन मिंग्रेलियन तथा इमेरियन:—

कार्टवेलियन को छोड़कर काकेशस की कोई भी अन्य जाति ऐतिहासिक महत्ता नहीं रखती। ये लोग प्राचीन आइबेरियन के वंशज हैं। यद्यपि ये निम्न भागों के रहने वाले हैं, परन्तु उच्च भूमि वाली जातियों से मिलती जुलती हैं।

*ज्योर्जिया नाम कार्टवेलियन राज्य का बहुत बाद में पड़ा है, इसी से इस जाति का नाम भी पड़ा है। कार्टवेलियन वर्ग की अनेक शाखायें हैं। इन शाखाओं के लोग बहुत काहिल तथा सुस्त हैं। क्योंकि मिंग्रेलिया निम्न भूमि में इन्हें कार्य करने की कोई विशेष सुविधा आरम्भ में नहीं मिली है।

समुद्र सतह से चार हजार फुट ऊपर हर प्रकार के फल व फसलें उगती हैं, इसलिये लोग कुछ न कुछ कार्य करते हैं। यहां ये लोग अपने रहने का स्थान ऐसा बनाते हैं, जिसमें कि पशु भी रख सकें और कुछ धन्धा भी कर सकें। इस प्रकार से मिंग्रेलियन के मुकाबिले इमेरियन अधिक कुशल व परिश्रमी होते हैं।

काकेशिया की भाषा बड़ी जटिल है। ज्योर्जियन लोग गाने बजाने के शौकीन होते हैं। कार्टवेलियन लगातार ढोल व तमूरा बजा बजा कर जोर से गाते हैं। यही यहां के लोगों के मनोरंजन के साधन हैं।

सिरकेसिअन तथा अबखासिअनः—

यद्यपि ज्योर्जियन काकेशस की प्रमुख जाति है, परन्तु इससे भी महत्वपूर्ण जाति 'सिरकेसियन' की है। पश्चिमी जातियों में पहले यह बहुत ही वीर एवं बलवान जाति समझी जाती थी। कदाचित् इनका राज्य पहले कालेसागर के तट पर कर्च के जल-डमरू-मध्य तक था परन्तु किसी कारणवश ये कुबान के दक्षिणी तट पर आ गये। अब इनकी समस्त भूमि पर रूसी लोगों का अधिकार हो गया है। कुछ लोग अब भी अपने प्राचीन स्थानों पर रहते हैं। इनके वंशज आरमीनिया, टर्की, सीरिया तथा बाल्कन प्रायद्वीप पर अब भी मिलते हैं। इन लोगों के चरित्र में बड़ी फुर्ती होती है।

अबखासियन इन्हीं के निकट एक दूसरी जाति है, इनका राज्य अब काले-सागर के तट पर तंग पट्टी के रूप में है। यह पेटी इंगुर बेसिन के उत्तर में है और चारों ओर से कार्टवेलियन, तातर तथा रूसी लोगों से घिरे हुए हैं।

चैचेंजीस, लेझिअन तथा औसेसः—

चैचेंजीस पूर्वी काकेशस की प्रमुख जाती है। इसकी भाषा बिल्कुल भिन्न है। ये लोग समस्त दगिस्तान को घेरे हुए हैं। इनका बहुत समय तक रूस से युद्ध होता रहा। धर्म के नाम पर ये लोग अपनी जान तक दे देते हैं। सन् १८५६ से ये लोग

*The name Georgia, of [illegible] merely the Russian form, has been wrongly referred [illegible] saint, George, by whom they were supposed to [illegible] from paganism to Christianity.

तुर्किश आरमीनिया में आकर स्थापित हो गए हैं। बहुत से तो कठिनाइयों तथा संकटों के कारण भी मर गए हैं।

इन लोगों से कहीं सुन्दर तथा बुद्धिमान लेस्घियन होते हैं। स्त्रियाँ तथा पुरुष बहुत सुन्दर सुन्दर वस्त्र पहनते हैं और अपने को फूलों से सुसज्जित करते हैं। ये नम जमीन की गुफाओं में रहते हैं या झोपड़ी बनाकर अपना जीवन निर्वाह करते हैं।

ओसेस, जो कि अपने को 'इरोन'(Iron)कहते हैं, काकेशस की चौथी जाति है। ये आर्य जाति का मिश्रण मालूम होती है। ये महान काकेशस के मध्य के भाग को घेरे हुए हैं। इनके दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण पूर्व में कार्टवेलियन, उत्तर-पूर्व में चेचेंजीस, और उत्तर-पश्चिम में कबार्ड है। ओसेस लोग गोरे रंग के स्वस्थ होते है, और इनका चरित्र गम्भीर होता है। जर्मन लोगों से ये कुछ मिलते जुलते हैं। इनकी भाषा ईरानियन है।

काकेशस की अन्य विदेशी जातियां:—

उन जातियों में जो कि निकटवर्तीय स्थानों से आकर यहाँ की प्राचीन जातियों में मिल गए हैं, आरमीनियन महत्वपूर्ण हैं। ये लोग कुरा और अरस बेसिनों से आकर यहाँ बसे हैं। कुर्द लोग कुर्दिस्तान की पहाड़ियों से आये हैं, और अब उत्तर में रिओन बेसिन तक मिलते हैं। तिफलिस के पश्चिम में यूनानी लोग आ बसे हैं। तात तथा तलिशेस बाकू के क्षेत्र से तथा कुछ जर्मन लोग कुरा तथा तिफलिस बेसिन में मिलते हैं।

प्राचीन ज्यूज का तत्व भी काकेशस के कई भागों में देखने को मिलता है। इनके नामों पर यहाँ के अनेक नाम पड़े हैं। उन्हीं से इनका प्रभाव जान पड़ता है।

काकेशस पर जो जातियाँ पाई जाती हैं वे इसाई धर्म तथा इस्लाम धर्म को मानने वाली हैं।

एशियाई रूस के प्राकृतिक विभाग

रूस एक इतना बड़ा देश है कि उसमें अनेक विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितिया [illegible] देश के प्राकृतिक [illegible] । अभी तक किसी विद्वान ने इस देश के प्राकृतिक विभागों का अधीन सन्तोषजनक नहीं किया है। निम्नलिखित विभाग एल० जो० बी० और्गे के आधार पर दिये जा रहे हैं, क्योंकि उन्हीं ने इस क्षेत्र में कुछ सफलता प्राप्त की है।

मोटे तौर पर एशियाई रूस निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित किया गया है :—

(अ) यूराल पर्वत का क्षेत्र ।

(ब) सोवियत साइबेरिया के भाग ।

(स) मध्य एशिया के प्राकृतिक खंड ।

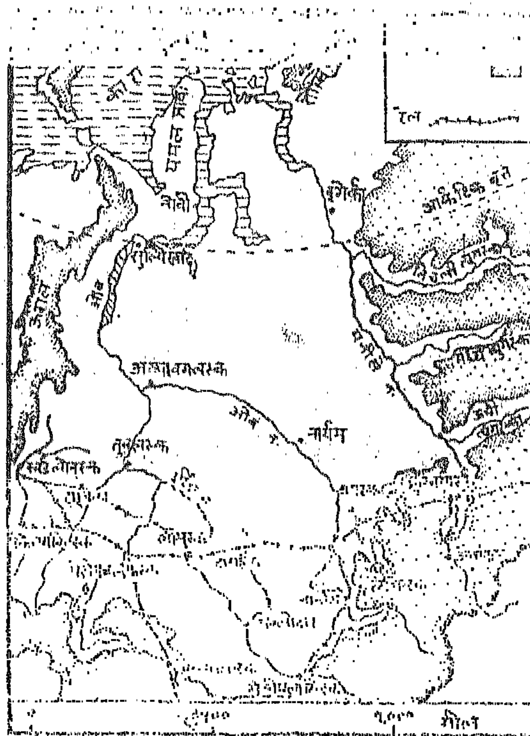
(अ) यूराल पर्वत का क्षेत्र

(१) **यूराल पर्वत:**—एशियाई रूस के पश्चिम में यूराल पर्वत उत्तर से दक्षिण तक एक दीवार की भाँति फैला हुआ है। इसकी लम्बाई १५०० मील तथा अधिक से अधिक चौड़ाई ३२५ मील है। यह बहुत प्राचीन पैल्योजोयिक पर्तदार चट्टानों के बने हुये हैं, परन्तु कहीं कहीं पर दानेदार तथा परिवर्तित चट्टानें भी दृष्टिगोचर होती हैं। इस पर्वत को तीन भागों में बनावट के दृष्टिकोण से बांटा जा सकता है। पूर्व की ओर समतल 'पेनीप्लेन' जिसमें कहीं कहीं पर आग्नेय चट्टानें पायी जाती हैं। इनकी ऊँचाई कहीं कहीं पर लगभग ८०० फुट है। मध्य की दानेदार पत्थर वाली श्रेणी पश्चिम की ओर टूटा फूटा पहाड़ है, जो एक हजार से लेकर दो हजार फुट ऊँचा है। उत्तर से दक्षिण तक इसके चार भाग किये गये हैं, उत्तर में यूराल सबसे ऊँचा है। यहाँ सबसे ऊँची नरोदनया ६२०२ फुट है। मध्य के यूराल केवल एक हजार फुट ऊँचे हैं। यहाँ इन्हें रेलवे पार कर जाती है, और दक्षिण में इनकी ऊँचाई ५३८० फुट के लगभग है। इसके बाद और भी दक्षिण में मोगूदजार पहाड़ी लगभग दो हजार फुट ऊँची हो गई हैं।

यहाँ ठंढी जलवायु पायी जाती है। जुलाई का औसत स्वर्डलोवस्क में ६३° फ० तथा जनवरी का ३०° फ०, वर्षा बहुत कम होती है, वार्षिक औसत २२ इंच है। ढालों पर कुछ अधिक वर्षा हो जाती है अन्य नगरों में भी तापक्रम हिमांक से नीचा जनवरी के माह में पहुँच जाता है। प्राकृतिक वनस्पति यहाँ घनी नहीं मिलती। दक्षिण में स्टेप्सलैंड, मध्य में वन तथा उत्तर में टुन्ड्रा प्रदेश की वनस्पति मिलती है।

यूराल पर्वत खनिज पदार्थों में बहुत धनी है। कहा जाता है कि पन्द्रहवीं शताब्दी में भी लोग कुछ खनिज यहाँ से प्राप्त करते थे। पहले यहाँ से नमक, सोना तथा लोहा प्राप्त किया जाता था। उन्नीसवीं शताब्दी तक अन्य बहुमूल्य खनिजों का भी पता चल गया। इनका विकास यहाँ की पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत हुआ है। आजकल यहाँ से कोयला, तेल, लोहा, ताँबा, सोना, प्लेटिनम, चाँदी, निकिल

अल्युमिनियम, मैंगनीज, अस्बस्टोज, लेड, जिन्क, मेगानेसियम, क्रोमियम, पोटाश नमक तथा इमारती पत्थर प्राप्त किया जाता है।



यूराल पर्वत का क्षेत्र

कृषि उद्योग अधिक उन्नति नहीं कर सका है, परन्तु कृषि यन्त्रों में संबन्धित अनेक कारखानें यहाँ पर पाये जाते हैं। इनमें जो वस्तुएँ तैयार होती हैं वे निकटवर्तीय क्षेत्रों में भेज दी जाती हैं।

उद्योग धन्धों का विकास खनिज शक्ति पर बहुत निर्भर है। इस भाग में उत्तम कोयले की बहुत कमी है। केवल चेलियाबिन्स्क में थोड़ा सा लिग्नाइट कोयला मिल जाता है। किजेल का बिटुमिनस कोयला भी अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। उत्तम श्रेणी का कोयला निकटवर्तीय कारागण्डा की खान से मंगवाया जाता है। तेल केवल स्टर्लीटामाक के स्थान पर थोड़ी सी मात्रा में प्राप्त किया जाता है।

यहाँ के उद्योग धन्धे उसी श्रेणी के हैं, जिस श्रेणी के डोनेज बेसिन में मिलते हैं। औद्योगिक प्रगति यहाँ द्वितीय महायुद्ध के उपरान्त ही अधिक हुई है। * मैग-नीटोगोरस्क विश्व का सबसे बड़ा लोहे व स्पात का केन्द्र है। चेलियाबिंस्क-खेती के औजारों के लिये, स्वर्डलोवस्क-विद्युत मोटर, रेलगाड़ियाँ व मशीनों के लिये, यूफा-तेल व डिजिल इंजन के लिए, पर्म हवाई जहाज व मोटरकार के लिये तथा उसोली रसायन उद्योग के लिए बहुत प्रसिद्ध हो गये हैं। इन उद्योगों के अतिरिक्त अन्य भी उद्योग धन्धे यहाँ पर पाये जाते हैं।

यहाँ पर आठ बहुत बड़े बड़े औद्योगिक नगर हैं जो कि अधिकतर पूर्व की ओर स्थित हैं। कुछ पश्चिम की ओर भी प्राचीन नगर पाये जाते हैं। यूराल के भागों में जनसंख्या बहुत अधिक नहीं पायी जाती। अधिकतर औद्योगिक जनसंख्या है जो खान खोदने तथा कारखानों में लगी हुई है। मैगनीटोगोरस्क (१४५,८७०) स्वर्ड-लोवस्क (४२५,५४४) चेलियाबिंस्क (२७३२२७) पर्म (२५५१९६) तथा यूफा (२४५,८६३) यहाँ के प्रमुख नगर हैं।

(ब) सोवियत साइबेरिया के भाग

(१) **पश्चिमी साइबेरिया कृषिक क्षेत्र:**—यह एक बहुत ही समतल भाग है। सैकड़ों मील तक भूमि एक सी चली गई है। कहीं भी पहाड़ी या उच्च पर्वत श्रेणी दृष्टिगोचर नहीं होती। यदि इस पर यात्रा की जाय तो केवल एलीवेटर (**Elevators**) या गिर्जाघर की चोटी के अलावा कुछ भी ऊँची वस्तु नहीं दीखेगी। इस भाग में क्वाटरनरी (**Quarternary**) युग के पदार्थ धरातल पर मिलते हैं। इन पदार्थों के नीचे टरशियरी युग के समुद्री पदार्थ पाये जाते हैं। यह पदार्थ बहुत ही उथली झीलों में एकत्रित हो गये थे। कजाख नाम की पहाड़ियां घिस कर समतल हो हो गई हैं। दक्षिण की ओर अनेक गड्ढे हैं, जो कि कभी कभी झीलों का रूप धारण कर लेते हैं।

यहाँ की जलवायु महाद्वीपी है। तापक्रम में अनेक स्थानों पर अन्तर पाया जाता है। शीत ऋतु में बहुत अधिक बर्फ नहीं गिरती। वर्ष के आधे समय तक तापक्रम हिमांक से नीचा रहता है, ग्रीष्म ऋतु अपेक्षा-कृत बहुत छोटी होती है। तापक्रम इस ऋतु में ६८°फ० से अधिक नहीं होता। वर्षा केवल ग्रीष्म ऋतु में ही होती है, और वह भी अधिक से अधिक १८ इंच।

* J. Russel Smith and M. Ogden Phillips—Industrial and Commercial Geography" page 173

इस भाग में दक्षिण की ओर चेरनोज़म मिट्टी मिलती है। इस स्टेपलैंड में घास उगती है। उत्तर की ओर ग्लेशियर की डाली हुई मिट्टी है, परन्तु उतनी उपजाऊ नहीं है जितनी कि दक्षिण में। यहां पर वन नहीं पाये जाते बल्कि दूर दूर तक घास व ठिगने वृक्ष दृष्टिगोचर होते हैं।

यहां के लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि करना है। गेहूं, ओट, राई तथा जौ विशेषतौर पर उत्पन्न किये जाते हैं। यहां के फार्म बहुत विस्तृत हैं, ट्रैक्टर तथा हारवेस्टर इन फार्मों पर कार्य करते हुये दिखलाई देते हैं। प्रत्येक रेलवे स्टेशन पर बड़े-बड़े एलीवेटर (Elevator) दीखते हैं, इनमें अनाज भरे होते हैं। यहां के उद्योग धन्धों में आटा पीसना तथा मांस को डिब्बों में बन्द करना है। यहां के लोग पशु-पालन में भी लगे हुये हैं। दूध, मक्खन व पनीर अन्य क्षेत्रों को निर्यात किया जाता है।

यहां के निवासी आत्मनिर्भर हैं। ये अधिकतर छोटे छोटे गाँवों में रहते हैं। इनके घर लकड़ी या सोड के बने हुए होते हैं। प्रत्येक घर में सर्दी से बचने के हेतु एक पत्थर की अंगीठी होती है। घर के पीछे तरकारियों की क्यारियाँ होती हैं। जहाँ कहीं भी रेल तथा जलाशय निकट में ही पाये जाते हैं वहां नगर स्थापित हो गये हैं। इस भाग में ओबे इरतिश नामक दो ही मुख्य जलाशय हैं, इसलिये यहाँ केवल दो ही प्रमुख नगर पाये जाते हैं प्रथम नोवोसिबिरिस्क (६०००००), द्वितीय ओमस्क। क्रेस्नोयारस्क भी एक यहाँ का महत्वपूर्ण नगर है।

(२) अल्ताई-स्यान पर्वतीय भाग:—अल्ताई स्यान पर्वत श्रेणियां जुंगेरिया द्वार से लेकर बैकाल झील तक फैली हुई है। यदि बनावट की दृष्टि से देखा जाय तो इस भाग में मंगोलिया का भी कुछ भाग शामिल है। यह एक पर्वतीय भाग है। अल्ताई व स्यान पर्वत पैल्योजोयिक युग में मुड़ी थी, और तरशियरी युग में ऊपर उठ गई। मध्य का भाग पामीर व त्यानशान की भांति ऊँचा उठा हुआ है। इरतिश व ओबे के मध्य में अल्ताई पर्वत है, जिनकी अधिक से अधिक ऊँचाई १५१५४ फुट है। इस उच्च भाग से ८ ग्लेशियर निकलते हैं। इनमें से एक तो पाँच मील लम्बा है और ६५०० फुट की ऊँचाई से निकलता है। इस भाग में हिम-रेखा आठ हजार व दस हजार फुट पर मिलती है।

स्यान पर्वत श्रेणियां मिनुसिन्स्क बेसिन के चारों ओर पाई जाती हैं। पूर्वी स्यान ११४४७ फुट ऊँचे हैं, [illegible] से [illegible] झील तक फैली हुई है, दक्षिणी

शाखा पश्चिमी स्यान के नाम से प्रसिद्ध है। यह भाग समतल नहीं है, बल्कि काफी ऊँचा नीचा है।

यहाँ पर विभिन्न प्रकार की जलवायु सम्बन्धी दशायें पाई जाती हैं। शीत ऋतु में तापक्रम बहुत कम पाया जाता है। जो ठन्डी हवायें चारों ओर के पर्वतों से चलती हैं, वह मिनुसिस्क बेसिन का तापक्रम--५ फ० कर देते हैं, कभी कभी यहाँ का इससे भी कम तापक्रम हो जाता है। ग्रीष्म ऋतु बहुत गर्म नहीं होती। मिनुसिस्क का जुलाई तापक्रम ६६° फ० हो जाता है। अन्य स्थानों पर जुलाई तापक्रम इससे कम पाया जाता है। इस भाग में पर्वत तथा बेसिन १० इंच से अधिक वर्षा प्राप्त नहीं करते, परन्तु पश्चिमी स्यान पर्वत पर 'ओलेनिया क्रीक के स्थान पर ४७ इंच वर्षा हो जाती है। पश्चिमी अल्ताई केवल ३७ इंच ही वर्षा प्राप्त करते हैं।

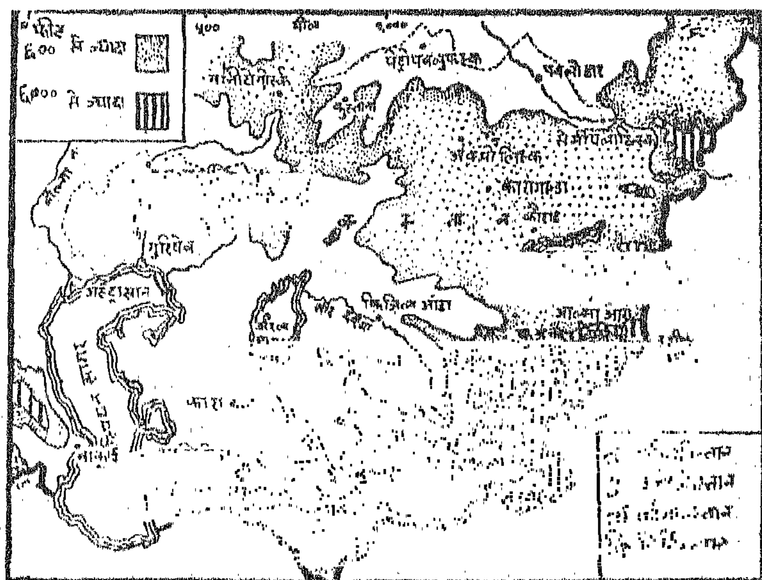
अल्ताई स्यान पर्वत पर तीन हजार से छै हजार फुट की ऊंचाई तक वन मिलते हैं, इन वनों में लार्च, फर, सिडार, पाइन तथा बर्च नामक वृक्ष मिलते हैं। इससे भी ऊपर ६००० फुट तक अल्पाइन वनस्पति मिलती है।

तीन हजार फुट के नीचे घास ही मिलती है। यहाँ पर पहले कंजारे लोग पशुपालन किया करते थे, परन्तु अब बहुत से लोग कृषि करते हैं। अपरटोन तथा येनेसी बेसिन में गेहूं, आलू तथा सनफ्लोवर उत्पन्न किए जाते हैं।

यहाँ पर अनेक खनिज पदार्थ मिलते हैं। कुजनेस बेसिन तथा मिनुसिस्क बेसिन में कोयले का भंडार है। चुलिम-येनेसी तथा कांस्क भी कोयले का बहुत अधिक कोष रखते हैं। चिरेमखोवो जो कि इरकुटस्क के पश्चिम में है, कोयले की अपार संपत्ति रखता है। इस भाग में जितना भी कोयला मिलता है, बहुत उत्तम श्रेणी का है। कार्बन उसमें ८० से लेकर ६० प्रतिशत तक होता है। कुजनेस बेसिन जहाँ इस प्रकार का कोयला विशेषतौर पर मिलता है, प्रतिवर्ष ३२०००००० टन से अधिक प्राप्त करता है। प्रोकोपविस्क (Prokopyevsk) नामक खान, जो कि यहाँ स्थित है ३,२००,००० टन कोयला प्राप्त करती है। खानों में विद्युत शक्ति व आधुनिक मशीनों का प्रयोग होता है। अन्य कोयले की खानें स्टालिस्क, लेनिस्क, केमेरोवो तथा अन्जीरो-सुडजेन्क में पाई जाती हैं। रेलवे तथा घरेलू उपभोग के लिये कोयला चेरमोगोरस्क की खानों से प्राप्त किया जाता है।

अन्य खनिज पदार्थों में लेड, जिन्क, चाँदी, सोना, ताँबा, रांगा तथा मैंगनीज महत्वपूर्ण हैं। जलशक्ति येनेसी नदी के कई स्थानों पर उत्पन्न की जाती है।

इन धातुओं को प्राप्त करने में एक सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि रेलवे इनकी खानों तक नहीं पहुँच पाई हैं। मैगनीज अचिन्स्क के स्थान पर एक लाख टन प्रति-वर्ष प्राप्त होती है। जिंक, सोना तथा लेड सलायर (Salair) के स्थान पर, लोहा गोरनया शोरिया तथा उसके दक्षिण में निकाले जाते हैं।



कजाखस्तान तथा मध्य एशिया

इस भाग में अनेक उद्योग धन्धे पाये जाते हैं। यहाँ के बड़े बड़े नगर, जो कुजनेत्स बेसिन में स्थित हैं, औद्योगिक केन्द्र हैं। इन केन्द्रों में स्टालिस्क (१६६५८) प्रोकोपीवस्क (१०७२२७) तथा केमेरोवो (१३२९७८) उल्लेखनीय हैं।

(३) ओबे बेसिन के टैगा प्रदेश:—जिस स्थान पर वोल्गा की सहायक नदी कामा यूराल को पार करती है, उस स्थान से ओबे की भी कुछ शाखायें आकर मिलती हैं। तुलिम नदी जो ओबे में पूर्व की ओर से आकर मिलती है। ओबे ही एक ऐसी साइबेरियन नदी है, जिसने कि बहुत आर्थिक उन्नति की है, अब भी यह अन्य नदियों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है। यह नदी एक बहुत ही समतल भाग से होकर बहती है। [illegible] मिलने के स्थान से १८५० मील दूर तक यह केवल ३०८ फुट नीचे जाती है। प्रति मील में केवल दो इंच का ही ढाल है। इस नदी की लम्बाई ३२०० मील है। इर्तिश नदी इसमें आकर मिलती है और इर्तिश में इशिम व

तोबोल नामक नदियाँ मिलती हैं। ओबे नदी १६२०मील तक नाव्य है, परन्तु केवल दो-तिहाई भाग में ही नावें चलाई जाती हैं। इन नावों पर अनाज और लकड़ी लाद कर इधर-उधर पहुँचाई जाती है। शीत ऋतु में नदी के कई भागों में बर्फ जम जाती है, फलस्वरूप यातायात पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

यहाँ की जलवायु पर्याप्त ठंडी है। शीत ऋतु बहुत लम्बी होती है, बहुत से भाग बर्फ से ढक जाते हैं। यहाँ पर ग्रीष्म ऋतु बहुत छोटी होती है। वार्षिक वर्षा १७ इंच हो जाती है, आर्कटिक तट के निकट वर्षा का औसत कम है।

यह टैगा के भाग हैं, परन्तु कम वर्षा, कड़ी सर्दी तथा छोटी ग्रीष्म ऋतु होने के कारण यहाँ पर कुछ भिन्न प्रकार की वनस्पति मिलती है। इन वनों के मुख्य वृक्षों में साइबेरियन फर मिश्रित श्वेत तने वाले वृक्ष जैसे, बर्च तथा आस्पेन हैं। ओबे व इरतिश के मध्य में वेसुगन (Vasyugan) दलदल एक लाख वर्गमील के क्षेत्र में फैला हुआ है।

इन वनों से विभिन्न प्रकार की बहुमूल्य लकड़ी प्राप्त होती है। ये लकड़ी अरखानगेलस्क तक पहुँचा दी जाती है। यह नगर लकड़ी की मन्डी है। नदियों द्वारा बहुत सी टिम्बर ट्रान्स साइबेरियन रेलवे तक ले आई जाती है, और फिर यहाँ से दूर दूर तक के क्षेत्रों में भेज दी जाती है।

बड़े बड़े नगर यहाँ पर बहुत कम हैं। केवल दस बारह लकड़ी के घर एक गांव बना देते हैं। ऐसे यहाँ अनेक गांव पाये जाते हैं।

(४) येनेसी बेसिन का टैगा प्रदेशः—येनेसी बेसिन में स्थित टैगा का बहुत सा भाग मध्य साइबेरियन उच्च भूमि में सम्मिलित है। इस क्षेत्र में प्रमुख उच्च भाग तुगंस्का प्लेटफार्म है, जिसकी पहाड़ियाँ ४५०० फुट हैं। यहाँ पर येनेसी नदी की तीन मुख्य सहायक नदियाँ बहती हैं। दक्षिण में अपर तुंगस्का या अंगारा नदी, मध्य में स्टोनी तुंगस्का तथा उत्तर में निजनी या लोवर तुंगस्का। इस भाग में येनेसी नदी की लम्बाई २६१६ मील है।

इस भाग की जलवायु बहुत ठंडी है। शीत ऋतु में धरातल बर्फ से ढका रहता है। ग्रीष्म ऋतु में यह बर्फ पिघल जाती है, और चारों ओर नम भूमि दृष्टि-गोचर होती है। कभी कभी ठंडी हवायें भी चलती।

टैगा के वन नुकीली पत्ती वाले सदा बहार वन कहलाते हैं। इनमें फर व पाइन मुख्य वृक्ष हैं, परन्तु बर्च तथा अन्य [illegible] वाले वन भी मिलते हैं। वनों का विस्तार इस भाग में अंगारा के दक्षिण में ७५० मील की लम्बाई में है। इनमें श्वेत तने वाले अनेक वृक्ष दिखाई पड़ते हैं। जो लकड़ी इन वनों से प्राप्त

होती है, वह आर्थिक दृष्टिकोण से बड़ी महत्वपूर्ण है। लकड़ी चीरने के कारखाने क्रेसनोयारस्क, मकलाकोवा येनीसीक व इगरका में पाये जाते हैं। लकड़ी के चिरे हुये तख्ते विदेशों को निर्यात होते हैं, विशेषतौर पर योरोपियन देशों को।

तुंगस्का पहाड़ियों में कोयला का अटूट भण्डार है, अनुमान लगाया जाता है, कि यह नदी के सहारे दूर तक चला गया है, और किसी भी हालत में ४००,०००००००००० टन से कम नहीं है। कोयले के साथ साथ यहाँ ग्रेफाइट भी मिलता है। आर्कटिक में स्थिति नोरिस्क (Norilsk) में तांबा, निकिल, लेड, जिंक, इत्यादि धातुयें भी मिलती हैं।

इस भाग में जल यातायात की काफी प्रगति हुई है। अधिकतर ग्रामीण बस्तियाँ नदियों के किनारे पाई जाती हैं। लगभग ५० नावें हर समय इन नदियों में चला करती हैं। स्टीमर रेलवे लाइन से क्रेसनोयारस्क प्रायः आते जाते रहते हैं। ये मिनुसिस्क तीन दिन में इगरका छै दिन में तथा दुदिन्का ८ दिन में पहुँचते हैं। कुछ भागों में नदी का पाट एक मील से भी अधिक चौड़ा है। रूसी लोग येनेसी के डेल्टाई भाग में १६१० को पहुँचे थे।

इगरका एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है, जिसमें समुद्री जहाज खड़े हुये दृष्टिगोचर होते हैं। यद्यपि यह आर्कटिक सर्किल में ही स्थित है, परन्तु समुद्र तट से चार सौ मील अन्दर की ओर बसा हुआ है। आज से पच्चीस वर्ष पहले इगरका में केवल एक घर था और तीन मनुष्य रहते थे। सन् १९३७ में यहाँ १५,००० व्यक्ति थे। ग्रीष्म ऋतु में लकड़ी का व्यापार इस स्थान पर बहुत अधिक है, क्योंकि लकड़ी लाने व भेजने का कार्य इसी ऋतु में ठीक रहता है।

अपने खाने के लिये मनुष्य विभिन्न प्रकार की तरकारियाँ उत्पन्न करते हैं लोग पशु भी पालते हैं, इनसे दूध, मक्खन तथा अन्य पदार्थ प्राप्त किये जाते हैं। इन वस्तुओं का निर्यात नहीं होता।

(५) आर्कटिक तट:—सोवियत रूस के निवासी प्राचीन काल से ही आर्कटिक तट की ओर ध्यान देते आ रहे हैं। रूस के व्यापारी ओबे नदी के मुहाने तक पहुँच गये थे, और यहाँ एक व्यापारिक केन्द्र भी स्थापित कर दिया था। बीच में विदेशी लोगों के भय के कारण इस ओर ध्यान नहीं दिया गया, परन्तु रूसी-जापानी युद्ध के जहाजों का येनेसी के मुहाने तक पहुँचना आरम्भ हो गया। सन् १९३२ से बर्फ तोड़ने वाले जहाज बना लिये गये। व्लाडीवोस्टक से कोलिमा नदी तक जहाज चलने लगे। द्वितीय महायुद्ध के समय व्यापार इन भागों में और भी अधिक बढ़ गया है।

चार द्वीप इस तटीय भाग को पांच सागरों में विभाजित करते हैं। बरेंट सागर पर मुरमांस्क तथा अरखांगेलस्क प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं। इस सागर के पूर्व में नोवाजेमलिया नामक दो द्वीप हैं। इस सागर के पूर्व में कारा सागर है। इस सागर के उत्तर में सिवेरनया था उत्तरी भूमि नामक द्वीप हैं।

ओबे व येनेसी दोनों नदियों की एस्चुअरी पर्याप्त चौड़ी हैं। जल की गहराई १६ से लेकर २३ फुट तक है। ओबे पर सलेखार्ड नामक प्रसिद्ध नगर स्थित है। येनेसी के मुहाने पर डिक्सन नामक एक छोटा सा द्वीप है। यह स्वयं ही एक सुन्दर बन्दरगाह है। इगरका तक पोत चले आते हैं। दुदिंका बन्दरगाह नोरिस्क की निकिल व कोयले के लिये महत्वपूर्ण बन्दरगाह है। लेपतेव सागर पर लेना डेल्टा के एक तरफ तिकसीबे नामक प्रसिद्ध बन्दरगाह है।

साइबेरिया सागर के पूर्व में सागर बहुत उथला है, यहाँ पर पोत चलाना बड़ा कठिन है। कोलिमा व इन्दिगिरका नदियों के मुहाने पर अनेक रेत के टीले दृष्टिगोचर होते हैं। और पूर्व में चुकची सागर बेरिंग तक चला गया है। हवाई मार्ग मास्को से अरखांगेलस्क, इगरका, तिकसी तथा चुकोतस्क तक जाते हैं।

मुरमांस्क से ब्लाडीवोस्टक तक जो जलमार्ग आता है, उसका महत्व बहुत अधिक है। क्योंकि शीत ऋतु में भी इसमें कभी कभी पोत चला करते हैं। वास्तव में यदि देखा जाय तो अन्य देशों की भाँति रूस भी दो महासागरों का देश है। हो सकता है, भविष्य में आर्कटिक सागर रूस के लिये उतना ही महत्वपूर्ण हो जाय जितनी कि पेनामा नहर संयुक्त राज्य अमरीका के लिये है। सोवियत रूस का १९३७-३८ से उत्तरी ध्रुव पर भी अधिकार हो गया है। यहाँ महासागर की गहराई १४०७५ फुट है।

आर्कटिक तट पर अधिकतर शिकारियों व मछुओं की बस्तियाँ हैं। ये लोग ग्रीष्म ऋतु में मछली तथा जीव जन्तुओं का शिकार खेलते हैं। शीत ऋतु में भी थोड़े से लोग यही धन्धा करते हैं। मंगोल जाति के कुछ लोग रेनडियर पालने लगे हैं। सेमोयड तथा तंगस लोगों की पहले कोई भाषा नहीं थी, परन्तु अब ये लोग शिक्षित हैं। स्कूल, अस्पताल तथा ब्रीडिंग स्टेशन रेनडियरों के लिये खुल गये हैं।

ग्रीष्म ऋतु में टुन्ड्रा पर झीलों व दलदलों के कारण यात्रा करना बड़ा कठिन है। कहावत प्रसिद्ध है कि यहाँ उतनी ही झीलें हैं, 'जितने कि आसमान पर तारे' ऐसे भाग में कृषि करना बड़ा कठिन है। परन्तु वैज्ञानिकों ने अपने

प्रयत्नों से बगीचे व 'ग्रीन हाउसेज' स्थापित कर दिये हैं। डिकसन द्वीप पर वायु से विद्युत शक्ति उत्पन्न की जाती है, और प्रकाश व गर्मी इन ग्रीन 'हाउसेज' (Green Houses) को दी जाती है।

टुन्ड्रा के दक्षिण की दशायें कुछ अच्छी हैं। दुदिन्का में २५०० व्यक्ति रहते हैं। तैमिर ओकतग एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र है। कोहरा रहित दिन यहाँ दो माह के होते हैं। प्रत्येक माह में कुछ न कुछ बदली रहती है। वर्षा केवल ६ इंच ही हो पाती है और वह भी अन्तिम ग्रीष्म ऋतु में।

(६) बैकालिया प्रदेश:—साइबेरिया में बैकाल झील विश्व की सबसे गहरी झील है। इसकी वर्तमान गहराई ५७११ फुट है। इसके चारों तरफ पर्वत श्रेणियाँ हैं, इन पर्वत श्रेणियों की ऊंचाई समुद्र सतह से १७६० गज है। यहाँ पर अब भी कभी-कभी भूकम्प आते हैं, इससे पता चलता है कि इसके नीचे की पर्त काफी कमजोर है। क्षेत्रफल में इसका स्थान विश्व में आठवां है। सिलेंगा इसकी प्रमुख सहायक नदी है, अंगारा ही केवल ऐसी नदी है, जो इसमें से निकलती है।

भौगोलिक दृष्टिकोण से बैकालिया का क्षेत्र झील के पूर्व में स्थित है। यह भाग ऐसी परिवर्तित चट्टानों का बना हुआ है, जो कि दानेदार हैं।

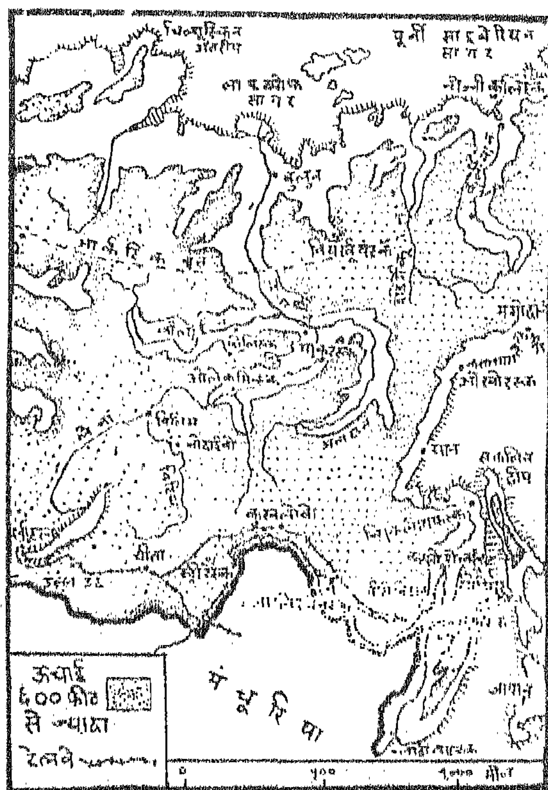
इस भाग की जलवायु बहुत कड़ी नहीं है। झील के प्रभाव से तापक्रम ग्रीष्म ऋतु में अगस्त के माह में अधिक होता है। वर्षा केवल जनवरी के माह में ही जमती है। दो तीन महीने बहुत कड़ी सर्दी पड़ती है। दक्षिणी पूर्वी मानसून हवायें यहाँ तक प्रवेश कर आती हैं। तटीय भाग पर तीन माह तक १४° फ० तापक्रम रहता है। अन्य स्थानों पर पाँच महीने तक बराबर सर्दी पड़ती है। मछली पकड़ने का धन्धा तटीय भागों में बहुत उन्नति कर गया है।

यहाँ की प्राकृतिक वनस्पति में पाइन वृक्ष विशेषतौर पर मिलते हैं, परन्तु साथ ही फर चिर आदि भी उगते हैं। मंगोलियन प्रकार के स्टेप्स शुष्क निम्न-भागों में दृष्टिगोचर होते हैं। इन भागों में ब्यूरियत लोग पशुपालन का धन्धा करते हैं। बोई हुई भूमि का क्षेत्रफल १५ लाख एकड़ है।

खनिज पदार्थों में यह भाग महत्वपूर्ण स्थान रखता है। पेट्रोवस्क के स्थान पर कोयला तथा लोहा मिलता [illegible] है। सोना, टिन, टंगस्टन, सीसा, आर्सेनिक तथा मोलिब्डनम आदि धातुएँ भी इस भाग से प्राप्त की जाती हैं। झील के चारों ओर उपयुक्त स्थानों पर जलशक्ति उत्पन्न की जाती है।

यहाँ पर तीन प्रमुख नगर हैं, इरकुटस्क—अंगारा नदी पर झील से ४० मील

दूर स्थित है, उलन ऊदे सिलेंजा नदी पर स्थित है तथा चिता इस जंगशन पर स्थित है, जो मंचूरिया जाने वाली लाइन से बना है। यह तीनों नगर ट्रांस साइबेरियन रेलवे द्वारा एक दूसरे से मिले हुए हैं।



पूर्वी साइबेरिया

(७) लेना बेसिन के टैगा:—लेना साइबेरिया की एक महत्वपूर्ण नदी है। जिस भाग में होकर यह बहती है वह समतल है। उठे हुए भूभाग बहुत कम मिलते हैं। अधिकतर ग्लेशियर की डाली हुई मिट्टी इसकी तलहटी में पाई जाती है।

यहाँ की जलवायु बहुत ठंडी व शुष्क है। जलवर्षा यहाँ ६ से लेकर १२ इंच तक तथा हिमवर्षा १२ इंच से भी अधिक होती है। वार्षिक तापक्रम का औसत हिमबिन्दु से नीचा ही रहता है। याकुत्स्क के स्थान पर यह नदी सात माह तक जमी रहती है।

वर्षा कम होने के कारण टैगा के वनों के स्थान पर घास के मैदान ही पाये जाते हैं। यहाँ पर कुछ भागों में उपजाऊ काली मिट्टी पाई जाती है। फलस्वरूप कृषि यहाँ का प्रधान धन्धा है। आज से २० वर्ष पहले यहाँ का कृषि क्षेत्र २२५००० एकड़ था। आजकल यहाँ गेहूँ व जौ के अलावा चारा-भूसा तथा तरकारियाँ उत्पन्न की जाती हैं। मनुष्य कृषि के साथ-साथ मछलियाँ पकड़ते हैं, समूर एकत्रित करते हैं तथा रेनडीयर पालते हैं।

लेना नदी एक नाव्य नदी है। यहाँ सर्वप्रथम १८७८ में स्टीमर चलाया गया था, आजकल इसमें सैकड़ों स्टीमर चलते हुए दिखलाई देते हैं। इन स्टीमरों के लिए कोयला सुंगर खाई तथा कंगालस की खानों से दिया जाता है। कोयले का उत्पादन इन दोनों खानों का सन् १९४२ में २५०००० टन था।

यहाँ का सबसे प्रसिद्ध नगर याकूटस्क है। इस नगर में चौड़ी चौड़ी सड़कें तथा लकड़ी के बने हुए इकमंजिले मकान मिलते हैं। यह लेना नदी के किनारे उस स्थान पर स्थित है जहाँ इसके पाट में अनेक द्वीप हैं। बाढ़ का इस नगर पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता।

(८) उत्तर-पूर्वी पर्वतीय प्रदेश:--इस भाग में वही पर्वत श्रेणियां पाई जाती हैं, जो मध्य एशिया के उत्तर-पूर्व की ओर कमचटका तक चली गई हैं। इसके उत्तर-पूर्वी कोने में चेरिस्की श्रेणी समुद्र सतह से ९८४३ फुट ऊँची है। सोवियत रूस में सबसे अधिक ज्वालामुखी पर्वत कमचटका प्रायद्वीप पर ही मिलते हैं। कुल संख्या इनकी १२७ है, इनमें से कदाचित् १९ जीवित अवस्था में हैं। सबसे ऊँचा इनमें क्लूचेविस्कया है। दूसरी शिखा शटुबेलिया है, इसके विस्फोट की राख योरोप तक में जाकर गिरी थी ऐसा कहा जाता है।

यहाँ की जलवायु अत्यन्त ठंडी है और इसी लिये यह भाग 'आइस बोक्स' के नाम से प्रसिद्ध है। वर्खोयानस्क तथा ओइमेकन निश्न के सबसे ठंडे स्थानों में से हैं। वर्खोयानस्क का औसत जनवरी तापक्रम -५६° फा० तथा न्यूनतम तापक्रम -९०° फा० रहता है। ओइमेकन के बारे में विशेषज्ञों का कथन है, कि भविष्य में यह वर्खोयानस्क से भी कम तापक्रम अंकित करेगा। [illegible] नगर के निकटवर्ती क्षेत्र (२७००० वर्ग मील) में कुल [illegible] मनुष्य रहते हैं।

पहले लोग यह सोचते थे, कि ये भाग कृषि के दृष्टिकोण से व्यर्थ हैं, परन्तु प्रकृति से लड़ने के पश्चात् वैज्ञानिकों ने यहाँ तरकारियाँ उगानी आरम्भ करा दी हैं।

दक्षिण के भाग में कुछ अनाज भी उगाया जाने लगा है। वर्षा बहुत कम होती है। मानसून से कमचटका प्रायद्वीप पर ४०इन्च के लगभग वर्षा हो जाती है।

इस प्रायद्वीप के चारों ओर समुद्र से मछलियां पकड़ी जाती हैं। परन्तु प्रकाश व गर्मी उपयुक्त न होने के कारण बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। व्हेल मछली यहाँ पकड़ी जाती है और उसका तेल भी प्राप्त किया जाता है। अन्य खाने वाली मछलियों में सालमन, कोड हेरिंग व केब विशेषतौर पर पकड़ी जाती हैं। अपर कोलिमा की घाटी में थोड़ा सा सोना प्राप्त किया जाता है।

कमचटका प्रायद्वीप का सबसे बड़ा नगर व बन्दरगाह पेट्रोपवलोवस्क है। यह विश्व के सबसे सुन्दर बन्दरगाहों में गिना जाता है।

(६) **दूर पूर्वी भाग:**—इस भाग में प्रधानतया आमूर एशिया की एक प्रसिद्ध नदी है जोकि पूर्व में प्रशान्त महासागर में गिरती है। बायें तट पर इसकी सहायक नदियाँ ज़ीया तथा ब्यूरिया हैं और दायें तट पर सुंगारी है। खाबारोवस्क नगर का एक समतल भाग इस बेसिन के मध्य में है। यह मैदान खानका नामक झील तक चला गया है। इस समतल भाग के पूर्व सिखोता अलिन तथा पश्चिम में लिटिल खिनगन पर्वत हैं। इसके पश्चिम में ब्यूरिया-जिया नामक मैदान स्थित है।

यहां की जलवायु महाद्वीपी है, परन्तु प्रशान्त महासागर से आने वाले मानसून से बहुत अधिक प्रभावित होती है। शीत ऋतु में आन्तरिक उच्च भार वाले भागों से बहुत ही तीव्र ठंडी एवं शुष्क हवायें चलती हैं। इस ऋतु में तापक्रम हिम बिन्दु से भी नीचा हो जाता है, ग्रीष्म ऋतु में समुद्र से हवायें आन्तरिक निम्न भार वाले क्षेत्र की ओर आकर्षित होती हैं। ये हवायें समुद्र से अपने साथ नमी लाती हैं। ब्लाडीवोस्टक में औसत वर्षा केवल २२ इन्च होती है।

यहां पर नुकीली पत्ती वाले वन पाये जाते हैं। इनमें पाइन, कोरियन-पाइन, स्प्रूस फर तथा लार्च के वृक्ष मिलते हैं। दक्षिणी भाग में पतझड़ वाले वृक्ष भी मिलते हैं। कृषि यहाँ के लोगों का मुख्य धन्धा है। कोरिया के कृषक ब्लाडीवोस्टक के उत्तर तक कृषि करते हैं। यहां की प्रमुख उपजों में गेहूं, राई, ओट तथा जौ हैं। इनके अलावा चुकन्दर व तरकारियाँ भी उत्पन्न की जाती हैं।

इस भाग में अनेक खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं, यह भविष्य में बहुत उन्नति कर जाने की आशा रखता है। कोयला ब्यूरिया के क्षेत्र से लोहा लिटिल खिनगन से प्राप्त होता है; फलस्वरूप कोमसोमोलस्क (Komsomolsk) के स्थान पर एक लोहे व इस्पात का कारखाना स्थापित कर दिया गया है। जापान सागर के

निकट लेड व जिंक भी प्राप्त होती हैं। कोमसोमोलस्क एक अत्यन्त प्रसिद्ध नगर है। यहाँ पर स्पात के कारखानें तथा जहाजों के यार्ड हैं। खाबारोवस्क नगर ट्रांस साइबेरियन रेलवे पर स्थित है।

ब्लाडीवोस्टक पूर्वी तट पर रूस का एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है। यह साल भर बर्फ तोड़ने वाली मशीनों की सहायता से खुले रहते हैं। निकट से ही बिटुमिनस कोयला प्राप्त हो जाता है। प्रथम एवं द्वितीय महायुद्धों के समय इसका व्यापार ठप हो गया, परन्तु अब यह पुनः निकटवर्तीय देशों से व्यापार करने लगा है।

(१०) साखालीन तथा क्यूराइल द्वीपः—द्वितीय महायुद्ध के समय से समस्त साखालीन द्वीप सोवियत रूस के अधिकार में आ गया है, पहले इसका आधा भाग जापान के अधिकार में था। सत्रहवीं शताब्दी में भी यह इसके ही पास था, परन्तु बाद में इस पर जापानियों ने अधिकार कर लिया था, और आधे दक्षिणी भाग का नाम काराफूटो रख दिया था। इस द्वीप में दो पर्वत श्रेणियां हैं, इनके मध्य में एक निम्न भूभाग घाटी के रूप में है। तटीय भाग बहुत तंग समतल मैदान के रूप में है।

यहाँ की जलवायु बहुत ठंढी है। वर्ष के आधे समय तक बराबर शीत ऋतु में कड़ी सर्दी पड़ती है। धरातल पर एक गज मोटी बर्फ की पर्त जम जाती है। ग्रीष्म ऋतु बहुत नम होती है, क्योंकि समुद्र का प्रभाव पड़ता है और साथ ही २५ इन्च औसत वर्षा भी हो जाती है। इस द्वीप के बन्दरगाह बर्फ से बराबर ढके रहते हैं। जिन भागों में तेल निकाला जाता है, वह आठ माह तक कार्यक्रम रहित रहते हैं।

इस द्वीप की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक है। लकड़ी, मछली तेल तथा कोयला विशेषतौर से प्राप्त होते हैं। कृषि में बहुत धीरे धीरे विकास हो रहा है। क्योंकि कृषि करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है जैसे कम उपजाऊ मिट्टी, कम लम्बी ग्रीष्म ऋतु तथा कम प्रकाश इत्यादि। यहाँ की प्रमुख उपजों में ओट, आलू तथा मटर हैं। धान उत्पन्न करने की चेष्टा जापानियों ने यहाँ की थी, पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हुई। मछली पकड़ने का उद्योग यहाँ का एक प्राचीन उद्योग है। निकटवर्तीय समुद्रों से अनेक खाने योग्य मछलियाँ प्राप्त होती हैं। हेरिंग, सालमन, कॉड तथा और कुछ उदाहरण हैं। इन्हें डिब्बों में बन्द करके संयुक्त राज्य अमरीका भेजी जाती हैं। बहुत सी मछलियों से तेल निकाला जाता है, तथा खाद तैयार की जाती है। जो लोग शीत ऋतु में लकड़ी काटते हैं, वे ग्रीष्म ऋतु में मछली पकड़ते हैं।

पर्वतीय भाग नुकीली पत्तियों वाले वनों से ढके हुए हैं। इन वनों के वृक्ष ठिगने होते हैं। इनसे कागज की लुग्दी बनाने के काम आता है। मुख्य वृक्षों में पाइन, फर, लार्च बर्च एम तथा विलो हैं। लकड़ी काटने का कार्य यहाँ मछली पकड़ने के धन्धे से कहीं अधिक होता है।

इस द्वीप पर खनिज पदार्थ भी मिलते हैं। कोयला का रिजर्व तो पर्याप्त हैं, परन्तु प्रकार बहुत घटिया है। द्वीप के आधे उत्तरी भाग में पेट्रोलियम प्राप्त होता है। ओखा प्रसिद्ध केन्द्र है।

साखालीन के पूर्व में एक द्वीप माला है, जो होकेडो से कमचटका तक फैली हुई है। इसमें बत्तीस द्वीप कुल मिलाकर हैं, प्रत्येक द्वीप ज्वाला मुखी पर्वत हैं। इसलिए रूसी इसे धुयें (Smoke) के नाम से पुकारते हैं। वर्षा यहाँ मध्य सितम्बर से जून तक गिरती है। ग्रीष्म ऋतु में ओस गिरती है।

क्यूराइल द्वीप मछली पकड़ने के स्थान हैं। यहाँ पर जापानी लोग मछली पकड़ते थे। ये लोग प्रायः ग्रीष्म ऋतु में अपनी नावों में बैठ कर क्यूराइल की तरफ मछली पकड़ने जाते थे। यहाँ इन लोगों को सालमन, कोड तथा क्रेब नामक मछलियाँ मिलती थीं। इन द्वीपों पर समूर वाले भालू व लोमड़ी भी पाये जाते हैं। दोनों द्वीपों का वातावरण समान है। समुद्र का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है।

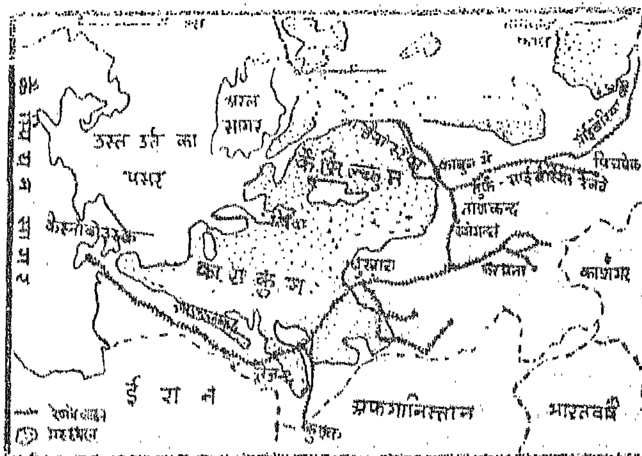
(स) मध्य एशिया के प्राकृतिक खंड

(१) अरल बालकश मरुस्थलः—इस भाग में काराकुम तथा किजिल कुम के मरुस्थल स्थित हैं। यह आमू नदी के दोनों ओर दूर दूर तक पाये जाते हैं। वनस्पति न होने के कारण इन मरुस्थलों का रेत इधर उधर उड़ा करता है। सरदरिया के पूर्व में गोलोदनया के स्टेप्स पाये जाते हैं। यह अन्य क्षेत्रों से कुछ ऊँचे व नम हैं। चू नदी के उत्तर में हंगर स्टेप मिलते हैं, इनके दक्षिण में बालकश के अर्ध स्टेप स्थित हैं। उत्तर की ओर कजख की पहाड़ियाँ मिलती हैं। यह घिस घिस कर समतल हो गई हैं और अब इन्हें किरगीज स्टेप्स कहते हैं।

इस भाग की नदियों की संख्या वैसे तो बहुत कम है, परन्तु इनमें से बहुत कम ऐसी हैं, जिनमें बराबर जल भरा रहता है। कुछ तो ऐसी हैं जो मरुस्थल में ही लुप्त हो जाती हैं। प्रमुख नदियों में रेत के टीले मिलते हैं, इन टीलों के कारण इनमें नाव व स्टीमर चलाना बड़ा कठिन हो जाता है। कजाकस्तान के भाग में लगभग पाँच हजार झीलें हैं, इनमें से बहुत सी अस्थाई रूप में पाई जाती हैं। यहाँ अरल सागर तथा बालकश झीलें ही दो महत्त्वपूर्ण जलाशय हैं। इन जलाशयों की

गहराई तीस से लेकर साठ फुट तक है। बालकश झील के पश्चिमी भाग जहाँ इली नदी गिरती है मीठा जल मिलता है, शेष भाग में खारी।

इस भाग में खारी मिट्टी मिलती है, परन्तु कहीं कहीं पर मरुस्थलीय रेत भी है, जो कि बहुत उपजाऊ है। किन्तु जल के अभाव के कारण यह कृषि की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। अधिकतर यहां कांटेदार झाड़ियां व घास ही उगती दिखाई देती है।



रूसी तुर्किस्तान व रेलवे लाइनें

यह एक शुष्क भाग है, यहां वर्षा बहुत कम होती है। वार्षिक वर्षा का औसत ८ इंच है परन्तु कहीं कहीं पर यह औसत ४ इंच से भी कम है। शीत ऋतु में जब कभी भी उत्तर से ठंडी हवायें चलती हैं तो जनवरी का औसत तापक्रम हिम-बिंदु से नीचे गिर जाता है। आमू दरिया के डेल्टे के भाग में लगभग ऐसे वातावरण में १४° फ० हो जाता है। ग्रीष्म ऋतु का तापक्रम कुछ अधिक हो जाता है, जुलाई के दिनों में यह ८०° फ० व ८५° फ० से कम नहीं रहता।

कजाकस्तान के क्षेत्र में एक करोड़ से अधिक मवेशी पाले जाते हैं। इनमें से कुछ तो उत्तर के कृषि क्षेत्र में हैं और शेष दक्षिण के मरुस्थलों में। बहुत से बंजारे अब कृषि करने लगे हैं। द्वितीय महायुद्ध के समय से यहां कृषि में बड़ी उन्नति हुई है। इस भाग से कपास, ऊन, मांस तथा अनाज इत्यादि वस्तुएं बाहर भेजी जाती हैं।

यहां पर अनेक खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं। कारागन्डा कोयले की खान से प्रतिवर्ष १६० लाख टन कोयला कोरनाद की खान से तांबा, अश्काबाद से गंधक तथा चिमकेंत से लीड प्राप्त होता है।

इस क्षेत्र के प्रमुख नगरों में अश्काबाद, नेबो उरगेंच तथा खिवा महत्वपूर्ण है। इनके अलावा फ्रुन्ज़ तथा आल्मा–आता दो और उल्लेखनीय है।

(२) दक्षिणी तूरान प्रदेश:—यह एक प्राचीन भू भाग है। इसका इतिहास अद्वितीय है, हजारों वर्षो से यहां के लोग शुष्कता से युद्ध लड़ते आये हैं परन्तु अब भी इन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हुई है। समस्त सोवियत मध्य एशिया को तुर्किस्तान नहीं कहा जा सकता, क्योंकि खिरगीज लोग उत्तरी पहाड़ों पर रहते हैं, यद्यपि खिरगीज स्टेप कजखस्तान में स्थित हैं। दक्षिणी तूरान प्रदेश में तीन यूनियन रिपब्लिकें हैं। सबसे बड़ी कजख (१०५६७०० वर्ग मील) उसके बाद तुर्कमिनिया (१७१२५० वर्ग मील) और फिर पूर्व की ओर उजबेक (१४६०० वर्गमील) है।

इस जगह जिन नखलिस्तानों का वर्णन किया जारहा है वह मारी (मर्व) से लेकर पूर्व में ताशकन्द तक पहाड़ियों के नीचे फैला हुआ है। कुछ नखलिस्तानों का वर्णन मरुस्थलीय भाग में किया जायेगा। मुरगेब की घाटी में मारी एक अति प्राचीन नगर है। आमू दरिया पर चार्डजाऊ स्थित है, और पूर्व में जिरवशान की घाटी है, जिसमेंसमर कन्द तथा बुखारा जैसे प्राचीन नगर पाये जाते हैं। समरकन्द प्राचीन नगर इमारतों के लिए बहुत प्रसिद्ध है। उत्तरी सरदरिया पर फरगना की घाटी में अनेक महत्वपूर्ण नगर स्थित हैं, यह घाटी १८० मील लम्बी और १०० मील चौड़ी है। लेनिनाबाद (खोजेन्ट) फरगना खोकन्द तथा आश जैसे नगर इसमें स्थित हैं। यह भाग बहुत घने बसे हुये हैं। चिरचिक नदी जो कि सरदरिया की सहायक नदी है, एक महत्वपूर्ण नदी है, इस पर ताशकन्द नगर स्थित है, कुछ ऊपर की ओर चिरचैन्ट बसा हुआ है। ताशकन्द यहां का एक बहुत प्रसिद्ध औद्योगिक केन्द्र है।

जब ये नदियां मैदानी भाग में आती हैं तो वहां इनमें कोई भी सहायक नदी नहीं मिलती यह सूखकर कुछ छोटी भी हो जाती है। बहुत सी छोटी छोटी नदियां जो कि फरगना की घाटी में प्रवेश करती हैं सरदरिया तक पहुँचने में असमर्थ रहती हैं। यहां तक कि जिरवशान भी मरुस्थल में ही लुप्त हो जाती है और आमू दरिया तक नहीं पहुँचती। चौथी शताब्दी में भी यह इसी प्रकार की थी इससे पता चलता है कि जलवायु में उस समय से लेकर अब तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

यहाँ की जलवायु महाद्वीपी है। जुलाई में अधिक से अधिक तापक्रम १२२° फ० तथा औसत ८६.६° फ० रहता है। ग्रीष्म व शीत ऋतु का तापान्तर ५००° फ० रहता है। शीत ऋतु बहुत ठंढी होती है और तापक्रम कभी कभी हिम विन्दु से भी नीचे पहुँच जाता है। वैसे साधारणतया रातें ठंडी तथा दिन गर्म व बादल रहित रहता है। वर्षा बहुत कम होती है और वह भी कभी कभी। ताशकन्द की औसत वर्षा चौदह इन्च है, परन्तु बुखारा केवल चार ही इन्च वर्षा प्राप्त करता है।

सिन्चाई की ओर यहाँ विशेष ध्यान दिया जाता है। बहुत से नखलिस्तान तो एल्युनियल फैन पर स्थित हैं। यह समुद्र सतह से एक या डेढ़ हजार फुट ऊँचे हैं। इन भागों में बड़ी उपजाऊ मिट्टी हवाओं द्वारा एकत्रित हो गई है। कुछ नहरें शताब्दियों पुरानी हैं। फरगना की घाटी में शुष्क भागों की ओर जल की पूर्ण व्यवस्था की गई है। *करेज़ या कनात (Underground tunnels are known as 'Karez' they are also found in Iran and Sinkiang) यहाँ भी मिलते हैं।

कपास यहाँ की प्रमुख उपज है। यह बोई हुई भूमि के दो-तिहाई भाग में उत्पन्न की जाती है। इसके अतिरिक्त यहाँ गेहूं, चावल व जौ प्रमुख अनाज हैं, जो कि समस्त भाग में उगाया जाता है। अब यहाँ चुकन्दर की खेती भी होने लगी है। यहाँ भाँति भाँति के फल भी उत्पन्न होते हैं, जैसे अंगूर, सेव, नाशपाती, तरबूज एपरीकोट तथा चैरी इत्यादि।

यह भाग खनिज पदार्थों के लिये भी बहुत प्रसिद्ध है। कोयला व पैट्रोलियम फरगना की घाटी में पाया जाता है। निकटवर्तीय पर्वतों से तांबा, जिन्क, लेड, सोना चाँदी तथा आरसेनिक इत्यादि वस्तुयें मिलती हैं। कुछ स्थानों पर विद्युत शक्ति भी उत्पन्न की जाती है। अब यहाँ उद्योग धन्धों में भी उन्नति हो रही है। एक लोहे व इस्पात का कारखाना ताशकन्द में खोल दिया गया है।

अपनी प्राचीन कला के लिये ये नखलिस्तान बहुत प्रसिद्ध रहे हैं। दरियाँ व कालीन बुनना, धातुओं व चमड़े की वस्तुयें तैयार करना तथा मिट्टी के बर्तन बनाना, इन लोगों के प्राचीन धन्धे हैं, इन धन्धों में इनकी कला का प्रमाण मिलता है। स्थाई रूप से रहने वाले तथा बंजारों में प्रायः झगड़े हुआ करते हैं।

समरकन्द एक प्रसिद्ध नगर है, यह जिरफशान नदी पर स्थित है। इसका इतिहास अति प्राचीन है, और अनेक राजे महाराजे इस पर चढ़ाई करते रहे हैं।

बुखारा भी अपने प्राचीन इतिहास के लिये प्रसिद्ध है। जितने भी नखलिस्तान इस भाग में मिलते हैं वे सब पेकिंग से भूमध्य सागर जाने वाली सड़क पर ही पड़ते हैं। इसी मार्ग से मार्कोपोलो गया था, तथा इसी पर रेशम, पोरसीलीन एवं अन्य कला की वस्तुयें चीन व भारत से यूनान, इटली व मिश्र को जाया करती थीं। समरकन्द बुखारा तथा मर्व पर पश्चिमी व पूर्वी देशों के व्यापारी भी मिला करते थे।

(३) पामीर पठार एवं श्रेणियाँ:—सोवियत रूस का विस्तार पामीर तक है। पामीर के क्षेत्र में एक पठार है (**Hunttington has described the Tienshan as a pleateau**) जो 'भूमंडल की छत' के नाम से प्रसिद्ध है। इस से सम्बन्धित अनेक श्रेणियाँ हैं, जो रूस के ही क्षेत्र में शामिल हैं। यहाँ पर दो श्रेणियाँ बहुत ऊँची हैं, प्रथम-माउन्ट स्टालिन (२४५८४ फुट) तथा द्वितीय—माउन्ट लेनिन (२२३७७ फुट) इस भाग में आमू नदी से लेकर जुंगेरिया तक लगभग एक हजार मील में पर्वत श्रेणियाँ फैली हुई हैं।

यहाँ पर अनेक पर्वत श्रेणियाँ मिलती हैं। 'भूमंडल की छत' लगभग बारह सौ फुट ऊँची है, इसमें पाँच से लेकर दस मील चौड़ा अनेक घाटियाँ मिलती हैं। चारों ओर ये पहाड़ियों से घिरी हुई हैं। इन घाटियों का विस्तार आमू व सर दरिया के मध्य में है। पामीर के उत्तर में त्यानशान पर्वत हैं। यह पर्वत चीन तक चले गये हैं। केवल सर व ईली दरिया के मध्य त्यानशान के भाग रूस के क्षेत्र में सम्मिलित हैं। इन पहाड़ों के चारों ओर निम्न श्रेणियों पर अनाच्छादीकरण बहुत हुआ है। त्यानशान का समस्त भाग कमजोर चट्टानों का बना हुआ है, इसीलिये यहाँ प्रायः भूकम्प आया करते हैं। गत वर्षों में यहाँ कई भूकम्प आये थे। इन पर्वतों पर कई ग्लेशियर भी पाये जाते हैं। फेडचेन्को नामक ग्लेशियर ४८ मील लम्बा है, यह ट्रांस-अलाई की श्रेणी पर स्थित है।

यहाँ पर बहुत कम जनसंख्या पाई जाती है, क्योंकि जलवायु अनुकूल नहीं है। शीत ऋतु बहुत ठंडी रहती है। कुछ भागों में गर्मी केवल ग्रीष्म ऋतु में ही पड़ती है। समस्त क्षेत्र शीत ऋतु में बर्फ से ढका रहता है। वर्षा कुछ ही भागों में होती है।

वन केवल सीमित क्षेत्रों में ही मिलते हैं, इनके ऊपर व नीचे स्टेपलैंड होते हैं। इन स्टेपलैंड पर घोड़े, भेड़ बकरी तथा गाय-भैंसे पाली जाती हैं। कृषि केवल निम्न भागों में नहीं होती है, जहाँ सिन्चाई की पूर्ण व्यवस्था है। कुछ नहरें तो बहुत प्राचीन हैं, परन्तु अब भी सिंचाई के हेतु जल प्रदान कर रही हैं। त्यानशान की

घाटी में अंगूर, चावल, कार्न, ज्वार-बाजरा, जौ, पीचैज़ अंगूर तथा एपरीकोट इत्यादि वस्तुयें विभिन्न ऊंचाइयों पर उगाई जाती हैं।

इन पर्वतों पर अनेक कारवां मार्ग पाये जाते हैं। इन मार्गों की घाटियाँ शीत ऋतु में प्राय: बर्फ से ही ढकी रहती है। तिरेक घाटी (Terek Pass) द्वारा एक प्रसिद्ध मार्ग तारिम बेसिन में प्रवेश करता है। इसी मार्ग से मार्कोपोलो भी गया था। अन्य मार्ग उत्तरी भारत, काश्मीर तथा अफगानिस्तान को जाते हैं। एक मार्ग ईली घाटी को तथा दूसरा जुंगेरिया को भी जाता है।

अब इन सड़कों को पक्का मोटर चलाने योग्य बना दिया गया है। अन्य कुछ नई सड़कें भी बना दी गई हैं।

(४) कैस्पियन मरुस्थल:—कैस्पियन सागर का भाग एक निम्न भाग है। कहा जाता है कि ग्लेशियर युग के समय इस सागर का काले सागर से सम्बन्ध था। यह एक आन्तरिक सागर है, जो कि समुद्र सतह से ८५ फुट नीचा है। लगभग सत्तर प्रतिशत जल यह वाल्गा नदी से तथा सत्रह प्रतिशत वर्षा से प्राप्त करता है। बहुत सा जल प्रतिदिन भाप बनकर उड़ जाता है। जलवायु की दशाओं पर इस सागर का तल भी परिवर्तित होता रहता है। यदि वाल्गा नदी के जल का रुख बदल दिया जायेगा तो इस सागर की सतह और भी नीची हो जायेगी। इसके लिये आमू दरिया की एक शाखा इसमें गिराई जाने की योजना है। ग्रीष्म ऋतु में वाल्गा के निकट इस सागर का तल कुछ ऊँचा हो जाता है।

कैस्पियन सागर के निकटवर्तीय क्षेत्र मरुस्थल हैं। इन मरुस्थलों में क्वाटरनरी युग की मिट्टी मिलती है, हवाओं तथा इस समुद्र ने इस मिट्टी का ऊपरी रूप कुछ परिवर्तित कर दिया है।

शीत ऋतु में ठंढी हवाओं के दबाव के कारण तापक्रम उत्तरी कैस्पियन सागर में—२२° फ० हो जाता है। ग्रीष्म ऋतु में पूर्व की ओर से गर्म व शुष्क हवायें चलती हैं, ये हवायें ११०° फ० तापक्रम कर देती हैं। ये गर्म हवायें जो भारत में 'लू' कहलाती हैं, यहाँ सुखोवी (Sukhovey) के नाम से प्रसिद्ध हैं।

इस भाग में वर्षा का औसत चार से बारह इंच है। भाप बनने की मात्रा वर्षा की मात्रा से कहीं अधिक है। शुष्क ऋतु में वाल्गा व यूराल नदियों का भी तल गिर जाता है।

यहाँ पर भूमि में अधिक उन्नति नहीं की गई है। फसलें केवल उन्हीं स्थानों पर बोई जाती हैं, जहाँ सिंचाई की पूर्ण व्यवस्था है। उत्तरी कैस्पियन सागर में

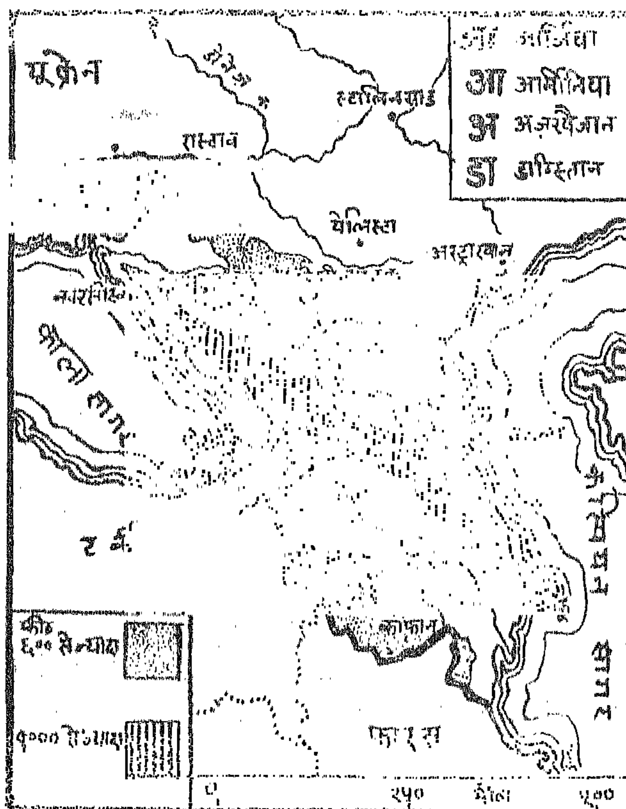
स्टरजियन व कैवियर नामक मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। यहाँ के बंजारे विशेषतः कलमुक लोग भेंड़ व ऊँट पालते हैं।

इस भाग में कुछ खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं, परन्तु इनमें तीन ही महत्वपूर्ण हैं, पेट्रोलियम, बोरेक्स तथा नमक। पेट्रोलियम एम्बा नदी के किनारे-किनारे जो नमक के गुम्बज मिलते हैं, उनके नीचे से प्राप्त किया जाता है। पाइप लाइनों द्वारा यह अन्य क्षेत्रों में साफ करने के हेतु भेज दिया जाता है। इन्दर (Inder) झील से बोरेक्स प्राप्त होता है। उत्पादन की दृष्टि से संयुक्त राज्य अमरीका के बाद इसका स्थान आता है। कैस्पियन सागर के पूर्व में काराबोगाज की खाड़ी है, जो लगभग १३० गज चौड़ी है। इस खाड़ी में कोई भी नदी आकर नहीं गिरती। यहाँ से नमक, सोडियम सल्फेट तथा अन्य रसायन प्राप्त किये जाते हैं।

अस्त्राखाँन यहाँ का प्रसिद्ध नगर है। यह नगर वाल्गा की एक शाखा पर स्थित है। इस नगर में अनेक उद्योग-धन्धे स्थापित हो गये हैं, जैसे मछलियों को डिब्बों में बन्द करना तथा लकड़ी का सामान बनाना। पेट्रोलियम कैस्पिय के अन्य भागों में यातायात करके अन्य क्षेत्रों में भेज दिया जाता है।

(५) काकेशस प्रदेश:—इस प्रदेश के विषय में कहा जाता है कि यह आत्म निर्भर है, इसकी स्थिति काले व कैस्पियन सागर के मध्य बड़ी महत्वपूर्ण है। इस पर्वतीय भाग में तीन विस्तृत श्रेणियाँ हैं, ग्रेटर काकेशस कैस्पियन सागर पर स्थित बाकू के स्थान से उत्तर-पश्चिम में काले सागर तक है। यदि देखा जाय तो क्रीमियाँ में भी यही श्रेणी पुनः दृष्टिगोचर होती है। लेसर काकेशस श्रेणी उत्तर आरमीनियाँ की गांठ तथा तुर्की का भाग शामिल करती है। इन श्रेणियों को मिलाती हुई एक श्रेणी मध्य में सुरम नाम की है। इन पर्वत श्रेणियों के मध्य अनेक गहरी गहरी घाटियाँ हैं। पश्चिम में रिओन तथा कोलश्चिस की घाटियाँ तथा पूर्व में आइबेरियन निम्नभूमि है। ग्रेटर काकेशस मुड़े हुये पर्वत हैं, पश्चिम में आग्नेय चट्टानें पाई जाती हैं, यहाँ एल्बुर्ज सबसे ऊँची शिखा है। इस श्रेणी में लगभग डेढ़ हजार ग्लेशियर हैं। समस्त श्रेणी का धरातल बहुत ऊंचा नीचा है। प्रायः इस श्रेणी में कभी कभी भूकम्प भी आया करते हैं। सुरम नामक श्रेणी रिओन तथा कुरा नदियों को अलग करती है। इस श्रेणी पर तीन हजार फुट की ऊँचाई पर अनेक घाटियाँ पाई जाती हैं। लेसर काकेशस श्रेणी एक उठा हुआ ब्लॉक है, इस पर छै हजार से दस हजार फुट तक की ऊँचाई पर अनेक ज्वालामुखी पर्वत मिलते हैं। सबसे ऊंचा तुर्की की सीमा पर अरारत है। इस श्रेणी के मध्य में सिवान

नामक एक सुन्दर झील है। काकेशस पर्वत अल्पाइन पर्वत कहलाते हैं। बनावट की दृष्टि से यह पर्तदार चट्टानों के बने हुये हैं।



काकेशस प्रदेश

यहाँ का मानव इतिहास अति प्राचीन है। [illegible] कर रहे हैं तथा अन्य जातियों के आने के मार्ग भी रहे हैं। [illegible] प्राचीन काल में व्यापार के दृष्टिकोण से बड़ी महत्वपूर्ण थीं। रोमन व एसीरिया के व्यापार इन्हीं घाटियों द्वारा होते थे।

इस पर्वतीय भाग में अनेक जातियाँ रहती हैं। आज़र बाइजान, ज्योर्जिया, आरमीनियाँ, रूसी, ओसेशियन, अब्खाज़ियन, अजारियन, यूनानी, कुर्द तथा [illegible] इत्यादि उल्लेखनीय हैं। इस भाग में रूस की तीन रियासतें हैं—प्रथम-

ज्योर्जियन एस० एस० आर०, द्वितीय आरमीनियन एस० एस० आर० तथा तृतीय आजरबाईजान एस० एस० आर०। तीनों का क्षेत्रफल अस्सी हजार वर्गमील है।

यहाँ की जलवायु पर भूमध्य सागरीय जलवायु का गहरा प्रभाव पड़ता है। ऊँचाई के अनुसार जलवायु में भिन्नता हर स्थान पर है। भूमध्य सागरीय तट पर पर्याप्त वर्षा हो जाती है। बाटुमी ९३ इंच वर्षा प्राप्त करता है। पश्चिम में कैस्पियन सागर का तट बहुत शुष्क है, यहाँ बाकू के स्थान पर केवल ९ इंच वर्षा होती है। इस भाग में ग्रीष्म ऋतु में कड़ी गर्मी तथा शीत ऋतु में कड़ी सर्दी पड़ती है। ग्रेटर काकेशस के कारण ठंडी उत्तर की हवायें दक्षिण की ओर नहीं आ पातीं। सुरम श्रेणी की वजह से पश्चिम की नम हवायें पूर्व में कैस्पियन सागर तट तक आने में असमर्थ रहती हैं। आन्तरिक निम्न भाग का वातावरण बाल्कन प्रायद्वीप के उत्तरी भाग के समान है। काले सागर के तट पर जलवायु बहुत ही अच्छी पाई जाती है।

यहाँ की प्राकृतिक वनस्पति में अनेक प्रकार के वृक्ष मिलते हैं। ऊँचाई के अनुसार इसमें भी परिवर्तन मिलता है। पतझड़ वाले वन श्रेणियों के निम्न ढालों पर पाये जाते हैं। उसके ऊपर नुकीली पत्ती वाले वन मिलते हैं। यहाँ के चरागाह बड़े ही सुन्दर हैं, इनमें विभिन्न प्रकार के फूल उग आते हैं, इन फूलों की किस्में ६ हजार से अधिक बतलाई जाती हैं।

यहाँ के लोगों का प्रधान धन्धा कृषि करना है। यहाँ पर विभिन्न प्रकार की फसलें बोई जाती हैं। कार्ण (Corn) यहाँ प्राचीन काल से ही बोया जाता है। अन्य उपजों में कपास तम्बाकू तथा अंगूर प्रसिद्ध हैं। यहाँ हर प्रकार के भूमध्य सागरीय फल भी उत्पन्न होते हैं। रसदार फल, चाय, तुंग का तेल, कार्क, नकली फ्लैक्स तथा बांस भी उगाये जाने लगे हैं। जिन भागों में सिंचाई की व्यवस्था हो गई है, उन भागों में कृषि में काफी उन्नति हो रही है। अंगूर से उच्च कोटि की शराब भी तैयार की जाती है। पशुओं से ऊन व चमड़ा भी मिलता है।

काकेशस का भाग खनिज पदार्थों में धनी है। पेट्रोलियम के लिये यह जगत प्रसिद्ध है। बाकू के निकट अनेक तेल के कुएँ मिलते हैं, आजकल इसका उत्पादन समस्त रूस के उत्पादन का आधा है ग्रोजनी तथा माइकोप भी तेल प्राप्त करने के स्थान हैं। दो पाइपलाइनें बना दी गई हैं, एक बाटुमी तथा दूसरी ट्यूप्से तक, परन्तु साधारणतया तेल कैस्पियन से वालगा तक पहुँचा दिया जाता है। अन्य खनिजों में मैंगनीज प्रमुख स्थान रखता है। यह च्यातुरी के स्थान पर निकाली जाती है और तुरन्त पोती भेज दी जाती है। पोती जो काले सागर पर स्थित है, इसको इधर उधर भेज देता है। कुछ स्थानों पर निम्न श्रेणी का कोयला

भी निकाला जाता है। तांबा आरसेनिक, तेगस्तन तथा मोलिब्डनम कुछ ऐसी धातुयें हैं, जो थोड़ी ही मात्रा में प्राप्त होती हैं। कैस्पियन सागर से नमक प्राप्त किया जाता है।

यहाँ के प्रसिद्ध नगरों में तीन ऐसे हैं जिनकी जनसंख्या एक लाख से अधिक है। प्रथम बाकू जो कि आजरबाइजान की राजधानी है। यह एक प्रसिद्ध औद्योगिक नगर होगया है। तेल साफ करने के कारखाने विशेषतौर पर यहाँ पाये जाते हैं। तिफलिस ज्योर्जिया की राजधानी है। यह कुरा नदी की ऊपरी घाटी पर स्थित है। इसमें अनेक आधुनिक भवन व बाजार आदि पाये जाते हैं। तृतीय एरीवन यह आरमीनिया की राजधानी है और काकेशस के उत्तरी ढाल पर स्थित है। अन्य नगरों में ग्रोजनो, किसलोवोडस्क तथा माइकाप प्रसिद्ध हैं।

काले सागर के उत्तर में क्रीमिया का प्रायद्वीप बनावट की दृष्टि से काकेशस का ही एक अंग है, पर धरातल में थोड़ा सा अन्तर अवश्य मिलता है, पर्वत दक्षिण की ओर काफी नीचे हो जाते हैं। उत्तर की ओर ऊँचाई अधिक होने के कारण ठंडी हवायें दक्षिण के भाग में नहीं आ पाती। शीत ऋतु में दक्षिणी तट एक अति रमणीय स्थान हो जाता है। सांस्कृतिक दृष्टि से यह यूक्रेन का ही एक भाग है।

दक्षिण-पश्चिमी एशिया

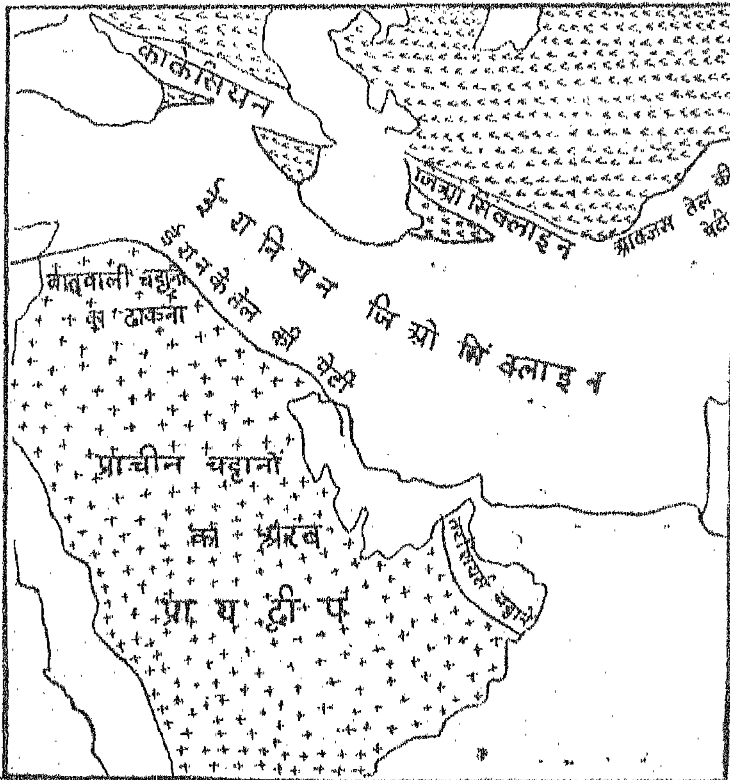
दक्षिण-पश्चिमी एशिया

दक्षिण-पश्चिमी एशिया को बहुत से लेखकों ने 'मध्य पूर्वी' या 'निकट पूर्वी' एशिया का नाम भी दिया है। परन्तु इस नाम पर अभी लेखकों में कुछ मतभेद हैं। साधारणतया हम इस भाग में वह देश शामिल करते हैं, जो पाकिस्तान की पश्चिमी सीमा से लेकर पूर्वी भूमध्य सागर तक पाये जाते हैं। इन देशों में अफगानिस्तान, ईरान ईराक, यमन, साउदी अरेबिया, जोर्डन, इज़राइल, लिबेनन, सीरिया तथा टर्की आदि हैं। सब देशों का क्षेत्रफल कुल मिलाकर २,५००,००० वर्गमील है। यदि एक दृष्टि से देखा जाय तो यह एक बड़े प्रायद्वीप के समान है, क्योंकि तीन ओर से यह पाँच समुद्रों से घिरा हुआ है। दक्षिण में अरब सागर, पश्चिम में लाल तथा भूमध्य सागर, उत्तर में काला तथा कैस्पियन सागर है। उत्तर में यह काकेशस पर्वत की सीमा से सोवियत रूस से अलग है। योरोप बोस्फोरस के स्थान पर तथा अफ्रीका स्वेज के स्थान पर इस भाग से अलग हैं। पूर्वी एशिया के भागों से यह ऊँची ऊँची पर्वत श्रेणियों द्वारा अलग है। पाकिस्तान से किरथर व सुलेमान द्वारा तथा रूसी तुर्किस्तान से हिन्द-कोह (हिन्दुकुश) तथा एल्बुर्ज श्रेणियों से अलग है।

यहाँ के धरातल में उपजाऊ मैदान, बंजर क्षेत्र तथा भूरे मरुस्थल सम्मिलित हैं। ऐसे समतल क्षेत्र बहुत कम हैं जिनमें कृषि होती है। अधिकतर भाग ऐसे ही हैं, जो मरुस्थल हैं। इस प्रकार के धरातल के अतिरिक्त नंगे पर्वत तथा विस्तृत पहाड़ियाँ भी दृष्टिगोचर होती हैं, क्योंकि यह पर्वत तरशियरी युग के हैं, इसलिए प्रायः भूकम्प भी आया करते हैं। कुछ स्थानों पर तो दूर दूर तक छोटी छोटी घास वाले स्टेपलैंड मिलते हैं। मिट्टी कुछ भागों में बहुत उपजाऊ है, परन्तु उपयुक्त मात्रा में जल न होने के कारण व्यर्थ ही पड़ी है। जिन स्थानों पर वर्षा हो जाती है, अथवा नहरें पाई जाती हैं, वहाँ इसकी उपयोगिता बढ़ जाती है। नदियां केवल दो ही महत्वपूर्ण हैं, दजला और फरात। अन्य नदियां बहुत छोटी छोटी हैं, इनमें से कुछ ने तो बहुत ही उपजाऊ घाटियां बनाई हैं।

यहाँ की जलवायु शुष्क है। अधिकतर क्षेत्रों में महाद्वीपीय वातावरण मिलता है। कुछ स्थानों पर उच्च तापक्रम अंकित किया जाता है, क्योंकि ग्रीष्म ऋतु में कड़ी गर्मी पड़ती है। शीत ऋतु में इसके विपरीत बहुत ठंडी नहीं होती, परन्तु कुछ स्थानों पर बहुत कम तापक्रम पाया जाता है। मरुस्थलीय भागों में दिन और रात

के तापक्रम में काफी अन्तर मिलता है। यहाँ वर्षा शीत ऋतु में ही होती है। अक्टूबर से लेकर मई तक बराबर पछुआ हवाओं से वर्षा होती रहती है। इस क्षेत्र के पश्चिमी भाग में भूमध्य सागरीय वातावरण मिलता है। कहीं कहीं पर कम दबाव वाले क्षेत्र स्थापित हो जाते हैं। इन चक्रवातों से भी कुछ भागों में वर्षा हो जाती है। ये चक्रवात आल्पस के दक्षिण तथा काकेशस पर बनते हैं। इन चक्रवातों के मार्ग इस भाग के प्रायः उत्तर में ही रहा करते हैं। जितने ही जितने ये पूर्व की ओर बढ़ते जाते हैं, उतने ही क्षीण होते जाते हैं। फलस्वरूप वर्षा की मात्रा कम होती जाती है। यही कारण है कि पूर्वी ईरान तथा उत्तर-पश्चिमी भारत इतने शुष्क रह जाते हैं। ग्रीष्म ऋतु में इनका मार्ग कुछ उत्तर की ओर हो जाता है।



दक्षिण-पश्चिमी एशिया की रचना

यहाँ की प्राकृतिक वनस्पति बहुत साधारण है। ग्रीष्म ऋतु में अधिक ताप-क्रम के कारण, वनस्पति झुलस कर सूख जाती है, और दूर दूर तक भूरे रंग के

समतल भाग दृष्टि गोचर होते हैं। हरी भरी वनस्पति केवल शीत ऋतु में ही दिखलाई पड़ती है। जिन नम हवाओं के सम्मुख पर्वतीय ढाल पड़ते हैं। वहाँ अधिक वर्षा हो जाती है। मरुस्थलीय भागों में कांटेदार झाड़ियाँ तथा खजूर के वृक्ष और तटीय मैदानों में कृषि उपजें तथा पर्वतीय ढालों पर प्रायः फल उगते हैं।

मध्य पूर्वी देशों में जनसंख्या बहुत घनी नहीं पाई जाती। यद्यपि क्षेत्रफल संयुक्त राज्य अमरीका के बराबर है, परन्तु जनसंख्या उसकी केवल एक तिहाई ही पाई जाती है। जनसंख्या घनत्व केवल उन्हीं स्थानों पर अधिक है, जहाँ नदियों ने उपजाऊ घाटियाँ बनाई हैं, और या मरुस्थलों में जलाशय निकट हैं। अधिक वर्षा वाले क्षेत्र भी घने बसे हुये हैं। मरुस्थलों तथा पर्वतों पर जनसंख्या का घनत्व बहुत ही कम है। जनसंख्या का एक तिहाई भाग कृषि में लगा हुआ है।

यह एक अति प्राचीन भाग है, और यदि मानव स्थापना के दृष्टिकोण से देखा जाय तो एशिया में यह अद्वितीय है। इतिहास का जन्म ही यहाँ से हुआ है। सेमिटिक, ऐसीरियन, बेबीलोनियन, केनाइट, हैब्रूज, फोनेशियन तथा हिट्टाइट इत्यादि लोग यहीं पर बसे हुये हैं। न केवल इतना ही बल्कि इनके बाद आर्य, फारसी, कुर्द तथा अरब, मंगोल तुर्क, ग्रीक तथा रोमन लोग भी यहाँ पर स्थापित हुए। वर्तमान समय में केवल तीन ही जातियों का मिश्रण देखने को मिलता है। अरब के लोग सऊदी अरेबिया, इराक, जोर्डन तथा सीरिया में तुर्क टर्की तथा, ईरान में कुर्द, अफगान यहूदी व तुर्कमिन स्थानीय क्षेत्रों में दृष्टि गोचर होते हैं। वास्तव में यह मुसलमान लोगों का जन्म स्थल है, क्योंकि यहीं से ये लोग भारतवर्ष इन्डोनेशिया रूस अफ्रीका इत्यादि निकटवर्तीय देशों में जा बसे हैं।

अब यदि आर्थिक दृष्टि से इसे देखा जाय तो यह अधिक धनवान दृष्टिगोचर नहीं होता। कृषि बहुत ही सीमित है, वन सम्पत्ति नष्ट हो चुकी है, और खनिज पदार्थों की पूर्ण खोज नहीं हो पाई है। पेट्रोलियम केवल ईरान, अरब कुवाइत तथा ईराक में मिलता है, थोड़ा सा क्रोमियम टर्की में तथा नमक व पोटाश मृत्यु सागर से प्राप्त होजाता है। पेट्रोलियम का कोष यहाँ अनुमान से भी अधिक है। वर्तमान अनुमान के अनुसार यहाँ ११०००००००० बेरेल कोष है। आजकल केवल ईरान का उत्पादन ही लगभग ७००००००० टन है। निकट भविष्य में यदि दशायें अनुकूल रहीं तो तेल का उत्पादन निस्सन्देह बढ़ेगा।

यहाँ उद्योग धन्धों में भी कोई विशेष उन्नति नहीं हुई है। इसका कारण यह है कि औद्योगिक विकास की सुविधायें यहाँ सीमित हैं। जो कुछ भी उद्योग मिलते हैं, वह स्थानीय सुविधाओं के कारण ही उन्नति कर पाये हैं। प्रमुख उद्योगों

में सूती व ऊनी वस्त्र, कालीन व दरियाँ व चमड़े की वस्तुयें तैयार करना, फलों को डिब्बों में बन्द करना तथा अन्य आवश्यकताओं की वस्तुयें तैयार करना है। यातायात के साधनों की कमी होने से इन उद्योगों का विकास अधिक नहीं हो पाया है। यहाँ का धरातल अनुकूल न होने के कारण इस क्षेत्र में उन्नति न हो हुई है। केवल कारवां मार्ग ही हमको ऐसे मिलते हैं जो दूर तक चले गये हैं। अब यहाँ पक्की मोटर गाड़ियाँ चलने योग्य सड़कें बना दी गई हैं। विदेशी व्यापार में निर्यात केवल उन्हीं वस्तुओं का होता है जो यहाँ से काफी मात्रा में प्राप्त होती है। उदाहरणार्थ—पेट्रोलियम, खजूर फल, जैतून का तेल, तथा कालीन दरियाँ, इत्यादि आयात की जाने वाली वस्तुओं में खाद्य पदार्थ, कच्चा माल तथा तैयार की हुई कला कौशल की वस्तुयें हैं।

दक्षिणी पश्चिमी देशों की राजनैतिक दशा गत वर्षों में बड़ी शोचनीय रही है। पेट्रोलियम के झगड़े अभी तक पूर्णतया तय नहीं हुये हैं। कुवाइत तथा ईरान दो ऐसे क्षेत्र हैं, जहाँ कई बार राजनैतिक उथल पुथल हुई है। उधर अरब लोगों के झगड़े अलग ही होते रहते थे। अरब लीग की स्थापना होने से यह कुछ कम हो गये हैं। एक ऐतिहासिक घटना जो वास्तव में गम्भीर थी, वह थी दस लाख यहूदी का इज़राइल में स्थापित होना।

मध्य पूर्वी देशों में सभ्यता का विकास ईसा से हजारों वर्ष पूर्व हो चुका था। यहाँ अब भी वह खंडहर मिलते हैं, जो इस बात को प्रमाणित करते हैं कि यहां के देश तथा सभ्यता पहले कितनी उन्नति पर थे। एसीरिया तथा बेबीलोनिया के खंडहरों से यहां की प्राचीन भौतिक तथा आर्थिक तथा मानवीय दशाओं का अनुमान लगाया जा सकता है। कदाचित देश उस समय इतने शुष्क नहीं थे जितने कि अब हैं। गेहूं यहां की प्रमुख उपज थी। प्राचीन नगरों के चिन्ह अब भी ईराक में दृष्टि-गोचर होते हैं।

यहां के लोगों का रहन-सहन साधारण है। योरोपियन प्रभाव केवल भूमध्य सागरीय तट पर ही पड़ा है। शेष भाग में मुसलमान लोगों जैसा जीवन मिलता है। परन्तु सामाजिक रीति-रिवाजों में कुछ विभिन्नतायें मिलती हैं, यह कई बातों में मिलती जुलती भी हैं। कृषक तथा बंजारों का जीवन बहुत खराब है, परन्तु इनके रहनसहन में विकास होना असम्भव नहीं कठिन अवश्य है। कुछ देशों में यह लोग उन्नति भी कर रहे हैं। आशा की जाती है कि भविष्य में पूर्णतया इनके विचार तथा रहन सहन परिवर्तित हो जायेंगे।

—:o:—

'टर्की'

टर्की पश्चिमी एशिया का एक प्रायद्वीप है, जिसकी सीमा क्षेत्र में कुल क्षेत्रफल की केवल ३ प्रतिशत है। शेष भाग एशिया में सम्मिलित है। इसकी योरोपियन सीमा बुल्गेरिया, ग्रीस, इजियन तथा काले सागरों द्वारा निश्चित होती है। एशियाई टर्की पश्चिम में इजियन सागर, उत्तर में बोस्फोरस जलसंयोजक एवं काला सागर, पूर्व में सोवियत रूस तथा ईरान और दक्षिण में ईराक, सीरिया तथा इजियन सागर से घिरा हुआ है। इसकी सबसे अधिक लम्बाई पश्चिम में केप बाबा से पूर्व में फरात नदी तक ७०० मील के लगभग है और चौड़ाई उत्तर में केप इन्जेह से लेकर दक्षिण में केप अनामुर तक ४०० मील से अधिक है। इस प्रकार से वर्तमान टर्की का क्षेत्रफल* ३००,००० वर्गमील है। इसमें से लगभग ९८९५ वर्ग मील क्षेत्र योरोपियन भाग में सम्मिलित है। भूमध्य सागरीय देश इस देश को 'सूर्योदय का देश' (Land of the Rising Sun) कहते हैं। हजारों वर्षों तक यह भाग योरोप और एशिया के मध्य एक संयोजक रहा। यहाँ पर सैकड़ों युद्ध हुए हैं। लगभग योरोप व एशिया के सभी निकटवर्तीय देश यहाँ पर लड़ चुके हैं। रोमन तथा यूनानी सभ्यता का तो यहाँ इतना प्रभाव पड़ा है, कि यहाँ के नाम तक इन्हीं की भाषा के आधार पर रखे गये, जैसे—ट्रोय, तारस, एफीसज तथा मिलेसज इत्यादि। प्रायद्वीप के दृष्टिकोण से यह स्पेन की भाँति योरोपियन है, और पठार के दृष्टिकोण से यह सोवियत मध्य एशिया की भाँति शुष्क तथा शीत ऋतु में उतना ही ठंडा है। इस देश की भौगोलिक स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है, इसके एक तरफ एशिया, दूसरी तरफ योरोप तथा दक्षिण की ओर अफ्रीका जैसे महाद्वीप स्थित हैं। इसकी स्थिति हर समय के लिये महत्वपूर्ण है, चाहे युद्ध का समय हो और चाहे शान्ति हो। रूस ने हमेशा यह चेष्टा की कि इसके उत्तर में जल संयोजक द्वारा भूमध्य सागर में प्रवेश करने की आज्ञा मिल जाय। प्रथम महायुद्ध के समय जर्मनी ने इसे अपनी ओर मिला लिया, जिसमें कि बर्लिन से बगदाद तक का

---

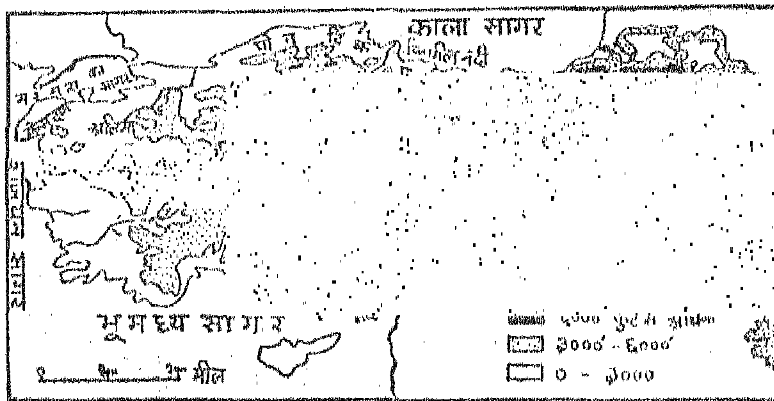
*The area of the Republic of Turkey is 767,119 sq. km. or 296,185 sq. miles. Area in Europe 23,485 sq. km; population, 1950. 1626,229. Area in Asia 743,634 sq. km; population 1950,19,310,295.
Statesman Year Book 1955 P. 1419

भाग प्राप्त हो जाय। द्वितीय महायुद्ध में टर्की सब देशों से अलग ही रहा, किसी की ओर यह सम्मिलित नहीं हुआ।

भौतिक रूप (Physical Aspect)

धरातल (Relief)

भौगोलिक दृष्टिकोण से यदि देखा जाय तो टर्की आरमीनियाँ तथा कुर्दिस्तान उच्चभूमि का पश्चिमी भाग है, यह किसी भी निश्चित रेखा द्वारा इस उच्च भूमि से अलग नहीं किया जा सकता। वास्तव में एशिया माइनर एक ऊँचा पठार



टर्की–धरातल

है, जो चारों ओर उच्च–भूमि से घिरा हुआ है। इस पठार के मध्य में एक गड्ढा है जिसमें कि एक 'तुज गोल' (Tuz Gol) नामक नमकीन पानी की झील है। पठार की ऊँचाई समुद्र सतह से ३५०० से लेकर ४००० फुट है, उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम में यह २०० मील की दूरी तक फैला हुआ है, इसकी औसत चौड़ाई १४० मील है। इस मध्य के पठार को अनाटोलिया का पठार कहते हैं। यह पूर्व में ६००० फुट ऊँचा है और पश्चिम में केवल २००० फुट। सबसे ऊँची शिखा इस पर माउन्ट अरारत है, जो समुद्र सतह से १६९१५ फुट ऊँची है और ईरान की सीमा के निकट स्थित है। इस पठार पर चारों ओर अनेक पर्वत श्रेणियाँ फैली हुई हैं, धरातल पर कई खारी झीलें, दलदल तथा स्थानीय नदियाँ व नहरें हैं। यहाँ से कई ऐसी भी नदियाँ निकलती हैं, जो उत्तर में यूक्जाइन, पश्चिम में इजियन तथा दक्षिण में पूर्वी भूमध्य सागर में गिरती हैं।

अनाटोलिया के उत्तर तथा दक्षिण में दो टूटी-फूटी पर्वत श्रेणियाँ हैं, जोकि आरमीनियाँ उच्च भूमि से आरम्भ होतीं हैं इन पर्वत श्रेणियों का नाम तौरस तथा एन्टी तौरस है। तौरस या दक्षिणी शाखा, जिसको कि कीपर्ट (Kiepert) ने "आरमीनियाँ तौरस" कहा है, फरात नदी के निकट से १०,००० फुट ऊँची एक शिखा से निकलती है। इस स्थान से यह बड़े टेढ़े मेढ़े रूप में चली गई हैं, इनका नाम अमानस है और नीचे कारामानिया होती हुई भूमध्य सागरीय तट के निकट इजियन सागर तक चली आई है। इसके कुछ खंड यहाँ पर उत्तर तथा दक्षिण की तरफ चले गये हैं। वहाँ इनके विभिन्न नाम हैं। उदाहरणार्थ आला-दाग, करलेज-दाग, बुलगर--दाग, सुल्तान-दाग तथा डिबेल-कुम। इनकी ऊँचाई न केवल ७००० फुट से १०,००० फुट है, बल्कि १३००० फुट तक है। साईप्रस नामक बड़ा द्वीप इसी पर्वत श्रेणी का एक कटा हुआ अङ्ग है। इस प्रायद्वीप के दक्षिण-पश्चिम में रोड़ नामक उच्च द्वीप है, इसके सम्मुख मैसासिटस चोटी द्वारा इस श्रेणी का अन्त हो जाता है। माउन्ट तखतालू इस स्थान पर ७८२० फुट ऊँची है। यहाँ पर इस मध्य पठार के अनेक खण्ड हो गये हैं और इजियन सागर में शिखाओं के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। इन पहाड़ियों तथा तट के मध्य बहुत से ऐसे भाग हैं, जो निम्न घाटियों और नदियों के मैदानों के रूप में हैं, इनकी चौड़ाई भिन्न है, परन्तु ये बहुत उपजाऊ हैं। इनके ढाल समुद्र की तरफ ही हैं।

*एन्टी-तौरस, जो यहाँ आगा-दाग के नाम से प्रसिद्ध है, लजिस्तान उच्च भूमि का पश्चिमी भाग है। यह बातुम के निकट से आरम्भ होता है, और दो या कहीं कहीं तीन पर्वत श्रेणियों के रूप में यूक्साइन तट रेखा के निकट समानान्तर चली गई हैं। बोस्फोरस के निकट ये समुद्र के बिल्कुल ही निकट आ गई हैं। यहां पर केशिश-दाग (ओलिम्पस) मोराद-दाग तथा कस-दाग (इडा) नामक शिखायें हैं। द्रेमिद की खाड़ी के सम्मुख ये शिखायें ट्रॉय के मैदान से ७५०० फुट ऊँची हैं। एन्टी तौरस उन नदियों के लिये रुकावट है जो कि आरमीनियां उच्च भूमि के दक्षिण से निकलती हैं और पश्चिम व पूर्व में फरात की ओर बहती हैं। तौरस की तरह इस पर्वत से भी कई शाखायें समुद्र की तरफ या आन्तरिक क्षेत्र की ओर चली गई हैं। यहाँ पर ये विभिन्न श्रेणियाँ बहुत ऊँची हो गई हैं।

*This term is by some Geographers applied to the Amanus or north eastern section of the Taurus between the Armenian highlands and Adna.

इरजियास-दाग इनका केन्द्र है, इसकी ऊँचाई समुद्र सतह से १३१०० फीट है। यह ज्वालामुखी पर्वत की शिखा जो कि तोरस पर्वत से बिल्कुल ही अलग है, कैसारीह नामक समतल भाग पर है। यह समतल भूभाग ३००० फीट से अधिक ऊँचा है। यह भाग आग्नेय चट्टानों का ही बना हुआ है। यहाँ पर दो क्रेटर (Crater) हैं, जो कि प्राचीन काल में जीवित दशा में थे। मध्य के भाग में ये अनाटोलिया पठार के पर्वत ऊँचाई में भिन्न हो गये हैं, ये २७०० से लेकर ५५०० फीट ऊँचे हैं। एक शिखा जिसका नाम असीन्कुर (नीफेट) है, यहाँ पर सबसे ऊँची शिखा है, यह हिम रेखा से भी अधिक ऊँची है।

दोनों ही पर्वतों, तोरस तथा एन्टी तोरस में कई स्थानों पर निम्न घाटियाँ हैं, जिनके द्वारा आवागमन में कोई कठिनाई नहीं होती। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण ग्यूलेक-बोगाज़ अथवा, सिलीसियन गेट हैं। यह एक गहरी घाटी है, जो कि समुद्र सतह से २३०० फीट ऊँची है। यह तोरस पर्वतों को ३० मील की दूरी में पार करती है, और अनाटोलिया को उत्तरी सीरिया व फरात की घाटी से मिलाती है। इस प्रसिद्ध घाटी द्वारा अनेक जातियाँ, व्यापारी तथा आक्रमणकारी वर्षों से आते जाते रहे हैं। इसी मार्ग से सिकन्दर महान् फारस साम्राज्य की विजय करने आया था, मेहमत अली दो बार इस मार्ग से अनाटोलिया में कुस्तुनतुनियां की विजय के हेतु गया। इस घाटी के १०० मील पश्चिम में एक दूसरी घाटी है, जो कि करामन से दक्षिण की ओर गोकस्‍यू की घाटी तक मार्ग बनाती है। तीसरी घाटी इस घाटी के १५० मील पश्चिम में है। यह इसबर्टा को दक्षिण में अदालिया से मिलाती है। पठार के उत्तर में वह घाटियां जो कि एन्टी-तोरस को पार करती हैं और यूक्साइन तट को पठार से मिलातीं हैं, उनमें इनबोली से कस्तामुनी तथा अंगोरा प्रथम, सिनोप से अमासिया द्वितीय, समसुन से अमासिया तृतीय तथा ट्रेबीजोन्ड से एर्ज़ीरम चतुर्थ हैं।

रचना:—(Structure)

इस देश का ढांचा तरशियरी युग की चट्टानों से सम्बन्धित है, यहाँ धरातल पर अधिकतर तरशियरी युग की तथा उसके बाद की चट्टानें दृष्टिगोचर होती हैं, इस पठार तथा पर्वत श्रेणियों के नीचे कदाचित चट्टानें इससे भी अधिक प्राचीन हैं। आग्नेय चट्टानें यहां कई भागों में पाई जाती हैं। जैसे कैसेरी तथा अङ्गोरा के उत्तर में। ग्रेनाइट पत्थर भी यहाँ बहुत अधिक मिलता है। परतदार तथा परिवर्तित चट्टानें भी कई स्थानों पर मिलती हैं। परन्तु यदि देखा जाय तो

उच्च भागों की बनावट सर्पेन्टाइन (Serpentines) ग्रेनाइट (Granite) तथा शिष्ट (Schist) की है। निचले भागों में तथा पश्चिम की ओर दूर भागों में चूने की चट्टानें मिलती हैं। ट्रेचिटिक (Trachytic) जो कि पूर्व में बहुत अधिक पाई जाती हैं, मध्य के भाग में यह काले ज्वालामुखी क्रिया द्वारा ढका हुआ है। टर्की की अधिकाधिक बनावट वास्तव में आग्नेय चट्टानों की ही है।

नदियां व झीलें (Rivers and Lakes)

अनाटोलिया की मुख्य नदियाँ उत्तर पूर्व में काले सागर की ओर बहती हैं। इन नदियों में सबसे बड़ी नदी किज़िल इरमक (Halys) है। यह नदी दो धाराओं से मिलकर बनी है, पहली दक्षिण-पश्चिमी तोकत पहाड़ियों से निकल कर पश्चिम की ओर बहती है और दूसरी कुछ और दक्षिण से तोरस के ढालों से निकल कर पहले पश्चिम और फिर उत्तर की ओर बहती है। यह नदी लगभग ८०० मील लम्बी है और एक टेढ़े-मेढ़े मार्ग से होकर बहती है। ये अपना जल दो प्रमुख धाराओं द्वारा बफरा के नीचे यूग्जाइन सागर में, सिनोप की खाड़ी के कुछ पूर्व बह कर मिला देती हैं। अंगोरा के नीचे यह अपनी घाटी में २८० मील बहती है। कलेजिक के उत्तर में यह एक ६ मील लम्बी गहरी घाटी में होकर निकलती है। मार्ग में अनेक चट्टानों के गुम्बज मिलते हैं। ओस्मांजिक के स्थान पर कुछ ऊपर की ओर नदी एक बहुत ही उत्तम प्राचीन चट्टानों के पुल में होकर प्रवेश करती है। यह पुल बायाज़िद द्वितीय (Bayazid II) ने बनवाया था। [illegible] के नीचे यह एक लकड़ी के पुल को पार करती है और तटीय श्रेणी की अनेक गहरी घाटियों को बनाती हुई निकल गई है, बफरा के बाद यह निम्न भूमि में प्रवेश करती है। ग्रीष्म ऋतु में यह ६० से लेकर ३३० गज चौड़ी रहती है और इसका बहाव ४॥ मील प्रति घण्टा रहता है। जब इसमें बाढ़ आ जाती है। तब बड़ी-बड़ी नावें बफरा से कैसारीह तक चली आती हैं। इसके मार्ग में कई झरने मिलते हैं, इसलिये कहीं कहीं पर यह नावें चलाने योग्य भी नहीं है। लगभग ५० मील पूर्व में येशिल इरमक (Iris) काले सागर में गिरती है। इसके गिरने का स्थान समसून से १६ मील पूर्व में है। इसकी कुल लम्बाई २४० मील है।

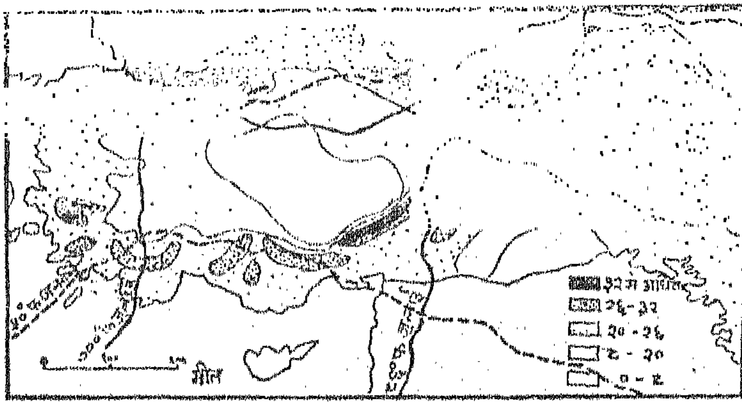
किज़िल इरमक के बाद दूसरी महत्वपूर्ण नदी सकारिया (Sangarius) है। यह नदी पठार पर अंगोरा के निकट से निकलती है। और बॉसफोरस के ८० मील पूर्व में आकर काले सागर में गिर जाती है। [illegible] (Bath·s) उत्तर पूर्वी भाग [illegible] नदी है, आरमीनिया की [illegible] पश्चात यूग्जाइन सागर में बाटुम के [illegible] में आ मिलती है। [illegible] नदियाँ

इजियन में गिरती हैं वे भौगोलिक महत्ता की अपेक्षा ऐतिहासिक महत्ता अधिक रखती है। यहां की सभी नदियाँ छोटी हैं। इनके नाम कहानी व कविताओं में भी मिलते हैं विशेष तौर जो नदियाँ प्रसिद्ध हैं, उनमें पहली गेदिज चाई (Hermus) जो कि स्मरना की खाड़ी में गिरती है। दूसरी बाकिर चाई (ग्रेनीकस) जो इदा के ढालों पर से होकर बहती है। यहां पर सिकन्दर महान ने (३३४ ईसा से पूर्व) दारिअस पर विजय प्राप्त की थी। चौथी*मन्दिर सू नदी है। यह सिमोइज नामक एक सहायक नदी सहित त्रोआज (Tros) को पार करती है और इजियन सागर में डार्डनलीज (Dardanelles) के स्थान पर गिर जाती है। अन्त में यहां की पाँचवीं नदी बुयुक मन्दिर (Mander) है। यह २५० मील लम्बी है, और पर्वतों पर अनेक गहरी—गहरी घाटियों तथा उपजाऊ मैदानों को पार करती हुई मिलेशस (Miletus) के स्थान पर गिर जाती है। ये पाँचों नदियाँ अपने साथ बहुत सी मिट्टी लाती हैं और डेल्टे के भाग में एकत्रित कर देती हैं। इस मिट्टी ने प्राचीन आयोनियन (Ionian) बन्दरगाहों को दबा दिया है। दक्षिण की ओर भूमध्य सागर में जो नदियां गिरती हैं वह अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। इनमें केवल दो ही महत्पूर्ण हैं, प्रथम—जिहुन चाई (पाइरेमस) द्वितीय सिहुन चाई (सेरस)। दोनों ही नदियाँ काफी लम्बी है। 'सिलवर साइडनस (Silver Cydnus) नदी जिसका नाम एन्टोनी और क्लिओपेट्रा से सम्बन्धित है, इस तट पर सिहुन डेल्टे के निकट गिरती है।

साइदनस (Cydnus) नदी से कुछ मील पश्चिम में दो नदियां लामाज़ (Lamas) और कलीकदनोज (Gliuk-sce) हैं। ये दोनों तौरस पर्वत के दक्षिणी ढालों से होकर एक ऐसे ऐतिहासिक क्षेत्र से होकर बहती हैं, जिसमें कि तमाम नगर, महल तथा मन्दिर खंडहरों के रूप में पाये जाते हैं। यहीं पर प्रसिद्ध ओल्वा का सिसोलियन राज्य था, और पादरी-राजाओं का वंश (जिसे कि रोमन लोगों ने परास्त किया था) राज्य करता था। ओल्बा में अब भी चार मंजिल ऊंचा किला बना हुआ है, प्रत्येक मंजिल पर पांच कमरे हैं, निकट में ही ज्यूपिटर का प्रसिद्ध मन्दिर है जिसमें कि तीस बड़े बड़े दालानों के खम्भे हैं। लामाज़ नदी, जिसके ऊपरी भाग में उत्तर और पूर्व की ओर जिबेल हिसार है, एक अति रमणीय घाटी में होकर तट की ओर बह जाती है। इस घाटी के दोनों ओर एक एक मील ऊँची दीवारें हैं।

*Called Xanthus by gods and Scamander by men.

अनाटोलिया पठार की एक विशेषता यह है, कि यहाँ पर अनेक मीठे तथा खारी पानी की झीलें हैं। इन सबों में सबसे बड़ी तुज-गोल (Tuz Gol) या खारी झील (Talta palus) है। यह कोनिया (Iconium) से ६० मील उत्तर में है। यह झील ५० मील लम्बी तथा १० से १२ मील चौड़ी है। इसका जल बहुत खारी है। निकटवर्तीय लोग इसके तट पर नमक प्राप्त करने का धन्धा करते हैं। यह बड़ी छिछली झील है, ग्रीष्म ऋतु में सूख कर क्षेत्रफल में कम हो जाती है। मीठे पानी की झीलों में, सबसे बड़ी इगेरदिर है, यह झील समुद्र सतह से २८०० फुट की ऊँचाई पर सुल्तान-दाग और तौरस की उत्तरी चोटियों के मध्य स्थित है। यह झील ३० मील लम्बी और ६ से १० मील चौड़ी है। उत्तर पश्चिम में ब्रूसा के निकट इज़निक गोल नामक झील पाई जाती है। यह ५० मील की गोलाई में है और मरमोरा के सागर में इसका कुछ जल किसी मार्ग द्वारा पहुँच जाता है।



टर्की तापक्रम एवं वर्षा

जलवायु (Climate)

इस देश के धरातल में भिन्नता होने के कारण, जलवायु में भी भिन्नता पाई जाती है। (तटीय भाग में भूमध्य सागरीय जलवायु मिलती है और २० इंच या इससे अधिक शीत ऋतु में वर्षा हो जाती है, पठारी भाग में इसी ऋतु में केवल १० इंच वर्षा प्राप्त करता है) यही कारण है यहाँ की जलवायु का एक सामान्य विवरण नहीं दिया जा सकता। किसी किसी जगह शीत ऋतु से ग्रीष्म ऋतु में परिवर्तन यात्री को २४ घण्टे में ही मालूम पड़ जाता है। पश्चिमी तट पर हमेशा

तापक्रम एक सा रहता है। प्राय: ग्रीष्म ऋतु में तापक्रम ८५° फ० से लेकर ९८° फ० तक या कभी कभी १००° फ० अंकित किया जाता है। यहां पर थोड़ी सी बूंदा बांदी भी हो जाती है। मध्य के पठार पर शीत ऋतु बहुत ही कड़ी होती है। चार महीने तक बर्फ धरातल पर जमी रहती है। करामानिया में शीत ऋतु के बाद ग्रीष्म ऋतु की 'लू' चलने लगती है। यहाँ पर वर्षा ऋतु बहुत छोटी होती है, केवल अप्रैल से नवम्बर तक वर्षा होती है। लोग हमेशा ही टैंक या अन्य जलाशयों पर निर्भर रहते हैं। तौरस पर्वत की घाटियों में शीत ऋतु कड़ी तथा ग्रीष्म ऋतु कठोर होती है। उत्तरी तट की जलवायु बहुत अच्छी है; यहां पर काफी वर्षा हो जाती है। आन्तरिक क्षेत्र की जलवायु स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से अच्छी है। अधिक गर्मी व नमी के कारण, मलेरिया लोगों को बड़ी जल्दी हो जाया करता है। तटीय भागों में जलवायु कुछ अच्छी है।

मानव रूप (Human Aspect)

ऐतिहासिक आधार:—(Historical background)

टर्की में ईसा से पूर्व एक नगर था जो *ट्रॉय (Troy) के नाम से प्रसिद्ध था, इस नगर का वर्णन होमर (Homer) ने अपनी 'इलियाद' (Iliad) नामक कविता में किया है। यह नगर किसी समय इजियन सागर के तट पर अपनी उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुंच चुका था। इसके बाद हिटाइट (Hettites) लोगों ने अपने साम्राज्य की नींव डाली थी, यह साम्राज्य कई शताब्दियों तक चला इसके उपरान्त माइसीनियन (Mycenian) फ्रीजियन (Phrygian) तथा लिडियन (Lydian) नामक साम्राज्य एक एक करके रहे। इसके भी उपरान्त ग्रीक तथा रोमन कोलोनीज़ (Colonies) स्थापित हुई। जब गोथ लोगों (Goths) ने रोम पर पाँचवी शताब्दी (A. D.) में अधिकार कर लिया तो टर्की, बाइज़ेन्टाइन (Byzantine) सम्राटों का केन्द्र हो गया। ये लगभग एक हजार वर्ष तक रहा। सन् १४५३ में सुल्तान मोहम्मद द्वितीय ने कुस्तुनतुनियां (Constantinople) ओटोमन तुर्कों (Ottoman Turks) के लिये जीत लिया। ओटोमन तुर्क टेरह्वीं

---

*In the Third millennium before Christ the city of Troy was at its glory. In the Second millennium, the Hittites founded an Empire that lasted for several centuries. In the next millennium there came the Greek and Roman Colonies.

शताब्दी में मध्य एशिया से आये थे । इसके अन्तर्गत तुर्किश सम्राटों ने तुरन्त ही पश्चिम एशिया को जीतना आरम्भ कर दिया और सुलेमान की सहायता से हंगरी को भी अपने राज्य में शामिल कर लिया । सन् १५३३ तक तुर्किश सेनायें वियेना (Vienna) के द्वार तक पहुँच गईं और १५३८ में तुर्किश एडमिरल बारबेरोजा (Turkish Admiral Barbarossa) ने पवित्र रोमन सम्राट को पोप तथा वेनेशियन गणराज्य को निकाल भगाया । परन्तु अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में ये तुर्किश खलीफाओं का विस्तृत साम्राज्य ब्रिटिश, फ्रेंच तथा रूसी प्रभावों के कारण छिन्न भिन्न होने लगा । प्रथम महायुद्ध में टर्की जर्मनी की तरफ शामिल होकर लड़ा, परन्तु हार गया । यहाँ के 'नेशनलिस्ट' लोगों ने अक्टूबर १९१८ के चुनाव के अन्तर्गत अपनी सरकार बनाई । नेशनलिस्ट नेता मुस्तफा कमाल पाशा इस पार्टी के नेता थे, इसके विरुद्ध सुल्तान की सरकार कुस्तुनतुनिया में थी । कमाल पाशा ने अपनी राजधानी २३ अप्रैल १९२० में अंकारा में स्थापित की । काफी समय के संघर्ष के उपरान्त सुल्तान राज्य का अन्तिम राजा मोहम्मद VI ने नवम्बर १९२२ में देश छोड़ दिया । इसके उपरान्त मुस्तफा कमाल ने सम्पूर्ण टर्की पर अधिकार कर लिया । तुर्किश जनतंत्र राज्य की स्थापना २९ अक्टूबर सन् १९२३ में हुई थी, इसका सभापति मुस्तफा कमाल अतातुर्क (Mustafa Kamal Ataturk) को बनाया गया । यही यहाँ के पहले सभापति थे । जुलाई १९२३ में योरोपियन लोगों ने इससे एक समझौता किया । यह शान्तिपूर्ण समझौता लाओसेनी (Laosanne) में अतातुर्क सरकार के साथ हुआ । इसके अन्तर्गत टर्की के जिन क्षेत्रों पर इनका अधिकार था, वह पुनः उसे वापिस कर दिये गये । इसके साथ स्मरना तथा थ्रेस जो कि ग्रीस के पास था १९२० में टर्की को ही वापिस हो गये, इसी समय टर्की के पास जो पश्चिमी एशिया के क्षेत्र थे, वह स्वतन्त्र करने पड़े । अफ्रीका के क्षेत्र भी इसके हाथों से निकल गए और केवल उतने ही क्षेत्र रह गये, जितने कि इसके पास हैं । कमाल अतातुर्क जो कि तीन बार यहाँ का सभापति चुना गया, उसके प्रयत्नों से यहाँ की सामाजिक, आर्थिक, तथा कानूनी दशा सुधर गई और टर्की पश्चिमी सभ्यता की ओर और आने लगा । जब १९३८ में अतातुर्क की मृत्यु हो गई, टर्की की दशा ठीक उसी प्रकार की बनी रही जिस प्रकार कि वर्तमान समय में है ।

जन संख्या वितरण (Population Distribution)

टर्की की वर्तमान जनसंख्या २४,२६१,००० है, जबकि सन् १९५१ में यह २०,९३५,००० थी । सर्व प्रथम यहाँ की जनगणना १९२७ में हुई थी, इसके अन्तर्गत

यहाँ की जन संख्या १३,६४८,२७० थी स्त्रियों की संख्या पुरुषों से अधिक थी। इसके उपरान्त दूसरी बार जनगणना १९३५ में हुई और यहाँ की जनसंख्या १६,१,५८०१८ निकली। इन आँकड़ों को देखने से प्रतीत होता है, कि यहाँ की जनसंख्या बराबर बढ़ रही है। क्षेत्रफल को देखते हुये, जनसंख्या बहुत कम है, क्योंकि औसत घनत्व प्रतिवर्ग मील कदाचित ६८ व्यक्ति हैं। जनसंख्या अधिकतर उपजाऊ घाटियों में बसी हुई है। जनसंख्या वितरण उत्तरी तथा दक्षिणी तटीय प्रदेश में अधिक है, परन्तु पश्चिम में इजियन समुद्र तट के निकट भी काफी, घनी जनसंख्या मिलती है। ग्रामीण जनसंख्या बहुत अधिक है। बंजारों की संख्या भी काफी है, परन्तु नगरों में रहने वाले निवासियों से कम ही है। यहाँ के प्रसिद्ध नगरों में इस्तनबूल मुख्य स्थान प्राप्त करता है। इसकी जनसंख्या ८४५,३१६ से अधिक है, दूसरा नगर स्मरना है। यहाँ की राजधानी अंकारा है इसकी जनसंख्या १९४५ में २२६,७१२ थी।

आर्थिक रूप (Economic Aspect)

प्राकृतिक वनस्पति:—(Natural Vegetation)

यदि टर्की के भौतिक मानचित्र को ध्यानपूर्वक देखा जाय, तो इसमें दो भिन्न क्षेत्र प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होयेंगे, पहला पश्चिमी जिस पर भूमध्य सागरी जलवायु का गहरा प्रभाव पड़ता है, और दूसरा वह जो पूर्णतया: शुष्क पठारी क्षेत्र है। पहले भाग में टौरस पर्वत के पश्चिमी ढाल हैं। इस पर आठ हजार फुट से अधिक ऊँचाई पर ठिगने वृक्ष, छै हजार पर नुकीली पत्ती वाले वन, साढ़े चार हजार पर पतझड़ वाले वन तथा दो हजार पर केवल सदाबहार भूमध्य सागरीय वनस्पति दृष्टिगोचर होती है। टौरस पर्वतीय प्रदेश में मर्टिल व ओलिन्डर नामक कांटेदार भूमध्य सागरीय पौधे मिलते हैं। भूमध्य सागरीय चीड़ तीन हजार फुट पर, अंगूर की बेलें तथा बेलोनिया बलूत चार हजार पर तथा अन्य सिडार व अंक पाँच हजार पर उगते हैं। पौनशियन के क्षेत्र में उच्च भागों पर स्टेपलैण्ड इसके नीचे पतझड़ वाले वन तथा इसके भी नीचे भूमध्य सागरीय सदाबहार वनस्पति मिलती है। अनातोलिया के भाग में केवल घास के मैदान ही दृष्टिगोचर होते हैं। जिन स्थानों पर कहीं थोड़ा सा भी जल प्राप्त हो जाता है, वहाँ बेंत उगता है। अधिकतर घास तथा छोटी झाड़ियों वाले पौधे ही दृष्टिगोचर होते हैं। बसन्त ऋतु बड़ी सुहावनी होती है, क्योंकि धरातल पर अनेक रंग-बिरंगे फूल उग आते हैं।

कृषि:—(Agriculture)

कृषि यहाँ के निवासियों का मुख्य धन्धा है। यहाँ की कुल जनसंख्या के

८० प्रतिशत लोग (सन् १९५० में १०,७४५,०००) कृषि में ही लगे हुए हैं। सन् १९५२ के आंकड़ो के अनुसार भूमि का कुल क्षेत्रफल ७७,६९८००० हेक्टर्स है। इसमें से १७,३७९,००० (२२·४%) पर फसलें उत्पन्न की जाती हैं, ३४,७७५,००० (४४·८%) पर घास के मैदान, १,६६२,०००(२·१%) पर फल, तरकारियों, अंगूर तथा जैतून के बागात; १०,४१८,००० (१३·४%) पर वनीय क्षेत्र तथा १३,४६४,००० (१७·३%) भूमि बंजर अथवा झीलों से घिरी हुई हैं। देश की राष्ट्रीय आय का आधा भाग इसी धन्धे से प्राप्त होता है। कुल निर्यात का ९० प्रतिशत भाग कृषि उपजों का ही है।

गेहूं यहाँ की प्रमुख उपज है, और समस्त फसलों का लगभग आधा भाग यही घेर लेता है। सन् १९५३ में १०,८००,००० हैक्टर (Hectares) क्षेत्र गेहूं में था और इसका उत्पादन १३,५६०,००० टन था। अगले वर्ष दुर्भाग्य से इस का उत्पादन ८,०००,००० टन रह गया। इस उपज का घरेलू उपभोग बहुत अधिक है, परन्तु फिर भी कुछ मात्रा में यह निर्यात किया जाता है। इसके साथ जौ भी बोया जाता है। मकाई, राई, ओट तथा चावल कुछ अन्य फसलें हैं। कपास की कृषि यहाँ लगभग चार प्रतिशत भाग में होती है। इसके प्रमुख क्षेत्र अदाना (सिलीसियन मैदान) में है। तम्बाकू यहाँ केवल एक प्रतिशत क्षेत्र में उत्पन्न की जाती है। यह कई स्थानों पर उत्पन्न की जाती है, उदाहरणार्थ, समसुन कराम्भा बफरा, सिनोली, सिनोप, जोंगुल्दक, तथा स्मरना इत्यादि। अफीम कोन्या तथा अफयोन कारा हिसार में उत्पन्न की जाती है। जैतून टर्की के अनेक क्षेत्र में उगता है, परन्तु दो क्षेत्र उल्लेखनीय हैं, जैसे आइदिन (मॉडियर्स की घाटी में)तथा बुर्सा का मैदान। अंगूर की बेलें भी यहाँ बहुत उत्पन्न होती हैं। रेशम विशेषतौर पर बुरसा के क्षेत्र में प्राप्त किया जाता है। अंजीर, संतरे, अनन्नास तथा मेवा उदाहरणार्थ अखरोट, बादाम पिश्ते, तथा किसमिश इत्यादि वस्तुओं का भण्डार स्मरना का पृष्ठ प्रदेश है।

प्रमुख उपजों की कृषि यहाँ प्राचीन ढंग से ही होती है, परन्तु अब कुछ मशीनों [illegible] लगा है। गेहूं तो अब यहाँ लगभग सभी भागों में उत्पन्न किया जाता है क्योंकि यहाँ नये नये बीजों की खोज कर ली गई है। तम्बाकू यहाँ की प्रमुख उपजों में से है, यहाँ पर अमरीकन किस्म की तम्बाकू उत्पन्न की जाने लगी है। इसकी कृषि बड़ी सावधानी से की जाती है। सन् १९५२ में इसकी उपज ८२,००० टन थी और इसमें [illegible] व्यक्ति लगे हुए थे; अगले ही वर्ष उत्पादन ११[illegible],[illegible]०० टन हो गया। इसका आधा भाग संयुक्त राज्य अमरीका को निर्यात

कर दिया जाता है। कपास यहाँ पश्चिमी व दक्षिणी भागों में बहुत अधिक उत्पन्न होती है। केवल १५ वर्ष के समय में इसका उत्पादन तिगुना हो गया सन् १९५२ में इसका उत्पादन १३०००० टन था, अगले वर्ष यह १३६००० टन हो गया। इसका वर्तमान क्षेत्रफल कदाचित आठ लाख एकड़ है, परन्तु २० लाख तक बढ़ाये जाने की सम्भावना है। यहाँ पर फल भी बहुत अधिक उत्पन्न होते हैं, प्रमुख क्षेत्र इजियन सागर का तट ही है। सन् १९५३ में शक्कर का उत्पादन १६७,८३९ टन था।

टर्की में फसलों का उत्पादन (सन् १९५२ में)

उपजें	क्षेत्रफल (हेक्टर्स)	उपज (मेट्रिक टनों में)
गेहूं	४,४००,०००	६,४४७,०००
जौ	२,३१२,०००	३,१८६,०००
जई	३५६,०००	४०५,०००
मक्का	६४२,०००	८३७,०००
रई	५८७,०००	६७०,०००
चावल	४६,०००	९५,०००

जीवजन्तु—(Animals)—

यहाँ पर विभिन्न प्रकार के जीव जन्तु पाये जाते हैं। ये जीव जन्तु दो श्रेणियों में विभाजित किये गए हैं पहले वे जो कि जंगली हैं और जिन्हें कोई भी नहीं पालता और दूसरे वे जो मनुष्य के लिए आर्थिक दृष्टिकोण से बड़े लाभदायक हैं और जिन्हें बहुत से मनुष्य अपनी जीविका के हेतु पालते हैं। पालतू जानवरों में यहाँ भेड़, बकरे, गाय, भैंस, गदहे, खच्चर तथा घोड़े हैं। इन पशुओं से जो आर्थिक वस्तुयें प्राप्त होती हैं, उनमें मोहैर (Mohair) ऊन, खाल तथा चमड़ा है। सन् १९५२ में यहाँ ३५,३२३ टन ऊन प्राप्त किया गया। इसमें ७४५८ टन मोहैर भेड़ का तथा ९५४१ टन बकरों से प्राप्त किया हुआ ऊन था। मोहैर आन्तरिक भागों में प्राप्त किया जाता है। अंगोरा भेड़ अनाटोलिया पठार की प्रसिद्ध भेड़ है। यहीं से यह भेड़ अन्य मध्य पूर्वी देशों को गई हैं। ऊन यहाँ की मुलायम व मजबूत होती है। टर्की की मोहैर विश्व प्रख्यात है। प्रतिवर्ष यह विदेशों को बहुत बड़ी मात्रा में निर्यात की जाती है।

खनिज सम्पत्ति—(Mineral Wealth)

भूगर्भ शास्त्रियों का कथन है कि यह देश खनिज पदार्थों के कोष में धनवान है, परन्तु दुर्भाग्य से यह खनिज अधिक मात्रा में नहीं निकाले जाते। टर्की सरकार इनकी वृद्धि की ओर बराबर ध्यान दे रही है। आशा है कि निकट भविष्य में ये खनिज उपयुक्त मात्रा में निकाले जाने लगेंगे ; यहाँ सबसे बड़ी कमी यातायात के साधनों का अभाव है और इसको सर्वप्रथम देखना है। यहाँ पर अनेक खनिज पदार्थ मिलते हैं। यह विश्व का सबसे बड़ा क्रोम उत्पन्न करने वाला देश है। कोयले में भी यह धनवान है, कोष का अनुमान ६००,०००००० टन है सन् १९५२ में इसका उत्पादन २६०,००० टन था। इसकी खानें पश्चिमी तट पर बुरसा, कुटह्या (Kutahya) स्मरना, अदाना, कोन्या तथा दियार बेकिर नामक स्थानों में पाई जाती हैं। इसकी कुछ खानें उत्तर-पश्चिम में गुलिमान तथा दक्षिण-पूर्व में फेथाई के स्थानों पर भी हैं। लोहा यहाँ पर पाया अवश्य जाता है, परन्तु इसका कोष बहुत अधिक नहीं है। सन् १९५२ में इसकी उत्पत्ति २९०००० टन थी। इसकी खानें मैंडुरीज की घाटी तथा अदाना क्षेत्र में है। टर्की सरकार इस धातु की उत्पत्ति बढ़ाने के सम्बन्ध में सोच-विचार कर रही है। इन दो धातुओं के अतिरिक्त यहाँ सरकारी चाँदी की खानें बुलगार मादन नामक स्थान पर हैं। यहाँ पर कुछ सोना भी निकाला जाता है। सिलवर लीड तथा जिन्क बालीकेसिर नामक स्थानों पर काफी मात्रा में निकाला जाता है। जिन्क, मैंगनीज, एन्टीमनी तथा मरकरी (पारा) कुछ अन्य धातुयें हैं, जो यहां के कई क्षेत्रों से प्राप्त की जाती हैं। अन्य कुछ ऐसे खनिज जो धातुओं में सम्मिलित नहीं हैं, उनमें बोरक्स (Borax) मरमरा के १२० मील दूर क्षेत्र से प्राप्त किया जाता है। आर्सेनिक सिवास तथा आरदन नामक स्थानों पर मिलता है। नमक स्मरना तथा एरज़रम में निकाला जाता है।

टर्की में प्रमुख खनिज पदार्थों का उत्पादन (१९५३ में)

(००० टनों में)

कोयला	५,६४८	गन्धक	६.८
लिगनाइट	१,६४१	आर्सेनिक	०.५
ताँबा	२४	मैंगनीज	६६.८
क्रोम	४२२	मैगनेसाइट	०.४
एन्टीमनी	३.२	इमेरी	१.१
तेल	५७		

कुछ स्थानों पर यहां शक्ति भी उत्पन्न की जाने लगी है, सन १९५२ में इस देश ने १०६६ K. W. H. विद्युत उत्पन्न की। यह अड़दन के स्थान के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर भी उत्पन्न की जाती है। कुल शक्ति गृहों की संख्या ३७४ है।

उद्योग धन्धे:—(Industries)

टर्की एक ऐसा देश है जो योरोप के निकट ही स्थित है। योरोपियन उद्योग धन्धों का इस पर गहरा प्रभाव पड़ा है। अब यहाँ भी अनेक कारखाने पाये जाते हैं। आज कल यहाँ की १२% जनसंख्या उद्योग धन्धों में लगी हुई है। वास्तव में औद्योगिक विकास यहाँ १९२३ के बाद से ही आरम्भ हुआ है। द्वितीय महायुद्ध के समय तक यहां लगभग सत्तर हजार कारखाने थे, यहाँ के प्रसिद्ध औद्योगिक केन्द्रों में दो ही प्रमुख हैं, प्रथम इज़मिर (स्मरना) तथा द्वितीय इस्तनबूल। यहाँ के सभापति कमाल अतातुर्क ने १९३४ में एक पंच वर्षीय योजना बनाई। इस योजना के अन्तर्गत यहां बहुत काफी उद्योग धन्धों में उन्नति हुई। इस योजना का ध्येय देश को औद्योगिक बनाना था परन्तु कृषि के आधार पर। इस योजना के अन्तर्गत कई नगरों में नये कारखाने स्थापित हो गये।

सबसे प्रथम लोहे व स्पात का कारखाना (१८० टन) काराबुक के स्थान पर ९ अगस्त १९३९ में स्थापित हुआ था। सन १९५३ में उत्पादन प्रकम धातु ११३,३७७ टन, कच्चा लोहा ९९,१४६ टन, इन्गॉट या स्टील कास्टिंग, १६२,६४१ ढली हुई स्पात की वस्तुयें १३६,१५८, नल ६७९२ टन तथा कोक ५४८,६८८ टन था।

यहाँ पर लगभग एक दर्जन ऊनी वस्त्र तैयार करने के कारखाने हैं। सूती व रेशमी वस्त्र भी यहां तैयार किया जाता है, कारखाने कैसेरी (Kayseri) तथा इरेग्ली (Iregli) में हैं। ये दोनों उद्योग यहाँ घरेलू तथा कारखानों के रूप में हैं। इज़मिर फल और मेवों का बड़ा भारी केन्द्र है, यहां कई ऐसे कारखाने हैं, जो अंजीर तथा अन्य फलों को डिब्बों में बन्द करके बाहर भेजते हैं। सुन्दर डिजाइन के कालीन तथा दरियां भी यहाँ बुनी जाती हैं। चमड़े की वस्तुयें बनाने के यहां अनेक कारखाने हैं। यहां पर कई महत्वपूर्ण शक्कर के कारखाने पाये जाते हैं। ये कारखाने अल्पुल्लू, इज़मिर (स्मरना) के निकट उसक (Usak) तथा एस्की सेहिर में स्थापित हैं। एक बड़ा शीशे व चीनी की वस्तुयें बनाने का कारखाना इस्तानबूल में है। सीमेन्ट के भी कारखाने स्थापित हो गये हैं उत्पादन सन १९५३ में ५३१,०६५ टन था। कागज का प्रसिद्ध कारखाना इज़मिट (Ismidt) में स्थापित कर दिया गया

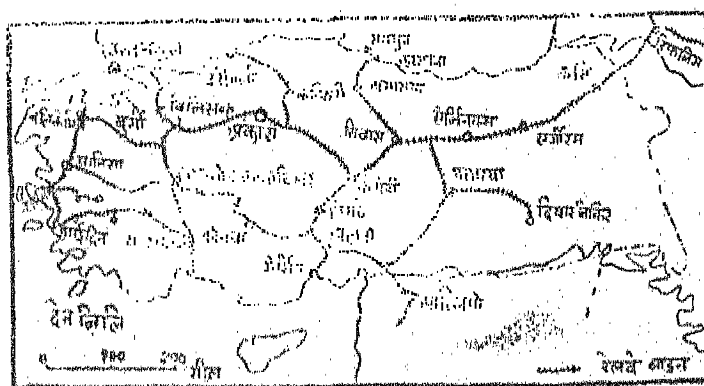
है। जोंगुलदक में कोयले तथा कोक के अतिरिक्त गंधक, गुलाबजल तथा दूध की वस्तुयें तैयार की जाती हैं।

यहाँ के बड़े बड़े उद्योग धन्धों में शराब बनाना तथा सिग्रेट बनाना भी है। इन दोनों वस्तुओं के यहां अनेक कारखाने हैं, परन्तु ये दोनों धन्धे घरेलू ढंग पर भी बहुत प्रचलित हैं और जगह जगह पाये जाते हैं।

तम्बाकू, शकर, एलकोहोल, दियासलाई, नमक, पेट्रोलियम, बारूद तथा कारतूस के धन्धे सरकार की अध्यक्षता में होते हैं।

यातायात के साधनः--(Means of Transport & Communication)

किसी भी देश के लिए, यदि वह वास्तव में आर्थिक उन्नति करना चाहता है तो यातायात के पर्याप्त साधनों का होना अति आवश्यक है। टर्की एक विस्तृत देश है, इसको अपने आर्थिक विकास के लिए यातायात के साधनों की वृद्धि करना परम आवश्यक है। रेलों और सड़कों की यहाँ विशेषतौर पर कमी है। औद्योगिक विकास के लिए रेलों की उन्नति जल्दी ही होनी चाहिये। इस देश के पास पाँच हजार मील से अधिक लम्बी रेलें हैं, जबकि १९२८ में तीन हजार और १९३३ में चार हजार मील थीं। इन रेलों को अब यहाँ की सरकार ने अपने हाथों में ले लिया है, विदेशी कम्पनी कदाचित अब यहाँ रही ही नहीं हैं। यहाँ की प्रमुख रेलों में अनाटोलियन-बगदाद रेलवे है। यह लाइन हैदर पाशा (जोकि इस्तनबूल के सम्मुख स्थित है) से आरम्भ होती है, और कोन्या, अदाना अलिपो से होती हुई अंकारा और कैसेरी की लाइनों से मिल जाती है। दूसरी महत्वपूर्ण लाइन पश्चिमी



टर्की प्रमुख नगर व रेलवे

तट पर उपजाऊ घाटियों को मिलती हैं। प्रसिद्ध सिम्पलन-ओरियन्ट एक्सप्रेस जो पेरिस से कुस्तुनतुनिया तक चलती है अब यहाँ की राजधानी अंकारा तक मिला दी गई है। रेलें इस लाइन पर हफ्ते में दो बार चलती हैं। गेज ४ फुट ८॥ इंच है। इन महत्वपूर्ण मार्गों के अतिरिक्त पहली अंकारा केसरी जो १९४७ में खोली गई थी, दूसरी समसुन कवक-तुरहल-सिवास-केसरी है, जो पूर्वी पठार को लाभ पहुँचाती है। समसुन उत्तरी तट का एक बहुत ही उपजाऊ भाग है। तीसरी लाइन अंकारा-जफरनबुली–हिराक्लिया है। इस लाइन के अन्तर्गत अंगोरा का बन्दरगाह हिराक्लिया जो काले सागर पर स्थित है हो जायगा। चौथी लाइन फेजीपाशा से मलातया तक बनाई जाने की योजना है, और पाँचवी लाइन उलू किसाला-केसेरी है। यह भी एक महत्वपूर्ण लाइन होगी। सन १९५२ में यहाँ ७६६७ किलो० राज्य की रेलवे लाइनें थीं अन्य ४४५ किलो० लाइन बन रही हैं।

टर्की में सड़कों का विकास भी बहुत हुआ है। यहाँ पर अनेक मोटर गाड़ियाँ चलाने योग्य सड़कें पाई जाती हैं। यहां पर लगभग ४८००० मील लम्बी सड़कें हैं। अंकोरा इन सड़कों का प्रमुख केन्द्र है। यहाँ से एक सड़क इस्तानबूल, दूसरी 'कुस्तुनतुनिया' तीसरी इज़मिर चौथी अदाना तथा पांचवीं पूर्व तथा उत्तर पूर्व को जाती है। इन सड़कों की अनेक शाखायें हैं जो अन्य छोटे छोटे नगरों को मिलाती हैं। सन १९५३ में यहां २३९३८ कारें, ५५१० बसें, २४७२२ लारियां तथा ६४८७ मोटर साइकिलें थीं।

सन १९५१ में यहां के बन्दरगाहों पर ५२९४४ तुर्किश जलयान तथा ३१९५ विदेशी जलयान उपस्थित थे।

हवाई यातायात में भी टर्की की स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है, इस्तनबूल और अंकारा इस दृष्टिकोण से उच्च स्थान रखते हैं। आजकल इन दोनों स्थानों की अन्तर्राष्ट्रीय महत्ता है। विदेशी वायुयान यहाँ लगभग सभी कम्पनियों के आते हैं। यहां से भी वायुयान नित्य योरोप के बड़े बड़े नगरों के अतिरिक्त सभी अन्य नगरों को जाते हैं। यहाँ पर स्टेट एयरवेज एडमिनिस्ट्रेशन की स्थापना १९३८ में हुई थी। इसके वायुयान लगभग यहाँ के प्रत्येक बड़े नगर को जाते हैं। विदेशी कम्पनियाँ जिनके वायुयान इस देश के हवाई अड्डों पर उतरते हैं उनमें ब्रिटिश यूरोपियन एयरवेज, पान अमरीकन एयरवेज़, के० एल० एम० तथा एयर फ्रांस इत्यादि हैं। सन १९५३ में १८१४१५ यात्रियों ने वायुयानों से उड़ान की तथा २६९९ मेट्रिक टन सामान ले जाया गया।

विदेशी व्यापार (Foreign Trade)

द्वितीय महायुद्ध के पहले यहाँ का विदेशी व्यापार बड़ी उन्नति कर रहा था, परन्तु युद्ध के समय इसकी दशा सन्तोषजनक नहीं रही क्योंकि भूमध्य सागर का भाग भी युद्ध क्षेत्र में ही सम्मिलित था। युद्ध समाप्त होते ही, इसने पुनः इस ओर ध्यान दिया, धीरे धीरे यह विदेशी व्यापार में उन्नति करने लगा। आँकड़ों पर ध्यान देने से पता चलता है, कि इसका व्यापार संतुलन आजकल पक्ष में है।

प्रमुख आयात की हुई वस्तुयें

	मूल्य (T £ million)		कुल मूल्य का प्रतिशत	
	१९५१	१९५२	१९५१	१९५२
मशीनें	३१८.६	४२५.४	२६	२६
लोहा तथा स्पात	११२.१	१५८.३	१०	१०
सूती वस्तुयें	९५.५	११३.४	९	७
व्यापार करने का सामान	९२.७	१४४.९	८	९
पेट्रोलियम तथा उसके पदार्थ	८७.५	१११.७	८	७
चश्में तथा वैज्ञानिक औजार	५७.४	६६.८	५	४
ऊन तथा बटा हुआ ऊन	५१.४	५६.२	५	४
दवाइयां	५०.९	५९.८	५	४

प्रमुख निर्यात की हुई वस्तुयें

	मूल्य (T £ million)		कुल मूल्य का प्रतिशत	
	१९५१	१९५२	१९५१	१९५२
कपास	२१६.७	१८४.१	२५	१८
तम्बाकू	१८७.६	१७३.८	२१	१८
अनाज	६०.२	२२६.८	७	२३
क्रोम	५१.०	६४.०	६	६
हजेल नट	५०.३	५१.५	६	५
रेजिन	३०.५	३१.६	४	३
तांबा	२३.७	५१.५	३	५

आयात करने वाले प्रमुख देश
(In million £ T)

देश	१९५३	१९५४
बेल्जियम लक्सेमबर्ग	६८.३	३३.७
फ्रांस	९०.९	९३.९
जर्मनी (फेडरल)	३११.१	२३२.१
इटली	५०१.७	६४.३
साउदी अरेबिया	४४.९	....
स्वीडन	४१.१	....
स्विटजरलैंड	३०.७	....
यू० के०	२०४.५	११७.०
यू० एस० ए०	१६९.१	२०१.५

निर्यात करने वाले प्रमुख देश
(In million £ T)

देश	१९५३	१९५४
जेकोस्लोवेकिया	२८.८	....
मिश्र	२०.०	....
फ्रांस	५०.५	२८.०
जर्मनी (फेडरल)	१७०.१	१६७.४
ग्रीस	२५.६	....
इटली	१४६.३	५८.२
स्वीडन	१४.४	....
स्विटज़रलैंड	११.८	....
सीरिया	६.९	....
यू० के०	७६.७	६५.१
यू० एस० ए०	२२४.६	१६३.०

राजनैतिक रूप (Physical Aspect)

संवैधानिक रूप रेखा:—(Constitutional Frame-Work)

टर्की का सुल्तान (सम्राट) तथा खलीफा (धार्मिक नेता) एक ही व्यक्ति होता था परन्तु अक्टूबर १९२२ में ग्राण्ड नेशनल असेम्बली ने (जो कि अप्रैल १९२० में स्थापित की गई थी) इन दोनों को अलग कर दिया। मार्च १९२४ में खलीफा की जगह भी अलग कर दी, और २० अप्रैल १९२४ में वर्तमान संविधान अपना लिया गया। सर्वाधिकार एक ही 'लेजिसलेचर' पर रहता है, और वह है 'ग्राण्ड नेशनल असेम्बली'। यह संस्था गण राज्य के सभापति का चुनाव करती है। एक मन्त्रियों की काउन्सिल जिसके नेता प्रधान-मन्त्री होते हैं, इसकी रक्षक होती है। अतातुर्क के समय अनेक सुधार हुए। सन् १९२६ में तमाम कानूनी सुधार हुए, उनमें अनेक परिवर्तन किये गये। इसी वर्ष 'सिविल मैरिज' की प्रथा भी चलाई गई। सन् १९२८ में इस्लाम धर्म को राष्ट्रीय धर्म से हटा दिया गया। सन् १९३४ में स्त्रियाँ तथा मनुष्यों को वोट देने का अधिकार दे दिया गया। मई १९५० के चुनाव में जनगण राज्य वाली पार्टी, कमाल अतातुर्क की पार्टी डिमोक्रेटिक पार्टी के विरुद्ध हार गई, परन्तु १९५४ में यह जीत गई।

विदेशी सम्बन्ध (Foreign Relations)

टर्की और रूस के सम्बन्ध पहले बहुत ही अच्छे थे। लेनिन तथा कमाल सरकारें एक दूसरे को अच्छी तरह से समझ गईं थीं। परन्तु दुर्भाग्य से दोनों के सम्बन्ध धीरे धीरे क्षीण पड़ने लगे। सन् १९३३ में टर्की ने 'लीग आफ नेशन्स (League of Nations) में अपने को शामिल कर लिया। वास्तव में टर्की द्वितीय महायुद्ध में सम्मिलित नहीं हुआ, परन्तु एक बार २८ फरवरी १९४५ में इसने जर्मनी के विरुद्ध एक झूठी लड़ाई घोषित कर दी थी। बाद में इसी वर्ष इसका संघर्ष सोवियत यूनियन से हो गया, इसके अन्तर्गत मित्रता की सुलह जो १९२१ में हुई थी, समाप्त कर दी गई। सन् १९४७ में प्रेसीडेन्ट ट्रूमन ने टर्की को सैनिक शक्ति देने का बचन दे दिया क्योंकि सोवियत रूस बराबर इस पर दबाव डाल रहा था। फलस्वरूप इसी वर्ष एक सैनिक मिशन यहाँ आया। सन् १९४८ में टर्की 'योरोपियन रिकवरी प्रोग्राम' में सम्मिलित कर लिया गया। सन् १९५२ में N.A.T.O. में भी शामिल हो गया। जून १९५८ तक संयुक्त राज्य अमरीका ने इसे ३५२,२००,-००० डालर की सहायता दी, इसमें सैनिक सहायता का मूल्य सम्मिलित नहीं है। दूसरे ही वर्ष फरवरी के माह में एक पंच वर्षीय मित्रता तथा सैनिक संगठन ग्रीस

और यूगोस्लेविया के साथ स्थापित हुआ और उस पर हस्ताक्षर किये गये। सन् १६५२ में भारतवर्ष के साथ भी इसकी सुलह हो गई।

अरब राज्यों से इसके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहे, इजराइल के कारण तो और भी खराब हो गये। टर्की ने फ्राँस, ब्रिटेन तथा संयुक्त राज्य से १६५१ में परामर्श किया और 'मिडिल ईस्ट डिफेंस आरगेनाइजेशन' (Middle East Defence-Organization) में भी दिलचस्पी ली। इस कार्यवाही को अरब राज्यों ने बहुत धिक्कारा। गत वर्ष इसके और पाकिस्तान के मध्य एक सुलह हुई है, और अब ईराक से भी इस सम्बन्ध में बातचीत चल रही है। सन् १६३२ के 'सादाबाद-पैक्ट' के अन्तर्गत इसके सम्बन्ध ईरान से अच्छे चल रहे हैं।

साँस्कृतिक रूप (Cultural Aspect)

तुर्क और उनकी विशेषतायें (Turks and Their Characterstics)

यदि देखा जाय तो यह देश तुर्क लोगों का वास्तविक जन्म स्थल है। इस जाति का वास्तविक चरित्र यदि देखना है तो वह अनाटोलिया के पठार पर ही दीख सकता है। यहाँ पर लगभग सभी पश्चिमी प्रांतों में तुर्क लोग रहते हैं। यह लोग किस प्रकार अपने जीवन के लिए प्रकृति से लड़ते हैं यह अनुमान पश्चिमी प्रांतों में घूमने पर ही लगाया जा सकता है। पूर्व की दूसरी जातियों से यह लोग प्रकृति से मजबूर होकर प्रायः लड़ते-भिड़ते ही रहते हैं। अनाटोलिया के पठार पर जो तुर्क रहते हैं, वह बड़ी भद्दी आदतों के हैं, बड़ी कठोर भाषा बोलते हैं, तथा बहुत ही खराब वस्त्र पहनते हैं।

इन लोगों की सामाजिक दशा भी बहुत गिरी हुई है। जोजन युद्ध (Traja-war) के समय से इनके कृषि करने के साधनों में कोई भी विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। इन्हें अपने चरागाहों की देख रेख करने का भी ढंग नहीं मालूम है। यहाँ तक कि ग्रीष्म ऋतु की शुष्क घास में भी यह अपने पशुओं को चराते हैं। अंजीर, अंगूर और जैतून की ऐसी उपजें हैं, जिनके द्वारा ये अपनी आवश्यकता की वस्तुओं को प्राप्त कर पाते हैं। जब यही वस्तुयें उसे मिल जाती हैं, तो फिर कष्ट सहने की क्या आवश्यकता है। इस प्रकार की विचार धारा यह लोग रखते हैं।

तुर्क कृषकों के गाँव इतने गन्दे होते हैं, कि कोई भी सभ्य मनुष्य इन पर दृष्टि डालना पसन्द नहीं करता। घर सूर्य में सुखाई हुई ईंटों के, खिड़कियों के स्थान पर केवल दो छेद, एक कमरा उठने बैठने का तथा दूसरा सामान रखने का इत्यादि इनके निवास स्थान की विशेषतायें हैं। न केवल इतना ही बल्कि अन्दर

की फिटिंग इतनी खराब होती है, कि हर समय मकान गिरने का डर रहता है। फर्नीचर के स्थान पर साधारण सी चटाई का ही प्रयोग किया जाता है। पत्थर की सुराहियां तथा तांबे के दो एक बर्तन प्रत्येक घर में मिलते हैं।

डा० कार्ल शेरज़र (Dr. Carl Scherzar) का मत है, कि तुर्क केवल अपनी ही भाषा समझता है, यद्यपि अन्य जातियाँ जो इस देश में रहती हैं, वे बचपन से ही दो भाषायें समझती हैं। तुर्क गम्भीर प्रकृति के होते हैं, अधिकतर काम में सुस्त होते हैं, परन्तु इनमें आवश्यकतानुसार समझ होती है। इन लोगों में व्यापार करने की विशेषतायें नहीं मिलती और न यह लोग हिसाब किताब का काम ही कर सकते हैं। यही कारण है, कि विदेशी लोग यहाँ अधिकांश व्यापार को सम्भाले हुए हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में ये लोग कृषि तथा पशु पालन में तथा नगरों में केवल उतने से व्यापार में लगे हैं, जितने से उनकी जीविका चल जाय। यदि सिखाया जाय तो यह अच्छे मल्लाह तथा कारवां पथप्रदर्शक भी बन सकते हैं। इन लोगों में औद्योगिक विशेषतायें, धन रखने के गुण तथा अपनी सामाजिक दशायें सुधारने की भी योग्यता नहीं है। जिन भागों में ये लोग ग्रीक और आरमीनियन लोगों के सम्पर्क में हैं, वहाँ यह लोग बहुत गिरी हुई दशा में हैं। परन्तु परमात्मा की कुछ ऐसी कृपा है कि कुछ खनिज पदार्थों के धन्धे में लगकर ये लोग भूखों नहीं मरते। बल्कि पेट के लिए कुछ कमा ही लेते हैं। सामाजिक जीवन में से यदि स्त्रियों के अतिरिक्त देखा जाय तो यह ऐसे हैं, कि हमेशा ही अपने में बुराइयां बढ़ाते रहते हैं। यह सब क्यों है? कदाचित शिक्षा की कमी के कारण ही है। परन्तु जो लोग ग्रीक निवासियों के सम्पर्क में आ गये हैं, वे शिक्षित होकर बहुत कुछ परिवर्तित हो गये हैं, जैसे- पश्चिमी भागों के लोग। पश्चिम में इज़मिर तो एक बिल्कुल ही ग्रीक नगर यथेन की भाँति है।

अन्य जातियाँ (Other Races)

टर्की की अन्य जातियों में आरमीनियाँ के लोग तथा ज्यूज़ (jews), की मात्रा बड़े बड़े नगरों में अधिक है। जिपसीज (Gipsies), सिर्केसिअंस (Circassians), अबखासिअंस (Abkhasians), लेज़िज़ (Lazis), तथा युरुक्स (Yuruks), (जो कि [illegible] तथा [illegible] के [illegible] तथा रैर्जीरिम के मध्य रहते हैं) अन्य क्षेत्रों में पाये जाते हैं।

कुर्दिश लोग पश्चिमी तथा दक्षिणी टर्की के अन्य भागों में रहते हैं। ये बड़े शान्तिप्रिय लोग हैं और अफ्शार (Afshars) सिरकेशियन्स (Circassians)

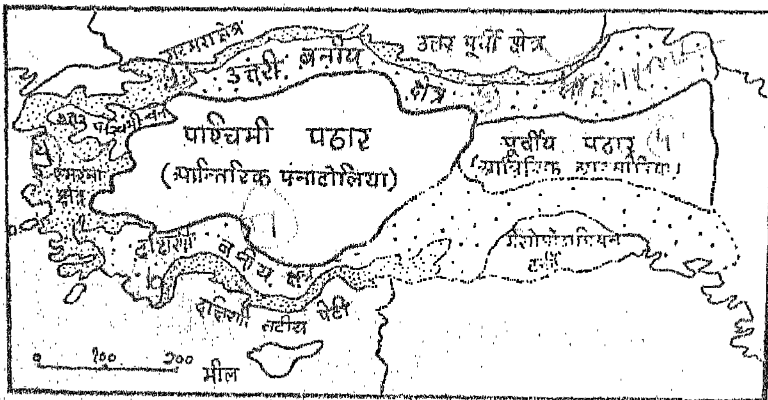
तथा बोल्दन से बिल्कुल भिन्न हैं। तुर्क लोग इन्हें देखकर हमेशा नियम तोड़ने की चेष्टा करते हैं, क्योंकि ये लोग समझते हैं, कि पर्वतों पर सिपाही लोग रहते हैं। 'युरुक्स लोग बहुत ही अच्छी जाति के लोग हैं। इनका रंग सफेद और दाढ़ी लम्बी होती है। यह लोग मुसलमान जाति के हैं, और ऊँट पालने में निपुण हैं। बेक्ट्रीयन (Bactrian) तथा सीरियन (Syrian) किस्म के ऊँटों को मिलाकर इन लोगों ने इनकी एक नई जाति उत्पन्न करली है। यह मिश्रित ऊँट की जाति पर्वती क्षेत्रों के लिए बहुत अच्छी है।

तुर्क जाति की एक शाखा किज़िल बाशिज (Kizil-Bashis) भी हैं। यह रेड हैड (Red Heads) भी कहलाते हैं। अपने को ये लोग ऐस्की तुर्क (Eski Turk) या प्राचीन तुर्क कहते हैं। इनका विस्तार अनाटोलिया से लेकर ईरान और अफगानिस्तान तक है। यह लोग भी मुसलमान जाति के हैं।

टर्की के प्राकृतिक विभाग (Natural Regions of Turkey)

(१) भूमध्य सागरीय तट:—(Mediteranean Coast)

इस भाग में पश्चिम तथा दक्षिण के तटीय निम्न भाग शामिल हैं। आर्थिक दृष्टिकोण से यह बहुत ही उन्नतिशील भाग है। इसमें तीन निम्न भाग विशेषतौर



टर्की— प्राकृतिक विभाग

पर प्रसिद्ध हैं। प्रथम इजमिर का पृष्ठ प्रदेश, जिसमें साइकस (Caicus) हरमस (Hermus) केस्टर (Cayster) मीन्डर (Meander) तथा इन्डोज

(Indos) नदियों की घाटियाँ प्रसिद्ध हैं। यह कृषि की दृष्टि से एक बहुत ही प्रसिद्ध क्षेत्र है द्वितीय पेम्फीलियन मैदान, यह अनाटोलिया के चारों ओर के क्षेत्रों में से एक भाग है। तृतीय, सिसीलियन मैदान, यह भूमध्य सागर के उत्तर पूर्व में अदना के निकट है। इस भाग में प्रवेश करने के लिए रेल मार्ग जो बगदाद से आता है, तौरस पर्वत को एक सुरंग द्वारा पार करता है।

इस भाग में भूमध्य सागरीय जलवायु मिलती है, लगभग छै माह तक बराबर मौसम शुष्क रहता है। वर्षा केवल शीत ऋतु में होती है और वह भी सिर्फ २०" के लगभग। कृषि यहाँ के लोगों का मुख्य धन्धा है। गेहूं और जौ विशेषतौर पर उत्पन्न किया जाता है। कपास सिसीलियन मैदान की एक प्रमुख उपज है। तम्बाकू, इज़मिर तथा मीन्डर नदियों के मध्य में अधिक उत्पन्न की जाती है। भाँग मीन्डर के मैदान में, चुकन्दर उसके निकट तथा चाय चोज़ी में उत्पन्न होती है। कृषि यहाँ प्राचीन ढङ्ग से पुराने प्रकार के औजारों से की जाती है। मशीनों का प्रयोग अब धीरे धीरे बढ़ रहा है। फलों की पैदावार भी यहाँ बहुत होती है। अंगूर, सुल्ताना, अंजीर, संतरे, नारंगी, नींबू, नासपाती विशेषतौर पर उत्पन्न किए जाते हैं। अफीम इज़मिर के क्षेत्र में तथा चावल सिसीलियन मैदान में पैदा होता है। तौरस पर्वत के ढाल प्राकृतिक वनस्पति से ढके हुए हैं। परन्तु यह उतनी घनी नहीं है, जितने कि काले सागर की ओर के ढाल की हैं। यहाँ पर पतझड़ तथा नुकीली पत्ती वाले सदाबहार बन मिलते हैं। वृक्ष यहाँ नौ हज़ार फुट की ऊँचाई तक मिलते हैं। पर्वतों पर काफी बर्फ जमी रहती है। निचले ढालों पर पशु पाले जाते हैं। निम्न भागों में मिट्टी उपजाऊ होने के कारण कपास अधिक उत्पन्न की जाती है। छोटे रेशे वाली कपास जेरली (Jerly) कहलाती है। यह मार्च अप्रैल में बोई जाती है और अक्टूबर में काट ली जाती है। फलों में केला, लेमन तथा नारंगी प्रसिद्ध हैं। सिसीलियन मैदान का प्रसिद्ध नगर अदना है। अरगना के क्षेत्र में विभिन्न धातुयें प्राप्त की जाती हैं।

इज़मिर के भाग का प्रसिद्ध नगर स्मरना है। यहां पर युरुक्स (Yuruks) बंजारे या अर्ध बंजारे लोग पाये जाते हैं। यह लोग लकड़ी काटने के अतिरिक्त, शहद प्राप्त तथा कृषि भी करते हैं। स्मरना अपनी अफीम के लिये विश्व प्रसिद्ध है। इस बन्दरगाह से अफीम जर्मनी, स्वीटजरलैंड, जापान, फ्रांस, इंगलैंड तथा संयुक्त राज्य को जाती है। कपास इस क्षेत्र में सिसीलियन में भी उगती है और स्मरना से यह बाहर भेजी जाती है। तम्बाकू भी स्मरना से बाहर भेजी जाती है। स्मरना फलों का सबसे बड़ा केन्द्र है। यहां धनी व्यक्तियों के अनेक फलों के बाग हैं।

इस क्षेत्र में जैतून भी होता है। इससे तेल निकाला जाता है। गुलाब के फूलों से इत्र तथा गुलाबजल निकाला जाता है। यहां की प्राकृतिक वनस्पति में एक वलूत वृक्ष होता है, इससे एक प्रकार का रंग प्राप्त किया जाता है, जो चमड़ा रंगने के काम आता है। यह विदेशी व्यापार के दृष्टिकोण से बहुत ही महत्वपूर्ण पौधा है।

स्मरना के क्षेत्र में अनेक खनिज पदार्थ भी प्राप्त किये जाते हैं। उदाहरणार्थ इमेरी, एन्टीमनी, क्रोम सिल्वर-लीड, मरकरी, मैंगनीज, सल्फर, लिगनाइट ऐल्युम, आरसेनिक तथा सोना। इमेरी विश्व में सबसे अधिक टर्की व ग्रीक में ही निकाला जाता है। क्रोम दगारदी तथा फेटिगी में प्राप्त होता है। यहीं पर एन्टीमनी तथा इमेरी भी पाई जाती हैं। नमक समुद्र तटों पर प्राप्त किया जाता है। यहां के उद्योग धन्धों में आटा पीसना, तेल निकालना, साबुन बनाना, सूती व ऊनी वस्त्र बुनना प्रसिद्ध हैं। परन्तु फलों को डिब्बों में बन्द करना, डिब्बे बनना, कालीन तथा दरियां बनाना इत्यादि काफी उन्नति पर हैं। केवल कालीन व दरियों के उद्योग में ही बारह हजार व्यक्ति सिर्फ स्मरना के क्षेत्र में लगे हुये हैं। ये वस्तुयें विदेशों को भी भेजी जातीं हैं।

(२) मरमरा का क्षेत्र (Marmara Tract)

यह भाग पश्चिम में डार्डेनलीज़ तथा पूर्व में बोरासफोरस के मध्य में स्थित है। मरमरा का सागर एक प्रकार से एक प्राकृतिक सीमा है, जो टर्की को योरोप से पृथक करता है। भौगोलिक दृष्टिकोण से यह भाग पोशियन (Poution) पर्वतों के अन्त के भाग हैं, जो कि इस सागर के अन्दर तक चले गये हैं और टीलों के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। ये टीले सागर में बहुत ही सुन्दर प्राकृतिक दृश्य बना देते हैं। इस भाग में तीन उपजाऊ घाटियां शामिल हैं। प्रथम-इज़मिद नदी की घाटी द्वितीय बुर्सा का मैदान तथा तृतीय ट्रॉय का मैदान इन तीनों में ट्रॉय का मैदान सबसे प्रसिद्ध है। यह टर्की का सबसे बड़ा जैतून उत्पन्न करने वाला भाग है। यहां की जलवायु में विशेषता यह है कि ऋतु परिवर्तन एकाएक हो जाता है, क्योंकि उत्तर और दक्षिण की हवाओं में प्रायः संघर्ष होता रहता है। तापक्रम बहुत ऊँचा नहीं हो पाता साधारणतया औसत तापक्रम ८०° फ० रहता है। वर्षा का औसत केवल २८" ही है। इस प्रकार की जलवायु में विभिन्न प्रकार की उपजें उत्पन्न होती हैं। इन उपजों में गेहूं, जौ, मक्का ज्वार,-बाजरा, ओट, जैतून, अंगूर, तम्बाकू इत्यादि मुख्य हैं। कृषि यहां के लोगों का प्रमुख धन्धा है। यह लोग खेती प्राचीन ढङ्ग से करते हैं। इसलिये यहां

की प्रति एकड़ उपज बहुत कम है। कृषि पर्वतीय ढालों पर लगभग १०००० फुट की ऊंचाई तक बड़ी आसानी से हो जाती है। बीज बोने के ढंग अलग अलग हैं, परन्तु अधिकतर फेंक कर बोये जाते हैं। फसल यहाँ के लोग अपने हाथ से ही काटते हैं। कृषि में यहाँ के निवासी पशुओं का भी प्रयोग करते हैं। बैल खेतों में काम करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं।

यहाँ के प्रमुख नगरों में इस्तनबूल एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह बोहफोरस के दक्षिणी तट पर स्थित है। इसका बन्दरगाह गोल्डन हार्न बहुत ही सुन्दर है, यहां अनेक जहाज खड़े हुए दृष्टिगोचर होते हैं। इस नगर की जनसंख्या लगभग ८५०००० है। दूसरा ऐतिहासिक नगर बुरसा है, जोकि सुन्दर ओलिम्पस के नीचे स्थित है। इसका बन्दरगाह मुदानिया है, जो एक सड़क तथा रेल द्वारा इस उपजाऊ मैदान से मिला हुआ है। इजमिद की खाड़ी पर इसी नाम का प्रसिद्ध नगर स्थित है। यह तम्बाकू के व्यापार के लिए बहुत उल्लेखनीय है। ट्रॉय के मैदान का प्रसिद्ध नगर चानिक है।

(३) काले सागर का तट:—(Black Sea Coast)

टर्की के उत्तर पूर्व में काले सागर का तटीय भाग है। यहाँ की तट रेखा बहुत ही ऊंची नीची तथा पर्वतीय है। चट्टानें समुद्र से सीधी खड़ी हुई हैं। ऐसी तट रेखा पर बन्दरगाह बहुत कम होते हैं, समतल भाग केवल कहीं कहीं पर ही मिलते हैं। आन्तरिक क्षेत्रों में प्रवेश करना केवल दो ही एक स्थानों पर सम्भव है। यहाँ की जलवायु बहुत उत्तम नहीं है, वर्षा यहाँ अधिक होती है। पश्चिमी क्षेत्रों की अपेक्षा पूर्व में वर्षा का औसत अधिक है। शीत ऋतु यहां अच्छी होती है, वर्षा केवल इसी ऋतु में होती है। ग्रीष्म ऋतु बहुत सुहावनी होती है, और इस ऋतु में वर्षा केवल थोड़े ही भाग में हो पाती है। यहाँ के पर्वतीय ढाल प्राकृतिक वनस्पति से ढके हुए हैं। इन वनों में पाइन, चेष्टनट, बलूत, कार्क तथा जैतून इत्यादि के वृक्ष उगते हैं। कृषि यहाँ के लोगों का मुख्य धन्धा है, परन्तु कुछ लोग वनों से लकड़ी प्राप्त कर उसका व्यापार भी करते हैं। जिन भागों में कृषि की जाती है, उनमें हेलीज (Halys) (जिसका केन्द्र बफरा है,) येशिल तथा कालकिट प्रसिद्ध हैं, परन्तु सिनोप, सेमसुन तथा ट्रेबजन भी उल्लेखनीय क्षेत्र हैं। यहाँ की उपजों में मक्का प्रमुख है, इसके अतिरिक्त तम्बाकू तथा फिल्बर्ट नट विशेष तौर पर प्रसिद्ध हैं। बफरा की तम्बाकू सर्वश्रेष्ठ समझी जाती है। जैतून यहाँ होता तो काफी है, परन्तु उसमें तेल कम निकलता है। यहाँ कुछ खनिज पदार्थ भी मिलते हैं, परन्तु सबसे मुख्य खनिजों में कोयला ही है। इसका उत्पादन ३,५००,००० टन है।

इसके क्षेत्र इरेग्ली के निकट हैं। समुद्र से नमक भी तटीय भागों में प्राप्त किया जाता है। यहाँ पर जनसंख्या केवल दो ही क्षेत्रों में अधिक पाई जाती है। प्रथम बफ्रा के निकटवर्तीय क्षेत्र में तथा द्वितीय करसम्बा के चारो ओर। अधिक तर कृषकों की जनसंख्या है। यह लोग अनेक घरेलू व्यापार में भी लगे हुए हैं। बड़े बड़े उद्योग धन्धे यहाँ पर नहीं पाये जाते। यहां के प्रसिद्ध नगरों में कमसुन तथा करसम्बा ही हैं।

(४) अनाटोलिया का पठारः—(Anatolian Plateau)

टर्की के मध्य में अनाटोलिया का वह पठार है, जो तीन तरफ ऊंची ऊंची पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ है। इस भाग की बनावट के विषय में कहा जाता है, कि यह ईरान तथा तिब्बत के पठारों की भाँति ही तरशियरी युग में बना है। इसके उत्तर तथा दक्षिण की पर्वत श्रेणियों का सम्बन्ध एलबुर्ज व जेगरोश पर्वत श्रेणियों से है। पठार के मध्य में अनेक झीलें हैं, जो स्थानीय नदियों के जल को प्राप्त करती हैं। कहीं कहीं पर नमकीन दलदल भी हैं, जोकि स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से बड़े हानिकारक हैं। पश्चिम की ओर यह पठार नीचा हो गया है। इस पठार का अधिकाधिक रूप समतल मैदान के रूप में है।

जलवायु के दृष्टिकोण से यह भाग रूसी स्टेप्स से मिलता जुलता है। यहां पर महाद्वीपी वातावरण मिलता है। ग्रीष्म ऋतु में कड़ी गर्मी पड़ती है, तापक्रम अधिक हो जाने के कारण हवायें अन्दर की ओर चलती हैं। यह हवायें समुद्र से कुछ नमी भी प्राप्त कर लेती हैं। परन्तु यह तटीय पर्वत-श्रेणियों से टकरा जाती हैं। इसलिये, अन्दर बहुत कम वर्षा कर पाती हैं। मध्य के भाग में औसत केवल १४ इंच ही हो पाती है। कुछ भागों में तो १० इंच से भी कम वर्षा होती है। शीत ऋतु में बड़ी सर्दी पड़ती है, फलस्वरूप निम्न भार के स्थान पर यहाँ उच्च भार स्थापित हो जाता है। और हवायें बाहर की ओर चलने लगती हैं कभी कभी चक्रवातों से भी यहाँ इस ऋतु में वर्षा हो जाती है। अधिक शुष्क वातावरण होने के कारण यहां मिट्टी की तह उड़ गई है, और चारों ओर पथरीली ही भूमि दीखती है। ऐसे भागों में कृषि बहुत ही सीमित क्षेत्र में होती है। जहाँ जल की पूर्ण व्यवस्था है, वहाँ गेहूं उत्पन्न किया जाता है। कुछ ऐसे भागों में जहाँ ज्वालामुखी पर्वतों की मिट्टी है, वहाँ उत्तम श्रेणी का गेहूं मिलता है। गेहूं अधिकतर कोनिया तथा कारामन में ही अधिक उत्पन्न होता है। कारामन में जल एक नहर द्वारा तौरस पर्वत से लाया जाता है। यहां पर अफीम की कृषि भी होती है। तुर्किश अफीम जोकि बहुत ही उत्तम समझी जाती है, कोनिया के निकट ही उत्पन्न होती है।

इस पठार के निवासियों का प्रमुख धन्धा पशु-पालन है। पशु प्रायः उन्हीं

स्थानों पर पाले जाते हैं, जहाँ नदी या झील के किनारे पर उनके लिये चारा उगाने की सुविधा रहती है। लोग अपने साथ भेंड़, बकरी रखते हैं, परन्तु जो कृषि करते हैं, वह अपने साथ बैल रखते हैं। दलदली भागों में भैंसें दृष्टिगोचर होते हैं। कहीं कहीं पर ऊँट भी पाये जाते हैं। परन्तु इन सबों में भेंड़ व बकरियों का ही महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि आर्थिक दृष्टिकोण से ये जीव बड़े लाभदायक होते हैं। भेंड़ से ऊन, मांस तथा दूध तीनों वस्तुयें प्राप्त होती हैं। ये वस्तुयें पश्चिम के नगर इस्तनबूल तथा स्मरना को भेज दी जाती हैं। ऊन कपड़े तथा कालीन बनाने और मांस खाने तथा दूध पीने के काम आता है। ऊन के लिए टर्की पहले ही से बहुत प्रसिद्ध रहा है। 'पिलाड़' यहाँ के लोगों का सबसे स्वादिष्ट भोजन है, या-हर्ट गर्म दूध में डाल कर पिया जाता है। यह ठोस होता है, परन्तु गर्मी से पिघल कर उसी में मिल जाता है।

अनाटोलिया के बकरे बहुत प्रसिद्ध हैं। यहाँ पर अंगोरा नामक बकरा विशेषतौर पर पाला जाता है, क्योंकि उसके बाल बहुत लम्बे होते हैं। इसके बाल सिल्की मोहेर (Silki Mohair) कहलाते हैं। इस आर्थिक वस्तु का पहले उत्पादन में बहुत ऊँचा स्थान था, परन्तु बाद में जब अफ्रीका के बेल्ड का उत्पादन अधिक हो गया तब से इसका स्थान कुछ गिर गया है। मोहेर एकत्रित करके इस्तनबूल निर्यात के लिए भेज दी जाती है। उच्च श्रेणी की मोहेर उत्तर-पश्चिमी भाग से प्राप्त होती है।

अनाटोलिया का पठार तुर्किश लोगों का वास्तविक जन्म स्थल है। यद्यपि यह भाग अन्य तटीय भागों की अपेक्षा, आर्थिक दृष्टिकोण से कम महत्वपूर्ण है, परन्तु फिर भी इसकी महत्ता बहुत अधिक है, क्योंकि यहाँ के मनुष्य बड़े वीर तथा साहसी हैं। यह लोग सदा से ही अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। अंकारा यहाँ का प्रसिद्ध नगर तथा राजधानी है। यह एक ज्वालामुखी क्षेत्र में स्थित है और अन्य बड़े नगरों से रेलों व सड़कों द्वारा मिला हुआ है। इसकी वर्तमान जनसंख्या लगभग २३०,००० है। इस नगर के अतिरिक्त अमासिया तथा अफयोन हैं दोनों नगर बाहर घाटियों पर स्थित हैं।

(५) आरमीनियाँ उच्च भूमि:—(Armenia Highland)

अनातोलिया के पूर्व में आरमीनियाँ का पर्वतीय भाग है। इस भाग की महत्ता अधिक है, कि यहाँ से दजला व फरात नदियाँ निकलती हैं। आरमीनियाँ के भाग में भी एक विशेषता यह है कि मध्य में पठार तथा उत्तर व दक्षिण में पर्वत श्रेणियाँ हैं। उत्तर में काराबाग जो पश्चिम में पोन्टस तक चले गये हैं, तथा दक्षिण

में कुर्दिस्तान की पहाड़ियां जो अनाटोलिया में तौरस के नाम से प्रसिद्ध है। आरमीनियाँ का भाग अनाटोलिया के मुकाबले अधिक ऊंचा है। यहाँ की जलवायु बहुत कड़ी है। वहां पर शीत ऋतु में थोड़ी सी वर्षा हो जाती है, लेकिन साथ ही सर्दी भी बहुत पड़ती है। ग्रीष्म ऋतु में साधारण सी गर्मी पड़ती है, क्योंकि ऊंचाई काफी है। कहीं कहीं पर ज्वालामुखी पर्वत के कारण धरातल ऊंचा नीचा हो गया है। यहां की सबसे ऊंची शिखा अरारत है जोकि १६६१८ फुट ऊंची है। यह ज्वालामुखी का रूप धारण किये हुये है। ऊंची ऊंची घाटियां लगभग आठ या नौ माह तक बर्फ से ढकी रहती हैं।

यहाँ कृषि बहुत कम होती है। अधिकतर पशु पालन का ही धन्धा प्रचलित है। बंजारे अपने पशुओं सहित ऋतुओं के अनुसार उच्च या निम्न क्षेत्रों में घूमा फिरा करते थे, वान यहाँ का प्रसिद्ध नगर है, यह दक्षिण-पूर्व में स्थित है।

पूर्वी भूमध्य सागरीय राज्य

मैसोपोटामिया के पश्चिम में पूर्वी भूमध्य सागरीय राज्य टर्की तथा साउदी अरेबिया के मध्य स्थित हैं। इन राज्यों में सीरिया, लिबेनन, जोर्डन तथा इजराइल महत्वपूर्ण हैं। सीरिया प्राचीन तुर्किस साम्राज्य का एक अङ्ग था, बाद में इस पर फ्रेंच लोगों का अधिकार रहा, सन् १९४१ से यह एक स्वतन्त्र गणराज्य हो गया। इसका वर्तमान क्षेत्रफल १८१३३५ वर्ग किलोमीटर है। लिबेनन, पहले सीरिया का दक्षिणी भाग था। सन् १९४१ में यह भी एक गणराज्य हो गया, इसका क्षेत्रफल २०७१९ वर्ग किलोमीटर है। जोर्डन इजराइल राज्य के पूर्व में है, यह वास्तव में अरब का ही एक अङ्ग है, इसका क्षेत्रफल ९५५१३ वर्ग किलोमीटर है। इजराइल एक छोटा सा राज्य है, जोकि जोर्डन के पश्चिम में स्थित है। पहले यह भाग जोर्डन से मिला हुआ था, और सम्पूर्ण क्षेत्र 'पेलेस्टाइन' (Palestine) के नाम से प्रसिद्ध था। पेलेस्टाइन जिसका क्षेत्रफल ३०००० वर्ग किलोमीटर से अधिक था, सन् १९२० से लेकर १९४८ तक रहा, बाद में यह भाग दो राज्यों में विभाजित कर दिया गया।

भौतिक रूप (Physical Aspect)

धरातल (Relief)

भूमध्य सागर के पूर्वीय भाग का धरातल साधारण है, परन्तु इसका विस्तार-पूर्वक अध्ययन कुछ कठिन है, तटीय मैदान एकसा नहीं है, बल्कि कहीं पर कुछ तंग और कहीं चौड़ा है। वास्तव में चौड़ाई कहीं भी दस मील से अधिक नहीं है। जगह जगह पर रेत के टीले (Sanddunes) दृष्टिगोचर होते हैं, पूर्व की ओर कुछ पहाड़ियां हैं, कुछ और पूर्व में तट के ही समानान्तर एक निम्न क्षेत्र है, जिसके दक्षिण में जोर्डन तथा उत्तर में ओरन्टीज नामक नदियाँ बहती हैं। अन्य पूर्वीय भाग उच्च भूमि के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। इस सम्पूर्ण क्षेत्र को हम चार उत्तर से दक्षिण तक समानान्तर पेटियों में विभाजित कर सकते हैं।

यहाँ सबसे प्रमुख क्षेत्र जोर्डन तथा ओरन्टीज नदियों की घाटियाँ हैं। यह एक धसा हुआ क्षेत्र (Rift valley) है, कदाचित यही भाग आगे लाल सागर, एबिसीनिया

व अफ्रीका की झीलों तक चला गया है। पूर्व की ओर पर्वतों में दो निम्न भाग दृष्टिगोचर होते हैं। पहला दक्षिण में रेगिस्तानी भाग के निकट है और दूसरा उत्तर में एलेक्ज़ान्ड्रिया खाड़ी के निकट है। यही वह मार्ग है, जिससे होकर सिकन्दर महान आया था। धसा हुआ भाग उत्तर में अन्त हो जाता है, यही कारण है, कि वहाँ पूर्व में कोई भी पहाड़ी भाग नहीं है। उत्तर की ओर जो घाटियों वाले मार्ग हैं वे बड़े आसानी से सीधे मेसोपोटामिया में प्रवेश कर जाते हैं।

धसे हुये भाग के मध्य की उच्च भूमि तथा तटीय क्षेत्र के कई खंड हैं। उत्तर में अमानस श्रेणी जिसकी ऊंचाई एक मील के लगभग है, इसके दक्षिण में ओरन्टीज़ नदी तथा चूने की चट्टानों की कैसियस (Cassius) नामक श्रेणी है, लटाकियाँ इसमें एक महत्वपूर्ण घाटी है, इसके बाद एक निम्न भाग और है जो जेबिल अन्सरजी (Djebel Ansariji) के नाम से प्रसिद्ध है। लिबेनन के पर्वत १०००० फुट ऊंचे हैं। और उत्तर में त्रिपोली से लेकर लितानी नदी के मुहाने तक विस्तृत है। नीचे जो भाग पहले पेलेस्टाइन कहलाता था, उसमें साधारण से ऊंचे गेलिली (Galilee) नामक पर्वत है। यहाँ की मिट्टी बहुत उपजाऊ है। यह निम्न प्रदेश समारिया के नाम से प्रसिद्ध है। इसी के निकट ज्यूदिया (Judia) नाम की उच्च भूमि है। इस उच्च भाग में केवल कुछ ही घाटियाँ पार करने योग्य हैं। यहाँ पर चौड़ाई कहीं भी ४० मील से अधिक नहीं है। यह उच्च भाग समुद्र के इतने निकट है, कि तटील भाग या तो हैं ही नहीं और है भी तो बहुत ही तंग, सीरिया में तो कोई भी श्रेणी ऐसी नहीं है, जो तटीय भाग से कुछ दूर हट कर हो। कुछ तटीय नगर जो यहाँ स्थित हैं, वह नदियों के डेल्टों पर ही हैं। लिबेनन के मैदान बहुत तंग हैं, परन्तु कृषि के दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण है। माउन्ट कारमेल (Carmel) के दक्षिण में शरोन नाम का प्रसिद्ध मैदान है। यहाँ पर जाफा नाम का सुन्दर बन्दरगाह स्थित है। इसके भी दक्षिण में फिलिस्तिया नामक मैदान है।

मध्य की घाटी के दोनों ओर लगभग ४००० फुट ऊंची उठी हुई भूमि है। यहाँ पर अनेक भूभाग हैं, जिनके विभिन्न नाम हैं। ओरन्टीज की निम्न घाटी चेब (Chab) कहलाती है। दक्षिण में लितानी (Litani) नदी है, जो कि बेलका (Belka) तथा जोर्डन का गड्ढा एलघोर (El-ghor) के नाम से प्रसिद्ध है। इस गड्ढे में सबसे निम्न भाग मृत्यु-सागर (Dead sea) है, जो कि समुद्र सतह से १२६७ फुट गहरा है, यहाँ तक गेलिली का सागर (Sea of-

Galilee) भी समुद्र सतह से ६८८६ फुट है। मृत्यु सागर का जल बहुत ही खारी है, औसत खारीपन २४ प्रतिशत है। इसमें सन्देह नहीं कि यह सागर किसी समय बहुत विस्तृत था, और कदाचित इसका जल भी मीठा था। आजकल पोटास तथा ब्रोमाइन यहाँ पर वैज्ञानिक ढंग से निकाली जाती है। इस सागर की गहराई १३१० फुट है, तथा क्षेत्रफल ४००वर्ग मील है, इस घाटी के पूर्व में सीरिया की पहाड़ियां हैं। उदाहरणार्थ-कुर्द दांग, एन्टी-लिबेनन तथा हरमन। इनकी अधिक से अधिक ऊँचाई ९७००० फुट है। जोर्डन में गिलीद तथा मोआब नामक पहाड़ियां हैं।

जलवायु (Climate)

इस भाग की जलवायु शुष्क है। पर्वतीय धरातल होने के नाते यहाँ विभिन्न प्रकार की जलवायु सम्बन्धी दशायें मिलती हैं। ग्रीष्म ऋतु बहुत गर्म एवं शुष्क होती हैं। परन्तु साथ ही शुष्क ऋतु बड़ी सुहावनी होती है, वर्षा यहाँ केवल शीत ऋतु में ही हो पाती है, और वह भी भूमध्य सागरीय चक्रवातों से। पर्वतीय ढाल जो कि इन चक्रवातों के सम्मुख पड़ते हैं, बहुत अधिक वर्षा प्राप्त करते हैं। लिबेनन के तटीय पर्वत ४५ इंच, दमस्क ११ इंच (अपनी आन्तरिक स्थिति के कारण) तक वर्षा प्राप्त करते हैं। तटीय भागों में बीरत ३६", हैफा २७", जैफा २१" तथा गाज़ा १०" वर्षा प्राप्त करते हैं। आन्तरिक भाग में वर्षा केवल वहीं होती है जहां हवाओं के पहुंचने के लिए मार्ग मिल जाते हैं। ग्रीष्म ऋतु बहुत गर्म तथा शुष्क होती है।

मानव रूप (Human Aspect)

ऐतिहासिक आधार:—(Historical background)

यहाँ का इतिहास बहुत प्राचीन है। ईसा से छै सौ वर्ष पूर्व यहाँ हैब्रू राज्य का अन्त हो चुका था। इस राज्य के बाद रोमन लोग आये फिर अरब लोगों का राज्य रहा। इन लोगों ने १३ शताब्दियों तक राज्य किया। इनके राज्य का क्षेत्रफल भी बहुत अधिक था। अरबों के बाद यहाँ तुर्क लोग आये। इसके उपरान्त यहूदी लोगों का राज्य रहा अब भी यहाँ पेलेस्टाइन के भाग में बहुत अधिक यहूदी लोग रहते हैं।

जनसंख्या वितरण:—(Population Distribution)

यहाँ की वर्तमान जनसंख्या लगभग ६६६६००० है। इसमें से सीरिया में ३६३६०००, जोर्डन में १३६००००, लिबनान में १३५३००० तथा इजराइल में ३५०००० है। जनसंख्या-घनत्व केवल उन्हीं स्थानों पर अधिक है, जहाँ उपजाऊ

क्षेत्र है, और वर्षा भी हो जाती है। तटीय भाग घने बसे हुए हैं। आन्तरिक भागों में जहाँ कम वर्षा होती है। वहां भी कम जनसंख्या घनत्व है, केवल कुछ बाजारों की बस्तियाँ ही दृष्टिगोचर होती हैं। पहाड़ी व मरुस्थलीय भागों में तो घनत्व और भी कम है। यहाँ के प्रसिद्ध नगरों में तेल--अवीव की जनसंख्या १९४६ में १६७०००, हैफा की १२६००० तथा जेरूसलम की १५७००० थी।

आर्थिक रूप (Economic Aspect)

प्राकृतिक वनस्पति:—(Natural Vegetion)

यहाँ की प्राकृतिक वनस्पति भिन्न प्रकार की है, क्योंकि जलवायु हर स्थान पर समान नहीं है। पश्चिमी भाग में जहाँ भूमध्य सागरीय जलवायु मिलती है, वह भूमध्य सागरीय वनस्पति जैसे—बलूत, जैतून नीबू, नारंगी तथा कार्क के वृक्ष मिलते हैं। दक्षिण की ओर मरुस्थलीय वनस्पति दृष्टिगोचर होती है। पूर्व के शुष्क भागों में काँटेदार झाड़ियां तथा ठिगने वृक्ष मिलते हैं। जहाँ कहीं भी आकस्मात् वर्षा हो जाती है, वहाँ छोटी छोटी घास उग आती है। ऐसे स्टेपलैंड बंजारों के लिए बड़े महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। आर्थिक दृष्टिकोण से यह प्राकृतिक वनस्पति बड़ी उपयोगी है, क्योंकि इनसे लकड़ी व फल भी प्राप्त होते हैं।

कृषि:—(Agriculture)

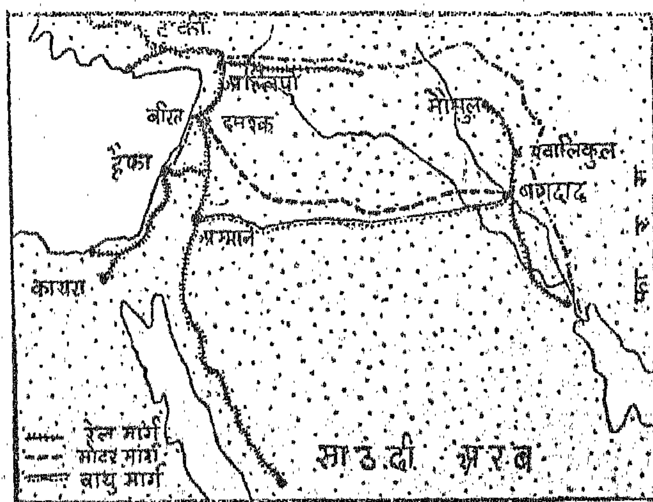
यहाँ के लोगों का प्रमुख धन्धा कृषि करना है। परन्तु समान जलवायु न होने के कारण यह धन्धा केवल उन्हीं स्थानों पर उन्नति कर पाया है, जहाँ कृषि के लिए उत्तम है। कृषि के दृष्टिकोण से केवल दो ही क्षेत्र उल्लेखनीय हैं, प्रथम शैरोन का मैदान (Plain of Sharon) तथा द्वितीय एज्ड्रेलन की घाटी (Valy of Esdraelan)। इन दो क्षेत्रों के अतिरिक्त अन्य उन स्थानों पर कृषि की जाती है, जहाँ सिन्चाई की पूर्ण व्यवस्था है। मरुस्थलीय भागों की मिट्टी बहुत उपजाऊ होती है, और यदि थोड़ा सा भी जल इसको मिल जाता है तो बहुत ही सुन्दर हरी भरी वनस्पति उग आती है। यहां की कृषि उपजें विभिन्न प्रकार की हैं। गेहूं यहाँ की प्रमुख उपज है, परन्तु गेहूं के साथ जौ, मक्का तथा ज्वार-बाजरा भी बोया जाता है। फलों में जैतून, अंजीर, अंगूर, नीबू तथा नारंगी इत्यादि हैं। यहां पर तम्बाकू विशेषतौर पर उत्पन्न की जाती है। अब यहां पर कपास भी बोया जाने लगा है। जनसंख्या वृद्धि यहाँ इतनी अधिक हो गई है कि कृषि उपजें उसके लिये पूर्ण नहीं पड़तीं। फलस्वरूप बहुत सा खाद्य पदार्थ विदेशों से आयात किया जाता है।

खनिज सम्पत्तिः –(Mineral Wealtb)

यह भाग खनिज पदार्थों में विशेषतौर पर निर्धन है। यहां कोई भी महत्वपूर्ण खनिज नहीं पाया जाता। केवल नमक अवश्य स्थानीय क्षेत्र में मृत्यु सागर से प्राप्त कर लिया जाता है। पोटास भी इसी से प्राप्त की जाती है। यहां तेल निकालने की भरसक चेष्टा की गई परन्तु किसी भी प्रकार से प्राप्त नहीं हो सका। खनिज पदार्थों की कमी विदेशों से मंगा कर पूरी की जाती है।

उद्योग धन्धे:—(Industries)

यहां के उद्योग धन्धे सीमित हैं, क्योंकि अधिकतर स्थानीय कच्चे माल पर ही निर्भर रहते हैं। प्रमुख उद्योग में पशुपालन हैं। इससे बहुत सी ऊन व चमड़ा प्राप्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त ऊनी व सूती वस्त्र के उद्योग घरेलू रूप में तथा तेल निकालना, शकर, साबुन तथा शराब तैयार करने के बड़े बड़े कारखाने भी मिलते हैं। कुछ स्थानों पर सीमेन्ट तैयार करने के कारखाने भी स्थापित हो गये हैं। रेशम और बनावटी रेशम उद्योग यहां धीरे धीरे उन्नति कर रहा है। चमड़े के जूते, थैले तथा पेटियां यहां बहुत काफी मात्रा में तैयार किया जाता है। तम्बाकू से सिग्रेट, बीड़ी, तथा हुक्के की तम्बाकू तैयार की जाती है। अन्य आधुनिक उद्योगों की ओर ध्यान दिया जा रहा है। परन्तु पूर्ण सुविधायें न होने कारण कदाचित उन्नति होना असंभव सा प्रतीत होता है।



दक्षिण-पश्चिम एशिया के व्यापारिक मार्ग

यातायात के साधन:—(Means of Transport & Communication)

यहां पर यातायात के साधनों में बहुत उन्नति नहीं हुई है। इसका कारण यह है, कि यहां दुर्भाग्य से खनिज सम्पत्ति का अभाव है तथा जलवायु भी मानव विकास के हेतु बहुत उत्तम नहीं है। रेलें तो यहां बहुत ही कम हैं। केवल एक महत्वपूर्ण रेलवे लाइन बरित का एल्लिपो से मिलाती है। यह उत्तर में टर्की तक चली गई है। बरित रेल द्वारा दमास्कस से भी मिला हुआ है। एक रेल मार्ग बरित से इज़राइल होता हुआ स्वेज़ तक चला गया है। सड़कें यहां कई पक्की मोटर चलाने योग्य मिलती हैं। यह सड़कें यहां के लगभग सभी बड़े बड़े नगरों को मिलाती हैं। दमास्कस से अब पक्की सड़कें न केवल बरित, तैल-अबीब, अल्लिप्पो तक बल्कि मक्का और मदीना तक भी जाती हैं। कारवां मार्ग भी इस क्षेत्र तक आते हैं। पूर्व में बग़दाद से आरम्भ होने वाला तथा साउदी अरेबिया से आने वाले कारवां मार्ग यहीं पर अन्त होते हैं।

विदेशी व्यापार: – (Foreign Trade)

आर्थिक दृष्टिकोण से यह भाग बहुत पिछड़ा हुआ भाग है। यहां पर खनिज पदार्थों की कमी के अलावा, खाद्य पदार्थों की भी कमी रहती है। फलस्वरूप यही वस्तुयें अधिक मात्रा में आयात की जाती हैं। सन् १९५१ में जो यहां आयात की हुई वस्तुयें थी, उनमें सूती वस्त्र, पशु, मोटर गाड़ियां, कहवा, सीमेन्ट तथा पैट्रोल था। और निर्यात की हुई वस्तुओं में गेहूं, जौ, तरकारियां, चमड़ा तथा खाल इत्यादि महत्वपूर्ण थीं।

राजनैतिक रूप (Political Aspect)

विदेशी सम्पर्क (Foreign Relation)

इस भाग में कुछ राज्य ऐसे हैं जिनके सम्बन्ध दूसरे देशों से बहुत ही अच्छे हैं। उदाहरणार्थ-सीरिया—इसके सम्बन्ध ग्रेट ब्रिटेन तथा अमरीका से बहुत ही सन्तोषजनक हैं। अरबों से भी इनका कोई विशेष संघर्ष नहीं रहा। लिबेनन का घनिष्ट सम्बन्ध अरब राज्यों से है और साथ ही इसके सांस्कृतिक सम्बन्ध फ्रांस, संयुक्त राज्य अमरीका तथा दक्षिणी अमरीका से भी स्थापित हो गये हैं। जोर्डन पर विशेष कृपा ग्रेट ब्रिटेन की रही है क्योंकि ग्रेट ब्रिटेन सदा ही इसे आर्थिक तथा सैनिक सहायता देता आया है। गत वर्षों यहां झगड़े भी हुए, परन्तु, अब यह पूर्णतया शान्त है और किसी का भी किसी से संघर्ष नहीं है।

सांस्कृतिक रूप (Cultural Aspect)

जातियाँ:—(Races)

यहाँ पर विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं। सीरिया तथा पेलेस्टाइन के निवसी सेमिटिक जाति के हैं। इन लोगों में ग्रीक और अरब जाति के लोगों का मिश्रण भी मिलता है। लिबेनन के उत्तर में नुसारी जाति के लोग भी मिलते हैं। पेलेस्टाइन के लोग यहूदी हैं। परन्तु यहाँ ईसाई तथा मुसलमान धर्म को मानने वाले लोग भी हैं। लिबेनन की ईसाई प्रोटेस्टन धर्म को भी मानने लगे हैं। सीरिया में कुछ फोनेशियन तथा अरमामियन जाति के लोगों का मिश्रण भी मिलता है।

अन्य जातियों में मेरोनाइट, ड्रूसेज़, नुसारी तथा फिलाईन भी हैं।

रहन सहन:—(Living)

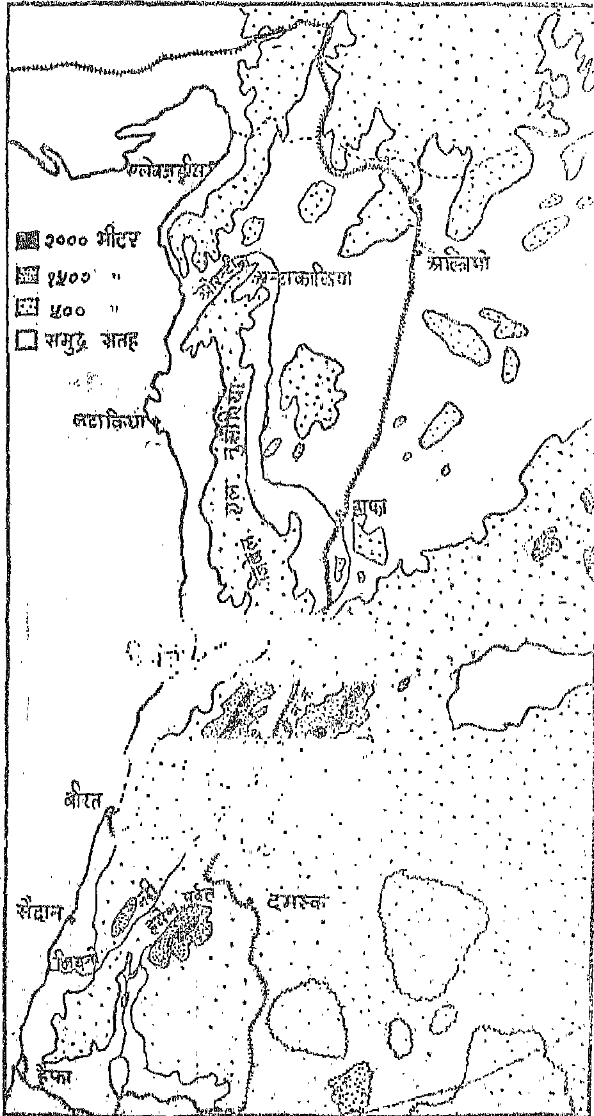
यहाँ के इसाई लोगों का रहन सहन यूरोपीयन लोगों से बहुत कुछ मिलता जुलता है। लोग या तो व्यापारी हैं, और या किसी उद्योग-धन्धे में लगे हुए हैं। इनका गृहस्थ जीवन बड़ा अच्छा होता है। स्त्रियाँ बड़ी योग्य तथा शिक्षित होती हैं। इनको घर के कार्य करने में बड़ा आनन्द आता है। अधिकतर इनके बच्चे फ्रेंच या अंग्रेजी भाषा सीखते हैं। यहूदियों का रहन सहन साधारण होता है, लोग अधिकतर कृषि तथा उद्योग धन्धों में लगे हुए हैं। कुछ यहूदी व्यापार भी करते हैं। स्त्रियाँ घर की देख रेख करतीं हैं। ये अधिक शिक्षित नहीं होतीं बल्कि धार्मिक शिक्षा बचपन से ही इन्हें दी जाती है। अरब के लोगों का जिन पर प्रभाव पड़ा है वह बिल्कुल मुसलमानी ढंग से रहते हैं। उनकी स्त्रियाँ पर्दा बहुत करती हैं। और पुरुष बाहर का कार्य देखते हैं। ये लोग भी अपने धर्म के कट्टर होते हैं।

सीरिया

भौगोलिक दृष्टिकोण से सीरिया उत्तर में टर्की, पश्चिम में लिबेनन तथा भूमध्य सागर, दक्षिण में जोर्डन व इजराइल और दक्षिण पूर्व में ईराक से घिरा हुआ है। इसका वर्तमान क्षेत्रफल ७२२३४ वर्ग मील है इसका धरातल समुद्र सतह से ७०० फीट ऊंचा है। धरातल चार भागों में विभाजित किया जा सकता है यह चार भाग इस प्रकार हैं—(१) तटीय पेटी (२) पश्चिमी पर्वतीय पेटी (३) मध्य का निम्न भाग तथा पूर्व की पहाड़ियां (४) पूर्वी मरुस्थल तथा पठार।

(१) तटीय भाग में भूमध्य सागरीय वातावरण है, मैदान यद्यपि संकरा है, परन्तु फिर भी कहीं कहीं पर कुछ चौड़ा हो गया है। जैसे-एलेक्जेंड्रिया, त्रिपोली बीरूत के निकट यह तट बहुत उपजाऊ है। वर्षा भी यहाँ उपयुक्त मात्रा में हो जाती है।

(२) पश्चिमी पर्वतीय पेटी भिन्न भौतिक रूप प्रकट करती है। उत्तर से



सीरिया सामान्य

दक्षिण तक इसमें अनेक गहरी घाटियां हैं। पहली अमानस श्रेणी दूसरी जिबेल

एन नुसीरिया तथा तीसरी लिबेनन का ब्लोक। प्रथम अमानस श्रेणी को तौरस की चोटी भी कह सकते हैं। यह उत्तर-उत्तर-पूर्व से दक्षिण-दक्षिण-पूर्व तक फैली हुई है। यह सीसीलिया तथा एन्टीओच मैदानों को अलग करती है। बगदाद रेलवे काफी उत्तर में इसमें से होकर चली गई है। दूसरा मध्य का ब्लोक ओरन्टीज़ के दक्षिण से आरम्भ होता है, यह रोमन के समय मान्सकैसियज कहलाता था, परन्तु अब जिबे एन नुसीरिया कहलाता है। इसका नाम एक मुसलमान गोत्र पर पड़ा है। प्रमुख श्रेणी की औसत ऊंचाई ३००० फीट है, पूर्व में ओरन्टीज की घाटी है, ढाल इसके पश्चिम की ओर है। इस ढाल पर कई खड़ी खड़ी चट्टानें दृष्टिगोचर होतीं हैं। तृतीय दक्षिण का ब्लोक बहुत ही साधारण है। इस पर घने वन हैं। यह जिबेर अक्कर कहलाती है। दक्षिण में यह लिबेनन में प्रवेश कर गई है। यहाँ पर चूने की चट्टानें भी दृष्टिगोचर होती हैं।

(३) मध्य का निम्न भाग उतना नीचा नहीं है, जितना कि मृत्यु सागर का भाग। यह समुद्र सतह से भी नीचा नहीं है। उत्तर में एन्टीओज़ झील तथा एन्टीओज़ मैदान है। दक्षिण में ओरन्टीज़ की घाटी है। इस मैदान में शहतूत के वृक्षों पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं।

ओरन्टीज़ की मध्य की घाटी नुसीरिया के भाग में आ जाती है। यह यद्यपि उपजाऊ है परन्तु दलदली भी बहुत है। इसका ऊपरी भाग एक १० मील चौड़ी घाटी के रूप में है। क्योंकि यह बहुत ऊंचा नहीं है इसलिये यह कुछ गर्म रहता है।

(४) पूर्वी पर्वत श्रेणी एक सी नहीं है। यह कहीं पर नीची तथा कहीं पर ऊँची है। उत्तर में नीची होने के कारण इसका रूप एक पठार की भाँति है, यह बिल्कुल नग्न व बन्जर है। यह भाग बहुत शुष्क है, केवल अलीपो के स्थान पर यह थोड़ा सा उपजाऊ हो गया है क्योंकि ओरन्टीज़ नदी का क्षेत्र आ जाता है, लावा चट्टानें भी इसमें पाई जाती हैं। पूर्व की श्रेणी एन्टी-लिबेनन के नाम से प्रसिद्ध है। इसकी ऊँचाई ६००० फीट है। यह बहुत ही सुन्दर पहाड़ियाँ हैं। इसमें अनेक गहरी गहरी घाटियाँ भी हैं, बरादा घाटी के दक्षिण में श्रेणी ऊंची हो गई है, और माउन्ट हरमन के नाम से पुकारी जाती है, चोटी १००० फीट ऊँची है। पूर्व में पठारी क्षेत्र आरम्भ हो जाता है। पूर्व के पठार सीरिया के मरुस्थलीय भाग हैं। पश्चिम में कहीं [illegible] श्रेणी [illegible] नहीं है। सीरियन उच्च भूमि पर कभी कभी वर्षा हो जाती है। [illegible] श्रेणी के [illegible] से ही मरुस्थलीय भाग आरम्भ हो जाता है।

सीरिया की जलवायु सब स्थानों पर समान नहीं है। कहीं पर यह बहुत नम तथा कहीं पर शुष्क है। मरुस्थलीय भाग में वर्षा बिल्कुल नहीं हो पाती, परन्तु कुछ स्थानों पर जहाँ हवाओं को मार्ग मिल जाता है, थोड़ी सी वर्षा हो जाती है। पर्वतों पर अपेक्षाकृत अधिक वर्षा हो जाती है, औसत ४०" का है। अलिपो में तापान्तर अधिक रहता है लगभग यही दशा दमस्क में भी है।

तेरहवीं शताब्दी में लिबेनन तथा सीरिया दोनों तुर्किस साम्राज्य के ही भाग थे। जब प्रथम महायुद्ध के समय टर्की हार गया, तो फ्रेंच को इस पर अल्प काल के लिए अधिकार प्राप्त हुआ। सन् १९२५ में अलाविज, जिबेल द्रुज, दमस्क तथा अलिपो सीरिया में सम्मिलित कर दिए गए। सन् १९२७ में राष्ट्रीय विद्रोह उठ खड़ा हुआ। इसका अन्त १९२९ में हुआ। ये चक्कर द्वितीय महायुद्ध के आरम्भ तक चले। सन् १९४० में जब फ्राँस हार गया तो उसकी स्थिति बड़ी शोचनीय हो गई। सन् १९४२ में ब्रिटिश लोगों ने इसको पूर्णतया स्वतन्त्र कराने की चेष्टा की, अगले ही वर्ष सीरिया गणराज्य स्थापित कर दिया गया, फ्रेंच लोगों ने इसे १९४५ में स्वीकार किया। सीरिया अरब लीग में मार्च १९४५ में शामिल हो गया और बाद में स्थाई रूप से संयुक्त राष्ट्र का भी मेम्बर हो गया। मई १९४५ में एक फ्रेंच कमाण्डर ने दमास्कस पर बम गिराये क्योंकि सीरिया के नेता एक संधि पर हस्ताक्षर करने को तैयार नहीं थे। सुरक्षा परिषद ने सीरिया के मामले में सहायता की, फलस्वरूप १५ अप्रैल १९४६ में फ्रेंच लोगों को अपनी फौजें यहाँ से हटानी पड़ीं।

स्वतंत्रता पाने के उपराँत यहाँ अनेक प्रकार की गड़बड़ी उत्पन्न हो गई, क्योंकि राजनैतिक नेता कोई विशेष अनुभवी नहीं थे। मार्च १९४९ से लगातार यहाँ पाँच बार सेना ने शासन प्रबन्ध अपने हाथों में सम्भाला था। इसी वर्ष कर्नल हुसिन जैइक ने सभापति शुकरीबे पर दबाव डाला। बाद में कर्नल शिशाकली को सेनापति की पदवी से हटा दिया गया। पहली दिसम्बर १९५१ में कर्नल शिशाकली ने तीन दिन पुरानी डा० दवालिबी की मिनिस्ट्री को मजबूर कर दिया, फलस्वरूप प्रधान मंत्री तथा सभापति दोनों को अलग होना पड़ा। २५ फरवरी १९५४ में शिशाकली का शासन ब्रिगेडियर शुकैर द्वारा हटा दिया गया। ब्रिगेडियर शुकैर ने पहली मार्च को अशेम अत्तासी को जिसकी आयु केवल आठ वर्ष की थी, सभापति की पदवी दे दी। दूसरे ही दिन अशेम अत्तासी ने १९५३ के शिशाकली संविधान को रद्द कर दिया और पुनः १०५० वाला संविधान जारी कर दिया। जो चुनाव २४ या २५ सितम्बर १९५४ को हुए उनके अन्तर्गत इन परिवर्तनों को स्वीकार कर लिया गया।

सीरिया की वर्तमान जनसंख्या ३,६५५,६०४ है, जब कि १९५१ में यह केवल ३,३२६,१३७ । सन १९५२ में जन्म दर प्रति हजार यहाँ २५.७ तथा मृत्यु दर प्रति हजार ६.८ थी। यहाँ पर तीन चौथाई से अधिक मुसलमानों की जनसंख्या है, सीरिया के इसाई कुल चौथाई ही हैं। अधिकतर लोग अरब के निवासी ही हैं, परन्तु इनमें वर्षों से अन्य जातियों का मिश्रण होता रहा है, जैसे तुर्क, कुर्द, आरमीनियन, सिरकेसियन, ज्यूज तथा ईरानियन। यहाँ पर लोगों के भिन्न भिन्न धर्म हैं। यही कारण था कि फ्रेंच लोगों ने सीरिया को धार्मिक आधार पर चार भागों में विभाजित किया था।

यहाँ के प्रमुख नगरों की जनसंख्या सन १९५२ में इस प्रकार थी—

आलिपो	३८०९१६
दमश्क	३७२,७८८
होम्स	२६१९०४
हामा	१५५६७१
लटाकिया	१०४,३६३

सीरिया में विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक वनस्पति पाई जाती है। पश्चिम की ओर भूमध्य सागरीय वनस्पति मिलती है। इसमें ओक, जैतून, नीबू तथा कार्क के वृक्ष मिलते हैं। पहाड़ों पर बन केवल उन्हीं स्थानों पर हैं जहाँ कुछ वर्षा हो जाती है। कहीं कहीं पर सिड़ार के वन मिलते हैं, ये आर्थिक दृष्टिकोण से बड़े महत्वपूर्ण हैं। माउन्ट हरमन जो कि पेलेस्टाइन की ओर है प्राकृतिक वनस्पति में बड़े धनी हैं। ओरन्टीज नदी की घाटी में भी कुछ वन मिलते हैं। पर्वतों के पूर्व में प्राकृतिक वनस्पति का रूप ही परिवर्तित हो गया है, क्योंकि यहाँ से मरुस्थलीय भाग आरम्भ हो जाते हैं। इन भागों में खजूर के वृक्षों के अतिरिक्त काँटेदार झाड़ियाँ भी मिलती हैं।

कृषि यहाँ के लोगों का मुख्य धन्धा है। यहाँ पूरे क्षेत्रफल का आधा भाग कृषि करने योग्य है। इसमें से लगभग सभी भाग पर कृषि की जाती है। कृषि करने के साधन यहाँ प्राचीन थे, परन्तु अब आधुनिक साधनों का उपयोग भी किया जाने लगा है। सन १९४८ में यहाँ ३०० ट्रैक्टर थे, यह मात्रा १९५१ में १३४२ हो गई। यहाँ विभिन्न उपजें उत्पन्न की जाती हैं।

सन् १९५४ में सीरिया की प्रमुख फसलों का उत्पादन
(मेट्रिक टन में)

गेहूँ	८००,०००

जौ	५६१,०००
मक्का	२१,५७४
ज्वार बाजरा	१०२,८१६
चावल	२४,५४८
चुकन्दर	५५,०००

सीरिया की कृषि उपजें

	क्षेत्रफल (000 Hactares)			उत्पादन (000 Met. Tons)		
	१६५०	१६५१	१६५२	१६५०	१६५१	१६५२
कपास (लिन्ट)	७८	२७७	१४२	३५	४६	४६
गेहूँ	६६२	१०३७	६००	८३०	५१०	८५०
जौ	४१६	३४४	४००	३२२	१५५	३५०
तरकारियाँ	८	६६	—	४७	४०	१४२
तम्बाकू	१०	११	—	२	६	—
चावल	७	—	—	२१	६	६

आधा गेहूँ दमास्कस के मैदान तथा हौरन पठार पर उत्पन्न होता है। कपास की कृषि गत वर्षों से उत्तर-पूर्व में बहुत बढ़ गई है। परन्तु ढंग बहुत अच्छा नहीं है। लम्बे रेशे वाली कपास के उत्पादन को बढ़ाने की चेष्टा की जा रही है। सन १६५४ में यहाँ कपास उत्पन्न करने का क्षेत्र १८७,८८७ (हैक्टर्स) था। साफ की हुई कपास ७२७२६ टन तथा बीज १२६२६७ टन हुए। दमास्कस में तम्बाकू भी उत्पन्न की जाती है। अन्य उपजों में जौ, चावल तथा तरकारियाँ हैं। सन १६५३ में यहाँ चिकपीज १०५५० टन लेंटिल ६२८१४ टन, अंगूर १६७२६४ टन, जैतून ४८६०२ टन तथा जैतून का तेल ११०७१ टन हुआ। पश्चिम की ओर विभिन्न फल भी उत्पन्न होते हैं। इन फलों में नीबू, नारंगी, अंगूर, अंजीर, जैतून तथा अखरोट व बादाम इत्यादि हैं।

इस देश में अनेक खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं। परन्तु इनमें से बहुत कम मात्रा में निकाले जाते हैं। सोडियम क्लोराइड तथा बिटुमन का उत्पादन बढ़ रहा है, फास्फेट, लीड, तांबा, एन्टीमनी, निकिल, क्रोम, जिपसम तथा मैंगनीज आदि धातुयें पाये जाने की सम्भावना है।

सीरिया में अनेक उद्योग धन्धे उन्नति कर गये हैं। इनमें प्रमुख सूती वस्त्र उद्योग हैं। इनमें २०००० व्यक्तियों से अधिक लगे हुये हैं। यह उद्योग दमास्कस तथा अलिपो के स्थान पर उन्नति कर गये हैं। सन १६५० में यहाँ ६५००० सूत की तकलियां १२००० हाथ-करघे तथा ३६०० शक्ति करघे थे, इसी वर्ष उत्पादन ५००० टन सूत, २१०००००० मीटर बुना हुआ वस्त्र तैयार हुआ। रेशम का उद्योग भी यहां बहुत उन्नति कर गया है। उत्तरी सीरिया तथा दमास्कस के निकट श्वेत शहतूत बहुत उत्पन्न होता है। इस धन्धे के केन्द्र बीर, त्रिपोली, लताकिया दमास्कस तथा अलिपो हैं। इन उद्योगों के अतिरिक्त यहाँ शक्कर तैयार करने का कारखाना है। इसमें १६५१ में १०००० टन का उत्पादन हुआ। शराब तैयार करने के कारखाने तथा तेल निकालने की मिलें भी यहां पाई जाती हैं। शराब का उत्पादन १६५१ में ३३६ टन था। यहाँ सीमेंट भी तैयार किया जाता है। औसत उत्पादन १३०००० टन प्रति वर्ष है। आटा, तेल, साबुन, चमड़ा, तम्बाकू, शीशे, मोजे, बनियान तथा बर्तन इत्यादि बनाने के कारखाने भी पाये जाते हैं। इन कारखानों में अधिकतर विद्युत शक्ति का प्रयोग किया जाता है। विद्युत शक्ति का उत्पादन यहाँ ८६,०००,००० कि० से अधिक है।

यहाँ पर रेलों में बहुत अधिक विकास नहीं हुआ है। एक दुर्भाग्य तो यह है, कि यहाँ विभिन्न प्रकार के गेजेज हैं। चौड़ी गेज की रेलवे अलिपो से त्रिपोली तक जाती है। तंग गेज की रेलवे दमास्कस से बीरत तक जाती है। मोटर गाड़ियाँ इनसे जल्दी बीरत तक पहुँच जाती हैं। सीरिया में सड़कों का भी विकास हुआ है। यह कुल मिलाकर लगभग २५०० मील लम्बी हैं। यातायात के साधनों की ओर अब यहां विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

यहां का विदेशी व्यापार गत वर्षों से पक्ष में नहीं रहा, फलस्वरूप अब भी कभी कभी संतुलन ठीक नहीं रहता।

(In million Syrian pounds)

	१६५०	१६५१	१६५२
आयात	२६४	३०३.६	३१३.२
निर्यात	२७७	२७७.२	३१६.५

यहाँ से निर्यात को जाने जाने वाली वस्तुओं में कपास, सूत, ऊन रेशम, जीव-जन्तु, फल, तथा रेशम के ककून हैं। आयात की जाने वाली वस्तुओं में सूती, ऊनी व रेशमी वस्त्रों के अतिरिक्त खाद्य पदार्थ भी हैं।

प्रमुख आयात की हुई वस्तुयें (सन् १६५३ में)

(In £ Syr. 1000)

खाने वाले फल	१२,००६

खनिज तेल	३६,५२३
रेशम एवं कृत्रिम रेशम	२३,६६८
ऊन	१३,८२३
कपास तथा कपास की वस्तुयें	१२,८६६
बहु मूल्य धातुयें एवं पत्थर	२०,३८८
लोहा व स्पात	१८,०३७
मशीनें तथा यंत्र	३०,१८६
विद्युत मशीनें	६,६६६
गाड़ियाँ	१७,७६३

प्रमुख निर्यात की हुई वस्तुयें

(In £ Syrian 1000)

कच्ची कपास	१३४,७०३
गेहूँ तथा आटा	५२,३४६
जौ	२४,७६३
ऊन	२१,५४०
भेड़ें	१५,५६३
ज्वार बाजरा	६,३८८
लेंटिल्स तथा पीज	६,७४७
कपास की बीज	५,५०६

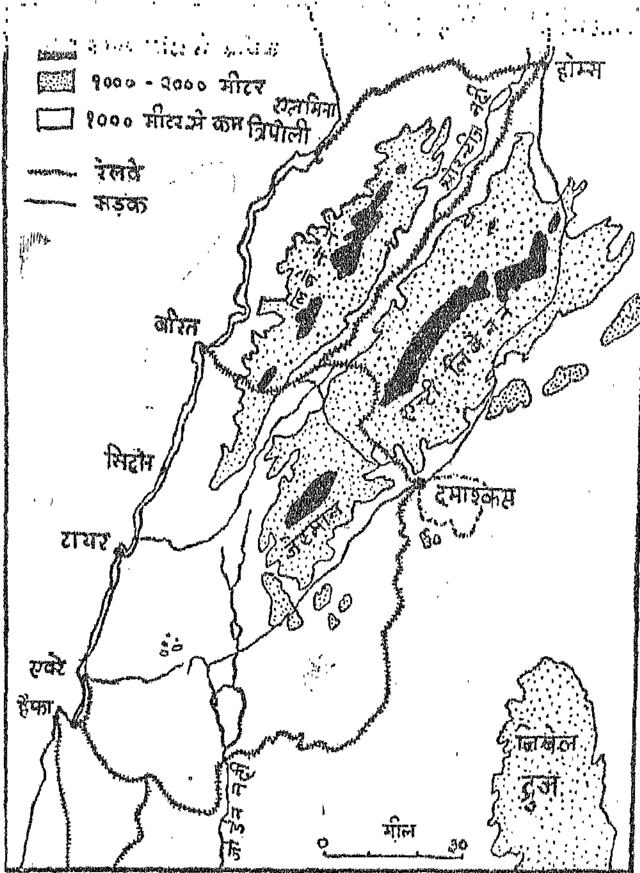
सीरिया के सम्बन्ध ग्रेट ब्रिटेन से १६४१ के बाद बहुत सन्तोषजनक रहे। यह उस समय से अच्छे हुए जब से कि ब्रिटेन ने फ्रांस से सीरिया को १६४५ में मुक्त कर देने को कहा। जब ब्रिटेन तथा संयुक्त राज्य अमेरिका ने ज्योनिज्म (Zionism) को सहायता दी, तब सीरिया को बड़ा दुख हुआ और यह दोनों देश उसकी दृष्टि से गिर गये। फलस्वरूप 'पुआइन्ट फोर (PointFour) सहायता के लिए भी सीरिया ने मना कर दिया और कदाचित अमरीकन पूंजी को भी अपने यहाँ हानि पहुंचाई। जर्मनी के प्रति इसकी भावना अच्छी हो गई। अरबों का भी एक तरह से यह राज्य केन्द्र है। राजा अब्दुल्ला की 'ग्रेट सीरिया' योजना को कोई विशेष प्रोत्साहन यहाँ नहीं मिला कदाचित यही कारण था, कि सीरिया की पोलिसी (Policy) साउदी अरेबिया तथा मिश्र के प्रति एक अजीब प्रकार की होगई। और यह परिवर्तन द्वितीय महायुद्ध पश्चात ही दृष्टिगोचर हुआ। सीरिया के सम्बन्ध

ईराक से बहुत अच्छे हैं। अरब लीग की भी यह पूर्ण सहायक है। सीरिया सरकार मिश्र और ईराक के झगड़ों से अलग ही रही, और अब भी है।

सीरिया के निवासी सेमिटिक जाति के हैं। वर्तमान सीरिया का एक साधारण निवासी जोकि अरामियन शाखा का वह भी सेमिटिक जाति का मिश्रण है। सीरिया के इसाई बड़े बुद्धिमान होते हैं, इनमें योरोपियन विचारों को अपनाने की एक विशेष योग्यता होती है। इन लोगों में ग्रीक व अरबों का भी मिश्रण पाया जाता है। फोनेसियन जाति के सीरियन अधिकतर पश्चिमी तट की ओर मिलते हैं। अब भी यह लोग अच्छे नाविक तथा व्यापारी हैं। मार्सिलीज, लिवरपूल तथा मेनचेस्टर में भी ये सीरियन जाकर स्थापित हो गये हैं। इनको अपने देश से इतना प्यार नहीं होता जितना कि विदेशों से। बीरुत (Beyrut) इसाइयों की अच्छी दशा उनके परिश्रम तथा बुद्धिमानी के कारण है। हर एक यहाँ पर व्यापारी है, या किसी धन्धे में लगा हुआ है। इनकी स्त्रियां यद्यपि बहुत अधिक पढ़ी लिखी नहीं होतीं परन्तु फिर भी घर के कामकाज में निपुण होती हैं, सामाजिक प्रथाओं को मानती हैं और अपने बच्चों को उत्तम से उत्तम शिक्षा देतीं हैं। लड़कियों की आरम्भिक शिक्षा धार्मिक होती है। लोगों को उपन्यास पढ़ाने, प्यानों बजाने, गाने तथा अन्य मनोरंजन का भी शौक होता है।

'लिबेनन'

पूर्वी भूमध्य सागरीय राज्यों में लिबेनन तायर से त्रिपोली तक एक आयताकार रूप में विस्तृत है। इसके उत्तर-पूर्व में सीरिया, पश्चिम में भूमध्य सागर तथा दक्षिण में जोर्डन तथा इजराइल स्थित हैं। विस्तार में यह देश १३५ मील लम्बा तथा २५ व ५० मील चौड़ा है। इसका वर्तमान क्षेत्रफल ३४०० वर्ग मील है। भौतिक दृष्टिकोण से यह भाग पूर्व की ओर कुछ ऊंचा तथा पश्चिम की ओर ढालू है। इसमें लिटानी नदी, जोकि ओरन्टीज से निकल कर सीरिया में बहती है, प्रवेश करती है। यह एक गहरी घाटी में बहने के पश्चात् तायर और सिदोन के मध्य सागर में जा गिरती है। इस भाग की जलवायु शीतोष्ण है परन्तु भूमध्य सागरीय जलवायु का गहरा प्रभाव पड़ता है। ग्रीष्म ऋतु यहाँ शुष्क होती है, तापक्रम बहुत अधिक नहीं अंकित किया जाता क्योंकि समुद्र का प्रभाव काफी गहरा पड़ता है। शीत ऋतु में यहाँ पछुआ हवाओं से वर्षा होती है, परन्तु तटीय भाग अधिक वर्षा प्राप्त करते हैं। इस मौसम में तापक्रम बहुत कम नहीं होता, बल्कि ऋतु बड़ी सुहावनी होती है।



सीरिया एवं लिबेनन

तेरहवीं शताब्दी में लिबेनन तथा सीरिया दोनों ही तुर्किस साम्राज्य में सम्मिलित थे। प्रथम महायुद्ध के उपरान्त जब टर्की हार गया था, तो फ्रांस को सीरिया तथा निकटवर्तीय क्षेत्र १९२० की सेन रीमो कान्फ्रेंस के अन्तर्गत प्राप्त हुए। सन् १९२५ में अलिप्पो, दमास्कस, ड्रूज़, ज़िबेल तथा अलाविन संगठित कर दिए गये, और उसका नाम सीरिया रख दिया गया। बीका, त्रिपोली, सिदोन तथा बरित में लिबेनन के सजंक में सम्मिलित कर दिए गये। सन् १९२५ में एक भयानक राष्ट्रीय विद्रोह उठ खड़ा हुआ, अनेक प्रयत्नों के उपरान्त १९२७ में यह समाप्त हुआ। सीरिया तथा लिबेनन के राष्ट्रीय नेताओं तथा फ्रांस के मध्य स्वतन्त्रता के

हेतु बराबर वार्ता चलता रहा, यहाँ तक कि द्वितीय महायुद्ध भी आरम्भ होगया। सन् १९४० जब फ्रांस हार गया तो उसकी स्थिति और भी खराब हो गई। ब्रिटिश सरकार बराबर इस बात पर ज़ोर दे रही थी, कि इन राज्यों को स्वतंत्र कर दिया जाय। फलस्वरूप १९४३ में चुनाव हुये और इसी वर्ष लिबेनन गणराज्य स्थापित हो गया फ्रांस ने भी इसको १९४५ में स्वीकार कर लिया।

लिबेनन की वर्तमान जनसंख्या १,४००,००० है, जब कि सन् १९५२ में १,३५३,००० और १९५१ में केवल १,३०३,९४१ थी। इन आँकड़ों को देखने से पता चलता है, कि यहाँ जनसंख्या बराबर बढ़ रही है। जनसंख्या घनत्व तटीय भागों में अधिक है, क्योंकि यहां की जलवायु अच्छी होने के साथ साथ कृषि करने की सुविधायें भी पायी जाती हैं। पूर्व की ओर अपेक्षाकृत कम जनसंख्या मिलती है। यहाँ के प्रमुख नगरों में बीरत (४०००००), त्रिपोली (८००००) ज़ेहलि (२००००) सैदा (२००००) तथा तायर (१००००) उल्लेखनीय हैं।

यहाँ की प्राकृतिक वनस्पति भूमध्य सागरीय है। अधिकतर जैतून, शहतूत, नीबू, तथा, नारंगी के वृक्ष मिलते हैं। घने वन यहां किसी भी भाग में नहीं मिलते। वनीय क्षेत्र का क्षेत्रफल ७४००० हैक्टर्स है। फलों के बगीचे कई स्थानों पर दीखते हैं। यदि कृषि की ओर दृष्टि डाली जाय तो हम देखेंगे कि यहाँ उपजाऊ भूमि बहुत कम है केवल २२ प्रतिशत। और जो कुछ है भी उसका अधिक भाग पश्चिम की ओर ही है। उपजाऊ भूमि की कमी होने के कारण यहाँ प्रमुख खाद्य पदार्थों तथा कच्चे माल का अभाव रहता है। देश को जितनी मात्रा में उपजों की आवश्यकता होती है, उतनी यहाँ प्राप्त नहीं होती, निस्सन्देह इसको आयात किये हुए माल पर निर्भर रहना पड़ता है। परन्तु जो कुछ भी कृषि होती है, उनमें गेहूं प्रमुख है, इसके बाद जौ, ज्वार-बाजरा इत्यादि है। कुछ स्थानों पर कपास तथा तम्बाकू भी उत्पन्न की जाती हैं। फलों में अंगूर, नीबू, नारंगी, अंजीर तथा सेब इत्यादि प्रसिद्ध हैं। ये वस्तुयें यहाँ काफी मात्रा में उत्पन्न की जाती हैं।

लिबेनन में प्रमुख कृषि-उपजें
(सन् १९५३ में)

गेहूं	५०,०००	मेट्रिक टन
मक्का	२३,०००	"
जौ	२५,०००	"
आलू	४०,०००	"
प्याज	३४,०००	"

तरबूज	२५,०००	मेट्रिक टन
जैतून	४६,०००	,,
टिमाटर	२६,०००	,,
नारंगी	६५,०००	,,
लेमन	३५,०००	,,
केला	१७,०००	,,
अंगूर	८०,०००	,,
सेव	३०,०००	,,

देश में खनिज पदार्थों का अभाव है। प्राचीन काल में यहाँ लोहा निकाला जाता था। लिगनाइट उत्तरी लिबेनन में तथा पर्वतीय क्षेत्र में निकाला जाता है। सन् १६५३ में यहाँ बेका के क्षेत्र में पेट्रोलियम की खोज हुई थी। अब थोड़ी मात्रा में प्राप्त होता है। देश को देखते हुए हम कह सकते हैं, कि यह एक आद्योगिक देश है, क्योंकि उद्योग धन्धों में यहाँ ५००००व्यक्ति लगे हुये हैं। कुछ उद्योग यहाँ पर ऐसे हैं जो विदेशी माल पर निर्भर हैं तथा कुछ ऐसे हैं जो स्थानीय कच्चे माल पर ही आधारित हैं। फलों को डिब्बे में बन्द करना, शराब बनाना, तम्बाकू से बीड़ी सिग्रेट बनाना तथा सूती व ऊनी वस्त्र उद्योग यहाँ प्रचिलित हैं। इनके अलावा विद्युत केन्द्र, चीनी के कारखाने तथा तेल की मीलें भी पाई जाती हैं। खनिजों की कमी के कारण यहाँ भारी उद्योग धन्धे स्थापित नहीं हो पाये हैं।

यहाँ यातायात के साधनों की अधिक उन्नति नहीं हुई है। रेलें बहुत कम मील लम्बी हैं। सड़कें अवश्य पक्की मोटर गाड़ियाँ चलाने योग्य हैं। ये सड़कें यहाँ के लगभग सभी नगरों को मिलाती हैं। इस देश में निर्यात की अपेक्षा आयात अधिक होता है। प्रमुख निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में अंगूर तथा शराब है। आयात जिन वस्तुओं का होता है, उनमें खाद्य पदार्थ, मशीनें तथा कलाकौशल की वस्तुयें उल्लेखनीय हैं। सन् १६५३ में आयात की हुई वस्तुयें ६०२,८६१ टन (£ Leb. 363,760,000) तथा निर्यात की हुई २६८.०५१ टन (£ Leb. 86,683,000) थी। कुल आयात की हुई वस्तुओं में से २५% सीरिया से, १६% संयुक्त राज्य अमरीका से, १२% यू० के० से, तथा ११% फ्रांस से प्राप्त हुई। निर्यात की हुई वस्तुयें ६% संयुक्त राज्य अमरीका १६% सीरिया, ११% साउदी अरेबिया, ७% मिश्र, तथा ५% यू० के० को भेजी गई।

लिबेनन गणराज्य में केवल एक ही चेम्बर लेजिसलेचर है। सन् १६५२ में केवल मनुष्यों को ही मेम्बरों को वोट देने का अधिकार प्राप्त था, इसी वर्ष यह

अधिकार स्त्रियों को भी दे दिया गया। सन् १९५० तक केवल उन्ही व्यक्तियों को वोट देने का अधिकार प्राप्त था जो कि लिबेनन में ही रहते थे, परन्तु बाद में उन लिबेनन को भी अधिकार दे दिया गया, जो कि विदेशों में रह रहे हैं। इस देश में अधिकतर ईसाई लोग हैं। जैसे जैसे मुसलमानों की संख्या यहाँ बढ़ती जायगी, वैसे ही वैसे लिबेनन के ईसाइयों का भय भी बढ़ता जायगा। लिबेनन का विदेशों से सम्बंध बहुत अच्छा नहीं है, विशेषतौर पर पश्चिमी देशों से, यह देश अन्य अरेबियन देशों के मुकाबिले कुछ आगे बढ़ा हुआ है, यद्यपि आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टिकोण से यह उनसे घनिष्ठ संम्बन्धित है। सीरिया से इसके आर्थिक मामलों पर हमेशा तनातनी रही है। इसने मिश्र को भी उस समय सहायता दी थी जब कि इसका झगड़ा ग्रेट ब्रिटेन से स्वेज़ नहर के मामले पर चल रहा था। फिलिस्तीन के अरबों की भी इसने सहायता की, न केवल इतना ही बल्कि ब्रिटेन से युद्ध का सामान तथा अमरीका से 'चार विन्दुयोजना' पर भी सहायता मिली है। इस देश का साँस्कृतिक सम्बन्ध फ्रांस से बहुत घनिष्ट है। संयुक्त राज्य अमरीका तथा दक्षिणी अमरीका में लगभग दस लाख से अधिक लिबेनन के निवासी रह रहे हैं। संयुक्त राज्य अमरीका से इसकी बड़ी गहरी मित्रता है।

यहाँ के निवासियों का रहन सहन योरोपियन लोगों की भाँति है; क्योंकि अधिकतर लोग ईसाई हैं। ये अधिकाधिक मात्रा में शिक्षित हैं। दूसरों के साथ इनका व्यवहार बड़ा अच्छा है। यह लोग उद्योग धन्धों में कार्य करना अधिक अच्छा समझते हैं। परन्तु अब यहाँ कृषि में और भी आर्थिक उन्नति हो रही है।

लिबेनन की प्रमुख उपजें

	क्षेत्रफल		उत्पादन	
	० ० ० (Hactares)		(० ० ० metric Tons)	
	१९५१	१९५२	१९५१	१९५२
गेहूं	६१	७०	४३	५०
जौ	१५	२०	१४	२०
कपास	५	२	१	—
फल	—	—	७५	९०
अंगूर	२१	—	८०	—

लिबेनन के प्रमुख उद्योग धन्धे

कपास (सूत)	२१००	टन	(१९५१)
,, (बुना हुआ)	४.९	(मि० वर्ग मीटर)	(१९५०)
रेशम तथा कृत्रिम रेशम	७.७	(,, ,, ,,)	(१९४९)
विद्युत	१३०.०	(मि० किलो०)	(१९५१)
सीमेन्ट	३०२.०००	टन	(१९५१)
चीनी (शक्कर)	३१०००	टन	(१९४९)
शराब तथा अर्क	३२.०००	(हेक्टोलिटर्स)	(१९४९)

विदेशी व्यापार
(Million Labanese pounds)

	१९५०	१९५१	१९५२
कुल आयात	३२६.४	३२०.४	३४६.८
कुल निर्यात	९०	९७.२	७८
कुल पुनः निर्यात	—	८.२	१९.४
कुल व्यापार (सोने तथा विदेशी-विनिमय में)	९६.३	२२.९	३९.४

जोर्डन

जोर्डन का हेशीमाइट राज्य जोर्डन नदी के दोनों ओर स्थित है। इस नदी के पूर्व में ट्रांसजोर्डन का प्राचीन अमीरेट तथा पश्चिम में मध्य पेलेस्टाइन का वह भाग स्थित है जो इजराइल-अरब युद्ध (१९४८-१९४९) के उपरांत उसी में शामिल कर दिया गया था। इसका समस्त क्षेत्रफल ३९७१५ वर्ग मील है। उत्तर में यह येरम्यूक नदी तथा सीरिया, पूर्व में ईराक, पश्चिम में इजराइल तथा जोर्डन नदी की घाटी तथा दक्षिण में साउदी अरेबिया से घिरा हुआ है।

इस राज्य का अधिक भाग मरुस्थल है, जिसका क्षेत्रफल लगभग ३०७०० वर्गमील है। यहाँ की उच्च भूमि ५००० फुट ऊँची है, यह ऊँचाई एकदम से जोर्डन-अरब की घाटी (गोर्ज) में नीची हो गई है। इस राज्य में होकर जोर्डन

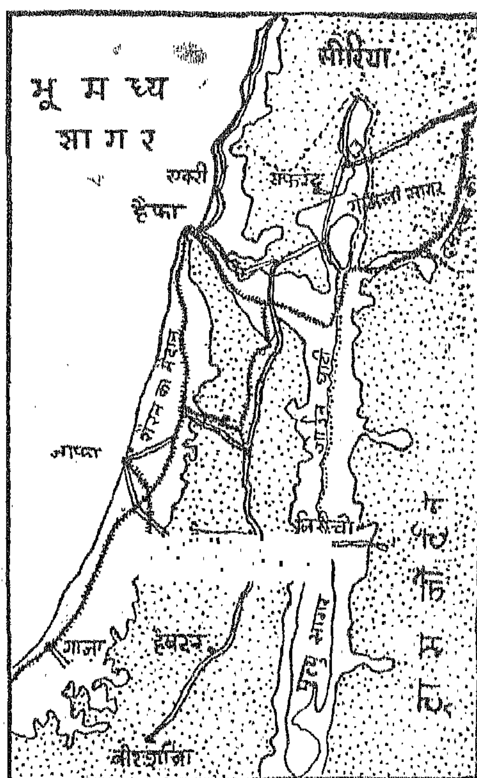
तथा येरम्यूक नदियां बहती हैं। ये दोनों नदियाँ आर्थिक दृष्टिकोण से बड़ी महत्व-पूर्ण हैं, क्योंकि इनसे नहरें निकाली गई हैं, जिनसे कि दूर दूर तक सिंचाई की जाती है। यहां की जलवायु भूमध्यसागरीय है। ग्रीष्म ऋतु साधारण गर्म होती है, तापक्रम बहुत ऊंचा नहीं पहुंचता। इस ऋतु में वर्षा नहीं होती। शीत ऋतु साधारण ठण्डी होती है, इस ऋतु में वर्षा पछुआ हवाओं से होती है। मौसम बड़ा सुहावना होता है। इस राज्य के पश्चिम की ओर वर्षा अधिक होती है, पूर्व के भाग प्रायः शुष्क ही रहते हैं। पश्चिम की ओर भी कुछ भाग ऐसे हैं, जहां वर्षा कम होती है।

जोर्डन की वर्तमान जनसंख्या १,३६०,००० है। सन् १९४८ में इसकी जन संख्या केवल ४००००० थी, सन् १९५२ में बढ़ कर १३७२००० हो गई थी। आंकड़ों पर दृष्टि डालने से पता चलता है, कि जनसंख्या गत वर्षों से घटने पर आ गई है। परन्तु इसमें संदेह नहीं कि १९५२ के पहले यहां जनसंख्या वृद्धि एकायक हो गई थी। इसका प्रमुख कारण यह है कि पेलेस्टाइन संघर्ष के अन्तर्गत यहां दस लाख शरणार्थी आकर स्थापित हो गए थे।

तेरहवीं शताब्दी के पहले यह तुर्किश साम्राज्य का ही एक अंग था, सन् १९२२ में ट्रांसजोर्डन राज्य की नींव पड़ी, परन्तु उस समय यह नवीन राज्य, यद्यपि अमीर अब्दुल्ला के आधीन था, परन्तु फिर भी ब्रिटिश लोगों की अध्यक्षता में स्थापित किया गया था। मार्च १९४६ में इसे अमीर अब्दुल्ला के आधीन पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान कर दी गई। सन् १९४८ में अब्दुल्ला ने अपनी पदवी परिवर्तित कर दी और वह अपने को 'जोर्डन के हेशीमाइट राजय का राजा कहने लगा' बाद में इनकी यह पदवी १९४९ में विश्व में मान ली गई। इस राज्य ने इजराइल के विरुद्ध युद्ध में १५ मई १९४८ में भाग लिया। तीन अप्रैल १९४९ में कुछ काल के लिए सन्धि हो गई। यहां का राजा अब्दुल्ला २० जुलाई १९५१ में जेरूसलम में मार डाला गया। इसके उपरान्त उसका बड़ा लड़का तलाल (Talal) यहां का राजा हुआ इसने एक वर्ष तक राज्य किया, इसके बाद उसने मानसिक स्वास्थ्य अच्छा न होने के कारण गद्दी छोड़ दी। हुसैन जो कि इसका छोटा भाई था अगस्त १९५२ में यहां का राजा हो गया।

यहाँ की प्राकृतिक वनस्पति पश्चिम की ओर विशेषतौर पर भूमध्य सागरीय है, शेष भाग में मरुस्थलीय वनस्पति मिलती है। मरुस्थलीय वनस्पति में कम घने ठिगने वृक्ष तथा काँटेदार भाड़ियां दृष्टिगोचर होती हैं। भूमध्य सागरीय वनस्पति में जैतून, खजूर, ओक तथा अंगूर इत्यादि उत्पन्न होते हैं। आर्थिक

दृष्टिकोण से यह वनस्पति ही लाभदायक है। कृषि यहां के लोगों का मुख्य धन्धा है। पश्चिम में उपजाऊ मिट्टी तथा उत्तम जलवायु होने के कारण अनेक उपजें उत्पन्न होती हैं। इनमें प्रमुख गेहूं, जौ, ज्वार-बाजरा, मक्का, मटर, तम्बाकू तथा सिसेम हैं। थोड़ी सी कपास भी यहां बोई जाने लगी है। फलों में नींबू, नारंगी, अंगूर, जैतून तथा अंजीर इत्यादि उल्लेखनीय हैं। यदि चेष्टा की जाय तो यहाँ २१६२००० एकड़ भूमि में कृषि की जा सकती है, परन्तु दुर्भाग्य से केवल ७१००० एकड़ भूमि पर ही की जाती है, क्योंकि सिंचाई के साधन सीमित हैं।



जोर्डन इजरायल एवं सीरिया व्यापारिक मार्ग

यहाँ के लोगों का व्यवसाय पशु पालन भी है। बंजारे लोग जो अपने साथ पशु रखते हैं, वह अरब के बद्दू ही हैं। इन लोगों के पास अनुमान लगाया

गया है, कि ४१००० ऊँट, ८१००० गायें, २६६००० भेड़ तथा ३५८००० बकरे हैं। इन पशुओं पर ही इनका जीवन निर्भर रहता है! इनसे इन्हें भोजन की सामग्री के अतिरिक्त खाल, चमड़ा, ऊन तथा हड्डियां भी प्राप्त होती हैं। इन कच्चे मालों पर अनेक उद्योग भी निर्भर रहते हैं। चमड़े की पेटियां, जूते तथा थैले बनाये जाते हैं, ऊन के कम्बल तथा कालीन बनाये जाते हैं। इनकी तैयार की हुई वस्तुयें नगरों में अच्छे दामों पर बिक जाती हैं।

यहाँ पर कुछ खनिज भी प्राप्त किये जाते हैं। मृत्यु सागर का दो-तिहाई भाग जोर्डन के पास है। इसमें से जोर्डन और इजरायल ही खनिज प्राप्त करते हैं। इस सागर में से बहुत बड़ी मात्रा में नमक तथा पोटास निकाला जाता है। ब्रोमाइन (**Bromine**) भी यहां उपयुक्त मात्रा में मिलता है। रोफैज में एक कारखाना है जिसमें फोस्फेट तैयार किया जाता है। अन्य खनिजों में पेट्रोलियम प्राप्त करने की यहां बहुत चेष्टा की गई है, परन्तु सफलता प्राप्त नहीं हुई। ईराक तथा साउदी अरेबिया से आने वाली पाइप लाइन इसी देश में होकर भूमध्य सागरीय तट तक जाती है। यहां पर न तो कोयला और लोहा ही मिलता है।

यहाँ के प्रमुख उद्योगों में फलों को डिब्बों में बन्द करना सूती व ऊनी वस्त्र बुनना, चमड़े की वस्तुयें तैयार करना, तथा शराब बनाना है। ये उद्योग केवल घरेलू मांग को पूरा करते हैं। निर्यात के लिए अधिक वस्तुयें तैयार नहीं की जा सकतीं, क्योंकि औद्योगिक सुविधायें यहां सीमित हैं। यातायात के साधन भी यहां अच्छे नहीं हैं। रेलें बहुत कम मील लम्बी हैं। पक्की सड़कें मोटर चलाने योग्य देश को देखते हुए पर्याप्त हैं। ये सड़कें यहां के लगभग सभी नगरों को मिलाती हैं।

आयात—निर्यात व्यापार की ओर दृष्टि डालने से पता चलता है कि यहां आयात का मूल्य निर्यात की अपेक्षा अधिक है। जोर्डन के निर्यात में तरकारियां महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। ये प्रतिवर्ष यहां से निर्यात की जाती हैं, अनाज, फास्फेट तथा ऊन व चमड़ा सभी निर्यात होते हैं। आयात की जाने वाली वस्तुओं में सूती वस्त्र, मोटर गाड़ियां, जीवजन्तु, कहवा, सीमेन्ट तथा पेन्जाइन हैं।

जोर्डन की सरकार एक संविधान द्वारा अपना कार्य-क्रम करती है। यह संविधान १९५२ में राजा तलाल ने बनाया था। यहाँ पर मन्त्रियों की एक कौन्सिल है जो [illegible] की देख रेख में रहती है। [illegible] या कौन्सिल में भी मन्त्री होते हैं। इनको यहां का प्रधान मन्त्री नियुक्त करता है। यह कोई

आवश्यक नहीं है, कि यह चुना हुआ व्यक्ति व्यवस्थापक सभा (लेजिसलेचर) का मेम्बर ही हो। इस सभा में सीनेट तथा प्रतिनिधि होते हैं। सीनेटरों की नियुक्ति राजा स्वयं करता है। प्रतिनिधियों की संख्या कुल ४० होती है। इसमें से बीस पश्चिम से तथा बीस पूर्व से लिये जाते हैं। राजा को इतनी शक्ति होती है, कि वह प्रतिनिधियों की सभा को भंग कर सके, उन्हें अलग कर सके और आवश्यकता पड़ने पर प्रधान मन्त्री को भी अलग कर दे, उसके स्तीफा को मंजूर कर ले और उसके स्थान पर नये की नियुक्ति कर दे। वह स्वयं अपनी सेना का सेनापति होता है, परन्तु उसे बगैर हाउस से परामर्श लिये सन्धि पर हस्ताक्षर करने का अधिकार नहीं होता। मन्त्रियों की पदवी जोर्डन तथा प्लेस्टाइन के निवासियों में बराबर बराबर बांटी जाती है। यहां के वर्तमान मन्त्री तोफिक अब्दुल होदा (Towfique Abdul Hoda) है।

यहां के राजा अब्दुल्ला ने ब्रिटेन के साथ अमाम में एक बीस साल की रक्षा सन्धि पर १५ मार्च १९४८ को हस्ताक्षर किये। इस सन्धि के अन्तर्गत ब्रिटेन को इसे आर्थिक व सामाजिक सहायता देना थी, इसके साथ ही यह भी बचन ले लिया गया था, कि ब्रिटिश लाइनों पर अरब की सेना का एक कन्टिनजेंट ट्रेन करना पड़ेगा। यातायात के दृष्टिकोण से इसे हवाई अड्डों की देख रेख भी करनी होगी। बाद में यह राजा बहुत बदनाम होगया, क्योंकि यह ब्रिटेन की ओर अधिक अग्रसर हो चुका था। इन सब बातों की चर्चा अरब के लोगों में भी होने लगी। राजा पर लोगों को सन्देह हो गया। जब १९४५ में अरब लीग बनी तब अब्दुल्ला ने स्वयं अपने को शामिल कर लिया। परन्तु बाद में पेलेस्टाइन के कई मामलों में तथा हेशीमाइट 'ग्रेटर सीरिया' ने इसको बहुत बदनाम कर दिया। अरब लीग को भी कुछ सन्देह हो गया।

इस राज्य में यहूदी तथा अरब जाति के लोग अधिक हैं। इन लोगों के अतिरिक्त यहां इसाई तुर्किस मुसलमान भी मिलते हैं। अरब के निवासी दक्षिण पूर्व की ओर बसे हुये हैं। इनका रहन सहन बहुत साधारण है। मनुष्य पशु पालन तथा अन्य व्यवसायों में लगे हैं तथा स्त्रियां जो कि बहुत अधिक पर्दा करती हैं घर की देख रेख करतीं हैं। यहूदी लोग भी बहुत साधारण हैं, परन्तु इन पर अन्य योरोपियन देशों का इतना प्रभाव पड़ा है, कि अब पहले की अपेक्षा बहुत कुछ परिवर्तित हो गए हैं। इन लोगों का धन्धा व्यापार करना है। परन्तु कुछ नौकरी पेशा भी हैं। इसाइयों का रहन सहन बिल्कुल योरोपियनों की भांति है।

यह सज्जन तथा शिक्षित लोग हैं। कभी किसी को नहीं सताते, अपने धर्म के बड़े कट्टर होते हैं। तुर्किश मुसलमान अधिकतर फलों के व्यापार में लगे हुए हैं। इनका रहन सहन साधारण मुसलमानों की भांति है।

जोर्डन का विदेशी व्यापार

			(000 Dinars)
	१९४९	१९५०	१९५१
आयात	१२,५५६	१०७८६	१५६८८
निर्यात	१,०४३	१५७७	१६५१

जोर्डन के चुने हुए आयातों का मूल्य

			(000 Dinars)
	१९४९	१९५०	१९५१
सूती वस्त्र	५११	१,०५६	६४६
जीव जन्तु	२६	१३	१६२
मोटर गाड़ियाँ	३०६	२५४	१७३
कहवा	२८४	३६७	२२१
सीमेन्ट	४६५	३४०	४६८
बेन्जाइन	४३६	५६१	६२४

जोर्डन के चुने हुए निर्यातों का मूल्य

			(000 Dinars)
	१९४९	१९५०	१९५१
गेहूं	२०३	२७१	×
जौ	१३१	१२०	×
लेन्टिल्स	३८	६५	५
तरकारियाँ	६२	११४	१६३
खालें व चमड़ा	३०	२६	७
ऊन	४	२२१	४८७

इज़राइल

भूमध्य सागरीय-पूर्वी राज्यों में इज़राइल की स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है। इसके उत्तर में लिबेनन, पूर्व में जोर्डन, दक्षिण में साउदी अरेबिया व सिनाई प्रायद्वीप तथा पश्चिम में भूमध्य सागर है। यह वास्तव में पैलेस्टाइन का ही एक भाग है। इसमें मध्य मृत्यु सागर का भाग सम्मिलित है। यह एक स्वतन्त्र राज्य है, इसकी स्थापना १४ मई १९४८ में हुई थी। मिश्र, जोर्डन, लिबेनन तथा सीरिया के परामर्श के फलस्वरूप इसका क्षेत्रफल २०८५० कि० (८०४८ वर्ग मील) है। सितम्बर सन् १९५४ के आँकड़ों के अन्तर्गत यहाँ की जन संख्या १,६९८,३४० है। इसमें से १,५०८,३९५ ज्यूज, १२७,५०० मुसलमान, ४१५०० इसाई तथा १७००० ड्रुजेज हैं। यहाँ का जन संख्या घनत्व ८२ व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है यहाँ के लोगो की भाषा हेब्रू है।

भौतिक दृष्टिकोण से इस राज्य को तीन भागों में बाँटा जा सकता है। प्रथम-पश्चिमी तटीय भाग जो बहुत ही उपजाऊ भाग है। द्वितीय—मध्य का पठारी भाग जो कि अधिक से अधिक ६००० फुट ऊँचा है। तृतीय भाग मृत्यु-सागर के तटीय भाग हैं। यह बिल्कुल ही पूर्व में स्थित है। तटीय भाग बहुत तंग है इसकी चौड़ाई कहीं भी आठ मील से अधिक नहीं है। मध्य का पठारी भाग लिबेनन की पहाड़ियों के दक्षिणी खण्ड हैं, जोकि सिनाई प्रायद्वीप तक चले गए हैं। यह भाग प्राचीन चट्टानों का बना हुआ है। मृत्युसागर के विषय में हम ऊपर बतला चुके हैं। इसका पश्चिमी तट बहुत उपजाऊ है।

यहां की जलवायु भूमध्यसागरीय है। परन्तु दक्षिण के भाग में मरुस्थलीय वातावरण मिलता है। वर्षा उत्तर-पश्चिमी भाग में अधिक होती है। दक्षिण तथा पूर्व के भागों में वर्षा कम होती है। परन्तु जहाँ कहीं भी हवाओं को घाटी मिल जाती है, वहाँ ये आँतरिक भाग में प्रवेश करने के उपरान्त वर्षा कर देती हैं। ताप-क्रम यहां ग्रीष्म ऋतु में अधिक तथा शीत ऋतु में बहुत कम नहीं पाया जाता।

इसके इतिहास व जन संख्या के विषय में पहले ही विवरण दिया जा चुका है। यहाँ पर वनीय क्षेत्र दृष्टिगोचर नहीं होते। प्राकृतिक वनस्पति बहुत घनी नहीं है। दक्षिण पूर्व की ओर मरुस्थलीय वनस्पति मिलती है और उत्तर-पश्चिम की ओर भूमध्य सागरीय वृक्ष मिलते हैं। जैसे बलूत, जैतून, तथा अंगूर व अंजीर।

यहाँ के लोगों का प्रमुख धन्धा कृषि करना है। कृषि लोग प्राचीन ढंग से ही करते हैं, परन्तु अब कहीं ट्रैक्टर भी दिखाई देते हैं। प्रति एकड़ उपज यहाँ

अधिक नहीं है। मुख्य उपजों में यहां गेहूं, जौ, कपास, तम्बाकू तथा विभिन्न तरकारियाँ हैं। यहाँ पर लोग फलों के बगीचे भी रखते हैं। इन फलों की मेवा भी यहाँ बनाई जाती है। इसका यहाँ से निर्यात होता है। बोई हुई भूमि का क्षेत्रफल सन् १९५३-५४ में ३६५० (In 1000 Dunams) था, इसमें से:—

प्रमुख खाद्य पदार्थ	२४५०	(1000 Dunams)
रसदार फल	१७५	,,
अन्य फल	३२२	,,
मूंगफली	५०	,,
तरकारियां तथा आलू	२५०	,,
चारा तथा सींची हुई फसलें	२६०	,,
मछली पकड़ने का तालाब	३५	,,

सन् १९५४ में यहाँ ८७८०० गाय-भैंसे, २०६००० बकरे तथा भेड़ें, ४०००० सामन ढोने वाले पशु, तथा २,४७६,००० मुर्गियाँ थीं।

उद्योग धन्धों में यहाँ अधिक विकास नहीं हुआ है, क्योंकि वह सुविधायें जो इनके लिए अनिवार्य होती है, नहीं पाई जातीं। शक्ति के साधन बहुत ही सीमित हैं। सन् १९५३ में ७५९,२६७,००० Kwh शक्ति उत्पन्न हुई, इसमें से उद्योगधन्धों में २०६,७३६,००० Kwh. उपभोग हुई। दूसरे स्थानीय बाजार भी सीमित हैं। जो उद्योग यहाँ पर पाये जाते हैं, उनमें सूती व ऊनी वस्त्र, बीड़ी सिगरेट बनाना, सीमेन्ट तैयार करना तथा चमड़े की वस्तुयें बनाना है। इन उद्योगों की प्रगति यहाँ हाल ही में हुई है।

यातायात के साधनों की ओर ध्यान दिया जाय तो हम देखेंगे कि यह साधन अच्छे नहीं हैं. परन्तु देश को देखते हुए पर्याप्त हैं। एक रेल मार्ग बरित से इजराइल होता हुआ दक्षिण में पोर्टसईद तक चला गया है। यहाँ पर सड़कें बहुत कम लम्बी मिलती हैं। उत्तर में लिबेनन तथा पूर्व में जोर्डन तक सड़कें गई हैं। स्थानीय क्षेत्रों में भी कई ऐसी सड़कें हैं जो अनेक छोटे छोटे नगरों को मिलाती हैं। यहाँ के प्रमुख नगरों में गाजा, हेबरन तथा बयिरशीबा हैं।

विदेशी व्यापार (In 1 £ For Calendar years)

	१९५३	१९५४
आयात	१८२,६००,०००	२८६,५०२,०००
निर्यात	५६,३००,०००	८८,२००,०००

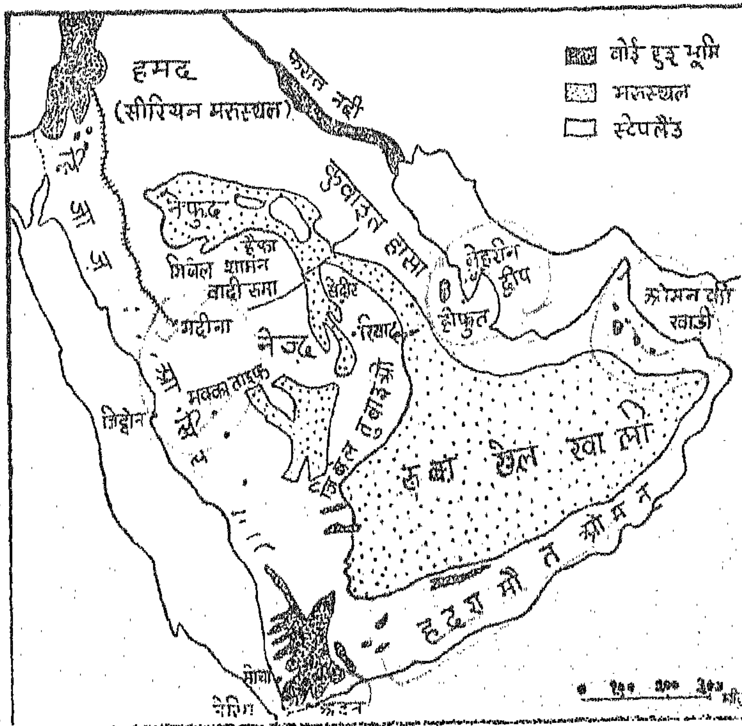
सन् १९५३ में कुल आयात वस्तुओं में से ३७.१% संयुक्त राज्य अमरीका से, ११.८% यू० के० से आयात हुआ और इसी सन् में कुल निर्यात का २१.६% यू० के० को तथा २१.४ % यू० एस० ए० को निर्यात हुआ।

विदेशी व्यापार यहाँ बहुत अधिक नहीं होता। यह व्यापार केवल कुछ ही देशों से होता है। यहाँ से निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में कपास, तम्बाकू इत्यादि हैं। आयात की जाने वाली वस्तुओं में अधिकतर तैयार की जाने वाली वस्तुयें मशीनें व मोटर गाड़ियाँ तथा खाद्य पदार्थ इत्यादि हैं।

यहाँ की राजनैतिक स्थिति के विषय में पहले ही बतलाया जा चुका है। लोगों का रहन सहन बहुत अच्छा है, कुछ इसाई लोग हैं जिनका रहन सहन काफी ऊंचा है, शेष का रहन सहन औसत है। शिक्षा का प्रचार यहाँ हो रहा है। आरम्भ में थोड़ी सी बाइबिल (Bible) या अन्य धर्म की शिक्षा दे दी जाती है।

साउदी अरेबिया

अरब प्रायद्वीप पर साउदी अरेबिया का राज्य एशिया के दक्षिण-पश्चिम में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसकी पश्चिमी सीमा लालसागर की तटीय रेखा से निश्चित होती है। इस तरफ यमन तथा अदन के राज्य स्थित हैं। दक्षिण और दक्षिण–पूर्व की सीमा पर मसकत, ओमन तथा फारस की खाड़ी के अन्य तटीय राज्य पाये जाते हैं। ऊपर की ओर पूर्व में यह फारस की खाड़ी तथा कुवाइत



साउदी अरेबिया

राज्य की दक्षिणी सीमा को छूता है। इसके उत्तर तथा उत्तर-पूर्व में ईराक तथा जोर्डन जैसे प्रसिद्ध देश स्थित हैं। भौगोलिक दृष्टिकोण से यदि देखा जाय तो यह

राज्य एशिया के अन्य देशों से बिलकुल अलग है। पश्चिम में लालसागर, दक्षिण पूर्व में अरबसागर, उत्तर-पूर्व में फारस तथा ओमन की खाड़ियां इसको तीन तरफ से घेरे हुए हैं। उत्तर की ओर सीरिया का प्रसिद्ध रेगिस्तान इसकी प्राकृतिक सीमा निश्चित करता है। सम्पूर्ण प्रायद्वीप पर यदि दृष्टि डाली जाय तो उसका क्षेत्रफल १०००००० वर्ग मील है, परन्तु साउदी अरेबिया राज्य का क्षेत्रफल केवल ५९७-००० वर्ग मील ही है।

भौतिक रूप (Physical Aspect)

धरातल तथा बनावट— (Relief & Structure)

वास्तव में अरब प्रायद्वीप एक पठार है, जिस पर अनेक भौतिक रूप मिलते हैं। इस पठार की ऊंचाई पश्चिम की ओर कुछ अधिक है, परन्तु पूर्व में यह धीरे २ फारस की खाड़ी की ओर ढालू होता गया है। यदि पूरे प्रायद्वीप पर दृष्टि डाली जाय तो यह दक्षिण पश्चिम की ओर ऊंचा और उत्तर-पूर्व की ओर ढालू है। इस राज्य का अधिक भाग मरुस्थल है। इसकी अधिक से अधिक ऊंचाई दस हजार फुट है। दक्षिण और पश्चिम की उच्च भूमि न केवल समुद्र से बल्कि आंतरिक क्षेत्र से भी पर्वतों के रूप में दृष्टिगोचर होती है। इन पर्वतों के विषय में लोगों का कहना है, कि ये प्राचीन ज्वालामुखी पर्वतों के चिन्ह हैं। एक प्रसिद्ध भूगोल वक्ता का कथन है कि इस राज्य के पूर्वी ढाल असाधारण है, यहाँ पर अमकोयमन से लेकर सिदीर तक एक चार या पाँच हजार फीट तक ऊंची श्रेणी मिलती है, इस पर अधिकतर ग्रेनाइट नामक पत्थर की अनेक शिखायें भी हैं। सबसे ऊंची शिखा इस भाग में छै हजार फीट की है।

भूगर्भ शास्त्र के दृष्टिकोण से यदि देखा जाय तो यह प्रायद्वीप ठीक उसी प्रकार की चट्टानों का बना हुआ है, जिस प्रकार कि भारत के प्रायद्वीप पर मिलतीं हैं। वास्तव में अरब 'गोंडवाना लैंड' का ही एक खण्ड है। यहां पर बहुत प्राचीन चट्टानें पाई जाती हैं। ये कैम्ब्रियन युग के पहले की चट्टानें, उदाहरणार्थ-ग्रेनाइट सिस्ट तथा स्लेट इत्यादि इस राज्य में विशेषतौर पर मिलती हैं। इन प्राचीन चट्टानों के अतिरिक्त यहाँ अन्य चट्टानों के मिश्रण भी मिलते हैं। इस पठार के मध्य के भाग में सूर्य की किरणें इतनी तेज पड़ती हैं, कि भूमि दिन के समय बहुत ही गरम हो जाती है, इसके विपरीत रात के समय तापक्रम बहुत ही कम हो जाता है। इस तापक्रम परिवर्तन के कारण यहाँ की रेतीली मुलायम चट्टानें टूट टूट कर पिस गई और अन्त में उन्होंने रेगिस्तान का रूप धारण कर लिया है।

नदियाँ:—(Rivers)

साउदी अरेबिया के राज्य में स्थाई नदियां नहीं पाई जाती। नदियों के स्थान पर यहाँ अनेक वादियाँ (घाटियाँ) (Wadis) मिलती हैं। इनमें कभी तो जल होता है और कभी नहीं। वास्तव में देखा जाय तो ये वादियां वर्ष के नौ या दस माह तक सूखी रहती हैं। किसी भी स्थान पर इनमें जल नहीं होता, पर्वतीय पठारी, मैदानी तथा डेल्टे के क्षेत्र सभी शुष्क रहते हैं। लाल सागर के तट की ओर जो वादियाँ पाई जाती हैं, उन्होंने काफी गहरी घाटियां बना ली हैं। इसके फलस्वरूप उत्तर से दक्षिण की ओर यातायात में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इन वादियों से मनुष्य को कोई आर्थिक लाभ नहीं है। फारस की खाड़ी की ओर जितनी भी वादियां हैं, उनमें से एक भी खाड़ी तक नहीं पहुँच पाती। अलावा इसके उन्होंने किसी भी प्रकार की घाटियां नहीं खोदी हैं। सामान्य भूमि की सतह पर ही ये वादियां हैं, मनुष्य बगैर पहचाने ऐसे ही इनको पार कर लेता है। उत्तर-पूर्व की ओर जो वादियां हैं, वे भी कोई विशेष महत्वपूर्ण नहीं हैं। यद्यपि उनमें कुछ जल होता है। यहां की कुछ प्रसिद्ध वादियों में वादी सिरहन १८५० फीट की ऊँचाई पर हौरन उच्च भूमि से दक्षिण-पूर्व की ओर जोफ जिले की ओर जाती है। वादी-एर-राजेल उत्तर पश्चिम से इसमें आकर मिलती है। वादी दावासिर एक दूसरी प्रसिद्ध वादी है। इसमें नेजरान, बिशाह बायें तट से आकर मिलती है। एक तीसरी वादी अफतान है, जोकि नेज्द की सीमा से निकलती है और दक्षिण की ओर बह कर पूर्व में फारस की खाड़ी में जा गिरती है। वादी-एर-रुमा जो कि सिरहन और दावासिर के मध्य में होकर बहती है, हेजाज़ के तटीय भाग से निकलती है और उत्तर-पूर्व में फरात नदी की ओर चली जाती है।

जलवायु:—(Climate)

यहां की जलवायु बहुत ही शुष्क तथा गर्म है। जुलाई के माह की समताप रेखा की ओर यदि ध्यान दिया जाय, तो हम देखेंगे कि फारस की खाड़ी, लाल सागर तथा अरब प्रायद्वीप के भाग भूमण्डल पर सबसे गर्म व शुष्क भाग हैं। (लाल सागर के तट पर तापक्रम इतना अधिक रहता है कि उसके लिये कहा गया है कि यह 'हैल विद दि सन ब्लेज़िंग डाउन' (Hell with the sun blazing down) है) यह भाग भी वास्तव में उन्हीं भाग में रक्खे जाते हैं, जिनमें कि वर्षा चार या पाँच माह होने के पश्चात फिर रुक जाती है। दक्षिण-पश्चिम के क्षेत्र जो कि वर्षा ऋतु की हवाओं के अनुकूल रहते हैं, और वर्षा प्राप्त

करने के इच्छुक रहते हैं, वहां भी अफ्रीका के वातावरण के प्रभाव के कारण वर्षा नहीं हो पाती, फिर इसे कुओं पर निर्भर रहना पड़ता है। वास्तव में सहारा रेगिस्तान के कारण अरब का प्रायद्वीप उत्तम जलवायु प्राप्त नहीं कर पाता। जिस समय भारतवर्ष में वर्षा ऋतु होती है, उस समय यहां इतनी तेज सूर्य की किरणें पड़ती हैं, कि बहुत सख्त गर्मी होती है, इस समय यमन में ही वातावरण अच्छा रहता है। शीत ऋतु में यमन की जलवायु वास्तविक रूप से अच्छी होती है। छः हजार फुट की ऊंचाई पर तूफान कभी २ ही आते हैं। इनके साथ कभी कभी बूंदा बांदी भी हो जाती है। गर्मी सबसे अधिक लाल सागर पर स्थित तिहामा तथा फारस की खाड़ी पर स्थित एक स्थान पर पड़ती है। मरुस्थलीय भागों में रातें बड़ी सुहावनी तथा दिन बहुत कठोर होते हैं, रात और दिन के तापक्रम में बहुत अन्तर रहता है।

यहां पर रेत के तूफान प्रायः आया करते हैं। परन्तु यह यात्रियों के लिये बहुत हानिकारक नहीं होते, हां लेकिन दक्षिण के तूफान कभी कभी बड़े हानिकारक सिद्ध होते हैं।

मानव रूप (Human Aspect)

ऐतिहासिक आधार:—(Historical background)

अरेबिया का वास्तविक इतिहास सातवीं शताब्दी से आरम्भ होता है। इसमें प्राचीन काल में अनेक खलीफों के वंश रहे थे, इन्हीं लोगों ने पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका में एक बड़े साम्राज्य को जन्म दिया। यह जन्म तेरहवीं शताब्दी के तुर्किस्तान साम्राज्य की नींव के पहले ही हो चुका था। वर्तमान साउदी अरेबिया का राज्य एक राजा ने जिसका नाम इब्न साउद था, स्थापित किया था, इसने अपना जीवन वास्तव में १९२१ में उस समय से आरम्भ किया जब से इसने नेजद को विजय कर लिया था। इसके उपरान्त इसने १९२६ में हिजाज भी अपने राज्य में मिला लिया, इसके कुछ ही वर्ष बाद सितम्बर १९३२ में इसने साउदी अरेबिया राज्य की स्थापना की और स्वयं उसका राजा बन गया। इन विजयों के पूर्व इब्न साउद एक बड़ा वहाबी नेता था, इसने यहां अनेक सुधार किए और बद्दू लोगों को स्थाई रूप से बसाने की चेष्टा की, साथ ही इस्लाम धर्म का भी बहुत अधिक प्रचार किया।

वास्तव में साउदी अरेबिया की राजनैतिक महत्ता इसलिये और भी अधिक हो गई है, कि इसमें इस्लाम धर्म के अनेक पवित्र तीर्थ स्थान हैं। न केवल इतना

ही बल्कि इस गर्म मरुस्थल के नीचे पेट्रोलियम रूपी धन की भी खोज हो चुकी है। पेट्रोलियम की उत्पत्ति यहां १९३० से आरम्भ हुई है, अब नगरों में रहने वाली जनसंख्या में बराबर वृद्धि हो रही है, लोग इन तेल क्षेत्रों में कार्य करने लगे हैं। साउदी अरेबिया का अब धीरे धीरे आर्थिक रूप ही परिवर्तित हो रहा है। यहां की वर्तमान राजधानी रियाद है।

जनसंख्या वितरण (Population Distribution)

साउदी अरेबिया की वर्तमान जनसंख्या ७,०००,००० है। इसमें से १० प्रतिशत ऐसी है, जो नगरों में अस्थाई रूप से रहती है। वर्तमान समय में बद्दुओं की जनसंख्या बहुत कम हो गई है। अनुमान लगाया जाता है, कि ये कुल मिला कर दस लाख से भी कम हैं। सबसे अधिक जनसंख्या लाल सागर तट की ओर पाई जाती है, यहां पर २५ लाख से अधिक लोग रह रहे हैं। अन्य तटीय क्षेत्रों में १५ लाख तथा मध्य के नखलिस्तानों में लगभग ५ लाख जनसंख्या है। यहां के बंजारे लोगों ने अपना बहुत गहरा प्रभाव देश के इतिहास पर डाला है। अब भी ये लोग अपने पशुओं सहित इधर उधर घूमा फिरा करते हैं। जनसंख्या घनत्व केवल उन्हीं स्थानों पर अधिक है, जहां मिट्टी उपजाऊ तथा जलवायु उत्तम है। ऐसे क्षेत्र यहाँ बहुत ही सीमित हैं। खाद्य पदार्थों की उत्पत्ति बढ़ाना एक प्रकार से असम्भव है, क्योंकि वातावरण ही अनुकूल नहीं पाया जाता। प्रायः बंजारों तथा स्थाई रूप से रहने वाले लोगों में संघर्ष ही रहता है। कभी कभी ऐसा भी होता है, कि कुछ जनसंख्या जिसे खाद्य पदार्थ नहीं मिलते मध्य के भागों में स्थापित हो जाती है। वहाँ कुछ कुयें खोदकर कृषि के लिए जल प्राप्त किया जाता है, जब कुछ धन एकत्रित हो जाता है तब ये लोग उत्तर-पूर्व में मेसोपोटामिया की सीमा के निकट स्थाई रूप से स्थापित हो जाते हैं।

यहां की जलवायु बहुत अच्छी है, जन्मदर मृत्युदर की अपेक्षा अधिक है। अभी तक लोगों का यह कथन था, कि अधिक जनसंख्या के लिये यहां दो ही मार्ग थे, या तो देश छोड़ कर बाहर चली जाय और या यहीं भूखों मर जाय। परन्तु साउदी अरेबिया के पास एक खनिज धन है, जिसके कारण उसकी राष्ट्रीय आय पहले की अपेक्षा बहुत अधिक हो गई है।

आर्थिक रूप (Economic Aspect)

प्राकृतिक वनस्पति:—(Natural Vegetation)

साउदी अरेबिया का भाग गर्म मरुस्थलीय प्रदेश में सम्मिलित है। यहां पर छोटी छोटी गुच्छेदार घास मिलती है, जो कि दूर दूर उगा करती है। इनके

बीच बीच में कांटेदार झाड़ियाँ होती हैं। कहीं कहीं पर मोटे चमकीले पत्तों वाली केक्टस नामक झाड़ियां भी मिलती हैं। किसी किसी जगह पर जलाशयों के सहारे मरुस्थल मिलते हैं, वहां खजूर के कुंज उग आते हैं, कुछ हरी भरी घास भी दृष्टिगोचर होती है। कभी कभी संयोग से कुछ वर्षा हो जाने पर कुछ पौधे उग आते हैं जो कि बहुत अल्पायु के होते हैं, क्योंकि नमी नष्ट हो जाने पर मर जाते हैं। दक्षिण और पश्चिम की ओर कुछ ऐसी झाड़ियां पाई जाती हैं, जो कि दवाइयों के लिये बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होती हैं। उदाहरणार्थ अरब का गोंद बलसमा, सोना तथा मिर इत्यादि। नेज्द में एक विशेष प्रकार की वनस्पति १२ से १५ फुट ऊंची उगती है, इसे घाथा (ghatha) कहते हैं। इससे विश्व का सबसे शुद्ध 'चारकोल' (charcoal) प्राप्त किया जाता है। इस वनस्पति के अतिरिक्त यहां उत्तर की ओर अनेक फलों के वृक्ष उगते हैं, जिनका वर्णन आगे किया गया है।

कृषि—(Agriculture)

इस मरुस्थलीय क्षेत्र में कृषि विकास बहुत अधिक नहीं हो सका है, इसके प्रमुख कारण वर्षा की कमी तथा सिंचाई के साधनों की असुविधायें हैं। कृषि केवल उन्हीं स्थानों में की जाती है, जहां चश्मे, कुयें या कोई अन्य जलाशय उपस्थित है। ऐसे ही भागों में जनसंख्या स्थाई रूप से स्थापित हो गई है, और कृषि करने लगी है। कुछ वादियां भी ऐसी हैं, जिनमें थोड़ा सा जल कृषि के हेतु मिल जाता है। बड़े बड़े नखलिस्तानों में गेहूं, ज्वार-बाजरा तथा जौ उत्पन्न होता है। इन वस्तुओं के अतिरिक्त मक्का, चावल, तिलहन, तम्बाकू, नील, दुर्रा तथा कपास इत्यादि भी उत्पन्न की जाती है। उत्तरी भागों में जहां भूमध्य सागरीय जलवायु का प्रभाव मिलता है, वहां अंगूर की बेलों के अतिरिक्त अन्य तमाम फलों के बगीचे भी पाये जाते हैं। इन फलों में अंगूर, नीबू, नारंगी, संतरा बहुत प्रसिद्ध हैं परन्तु इनके अतिरिक्त आड़ू अनार, सेब नाशपाती, चैरी, बेरी बदाम, अखरोट, शहतूत, जैतून तथा अंजीर भी उगते हैं, परन्तु, बहुत कम मात्रा में।

जीव जन्तु:—(Animal life)

जंगली जीव जन्तुओं में चीते, भेड़िये, गीदड़, लोमड़ी, बंदर, जंगली गाय तथा सांप इत्यादि मिलते हैं। टिड्डियों के दल भी यहां बहुत आया करते हैं। परन्तु यहाँ पर इनके आने के लिये लोग प्रार्थना करते हैं। क्योंकि यह उनका भोजन भी है। लाल टिड्डी विशेष तौर पर मादा सबसे उत्तम स्वादिष्ट समझी जाती है, यह लोग इसे उबाल कर नमक से खाते हैं। कुछ लोगों का कथन है, कि यह स्वाद हरे गेहूं से

मिलती जुलती है। लोग टिड्डियां सुबह के समय एकत्रित करते हैं, क्योंकि उस समय उनके परों पर ओस जम जाती है।

घरेलू पशुओं में गदहे, खच्चर मोटी दुम वाला भेंड़ तथा ऊंट व घोड़े हैं। घोड़े यहाँ पर दो प्रकार के होते हैं, प्रथम कादिशी जो कि भद्दे कामों में प्रयोग किए जाते हैं, और द्वितीय कोखलानी या कोहीले, इनके विषय में बतलाया जाता है, कि ये २००० वर्ष से यहाँ मिलता है और इसका जन्म स्थल सोलोमन द्वीप में था। इनकी ऊंचाई १३ या १४ हाथ से अधिक नहीं होती। सबसे उत्तम किस्म जो कि पहले नेज्द में हुआ करती थी, वह अब मेसोपोटामियाँ के बद्दू तथा अनाजी लोगों के पास रह गई है।

ऊंट यहाँ पर अनेक जाति के मिलते हैं, सबसे अधिक जातियां नेज्द हो में पाई जाती हैं। नेज्द के लिए कहा गया है, कि यह 'ओम-यल-बेल' (Mother of camels) है। यहाँ पर रेगिस्तान का यह जहाज, बगैर एक बूंद पानी के चार या पाँच दिन तक कड़ी गर्मी में भी चल सकता है। सवारी के हेतु, जो ऊंट सबसे अच्छे समझे जाते हैं वह ओमन में ही मिलते हैं।

व्यवसाय—(Occupations):—

यहाँ के लोगों के मुख्य धन्धे कृषि तथा पशु पालन हैं। बाद वाला धन्धा यहां अति प्राचीन काल से चला आ रहा है। कृषि करना यहां उसी समय से आरम्भ हुआ है। जब से कि लोग यहाँ कुछ स्थानों पर स्थाई रूप से बस गए। बड़े बड़े उद्योग-धन्धे यहां स्थापित नहीं हो सके, क्योंकि यहाँ पर उनके विकास के लिए सुविधायें नहीं पाई जातीं। यहाँ पर केवल वही धन्धे उन्नति कर पाये हैं, जिनके लिए कच्चा माल आसानी से प्राप्त हो जाता है। बद्दू लोग अपने साथ बहुत से पशु रखते हैं। उनसे ये खाल, चमड़ा ऊन तथा हड्डियाँ प्राप्त करते हैं। इन कच्चे मालों से ये लोग अनेक वस्तुयें व्यापार के हेतु तैयार करते हैं। अरब के निवासी अपने साथ बहुत से ऊंट रखते हैं। ऊंट से विभिन्न प्रकार के कच्चे माल इन्हें प्राप्त होते हैं। यहाँ तक कि खाने पीने की वस्तुयें भी इन्हीं पशुओं से व्यापार के हेतु प्राप्त की जाती हैं। कुछ लोग अब भी लूट मार करके जो वस्तुयें प्राप्त होती हैं। उनका व्यापार करते हैं।

नखलिस्तानों में कुछ घरेलू उद्योग धन्धे भी पाये जाते हैं। खजूर से प्राप्त की हुई वस्तुओं के धन्धे जैसे कूट कर आटा बनाना, खजूर खाने के लिए तैयार करना, पंखे व चटाइयाँ बुनना लकड़ी के हुक्के बनाना इत्यादि। यहाँ पर विभिन्न प्रकार की हुक्के में पीने वाली तम्बाकू भी तैयार की जाती है। खजूर से देशी मदिरा भी यहाँ के लोग बनाते हैं। [illegible] के [illegible], [illegible], पेटी, घोड़े की जीन तथा खेमे इत्यादि,

भी तैयार किये जाते हैं। हड्डियों से विभिन्न प्रकार की वस्तुयें ये लोग तैयार करते हैं। इनकी तैयार की हुई वस्तुयें बड़ी उत्तम होती हैं, और बाजार में अच्छे दामों में बिकती हैं। बद्दू तथा अन्य बंजारे अपनी अपनी वस्तुओं को बेचने के हेतु निकट के नगरों में जाया करते हैं। इन वस्तुओं को बेचकर अपनी अपनी आवश्यकता की चीजें वहाँ से ले आते हैं।

खनिज सम्पत्ति (Mineral Wealth)

पेट्रोलियम साउदी अरेबिया का एक प्रमुख खनिज है। यदि १९५२ के आंकड़ों की ओर दृष्टि डाली जाय तो पता चलेगा कि पश्चिमी एशिया के कुल उत्पादन का ४० प्रतिशत पेट्रोलियम यहीं से प्राप्त होता है। इसका सबसे बड़ा तेल का कोष फारस की खाड़ी के निकट एल-हासा (El Hasa) के प्रान्त में है। अमरीका ने जो सुविधायें १९३३ और १९३९ में प्राप्त कीं उनके अन्तर्गत देश के तेल पर उसे पूर्ण अधिकार प्राप्त हो गया। कुओं की खोज जो इस क्षेत्र में १९५२ में हुई थी, उसके अन्तर्गत तीन अन्य तेल के क्षेत्रों का पता चल गया। अब यहाँ का कोष (Reserve) बढ़ कर २,४२६,५०००,०० मेट्रिक टन हो गया। कुवाइत प्रान्त में ४,५००,०००,००० बैरेल रिज़र्व है। कच्चे पेट्रोलियम का वार्षिक उत्पादन सन १९५१ में ३६,०००,००० मेट्रिक टन, १९५२ में ३९,०००,००० मेट्रिक टन, १९५३ में ४१,०००,०००मेट्रिक टन तथा १९५४ में ४६,०००,००० मेट्रिक टन था। साउदी अरेबिया को स्वयं कुओं से १९५३ में १५१०००००० बैरेल तेल प्राप्त हुआ, जब कि १९४८ में इसका उत्पादन केवल १४२,८५३,००० बैरेल था। खनिज तेल निकालने का प्रमुख स्थान धाहरन तथा प्रमुख केन्द्र जहाँ पर कुयें पाये जाते हैं, अबकैक है। इसके अतिरिक्त अइनदर तथा दमान के केन्द्र भी महत्वपूर्ण हैं। इन केन्द्रों की खोज १९३६ में हुई थी। अन्य स्थानों पर आशा की जाती है, कि खनिज तेल प्राप्त हो सकेगा, परन्तु निकाला नहीं जाता, रासतुरा के स्थान पर 'रिफाइनरी' स्थापित कर दी गई है। तेल के टैक्स तथा 'रायल्टीज' से जो धन यहाँ की सरकार को प्राप्त होता है, वह १९४७-४८ में ५५००००००० डालर था। एक ३० इंच की पाइप लाइन १०६८ मील सिडोन तक १९५० में बना दी गई है। सिडोन भूमध्य सागर पर स्थित है, एक और लाइन बेहरीन तक भी स्थापित कर दी गई है।

साउदी अरेबिया में सोना भी निकाला जाता है। सोने की खानें माहद अद्-दहाब (Mahd ad-Dahab) में मिलती हैं। यह स्थान मक्का और मदीना के मध्य में स्थित है। सोना यहाँ अमरीका तथा कैनाडा की कम्पनियों ने निकालना आरम्भ कर दिया है।

यातायात के साधन :—(Means of Transport & Communication)

साउदी अरेबिया में आधुनिक पक्की सड़कों का अभाव है। केवल दक्षिण के भाग को छोड़ कर हर स्थान पर कारवाँ मार्ग मिलते हैं। इन कारवाँ- मार्ग के मध्य कुयें तथा अन्य प्रकार के जलाशय मिलते हैं। वास्तव में ये मार्ग उन स्थानों से होकर निकाले गए हैं जहाँ जल प्राप्त होता है। यहाँ पर व्यापार बहुत ही कम है, बल्कि इतने अधिक तीर्थ यात्री विश्व के कोने कोने से आते हैं, कि उनके लिये मार्ग प्राकृतिक तौर पर बन गये हैं। ये मार्ग मक्का और मदीना पर ही अन्त होते हैं। दो मुख्य सड़कें, एक तो सुनाइट और दूसरी शिया हज्ज है। पहली वाली सड़क, उत्तर से उन संकीर्ण विचार वाले तुर्कों के लिए बनाई गई है जो यहां तीर्थ यात्रा के लिए आते हैं। दूसरी वाली पूर्व से फारस के निवासियों के लिए यहाँ आकर मिलती है।

उत्तरी सड़क दमास्कस से आरम्भ होती है और हौरन उच्च भूमि रोआला, शिरारत तथा हर्ब बद्दू नामक सीमाओं को पार करती हुई मक्का और मदीना तक आ पहुँचती है। इसके मध्य में जो स्थान मिलते हैं, उनमें कलात बेल्का, मान, तेबक, मिदेन, सालाह उल्लेखनीय हैं। इस सड़क की पूरी यात्रा में ३० दिन लगते हैं। परन्तु अब मार्ग का महत्व बहुत कम हो गया है क्योंकि तीर्थ यात्री अब स्टीमर में बैठकर स्वेज नहर तथा लालसागर में होकर जिद्दा तक आ जाते हैं, और फिर यहाँ से तीन चार दिन के मार्ग द्वारा मक्का पहुँच जाते हैं। दमास्कस से मक्का तक एक 'हमीदी हिजाज' रेलवे बना दी गई है।

उत्तर-पूर्व तथा पूर्व से आने वाले मार्ग बगदाद से आरम्भ होते हैं और कर्बला, मेशिद अली होते हुए दक्षिण की ओर आते हैं, क्योंकि यहाँ पर शाइबेह के कुयें मार्ग में मिलते हैं। इसके बाद पश्चिम में यह सड़क हेल को मुड़ जाती है और फिर दक्षिण-पश्चिम में मदीना तक पहुँचती है। यह मार्ग मौन्टी फ़िक राज्य तथा दाफिर बद्दू ये राज्य को उत्तर की ओर तथा जिबेल शामर राज्य व हार्व-बद्दू राज्य को पश्चिम की ओर सहायता पहुँचाता है। एक कारवाँ मार्ग हौरन, वादी सिरहन, जौफ तथा निफद होता हुआ हेल तक आता है। यह दक्षिण पूर्व में रिआद तक चला गया है। रिआद से एक मार्ग यमामाह होता हुआ फारस की खाड़ी तक आता है। और एल-कातिफ पर समाप्त हो जाता है। रियाद पश्चिम में तैफ को पार करता हुआ मक्का तक आता है।

पेट्रोलियम उद्योग के साथ साथ यहाँ पर यातायात के साधनों में भी बहुत

उन्नति हो रही है, दमन और रियाद के मध्य एक रेलवे मार्ग बन गया है, नई मोटर चलाने योग्य सड़कें जिद्दा, मक्का और रिआद तक बना दी गई हैं। हवाई मार्ग द्वारा धारन, रिआद तथा जिद्दा मिले हुए हैं। यहाँ पर एक सरकारी कम्पनी जिसका नाम 'साउदी अरेबियन एयर लाइंस' है, अपने वायुयान चलाती है परन्तु यह कार्य (Transworld Airlines) की अध्यक्षता में बराबर होता है। एक हफ्ते में तीन काहिरा तक तथा दो बीरुत तक वायुयान चलते हैं। जिद्दा, धाहरन तथा रियाध में हवाई अड्डे बना दिये गये हैं। इन यातायात के साधनों के अन्तर्गत यहां सिन्चाई के साधनों तथा मछली पकड़ने के उद्योग को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। आशा है ये दोनों धन्धे जल्दी ही उन्नति कर जायेंगे।

मक्का मुसलमान लोगों का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। नगर के चारों ओर १०० मील के घेरे में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं आ सकता जो इस धर्म को न मानता हो। दिन में पाँच बार एशिया और अफ्रीका के मुसलमान इस नगर की ओर रुख कर के प्रार्थना करते हैं। प्रति वर्ष यहाँ ढाई लाख तीर्थ यात्री अनेक कठिनाइयों का सामना करके आते हैं और बहुत ही श्रद्धा के साथ उस काले पत्थर को चूमते हैं जो 'काबा' कहलाता है। लालसागर पर स्थित जिद्दा यहाँ से ४५ मील तथा मदीना यहाँ से दक्षिण की ओर २५० मील हट कर स्थित है। यहाँ का द्वितीय श्रेणी का नगर मदीना है। यह भी एक पवित्र तीर्थ स्थान है। यह दमास्कस से मदीने आने वाली रेलवे का अन्तिम स्टेशन है।

विदेशी व्यापार (Foreign Trade):—

निर्यात वस्तुओं में केवल खनिज तेल ही उल्लेखनीय है। नीचे यहां के निर्यात-आयात व्यापार का मूल्य दे रहे हैं:—

निर्यात

सन्	मूल्य (पौंड में)
१९५१	२००,०००,०००
१९५२	२३०,०००,०००
१९५३	२३५,०००,०००

आयात

सन्	मूल्य (पौंड में)
१९५१	४९,०००,०००
१९५२	६०,०००,०००
१९५३	५८,०००,०००

राजनैतिक रूप (Political Aspect)

विदेशी सम्पर्क (Foreign Reltions)

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में, गत वर्षों से साउदी अरेबिया का ध्येय तमाम अरब देशों से सुलह रखने का रहा है। अरब लीग पेक्ट जो २२ मार्च १९४५ को हुआ था, उसके पहले जो कुछ भी पत्र व्यवहार हुए उन सबों में इसने बराबर भाग लिया और पेलेस्टाइन के झगड़ों में हमेशा अरबों का ही साथ दिया। साथ ही साथ इसने जोर्डन के राज्य तथा ईराक के प्रस्ताव (ग्रेटर सीरिया) का बराबर साथ दिया। जहाँ तक साउदी अरेबिया का सम्बन्ध है, इसके सम्बन्ध संयुक्त राज्य अमरीका से भी बहुत अच्छे हैं। संयुक्त राज्य अमरीका की सरकार को १९४६ में धरन हवाई अड्डा बनाने की भी अनुमति दे दी गई है। जून १९५१ के अन्तर्गत संयुक्त राज्य सरकार को इसकी देख रेख करने के विशेष अधिकार भी प्राप्त हैं। हाल में ये राज्य तुर्की—ईराकी पेक्ट के प्रति विरोध प्रकट करने के हेतु मिश्र के साथ मिल गया था।

संवैधानिक रूपरेखा (Constitutlonal Framcwork)

साउदी अरेबिया एकतंत्र राज्य है। राजा के ही पास सब अधिकार होते हैं। गत वर्षों से मन्त्रियों तथा आफीसरों की नियुक्ति हर सरकारी क्षेत्र की देख रेख के हेतु कर दी गई हैं। प्रमुख नगरों में जैसे मक्का तथा रिआद में म्युनिस्पैल्टी स्थापित कर दी गई हैं। ये संस्थायें स्थानीय मामलों की देख रेख करती हैं। भूमि का नियम शारिआ (Sharia) होता है (यह मुख्यतः कुरान पर आधारित है) इसका शासन प्रबन्ध धार्मिक नेताओं के हाथों में होता है। यहाँ का वर्तमान राजा साउद इब्न अब्दुल अजीज है। इसका जन्म १९०[illegible] में हुआ था। नवम्बर ९ सन् १९५३ में गद्दी पर बैठा था।

सांस्कृतिक रूप (Cultural Aspect)

जाति Race—

साउदी अरेबिया के लोग प्राचीन सेमिटिक जाति की एक शाखा के हैं। यह लोग अपने को अरेबियन कहते हैं। 'अरब' एक प्राचीन शब्द है, जोकि हेब्रू तथा ग्रीक दोनों ही भाषा में मिलता है। इसमें भी अनेक जातियाँ तथा समूह हैं, परन्तु उन सबों की उत्पत्ति, शरीर भाषा और धर्म समान ही हैं। भिन्नता जो पाई जाती है, वह केवल सामाजिक रीति रिवाजों में ही मिलती है। उदाहरणार्थ-कुछ लोग कृषि करते हैं, कुछ बंजारे हैं तथा कुछ नगरों में स्थाई रूप से रहते हैं। अरब के निवासी* बद्दू कहलाते हैं।

जीवन (Life):—

कुछ पाठकगण इन लोगों के सँगठन अथवा सामाजिक दशा के बारे में मतभेद रखते होंगे, और कदाचित इनकी आदतों, रीति रिवाजों तथा रहन सहन के विषय में भी गलत ही विचार धारणा करते होंगे। शायद वे सोचते होंगे कि ये लोग हमेशा अपने डेरों व पशुओं के लिये इधर उधर घूमते फिरते ही रहते हैं। परन्तु, वास्तव में ऐसा नहीं है, असली बद्दू अपने वतन (घर) को इतना अधिक प्यार करता है, कि वह अन्य स्थान पर आजीवन रह ही नहीं सकता। ये लोग अपने शीत व ग्रीष्म ऋतु के निश्चित स्थान रखते हैं। जिससे कि अपने पशुओं को भोजन खिला सकें। बस इसी कार्य से ये अपने डेरे इन निश्चित स्थानों पर लगाते हैं। इन स्थानों पर जाते समय मार्ग में भी ये लोग अपने डेरे नहीं लगाते, बल्कि खुले में ही सोकर रात व्यतीत कर देते हैं।

इनकी स्त्रियाँ काले रंग का बुर्का पहिनती हैं, अपने हाथों से ये चक्की द्वारा अनाज पीसती हैं और डेरों के लिये कपड़ा बुनती हैं। इनसे बच्चे, बकरे, बकरियाँ तथा कुत्ते सब बड़े मेल से रहते हैं। मनुष्य जो कि तम्बाकू या कहवा पीते हैं, कभी भी घर में अशांति नहीं फैलाते।

चरित्र (Character):—

कुछ लोग सोचते हैं कि ये लोग आरम्भ से ही लुटेरे होते हैं, परन्तु नहीं, इनके विचार धन पर अधिकार पाने के पश्चिमी देशों के विचार से भिन्न हैं। और कदाचित इनकी विचारधारा इस सम्बन्ध में सही है। वास्तव में यह लोग अपनी भूमि पर किसी भी अपरिचित को नहीं आने देते, इसी वजह से जो भी अपरिचित लोग इनके राज्य में आते हैं उन्हें ये लूट लेते हैं। परन्तु इनमें भी कुछ ही लोग

*This very word Bdawi, plural, Bedawin means rather pastor stock breeder than nomad.

ऐसे होते हैं जो लूटने का काम करते हैं और ये भी बड़े ईमानदार तथा नियमों का पालन करनेवाले होते हैं। बद्दू लोग बहुत ही अच्छे घुड़सवार हैं। ये जलते हुए रेगिस्तान में शत्रुओं का मुकाबला हमेशा करने को तैयार रहते हैं। प्रत्येक बद्दू अपने को राजकुमार समझता है, और इसीलिये हर यात्री को नियम का पालन करना सिखाता है। जब कभी भी कारवाँ इनके क्षेत्र में होकर जाता है, तो समझते हैं कि तुर्क और फारस के निवासी हमारे यहां के खाद्य पदार्थों को अपने देश में लिए जा रहे हैं।

ये लोग बड़े ईमानदार तथा विश्वास पात्र होते हैं। आपस में एक दूसरे का खून कभी नहीं करते, क्योंकि इनके यहाँ के नियम के अनुसार खून का बदला खून ही है। इनका चरित्र अपने ही समूह में साथ २ रहते रहते ऐसा हो जाता है कि अपनी स्वयं की जाति से प्रगाढ़ प्रेम उत्पन्न हो जाता है।

अब यदि इन लोगों की तुलना शहर के बद्दुओं से की जाय तो, ये लोग तो साधारण खाना खाते हैं और खुली हवा में रहते हैं। प्राकृतिक तौर पर इनका स्वास्थ्य उनकी अपेक्षा अच्छा होगा। ये बड़े खुश रहते हैं और हंसी मजाक भी करते हैं। कड़ी से कड़ी मुसीबतों को भी सहन कर लेते हैं। बच्चे बूढ़ों की इज्जत करते हैं, जब ये बच्चे बड़े हो जाते हैं, तब स्वतन्त्र हो जाते हैं और अपनी अलग गृहस्थी स्थापित कर लेते हैं।

अरब के प्राकृतिक विभाग

इस प्रायद्वीप के अनेक प्रादेशिक नाम हैं। पश्चिमी तट एक तंग निचला भाग है, यह तिहामा कहलाता है। इसके पूर्व में एक पहाड़ी उच्च भाग है, जो हिजाज के नाम से प्रसिद्ध है। इसके मध्य में पवित्र मक्का स्थित है। मध्य का पठार नेज्द कहलाता है, आँतरिक अरब में दो रेतीले रेगिस्तान हैं। पहिला, रब-अल-खाली दक्षिण-पूर्व में और दूसरा, निफूद मध्य में एक तंग रेतीली पट्टी द्वारा पूर्वी भाग से सम्बन्धित, यह भाग दाहना कहलाता है। यहाँ पर बड़े २ रेत के टीले (Sand dunes) पाये जाते हैं। सीरिया का रेगिस्तान उत्तर की ओर है और वास्तव में भौगोलिक अरेबिया का ही एक अंग है। दक्षिण-पश्चिम में यमन की उच्च भूमि है जिसका वर्णन आगे किया गया है। दक्षिण-पूर्व में ओमन का राज्य है। इन दोनों के मध्य [illegible] कहलाता है।

वास्तव में यह सारा [illegible] तीन प्रकार के प्राकृतिक भाग धारण करता है:—प्रथम नखलिस्तान तथा उपजाऊ क्षेत्र, द्वितीय शुष्क चरागाह गाह तथा तृतीय वास्तविक रेगिस्तान।

प्रथम—नखलिस्तान तथा उपजाऊ क्षेत्र दो भागों में पाये जाते हैं :—(१) अरब के मध्य में (२) तटीय क्षेत्रों में। (१) अरब के मध्य का भाग नेज्द कहलाता है। इसमें तीन नखलिस्तान हैं। जिबेल तथा शामर जिनमें दो चश्मों द्वारा एक पहाड़ी से जल आता है। इसमें ही हा-इल तथा फीड नामक नगर तथा कई गाँव स्थित हैं। कासिम का नखलिस्तान एक वादी रूमा से जल प्राप्त करता है। इसमें अनीजा और बोरीदाह नामक बस्तियां पाई जाती हैं। इसके अलावा अन्य गांव भी यहाँ स्थित हैं। नेज्द बहुत ही विस्तृत क्षेत्र है, इसमें रिआद नगर मध्य नखलिस्तान में स्थित है। (२) तटीय क्षेत्रों में यमन एक उपजाऊ भाग है परन्तु इसका वर्णन आगे किया गया है।

पूर्व की ओर ओमन का उपजाऊ तट है। दक्षिण तट बिल्कुल ही रेगिस्तानी भाग है। पचास अक्षांश के बाद यह दूसरा ही रूप धारण कर लेता है। पश्चिम में लालसागर के तट पर बहुत ही तँग उपजाऊ भाग है, वैसे इस तरफ उपजाऊ क्षेत्रों का अभाव है। इसके उत्तर में मक्का व मदीने के पवित्र स्थान स्थित हैं हिजाज का भाग उत्तर तथा दक्षिण में विभाजित है, मक्का और मदीना के मध्य का भाग एक बंजर क्षेत्र है, जो हुरी के नाम से पुकारा जाता है। ताईफ नामक बस्ती मक्का के निकट ही स्थित है।

द्वितीय शुष्क चरागाह के क्षेत्र असली रेगिस्तान तथा उपजाऊ क्षेत्रों के मध्य में पाये जाते हैं। यह बहुत विस्तृत क्षेत्र हैं। इनके धरातल पर रेत भी पाया जाता है। इनमें कहीं कहीं पर घास भी उग आया करती है, क्योंकि जल भूमि पर कहीं २ मिल ही जाता है। यहाँ पर ऊँट साथ रखनेवाले बंजारे मिलते हैं।

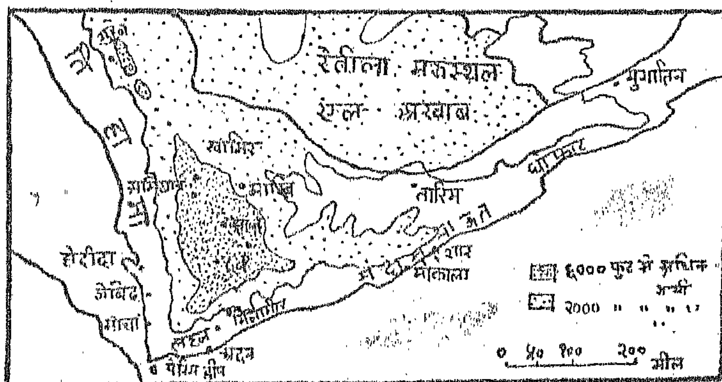
तृतीय-यह असली रेगिस्तानी भाग है, इसमें प्राकृतिक वनस्पति नाममात्र को भी नहीं मिलती। इस क्षेत्र में होकर यात्रा करने के हेतु जल साथ ले जाने की आवश्यकता होती है। ये रेगिस्तान चार श्रेणियों में विभाजित किये गए हैं। (१) दाहानाह-यह एक कठोर कंकड़ों का समतल भाग है, कहीं कहीं पर रेत की पेटियां विभिन्न चौड़ाई की दृष्टिगोचर होती हैं। यहां पर जल काफी गहराई पर मिलता है। यह भाग यात्रा के लिए एक प्रकार की रुकावट है। (२) निफद-यह भाग एक विस्तृत भाग है। इसमें रेत और गहरे गड़े हुए कँकड़ मिलते हैं। यह धरातल इन दशाओं के कारण ही बना है। (३)—एहकाफ—यह एक रेतीला देश है, इसे पार करना बहुत ही कठिन कार्य है, क्योंकि इस पर चलने में बहुत परिश्रम करना पड़ता है। (४)—हरी—यह एक लावा का क्षेत्र है इसमें नुकीली आग्नेय चट्टानें मिलती हैं। यदि मनुष्य या पशु इस पर चले तो उसके पैरों में घाव हो जायेंगे

और सम्भवतः पेर की बोटी बोटी निकल सकती है।

दक्षिण की ओर रब-अल-खाली का स्थली भाग है। इसका क्षेत्रफल बहुत अधिक है, यमन से ओमन तक इसकी लम्बाई है तथा चार या पाँच सौ मील चौड़ाई है। यह एक बिलकुल ही बंजर क्षेत्र है। इसको १९३१ में सर्वप्रथम बर्टरम टोमस ने पार किया था।

यमन—

अरब प्रायद्वीप के दक्षिण-पश्चिम में यमन का राज्य स्थित है। यह एक उच्च भूभाग है, जिसकी अधिक से अधिक ऊँचाई समुद्र सतह से ८९२४ फुट है। इसके दक्षिण में अदन और उत्तर व पूर्व में साउदी अरेबिया के राज्य स्थित हैं। इसका क्षेत्रफल ७५००० वर्ग मील है। यह राज्य समुद्र तट की ओर ढालू है, पर्वत उत्तर-पूर्व की ओर ही मिलते हैं। समतल उपजाऊ मैदान पश्चिमी तट है, परन्तु एक



यमन

बहुत तंग पेटी के रूप में। इसमें होकर कई नदियां समुद्र की ओर चली गई हैं। यहां की जलवायु अरब के अन्य भागों की अपेक्षा अच्छी है। शीतोष्ण कटिबन्धीय वातावरण ग्रीष्म में रहता है, परन्तु शीत ऋतु काफी ठण्डी होती है। यहाँ पर दो ऋतुयें होती हैं, पहली बसन्त तथा दूसरी पतझड़। इन ऋतुओं में नित्य कुछ घण्टों तक बूँदा-बाँदी होती है। मानसून हवायें यहाँ के पहाड़ी ढालों से टकरा कर कुछ वर्षा ग्रीष्म ऋतु में भी कर देती हैं। यहाँ की औसत वर्षा २० इन्च के लगभग है। इस राज्य की वर्तमान जन संख्या

का अनुमान ४० लाख से लेकर ८० लाख तक लगाया गया है, परन्तु संयुक्त राष्ट्र के एकत्रित किए हुये आँकड़ों के अन्तर्गत इसकी जनसंख्या अक्टूबर १९५४ में ४५,००,००० थी। जनसंख्या घनत्व तटीय समतल मैदान में अधिक है। पर्वतीय ढालों पर बहुत ही कम लोग रहते हैं।

यमन के वर्तमान इमामों का कथनों है कि वे हिम्यारायट (Himyarite) वंश के हैं। इस वंश ने दक्षिणी अरब पर दूसरी से लेकर छठी शताब्दी (बी० सी०) तक राज्य किया। अरब लोगों ने इस्लाम धर्म को अपनाया। यमन राज्य का जन्म १५१७ में हुआ है। प्रथम महायुद्ध के समय तक यह इसी प्रकार चलता रहा। नवम्बर १९१८ में जो चुनाव हुए उनके अन्तर्गत इसे तुर्किस राज्य से स्वतंत्रता प्राप्त हुई। परन्तु घरेलू झगड़े इमाम तथा इदरिसी में काफी समय तक चले। इमाम तुर्क लोगों का पक्ष लेता था और इदरसी उनसे बराबर लड़ा। यह संघर्ष १९३४ में समाप्त हुआ क्योंकि ब्रिटेन ने इदरसी की शक्तियों को बरबाद करके इमाम को यम का राजा बना दिया। द्वितीय महायुद्ध से यह अलग ही रहा, इसने किसी का भी पक्ष लेना स्वीकार नहीं किया। इस युद्ध के पश्चात् इसने भी 'अरब लीग पेक्ट' पर हस्ताक्षर किए। इसे हासीमाइट तथा एन्टी-हासीमाइट समूहों के मध्य संघर्षों में कुछ दिलचस्पी हुई। यह दोनों समूह अरब स्टेट के थे। अदन की सीमा पर कुछ संघर्ष के कारण ब्रिटिश लोगों से भी इसके सम्बन्ध क्षीण पड़ गए। सन् १९४५ से यह अरब लीग का मेम्बर हो गया है।

यह एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ का कहवा संसार में सबसे उत्तम माना जाता है। मोचा नाम की काफी यहाँ अति प्राचीन काल से उत्पन्न की जा रही है। इसकी उपज यहाँ के पहाड़ी ढालों पर होती है। विद्वानों का मत है कि यहाँ पर कोहरा जो पड़ता है, उसमें ऐसी विशेषता होती है, जिसके कारण कहवे में एक अजीब ही प्रकार का स्वाद आ जाता है। परन्तु फिर भी यहाँ पर इसकी उपज के लिये आदर्श वातावरण मिलता है। सिन्चाई के साधनों की पूर्ण व्यवस्था होने के कारण यहाँ अन्य वस्तुयें भी उगाई जाती हैं। कहवे के अतिरिक्त यहां पर नील, रंग, तरकारियाँ, गाजर, मूली और गोभी भी उत्पन्न होते हैं। यहाँ पर विभिन्न प्रकार के फल भी उत्पन्न किये जाते हैं। अंजीर, सेब, नासपाती, अंगूर, अखरोट तथा बादाम इत्यादि। यहाँ के लोग बड़े परिश्रमी हैं। एक नशीली वस्तु जिसे कात (Qat) कहते हैं, आजकल उपज में कहवे का स्थान ले रही है। इसका पौधा एक झाड़ी के समान होता है। यहाँ पर महत्वपूर्ण खनिज पदार्थ नहीं मिलते। तेल की खोज बराबर की जा रही है। जर्मनी विशेषज्ञों की सहायता

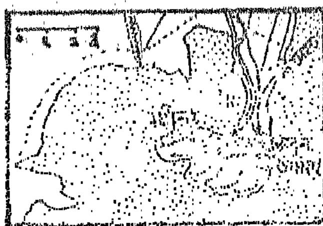
से यहाँ सूती वस्त्र, सीमेंट तथा चमड़े के उद्योग धन्धों का विकास हो गया है। यातायात के साधन यहाँ बड़ी दीन दशा में है। रेलें तो यहाँ हैं ही नहीं, केवल दो सड़कें ही यहाँ पाई जाती हैं, और यह भी कहीं कहीं पर बहुत खराब हैं। यदि विदेशी व्यापार की ओर ध्यान दिया जाय तो यहाँ से निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में कहवा, चमड़ा तथा खाल उल्लेखनीय हैं। आयात यहाँ अनेक तैयार की हुई वस्तुयें की जाती हैं। ये वस्तुयें विभिन्न देशों से आती हैं।

यमन में एकतंत्र राज्य है। यहाँ के जैदी लोग राजा को चुनते हैं, क्योंकि इनके विषय में कहा जाता है, कि ये अली के ही वंशज हैं। यह राजा एक धार्मिक नेता इमाम भी होता है। सरकार कई डिपार्टमेंटों की सहायता से चलती है, राजा अपना हाथ हर मामले में रखता है। द्वितीय महायुद्ध के बाद कुछ लोगों ने संविधान बनाने का प्रस्ताव रखा, परन्तु १९४८ के आरम्भ में इमाम यहया को कत्ल कर दिया गया। इसके बाद अब्दुल्ला-अल-वजीर राजा हुआ, परन्तु सइफइल इस्लाम अहमद ने उसे गद्दी से हटाकर स्वयं अधिकार जमा लिया। साना के स्थान पर तइज यहाँ की राजधानी हो गई, और राज्य में शाँति स्थापित हो गई। यह राज्य विदेशी प्रभाव से वंचित है। यहाँ पर तीन प्रकार के नियमों का पालन होता है। एक तो सिविल नियम, दूसरा ट्राइबल नियम तथा तीसरा शरीआ का नियम। परन्तु इमाम के हाथ में अन्तिम अधिकार रहता है।

यहाँ के निवासी बहुत निर्धन हैं। पहले इन बेचारों को भोजन तक पेट भर नहीं मिलता था। वस्त्रों के स्थान पर खाल के बने हुए कपड़े पहनते थे। इन सब संकटों का कारण शासन प्रबन्ध ही है, जो कि कभी भी अच्छा नहीं रहा। तुर्किस लोगों में जो बातें उस समय थीं, उनका इनके ऊपर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा है। अब यहाँ की बहुत कुछ दशा सुधर गई है, और वैसा वातावरण नहीं मिलता जैसा कि पहले था। लोग अब यहाँ बहुत सन्तुष्ट हैं।

अदन

अरेबिया के दक्षिण तट पर अदन एक ज्वालामुखी चट्टानों का प्रायद्वीप है। इस छोटे से प्रायद्वीप पर १८३९ से अंग्रेजों का अधिकार रहा है। इसकी स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है, यहाँ से अंग्रेज लोग अरब सागर तथा लाल सागर की देख रेख करते हैं तथा उस मार्ग की जो कि इंगलैंड से फारस की खाड़ी तथा दक्षिणी-पूर्वी एशिया



अदन

को जाता है रक्षा करते हैं। न केवल यह एक विदेशी बन्दरगाह है, बल्कि आन्तरिक व्यापार के लिए भी इसकी स्थिति महत्वपूर्ण है। यह एक बहुत ही बन्जर तथा नग्न चट्टानों पर स्थित है। बाब-एल-मंडेल के जलडमरू मध्य से इसकी स्थिति सौ मील पूर्व में है, अदन के निकट ही एक छोटा सा द्वीप पेरिम है। अदन का क्षेत्रफल लगभग ७५ वर्ग मील तथा पेरिम का ५ वर्ग मील है। इसकी जनसंख्या ४८००० है। पहली अप्रैल १९३७ से यह ब्रिटिश कामनवेल्थ की एक पृथक कालोनी हो गई है।

अदन की जलवायु बहुत ही खराब है। हर प्रकार की बीमारियाँ स्वस्थ मनुष्य को भी हो जाती हैं। ग्रीष्म ऋतु में बहुत ही गर्म व शुष्क हवायें चलती हैं। यह वर्षा-रहित क्षेत्र में स्थित है, दो दो तीन तीन साल तक वर्षा नहीं होती, जल के लिये इसे कुओं टैंक तथा बनावटी जलाशयों पर निर्भर रहना पड़ता है। प्राचीन नगर की स्थिति एक ज्वालामुखी पर्वत के मुंह पर १७७५ फुट ऊंची है। यहाँ पर दो बन्दरगाह हैं, एक अदन में और दूसरा सिराह द्वीप पर जो कि लाल सागर के द्वार पर स्थित है

अदन जहाजों के लिए एक प्रसिद्ध कोयला प्राप्त करने का स्थान है। यह राजनैतिक केन्द्र भी है। तुर्कों को यहाँ आने से रोकते हैं, और दक्षिण के अन्य राज्यों को सुरक्षित रखते हैं। अप्रैल १९०५ के समझौते के अन्तर्गत इसकी सीमान्त रेखा यमन की ओर कुछ और बढ़ा दी गई है। अरब के इस भाग में ब्रिटिश लोगों का अधिकार ४२००० की मील के क्षेत्रफल में है।

सोकोत्रा—

जो लोग भारतवर्ष को योरोप से आते हैं, उनको यह द्वीप मार्ग में दृष्टिगोचर होता है। यह भी ब्रिटिश लोगों के अधिकार में है। इस पर थोड़ी सी बंजारों की जनसंख्या है।

एल-हासा-बेहरीन-ओमन

अरब प्रायद्वीप का पूर्वी तट फारस की खाड़ी के जल को स्पर्श करता है। इस स्थान पर एक भूभाग रस-मुसैन्दम आगे को ईरान के तट की ओर निकल गया है, परन्तु ओरमज जलडमरूमध्य द्वारा ईरान के तट से पृथक है। यह जल संयोजक फारस व ओमन की खाड़ियों को मिलता है। इस तट का उत्तरी भाग जोकि एल-हासा कहलाता है, टर्किश विलायतों के भाग में सम्मिलित था। इस भाग की। दक्षिणी सीमा रस-रेकन तक आती है। रस रेकन बेहरीन द्वीप के ही निकट है। बेहरीन द्वीप समूह पर तुर्की लोगों का अधिकार था, यह अपने मोतियों के लिए बहुत प्रसिद्ध है। एल हासा और ओमन राज्य के मध्य रस-मुसैन्दम का क्षेत्र है।

यद्यपि मछली व मोती पकड़ने का धन्धा अरब के पूर्वी तट पर होता है, परन्तु उद्योग धन्धे बेहरीन द्वीप समूह में ही उन्नति कर पाये हैं। यहां पर हजारों नावें मछली व मोती पकड़ते हुए दृष्टिगोचर होती हैं। इन लोगों का इस धन्धे का मौसम मई से सितम्बर तक होता है। जितना भी माल यहाँ से प्राप्त होता है, वह सट्टे वालों के पास जाता है। निर्धन मछुवे कुछ भी हिस्सा नहीं प्राप्त कर पाते। सट्टे वालों के ट्रक इनके माल को अपने निश्चय किये हुए दामों पर खरीदते हैं, यदि ऐसा न करें तो वे अपनी नावें व जाल इस धन्धे के लिए न देंगे। मछुआ लोग समुद्र के धरातल पर से मोती एकत्रित करते हैं, यद्यपि इनको अपनी जान का खतरा रहता है, क्योंकि शार्क तथा स्वोर्ड मछली यहाँ पर बहुत अधिक पाई जाती है।

बेहरीन द्वीपों में सबसे बड़ा द्वीप बेहरीन है, जोकि २७ मील लम्बा तथा १० मील चौड़ा है। इसके निकट एक घोड़े के खुर की आकार का द्वीप मोहरिक स्थित है, अन्य द्वीपों में सितराह, साई, अरद मुख्य हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ चट्टानों के अनेक टीले दृष्टिगोचर होते हैं। इन द्वीपों पर लगभग एक शताब्दी (१५२२-१६२०) तक पुर्तगाल निवासियों का अधिकार रहा। अनेक परिवर्तनों के उपरान्त १८७५ में यह ब्रिटिश प्रोटेक्टरेट में आ गया। तब से यहाँ पर पूर्ण शान्ति है। इन द्वीपों पर कुछ चट्टानों के ढेर हैं, इनकी उत्पत्ति के विषय में अभी विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वानों का मत है कि अति प्राचीन काल में इन द्वीपों पर फोनेशियन लोगों का भी अधिकार रहा था। दो द्वीपों का नाम पहले तैरोज तथा अराडोज रहा था। ये दोनों शब्द फोनेशियन भाषा के ही हैं। इनमें से अरद अब भी पहले वाले शब्द का कुछ अंश लिए हुए है। यहाँ के निवासियों के विषय में कहा जाता है, कि ये अरब तथा अफ्रीका की प्राचीन जातियों के वंशज हैं। मानामेह यहाँ का एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र है तथा मोहरिक जोकि दूसरी ओर स्थित है, यहाँ की सरकार की राजधानी है। बेहरीन की कुल जनसंख्या १२०,००० है। यहां पर पेट्रोलियम की खोज १६३२ में हुई थी। अरब को पूर्वी तट पर १६६५ में कुयें खोदे गये थे।

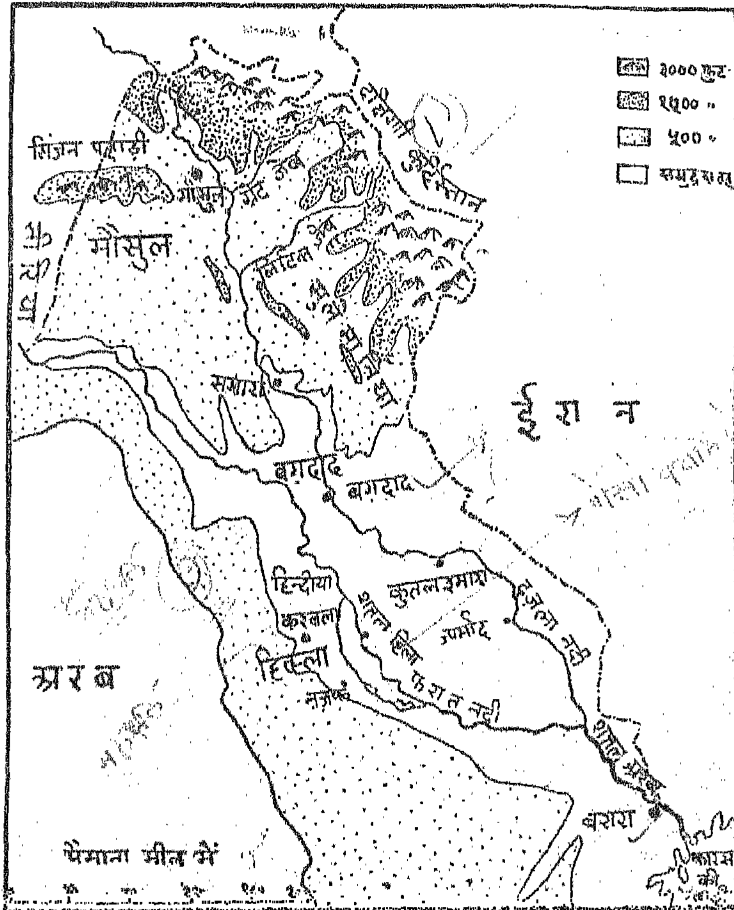
ओमन का सुल्तान, जोकि पहले मस्कत का इमाम कहलाता था, अति प्राचीन समय में अफ्रीका के पूर्वीय तटीय प्रदेश पर शासन करता था। परन्तु यह क्षेत्र १८५६ से इसके भाई को प्राप्त हुआ, और तब से जंजीबार कहलाने लगा। ओमन का राज्य [illegible] बहुत पहले से ही रहा है। समुद्र से ५० या ६० मील अन्दर [illegible] है, जो गोलाई में फैली हुई है। समुद्र तट पर [illegible] हैं। परन्तु

अन्दर की ओर खजूर के वृक्ष पाये जाते हैं। तटीय क्षेत्र में कृषि की जाती है। गेहूं, जौ, मक्का तथा ज्वार-बाजरा उत्पन्न किया जाता है।

ओमन का सुल्तान एक जहाजी बेड़ा अपने पास रखता है। इस सुल्तान पर ब्रिटिश लोगों की विशेष मेहरबानी है। ब्रिटेन ने इसे विश्वास दिलाया है, कि यदि तुर्क या ईरानी लोगों ने तुम्हें तंग किया तो हम तुम्हारी सहायता करेंगे। इसके राज्य का शासन प्रबंध बहुत ही अच्छा है, यहां पर शान्ति है, प्रत्येक के साथ इसका व्यवहार समान है। लोग यहाँ पर संतुष्ट हैं।

ईराक

मध्य पूर्वी देशों में ईराक, जिसे दूसरे शब्दों में मेसोपोटामिया कहते हैं, एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करता है। इसके उत्तर में टर्की, पश्चिम में सीरिया व



ईराक

जार्डन, दक्षिण में साउदी अरेबिया, दक्षिण-पूर्व में कुवाइत व फारस की खाड़ी

का उत्तरी भाग तथा पूर्व में ईरान जैसे प्रसिद्ध देश स्थित हैं। इसकी सीमा में अनेक भाग सम्मिलित हैं, परन्तु उनमें चार ही महत्वपूर्ण हैं, उदाहरणार्थ मेसोपोटामिया का मैदान, जो कि अपनाक्ष पेटी का पूर्वी खण्ड है, उत्तर का उच्च भूभाग जिसमें प्राचीन एसीरिया सम्मिलित है, उत्तर पूर्व के पर्वत तथा दक्षिण-पश्चिम के वह मरुस्थलीय भाग, जो कि फरात नदी के पश्चिम में है और लगभग सात सौ मील तक इसे घेरे हुए हैं। इस देश का वर्तमान क्षेत्रफल १७१००० वर्ग मील (444,442 sq. km.) है। यदि दक्षिण की सीमा ३०° उत्तरी अक्षांश, जो कि फारस की खाड़ी के उत्तरी भाग को छूती है, और उत्तर की ३८° उत्तरी अक्षांश, जो कि कुर्दिस्तान के उत्तरी ढालों को निश्चित करती है, ली जायें तो मेसोपोटामियां बेसिन की लम्बाई लगभग ७०० मील होगी और इसकी औसत चौड़ाई ३०० मील रूसी-ईरानी सीमा से लेकर अनाटोलिया व सीरिया की सीमा तक होगी।

भौतिक रूप (Physical Aspect)

धरातल तथा बनावट:—(Relief and structure)

ईराक के भौतिक मानचित्र को यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो हमको तीन बहुत ही स्पष्ट भौतिक खण्ड दृष्टिगोचर होंगे। ये भौतिक खण्ड एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं। इनमें से प्रथम—उत्तर-पूर्व की कुर्दिस्तान की पहाड़ियां, द्वितीय मेसोपोटामियां का भाग तृतीय मरुस्थलीय सीमा है।

प्रथम-ईराक के उत्तर-पूर्व में *कुर्दिस्तान की पहाड़ियां हैं। यह क्षेत्र वास्तव में 'कुर्द लोगों का देश' कहलाता है। भौतिक दृष्टिकोण से यह भाग लम्बी लम्बी पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ है, ये पर्वत बहुत अधिक ऊँचे नहीं हैं। ईरान की तरफ इनकी अधिक से अधिक ऊँचाई १०,००० फुट है। उत्तर-पूर्व की इनकी ऊँचाई कुछ अधिक हो गई है। दक्षिण की ओर ये मेसोपोटामियां में लुप्त हो जाती हैं। पश्चिम से पूर्व तक इनका विस्तार टर्की से ईरान तक है। उत्तर में ये आरमिनियां तक चली गई हैं। इन पर्वत श्रेणियों पर अनाच्छादन बहुत हुआ है, इसी कारण ये श्रेणियां कुछ नीची हो गई हैं। अधिकतर पर्वत श्रेणियाँ बंजर हैं।

द्वितीय-मेसोपोटामियां का भाग इस शब्द का अर्थ है, दो नदियों के मध्य का भाग। भारतवर्ष के निवासी ऐसे भाग को 'दोआबा' कहते हैं। प्राचीन

*Captain F. R. Maunsell. 'Kurdistan' in Geographical Journal for February 1896, page 83.

काल में अरब और तुर्क लोग मेसोपोटामिया को 'एल-जैसीरेह' (El Jesireh) अथवा-'द्वीप' (The Island) कहते थे, क्योंकि उस समय यह शब्द बहुत ही सीमित था, और इसमें केवल दो नदियों के मध्य की भूमि ही सम्मिलित की जाती थी। परन्तु बाद में वह सम्पूर्ण क्षेत्र जो कि दियारबेर (Diarbekr) से फारस की खाड़ी तक तथा सीरिया से ईरान तक फैला हुआ था, मेसोपोटामियां कहलाने लगा। मेसोपोटामियां दो भागों में विभाजित किया गया, प्रथम-उच्च मेसोपोटामियां तथा द्वितीय निम्न मेसोपोटामियां।

उच्च मेसोपोटामियाँ में प्राचीन एसेरिया के अतिरिक्त दो नदियों के मध्य की भूमि तथा कुर्दिस्तान व दजला नदी के मध्य की भूमि भी सम्मिलित है। इस सम्पूर्ण भाग में विस्तृत ऊंची नीची भूमि पाई जाती है। कहीं पर समतल भाग हैं तथा कहीं पर पहाड़ी। मोसुल के पश्चिम में सिंजार नामक पहाड़ी है, जो केवल तीन हजार फुट ऊँची है। यह पहाड़ी ४० मील लम्बी तथा ७ मील चौड़ी है। और दजला व फरात नदियों के मध्य स्थित है। कुर्दिस्तान तथा दजला के मध्य की भूमि पथरीली है, और इसमें दूर तक वृक्ष तक नहीं मिलते। हां, शीत एवं बसन्त ऋतु में छोटी छोटी सी घास अवश्य उग आती है, इसीलिये बंजारों के लिये ये क्षेत्र बड़े लाभदायक हैं।

निम्न मेसोपोटामिया का भाग बगदाद के कुछ उत्तर से आरम्भ हो जाता है। इसका भौतिक रूप उच्च मेसोपोटामियां से बिल्कुल भिन्न है। इसमें कहीं पर भी भूमि समुद्र सतह से ६०० फुट से अधिक नहीं है। बगदाद समुद्र सतह से केवल १०७ फुट ऊंचा है। सम्पूर्ण क्षेत्र का ढाल दक्षिण की ओर है। यहां की मिट्टी बहुत उपजाऊ है, इसमें बलुई दोमट अधिक मिलती है। यदि इसको जल न मिले तो यह कृषि के हेतु बेकार सिद्ध होती है। इस मिट्टी के उपजाऊपन का प्रमाण हमें केवल इसी बात से मिलता है कि अति प्राचीन काल में ये असीरियन, बेबीलोनियन, अक्काडियन तथा ईरान साम्राज्य का पालनपोषण करती आई है। इस समतल भाग में कहीं कहीं पर प्राचीन नगरों के खंडहर दृष्टिगोचर होते हैं। यहां पर कुछ प्राचीन ज्वालामुखी पर्वतों के चिन्ह भी दृष्टिगोचर होते हैं। इस भाग में कुछ दलदली, भूमि भी पाई जाती है। प्राचीन नहरों के चिन्ह अब तक यहां मिलते हैं।

तृतीयः--मरुस्थलीय सीमा ईराक के पश्चिम में मिलती है। मरुस्थलीय भाग इस उपजाऊ भूमि से लगभग ५० से लेकर १०० फुट तक ऊंचे उठ गये हैं। यही सीमा वास्तव में ईराक को मरुस्थल से अलग करती है। इस क्षेत्र में घिसी हुई

चट्टानें, कंकड़, पत्थर इत्यादि मिलते हैं, परन्तु साथ ही मरुस्थल का रेत भी इसमें सम्मिलित है।

भूगोल वक्ताओं का कथन है, कि प्लिस्टोसीन (Pleistocene) युग के समय फारस की खाड़ी लगभग ४०० मील अन्दर, बगदाद के भी उत्तर तक फैली हुई थी, भूमध्य सागर तथा फारस की खाड़ी के मध्य में कुल ८० मील का अन्तर था। इन विद्वानों का मत है कि इस युग के पहले कदाचित भूमध्य सागर तथा फारस की खाड़ी मिले हुये थे और अरब का पठार उसी प्रकार का एक कठोर चट्टानों का स्थाई 'ब्लोक' था, जिस प्रकार का भारत का प्रायद्वीप। बाद में दजला और फरात नदियों ने इसमें मिट्टी जमा कर दी, साथ ही मरुस्थलों से रेत उड़कर भी इसमें एकत्रित होता रहा, और अन्त में यह सम्बन्ध टूट गया। अब भी इन नदियों का डेल्टा फारस की खाड़ी में १½ मील प्रति शताब्दी की दर से बढ़ रहा है। उत्तर के भागों में हमको चूने की चट्टानें तथा लाल रेतीला पत्थर बहुत मिलता है। साथ में कहीं कहीं पर कौंगलोमिरेल (Conglomerale) भी दृष्टिगोचर होता है। ये पत्थर कुर्दिस्तान पहाड़ियों के ही हैं। मध्य के भाग में इन पत्थरों का चूरा रेत के रूप में मिलता है, और निचले भाग में 'सिल्ट' अथवा बलुई व चिकनी दोमट मिलती है।

नदियाँ और नहरें (Rivers & Canals)

कुर्दिस्तान की पहाड़ियों से दो ही प्रमुख नदियाँ निकलती हैं और वह हैं- दजला और फरात। ये दोनों नदियाँ मेसोपोटामियाँ पर दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हैं। दोनों ही आरमीनियाँ की उच्च भूमि से निकलती हैं, और कुछ दूर समानान्तर बहने के बाद एक दूसरे के निकट आतीं हैं, परन्तु फिर अलग होकर कुरनाह (Kurnab) के निकट परस्पर मिल जाती हैं। इस संगम को 'शतअल अरब' (Shat-el; Aarb) का नाम दिया गया है। यह फारस की खाड़ी से १२० मील से कुछ अधिक दूरी पर है। कुरनाह के कुछ उत्तर में दोनों नदियाँ एक दूसरे के काफी निकट आ जाती हैं। यहीं पर बगदाद स्थित है, जो कि फारस की खाड़ी से ५०० मील दूर है।

दजला नदी (Tigris) लगभग ११५० मील लम्बी है। निकलने के स्थान पर यह दो धाराओं से बनी है। पहली पूर्वी तथा दूसरी पश्चिमी। प्रथम वॉन झील के पश्चिम तथा द्वितीय खरपुत के निकट होकर बहती है। इसके पश्चात् यह नदी दक्षिण की ओर बहती है। मोसुल से बगदाद तक इसमें दो सहायक नदियाँ आकर मिलतीं हैं। पहली बड़ी जैब (Greater Zab) तथा

दूसरी छोटी जेब (Little Zab) ये पश्चिम के तट से आकर मिलतीं हैं। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य भी छोटी छोटी सी सहायक नदियाँ कुर्दिस्तान की पहाड़ियों से आकर मिलतीं हैं। यह नदी नाव चलाने योग्य मोसुल से २० मील दक्षिण तक ही हैं। इसके बाद ३०० मील तक मोसुल से दियारबेर (Diarbekr) तक है। परन्तु एक सबसे बड़ी असुविधा इस नदी में यह है कि, जल का बहाव इस नदी में प्रायः तीव्र रहा करता है। अधिकतर प्राचीन ढंग की नावें 'धोज' (Dhows) इसमें चलती हुई दृष्टिगोचर होतीं हैं। बगदाद पर कुछ आधुनिक नावें भी दीखती हैं। बाढ़ के समय बड़ी कठिनाई होती है, क्योंकि इसे पार करने में तीन या चार दिन लग जाते हैं।

फ़रात नदी १८०० मील लम्बी है, यह भी अपने निकलने के स्थान पर दो धाराओं से बनी है। प्रथम कराऱू या पश्चिमी धारा, द्वितीय-मुराद या पूर्वी धारा। इन दोनों धाराओं के निकलने के स्थानों में १२० मील का अन्तर है। दोनों ही आर्मीनियाँ की पहाड़ियों से निकलतीं हैं। काराऱू धारा अथवा 'काला जल' (Black water) एज़ीरम से २० मील उत्तर-पश्चिम से निकलती है। इसके उपरान्त यह धारा २७० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर किबान-मादन (Keban-Moaden) तक बहती है, यह स्थान खारपुत से कुछ ही मील पश्चिम की ओर है। यहीं पर यह धारा मुराद से मिल जाती हैं। मुराद धारा 'आलादाग', रूस की सीमा पर है। आरमीनियाँ तथा कुर्दिस्तान के मध्य ३०० मील तक यह बहती है। अपने संगम के ६० मील दक्षिण की ओर यह नदी उच्च तौरस को अरबना के निकट चीरती है। इसके पश्चात् दक्षिण की ओर यह अलिपो के विलायत तक आती है और समुद्र से केवल ८० मील से कुछ अधिक दूर रह जाती है, ३६° उत्तरी अक्षांस के दक्षिण में यह थका थका दक्षिण पूर्व की ओर बहती है, और फिर खाड़ी में जा गिरती है। फरात नदी ने कई बार अपना मार्ग बदला है, इसका बहाव दजला की अपेक्षा धीमा है। वर्षा ऋतु के अन्त में इन नदियों में बाढ़ आ जाती है। मई में सबसे अधिक रहती है और जून में समाप्त हो जाती है।

कुरनाह के नीचे सत-अल-अरब एक उपजाऊ मैदान को चीरता है। इस मैदान पर अनेक गाँव तथा सुन्दर लहराते हुये खेत हैं। अपने गिरने के स्थान से ४० मील ऊपर मोहामरा (Mohamra) के स्थान पर और या २० मील बसरा के नीचे दजला और फरात में करून (Karun) नदी ईरान के पठार से आकर मिल जाती है। वास्तव में यहीं से डेल्टा शुरू होता है। वर्ष के छः मास तक यह डेल्टा दलदल का रूप धारण कर लेता है। क्योंकि बसन्त ऋतु में वर्षा का

पिघलना प्रारम्भ हो जाता है, साथ ही वर्षा ऋतु में बहुत सा जल नदियों में होकर बहने लगता है। यह जल यहाँ पर आकर एकत्रित हो जाता है।

प्राचीन नहरों के चिन्ह इस समय भी ईराक में देखने को मिलते हैं। परन्तु ये नहरें सब अस्थायी थीं और जल्दी ही रेत से भर गई थीं। आधुनिक नहरों की योजना सर विलियम विलकाक (William Willcocks) ने बनाई थी, परन्तु नहरों की खुदाई का कार्य सर जॉन जैक्शन लिमिटेड (Sir John Jackson-Ltd.) ने कराया था। हिन्दिया नामक बांध उस शाखा (नहर) पर बनाया गया था, जोकि फरात नदी से निकाली गई थी। बाँध के बन जाने पर फरात नदी का जल इसमें भी दिया जाने लगा। इस प्रकार से नदी में जो ग्रीष्म ऋतु में जल की सतह रहती थी वह ऊँची हो गई। जल प्राचीन हिला (Hilla) नामक नहर में भी भेजा जाने लगा, इस नहर को अब स्थाई कर दिया गया है। एक शाखा हब्बानियाँ नाम की बनाई गई जिससे फरात नदी की बाढ़ का जल एक प्राकृतिक गड्ढे में पहुंचा दिया जाय। ये सब होते हुए भी इराक के पास उत्तम नहरों की अब भी कमी है। दियाला, हिन्दिया तथा अमारा क्षेत्रों को उपजाऊ बनाने के हेतु एक योजना ३०० लाख पौंड की १६१६ में मिश्र की 'पब्लिक वर्क्स मिनिस्ट्री' ने बनाई परन्तु पचास वर्ष के अन्दर किश्तों पर उधार चुका देने की सुविधा पर भी यह सफल नहीं हुई।

जलवायु (Climate)—

ईराक की जलवायु महाद्वीपी है। यहां पर ग्रीष्म ऋतु में बहुत सख्त गर्मी तथा शीत ऋतु में कड़ी सर्दी पड़ती है।। महाद्वीपी वातावरण होने का प्राकृतिक कारण यह है, कि यह छोटा सा भाग चारों ओर से मरुस्थलीय, पठारी व पर्वतीय क्षेत्रों से घिरा हुआ है। वास्तविकता तो यह है कि यदि इस भाग में ये दो नदियाँ न होती तो यह भी रेगिस्तान ही होता। ये दोनों नदियाँ इस देश के लिए उसी प्रकार 'उपहार' हैं, जिस प्रकार नीलनदी मिश्र के लिए है। ग्रीष्म ऋतु में बगदाद का औसत तापक्रम अगस्त के माह में ९३° फ० हो जाता है परन्तु कभी कभी १२३° फ० तक पारा चढ़ जाता है, वैसे साधारणतया १००° फ० तो रहता ही है। शीत ऋतु ग्रीष्म ऋतु की अपेक्षा बहुत ठण्डी रहती है। बगदाद का औसत तापक्रम जनवरी के माह में ४९° फ० हो जाता है, जबकि कम से कम १९६° फ० भी अंकित किया जा चुका है। वर्षा यहां पर भूमध्यसागरीय चक्रवातों से होती है। औसत वर्षा यहाँ ७ इंच हो जाती है। वर्षा कम होने का कारण यह हो सकता है, कि नम हवायें मरुस्थलीय व पठारी क्षेत्रों को पार करने में कुछ शुष्क हो जाती

हैं, और यहां आने पर इनकी शक्ति बहुत कम रह जाती है। परन्तु हमें आश्चर्य होता है, कि इतनी कठोर जलवायु होते हुए भी किसी समय यहाँ पर सभ्यता अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुकी थी। नहरों के चिन्हों से प्रतीत होता है, कि उस समय भी यहाँ की जलवायु शुष्क थी।

मानव रूप (Human Aspect)

ऐतिहासिक आधार:—(Historical background)

ईराक, ईसा से छै: हजार वर्ष पूर्व प्राचीन सभ्यताओं का एक महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। इन सभ्यताओं में सुमेरियन (Sumerian) काल्डियन (Chaldean) तथा एसीरियन (Assyrian) बहुत प्रसिद्ध हैं। सातवीं शताब्दी (ए० डी०) में अरबों ने इस देश को जीत लिया। सन् ७५० में साम्राज्य अब्बासिद (Abbasid) वंश ने बगदाद को अपनी राजधानी बनाकर यहां ५०० वर्ष तक राज्य किया। इस राजधानी पर १२५८ में मंगोल जाति के लोगों ने आक्रमण कर दिया। सन् १६३८ में यह देश ओटोमन साम्राज्य (Ottoman-Empire) का एक खण्ड हो गया। यह साम्राज्य प्रथम महायुद्ध के आरम्भ तक रहा। जैसे ही यहाँ पर विद्रोह आरम्भ हुए, ब्रिटिश सेनायें तुरन्त घुस पड़ीं, परन्तु इन लोगों ने देश को स्वतन्त्र करने का वायदा पूरा नहीं किया। इतना ही नहीं बल्कि युद्ध पश्चात् सैन रीमो कांफ्रेन्स (San Remo Conference १९२०) में यह निश्चय हो गया कि इस देश पर ब्रिटिश लोगों का अधिकार रहेगा, यद्यपि यहां के निवासियों ने इस प्रस्ताव की अवहेलना की। ब्रिटिश लोगों ने अमीर फीज़ल इब्नहुसेन (Amir Feisal Ibn Husain) जिनको कि १९२० में फ्रेंच लोगों ने सीरिया से निकाल दिया था, को आमन्त्रित किया उनसे कहा गया कि आप इराक की गद्दी स्वीकार कर लें, फलस्वरूप २३ अगस्त १९२१ को उन्होंने राजगद्दी को स्वीकार कर लिया। लगभग नौ वर्ष बाद इन दो पार्टियों में एक ऐसा समझौता हुआ, जिसके अन्तर्गत विदेशी नीति, हवाई जहाजों के अड्डों पर उतरने का अधिकार तथा युद्ध के समय सहायता इत्यादि के मामले निश्चय किये गये। अक्टूबर १९३२ को इराक को 'लीग आफ नेशन्स' (League of nations) में शामिल होने की आज्ञा दे दी गई। कुछ ही समय पश्चात् यहां के लोगों ने यहाँ के समझौते के अन्तर्गत विरोध प्रकट किया। कमालिस्ट प्रकार (Kemalist-Type) के शासन के स्थापना करनेवाले लोगों ने १९३६ में एक ऐसी सैनिक योजना बनाई जिसमें कि अनेक बातें तथा नियम थे, परन्तु ये सब अस्पष्ट वस्तुयें थीं। द्वितीय महायुद्ध के पूर्व यहां के लोगों में राष्ट्रीय भावना जाग्रत हो चुकी थी, जो इस ब्रिटिश

राज्य के विरुद्ध अपनी भावनायें प्रकट करने लगे, यहां तक कि अप्रैल १६४१ में रशीदअली ने अपने साथियों सहित विद्रोह कर दिया, यद्यपि किसी भी प्रकार इस विद्रोह को सफलता प्राप्त न होसकी। रशीद अली के परास्त होने के पश्चात् ईराक की राजनीति में जर्मन तत्व आगया। और यह राजनीति बहुत कुछ क्षीण पड़ गई। ईराक इन शक्तियों की हलचल का केन्द्र हो गया।

जनसंख्या वितरण (Population Distribution)

ईसा से तीन हजार वर्ष पहले यह देश सुमेरिन (Sumerians) लोगों का निवास स्थान था, इसके बाद सेमाइट (Semites) का और फिर कैसाइट (Kassites) लोगों का निवास स्थान रहा। यहाँ की जनसंख्या सन् १६५० में ५,१००,००० थी, परन्तु अक्टूबर १६५४ के "आँकड़ों के अन्तर्गत यहाँ की जनसंख्या ४,८८२,००० घोषित की गई है, इसमें से ¾ अरब के निवासी हैं तथा शेष कुर्द जाति के लोग हैं। यहाँ की जनसंख्या में अन्य जाति के लोग भी पाये जाते हैं। उदाहरणार्थ, ईरान के निवासी, तुर्कोमन, ज्यूज तथा भारतवर्ष के लोग यहाँ आकर गत वर्षों में बस गए हैं। इस देश में सिया व सुन्नी जाति के मुसलमानों की अधिकता है। अरबों की संख्या कुल जनसंख्या की ६० प्रतिशत है। सीरिया के ईसाई लोग मौसुल नगर में पाये जाते हैं। बगदाद नगर जिसकी जनसंख्या १६४७ में ४५०००० थी, एक बहुत ही प्राचीन नगर है। इस नगर की स्थापना आठवीं शताब्दी में हुई थी, पांच शताब्दियों तक यह यवनों की राजधानी रहा, अब भी सुन्नी गोत्र के मुसलमानों का यह एक पवित्र स्थान है। यह क्षेत्र दजला नदी के दोनों तटों पर स्थित है। नया बगदाद नदी के पूर्वी तट पर तथा प्राचीन पश्चिमी तटपर स्थित हैं। नये बगदाद में कुछ पश्चिमी देशों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। परन्तु पुराना अब भी उसी प्रकार का है, जिस प्रकार का पहले था। यह नगर कई वर्षों तक उन कारवों का मार्ग रहा है, जो कि सीरिया या अरब से उधर व्यापार के लिए आते जाते रहते थे। बसरा, यहाँ का एक दूसरा महत्वपूर्ण नगर है। यह संगम से लगभग ६० मील उत्तर में स्थित है। खजूर के व्यापार के लिए यह विश्व-प्रसिद्ध है। यहाँ की जलवायु मानव स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से बड़ी हानिकारक है। निकटवर्तीय क्षेत्र में दलदल पाये जाते हैं, इसलिए और भी अधिक यहाँ की जलवायु खराब है। अन्य नगरों में मौसुल एक तृतीय श्रेणी का नगर है। यह भी एक अति प्राचीन नगर है। हिला, की महत्ता केवल इसलिए अधिक है, कि यह 'बेबीलोनिया के खँडहरों' के निकट स्थित है। कर्बला, नज़ाफ, कुरनाह, अमारा तथा कुत-अल-इमारा कुछ अन्य उल्लेखनीय नगर हैं।

आर्थिक रूप (Economic Aspect)

प्राकृतिक वनस्पति (Natural Vegetation):—

ईराक एक शुष्क देश है, इसलिये यहाँ की प्राकृतिक वनस्पति उसी प्रकार की है जिस प्रकार की शुष्क प्रदेशों में पायी जाती है। बड़े बड़े वृक्ष तो यहाँ बहुत कम मिलते हैं, और जो कुछ भी मिलते हैं वे नदियों के किनारे या उन उच्च स्थानों पर जहाँ वर्षा अधिक होती है। भूमध्य सागरीय हवाओं से जहां बूंदा बांदी हो जाती है, वहाँ केवल अस्थाई घास के मैदान दृष्टिगोचर होते हैं। अन्य स्थानों पर दूर दूर तक रेत ही रेत दिखलाई पड़ता है, इसमें कहीं कहीं पर काँटे दार झाड़ियाँ या बेरियां उगती दीखती हैं।

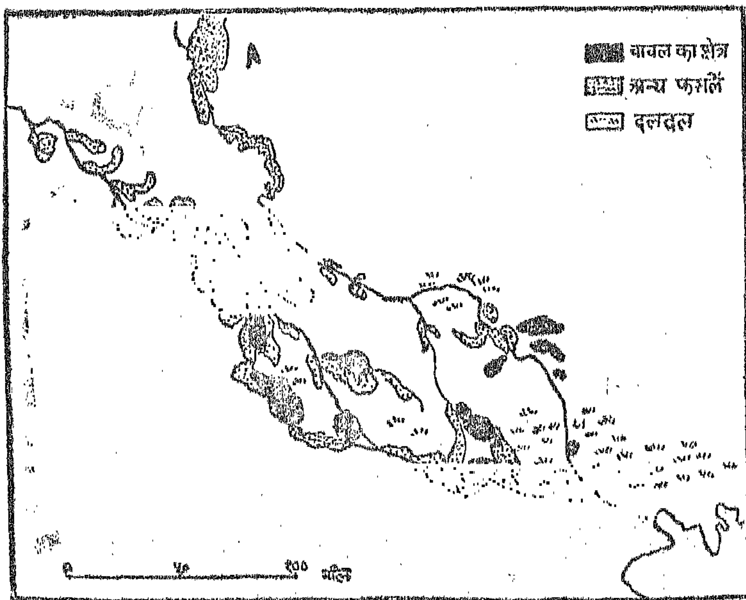
उत्तरी ईराक में कुर्दिस्तान की उच्च पहाड़ियाँ वन-सम्पत्ति से ढकी हुई हैं। इनमें विभिन्न प्रकार के वृक्ष पाए जाते हैं, उदाहरणार्थ—ओक, पाइन, वालनट तथा पाइन निचले ढालों पर तथा उत्तर मेसोपोटामिया में कुछ फलों के वृक्ष भी मिलते हैं, जैसे नीबू, नारंगी, संतरे, अंजीर, अंगूर इत्यादि। निम्न मेसोपोटामिया के भाग में प्राकृतिक वनस्पति उष्ण कटिबन्धीय मिलती है। खजूर यहां पर बहुत अधिक उगता है। शत-अल-अरब कुछ विशेष प्रकार के खजूर के लिए विश्व प्रसिद्ध है। मरुस्थलीय सीमा पर काँटेदार झाड़ियों के अतिरिक्त कहीं कहीं पर खजूर उगता दृष्टिगोचर होता है।

कृषि (Agriculture)

ईराक के निवासियों का प्रमुख उद्योग कृषि करना है, यहाँ के ८० प्रतिशत लोग कृषि पर ही अपना जीवन निर्वाह करते हैं। शुष्क वातावरण होने के नाते ६० प्रतिशत जनसंख्या जलाशयों के निकट ही रहती है। परन्तु उन भागों में जहाँ पर्याप्त वर्षा हो जाती है, वहाँ भी लोग रहते हैं। इस देश की मिट्टी बहुत ही उपजाऊ है क्योंकि मरुस्थलीय मिट्टी में अनेक खनिज पदार्थ होते हैं, जिन स्थानों पर थोड़ा सा भी जल मिल जाता है, विभिन्न प्रकार की वनस्पति उग आती है। इस देश में जिस भाग के लोग कुओं के जल पर निर्भर रहते हैं, उन्हें चार या पांच वर्ष में [illegible] अवश्य प्राप्त होती है। सिंचाई के साधनों में निम्नांकित [illegible] परन्तु इनकी भी कड़ी निगरानी करनी पड़ती है। जहाँ कहीं [illegible] नहीं आ पाती, वहाँ कृषि वाले क्षेत्रों को मजबूरी हालत में छोड़ देना पड़ता है। [illegible] प्राचीन नगर [illegible] छोड़ दी गई हैं, प्रत्यक्ष रूप से यह बतलाती हैं, कि [illegible] नहीं रही। जब नदी में कटाव अधिक होता [illegible] आती हो या नदी स्वयं ही

अपना मार्ग परिवर्तित कर देती हो तो ऐसी दशा में नहर को छोड़ ही देना पड़ता है। जैसा कि हम ऊपर बतला चुके हैं, आजकल नहरों को सुधार कर नदियों पर बाँध बनाये गये हैं और उन्हें स्थाई रूप देने की चेष्टा की गई है। वर्तमान समय में सिंचाई करने योग्य ६०००००० एकड़ भूमि में से केवल १०००००० एकड़ भूमि को ही जल दिया जाता है।

कृषि करने के साधन इस देश में बहुत प्राचीन हैं। आधुनिक साधनों को अपनाने में यह देश बहुत पिछड़ा हुआ है। केवल कुछ ही इने गिने क्षेत्रों में

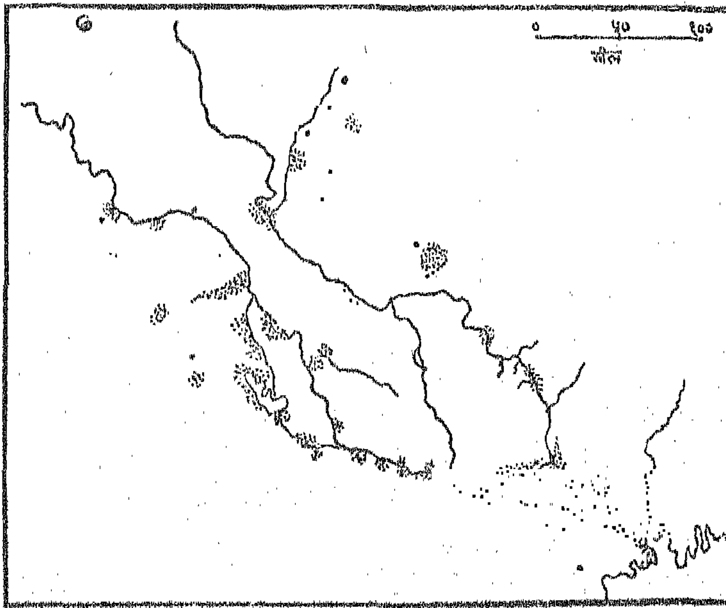


ईराक

ट्रैक्टर दृष्टिगोचर होते हैं, शेष भागों में वही प्राचीन ढंग के औजारों से लोग कृषि करते हुए दिखलाई पड़ते हैं। प्रतिवर्ष यहाँ दो फसलें कटती हैं, पहली शीत ऋतु की फसल जिसमें गेहूं, जौ, बीन इत्यादि हैं। यह फसल अप्रैल या मई के माह में कट जाती है। दूसरी ग्रीष्म ऋतु की फसल, जिसमें चावल, मक्का इत्यादि सम्मिलित हैं। यह अगस्त और नवम्बर के माह में काट ली जाती है।

खजूर यहाँ की सर्व प्रधान उपज है। विश्व की ८०प्रतिशत खजूर यहीं उत्पन्न होती है। अनुमान लगाया गया है, कि यहाँ पर तीन करोड़ वृक्षों से अधिक हैं। खजूर उत्पन्न करने वाले प्रमुख क्षेत्र दक्षिणी ईराक में हैं, दजला व फरात नदियों के

दोनों किनारों पर दूर दूर तक खजूर के घने वृक्ष दृष्टिगोचर होते हैं। शत-अल-अरब में बहुत ही उत्तम खजूर उत्पन्न होता है। यहां पर बसरा एक और खजूर का क्षेत्र है, इस स्थान पर सौ मील लम्बा तथा एक या दो मील चौड़ा नखलिस्तान है, जिस पर खजूर ही खजूर उत्पन्न होता है। यह उपज इस देश से विदेशों को निर्यात की जाती है। अनुमान लगाया गया है, कि विश्व का तीन-चौथाई खजूर इसी देश से प्राप्त किया जाता है। यहाँ के निवासियों के लिये इस उपज का आर्थिक महत्व बहुत ही अधिक है। जिस प्रकार कि नारियल के वृक्ष का एक एक अंश उपयोगी होता है, ठीक उसी प्रकार खजूर का भी प्रत्येक अंश महत्वपूर्ण होता है। यह यहाँ के अरब निवासियों का मुख्य भोजन है, इसको खाने के कई ढंग हैं। पुराने



ईराक

रखे हुए खजूर से 'शीरा' तथा शराब (अरक) तैयार की जाती है। इसके बीज पशुओं को खाने के लिये दे दिए जाते हैं। खजूर की कली बादाम के प्रकार की बड़ी स्वादिष्ट होती है, यह मेहमानों के नाश्ते के लिये भी तैयार कर ली जाती है। इसकी पत्तियाँ चटाई व पंखे बनाने के काम में आती हैं, परन्तु दक्षिणी ईराक में कुछ जनसंख्या खजूर के पत्तों के बुने हुए मकानों में भी रहती है। तने से जो रेशा प्राप्त

होता है, वह रस्सियां व डोरियां बनाने के काम में लाया जाता है, तना स्वयं छोटे छोटे पुल बनाने या अन्य काष्ठ–कला की वस्तुयें तैयार करने में उपयोगी सिद्ध होता है।

गेहूं मेसोपोटामियां के उच्च भाग में उत्पन्न होता है। गत वर्षों से इसकी उपज में बहुत उन्नति हुई है। इसका उत्पादन दिन प्रति दिन बढ़ ही रहा है, क्योंकि यह यहां के उन लोगों का मुख्य भोजन है, जोकि उच्च ईराक में रहते हैं। गेहूं यहां पर 'ड्राई फार्मिंग' (Dry Farming) ढंग से उत्पन्न किया जाता है। यहां पर गेहूं की प्रकार सख्त है और यह लाल रंग का होता है। अभी तक यह निर्यात के दृष्टिकोण से उत्पन्न नहीं किया जाता था, बल्कि घरेलू मांग की पूर्ति के लिये गेहूं की खेती करते थे। परन्तु अब यह चेष्टा की जा रही है कि इसका निर्यात आरम्भ कर दिया जाय।

एक समय था, जब कि चावल यहां पर द्वितीय श्रेणी की उपज थी परन्तु अब यहाँ पर बहुत अधिक उत्पन्न किया जाता है। धान की प्रकार तो यहाँ कोई विशेष उत्तम नहीं है, परन्तु उपज बहुत अधिक है। इसके क्षेत्र अधिकतर निम्न ईराक में है। यह दलदली भागों में, नदियों की शाखाओं के किनारों तथा कुछ ढालू भूमि पर बोया जाता है। निम्न ईराक का वातावरण इसके लिए बहुत ही उपयुक्त है। चावल यहाँ से निर्यात भी किया जाता है।

जौ यहाँ पर उच्च ईराक में उस क्षेत्र में उत्पन्न होता है जिसमें कि गेहूं। इसके लिए अधिक जल की आवश्यकता नहीं होती। शीत ऋतु की वर्षा में उत्पन्न किया जाता है, छोटी सी ऋतु में यह पक कर तैयार हो जाता है। कौर्न, दक्षिणी ईराक के उन्हीं क्षेत्रों में उत्पन्न होता है, जिनमें कि चावल। इसकी भी उपज यहाँ घरेलू मांग को देखते हुये बहुत काफी है। इन्हीं भागों में मक्का, ज्वार-बाजरा तथा 'लसेम' भी उत्पन्न होता है।

तम्बाकू की उपज के लिए ईराक बहुत प्रसिद्ध है, उत्तरी मेसोपोटामियां की यह एक प्रमुख उपज है। परन्तु यह उतनी ही मात्रा में उत्पन्न की जाती है जितनी, कि घरेलू मांग है। इसका घरेलू उपभोग भी बहुत अधिक है।

इस देश में कपास भी उत्पन्न की जाती है। इसकी उपज के लिये १००००७० एकड़ भूमि यहाँ आसानी से प्राप्त की जा सकती है। कपास का भविष्य इस देश में बहुत उज्वल है। इसकी प्रकार यहाँ बड़ी उत्तम है, यहाँ पर मिश्र से भी उच्च श्रेणी की कपास उत्पन्न हो सकती है। जर्मनी के निवासी इसकी उपज में काफी दिलचस्पी रखते थे, परन्तु अब गत वर्षों से इसकी उपज कुछ कम हो गई है।

इन उपजों के अतिरिक्त यहां अफीम, चरस, भांग, गाँजा इत्यादि भी उत्पन्न की जाती हैं। उत्तरी पहाड़ी भाग में भूमध्य सागरीय फल उत्पन्न होते हैं। ईराक के उच्च भाग में नीबू, नारंगी तथा शहतूत पैदा होते हैं। कुछ फल यहाँ से निर्यात भी किये जाते हैं।

पशु पालन (Cattle Rearing)

यहाँ के अरब निवासियों का प्रमुख धन्धा पशु पालन भी रहा है, बहुत से लोग अब भी बंजारे हैं, और अपने पशुओं सहित इधर उधर घूमते फिरते दृष्टिगोचर होते हैं। कुछ अरब के लोग ऐसे भी हैं, जो पूर्ण बंजारे नहीं हैं। ये लोग अपने साथ ऊँट, घोड़े, गदहे, भेंड़, बकरे रखते हैं। जो बंजारे अब एक निश्चित स्थान पर स्थापित हो गये हैं, वे अपने साथ बहुत सी भेंड़, बकरे रखते हैं। भेंड़ बकरे चराने के क्षेत्र दो ही उल्लेखनीय हैं, प्रथम दक्षिण-पश्चिम मरुस्थलीय सीमा तथा द्वितीय उच्च ईराक। कुर्दिस्तान की पहाड़ियों पर भी लोग अपने साथ भेंड़-बकरे रखते हैं। यहां पर प्रसिद्ध अंगोरा नाम की भेंड़ मिलती है, जो कि कदाचित एशिया माइनर के पठार से यहां लाई गई है।

यही कारण है, कि यहां पर पशुओं की संख्या इस प्रकार है:—

पशु (गाय बैल)	७११,६१८
भैंसें	४,४८४,१५६
बकरे	१,६१८,१४५
घोड़े	१३७,४४६
गदहे	३६८,७६८
खच्चर	५६,६७३
ऊँट	३७,६६६

इन भेंड़ बकरों से बहुत अधिक ऊन प्राप्त किया जाता है। ईराक अपने ऊन के लिये संसार में एक उच्च स्थान प्राप्त करता है। उन भागों में जहां केवल दस इन्च वर्षा होती है, केवल एक यही महत्वपूर्ण आर्थिक वस्तु प्राप्त की जाती है। इन पशुओं से कुछ अन्य वस्तुयें भी मिलती हैं, जैसे-खाल, चमड़ा, माँस तथा हड्डी। ये वस्तुयें खाने के अतिरिक्त उद्योगों के काम की भी हैं। खाल व चमड़े के जूते, बेग, बेल्ट तथा अन्य उपयोगी वस्तुयें तैयार की जाती हैं।

खनिज सम्पत्ति (Mineral Wealth)

ईराक में पेट्रोलियम के अतिरिक्त अन्य कोई भी प्रमुख खनिज पदार्थ नहीं पाया जाता। गत तीस वर्षों से यहाँ विदेशी लोगों ने इस तेल निकालने के

उद्योग को प्रोत्साहन दिया है। तेल निकालने की सुविधायें ब्रिटिश, अमरीकन फ्रेंच तथा अन्य कम्पनियों को प्रदान की गई हैं। इस खनिज की वास्तविक उन्नति १६२७ से आरम्भ हुई थी। यह धन एक ऐसा धन है, जिसने कि ईराक के निवासियों के जीवन में परिवर्तन कर दिया है। सरकार को इन तेल की कम्पनियों से प्रतिवर्ष बहुत लाभ होता है। सन् १६५० में सरकार ने एक डेवलपमेंट बोर्ड (Development Board) की स्थापना की थी, इस बोर्ड के अन्तर्गत यहाँ पर इस उद्योग की प्रगति हुई। ईराक की राष्ट्रीय आय का ७० प्रतिशत भाग तेल से ही प्राप्त होता है। तेल के विषय में यहाँ शताब्दियों पहले लोगों को ज्ञान था, क्योंकि ईसाइयों की 'बाइबिल' में भी इसका वर्णन मिलता है। पेट्रोलियम निकालने के क्षेत्र में किरकुक (Kirkuk) बाबा गागुर (Baba Gagur) तथा नाफ्त-खिनेह (Noft Kheneh) बहुत प्रसिद्ध हैं। मोसुल के निकट प्राचीन निनेवाह (Ninaveh) के खंडहरों के क्षेत्र में भी तेल निकाला जाता है। सन् १६४८ में इसकी उत्पत्ति २६,४६६,००० बैरेल थी। वास्तव में यदि देखा जाय तो १६५२ में कुल पश्चिमी एशिया के उत्पादन (१०२.३३ मिलियन) में से १८.४५ मिलियन ईराक ने प्राप्त किया। जो समझौता ३ फरवरी १६५२ में हुआ था, उसके अन्तर्गत यहाँ की सरकार को २०,६००,००० प्रतिवर्ष 'रायल्टी' मिलना निश्चय हो गया था। पेट्रोलियम के निर्यात के हेतु यहाँ बहुत लम्बी २ पाइप लाइनें बना दी गई हैं। (सन् १६४५ में पेट्रोलियम का उत्पादन ४० लाख टन था और पाइप लाइनों की कुल लम्बाई ११५० मील थी) पाइप लाइन द्वारा तेल निकालने के क्षेत्रों को भूमध्य सागर तट से मिला दिया गया है। प्रतिवर्ष इन पाइप लाइनों द्वारा ६२० मील की दूरी पर हैफा को और ५४० मील दूर ट्रिपोली को ४० लाख टन से अधिक कच्चा तेल ले जाया जाता है। हैफा और ट्रिपोली में इस तेल को टैंकर जहाजों में लाद दिया जाता है, और समुद्री मार्गों द्वारा विदेशों को भेज दिया जाता है।

खनिज तेल का उत्पादन

सन्	मेट्रिक टन
१६४६	४,०६६,.८२
१६५०	६,४५७,०००
१६५१	८,३४६,०००
१६५२	१८,८५१,०००
१६५३	२७,७१५,७३०
१६५४	३०,१४५,०५१

सन् १९५४ में कुल रायल्टीज

सन् १९५५ में खनिज तेल की कुल रायल्टीज आई० डी० ५७,२०३,००० थी, इसमें से आई० डी० ४०,०४२,००० डेवलपमेंट बोर्ड को तथा आई० डी० १७, १६२,००० खजाने को दी गई।

यातायात के साधन (Means of Transport & Communication)

इस देश में यातायात के साधनों में कोई विशेष उन्नति नहीं हुई है। अधिकतर व्यापार नदियों द्वारा ही होता है, इसका कुछ वर्णन हम ऊपर ही कर चुके हैं। रेलें यहां पर केवल बड़े बड़े नगरों को ही मिलाती हैं। प्रमुख रेलवे लाइन वह है जो कि किरकुक से आरम्भ होती है और बगदाद तक जाती है, इसके बाद हिला होती हुई बसरा तक चली जाती है। इस लाइन की एक शाखा खानाकिन, जो कि ईरान की सीमा पर स्थित है तक गई है, दूसरी शाखा बगदाद के दक्षिण में करबला तक। बगदाद से मोसुल तक कोई भी रेलवे मार्ग नहीं है, लेकिन शीघ्र ही बगदाद सलारा होता हुआ मोसुल से मिला दिया जायगा।

पक्की सड़कें भी यहाँ पाई जाती हैं, परन्तु ये केवल बड़े बड़े नगरों को ही मिलाती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में कच्ची सड़क ही मिलती हैं। कारवाँ मार्ग मरुस्थलीय क्षेत्रों को मिलाते हैं। यह मार्ग निम्न ईराक में ही अधिक पाये जाते हैं।

सन् १९५३ में यहाँ पर ८३३५ कारें, ७५२९ लारियाँ ८५९१ बसें तथा टेक्सियाँ और ४०६७ मोटर साइकिलें थीं।

हवाई मार्ग में बगदाद की स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है। हवाई मार्ग एक तरफ तो योरप के प्रसिद्ध नगरों तथा दूसरी तरफ भारतवर्ष व आस्ट्रेलिया के प्रसिद्ध नगरों को मिलाते हैं। 'इम्पीरियल एअरवेज' के जहाज योरप से आस्ट्रेलिया को यहीं से होकर जाते हैं। यहाँ से वर्तमान समय में वायुयान भारत को, तथा अन्य देशों की राजधानियों को भी जाने लगे हैं। वायुयानों द्वारा डाक बी० ओ० ए० सी०, एयर फ्रांस, के० एल० एम०, टी० डब्लू० ए० तथा पी० ए० ए० द्वारा योरोपीयन देशों एवं अमेरिका व कनाडा को भेजी जाती है।

सन् १९५३ में यहाँ के बन्दरगाहों पर ७८५ व्यापारिक पोत थे।

विदेशी व्यापार (Foreign Trade)

ईराक विदेशों से कपड़ा तथा तैयार किया हुआ माल आयात करता है। तेल के अतिरिक्त जो वस्तुएँ आजकल यहाँ से विदेशों को निर्यात की जाती हैं, उनमें जौ, खजूर, तम्बाकू, ऊन तथा तिलहन हैं। सन् १९[illegible]२ में इस देश से वस्तुओं का निर्यात

२८८,०००,००० डालर मूल्य का तथा आयात १५३,०००,००० डालर मूल्य का किया। विदेशी व्यापार के दृष्टिकोण से इस देश का भविष्य बहुत उज्ज्वल है।

ईराक के आयात व निर्यात व्यापार का मूल्य (१००० दिनार्स में) व मात्रा सन् १९५२ में:—

आयात			निर्यात		
	मात्रा	मूल्य		मात्रा	मूल्य
सूती वस्त्र	३७,६०२	४०६५	गल्ला, दालें और		
चीनी (टन)	१०१२६४	५१२८	आटा	५३१५४७	६७४३
लोहा, स्पात (टनमें)	१५५२४६	११८१२	खजूर	२५१६७१	४२२८
मशीनें		१०१३६	ऊन	५१३८	१०४२
चाय (टन)	१२२३५	४८०४	कपास	१७३२	४०६
विद्युत मशीनें		३३२०			
मोटरें		४८२५			
कृत्रिम रेशम	३८०८६	३६६६			
वस्त्र		१२७४			
ऊनी वस्त्र	१२०८	७७७			
रसायन	५१८०	१५५५			
साबुन	३४५६	५०६			
कागज	६२६०	८४३			
लकड़ी		१२११			

राजनैतिक दशा (Political Aspect)

विदेशी सम्पर्क (Foreign Relations)

जब द्वितीय महायुद्ध समाप्त हो गया, तब ग्रेट ब्रिटेन के सुलह-सम्बन्ध की ओर ईराक के लोगों की राजनैतिक दृष्टि पड़ी। ग्रेट ब्रिटेन और ईराक के मध्य एक समझौते पर हस्ताक्षर हुए, ईराक की ओर से वहाँ के प्रधान मन्त्री सलेह जब्र (Saleh Jabr) ने जनवरी १९४८ को पोर्ट माउथ में हस्ताक्षर किए थे। परन्तु ईराकी सरकार ने इस समझौते को तुरन्त ही रद्द कर दिया, क्योंकि जनता इसके विरुद्ध थी।

ईराक ने ग्रेट ब्रिटेन के अलावा अन्य पश्चिमी एशिया के देशों से भी अपना सम्बन्ध बढ़ाया। जुलाई १६३७ का सादाबाद पेक्ट (Saadabad Pact) जिसके अन्तर्गत टर्की, ईरान, अफगानिस्तान तथा ईराक जैसे सभी देशों ने सहयोग दिया। अरबलीग पेक्ट (Arab League Pact) जो १६४५ में हुआ, सन् १६४६ ट्रीटी आफ अलिग्राँस (Treaty of Alliance) जो कि जोर्डन के साथ हुई थी, तथा ट्रीटी आफ फ्रेंडसिप (Treaty of Friendship) जो कि टर्की के साथ १६४७ में हुई, ये सब सुलह इस सम्बन्ध के कुछ उदाहरण हैं। ईराक का दृढ़ विचार जो कि फरवरी में टर्की के साथ सेना समझौते का होने को था, मिश्र के विरोध के कारण सफल नहीं हो सका। ईराक के प्रयत्न-अपने देश, जोर्डन, सीरिया तथा लिबेनन को एक ही उपजाऊ पेटी में रखने के थे; मिश्र, सऊदी अरेबिया, सीरिया तथा लिबेनन के विरोध के कारण असफल रहे। फिलिस्तीन के झगड़े में ईराक ने अरब को सहायता दी और अपनी सेना का एक दस्ता वहाँ लड़ने के लिए भेजा, साथ ही हैफा पाइप लाइन को भी काट दिया था।

सम्वैधानिक रूप रेखा (Constitutional Framework)

ईराक एक सम्वैधानिक एकतंत्र राज्य है। यहाँ का वर्तमान राजा फैजल द्वितीय है, इस राजा के पास सर्वाधिकार होते हैं। परन्तु ये पार्लियामेंट के अन्तर्गत ही कार्य क्षेत्र में परिवर्तित किये जाते हैं। पार्लियामेंट में दो घर हैं, पहला सीनेट, इसमें जिन सदस्यों को राजा चुनता है, वही रखे जाते हैं, और दूसरा 'चैम्बर आफ डिप्टीज' इसमें चुने हुए मेंम्बर रखे जाते हैं। यहाँ की राजनैतिक पार्टियों में से नूरी सईद की 'कॉस्टीट्यूशनल यूनियन पार्टी' सलेह जब्र युमा की 'सोशलिस्ट पार्टी' तथा कमाल चादिरजीज की 'नेशनल डिमोक्रेटिक पार्टी' उल्लेखनीय है। यहाँ के नेता लोग यहाँ की राजनैतिक पार्टियों पर बहुत कुछ अपना प्रभाव डालते हैं।

सांस्कृतिक रूप (Cultural Aspect)

जातियाँ (Races)

यद्यपि यह देश अति प्राचीन सभ्यताओं का केन्द्र रहा है, परन्तु फिर भी यहाँ पर अधिकतर बंजारे लोगों की ही जनसंख्या है। यहाँ की जनसंख्या में मुख्यतः चार ही जाति के लोग दृष्टिगोचर होते हैं। पहले—ईरानियन जाति के जिनमें से कुर्द लोग हैं, दूसरे सेमिटिक, यह लोग उत्तर में हैं, और [illegible] या '[illegible]' कहलाते हैं, अरब के बद्दू भी इसी में शामिल हैं। तीसरे—टर्की इस

जाति में तातार जातियां शामिल हैं, कुछ नागरिकों में भी इस जाति का अंश मिलता है। चौथी—काकेसियन, इस जाति की दो शाखायें हैं, प्रथम लजीज़ जो उत्तर में है, द्वितीय, सिरकेसियन्स जो कि कुछ ही वर्ष पहले रूस से तुर्किस सीमा में पहुँचे थे।

ऐसा प्रतीत होता है, कि कुर्द लोग आर्य लोगों के पूर्वज हैं, यह लोग दक्षिणी काकेशस से आरमीनियाँ, लजिस्तान तथा कुर्दिस्तान में स्थापित हो गये। इन लोगों की भाषा आर्यन है, परन्तु कुछ ईरानियन अंश भी इसमें पाया जाता है। उच्च मेसोपोटामियाँ में अरब व कुर्दिस्तान के लोगों का मिश्रण पाया जाता है। कुछ दक्षिण की ओर नगरों में रहने वाले लोग यहूदी जाति के हैं, इनमें से पोर्ट (Porte) जिनके विषय में कहा जाता है, कि यहाँ के वास्तविक निवासी हैं, बहुत ही गिरे हुये चरित्र के हैं। यहाँ पर केवल पचास वर्ष का ही इतिहास प्रमाणित करता है, कि लोगों में यहाँ पर बराबर भूमि के लिये संघर्ष होते रहे हैं।

नेस्टोरिअंश लोगों के विषय में कहा जाता है कि यह लोग हकियारी (Hakhiari) के नेस्टोनियन नामक जिले के हैं, यह क्षेत्र ग्रेटर जेब के निचले भाग में है। यह क्षेत्र जिबेल जूदी से लेकर ईरान की सीमा तक विस्तृत है और जेब व दजला के मध्य आता है। यह लोग ईरान के उत्तर-पश्चिम में उर्मिया झील के निकट भी मिलते हैं। इन लोगों के विषय में कहा जा सकता है, कि ये ईसाई गोत्र के शक्तिशाली अन्तिम पूर्वज थे, जिन्होंने कि इस धर्म का प्रचार भूमध्य सागर से लेकर पश्चिमी चीन तक किया था।

तातार जाति के लोगों के लिये कहा जाता है, कि ये टर्की से यहाँ आये हैं। यही विचार धारा काकेशियन जाति के विषय में भी है।

संस्कृति (Culture):—

यदि देखा जाय तो ईराक एक ऐसा देश है, जो 'मानव जाति का जन्म स्थल' रहा है। यहां की सभ्यता बहुत ही प्राचीन है। यहाँ पर केवल दो ही प्रमुख सभ्यता के केन्द्र रहे हैं, प्रथम—उत्तर में एसीरिया तथा द्वितीय दक्षिण में बेबीलोनिया। एसीरिया की स्थिति कुर्दिस्तान पहाड़ियों के नीचे बहुत शुष्क वातावरण में थी, और निनेवाह (बेबीलोनिया) ऊपरी दजला पर वर्तमान मोसुल के निकट स्थित था। उस समय यह एक बहुत ही बड़ा कारवाँ-मार्ग का केन्द्र रहा था, जो मार्ग मिश्र और भूमध्य सागर से ईरान अफगानिस्तान तथा रूस को जाते थे, वे यहीं से होकर गुजरते थे। बेबीलोनिया जिसे दूसरे शब्दों में चल्डिया कहा जा सकता है। उर (बेबीलोनिया)

के ही क्षेत्र में था, यहाँ पर एक अद्वितीय 'हैंगिंग गार्डन' है, जो कि उस समय की उच्च सभ्यता का प्रमाण देता है। इसमें सन्देह नहीं कि उर किसी समय विश्व का प्रथम नगर रहा हो, यहाँ पर जो खंडहर मिलते हैं, उनसे पता लगता है, कि ईसा से ४००० वर्ष पहले यहाँ इस सभ्यता का विकास हुआ था। एरबिल नगर जो कि कुछ उत्तर में है उसके विषय में कहा जाता है, कि विश्व में यही एक ऐसा नगर है जहाँ हमेशा से मानव स्थापना रही है। यह एक तीन सौ फुट ऊँचे टीले पर स्थित है। अब भी इसमें उस समय के खण्डहर देखने को मिलते हैं।

V

ईरान का पठार

फारस की खाड़ी और मेसोपोटामियां बेसिन के पूर्व में भूमि कुछ ऊँची है। यह उच्च भूमि दजला नदी (टिगिरस) से लेकर सिन्ध नदी तक चली गई है। इसमें ईरान, अफगानिस्तान तथा बिलोचिस्तान के देश सम्मिलित हैं। बिलोचिस्तान का वर्णन हम पाकिस्तान में करेंगे। और अफगानिस्तान का किया ही जा चुका है। इस उच्च भूमि पर अति प्राचीन काल में आर्य जाति की ही एक इरानियन शाखा रहती थी, इसीलिए इसका नाम ईरान का पठार पड़ गया है। इस सम्पूर्ण पठार का क्षेत्रफल लगभग दस लाख वर्गमील है। इसके दक्षिण में अरब सागर उत्तर में अरलो–केस्पियन निम्न भूमि, पूर्व में सिन्ध की घाटी, तथा पश्चिम में फारस की खाड़ी व मेसोपोटामियां के बेसिन पाये जाते हैं। यह चारों ओर पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ है, ये श्रेणियां निम्न भूभागों या जलाशयों के निकट बहुत नीची हो गई है, हां, केवल उत्तर-पश्चिम में ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ यह और भी अधिक ऊँची हो गई है, उदाहरणार्थ--कुर्दिस्तान व आरमीनियां की पहाड़ियाँ। इन पहाड़ियों द्वारा कदाचित यह ईरान का पठार काकेशस पर्वत से भी मिला हुआ है। परन्तु कर (साइरस) तथा रियोन (फेसिस) नदियों की घाटियाँ इस भौतिक सम्बन्ध में कुछ सन्देह उत्पन्न कर देती हैं।

यद्यपि यह पठार आर्य जाति के लोगों का वास्तविक निवास स्थान रहा है। परन्तु फिर भी यहां पर 'ईरान' और 'तूरान के युद्ध क्षेत्र रहे हैं, दो विरुद्ध जातियाँ काकेशिक तथा मंगोलो-तातर वर्षों तक यहाँ लड़ते झगड़ते रहे। सत्रहवीं शताब्दी के ये झगड़े तथा इस्लाम धर्म का प्रचार इतनी तीव्रता से हुआ कि इस पठार के कई राजनैतिक खण्ड हो गये। फारस साम्राज्य की स्थापना इसी समय हुई और साथ ही अफगानिस्तान तथा केलत (बिलोचिस्तान) राज्य की स्थापना भी पूर्व भाग में हो गई।

ईरान

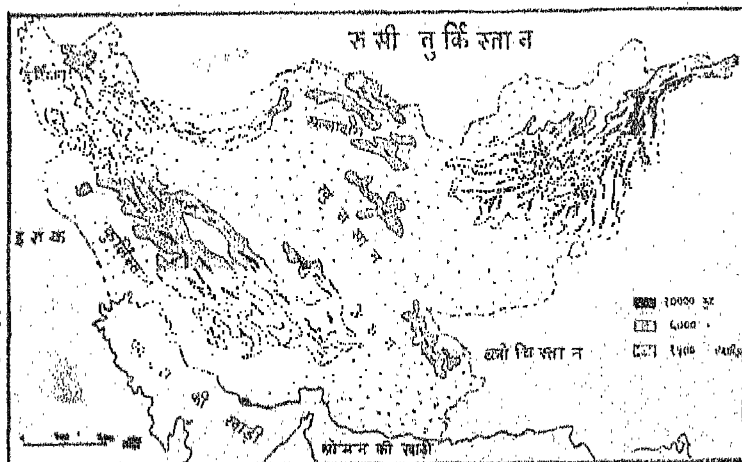
मध्य पूर्वी देशों में ईरान की स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है। इसके उत्तर में कैस्पियन सागर व सोवियत यूनियन, दक्षिण में फारस व ओमन की खाड़ियां, पूर्व में सोवियत यूनियन, अफगानिस्तान व पाकिस्तान तथा पश्चिम में टर्की व ईराक जैसे

प्रसिद्ध देश स्थित हैं। इसका वर्तमान क्षेत्रफल ६२८००० वर्गमील (१,६४०,००० वर्ग कि०) है, अर्थात लगभग उतना ही बड़ा है, जितना कि साउदी अरेबिया। इन्डोनेशिया क्षेत्रफल में इससे कुछ छोटा है। इस देश का विस्तार उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व तक १४०० मील तथा उत्तर से दक्षिण तक ८७५ मील है। सन् १६२५ ई० के पहिले यह राज्य फारस कहलाता था, परन्तु उस समय जब कि शाह की बनाई हुई मजलिस (पार्लियामेंट) पर्याप्त शक्तिशाली हो गई थी एक ऐसा परिवर्तन हुआ कि जिसके अन्तर्गत फारस का शाह और उसका वंश अलग ही कर दिया गया, उसके स्थान पर एक नया ही वंश स्थापित किया गया।

भौतिक रूप (Physical Aspect)

धरातल तथा बनावट:—(Relief and Structure)

ईरान एक ऐसे उच्च पठार का रूप धारण करता है, जिसकी ऊँचाई ३००० से लेकर ५००० फुट है। केवल पूर्वी भाग को छोड़ कर शेष भाग ऊँची ऊँची पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ है। ये पर्वत श्रेणियां केवल कुछ को छोड़कर, उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व तक एक सी चली गई हैं। आन्तरिक क्षेत्र में प्रवेश करने पर इन पर्वतों की लम्बी यात्रा करनी पड़ती है। कुछ स्थानों पर ये पर्वत श्रेणियां बहुत ऊँची हो गई हैं। कदाचित १०० मील तक तो ऐसी श्रेणियां हैं, जिनकी ऊँचाई ८००० से लेकर १०००० फुट है, इनमें से कुछ की शिखायें १६००० व



ईरान के पठार का धरातल

१७००० फुट भी हैं। सबसे विस्तृत तथा ऊँची शिखा कुह-दिनार है, यह फारस प्रांत के पश्चिम में है इसकी ऊँचाई १७००० और १८००० फुट के मध्य है। दामावन्द शिखा जो कि किसी समय ज्वालामुखी पर्वत था १६४२६ फुट है। यह ईरान की सबसे ऊँची शिखा है। कुह-दिनार पर्वत फारस की खाड़ी से यदि १३० मील की दूरी से देखी जाय, तो प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होती है। कुरूकुह श्रेणी जो कि दक्षिण-पूर्व की ओर यज्द तक चली गई है, बहुत दूर तक १००० फुट ऊँची है। यह श्रेणी कुह-ई-बसमन नामक ज्वालामुखी पर्वत (१००००-१२००० फुट) तथा बर्फीली कुह बनान में जाकर समाप्त हुई है। कुह-–हजार यहां की एक शिखा है, जो कि १४५५० फुट ऊँची है। सरहद पर एक पर्वत शिखा कुह-इ-नौशादा है यह १५००० फुट है। बामपुर या उत्तर-पश्चिमी किनारा तटीय श्रेणियों से प्रभावित हुआ है।

उत्तर-पश्चिम में अलग अलग श्रेणियां लुरिस्तान, कुर्दिस्तान तथा आरमीनियां में लुप्त हो जाती हैं। यहाँ पर अनेक बर्फीली चोटियाँ १५००० फुट से नीची ही हैं। उत्तर–पूर्वी खोरासन सीमा-प्रान्त ऐसा विचार किया जाता है, कि तुर्किस्तान निम्न भू-भाग से अलग हो गया है और अफगानिस्तान व कैस्पियन के मध्य हिन्दुकुश से मिल गया है।

ईरान के पठार का पश्चिमी भाग ५००० फुट से कम नहीं है। इस पठार की विशेषता यह है, कि यह समुद्र तटों के निकट, पश्चिम तथा उत्तर की ओर ऊँचा उठ गया है। समुद्र तट तथा किनारे की श्रेणियों के मध्य बहुत कम निम्न भाग हैं, खुजिस्तान फारस की खाड़ी के निकट, थोड़ा सा क्षेत्र बुशर के उत्तर में तथा कु[illegible] के पूर्व में महत्वपूर्ण मैदानी क्षेत्र हैं। कैस्पियन सागर के निकट [illegible] अपने उपजाऊपन के लिए बहुत प्रसिद्ध है। आन्तरिक क्षेत्र में उपजाऊ उरामिया बेसिन को छोड़कर अन्य उपजाऊ क्षेत्र पर्वत श्रेणियों के मध्य ही मिलते हैं। इजफाहन तथा शिरीज नामक प्रसिद्ध निम्नभाग भी ५००० फुट ऊँचे हैं। परन्तु पूर्व तथा उत्तर पूर्व की ओर पठार की ऊँचाई गिरती जाती है और अन्त में बेसिनों का रूप धारण कर लेता है। सिस्तान तथा खोरासन दो प्रसिद्ध बेसिन हैं, जो १३०० या १४०० फुट समुद्र सतह से ऊँचे हैं। यहाँ पर यद्यपि मैदान बहुत विस्तृत हैं, परन्तु शुष्क वातावरण के कारण बंजर हैं, लेकिन कहीं कहीं पर इन्हीं में दलदल तथा रेतीले क्षेत्र भी दृष्टिगोचर होते हैं। और पूर्व की ओर केवल रेतीले टीले तथा मरुस्थल का रेत ही मिलता है, इस रेत ने अनेक

नगर तथा गाँव दबा लिये हैं, उदाहरणार्थ रेजेज जो तेहरान के निकट था, अब ये यज्द को भी दबाने की फिराक में हैं।

पठार का पूर्वी भाग मरुस्थलीय है, यहाँ पर दूर दूर तक रेत तथा नमकीन दलदलों के अतिरिक्त और कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होता। यह मरुस्थलीय भाग उत्तर में काविर तथा दक्षिण में काफेह कहलाते है। इनमें चारों के चश्मों का जल एकत्रित हो जाता है। सूखने के पश्चात ऊपर सफेद रंग की मिट्टी तथा नीचे नम मिट्टी की पर्त रह जाती ह। इनमें से सबसे अधिक विस्तृत काविर दश्त-ई-काविर (खोरासन का महान नमक का मरुस्थल) है। दक्षिण में यह करमान में लुटके मरुस्थल तक चला गया है। उत्तर का भाग अधिक खारी है, और दक्षिण के भाग से नदियों की घाटियों द्वारा अलग हैं। साधारण छोटे छोटे काविर तो अनेक हैं। इन काविरों की ऊंचाई समुद्र सतह से ५,०० या ६०० फुट है।

भूगर्भ शास्त्रियों का कथन है, कि ईरान का भाग बनावट के दृष्टिकोण से 'एल्पाइन फोल्ड बेल्ट' में सम्मिलित हैं। इसकी उत्पत्ति उसी प्रकार हुई है, जिस प्रकार की तिब्बत की। उत्तर तथा दक्षिण के कठोर भूखंडों के परस्पर खिसकने के कारण यह ईरान का भू भाग ऊपर उठ गया है। परन्तु इस विचार में अभी लोगों में मतभेद है। मैदानों के नीचे समतल अथवा मुड़ी हुई दशा में बलुई पत्थर, चूने व खड़िया की चट्टानें पाई जाती हैं। ये कदाचित टरशियरी एवं क्रिटेशियस युग के हैं। तलीय श्रेणियाँ बहुत अधिक मुड़ी हुई हैं, क्योंकि कदाचित परस्पर खिसकने पर समुद्र के पर्त अधिक धूम गए हैं। इनमें प्राचीन चट्टानें जैसे-ग्रेनाइट तथा नीस जैसी चट्टानें मिलती हैं। उत्तर-पूर्व की ओर ज्वालामुखी-चट्टानें भी दृष्टिगोचर होती हैं। मरुस्थलीय भाग में रेत ही रेत मिलता है, यह रेत बहुत अधिक खारी है। इस रेत की उत्पत्ति दिन व रात के तापान्तर के कारण हुई है।

नदियाँ एवं झीलें—(Rivers & Lakes)

ईरान का आधा भाग ऐसा है, जिसमें कि स्थानीय नदियाँ लुप्त हो जाती हैं। शेष नदियाँ ऐसी भी हैं जो समुद्र में गिरती हैं। उत्तर की ओर बहने वाली नदियाँ कैस्पियन सागर में गिरती हैं। इनमें से आरास (अरावजस) सेफिद रूद, गारगान तथा आर्टेक ऐसी नदियाँ हैं, जो कि आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। फारस की खाड़ी तथा अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ थोड़ी ही हैं। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण कारून नदी है। यह नदी पर्वतीय क्षेत्र में बहुत तीव्र गति से बहती है और गहरी है, इसका रंग बाजुफ्त नदी सहित हरा खारा जैसा है। कारून नदी की चौड़ाई ३०० से लेकर ४५० गज है। इसकी गहराई १२ से लेकर १४ फुट तथा

बहाव चार या पांच मील प्रति घंटा है। यह नदी एक बहुत ही उपजाऊ मैदान में होकर बहती है और फारस की खाड़ी में जा गिरती है। कारून के अतिरिक्त करखाह तथा जराही दो अन्य नदियाँ हैं, जो कुर्दिस्तान और लुरिस्तान उच्च भू-भागों से कुजिस्तान तथा अरबिस्तान में होकर शतल-ऐ-अरब तक आती हैं, और अन्त में फारस की खाड़ी में गिरती हैं। कुछ नदियाँ ऐसी भी हैं, जो कि पश्चिम में उर्मिया झील में जा गिरती हैं। पूर्व के सिस्तान बेसिन के खारी दलदलों में भी अनेक छोटी छोटी नदियाँ गिरती हैं।

ईरान में पहले अनेक छोटी छोटी झीलें थी, परन्तु अब ये सूख गई हैं। इनके चिन्ह अब भी दृष्टिगोचर होते हैं कुछ तो खारी मरुस्थलों में परिवर्तित हो गई हैं। इन झीलों का वर्णन यहाँ की प्राचीन कहानियों में भी मिलता है। कुछ कहानियों में बतलाया गया है कि यहाँ पहले एक बड़ा सागर था जो कि उत्तर में कजविन से लेकर करमान व मकरान तथा पश्चिम में सवाह लेकर पूर्व में सिस्तान बेसिन तक विस्तृत था। तेहरान व कुम की सड़क के उत्तर-पश्चिम में एक दरिया ए- नमक नामक एक झील थी जो १८८३ में बनी थी, इसका वर्णन फारस के शाह ने भी अपने ग्रन्थ में किया है। यह झील १३०० वर्ष पहले ही सूख गई थी, इसके स्थान पर अब सावाह नामक एक झील है। यह झील कदाचित उसी प्रसिद्ध झील का ही सूक्ष्म रूप है।

ईरान की नदियों का बहाव

सागर में	फारस की खाड़ी तथा अरब सागर में	१२०,००० वर्गमील	
	अरल और केस्पियन सागर में	१००,०००	"
आन्तरिक क्षेत्र में	सिस्तान झील ...	५०,०००	"
	उरमियाझील ...	३०,०००	"
	काविरो तथा अन्य गड्ढों में ...	३३०,०००	"
	कुल योग	६३०,०००	"

जलवायु (Climate)

ईरान की जलवायु महाद्वीपीय जलवायु है। शुष्क वातावरण होने के साथ साथ यहाँ पर कड़ी गर्मी पड़ती है और तापक्रम बहुत अधिक हो जाता है। इसके विपरीत कुछ उच्च भू भागों में इतनी अधिक सर्दी पड़ती है, कि [illegible] नीचा हो जाता है। इस प्रकार की जलवायु को एक विशेष नाम दिया जाता है, और वह है 'ईरान तुल्य' जलवायु। उत्तरी ईरान में कुछ पर्वत [illegible]

के माह से बर्फ गिरना आरम्भ हो जाता है और मार्च के मध्य में तेहरान जमने लगता है। इन श्रेणियों तथा कैस्पियन सागर के मध्य गर्मी उष्ण कटिबन्ध क्षेत्र जैसी ही पड़ती है। यहां बहुत वर्षा होती है, जो विभिन्न प्रकार की वनस्पति को जन्म देती है। फारस की खाड़ी के तट की जलवायु बहुत ही हानिकारक है, ठीक इसी प्रकार पूर्व में सिस्टन की जलवायु भी कोई अच्छी नहीं है। इसका कारण यह है, कि यहाँ पर वार्षिक तापक्रम बहुत अधिक पाया जाता है। दिन और रात के तापक्रम में भी पर्याप्त अन्तर रहता है। रात के समय शीत ऋतु में कोहरा पड़ता है, और तापक्रम हिम बिन्दु तक गिर जाता है। ग्रीष्म ऋतु में आकाश साफ रहता है, धूप तेज पड़ती है और भूतल बहुत गर्म हो जाता है। पठारी भाग यद्यपि ऊंचा है परन्तु फिर भी मेसोपोटामियाँ की अपेक्षा कुछ गर्म ही रहता है। तेहरान का जुलाई तापक्रम ८५° फ० रहता है, परन्तु कभी कभी ११०° फ० भी हो जाया करता है।

उत्तर-पूर्वी व दक्षिण-पूर्वी हवायें बराबर साल भर चलती हैं। इनका बहाव काले तथा अरब सागरों पर निर्भर रहता है। परन्तु पर्वत श्रेणियाँ भी इनकी दिशा को प्रभावित करती हैं। अधिक गर्मी के कारण मध्य ईरान की हवायें हल्की होकर ऊपर उठने लगती हैं, इनकी जगह को भरने के लिये भारतीय महासागर से ठण्डी व भारी हवायें दौड़ने लगती हैं। इस प्रकार से उत्तर-पश्चिमी हवायें दक्षिण-पश्चिमी हवाओं से मिल जाती हैं और फारस की खाड़ी के निकट बड़े वेग से चलने लगती हैं। ये हवायें अपने साथ कुछ नमी भी रखती हैं, परन्तु मार्ग में आर्मीनियाँ तथा एल्बुर्ज पर्वत श्रेणियां जल वर्षा प्राप्त कर लेती हैं। भारतीय महासागर से आने वाली हवायें दक्षिणी तथा पश्चिमी तट पर वर्षा कर ही देती हैं। केवल कैस्पियन सागर तथा अन्य कुछ वर्षा वाले क्षेत्रों को छोड़ कर, शेष ईरान के पठार पर औसत वार्षिक वर्षा दस या बारह इंच से अधिक नहीं होती, बल्कि और पूर्व में काविर तथा सिस्तान के क्षेत्र में केवल पाँच या छः इंच ही हो पाती है। वर्षा यहाँ प्रायः शीत ऋतु में ही होती है। बर्फ वर्षा कई पहाड़ी स्थानों पर होती है। यदि यहाँ की ऊंची ऊंची पर्वत श्रेणियां बर्फ के रूप में जल को न रखें तो निःसंदेह वर्तमान मरुस्थलीय क्षेत्र बढ़कर दुगना हो जाय।

मानव रूप (Human Aspect)

ऐतिहासिक आधार:—(Historical background)

ईरान का इतिहास वास्तव में २००० बी०सी० से आरम्भ होता है। प्राचीन काल में ऐथेन्स राज्य तथा ईरान के सम्राटों में बराबर युद्ध होते रहते थे, इस संघर्ष का अन्त उसी समय हुआ, जब कि सिकन्दर महान ने चौथी शताब्दी (बी० सी०) में

इस देश को विजय कर लिया था। तृतीय शताब्दी (ए० डी०) में ससानियन सम्राटों ने अपना प्रभाव फैलाना आरम्भ कर दिया, इसके फलस्वरूप 'हैलेनिस्टिक संस्कृति' की अवनति होने लगी और जोरेस्ट्रीयनिज्म (Zoroastrianism) की प्राचीन अग्नि पूजा का निर्माण होने लगा। सातवीं शताब्दी में यह राज्य इस्लामिक अरब साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया। अरबों के बाद यहाँ पर तुर्क एवं मंगोल जाति के लोग आये इन्होंने अपना आधिपत्य जमाया। सोलहवीं शताब्दी में ईरान विदेशी शासन से इस्मैल के प्रयत्नों के फलस्वरूप मुक्त हो गया। इस्मैल ने सफाविद वंश की स्थापना की, यह वंश १७२१ ई० तक रहा, और अफगान लोगों के विद्रोह के अन्तर्गत इसका सर्वनाश हो गया। इन प्राचीन वंशों में सबसे अन्त का काजार (Qajars) था, यह १८०० ई० से १९२५ ई० तक रहा, इसके उपरान्त रिजा शाह पहलवी ने सिंहासन विजय कर लिया।

उन्नीसवीं शताब्दी में कुछ ईरान के क्षेत्र गुलिस्तान (१८१३ ई०) सुलह के अन्तर्गत रूस के पास चले गये। यही सुलह बाद में १८२८ में तुर्कमन चाई में दोहराई गई, और इसमें भी अन्तर्गत ईरान को कुछ क्षेत्र रूस को देने पड़े। सन् १९०६ में एक शीत विद्रोह आरम्भ हो गया, सुलतान मुजफ्फर शाह को एक संविधान बनाने के लिए मजबूर किया गया। सन् १९२१ ई० में रिजा खाँ पेहलवी ने जब असन्तोष जनक दशायें देखीं तो उसने सेना पर पूर्ण अधिकार जमा लिया। अक्टूबर सन् १९२५ ई० में इसने अहमदशाह को जो कि कजार वंश का अन्तिम राजा था गद्दी से उतार दिया और स्वयं उस पर विराजमान हो गया। मजलिस (पार्लियामेंट) उस समय तक के लिये कुछ पड़ गई, जब तक सन् १९४२ ई० में इसका पुत्र सिंहासन पर बैठा। अगस्त सन् १९५३ ई० में ईरान के शाह और प्रधान मन्त्री मुसाद्दिक में अनबन हो गई। शाह ने मुसाद्दिक को अलग कर दिया और जनरल जहेदी को प्रधान मन्त्री बना दिया।

जनसंख्या वितरणः—(Population Distribution)

ईरान की जनसंख्या सन् १९५६ई० में १९,०९८,००० थी। इसकी वर्तमान *जनसंख्या २०,२५१,००० है, अर्थात यहाँ पर उतनी ही आबादी है, जितनी कि अफगानिस्तान और लंका को मिलाकर है। इसमें से तीस लाख से अधिक लोग बंजारे हैं, जिनका कि कोई भी निश्चित निवास स्थान नहीं है। ये बंजारे अनेक जाति के हैं, इनमें अरब, तुर्क, कुर्द, बलूचीज तथा लोकर बहुत प्रसिद्ध हैं। बसी हुई जनसंख्या में मुसलमान जाति के लोग अधिक हैं। यह लोग इस्लाम धर्म

*U. N. Statistical papers series A vol. VI No 4 (October 1954)

को मानते हैं और शिया गोत्र के हैं। वास्तव में जनसंख्या वितरण यहाँ पर एकसा नहीं है। यह अधिकतर धरातल के अनुसार ही है। यहाँ के जनसंख्या वितरण पर समतल भागों का उतना गहरा प्रभाव नहीं पड़ा है, जितना कि आन्तरिक जलाशयों का। यहां के प्रसिद्ध नगर तथा गांव पर्वत श्रेणियों के किनारे किनारे पर ही स्थित हैं, क्योंकि पर्वतीय ढालों पर नदियों तथा चश्मों से बड़ी आसानी से जल प्राप्त हो जाता है। कड़ी गर्मी तथा शुष्क ऋतु से बचने के हेतु ये लोग जलाशयों की ओर विशेष ध्यान देते हैं। यहां की जलवायु स्वास्थ्य के लिये बड़ी उत्तम है, मृत्यु दर यहां अन्य देशों की अपेक्षा कम है। गत वर्षों से जनसंख्या में बराबर वृद्धि हो रही है। साधारण तौर पर जनसंख्या-घनत्व समतल भागों में ही अधिक पाया जाता है, क्योंकि वहाँ पर कृषि करने की सुविधा रहती है। ऐसे क्षेत्रों में उत्तर ईरान के समुद्र तट फारस की खाड़ी एवं दक्षिण के समुद्र तट घनी जनसंख्या के लिए प्रसिद्ध हैं। जन-संख्या-घनत्व ईरान के पठार के मध्य में बहुत कम है, तथा पूर्व में यह और भी अधिक कम हो गया है। औसत घनत्व २०-२५ व्यक्ति प्रति वर्ग मील है। ईरान के प्रसिद्ध नगरों में तेहरान, तैब्रिज, इस्फाहान, मौशद तथा रेश्त हैं। तेहरान यहाँ की राजधानी है, यही यहां का सबसे बड़ा नगर है, पश्चिमी सभ्यता का गहरा प्रभाव इस नगर पर पड़ा है। कुछ विद्वानों का मत है कि प्राचीन काल में इस देश की जनसंख्या वर्तमान जनसंख्या से भी अधिक थी, परन्तु इसमें संदेह है। उनका कथन है कि युद्ध, बीमारियां, सामाजिक-कुरीतियां इत्यादि कुछ ऐसे तत्व हैं, जिनके कारण जनसंख्या बहुत कम रह गई है। परन्तु कुछ भी हो, इस देश को अपनी मानव शक्ति बढ़ाने के हेतु जनसंख्या वृद्धि पर ध्यान देना ही चाहिये।

यहां के प्रसिद्ध नगरों में तेहरान यहां की राजधानी है। इसकी जनसंख्या ६८८,४३२ से अधिक है। इस्फाहान एक द्वितीय श्रेणी का नगर है, इसकी जनसंख्या २०४,५६८ से अधिक है। उत्तर-पश्चिम में तैब्रिज नगर है। इसकी जनसंख्या १९[illegible]८ में २१३,५४२ थी। इन नगरों के अतिरिक्त अन्य कई ऐसे नगर हैं जिनकी जनसंख्या दो लाख से कम है।

आर्थिक रूप (Economic Aspect)

प्राकृतिक वनस्पति:—(Natural Vegetation)

वर्षा का अभाव वास्तव में दो बातों से सम्बन्धित होता है, प्रथम सिंचाई की व्यवस्था तथा द्वितीय प्राकृतिक वनस्पति। ईरान एक ऐसा देश है, जहां वर्षा के अभाव को दोनों बातें प्रभावित करती हैं। यहां पर आंतरिक क्षेत्र में बड़े बड़े

वृक्ष तो दृष्टिगोचर होते ही नहीं, बल्कि कहीं कहीं तो झाड़ियाँ तक भी नहीं दीखतीं। हां तटीय क्षेत्र में जो पर्वत श्रेणियाँ हैं, वे अवश्य वनस्पति से ढकी हुई हैं। खजूर के वृक्ष प्रायः फारस की खाड़ी के रेतीले क्षेत्र में दृष्टिगोचर होते हैं। बलूत तथा अन्य इसी किस्म के वृक्ष ऐसे वातावरण में मिलते हैं, जैसे कि आन्तरिक पर्वत श्रेणियों के ढाल तथा बखतियारी के क्षेत्र। बन यहाँ पर कुल भू क्षेत्र के १० प्रतिशत भाग पर ही मिलते हैं। वर्तमान वनीय क्षेत्र ४६० लाख एकड़ है। वास्तविक प्राकृतिक वनस्पति केवल एल्बुर्ज पर्वत श्रेणियों के ढालों पर ही मिलती है। यहाँ पर विस्तृत क्षेत्र घने बनों से ढके हुए हैं। इन बनों में बहुत ही उत्तम श्रेणी की लकड़ी प्राप्त होती है। सिड़ार, ऐश, ओक, वालनट तथा बीच इन बनों की ही देन है। इन लकड़ियों का महत्व आर्थिक दृष्टिकोण से बहुत अधिक है, क्योंकि खुदाई का काम इन पर सबसे उत्तम होता है। बड़े बड़े बक्स व फर्नीचर बनाने के काम में भी ये लकड़ी लाई जाती हैं। गत वर्षों में यहाँ के वनीय क्षेत्र साफ कर दिये गये हैं। इनके स्थान पर अब कृषि की जाने लगी है। शहतूत के वृक्षों पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं।

इन बनों से जो अन्य आर्थिक वस्तुयें प्राप्त होती हैं वह अनेक हैं। एल्बुर्ज पर्वत के गिलान व मजनदिरन प्रान्त उत्तम लकड़ी के लिये प्रसिद्ध हैं। वृक्ष यहाँ पर पतझड़ वाले हैं, जिनमें कि सख्त लकड़ी मिलती है। कुर्दिस्तान के फार्स नामक प्रान्त में टिम्बर की अधिकता है। गोंद एक ऐसे काँटे दार झाड़ी से प्राप्त किया जाता है। जो केरमन तथा केरमनशाह के मध्य एक पहाड़ी क्षेत्र में ही उगती है। गोंद कई प्रकार का होता है। यहाँ पर अरेबिक, एमोनिआक तथा अन्य प्रकार के गोंद मरुस्थलीय वनस्पति से प्राप्त किये जाते हैं।

कृषि (Agriculture)

कृषि ईरान के निवासियों का एक प्रधान उद्योग है। अनुमान लगाया गया है, कि यहाँ की कुल भूमि के १०–१५ प्रतिशत भाग पर कृषि की जाती है, शेष भाग में वन तथा बंजारों के चरागाह मिलते हैं। वास्तव में यहाँ की कृषि सिंचाई के साधनों पर निर्भर रहती है। यहाँ पर बहुत ही उत्तम श्रेणी के सिंचाई के साधन मिलते हैं। परन्तु सिंचाई की एक साधारण सी योजना पर काफी व्यय होता है, क्योंकि कुएं काफी गहराई तक खोदे जाते हैं, जब जाकर कहीं जल मिलता है। कुएं अधिकतर पर्वत श्रेणियों के किनारे खोदे जाते हैं, यदि अधिक जल मिलता है, तो वह जलाशयों में एकत्रित कर लिया जाता है और बड़ी बड़ी नालियों द्वारा इधर-उधर सिंचाई के हेतु दिया जाता है। यह साधन करेज (Karez) या कनात

(Qanats) कहलाता है। यहाँ पर कुछ बहुत ही उच्च श्रेणी की नहरें भी मिलती हैं। जल के अभाव के कारण यहाँ पर खेत तथा बगीचे बहुत दूर वितरित दशा में पाये जाते हैं। जब तक भूमि को जल नहीं मिलता तब तक वह भूरी रंग की दूर तक दृष्टिगोचर होती हैं, परन्तु जब कभी भी जल मिल जाता है, तो वही भूमि बहुत ही सुन्दर दृष्टिगोचर होने लगती है। कहा जाता है, कि प्राचीन काल में यहाँ के नियम ऐसे थे, कि कोई भी मनुष्य जो भूमि पर भली भाँति कृषि कर लेता था, नियमानुसार उसका अधिकारी हो जाता था। आधुनिक युग में कृषि यहाँ छोटे छोटे समूहों में होती है, प्रत्येक का एक संचालक होता है, जो कृषि की देख रेख करता है।

गेहूं, जौ और ज्वार-बाजरा यहाँ पर काफी ऊँचाई तक बोया जाता है। निम्न भागों में केवल कपास, गन्ना, रेशम, अंगूर, अंजीर, चैरी, पीच तथा प्लूम इत्यादि फल उत्पन्न होते हैं। यहीं पर कुछ क्षेत्रों में नील, चावल, तम्बाकू तथा अन्य उपजें बोई जाती हैं। इन वस्तुओं के बोने के क्षेत्र उर्मिया बेसिन, इस्फ़ाहान तथा शिराज के समतल मैदान हैं। यही क्षेत्र वास्तव में इस देश के सबसे अधिक उपजाऊ भाग हैं।

गेहूं यहां पर घरेलू माँग से कुछ अधिक ही मात्रा में उत्पन्न किया जाता है, और इसी लिये निकट वर्तीय देशों को निर्यात कर दिया जाता है, जौ तथा मक्का घोड़े तथा अन्य पशुओं के खिलाने के हेतु उत्पन्न किया जाता है। चावल अधिकतर केस्पियन तट के अतिरिक्त गिलान प्रान्त में भी पैदा किया जा रहा है। यद्यपि यहाँ के लोग वही अन्न खाते हैं, जो कि यहाँ उत्पन्न होता है, परन्तु फिर भी जनसंख्या कम होने के, कारण निर्यात करने के हेतु बच रहता है। पहले ये अनाज रूस को प्राय: निर्यात किए जाते थे। यद्यपि इस देश में गन्ना तथा चुकन्दर दोनों ही उत्पन्न होते हैं, किन्तु फिर भी प्रतिवर्ष यहाँ शक्कर विदेशों से आयात की जाती है। सन् १९५०-५१ में यहाँ चुकन्दर से शक्कर का उत्पादन ५५००० मेट्रिक टन था। तम्बाकू यहाँ पर हर जगह उत्पन्न की जाती है। इसकी किस्म बड़ी उत्तम होती है, इसीलिए यहाँ की तम्बाकू बड़ी प्रसिद्ध है। घरेलू माँग अधिक होने के कारण इसका निर्यात बहुत कम होता है। अफीम, यहाँ पर अति प्राचीन काल से उत्पन्न की जा रही है, ये भी यहाँ उच्च श्रेणी की होती है, इसी कारण अधिक मात्रा में बोई जाने लगी है। इसका निर्यात भी बहुत होता है। चीन सबसे अधिक अफीम आयात करता है, उच्च श्रेणी की अफीम लन्दन को निर्यात की जाती है। कपास यहाँ पर केवल उन्हीं स्थानों पर उत्पन्न की जाती है, जहाँ सिंचाई की पूर्ण व्यवस्था है। पर्वतीय क्षेत्रों में यह पाँच हजार फुट की ऊँचाई तक आसानी से उत्पन्न कर ली जाती है। परन्तु

यहाँ की कपास उच्च श्रेणी की नहीं होती, इसलिये कालीन के उद्योग के लिये ये भारत तथा अन्य देशों से आयात की जाती है। यह देश भी लम्बे रेशे वाले कपास के बोने के लिए प्रयत्न कर रहा है, पता नहीं इस पठारी देश में इसे सफलता प्राप्त होगी या नहीं।

इस देश में भूमध्य सागरीय तथा उष्ण कटिबन्धीय, दोनों प्रकार की जलवायु मिलती हैं, यही कारण है, कि यहाँ पर अनेक भूमध्य सागरीय फल तथा उष्ण कटिबन्धी खजूर उत्पन्न होते हैं। फलों में अंगूर, नींबू, संतरे, नारंगी बहुत प्रसिद्ध हैं। फलों का उत्पादन प्रतिवर्ष यहाँ १,५००,००० मेट्रिक टन होता है। इनको सड़ा करके शराब भी बनाई जाती है। नील की कृषि को बनावटी नील के आ जाने से गहरा धक्का पहुँचा है। इस देश में चाय भी उत्पन्न की जाती है। सन् १९४९ में यहाँ २५८ मेट्रिक टन चाय उत्पन्न हुई।

प्रमुख फसलें

(in 000 Hectares and 000 Metric tons)

	१९५०		१९५१		१९५२	
	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन
गेहूं	२४६०	२२६३	—	१८००	२६४२	२६८२
जौ	९२५	८५५	७६०	७२०	१०००	१०४८
चावल	२६७	४५०	३००	३६०	३००	४१०
चुकन्दर (चीनी)	३४	३७७	४२	४६.५	४५	५३०
चुकन्दर	—	६२	—		—	८६
मुनक्का	—	४५	—	४६	—	—
नारंगी	—	४५	—	४०	—	४५
खजूर	—	१३८	—	१२४	—	—
बिनौला	१३०	४२	१५०	४१	१८०	५३
तम्बाकू	१५	१५	१६	१२	—	—
कपास (लिंट)	१३०	२८	१५०	२७	१८०	३६

"In this Country three-field system is adopted: One field is being planted with wheat, rye, opium or other crops sown in autumn and harvested in the summer; another field with maize, peas, rice or other crops sown in spring and harvested in autumn; the third field is left fallow."
L. D. Stamp, Asia, p. 159

जीव—जन्तु (Animal life—

ईरान में विभिन्न प्रकार के जीव जन्तु मिलते हैं । शेर, चीते, लकड़बग्घे, भेड़िये तथा गीदड़ इत्यादि पर्याप्त संख्या में पाये जाते हैं। फारसिस्तान अब भी शेर के लिये प्रसिद्ध है, इनमें अधिक जीव-जन्तु उत्तरी तट की ओर ही मिलते हैं हौक नामक चिड़िया जो कि शिकार के हेतु बहुत प्रसिद्ध है, काफी मात्रा में यहाँ पाई जाती है। भांति भांति के पक्षी जैसे चिड़िया तोते मैना तथा कोयल यहाँ पाई जाती हैं।

घरेलू पशुओं में जो कि आर्थिक दृष्टिकोण से यहाँ के निवासियों के लिए महत्वपूर्ण हैं, कई बहुत प्रसिद्ध हैं, जैसे-घोड़ा,खच्चर, गदहे, ऊँट, गाय, भेंड़ व बकरे इत्यादि। शुष्क चरागाहों में भेंड़ व बकरे अच्छी तरह पाले जा सकते हैं यहाँ का वातावरण पशु पालने योग्य नहीं होता।

बकरे यहाँ पर उसी प्रकार ऊन देते हैं जिस प्रकार की काश्मीर की भेंड़ें देती हैं। चौड़ी दुम वाली भेंड़ लोगों के लिए भोजन प्रदान करती है। इन भेंड़ों की ऊन बहुत ही उच्च कोटि की होती है। इनकी खाल पर कुछ बाल दिये जाते हैं, जिससे कि इसका प्रयोग घरेलू कार्य में भी हो सके। यहाँ पर खच्चर भी बहुत पाए जाते हैं। ये बहुत ही परिश्रमी तथा कठोर पशु हैं, ईरान जैसी ऊँची नीची भूमि पर यही पशु बड़ी सफलता पूर्वक कार्य कर सकते हैं। बहुत से लोग अपने साथ ऊँट भी रखते हैं। ऊँट के कारवां दूर दूर तक यहाँ से जाते हैं। घोड़े यहाँ पर उच्च श्रेणी के मिलते हैं, वास्तव में अरब के घोड़े तथा इन घोड़ों के परस्पर मिलने से ही इन घोड़ों की किस्म उच्च श्रेणी की है। ऊँट के बालों के हेतु ईरान विश्व में बहुत ही अधिक प्रसिद्ध है।

खनिज सम्पत्ति (Mineral Wealth)

पेट्रोलियम ईरान का एक प्रमुख खनिजपदार्थ है। इस देश व स्थित मध्य पूर्वी पेट्रोलियम पेटी पर है। यही कारण है कि, पेट्रोलियम यहां कई स नों पर प्राप्त किया जाता है। इस धन की खोज यहां १९०१ ई० में ही की जा चुकी थी, लगातार सात वर्ष तक [illegible] और [illegible] करने के पश्चात् श्री डब्लू० के० डि आरसी (W. K. D'Arcy) को सफलता प्राप्त हुई। उनको उसी वर्ष १९०८ में मैदान-ऐ-सुलेमान (जो कि पहले मैदान-ऐ-नफ्तुन के नाम से प्रसिद्ध था) की खोज करने के सम्बन्ध में एक पुरस्कार दिया गया। सन् १९०९ में ऐंग्लो इरानियन आयल कम्पनी (Anglo Iranian Oil Company) की स्थापना हुई। इस कम्पनी ने तेल निकालने के पूर्ण अधिकार को प्राप्त कर लिए, केवल उत्तर

के पाँच क्षेत्र छोड़ कर इसने सभी क्षेत्र अपने अधिकार में कर लिए। इस कम्पनी के स्थापित होते ही पेट्रोलियम का उत्पादन दिन प्रति दिन बढ़ने लगा था वास्तव में उत्पादन १९१२ से आरम्भ हुआ था। अन्य लोग भी इस कम्पनी की ओर आकर्षित होने लगे, क्योंकि यही एक कम्पनी ऐसी थी, जिसमें ब्रिटिश सरकार की २०००००० पूंजी थी। सन् १९३३ में इस कम्पनी तथा ईरानियन सरकार के मध्य एक समझौता हुआ। इस समझौते के अन्तर्गत कम्पनी को वह कर बढ़ाना पड़ा जो कि प्रति वर्ष यहां की सरकार को दिया जाता है। इसके बदले कम्पनी को सरकार से दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र में पेट्रोलियम प्राप्त करने के अधिकार मिल गए। ईरान सरकार ने यह आज्ञा १९९३ तक के लिये दे दी है। सन् १९५० में पेट्रोलियम का उत्पादन ३५,३००,००० टन हुआ, इस पर ईरान सरकार को १६,०००,००० वार्षिक कर प्राप्त हुआ। अप्रैल सन १९५१ में जब 'आयल नेशनलाईजेशन' हो गया तब इसका उत्पादन बिल्कुल ठप्प हो गया। अगस्त १९५४ में एक समझौता हुआ, इस समझौते के अन्तर्गत यह तय हुआ कि अगले तीन वर्ष तक 'ईरानियन आयल' का उत्पादन ६८०००,००० टन से अधिक नहीं होगा और इतने ही समय में ईरान सरकार १५०,०००,००० कर प्राप्त करेगी। अबादन रिफाइनरी प्रति वर्ष २५,०००,००० टन पेट्रोलियम साफ करती है। यह आजकल विश्व की सबसे बड़ी रिफाइनरी है। एक मोटी पाइप लाइन, जो कि १४५ मील लम्बी है, इस रिफाइनरी को तेल के क्षेत्रों से मिलाती है। अनुमान लगाया जाता है, कि पेट्रोलियम ईरान के उत्तरी क्षेत्र में भी प्राप्त किया जाता है। 'ऐंग्लो ईरानियन आयल कम्पनी,' अपनी बहुत सी पूंजी लगाकर यहाँ के कर्मचारियों के हेतु अनेक सुविधायें प्रदान की हैं। उनके लिये मकान, पाठशालायें अस्पताल, लाइब्रेरी, सिनेमा तथा क्लब इत्यादि बनवाये हैं। वह भाग जो कि पहले बंजर थे, और जहाँ मनुष्य रहना भी पसन्द नहीं करते थे, अब बहुत घने बसे हुये हैं और चारों ओर चहल-पहल रहती है।

पेट्रोलियम संघर्ष (Petroleum Conflict)

सन् १९३९ के पूर्व 'ऐंग्लो ईरानियन आयल कम्पनी' इस धनी क्षेत्र से पेट्रोलियम प्राप्त किया करती थी। केवल दस वर्ष बाद ही एक डच कम्पनी ने तथा बारह वर्ष बाद दो अमरीकन कम्पनियों ने पेट्रोलियम निकालने के लिये आज्ञा प्राप्त करने की चेष्टा की। सितम्बर १९४४ में सोवियत रूस ने भी आज्ञा पाने की चेष्टा की। यह युद्ध का समय था। ईरान सरकार ने इस सम्बन्ध में अपना कोई भी मत प्रकट नहीं किया। सोवियत रूस ने युद्ध के अन्त में अपनी सैनिक शक्ति जो उत्तरी ईरान में,

स्थापित कर रखी थी, हटानी स्वीकार नहीं की। वास्तव में उनका ध्येय तेल के क्षेत्रों पर अपना अधिकार प्राप्त करना था। इसके फलस्वरूप ईरान सरकार ने इस सम्बन्ध में सुरक्षा परिषद के सम्मुख विरोध प्रकट किया। परन्तु इसे कोई विशेष सफलता प्राप्त नहीं हुई। अप्रैल १९४६ में ईरान के प्रधान मन्त्री कवाम अजसल्ताना (Qawam as Saltana) ने सोवियत रूस को तेल के कुछ क्षेत्र दे दिये। फलस्वरूप अगले ही माह में सोवियत रूस ने अपनी सेना उत्तरी ईरान से हटा ली। कुछ कठिनाइयों के पश्चात् ईरान सरकार को आजरबाईजॉन तथा कुर्द जातियों के विद्रोह को दबाने में सफलता प्राप्त हुई। अक्टूबर में नवीन राष्ट्रीय सभा ने (जो कि जुलाई में बनी थी)सोवियत ईरानियन तेल समझौते को रद्द कर दिया और साथ ही किसी भी विदेशी को आज्ञा न देने का नियम घोषित कर दिया।

थोड़े ही समय पश्चात् अमरीकन सरकार का समझौता साउदी अरेबिया के साथ, ब्रिटिश का ईराक के साथ ५० प्रतिशत रायल्टी (Royalty) पर निश्चित हो गया। यह सच्चाई सब को मालूम हो गई थी। जब ऐंग्लो ईरानियन आयल कम्पनी ने ईरान सरकार के सम्मुख रायल्टी बढ़ाने का प्रस्ताव रखा, तो नेशनल असेम्बली ने नवम्बर १९५० में रद्द कर दिया। अगले वर्ष मजलिस (पार्लियामेंट) ने इस उद्योग का राष्ट्रीयकरण कर दिया, इसी सम्बन्ध में 'मुसद्दक कैबिनट' ने 'ऐंग्लो ईरानियन आयल कम्पनी' को नोटिस दे दिया और उसकी सब सुविधायें (Concessions) समाप्त कर दीं। अक्टूबर के माह में कम्पनी के विदेशी कर्मचारी अलग कर दिये गए। मई १९५१ से लेकर अगस्त १९५३ तक ईरान तथा ग्रेट ब्रिटेन के मध्य बहुत झगड़ा हुआ, झगड़े के दो ही कारण प्रमुख थे। प्रथम राष्ट्रीयकरण तथा द्वितीय निश्चित समय के पहले अलग कर देना। ब्रिटिश सरकार ने यह मामला सुरक्षा परिषद तथा हेग (Hague) के अन्तर्राष्ट्रीय कोर्ट के सम्मुख रखा। ब्रिटिश सरकार ने ईरान को एक स्टोक्स मिशन (Stokes Mission) भी भेजा, प्रेसीडेण्ट ट्रूमन तथा आइजन होवर ने भी निवेदन किया, बल्कि संयुक्त राज्य तो आर्थिक सहायता देने के लिए भी प्रस्तुत था। परन्तु यह सब प्रयत्न निष्फल रहे। ईरान का कहना था कि हमें अपने यहाँ के पैट्रोलियम को राष्ट्रीयकरण कर देने का पूर्ण अधिकार है। ईरान को अपने पास योग्य व अनुभवी कर्मचारी, पर्याप्त पूंजी तथा अन्य सुविधायें न होने के कारण बड़ी असफलता प्राप्त हुई। थोड़े ही समय में राष्ट्रीय आय में बहुत भारी कमी हो गई। डा० मुसद्दक पर से लोगों का विश्वास हट गया। अगस्त १९५३ में शाह ने उनको निकाल कर जनरल जहेदी (General Zahadi) को रख दिया।

संयुक्त राज्य ने इस आपत्ति के समय ईरान को ४५,०००,००० उधार दिया और सुलह के पश्चात् पुन: दिसम्बर के माह से ब्रिटिश तथा ईरान सरकार के मध्य पत्र व्यवहार आरम्भ हो गया। पहले मिस्टर हर्बर्ट हूवर (Mr. Herbert Hoover) ने तथा बाद में मि० एव्रिल हेरीमन (Mr. Averill Hariman) ने इस सुलह कार्य में बहुत सहायता की, और अन्त में ५ अगस्त १९५४ को इन दोनों में समझौता हो गया। ऐंग्लो ईरानियन आयल कम्पनी के स्थान पर आठ कम्पनियों का कन्सोसियम (Consortium) स्थापित हो गया। इसमें ४० प्रतिशत अंश (Shares) कम्पनी के थे। और यह निश्चय हुआ कि कम्पनी के अन्य ६० प्रतिशत अंश बाद में धीरे २ चुका दिए जायेंगे। इसी के साथ यह भी निश्चय किया गया कि कन्सोसियम उत्पादन, साफ करने और बेचने का कार्य नेशनल ईरानियन आयल कम्पनी के हेतु करेगा। और इसके बदले में लाभ पर ५० प्रतिशत रायल्टी प्राप्त करेगा। नफ्त-इ-शाह (Naft-i-shah) नामक 'फील्ड' तथा किरमनशाह साफ करने का कारखाना ईरानियन कंपनी को घरेलू प्रयोग के लिए दे दिए गए। यह समझौता २५ वर्ष के लिये हुआ था।

ईरान तथा रूस के सम्बन्धों का विवरण या तो १९२१ की ईरानियन-सोवियत सुलह में, और या १९४२ की यू० के०, यू० एस० एस० आर० और ईरान की सुलाहों में मिलता है। सोवियत रूस ने ईरान की दो बातों पर बड़ा विरोध प्रकट किया। प्रथम यू० एस० मिलेट्री मिशन १९४७ में ईरान में क्यों रखा गया और द्वितीय १९५२ के म्यूचूअल सिकुरिटी ऐक्ट के अन्तर्गत ईरान को सैनिक सहायता क्यों प्रदान की गई। सन् १९५४ में भी संयुक्त राज्य ने ईरान को टेक्नीकल सहायता 'पुआइन्ट फोर प्रोग्राम' के अन्तर्गत देने का वचन दिया।

अन्य खनिज पदार्थ

ईरान में अनेक प्रकार के खनिज पदार्थ मिलते हैं, परन्तु वे यातायात की असुविधाओं के कारण निकाले नहीं जाते। वास्तव में इन खनिजों का असली महत्व ही लोगों को नहीं मालूम। उच्च कोटि का लोहा तथा कोयला यहाँ पर मिलता है, परन्तु वाणिज्य के हेतु नहीं निकाला जाता। दोनों ही प्रमुख खनिज पदार्थ उत्तर-पश्चिम में तेहरान प्राँत में पाये जाते हैं। ईरान में निशापुर के स्थान पर तुरकुइज नामक खानों से कोयला निकाला जाता है। सन् १९४८-४९ में इनका उत्पादन ११०,००० मेट्रिक टन था। कई बार लोहे या स्पात के कारखाने स्थापित करने के प्रस्ताव भी रखे गये, परन्तु कोई भी ध्यान नहीं दिया गया। अनुमान लगाया जाता है, कि इन दोनों खनिजों के अतिरिक्त यहाँ अन्य धातुयें भी

पाई जाती हैं। परन्तु उनमें से एक भी वाणिज्य-दृष्टिकोण से निकाली नहीं जा रही है। भविष्य में आशा की जाती है, कि यदि परिस्थिति ठीक रही तो इन बहुमूल्य खनिजों का निर्माण अवश्य होगा। इस समय ईरान १८५०० हार्स पावर शक्ति उत्पन्न करता है। इसमें ६०,०००,००० रियाल्स की पूंजी लगी है तथा कुल ६२० मनुष्य इसमें काम करते हैं।

उद्योग धन्धे:—(Industries)

ईरान एक ऐसा देश है, जिसमें कि आधुनिक उद्योग धन्धे अधिक उन्नति नहीं कर सके हैं। यहाँ पर अधिकतर हमको घरेलू उद्योग ही मिलते हैं। ये घरेलू उद्योग यहाँ पर गाँव गाँव में मिलते हैं और घर के सभी लोग इसमें काम करते हैं। इन उद्योगों में यहाँ के निवासियों ने निपुणता प्राप्त कर ली है। जो वस्तुयें ये तैयार करते हैं, उनका यहाँ स्थानीय व्यापार होता है। इन उद्योगों की प्रगति के लिए यहाँ अनेक सुविधायें प्राप्त हैं। कच्चा माल यहाँ बड़ी आसानी से प्राप्त हो जाता है। यहाँ पर कुशल श्रम की भी कमी नहीं है। इसके अतिरिक्त घरेलू मांग भी इन वस्तुओं की पर्याप्त रहती है।

यहाँ के बने हुये कालीन तथा दरियां अन्तर्राष्ट्रीय प्रख्याति प्राप्त करते हैं। ये कालीन इतने सुन्दर तथा आकर्षक बनाये जाते हैं, कि इनका मूल्य बहुत हो जाता है। वास्तव में इनकी कला का प्रदर्शन इन कालीनों द्वारा ही होता है। इनके रंग तथा डिजाइनें विचित्र होती हैं। यहाँ तक कि एक कुशल स्त्री तीस घण्टे के समय में केवल एक वर्गफुट ही तैयार कर पाती है, यही कारण है, कि इनका मूल्य इतना अधिक हो जाया करता है, कि साधारण मनुष्य इन्हें नहीं खरीद पाता है। मनुष्य तो ऊन खरीदते हैं और उसे रंग कर तैयार कर देते हैं और उनकी स्त्रियाँ तथा बच्चे बुनने का कार्य करते हैं। यह उद्योग यहाँ पर अति प्राचीन काल से हो रहा है। इसे भारतवर्ष, तुर्किस्तान तथा ग्रीक के इस उद्योग से टक्कर लेनी पड़ती है। योरोप के देशों से यहाँ पर ऐसे अनेक साधन आ गये हैं, जिनके द्वारा ये सस्ती तैयार की जा सकती हैं। आज कल अति उत्तम रेशमी कालीन तो केवल हुक्म पर ही तैयार किए जाते हैं। सन् १९२४ में इनका निर्यात १४ प्रतिशत था परन्तु केवल पाँच वर्ष बाद यह ६ प्रतिशत से भी कम रह गया।

सूती वस्त्र उत्पादन एवं शक्ति

तकलियाँ	उत्पादन शक्ति	श्रमिकगण	उत्पादन
२२४०००	१२५०० (टन)	३५००	३०,०००,००० मीटर

इन कालीन व दरियों के अतिरिक्त यहाँ ऊनी शाल, फैल्ट तथा रेशम भी तैयार की जाती हैं। इन वस्तुओं की अनेक बहुमूल्य चीजें भी बनाई जाती हैं। इस

उद्योग को भी काफी धक्का पहुंचा, क्योंकि कारखानों की बनी हुई वस्तुयें बड़े सस्ते दामों में बाजार में बिकती थीं। इन वस्तुओं के उद्योग ने कभी भी कारखाने का रूप धारण नहीं किया। आधुनिक उद्योगों के लिए अच्छे यातायात के साधन होने भी आवश्यक हैं। शीशे, रसायन की वस्तुयें, अस्त्र-शस्त्र तथा गोला बारूद तैयार करने के कारखाने तेहरान में तथा दियासलाई बनाने के, तेब्रिज, जेतजान, तेहरान तथा इजफाहान में पाये जाते हैं।

आधुनिक उद्योग बड़े पैमाने पर बहुत कम उन्नति कर पाये हैं। इनकी प्रगति वास्तव में द्वितीय महायुद्ध के बाद ही हुई है। सरकारी सूती वस्त्र के कारखाने यहाँ पर पाँच हैं, इनमें ७६२८ मनुष्य काम करते हैं। शकर के केवल ६ हैं, इसमें ४६१२ मनुष्य कार्य कर रहे हैं। तम्बाकू की सरकारी फेक्टरी केवल एक ही है, इसमें १३४२ और रसायन की ६ हैं जिसमें १७०० व्यक्ति कार्य करते हैं।

पूंजी-पतियों के हाथ में भी अनेक धन्धे हैं। सूती वस्त्र के इनके पास २४ कारखाने हैं जिसमें १२७५५, ऊनी के ८ जिसमें ५५२३, तथा दियासलाई के २६ जिसमें ४४७४ मनुष्य लगे हुये हैं। खनिज तेल के उद्योग में ५१७०२ मनुष्य काम करते हैं। इन तमाम उद्योगों को यहां की सरकार ने राष्ट्रीयकरण रूप दे दिया है।

औद्योगिक उत्पादन

उद्योग धन्धे	कारखानों की संख्या	श्रमिकों की संख्या	पूंजी (००००००)	लगाई हुई शक्ति (हार्स पावर में)
(राज्य के)				
रेशेदार पदार्थ	५	७६२८	७१८	६४७०
शकर	६	४६१२	६०६	७१६४
तम्बाकू की वस्तुयें	१	१३४२	५०६	३४६०
रसायन पदार्थ	६	१७००	१६३	३१३५
(व्यक्तिगत)				
सूती वस्त्र	२४	१२७५५	४४२	१०,०६४
ऊनी वस्त्र	८	५५२३	२४६	६,६८५
दियासलाई	२६	४४७४	२१	१२५
एंग्लो, ईरानियन आयल कम्पनी	—	५१७०२	—	१५५०००
केस्पियन मछलियाँ	१	२४८४	—	११५५
खानें	—	४५००	—	—
विद्युत	—	६२०	६०	१८५००

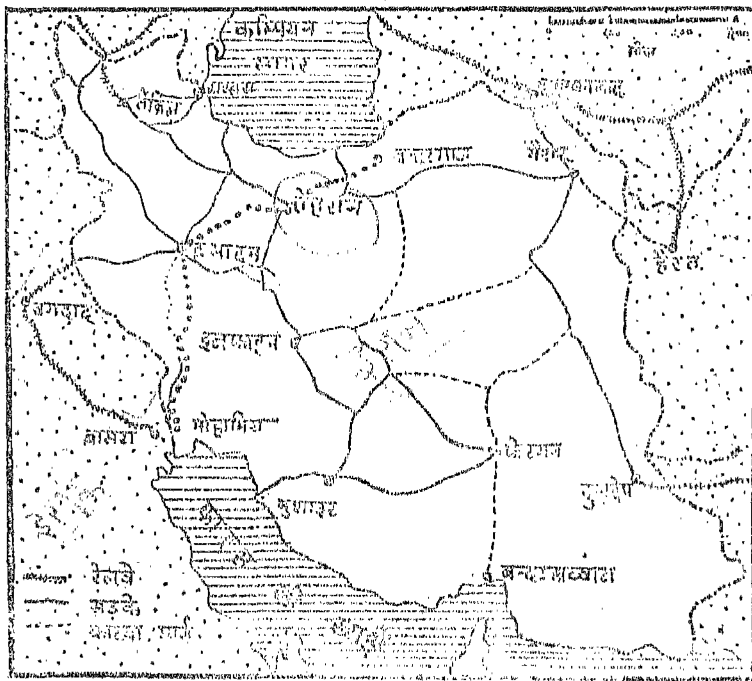
व्यवसाय: -- (Occupations)

ईरान के निवासी विभिन्न प्रकार के व्यवसाय में लगे हुए हैं। यहां के रेगिस्तान में जो निवासी रहते हैं, वे बंजारे हैं, और अपने पशुओं सहित इधर उधर घूमा फिरा करते हैं। यहां के निवासी पठारी क्षेत्र में सामान लाने वाले जाने के लिए खच्चर पालते हैं। ऊंट उन क्षेत्रों के लिए प्रसिद्ध हैं जहां चारों ओर रेत ही रेत दृष्टिगोचर होता है। छोटे कद के घोड़े भी ये लोग पालते हैं। इन लोगों के घरेलू व्यवसाय हैं, और वह भी उन वस्तुओं पर निर्भर है, जो कि इन पशुओं से प्राप्त होती हैं। ऊंट के बाल व खाल दोनों आर्थिक दृष्टिकोण से इन लोगों के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसका ये लोग व्यापार भी करते हैं, और इसकी अनेक वस्तुयें भी तैयार करते हैं। इनकी स्त्रियाँ तथा बच्चे दस्तकारी के काम में बड़े निपुण होते हैं। ऊंट के बालों से तैयार की हुई वस्तुओं के लिए ईरान बहुत प्रसिद्ध रहा है। इन बालों से ये वाटर प्रूफ (Water Proof) कपड़ा भी तैयार करते हैं।

कुछ ईरान के निवासी रेशम के उद्योग में भी लगे हुए हैं। रेशम के कीड़े यहां उत्तर की ओर पर्वतीय ढालों पर, शहतूत के वृक्षों पर पाले जाते हैं। सन् १९३४ से लेकर १९४६ तक औसत उत्पादन १७००,००० किलोग्राम था, और विश्व में आठवां स्थान प्राप्त करता था। यह यहां के लोगों का एक-प्रमुख व्यवसाय रहा है। लोग रेशमी वस्तुयें तैयार करने में इतने निपुण हैं, कि उन्होंने योरोपियन देशों को भी चकित कर दिया। गत साठ वर्ष पहले यहां पर रेशम के कीड़ों की ऐसी बीमारी फैली थी कि जिसके कारण इस व्यवसाय को बड़ा धक्का पहुंचा और उद्योग लगभग ठप सा ही हो गया। परन्तु रूस और टर्की से रेशम के कीड़ों के अंडे मंगवाये गये और पुन: यह धन्धा ऊपर उठाया गया। प्रथम महायुद्ध पूर्व उत्पत्ति १,२००,००० पौंड से अधिक हो गई। इस उत्पादन का तीन चौथाई भाग फ्रांस, इटली, रूस व टर्की जैसे उन्नतिशील देशों को निर्यात कर दिया जाता था। गिलान (Gilan) यहां का इस धन्धे का सबसे बड़ा केन्द्र है। इस समय भी रेशम का व्यवसाय लोगों का एक प्रमुख व्यवसाय है। बहुत से लोग रेशम के कारखानों में काम करते हैं। बहुत से लोग इसकी तैयार वस्तुओं का व्यापार करते हैं।

समुद्र तट पर जो फारसी रहते हैं, वे मछलियां पकड़ने का व्यवसाय करते हैं। कैस्पियन तट की अपेक्षा फारस की खाड़ी मछलियों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पर जो लोग रह रहे हैं उनका जीवन वास्तव में इस व्यवसाय पर ही निर्भर है। युद्ध

पूर्व यहाँ पर १०००० टन मछलियाँ पकड़ी जातीं थीं। इसमें से सबसे अधिक मात्रा रूस को निर्यात की जाती थी। रूस ही इसका सर्वश्रेष्ठ ग्राहक रहा है। इन दोनों देशों के बीच जब कभी संघर्ष होता है तभी इस उद्योग को हानि पहुँचती है। लोग ऐसी परिस्थिति में इस व्यवसाय से हाथ धो बैठते हैं, और किसी अन्य व्यवसाय में लग जाते हैं।



ईरान—प्रमुख नगर तथा व्यापारिक मार्ग

यातायात के साधन—(Means of Transport & Communication)

इस देश के क्षेत्रफल को देखते हुए, यातायात के साधनों में अधिक उन्नति नहीं हुई है। परन्तु फिर भी मध्य पूर्वी देशों में इसका स्थान यातायात के दृष्टिकोण से काफी ऊँचा है। यहां पर रेल व मोटर चलाने योग्य सड़कें पाई जातीं हैं। इन दोनों प्रकार के साधनों ने प्राचीन ईरान का रूप ही परिवर्तित कर दिया है, और इसे थोड़ी सी आधुनिकता प्रदान कर दी है। यहां पर लगभग ५०० मील लम्बी रेलवे लाइनें हैं।

एक रेलवे लाइन तेब्रिज से जल्फा तक जाती है। इसकी एक शाखा सोफियान से उर्मिया तक जाती है। यह शाखा रूस ने बनवाई थी। एक रेल मार्ग बिलोचिस्तान से दुजदेप तक बना दिया गया है। उत्तर से दक्षिण तक आने वाली रेलवे लाइनों में एक बड़ी महत्वपूर्ण लाइन हाल ही में जर्मन, अमरीका, ब्रिटिश तथा अन्य विदेशी कम्पनियों के सहयोग से तैयार की गई है। यह लाइन फारस की खाड़ी स्थित बन्दरशापर से कैस्पियन सागर पर स्थित बन्दरशाह तक बनाई गई है। यह हमादन व तेहरान होती हुई निकाली गई है।

इस देश में कई अच्छी अच्छी मोटर गाड़ियाँ चलाने योग्य सड़कें भी पाई जाती हैं, यद्यपि यहाँ का धरातल इनके निर्माण में अनेक बाधायें डालता है। यहाँ पर पाँच हजार मील से भी अधिक पक्की सड़कें मोटर चलाने योग्य हैं। अब धीरे धीरे कारवाँ का स्थान ये मोटर गाड़ियाँ व ट्रक ले रहीं हैं। इन दोनों का अन्तर यदि देखना है, तो समझ लो कि कारवाँ एक पूरे दिन १५ या अधिक से अधिक २५ मील जाता है, जबकि एक साधारण ट्रक केवल एक घण्टे में इतनी दूर जाती है। द्वितीय महायुद्ध पूर्व यहाँ पर लगभग एक हजार मोटर लारी तथा डेढ़ हजार कारें थीं। विदेशों से आने वाले थल मार्गों में केवल तीन महत्वपूर्ण हैं। प्रथम रूस से तैब्रिज तक, द्वितीय बिलोचिस्तान से दुजदेप तक तथा तृतीय बगदाद से तेहरान तक। इन तीनों मार्गों द्वारा अब भी व्यापार होता है।

हवाई यातायात में भी यहाँ पर्याप्त विकास हुआ है। तेहरान एक बड़ा केन्द्र, है। यहाँ से पहेलवी जो कि कैस्पियन तट पर स्थित है तथा बुशायर जो कि फारस की खाड़ी पर स्थित है, को हवाई उड़ानें होती हैं। एक हवाई मार्ग तेहरान से केरमनशाह और बगदाद तक जाता है। द्वितीय महायुद्ध के बाद वायु-यातायात को बड़ा प्रोत्साहन मिला है। और अब तो और भी कई नवीन वायुमार्ग खुल गये हैं। उनमें से बी० ओ० ए० सी०, के० एल० एम० एयर फ्राँस, एस० ए० एस० तथा इराकी एयरवेज प्रसिद्ध हैं।

वास्तव में इस देश का आर्थिक विकास केवल उसी दशा में हो सकेगा जब कि यहाँ की सरकार यातायात के साधनों की ओर पूरा पूरा ध्यान दे।

विदेशी व्यापार (Foreign Trade)

विदेशी व्यापार में ईरान एक मुख्य स्थान प्राप्त करता है। शकर तथा चाय दो ऐसी वस्तुयें हैं, जो कि यहाँ बहुत अधिक मात्रा में आयात की जाती हैं। इन खाद्य पदार्थों के अतिरिक्त यहाँ विदेशों से मशीनें, [illegible], कपड़ा तथा अनेक वस्तुयें आयात की जातीं हैं। पहले यहाँ पर लंकाशायर से सूती कपड़ा बहुत मँगाया जाता

था, परन्तु अब भारतवर्ष से अनेक आवश्यक वस्तुयें कपड़ा सहित आ जाती हैं।

निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में यहाँ से पेट्रोलियम, उससे प्राप्त किये हुए पदार्थ, कालीन, दरियाँ, रेशमी, ऊनी, वस्त्र तथा शाल इत्यादि कुछ ऐसी वस्तुयें हैं, जिनका यहाँ से निर्यात होता है।

इरान के विदेशी व्यापार का स्वरूप

प्रतिशत

	आयात		निर्यात	
	१९३८	१९५०	१९३८	१९५०
बैल्जियम, फ्रांस, लक्जेम बर्ग तथा नेदरलैंड	५·२	४·४	२·०	१६·९
ब्रिटेन	८·१	२८·०	६·२	१९·१
शेष योरोप	६४·१	१९·१	६७·१	२६·७
संयुक्त राज्य अमरीका	८·६	२५·५	८·२	११·१
पश्चिमी एशिया	०·३	७·७	४·४	२५·८
भारत, लंका तथा पाकिस्तान	८·४	१०·३	४·९	६·८
अन्य	५·३	४·४	६·४	६·६
कुल वास्तविक मूल्य (०००००० रिअल (Rials) में)	७५०	६१५०	६१९	३४९४

नीचे दिये हुए टेबुल में ईरान का आयात व निर्यात वस्तुओं का मूल्य (१००० रियाल्स) दिया गया है।

२० मार्च सन् १९५२

आयात वस्तुयें		निर्यात वस्तुयें	
शक्कर	७३६,५३६	कपास (कच्ची)	३३१,२०९
चाय	६२५,८०७	ऊन तथा बाल	४९०,६४१
ऊनी वस्त्र	८९१,७५८	चमड़ा तथा खालें	३६८,१३९
सूती वस्त्र	१,२३१,४८९	फल(सूखे तथा ताजे)	७१३,७५५
मशीनें	९२६,४९९	गोंद	२१४,०६०
पेट्रोलियम	१,७१२	चावल	१५६
		खनिज तेल की वस्तुयें	६,८४२,४३४

From Statesman Year Book (1955) Page 1293

राजनैतिक रूप (Political Aspect)

राष्ट्रीय भावना (National Feeling)

फारस सन् १६२५ से ईरान कहलाने लगा। यह परिवर्तन वास्तव में यहाँ के लोगों की राष्ट्रीय भावना प्रकट करता है। शताब्दियों तक इस देश का रूस तथा ग्रेट ब्रिटेन में संघर्ष होता रहा। रूस का दाँत फारस की खाड़ी पर रहा, और ग्रेट ब्रिटेन का उस मार्ग पर जो भारतवर्ष को जाता है। यह संघर्ष चलता ही रहा, किन्तु आँतरिक सुधारों में कोई भी रुकावट नहीं पड़ी और न ही इस कार्य में कोई विशेष परिवर्तन ही हुआ। लगातार यहाँ पर शिक्षा, यातायात तथा राजनैतिक दशा में सुधार होते रहे।

सम्वैधानिक रूप रेखा (Constitutional Framework)

संविधान के अन्तर्गत यहाँ पर दो हाउस हैं। एक सिनेट (Senate) जिसमें तीस चुने हुये तथा तीस 'नोमिनेटेड सदस्य' होते हैं। दूसरा 'हाउस आफ रिप्रेजेंटेटिव'। सन् १६५० में कुछ और परिवर्तन हुए। 'हाउस आफ डिप्टीज' दो साल के लिये चुने जाने लगे। यहाँ का सम्राट प्रधान मन्त्री नियुक्त करता है। प्रधान मन्त्री उस समय तक कार्य करता है, जब तक कि मजलिस (पार्लियामेन्ट) को उस पर विश्वास रहता है, उसके पास अनेक अधिकार होते हैं। सन् १६४६ से उसे संविधान में परिवर्तन करने का भी अधिकार प्राप्त हो गया है। तूदेह (Tud-eh) जो कि एक कम्युनिस्ट पार्टी है, गैर कानूनी ठहरा दी गई है, क्योंकि उसने एक बार शाह के जीवन पर आक्रमण किया था। सन् १६५३ में जब जनरल जहेदी प्रधान मन्त्री हो गये तब उन्होंने इस पार्टी को जड़ से ही उखाड़ दिया।

सांस्कृतिक रूप (Cultural Aspect)

जाति (Race)

ईरान में विभिन्न जातियों का मिश्रण पाया जाता है। यहां पर न केवल एशिया की दो [illegible] बल्कि अनेक शाखायें हैं जिन्होंने कि देश के विभि[illegible]। अब यहां पर उतनी ही जातियों के लोग मिलते हैं, [illegible] में सम्भव हो सकती हैं। यह जातियाँ इस प्रकार हैं।

- काकेशस प्रकार
  - आर्य लोग
    - ईरानिक शाखा
      - तजिक्स (पारसी अंश या फारसी)
      - कुर्द
      - लर्स
      - लेक्स
      - बलूचीज़
    - इन्डिक शाखा
      - जिप्सीज़
      - जाट
    - हाइक शाखा
      - आरमीनियस
  - सेमाइट लोग
    - अरब के लोग
    - जियूज़
    - काल्डियन्स ("नेस्टोरिअंस")
- मंगोलो-तातर प्रकार
  - मंगोल शाखा
    - आयेमक्स
    - हजाराज़
  - तुर्की शाखा
    - तुर्कोमन्स
    - किजिल बासीज

इस देश के अधिक से अधिक निवासी फिर भी प्राचीन ईरानियन जाति के ही कहे जायेंगे। ये पश्चिमी ईरानियन जिन्हें फारसी भी कह सकते हैं, मध्य एशिया में हर जगह मिलते हैं। परन्तु इनके नाम भिन्न हैं, यहां के ताजिक्स (Tajiks) पश्चिमी ईरानियां में तत्स (Tats) कहलाते हैं। उत्तरी और पूर्वी तूरान में भी ईरान जाति के लोगों का ही प्रभाव मालूम होता है। यह प्राचीन जाति अब भी उसी स्थान पर दृढ़ है जिस पर कि पहले थी, इसके पश्चिम में अरब, उत्तर में आरमीनियां, उत्तर–पूर्व में तुर्कोमन जातियां पाई जाती हैं।

धर्म तथा वस्त्र:—(Religion & Dress)

ईरान के निवासी यवन हैं और शिया गोत्र को मानते हैं। इनकी भावनायें पश्चिम के सुन्नी गोत्र से प्राय: भिन्न रहती हैं। पश्चिम के सुन्नी तुर्क भी इनके

प्रति वैर मानते हैं। ईरान के निवासी जो कि प्राय: अपने को कजार (Qajar) कहते हैं, कुलाह (Kulah) नामक वस्त्र से पहचाने जाते हैं। 'कुलाह' एक काले रंग का बकरी की खाल का बना हुआ, सिर पर पहनने का वस्त्र होता है। ये लगभग यहां के सभी लोग पहनते हैं। इनके साथ जूबी (Jube) भी पहनी जाती हैं, ये बड़ी कीमती होती है, इसका मूल्य ४० या ५० पौन्ड से भी अधिक होता है। ईरान के निवासियों की निगाह में सबसे साफ लोग तुर्क ही होते हैं। स्त्रियों का पहनावा बहुत आकर्षक नहीं होता, ऊपर एक ऐसा वस्त्र पहना जाता है, जो कूल्हे तक आता है, इस पर से एक छोटा तथा चौड़ा 'स्कर्ट' लटका रहता है।

चरित्र तथा स्वभाव:—(Character & Temperament)

वास्तविक ईरान के निवासी जो कि फारसी कहलाते हैं, बहुत ही होशियार तथा अच्छे चाल चलन के होते हैं। इनकी आदतें तथा बर्ताव बहुत ही सज्जनता का होता है। कार्य करने में कुछ सहमते हैं, बातचीत करने में कुछ झिझकते हैं। परन्तु पहचानने में बड़े तीव्र होते हैं। इनका मानसिक स्वभाव तातर लोग अथवा 'वाइट होर्डस' (White Hordes) की अपेक्षा गिरा हुआ होता है। तुर्क लोग कुछ ही शब्द बोलते हैं और अपनी बोलचाल में गम्भीर होते हैं। परन्तु फारसी इन-से विपरीत प्रकृति के होते हैं। इन लोगों में सुन्दरता को पहचानने की मानसिक शक्ति होती है। इसीलिए ग्रीक तथा ज्यूज़ लोग इन्हें बहुत पसंद करते हैं। अन्य योरोप की जातियां इन्हें अच्छी निगाह से देखती हैं।

—:o:—

अफगानिस्तान

मध्य पूर्वी देशों में अफगानिस्तान की बड़ी महत्वपूर्ण स्थित है। इसके उत्तर में रूसी तुर्किस्तान, पश्चिम में ईरान तथा पूर्व और दक्षिण में पाकिस्तान जैसे प्रसिद्ध देश स्थित हैं। इस छोटे से देश का सोवियत रूस तथा पाकिस्तान से बहुत गहरा राजनैतिक सम्बन्ध है। वास्तव में इसकी संस्कृति व जलवायु फारस से इतनी अधिक मिलती जुलती है कि हम इसको ईरान के पठार से किसी भी प्रकार अलग नहीं कर सकते। इस देश की अन्तर्राष्ट्रीय महत्ता इसलिए और भी अधिक रही है, क्योंकि यह दो महान् शक्तिशाली राज्यों के मध्य का राज्य रहा है। इन शक्तिशाली राज्यों में एक तो रूस तथा दूसरा ग्रेट ब्रिटेन है। यह देश इतना धनवान नहीं है, कि विश्व के अन्य देशों की निगाहें इस पर पड़ें। परन्तु इसमें संदेह नहीं कि आने वाले भविष्य में यह सम्भव हो कि एक रेल मार्ग भारतवर्ष से रूस अथवा योरोप तक बना दिया जाय। ऐसी स्थिति तथा इतना भय होते हुए भी, इस देश ने अपनी स्वतन्त्रता कभी नहीं खोई। इतना ही नहीं बल्कि खुद इन्हीं लोगों ने ब्रिटेन के दाँत खट्टे कर दिये और साथ ही अनेक बार पश्चिमी निकटवर्ती देश पर आक्रमण किये। यदि इस देश पर कभी भी किसी देश ने चढ़ाई की तो वह केवल उत्तर की ही ओर से सम्भव है, शेष चारों ओर से यह प्राकृतिक सीमाओं द्वारा घिरा हुआ है।

भौतिक रूप (Physical Aspect)

धरातल तथा बनावट:—(Relief and structure)

अफगानिस्तान का क्षेत्रफल २५०००० वर्ग मील है, दूसरे शब्दों में ब्रिटिश द्वीप समूह से दूना या लगभग संयुक्त राज्य के टेक्सास राज्य के बराबर है। इस देश की चौड़ाई उत्तर-पूर्व से लेकर दक्षिण-पश्चिम तक ७०० मील और इसकी लम्बाई हैरात सीमा से लेकर खैबर की घाटी तक ६०० मील है। वास्तव में अफगानिस्तान पहाड़ी व पठारी देश है। श्री एम० रेमंड फ़ुरन के अनुसार भौतिक दृष्टिकोण से इसके धरातल को हम ६ भागों में *बाँट सकते हैं-पहला, अफगान तुर्किस्तान जो बैक्ट्रिया भी कहलाता है। यह एक निचला मैदान है और उत्तर में ओक्सस (आमू) नदी की घाटी तथा दक्षिण में पर्वतों से घिरा हुआ है। इन पर्वतों से जो नदियाँ निकलती हैं

---

*The area of Afganistan is 650000 Sq. Kms. U. N. Statistical Year Book. 1953.

वे ओकजस (आमू) नदी से नहीं मिलतीं बल्कि रेत में ही समा जातीं हैं। दूसरा हिन्दूकुश पर्वत, जोकि कहीं २ पर २४००० फीट से भी अधिक ऊंचे हैं, पामीर पठार से निकलते हैं और मध्य अफगानिस्तान में श्रेणियों के टुकड़ों के रूप में दूर तक चले जाते हैं। केवल नुकसान तथा बादकशान दो ही ऐसी घाटियां हैं, जिनके द्वारा यातायात सम्भव है। अकरोबत तथा देनदन-शिकन दो अन्य घाटियाँ हैं, जो यातायात के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। तीसरा, बादकशान का क्षेत्र जो कि अफगानिस्तान के उत्तर पूर्व की ओर है। यह एक बहुत ही सुन्दर व रमणीय क्षेत्र है, और छोटे पामीर को सम्मिलित करता है। इसकी उत्तरी सीमा ऊपरी आमू नदी से निश्चित होती है। चौथा, काबुलिस्तान—यह वह क्षेत्र है जो काबुल नगर के चारों ओर नदियों के बनाये हुए मैदानों का रूप धारण करता है। इसकी ऊंचाई समुद्र सतह से अधिकाधिक ६००० फीट है। यह हिन्दूकुश के दक्षिण में है, और इसमें होकर काबुल नदी बहती है। पाँचवा, हजारा एक पर्वतीय भाग है, और अफगानिस्तान के मध्य में स्थित है। छटा, दक्षिण और पश्चिम के रेगिस्तानी भाग हैं। इस भाग में सीस्तन (जोकि पश्चिम का बंजर क्षेत्र है) तथा रेगिस्तान (जोकि पूर्व का बंजर क्षेत्र है) के मध्य हेलमण्ड नदी की हरी भरी घाटी पाई जाती है। इन रेतीले मरुस्थलों को पार करना यहाँ के कारवाँ के लिए बड़ा कठिन कार्य है।



अफगानिस्तान के प्राकृतिक विभाग

अफगानिस्तान के पहाड़ी व पठारी क्षेत्र तरशियरी युग के पहले की चट्टानों के हैं। हिन्दुकुश का सम्बन्ध पामीर पर्वत से बहुत कुछ है। यह पर्वत कई स्थानों पर मिश्रित अवस्था में है। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि अधिकाधिक चट्टानें तरशियरी युग की ही हैं।

नदियां—(Rivers)

अफगानिस्तान में केवल एक दो नदियों को छोड़ कर कोई भी अन्य आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण नहीं है। काबुल नदी अपनी सहायक नदियों सहित हिन्दुकुश पर्वत के दक्षिण में बहती है। यहाँ की अन्य छोटी २ नदियाँ रेतीले

बेसिनों में ओंझल हो जाती है। ओक्सेज़ (आमू दरिया) नदी उत्तरी सीमा निश्चित करती है। यह लगभग ४८० मील लम्बी है और इसकी एक सहायक नदी कन्दुज़ (Kunduz) जो कि को-ई-बाबा से निकलती है, इसमें आकर मिलती है। मुर्गाब नदी जिसकी लम्बाई लगभग ३६० मील है, मर्व नामक उद्यान (Oasis) में लुप्त हो जाती है। हरी-रूद एक और नदी है, जो कि हैरत के मैदान में होकर बहती है, और तिजेन्द के उद्यान में समाप्त हो जाती है। अफगानिस्तान की सबसे लम्बी नदी हैलमन्ड है, इसकी लम्बाई ६०० मील है और हजारा के क्षेत्र में होकर बहती है। यह एक दलदली झील, (जिसका नाम हमुन-ई-हैललन्ड है) में गिर जाती है। सिंचाई की दृष्टि से केवल कांबुल नदी ही अधिक महत्वपूर्ण है। यहाँ की नदियों की एक विशेषता यह है, कि ये वर्ष के आठ माह तक सूख जाया करती हैं।

जलवायु—(Climate)

इस देश में जलवायु शुष्क है, महाद्वीपी प्रभाव होने के कारण यहाँ तापक्रम में बहुत अन्तर पाया जाता है। धूप यहाँ सख्त पड़ती है। उच्च भू भाग जो कि तीन हजार फीट से अधिक ऊँचे हैं, जैसे काबुल व गजनी, शीत ऋतु में बहुत ही कम तापक्रम अंकित करते हैं। तापक्रम कभी कभी हिमांक से भी नीचा आ जाता है। हिन्दुकुश से लेकर केलत तक जितनी भी शाखायें हैं, वह हिम रेखा से ऊपर ही निकल गई हैं। इन उच्च भागों में गर्मी का तापक्रम १००° फा० तक भी हो जाता है। बर्फ वर्षा जनवरी व फरवरी के माह में तथा जल वर्षा मार्च तथा अप्रैल में हो जाती है। शेष माहों में कुछ भी वर्षा नहीं हो पाती। जलालाबाद जो कि समुद्र सतह से २ हजार फीट ऊँचा है, उतना ही गर्म रहता है, जितना कि भारतवर्ष ग्रीष्म ऋतु में, परन्तु शीत ऋतु में ये उतना ठंडा हो जाता है, जितना कि रूस का कोटिस्तान का क्षेत्र। गर्मी कहीं कहीं तो इतनी अधिक पड़ती है कि जितनी भारतवर्ष के बंगाल राज्य में। काबुल में (६५,००) फीट में तापक्रम ६०° व १००° फा० तक चढ़ जाता है। यहाँ तक कि कन्धार की भी ऐसी ही दशा रहती है। वार्षिक वर्षा का औसत ४" से अधिक नहीं है।

मानव रूप (Human Aspect)

ऐतिहासिक आधार (Historical Background)

अफगानिस्तान के अति प्राचीन इतिहास के विषय में लोगों को अधिक ज्ञान

नहीं है। हाँ केवल इतना अवश्य है कि ईसा के पूर्व साइरस (Cyrus) के अन्तर्गत फारस का राज्य रहा और इसके उपरान्त सिकन्दर महान ने भी इस पर अधिकार जमाया। गत दो हजार वर्षों के समय में इस देश को जातियों के राज्य में सम्मिलित होना पड़ा, उदाहरणार्थ चीनी, हूण, तुर्क्स, मंगोल्स, तथा पारसी लोग। इन सबों ने अपना अपना आधिपत्य इस देश पर थोड़े थोड़े समय जमाया। इसके अतिरिक्त किसी किसी से तो इसे घमासान युद्ध भी लड़ना पड़ा। रूस से इसे उन्नीसवीं शताब्दी में मुकाबिला करना पड़ा। वास्तव में यदि देखा जाय तो इसके वर्तमान इतिहास का जन्म उस समय से हुआ है, जब से कि ऐंग्लो-अफगान युद्ध (१८७९) छिड़ा है। इसी साल एक अंग्रेजी मिशन की हत्या की गई, केवल एक माह बाद ही अंग्रेजों ने काबुल जीत लिया। और कुछ समय पश्चात् अबदुर रहमान खाँ को यहाँ का राजा बना दिया। इस राजा ने यहाँ के अनेक झगड़े व विरोधी दलों को ठंडा किया, इस राजा का जीवन ही इन्हीं संकटों में बीता। यह एक शक्तिशाली राजा था; वास्तव में अफगानिस्तान में घरेलू एकता इसी से स्थापित की। रूस ने इस पर दो आक्रमण किये और कुछ हिस्सा अपने राज्य में भी सम्मिलित कर लिया था। इसने १९०१ तक इस देश पर राज्य किया। इस राजा के पुत्र हबीब उल्ला खाँ ने १९०१ में ही इस राज्य की बागडोर सम्भाल ली, इसने भी यहाँ अनेक सुधार करने की चेष्टा की, विदेशी लोगों का यहाँ बराबर इस कार्य के हेतु आना जाना रहा। प्रथम महायुद्ध में यह सबसे अलग ही रहा। यद्यपि जर्मनी टर्की तथा अन्य मुसलमान राज्यों ने इस पर प्रभाव डालने की चेष्टा की। हबीब उल्ला खाँ ने यहाँ केवल १९१९ तक ही राज्य किया। इसके बाद इसी सन् में अमान उल्ला खाँ ने बागडोर सम्भाल ली। सन् १९२२ तक यह एक तंत्र (Monarchy) राज्य रहा। परन्तु अब यह संवैधानिक एकतन्त्र राज्य (Constitutionol Monarchy) है। इसमें लेजिस्लेटिव तथा स्टेट असेम्बलीज हैं; इसके अतिरिक्त एक कैबिनिट है जिसका सभापति राजा होता है।

जनसंख्या वितरण (Population Distribution)

अफगानिस्तान की वर्तमान *जनसंख्या १२०००,००० से कुछ अधिक है। जनसंख्या अधिकतर मध्य व उत्तरी क्षेत्र में अधिक पाई जाती है। नदियों की घाटियाँ तथा उपजाऊ पर्वतीय ढाल अधिक घने बसे हुये हैं। नागरिक जनसंख्या की अपेक्षा ग्रामीण जनसंख्या कहीं अधिक है। यह सब अपने अपने व्यवसाय में लगे हुये हैं। यहाँ पर जनसंख्या में अनेक जातियों का मिश्रण पाया जाता है। पठान हजारा, तुर्कोमन, काफिर तथा ताजिक प्रमुख जातियाँ हैं। यह सब मुसलमान हैं। इन

पाँच जातियों के अतिरिक्त बिलोचिस्तान के बलूची लोग भी इधर उधर घूमते फिरते दृष्टिगोचर होते हैं। बदकशीज़ अधिकतर उत्तर पूर्व में पाये जाते हैं। काबुल के मैदान में हर जाति के लोग रहते हैं, यह एक घना बसा हुआ भाग है। भारतीय व्यापारी भी यहाँ बहुत मिलते हैं। पठानों को छोड़कर लगभग सभी अफगान लोग फारसी भाषा बोलते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में अधिकतर लोग कृषि करते हैं, और खेतों के निकट गावों में रहते हैं। गाँव चारों ओर ऊँची ऊँची दीवारों से घिरे रहते हैं, जिससे कि शत्रुओं से सुरक्षित रह सकें। अलग छोटे छोटे गाँव जिस प्रकार भारतवर्ष में पाये जाते हैं, नहीं मिलते, बल्कि यह बड़े बड़े गाँव होते हैं जिनकी जनसंख्या अधिक होती है। यहाँ के लोगों का स्वास्थ्य अच्छा है, ये बड़े परिश्रमी होते हैं। मृत्युदर यहाँ इसी लिए कम है। यहां के बड़े बड़े नगरों में काबुल (२०६२०८) जलालाबाद (१४७५६) कन्धार (७७१८६) तथा मजर-ऐ-शरीफ (४१६६०) उल्लेखनीय है। हरात एक और छोटा सा नगर है जो कि इसी नाम के एक उपजाऊ मैदान में स्थित है। पहले यहाँ की जनसंख्या लगभग १२०००० थी, परन्तु अब शत्रुओं के आक्रमणों के कारण ७५६३२ हो गई है।

आर्थिक रूप (Economic Aspect)

प्राकृतिक वनस्पतिः—(Natural Vegetation)

अफगानिस्तान में विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक वनस्पति पाई जाती है यहां पर पर्वतीय ढाल विशेषतौर पर वनस्पति से ढके हुए हैं। वन केवल इन्हीं क्षेत्रों में पाये जाते हैं, अन्य स्थानों पर घने वन नहीं मिलते। इन वनों में उच्च स्थानों पर नुकीली पत्ती वाले वृक्ष अधिक उगते हैं, क्योंकि जलवायु बहुत ठंडी मिलती है। पर्वतों के निचले ढालों पर भूमध्य सागरीय वनस्पति भी मिलती है। आर्थिक दृष्टिकोण से इन वनों का बहुत अधिक महत्व नहीं है, क्योंकि कठोर लकड़ी के वृक्ष बहुत कम मिलते हैं। नदियों की घाटियों तथा अन्य पठारी क्षेत्रों में घास के मैदान मिलते हैं। इन मैदानों का महत्व बंजारों के लिए बहुत अधिक है। यह लोग अपने जीव जन्तुओं सहित इधर उधर घूमा फिरा करते हैं। दक्षिण की ओर इसको ऐसे रेगिस्तानी क्षेत्र मिलते हैं, जहाँ कि चारों ओर रेत ही रेत दृष्टिगोचर होता है। यहाँ पर मरुस्थलीय वनस्पति ही मिलती है, इनमें कांटेदार झाड़ियां तथा मोटी पत्ती वाले ठिगने वृक्ष ही अधिक उगते हैं।

कृषि:—(Agriculture)

यद्यपि अफगानिस्तान का अधिक क्षेत्र शुष्क व पर्वतीय है, परन्तु फिर भी यहाँ की घाटियाँ व मैदान हर प्रकार की उपजें उत्पन्न करते हैं। कृषि यहाँ के लोगों का प्रमुख धन्धा है, यह लोग भांति भांति की वस्तुयें उत्पन्न करते हैं। खाद्य पदार्थ में यह देश आत्म निर्भर है। कृषि के हेतु यहाँ अनेक सुविधायें हैं। पचास प्रतिशत बोई हुई भूमि पर सिंचाई की जाती है, इसमें से ७५ प्रतिशत पर खाद्यान्न उत्पन्न किए जाते हैं। सिन्चाई करने के यहां पर अनेक साधन प्रचिलित हैं। नहरें, कुएं तथा चश्मों से अधिकाधिक सिंचाई की जाती है। यहां पर सिन्चाई करने का 'करेज' (Karez) साधन बहुत प्रचिलित हैं, इससे अच्छा यहां कोई भी अन्य साधन नहीं है।

यहां पर वर्ष में दो फसलें होती हैं, प्रथम शीत ऋतु की फसल जिसमें गेहूं, जौ तथा मटर मुख्य हैं, और द्वितीय ग्रीष्म ऋतु की फसल जिसमें चावल, मक्का, तथा ज्वार बाजरा प्रमुख हैं। प्रथम फसल पतझड़ की ऋतु में बोई जाती है, और ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ में काट ली जाती है। इन फसलों के अतिरिक्त अन्य उपजें भी उत्पन्न की जाती हैं उदाहरणार्थ तम्बाकू, अफीम, और कपास इत्यादि केस्टर आयल (Casteroil) मेडुर (Madder) तथा असाफोयटिडा (Asafoetida) यहां बहुत बड़ी मात्रा में उगते हैं। यहां के कुछ भागों की मिट्टी बड़ी उपजाऊ है। सन् १९५३ में यहां १३००० मैट्रिक टन कपास उत्पन्न हुआ, इसमें से ४००० टन सोवियत रूस को निर्यात कर दिया गया ! इसी प्रकार से १९५३ में बहुत सा बचा हुआ गेहूं, फारस पाकिस्तान तथा सोवियत रूस को निर्यात किया गया।

ईरान की भांति यहाँ भी अनेक प्रकार के फल उत्पन्न होते हैं। इन फलों में एप्रीकोट, पीच, चेरीज तथा प्लम्स प्रसिद्ध हैं, यह विदेशों को भी निर्यात किए जाते हैं। अन्य भूमध्य सागरीय फलों में नींबू, नारंगी, संतरे, अनार, अंजीर, अंगूर, बादाम तथा तरबूज, शरीफे इत्यादि प्रसिद्ध हैं। कन्धार अनार के लिए तथा चमन अंगूर के लिए जगत-प्रसिद्ध हैं। फलों के बगीचे यहां पर लगभग सभी स्थानों पर पाये जाते हैं। काबुल का मैदान इन बागात के हेतु विशेषतौर पर प्रसिद्ध है। यहाँ पर विभिन्न प्रकार के फल उत्पन्न किये जाते हैं।

जीव-जन्तु:—(Animal Life)

पशु-पालन यहाँ के लोगों का एक मुख्य धन्धा है। कृषि के साथ साथ लोग जीव जन्तुओं को भी पालते हैं। बहुत से बंजारों का धन्धा केवल भेड़ बकरियां पालना ही है, यह लोग अपने पशुओं सहित इधर उधर घूमा फिरा करते हैं। अफगानिस्तान में भेड़ें बहुत बड़ी संख्या में पाली जाती हैं, यही यहां का एक मुख्य

धन है। बंजारों पर अधिकतर भेड़ें रहती हैं, यह उत्तर की ओर अच्छे चरागाहों की खोज में घूमा फिरा करते हैं। चौड़ी दुम वाले भेड़ इस देश की देन हैं। इनकी दुम काफी चौड़ी व भारी होती है। इस दुम में यह इतनी चर्बी एकत्रित कर लेते हैं, कि शीत ऋतु में भी इनका काम चलता रहे। क्योंकि इस ऋतु में इन्हें चर्बी की विशेषतौर पर कमी रहती है। इन भेड़ों से ऊन के अतिरिक्त अन्य भोजन पदार्थ भी प्राप्त होते हैं। मक्खन के स्थान पर इनकी दुम की चीज (Grease) प्रयोग की जाती है। ऊन और खाल यहां के लोगों के लिए वस्त्र प्रदान करते हैं। यह यहाँ निर्यात की एक प्रमुख वस्तु है।

खनिज सम्पत्ति—(Mineral Wealth)

अफगानिस्तान खनिज पदार्थों में बहुत निर्धन है। यहां पर मुख्य खनिज पदार्थों का आरम्भ से ही अभाव रहा है। भूगर्भ शास्त्रियों का कथन है, कि यहाँ पर तांबा, सीसा, लोहा, कोयला तथा तेल पाया जा सकता है। परन्तु अभी यह खनिज निकाले नहीं जाते। तेल के क्षेत्र उत्तरी तथा पश्चिमी सीमा के निकट हैं। परन्तु इसका प्राप्त करना अत्यन्त कठिन कार्य है। उत्तरी अफगानिस्तान विशेषतौर पर तांबा, सीसा और लोहे के लिए प्रसिद्ध है। घटिया श्रेणी का कोयला लाताबन्द के निकट घोरबन्द की घाटी में मिलता है। परन्तु उत्तम श्रेणी का कोयला हिन्दुकुश के ढालों पर पता चला लिया गया है। उत्तरी अफगानिस्तान में हैरत के निकट खनिज तेल मिलता है। तेल और चाँदी अभी बिल्कुल भी नहीं निकाले जाते, लेकिन चांदी पंजशिर की घाटी में मिलता है। कायभन के स्थान पर लोहा निकाला जाता है। सोना कन्धार तथा उत्तरी अफगानिस्तान की नदियों की घाटियों से प्राप्त होता है। शक्ति के साधनों का विकास हो रहा है परन्तु अधिक शीघ्रता से नहीं। हेलमन्ड नदी योजना—आशा की जाती है कि १९५६ तक पूर्ण तैयार हो जायेगी। इसमें ८०००००० व्यय हो जायगा। इस योजना के अन्तर्गत सिंचाई तथा शक्ति उत्पन्न करना है। सबसे अधिक लाभ गिरिश्क फराह, चाकनसंग, यकन्वल जिलों को पहुँचेगा।

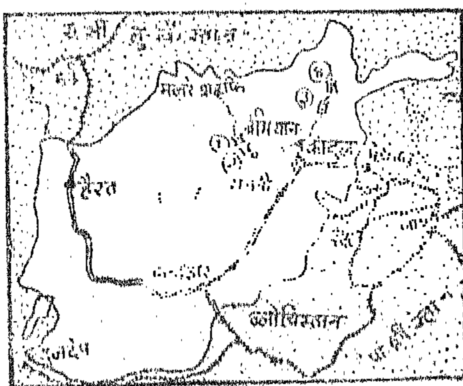
उद्योग धन्धे (Industries)

इस देश में कुछ उद्योग धन्धे भी उन्नति कर गये हैं। खनिज पदार्थों की कमी के कारण यहां भारी उद्योग नहीं पनप पाये। जितने भी उद्योग धन्धे यहाँ पर पाये जाते हैं, उनमें से अधिक तो ऐसे हैं जो कि घरेलू रूप में पाये जाते हैं। यह उद्योग धन्धे वास्तव में उसी कच्चे माल पर निर्भर रहते हैं जो कि यहाँ पर पाया

जाता है। 'पोस्टिन' या भेड़ की खाल के कोट बनाने के यहाँ अनेक कारखाने पाये जाते हैं। राज्य के निजी कारखाने अधिकतर काबुल नगर में ही हैं। यहाँ दिया-सलाई, साबुन, बटन, चमड़े के जूते व अन्य वस्तुयें, संगमरमर की वस्तुयें तथा फर्नीचर तैयार करने के कारखाने पाये जाते हैं। ऊनी वस्त्र बनाने की मिलें काबुल तथा कन्धार में स्थित हैं। सूती वस्त्र तैयार करने के कारखाने कन्दुज़, जिबेल-अस-सिराज, पुल-इ-खुमरी तथा गुलबिहार में पाये जाते हैं। पुल-इ-खुमरी में बहुत ही आधुनिक मशीनें, जो कि 'प्लाट ब्रादर्स' ने दी हैं, लगी हुई हैं। एक कारतूस व बन्दूक बनाने का कारखाना, सैनिक आवश्यकता के हेतु स्थापित कर दिया गया है। यहां सिक्के भी बनते हैं। बागलन में एक चुकन्दर से शकर बनाने का कारखाना भी स्थित है। गन्ने से शकर प्राप्त करने का एक मिल जलालाबाद में भी पाया जाता है। जल विद्युत शक्ति उत्पन्न करने का स्टेशन काबुल नदी पर स्थित सारोबी के स्थान पर तथा अरघन्दाब नदी पर स्थित कन्धार के स्थान पर है। बीड़ी व हुक्के की तम्बाकू भी कारखानों में तैयार की जाती है।

घरेलू उद्योग धन्धों में यहाँ की कला की वस्तुयें मुख्य हैं। ऊनी वस्त्र जैसे कम्बल, शाल व टोपी तैयार करना, शराब तैयार करना, बीड़ी व तम्बाकू बनाना, तथा जूते तैयार करना इत्यादि उल्लेखनीय हैं। फल भी सुखाकर मेवे के रूप में यहाँ से निर्यात किये जाते हैं। यह भी यहाँ का एक मुख्य उद्योग है।

यातायात के साधन (Means of Transport & Communications)



अफगानिस्तान—मुख्य नगर तथा यातायात के साधन

अफगानिस्तान एक पर्वतीय देश है, यहाँ पर समतल भाग बहुत कम पाये जाते हैं। रेलों का विकास इसीलिए यहाँ पर नहीं हो सका है। अधिकतर सड़कें ही पाई जातीं हैं, और वह भी अच्छी दशा में इन्हीं स्थानों पर हैं जो आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। पक्की मोटरगाड़ी चलाने योग्य सड़कें केवल यहाँ के बड़े नगरों को ही मिलाती हैं।

पेशावर से एक दो सौ मील लम्बी पक्की सड़क काबुल को तथा काबुल से गजनी व कन्धार होती हुई हैरत निकल जाती है। आगे जाकर यह सड़क एक रेल मार्ग द्वारा मर्व से मिला दी गई है। बमियान भी एक सड़क द्वारा बमियान से मिला हुआ है। मरुस्थलीय क्षेत्र में कारवाँ मार्ग मिलते हैं, यह पश्चिम में ईरान व ईराक को तथा पूर्व में बिलोचिस्तान व सिन्ध को जाते हैं। जून १९५२ के आंकड़ों के अनुसार यहाँ मोटर गाड़ियों की संख्या ५२४० थी, इसमें से ८८० निजी कारें तथा ४१५० लारियाँ थीं।

ऊंट, गधे, घोड़े तथा बैल इत्यादि सामान ढोने के काम लाये जाते हैं। यह पशु कच्ची व पक्की सड़कों पर आसानी से दूर तक चले जाते हैं। एक विशेष बात इस देश में यह है कि मार्ग में थोड़ी थोड़ी दूर पर सराय बनी हुई हैं, ये चारों ओर दीवारों से घिरी हैं, जो पथ प्रदर्शक यहाँ पर रहता है, मनुष्य व उनके जीव जन्तुओं को भोजन देता है। यातायात के लिये ग्रीष्म ऋतु ही सबसे अधिक अच्छी ऋतु है क्योंकि शीत ऋतु में इतनी अधिक बर्फ वर्षा होती है कि सड़कों द्वारा यातायात करना अत्यन्त कठिन हो जाता है।

विदेशी व्यापार (Foreign Trade)

अफगानिस्तान एक ऐसा देश है जो कि चारों ओर स्थल भूमि से घिरा हुआ है। आजकल यहां का ८०% विदेशी व्यापार पाकिस्तान से होकर होता है। फल, कपास, ऊन, खाल व चमड़ा यहाँ से निर्यात किया जाता है। आयात की हुई वस्तुओं में तैयार की हुई वस्तुयें मुख्य हैं, जैसे— सूती कपड़ा, रंग, मशीनें तथा धातुयें इत्यादि। नीचे दी हुई तालिकाओं से यहां के विदेशी व्यापार का अनुमान लगाया जा सकता है।

करांची बन्दरगाह द्वारा किये हुए विदेशी व्यापार का मूल्य

	आयात	निर्यात
	(पाक रुपया ००,०००)	
१९५२ (जनवरी—जून)	४५१.४५	५५२.०
१९५३ (जनवरी-जून)	३९२.१०	४२३.०

निम्नलिखित कुछ देशों से अफगानिस्तान का विदेशी व्यापार

आयात

	१९५०	१९५१	१९५२
ग्रेट ब्रिटेन (£)	१३२,८०७	२३०,१४३	४१६,८२६

संयुक्त राज अमरीका (डालर)	३,७८३,३५८	५,३८८,४८६	४,२८०,४३५
ईरान (Rials)	७,७८१,०००	२,३४१,०००	१,८८४,०००
भारतवर्ष (Rs.)	३६ ७४६,६७४	३१,४८५,६४३	३३,४६४,४३५

निर्यात

	१६५०	१६५१	१६५२
ग्रेट ब्रिटेन (£)	१०३,११२	२१५,३८८	३१५,४५८
संयुक्त राज्य अमरीका (डालर)	२०,८१५,७६५	२३,३५३,६५०	१४,८५२,५२३
ईरान (Rials)	३,७६४,०००	३,११३,०००	६,६६०,०००
भारतवर्ष (Rs.)	१४,४२०,६८४	१०,८४६,५८३	७,५५५,६६५

राजनैतिक रूप (Political Aspect)

संवैधानिक रूपरेखा (Constitutional Frame work)

अफगानिस्तान के वर्तमान राजा जहीर शाह के पिता राजा नादिरशाह ने १६३० में अपनी जनता के हेतु एक लिखित संविधान बनाया। सन् १६३७ व १६३८ में इसमें कुछ सुधार किये गये। इस संविधान के अन्तर्गत अफगान राजा एक वैधानिक (Constitutional) शासक हो जाता है। सीनेट (Senate) में पचास मेम्बर होते हैं, जो आजन्म के लिए चुन लिए जाते हैं। सदस्यों के हाउस में १५१ मेम्बर होते हैं। यह तीन वर्ष के लिए चुने जाते हैं। राजा एक मन्त्रियों की केबिनेट की सहायता से शासन करता है। केबिनेट में एक मन्त्री को प्रधान मन्त्री बना दिया जाता है, जो कि दोनों हाउसों का नेता होता है। दोनों हाउसों के पास समान अधिकार होते हैं, हाँ, केवल रुपये सम्बन्धी बिलों का अधिकार लोवर हाउस को दिया जाता है। संविधान में परिवर्तन केवल 'लोया जिरगाह' (Loya girgah) में ही हो सकता है। यह अनिश्चित समय पर लगती है और राजा मन्त्री, पार्लियामेंट के मेम्बर तथा अन्य चुने हुए व्यक्ति एकत्रित होते हैं। यहाँ पर कभी कभी बहुत आवश्यक मामले भी सुलझाये जाते हैं।

विदेशी सम्बन्ध (Foreign Relations)

अफगानिस्तान ने १६३४ को 'लीग आफ नेशन्स (League of Nations) को अपनाया, इसके बाद १६४५ में यह संयुक्त राष्ट्र (United

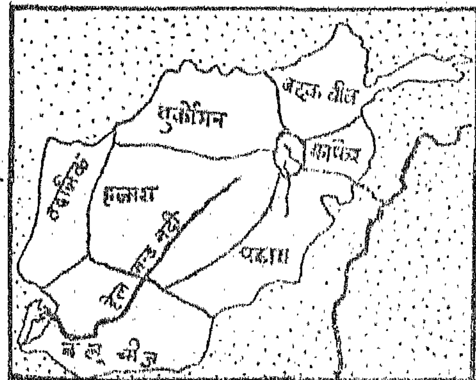
Nations) में शामिल हो गया। द्वितीय महायुद्ध में यह सबसे अलग ही रहा। सन् १९३७ में यह अपनी रक्षा के हेतु टर्की, इराक तथा इरान के साथ सादाबाद समझौते के अन्तर्गत मिल गया। सन् १९४७ से इसके सम्बन्ध भारतवर्ष के साथ बहुत अच्छे रहे हैं।। सन् १९५० में ही दोनों देशों ने मित्रता की सुलह की। अफगानिस्तान को संयुक्त राष्ट्र तथा संयुक्त राज्य अमरीका, दोनों देशों से आर्थिक सहायता मिली। हेलमन्ड योजना के हेतु इसे बहुत सी पूँजी उधार भी मिल गई। पश्चिमी जर्मनी की पूँजी की सहायता से इसे कुछ सूती वस्त्र तैयार करने के कारखाने स्थापित करने का भी अवसर प्राप्त हुआ है।

पाकिस्तान से इसके सम्बन्ध अधिक अच्छे नहीं रहे हैं क्योंकि 'पख्तून' (Pakhtoon) के प्रश्न पर बराबर वाद विवाद रहा है। यह संघर्ष अब भी चल रहा है। यहाँ तक कि कुछ माह हुए अफगानिस्तान ने अपने राजदूत को भी पाकिस्तान से वापस बुलवा लिया था।

सांस्कृतिक रूप (Cultural Aspect)

जातियां (Races)

इस देश में विभिन्न जातियों के लोग पाये जाते हैं। अफगान लोग जो कि आमतौर पर भारतवर्ष में पठान कहे जाते हैं, सुन्नी धर्म के मानने वाले हैं। यह लोग अब भी सामाजिक दृष्टिकोण से असभ्य ही हैं। इनकी यहाँ की राजनैतिक दशा से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं रहा, यह आपस में लड़ते झगड़ते ही रहते हैं। वैसे यहां पर एक अफगान जाति है जोकि भौतिक रूप रंग, भाषा, धर्म तथा संस्कृति में समान है, परन्तु फिर भी यह कहा जा सकता है कि यहाँ पर कोई भी अफगान राष्ट्र नहीं है। इनमें अनेक जातियों का मिश्रण है, जैसे—दुरानीज, गिलजिस, बजीरीज, अफरीदीज,



अफगानिस्तान—जातियाँ

मंगल्स मोमान्द तथा जुफाजइस इत्यादि। इनमें भी अन्य कई शाखायें हैं, जो एक दूसरे से भिन्न हैं। अन्य जातियों में तजिक, हिन्दकिस, उजबेग, शिया पोश काफिर, हजारा तथा आइमक हैं। यह भाषा तथा बोल चाल में एक दूसरे से भिन्न हैं। साधारणतौर पर यदि देखा जाय तो यहाँ निम्नलिखित पाँच जातियाँ ही उल्लेखनीय हैं:—

(१) पठान:—यह लोग अपने को 'बेनी इजराइल' जाति के कहते हैं। यह अपने को उनमें से बतलाते हैं, जोकि दस जातियाँ इजराइल में नष्ट हो गईं थीं। यह लोग पाकिस्तान की सीमा के निकट ही अधिक बसे हुए हैं। जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है। यह अनेक शाखाओं में विभाजित हैं, जैसे अफ्रीदी, वंजरीज तथा मंगल्स। यह सब झगड़ालू जातियां हैं।

(२) हजारा:—यह लोग चंगेज खां के समय से यहां मध्य के भाग में रह रहे हैं। इनका रंग पीला तथा चेहरे पर हल्की सी दाढ़ी होती है। ये बड़े शान्ति प्रिय तथा आलसी होते हैं। ये लोग कृषि, पशु-पालन तथा अन्य घरेलू उद्योग में लगे हुए हैं।

(३) तुर्कोमन:--यह तुर्किस्तान के लोग हैं, और अधिकतर इधर उधर घूमते फिरते रहते हैं। अधिकतर ऊंट, घोड़े अपने साथ रखते हैं।

(४) तद्जिक:—यह फारस के लोग हैं और देश के पश्चिमी भाग में ही पाये जाते हैं।

(५) काफिर:—यह अफगानिस्तान के उत्तर-पूर्व में रहते हैं। यह पर्वतीय लोग हैं, और इनका रंग हल्का पीला होता है। इन्होंने इस्लाम धर्म को हाल ही में अपनाया है।

इन जातियों के अतिरिक्त भी यहाँ अनेक जातियाँ मिलती हैं।

व्यक्तित्व तथा रहन सहन (Personality &Living):—

हम ऊपर बतला चुके हैं, कि इस देश में अनेक जातियाँ मिलती हैं। प्राकृतिकतौर पर इन सबों के रहन सहन, वस्त्र तथा रीति रिवाजों में अन्तर पाया जाता है। एक साधारण अफगान की राष्ट्रीय पोशाक ढीली ढाली तथा आकर्षक होती है। एक लम्बा सा पाजामा, कमीज तथा एक जाकट जोकि प्रायः कमीज से ऊंची होती है, ऊपर से पहनी जाती है। इनका जूता मजबूत पेशावरी सैंडिल से मिलता जुलता होता है। सिर पर यह लोग काले या श्वेत रंग की पगड़ी बांधते हैं। नगर के लोग कुछ नीचे फेज नामक टोपी भी पहनते हैं। बूढ़े मनुष्य, विशेष तौर पर मुल्ला या धर्म-प्रचारक लम्बी सी भरी हुई दाढ़ी रखते हैं। प्रायः दाढ़ी सुर्ख

पूर्वी ईरानियन पठार की जातियां

आर्य	गलचा शाखा	वाखी	हिन्दूकुश (उत्तरी ढाल)
		बदख्शी	
		सिया पोशकाफिर	हिन्दूकुश (दक्षिणी ढाल)
		सफी	
		चगानन	
		कोहिस्तान	पहाड़ियां (काबुल के उत्तर में)
		अफगान	काबुल, सुलेमान पहाड़, कंधार, हेलमंड बेसिन, हेरत
		ताजिक	हेरत, बसे हुए जिलों के अधिकतर कस्बे
		बलूची	बलूचिस्तान का निचला भूभाग (मकरान)
		सिस्तानी	निचला हेलमंड (हामुन)
		कुर्द	बलूच कोहिस्तान
	इन्डिक शाखा	हिन्दकी	अधिकतर बड़े कस्बे
		लासी	Prov-Das. so Baluchistan
		जाट	विशेषतः मकरान
		लूरी	
मंगोलो तातर	मंगोल शाखा	हजारा	उत्तरी ऊंचे भूभाग, बामियां और हेरत के मध्य में
		ऐमक	
		उजबेग	अफगान तुर्किस्तान
	तुर्की शाखा	तुर्कोमन	हेरत, मैमना
		किजिल-बशी	विशेषतः काबुल
		ब्राहुई	विशेषतः पूर्वी बलूचिस्तान का ऊंचा भूभाग

From-Asia vol. 11 A. H. Keane L. L. D.

रंग से रंग भी ली जाती है। मुसलमान लोग होंट के ऊपर के बाल तो उस्तरे से कटवा लेते हैं परन्तु इसके इधर-उधर ये लोग बाल रहने ही देते हैं।

इनकी स्त्रियाँ एक लम्बा सा पाजामा, ढीली सी कुर्ती जिसकी बाहें लम्बी लम्बी होती हैं, प्रायः पहनती हैं। पैरों में मोजे पहनती हैं, सिर पर एक नाममात्र का पर्दा सा ढांक लेती हैं। जब ये स्त्रियाँ बाहर जाती हैं, तो बुर्का जो कि काले, सफेद या नीले रंग का होता है, पहनती हैं। इस बुर्के में आँखों के स्थान पर एक जालीदार कपड़ा लगा होता है जिससे कि यह सामने की वस्तु, देख सकें। इस देश से पर्दा हट रहा है, बहुत कुछ हट भी गया है। काबुल में तो योरोपियन फैशन प्रचलित होने लगी है। अफगान लोगों को एक से अधिक विवाह करने का अधिकार है। परन्तु केवल धनी व्यक्ति ही ऐसा करते हैं।

इन लोगों के घर बड़े अच्छे व स्वच्छ होते हैं। यह मकान यहाँ के भौगोलिक वातावरण के अनुसार ही बनाये जाते हैं। मकानों के बनाने में ईंटों व मिट्टी का प्रयोग अधिक होता है। मकान में मर्द व स्त्रियों के रहने के स्थान अलग अलग बनाये जाते हैं। इनकी खिड़कियाँ बहुत छोटी होती हैं। छोटे छोटे घरों में ऐसा नहीं होता। बल्कि वहाँ एक ही कमरे में सब कुछ होता है।

वर्तमान समय में इस देश ने हर क्षेत्र में उन्नति की है। प्राइमरी व सैकिन्ड्री शिक्षा यहाँ बच्चों को मुफ्त दी जाती है। यहाँ अब कई स्कूल व कालेज खुल गये हैं। काबुल में सेना-शिक्षा तथा कलात्मक शिक्षा देने के कालेज हैं। इनके अलावा, अस्पताल, क्लब, तथा अनेक संस्थायें भी स्थापित हो गई हैं।

SELECTED BIBLIOGRAPHY

ASIA

GENERAL

Stamp L. D.	Asia, A Regional and Economic Geography.
Lyde L. W.	Continent of Europe
Bergsmark D. R.	Economic Geography of Asia
Cressey G. B.	Asia's Lands & Peoples.
Hunttington. E.	Pulse of Asia
Dinnery E.	Asia's Teeming Millions
Gregory J. W.	Sturcture of Asia
Tawney R. J. H.	Peoples of Asia
Keane A. H.	Stanford's Compendium of Geography, Asia Vol. 1 & 2.
Spencer	Asia, North East
Little A.	Asia, Far East
Fisher W. B.	The Middle East
Hogarth D. G.	Nearer East, Oxford University Press.

SOUTH-EAST ASIA

BURMA

Chibber H. L.	Mineral Resources of Burma.
Ma Maya Sen.	Burma
Andrus J. R.	Burmese Economic Life.
Donison F. S. V.	[illegible] Burma
Thakin Nu.	[illegible]

MALAYA

Burkill I. H.	Dictionary of the Economic Products of the Malaya Peninsula 2 Vol. London.
Hake H. B. E.	The New Malaya and you, London 1945.
Mackenzie K. E.	Economic and Commercial Conditions in the Fed of Malaya State H.M.S.O. 1952.
Scrivener J. B.	Geology of Malaya.—London 1931.
Smith T. E.	Population Growth in Malaya—London 1951.

Tung Chang Lock. Malaya Problems—Singapore 1947
Purcell V. Malaya, Outline of a Colony—London 1946.
Burlett V. Report from Malaya—London 1954.

SINGAPORE

Coupland R. Raffles of Singapore—London 1946.
Deltufe M. V. A Report on the 1947, Census of Population 1949.
Firth R. Malay Fishermen: Their Peasant Economy London 1946.
Lashker B. Peoples of South-East Asia, New York, Toronto 944
Onraet R. Singapore—A Police Background, London 1947
Annual Report 1953. H.M.S.O. 1954.
A Social Survey of Singapore, Singapore, Department of Social, Welfare 1948.

THAILAND

Sir J. Crosby. 'Siam'—Past and Future, London 1945.
Mac Farland G. B. Thai English Dictionary, Stanford—Calcutta 1944.
Reeve (W.D.) Public Administration, London 1951.
Commercial Directory for Thailand, Bankok, Published by the Department of Commerce, issue 1949.

VIETNAM COMBODIA LAOS

Asia and Africa in the Modern World—Asian Publishing House, Calcutta.
Statesman's Year Book 1955.

INDONESIA

Bemmelan R. W. Van Geology of Indonesia 2 Vols. The Hague 1949.
Indonesia Review of Commercial Conditions H.M.S.O. 1952
Gerbrandy P. S. Indonesia London 1950.
Kennedy R. Bibliography of Indonesia, Peoples & Cultures, New Haven, London 1946.

Vehl D. — The Birth of Indonesia—London 1948.

Preger W. — Dutch Administration in the Netherland, Indies, London 1946.

Brock J. O. M. — The Economic Development of the Netherland Indies New York 1942.

Brouwer H. A. Rothers — Geological Explorations in the islands Celebes—Amstordom 1947.

BRITISH BORNEO

Baring, Gauld and Bompfylde — A History of Sarawak under the two white Rajahs, London 1909.

Geddes W. R. — The Land of Dayaks of Sarawak H.M.S.O. 1954.

Morris H. S. — Report on Melanan Sago Producing Community in Sarawak H.M.S.O. 1953.

Roe F. W. — The Natural Resources of Sarawak Kuching 1953.

(a) Annual Report on Sarawak for 1954, H.M.S.O. 1955.

(b) Report on the 1947, Population Census of Sarawak and Brunei, Kuching 1950.

(c) Hand book of Sarawak Kuching 1949.

(d) Development Plan of Sarawak 1955. Kuching 1954.

PHILLIPINE ISLANDS

Forbes W. C. — The Phillipine Islands 3 Vols. Revised Cambridge Mass 1945.

Krieger H. W. — Peoples of Phillipines Wastington 1942.

Mills L. A. — The Phillipines and South-East Asia, Minniapolis 1949.

Hayden J. R. — The Phillipines. A study in National Development, New York 1942.

Gazettor of the Phillipine Islands—Department of Commerce Wastington 1944.

Facts and figures about Economic and Social Conditions of the Phillipine 1948-49. Manila 1950.

Republic of Phillipine, Govt. Manual 1950, Manila 1950.

EAST ASIA

JAPAN

Trewartha G. T. Japan	A Physical, Culture and Regional Geography Modison, Wiscousin and London 1945.
Uyehara H.	Industry and Trade of Japan—London 1948.
Yamada Moritaro.	Land Utilization in Japan, New York 1951
Mitchell Kate L.	Japan's Industrial strength, New York 1942.
Mecking L.	Japan, Stuggart 1951.
Sansom G. B.	Japan, A Short Cultural History, London 1931
	The Western World and Japan, New York 1950.
Smith G. H. & others.	Japan A Geographical View, Washington 1943.
Reischaur E. O.	Japan Past and Present, London 1947, The United States and Japan, Cambridge, Mass, 1950.
Wakefield H.	New Paths for Japan, London 1948.
Ackerman E. A.	Japan's Natural Resources, University of Chicago Press 1953.
Allen (G. C.)	Short Economic History of Modern Japan London 1946.
Barton H. (editor)	Japan, Cornwell University Press 1951. (editor)
	A selected List of Books and Articles on Japan in English, French and Germany.
Brown D. M.	Nationlism in Japan, University of California Press 1955.
Carus C. D. and Mc Nicholas C. L.	Japan, Its Resources & Industries, New York 1944.
Chamberlain B. H.	Things Japanese London 1935.
Farley M. S.	Aspects of Japan's Labour Problems, New York 1950.
Feary R. A.	The occupation of Japan, New York 1950.
	The occupation of Japan, Second Phase, New York 1951.
Gerr Stanley	A Gazetter of Japanese Places & Names, Cambridge Mass. 1942.
Ishi, Ryoichi.	Population Pressure and Economic Life in Japan, London 1937.

Jones F. C.	Japan's New Order in East Asia 1937-'45 Oxford University Press 1954.
Moulton.	Japan.
Latourette K. S.	Short History of Japan—London 1947.
Croker W. R.	Some Japanese Population Problems.
Roberts N. S.	Japan study prepared for U. K. Board of Trade H. M. S. O. London 1953.
Harada S.	Labour Conditions in Japan.
	Statistical Year Book, Published by the Statistics Bureau of the Prime Minister's Office, Tokyo (From 1949)
	Statiscal Abstract Published by the Statistics Bureau of the Prime Minister's Office, Tokyo (From 1950)
	Monthly Bulletin of the Statistics Bureau (From April 1950)
	Commercial Conditions in Japan, April 1950 H. M. S. O. 1951.
	Japan's Times Year Book (Tokyo, first issue 1933)

CHINA

Cressey (G. B.)	China's Geographic Foundations, A survey of the Land and its People. London 1934—Asia's Lands and Peoples New York 1944.
Chiang-Kai-Shek	Chian's Destiny, New York 1947.
Chen-Tuan-Shang	The Govt. and Politics of China, Cambridge, Mass and London 1950.
Mallory W. H.	China, Land of Famine.
Buxton L. H. D.	China.
Fitzgerald (C. P.)	China, A Short Cultural History Rev. ed. London 1950, Revolution in China—London 1952.
Fei and Chang.	Earthbound China—A study of Rural Economy in Yunan Rev. ed. London 1948.
Herrmann A.	Historical and Commercial Interests in the Far East, New York.
Little A.	Far East.
Keeton (G. W.)	China, the Far East and the Future, 2nd. ed. London 1947.
Kirley E. S.	Introduction to Economic History of China, London 1954.
Lang Olga	Chinese Family and Society, New York 1946.

Latourette K. S. The Chinese 2 Vols. 3rd. ed. New York 1946.

Levy Jr. (M. J.) The Family Revolution in Modern China Cambridge Mass and London 1949·

Mac Nair H. F. (editor) China (United Nations Series), University of California Press 1946.

Mathews. Chinese, English Dictionary Cambridge, Mass 1943—47.

Needham J. Science and Civilization in China 7 Vols. Cambridge University Press 1954.

Rosinger L. K. China's Politics, Rev. ed. Princeton 1950.

Shen T. H. Agricultural Resources of China, Cornell University Press 1951.

Thorp J. Geography of the Soils of China, Peking 1939.

Whymant (N) China—London 1947.

Winfield G. F. China, The Land and the People, New York.

Wilhelm R. A Short History of Chinese Civilization.

The China Year Book (edited by H. G. W. Woodhead) Shanghai and London, Annual.

A Chinese Manual (Published by the Chinese Govt. Information Office) London 1948.

The China Hand Book 1937—1945 (Issued by the Chinese, Ministry of Information) New edtion with 1946 Supplement New York 1947.

MANCHURIA

Il Manchoukuo Geografia, Storia, Economic, Milan 1940

Fochler Hanke (G) Die Mands Churei Eine Landeskunde, Heidelberg *194*

Jones F. C. Manchuria since *1931*, London 1949.

HONGKONG

Collin's Shri Charles. Public Administration in Hongkong—London *1952*.

Ingraus H. Hongkong H. M. S. O. *1952*.

Davis S. G. Hongkong in its Geographical Setting, Hongkong *1949*.

Statistical Information—A Government Statistical Department was set up after the war.

Annual Report on Hongkong *1952* H. M. S. O. *1953*.

CENTRAL ASIA

SINKIANG

Teichman E.	Journey to Turkistan—London 1937.
Lattimore O.	Pivot of Asia, Boston 1950.
Novins Martin R.	Gateway to Asia, Sinkiang, Frontiers of the Chinese far West, New York 1944.

TIBET

Ackerman P.	Tibet—Land and People's, New York 1950.
Bell Sir C.	Tibet—Past and Present—London 1927, The People of Tibet—London 1928.
David Neel A.	My journey to Lhasa—London 1927, Tibetan journey—London 1936.
Foreman Harrison	Trough Forbidden Tibet—London 1936
Gullibaut A.	Tibetan Venture—London 1947.
Hanbury Tracy John.	Black River of Tibet—London 1938.
Harrer H.	Seven years in Tibet—London 1953.
Heber A. R. & K. M.	In Himaliyan Tibet—London 1926.
Hedin Sven.	A Conquest of Tibet.
King Mrs. Louis	We Tibetans—London 1926.
Macdonald David.	Twenty years in Tibet—London 1932, Tibet, Oxford 1946.
Pallis M.	Peaks and Lamas, London 1940.
Patterson G. N.	Tibetan Journey—London 1954.
Pranava Nand, Swami	Exploration in Tibet—Calcutta 1939.
Tichy H.	Tibetan Adventure—London 1938.
Tucci H. E. G. & Gherri E.	Secrets of Tibet—London 1935.

MANGOLIA

Demi Dov. S. S.	[illegible] Narodnaya Republika, [illegible]
Friters G. M.	[illegible] and Its International [illegible]. London 1951.
Rinchine A. R.	[illegible] kavo Yazyka, Moscow 1952.
Todayeva B. K.	Gramatika Sovremyaanavo, Mongolskavo Yazyka, Moscow 1951

U. S. S. R.

Deutscher I.	Stalin—Oxford 1949.

Herper S. N. & Thompson R.	The Govt. of Soviet Union, New ed. New York.
Balzac, Vasyutin and Feigin.	Economic Geography of the U. S. S. R.—London 1951
Berg L. S.	The National Regions of the U. S. S. R. Washington 1949.
Lorimer F.	The Population of the Soviet Union—Geneva 1946.
Mikhalov N.	Soviet Russia—The Land and Its Peoples New York 1948 and Across the Map of U. S. S. R.—New York 1951.
Shabad T.	Geography of the U. S. S. R.—New York 1951.
King B.	Russia Goes to School—A guide to Soviet Education—London 1948.
Macleod J.	Soviet Theatre Sketch Book, London 1951
Mathews W. K.	Languages of the U. S. S. R., London 1951.
Zhdarov A. A.	On Literature, Music and Philosophy, London 1951.
Zhirnov V.	Development of Soviet Socialist Culture in Russia, Moscow.
Vyshinsky A. Y.	The Law of the Soviet State, London 1948.
Semashko W. A.	Health Protection in U. S. S. R., London 1934.
Lee A.	The Soviet Air Force—London 1950.
Mitchell M.	Maritime History of Russia 848—1948 London 1949.
Jasny N.	The Specialised Agriculture of the U. S. S. R. Plans and Performance—Stanford University 1949.
	Bulletin on Soviet Economic Development—edited by A. Baikor Quarterly, Birmingham from May 1949.
Arakelian A.	Industrial Management in U. S. S. R.—Washington 1949.
Bienstock G. Schwarz S. M. and Yugow A.	Management in Russian Industry and Agriculture.
Dallin D. J. and Nicolaevsky B. J.	Forced Labour in Soviet Russia, London 1947.
Dable M.	Soviet Economic Development Since 1917 London 1948.
Hubbard L. F.	Economics of Soviet Agriculture, London 1939.
Schwarz H.	Russia's Past War Economy, Syracuse 1947.

Turin S. P. — The U. S. S. R. An Economic & Social Survey 3rd ed. London 1948.

Jasney N. — The Soviet Economic during the Plan Era—Stanford University Press 1952.

Hubbard L. E. — Soviet Trade & Distribution, London 1938.

Soviet Ports:—Black & Azov Seas:—Hand book of General Information Issued by Sovfracht, All Union Chartering Corporation, Moscow 1935.

Tverskoi K. N. — The Unified Transport System of the U. S. S. R. London 1935.

Hubbard L. E. — Soviet Money and Finance—London 1936

Journals:—

'Pravada' (Truth) — Daily Organ of the Central Committee of the Communist Party.

'Isvestia' (News) — Daily Organ of the Presidium of the Supreme Soviet of the U. S. S. R.

'News' — A Fortnightly Moscow (In English)

'Soviet Union' — A Monthly Pictorial, Moscow (In English)

'The Soviet Constitution' — London 1945.

'Planovoye Khoziaistro' — Bi Monthly, Moscow.

'Vaprosy Torgovli' — A Monthly Journal Published by the Ministry of Trade of the U. S. S. R.

'Professionaluye Sovuzy' — A Trade Union Monthly, Moscow.

'Bolshevik' — A Fortnightly Organ of the Communist Party of Soviet Union.

'Finansy i Khoziaistvo' — A Weekly Publication of the Ministry of Finance of U. S. S. R.

'Sovietski Flot' — Organ of the Ministry of Defence.

Viedomosti Verkhonovo Sovieta. — Bulletin of the Supreme Soviet of the U. S. S. R., in languages of the 16 republics.

Other Publications:—

The American Review on the Soviet Union. A year book New York 1950.

The Current Digest of the Soviet Press—Publis[illegible] on Slavik Studie [illegible] C.

Soviet [illegible] Review Ed. J. Mil[illegible] Oxford '49 J. J.

Baran N. — Co-operatives in the Soviet Union, London '46.

Bates S. S. — Soviet Asia—Programmes and Problems, London '41.

Baykov A. — The Development of the Soviet Economic

System Princeton '48—Soviet Foreign Trade, Princeton '46.

Belaff M. — The Foreign Policy of Soviet Russia 2 Vols. '47-49 Soviet Policy in Far East, Soviet-Policy in Far East, Soviet Policy in Asia '44-52, Oxford '53.

Boreland H. — Soviet Literary Theory and Practice, Columbia '50.

Chadwik N. K. — Beginings of Russian History, London '46

Chamberlain W. H. — Russia's Iron Age, London '35—The Russian Revolution '17—'21 2 Vols. London '35.

Cressey George B. — The Basis of Soviet strength, New York 1945.

Dallin D. — The Real Soviet Russia, London '47.

Dorosh H. — Russia's Struggle for Democracy, '39.

Duranty Walter. — The Story of Soviet Russia, London '44.

Fichelle A. — Geograpie Physique et Economique del U. S. S. R., Paris '56.

Gray (G. D. B.) — Soviet Lands—The Country its People & Their Work, London '47.

Gregory James S., Shave D. W. — The U. S. S. R. A Geographical Survey, London '44.

Grierson P. — Books on Soviet Russia, '17—42, London 1943.

Harcave S. — Russia—A History London '52.

Hindus M. — Mother Russia, London '43.

Jorre G. — The Soviet Union.

Karpinsky V. — The Social and State Structure of the U. S. S. R., Moscow '50

Kelly (Lady) M. N. — Mirror to Russia, London '52.

Karner R. J. — The Urge to the Sea, The course of Russian History. The role of rivers, Portages, Ostrages Monestries & Furs, Berkaley (California) '42.

Kluchevsky V. O. — A History of Russia (Translated from the Russia) 5 Vols. London '11—31.

Monton S. M. — The Soviet Union Today, Socialists Impression, London '52.

Marriott Sir J. — Anglo-Russian Relations 1689-1943, London '44.

Mikhalov N. — Soviet Geography 2nd ed. London '57 The Land of the Soviets, A Book of the U. S. S. R., New York '39.

Milinkov Paul. — Outlines of the Russian Culture, 3 Vols. Philedelphia '42.

Mirsky D. S. — Russia, A Social History, London '51.

Molotov V. — Soviet Peace Policy, London '39.

Morton A. G. — Social Genetics. London '51.
Omen L. A. — The Russian Peasant Movement 1906-17 London '37.
Pavlovsky M. N. — Chinese—Russian Relations.
Rothestier A. — A History of the U. S. S. R. 2nd ed. London '51.
Segal L. — The Conquest of the Arctic, London '39. Russia, London '44.
Simmons E. J. (editor) — U. S. S. R. A Concise hand book, New York '47.
Stalin J. V. — The Soviet Union and World Peace New York '46. Economic Problems of Socialism in U. S. S. R., Moscow '52 (In English) Collected Works, London '52.
Summer B. H. — A Survey of Russian History 2nd ed. London '48.
Terrel R. — Soviet Understanding, London '37.
Towster J. — Political power in the U. S. S. R., '17-47 Oxford '48.
Vavilow S. I. — The Progrees of Soviet Science, London 1951.
Walace H. — Soviet Asia Mission, London '47.
Wu A. K. — China and the Soviet Union, London '50
Zirkle C. — Death of a Science in Russia Philadelphia 1949.

WESTERN ASIA

TURKEY

Muntz T. G. A. — Economic and Commercial Conditions in Turkey '47-50 H. M. S. O.' 51.
Kelly M. N. — Turkish Delights:—Travels and Impressions '[illegible]6-49, London '51.
Thornburg M. W. Spry G. and Soule G. — Turkey:—An Economic Appraisal New York '49.
Bishee E. — The New Turks '20-50 Phildelphia.
Birge J. K. — A Guide to Turkish Area Study, Washington.
[illegible]—The Central Sta[illegible] in [illegible]ara consists of a research bureau and ten sections dealing [illegible] foreign trade [illegible].

SYRIA

Garta Christina P. — The Syrian Desert, London '37.

Fedden R. Syria, A Historical Appreciation London 1947.

Hitti P. K. History of Syria, London '51.

Hourainia A. K. Syria and Lebanon: A Political Essay Oxford '45 Minorities in the Arab World Oxford '47.

Statistical Information: In '48, a development of Statistics was established in the Ministry of National Economy, Damascus. It publishes an annual Bulletin (in Arabic only)

LEBANON

Haddac J. Fifty years of Modern Syria & Lebanon Beirut '50.

Houraine A. K. Syria and Lebanon, London '46.

Atiyah E. An Arab tells his story, London '46.

Statistical Information—The Science de Statistique Generole (M.A.G. Ayad Chief du Service) published a quarterly Bulletin (in French & Arabic) covering a wide range of subjects and particularly foreign trade, production statistics and estimates of the national income.

JORDAN

Glubb J. B. The story of the Arab Legion, London '48

Peake (F. G.) A History of Transjordon and its tribes 2 Vols. Aman '34.

Seton (C. R. W.) Legislation of Transjordon '18-30, London 1931. Contributed by the Govt. of Transjordon as an awal Publication.

ISRAEL

Bentwich N. Israel—London 1952.

Israel Year Book. 1950-51—Tel Aviv.

Statistical Bulletin of Israel 1949 f. f.

Israel Economist Annual—Jerusalam 1949 f. f.

Facts and Figures *1953*—Govt. Printer Jerusalam.

Statistical Abstract of Israel 1952-53—Govt. Printer Jerusalam.

Blake G. S. & Gold Schmidt (M. J.) Geology & Water Resources of Palestine Jerusalam.

Statistical Information—There is a Central Bureau of Statistics and Economic Research at the Prime Minister's office, Jerusalam. It publishes monthly Bulletins of Economic Statistics, Social Statistics, foreign trade Statistics and an English Summary.

SAUDI ARABIA

Daughty C. M. — Travels in Arabia Deserta 2 vols. London 1936.

Farago Ladislas — The Riddle of Arabia—London 1939.

Ingrams H. — Arabia and the Isles, 2nd ed.—London 1952.

Ingrams W. H. — Arabia and the Isles—London 1942.

Philley H. & B. — The Heart of Arabia 2 vols.—London 1922. The Arab of the Desert—London 1949.

Twitchell K. S., Weltren A. L. & Hamilton V. G. — Report of the U. S. Agricultural Mission to Saudi Arabia (in English)

Twitchell K. S. — An Account of the Development of its Natural Resources—Cairo 1943

YEMEN

Faroughy A. — Introducing Yemen—New York 1947

Hayworth Dunne G. E. — Al Yemen, Social Political and Economic Survey—Cairo 1952.

Scott H. — In the High Yemen 2nd Ed.—London '47.

ADEN

Forbes H. O. — The Natural History of Sokotra and [illegible] 1903.

Ingrams W. H. — [illegible] Economic and [illegible] he Hadhrament, [illegible] and Isles. London 1938.

Kossamat F. — Geologic der Insein Sokotra, Semha etc. Vienna—1902.

Menlen D Va Der — [illegible] London 1947 [illegible] 1951-52 H. M. [illegible] Scheme 1951 [illegible] 2.

MUSCAT & OMEN

The Siger W. — Desert Borderlands of Oman; Geographical Journal p. 116—1950

IRAQ

Longrigg, S.	Iraq—1900-50—Oxford 1953.
Foster Henry A.	The Making of Modern Iraq—London '36
Khadduri M.	The Independent Iraq, Since 1932—London 1951.
Burne A. H.	Mesopotamia. The Last Phase—London —1936.
Field H.	Arabs of Central Iraq- Their History, Ethnology and Physical Character; Chicago—1935
Llyod Seton.	A Brief History of Iraq from the earliest times to the present day 2nd Ed.—Oxford 1947.
	Iraq—Overseas Economic Survey, H. M. S. O.—1953.
	Statistical Information :—The Principal of Bureau of Statistics, Ministry of Economics, Baghdabad publishes an annual Statistical Abstract—(Latest issue 1953).

PERSIA

Rajput A. B.	Iran Today 3rd Ed.—Lahore 1953.
Wilber D. N.	Iran Past and Present—Princeton 1948.
Lambton A. K. S.	Landlord and Peasant in Persia Oxford University Press 1953.
Sykes Sir Percy M.	A History of Persia 2 vols. 3rd edition London 1930.
	Statistical Information :—
	1 Department of Census, Civil Registration and Statistics (Ministry of Interior) Director General—Dr. Afkhan Hekmat Publication on Demographical Statistics in Persia.
	2 Ministry of Labour publishes a Statistical year book.

AFGANISTAN

Fraser Tytler W. K.	Afganistan—London & New York 1950.
James Ben.	Afgan Journey—London 1935.
Fox E. F.	Travels in Afganistan 1937-38—New York 1943.
Ahmad Aziz, Jamaluddin & Mohd. Abdul	Afganistan 2nd Ed. London 1937.
Sykes Sir Percy.	A History of Afganistan 2 vols. London 1940.

Shah S. I. A. — Afganistan of Afgans—London 1928.

Ali Mohomet. — Guide to Afganistan—Kabul 1938.

SOUTHERN ASIA.

INDIA

Gladhill A. — The Republic of India, its Laws and Constitution—London 1950.

Joshi G. N. — The Constitution of India—London 1950.

Masani M. R. — The Communist Party of India

Indian Independence Act 1947 (C. H. 30) London 1947.

Fallon S. W. — A New English—Hindustan Dictionary—Lahore 1941.

Grierson Sri G. A. — Linguistic Survey of India.

Platts J. T. — Dictionary of Urdu, Hindi & English 4th Ed.—London 1911.

Mittra S. C. — [illegible] Dictionary [illegible]

Statistical Abstract of India—Annual Delhi.

Raj Kumar N. V. — Development of the Congress Constitution New Delhi 1949.

Sitaramayya Dr. P. — History of Indian National Congress.—2 vols. Bombay 1946-47

Census of India 1951, Final Population Tables—1952, Population Zones, Natural Regions and Divisions 1952—Religion 1923 (All Published by Govt. of India.)

Report of the Population Data Committee, Govt. of India, Simla 1945.

Chandra Sekhar S. — Indian Population: Fact and Policy 2nd ed. Chidambaran 1950

Davis K. — The Population of India and Pakistan, Princelin 1951.

Huttas J. H. — Caste in India 2nd Ed. Bombay 1951.

Kandapi G. — Indians Overseas 1938-49, London 1952.

Issued by the Ministry of Education Govt. of India, Delhi Education in Free India (Aug. 1947-48) Pamphlate No. 60—1918.

Report of the University Education Commission (Dec. 1948 Aug. '49) Delhi 1949.

Report of the Committee on the Ways & means of Financing Educational Development in India—Pamphlate No. 64—1950.

Rankin Sir G. — Background to Indian Law. London 1946

Poduval R. N. — Finance of the Govt. of India Since 1935, Delhi 1951.

Jackson D.	India's Army London '42.
Vaidhya K. B.	The Naval Defence of India, Bombay '49
Anstey V.	The Economic Development of India 4th ed. London '52.
Best J. W.	Forest Life in India—London '35.
Brown J. C.	India's Mineral Wealth—Oxford '36.
Ghosh D.	Pressure of Population and Economic Efficiency in India New York '48.
Jather G. B. & Beri S. G.	Indian Economics 8th ed. London '48
Mukerjee R.	Rural Economy of India, London '26, Editor Economic Problem of Modern India, 2 vols. London '39-41 The Indian Working Class. Bombay '45
Owen R.	Economic and Commercial Conditions in India H. M. S. O. '53.
Rastogi T. N.	Indian Industrial Labour, Bombay '49.
Sharma T. R.	Location of Industries in India, 2nd ed. Bombay '48.
Sorani N. V.	The International Position of India's Raw Materials New Delhi '48.
Stebbing E. P.	The Forests of India 3 vols. London '22-26.
Thomas P. J.	India's Basic Industries—Calcutta '48.
Vakil C. N.	Economic Consequences of Divided India, Bombay 1950.
Wadia D. N.	Geology of India 2nd ed. London '39
Wadia P. A. & Merchant K. T.	Our Economic Problem Bombay '43,
	Indian Labour Gazette—Monthly Delhi.
	Agricultural Statistics of India, Annual Delhi.
Agrawala A. N. (Editor)	Position and Prospects of India's Foreign Trade—London '47.
Venkata Subbiah H.	The Foreign Trade of India—1900-40 Bombay '46.
	Indian Trade Journal, Weekly Calcutta.
	(a) Annual Statement of the Foreign Seaborne Trade of India 2 vols. Calcutta.
	(b) Statistics of Foreign Trade of India by Countries & Currency areas, Monthly—Calcutta.
Dadachanji B. E.	The Monetry System of India, Bombay '47.
Ghose B. C.	A study of Indian Money Market, Calcutta 1943.
Malhotra D. K.	History and Problems of Indian Currency 1935-43 2nd ed. Lahore '44.
Panandikar S. G.	Banking in India (London) '35.

OTHER BOOKS

Aronson A.	Europe Looks at India—A Study of Cultural Relations Bombay '46
Das Gupta (Tarupoda) Editor	Nalanda.
Durbar Shri G.	A History of India 3rd Edition 2 Vols. London '43.
Mellor A.	India, Since Partition. London '49.
Phillips C. H.	India—London '49
Roberts P. E.	Historical Geography of India 2 vols. Oxford 1916-20.
Spate O. H. K.	India and Pakistan, A General & Regional Geography—London '54.
Sutton S. C.	Guide to the India office, Library (Founded in 1801) H. M. S. O. '52.
	Guide to Current Official Statistics 3 vols. Delhi 1943, '45, '49
	Imperial Gazatter of India 2nd ed. 26 vols. London. Completed in 1909.
	The Indian Year Book, Annual, Bombay.
	India 1956 Publication Division of India New Delhi.
Gait Sir E.	History of Assam, 2nd ed. Calcutta 1926.
Kingdon Ward F.	Assam Adventure. London 1941.
Reid, Sir Roberts	History of the Frontier Areas bordering on Assam ; Shillong '42.
Houltan Sir J.	Bihar, the heart of India, Calcutta—49.
	Hand Book of the Mining and Mineral Resources in Bihar & Orissa—Patna '24.
	Statistical Atlas of Bombay State 4th ed, Bombay '50.
Patil P. C.	Regional Survey of Economic Resources Kolhapur, '50.
Low Sir E.	The Possibilities of Industrial Development in Central Provinces & Berar. Journal of Industries and Labour. Feb. 1921. Calcutta '21.
	Annual Statistical Abstract: Decimal Statistical Atlas, Season and Crops Report Dr. D. S. Raja Bhushan.
Ata Ullay	The Cooperative Movement in Punjab. London '37.
Calvert H.	Wealth & Welfare in Punjab, 2nd ed. Lahore '36.
Darling M. L.	Punjab Peasant in prosperity and debt. 4th ed. London 49.
Paustion T. W.	Canal Irrigation in Punjab, New York '30

Travaskis H. K. — The Land of Five Rivers, London '28.
The Punjab of Today, London '31 vol. II Lahore '33.

Crooke W. — Religion and Falklore of Northern India ed. R. E. Euthoven, London '26.

Martin Leake H. — The bases of Agricultural Practice & Economics in U. P.

Chatterjee S. P. — Bengal in Maps, Bombay '50

Niyogi J. P. — The Cooperative Movement in Bengal London '40.

Ronald Shay (The Earl) — Lands of the Thunderbolt, London '23.

White J. C. — Sikkim and Bhutan, London 1909.
Report on Exploration in Sikkim, Bhutan & Tibet 1856-86 Edited by Lieut. Col. G. Straham Dehra Dun 1889.

Ali Shah (The Sirdar Ikbul), — Nepal) The Home of Gods. London 1938.

Davis H. — Nepal Land of Mystery. London '4[illegible].

London P. — Nepal 2 vols. London '[illegible]8

Northery (Major W. B.) — The Gurkhas—Their Manners, Customs & Country. London '28.
The Law of Gurkhas, Cambridge '37

Powell E. A. — The Last Home of Mystery. Adventure in Nepal, London '32.

Statistical Information—A department of Statistics was set up in Kathmandu on 25 Oct. '50, Director General Maj. Gen. Bijya Shamsher Jang Bahadur Rana.

PAKISTAN

Ali C. R. — Pakistan 3rd ed. Cambridge '47.

Godfrey W. — Economic and Social Conditions in Pakistan H. M. S. O. '51.

Pithawala M. B. — An Introduction to Pakistan, Its resources and Potentialities.

Qayyum A. — A New History of India and Pakistan—Karachi '50.

Qureshi H. — Pakistan and Islamic Democracy Lahore '50.

Spate O. H. K. — India and Pakistan, A General and Regional Geography London '54.

Symands R. — The Making of P[illegible] '49.

Wheeler R. E. M. — Five thousand [illegible] London '50.

[illegible] Bibliography Lahore [illegible].

	Ansari's Trade Directory of Pakistan and Who's Who; Karachi '50.
Barton Sir W.	India's N. W. Frontier—London '39.
North R.	The Literature on the N. W. Frontier, Peshawar '47.
Pithawala M. B.	Historical Geography of Sind, 2 vols. 1936-37.

CEYLON

Collins Sir C.	Public Administration in Ceylon, London '51.
Cook E. K.	A Geography of Ceylon. London '39.
Das Gupta B. B.	Short Economic Survey of Ceylon, Colombo, '49.
Ferguson's	Ceylon Director, Annual Moon 1858.
Hulungalle H. A. J.	Ceylon 4th ed. Oxford '49.
Jennings Sir I.	Economy of Ceylon 2nd ed. O. U. P, '52
	The Constitution of Ceylon—London '50.
Mills L. A.	Ceylon Minneapolis '50.
Thorogood	Economic & Commercial Condition in Ceylon May '51. H. M. S. O. '52.

British Weights and Measures

LENGTH

1 Foot	0·3048 Metre
1 Yard	0·91493 ,,
1 Mile	1·6093 Kilometre

AREA

1 Sq. Foot	9·2903 Sq. Decimeter
1 Sq. Yard	0·836 Sq. Metre
1 Acre	0·40468 Hectare
1 Sq. Mile	2·589 Sq. Kilometre

WEIGHTS

1 Ounce	28·350 Grams
1 Lb.	0·4535 Kilograms
1 Cwt.	50·8022 ,,
1 Ton	1016 ,,

SOME IMPORTANT UNIVERSITY QUESTIONS

1. 'Asia is the greatest and the most diversified of the continents, the mother alike of most ancient civilizations and most primitive tribes, containing within its borders well over half of mankind, and possessing incalculable potentialities for the advance or the retrogression of its own peoples and of the World' Elaborate and substantiate this statement.

2. Give an account of the main features of the structure of Asia and show clearly their influence on the evolution of the present relief.

3. Give an account of the Origin and structure of the Himalayas.

4. Write an essay on the structural evolution of the Continent of Asia.

5. Give an account of the main structural features of Asia, and show clearly the more direct effects of the structure upon other aspects of Geography.

6. Describe briefly the effects of Alpins orogeny on the relief of Asia, and bring out the influence of relief on the development of ancient and modern trade routes.

7. Show with the help of the Sketch-maps, the relation between the Tertiary Folds Mountains systems of Asia and the hydrography of the Continent.

8. Give a detailed account of the drainage pattern and the drainage system of Asia.

9. Suggest a division of Asia into climatic regions, bringing out the basis of your division.

10. 'Everywhere the size of Asia leads to great climatic extremes', Discuss this statement.

11. Indicate the areas of Winter Rainfall in Asia and show to what extent this aspect of China encourages similar agricultural Production.

12. Give an account of the climate of Asia, bringing out clearly the part played by the Himalayas.

13. "The relief types of the Continent of Asia are unique and to this fact its peculiarities of climate are largely due. Discuss the Statement.

14. Attempt a classification of Asiatic climates according to one Modern Scheme.

15. What are the Geographical factors controlling the climate of Asia—Suggest a division of Asia into climatic region.

16. Give a Geographical account of the natural vegetation of Asia, showing the influence of climatic factors.

17. Divide Asia into racial zones and give a detailed account of any one of them.

18. 'Asia has many places where people are few and few places where people are very many'. Discuss.

19. 'Asia is a land of extremes'. Discuss critically.

20. Analyse carefully, bringing out in detail, the geographical factors that are responsible for Asia becoming a political dependence of Europe.

21. 'Asia—a land of diversity and extremes'. Discuss.

22. Discuss the Geographical distribution of tea cultivation in Asia. (excluding India).

23. Discuss the importance of tin mining in Asia.

24. Locate by sketch maps only, the following industries in their *respective regions of Specialization in Asia (excluding India)* and write a detailed account of any one of them :—

(a) The Iron and Steel Industry

(b) The Silk Industry.

(c) The Oil Industry.

25. Give the distribution of the Petroliferous beds in Southern Asia, and discuss their relative importance.

26. Discuss fully the cultivation of rice in South-Eastern Asia.

27. What geographical factors have favoured the growth of rubber plantations in South-East Asia ?

28. How far do you Share the view that Burma, Siam (Thailand) and Indo-China, combined, form a very big, contiguous land of promise, with great potentialities ?

29. Write a brief note on the economic geography of Indonesia.

30. Give a reasoned account of the agricultural economy of the Dutch East Indies.

31. Write an essay on the plantation agriculture in South-East Asia, with special reference to Malaya and the East-Indies.

32. Discuss the changes in population density and distribution in Malaya and Indonesia since the introduction of plantation agriculture.

33. Discuss: 'Fragmentation is the key-note of the topography of South-East Asia'.

34. Write a general account of the geography of French Indo-China with special reference to the problem of Viet-Nam and Viet Minh.

35. Describe the geological structure, and discuss fully the economic importance of the Mekong Basin.

36. Divide Malaya into natural regions and give a brief account of each region.

37. Divide Indo-China into Natural Regions and bring out clearly the main features of each region.

38. Write a geographical account of either Burma or Ceylon.

39. Describe and Discuss, with special reference to their economic importance, winter climatic conditions on the eastern littoral of Asia.

40. Describe and Discuss the essential elements in the present day strategic geography of the Pacific Islands.

41. Divide Japan into natural regions and write a brief account of each region.

42. Discuss either the population problem of Japan or the main features of China agr.culture'.

43. What contributions do Hokkaido and Kyushu make towards building up the importance of Japan.

44. Discuss: 'Despite essential raw materials, Japan is a first-rate industrial country'.

45. Discuss the fishing industry of Japan with special emphasis on (a) the main fishing grounds and (b) the major fishing ports.

46. Divide Japan into natural regions and write a brief account of each region.

47. What are the chief industrial areas of Japan? Describe briefly the industries of each area.

48. What are the conditions that have favoured the growth and development of industries in Japan inspite of lack of even absence [illegible] basic raw materials?

49. Japan's plea for entering the war was, to find room for her growing population. Now she has lost war. [illegible] would you make to cope with the population [illegible] without disturbing the peace of others.

50. [illegible] manufacturing industry, with special [illegible] raw materials.

51. [illegible] Japan into either natural or agricultural regions.

52. Discuss the origin and the economic importance of the Laess in China.

53. Discuss the importance of Shanghai as a port.

54. 'China's Mineral resources are many; but her industries are few'. Elaborate the above statement.

55. 'Agriculture in China is of necessity "gardening" rather than "farming" in our sense'. Comment.

56. Compare and contrast Northern and Southern China on a geographical basis.

57. Divide China into agricultural regions and describe briefly the characterstics of each.

58. Give an estimate of the Chief agricultural and mineral resources of China. How far do they offer China a prospect of an important position in the economic structure of the world?

59. China has been very often mentioned as 'The Land of Famine'. Give geographical reasons for famines in China and suggest remedies.

60. Give a short account of the Yangtze basin. Discuss the importance of the Yangtze in the political and economic geography of China.

61. Suggest a divison of China proper into geographical regions, indicating the criteria on which the division is based.

62. Give an account of the essential characteristics of Chinese agriculture.

63. Correlate the character of human activities in S. E. China with the climate, soil and vegetation distribution.

64. Write a short geographical account of Manchuria.

65. Manchuria's natural wealth is but one cause of the many international rivalries which have given Manchuria so much notoriety as "the battle-ground of the Far East". Comment.

66. Discuss the physical [illegible] concerned in the present and possible future [illegible].

67. Discuss the present and the past role of Korea in the Social, Economic and Political set-up of the Far East.

68. Do you agree with the division of Korea by 38th parallel? Enumerate briefly the results of this division on the resources of Korea.

69. Central Asia is considered by many as the 'Cradle of Mankind'. Examine this view, and give some idea of the principal migrations of the people which have taken place from this area.

70. Give a reasoned Summary of recent views on the problem of the desiccation of Inner Asia.

71. What do you understand by 'High Asia'? Give brief account of the area you include under this name and indicate its importance in the human Geography of the continent.

72. Give a brief geographical account of Soviet Central Asia, with a brief reference to recent developments.

73. Discuss the evidence which has been adduced in support of the hypothesis of climatic changes in Central Asia during historic times.

74. Write a geographical account of Soviet Central Asia, bringing out especially the recent economic developments.

75. Discuss the economic possibilities and limitations of Eastern Siberia to the geography of that country.

or

'Siberia is the storehouse of the future". Discuss.

76. Explain the role of the Trans-Siberian Railway in the modern development of Siberia.

77. Divide Siberia into geographical regions and show which of the regions is best suited for economic development.

78. Explain carefully the conditions and prospects of agriculture in Siberia.

79. Describe the geographical background of the reorientation of industries in Asiatic Russia.

80. 'South-West Asia is a bridge and a barrier between East and West. So that the positional factors are of great importance and, with the oil resources of these lands of backward technique, are responsible for conflict of interests of great external powers in this area interests which restrict real independence of the several small states into which divided.

81. Analyse the [illegible] background of the cou[illegible] opinion, can they [illegible]

82. Write an account of the distribution and production of petroleum in South-West Asia.

83. 'The Anatolian Plateau is essentially a bridge between Asia and Europe.'

or

Write a general account of the geography of Palestine with special reference to recent developments.

84. Divide Iran into natural Regions and write a brief account of each regions.

85. Discuss the importance of the Jordon in the agriculture of Palestine.

86. Under what geographical and economic conditions are dates produced in Iraq? Discuss fully.

87. 'Arabia has vast possibilities of development'. Do you agree? Explain with explicit examples.

88. Make a map, as correct as you can, of Modern Palestine with

Arab, Jewish and international sectors and write a brief account of either the Jordon Rift valley or the Arab Jewish problem.

89. Write an account of Turkey (Excluding European portion) under the following heads:—

Relief, drainage, climate and agricultural product.

90. Examine, from the geographical point of view, the Arab Jew problem of Palestine.

91. Explain and Discuss: The Anatolian plateau has been essentially a bridge between Asia and Europe, with flanking high lands on the North and South, and as a consequence has been the scene of immemorial struggles and these struggles have been specifically between the East and West.

92. Afganistan is regarded as a 'typical Buffer State of critical and urgent importance, specially with regard to its physiography and history'. Analyse this statement critically.

93. Examine, fr[illegible] point of view, the division *of Palestine and its* [illegible].

94. Divide Anatolia into natural regions, and discuss fully 'The Smyrna Economic Zone'.

95. Give a general account of the geography of Palestine, with special reference to recent development.

96. Iraq has been described as 'a country of retarded development'. How far do you agree with this statement? On what lines do you think that economic development could take place?

97. Write an account of the geography of Asia Minor, and describe its claim to be considered as 'the threshold of Asia'.

98. 'Irrigation was the basis of all early development and will be of all future development'. Examine this statement with reference to Iraq.

99. Discuss why the Anatolian plateau has been described as a province of 'transition' between Asia and Europe.

100. Trace the course of either the 'Yellow river' or the river Jordon from source to mouth and give an account of the different natural regions through which it flows and the various human activities associated with it.

101. With full support of the factors of geography, comment on any one of the following:—

(a) 'Iraq is a country of retarded development'.
(b) 'Tropical dependencies are essential to a temperate manufacturing country'.
(c) Arabia has vast possibilities of development.

102. Attempt a geographical account of either [illegible] or Java, pa-

ing special attention to recent developments.

103. 'Pakistan has no food problem'. Discuss.

or

Trace the development of Sericulture in Japan.

104. Compare and contrast Eastern and Western Pakistan under the following heads :—

(a) Land Use, (b) Human Settlements and (c) Industries.

105. Pakistan is a bridge between South-East Asia and Middle East. Discuss.

106. Give a geographical account of either Iran or Java.

107. Submit a geographical comparison of the nature of landscape and the pattern of settlement in the delta of the river Sind.

108. Examine the possibilities of development (a) Cotton Mills, (b) Sugar Mills and (c) Jute Mills in Pakistan.

109. Locate by sketch map only, the following raw materials in their respective regions of specialization in Asia (excluding India) and write an account of any one of them :—

(a) Cotton (b) Rubber (c) Timber

or

Compare and contrast S. E. and S. W. Asia under the following heads :—

(a) Climate (b) Land use and (c) Hydrography and Scenery.

110. Write an essay on one of the following :—

(a) The Dead Heart of Asia

(b) Plantation agriculture in Asia.

(c) Mineral Resources of China.

111. Write an essay on one of the following :—

(a) Rice Culture.

(b) 'Indian Ocean is a British Sea'

(c) The Jewish problem in Palestine.

112. Why is it that Milk and Meat do not play such an important part in the diet of the people of Japan as fish? Discuss fully.

113. Write an essay on one of the following :—

(a) Plantation in India

(b) Mineral resources of China

(c) Petroleum in South West Asia.

114. Indicate the areas of winter rainfall in Asia and show to what extent this aspect of climate encourages similar agricultural production.

115. Write a geographical account of either Afganistan or Malaye, showing the relation between environmental human, and economic conditions.

116. Do you share the view that the monsoon is not simply a gigentic land—and sea-breeze, but is helped by the creation of depression where conditions of temperature, relief and surface cover favour rapid heating as in the Red Basin of China or in the Tarin Basin?

117. Analyze carefully bringing out in detail, the geographical factors that are responsible for Asia becoming a political dependency of Europe.

118. Draw sketch maps to show the geographical factors which have influenced the growth of four of the following towns and account for their importance;—

[illegible] Kashgar Singapore, Tehran, Irkutsk.

119. [illegible] the sketch maps, the relation between the Tertiary Fold mountain systems of Asia and the hydrography of the continent.

120. Taking into consideration the geographical factors and inserting neat sketches; write a well composed essay on any one of the following :—

(a) 'Textile Crescent' (b) High Asia (c) Irrigation system of East and West Pakistan (d) Geographical Structure and economic importance of Making Basin.

121. With full support of the principles of geography, comment on any two of the following :—

(a) Who rules East Europe commands the [illegible]
Who rules the Heartland commands [illegible]
Who rules the World-Island Commands the World.

(b) Asia is one, [illegible] divide, only to accentuate to mighty [illegible] not even the snowey barriers can interrupt that broad [illegible] for the Ultimate and Universal, which is the common thought—inheritance of every Asiatic race.

or

There are two Asias: Asiatic Asia and the Asia which seems to merge so imperceptibly into Europe......

(c) 'China's minerals are many but her Industries are few'.

(d) Arab Jewish problem.

(e) Japanese method of rice-cultivation.

122. Trace the course of either Yangtze Kiang or the Irrawaddy river or the Tigris-Euphrates from source to mouth, and give an

account of the different natural regions through which it flows and the various human activities associated with it.

123. Taking into consideration the principles of Geography inserting neat maps and diagrams, write a brief essay on any one of the following :—

(a) 'Dead heart' of Asia

(b) Hearland of Asia

(c) Power Resources of Pakistan

(d) Natural Regions of Jawa

124. Give a brief geographical account of any one of the following :—

(1) Anatolia

(2) Palestine

(3) Burma

(4) Indonesia

(5) Iraq

(6) Iran